ओ३म्

सार्वदेशिक

साप्ताहिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०८५] वर्ष २० अंक १]

पौष कृ० १ स० २०४१ रविवार ९ दिसम्बर १९८४

दयानन्दाब्द १६० दूरभाष : २७४७७१

वार्षिक मूल्य १५) एक प्रति ४० पैसे

लालडेंगाकी गतिविधियोंसे सरकार परिचितहै

देश हित के विरुद्ध कोई गलत समझौता नहीं होगा

राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह का आर्यसमाज के प्रतिनिधि मण्डल को आश्वासन

दिल्ली १० नवम्बर।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले के नेतृत्व में आर्य समाज के एक प्रतिनिधि मण्डल को राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह ने आश्वासन दिया कि लाल डेंगा की गतिविधियों से भारत सरकार परिचित है। उसके साथ देशहित के विरुद्ध कोई समझौता नहीं किया जायेगा।

आर्य नेताओं द्वारा राष्ट्रपति जी को दो ज्ञापन दिए गए

ज्ञापन सं० १

नागा सरकार द्वारा पारित बिल भारत सरकार स्वीकार न करें।

आर्य समाज के नेताओ ने एक विस्तृत ज्ञापन नागालैण्ड की सरकार द्वारा विदेशी दबाव में आकर बनाए गए गैर नागा विरोधी वर्तमान कानूनो के सम्बन्ध मे दिया जिसमे चिह्न हिल रेगूलेशन एक्ट १८९६, नागालैण्ड लैण्ड रेवेन्यू रेगूलेशन (सशोधन) एक्ट १९७८, बंगाल ईस्टर्न फ्रन्टियर रेगूलेशन, १८७३ और नागालैण्ड रेक्यूजेशन एण्ड एक्वीजेशन एक्ट १९६५ पर गम्भीर आपत्तिया प्रकट की गई हैं। इन असमानतावादी कानूनों के द्वारा किसी भी गैर नागा को २४ घण्टे के भीतर निष्कासित किया जा सकता है, नागाओ को छोडकर कोई दूसरा जमीन नही खरीद सकता है। गैर नागाओं के वर्षों पुराने जमीन के पट्टे रद्द किए जा रहे हैं। आर्यसमाज एव इसके द्वारा संचालित सेवा सस्थानों के भी पट्टे को रद्द किया गया है। बिना परमिट नागालैण्ड मे प्रवेश की अनुमति नही दी जाती है और नागा सरकार जब भी चाहे किसी की भी जमीन अथवा सम्पत्ति जब्त कर सकती है। राष्ट्रपति जी से प्रार्थना की गई कि भारत सरकार द्वारा इन बिलो को स्वीकृति न दी जावे।

ज्ञापन स० २

सैनिक परिवारों के लिए विशेष न्यायिक व्यवस्था की जाय।

एक दूसरे ज्ञापन मे आर्य समाज के नेताओ ने माग करते हुए राष्ट्रपति जी से अपील की है कि सैनिक परिवारो के मकानो पर उनकी अनुपस्थिति मे अवैध कब्जो के विरुद्ध जो मुकदमे किए जाते हैं, उनकी सुनवाई और फैसलो के लिए राष्ट्रपति एक अध्यादेश जारी करके अदालतो को ऐसे मुकद्मो का फैसला ६ मास मे कर देने का आदेश जारी कर जिससे देश की सुरक्षा मे काम कर रहे सैनिक परिवारो की परेशानिया दूर हो सक।

राष्ट्रपति महोदय ने नागालैड तथा सैनिक परिवारो के सम्बन्धमे दिये गये ज्ञापनो पर तुरन्त उचित कदम उठाने का आश्वासन दिया।

सच्चिदानन्द शास्त्री
सयुक्त सभा मन्त्री

सार्वदेशिक सभा प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले माननीय राष्ट्रपति श्री ज्ञानी जैलसिंह जी से वार्तालाप करते हुए।

पंजाब लौट जाने की सलाह देना गलत

नई दिल्ली २१ नवम्बर। मगलवार कई प्रमुख उद्योगपतियो व व्यापारियों ने उन लोगों की इस बात को आलोचना की है जिन्होंने दिल्ली मे हाल के दगो मे प्रभावित सिखो को पजाब लौट जाने की सलाह दी है।

पजाब हरियाणा व दिल्ली चैम्बर आफ कामर्स से जारी वक्तव्यो में कहा गया है कि पजाब लौट जाने की सलाह देना देश की एकता के लिए घातक है। सिख शुरु से ही भारत के अभिन्न अग रहे हैं। सरकार तथा देश के हर नागरिक का कर्तव्य है कि वे सिखो के मन मे सुरक्षा की भावना पैदा करे। दगे से पीडित लोगों को पुन बसाने के लिए युद्ध स्तर पर काम होना चाहिए। इसके साथ ही उन लोगों को सजा भी मिलनी चाहिए जिन्होंने सिख भाइयो को उजाड़ा है।

वक्तव्य पर हस्ताक्षर करने वालो मे सर्वश्री शिवराज गुप्त, बसीधर विश्म्भरदास कपूर, के के. मोदी, डी. डी पुरी, के जी खोसला, पी के जैन आदि लगभग पचास जिम्मेदार उद्योगपति हैं। (शेष पृष्ठ २ पर)

सम्पादक—ओमप्रकाश पुरुषार्थी

सहसम्पादक—रघुनाथ प्रसाद पाठक

सभा-प्रधान श्री शालवाले द्वारा हैदराबाद सत्याग्रहियों को स्वाधीनता सेनानी सम्मान तुरन्त देने की मांग

सभा प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले ने हैदराबाद सत्याग्रहियों को स्वाधीनता सेनानी सम्मान तुरन्त दिए जाने के बारे में प्रधान-मन्त्री श्री राजीव गांधी और गृहमन्त्री श्री नरसिंहाराव को पत्र लिख कर गृह मन्त्रालय की स्वाधीनता सेनानी सम्मान सम्बन्धी समिति के २१-७-८४ के निर्णय को मन्त्रिमण्डल द्वारा शीघ्र स्वीकृति देने पर जोर दिया है।

३० नवम्बर को लिखे इन पत्रों में श्री शालवाले ने कहा है—

"श्रीमती इन्दिरा गांधी जी की हत्या के कारण इस बारे में मन्त्रिमण्डल द्वारा सम्पुष्टि की सूचना इस सभा को अब तक प्राप्त नहीं हुई है। क्योंकि ६५-८५ वर्ष तक की आयु के स्वाधीनता सेनानी अपने जीवन के अन्तिम वर्षों में और अत्यन्त कठिनाई में हैं और राष्ट्र के इन सपूतों को सम्मान सहायता देना सरकार का परम और तुरन्त कर्त्तव्य है, आपसे निवेदन है कि स्व० प्रधान मन्त्री द्वारा किए गए निर्णयों को तुरन्त एक अधिसूचना द्वारा जारी करने का प्रयत्न हो। इससे राष्ट्र अपने कर्त्तव्य का पालन करेगा और देश की अखंडता के लिए शहीद होने वाली भारत की विगत प्रधान मन्त्री श्रीमती इन्दिरागांधी की आत्मा को शान्ति होगी। चूंकि ऊपर का निर्णय सरकारी समिति पहले ले चुकी है अतः चुनाव से पूर्व इस प्रकार की सरकारी अधि-सूचना और घोषणा राष्ट्र के लिए विशेष प्रसन्नता सूचक होगी।"

—रामगोपाल शालवाले
प्रधान

पुस्तक समीक्षा

जीवन के पांच स्तम्भ, लेखक डा० प्रशान्त वेदालंकार, प्रकाशक गोविन्दराम हासानन्द, दिल्ली-६, पृष्ठ संख्या १७८, डिमाई साइज मूल्य ३५) रु०।

पुस्तक के लेखक डा० प्रशान्त कुमार ने शिक्षा, धर्म, अर्थ, समाज और राजनीति विषयक पांच स्तम्भों में वैयक्तिक और सामाजिक जीवन के प्रमुख अंगों पर प्रकाश डाला है। नव्य एवं प्राचीन विचारों का इसमें समावेश करके समन्वय की नीति का अवलम्बन करके भारतीय समाज की सामयिक समस्याओं पर एवं सूक्ष्म रूप में अच्छी विवेचना की है। रचना में भावों की प्रौढ़ता और स्पष्टता के साथ विचारों को हृदयग्राही बनाने का पूरा प्रयास किया गया है।

लेखक गुरुकुल कांगड़ी में शिक्षित एवं स्नातक हैं। आवश्यक होने पर उन्होंने अपनी इस रचना में इन समन्वित विषयों पर वेद एवं वेदेतर ग्रन्थों के पुष्ट प्रमाण भी दिये हैं। स्वामी दयानन्द सरस्वती द्वारा सत्यार्थप्रकाश एवं अन्य ग्रन्थों में प्रतिपादित विचारों की पुष्टि में लेखक ने विषय की प्रस्तुति बड़ी उत्तमता से की है। आवरण पृष्ठ को देखने से ज्ञात होता है कि लेखक का चिन्तन और लेखन इसी प्रकार के तथा हिन्दी साहित्य के विषयों पर पूरी पकड़ के साथ चलता रहा है। धार्मिक जिज्ञासुओं एवं विचारक पाठकों के लिए प्रस्तुत पुस्तक में प्रवाही भाषा में विषयों का उत्तमतापूर्वक प्रतिपादन किया गया है। अतः पढ़ने और चिन्तन के लिए उपयोगी है।

पुस्तक का मुद्रण और सज्जा उत्तम और मूल्य भी स्वल्प है इस पुस्तक के प्रकाशकों ने गत ६० वर्षों में आर्य समाज के उत्तम साहित्य के प्रकाशन की उत्तम परम्परा डाली है, जो बराबर चल रही है।

—ब्रह्मदत्त स्नातक
भारतीय सूचना सेवा (रिटा०)

सम्पादक के नाम पत्र

हिन्दुओं के साथ यह अन्याय क्यों

जो मुसलमान अमरीका या बरतानिया में रहते हैं उनको चार विवाह करने की छूट नहीं है। जबकि भारत में हर मुसलमान चार विवाह कर सकता है। जब अमरीका या बरतानिया में इनको ऐसा करने की आज्ञा नहीं है तो फिर यह आज्ञा भारत में क्यों प्रदान की गई है इसके अलावा, मलेशिया में ५१ प्रतिशत मुसलमान रहते हैं। फिर वहां पर राज्य धर्म इस्लाम है। जब मुसलमान ५१ प्रतिशत होकर भी अपना धर्म सब पर लागू कर सकते हैं तो हिन्दू ५१ प्रतिशत से भी ज्यादा है पर यहां पर हिन्दू धर्म राज्य धर्म के तौर पर क्यों नहीं अपनाया जाता।

यह सब कार्य मुसलमानों को खुश करने के लिए और उनके वोट प्राप्त करने के लिए किया जा रहा है। इससे हिन्दुओं के साथ घोर अन्याय किया जा रहा है।

—जयदेव गोयल, पत्रकार जीन्द

जब एक हिन्दू महिला ने १८ सिख बहनों को बचाया

अमृतसर, २० नवम्बर (क) एक साहसी हिन्दू महिला ने गत दिनों हुए उपद्रवों के दौरान फरीदाबाद में एक हिंसक भीड़ से जूझ कर १८ सिख बहनों की रक्षा की।

विश्व हिन्दू परिषद की कार्यकर्त्ता श्रीमती विमल शर्मा, ने जो गत दिवस फरीदाबाद से यहां वापस लौटीं, विश्व हिन्दू परिषद अमृतसर के संगठन मन्त्री श्री प्रकाशचन्द्र जोशी को इस घटना की जानकारी दी।

श्रीमती विमल शर्मा ने बताया कि गत २ नवम्बर को वे फरीदाबाद में बसेलवा कालोनी के जिस मकान में रह रही थीं उसे आकर एक क्रुद्ध भीड़ ने घेर लिया। उस मकान में ५ सिख परिवार उस समय शरण लिए हुए थे। जब भीड़ के कुछ लोगों ने मकान का दरवाजा खटखटाया तो वह (श्रीमती विमल शर्मा) बाहर निकल आई और उन्होंने कहा कि इस मकान में कोई नहीं है।

लेकिन इस बीच भीड़ का नेतृत्व करने वाले एक व्यक्ति ने जिद्द की व कहा कि उन्होंने यहां कुछ लोगों को छिपाया हुआ है जिस पर श्रीमती शर्मा ने कहा कि मैं एक हिन्दू महिला हूं और मैं हिन्दू व सिखों में कोई भेद नहीं समझती। इस पर श्रीमती शर्मा की उपद्रवियों के उस नेता के साथ गर्मा-गर्मी हो गई। जब उसने अधिक अभद्रता दिखाई तो श्रीमती शर्मा ने उसके मुंह पर एक थप्पड़ मार दिया। बाद में वह भीड़ वहां से चली गई।

उस भीड़ के जाने के उपरान्त श्रीमती शर्मा अन्दर आई और उन्होंने मकान के अन्दर शरण लेने वाली १८ सिख बहनों को ढाढस दिया कि, "मेरे रहते आपकी ओर कोई आंख उठा कर भी नहीं देख सकता।"

श्रीमती शर्मा ने ४ दिन तक उन बहनों को अपने यहां सुरक्षित रखा व बाद में उन्हें बल्लभगढ़ में उनके परिवार वालों के पास छोड़ कर आई। ये महिलायें सर्वश्री प्यारासिंह, गुरदयालसिंह और जागसिंह के परिवार की थीं।

जब श्रीमती शर्मा बल्लभगढ़ से लौटने लगीं तो उन सिख बहनों व भाइयों ने आंसू भरे स्वर में कहा, बहन जी आप हमारे लिये तो भगवान बन कर आई हैं जिसे हम जीवन भर नहीं भूल सकेंगे।"

श्रीमती शर्मा ने कहा कि अहसान कैसा यह तो मेरा कर्त्तव्य था।

(पृष्ठ १ का शेष)

स्मरण रहे सिखों को पंजाब चले जाने की अपील अमृतसर में [illegible] की बैठक में, जिसमें ५ मुख्यमन्त्री भी मौजूद थे, की गई थी।

दिल्ली के सिख उद्योगपतियों का शिष्टमण्डल एक कांग्रेस (इ) [illegible] के नेतृत्व में पिछले दिनों प्रधानमन्त्री श्री राजीव गांधी से मिला [illegible] प्रधानमन्त्री को ज्ञापन में भी अन्य बातों के अलावा यह धमकी दी गई थी कि हम नाजी जर्मनी में यहूदियों की तरह दिल्ली में नहीं रहेंगे और अपने कारखाने आदि लेकर पंजाब चले जाएंगे। प्रधानमन्त्री निवास में इन सिख उद्योगपतियों को धमकाने फुकाने पर धमकी वापस पैसा [illegible] दिया गया।

सम्पादकीय

विश्व धर्म्म सम्मेलन

हैरिसचौड (जर्मनी)

(१४-९-८४ से १८-९-८४)

सार्वदेशिक सभा के वरिष्ठ उप प्रधान श्री रामचन्द्र राव बन्देमातरम् ने इस यात्रा से लौटने के बाद इस सम्मेलन का विस्तृत विवरण प्रकाशित किया है जिसका हिन्दी रूपान्तर सार्वदेशिक के पाठकों के लाभार्थ धारावाहिक रूप में प्रस्तुत किया जाता है : —सम्पादक

(१)

'एक वर्ष से अधिक हुआ जबकि १९८३ के जुलाई मास में मेरी स्वामी दिव्यानन्द जी से भेंट हुई। यह भेंट अकस्मात ही हुई थी जिसकी न तो पूर्व से व्यवस्था की गई थी और न ही इसकी कल्पना ही थी। मुस्लिम पुनरुत्थानवादियों तथा भारत विरोधी अन्य तत्वों के तमिल नाडू में बढ़ते सांस्कृतिक आक्रमण की रोकथाम के लिए आर्य समाज की प्रवृत्तियों को बढ़ाने के लिए हम जो नया कार्यक्रम बनाना चाहते थे उस पर सभा प्रधान श्री लाला रामगोपाल जी के साथ विचार विनिमय करने के लिए मैं देहली गया हुआ था। वहां स्वामी जी तथा उनकी गृहस्थ धर्म के समय की पत्नी श्रीमती सुशीला जी को देखा।

लाला राम गोपाल जी ने निम्नलिखित शब्दों में मुझसे स्वामी जी का परिचय कराया—

"स्वामी दिव्यानन्द जी से मिलो जो बड़े कुशल संगठक है और अप्रवास में यति बन गए हैं इन्होंने अध्यात्म वाद के माध्यम से मानव समाज की सेवा का अपना जीवनोद्देश्य बनाया हुआ है।"

सहसा ही मैंने सिर उठाकर देखा। एक भव्य व्यक्तित्व पैर जमाए खड़ा था जिसकी ऊंचाई ६ फीट थी, शरीर सुडौल था, चेहरा बिल्कुल साफ था, सिर पर घने काले रंग के बाल गर्दन तक छाए हुए थे।

लाला जी शब्दों के प्रयोग में बड़े उदार हैं विशेषतः अपने मित्रों का दूसरों को परिचय देने में। मेरे सम्बन्ध में स्वामी दिव्यानन्द जी को उन्होंने बहुत सी बातें बताईं अप्रासंगिक होने के कारण मैं उनका उल्लेख नहीं करता।

इस भेंट के एक वर्ष के बाद २१ जुलाई १९८४ को मुझे स्वामी दिव्यानन्द जी का एक पत्र मिला। उन्होंने यह पत्र मुझे पश्चिमी जर्मनी के हैरिस चौड से भेजा था। पत्र हिन्दी में था और उन्होंने स्वयं लिखा था। उसमें उन्होंने हैरिस चौड में होने वाली विश्व के मुख्य २ धर्मों की कान्फ्रेंस में सम्मिलित होने का निमन्त्रण दिया और साथ ही इन्डो जर्मन फ्रेंडशिप सोसाइटी (पश्चिमी जर्मनी) के प्रेसीडेन्ट श्री गरलिन्डे ग्लाकनर (Gerlinde Glockner) के हस्ताक्षर युक्त आयोजन फार्म भी भेजा।

स्वामी दिव्यानन्द जी ने श्री रामगोपाल जी से फोन पर बात चीत की और पूर्व से भेजे गए निमन्त्रण पत्र का स्मरण कराते हुए कान्फ्रेंस में भाग लेने साथ ही निमन्त्रण को स्वीकार करने के लिए मुझ पर जोर डालने के लिए कहा। श्री लाला जी ने मुझसे फोन पर बात चीत की और मुझे निमन्त्रण स्वीकार करना ही पड़ा।

मुझे पता नहीं है कि लाला जी ने कान्फ्रेंस में भाग लेने की स्वामी जी की प्रार्थना को क्योंकर स्वीकार किया क्योंकि उन्हें भारत में अनेक कार्य करने होते हैं। इसके अतिरिक्त इससे पूर्व बावजूद मित्रों के परामर्श मनौती और आग्रह पर भी उन्होंने भारत से बाहर पैर धरना स्वीकार नहीं किया था। बताया गया कि अन्तिम क्षण तक वे अन्तिम निश्चय नहीं कर पाए थे, परन्तु जब मैं श्री वी. किशनलाल (पूर्व मेयर हैदराबाद) के साथ ११ सितम्बर को देहली पहुंचा तो लाला जी मुझे इंकार नहीं कर सके।

१४ सितम्बर को हम हैरिस चौड की यात्रा के लिए तय्यार हो गए। लाला जी तथा वी. किशनलाल जी के अलावा उस वायुयान से साथ में जाने वालों में श्री डा० फतहसिंह (वैदिक रिसर्च स्कालर) महामंडलेश्वर १०८ श्री व्यासानन्द महाराज (गीताश्रम ऋषिकेश) तथा दो अन्य सज्जन थे। वीसा की देर के कारण अन्य कई सज्जन आ नहीं सके थे।

जो लोग नहीं आ सके थे उनमें से कईयों ने बताया कि 'पश्चिमी जर्मनी का राजदूतावास गेरुआ वस्त्रधारी संन्यासियों की टुकड़ियों के पश्चिमी जर्मनी जाने के विरुद्ध देख पड़ा था।'

रामानन्द ने कहा "हमारी लाल पोशाक विभीषिका के सदृश उन्हें भयभीत करती है।" (क्रमशः)

१० पुलिस कर्मचारी पुरस्कृत जिन्होंने जान की बाजी लगा दी

राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह द्वारा उत्कृष्ट वीरता, अनुकरणीय साहस, दृढ़ निश्चय और उच्चकोटि की कर्तव्य परायणता के लिए १० पुलिस कर्मियों को राष्ट्रपति पुलिस पदक प्रदान किए जा रहे हैं। इनमें कलकत्ता पोर्ट डिवीजन के पुलिस उप आयुक्त वी. के. मेहता और वहीं के कांस्टेबल मुख्त्यार अली शामिल हैं। स्व. मेहता कलकत्ता के गार्डन रीच पुलिस स्टेशन क्षेत्र मे हुए दंगों में शहीद हो गए थे। कांस्टेबल मुख्त्यार अली भी इन्हीं के साथ शहीद हो गए थे।

गत १८ मार्च को जब इन्हें दंगों की जानकारी मिली तो यह पुलिस दल के साथ घटना स्थल पर पहुंचे। दंगे में बम और शस्त्रों का खुलकर प्रयोग हो रहा था। लोगों की जान माल की रक्षा करते हुए यह दोनों हिंसक भीड़ के शिकार हो गये।

दिल्ली पुलिस के हैड कांस्टेबल श्री कालीचरण २१ नवम्बर १९८३ को राजधानी के विशाल सिनेमा पर तैनात था। तभी उसने देखा कि सिनेमा के कैशियर पर दो सशस्त्र लोगों द्वारा हमला किया जा रहा है। कालीचरण ने अपनी जान की परवा किए बिना निहत्थे ही गुण्डों से मुकाबला किया और एक बड़ी घटना को रोक दिया।

चौहान के खिलाफ ब्रिटेन

यह सन्तोष की बात है कि तथाकथित खालिस्तान के स्वयंभू नेता जगजीत सिंह चौहान का कद ब्रिटेन के सामने साफ होगया है। इन्दिरा गांधी की हत्या के बाद ब्रितानी प्रधानमन्त्री श्रीमती मार्गरेट थैचरने तो अपनी रूंधी हुई आवाज में यह कहा ही था कि ब्रिटेन में भारत के खिलाफ सक्रिय आतंकवादियों की गतिविधियों पर कड़ी नजर रखी जाएगी, अब ब्रिटेन की प्रतिपक्षी लेबर पार्टी के एक नेता लार्ड जान हाथ ने भी जगजीतसिंह चौहान के खिलाफ आंदोलन छेड़ने का फैसला लिया है। जान हाथ का यह फैसला मारग्रेट थैचरके आश्वासन से बड़ी चीज है। कारण यह है कि श्रीमती थैचर तो फिर भी आतंकवादियों के खिलाफ कोई कदम उठाते वक्त अपने कानूनों की गुलाम हैं लेकिन आतंकवादियोंके खिलाफ अंग्रेजी-जनमत बनाने के लिए हाथ किसी भी तरह की बन्दिशों में नहीं बंधे हैं। जनमत यदि उग्र होगा तो थैचर के हाथ मजबूत होंगे।

श्री हाथ का यह फैसला आतंकवाद की एक और नृशंस पृष्ठभूमिमें सामने आया है। बम्बई में ब्रिटेनके उप उच्चायुक्त श्री नौरिस की हत्या ने यह तथ्य उजागर किया है कि आतंकवाद अब समूची दुनिया में तेजी से फैल रहा है और पागल लोग यदि किसी देश के खिलाफ उनके देश में सक्रिय हो सकते हैं तो उनके देश के खिलाफ भी कोई पागल हत्यारा अपना काम कर सकता है। आतंकवाद के परों को कतरने के लिए यदि वे जनमत जागृत करने की बात सोच रहे हैं तो इसके पीछे अपने तर्क और अपने सच भी हैं। यों भी सिर्फ सरकार के स्तर पर आतंकवाद के पर कतरना सम्भव नहीं है। यह किसी से छिपा नहीं है कि ब्रिटेन में आयरिश गुरिल्लों के आन्दोलन को अमेरिका में रहने वाले अमीर आयरिशों से न केवल आर्थिक बल्कि नैतिक समर्थन भी मिलता है। ब्रिटेन और अमेरिकाकी दोस्ती भी प्रगाढ़ है। दोस्तीके लिहाज से तो अमेरिका को करना यह चाहिए कि वह अपने यहांके अमीर आयरिशों के पेंच थोड़ा कस दे। जाहिर है जिस तरह रेगन के हाथ नागरिक स्वतन्त्रताओं

सामयिक चर्चा–

उन्होंने कहा था––

आर्यसमाज साम्प्रदायिक संस्था नहीं है

—इन्दिरा गांधी

"मैं नहीं जानती कि मैं आर्यसमाज की तुलना इत्तिहादुल मुसलमीन के साथ कर सकती थी। (आंध्र प्रदेश के दौरे में हैदराबाद में दिए भाषण में।"

"आर्य समाज ने अच्छा कार्य किया है और मुझे आशा है कि कोई भी व्यक्ति राजनैतिक और धार्मिक उद्देश्यों के लिए उसका दोहन न करेगा। यह साम्प्रदायिक संगठन नहीं है।"

"हैदराबाद में प्रचारित सम्प्रदाय वादी पत्रों की गलत खबरों के खण्डन में सभा मन्त्री को प्राप्त पत्र पर आधारित फरवरी १९६२

जब अमेरिका में नृत्य करने से इन्कार किया।

जब श्रीमती इन्दिरा गांधी अमेरिका के राजकीय दौरे पर गई थीं तो वहां के कुछेक राज्याधिकारियों ने उनसे नृत्य में शामिल होने की मांग की। उन्होंने इस मांग को यह कहकर अस्वीकार कर दिया कि इससे मेरे देशवासियों को बुरा लगता है।"

उल्लेखनीय है कि एक बार वे गणतन्त्र दिवस के एक समारोह में हुए भंगड़ा नाच में शामिल हो गई थी।

इसका सार्वदेशिक सभा प्रधान श्री लाला रामगोपाल जी शालवाले ने एक पत्र द्वारा कड़ा विरोध किया।

श्रीमती इन्दिरा गांधी ने इसका कोई उत्तर न दिया परन्तु अमेरिका की घटना का उल्लेख करते हुए उनके निजी सचिव ने उन्हें बताया कि इस इन्कार के पीछे आपका ही विरोध था।

वेद प्रेम

राष्ट्रीय एकता तथा साम्प्रदायिकता के विषय में अशोक महता कमेटी के साथ सार्वदेशिक सभा के प्रतिनिधि श्री घनश्यामसिंह जी गुप्त तथा श्री रामगोपाल जी शालवाले का वार्त्तालाप (२२-८-१९६२) हो रहा था। एक सदस्य श्री मुजीब ने पूछा कि आप लोगों ने अपने मेमोरंडम में यह लिखा है कि शिक्षा संस्थानों में किसी धर्म का साहित्य न पढ़ाया जाय परन्तु साथ ही आपने लिखा है कि ऋग्वेद की शिक्षाओं को पाठविधि में शामिल किया जाय। इसकी क्या संगति है? क्योंकि ऋग्वेद तो एक विशेष धर्म की पुस्तक है। इसे आप सब सम्प्रदायों के लिए कैसे स्वीकार करेंगे?

श्री गुप्त जी तथा लाला जी ज्यों ही उत्तर देने लगे त्यों ही सदस्या श्रीमती इन्दिरा गांधी ने मुजीब महाशय को कहा:—

"वेद किसी मजहब की पुस्तक नहीं है। इनमें सार्वभौम और सार्वकालिक शिक्षाएं हैं। यह तो उस समय मौजूद था जब कि कोई भी मजहब वजूद (अस्तित्व) में न था। इसमें कोई साम्प्रदायिक शिक्षा नहीं है। वेदों को मजहबी ग्रन्थ मानना गलत है।"

राष्ट्र संघ

श्रीमती इन्दिरा गांधी राष्ट्र संघ में दिए अपने भाषणों को वेद मन्त्र उच्चारण के साथ शुरु किया करती थीं और सभा प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले द्वारा दीगई बधाइयों और प्रोत्साहन को कृतज्ञभाव में स्वीकार किया करती थीं। (शेष फिर)

के कारण बंधे हैं, वैसे ही मार्गरेट थैचर भी तथाकथित खालिस्तानियों पर बहुत अधिक अंकुश लगाने में मजबूर हैं।

लेकिन जगजीतसिंह चौहान ब्रिटेनका नागरिक नहीं है, इसलिए यह कहा जा सकता है कि यदि ब्रितानी-प्रशासन चाहता तो चौहान के पेच कसे जा सकते थे। इन्दिरा गांधी की हत्या तक उसने ये पेच नहीं ही कसे। अच्छा है भारत-ब्रिटेन की दोस्ती का सम्मान करते हुए ब्रिटेन अब यह काम करे जिसके लिए जनमत भी जागृत होरहा है। थोड़ी-सी जिम्मेदारी बी.बी.सी. भी निभा दे तो न केवल भारत का बल्कि आतंकवाद के खिलाफ मुहिम छेड़ने वाले लोगों का लक्ष्य भी सफल होगा।

ये विचार नवभारत ने अपने सम्पादकीय में प्रकट किए हैं।

उन्होंने कहा था

"आर्य समाज और उसकी संस्थाओं के साथ महाराष्ट्र तथा बम्बई में मेरा सम्पर्क रहा है। मैं उसके कामों तथा महान् सुधारक महर्षि दयानन्द के कार्यों से भली भांति परिचित हूं। मैं उन्हें आधुनिक भारत के निर्मात्ताओं में से एक मानता हूं।"

ये उद्गार स्व० श्री यशवन्तराव बलवन्तराव चौहान (निधन २५-११-८४ आयु ७१) को रामलीला मैदान नई दिल्ली में २-१२-६२ को आयोजित एक विशाल अभिनन्दन समारोह में प्रति रक्षामन्त्री के रूप में प्रकट किए थे जब कि भारत चीन युद्ध के दौरान उन्हें प्रधानमन्त्री श्री पं० जवाहरलाल नेहरू ने रक्षामन्त्री मेनन को उनके आपत्ति एवं सन्देह जनक रवैए की तीखी प्रतिक्रिया से विवश होने पर अपदस्थ करके देश की सुरक्षा का कार्य सौंपा था। उन दिनों वे महाराष्ट्र के मुख्यमन्त्री थे।

यह आयोजन दिल्ली की लगभग १३५ आर्य समाजों की आर्य केन्द्रीय सभा की ओर से हुआ था और तत्कालीन प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले ने अभिनन्दन पत्र पढ़कर प्रथम किस्त के रूप में ५१०००) राष्ट्ररक्षा कोष के लिए अर्पण किए थे। साथ ही १००८ ग्राम स्वर्ण १ गिन्नी १२९ ग्राम चांदी और ४०० ऊनी वस्त्र भी भेंट किए गए थे। इस अवसर पर आर्यसमाज देहरादून की ओर से १००० ग्राम (लगभग २१ हजार रुपए) की सोने की तलवार भी भेंट की गई थी तथा समाज के प्रधान श्री ओबेराय ने समाज की ओर से ५१००) भी भेंट किए थे।

जब सार्वदेशिक सभा प्रधान श्री स्वामी ध्रुवानन्द जी उन्हें सभा की ओर से पुष्पहार पहनाने लगे तो श्री चह्वाण खड़े हो गए थे और पुष्पहार पहनने पर स्वामी जी का आशीर्वाद मांगा था।

प्रधानमन्त्री की सलाह

प्रधान मन्त्री श्री राजीव गांधी ने सिखों को सलाह दी है कि वे अन्य समुदायों के लोगों के साथ मिलकर हिंसा, आतंक और अलगाववाद को दबाने के लिए दृढ़ कदम उठाएं। यह सलाह उस समय दी गई जब राजधानी के कुछ सिख उद्योगपति और व्यापारी प्रधानमन्त्री से हाल की हिंसक घटनाओं के बाद मिलने के लिए गये थे। हमारी समझ में यह सलाह अत्यन्त सामयिक है। सिख समाज कोइस पर ठंडे दिमाग से विचार करना चाहिए।

अगर सिख समाज जागरुक होता तो पंजाब में हिंसा और आतंक का नंगा नाच कभी नहीं होता। बसों से निर्दोष व्यक्तियों को उतार कर गोलियों से भून दिया गया, बैंक लूटे गये, रेलवे लाइनें उखाड़ दी गईं और भाखड़ा नहर में तोड़ फोड़ की गई। हम पूछना चाहते हैं कि कितने सिख नेताओं और संगठनों ने इन सब बातों की खुलकर निन्दा की। विदेशी शक्तियों के इशारे पर "खालिस्तान" बनाने की साजिश की गई। क्यों नहीं इस साजिश का भण्डा फोड़ किया? धार्मिक स्थानों को अपराधियों, तस्करों और राष्ट्रविरोधी तत्वों का अड्डा क्यों बनने दिया गया? हम ऐसा मानते है कि धर्म ग्रन्थी और बुद्धिजीवी दोनों पंजाब में हिंसा और नफरत के विरुद्ध सशक्त आवाज उठाने में विफल रहे हैं। अगर उग्रवादियों के खिलाफ जन आगरण पैदा किया जाता तो भारत को आज यह दुर्दिन नहीं देखना पड़ता। पंजाब में जो विषवमन हुआ उसी की बदौलत इन्दिरा जी की हत्या हुई।

अफसोस तो इस बात का है कि इन्दिरा जी की इस दुःखद घटना के बाद भी कई महत्व पूर्ण सिख संगठनों और नेताओं ने शोक प्रस्ताव पास कर श्रद्धांजलि अर्पित नहीं की। इतना ही नहीं, कुछ लोगों ने मिठाइयां बांटी और खुशियां मनाईं। अमृतसर के एक धर्मग्रन्थी ने तो यह बयान दे डाला कि उसने इन्दिराजी की हत्या पर कोई शोक प्रकट नहीं किया है। इन सब बातों ने आग में घी का काम किया।

इन तथ्यों की ओर ध्यान दिलाने का उद्देश्य पूरी समस्या को सही संदर्भ में रखना है। श्रीमती गांधी की हत्या के बाद जो हिंसक घटनाएं हुईं उनका हमने जोरदार शब्दों में निन्दा की है।

कुछ शरारती तत्वों की हरकतों की वजह से अनेक निर्दोष व्यक्तियों की

(शेष पृष्ठ १२ पर)

विज्ञान और धर्म

लेखक : डा० रामचरण मेहरोत्रा

[प्रोफेसर, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर]

विज्ञान और धर्म के पारस्परिक सम्बन्धों अथवा विरोधाभासों का विश्लेषण अब केवल वैज्ञानिकों और दार्शनिकों के लिए एक रोचक तार्किक विषय ही नहीं रह गया है, वरन् विज्ञान तथा तकनीक से लाभान्वित और धर्म की मान्यताओं और रूढ़ियों से प्रभावित अथवा जकड़े हुए मानव के मन में यह सीधा प्रश्न अक्सर उठता रहता है कि क्या विज्ञान के कार्यकलाप और धर्म का अनुसरण परस्पर एक दूसरे के पूरक बन कर मानव समाज को समृद्धि के के साथ ही शांति नहीं दे सकते।

विज्ञान और धर्म की विचार तथा कार्यपद्धतियों में बाह्य रूप से चाहे जितना अन्तर हो, परन्तु विज्ञान के एक विद्यार्थी और शोधक के रूप में मुझे विज्ञान और धर्म की आन्तरिक गहराइयों में कोई मूलभूत भेद नहीं दिखलाई देता। विज्ञान के बारे में कुछ भ्रान्तिपूर्ण मत रखने वाले भी यह अस्वीकार नहीं कर सकते कि विज्ञान सत्य और ज्ञान की खोज पर टिका है। नैतिकता तथा धर्म की भी सब पद्धतियां इन्हीं दोनों को अपना आदर्श मानती है। पिछले ५०-६० वर्षों में विज्ञान के कुछ प्रमुख दार्शनिकों जैसे रसेल तथा व्हाइट हेट ने विज्ञानके सम्बन्ध में तनिक प्रत्यक्षवाद (Logical Positivism) प्रतिपादित करने का प्रयत्न किया है। इस सिद्धांत के अनुसार वैज्ञानिक सत्य वहीं है, जो प्रयोग की कसौटी या प्रत्यक्ष प्रमाण द्वारा ठीक सिद्ध किया जा सके। यद्यपि यह सिद्धान्त लगभग सभी स्थितियों में लागू होता है, परन्तु इसकी भी सीमाएं हैं, जैसा कि नोबुल पुरस्कार विजेता हाइजेनबर्ग के 'अनिश्चयता सिद्धांत' से स्पष्ट हुआ है। इस सिद्धांत के अनुसार किसी सूक्ष्म तथ्य को नापने वाली सूक्ष्मतम विधियां तथ्य को इतना प्रभावित या परिवर्तित कर देती हैं जिससे उसका पूर्ण निश्चयता से निर्धारण असम्भव हो जाता है। सन् १९८४ में ही प्रसिद्ध वैज्ञानिक साप्ताहिक पत्रिका 'नेचर' में उसके सम्पादक मैडाक्स ने हाइजेनबर्ग सिद्धान्त की व्याख्या करते हुए इसका अन्य दिशाओं में भी व्यापक रूप दर्शाया है। 'इन खोजों से वैज्ञानिक को विज्ञान की आधारभूत सीमाओं और अपने प्रयासों की अनिश्चयता या अपूर्णता (imperfection) का आभास मिलता रहता है।' इस अपूर्णता या अनिश्चयता की सीमा को कम करके अधिक से अधिक पूर्णता की ओर लाना ही वैज्ञानिक का सतत प्रयत्न है। सच तो यह है कि उसका यह भौतिक निष्कर्ष कि सूक्ष्मतम कसौटी पर स्रष्टा इसको पूर्णतया (With perfection) तभी देख सकता है जब स्वयं उसमें विलीन हो जाए, किसी उच्चतम धर्म का चरम सिद्धांत प्रतीत होता है जिसके अनुसार बिना उस 'परमशक्ति' में विलय हुए पूर्णता तथा मोक्ष नहीं प्राप्त की जा सकती।

इस दार्शनिक अपूर्णता की अनुभूति के अतिरिक्त अपने नित्य के प्रयासों में भी वैज्ञानिक साधारणतया अपनी क्षुद्रता और सीमित शक्ति से अपरिचित नहीं रहता, तभी तो न्यूटन ऐसी प्रकाण्ड बुद्धि वाले वैज्ञानिक ने भी माना था कि ज्ञान का सागर तो इतना अथाह है और उसके ऐसे वैज्ञानिक तो इस अथाह सागर के पैरों का अनावरण करने से बहुत दूर केवल किनारे पर पड़े कुछ पत्थरों की गिनती कर रहे हैं।

उपर्युक्त विवेचन से शायद यह तो स्पष्ट हो जाता है कि विज्ञान तथा धर्म के अन्तिम लक्ष्य 'सत्य' में तो कोई विशेष आधारभूत अन्तर नहीं है और विज्ञान भी धार्मिक प्रवृत्तियों की ही भांति मानव समाज को सर्वमान्य कुछ गुणों जैसे अपनी क्षुद्रता, ईमानदारी, सहकर्मियों के प्रति सहिष्णुता की ओर प्रेरित करता है।

विज्ञान ने मानव को सुख और भौतिक आनन्द के साधनों के साथ ही साथ कुछ अंश तक की विवेचन-क्षमता या विवेक शक्ति भी दी है, जिससे वह तर्क की कसौटी पर अपने कार्य कलाप को भली भांति परख सकता है। परन्तु इस सब बाह्य वैभव और विवेक शक्ति के बाद भी उसके मन के कुछ आन्तरिक प्रश्न अधूरे ही रह जाते हैं। खुशहाली और आराम के क्षणों से ऊबकर मनुष्य के मन में रह रह कर इस प्रकार के प्रश्न उठते रहते हैं कि जीवन का ध्येय तथा सम्पूर्ति केवल उसी प्रकार के बाह्य सुख तथा आनन्द तक ही सीमित है। जन साधारण ही में नहीं, उच्चतम कोटि के वैज्ञानिकों के मन में भी इसी प्रकार का कौतूहल प्रायः विद्यमान रहता है। नोबुल पुरस्कार विजेता श्रोडिन्जर (Shrodingr) ने इसी प्रकार के प्रश्न १९५६ में कैम्ब्रिज में दिए गए अपने प्रसिद्ध टार्नर नाम के भाषणों में उठाए थे, और उन्होंने यह कौतूहल व्यक्त किया था कि क्या विज्ञान 'परलोक' (The other world) अथवा 'मृत्यु के बाद के जीवन' ऐसे प्रश्नों पर कुछ प्रकाश डालने में समर्थ है! अपनी प्रसिद्ध पुस्तक (My view of the other world) में श्रोडिन्जर ने इस प्रकार के प्रश्नों की व्याख्या करते हुए कहा है कि यह तो अलग बात है कि हम यह स्वीकार करें कि इस प्रकार के प्रश्नों का उत्तर विज्ञान की क्षमता के परे हैं परन्तु यह मानना कि ऐसे प्रश्न या तो बे बुनियाद हैं या निरर्थक हैं, यथार्थता से मुंह छिपाने जैसी बात होगी।

एक दूसरे रूप में न्यूयार्क के एक स्कूल विद्यार्थी ने ऐसा ही एक प्रश्न प्रसिद्ध वैज्ञानिक आइनस्टाइन को लिखे अपने एक पत्र में पूंछा था। प्रश्न

गुरुमन्त्र

ओ३म् । भूर्भुवः स्वः । तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि । धियो यो नः प्रचोदयात् ॥ य० ३६।३

हे (भूः) सत्यस्वरूप ! प्राण ! सब जगत् के जीवनाधार ! प्राण से भी प्रिय ! स्वयंभू ! (भुवः) सर्वज्ञ ! अपान ! सब दुःखों से रहित ! जीवों के दुःख दूर करने वाले ! (स्वः) आनन्द ! व्यान ! नानाविध जगत् में व्यापक होकर सब को धारण करने वाले, सब की आनन्दसाधन एवं आनन्द देने वाले परमेश्वर ! (सवितुः) सर्व जगत् के उत्पादक, सर्वैश्वर्य-प्रदाता, सकल संसार के शासक, सब शुभ प्रेरणा देने वाले (देवस्य) सर्व-सुख-प्रदाता, कमनीय, दिव्यगुणयुक्त आप प्रभु के (वरेण्यम्) स्वीकार करने योग्य अति श्रेष्ठ (तत्) उस जगत्प्रसिद्ध (भर्गः) शुद्धस्वरूप, पवित्रकारक, चैतन्यमय, पापनाशक तेज को (धीमहि) हम धारण करें तथा ध्यान करें, (यः) जो (नः) हमारी (धियः) बुद्धियों को (प्रचोदयात्) शुभ प्रेरणा करे, अर्थात् बुरे कर्मों से हटा कर अच्छे कर्मों में प्रवृत्त करे।

हे परमेश्वर ! हे सच्चिदानन्दानन्दस्वरूप ! हे नित्य-शुद्ध-बुद्ध-मुक्त-स्वभाव ! हे अज ! निरंजन ! निर्विकार ! हे सर्वान्तर्यामिन् ! सर्वाधार जगत्पते ! सकल जगत् के उत्पादक ! हे अनादे ! विश्वम्भर ! सर्वव्यापिन् ! हे करुणावरुणालय ! हे निराकार ! सर्वशक्तिमान् ! न्यायकारिन् ! समस्त संसार की सत्ता के आदि मूल ! चेतनों के चेतन ! सर्वज्ञ ! आनन्दघन भगवन् क्लेशापरामृष्ठ ! कमनीय ! प्रभो ! जहां आपका जाज्वल्यमान तेज पापियों को रुलाता है, वहां आपके भक्तों, आराधकों, उपासकों के लिये वह आनन्दप्रदाता है, उनके लिए वही एक प्राप्त करने की वस्तु है, उनके ज्ञान विज्ञान धारणा ध्यान की वृद्धि कर के उनके सब पाप सन्ताप नाश कर देता है। परमाराध्य परमगुरो ! तू सदा पवित्र और उन्नतिकारक प्रेरणा किया करता है, हम तेरी शरण आये हैं, हमें भी पवित्र प्रेरणा दे। तू ही सब को सुमार्ग दिखाता है, हमें भी सुमार्ग दिखला। हमें ऐसी प्रेरणा कर कि जिससे हम कुमार्ग से हट कर सुमार्ग पर आरूढ़ हों, कुकाम से निवृत होकर सुकाम में प्रवृत्त हों, कुव्यसनों से विरक्त होकर सत्य कार्यों में संरक्त हों, सांसारिक कामनाओं को चित्त से हटा कर तेरे तेज को धारण करें, उसका ध्यान करें, ताकि हमारे सारे पापताप नष्ट हो जायें, कुआवरण जल जायें, मल धुल जायें, विक्षेप का संक्षेप होते होते सर्वथा प्रलेप हो जाये।

हे सकल-शुभ-विधातः ! करुणानिधान ! कृपालो ! दयालो ! हम पर ऐसी कृपा और अनुग्रह कीजिये, कि हमें सदा तेरी प्रेरणा मिलती रहे, ताकि तेरी उस प्रेरणा से प्रेरित हुए हुए सदा तेरी आज्ञा का पालन करते हुए तेरे वरद पुत्र बन सकें। प्रभो ! भूयोभूयः तुझसे यही प्रार्थना है।

दक्षिण-पूर्वी एशिया की सांस्कृतिक तीर्थ यात्रा

—श्री डा० सत्यकेतु विद्यालंकार

(गतांक से आगे)

सारे महाचैत्य में ऐसी ४३२ मूर्तियां हैं। हमारी मण्डली में अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति के चित्रकार श्री वेन्द्रे भी थे। वे इन मूर्तियों और रूपावलियों को देखकर इतने अभिभूत हो गये, कि उन्हें न अपना ध्यान रहा और न समय का। वे एक टक हो इस अद्भुत महाचैत्य और उसकी उत्कृष्ट कला को देखते रह गये।

जोग जकार्ता के क्षेत्र में कितने ही प्राचीन हिन्दू मन्दिर भी विद्यमान हैं। प्राम्बनन का शिव महादेव का मन्दिर इनमें सबसे अधिक महत्व का है। यह मन्दिर एक ऊंचे विशाल चबूतरे पर खड़ा है और इसके चारों ओर चार द्वार हैं। मन्दिर की दीवारों को को अलंकृत करने के लिये प्रस्तरों पर पत्र-पुष्पों, आदि की आकृतियों को उत्कीर्ण किया गया है और रामायण की सम्पूर्णकथा रूपावलियों के रूप में अंकित की गई है। पौराणिक देवी-देवताओंकी भी कितनी ही मूर्तियां मन्दिर की दीवारों के साथ निर्मित हैं। शिव-महादेव के इस विशाल एवं गगनचुम्बी मन्दिर के दोनों ओर दो अन्य मन्दिर हैं और उनसे कुछ हट कर छोटे-छोटे मन्दिरों की शृंखला ने चारों ओर से उन्हें घेरा हुआ है। इस प्रकार मुख्य मन्दिर के अतिरिक्त जो अन्य मन्दिर खण्डित या अखण्डित दशा में वहां विद्यमान हैं उन की संख्या २४० है। हम उस समय की कल्पना कर रोमांचित हो गये जबकि ये सब हिन्दू मन्दिर पूर्ण व अखण्डित दशा में थे, और जब इनमें पूजा पाठ के लिये श्रद्धालु हिन्दुओं की भीड़ रहा करती थी। उस समय भगवान् शिव-महादेव के विशाल मन्दिर का यह सुविस्तृत परिसर कितना भव्य एवं आकर्षक होगा, इसकी कल्पना से ही चित्त में एक सात्विक भावना तथा श्रद्धा का प्रादुर्भाव होने लगता है।

शिव-महादेव के विशाल मन्दिर के अतिरिक्त अन्य भी बहुत से मन्दिर प्राम्बनन के क्षेत्र में हैं। इनमें चण्डी कालसन, चण्डीसरी, चण्डी मेन्दुत और चण्डी सर जोग्रह के मन्दिर उल्लेखनीय हैं। हमने इन पर भी दृष्टिपात किया और यह तथ्य स्पष्ट रूप से हमारे सम्मुख आ गया कि अब से कुछ सदी पूर्व तक सम्पूर्ण जावा में हिन्दू धर्म का प्रचार था। अब जावा के बहुसंख्यक निवासी इस्लाम को अपना चुके हैं पर उन्होंने अपनी संस्कृति का परित्याग नहीं किया है। प्राम्बनन के मन्दिरों का दर्शन करते हुए हमने एक कृषक परिवार से बातचीत की। पूछने पर ज्ञात हुआ कि वे सब मुसलमान हैं पर उस परिवार की गृहणी का नाम सुश्री था और सन्तान के दुष्यन्त तथा सुकीर्ति। जावा में सर्वत्र यही दशा है। हम चाहते थे कि पूर्वी जावा भी जायें। दसवीं सदी के द्वितीय चरणमें इण्डोनेसिया की राजशक्ति पूर्वी जावा में केन्द्रित होनी प्रारम्भ हो चुकी थी। वहां व विजयोत्तुंग एलंगदेव कृतनगर आदि अनेक ऐसे राजा हुए जिनके प्रताप के कारण जावा का बहुत उत्कर्ष हुआ। ये सब राजा हिन्दू धर्म के अनुयायी थे और इन्होंने बहुत-से भव्य व विशाल मन्दिरों का निर्माण कराया था। पूर्वी जावा के इन मन्दिरों में सुरा-बाया के मन्दिर सब से प्रसिद्ध हैं। समय के अभाव से हम इनका अवलोकन नहीं कर सके। हम शीघ्र से शीघ्र बाली द्वीप जाना चाहते थे जो वर्तमान समय में भी वस्तुतः एक हिन्दू देश है। २८ सितंबर को तीसरे पहर हम बाली की राजधानी डेनपसार पहुंच गये थे।

जब हम हवाई जहाज द्वारा बाली पहुंचे, तो एक अद्भुत दृश्य देखने में आया। हवाई अड्डे पर वाद्य संगीत का समां बंधा था, और दो दर्जन के लगभग गायकों और गायिकाओं द्वारा मंगलगान गाया जा रहा था। हवाई जहाज से उतरते हुए यात्रियों की ओर गायिकाओं की यह मण्डली आगे बढ़ने लगी।

सबके हाथों में पुष्प मालाएं तथा फूलों के गुच्छे थे। हम सोच रहे थे कि इन्डोनीसिया के कोई मन्त्री या उच्च प्रशासक बाली आये हैं जिनके स्वागत में यह आयोजन किया गया है। पर हमारे आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा जबकि स्वागत के लिये आगे बढ़ती नृत्यांगनाएं हमारे सम्मुख रुक गईं। वे हमारी मण्डली के नेता के गले में पुष्प माला डालना चाहती थीं। आर्य समाज के मूर्धन्य नेता स्वामी ओमानन्द सरस्वती हमारे साथ थे। मेरे संकेत पर जब तक एक नृत्याङ्गना उनके गले में माला डालने लगी तो स्वामी जी को संकोच हुआ। पर मेरे अनुरोध पर उन्होंने इस औपचारिक सम्मान को स्वीकार कर लिया। अन्य सब यात्रियों को पुष्प गुच्छ समर्पित किये गये। इन्हें बाली की परम्परागत कला के अनुसार अत्यन्त सुन्दर रूप से बनाया गया था। हमारे इस शानदार स्वागत का आयोजन टेवल ट्रस्ट द्वारा किया गया था।

(क्रमशः)

था कि 'क्या वैज्ञानिक भी प्रार्थना करते हैं, और यदि हां, तो वे किस लिए प्रार्थना करते हैं। आइनस्टाइन ने २४ जनवरी १९३६ को अपने एक पत्र में इस प्रश्न का उत्तर इस भांति दिया था :—

"वैज्ञानिक खोज इस विश्वास पर आधारित है कि संसार की प्रत्येक घटना प्राकृतिक नियमों के अनुसार ही होती है जो मानव कार्य-कलापों को भी नियन्त्रित करते हैं। अतएव, वैज्ञानिकों को यह मानना कठिन होगा कि प्रार्थनाओं से भौतिक घटना क्रम पर कुछ प्रभाव पड़ सकता है।"

"तथापि यह मानना पड़ता है कि इन नियमों का हमारा ज्ञान बहुत अपूर्ण है और प्रकृति के समस्त पहलुओं को नियन्त्रित करने वाले नियमों में विश्वास भी एक आस्था (Faith) के ही समान है। वैज्ञानिक खोजों की सफलता से इस आस्था की पुष्टि अवश्य मिली है।"

"फिर भी विज्ञान की खोजों में लगे प्रत्येक वैज्ञानिक को यह आभास अवश्य मिलता है कि ब्रह्माण्ड को नियन्त्रित करने वाले नियमों से परे भी एक शक्ति है, जिसकी तुलना में समस्त मानव-क्षमताएं अत्यन्त तुच्छ प्रतीत होती हैं। इस प्रकार वैज्ञानिक कार्य-कलाप एक विशेष प्रकार के धार्मिक भाव को जन्म देते हैं, जो अन्य साधारण व्यक्तियों की धार्मिकता से भिन्न अवश्य होती है।"

बात लौट फिर कर फिर वहीं आ जाती है। मानव प्रयासों में 'विज्ञान की उपलब्धियां' उसकी बहुत बड़ी सफलता है, परन्तु क्या यह पर्याप्त है। उच्च से उच्च कोटि के वैज्ञानिक जीवन भर विज्ञान की उपासना के बाद भी इसी निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि जो 'ज्ञान' विज्ञान की सीमाओं से भी परे है, उसकी अनुभूति केवल 'विश्वास तथा आस्था' से हो सकती है।

आइनस्टाइन के एक परममित्र मैक्स बोर्न ने लिखा है कि आइनस्टाइन को परमेश्वर में तो विश्वास नहीं था, परन्तु वह धार्मिक आस्थाओं को मूर्खता का चिन्ह नहीं मानते थे और न वह यह मानते थे कि अनास्था ही कोई बुद्धि की निशानी है।" 'विज्ञान और धर्म' शीर्षक अपने वक्तव्य में आइनस्टाइन ने स्वयं ही लिखा था :—

"धर्म के बिना विज्ञान, अपंग है, विज्ञान के बिना धर्म दिशा विवेकहीन हो जाती है। (लोक शिक्षक)

डा० राजेन्द्रप्रसाद जन्म शताब्दी समारोह के प्रसंग में

अजातशत्रु देशरत्न डा० राजेन्द्रप्रसाद

—अभयदेव स्नातक

संस्कृत के एक कवि ने सज्जन और दुर्जन के साथ मैत्री का उल्लेख दिन के पूर्वार्ध और परार्ध की सूर्य किरणों से किया है तो अंग्रेजी के एक साहित्यकार ने जीवन के रंगमंच पर अवतरण और प्रस्थान के क्षणों से कलाकार का मूल्यांकन किया है। इसी सादृश्य में राजेन्द्र बाबू के जीवन का हमें दर्शन होता है। बिहार के सारन जिले के जीरादेई गांव में एक मामूली से घर में जन्मे राजेन्द्र बाबू इस महान् भारतीय गणतन्त्र के प्रथम राष्ट्रपति के ऊंचे पद पर आसीन हुए थे। यह उनकी जीवन यात्रा अथवा रंगमच पर अवतरण और प्रस्थान की एक महत्वपूर्ण परन्तु सामान्य जैसी घटना है। वे इससे कहीं अधिक महान् थे। तथागत भगवान बुद्ध की सरलता, मैत्री और करुणा यदि उनमें साकार हो उठी थी और उन्हें अजात शत्रु कहा जाता था, तो दूसरी ओर अपने ऋषितुल्य जीवन के अनेक अवसरों पर कठोर पग उठाने में अंगद के पैर की भांति उन्होंने दृढ़ता का परिचय दिया। वे सचमुच मनस्वी और कायार्थी थे और अपने सुख दुःख की परिधि को उन्होंने व्यापक बना दिया था। इस ३ दिसम्बर को उनके जन्म को पूरे एक सौ वर्ष हो गए।

स्वतन्त्र भारत के प्रथम राष्ट्रपति पद का सन्मान पाने से पहले ही वे सचमुच राष्ट्रपति बन चुके थे। यह बात आज अजीब-सी लगतीहै, परन्तु सत्यहै कि स्वाधीनता पूर्व के अन्य राजनैतिक संगठनों के मुखिया अध्यक्ष कहलाते थे, परन्तु राष्ट्रीय महासभा कहलाने वाली कांग्रेसका सभापति तब राष्ट्रपति कहलाने लगाया। इस प्रकार राजेन्द्र बाबू ही मात्र ऐसे व्यक्ति रहे जो दोनों स्तरों पर राष्ट्रपति चुने गये थे। भारत रत्न की सरकारी उपाधि से पूर्व ही समग्र राष्ट्र ने उनको देशरत्न का मुकुट पहना दिया था। सार्वजनिक जीवन में आने के बाद से ६ फुट से ज्यादा लम्बे राजेन्द्रबाबू को सदा ऊंची बाड़ की टेढ़ी टोपी बन्द गले का नीचा कोट या सदरी और घुटने के नीचे आधी टांगों को ढकती धोती से उनको आसानी से सदैव पहचाना जाता था। यदि गांधी जी की वेषभूषा एक फकीर की थी, तो राजेन्द्रबाबू एक देहाती किसान की प्रतिमा थे। राष्ट्रपति भवन में निवास काल में सरकारी समारोहों के अलावा उनकी यह वेषभूषा निरन्तर जारी रही। उनके साधु स्वभाव की एक मिसाल हमें बिहार राज्य की एक पाठ्यपुस्तक में (१९५३) में देखने को मिली। उनके बड़े भाई सामिषभोजी थे, जब कि वे शाकाहारी थे। बड़े भाई महेन्द्र प्रसाद उन्हें आग्रह पूर्वक अपने साथ थाली में खाने पर बुलाते तो वे अपने और उनके भोज्य के बीच चावल की मेढ़ बनाकर खाना खाकर अपने पितृतुल्य भाई की आज्ञा का पालन करते। वे मूर्तिमन्त सौम्य थे। त्रिपुरी कांग्रेस (१९३९) में तत्कालीन सभापति नेताजी सुभाष के त्याग पत्र देने के बाद जब उन्हें वह पद सौंपा गया उन्होंने अपने कार्यों से क्षुब्ध बंगालियों का मन जीत लिया था। राजेन्द्रबाबू की शिक्षा-दीक्षा और प्रारम्भिक व्यवसाय स्थली कलकत्ता रही। वे वहां के लोकमानस से भली प्रकार परिचित थे। वस्तुतः इस पिछड़े बिहारी युवक के कलकत्ता विश्वविद्यालय की मैट्रिक बी०ए० और कानून की परीक्षाएं सर्वोच्च अंकों से उत्तीर्ण करने के बाद कलकत्ता की बौद्धिक नगरी में धमाका हो गया था।

चम्पारण सत्याग्रह

१९१७ में सबसे पहले युवक राजेन्द्र का सम्पर्क द० अफ्रीका से लौटकर स्वदेश आये कर्मवीर (तब महात्मा नहीं कहलाते थे) मोहनदास करमचन्द गांधी से हुआ। राजेन्द्रबाबू की आमदनी कानूनी पेशे [illegible] के हिसाब से ५ लाख रुपये से कम न थी। [illegible] कर वे गांधी जी के साथ वर्तमान पूर्वी और पश्चिमी चम्पारण जिलों में निलहे गोरों के अत्याचारों से दरिद्र किसानों को बचाने के काम में जुट गये। बेतिया राज तथा अन्यत्र से जमीनों के ठेके लेकर वहां गोरे लोगों ने अपना राज्य और मनमानी चला रखी थी 'बीघे में तीन कठिया' उनका नियम था अर्थात् प्रत्येक किसान को एक बीघे जमीन में से तीन कट्ठा भूमि में नील की खेती करके नाममात्र कीमत पर उसका उत्पादन इन गोरों को बेच देना पड़ता था और उसमें कोताही करने पर किसानों पर दारुण अत्याचार किए जाते थे। घर-खेती लूटकर उनको जमीन से बेदखल कर दिया जाता था। शारीरिक यातनाएं दी जाती थीं। कानून और शासन गोरों के पक्ष में था और उत्पादन पर उन्ही का एकाधिकार था।

भारत में आने के बाद गांधी जी का यह सत्याग्रह का प्रथम प्रयोग था। महीनों उन गांवो में डेरा डालकर पीड़ितों की जगह-जगह गवाही बयान लिये जाते। अधिकारियों एवं गोरों के सामने मांगें रखी जातीं और इस प्रकार जन-जागृति की इस शुरुआत का सजीव विस्तृत विवरण राजेन्द्र बाबू ने अपनी आत्मकथा में (पटना से प्रकाशित) दिया है। इस घटना को इन दोनों महापुरुषों की संगम-स्थली वस्तुतः कहा जाना चाहिए और राजेन्द्र बाबू की यह सक्रिय

सार्वजनिक जीवन को सुदृढ़ात थी। अब वे कमाई के क्षेत्र को छोड़ गये थे।

बिहार यों भी भूकम्प और बाढ़ का शिकार रहा था। राजेन्द्र बाबू ने इन सभी अवसरों पर पीड़ितों और दरिद्रनारायण की भरसक सेवा की। १९१३ में दामोदर और पुन पुन नदियों में और १९२३ में गंगा की भीषण बाढ़ों ने जब प्रान्त को तबाह कर दिया, राजेन्द्र बाबू ने अपने विश्वस्त साथियों के साथ जिस तरह सहायता कार्य किया उसकी सराहना समस्त देशवासियों और अंग्रेज सरकार तक ने की। इसी कारण १९३४ में बिहार में भूकम्प द्वारा विनाश होने पर सरकार ने उनको जेल से छोड़कर इस सहायता कार्य की अनुमति दी। अपनी संगठन शक्ति के बल पर उन्होंने धन-जन एकत्र कर इस पर विजय पाई। उस युग में इस काम के लिए देश के जन-जन से २८ लाख रुपए एकत्र करना सेवा और निष्ठा का अपूर्व उदाहरण है। इसी वर्ष कांग्रेस ने उनको अपना अध्यक्ष यानी राष्ट्रपति चुना। इसी प्रकार का सहायता-संगठन क्वेटा भूकम्प, बिहटा की भीषण रेल दुर्घटना और १९३१ के दुर्भिक्ष के अवसरों पर उन्होंने किए थे। बम्बई कांग्रेस के अवसर पर राजेन्द्र बाबू ने अपने देशवासियों को जो सन्देश दिया था, वह स्वर्णाक्षरों में लिखा गया है उन्होंने कहा— "काम करो! काम करो! दृढ़ निश्चय के साथ काम करो। यह समझो कि हम स्वतन्त्र हैं और तभी तुम स्वतन्त्र होगे।"

युवक राजेन्द्र की महत्वाकांक्षा

अपनी आर्थिक समृद्धि की चरम सीमा पर केवल २६ वर्ष की आयु में युवा राजेन्द्र सब सुखों को त्याग कर गोपाल कृष्ण गोखले की सर्वेण्ट्स आफ इण्डिया सोसाइटी की आजीवन सदस्यता ग्रहण कर किस प्रकार देश सेवा के लिए विह्वल थे, इसका पता उन दिनों अपने पितृतुल्य भाई को भेजे पत्र की पंक्तियों से लगता है। उसमें उन्होंने लिखा था—

"मैं अपने में एक ऊंची और पवित्र भावना का अनुभव कर रहा हूं। आपको कठिनाई में डालना मेरे लिए शोभास्पद नहीं, फिर भी मैं आप से प्रार्थना करना चाहता हूं कि आप ३० करोड़ (भारतवासियों की तब जनसंख्या यही थी) के लिए कुछ त्याग करें। गोखले की सोसाइटी का सदस्य होना मेरे लिए कोई त्याग नहीं, हां मैं अपने को किसी भी परिस्थिति के अनुकूल बना सकता हूं। मुझे कोई विशेष सुख-सुविधा और आराम नहीं चाहिए। मुझे सोसाइटी से जो कुछ मिलेगा काफी होगा।...प्रसन्नता बाहर से नहीं, भीतर से पैदा होती है। हमें गरीबी के प्रति घृणा नहीं करनी चाहिए। अत्याचार तथा घृणा का विरोध करने वालों को लाखों लोग याद करते हैं और वे उनके हृदयों में बस जाते हैं। मेरी यदि कुछ भी महत्त्वाकांक्षा है तो वह यही है कि भारत माता की कुछ भी तो, सेवा कर सकूं।"

क्या आज का युवा वर्ग इस प्रकार की उमंगें अपने में पैदा कर रहा है? आज तो तपे-तपाये लोग भी मृगमरीचिका में भ्रम रहे हैं। स्वतन्त्र भारत में गणराज्य से पूर्व खाद्यमन्त्री का पद उन्होंने सम्भाला था। वे एक किसान एवं दूरद्रष्टा विचारक थे। परन्तु इस के साथ ही उनकी अगाध विद्वत्ता सर्वोपरि थी। भारत की संविधान सभा के अध्यक्ष पद को उन्होंने अत्यन्त योग्यता और शालीनता से निभाया था। कानून उनके लिए हस्तामलकवत था और तब भी अभिमान से वे कोसों दूर रहे। हिन्दी की संविधान अनुवाद समिति का उन्होंने स्वयं मार्ग-दर्शन किया था। २६ जनवरी १९५० को गणतन्त्र बनने के बाद राजेन्द्र बाबू उसके प्रथम राष्ट्रपति पद पर आसीन हुए और लगातार तीन बार राष्ट्र ने उनको यह सम्मान दिया था और उसके बाद एक सन्त के रूप में वे वैभवशाली राष्ट्रपति भवन को छोड़कर पटना के अपने पुराने सदाकत आश्रम में ऋषि-मुनियों का जीवन बिताने और राष्ट्र का मार्गदर्शन करने जा बैठे थे। १३ मई को उन्होंने दिल्ली त्याग कर राष्ट्र की रचनात्मक गतियों को दिशा देने का गंगातट पर संकल्प लिया था। उस समय उन जैसा प्रौढ़ मनस्वी तथा क्षुद्रताओं एवं महत्वाकांक्षाओं से परे भारतीय क्षितिज पर अकेला ही बचा था।

तत्कालीन नेतृ वर्ग उनकी छाया में पला था और तभी १० अक्तूबर को भारत पर चीनियों द्वारा निर्लज्जतापूर्ण आक्रमण के दौरान जब यह राष्ट्र सन्त देश के शासकों को अपना आशीर्वाद और जनताजनार्दन को रक्षा-सन्नद्ध करने के लिए निकलने वाला था, काल के दुर्विपाक ने उनको हमारे बीच से उठा लिया।

स्वर्णाक्षर

आज से ३४ वर्ष पूर्व ९ जनवरी १९५१ को हमें दिल्ली विश्वविद्यालय के कुलपति डा० राजेन्द्र प्रसाद के भाषण को सुनने का अवसर प्राप्त हुआ था। उनके ११ पृष्ठ के भाषण का जो सारांश हमने पुण्य-भूमि के सम्पादकीय में तब दिया था, वह सचमुच में आज भी दिशाबोधक है। उनका कहना था:—

"अंग्रेजी भाषा उत्तम होने पर भी वह केवल अन्तर्राष्ट्रीय एवं बहुभाषाविदों के क्षेत्र में ही निवास के योग्य है। अंग्रेजी की अनिवार्यता तुरन्त समाप्त कर देनी चाहिए और राष्ट्रीय भाषा हिन्दी को उसका स्थान दिया जाना चाहिए।"

२—भारत देश में तीन संस्कृतियों का संगम हुआ है। प्रथम भारत की अपनी संस्कृति है जो वैदिक काल से हमारे देश में बह रही है जिसने हमें हरिश्चन्द्र जैसे सत्य प्रतिपालक, दधीचि जैसे आत्मसमर्पक, शिवि के तुल्य दानी और भगवान कृष्ण जैसे निःस्पृह कर्मयोगी प्रदान किए हैं। दूसरी अरब की संस्कृति है जो इस्लाम के रूप में हमें दृष्टिगोचर होती है और तीसरी पाश्चात्य संस्कृति का प्रवेश ईसाइयत के साथ हुआ है। उनका स्पष्ट अभिमत था कि दोनों विदेशी संस्कृतियों को संगम के नाम पर अपनाने का स्पष्ट परिणाम आज की बौद्धिक विभक्तता है और अनर्थ की जननी है।

३—भारत के अधिकांश निवासी गांवों में रहते हैं और सच्ची भारतीय जीवनधारा उनसे ही प्रवाहित होती है। वन और ग्राम भारतीय संस्कृति का उद्गम रहा है। उससे कटकर हम देश की क्या सेवा करते हैं।

राजनीतिक हत्याओं का दौर : जूलियस सीजर से इंदिरा गांधी तक

श्रीमती गांधी की हत्या से भारत ही नहीं दुनिया भर के राजनेताओं में चिन्ता व्याप्त है और सर्वत्र इस पर विचार किया जा रहा है कि वे कैसे अपनी सुरक्षा की फूलप्रूफ व्यवस्था करें। राजनीतिक आतंकवाद के सुविख्यात एकेडेमिक विशेषज्ञ व आतंकवादी गतिविधियों पर अनेक पुस्तकों के लेखक पोल विल्किन्सन, जो एबेरडीन यूनिवर्सिटी में अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों के प्रोफेसर हैं, ने श्रीमती गांधी की हत्या पर चिन्ता प्रकट करते हुए कहा है कि राजनीतिक हत्याओं का कोई अमोघ निराकरण तो संभव नहीं है, पर प्रभावपूर्ण व सुसमन्वित पुलिस और गुप्तचर सेवाओं एवं तत्सम्बन्धी टैक्नोलोजी के पूर्णतः उपयोग से और हाल की हत्याओं से सबक लेकर सुरक्षा की रही खामियों व कमजोर कड़ियों को दूर कर उस खतरे को काफी हद तक कम किया जा सकता है।

उन्होंने अमरीकी राष्ट्रपतियों की कठोर होती जा रही सुरक्षा व्यवस्थाओं का भी जिन्हें यूरोपीय देशों में अतिशयोक्तिपूर्ण कहा जाता है समर्थन किया है। प्रो० विल्किन्सन ने कहा है कि अमरीकी राष्ट्रपतियों द्वारा इस ओर बढ़ता हुआ आग्रह सर्वथा उचित है, अन्यथा उनके बिना बहुत अधिक भयानक घटनाएं होंगी। यह उल्लेखनीय है कि आज अमरीकी राष्ट्रपति रीगन सुरक्षा व्यक्तियों, सलाहकारों व सैद्धांतिक अनुयायियों के ही घेरे में रहते हैं। रिपोर्टरों द्वारा उनसे मिल पाना भी असंभव हो गया है। मार्च १९८१ में रिन्कले द्वारा उन पर ६ गोलियां चलाये जाने की घटना के बाद से सुरक्षा और कड़ी की गई है।

लेकिन जहां यह कथन सही है कि कड़ी से कड़ी सुरक्षा राजनैतिक हत्याओं को रोकने के लिए आवश्यक है, वहां यह भी तथ्य है कि विश्व में अमरीकी राष्ट्रपतियों की ही सबसे कड़ी सुरक्षा व्यवस्था है पर वहां ही अब तक सबसे अधिक हत्याएं हुई हैं। राष्ट्रपति लिंकन, राष्ट्रपति गारफील्ड, कैनेडी व उसके बाद उनके भाई राबर्ट कैनेडी की हत्या कर दी गई। इसके अलावा राष्ट्रपति रूजवेल्ट, फोर्ड व रीगन की हत्या की कोशिशें की गई जो असफल रहीं।

अमरीका के विपरीत इंग्लैंड में कम कड़ी सुरक्षा व्यवस्था पर वहां आधुनिक इतिहास में अभी तक एक भी हत्या नहीं हुई। अवश्य आयरिश आतंकवादियों की कार्यवाहियां वहां तेजी से बढ़ रही हैं और हाल में ब्रिटिश प्रधान मन्त्री मार्गरेट थैचर बाल-बाल बचीं जबकि उस कार्यक्रम में मौजूद संसद सदस्य होटल में बम दुर्घटना में मारे गये हैं। जहां तक सुरक्षा व्यवस्था के फूलप्रूफ होने का सम्बन्ध है, यह भ्रम ब्रिटेन में तब दूर हो गया जब दो वर्ष पूर्व एक साधारण लुहार किस तरह ब्रिटिश साम्राज्ञी एलिजाबेथ के सोने के कमरे में बेरोकटोक पहुंच गया।

विश्व मे राजनैतिक नेताओं की हत्याओं का सिलसिला इतिहास में रोम के सम्राट जूलियस सीजर से शुरू होता है जिसे उसके प्रिय मन्त्री ब्रूटस व अन्य मन्त्रियों ने मार डाला था। जहां तक आधुनिक काल का सम्बन्ध है, १८९७ में स्पेन के प्रधान मन्त्री, १९०५ में ग्रीस के प्रधानमन्त्री, १९०८ में पुर्तगाल के सम्राट तथा राजकुमार की हत्याएं हुईं। १९५५ में पनामा के राष्ट्रपति रेमन को गोली मार दी गई। १९५७ में ग्वाटेमाला के राष्ट्रपति कास्टेलो को उनके अंगरक्षकों ने ही मार डाला। स्वाधीन बर्मा के प्रथम राष्ट्रपति आगसान, पाकिस्तान के प्रधान मन्त्री लियाकत अली खां, श्रीलंका के प्रधान मन्त्री भंडारनायके, १९७५ में बंगला देश के राष्ट्रपति मुजीब, चिली के राष्ट्रपति अलेन्दे, १९७८ में फ्रांस के भूतपूर्व राष्ट्रपति आल्दे मोरो व १९८१ में मिस्र के राष्ट्रपति सादात व १९८२ में बंगला देश के जियाउर्रहमान की हत्याएं कर दी गईं।

अब तक की हत्याओं से सामने आता है कि इनकी साजिश किसी की हो, उनमें उस देश के लोग अवश्य शामिल होते हैं। प्राय: ये हत्याएं इन तरीकों से की जाती हैं (१) ब्यूरोक्रेटिक मर्डर जिससे कोई अफसर चुनकर उसके जरिए सुरक्षा की लूप होल्स का पता लगाकर हत्या की ऐसी योजना बनाई जाती है जिसमें कातिल अफसरशाही का ही मुहरा हो। संभवतः कैनेडी की हत्या भी इसी तरह की थी। (२) सैनिक साठगांठ से, जैसा कि बंगला देश में मुजीब व जियाउर्रहमान की या मिस्र के राष्ट्रपति सादात की। (३) प्लेन किलिंग जिसमें कोई षडयन्त्र नहीं होता जैसे रीगन पर आक्रमण हुआ। (४) स्लो किलिंग जिसमें शराब, दवा या खाने में मंद विष दिया जाता है (५) शाक किलिंग जिसमें मानसिक या आत्मिक आघात पहुंचाकर मौत तक पहुंचाया जाता है। हाल में पाक के प्रधानमन्त्री लियाकत अली से लेकर अमरीका में कैनेडी व बंगलादेश के जियाउर्रहमान तक की हत्याओं में यह भी प्रकट हुआ है कि षडयन्त्रकारी हत्यारे को हर हालत में मार डालते हैं जिससे षडयन्त्र का पता न लगे। आजकल राजनैतिक हत्याओं से बचने के लिए हर राजनेता बुलैट प्रूफ कार व बुलैट प्रूफ जैकेट का प्रयोग करते हैं। श्रीमती गांधी भी यह करती थीं, पर हत्या के समय इसे नहीं पहने थीं।

पुराने अनुभवों के प्रकाश में भारत को भी अपनी सुरक्षा व्यवस्था कड़ी करनी चाहिए। श्रीमती गांधी ने सुरक्षा की कड़ी व्यवस्था के सम्बन्ध में कुछ समय पहले इंस्पैक्टर्स जनरल आफ पुलिस के सम्मेलन में कहा था--'सुरक्षा कर्मचारी सामान्यतः उस व्यक्ति को तो पीछे धकेल देते हैं जो बहुत खराब कपड़े पहने होता है या बहुत गरीब दिखाई देता है जबकि अच्छे कपड़े पहनने वालों को घूमने फिरने या कुछ भी करने की अनुमति दे देते हैं।"

श्रीमती इन्दिरा गांधी ने आगे कहा था कि—'सुरक्षा कर्मचारियों की पूरी बटालियनें उस जगह को घेरे दीखती हैं, जहां भी मैं जाती हूं, पर आश्चर्य कि फिर भी उन्हें यह पता नहीं होता कि क्या हो रहा है। किसी भी ओर क्या हो रहा है, इसका उन्हें कोई विचार नहीं होता जबकि मैंने देखा है और आपको हर समय की बात बता सकती हूं, न केवल यह कि लोग क्या क्या कर रहे हैं बल्कि वे क्या पहने थे और उनके क्या भाव थे?"

श्रीमती गांधी ने १४ अप्रैल १९८० को मूलचन्द लालवानी के अपने पर हमले पर कहा था—'जब उसने चाकू फेंका, मैंने पहले ही जान लिया था कि वह कुछ फेंकने जा रहा है। पर मेरा विचार था कि वह कोई अर्जी फेंकने जा रहा है। मैंने उसके भावों से पाया था कि वह या तो बीमार है या डरा हुआ है। वह सामान्य दिखाई नहीं दे रहा था। पर मुझे शक है कि वहां के सिक्यूरिटी या पुलिस के किसी व्यक्ति ने उसे उसके बारे में देखा था जबकि वह केवल चार कतार पीछे था। पर मैंने न केवल देखा था अपितु दूसरी ओर खड़े लोगों को भी देखा था।'

श्रीमती गांधी के इस कथन की वास्तविकता महत्वपूर्ण है कि केवल सुरक्षा दस्तों की भौतिक उपस्थिति या तकनीकी उपकरणों से सुरक्षा नहीं हो सकती। उसके लिए सक्षम पर्यवेक्षण शक्ति भी जरूरी है। यहां उल्लेखनीय है कि भारतीय गृहमन्त्रालय के अनुसार गांधी जी के मना करने के बावजूद उनकी हत्या के दिन ७० सिक्यूरिटी के आदमी सादे वेश मे प्रार्थना सभा में गांधी जी की रक्षा कर रहे थे पर पर्यवेक्षण शक्ति के अभाव मे वे उन्हें नही बचा सके।

इन तथ्यों को महसूस कर आज देशों में राष्ट्रपति व प्रधान मन्त्रियों की सुरक्षा के लिए सुरक्षादस्तों के अलावा राजनैतिक अनुयायियों को सौंपा जा रहा है। अमरीकी राष्ट्रपति के सुरक्षा घेरे मे भी उनके राजनैतिक कट्टर अनुयायी रहते हैं। साम्यवादी देशों में तो यह अनिवार्य व्यवस्था है, तभी वे क्यूबा के राष्ट्रपति फिडेल को सी. आई. ए द्वारा हत्या की हर कोशिश से बचा सके हैं। अब श्रीमती गांधी की हत्या पर मार्क्सवादी दल ने हत्या की लापरवाही के लिये उनके दल को ही दोषी बताया है। भारत को भी अब राजनेताओं की हत्याओं को रोकने के लिए अब तक के इतिहास व विश्व अनुभवों के प्रकाश में उचित व्यवस्था करनी अत्यावश्यक हो गया है।

—पब्लिकेशन सिन्डीकेट

(पंजाब केसरी २८-११-८४)

आर्य समाजों की गतिविधियां

दयानन्द वेद विद्यालय

दयानन्द वेद विद्यालय ११९, गौतम नगर, नई दिल्ली ४९ में श्रीमती इन्दिरा गांधी की आत्मा की सदगति के लिए श्री स्वामी दीक्षानन्द जी के ब्रह्मत्व में १८ नवम्बर से ९ दिसम्बर तक ब्रह्म पारायण महायज्ञ चल रहा है।

बसेड़ा कुंवर

चुनाव—आर्य समाज बसेड़ा कुंवर के निर्वाचित अधिकारी : प्रधान-श्री बलराम सिंह, उप प्रधान श्री राम स्वरूप सिंह, मन्त्री-श्री मास्टर महेन्द्र-पाल सिंह भील, कोषाध्यक्ष श्री विजय पाल सिंह लेखा निरीक्षक-श्री मुरली सिंह आर्य प्रचार अधिष्ठाता-शिवनाथ सिंह आर्य बन्धु।

मानसरोवर गार्डन

दि० २ १२-८४ को आर्य समाज मानसरोवर गार्डन में धर्मार्थ औषधालय का उदघाटन महाशय श्री धर्मपाल जी प्रधान आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली के द्वारा हुआ। मन्त्री-हंसराज सचदेव

आर्य समाज श्रद्धानन्द बाजार, लुधियाना

आर्य समाज स्वामी श्रद्धानन्द बाजार (साबुन बाजार) लुधियाना में ढ़ीना (बटाला) बस हत्याकांड में तथा जालन्धर के बम विस्फोट में मृत आत्माओं की शांति के लिए प्रार्थना सभा की गई।

मन्त्री-यशपाल बोजिमा

आर्यवीर दल के राकत

आर्य वीर दल केराकत के तत्वावधान में वीर पर्वोत्सव मनाया गया। इस अवसर पर श्री ज्ञानचन्द आर्य नरहरन की अध्यक्षता में सभा सम्पन्न हुई जिसमें मुख्य अतिथि श्री प्रभु विहारी सन्ना-संचालक आर्य वीर दल पूर्वी उत्तर प्रदेश ने सारगर्भित भाषण दिया। खेल एवं प्रदर्शनों के अतिरिक्त श्री शिवनाथ प्रसाद शास्त्री का बौद्धिक हुआ।

उत्सव

आर्य उप प्रतिनिधि सभा जिला सहारन पुर का अर्द्ध शताब्दी महोत्सव ९-१२-८४ को आर्य समाज पुरानी मंडी के प्रांगण में मनाया जायगा। जिसमें सार्वदेशिक सभा के प्रधान, महामन्त्री, आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के प्रधान तथा मन्त्री श्री शिवकुमार शास्त्री आदि आर्य नेता एवं विद्वान भाग लेंगे। प्रधान-प्रकाश चन्द

नेपाल में वेद प्रचार

महारानी नेपाल के जन्म दिन के उपलक्ष्य में ७ से १७ नवम्बर तक वीरगञ्ज गीता भवन में गायत्री महायज्ञ तथा वेद प्रवचन चल रहा है। प्रचारक-स्वामी काश्यानन्द जी, पं० रामानन्द शास्त्री, पं० मंगाधर जी शास्त्री। —रामाज्ञा बैरागी

प्रान्तीय संचालक आर्यवीर दल बिहार

आर्य समाज बैंकोक में-महर्षि निर्वाण दिवस

आर्य समाज बैंकाक थाईलैंड में श्री कृष्णमोहन जी की अध्यक्षता में १४-१०-८४ को महर्षि दयानन्द सरस्वती निर्वाण दिवस सोल्लास मनाया गया।

श्री रामपलट पांडेय ने सभा संचालन के लिए मनोनीत अध्यक्ष श्री कृष्णमोहन गुप्त का परिचय कराया जो कि वाराणसी में दीक्षा विद्यालय के प्राध्यापक हैं।

श्री गुप्त ने थाई देश के आर्य बन्धुओं को महर्षि के निकटतम उत्तर-वर्ती काल में भारतीय समाज में व्याप्त विषमताओं विसंगतियों एवं विडम्ब-नाओं के विषय में विस्तार से बताया। उन्होंने कहा कि उक्त कारणों से ही भारत दासता की बेड़ियों में बंधा हुआ था। स्वामी दयानन्द की साधना तपस्या तथा योगदान के फलस्वरूप ही भारत स्वतन्त्र हो सका है। उन्होंने यह भी बताया कि भारत की वैदिक संस्कृति ही वास्तविक मानव संस्कृति है इसमें संशोधन की आवश्यकता नहीं है बल्कि इसे ठीक-२ समझने के लिए सतत अध्यवसाय की आवश्यकता है।

खंडवा

आर्य समाज खण्डवा पूर्व निमाड़ (म. प्र.) समस्त जिला जन समिति के सहयोग के लिए आभारी है और उनकी सदगति के लिए प्रभु से प्रार्थना करती है। मन्त्री-कैलाशचन्द्र पालीवाल

हाय इन्दिरा जी !!!

"श्रीमती इन्दिरा गांधी की क्रूरता पूर्वक हत्या कांड से मर्माहित देश-विदेश में आर्य समाजों में पारित शोक प्रस्ताव एवं श्रद्धांजलियां"

(१) अपने प्रधान मन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी की क्रूर हत्या से हम प्रवासी भारतीय आर्य जगत को गहरा आघात लगा है। इस राष्ट्रीय संकट की स्थिति में हमें विश्वास है कि आप (लाला जी) सुझावों द्वारा देश की जनता का मार्ग दर्शन करते रहेंगे।

—प्रसिद्ध नारायण तिवारी

मन्त्री-आर्य समाज बैंकाक थाईलैंड

(२) श्रीमती इन्दिरा गांधी की हत्या की सूचना पाकर जिला आर्य उप-प्रतिनिधि सभा मिर्जापुर की अन्तरंग ने शोक प्रस्ताव पारित किया। दिवंगत आत्मा की सदगति, शांति के लिए एवं परिवार के धैर्य के लिए प्रार्थना की।

—मेवन सिंह

मन्त्री-जिला आर्य उप प्रति. सभा मिर्जापुर

शोक प्रस्ताव

निम्नांकित आर्य समाजो ने श्रीमती इन्दिरा गांधी के वीरगति प्राप्त करने पर शोक प्रस्ताव पारित किए हैं—

—आर्य समाज मांडुप ईश्वर नगर लाल बहादुर शास्त्री मार्ग बम्बई।

—गया जिला आर्य सभा गया (बिहार)।

ओ३म्

सार्वदेशिक

साप्ताहिक

सृष्टिसम्वत् १९७२९४९०८५] वर्ष २० अंक ६]

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

माघ कृ० १३ सं० २०४१ रविवार २० जनवरी १९८५

दयानन्दाब्द १६० दूरभाष : २७४७७१

वार्षिक मूल्य १६) एक प्रति ४० पैसे

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का शिष्टमंडल श्री रामगोपाल शालवाले के नेतृत्व में श्री कृष्णचन्द पन्त शिक्षामन्त्री भारत सरकार से मिला

शिष्ट मण्डल मे सभामन्त्री श्री ओमप्रकाश जी त्यागी, श्री सूर्यदेव जी प्रधान दिल्ली सभा, श्री आनन्द प्रकाश जी उपमन्त्री सभा श्री लक्ष्मीचन्द जी शामिल थे।

शिष्ट मण्डल ने श्री पन्त जी को एक ज्ञापन दिया जिसमे पजाब मे सस्कृत को हटाये जाने का विरोध किया गया है।

सार्वदेशिक सभा प्रधान श्रीयुत लाला रामगोपाल जी शालवाले शिक्षामन्त्री श्री के०सी० पन्त को सस्कृत पाठयक्रम को पजाब के स्कूलो मे बाहल करने के लिए ज्ञापन देते हुए। साथ में सभामन्त्री श्री ओमप्रकाश त्यागी, उपमन्त्री डा० आनन्दप्रकाश और आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के प्रधान श्री सूर्यदेव जी।
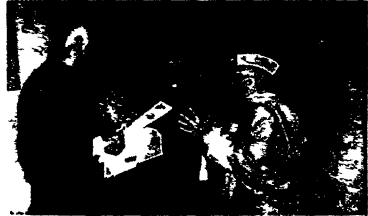
समापन समारोह

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान मे मनाई जा रही महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी का समापन समारोह श्री लाला रामगोपाल शालवाले प्रधान सार्वदेशिक सभा की अध्यक्षता मे २०-१-८५ को सम्पन्न होगा।

स्थान—तालकटोरा इन्डोर स्टेडियम नई दिल्ली

समय—मध्याह्नोत्तर २ बजे

मुख्य अतिथि—महामहिम श्री राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह जी

श्री के० सी० पन्त केन्द्रीय शिक्षामन्त्री)

श्री स्वामी दीक्षानन्द जी, श्री श्यामलाल यादव श्री प्रो० वेद व्यास, श्री प० शिवकुमार शास्त्री पूर्व ससद्सदस्य तथा श्री प० सत्यगुरु शर्मा आदि आर्य श्रेष्ठि एव नेता महर्षि को अपनी श्रद्धाजलि देंगे।

सूर्यदेव
प्रधान
आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली

फारूक ने अलगाववादियों को प्रोत्साहित किया

सरकार द्वारा जारी श्वेतपत्र में आरोप

जम्मू, १० जनवरी। कश्मीर सरकार ने आज बहुप्रतीक्षित 'श्वेत पत्र जारी कर दिया। इस श्वेत पत्र मे डा०फारुक अब्दुल्ला सरकार की भूलो और गतिविधियो का ब्यौरा दिया गया है।

दस्तावेज मे राज्य के भूतपूर्व मुख्यमन्त्री डा० अब्दुल्ला पर अनेक गम्भीर आरोप लगाये गये है जिनमे राज्य की सुरक्षा, साम्प्रदायिक सद्भाव, राष्ट्रीय एकता, सरकारी पद के दुरुपयोग पक्षपात (शेष पृष्ठ ११ पर)

कलकत्ता हाईकोर्ट ने मस्जिदों के सामने बाजा बजाने के प्रतिबंध को रद्द कर दिया

अभी हाल में (१८-१२-१९८४) कलकत्ता हाईकोर्ट के मुख्य न्यायाधीश मान्य भगवती प्रसाद बनर्जी ने, संविधान की धारा २५, २६ द्वारा स्वीकृत मौलिक धार्मिक अधिकारों के क्रियान्वयन से [illegible] जलूस के मामले में सार्वजनिक [illegible] है जिसका संक्षिप्त विवरण दिया जा रहा है : —सम्पादक

विवरण

"मुर्शिदाबाद जिले के पुलिस स्टेशन रानीनगर के अन्तर्गत रमनाबाद ग्राम के हिन्दुओं ने १९८४ में दुर्गा पूजा पर्व मनाने के लिए एक सार्वजनिक कमेटी बनाई। इसके प्रधान श्री प्रभातराय कुमार ने कमेटी की ओर से कलकत्ता हाई कोर्ट में लाल बाग मुर्शिदाबाद जिले के सब डिवीजनल मजिस्ट्रेट के १४४ धारा के अन्तर्गत दिए गए आर्डर को जिसके द्वारा विजय दशमी (४-१०-१९८४) के पर्व पर दुर्गा की मूर्ति के विसर्जन जलूस को ग्राम की किसी भी मस्जिद की २० गज दूरी के अन्तर्गत ढोल बजाते और गीत गाते हुए निकाला जाना निषिद्ध किया गया था, चुनौती दी थी (प्रभात कुमार तथा अन्य बनाम रानी नगर पुलिस स्टेशन के अधीक्षक तथा अन्य) समादेश याचिका पश्चिमी बंगाल गवर्नमेंट को पूर्व नोटिस देने के साथ-साथ न्याय मूर्ति भगवती प्रसाद बनर्जी की अदालत में प्रस्तुत की गई थी। दोनों पक्षों को सुनने के बाद मान्य न्यायाधीश महोदय ने अपने फैसले में (१८-१२-८४) में कहा है कि विसर्जन अनुष्ठान के अवसर पर ढोल आदि बाजे बजाते हुए जलूस निकालने की हिन्दुओं के एक वर्ग की पुरानी धार्मिक प्रथा है जो अतीत काल से चली आ रही है और कोई भी व्यक्ति इसमें हस्तक्षेप नहीं कर सकता।

उच्चतम न्यायालय के एक निर्णय (ए. आई. आर. १९७१ ऐस. सी. पृ० २११८) का जो धारा १४४ के सन्दर्भ में दिया गया था हवाला देते हुए न्यायाधीश महोदय ने कहा कि कार्यकारी मजिस्ट्रेट को अनिवार्यतः कानून प्रदत्त अधिकारों की सहायता में ही अपने अधिकार का प्रयोग करना चाहिए और उनके विरुद्ध भी जो इन अधिकारों के वैध उपयोग में हस्तक्षेप करें। [illegible] प्रथानुमोदित परम्परागत [illegible] में भी। इस अधिकार का प्रयोग [illegible] से भी नहीं होना चाहिए जिससे [illegible] एक पक्ष के हित की [illegible] दूसरे पक्ष के हित की [illegible] होती हो। [illegible] कानून प्रदत्त अधिकारों की रक्षा में न कि उनके [illegible] में। मजिस्ट्रेट की कार्यवाही [illegible] के विरुद्ध होनी चाहिए न कि [illegible] के अधिकार [illegible] के विरुद्ध। शान्तिपूर्ण ढंग से बिना हथियारों के एकत्र होने और जलूस निकालने के अधिकार की संविधान की धारा १९(१) की में [illegible] दी हुई है। जलूस निकालने के इस अधिकार को प्रतिबंधित करना [illegible] व अनुचित है।

मामलों के तथ्यों के प्रसंग में मान्य न्यायाधीश महोदय ने बताया कि हिन्दुओं का एक वर्ग सार्वजनिक सड़कों के माध्यम से अपने परम्परागत धार्मिक अधिकारों का उपयोग करने वाला था। मजिस्ट्रेट के अधिकार का प्रयोग बाजे के साथ देवी दुर्गा की मूर्ति के विसर्जन जलूस के निकलवाने और इस प्रकार प्रथानुमोदित एवं परम्परागत धार्मिक अधिकार का उपयोग कराने में ही होना चाहिए था। मजिस्ट्रेट के अधिकार का शरारतियों पर ही अंकुश रखने में प्रयोग होना चाहिए था।

मान्य न्यायाधीश ने आगे कहा कि विद्वान मजिस्ट्रेट ने इस प्रकार के अधिकारों की रक्षा करने के बजाय इन पर बंदिश लगा दी। मजिस्ट्रेट को धारा १४४ के अन्तर्गत उन अधिकारों में जिन्हें संविधान की धारा २५ में मान्यता दी गई है हस्तक्षेप करने का अधिकार न था। विद्वान मजिस्ट्रेट द्वारा जलूस निकालने की अनुमति न दिये जाने से शरारत पसन्द व्यक्तियों को प्रोत्साहन मिला।

मान्य न्यायाधीश ने अपने फैसले में यह भी कहा कि यदि मस्जिदें सार्वजनिक सड़कों के आस पास बनी हों तब भी परम्परागत धार्मिक जलूस बाजे के साथ उनके सामने से अधिकृत रूप में गुजर सकते हैं और दूसरे मजहब के लोग इस पर न तो आपत्ति कर सकते हैं और न उनके पास कोई वैध रूप ही हो सकता है। मस्जिद के पास बाजा बजाना उस धर्म के लोगों के धार्मिक अधिकार का अतिक्रमण नहीं है।

दूसरे मजहब या धर्म का कोई व्यक्ति इस प्रकार के वैध जलूस में बाधा डालने का प्रयास करे तो पुलिस का कर्त्तव्य है कि वह उस व्यक्ति या व्यक्तियों के विरुद्ध शान्ति और साम्प्रदायिक सद्भाव भंग करने के अपराध पर कार्यवाही करे।

न्याय मूर्ति बनर्जी के अनुसार संविधान की धारा २५ में किसी भी धर्म (मत) को स्वतन्त्रता पूर्वक मानने [illegible] और [illegible] के धार्मिक अधिकारों की गारन्टी दी हुई है और धर्म निर्पेक्षता की यही धारणा व भावना है।

यदि [illegible] की [illegible] और परिस्थितियों के [illegible] धारा १४४ के अन्तर्गत इन अधिकारों में हस्तक्षेप करने दिया जाय तो [illegible] करना धर्म निर्पेक्षता की भावना के विरुद्ध होगा। धर्मनिर्पेक्षता का अर्थ यह नहीं है और न हो सकता है कि कानून को लागू करने वाली सत्ता संविधान सम्मत अधिकारों में मनमाने ढंग से [illegible] करे या उनके उपयोग से वंचित करे।

इसके आगे फैसले में कहा गया है कि यदि पुलिस को शांति भंग होने का अन्देशा (भय) था तो उसके लिए उचित यही था कि वह शांति भंग करने का इरादा रखने वाले व्यक्ति या व्यक्तियों पर [illegible] लगाने की आज्ञा प्राप्त करती। मान्य न्यायाधीश को इस बात से दुःख हुआ है कि दूसरी जाति के लोगों ने जलूस के निकाले जाने पर कोई शिकायत दर्ज नहीं कराई थी और पुलिस ने निषेध आज्ञा प्राप्त करने के लिए [illegible] बनाकर [illegible] कार्य किया। साथ ही विद्वान मजिस्ट्रेट ने [illegible] स्थिति और संभावित परिणामों पर पूर्व से भली भांति विचार किये बिना आदेश दे दिया।

उपसंहार

अन्त में मान्य न्यायाधीश ने सम्बद्ध निषेधाज्ञा को अनावश्यक और असंगत करार देते हुए इसे रद्द कर दिया। उन्होंने यह भी कहा कि रानीनगर पुलिस स्टेशन के इन्चार्ज (अधीक्षक) ने यह कार्यवाही की जो केस के तथ्यों और परिस्थितियों के [illegible] में की जाने वाली कार्यवाही के विपरीत थी।

मान्य न्यायाधीश महोदय ने रानीनगर पुलिस स्टेशन के इन्चार्ज को लिखित आदेश दिया कि वह तुरन्त समुचित कार्यवाही करें, हर [illegible] सहायता की व्यवस्था करे जिससे कि प्रार्थी विसर्जन जलूस को ढोल आदि बाजे के साथ निकाल सकें।

मान्य न्यायाधीश ने रानीनगर पुलिस स्टेशन के अधीक्षक, मुर्शिदाबाद के पुलिस सुपरिन्टेन्डेन्ट, तथा पश्चिमी बंगाल गवर्नमेंट को पुलिस टुकड़ियों को तैनात करने का आदेश दिया। रानी नगर के पुलिस स्टेशन के इन्चार्ज को पर्याप्त संख्या में पुलिस मैनों के साथ जलूस का संरक्षण करने और उस व्यक्ति या व्यक्तियों के विरुद्ध समुचित कानूनी कार्यवाही करने का आदेश दिया जो जलूस का प्रतिरोध या दंगा करें।

सरकारी वकील की प्रार्थना पर विशेष मामले के रूप में मान्य न्यायाधीश ने यह भी आदेश दिया कि जुमे की दोपहर को जबकि सम्बद्ध मस्जिदों में नमाज अदा की जा रही हो उनके पास से जलूस न गुजरे इस आदेश का क्रियान्वयन दस दिन के भीतर २ किये जाने का भी आदेश दिया।

श्री [illegible] चन्द्र सरकार की ओर से, और सर्वश्री एन. सी. मजूमदार कालीदास बसु, नंदलाल शाह, विनय कृष्णदास, सोमनाथ बोस, [illegible] न्यायाधीश भगवती प्रसाद बनर्जी के समक्ष प्रार्थियों की ओर से उपस्थित रहे। (आर्गेनाइजर ६-१-८५)

सम्पादकीय

विश्वधर्म सम्मेलन

हैरीचोड (पं० जर्मनी)

(गतांक से आगे)

(३)

इस प्रसंग में सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण नाम प्रश्नवाचक सर्वनाम पर आधारित होकर विश्व के अनेक देशों में प्रचलित हुआ है। वेद में कः प्रजापति परमेश्वर का नाम है। लैटिन ग्रीक भाषा में यही क्वि (Qui), संस्कृत में किम्, का और कः रूप में पाया जाता है। अरबी काबा शब्द में यही क अब्बा (पिता) के साथ संयुक्त होकर एक समस्तपद बना रहा है जिसका अर्थ है क, अब्बा (पिता)। एक दूसरा अरबी शब्द है किबला जिसका अर्थ है महान्। इनमें भी 'कि' उसी क का रूपान्तर प्रतीत होता है।

भारतीय परम्परा के कः प्रजापति के रूप में, फ्रेंच विद्वान् रेनें ग्वेनां के अनुसार, वह उस सार्वभौम संकल्प का नाम है जो विविधतापूर्ण सत्ता की प्रत्येक अवस्था में विद्यमान है। ऋग्वेद में यही कः सौचीक नामक अग्नि के नाम में पाया जाता है। सौचीक का अर्थ है सूची (सुई) से उत्पन्न क। इसकी तुलना जर्मनी के लोकी नामक देवता से की जा सकती है जिसको सूची का पुत्र माना जाता है। यही कः सत्यवाचक "श्रद्धा" से संयुक्त होकर कोढा हो जाता है जिसकी तुलना अरबी के खुदा तथा योरोपियन भाषाओं के गाड से की जा सकती है। यही क भारत की कोल नामक जाति के आदि पुरुष अथवा परमेश्वर के द्योतक क शब्द में पाया जाता है। इसी क को जानने वाला कोविद् (विद्वान्) कहलाता है और भारतीय कबीर (एक रहस्यवादी कवि), कबीरा (एक रहस्यवादी गान), तथा अरबी कबाला अथवा यहूदी कबाला में भी विद्यमान है और इसी को भारत के कब्बाल नामक शब्दों में भी देखा जा सकता है।

क्रास और जीवनवृक्ष के रूप में क

इसी क का जब लेखनकला में प्रवेश हुआ तो उसके लिए एक ऐसे संकेत का प्रयोग होने लगा जिसको हम आजकल क्रास कहते हैं। वेद में इसी का नाम कृच है। इसलिए क अक्षर का प्राचीनतम रूप यही क्रास है जो ब्राह्मी तथा पूर्व पूर्वब्राह्मी सिन्धुलिपि में पाया जाता है और अधिकांश लिपियों में क अक्षर इसी क्रास का कोई न कोई रूपान्तर प्रतीत होता है।

वेद में इस परम अनिर्वचनीय सत्ता को 'संप्रश्न' भी कहा जाता है। क्रास द्वारा संकेतित इस कः अथवा संप्रश्न में दो तत्त्वों का संयोग है। इनमें से एक अपरिवर्तनशील सत्ता है जो एक अन्य तत्त्व से अभिन्न सम्बन्ध रखती है। इस दूसरे तत्त्व को वैदिक साहित्य में भाववृत्त कहा जाता है जो निरन्तर परिवर्तनशील है। प्रथम का नामकरण सत्तासूचक अस् धातु से निष्पन्न असु शब्द से किया गया तो, दूसरे का नामकरण असु के वर्ण-विपर्य द्वारा "उस्" शब्द से किया गया। यही दोनों नाम क्रमशः अस्मत् और युष्मत् शब्दों में भी पाए जाते हैं तथा वेदान्त में नामरूपात्मक जगत् के ये ही दोनों तत्त्व माने जाते हैं। असु शब्द वैदिक असुर और अवस्ता के अहुर में भी विद्यमान है जो अपरिवर्तनशील सत्ता का सूचक प्रतीत होता है। इसके विपरीत "उस्" शब्द वैदिक उषा के मूल में देखा जा सकता है और इसलिए उषा को पुनर्पुनर्जायमा कहते हुए निरन्तर परिवर्तनशील माना जाता है। वेद में इन दोनों तत्त्वों को क्रमशः सत्यम् और अनृतं भी कहा जाता है। "ऋतस्य चक्रं" को वेद में सत्यं की स्थिर धुरी पर निरन्तर घूमने वाला माना जाता है। वेद में भाववृत्त के ऋतम् और अनृतं नामक दो पक्ष माने गये हैं। क्रास में यही दोनों उसकी पड़ी लकीर के दो अर्धांशों द्वारा संकेतित हैं। इन्हीं की कभी-कभी दो अश्वों के रूप में कल्पना की जाती है और तब क की एक ऐसे शीघ्रगामी रथके रूप में कल्पना की जाती है जिसमें द्रुतगामी अश्व जुड़े हों। (रथं क्षमाहुर्द्रवदश्वमाशुम् ऋ० ४.४३.२.)। यह एक ऐसा रथ है जो निरन्तर चारों ओर घूमता रहता है (परि ज्मानि ऋ० ४.४३.५.।

क्रास का प्रयोग जब इस अनिर्वचनीय सत्ता को अभिव्यक्ति देने के लिये हुआ जिसका नाम क था, तो उसके विभिन्न रूपों और संकेतों को प्रकट करने के लिए क्रास के अनेक रूपान्तर हो गए। इसीलिए रेनें ग्वेनां ने जब अपनी "दि सिम्बोलिज्म आव् दि क्रास नामक पुस्तक लिखी तो उसमें यह स्वीकार किया कि इतना लिखने पर भी क्रास के विविध पक्षों और रूपों का केवल साधारण और सतही उल्लेख ही हो पाया है। क्रास के प्रतीक का जो सर्वाधिक प्रचलित रूप प्राचीन परम्परा में मिलता है उसी को जीवनवृक्ष का नाम दिया गया है और वह योरोप, मध्यपूर्व, भारत तथा सुदूरपूर्व में समान रूप से पाया जाता है। इस प्रतीक में क्रास की खड़ी रेखा को वृक्ष का तना माना जाता है और उसको काटने वाली एक अथवा अधिक पड़ी रेखाएं उस वृक्ष की शाखाएं मानी जाती है।

फिर भी समस्त प्राचीन विश्व में एक समान प्रथा के अनुसार जीवन के विश्वास की कल्पना वाक् अथवा शब्द के प्रादुर्भाव के साथ भी की जाती है और तदनुसार जीवन-विकास की विभिन्न अवस्थाओं को अक्षरों और संख्याओं के रूप में कल्पित किया जाता है। भारत के तन्त्र और मन्त्र साहित्य में तथा यूनान की दार्शनिक परम्परा में तो इसका विशेष महत्त्व है; ही, परन्तु किसी न किसी रूप में इसके अवशेष यहूदी, अरबी तथा चीनी परम्पराओं में भी प्राप्त होते हैं। इसी कल्पना का समावेश करते हुए जीवन वृक्ष का चित्र एक सिन्धु मुद्रा पर भी पाया जाता है। उसको यहां प्रस्तुत किया जा रहा है:—

वृक्ष का जो छोटा-सा तना है वह भारतीय अरबी परम्परा में अकार होने के साथ-साथ एक की संख्या का भी द्योतक है। इस तने के ऊपर जो पीपल के पत्ते के आकार का चिह्न है वह सिन्धु लिपि का लकार है। इन दोनों के मेल से अल् शब्द बनता है जिसकी तुलना वैदिक अलं, ग्रीन अलो (Allo), इंगलिश अल् (Al) अथवा आल (All) से की जा सकती है। इनमें से प्रत्येक समग्रता का द्योतक है जिसमें कुछ द्वैत की झलक भी मिलती है। इस चित्र में भी अल् उस अद्वैत तत्त्व का द्योतक है जो द्वैत की ओर अग्रसर हो रहा है। इसी द्वैतकी ओर संकेत करने वाली वे दो वक्र रेखाएं हैं जिनके एक शृंगी पशु चित्रित किए गए हैं। इसी द्वैत से एक गोलाकार वृत्त प्रादुर्भूत होता दिखाया गया है जिसको एक वृत्ताकार अण्डा कह सकते हैं और उसमें रखे हुए सात शून्य अवशिष्ट तीन से लेकर नौ तक की संख्याओं की ओर संकेत करते हैं। इस वृत्त के ऊपर एक लम्बा तना है जिसमें से नौ पत्तियां निकलती हैं जो मध्य, वाम तथा दक्षिण पक्ष में तीन-तीन होकर बंटी हुई हैं। गोलाकार वृत्त वस्तुतः सिन्धु लिपि का ओंकार है जिसकी तुलना ग्रीक और रोमन लिपियों के 'ओ' (O) से की जा सकती है। इस ओकार के ऊपर, रोमन लिपि के एक (M) के समान ही सिन्धु लिपि का मकार है। इस प्रकार ओं और म के मेल से जो मानोग्राम बनता है वही वैदिक ओम् है। यह ओम् अपने दोनों ओर (नीचे और ऊपर) नवधा सृष्टि से जुड़ा हुआ है। ऊपर की सृष्टि के अन्तर्गत नौ पत्तियां आती हैं नीचे की सृष्टि में सात शून्यों तथा दो एकशृंगियों की गणना होती है। यह तथ्य ओम् के प्रणव नाम की सार्थकता सिद्ध करता है क्योंकि प्रणव का अर्थ है प्रकृष्ट नव अर्थात् नवधा सृष्टि से प्रकृष्ट रूपेण संयुक्त। इस प्रणव अथवा ओम् के पूर्व उपर्युक्त अल् का प्रयोग होने से अल् नामक मानोग्राम बनता है जिसकी तुलना यहूदी परम्परा के एलोहीम तथा अरबी अल्लाह से की जा सकती है।

(क्रमशः)

—रामचन्द्रराव वन्देमातरम्

सामायिक चर्चा—

चीन में कम्यूनिज्म का ह्रास होना ही था

चीन में कम्यूनिज्म को घत्ता बताया जा रहा है भले ही वह यथार्थ हो। अब से लगभग ११ वर्ष पूर्व इस घटना क्रम का चीन के सुप्रसिद्ध लेखक श्री लिन यूटोक ने आभास करा दिया था। इस प्रसंग में उनके 'मेरा देश और मेरे देशवासी' ग्रन्थ का निम्नलिखित अवतरण दृष्टव्य है:—

"राष्ट्रवाद, फैसिज्म या कम्यूनिज्म का दास बन जाना जो औद्योगिक क्रान्ति की अति के परिणाम हैं और यह भूल जाना कि राज्य का अस्तित्व व्यक्ति के लिए होता है न कि व्यक्तिका अस्तित्व राज्य के लिए बहुत सरल है।

कम्यूनिस्ट राज्य का आकर्षण जिसमें व्यक्ति किसी वर्ग या राज्य की मशीन का पुर्जा माना जाता है जीवन के वास्तविक उद्देश्य विषयक कन्फ्यूशसीय प्रेरणा से एक दम समाप्त हो जायगा।

इन सब प्रणालियों के कारण मानव प्राणी अपने अस्तित्व की स्वतन्त्रता और जीवन के सुख की प्राप्ति के अधिकार को छोड़ने के लिए उद्यत न होगा।

मानव जीवन का सुख समस्त राजनीतिक अधिकारों से अधिक मूल्यवान् होता है। चीन के भद्र पुरुष को यह मानने के लिए तैयार कर लेना कि राज्य का हित व्यक्ति के हित से ऊपर होता है फैसिस्ट चीन के लिए दुरुह कार्य होगा।

कम्यूनिज्म का सूक्ष्म निरीक्षण चीन में कम्यूनिज्म की विफलता का सबसे जड़ा कारण यह उपस्थित करता है कि इस प्रणाली में जीवन अत्यधिक यान्त्रिक और अमानुषिक होता है।"

कन्फ्यूशस आर्यमनीषियों की भांति व्यक्ति और समाज निर्माण को धर्म का कार्य एवं अधिकार क्षेत्र मानते थे न कि राजनीति को। धर्म पर निर्मित समाज की इकाई-सुघड़ एवं सम्पन्न परिवार होताहै। इसीलिये उन्होने राज्य निर्माण में परिवारों की विशिष्टता को प्राथमिकता और वरीयता दी थी।

उन्होंने कहा था कि:—

'प्राचीन काल के लोगों ने अपने राज्य को सुव्यवस्थित करने की इच्छा से सर्वप्रथम अपने परिवारों को सुव्यवस्थित किया परिवारों को सुव्यस्थित करने की इच्छा से उन्होंने सर्वप्रथम अपने शरीर का विकास किया (ब्रह्मचर्य)। अपने शरीर का विकास करने की इच्छा से उन्होंने सर्वप्रथम अपने मस्तिष्क को ठीक किया। अपने मस्तिष्क को ठीक करने की इच्छा से उन्होंने सर्वप्रथम अपनी इच्छाओं को पवित्र बनाया। अपनी इच्छाओं को पवित्र बनाने की इच्छा से उन्होंने सर्वप्रथम अपने सत्ज्ञान को बढ़ाया। ज्ञान की वृद्धि वस्तुओं की सम्यक् ऊहापोह पर निर्भर हुई। वस्तुओंकी ऊहापोह से ज्ञान के बुद्धिमत्ता में परिणत हो जाने पर इच्छाएं पवित्र हुई। इच्छाओं के पवित्र हो जाने पर मन ठीक हुये। जब मन ठीक और पवित्र हुये तो मस्तिष्क ठीक हो गये मस्तिष्क ठीक होने पर शरीर विकसित हुये शरीर के विकसित हो जाने पर परिवार सुव्यस्थित हो गये। परिवारों के सुव्यवस्थित हो जाने पर उनके राज्य व्यवस्थित हो गये। राज्यों के व्यवस्थित हो जानेपर परिवारों तथा राज्यों में शान्ति और समृद्धि व्याप्त हो गई।"

मजहब के सौदागर

धर्म के नाम पर सिर्फ हमारे देश में ही रुपया नहीं ऐंठा जाता, जिन मुल्कों को हम बहुत तरक्कीयाफ्ता समझते हैं, उनमें भी मजहब के नाम पर तगड़ी ठगाई होती है। ऐसा ही एक वाकाया अभी अमेरिका में हुआ। वर्जीनिया की 'ब्रेस्प्रिंग इन्टरनेशनल' नामक संस्था ने दो घण्टे का एक कार्यक्रम टेलीविजन पर पेश किया, जिसका मकसद यह बताना था कि भारत अब हिन्दू धर्म से तंग आ चुका है और उसके ६६ करोड़ हिन्दू ईसाई धर्म अपनाने के लिये बेताब हैं लेकिन इन बेचारे हिन्दुओं तक ईसा मसीह का सन्देश पहुंचे तो कैसे पहुंचे? इसे पहुंचाने के लिये उक्त संस्था ने एक 'मार्मिक' [illegible] जिसका नाम 'दया सागर' है। दया के इस सागर को हिन्दुओं के घर घर पहुंचाने के लिये उक्त संस्था ने अपने लाखों दर्शकों से चन्दे की अपील की है और अपील को असरदार बनाने के लिए उन्होंने महात्मा गांधी और मदर टेरेसा का नाम भी घसीटा है। महात्मा गांधी को यह कहते हुये बताया है कि आप भारत को नहीं, भारतीयों को बदल सकते हैं और मदर टेरेसा की इस उक्ति को उद्धृत किया गया है कि ईसा मसीह ही भारत के एकमात्र उद्धारक हो सकते हैं।

जाहिर है कि इस तरह की संस्थाओं का न ईसा मसीह से कुछ लेना-देना है, न गांधी या टेरेसा से! उनका एकमात्र मकसद पैसा बनाना है और इसके लिये आप कहें उसको, वे बेच खाएं। इन्हें इतनी शर्म भी नहीं कि अपने काले इरादों को कारगर करते वक्त भारत जैसे देशों पर वे कीचड़ उछालने से बाज आएं।

(नव भा० १०-१-८५)

बधाई और चेतावनी

हमारी राजनीति सत्ता की भूख और भ्रष्टाचार से अभिशप्त रही है परन्तु उसमें हिंसा का प्रवेश और उससे इसका विकृत हो जाना वस्तुतः बहुत ही बड़ा अभिशाप है जिसके प्रमाण देशवासियों को समय-समय पर मुख्यतः बड़े चुनावों में मिलते रहते हैं और वर्तमान चुनावों में कुछ बड़े पैमाने पर मिले हैं।

राष्ट्र प्रेमियों की दृष्टि में इन उभारों और इनके विस्तार की उपेक्षा करना देश हित और प्रजातन्त्र की पवित्रता और विश्वसनीयता के लिए घातक होगा।

इस बड़े विशाल देश में विभिन्नताओं की विद्यमानता में इस प्रकार की घटनाओंको छुट-पुट मानकर इनकी उपेक्षा करना तो और भी अधिक हानिकर होगा विशेषतः गृह शान्ति, एकता, अखण्डता और सुरक्षा की दृष्टि से। देश प्रेमियों, दूरदर्शी, बुद्धि जीवियों और मनीषियों में इस भय का संचार हो सकता या बढ़ सकता है यदि इस प्रकार की प्रवृतियों एव प्रगतियों पर शीघ्रातिशीघ्र अंकुश न लगाया गया तो देश गृह कलह में लिप्त और स्वतन्त्रता से वंचित भी हो सकता है।

जिसके लिए देश विरोधी बाहरी शक्तियों एवं तत्व, प्रत्यक्ष वा अप्रत्यक्ष रूपेण आशान्वित तथा प्रयत्नशील है विशेषतः ऐसे समय जबकि अनेक जय चन्दों का उद्भव हो रहा हो।

आवश्यकता है देश प्रेम, राष्ट्रवाद, देश सेवा की भावना के पुनर्जागरण की जिनका ह्रास गत २०-२२ वर्षों से होना शुरु हुआ है।

चुनावों में हुई कुछेक दुःखद घटनाओं के परिपेक्ष्य में एक बड़े अनुभवी प्रबुद्ध राष्ट्र प्रेमी का कथन ध्यान देने योग्य है। उनका कथन है:—

बड़े चुनावों की फलश्रुति कोई भी क्यों न हो हमें इनसे कुछ शिक्षाएं जरूर ग्रहण करनी चाहिएं। सर्वप्रथम आम सहमति की पुनः प्राप्ति की परमावश्यकता है जिसमें सभी पार्टियां और विचारधाराएं सहभागी हों।

दूसरी शिक्षा है चुनाव और शासन प्रणाली में शीघ्र से शीघ्र जरूरी सुधारों का किया जाना।

"देश संसार के सबसे बड़े चुनाव के प्रायशः शान्तिपूर्ण ढंग से जिसमें करोड़ों लोगों ने भाग लिया, सम्पन्न होने पर गर्व कर सकता है जिसमें प्रजा ने कांग्रेस (इ) को विजयी बनाकर उसके प्रति अपनी निष्ठा और विश्वसनीयता का बड़े पैमाने पर इजहार (अभिव्यक्ति) किया है और विरोधी दलों के प्रति आक्रोश का। यदि उसने देश को सुखी, समृद्ध, चरित्रवान् सुशिक्षित, शक्ति सम्पन्न, सुरक्षित, संगठित बनाने और रखने में अपेक्षित भूमिका नहीं निभाई जो मुख्यतः राजनीति को धर्ममय बनाने से, कुशल, स्वच्छ और टिकाऊ प्रशासन कोई आदर्श देने एवं देश प्रेम को जागृत रखनेसे ही सम्भव हो सकता है तो अगली बार उसे बधाई देने और उसका जय जयकार करने की बहुत कम गुंजाइश रह जायगी।" —रघुनाथ प्रसाद पाठक

ईश्वरानुग्रह से आत्मदर्शन

ओ३म् । न विजानामि यदिवेदमस्मि निण्यः सन्नद्धो मनसा चरामि । यदा मागन् प्रथमजा ऋतस्यादिद्वाचो अश्नुवे भागमस्याः ॥ ऋ० १।१६४।३७

(यत् इव) जो कुछ, जैसा (इदम्) यह (अस्मि) मैं हूं, यह मैं (न+विजा-नामि) विशेष रूप से नहीं जानता हूं । (निण्यः) मूढ़सा, भोला [पंजाबी में न्याणा] मैं (मनसा+संनद्धः) मन से बंधा हुआ, जकड़ा हुआ (चरामि) विचर रहा हूं । (यदा) जब (मा) मुझको (ऋतस्य) ऋत का, सत्य ज्ञान का (प्रथमजाः) प्रथमोत्पादक प्रभु (आगन) प्राप्त होता है (आत्+इत्) तब ही (अस्याः) इस (वाचः) वाणी के (भागम्) भजनीय, वाच्य को (अश्नुवे) प्राप्त करता हूं ।

कठोपनिषद् में कहा है—

नैव वाचा न मनसा प्राप्तुं शक्यो न चक्षुषा ।
अस्तीति ब्रुवतोऽन्यत्र कथं तदुपलभ्यते ॥ कठो० ६।१२

आत्मा न वाणी के द्वारा प्राप्त होता है, न मन से और आंख से । [अर्थात् ज्ञानेन्द्रियां और कर्मेन्द्रियां आत्मा का ज्ञान कराने में असमर्थ हैं, मन ही इन इन्द्रियों के बताए ज्ञान का धनी है, वह कैसे आत्मा का ज्ञान कराये] जिसको यह भान हो गया कि आत्मा है, उसे और कैसे बताया जाये ?

उपनिषत् कह रही हैं—आत्मा 'न मनसा प्राप्तुं शक्यः' मन के द्वारा नहीं मिल सकता, और मैं निण्य=न्याणा हूं । मनसः सन्नद्धः=मन के चक्कर में फंस गया हूं, मन के बन्धन में बन्ध कर जहां मन ले जाता है, वहां जाता हूं, मैं न्याणा कैसे कहूं कि मैं क्या हूं, कौन हूं, कैसा=किस्वरूप हूं ? इस सब को 'न विजानामि' मैं नहीं जानता हूं ।

अनुमान के द्वारा यदि कुछ जानूंगा, तो वह सामान्यज्ञान होगा । धुआं देखकर अग्नि का ज्ञान होता है किन्तु किसका अग्नि—तिनकों का, गोमय का या लकड़ी का, यह ज्ञान तो नहीं होता, यह तो प्रत्यक्ष से होता है । इसी प्रकार मृत शरीर और अमृत शरीर को देखकर किसी चेष्टा वाले का, चेष्टा की इच्छा वाले का ज्ञान करूं तब भी 'यदिवेदमस्मि' जो कुछ मैं हूं, इसको नहीं जानता । यदि मैं अहंकार करूं—'सुवेदेति' मैं भली भांति जानता हूं ।

दभ्रमेवापि नूनं त्वं वेत्थ (केनो० २।१

सचमुच तू बहुत ही थोड़ा जानता है ।

अतः मैं कहता हूं—न विजानामि=मैं विशेष नहीं जानता हूं । हां यदि मुझ पर ईश्वर कृपा हो जाये, ईश्वर के दर्शन हो जाये, तो मैं इस 'मैं' 'मैं' करने वाले को भी जान जाऊं । वेद यह ही तो रहा है—यदा········ भागमस्याः । ऋषि इसी का अनुवाद कर रहे हैं—

तमक्रतुः पश्यति वीतशोको धातुः प्रसादान्महिमानमात्मनः (कठो० २।२०)

विधाता की कृपा से ही निष्कामकर्मा, अतएव शोक से रहित, रागद्वेष से शून्य महात्मा ही आत्मा की महिमा को देख पाता है ।

ईश्वर कृपा कैसे मिले ? ईश्वर की अनन्य भक्ति से, सब ओर से चित्त हटाकर उस परम गुरु के अर्पण करने से । योगिराज पतंजलि जी ने कहा भी है—

ईश्वरप्रणिधानाद्वा (योग १।२३)

ईश्वर की अनन्य भक्ति से चित्त की वृत्तियों का निरोध होता है ।

बाह्य विषयों से सर्वथा हट जाने का नाम निरोध है । तब आत्मा के अन्दर बसने वाले अन्तरात्मा परमात्मा के दर्शन और अनुग्रह होते हैं । उन का फल है—

ततः प्रत्यक् चेतनाधिगमोऽप्यन्तरायाभावश्च (यो० १।२९)

ईश्वरप्रणिधान से अपने चेतन स्वरूप का ज्ञान तथा विघ्नों का विनाश होता है ।

अपना आपा जानना है तो ईश्वरप्रणिधान करो । उपनिषद् ने और योग दर्शन ने जो बात हजारों हजारों में बतलाई, वेद ने उसे करोड़ों वर्ष पहले बहुत स्पष्ट खोलकर रख दी है । पिता अपने पुत्रों को कैसे खोल कर न समझावे, वह क्योंकर छिपाए ? छिपाने से उसके पुत्रों का कल्याण नहीं हो सकता । किन्तु हम मन के फन्दे में फंसे उसे जानने की चेष्टा ही नहीं करते । मन प्रकृति का पुत्र है, उसने जीव को बांध रखा है ! समझे !

ईश्वरानुग्रह-प्राप्ति का उपाय—

भगवान् स्वभाव से कृपालु है । यह सृष्टि उन की कृपा का सबसे बड़ा प्रमाण है । अपना कोई प्रयोजन न होते हुए परमेश्वर ने संसार रचा केवल जीवों के उद्धार के लिए । स्वाभाविक कृपालु की कृपा प्राप्त करना कुछ बहुत कठिन नहीं है । उस की कृपा प्राप्त करने के लिए अपने आत्मा और अन्तः करण को उसकी ओर प्रवृत्त करो । परमात्मा माता पिता के समान कृपालु है । जब वह अपने वत्स जीव को अपनी ओर प्रवृत्त देखता है तो वह कृपालु अपने अनन्त शक्तिरूप हाथों से मानो उस प्रेमी को उठा कर अपनी गोद में बिठा लेता है ।

अनन्य मन से परमेश्वर की स्तुति प्रार्थना और उपासना करना, तथा उसके आदेश में रहकर तदनुसार अपना आचरण बनाना प्राणपण से तन मन धन लगा कर लोकोपकार में अपने आप को समर्पित कर देना, स्वार्थ त्याग कर परार्थ साधन में तत्पर रहना, सदा सत्कर्मों को करना, अकर्मण्य न रहना परमेश्वर के न्याय, दया, उपकार, आदि गुणों को अपने में धारण करना; विषयवासना से ऊपर उठकर चंचल चपल चित्त को अचल अविचल करने का पुरुषार्थ करना आदि परमेश्वर की ओर प्रवृत्त होने के साधन हैं । जो इन साधनों को अपनाता है, परमेश्वर भी उसे अपनाता है अर्थात उसे अपने अनु-ग्रह का पात्र बनाता है । जैसे बालक जब माता की ओर चलता है तब माता आगे आकर बालक को गोद में ले लेती है कि कहीं बालक को चोट न लग जाए ? इसी भांति जब कोई साधक सर्वात्मना जगदम्बा की ओर चलता है तो जगत्माता भी उसका स्वागत करती है, अत्यन्त प्रीति से अपनाती है, सब प्रकार के पाप सन्ताप पातकों से बचाती है ।

—व्या० स्वा० वेदानन्द तीर्थ

फैसला अन्तिम होना चाहिए

चुनाव के बाद जब श्री राजीव गांधी ने फिर से प्रधानमन्त्री का पद भार सम्भाला तो उन्होंने तीन मुख्य वायदे देश की जनता से किये थे—पहला पंजाब की समस्या को हल करने का, दूसरा देश से गरीबी मिटाने का और तीसरा भ्रष्टाचार को समाप्त करने का ।

जहां तक देश के वर्तमान ढांचे में से गरीबी को मिटाने और भ्रष्टाचार को समाप्त करने का सम्बन्ध है हम समझते हैं कि यह एक दूर की कौड़ी लाने वाली बात है । जैसा कि हम पहले लिख चुके हैं भ्रष्टाचार को समाप्त करने का दावा सबसे पहले भूतपूर्व केन्द्रीय गृहमन्त्री श्री गुलजारीलाल नन्दा ने किया था और देश से गरीबी खत्म करने का नारा सबसे पहले स्वर्गीय प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी ने लगाया था । श्री गुलजारीलाल नन्दा ने वर्षों पहले सक्रिय राजनीति छोड़ दी और श्रीमती इन्दिरा गांधी को हत्यारों की गोलियों ने सदा सर्वदा के लिए हमसे छीन लिया मगर भ्रष्टाचार तथा गरीबी दूर तो क्या होनी थी उसकी जड़ें देश में पहले से भी अधिक गहरी और मजबूत हो गई । कोई क्षेत्र आज ऐसा नहीं जहां भ्रष्टाचार व्याप्त न हो और रही बात गरीबी की सो देश की आधी से भी अधिक आबादी गरीबी की रेखा से नीचे की जिन्दगी आज बसर कर रही है ।

यह सब कुछ लिखने का आशय हमारा यह कदापि नहीं है कि भ्रष्टाचार और गरीबी की बीमारियां लाईलाज हैं या इनसे लड़ने के लिए कोई कदम हमें नहीं उठाना चाहिए । इन दोनों भयावह रोगों पर काबू पाने के लिए पूरी शक्ति से प्रयत्न किया ही जाना चाहिए । जितनी भी पेशकदमी कोई सरकार इस मोर्चे पर कर सकेगी उसे यकीनन उसकी उपलब्धि ही माना जायेगा ।

अब जो सबसे महत्वपूर्ण वायदा श्री राजीव गांधी का शेष बचता है वह है पंजाब समस्या को हल करने का । यह एक संतोषजनक बात है कि अपने इस वायदे को पूरा करने की दिशा में प्रधानमन्त्री

(शेष पृष्ठ ६ पर)

(पृष्ठ ५ का शेष)

(पृष्ठ ५ का शेष)

पूर्णतया सचेष्ट और सक्रिय हैं और नयी सरकार की बागडोर सम्भालने के केवल तीन दिन बाद ही पंजाब समस्या पर विचार और उसके समाधान के लिए मन्त्रियों की एक उच्चस्तरीय समिति उन्होंने बना दी है जिसमें गृहमन्त्री श्री एस०बी० चह्वाण, रक्षामन्त्री श्री पी० वी० नरसिन्हाराव और शिक्षामन्त्री श्री के० सी० पन्त शामिल हैं।

सरकारी सूत्रों के अनुसार सारी स्थिति का जायजा लेने के बाद यह समिति पंजाब समस्या के समाधान के लिए नये सिरे से प्रयास शुरु करेगी। यह भी कहा जाता है कि श्री राजीव गांधी ने समिति को कुछ दिशा निर्देश दिये हैं जिनके आधार पर वह काम करेगी।

यह समिति पंजाब की वर्तमान स्थिति का जायजा लेगी और जनता के विभिन्न वर्गों द्वारा समस्या के हल के लिए दिए गए सुझावों की जांच करेगी।

जहां तक हम समझते हैं यह एक अच्छी शुरुआत है। हम तो पिछले तीन वर्ष से रह-रहकर यही लिखते चले आ रहे हैं कि पंजाब समस्या का कोई सर्वसम्मत हल निकाला जाना चाहिए, परन्तु आज तक ऐसा नहीं हो सका और न ही सही अर्थों में सरकार शासन कर सकी। यह आवाज उठाते-उठाते ही रमेश जी भी देश की एकता और अखण्डता के लिए शहीद हो गये। यदि कोई हल इस समस्या का समय रहते निकाल लिया गया होता या सरकार ने सही अर्थों में शासन ही किया होता तो न ही पंजाब की धरती खून से इस तरह रंगी जाती और न ही जो कुछ देशके अन्य भागोंमें हुआहै वह होता।

पंजाब समस्या के मामले में जहां तक अकालियों की धार्मिक मांगों का सम्बन्ध है वे न्यूनाधिक स्वीकार की जा चुकी हैं और जो थोड़ी बहुत शेष भी बची हैं उनके लिए कोई विशेष आग्रह भी अकालियों का अब नहीं है। अब तो मुख्य मुद्दे आनन्दपुर प्रस्ताव, नदियों के पानी का बटवारा, पंजाब से बाहर रह गए बहु पंजाबी भाषी क्षेत्रों को पंजाब में मिलाने तथा चंडीगढ़ पंजाब को दिये जाने के ही शेष रह गएहैं। जहां तक नदियों के पानी के झगड़े का सम्बन्ध है,उसे किसी ट्रिब्यूनल वा सर्वोच्च न्यायालयके किसी जज पर आधारित किसी आयोग के हवाले किया जा सकता है। चण्डीगढ़ के बारे में पहले ही श्रीमती गांधी ने यह कह दिया था कि चण्डीगढ़ पंजाब का है। जहां तक अबोहर और फाजिल्का के कुछ गांवों का प्रश्न है, पंजाब के शान्तिप्रिय नागरिकों को १०-२० गांव या कुछ इलाका इधर या उधर चले जाने में कोई आपत्ति नहीं है। त्रिपक्षीय वार्ताएं भी इस बारे में हो चुकी हैं और उनमें हल के नजदीक तक पहुंचा जा चुका था' इसलिए इसे भी हल करना मुश्किल नहीं। ऐसी हालत में अकालियों की तरफ से फिर बार-बार आनन्दपुर प्रस्ताव को उछाल कर शक की गुंजाइश पैदा की जा रही है।

अकालियों का कहना है कि आनन्दपुर प्रस्ताव राज्य को अधिक अधिकार दिलवाने वाला एक प्रस्ताव है और केन्द्र का स्टैंड यह है कि यह देश की एकता और अखण्डता के लिए घातक एवम् अलगाववादी प्रस्ताव है। श्री राजीव गांधी आनन्दपुर प्रस्ताव को ही मुद्दा बनाकर चुनाव लड़े और चुनाव के दौरान ही उन्होंने अकालियों के हितैषी सभी प्रतिपक्षी दलों को यह कहने के लिए विवश कर दिया कि वे आनन्दपुर प्रस्ताव के समर्थक नहीं हैं। सारे देश की जनता ने भी आनन्दपुर प्रस्ताव के विरुद्ध वोट देकर देश की एकता और अखण्डता के पक्ष में फतवा दिया और कांग्रेस को अभूतपूर्व ढंग से विजय इन चुनावों में दिलाई।

यहां यह बात भी उल्लेखनीयहै कि केन्द्र और राज्यों के सम्बन्धों पर पुर्नविचार के लिए केन्द्र पहलेही सरकारिया आयोग की स्थापना कर चुका है। अतः अब जब कि केन्द्र राज्य सम्बन्धों पर पुर्नविचार के लिए सरकारिया आयोग भी बन गया है, अकाली दल के हितैषी सभी प्रतिपक्षी दल भी आनन्दपुर प्रस्ताव को समर्थन न देने की घोषणा कर चुके हैं और देश की जनता ने भी उसके विरुद्ध फतवा देकर उसे रद्द कर दिया है तो अकालियों का रह-रह कर आनन्दपुर प्रस्ताव की रट लगाना और उसे अपने लिए जीवन-मरण का प्रश्न घोषित करना यही सिद्ध करता है कि यह प्रस्ताव प्रदेश के लिए अधिक मांगों का प्रस्ताव नहीं बल्कि 'खालसा जी का बोलबाला' वाला एक ऐसा पृथकतावादी प्रस्ताव है जिससे देश की एकता और अखण्डता खतरे में पड़ सकती है।

इस मामले में अकालियों की हठधर्मी के कारण जितनी मात प्रतिपक्षी दलों को इस चुनाव में पड़ी है उससे निश्चित ही कोई सबक उन्हें लेना चाहिए था। मगर दुर्भाग्यपूर्ण बात यहहै कि सर्वश्री लाल पुरा और सुरजनसिंह ठेकेदार आज भी यही कहे चले जा रहे हैं कि आनन्दपुर प्रस्ताव को प्रतिपक्षी दल ढंग से समझ और समझा नहीं सके और इससे कम कुछ भी उन्हें स्वीकार्य नहीं है।

जहां तक पंजाब की शान्ति प्रिय जनता का प्रश्न है वह तो सीधी सी बात यह समझती है कि यह नदियों का पानी जो हिमाचल और जम्मू कश्मीर से आता है और पंजाब से बहता हुआ समुद्र में जा मिलता है वह सारे देश का है और किसी भी प्रदेश को उसकी आवश्यकता के अनुसार दे दिया जाए वह देश में ही रहेगा और देश के लोगों को ही उसका लाभ मिलेगा।

आम लोगों को इस बात में भी कोई आपत्ति नहीं है कि आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले और कुछ सिखों के सुझाव के अनुसार पंजाब, हरियाणा, हिमाचल और चण्डीगढ़ को मिलाकर पंजाब को एक विशाल रूप दे दिया जाये। वैसे इस सुझाव को माना जा सकता है या नहीं यह अलग बात है। दरअसल छोटे या बड़े प्रदेश में सारे झगड़े तो राजनेताओं के ही स्वार्थ के कारण खड़े होते हैं। इतना बड़ा पंजाब भी आज अकालियों के कारण ही इतना छोटा रह गया है और अकाली ही अब उसे फिर से बड़ा करने की भी मांग करने लगे हैं। आज पंजाब के पास लोकसभा में कुल १३ सीटें हैं, अगर पंजाब, हिमाचल, हरियाणा और जम्मू कश्मीर इकट्ठे होते तो उसके पास चण्डीगढ़ की एक सीट समेत ३४ सीटें होतीं और कोई प्रभावपूर्ण आवाज उनकी लोकसभा में होती।

उत्तर प्रदेश का प्रधानमन्त्री हमेशा इसी लिए बनता है क्योंकि वहां की सीटें लोकसभा में सबसे अधिक हैं। इन चार प्रदेशों से अव्वल तो कोई मन्त्री बनता ही नहीं, बनता भी है तो उसकी कोई खास आवाज नही होती। सरदार स्वर्णसिंह वर्षों केन्द्रीय मन्त्री रहे और जालंधर को एक फ्लैग स्टेशन के सिवाए कुछ भी न दिला सके। अलबत्ता श्री इन्द्रकुमार गुजराल के समय में टी०वी० केन्द्र जरूर जालंधर को मिल गया वह भी शायद इसलिये कि पाकिस्तानी टेलीविजन के प्रचार का मुकाबला और किसी तरह हो नहीं सकता था।

बहरहाल अब जब कि प्रधानमन्त्री ने पंजाब की समस्या को हल करने के लिए नए सिरे से प्रयत्न आरम्भ किए तो हम केवल इतना ही कहना चाहेंगे कि उन्हें अकाली दल के साथ-साथ अन्य सभी प्रतिपक्षी दलों को भी इस मामले में साथ बिठाना चाहिए और इस समस्या के सर्वसम्मत हल पर सभी से पुष्टि की मोहर लगवानी चाहिए, इसके साथ ही यह बात भी बिल्कुल स्पष्ट होनी चाहिए कि यह हल अन्तिम है और इसके बाद किसी भी समय और किसी भी हालत में यह विवाद दोबारा खड़ा नहीं होगा। प्रधानमन्त्री ने राष्ट्रीय समस्याओं में विपक्ष को साथ लेकर चलने की बात कही भी है और उसकी शुरुआत यहीं से होनी चाहिए। अकालियों से वैसा समझौता हरगिज नहीं होना चाहिए जैसा अन्ना द्रमुक से तमिलनाडु में इंका ने किया है क्योंकि इससे झगड़ा फिर कभी शुरु

अद्भुत प्रतिभा की स्वामिनी—

आचार्या लज्जावती

—शादी राम जोशी

१९०१ में अपनी छः वर्ष की आयु में, कु० लज्जावती पेशावर से, उस समय की स्त्री शिक्षा की तेजस्वी राष्ट्रीय संस्था कन्या महाविद्यालय जालंधर में पढ़ने के लिए आईं। अपनी माता और अपने नाना से आर्य समाज के संस्कार लेकर वे अपनी वक्तृत्व-शक्ति की प्रतिभा के कारण, संस्था के संस्थापक लाला देवराज जी की मानो प्रिय बेटी ही बन गईं। विद्यालय की, उस समय की, सात-आठ वर्ष की शिक्षा समाप्त करके वे १९१० में घर चली गईं तो पेशावर आर्य समाज के वार्षिकोत्सव पर गए लाला जी उन्हें आपके मां-बाप से, विद्यालय की छह साल की सेवा के लिए मांग लाए।

उस समय गुरुकुल कांगड़ी से निकले पहले 'बैच' के प्रतिभाशाली स्नातकों के व्याख्यानों से आर्य समाज का प्लेटफार्म ओजस्वी था। कन्या महाविद्यालय की स्नातिका के रूप में उनके भाषण भी आर्य समाज के प्लेटफार्म पर होने लगे। तेरह-चौदह वर्ष की लड़की का हजारों की हाजिरी में प्रभावशाली रूप से बोलना एक चमत्कार जैसा था। आर्य समाज के प्रेरणा-पुरुष स्वामी श्रद्धानन्द जी ने उन्हें आर्य समाज के सेवा कार्य में दीक्षित हो जाने को प्रेरित किया। १९१५ में, अपनी केवल १८ वर्ष की आयु में वे कन्या महाविद्यालय की उपाचार्या और १९१८ में आचार्या नियुक्त हो गईं।

१९१७ में कन्या महाविद्यालय की आर्थिक कठिनाई को दूर करने के लिये कु० लज्जावती ने पचास हजार रुपये, जो आज के दस लाख रुपये के बराबर होंगे, जमा करके ही विद्यालय में कदम रखने का प्रण किया और एक वर्ष के अन्दर अन्दर ही उस प्रण को पूरा कर लिया। बीस वर्ष की एक लड़की का उत्तरी भारत का यह दौरा स्त्री-शक्ति-जागरण की ऐतिहासिक घटना थी।

कांग्रेस के वार्षिक अधिवेशनों के साथ, जो समाज सुधार सम्मेलन होते थे, उनमें भी वे लाला देवराज के साथ जाने लगीं। भारत कोकिला सरोजिनी नायडू के साथ उनका ऐसा घनिष्ठ सम्बन्ध हो गया कि वे उनको 'मम्मी' कहकर ही पुकारने लगी। गांधी युग के आरम्भ के साथ ही उनका सम्पर्क महात्मा गांधी, देशबन्धु दास और लाला लाजपत राय जैसे महापुरुषों के साथ हो गया। उनके आचार्यत्व ने उस काल में कन्या महाविद्यालय, आर्य समाज की धर्म भावना के साथ कांग्रेस की राष्ट्रीयता का भी एक सुन्दर केन्द्र बन गया। इस रूप में संस्था की ख्याति सारे भारत में फैल गई। बंगाल और दक्षिण के नेता जालन्धर आए तो विद्यालय में भी पधारे। अंग्रेजी भाषा में ही बोल सकने वाले देशबन्धु दास जैसे नेताओं के जालन्धर में होने वाले व्याख्यानों का, वाक्य के साथ वाक्य, अनुवाद करते जाने की उनकी प्रतिभा का श्रोताओं पर बहुत प्रभाव पड़ता था। उन्होंने आचार्यत्व काल से विद्यालय में सुशीला दीदी जैसी ऐसी देशभक्त छात्राएं निकालीं, जिन्होंने भगतसिंह जैसे क्रान्तिकारियों के साथ काम किया।

१९१६ से १९३५ तक उन्हें लाला देवराज जी की अनुमति से, माता से वंचित हुए और अपने बच्चों के समान पाले गये भाई और बहन की ऊंची शिक्षा के लिये लाहौर में रहना पड़ा तो वे लाला लाजपत राय के और सरदार भगतसिंह जैसे क्रांतिकारियों के निकट सम्पर्क में आईं। लाला जी उनसे बहुत प्रभावित हुए और उन्होंने अपने पीछे छोड़े जाने वाले समाज सेवा के अपने कार्मों के संचालन करने वालों में उनका भी स्थान रखा। १९२९ में लाहौर में हुए ऐतिहासिक कांग्रेस अधिवेशन में कु० लज्जावती स्त्री स्वयं सेविकाओं की कमांडर नियुक्त हुईं। सरदार भगतसिंह के केस की पैरवी करने के लिए जो समिति बनाई गई थी, उसकी वे सेक्रेटरी थीं।

१९३५ में ला० देवराज जी के देहांत के पश्चात कन्या महाविद्यालय के संचालन की जिम्मेदारी उन पर आ गई। तब से लेकर लगभग ३० वर्ष तक विद्यालय की आचार्या के रूप में कार्य करते हुए उन्होने संस्था को उसके वर्तमान, एक पोस्ट ग्रेजुएट कालेज के रूप मे तो विकसित किया ही साथ ही संस्था की विरासत राष्ट्रीयता की भावना को भी सुरक्षित रखा। अंग्रेजी राज के दमन काल में भी कन्या महाविद्यालय के विशाल मैदान में सप्ताह के पहले दिन उस समय के राष्ट्रगान के साथ, उस समय का राष्ट्र ध्वज लहराया जाता रहा। स्वतन्त्र भारत में राष्ट्रपति डा० राजेन्द्र प्रसाद तथा अन्य राष्ट्रपति और पंडित जवाहर लाल नेहरू और लालबहादुर शास्त्री जैसी विभूतियां संस्था मे पधारती रही।

आचार्य पद से सेवा मुक्त होकर भी वे अब तक अपने जीवन के सर्वस्व विद्यालय के साथ रहीं। संस्था के साथ उनका लगभग अस्सी वर्ष का स्नेह-सम्पर्क, इस ऐतिहासिक संस्था का एक ऐतिहासिक महत्वपूर्ण तथ्य है।

हो सकने की सम्भावनाएं मौजूद रहेंगी।

अकाली नेताओं से भी हम यह कहना चाहेंगे कि उन्हें बदले हुए घटनाक्रम और देश की जनता के फतवे के दृष्टिगत आनन्दपुर साहिब प्रस्ताव का दामन छोड़कर एक लचकीला रवैया अपनाना चाहिए और पंजाब समस्या को हल करने में अपना पूरा रचनात्मक सहयोग देना चाहिए। प्रधानमन्त्री श्री राजीव गांधी ने गेंद अब अकालियों की पारी में फेंक दी है। अतः अब यदि अकालियों के रवैये के कारण समझौते में कोई बाधा पड़ी तो समझौता न हो सकने और उसके परिणामों की पूरी जिम्मेदारी अकालियों पर होगी। पथ, प्रदेश और देश के प्रति उनकी निष्ठा इस समय कसौटी पर है। इस चुनौती का क्या उत्तर वे देते हैं यह तो समय ही बताएगा। —विजय

(पंजाब केसरी ५-१-८५)

महिला जगत्

मातृत्व की ओर

माता की पदवी प्राप्त करने वाली कन्याओं के जानने योग्य बातें

(३)

सुशीला ने कहा "जीजी ! मुझे याद है बच्चों की सृष्टि करना एक बड़ा कार्य है और यह कार्य परमात्मा ने स्त्रियों को सौंपा है।"

कमला ने कहा "अब तुम देखोगी परमात्मा ने इस बड़े कार्य के लिए स्त्री को किस प्रकार समर्थ बनाया है। लड़की के जन्म के समय उसके सब अंग पूरे होते हैं। इन्हीं अंगों में जनेन्द्रिय और गर्भाशय होता है इसी में बच्चे को सृष्टि होती है और वहीं वह बढ़ता है। १२ या १३ वर्ष को अवस्था में लड़की में गर्भ धारण करने की योग्यता आ जाती है। गर्भाशय की छोटी-२ खून की नाड़ियां इस उम्र में टूट जाती हैं और यही कारण महीने में गर्भाशय से खून बहने का है जिसे हम मासिक धर्म कहते हैं। उस समय लड़की बच्चे पैदा करने में समर्थ समझी जाती है। इस काल में लड़की की चाल, ढाल और सूरत में परिवर्तन हो जाता है। उसके चेहरे का भद्दापन दूर होकर उस पर खूबसूरती आ जाती है इसका कारण यह है कि इस समय गर्भाशय में एक आश्चर्यजनक चीज पैदा हो जाती है और उसके खून में मिल जाने से लड़की के तमाम शरीर में परिवर्तन हो जाता है। माता बनने की परमात्मा ने यही सब तैय्यारी निर्धारित की है।

लड़की के इस जीवनकाल में कई बातें ध्यान में रखने योग्य हैं। सबसे प्रथम खुले तौर पर इन बातों की चर्चा होनी चाहिए। वस्तुतः यह पवित्र रहस्य होता है जिसे सिर्फ माताएं और लड़कियां ही जानती हैं इस समय यद्यपि लड़की बच्चे पैदा कर सकती है परन्तु मासिक धर्म होने के ३-४ साल बाद तक जब तक लड़की के शरीर का पूरा विकास न हो जाये और उसमें पूरी ताकत न आ जाए गर्भ धारण करना ठीक नही होता। १२ वा १३ वर्षकी अवस्था में हड्डियों का वह ढाचा जिसमें से होकर बच्चा बाहर निकलता है पूर्ण रूप से विकसित नही हो पाता और इस अवस्था में बच्चा जनने में माता का देहान्त तक हो जाता है या उसे जीवन पर्यन्त कष्ट भोगना पड़ता है। मैंने तुम्हें कल बतलाया था कि बच्चों के पालन-पोषण का ज्ञान रखना माता के लिये बड़ा आवश्यक है। जब माता ही बच्चा हो तब वह किस प्रकार अपने बच्चे की रक्षा कर सकती है।

कमला की ये बातें सुनकर सुशीला प्रसन्न हुई मानो उसे कोई खोई हुई वस्तु मिल गई। उसने दमयन्ती से कहा "प्रियम्बदा की माता और उसके पिता जी का झगड़ा मेरी समझ में अब अच्छी तरह आ गया है। कल प्रियम्बदा की माता सुनीति के घर गई थी। मैं भी वहां थी। वह प्रियम्बदा के पिता को बहुत बुरा-भला कह रही थी। वे कहती थीं प्रियम्बदा के पिता जी १६ साल से पूर्व प्रियम्बदा की शादी करने को राजी नहीं होते हैं। मारे फिक्र के उसकी मां को नींद नही आती है। उसके पिता के लिए १३ वर्ष की बिन ब्याही लड़की का घर में बैठा रहना मानो कोई बात नही है। वे रोती थीं कि पास-पड़ोस की औरतों की बातें उससे नहीं सुनी जाती।"

कमला ने कहा "वे अच्छे विचार के आदमी मालूम होते हैं।" दमयन्ती ने कहा 'जीजी' इसके पिता आर्यसमाजी हैं और प्रियम्बदा की उम्र अभी १३ साल की है। वह उम्र में मुझसे एक साल छोटी है।

तब तो उसके पिता सही रास्ते पर हैं। मेरी ससुराल में हमने एक समाज-सुधारक सोसायटी खोली है। उसका एक कार्य बाल-विवाह प्रथा का अन्त करना है।

हमारी कोशिश होती है कि शारीरिक और मानसिक विकास के पूर्व किसी लड़की की शादी न हो हमारा विश्वास है कि शादी से पहले लड़कियों को शरीर और दिमाग में बलवान होने और हर प्रकार के गुणों को धारण करनेका पूरा-२ अवसर दिया जाना चाहिए जिससे आने वाली सन्तानें बुद्धिमान, बलवान् और श्रेष्ठ बनें।

अहा ! कितना उत्तम विचार है ? हम भी अपने स्कूल में लौट कर ऐसी ही सभा बनायेंगी। क्यों दमयन्ती अच्छा रहेगा न ? सुशीला ने प्रसन्न होकर कहा।

दमयन्ती ने कहा "बड़ा अच्छा रहेगा" जीजी ! अपनी सभा के अन्य काम भी हमें बताओ।

कमला हंसी और बोली "हमारी सोसायटी बाल विवाहों को रोकने के लिए शारदा एक्ट का भी प्रचार करती है। मेरे पास समय कम है नही तो मैं सोसायटी के कार्य ब्योरे बार बतलाती, हां ससुराल लौटकर अपनी सोसायटी के सम्बन्ध में मैं तुम्हें कुछ पुस्तकें भेजूंगी। तुम उनसे सब बातें जान जाओगी।"

अब मैं मातृत्वके सम्बन्धमें कुछ और जरूरीबातें बतलाना चाहती हूं। शादी के बाद गर्भ स्थापित हो जाने पर बच्चा मां के पेट में धीरे-२ बढ़ता और विकसित होता है। नौ महीने तक वह वहां ही सुरक्षित रहता और माता के खून से उसे भोजन प्राप्त होता है। शरीर के सब अगों के पूर्ण और बाहर प्रवेश के योग्य हो जाने पर एक नई जिन्दगी बाहरी दुनियां में प्रवेश करती है। क्या तुम लोगों ने छोटा और निःसहाय नवजात शिशु देखा है ?

लड़कियों ने सिर हिलाकर स्वीकृति दे दी। सुशीला ने कहा "जीजी बच्चे के पैदा होने में मां को बहुत तकलीफ होती होगी। यह तो बड़ी मुसीबत का काम मालूम पड़ता है ? तुमने आज की तमाम बातों मे इसका जिक्र नहीं किया।"

कमला ने कहा "तुमने देखा है मुर्गी अपने बच्चे की कितनी चौकसी करती है। तमाम माताएं अपने बच्चे की रक्षा के लिए जान की बाजी लगा देती हैं।"

त्याग का यह भाव जैसा माताओं में पाया जाता है ऐसा अन्य किसी में नहीं पाया जाता। यही हाल मनुष्य प्राणियों का है। नवजात बच्चे की मनोहर मूर्ति और मुस्कान मां के हृदय में अलौकिक प्रेम का सचार करती है और यह असीम आश्चर्य होता है। वह समझती है सृष्टि उत्पत्ति के महान् कार्य में भाग लेने से उसके लिये परमात्मा की आज्ञा है और उसने उस आज्ञा का उत्तम रीति से पालन किया है।

इस खुशी और सन्तोष में यह बच्चा होने के कष्ट को भूल जाती है। इतना कहकर कमला रुक गई। कुछ क्षण बाद बोली "अब हमें यह चर्चा बन्द कर देनी चाहिए केशव की तरफ इशारा करके उसने कहा 'देखो केशव जाग गया है।' सुशीला और दमयन्ती ने देखा कि केशव जगा हुआ है और चुपचाप पड़ा हुआ धीरे-धीरे हंस रहा है। दमयन्ती उठी और दौड़कर बच्चे का मुंह चूम कर उसे प्यार करने लगी।

कमला ने देखा कि लड़कियां उसकी बातों का मतलब समझ गई हैं और माता बनने की पवित्रता उन पर अंकित हो गई हैं। उसने कहा:—

"मुझे एक बात और कहनी है। उसके बाद हमारा आज का पाठ समाप्त हो जायेगा। बच्चे प्रायः अपने माता-पिता की शक्ल-सूरत और संस्कारों के होते हैं।" सुशीला ने कहा "ठीक तब ही मैं पढ़ने में सुस्त हूं, माता जी भी पढ़ने में सुस्त थीं।"

कमला ने उठते हुए कहा "बाद में हम इस सम्बन्ध में और बात-चीत करेंगी अब पाठ समाप्त कर दो। कहो दमयन्ती ! तुम्हारा क्या विचार है। क्या तुम्हें यहां आने का दुःख है ? क्या हमने कोई गलत बात कही है ?"

दमयन्ती ने कमला की ओर विचार पूर्ण मुस्कान के साथ देखा जो सीधी उसके हृदय से निकली थी। उसने कहा "जीजी ! आपकी बात का एक-एक शब्द सुन्दर था। मैं समझती हूं जीवन के सम्बन्ध में प्रत्येक बात सुन्दर ही है।"

—रघुनाथप्रसाद पाठक

अग्निहोत्र: एक वैज्ञानिक प्रक्रिया

प्रा० सत्यकाम आचार्य

उपमन्त्री : म० प्रा० प्रतिनिधि सभा : नांदेड़

'घर की मुर्गी दाल बराबर' ऐसी कहावत हम प्रायः सुनते रहते हैं। बहुतबार उसे हम व्यावहारिक दृष्टिकोण से चरितार्थ हुआ देखते हैं। कुछ ऐसा ही अनुभव अग्निहोत्र के विषय में आ रहा है। भारतीय ऋषिमुनि, साधु-सन्त विद्वद् समाज जिन्होंने कि इस ओर हम भारतीयों का ध्यान केन्द्रित किया और केन्द्रित ही नहीं अपितु उससे होने वाले लाभों का विशद विवरण भी दे दिया, और इसे दिनचर्या का अविभाज्य अंग भी बनाया।

आज की पढ़ी-लिखी पीढ़ी इसे एक धार्मिक कर्मकांड आडम्बर एवं ढकोसला मात्र कहकर द्रव्य एवं धन का विनाश जैसे आरोप लगाकर तिरस्कार की दृष्टि से देखते हैं।

पाश्चात्य और भारतीय वैज्ञानिक अग्निहोत्र को वैज्ञानिक दृष्टिकोण से आंक रहे हैं। उससे होने वाले लाभ पर सन्तुष्ट होकर आगे अनुसंधान जारी ही रख रहे हैं।

अमेरीका के मानसशास्त्रज्ञ श्री बेरी रायनर अग्निहोत्र को मानसिक तनाव, अपस्मार, मतिमांद्य जैसे रोगों पर अच्छा उपाय बतलाते हैं। अम्बाजोगाई (महाराष्ट्र) में अग्निहोत्र का तीन बच्चों पर प्रयोग करके देखा गया। प्रातः सायं अग्निहोत्र किया जाता रहा, जिसके प्रभाव से उनका बुद्धि गुणांक (आई. क्यू.) बढ़ा एवं सुधार के अच्छे लक्षण दिखाई दिए।

जर्मनी में एक औषधि अभ्यास केन्द्र है, जो अग्निहोत्र की भस्म से विविध औषधियां बनाता है। त्वचा, नेत्र रोग, सर्दी जलग्रंथी, स्नायुवेदना पर प्रभावी औषधियां वह केन्द्र बना चुका है। अनुसंधान अभी भी जारी है।

प्रा० मुजबल महात्मा फुले कृषि विद्यापीठ भी इसी पर संशोधन कर रहे हैं। होम की राख का प्रयोग उन्होने खेतों मे किया। नासिक जिले के पिंपल गांव में अंगूरों की फसल पर उनका परीक्षण सफल रहा। अंगूरों के बीजांकुरों को वहां छः मास लगते हैं, वहां इस होम की भस्म से २१ दिन में बीजांकरण होता दिखाई दिया। बेरी रायनर ने बताया कि बाल्टीमोर अमेरीका) में निश्चित कृषिभूमि में १९७८ से दोनों समय अग्निहोत्र का प्रयोग जारी है।

सूक्ष्मजीव वैज्ञानिक डा० अरविन्द मांडेकर ने अग्निहोत्र के धुएं का विश्लेषण किया। उनका कहना है कि इस धुएं में सूक्ष्मजीवाणुरोधक करने वाला फार्मलडी हाईड एवं अन्य अवरोधक तत्व होते हैं। प्रयोग करने के पश्चात उन्होंने जाना कि कमरे में सूक्ष्म जीवाणु की संख्या अग्निहोत्र के पश्चात ९० प्रतिशत कम हुयी। इस अग्निहोत्र को वायुशोधक कहा गया है।

विज्ञान ने यह सिद्ध किया है कि वायु में जो धूलिकण उड़ती है, वही आक्सीजन और हाईड्रोजन को मिलाकर पानी बनाने के लिए जामन का काम करती है। यज्ञों का उद्देश्य जल बरसाना भी है। हवा का कार्बोलिक एसिड जो वृक्षों के खाने से बच जाती है, और धूल के रूप में रह जाती है, उसे बरसात का पानी नीचे खेंच लाता है, और वह भी वृक्षों के लिए खाद बन जाता है। इस तरह से कार्बन पानी बरसाने और वृक्षों की खुराक बनने में सहायता करता है। कार्बन युक्त वायु मनुष्य के लिए हानियुक्त नहीं है, वैसे भी वृक्ष कार्बन को खाते हैं और आक्सिजन देते हैं। अतः यज्ञों पर कार्बन फैलाने का अभियोग नहीं लग सकता।

मनोवैज्ञानिक, कृषि वैज्ञानिक एवं जीवाणु वैज्ञानिक इस अग्निहोत्र के प्रकरण में बहुत अधिक आशावादी नजर आते हैं, और उन्हें दृढ़ विश्वास है कि इसमें ईप्सीत सफलता भी मिलेगी। धर्मशास्त्र ग्रन्थों एवं आयुर्वेदिक ग्रन्थों में भी इस पर विशद प्रकाश डाला गया है।

हम आशा करते हैं कि अग्निहोत्र से होने वाले लाभ से हमे निश्चित ही लाभ उठाना श्रेयस्कर ठहरेगा। इस पर हो रहे संशोधन निश्चित ही नास्ति पक्षियों के लिए एक चुनौती है

सार्वदेशिक आर्य वीर दल प्रशिक्षण शिविर गांधी वैदिक इन्टर कालेज चन्देना (सहारनपुर) में ३० सितम्बर से ६ अक्टूबर १९८४ को सम्पन्न हुआ, सार्वदेशिक आर्य वीर दल के उपप्रधान संचालक श्री डा० देवव्रत जी व्यायामाचार्य के साथ आर्य वीर एवं सम्भ्रान्त आर्य नागरिक।

आर्य समाजों की गतिविधियां

"भूपाल—जहां मानवता कराह उठी है"

(सेवा में कार्य हेतु प्रतिनिधि मण्डल रवाना)

श्री छोटूसिंह एडवोकेट प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के वक्तव्य के आधार पर प्रतिनिधि सभा राजस्थान की ओर से भूपाल नगर के "यूनियन कार्बाइड" कारखाने की २, ३ दिसम्बर की मध्य रात्रि में जहरीली गैस के रिसन के कारण भयंकरतम त्रासदी (दुर्घटना) हो चुकी है जिसमें राज्य सरकार मध्य प्रदेश की विज्ञप्ति के अनुसार २५०० व्यक्ति काल के गाल में समा चुके हैं और हजारों व्यक्ति नेत्र आदि शारीरिक अंगों से अपंग हो चुके हैं। हजारों बालक-बालिकाएं, वृद्ध, महिलाएं परिवार विहीन होकर भयंकर विपदा में ग्रस्त हैं।

आर्य प्रनिनिधि सभा राजस्थान इन पीड़ितों की सहायतार्थ भूपाल नगर में यूनियन कार्बाइट कारखानें के पास नेरसिका रोड काली परेड पर पीड़ितों की सहायता के लिये—

"राजस्थान सहायता कैम्प"

के कार्य में जुट चुकी है। इसकी व्यवस्था के लिये सर्वश्री विद्यासागर शास्त्री, प्रधान आर्यसमाज स्वामी दयानन्द मार्ग अलवर तथा पं० हेतराम जी आर्य कोषाध्यक्ष आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान रवाना हो रहे हैं। इस कैम्प में हिन्दु-मुसलमान, जैन, बौद्ध दलित वर्ग आदि की सेवा निम्न लिखित साधनों से करेंगे।

(क) औषधि वितरण
(ख) भोजन व्यवस्था
(ग) धन से सहायता
(ङ) अनाथ बच्चों की उनके बालिग होने तक शिक्षा दीक्षा लालन, पालन की व्यवस्था के लिये राजस्थान के आर्य बाल सदनों, विद्यालय व गुरुकुलों व देश में प्रबन्ध करना।

राष्ट्र, विशेषकर राजस्थान वासियों से मेरा अनुरोध है कि इस भयंकर विपदा के समय कराहती हुई विपदा ग्रस्त मानवता की सहायता के लिये दिल खोलकर नकद या वस्त्रों के रूप में दान ।

नकद चैक या ड्राफ्ट आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान (पंजाब बैंक अलवर के नाम स्वामी दयानन्द मार्ग, अलवर (राजस्थान) के पते पर भेजने का कष्ट करें।

—छोटूसिंह एडवोकेट, प्रधान
आर्य प्रतिनिधि सभा, राजस्थान

परिषद् का संगठन

आर्य समाज पानीपत के शताब्दी समारोह के अवसर पर आर्य जगत के अनेक मूर्धन्य विद्वान् उपस्थित हुए थे। कई दिन तक विचार होने के पश्चात आचार्य वैद्यनाथ जी शास्त्री की अध्यक्षता में हुई विद्वत गोष्ठी में निश्चय हुआ कि आर्य जगत के सभी विद्वानों के पुरुषार्थ को संयुक्त करने, महर्षि दयानन्द द्वारा निर्दिष्ट वेद विषयक मान्यताओं को परिपुष्ट करने, विवादास्पद विषयों पर मिल बैठ कर विचार करने, वैदिक-धर्म तथा संस्कृति के सम्बन्ध में शास्त्रीय शोध करने तथा आर्य समाज के संगठन को नई दिशा देने के लिये आर्य विद्वत् परिषद की स्थापना की जावे। श्री स्वामी विद्यानन्द जी सरस्वती को परिषद का अध्यक्ष नियुक्त किया गया और श्री अमर स्वामी सरस्वती, आचार्य उदयवीर शास्त्री, पं० शिवकुमार शास्त्री तथा पं० युधिष्ठिर मीमांसक को परिषद का विधान बनाने का काम सौंपा गया

वाणी तथा लेखनी द्वारा वैदिक-धर्म के प्रचार में संलग्न आर्य जगत के सभी विद्वान इस परिषद के सदस्य होंगे। विद्वानों से अनुरोध है कि वे अपना नाम और पता नीचे लिखे पते पर भेजने की कृपा करें।

—स्वामी विद्यानन्द सरस्वती
अध्यक्ष—आर्य विद्वत् परिषद
डी—१४, १६ माडल टाउन दिल्ली

—ठाकुरदास बग
मन्त्री आर्य समाज पानीपत

एक अहिन्दी भाषी को, हिन्दी में पी. एच. डी.

श्री एस. एम. बुध्दिमानी वर्तमान कर्नाटक में जिला गुलबर्गा, ता.सेडम, "मुधोल-ग्राम" के निवासी हैं। इनका जन्म एक कृषक व्यापारी के घराने में हुआ।

"निजाम राज्य के हिन्दी विकास में आर्य समाज का योगदान" इस शोध-प्रबन्ध पर गुलबर्गा विश्व-विद्यालय ने पी० एच० डी० की उपाधि प्रदान की है। इस शोध-प्रबन्ध का कार्य डा० ए० के० राठोर, एम० ए०; पी० एच० डी०, अध्यक्ष हिन्दी विभाग, गुलबर्गा, विश्व विद्यालय गुलबर्गा के के निर्देशन में सम्पन्न किया है।

उत्सव

आर्य समाज अशोक विहार एफ-५ फेस, १ का एक विशेष उत्सव १६ दिसम्बर १९८४ को मनाया गया। कार्यक्रम प्रातः ८ से १२॥ बजे तक चलता रहा जिसका प्रारम्भ बृहद यज्ञ और भजनों के साथ हुआ। इस अवसर पर वयोवृद्ध सुप्रसिद्ध आर्य विद्वान साहित्यकार और पत्रकार श्री पं० दीनानाथ जी सिद्धान्तालंकार का अभिनन्दन भी किया गया। यज्ञ के ब्रह्मा श्री स्वामी दीक्षानन्द जी थे। ऋग्वेद के कुछ सूक्तों के मन्त्रों की अर्थ सहित आहुतियां भी अर्पित की गईं।

इस अवसर पर श्रीयुत पं० दीनानाथ जी को जिनकी आयु इस समय ९१ वर्ष की है अभिनन्दन के समय श्री पं० सत्यव्रत जी सिद्धान्तालंकार कृत सुप्रसिद्ध ग्रन्थ "वैदिक विचारधारा का वैज्ञानिक आधार भेंट किया गया।

—कुलभूषण शास्त्री
उपमन्त्री

निर्वाचन

आर्य समाज सहुवा (देवरिया) का वार्षिक निर्वाचन २१-१२-८४ को सर्वसम्मति से सौहार्दपूर्ण वातावरण में सम्पन्न हुआ।

प्रधान—श्री सुन्दरसिंह, मन्त्री—नौमीराम, कोषाध्यक्ष—श्री बबरल डालमिया निर्वाचित हुए।

—नौमीराम, मन्त्री

(पृष्ठ १ का शेष)

तथा वित्तीय अनियमितताओ के आरोप शामिल हैं।

११३ पृष्ठों के इस दस्तावेज को आज उपमुख्यमन्त्री श्री डी०डी० ठाकुर ने प्रेस के लिए जारी किया। श्री ठाकुर, डा० अब्दुल्ला सरकार की बर्खास्तगी के बाद सात जुलाई को गठित की गई चार सदस्यों की कैबिनेट उपसमिति के अध्यक्ष हैं।

यह दस्तावेज जारी करते हुये श्री ठाकुर ने कहा कि सरकार ने इस उपसमिति को इसलिए गठित किया था ताकि यह जाना जा सके कि डा० अब्दुल्ला तथा उनको सरकार के खिलाफ शिकायतो पर प्रथम दृष्टि मे ही मामले बनते हैं या नही और क्या उन पर कोई कार्रवाई की जा सकती है या नही।

उपमुख्यमन्त्री ने कहा कि रपट तैयार करते समय उपसमिति ने उन्हीं तथ्यो पर जोर दिया है जिन्हे डा० अब्दुल्ला ने सार्वजनिक तौर पर स्वीकार किया। उपसमिति ने इन तथ्यो से सम्बन्धित सरकारी रिकार्डों की भी छानबीन की है।

रिपोर्ट मे डा० अब्दुल्ला की इग्लैण्ड यात्रा, ब्रिटिश नागरिकता ग्रहण करके एक दशक तक वहा रहने तथा ब्रिटिश पासपोर्ट पर पाकिस्तान की यात्रा आदि का विस्तृत वर्णन है।

रिपोर्ट में आरोप लगाया गया है कि डा० अब्दुल्ला का कुछ राष्ट्र-विरोधी सगठनो से सम्बन्ध रहा है, विशेषत मकबूल भट्ट के कश्मीर मुक्ति मोर्चा से। भट्ट को पिछले वर्ष तिहाड़ जेलमे फासी दे दी गई थी। रिपोर्ट मे आरोप लगाया है कि १९७४ मे डा० अब्दुल्ला मोर्चे के सम्मेलन मे हिस्सा लेने पाकिस्तान भी गए थे।

रिपार्ट मे डा० अब्दुल्ला के प्रतिबन्धित अखिल भारतीय सिख छात्र सगठन तथा मौलाना फारूक की अवामी एक्शन कमेटी से सम्बन्धो की भी चर्चा की गई है।

यह आरोप भी लगाया गया है कि फारूक सरकार ने या तो पृथकतावादी तथा राष्ट्रविरोधी गतिविधियो को रोकने की कोशिश ही नही की अथवा आधे मन से उन्हे रोका। नतीजतन राज्य में पिछली मई तथा जून मे इन शक्तियो ने गम्भीर रूप धारण कर लिया।

समिति ने राय जाहिर की है कि केन्द्र सरकार को जम्मू-कश्मीर स्थित गुप्तचर एजेन्सियो से वहा पृथकतावादी तथा राष्ट्र विरोधी गतिविधियो के बारे मे जो जानकारी मिलती थी फारूक सरकार ने उसे गम्भीरता से नही लिया।

रिपोर्ट मे कहा गया है कि पिछली सरकार का अखिल भारतीय सिख छात्र महासघ की गतिविधियो विशेषत रमता शिविरो के प्रति जो दृष्टिकोण रहा है राज्य सरकार तथा गुप्तचर एजेन्सियो द्वारा दी गई जानकारियो के विपरीत था।

यह आरोप भी लगाया गया है कि फारूक सरकार ने राज्य मे हुये आठ विस्फोटो, श्रीनगर मे भारत वेस्टइडीज के बीच क्रिकेट मैच के दौरान भारत विरोधी प्रदर्शन तथा सीमावर्ती पुछ तथा राजौरी जिले मे २१ बम विस्फोटो की घटनाओ को गम्भीरता से नही लिया।

एक प्रश्न के उत्तर मे श्री ठाकुर ने बताया कि रिपोर्ट पर राज्य मन्त्रिमण्डल उचित कार्रवाई करने के बारे मे फैसला करेगा। लेकिन उन्होने इस बारे मे टिप्पणी करने से इन्कार कर दिया कि क्या उनकी दृष्टि मे यह मामला जाच आयोग को सोपा जा सकता है?

(नव भा० ११-१-८५)

शोक समाचार

आर्य समाज का आधार स्तम्भ टूट गया

विलक्षण प्रतिभा, सौम्य मृदुस्वभाव आर्य वैदिक विद्यालयो के कुशल प्रशासक एव सस्थापक वैदिक आर्य विचारों मे दृढ आस्था रखने वाले आर्य प्रतिनिधि उ० प्र० के भूतपूर्व मन्त्री एव आर्य समाज शिकोहाबाद के प्राणदाता महान दानी, महान सकट मे भी धैर्य धारण करने वाले वयोवृद्ध रीठ्या निवासी ठा० फूलनसिंह का अपने पुत्र व्रतपाल सिंह के यहा लड़की में आकस्मिक बीमारी के कारण निधन हो जाने से आर्य समाज शिकोहाबाद के सभी आर्य सदस्यो को गहरा धक्का लगा है। उनके स परामर्श एव विवेक पूर्ण सुझावो से आर्यसमाज निरन्तर उन्नति के पथ पर आसीन हो रहा था। उनके उठ जाने से हम सभी लोग अपने को किंकर्तव्य विमूढ असहाय सा महसूस कर रहे है। निकट भविष्य मे ऐसे लोगो की कमी दूर होना असभव है। प्रभु से हम प्रार्थना करते हैं कि दिवगत आत्मा को सदगति प्रदान करे तथा समस्त शोकाकुल परिवार एव इष्ट मित्र बन्धु बान्धवो को धैर्य पूर्वक सहने की शक्ति दे।

—मन्त्री

रजि० नं० डी० (डी०) १७८ सार्वदेशिक साप्ताहिक (२०-१-१९८५) बिना टिकट भेजने का लाइसेंस नं० U १३
Licensed to post without prepayment License No 93 Post in N.D.P.S.O. on 17-1-85

महर्षि दयानन्द बलिदान शताब्दी समारोह

दि० १८-११-८४ रविवार को आर्य समाज मदुरै (तमिलनाडु) की ओर से महर्षि दयानन्द बलिदान शताब्दी महोत्सव सौराष्ट्रा सेकन्ड्री स्कूल मदुरै में समारोह पूर्वक मनाया गया। ईश प्रार्थना, बृहद्यज्ञ, एव सन्ध्या से कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ।

श्री एन के कृष्णय्यन, बी. ए आर बी बी मन्त्री, सौराष्ट्रा महा-विद्यालय मदुरै की अध्यक्षता मे सभा सम्पन्न हुई।

सर्व प्रथम श्रीमती इन्दिरा गांधी जी प्रधान मन्त्री की स्मृति में श्री एम एस. राम मूर्ति, उप प्रधान आर्य समाज मदुरै ने कविता सुनाई। इस छपी हुई 'कविता' की प्रतियों का विमोचन श्री सुरेन्द्र कुमार गुप्त मालिक आर्य भवन मदुरै ने किया।

श्री स्वामी जी की जीवनी पर अध्यक्ष जी ने प्रभावशाली भाषण दिया। उन्होने कहा कि तमिलनाडू के नेता स्वर्गीय श्रीराम स्वामी नायोकर जी ने जो कुछ भी अच्छी बातें हिन्दू धर्म के बारे मे प्रचार किया वह सभी स्वामी जी ने सौ साल पहले कहा था। नास्तिकता आदि बातो को छोड़कर अन्य बातें सभी स्वामी जी के विचार हैं जिन्हे तमिलनाडू मे श्री राम स्वामी नायकर ने प्रचार किया। बाद मे सर्वश्री जानकीराम जी, जे एस राजाराम जी, के. मातिसामणी जी, ए. एम. वेंकटरामन एम. ए बी एड एम, टी आर गोपालन जी ने भाषण दिए। तमिलनाडू बी. जे पी के उपप्रधान श्री टी आर. गोपालन जी का भाषण बहुत प्रभावशाली रहा। अन्त मे श्री म नारायण स्वामी वान प्रस्थी ने अपने भाषण मे बताया कि महर्षि दयानन्द ने मानव मात्र के कल्याण के लिए भूले वेद पथ को प्रशस्त किया। उन्होंने मानव की उन्नति के लिए सारे विषयो पर प्रकाश डाला और अन्त में इस देश और जाति के कल्याण के लिए और सत्य के प्रचार के लिए अपने प्राणों की बलि दी।

इसी सभा में एक ईसाई नव युवक जो वैदिक धर्म में दीक्षित हुआ उसे श्री राजेन्द्र कुमार आर्य (दिल्ली) की ओर से एक चांदी का 'ओ३म' डालर लाकेट समेत, और समाज की ओर से एक तौलिया और फल, नगर के प्रसिद्ध सज्जन श्री समस्थानम वेंकट राजुलू नायडू के द्वारा भेंट की गई।

धन्यवाद के उपरान्त शान्ति पाठ के साथ कार्यवाही समाप्त हुई।

— म० नारायण स्वामी वानप्रस्थी

आर्य वीरों को सन्देश

सार्वदेशिक आर्य वीर दल दिल्ली के प्रधान सचालक श्री बाल दिवाकर जी हंस को दिल्ली के कुछ विद्यालयों के विद्यार्थी, तथा कार्यालय में मिलने आए और उन्होंने श्री हंस जी से मार्ग दर्शन के लिए प्रार्थना की तो प्रधान सचालक जी ने उन्हे और सभी आर्य वीरों को सदेश रूप मे कहा कि अब शैक्षणिक परीक्षाए अति समीप आ रही हैं अत सभी विद्यार्थियों को कम से कम (विद्यालय के उपरान्त) [illegible] अपने विषयवार अध्ययन [illegible] चाहिए।

अत आर्य वीर दल मे आने वाले सभी वीरों को इस आदेश का पालन करना चाहिए यह उनके ही हित में है।

—चन्द्र प्रकाश आर्य, कार्यालय मन्त्री

उत्सव

आर्य समाज मेस्टन रोड कानपुर का १०५ वां वार्षिकोत्सव महर्षि बोधोत्सव एवं शिवरात्रि पर्व के अवसर पर शुक्रवार १५ से १८ फरवरी १९८५ तक श्रद्धानन्द पार्क मे मनाया जाना निश्चित हुआ है।

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज नई दिल्ली-२ में मुद्रित तथा रघुनाथ प्रसाद पाठक मुद्रक और प्रकाशक के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दयानन्द भवन, नई दिल्ली-२ से प्रकाशित।

ओ३म्
सार्वदेशिक
साप्ताहिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

सृष्टिसम्वत् १९७२९४९०८५] वर्ष २० अंक ८]

माघ शु० १२ सं० २०४१ रविवार ३ फरवरी १९८५

दयानन्दाब्द १६० दूरभाष ।२७४७७१
वार्षिक मूल्य १५) एक प्रति ४० पैसे

इंका का समर्थन करना समय की मांग थी

आर्य समाज ने चलत राजनीति में भाग न लेने की परम्परा का त्याग नहीं किया

श्री रामगोपाल शालवाले की अपील पर प्रतिक्रियाएं

(प्रभात मेरठ जनवरी ८५)

आर्य समाज पहिले भी राजनीति से दूर रहा, आज भी दूर है यद्यपि आर्य समाज को अपना दृष्टिकोण जनता के सामने रखना चाहिए। —वि० स० विनोद

जब से आर्य समाज की शिरोमणि संस्था सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के अध्यक्ष लाला रामगोपाल ने चुनाव के अवसर पर यह अपील आर्य समाजियों के नाम निकाली थी कि आर्य समाज विशेषकर हिन्दुओं को देश की एकता व अखण्डता के लिए कांग्रेसपार्टी को अपना समर्थन देना चाहिए। कई एक आर्य समाजियों ने इस पर आपत्ति की है कि शालवाले को ऐसी अपील नहीं निकालनी चाहिये, आर्य समाज को राजनीति में भाग नहीं लेना चाहिए।

कुछ इसी प्रकार की आपत्तियों को लेकर दिल्ली के एक समाचार पत्र में पहिले भी एक पत्र मेरठ के किसी एक सज्जन का छपा था और आज फिर कुछ ऐसी ही आपत्ति दिल्ली के किसी श्री श्यामलाल ने उठाई है।

मैं समझता हूं इन लोगों ने देश में घटने वाली घटनाओं से अपने को अवगत नहीं रखा। अखबारों की फाइलों को यदि ये लोग देखेंगे तो इन्हें पता चलेगा कि कई एक मुस्लिम नेताओं व मुस्लिम संस्थाओं ने फतवा दिया था कि मुसलमानों को कांग्रेस को वोट नहीं देना चाहिए। उनमें सबसे प्रमुख हैं दिल्ली जामा मस्जिद के इमाम अब्दुल्ला शाह बुखारी, उन्हें शाही इमाम भी कहा जाता है। वह शाही इमाम कैसे हैं, आज भारत में मुस्लिम शासन नहीं कि अब्दुल्ला बुखारी सरकारी इमाम हो।

वास्तव में इन मुस्लिम नेताओं ने यह चुनौती कांग्रेस को नहीं दी थी बल्कि हिन्दू समाज को चुनौती दी थी। ये मुस्लिम नेता कई बार कह चुके हैं कि मुसलमानों की वोट से ही कांग्रेस जीतती है और ये मुस्लिम नेता यह दिखाना चाहते थे कि यदि मुसलमान कांग्रेस को वोट नहीं देंगे तो कांग्रेस हार जाएगी यदि ऐसा होता कि कांग्रेस हार जाती तो यही मुस्लिम नेता कांग्रेस से ब्लैकमेल करते और कि कई एक नाजायज मांगे मनवा लेते जैसे कि वे अब तक करते रहे हैं।

कांग्रेस न हारे तथा हिन्दुओं को नीचा न देखना पड़े इसलिए शालवाले ने इन परिस्थितियों से जानकर हिन्दुओं को सलाह दी कि कांग्रेस को हराया जाना हिन्दुओं के हित में नहीं होगा।

यह ठीक है कि कांग्रेस हिन्दुओं की मांगों को अनसुना करती रही है, अब हिन्दू नेता कांग्रेस नेताओं से कह सकते हैं और उन्हें कहना चाहिए कि हिन्दुओं की वैधानिक मांगों को माना जाय।

आज यह स्पष्ट हो गया है कि कांग्रेस की शक्ति का आधार केवल हिन्दू समाज है, कांग्रेस के अन्य आधार टूट रहे हैं, मुसलमान नेताओं ने कांग्रेस का विरोध किया, हमने मेरठ में देखा कि यद्यपि कांग्रेस का लोकसभा उम्मीदवार मुसलमान था लेकिन मेरठ के मुसलमानों ने मुश्किल से १० प्रतिशत कांग्रेसी मुस्लिम उम्मीदवार को वोट दिया, ९० प्रतिशत ने दमकिपा के मुस्लिम उम्मीदवार को वोट दिया, यदि मेरठ का हिन्दू समाज कांग्रेस का समर्थन न करता तो दमकिपा का मुस्लिम उम्मीदवार सफल हो जाता।

बन्द कमरों में बैठकर कुछ ही लिखते रहो लेकिन जब तक हिन्दुओ में यह जागरुकता नहीं आयेगी कि हिन्दू हित किस बात मे है, पार्टी बाजी की बात करने से हिन्दुओं का भला नहीं होगा।

भाजपा को ही ले लो। मेरठ मे भाजपा का उम्मीदवार एक योग्य व्यक्ति तथा कर्मठ कार्य कर्ता था। उसके लिए वोट हिन्दू कहकर मांगी जा रही थी, जबकि दिल्ली में भाजपा का उम्मीदवार सिकन्दर बख्त था, वहां मुसलमान के नाम में भाजपा के नेता बख्त के लिए वोट मांग रहे थे।

हिन्दू यदि कांग्रेस को वोट नहीं देते तो यह उनकी हाराकारी होती, शालवाले जी ने हिन्दुओ को इस स्थिति से बचाने के लिए आर्य समाजियों से कांग्रेस को समर्थन देने को कहा। अन्य कोई ऐसी पार्टी मैदान में नहीं थी जो कांग्रेस का विकल्प होती, अन्य किसी को वोट देना वोट को खत्ते में फेंकना होता।

श्री शालवाले ने आर्य जगत अथवा हिन्दू समाज के हित में यह ठीक ही समझा और यह सोलह आना ठीक भी था कि कांग्रेस को वोट दिया जाय।

हिन्दुओं का राजनैतिक चिंतन बहुत कमजोर है, आज देश का समस्त हिन्दू समाज विभिन्न राजनैतिक पार्टियों में बंटा हुआ है, इसका अपना कोई राजनैतिक दल नहीं,मानों इस देश में हिन्दुओं की कोई राजनीति है ही नहीं।

हिन्दुओं का जब अपना कोई प्रभावी राजनैतिक दल नहीं है तो उस दल का समर्थन करना चाहिए जो उनकी सुन सके। समय आ गया है कि कांग्रेस के सामने हिन्दुओं की मागें रखी जायें और देखा जाय वह उन्हें कहां तक मानते हैं।

वास्तव में हिन्दुओं की मागें राष्ट्रीय हैं, उनसे देश में एकता आयेगी और देश अखण्ड रह सकेगा जैसा हर देशवासी चाहता है।

आचार्य श्री धर्मेन्द्र महाराज

जयपुर दि० १-१-८५

परमादरणीय लाला जी,

वन्देमातरम

आशा है सपरिवार स्वस्थ और प्रसन्न होंगे

देश की अखण्डता और एकता की रक्षा के लिए कांग्रेस (इ) को मत-

(शेष पृष्ठ ११ पर)

सम्पादक—ओमप्रकाश पुरुषार्थी

सहसम्पादक—रघुनाथ प्रसाद पाठक

राष्ट्रीय एकता और आर्य समाज

संपादक : धनपति
वाचक : मनोजकुमार मिश्र

ले०—डाक्टर धर्मपाल आर्य

राष्ट्रीय एकता और अखण्डता सदृश प्रश्न पर्याप्त समय से भारतीय मानस को झिझोड़ते रहे हैं और देश के लिए संकटापन्न स्थितियों का कारण भी बनते रहे हैं। राजनैतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक मंचों से यह सवाल अनेक बार उठाया गया है और इस पर चिन्ता भी प्रकट की गयी है। यह दु:खद स्थिति है जिसका हम एक दूसरे को अहसास तो कराते हैं, पर राष्ट्रीय एकता के लिए कोई ठोस कदम नहीं उठा पाते। इस वर्ष तो यह सवाल इतनी तेजी से उठा कि सारे देश की आत्मा को ही तिलमिला गया। राष्ट्रीय एकता के लिए श्रीमती इन्दिरा गांधी के बलिदान ने हमारी आंखें खोली हैं। इतिहास इस बात का साक्षी है कि बड़े संकट के समय इस देश ने आश्चर्यजनक एकात्म, संवेदन और शक्ति से काम लिया है। हर आम आदमी चाहे वह पंजाब का हो, या तमिलनाडू का, उत्तर प्रदेश का हो, या केरल का, हिन्दू हो या मुसलमान, सिख-ईसाई हो या कोई अन्य मतावलम्बी, सभी का चिन्तन सवेदना की उसी मुलायम पर सुदृढ़ सांस्कृतिक डोर से जुड़ा है जिसे कवियों ने अपने काव्य में अभिव्यक्ति प्रदान की है, चित्रकारों ने अपनी राजपूत कांगड़ा और मुगल आदि शैलियों में चित्रित किया है, जिसकी आत्मा नानक, मीरा, सूर, कबीर, टैगोर और सुब्रह्मण्यम भारती की धुनों में आत्मसात है। एकात्म की इस धारा को जो राजनैतिक विचार दर्शन, पहचान सकेगा, वहीं इस देश की धरती को अखण्डता में बांधे रख सकेगा। क्षेत्रीयता या क्षेत्रीय स्वायत्ता की मांग दोष नहीं है, पर इसका राष्ट्रीय एकता से जुड़े रहना परमावश्यक है। इस बहुभाषी, बहुधर्मी और विविधता पूर्ण भारतीय राष्ट्र के आम आदमी ही की सवेदनशील सांस्कृतिक एकता से परे होकर यदि कोई राजनीतिक चिन्तन का विचार उठा भी तो आम आदमी उसे स्वीकार नही करेगा।

राष्ट्रीय एकता के लिए प्रयास आज से नहीं किये जा रहे हैं। इतिहास के साक्ष्य वर्तमान है कि पुराने समय में भी राष्ट्र को एकता की कड़ी में पिरोने के लिए प्रयास किये जाते रहे हैं। राम और कृष्ण का युग भी एकता के लिए प्रयास का युग रहा है। गुप्तकाल में भी ऐसे प्रयास किये गये हैं। मुगल साम्राज्य के दिनों में भी अनवरत प्रयास किये गये जब छोटे-छोटे राज्यों को अपने बड़े साम्राज्य में मिलाया जाता रहा है। संघ में शक्ति होती है, इस बात को उन्होंने जान लिया था। केवल राजनैतिक स्तर पर नहीं, सामाजिक, धार्मिक जातीय स्तर पर भी ऐसे प्रयास किये गये।

सन् १८७७ में महर्षि दयानन्द सरस्वती ने एकता सम्मेलन किया जिसमें सर सैयद अहमदखां और श्री केशवचन्द्र सेन सम्मिलित हुए थे। आर्यसमाज के प्रवर्तक युग पुरुष महर्षि दयानन्द सरस्वती महाराज के निर्वाण को सौ से अधिक वर्ष बीत चुके हैं, पर जैसा कि सदा होता आया है, महापुरुषों के जीवन तो प्रेरणादायी होते ही हैं, उनका निर्वाण भी, उनका बलिदान भी प्रेरणा दायक होता है। महर्षि दयानन्द सरस्वती भारत मां के ऐसे ही सपूत थे जिनका मन-हृदय इस देश की दुरवस्था को देखकर रो पड़ा था। उनका इस भारत-भू पर अवतरण उस समय हुआ जब यह देश पराधीन था। सर्वत्र अविद्या और अन्धकार की घटाएं छायी हुई थी। भारतीय सभ्यता संस्कृति और साहित्य की होली हो रही थी। इतिहास में परिवर्तन करके उसे विकृत किया जा रहा था। सत्य-सनातन वैदिक धर्म लुप्त हो रहा था। चारों ओर अनाचार का साम्राज्य था। नारी जाति की स्थिति दयनीय थी शूद्र को और नारी को वेद पढ़ने, शिक्षा ग्रहण करने का अधिकार नही था। सती प्रथा का दानव हमें ग्रसित किये था। इस घोरतम अन्धकार से हमें निकालने के लिये, असत्य से सत्य की ओर ले जाने के लिये महर्षि दयानन्द सरस्वती ने हमें सहारा दिया था। उन्होंने देश की एकता के लिये राष्ट्र के कल्याण के लिये, मनुष्य को वास्तव में मानव बनने के लिये जो प्रयास किए वह अभूतपूर्व हैं।

लाखों की संख्या में शिक्षित लोग उनकी ओर आकर्षित हुए। मुसलमान, सिख और ईसाई भी उनके दर्शन से प्रभावित हुए और अनुयायी बने।

महर्षि निर्वाण शताब्दी दिल्ली

(२)

इस सप्ताह दिल्ली में महर्षि दयानन्द सरस्वती निर्वाण शताब्दी मनायी गयी। उनके अनुयाइयों ने दिल्ली के विभिन्न क्षेत्रों में दस स्थानों पर "एकता यज्ञ" किये जिनमें सुयोग्य विद्वानों, संन्यासियों आर्य नेताओं और राष्ट्रीय नेताओं ने महर्षि को अपने श्रद्धा-सुमन भेंट किये, महर्षि के मार्ग पर चलने की प्रेरणा ली और आर्य बन्धुओं का राष्ट्र को उन्नत करने के लिये मार्ग प्रशस्त किया। महर्षि के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करने वालों में महामहिम राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह केन्द्रीय शिक्षामन्त्री श्री कृष्णचन्द्र पन्त स्वामी दीक्षानन्द जी सरस्वती लाला रामगोपाल शालवाले, श्री शिवकुमार शास्त्री आदि के नाम उल्लेखनीय है।

इस अवसर पर राष्ट्र की एकता, समृद्धि, उन्नति की कामनाएं की गयीं। सर्वसाधारण को महर्षि के उपकारों का स्मरण कराया गया और आर्यसमाज की मान्यताओं से सर्वसाधारण को परिचित कियागया। महर्षि दयानन्द वेदों को स्वतः प्रमाण मानते थे। उन्होंने मृतक श्राद्ध आदि को अवैदिक और अमान्य बतलाया। उन्होंने देश के विभिन्न प्रान्तों में जाकर वैदिक धर्म का प्रचार किया और सत्यार्थ प्रकाश तथा ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका आदि महत्वपूर्ण ग्रन्थों की रचना की। जो लोग भ्रान्तिवश धर्मभ्रष्ट हो गए थे, उनके लिए उन्होंने शुद्धि का द्वार खोल दिया। पाश्चात्य धर्म और संस्कृति का अनुसरण करने वाले भ्रान्त लोगों को सही मार्ग पर लाना, उन्हें सच्चा भारतीय बनने की प्रेरणा देना, स्वामी दयानन्द के महान् व्यक्तित्व उनके अखण्ड ब्रह्मचर्य, उनके त्याग तपस्या और उनके अपूर्व पांडित्य निर्भीकतापूर्ण सत्य उपदेशों का ही फल था।
महर्षि दयानन्द सरस्वती ने गुजराती होते हुये भी अपने प्रसिद्ध ग्रन्थों की रचना हिन्दी में की। वे राष्ट्रीय एकता के लिए एक भाषा और एक भूषा को आवश्यक मानते थे।

उन्होंने हिन्दी भाषा के प्रचार प्रसार के लिये तथा संस्कृत का अध्ययन करने की प्रेरणा देने के लिये यथाशक्ति प्रयास किया। बाल-विवाह का प्रचार और ब्रह्मचर्य का लोप हो जाने से शारीरिक बल का ह्रास हो रहा था। स्वामी दयानन्द ने इसके विरुद्ध प्रबल आवाज उठायी और ब्रह्मचर्य का सिक्का लोगों के हृदय में जमा दिया। उसी का फल है कि जगह-जगह ब्रह्मचर्याश्रम और योग केन्द्र खोले गये तथा शारदा एक्ट बना। मातृ शक्ति होते हुए भी स्त्रियों का जाति में अपमान था। उनको शिक्षा से वंचित रखा जाता था। महर्षि ने उन्हें शिक्षा की अधिकारिणी ठहराया। उन्हें परदे से बाहर निकाला उन्हें स्कूल में भिजवाया उन्होंने शिक्षा प्राप्त की और राष्ट्रीय उत्थान में अपना अपूर्व योगदान किया। महर्षि दयानन्द ने जन्म से जाति के स्थान पर गुण कर्म स्वभाव के अनुसार वर्णव्यवस्था का प्रतिपादन किया। अन्तरजातीय विवाह बिना दहेज विवाह विधवा विवाह उन्हीं के प्रयासों के परिणाम हैं। दलित उद्धार की दिशा में उनका प्रयास अभिनन्दनीय है।

(शेष पृष्ठ ११ पर)

सम्पादकीय

विश्वधर्म सम्मेलन

हैरीचोड (प० जर्मनी)

(गतांक से आगे)

(४)

विश्व मानुष की कल्पना

वरुणवृक्ष उस ज्योतिष तत्त्व का प्रतीक है जिसको वेद में असुर महत् तथा अवेस्ता में अहुरमज्द भी कहा जाता है। इसकी तुलना विज्ञानमय स्तर की महः नामक अतिमानसिक व्याहृति से की जा सकती है। यही वह अलौकिक स्तर है जहां से प्रत्येक व्यक्ति का मनोमय कोश अपनी-अपनी पात्रता के अनुसार बुद्धि को ग्रहण करता है। दूसरे शब्दों में महः अलौकिक मनीषा का नाम है जो स्वः नामक व्याहृतिको जन्म देकर प्रत्येक व्यक्ति के मानसिक स्तर पर भेजती है। यही वह वैदिक प्रमति है जिसको वेद में मनुष्पिता कहा गया है। यही मानसिक स्तर पर मनुष्य अथवा मानव को जन्म देता है। ऋग्वेद में इस महः स्तर को विश्वमानुष अथवा सार्वभौम मनुष्य की संज्ञा दी गई है।

यह कल्पना उस धर्म की सब से बड़ी देन है जिसको हमने विश्वमानुष का वेद कहा है। यही विश्वमानुष विभिन्न परम्पराओं में मानवजाति का आदिपूर्वज कहा जाता है। आधुनिक युग में इस प्रकार की कल्पना को एक अन्धविश्वास समझकर ठुकरा दिया जाता है, क्योंकि वैज्ञानिक दृष्टि यह बात स्वीकार करने में असमर्थ है कि विभिन्न नस्लों के लोग एक ही पिता की सन्तान हो सकते हैं। परन्तु इस प्रश्न को एक दूसरी दृष्टि से भी समझा जा सकता है। प्रस्तुत लेखक ने आदम, मनु, यम, य्येन, तथा आदि विभिन्न आदि पुरुषोंके नामोंको एकत्र करके देखा तो वे सबके सब वेदों में मिल गए। इससे भी अधिक आश्चर्य की बात यहहै कि वेद में ये सभी शब्द मनुष्य की अन्तरात्मा के ही किसी न किसी पक्ष को बतलाने वाले प्रतीत होते हैं अतएवं स्पष्ट है एक ही पिता की सन्तान मानकर सभी नस्लों के मनुष्यों की एकता का प्रतिपादन अतिप्राचीनकाल से सर्वत्र होता आया है। आज भी यदि मनुष्यजाति की इस आन्तरिक एकता को स्वीकार किया जाए, तो कौन जानता है कि हम भी जूलियन हक्सले नामक प्रसिद्ध वैज्ञानिक के स्वर में स्वर मिलाकर कहने लगे कि 'नस्लवाद एक कपोल-कल्पना है और एक भयंकर कपोल-कल्पना है" (Racialism is a myth and a dangerous myth)

वेद के मनु नामक विश्व मानुष की चर्चा करते हुए प्रसिद्ध फ्रांसिसी विद्वान रेनें ग्वेना ने उसको सार्वभौम संकल्प (Universal Will) की अभिव्यक्ति माना है। उसका कथन है कि "प्रत्येक युग मे वही संकल्प अपने को उस मनु के रूप में व्यक्त करता है जो उस युग को निश्चित धर्म प्रदान करता है।" इसलिये मनु को कोई कल्पित अथवा ऐतिहासिक व्यक्ति नहीं समझना चाहिए। वैदिक मनु वस्तुत: एक तत्त्व का नाम है जिसकी परिभाषा उस मन धातु पर आधारित है जिससे मनु शब्द निष्पन्न है। इस प्रकार मनु उस विश्व-मनीषा अथवा विश्व-व्यवस्था को अभिव्यक्ति देने वाला प्रज्ञान कहा जा सकता है, जिसको मनुष्य नामक मननशील सत्ता का प्रतिरूप तथा मन का स्वामी माना जा सकता है। इसलिए मनु की कल्पना किसी अंश में यहूदी एवम् इस्लामी परम्पराओं के सार्वभौम मानव अथवा चीनी ताओवाद के "किग्" के समकक्ष मानी जा सकती है।

इस व्याख्या की पुष्टि उस कहानी से भी होती है जो कि भारतीय मनु, मिस्री मिनोस तथा बाइबिल के नोह (Noah) से संबद्ध है। इस प्रसंग में एक रोचक अध्ययन डाक्टर डी० आर० क्षीरसागर ने "ऋग्वेद में मनु" नामक शोध प्रबन्ध में प्रस्तुत किया है। उन्होंने इन सभी नामों को मन धातु से निष्पन्न करके उनको उस मननशीलता के तत्त्व का द्योतक माना है जो मनोमय, प्राणमय तथा अन्नमय कोश में त्रिविधरूपेण प्रकट होता है। इन्हीं को कभी २ मनुपुत्र अथवा मानव भी कहा जाता है। बाइबिल में इन्हीं तीन को नोह के शेम, हेम और जपेथ नामक तीनपुत्र बतलाया गया है। कहानी में मनु अथवा नोह एक नौका में बैठकर जलप्लावन को पार करता है। यहूदी भाषा में इसका नाम आर्क (Ark) है, परन्तु वहां इसी को धर्म की पवित्र मञ्जूषा भी कहा जाता है। इस प्रकार इसकी तुलना वेद के अर्क से की जा सकती है जिसको प्राय: उस मन्त्रशक्ति का द्योतक माना जाता है जिसके द्वारा मनुष्य दुःखार्णव को पार कर सकता है।

बाइबिल का नोह पहाड़ की जिस चोटी पर अपनी नाव ले जाता है उसका नाम अरारात (Ararat) है। यह शब्द संस्कृत के आर्यता शब्द से साम्य रखता है। आर्यता का अर्थ है आर्यत्व अथवा आर्यभाव, परन्तु आर्य शब्द को किसी नस्ल का नाम समझना भूल होगी। वेद में आर्य और अर्य दो अलग-अलग शब्द हैं। आर्य वह है जो आरम् के योग्य है और अर्य वह है जो अरम् के योग्य है; आरम् का तात्पर्य है सार्वभौम पूर्णता और अरम् का अर्थ है व्यक्तिगत पूर्णता। इसलिए नोह अथवा मनु के अरारात पर सपरिवार आरोहण का अभिप्राय सारी मानव जाति द्वारा सार्वभौम पूर्णता की चोटी पर पहुंचना है। इसी को आर्यता अथवा आर्यत्व कह सकते है। कृण्वन्तो विश्वमार्यम् (ऋ० ९.६३.५) का यही अभिप्राय है। सारे विश्व को आर्य बनाने का अभिप्राय किसी की नस्ल बदलना नहीं अपितु सारी मानव जातिको नैतिकता एवम् आध्यात्मिकता के उस शिखर पर ले आना है जिसको आरम् कहा जाता है। इस उद्देश्य की सिद्धि के लिए सभी आर्यों को संगठित करना आवश्यक है। इस विचार को संगठित करना आवश्यक है। इस विचार की सर्वोत्तम अभिव्यक्ति ऋग्वेद के अन्तिम सूक्त है :—

अग्नि से प्रार्थना

हे वृषन् अग्नि! संगठन हेतु
सब आर्यों को एकत्र करो।
प्रज्ञा-पद में हे दीप्त अग्नि!
सब वसुओं की सहिता करो॥

अग्नि का उत्तर

साथ-साथ तुम चलो एक स्वर से ही बोलो,
और परस्पर के मानस को मिलजुल करके खोलो,
जिस प्रकार मानव-शरीर की देव-शक्तियां निशिदिन,
निज निज भागदेय पातीं संज्ञातपूर्वक प्रतिक्षण।
एक मन्त्र और समिति एक हो एक चित्त मन सबके,
एक मन्त्र से अभिमन्त्रित हवि एक हवन तुम सबका
एक भाव हो सब हृदयों का मन तुम सबके एक बनें,
जिससे सुन्दर ,अस्तित्व का पृथिवी पर संयोग बने।

—रामचन्द्रराव वन्देमातरम्

प्रधान मंत्री द्वारा अकाली मांगों पर कड़े रुख की सराहना

दिल्ली २५ जनवरी।

प्रधान मन्त्री श्री राजीव गांधी ने अकाली मांगों के बारे में राज्य सभा में जो कड़ा रुख प्रकट किया है, उस पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले ने प्रधान मन्त्री को बधाई देते हुए कहा कि उनका वक्तव्य राष्ट्र की अन्तरात्मा की आवाज और राष्ट्रवादी शक्तियों की अपूर्व विजय है और चुनाव से पूर्व देशवासियों को दिए गए आश्वासन का प्रतिफल है।

श्री शालवाले ने कहा कि राष्ट्रीय एकता, अखण्डता की रक्षा के लिए प्रधान मन्त्री श्री राजीव गांधी द्वारा देशहित में जो भी कड़े कदम उठाये जायेंगे, आर्य समाज उनका पूरा समर्थन व सहयोग करेगा।

—पृथ्वीराज शास्त्री, उपमन्त्री

सामायिक चर्चा–

हिन्दू (वैदिक) धर्म के साथ घोर अन्याय

श्री स्वामीनाथ शर्मा मद्रास (हिन्दू १२-१-८५) लिखते हैं :—

"यह बड़े दुर्भाग्य की बात है कि अमेरिका के ईसाईमत प्रचारक एक संगठन ने टेली विजन माध्यम से ईसा मसीह का सन्देश प्रचारित करने की उत्सुकता में भारत को फूट, भ्रष्टाचार और मौतों की भूमि के रूप में प्रस्तुत करना उपयुक्त समझा।

इस प्रसंग में एक ईसाई मिशनरी और आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्राध्यापक सर मोनियर विलसन के उदगारों को प्रस्तुत करना आवश्यक समझता हूं। उनका कथन है—"वैदिक धर्म की यह बड़े मार्के की विशेषता है कि इसे धर्मान्तरण करने की न तो आवश्यकता है और न यह धर्मान्तरण का प्रयास ही करता है। वर्तमान में इनकी संख्या में ह्रास नहीं हो रहा है और नाही ईसाई और इस्लाम द्वारा जैसे धर्मान्तरण करने वाले मतों के द्वारा भारत से यह बहिष्कृत ही हो पा रहा है। इससे भी बढ़कर मार्के की बात यह है कि यह धर्म सर्वतो ग्राही, सार्वभौम एवं सार्व कालिक है।

स्पिनोजा, डार्विन और हक्सले के जन्म और किसी भाषा के विकासवाद आदि शब्दों की उत्पत्ति के पूर्व ही हिन्दू मौजूद थे।"

यदि यह ईसाई संगठन वास्तव में जरूरत मन्दों की सेवा सहायता करना ही चाहता है तो ईथोपिया (अबीसीनिया) और मध्यपूर्व के देशों में जाकर लोगों को उनके कष्टों और मुसीबतों से मुक्त करना चाहिए।

श्री उमेशचन्द्र स्नातक एम. ए.

श्री उमेशचन्द्र गुरुकुल वृन्दावन के सुयोग्य स्नातक थे। श्री प्रो० महेन्द्र प्रताप शास्त्री के निकट सम्बन्धी थे।

अनेक वर्षों तक वे आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के उपमन्त्री रहे। आर्य मित्र का कई वर्ष पर्यन्त सफल संपादन किया।

नारायण आश्रम रामगढ़ के अध्यक्ष के पद पर भी कार्य किया। सभा के शम्भूनाथ रामेश्वरी देवी पुस्तकालय भुवाली एवं नायक जाति सुधार विभाग के अधिष्ठाता भी रहे।

सार्वदेशिक विद्यार्य सभा तथा धर्मार्य सभा के सदस्य के रूप में इनके कार्यों में यथेष्ट योगदान किया। कन्या गुरुकुल हाथरस के सञ्चालन में भी उनकी बड़ी भूमिका रही।

दयानन्द दीक्षा शताब्दी (१९६०) समारोह के मन्त्री पद पर कार्य करते हुए उसकी सफलता में प्रशंसनीय योगदान किया।

गुरुकुल विश्व विद्यालय वृन्दावन के स्नातक मण्डल के मन्त्री एवं गुरुकुल की विद्या सभा के उपमन्त्री के पदों पर भी कई वर्ष पर्यन्त रहे।

वे गत कई वर्षों से हल्द्वानी के एक माध्यमिक स्कूल में अध्यापन कार्य कर रहे थे।

उत्तराखण्ड में आर्य समाज का सन्देश प्रचारित करने में भी उनका योगदान विशिष्ट रहा।

वे कैंसर से पीड़ित थे। २१-११-८४ को झांसी में छोटे भाई श्री रमेश चन्द्र के घर पर देहान्त हुआ। परमात्मा दिवंगत आत्मा को सदगति प्रदान करे।

वस्तुतः इनका असामयिक निधन आर्य समाज की बड़ी भारी क्षति है।

अरबों और भारतीयों के विवाहों पर अंकुश

यह समाचार(देखें हिन्दुस्तान टाइम्स ६-१-८५)स्वागत योग्यहै कि अरबों और भारतीयों के विवाह प्रतिबंधित किए जा रहे हैं। समाचार में कहा गया है कि भारतीय नागरिक के किसी अरब देश वासी के साथ विवाह के लिए साउदी गवर्नमेंट की पूर्व अनुमति लेनी होगी।

इस समय सॉउदी उच्चायोग किसी भी नए जोड़े को अरब गवर्नमेन्ट की स्वीकृति के बिना अरब जाने के लिए विसा नहीं देता।

भारत सरकार ने सम्बद्ध अधिकारियों को निर्देश दिए हैं कि अरबों के साथ भारतीय लड़कियों की शादियां न करने दी जांय जब तक अरब देश-वासी अपने उच्चायोग की अनुमति प्राप्त करके अनुमति पत्र प्रस्तुत न करे।

इस प्रकार की शादियों का देश समाज और स्वयं लड़कियों व महिलाओं के हित की दृष्टि से प्रबुद्ध समाज द्वारा जिनमें आर्य समाज अग्रणी रहा है घोर विरोध होता रहा है।

ऐसी विवाहिताओं की अरब देशों में जाकर जो दुर्गति होती, उनकी दासियों और एक प्रकार से वेश्याओं में परिणति होती और अरब गवर्नमेंट की घरेलू और बाहरी कठिनाईयों एवं परेशानियों में वृद्धि होती है ये सब बातें सर्वविदित ही हैं।

साहसी महिला

नई दिल्ली, ६ जनवरी। यमुना पार क्षेत्र में कृष्णनगर की एक ५० वर्षीय महिला ने कल रात घर में घुस आये एक सशस्त्र लुटेरे का डटकर मुकाबला किया तथा उसे गिरफ्तार करवाने में अद्भुत साहस का परिचय दिया।

पुलिस के अनुसार श्रीमती शान्तिदेवी नामक उक्त महिला के घर में एक व्यक्ति लूटपाट करने के उद्देश्य से घुस आया,पर,श्रीमती शान्ति देवी उल्टे उसी पर झपट पड़ी और लुटेरे के हाथ से एक देशी रिवाल्वर छीन लिया।

लुटेरे को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया है। पुलिस ने श्रीमती शान्ति देवी को ५००) रु० का पुरस्कार देने की घोषणा की है।

प्रेरक प्रसंग

क्या यह आर्य समाजियों की बारात है ?

(अज्ञात कायस्थ)

श्री स्व० लाल बहादुर शास्त्री की पुत्री के विवाह के अवसर पर बाराती खाना खाने बैठे। भोज्य पदार्थों को देखकर कुछेक बाराती नाक भौं सिकोड़ने लगे क्योंकि उनमें कोई सामिष (मांस) पदार्थ न था। उनमें से एक अपने रोष को व्यक्त करते हुए चिल्ला उठा "क्या यह बारात आर्य समाजियों की है जो दावत में मांस और शराब नदारद कर दिये गये हैं ?"

श्री लाल बहादुर शास्त्री ने जो पास में ही खड़े थे कहा "आप इसे आर्य समाजियों की ही दावत समझ लीजिए। मेरे घर में इन दोनों का कतई प्रवेश नहीं है और न मैं किसी भोज और दावत में इनका प्रवेश ही होने देता है मैंने यह बात रिश्ता तय करते हुए लड़के के पिता पर स्पष्ट कर दी थी।"

यह सुनकर वह बाराती अपना सा मुंह लेकर खाना खाने बैठ गया।

अपने त्याग

(२)

श्री पं० मुक्तिरामजी संस्कृतके महा विद्वान थे। काशी में कईवर्ष रहकर संस्कृत का अध्ययन किया था। उनकी विद्या की धाक सुनकर श्री पं० मदन मोहन जी मालवीय ने उनसे काशी विश्व विद्यालय में संस्कृत पढ़ाने का आग्रह किया और ४००) मासिक देने के लिए कहा। इस पर पं० मुक्तिराम जी ने कहा "मैंने निःशुल्क विद्या पढ़ी है और निःशुल्क ही पढ़ाऊंगा किन्तु मुझे अपनी पाठशालाओं से ही अवकाश नहीं है।"

श्री पं० मुक्तिराम के गुरुदेव लक्ष्मीदत्त ने उन्हें लिखा कि कलकत्ता में ३००) मासिक पर कालेज में पढ़ाने आओ। इधर गुरुकुल में पढ़ाने के लिए आग्रह हो रहा था। अतः स्थिति ऐसी सामने आ गई कि यदि गुरुकुल पोठा मक्तों में पं० मुक्तिराम रहते हैं तो गुरुकुल चल सकता है और यदि नहीं रहते तो गुरुकुल टूटता है। इस जटिल स्थिति को देखकर मुक्तिराम जी ने गुरुकुल में ही रहना ठीक समझा और गुरुकुल को टूटने से बचा लिया।

—रघुनाथप्रसाद पाठक

महर्षि दयानन्द की शिक्षाएं (ग्रन्थों से)

झूठ कभी मत बोलो

जिस वाणी से सब व्यवहार निश्चित वाणी हो जिसका मूल हैं और जिस वाणी ही से सब व्यवहार सिद्ध होता है जो मनुष्य उस वाणी से मिथ्या भाषण करता है वह जानो सब चोरी आदि पाप ही करता है इसलिए मिथ्या भाषण को छोड़ के सदा सत्य भाषण ही किया करे।

(संस्कार विधि गृहस्थ)

आयु को बढ़ाओ

'आयु वीर्य्यादि धातुओं की शुद्धि और रक्षा करना तथा युक्ति पूर्वक ही भोजन और वस्त्र आदि जो धारण करना है [इन अच्छे नियमों से आयु को सदा बढ़ाओ।

(ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका वेदोक्त धर्म)

अपने रूप को बढ़ाओ

'अत्यन्त विषय सेवा से पृथक रहकर और शुद्ध वस्त्रादि धारण से शरीर का स्वरूप सदा उत्तम रखना।

(ऋ. भा. भू. वेदोक्त धर्म)

अपना नाम पैदा करो

उत्तम कर्मों के आचरण से नाम की प्रसिद्धि करनी चाहिए जिससे अन्य महापुरुषों को भी श्रेष्ठ कर्मों में उत्साह हो।

(ऋ. भा. भू. वेदोक्त धर्म)

अपना यश बढ़ाओ

श्रेष्ठ गुणों के ग्रहण के लिए परमेश्वर के गुणों का श्रवण, उपदेश करते रहो जिससे तुम्हारा भी यश बढ़े।

(ऋ. भा. भू. वेदोक्त धर्म)

गृहस्थ रहकर भी तुम ब्रह्मचारी कहला सकते हो

(हां) जो (गृहस्थ) अपनी ही स्त्री से प्रसन्न, निषिद्ध रात्रियों में स्त्री से पृथक रहता है और ऋतुगामी होता है वह गृहस्थ भी (ब्रह्मचारी) के सदृश है।

(स० प्र० स० ४)

प्रतिज्ञा का पालन करो

'जैसी हानि प्रतिज्ञा को मिथ्या करने वाले की होती है वैसी अन्य किसी की नहीं होती। इससे जिसके साथ जैसी प्रतिज्ञा करनी उसके साथ वैसी ही पूरी करनी चाहिए। अर्थात जैसे किसी ने किसी से कहा कि मैं तुमको वा तुम मुझसे अमुक समय में मिलूंगा या मिलना अथवा अमुक वस्तु अमुक समय में तुमको मैं दूंगा' इसको वैसा ही पूरा करें नहीं तो उसकी प्रतीति कोई भी न करेगा इसलिए सदा सत्य भाषण सत्य प्रतिज्ञा युक्त सबको होना चाहिए।

(स० प्र० स० २)

नित्य कर्मों और स्वाध्याय में नागा मत करो

'वेद के पढ़ने-पढ़ाने, सन्ध्योपासनादि पंच महायज्ञों के करने और होम मन्त्रों में अनध्याय विषयक अनुरोध (आग्रह) नहीं है क्योंकि नित्य कर्मों में अनध्याय नहीं होता। जैसे श्वास, प्रश्वास सदा लिए जाते हैं और बन्द नहीं किए जा सकते वैसे नित्य कर्म प्रतिदिन करना चाहिए न किसी दिन छोड़ना।"

(स० प्र० स० ३)

दूसरों के दोषों को मुंह पर कहो

'सत्पुरुषों को योग्य है कि मुख के सामने दूसरे का दोष कहना और अपना दोष सुनना, परोक्ष में दूसरे के गुण सदा कहना।

और दुष्टों की यह रीति है कि सन्मुख में गुण कहना और परोक्ष में दोषों का प्रकाश करना। जब तक मनुष्य दूसरे से अपने दोष नहीं कहता तब तक मनुष्य दोषों से छूटकर गुणी नहीं हो सकता।

(स० प्र० स० ४)

यदि सभा में जाओ तो सदा सत्य बोलो

धार्मिक मनुष्य को योग्य है कि सभा में कभी प्रवेश न करे और जो प्रवेश किया हो तो सत्य ही बोलें। जो कोई सभा में अन्याय होते हुए देखकर मौन रहे अथवा सत्य के विरुद्ध बोले वह महापापी होता है।

जिस सभा में अधर्म से धर्म, असत्य से सत्य सब सभासदों के देखते मारा जाता है उस सभा में सब मृतक समान है मानो उनमें कोई भी नहीं जीता।"

(स० प्र० स० ६)

शरीर और आत्मा का बल साथ साथ बढ़ाओ

शरीर बल (के) बिना (केवल) बुद्धि बल का क्या लाभ? इसलिए शरीर बल सम्पादन करने के लिए और उसकी रक्षा करने के लिए बहुत प्रयत्न करते रहना चाहिए।

(पूना का व्याख्यान धर्माधर्म विषय)

'शरीर और आत्मा में पूर्ण बल सदा रहे क्योंकि जो केवल आत्मा का बल अर्थात विद्या ज्ञान बढ़ाते जांय शरीर का बल न बढ़ावे तो एक ही बलवान पुरुष ज्ञानी, सैंकड़ों विद्वानों को जीत सकता है और जो केवल शरीर का बल बढ़ाया जाय (और) आत्मा का नहीं तो राज्य पालन की उत्तम व्यवस्था बिना विचार के कभी नहीं हो सकती" इसलिए सर्वदा शरीर और आत्मा के बल को बढ़ाते रहना चाहिए।

(स० प्र० स० ६)

तुम बिना पढे भी धर्मात्मा बन सकते हो

जो मनुष्य विद्या पढ़ने का सामर्थ्य तो नहीं रखते और वे धर्माचरण किया चाहें तो विद्वानों के संग और अपनी आत्मा की पवित्रता और अविरुद्धता से धर्मात्मा अवश्य हो सकते हैं क्योंकि सब मनुष्यों को विद्वान होना तो संभव ही नहीं, परन्तु धार्मिक होने का संभव सबके लिए है।

(व्यवहार भानु)

"विद्वान होने को तो संभव नहीं परन्तु जो धर्मात्मा हुआ चाहें तो सभी हो सकते है। अविद्वान लोग दूसरों को धर्म का निश्चय नहीं करा सकते और विद्वान लोग धार्मिक होकर अनेक मनुष्यों को भी धार्मिक कर सकते हैं और कोई धूर्त मनुष्य अविद्वान को बहकाकर अधर्म में प्रवृत्त कर सकता है। परन्तु विद्वान को अधर्म में कभी नहीं, चला सकता।"

(व्यवहार भानु)

इन सम्प्रदायों को उखाड़ डालो

'सब सज्जनों को श्रम उठाकर इन सम्प्रदायों को जड़ मूल से उखाड़ डालना चाहिए जो कभी उखाड़ डालने में न आवे तो अपने देश का कल्याण कभी होने का ही नहीं।"

(शिक्षा पत्री ध्वान्त निवारणम)

ईसाई मुसलमान आदिकों को अपने यहां मिलाओ

'देखो! तुम्हारे सामने पाखण्ड मत बढते जाते हैं ईसाई, मुसलमान तक होते जाते हैं। तनिक भी तुमसे अपने घर की रक्षा और दूसरों को मिलाना नहीं बन सकता। बने तो तब जब तुम करना चाहो। जब लों (तुम) वर्तमान और भविष्यत में उन्नति शील नहीं होते तबलों आर्यावर्त्त और अन्य देशस्थ मनुष्यों की वृद्धि नहीं होती। चेतो।

(स० प्र० स० ११)

यदि किसी सभा में मतभेद हो तो कैसे निर्णय हो?

'यदि सभा में मतभेद हो तो बहुपक्षानुसार मानना और समपक्ष में उत्तमों की बात स्वीकार करनी और यदि दोनों पक्ष वाले बराबर उत्तम हों तो संन्यासियों की सम्मति लेनी, जिधर पक्षपात रहित, सर्वहितैषी संन्यासियों की सम्मति होवे वही उत्तम समझनी चाहिए। (संस्कार विधि गृहस्थ)

—प्र० र० प्रसाद पाठक

सार्वदेशिक सभान्तर्गत स्थिर निधियां

(१९८३-१९८४)

पुरानी स्थिर निधियां

१—पांच हजार रुपए यशोवर्धन स्थिर निधि

संस्थापित द्वारा श्री म० बनवारी लाल आर्य गाजियाबाद (पुत्र की पुण्य स्मृति में)।

शर्तें इस प्रकार है :

१. कम से कम सार्वदेशिक पत्र निर्धन व अधिकारी व्यक्तियों को निःशुल्क हर वर्ष बदलते रहकर भेज दिया जाया करे।

२. इस निधि के ब्याज से मुख्यतः श्री स्व० पं० रामचन्द्र जी देहलवी तथा श्री स्वामी दर्शनानन्द जी महाराज कृत साहित्य प्रकाशित करके उसका लाभ इस निधि में जमा करके उन्नत किया जाय।

दानी महोदय ने इस निधि की राशि बढ़ाने की भी स्वीकृति चाही थी जो दी गई। प्रारम्भ में यह राशि ३१००) थी। इस निधि की स्वीकृति ३०-५-८१ की अन्तरंग बैठक ने दी यह निधि अब ६०००) रु० की हो गई है।

२—पांच हजार रुपए श्री सरदारीलाल आर्य नय्यर स्थिरनिधि

शर्तें

१. इस निधि का ब्याज ही खर्च किया जायेगा मूल नहीं।

२. इस निधि का ब्याज प्रतिवर्ष गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर में अध्ययन कर रहे किसी निर्धन होनहार व मेधावी वेदपाठी छात्र के अध्ययन पर छात्रवृत्ति के रूप में व्यय किया जाएगा। यदि किसी अन्य गुरुकुल मे भी ऐसे ही वेद पाठी को सहायता की आवश्यकता हो तो सभा को अधिकार होगा कि वह ब्याज की आधी राशि दूसरे विद्यार्थियों को देकर उक्त निधि से सहायता कर दें। ऐसा न होने पर ब्याज की पूरी राशि गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर के छात्रों को ही दे दी जाय।

३. इस निधि के ब्याज से सभा प्रति वर्ष २ प्रतिशत का दत्तांश ले सकेगी।

४. इस निधि की मूल राशि दानी को वा उनके किसी उत्तराधिकारी को वापस लेने का अधिकार न होगा।

५. दानी अपनी इच्छानुसार इस निधि में राशि को बढ़ा सकेंगे।

३—एक लाख रुपया श्री चिरंजी लाल भल्ला गोसंवर्धन स्थिर निधि

(चिरंजी लाल भल्ला चैरीटेबिल ट्रस्ट अध्यक्ष श्री मुल्कराज भल्ला द्वारा स्थापित)।

१. सभा अधिक से अधिक आय प्राप्त करने के लिए अपनी इच्छा से इस राशि का विनिमय करेगी।

२. इस निधि से प्राप्त आय गोवंश की रक्षा, नस्ल सुधार उसके हित, पालन पोषण आदि में व्यय तथा अन्य किसी ढंग से प्रयुक्त की जा सकेगी जिससे कि गोसंवर्धन तथा दुग्ध उत्पादन में वृद्धि हो और सर्वसामान्य जनता विशेषतः पिछड़ी जातियों के स्वास्थ्य में सुधार हो।

३. पशुओं की बीमारियों की रोकथाम के लिए अनुसंधान कार्य में व्यय करना।

४. इस निधि की आय सम्पूर्ण अथवा आंशिक धन राशि का उपयोग पशु चिकित्सालय पशुओं के रोगों पर अनुसंधान नस्ल सुधार शोध केन्द्रों की स्थापना पर इस शर्त के साथ किया जा सकेगा कि इस प्रकार के केन्द्र। (चिकित्सालय) का नाम 'लाला चिरंजी लाल भल्ला' रखना होगा।

५. इस निधि की राशि को "चिरंजी लाल भल्ला" चैरिटेबिल ट्रस्ट को वापिस लेने का अधिकार न होगा।

इस निधि की स्वीकृति १२-९-८१ की अन्तरंग सभा ने दी।

४—स्त्री आर्य समाज (पारिवारिक सत्संग मंडल) डी ब्लाक सुदर्शन पार्क नई दिल्ली ने (अठारह हजार नौ सो अड़तीस रुपये चौसठ पैसे) की एक स्थिर निधि सभा में कायम की है।

इस निधि के ब्याज का उपयोग निम्न कार्यों में होगा।

धार्मिक पुस्तकों के प्रकाशन, गरीब छात्र छात्राओं की छात्र वृत्ति। प्रकाशित पुस्तकों पर श्रीमती ईश्वरी देवी जी आर्य समाज डी० ब्लाक सुदर्शन पार्क दिल्ली की स्थिर निधि के ब्याज से प्रकाशित किए जाने का उल्लेख हो : इस निधि के धन को कोई भी कभी वापिस लेने का अधिकारी नहीं होगा। २१-२-८२ की अन्तरंग सभा ने इसकी स्वीकृति दी।

५—श्री चननलाल शर्मा एवं श्रीमती पुरुषोत्तम देवी पांच हजार

श्री चननलाल शर्मा एवं श्रीमती पुरुषोत्तम देवी वेद प्रचार हिन्दी भाषा प्रचार निधि। इस निधि का ब्याज ही खर्च किया जा सकेगा। श्री चननलाल जी कलेरकलां (गुरदासपुर) के निवासी है २६-१२-८० की अन्तरंग बैठक ने यह निधि स्वीकार की। वर्ष के अन्त में इस निधि में ७३५) ब्याज के जमा रहे।

६—श्रीमती विद्यावती कौड़ा स्थिर निधि

५०००) पांच हजार रुपए की स्थिर निधि श्रीमती विद्यावती कौड़ा धर्म पत्नी श्री निरंजन देव जी विद्यालंकार बी० ५/१५८ सफदरजंग इंकलैव नई दिल्ली ने अपने ज्येष्ठ पुत्र स्व० फ्लाइट लेफ्टिनेण्ट श्री प्रिय देव कौड़ा की पुण्य स्मृति में १-४-७८ को सभा में स्थापित की थी। इस निधि के ब्याज का आधा भाग हवन आदि हेतु शम्भूदयाल वैदिक संन्यास आश्रम गाजियाबाद को श्री जनार्दन भिक्षु जी को जब तक उनका इस आश्रम से सम्बन्ध रहेगा दी जायेगी। शेष राशि सभा किसी विधवा को सहायतार्थ देगी। ब्याज की शेष राशि इस समय ९१५,८१ है।

७—श्री भवानी लाल गज्जूमल शर्मा स्थिर निधि

विश्वकर्मा कुलोत्पन्न स्व० श्रीमती तिज्जोदेवी भवानी लाल शर्मा ककुहास की पुण्य स्मृति में स्व० भवानी लाल शर्मा (कानपुर) अमरावती विदर्भ निवासी ने सार्वदेशिक पत्र के हितार्थ पांच हजार रुपए की स्थिर निधि १९५९ में स्थापित की थी जिसके ब्याज का आधा सार्वदेशिक पत्र को दिया जाता तथा आधा असल राशि में जमा कर दिया जाता है।

शर्मा जी ने ५०००) के दान से एक दूसरी निधि सत्यार्थ प्रकाश के प्रकाशनार्थ कायम की थी। इस निधि से गतवर्ष तक सत्यार्थ प्रकाश के ४ अच्छे सस्करण ५ ५, १० तथा २० हजार की संख्या में छप चुके थे।

इस निधि में ब्याज ७५० रु० जमा हैं।

७—चन्द्रभानु वेद मित्र स्मारक निधि

यह निधि स्व० श्री चन्द्रभानु जी रईस तीतरों (सहारनपुर उत्तर प्रदेश) निवासी की पुण्य स्मृति में उनके सुपुत्र स्व० श्री म० वेदमित्र जी जिज्ञासु द्वारा प्रदत्त ५ हजार के दान से १९२५ में मथुरा शताब्दी के अवसर पर स्थापित हुई थी। दानी की इच्छानुसार इस राशि के ब्याज से आर्य साहित्य प्रकाशित किया जाता है।

इस निधि के ब्याज से अब तक कर्तव्य दर्पण आदि २० पुस्तकें छप चुकी हैं।

(क्रमशः)

श्री महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट

टंकारा-३६३६५०

जिला राजकोट (गुजरात)

दिल्ली कार्यालय :—आर्य समाज, मन्दिर मार्ग नई दिल्ली-११०००१

रजत-जयन्ती समारोह में सम्मिलित होने का निमन्त्रण तथा

आर्थिक सहायता की अपील

मान्यवर,

सादर नमस्ते।

हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी १६, १७, १८, फरवरी, १९८५ तदनुसार शनि, रवि, सोमवार को ऋषि जन्म-स्थान टंकारा में ऋषि बोधोत्सव का विशाल समारोह होने जा रहा है।

इस वर्ष यह ऋषि मेला रजत जयन्ती के भव्य रूप में मनाया जायेगा। इस अवसर पर एक सप्ताह तक वेद पारायण यज्ञ होगा। देश-देशान्तर से पधारे आर्य विद्वान तथा कलाकार, ऋषि भक्त अपनी श्रद्धांजलि ऋषि के चरणों में अर्पित करेंगे। कन्या गुरुकुल बड़ौदा, पोरबन्दर, जामनगर की कन्याएं, टंकारा उपदेशक विद्यालय के विद्यार्थी तथा अन्य अनेक संस्थाओं के युवक भी समारोह के कार्यक्रमों में भाग लेंगे।

इस बार स्वामी सत्यपति जी महाराज की अध्यक्षता में ऋषि मेला से एक सप्ताह पूर्व 'योग शिक्षण शिविर' का भी आयोजन किया गया है जो १० फरवरी से १६ फरवरी १९८५ तक चलेगा। जो सज्जन इसमें सम्मिलित होना चाहें वे तुरन्त उपरोक्त पते पर सूचित करें।

ऋषि मेले पर आवास—भोजन का पूर्ण प्रबन्ध टंकारा ट्रस्ट की ओर से होगा।

टंकारा-ट्रस्ट के आधीन निम्न कार्य चल रहे हैं :—

१. ऋषि जन्म-गृह का प्रबन्ध
२. अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक विद्यालय
३. गो-संवर्धन केन्द्र (विशाल गौशाला)
४. दिव्य दयानन्द दर्शन चित्र-गृह
५. अतिथि-गृह
६. आर्य साहित्य प्रचार केन्द्र, पुस्तकालय तथा सार्वजनिक वाचनालय

ऋषि जन्म स्थान टंकारा की कुछ विशेष आवश्यकताएं भी हैं। पानी की भयंकर कमी, ऋषि जन्म गृह के मुख्य भाग का एक सेठ के व्यक्तिगत कब्जे में होना तथा टंकारा की संस्थाओं का अपेक्षित विकास।

ये तीन मुख्य कार्य हैं जो टंकारा स्मारक के पूर्ण विकास में बाधक हैं। टंकारा उत्सव की सफलता, टंकारा की संस्थाओं का विकास तथा वहां के कार्य की कठिनाइयों को दूर करने के लिए टंकारा-ट्रस्ट के अधिकारी तथा ट्रस्टी जनता-जनार्दन के सहयोग से प्रबल प्रयत्न कर रहे हैं।

ऋषि भक्तों की सूचनार्थ यह भी लिखना आवश्यक है कि टंकारा में जो गौशाला है, उसमें ३० गौवें हैं। इस गौशाला से विद्यार्थियों को शुद्ध दूध मिलता है। परन्तु हर वर्ष गौशाला में २५०००) का घाटा हो जाता है जो कि आप जैसे ऋषि-भक्तों और गोभक्तों के दान से ही पूरा होता है।

आपसे आग्रह और सविनय प्रार्थना है कि इस पवित्र यज्ञ कार्य में अपनी सहायता का हाथ अवश्य बढ़ाएं। ऋषि जन्मस्थान ही यदि दर्शनीय और पूर्णतया विकसित न हुआ तो आर्य समाज जैसी महान संस्था कैसे विश्व में अपना सिर ऊंचा कर सकती है?

प्रति वर्ष सहस्रों ऋषि-भक्त ऋषि बोधोत्सव पर टंकारा पधारते हैं। उनके आवास और भोजनादि का पूरा प्रबन्ध निःशुल्क टंकारा ट्रस्ट की ओर से किया जाता है। इसके अतिरिक्त उत्तर भारत के यात्रियों के लिए प्रति-वर्ष ट्रेन तथा लोकल बसों का भी प्रबन्ध किया जाता है। बसों द्वारा आप टंकारा के अतिरिक्त अन्य दर्शनीय स्थानों को भी देख सकते हैं।

विनम्र निवेदन

आपसे विनम्र निवेदन है कि आप टंकारा अवश्य पधारें और इस सारे कार्य को सुचारु रूप से चलाने के लिए अपना आर्थिक सहयोग भी दें। यह राशि आप क्रास चैक, क्रास बैंक ड्राफ्ट अथवा मनीआर्डर से "टंकारा सहायक समिति" के नाम से इसके कार्यालय आर्य समाज, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-११०००१ के पते पर भिजवा सकते हैं।

आपसे सानुरोध प्रार्थना है कि अपनी ओर से अपनी आर्य समाज की ओर से, अपनी स्त्री समाज की ओर से, अपनी शिक्षण संस्थाओं की ओर से अधिक से अधिक राशि भेजें।

विशेष सूचना :—टंकारा ट्रस्टको दी जाने वाली राशि कर से मुक्त है।

निवेदक,

श्री स्वामी दयानन्द सरस्वती स्मारक-ट्रस्ट टंकारा
के अधिकारी तथा ट्रस्टी गण

सार्वदेशिक के ग्राहकों व प्रेमियों से निवेदन

१—जिन सदस्यों ने अभी तक सार्वदेशिक-पत्र का शुल्क कार्यालय में जमा नहीं किया है वह शीघ्र शुल्क जमा करा दें अन्यथा विवश होकर पत्र भेजना बन्द कर दिया जायेगा।

२—मनि० भेजते समय ग्राहक संख्या अवश्य लिखें जिससे कि शुल्क आसानी से खाते में जमा किया जा सके।

३—चैक अथवा ड्राफ्ट "सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा" के नाम से ही भेजें।

४—नये ग्राहक मनि० भेजते समय अपना पूरा पता साफ २ लिखें।

५—बार २ शुल्क भेजने की परेशानी से बचने के लिए एक बार केवल २००) भेज कर आजीवन सदस्य बनें।

—व्यवस्थापक

आत्म संयम से ही सन्तति निरोध वरेण्य है

—चमनलाल

(गतांक से आगे)

इस आधार पर हमारे वैदिक धर्म ग्रन्थों में कम से कम २५ वर्ष तक ब्रह्मचर्य, ५० वर्ष तक गृहस्थ, ७५ वर्ष तक वानप्रस्थ और शेष संन्यास आश्रम का समय रखा गया है। इनमें गृहस्थ आश्रम सब से मुख्य और श्रेष्ठ कहा जाता है। यही आश्रम (२५ से ५० वर्ष तक) विवाहित जीवन भोगने तथा सन्तानोत्पत्ति आदि के लिये माना गया है। इसलिए जितना कुछ व्यवहार संसार में है उसका आधार यह गृहस्थ आश्रम ही है। महर्षि मनुकृत मनुधर्म शास्त्र अध्याय ३ श्लोक ७७ । ७८ । ७९ में इसका विस्तृत वर्णन किया गया है। विवाह को हिन्दू धर्म ग्रन्थों में दूसरे वर्गों के लोगों की तरह भोग विलास और कामवासनाओं की पूर्ति का साधन न मानकर इसको एक पवित्र अटूट धार्मिक बन्धन स्वीकार किया गया है और इसको दुर्बलेन्द्रिय और निर्बुद्धि पुरुषों के धारण करने योग्य नहीं कहा गया है। विवाह का समय कन्या का १६ वें वर्ष से २४ वें वर्ष तक और पुरुष का २५ वें वर्ष से ४८ वें वर्ष तक उत्तम कहा गया है १६ वर्ष की कन्या और २५ वर्ष के पुरुष के विवाह को निकृष्ट और १८-२० वर्ष की कन्या से ३०-३५ वर्ष के पुरुष के विवाह को मध्यम माना गया है, क्योंकि मुनिवर धनवन्तरि अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ 'सुश्रुत' मे अल्पायु वाले स्त्री पुरुष को ऋतुदान का निषेध करते हैं— सुश्रुत अ १० श्लोक ४७-४८. मनु आदि, महर्षियों ने पुरुष को ऋतुकाल ही स्त्री समागम करने का विधान लिखा है। मनु धर्म शास्त्र अध्याय ३ में में इसका विस्तृत वर्णन किया गया है। दूसरे धर्मों के विपरीत इस हिन्दू धर्म में बहु विवाह का निषेध है और एक समय में एक ही पत्नी और और एक ही पति का विधान है।

सं मा तपन्त्यभितः सपत्नीरिव पर्शवः ।
मूषो न शिश्ना व्यदन्ति माध्यः स्तोतारं ते शतक्रतो वित्तं मे अस्य रोदसी ॥

ऋ० १ । १०५ । ८

इहैव स्तं मा वियौष्टं विश्वमायुर्व्यश्नुतम् ।
क्रीडन्तौ पुत्रैर्नप्तृभिर्मोदमानौ स्वे गृहे ॥

ऋ० १० । ८५ । ४२

इस पर भी अधिक सन्तान उत्पत्ति पर रोक लगा दी है और सीमित परिवार को ही आदर्श परिवार कहा गया है।

याद रहे कि करोड़ों वर्ष पूर्व हमारे ऋषि मुनियों ने श्रुति ग्रन्थों में इन पवित्र देश हितकारी भावनाओं को हमारे जीवन का अंग कहा है। धर्म ग्रन्थों मे चेतावनी भी दी है कि अधिक सन्तानों वाले दुःख पाते हैं।

"बहु प्रजा निर्ऋतिमा विवेश"—ऋग्वेद १ । १६४ । ३२

अथर्ववेद के १४ । १ । २३ में तो स्पष्ट ही दो सन्तानों वाला उत्तम गृहस्थ कहा गया है।

"पूर्वापरं चरतो माय यतौ शिशू क्रीडन्तौ परि यातोऽर्णवम् । विश्वान्यो भुवना विचष्टे ऋतुं रन्यो विदधज्जायसेनवः ॥

इसी भाव को ध्यान में रखकर हमारे नीतिकारों ने भी बड़ा सुन्दर कहा है—

वरमेको गुणी पुत्रो न च मूर्ख शतानि अपि ।
एकश्चन्द्रः तमोहन्ति न च तारा: सहस्रकम् ॥

अतः इन धार्मिक विधानों से स्पष्ट है कि हिन्दू धर्म में (जिसका सार वर्णाश्रम व्यवस्था है) कहीं भी बहु सन्तानों के लिए गुंजाइश नहीं है, इन आदर्शों के मूर्तिमान दो महापुरुष मर्यादा पुरुषोत्तम राम और योगीराज कृष्ण महाराज ने अपने जीवन काल में संयम का जीवन बिताकर क्रमशः दो और एक ही पुत्र को धारण करके जनता के आगे महान आदर्श उपस्थित किया था। ऐसे सुन्दर अद्भुत समाज व्यवस्था-वर्णाश्रम धर्म की अनेकों विदेशी मनीषियों ने भी भूरि-भूरि प्रशंसा की है। रूस देश के एक महान विचारक Auspensky ने अपने एक विचारपूर्ण ग्रन्थ 'A New model of the Universe' में व हालैण्ड के Dr.G.H. Mees ने अपने ग्रन्थ 'Dharam and Society' में वर्णाश्रम व्यवस्था को समाज व्यवस्था की सर्वोत्तम पद्धति माना है। अतः स्पष्ट है कि हिन्दू धर्म में परिवार नियोजन Populati:n Control की भावना स्थान-२ पर फैली प्रतीत होती है। इस Self Control संयमी जीवन का महर्षि मनु, महर्षि स्वामी दयानन्द, राष्ट्रपिता महात्मा गांधी एवं अन्य महान पुरुषों ने अपने ग्रन्थों में बल पूर्वक समर्थन किया है।

परन्तु बड़े खेद के साथ कहना पड़ता है कि सुखी परिवार एवं सीमित परिवार को करने हेतु पवित्र प्रभावशाली संयम की पद्धति के होते हुए न जाने क्यों हमारी सरकार ने इस समस्या से पीड़ित विदेशों में चलाए जा रहे आधुनिक कृत्रिम तकनीक और Medical साधनों को अपनाकर करोड़ों व्यय किए, जिनका परिणाम सन्तोषजनक तो न हुआ, अपितु इनसे स्वास्थ्य की हानि हुई और अनेकों लोग रोग ग्रस्त हुए और बहुतों को अपनी जान से भी हाथ धोना पड़ा। यही नहीं गर्भपात पर कुछ प्रतिबन्ध न होने पर भ्रष्टाचार को भी बढ़ावा मिला, जब कि हमारे शास्त्रों में गर्भपात को पाप बताया गया है 'अन्धा मा नो अधोरिग्र'। यदि आधुनिक कृत्रिम साधनों के साथ संयम के जीवन (Self Control) का प्रचार किया जाता तो निश्चित ही परिणाम बड़े सन्तोषजनक होते और करोड़ों रुपये की बचत भी होती, जो जन कल्याणकारी अन्य योजनाओं पर खर्च करने को उपलब्ध होते।

इस पद्धति को प्रभावशाली बनाने के वास्ते मैं यहां कुछ सुझाव देना भी आवश्यक समझता हूं।

१. विद्वान लोग धर्म ग्रन्थों का विशेष रूप से अध्ययन करके उनमें से सीमित परिवार तथा शिशु निरोध सम्बन्धी साहित्य तैयार करके जनता को धर्म के नाम पर जीवन अपनाने के लाभों से अवगत करावें।

२. सरकारी प्रसारणों के माध्यम से इनका प्रचार व प्रसार करें।

३. पाठ्य पुस्तकों में संयम के जीवन के लाभों पर प्रकाश डालें।

४. दूरदर्शन पर उत्तेजना जनक फिल्में दिखाने पर कड़ा प्रतिबन्ध हो।

५. होटलों में युवतियों के उत्तेजना जनक नग्न नृत्यों और शारीरिक प्रदर्शनों पर रोक लगे।

६. समाज सेवी संस्थाओं द्वारा सरकार बृहस्तर पर इसका प्रचार करे।

७. विवाह की आयु बढ़ाई जाये, और उल्लंघन करने वालों पर कड़े दण्ड की व्यवस्था हो, इत्यादि।

इसके साथ-२ मैं यह भी कहूंगा कि हिन्दुओं के अलावा देश के अन्य वर्गों के लोग देश हित में अपने पुराने बहुपत्नी प्रथा और आजीवन गृहस्थ भोगने की विचारधारा को छोड़कर सीमित परिवार और संयम के जीवन की पद्धति को अपना कर इस जन वृद्धि की घोर समस्या को हल करने में सहयोग दें। वर्तमान में इस घोर विकट समस्या को हल करने में इस देश राष्ट्र और जनता का हित निहित है। इस प्रकार हम अपने धर्म ग्रन्थों के द्वारा इस समस्या का हल करके फिर से संसार में अपना प्राचीन गौरव स्थापित कर सकते हैं।

In the end I wholeheartedly thank you all for the patient hearing.

अन्त में मैं आप सब को धैर्य पूर्वक श्रवण करने के लिए धन्यवाद देता हूं।

(समाप्त)

सम्पादक के नाम पत्र

क्या हमारे राजनीतिज्ञों ने भी नारी देह-व्यापार का धंधा आरम्भ कर दिया है ?

कनाडा के एक न्यायाधीश ने पिछले दिनों एक केस में जो निर्णय दिया, उसमें उसने राजनैतिक नेताओं और वेश्याओं में समानता बताते हुए कहा है, "वेश्याएं भी इन्सान है, और उन्हें सड़क पर घूमकर ग्राहकों को रिझाने तथा अपने ग्राहकों की संख्या बढ़ाने का पूरा अधिकार है। आखिर, उनमें और राजनीतिज्ञों में इस मामले में कोई अन्तर नहीं है। जिस प्रकार वेश्याएं सड़कों पर खुले आम घूमकर अपने लिए ग्राहक तलाशती हैं, उसी प्रकार राजनीतिज्ञ चुनाव के दौरान, वोट मांगने के लिए, मतदाताओं को रिझाने और अपने मतदाताओं की संख्या बढ़ाने के उद्देश्य से सड़कों पर घूमते हैं।

इस केस में टोरन्टो की पुलिस ने सड़कों पर घूमकर ग्राहकों को आकर्षित करने वाली एक वेश्या पर जुर्माना किया था, और वेश्या ने इस जुर्माने के खिलाफ अदालत में आवेदन किया था।

हमारे राजनैतिक नेता नारी-देह व्यापार को रोकने के लिए कितने अधिक उदासीन है, इसका पता इसी एक बात से चल जाता है कि नई दिल्ली में पिछले दिनों आयोजित एक परिचर्या में अनेक वक्ताओं ने यह शिकायत की कि फौजदारी कानून संशोधन विधेयक (१९८०) में ऐसे बहुत से उपायों की उपेक्षा की गई है, जिनसे बलात्कारों को प्रभावी ढंग से रोका जा सके। उदाहरणार्थ, विधेयक बनाने वालों ने संसद की सलाहकार समिति की इस सिफारिश को नहीं माना कि सूरज डूबने और उगने के बीच किसी महिला को गिरफ्तार न किया जाये। समिति की इस सिफारिश का आधार वे अनगिनत समाचार थे, जिनके अनुसार, रात में जो महिलाएं गिरफ्तार की जाती हैं उनके साथ बलात्कार किया जाता है।

वैसे, यह कानून कुछ हद तक बलात्कारों को रोकने में सफल हो सकेगा, क्योंकि इसमें सामूहिक बलात्कार करने वाले गिरोहों तथा अकेले बलात्कारी को सात साल की सजा देने का प्रावधान है।

यह देखकर हर्ष होता है कि दुराचारी राजनीतिज्ञों के बीच ऐसे ईमानदार और स्त्री-जाति-सेवी राजनीतिज्ञ भी मौजूद हैं, जो नारी देह व्यापार को रोकने के लिए सच्चे मन से संघर्ष कर रहे हैं। महाराष्ट्र विधान परिषद के सदस्य श्री विनोद गुप्त (भाजपा) ने 'बम्बई में 'सावधान' नामक एक संस्था को जन्म दिया है, जिसका उद्देश्य अबोध, नाबालिग बालिकाओं की देह का व्यापार करने वाले समाज-विरोधी तत्वों के विरुद्ध आंदोलन छेड़ने तथा इन तत्वों के चंगुल में फंसी महिलाओं को मुक्ति दिलाकर उन्हें एक पुनर्वास केन्द्र में भर्ती कराने का। बम्बई में शांति नाम की एक २० वर्षीया ने भी अन्याय के विरुद्ध संघर्ष के लिए वेश्याओं का एक संगठन बनाने की घोषणा की है।

—बहल फैमिली ट्रस्ट की ओर से बिहारीलाल

एक 'संत' के शव का बेरहम शोषण

शायद ही किसी सन्त के शव का इतना अधिक अंग-भंग हुआ हो, जितना गोआ के तथाकथित सन्त फ्रांसिस जेवियर का हुआ, जिनके शव की एक नयी प्रदर्शनी (एक्सपोजीशन) गोआ में आरम्भ हो रही है। ५४ दिनों तक चलने वाली प्रदर्शनी को देखने के लिए विश्व के काफी दर्शनार्थियों के आने की आशा है। इससे पूर्व जेवियर के शव की १३ सार्वजनिक प्रदर्शनियां हो चुकी है। सबसे पहली प्रदर्शनी १७५२ में, जेवियर के निधन के २०० वर्ष बाद हुई थी।

विभिन्न कारणों से गोआ के निवासी, और चर्च (जिसके प्रवक्ता हैं आर्क विशप गोन्सालविस) इस प्रदर्शनी के आयोजन के पक्ष में नहीं हैं, लेकिन पर्यटन मन्त्रालय इस धार्मिक समारोह का उपयोग गोआ मे अधिकाधिक ईसाई पर्यटकों को गोआ की ओर आकर्षित करने के लिए करना चाहता है।

जेवियर, जिसने इतिहास-लेखकों के अनुसार, भारत में ईसाइयत और पश्चिम के साम्राज्यवाद की जड़ें मजबूत करने के लिए, गोआ के असंख्य हिन्दुओं को बड़ी बेरहमी के साथ ईसाई बनाया था, को सपने में भी यह ख्याल न आया होगा कि उसकी मौत के बाद, उसके शव का उससे भी अधिक बेरहम शोषण होगा वैसे उसकी आत्मा को इस बात से थोड़ा बहुत संतोष अवश्य हुआ होगा कि उसके शव का प्रदर्शन ईसाई धर्म का प्रचार करने, और हिन्दुओं के खिलाफ नफरत का वातावरण उत्पन्न करने में सफल हुआ है।

इस अनावश्यक और अनुचित प्रदर्शन के बारे में हम आर्कबिशप गोन्सालविस के इस कथन से पूरी तरह सहमत हैं कि "संतों की अत्यधिक पूजा, ईसाई-धर्म के मूलस्रोत ईश्वर के महत्व को भक्त के मन में कम करती है।" ईसाई भक्तों ने जेवियर की पूजा कम की है, निजी स्वार्थ के लिए, उसका अंग-भंग अधिक किया है। १५५१ में उसके वरिष्ठ पादरियों ने ही उसकी सब हड्डियां अपने कब्जे में कर ली थीं। १५५४ में एक पुर्तगाली महिला ने शव के दाहिने पांव की बड़ी ऊंगली को अपने अधिकार में किया था। १७५२ के प्रदर्शन के अवसर पर, एक ईसाई उच्चाधिकारी शव के अनेक अंग लेकर चलता बना था। बाद में शव की बाहें और कन्धे आदि के अनेक भाग निकालकर, दुनियां के अनेक स्थानों में भेजे गये फिर भी, उसके शव के अक्षुण्ण रहने के तथा कथित चमत्कार का प्रचार करके, लाखों लोगों को उल्लू बनाया जाता है।

धर्म स्वातन्त्र्य समर्थन की ओर से,
सदाजीवत लाल, बम्बई

क्या हिन्दी पढ़ना भविष्य बिगाड़ना है ?

नौकरियों में अंग्रेजी की अनिवार्यता !

अंग्रेजी ईसाई शिक्षण संस्थाओं और अन्य पब्लिक स्कूलों (डी० ए० वी० भी) में बच्चों के प्रवेश की होड़। प्रवेश के लिए एक लम्बी कतार। छोटे-छोटे बच्चों को प्रवेश परीक्षा। बड़े-बड़े नेताओं, अभिनेताओं की सिफारिश। २०-२० हजार रुपयों की ईसाई पादरियो को रिश्वत। शर्मा जी गुप्त जी अग्रवाल जो सभी के घर मे एक ही चर्चा। बच्चों को प्रवेश कैसे मिले ? ईसाई शिक्षण संस्थाओं में पाश्चात्य संस्कृति व सभ्यता का नंगा नाच। गांजा, चरस, अफीम, मदिरा के नशे में डूबी भारतवर्ष की यह नयी-पीढ़ी, सब कुछ जानते हुए अनभिज्ञ मात-पिता का; बस एक ही धुन, बच्चा अंग्रेजी पढ़े।

यह कहानी एक घर की नहीं सम्पूर्ण भारतवर्ष की है। नौकरानी-मेहतरानी में भी अपने बच्चों को अंग्रेजी पढ़ाने की होड़ लगी है। परिस्थितियों का लाभ उठाकर, विदेशी पादरी २०-२० हजार रुपये अनुदान लेकर, भारतीय भाषा व संस्कृति को कुचलने में लगे हैं।

विदेशी पादरी के खूनी हाथ

प्रवेश परीक्षाओं और नौकरियों में अंग्रेजी की अनिवार्यता ने स्वार्थवश हमारा स्वाभिमान भी मिट्टी में मिला दिया है। स्वतन्त्र भारत में विदेशी भाषा अंग्रेजी महारानी के अत्याचार रौंगटे खड़े करते हैं—

विदेशी ईसाई शिक्षण संस्थाओं द्वारा-हिन्दी बोलने पर कोड़ों की सजा, हिन्दी बोलने पर नीम की पत्ती, चबवाना हिन्दी बोलने पर नैनीताल में अमिताभ को फांसी पर चढ़वाना-हिन्दी बोलने पर प्रयाग में मीनू की मौत।

हम चुपचाप देख रहे हैं ? अत्याचार व अपमान का प्रतिकार तो दूर आज हिन्दी प्रेमी भी अपने बच्चों को ईसाई संस्थाओं में भेज रहे हैं। क्योंकि और सब इसके लिए अनजाने में ही विवश बना दिये गये हैं।

अंग्रेजी पढ़ने की विवशता

जो भाषा किसी नौकरी और रोजी-रोटी की दौड़ मे पीछे भगाकर उसका भविष्य चौपट करेगी, वह भाषा कौन पढ़ेगा ?

आज हिन्दी ऐसी ही एक भाषा बना दी गयी है जिसे पढ़ना अपना भविष्य बिगाड़ना है। क्योंकि प्रवेश परीक्षाओं, साक्षात्कारों और नौकरियों का माध्यम केवल अंग्रेजी ही है।

—ब्रह्मदत्त स्नातक

धर्मरक्षा महाभियान

पतित कन्याओं को अपनायें, बम्बई में श्री देवीदास आर्य का अभिनन्दन

बम्बई। यहां उल्लास नगर में विभिन्न धार्मिक, सामाजिक, शिक्षण संस्थाओं की ओर से विख्यात महिला उद्धारक, आर्य समाजी श्री देवीदास आर्य का नागरिक अभिनन्दन किया गया।

इस अवसर पर श्री देवीदास आर्य जिन्होंने हजारों अपहृत कन्याओं को असामाजिक तत्वों से मुक्ति दिलाने का महान कार्य किया, ने कहा कि पतित कन्याओं को उदारता से अपनाना चाहिए। हिन्दू समाज में छुआछूत की यह चरम सीमा है कि लोग अपनी ही भटकी बहिन बेटी को अपनाने से हीला हवाला तथा इन्कार करते हैं और घृणा करते हैं जिसके परिणाम भयंकर निकलते हैं।

श्री आर्य ने अपने अनुभव बताते कहा कि जिन युवकों ने ऐसी पतित कन्याओं के हाथ थाम लिए वह उसके बाद सुखी व सम्पन्न हो गए।

प्रारम्भ में आर्य समाज बम्बई की ओर से सर्वश्री स्वामी सच्चिदानन्द श्रीचन्द नेनाराम आर्य, प्रेम प्रकाश आश्रम की ओर से महान सन्त स्वामी शान्ति प्रकाश, साहित्यकार दयाल आशा, विश्व हिन्दू परिषद, सनातन धर्म सभा, निजधाम आश्रम की ओर से स्वामी विशन दास ने श्री देवीदास आर्य का स्वागत किया।

नेनाराम आर्य, आ. स. उल्लास नगर, बम्बई

शुद्धि

दिनांक २-१-८५ को प्रातःकाल की शुभ वेला में एक ईसाई युवक श्री सुनील कुमार पूर्वनाम सुनिल न्यूटन पीटर्स, आत्मज श्री अरनेस्ट नेल्सन पीटर्स, १७ एम० एल० ए० क्वार्टर्स पुरोहित जी का बाग जयपुर एवं एक ईसाई युवती सुश्री सुनीता देवी, पूर्वनाम सुनीता सेत आत्मजा श्री लारेन्स सेत, निवासी १६ एम० एल० ए० क्वार्टर्स जयपुर का शुद्धि संस्कार कराया जाकर वैदिक हिन्दू धर्म में प्रवेश कराया गया व नाम उपरोक्तानुसार रखे गये।

इनका विवाह संस्कार श्री नन्द किशोर जी के पौरोहित्य में वैदिक पद्धति से सम्पन्न कराया गया।

—बनवारी लाल सिंहल
मन्त्री-आर्य समाज रामपुरा, कोटा

श्री देवीदास जी द्वारा सराहनीय कार्य

कानपुर: अतिरिक्त जिला व सत्र न्यायाधीश १२ श्री राधा कान्त ने एक १३ वर्षीय बालिका के अपहरण व बलात्कार के अपराध में बर्रा निवासी राम सजीवन नामक एक अभियुक्त को १० वर्ष कड़े कारावास के दण्ड का आदेश दिया है।

घटना इस प्रकार बतायी जाती है कि बर्रा नयी बस्ती (थाना नौबस्ता) निवासी बमू चमार की १३ वर्षीय पुत्री कैलाशो को ४५ वर्षीय अभियुक्त राम सजीवन जो वहां का एक दूकानदार है गत २५ अक्टूबर ८३ को धोखा देकर अपहरण कर ले गया था। चार मास तक इस बालिका का पता नहीं चल सका। थाना नौबस्ता पुलिस ने फाइनल रिपोर्ट लगाकर जांच की कार्यवाही समाप्त कर दी थी। तब बालिका के पिता के आग्रह पर सुप्रसिद्ध महिला उद्धारक आर्य समाजी नेता श्री देवीदास आर्य ने खोज कर १९ नवम्बर ८४ को गढ़रियल पुरवा (थाना फलगंज) से बरामद कर लिया।

बालिका ने बताया था कि अभियुक्त दिन में पुत्री बताया करता था तथा रात में पत्नी के रूप में रखता था और लगातार बलात्कार करता रहा।

न्यायालय में अन्य गवाहों के साथ आर्य समाजी नेता श्री देवीदास आर्य ने भी गवाही दी।

—श्याम प्रसाद शास्त्री, मन्त्री

आर्य समाजों की गतिविधियां

आर्य वीर शिक्षण शिविर

जनपद सहारनपुर (उत्तर प्रदेश) में आर्य वीर दल हरद्वार क्षेत्र की देवबन्द तहसील में आर्य वीर दल शि. शि. सम्पन्न हुआ।

३० सितम्बर से चन्देना में आर्य वीर दल प्रशिक्षण शिविर ६ अक्टूबर १९८४ को सम्पन्न हुआ। सार्वदेशिक आर्य वीर दल के उपप्रधान संचालक डा० देवव्रत आचार्य इस शिविर के मुख्य मार्ग दर्शक रहे।

आचार्य जी ने बड़े ही प्रयत्न से आर्य वीरों को धार्मिकता, राष्ट्र रक्षा, एवं एकता की शिक्षा दी। शारीरिक शिक्षा भी इन्होंने आर्य वीरों को प्रदान की।

आर्य वीरों को योग, प्राणायाम, लाठी आदि की मूलभूत जानकारी देकर उनमें सद्गुण सम्पन्न और शक्तिशाली बनाना इस शिविर का मुख्य लक्ष्य रहा है।

क्षेत्रीय आर्य समाजों का जिले के सभी आर्य जनों का व तहसील देवबन्द के समस्त आर्य सज्जनों एवं विशेष रूप से आर्य समाज चन्देना व गांधी वैदिक इन्टर कालेज चन्देना के सभी कार्यकर्ताओं का बड़ा सहयोग रहा है। सभी धन्यवाद के पात्र हैं।

—जनेश्वर प्रसाद मन्त्री

श्रद्धानन्द बलिदान दिवस

दिनांक २९-१२-८४ को दक्षिण महेश्वरी जोगबनी श्रीमान बाबू दीन दयाल शाह के निवास स्थान पर बड़ी धूमधाम से मनाया गया।

एक वृहद यज्ञ किया गया। पं० लक्ष्मीकान्त पांडे के द्वारा बाद में श्री रामनारायण आर्य के द्वारा स्वामी श्रद्धानन्द जी के जीवन पर प्रकाश डाला गया तथा ग्रामीण लोगों व महिलाओं ने अधिक संख्या में भाग लेकर यज्ञ स्थल की शोभा बढ़ाई। इसी अवसर पर आर्य साहित्य तथा यज्ञ पद्धति का वितरण किया गया। लोगों में काफी उत्साह बढ़ा तथा कुछ सदस्य भी ग्रहण किये महिलायें अधिक आर्य समाज से प्रभावित हुई। —रामनारायण आर्य

मन्त्री आर्य समाज जोगबनी पूर्णिया

उत्सव

आर्य गुरुकुल संस्कृत महाविद्यालय, टटेसर जौन्ती दिल्ली ८१ का वार्षिकोत्सव बड़ी धूमधाम से दिनांक २२, २३, २४ फरवरी १९८५ को मनाया जायगा। —मन्त्री-गुरुकुल टटेसर

(पृष्ठ १ का शेष)

दान करने की आपकी अपील को पढ़कर मुझे प्रसन्नता हुई थी।

देश की बहुसंख्य जनता वही सोच रही थी जो आपने ऐसा सोचा। राष्ट्रद्रोही सन्त्री यदि फतवा जारी कर सकते हैं कि कांग्रेस को हटाओ, मौलवी मुल्ले इमाम और मुफ्ती यदि मुसलमों को भड़का सकते हैं कि राजीव को हटाओ तो राष्ट्रवादी चिंतक क्या सोचेंगे? पथभ्रष्ट सिख और मुसलमान, जब तथाकथित विपक्ष के साथ हों तो विवेकी हिन्दू नेता किसका साथ देंगे?

सनातनी धर्माचार्य तो पंगे हैं कभी सामयिक बोध ने इन्हें स्पर्श नहीं किया, आर्य समाज के अध्यक्ष को जो करना चाहिए था आपने वहीं किया और ठीक नहीं बिल्कुल ठीक किया। गलत हुआ था ६७ में जनसंघ सहयोग के काबिल न था यह भारतीय जनता पार्टी ने सिद्ध कर दिया जब सभी गांधी वादी हैं, सभी समाजवादी हैं सभी धर्मनिर्पेक्ष है सबके झण्डों में हरीबिन्दी शामिल है तो हमें हिन्दुओं को ठीक समय पर ठीक निर्णय करके उपयुक्त पक्ष को समर्थन देना चाहिए।

हिन्दू वोटों के संगठित मतदान करके मुस्लिम वोटों के आतंक की पोल खोल दी आपका मनोबल बढ़ रहे।

प्रभु आपको शतायु प्रदान करें आप यशस्वी हो साशिष, सस्नेह।

श्री शालवाले की अपील शक्तिशाली राष्ट्र की कामना थी

आठवीं लोक सभा के चुनाव में आर्य समाज के शिरोमणि संगठन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले द्वारा कांग्रेस (आई) के समर्थन की अपील के विरुद्ध कुछ समाचार पत्रों में आर्य समाज के कतिपय महानुभावों के विचार पढ़कर आश्चर्य हुआ।

जब जामा मस्जिद के इमाम अब्दुल्ला बुखारी की अध्यक्षता में आनन्दपुर साहिब का प्रस्ताव पारित हुआ, भारत के कई क्षेत्रों में अराष्ट्रीय शक्तियां सक्रिय रूप से विदेशी धन के बल पर भारत की एकता को खण्डित करने का काम कररही था, पाकिस्तान द्वारा उग्रवादियों को इतने अस्त्र-शस्त्र दिए गए कि स्वर्ण मन्दिर फौजी किला बन गया, पंजाब में अल्पसंख्यक हिन्दुओं को बेरहमी से मारा, काटा गया, लाहौर हवाई अड्डे पर पाकिस्तान द्वारा विमान अपहर्त्ताओं को पिस्तोल दी गई। खालिस्तान के स्वयंभू राष्ट्रपति जगजीतसिंह द्वारा इंग्लैण्ड से भारत को टुकड़े-२ करने की साजिश की घोषणाएं होती रहीं और चुन चुन कर राष्ट्रीय व धार्मिक नेताओं की हत्याओं की योजनाएं बनाई गई, उग्रवादियों द्वारा दिल्ली व पंजाब में संविधान जलाया गया, जम्मू-काश्मीर में राष्ट्रीय ध्वज का अपमान करके पाकिस्तानी झण्डा फहराया गया, जम्मू काश्मीर में ही आर्य समाज मन्दिर व आर्य कन्या विद्यालय को उग्रवादियों द्वारा जलाकर लाखों रुपयों की सम्पत्ति स्वाहा कर दी गई, उस समय उक्त आर्य बन्धुओं को इनके विरुद्ध बोलने का साहस नहीं हुआ। लाला रामगोपाल जी शालवाले द्वारा समय-समय पर इन राष्ट्रविरोधी कार्रवाईयों के विरुद्ध बोलने पर भिण्डरांवाला के समर्थकों द्वारा श्री शालवाले व श्री ओम्प्रकाश त्यागी महामन्त्री सार्वदेशिक सभा को जान से मारने के धमकी पत्र मिले। उस समय भी ये लोग चुप रहे, क्योंकि एकता व अखण्डता के लिए जिसने भी आवाज उठाई थी, उनमें से अधिकांश को अपने जीवन से हाथ धोना पड़ा था। प्रधान मन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी तक को इसीलिए बलिदान होना पड़ा।

भारत के असंख्य राजनीतिक दल जो लोक सभा की कुल एक चौथाई सीटों पर अपने दम पर चुनाव नहीं लड़ सके, उन दलों की मिली-जुली सरकार के हाथ देश का भाग्य सौंपना उचित नहीं था। ऐसी स्थिति में कांग्रेस (आई) के समर्थन के अलावा दूसरा विकल्प जनता के सामने नहीं था। सन् ७७ में जनता ने एक अवसर विरोधी दलों को जनता सरकार बनाने का दिया था, जो पूर्णतया असफल सिद्ध हुआ।

अतः जिन हमदर्द लोगों के समर्थन में कतिपय आर्य बन्धुओं ने आर्यसमाज संगठन के सर्वोच्च नेता व प्रमुख राष्ट्र भक्त श्री रामगोपाल शालवाले पर अपना आक्रोश निकालने का प्रयत्न किया है, उनको हमारी सलाह है कि वे पहले स्वयं अपने अन्दर झांक कर देखें महर्षि दयानन्द के विचारों पर मनन करें, सार्वभौम राष्ट्र के अस्तित्व पर विचार करें। विकल्प विहीन अस्थिर एवं अनिश्चित राजनीतिक दलोंकी स्थिति पर भी विचार करें। यदि श्रीरामगोपाल शालवाले की अपील से देश की एकता, अखण्डता एवं इसके अस्तित्व को खतरा पैदा हुआ हो, या आर्य जाति या आर्य समाज के आन्दोलनकारी इतिहास को गरिमा पर आंच आई हो अथवा सत्य के ग्रहण करने और असत्य के त्याग के सिद्धान्त पर चोट पहुंची हो तो इन लोगों के कथन को सही माना जा सकता है, अन्यथा श्री शालवाले द्वारा शक्तिशाली राष्ट्र के निर्माण की कामना से कांग्रेस के पक्ष में जो अपील प्रसारित की गई थी, उससे देश में आर्य समाज का गौरव बढ़ा है।

दिनांक १०-१-८५ —राजीव मेहरा
गांवड़ी एक्सटेंशन, घोण्डा, दिल्ली

(पृष्ठ २ का शेष)

महर्षि ने राजनीतिक सुधार की ओर भी देशवासियों का ध्यान आकर्षितकिया। उन्होंने लोगोंमें स्वराज्य की प्रेरणा उस समय ही दी जब कोई राजनीतिक पार्टी इस दिशा में काम करने के लिए अस्तित्व में ही नही थी। उनका कहना है कि कोई कितना ही करे, परन्तु जो स्वदेशी राज्य होता है, वह सर्वोपरि होता है। उन्होंने स्वदेशी वस्तुओं के उपयोग पर भी बल दिया।

उनकी सहिष्णुता वीरता, निर्भीकता और विद्वत्ता सराहनीय है।

महर्षि दयानन्द का दृष्टिकोण वेदानुकूल था जो राष्ट्रीय होने के साथ-साथ अन्तर्राष्ट्रीय है। वह विश्व प्रेम में विश्वास करते थे। उनके ग्रन्थों में संकुचित जातीयता की अपेक्षा संसार में शान्ति की स्थापना का उद्घोष सर्वत्र दिखायी पड़ता है। वैदिक संगठन सूत्र में पिरोने की शिक्षा देता है।

आज राष्ट्र की बागडोर युवा प्रधानमन्त्री श्री राजीव गांधी के हाथों में है आशा करनी चाहिए कि उनके बीस सूत्री कार्यक्रम का क्रियान्वयन करते समय हम अवश्य ही उन ऊंचाइयों तक पहुंच सकेंगे जिनका कभी ऋषि ने स्वप्न देखा था। आर्यसमाज सदा से राष्ट्रीय एकता के लिये कृत संकल्प रहा है तथा आगे भी राष्ट्र-कल्याण मानव कल्याण और विश्व कल्याण के लिए समर्पित रहेगा।

बहू को सताने पर तीन साल की कैद व जुर्माना

अहमदाबाद, ७ जनवरी, संशोधित भारतीय दण्डसंहिता के तहत ससुराल वालों द्वारा बहू को सताने पर जुर्माने के साथ-२ तीन साल तक की कैद की सजा हो सकती है।

गुजरात के विशेष पुलिस महा निरीक्षक (अपराध) श्री एच० के० भाभा ने कल यहां पत्रकारों को बताया कि बहू का एक पत्र ही ससुराल वालों के खिलाफ कार्रवाई करने के लिए काफी होगा।

उन्होंने कहा कि पुलिस ने इस प्रकार के २५ मामलों की जांच गत वर्ष की। ये मामले अदालत के सामने पेश कर दिये गये हैं।

श्री भाभा ने बताया कि ससुराल वालों अथवा शराब के नशे में पति द्वारा बहू को सताना तथा उसका सिर मूंड देना सताने का एक आम तरीका है।

(हिन्दु० ८-१-८५)

श्री रामचरण आर्य पूर्व प्रधान आ. स. ... ग्राम बना-पुर, पो० कणवास (बुलन्दशहर) में आर्य समाज की स्थापना हुई। प्रधान श्री केहर सिंह, मन्त्री श्री रामसिंह और कोषाध्यक्ष श्री तेजपाल सिंह नियुक्त किए गए।

रामसिंह, मन्त्री

उत्सव

केन्द्रीय आर्य सभा अमृतसर (रजि) दिनांक १७ २ ८५ रविवार को ऋषिबोधोत्सव है। इस उपलक्ष्य में १६-२ ८५ शनिवार को जलूस निकलेगा। धूमधाम से तैयारी आरम्भ कर दें। इस महान काम में अभी से जुट जावें।

अत १६ २ ८५ को शोभा यात्रा को भव्य रूप देने हेतु कृपया अपना पूर्ण सहयोग दें।

(नन्द किशोर आर्य) मन्त्री

बलात्कार के आरोप में ९ को मृत्यु दण्ड

अजय, ७ जनवरी चीन की अदालत ने हाल ही में ९ युवकों को जिनमें अधिकतर बच्चे थे, कई महिलाओं से बलात्कार के आरोप में मृत्यु दण्ड दिया है। इनमें से पांच को फायरिंग स्क्वैड ने गोली से उड़ा दिया जबकि चार को दो वर्ष का स्थगनादेश दिया। बलात्कार का आरोप कुल ४० युवकों के विरुद्ध था। शेष को सात से बीस वर्ष तक के कारावास दण्ड सुनाए गये।

प्राप्त समाचारों में बताया गया है कि १९७९ में ९० युवकों ने 'बलात्कार ग्रुप' बना रखा था और उन्होंने १०० से अधिक महिलाओं से बलात्कार किया।

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज नई दिल्ली-२ में मुद्रित तथा रघुनाथ प्रसाद पाठक मुद्रक और प्रकाशक के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दयानन्द भवन, नई दिल्ली-२ से प्रकाशित।

ओ३म्

सार्वदेशिक

साप्ताहिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

सृष्टिसम्वत् १९७२९४९०८५]
वर्ष २० अङ्क १]

माघ कृ० ४ सं० २०४१ रविवार १० फरवरी १९८५

दयानन्दाब्द १६० दूरभाष ।२७४७७१
वार्षिक मूल्य १५) एक प्रति ४० पैसे

उड़ीसा में व्यापक शुद्धि समारोह

उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री स्वामी धर्मानन्द सरस्वती द्वारा सार्वदेशिक सभा के तत्वावधान में गत वर्ष की भांति आगामी १० फरवरी को कालाहाण्डी व बालंगीर के आस-पास के क्षेत्रों के एक हजार ईसाइयों की शुद्धि कार्यक्रम समारोह पूर्वक आयोजित हो रहा है। इस महत्वपूर्ण कार्य में सार्वदेशिक सभा के उपमन्त्री श्री पृथ्वीराज जी शास्त्री सभा-प्रधान श्री शालवाले का आशीर्वाद व शुभकामनाएं लेकर वहां पहुंच रहे हैं।

(विस्तृत समाचार अगले अङ्क में)

सच्चिदानन्द शास्त्री
उपमन्त्री सार्व० सभा

महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी समारोह दिल्ली का उद्घाटन करते समय भारत के

राष्ट्रपति मान्य ज्ञानी जैलसिंह जी का भाषण

नई दिल्ली, २० जनवरी १९८५

१—मुझे महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी समारोह का उद्घाटन करते हुए बड़ी प्रसन्नता हो रही है। महर्षि दयानन्द सरस्वती इस देश की उन महान् विभूतियों में से थे जिन्होंने समाज में फैली कुरीतियों को मिटाने, लोगों को अन्धविश्वास से मुक्ति दिलाने और स्त्रियों तथा पददलितों के कल्याण के लिये निर्भीक होकर आवाज उठाई थी। उन्होंने भारतीय समाज में नई जागृति पैदा करने की कोशिश की। वे सच्चे समाज सुधारक थे।

२—उन्होंने भारतीय समाज को एक नई रोशनी देकर उसे फिर से अपने पैरों पर खड़ा होने की प्रेरणा दी। उन्होंने शिक्षा का प्रसार, [illegible] का उद्धार, बाल-विवाह का विरोध और विधवा विवाह का प्रचार करके समाज में एक नई क्रान्ति पैदा की। वे स्त्री शिक्षा और नारी स्वतन्त्रता पर बल देते थे ताकि समाज का यह अंग किसी भी प्रकार पीछे न रह जाये।

३—महर्षि दयानन्द सच्चे देश-भक्त थे और उन्होंने भारत के नव जागरण में बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और देश में स्वदेशी आन्दोलन की नींव रखी। सन् १८५७ की आजादी की पहली लड़ाई में भारतीयों को जो असफलता मिली थी उससे हार न मानते हुए उन्होंने खुल कर कहा:—

"कोई कितना ही करे, परन्तु जो "स्वदेशी राज" होता है, वह सबसे उत्तम होता है।" "विदेशी राज कभी अच्छा नहीं होता।"

सन् १८६१ में इनके गुरु स्वामी विरजानन्द ने गुरु दक्षिणा के रूप में ऋषि दयानन्द से यह वचन लेकर, उन्हें विदा किया था कि वह अपना सारा जीवन लोक कल्याण के लिये लगा देंगे।" इसी की पूर्ति के लिये ऋषि दयानन्द अगले २० वर्षों तक देश भर में घूम-घूम कर जन-कल्याण स्वदेश प्रेम और सत्य का प्रचार करते रहे। 'लाला लाजपत राय" और "स्वामी श्रद्धानन्द जैसे महान् लोक नेता उन्हीं की देन हैं। उन्हीं के सन्देश से अनेक भारतीय नर-नारी स्वतन्त्रता संग्राम में कूद पड़े थे।

४- वह समाज में सभीं वर्गों की उन्नति के समर्थक थे। उन्होंने आर्य समाज की स्थापना करते समय जो १० नियम बनाए थे, उनमें से ९ वां नियम यह रक्खा था कि "प्रत्येक को अपनी ही उन्नति से सन्तुष्ट नहीं रहना चाहिये बल्कि सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिए। यह समाज के लिये उनका मूल मन्त्र था और इसी के लिये उन्होंने समाज के हर कमजोर वर्ग को ऊंचा उठाने की कोशिश की थी।

५—भारतीय संस्कृति, भारतीय भाषा और भारतीय शास्त्रों के हामी थे। वे देश के लिये स्वदेशी भाषा चाहते थे और इसी के लिये उन्होंने अपने ग्रन्थों की रचना हिन्दी भाषा में की थी जिसे लगभग १०० साल बाद स्वतन्त्र भारत में राजभाषा का दर्जा हासिल हुआ। उन्होंने इन ग्रन्थों की रचना उस समय खड़ी बोली हिन्दी में की थी जब कि अभी तक हिन्दी गद्य का पूरी तरह विकास भी नहीं हुआ था। इस प्रकार से उन्होंने हिन्दी के विकास में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया था।

(शेष पृष्ठ ११ पर)

सम्पादक—[illegible]

सहसम्पादक—रघुनाथ प्रसाद पाठक

श्री ला० रामगोपाल शालवाले सभा प्रधान कण्वाश्रम गढ़वाल में

सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री ला० रामगोपाल जी शालवाले ने गुरुकुल कण्वाश्रम कोटद्वार के उत्सव पर पधार कर आर्य जनता को सम्बोधित किया। पर्वतीय उपत्यका में मालिन-नदी के तट पर स्थित गुरुकुल अपने शैशवावस्था से चलकर विशाल रूप ले रहा है।

यज्ञशाला का उद्घाटन

सभा प्रधान जी ने यज्ञशाला का शिलान्यास किया, इसके निमित्त १०००० दस हजार रुपया श्री गुरुकुल को पहले दे चुके थे।

दिल्ली प्रस्थान के बाद श्री जयनारायण जी अरुण सभा उपमन्त्री गजरौला से साथ २ रहे। मार्ग में सभा प्रधान जी का अभ्यस्वागत किया गया। माल्यार्पणके साथ कुछ राशि भी भेंट की गई। स्वागत स्थान:—रूपपुर चांदपुर हेमपुररीपा बिजनौर सुवाहेड़ी किरतपुर नजीबाबाद कोटद्वार रहे।

आर्य जनता को श्री प्रधानजी ने देश की सुरक्षा की तथा नवयुवकों को चरित्रवान बनकर ऋषि के मिशनरी बनने की प्रेरणा की। स्थान २ पर जनता में भारी उत्साह बना था।

कण्वाश्रम से श्री प्रधान जी हरिद्वार पधारे और आर्य समाज हरिद्वार की व्यवस्था देखी तथा रात्रि विश्राम भी किया।

प्रातः वहां से दिल्ली प्रस्थान किया।

—जयनारायण अरुण
उपमन्त्री सभा

भूपाल नगर में गैस पीड़ितों की सहायता

भूपाल २० जनवरी

राजस्थान आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री छोटूसिंहजी ने गैस पीड़ितों की सहायतार्थ विद्यासागर शास्त्री प्रधान आर्य समाज स्वामी दयानन्द मार्ग अलवर तथा श्री हेतराम जी आर्य कोषाध्यक्ष आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान का एक प्रतिनिधि मण्डल भूपाल नगर भेजा।

गैस पीड़ितों की सहायता के लिए प्रतिनिधि मण्डल ने आर्य समाज टी. टी. नगर तथा आर्य समाज दयानन्द चौक भूपाल के अधिकारियों की सहायता से गैस पीड़ित झुग्गी, झोंपड़ियों में जाकर रुपया तथा चार हजार कपड़े वितरित किये। बिना किसी भेदभाव के हिन्दू मुसलमानों में रुपया व कपड़े वितरण हुए। प्रतिनिधि मण्डल के अथक प्रयास से उक्त दोनों आर्य-समाजों ने मिलकर गैस पीड़ित स्थान पर 'महर्षि दयानन्द सेवाश्रम संघ' की स्थापना की।

राजस्थान आर्य प्रतिनिधि सभा की ओरसे पांच मशीन सिलाई दी गई। स्थानीय समाजों की ओर से ३ मशीनें सिलाई।

इसके अतिरिक्त जनानी धोती खरीदने के लिए प्रतिनिधि सभा राजस्थान ने १००० (एक हजार रुपया) भी दिया। ५०० माहवार छः मास तक देने का वचन दिया।

उल्लेखनीय है कि भोपाल नगर के दयानन्द चौक आर्य समाज के प्रधान श्री माधुरी शरण जी अग्रवाल, जो प्रमुख उद्योगपति भी है, ने स्वयं सत्तर हजार रुपया व्यय करके औषधि वितरण की।

३-४-५-६ दिसम्बर १९८४ को डाक्टर काटजू अस्पताल के समक्ष अवस्थित आर्य समाज टी. टी. नगर में हजारों गैस पीड़ित व्यक्तियोंकी आर्य बन्धुओं ने सेवा सुश्रूषा की। एवं ४-५ दिन तक निरन्तर सार्वजनिक भोजन का प्रबन्ध हजारों व्यक्तियों का किया।

इस समय अब स्थायी भोजन की आवश्यकता है। स्थानीय आर्यबन्धु श्री माधुरी शरण जी अग्रवाल के पथप्रदर्शन में राजस्थान आर्य प्रतिनिधि सभा के सक्रिय सहयोग से "महर्षि दयानन्द सेवाश्रम संघ" की स्थापना हो चुकी है। इस कार्य में १५ लाख रुपया व्यय होने की सम्भावना है।

आर्य जगत से प्रार्थना है कि इस योजना के कार्यान्वयन के लिए भरपूर सहायता प्रदान करें।

—विद्यासागर शास्त्री, प्रधान
आर्य समाज, स्वामी दयानन्द मार्ग अलवर

साहित्य समीक्षा

उर्दू वेदभाष्य

वेद ईश्वरीयज्ञान
राज्यपाल हरियाणा की श्रद्धांजलि

वेदों के विद्वान पंडित आशुराम आर्य ने यजुर्वेद हिस्सा अव्वल का उर्दू तरजुमा करके बिलयुबा एक अजीम काम सर अंजाम दिया है। इससे पंडित जी की बेपनाह काबलियत और इलमीयत का अंदाजा होता है। इस ग्रन्थ के पढ़ने से जहां एक तरफ कदीम भारतवर्ष में तरजे जिन्दगी की तसवीर जहन में आती है. वहीं पुराने वक्तों में राइज धार्मिक हवनों, यज्ञों और उनसे मुतअलक तहजीब ओतमद्दुन के बारे में भी बेश कीमत मालूमात हासिल होती हैं।

जनाब आशुराम आर्य विश्व वेद परिषद की चण्डीगढ़ शाखा के सैक्रेटरी हैं और वेदों के उर्दू मतरजम के तोर पर इन्होंने इलमी हलकों में एक खास मकाम हासिल कर लिया है।

मेरी दुआ है कि वह यह कारे अजीम तकमील तक पहुंचायें ताकि उर्दू दां और उर्दू दां तबका इस इलहामी तहीफा (ईश्वरीय देन) से वाकिफ हो सके।

— सैय्यद मुजफ्फर हुसैन, बरनी
गवर्नर हरियाणा

दिल्ली के शाही इमाम के विरुद्ध कानूनी कायवाही पर विचार

नई दिल्ली ४ जनवरी। केन्द्रीय मन्त्रालय दिल्ली के शाही इमाम सैयद अब्दुल्ला बुखारी के खिलाफ विदेशों में उनकी कथित भारत विरोधी गतिविधियों को लेकर सख्त कार्रवाई करने पर विचार कर रहा है।

ज्ञात हुआ है कि कानून मन्त्रालय इमाम द्वारा विदेशों में दिये गये भारत विरोधी भाषणों का बारीकी से अध्ययन कर रहा है ताकि उसके खिलाफ अदालत में मुकद्दमा चलाया जा सके। बताया जाता है कि शाही इमाम का पासपोर्ट जब्त करने के सुझाव पर भी विचार किया जा रहा है। संभव है कि भविष्य में उन्हें विदेश जाने की अनुमति न दी जाए।

सरकारी सूत्रों के अनुसार पिछले वर्ष सितम्बर और अक्तूबर के महीने में इमाम ने ईरान एवं पाकिस्तान का रहस्यपूर्ण दौरा किया था और इस दौरान कई स्थानों पर कथित रूप से भारत विरोधी वक्तव्य एवं भाषण दिये थे।

सैयद अब्दुल्ला बुखारी ने पाकिस्तान के राष्ट्रपति जनरल जिया उल हक से मुलाकात करने के बाद दैनिक 'जंग' को बताया था कि इस्लामी देशों को भारतीय मुसलमानों के संरक्षण एवं उनके हितों की सुरक्षा के लिए ठोस कार्रवाई करनी चाहिए।

ईरान की राजधानी तेहरान में वहां की संसद मजलिस के सदस्यों को संबोधित करते हुए श्री इमाम ने हिन्दुस्तानी मुसलमानों के तथाकथित उत्पीड़न और अत्याचारों की रोकथाम के लिए ईरान से सहायता मांगी थी।

कुवैत के समाचार पत्र 'अल कुबस' को दिए गए एक इन्टरव्यू में श्री उन्होंने आरोप लगाया था कि भारतीय पुलिस और सशस्त्र बल गुण्डों से मिल कर मुसलमानों का संहार कर रहे हैं।

इससे पूर्व लीबिया में कर्नल गद्दाफी के साथ इमाम के रहस्यपूर्ण मेलजोल के बारे में सरकार को विस्तृत रिपोर्ट प्राप्त हुई थी।

शाही इमाम ने 'पंजाब केसरी' को बताया कि उन्होंने विदेशों में जो कुछ कहा है वह तथ्यों पर आधारित है और सच्चाई के लिए वह हर सजा भुगतने के लिए तैयार हैं। (पं. के. ५-१-८५)

स्त्री समाज जीन्द का चुनाव

१—प्रधान :	श्रीमती मनोरमा देवी
२—उप-प्रधान	श्रीमती सीमा देवी
३—मन्त्री	श्रीमती सरला मोयल
४—उप-मन्त्री	श्रीमती सावित्री देवी
५—कोषाध्यक्ष	श्रीमती कृष्णा सिंहल
६—पुस्तकाध्यक्ष	श्रीमती राजरानी
७—प्रचार मन्त्री	श्रीमती वर्षना देवी

सम्पादकीय

विश्वधर्म सम्मेलन

हैरीफोर्ड (प० जर्मनी)

(गतांक से आगे)

(५)

ब्रदर वालवेरट का भाषण

नीचे ब्रदर (बन्धु) वालवेरट बोहीमन के जो किसी समय रोम में पोप महोदय के प्रधान सचिव रह चुके थे, भाषण के अवतरण दिए जाते हैं।

"अच्छी कथोलिक अध्यात्म विद्याविदों की आज धारणा यह है कि गैर ईसाई मत भी निजात (मुक्ति) के मार्ग हैं। साथ ही परमात्मा ने प्रारम्भ से ही तमाम मतावलम्बियों को अपना प्रेम और कृपा प्रदान की है तथा अपने पैगम्बरों, साधु सन्तों को दुनिया में भेजा है।

मतों में एक रूपता इतनी अधिक विकसित होगी कि तमाम मत मतांतर एक विश्व धर्म का निर्माण करेंगे। यदि हम विश्व बन्धुत्व तक नहीं पहुंचेगे तो अणु युद्ध के द्वारा विश्व व्यापी नर संहार का खतरा मोल लेंगे।

मेरा यह दृढ़ विश्वास है कि महात्मागांधी अपने उन्मुक्त विश्वप्रेम, विश्व शान्ति और मानवीय प्रतिष्ठा की भावना में असीसी के सन्त फ्रांसिस की भांति एक ही पवित्रात्मा से अनुप्राणित हुए थे।

विगत में हमने मुख्यत: विभाजक तत्व पर दृष्टि रखी, आज हम आपस में मिलाने वाले तत्व पर दृष्टि लगाए हुए हैं। इसीलिए क्लीमीज होल जमाइस्टर ने विश्व मन्दिर का एक खाका बनाया है। एक वृत्त के भीतर विश्व के ८ बड़े धर्मों के मन्दिर बनाए गए हैं। बीच में एक ही परमात्मा की प्रार्थना उपासना के लिए एक सांझा कमरा बनाया है। हमें तनाव के इस युग में एक दूसरे पर अपने धार्मिक विश्वास लादे बिना, रहने के लिए तय्यार रहना चाहिए।

चर्च (धर्म संघ) का एक ढांचा भी है जो हमें एक दूसरे से पृथक कर रहा है। परन्तु हम आज धर्म को मुक्ति के एक मात्र साधन के रूप में नहीं, अपितु परमात्मा के साम्राज्य के चिन्ह के रूप में देख रहे हैं। हम यह भी अंगीकार करते हैं कि यदि आज विश्व के समस्तमानव चर्च में नहींहै तब भी परमात्मा के साम्राज्य में हीहै। जो प्रभु के विश्व व्यापी प्रेम के सिवा और कुछ नहीं है तमाम धर्मों के सन्त और महात्मा ढांचे और सीमाओं के विषय में इतने जागरुक नहीं रहे और न हैं जितने परमात्मा के विश्व प्रेम के विषय में है जो हम सबको एक सूत्र में बांधता है।

मुझे आशा है कि किसी न किसी दिन विविध मत मतान्तर अपने ऐतिहासिक भेदों और परम्पराओं के साथ एकमात्र सच्चे परमात्मा के सान्निध्य में परस्पर मिल जायेंगे।

अन्त में मुझे यह भी आशा है कि यह विश्व धर्म सम्मेलन इस दिन के आने के लिए द्रुतगामी पग उठाएगा।

लाला रामगोपाल शालवाले प्रधान इन्टरनेशनल एर्यनलीग (सार्वदेशिक आ. प्र. सभा) दिल्ली के भाषण के अवतरण

श्री लाला जी हिन्दी में बोले। उनके हिन्दी भाषण का अंग्रेजी अनुवाद श्री रामचन्द्र वन्देमातरम ने किया।

"आज आप लोगों के मध्य अपने को देखकर मुझे बड़ी प्रसन्नता है। स्वामी दिव्यानन्द जी ने बड़े प्रेम और आदर भाव से मुझे आमन्त्रित किया। मैं आप सबके दर्शन करने हेतु भारत से चलकर यहां आया हूं।

मैं प्रारम्भ में ही यह बात सुस्पष्ट किए देता हूं कि वैदिक धर्म सार्वभौम धर्म और जीवन की एक पद्धति है जो विशिष्टतम है, यह एक देशीय नहीं है, यह मानव समाज के किसी एक खास वर्ग के लिए नहीं वरन समूची मानव जाति के लिए अभिप्रेत है। इसका लक्ष्य समस्त मानवों को वेदज्ञानामृत का पान कराना है।

महाभारत युद्ध के बाद, इस महासमर के महान विनाश के फलस्वरूप वैदिक विद्वानों का लोप हो जाने के कारण समस्त संसार में धार्मिक मूल्यों का ह्रास व्याप्त हो गया था।

महर्षि दयानन्द द्वारा संस्थापित आर्य समाज के प्रादुर्भाव के समय से अब तक वैदिकधर्म का काफी उद्धार हुआ है। महाभारत के पश्चात सत्य पर अत्यधिक आघात हुआ था। यह धीरे धीरे जीवन्त बन रहा है। पाखण्डियों के राज्य को जो सर्वशक्तिमान परमात्मा के पथ-प्रदीप बने, इधर उधर घूम रहे हैं, धराशायी करने के लिए मुझे और आप सबको यह देखना है कि सत्य पूर्ण आभा के साथ चमके।

माता भूमि पुत्रोहं पृथिव्या पर्जन्या पिताह ।। अथर्ववेद

वेद के इस सन्देश के साथ मैं प्रारम्भ करता हूं अर्थात

'पृथ्वी हमारी माता है। हम उसके पुत्र हैं। मेघ हमारा पिता है, क्या यह वेद मन्त्र धर्म की सार्वभौमता की घोषणा नहीं करता है?

जबकि वेद का यह सन्देश प्रत्येक प्राणी के लिए अभिप्रेत है तब किसीलियों को धर्म के नाम में फूट डालने और युद्ध घोर महा विनाश का कार्य क्योंकर करने दिया जा सकता है?

ऋग्वेद का कथन है—

समानो मन्त्र: समिति समानी
समानं मन: सहचित्त मेषाम ।
समानं मन्त्रममि मन्त्रये व:
समानेन वो हविषा जुहोमि ।।

ऋ० १०।१९२।२

तुम्हारा गुप्त विचार अथवा मन्त्र=पूजा का मन्त्र (समान) एक हो; समिति एक हो, ऐसे तुम लोगों का मन के साथ चित्त भी समान हो। मैं तुमको समान वेदोपदेश देता हूं और तुमको एक जैसी भोग सामग्री देता हूं।

इस प्रसंग में मेरा विनम्र कथन है कि मुक्ति की (प्रकृति के बन्धनों से छुटकारा पाने की) इच्छा रखने वाले के लिए यह आवश्यक है कि वह परमात्मा और आत्मा का ठीक ज्ञान प्राप्त करे।

वेद में परमात्मा को सच्चिदानन्द कहा गया है। वेदों के शब्दों में आत्मा सत और चित (शाश्वत और चेतन है। प्रकृति मात्र सत और परिवर्तनशील है। आनन्द (मुक्ति) की प्राप्ति के लिए आत्मा को दुधारी तलवार पर चलना होता है। मुक्ति का मार्ग बडा दुरुह है। यह मार्ग है धर्म का। वर्तमान जगत में हम मानव समाज को उस सुख की ओर दौड़ लगाते देखते हैं जिसे वह सुख समझता है परन्तु जो वास्तव में सुख नहीं होता, यह तो वासनाओं की सतुष्टि का प्रयत्न मात्र है। इन्द्रिय जनित आनन्द मानव को दुख विनाश और मृत्यु की ओर ही अग्रसर करता है।

अत: इस बात पर बल दिया जाता है कि मुक्ति के अभिलाषी को सर्वप्रथम सही रूप में आत्म-ज्ञान प्राप्त करने का प्रयास करना चाहिए। दूसरे शब्दों में उसे यह जानना चाहिए कि 'मैं कौन हूं?" वैदिक धर्म इसका उपाय बताता है। यह राज-मार्ग इंगित करता है जो 'यम' और 'नियम' का योग और भोग के समन्वय का है इससे मन की शुद्धि होती है। जब तुम्हारे मन शीशे के समान साफ हो जायेंगे तब तुम अपने को देखने में समर्थ हो जाओगे और इस प्रकार प्रभु-साक्षात्कार की ओर बढ़ने के लिए साधन-सम्पन्न बन जाओगे।

श्री स्वामी दिव्यानन्द जी ने अपने प्रारम्भिक भाषण में तमाम धर्मावलम्बियों के लिए समान धार्मिक आचार संहिता के निर्धारण की अपील की है महर्षि दयानन्द ने अपने जीवन काल मे इसी प्रकार का प्रयत्न किया था और सभी मतावलम्बियों को आमन्त्रित भी किया था। एक प्रकार से इस प्रयत्न के फलस्वरुप ही, हमे दश नियम उपलब्ध हुए थे।

मेरा सुझाव है कि यह सम्मेलन इन नियमों का अध्ययन करे और इन्हें पूर्णत: अपनाए।

—रामचन्द्रराव वन्देमातरम्

सामायिक चर्चा–

संस्कृत सम्मेलन के फैसले

बीस जनवरी को जालन्धर में जो प्रान्तीय संस्कृत सम्मेलन हुआ, वह प्रत्येक दृष्टि से सफल रहा है। शायद यह पहली बार है जब पंजाब में संस्कृत के साथ जो दुर्व्यवहार हो रहा है, उसके बारे में संस्कृत प्रेमियों ने बैठकर कुछ विचार किया है। परिस्थितियों की विडम्बना देखिए कि जो भाषा सभी अन्य भाषाओं की जननी समझी जाती है आज उसका नामो-निशान मिटाने की कोशिश हो रही है। हमारी सरकार अपने इन दो नेताओं का बहुत जिक्र किया करती है। एक महात्मा गांधी और दूसरे पण्डित जवाहरलाल नेहरू। गांधी जी ने कहा था कि संस्कृत प्रत्येक बच्चे को अनिवार्य रूप से पढ़ाई जानी चाहिए। इसके बिना उसकी शिक्षा पूरी नहीं हो सकती। और पण्डित जवाहर लाल नेहरू ने कहा था कि संस्कृत हमारे पास एक ऐसा कोष है जिसमें हमारा गौरवमय अतीत छुपा हुआ है। इसलिए संस्कृत को बच्चों की शिक्षा का एक अनिवार्य अंग बनाना चाहिए। आज हमारे देश में जो लोग गांधी तथा जवाहरलाल के नाम पर शासन करते हैं वही संस्कृत की जड़ें काटने में लगे हुए हैं। हमारा इतिहास भी हमें यह बताता है कि हमारे जिन नेताओं ने संस्कृत के माध्यम से अपनी शिक्षा प्राप्त की थी वही आगे निकल गए। कोई उनमें से राष्ट्रपति बन गया, कोई प्रधान मन्त्री बन गया, यदि डा० राजेन्द्र प्रसाद तथा डा० राधाकृष्णन जैसे संस्कृत के विद्वान राष्ट्रपति बन गए थे तो लाल बहादुर शास्त्री जैसे प्रधान मन्त्री बन गए थे। पण्डित जवाहर लाल ने स्वयं संस्कृत नहीं पढ़ी थी, लेकिन वह संस्कृत के बहुत बड़े प्रशंसक थे, क्योंकि उन्होंने अपने देश का इतिहास पढ़ा था और वह जानते थे कि संस्कृत ने हमारे देश को बनाने में कितनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

२० जनवरी को जालन्धर में जो सम्मेलन हुआ है, उसमें पंजाब में संस्कृत के साथ जो सलूक हो रहा है उस पर विचार विमर्श किया गया शीघ्र ही पंजाब में अन्य राज्यों की तरह १०+२ की नई शिक्षाप्रणाली लागू होगी। इसके माध्यम से प्रत्येक विद्यार्थी को तीन भाषाएं पढ़नी पड़ेंगी, अन्य राज्यों में तो हिन्दी और अंग्रेजी के अतिरिक्त कोई उर्दू पढ़ना चाहे तो सरकार उसका प्रबन्ध कर देती है। पंजाब में एक कठिनाई है कि हिन्दी और पंजाबी के अतिरिक्त तीसरी भाषा अंग्रेजी पढ़ाई जाएगी जिसका मतलब है कि संस्कृत के लिए कोई जगह नहीं होगी और यदि कोई पढ़ेगा भी तो संस्कृत के अंक उसके शेष अंकों में शामिल नहीं किए जायेंगे। जब एक भाषा के साथ यह सलूक हो तो इस भाषा को पढ़ाने वाले के साथ उससे बेहतर सलूक कैसे हो सकता है इसलिए सरकारी स्कूलों में प्रथम तो संस्कृत के अध्यापक रखे ही नहीं जाते। रखे भी जाएं तो उन्हें वह वेतन अथवा अन्य सुविधाएं नहीं मिलती जो दूसरों को मिलती हैं। पंजाब में १५-२० ऐसे प्राइवेट स्कूल हैं जहां संस्कृत पढ़ाई जाती है। सरकार की ओर से उन्हें वह वित्तीय सहायता नहीं मिलती जो मिलनी चाहिए। यह सब कुछ इसलिए हो रहा है कि सरकार की नजर में संस्कृत का कोई मूल्य नहीं और यदि इस राज्य में वह बिल्कुल ही समाप्त हो जाए तो सरकार को उसका कोई खेद नहीं होगा। उसे समाप्त करने की ओर ही सरकार यह पग उठा रही है कि १०+२ वाली शिक्षा प्रणाली में संस्कृत की पढ़ाई लगभग समाप्त कर दी जाएगी।

इस वस्तु स्थिति पर विचार करने के लिए ही यह सम्मेलन बुलाया गया था। उसमें कई सुझाव दिए गए, और कई बहुत अच्छे भाषण भी दिए गए। जो कुछ वहां कहा गया उसका निष्कर्ष यही है कि अब वह समय आ गया है जबकि वे लोग जिन्हें अपने धर्म और संस्कृति के प्रति श्रद्धा है संस्कृत को बचाने के लिए कोई प्रभावी कार्यवाही करें। इस सम्मेलन में शामिल होने वाले बहनों तथा भाइयों की सर्वसम्मत राय थी कि पंजाब में हिन्दी तथा पंजाबी के अतिरिक्त जो तीसरी भाषा अनिवार्य घोषित की जानी है वह संस्कृत होनी चाहिए। अंग्रेजी केवल उनके लिए आवश्यक है जिन्होंने सरकारी नौकरी करनी हो। यह भाषा स्कूल में भी पढ़ी जा सकती है, स्कूल से बाहर भी पढ़ी जा सकती है। सब बच्चों पर अंग्रेजी क्यों लादी जाए इसलिए अब एक ऐसा आन्दोलन चलाने की आवश्यकता है कि अंग्रेजी पढ़ाई जा सके या नहीं, संस्कृत अवश्य पढ़ानी चाहिए और यदि नई योजना के अनुसार एक बच्चे के लिए तीन भाषाएं पढ़नी आवश्यक होंगी तो वह हिन्दी पंजाबी और संस्कृत होनी चाहिए। अंग्रेजी एक ऐच्छिक भाषा होनी चाहिए उसका पढ़ना आवश्यक नहीं है।

सम्मेलन के इस निर्णय को कार्यरूप देने के लिए एक समिति बना दी गई है जिसमें प्रमुख संस्कृत प्रेमियों को शामिल किया गया है। हमारी पहली कोशिश यह होगी कि सरकार से मिलकर इस समस्या का कोई समाधान ढूंढें। यदि उसमें हम सफल नहीं हुए तो उसके बारे में सोचेंगे कि अगला कदम क्या उठाएं। यह बात बिल्कुल स्पष्ट है कि अब संस्कृत के साथ वह दुर्व्यवहार नहीं होने दिया जाएगा जो इस समय तक होता रहा है। देश की एकता तथा अखण्डता संस्कृत पर निर्भर करती है। यही एक कारण है जो उत्तरी भारत और दक्षिणी भारत के बीच एक कड़ी बन सकती है। इसलिए राष्ट्र के व्यापक हित को सामने रखते हुए भी यह आवश्यक है कि संस्कृत को दूसरी भाषाओं के स्तर पर रखा जाए। यह सम्मेलन इसी समस्या पर विचार करने के लिए बुलाया गया था। मुझे खुशी है कि इसका परिणाम अच्छा हो रहा है।

—वीरेन्द्र

आर्य मर्यादा २८-१-८५

हमें जीवित रहने दो

अणु आयुधों के आसन्न खतरे के निवारणार्थ विचार विनिमय के लिए दिल्ली में २८-१-८५ को छः राष्ट्रों का एक दिवसीय सम्मेलन प्रधान मन्त्री श्री राजीव गांधी की अध्यक्षता में हुआ। भारत स्वीडन, यूनान, अर्जेन्टाइना, मैक्सिको, तंजानिया के राष्ट्राध्यक्षों एवं प्रतिनिधियों ने पारस्परिक विचार विनिमय के बाद एक घोषणा पत्र जारी किया। मानव जाति के महाविनाश के खतरे के प्रति घोर चिन्ता और उससे बचाव की सदेच्छा के दृष्टिगत यह शिखर वार्ता अपना विशेष महत्व रखती है और इस बात को अमेरिका के विदेश विभाग तक ने खुले तौर पर अंगीकार किया है।

यह खतरा न केवल अणु अस्त्र शस्त्र रखने वाले देशों या आणविक संघर्ष से प्रभावित होने वाले क्षेत्रों के लोगों तक ही सीमित है अपितु समस्त संसार में व्याप्त हो गया है।

आणविक अस्त्रों के भयावह निर्माण से एक मानवता प्रेमी के शब्दों में प्रत्येक राष्ट्र और प्रत्येक मानव प्राणी को ऐसा लग रहा है मानो जीवन और मृत्यु पर से उसका अधिकार समाप्त हो गया है। इस पर भी आणविक अस्त्र शस्त्रों से लैस शक्तियों को अन्य राष्ट्रों की भावनाओं की उपेक्षा पूर्वक इन आयुधों के नियंत्रण को अपना निजी मामला समझने की आदत पड़ गई है। यह बेबसी, इसके प्रति रोषक्षोभ महा भयावह संहारकी आशंका और इस सबके अवरोध की कामना शिखर वार्ता के बाद जारी किए गए घोषणा पत्र में प्रतिबिम्बित हो रही है। इस प्रसंग में यह बात भी उल्लेखनीय है कि अणु शस्त्रों के उत्पादन, को बन्द करने, संगृहीत भंडार को नष्ट करने और इनके प्रयोग को प्रतिबन्धित करने की मांग करने वाला कोई इक्का दुक्का राष्ट्र नहीं वरन ४ महाद्वीप एशिया, अफ्रीका, यूरोप एवं लातानी अमेरिका के राष्ट्र हैं इससे इसकी व्यापकता का सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है।

जून १९८४ की अपनी अपील को दुहराते हुए छः राष्ट्रों ने शक्ति सन्तुलन, अणु आयुधों में वरीयता प्राप्त करने के निमित्त उनके बेतहाशा निर्माण और अम्बार की बेहूदगी का भी पर्दाफाश किया है। साथ ही सीमित आणविक युद्ध के भयावह सिद्धांत का यह कहकर जोरदार खंडन किया है कि इनके प्रयोग से चाहे वह मुक्त रूप में हो या सीमित वा प्रतिबंधित रूप में मिनटों में ही प्रलय का दृश्य उपस्थित हो सकता है।

अस्त्र शस्त्रों की मूर्खता पूर्ण होड़ पर साधनों की, पैसे की जो महा भयंकर बर्बादी हो रही है। (लगभग १॥ लाख डालर प्रतिमिनट) उसकी ओर भी महाशक्तियों का ध्यान आकृष्ट करके अपील में उन्हें प्रेरणा की गई है कि वे बेरोजगारी मिटाने अन्नोत्पादन आदि बढ़ाने तथा विकास शील देशों की सहायता में अधिकाधिक खर्च करें।

(शेष पृष्ठ ९ पर)

महर्षि दयानन्द का वार्त्तालाप और उपदेश

(१)

इसकी चेष्टा से हमें कोई दुःख नहीं हुआ

फर्रुखाबाद में एक दिन हजारों मनुष्य महाराज का उपदेश सुनने के लिए एकत्रित थे। उस समय एक पंडित ने खड़े होकर मूर्ति पूजन पर प्रश्न करना आरम्भ कर दिया। महाराज भी उसे सन्तोषजनक उत्तर देने लगे।

बीच में काली के उपासक शराब में मस्त एक ब्राह्मण ने उठकर कुवचन बोलते हुए महाराज पर जूता फेंका। जूता स्वामी जी तक न पहुंचकर बीच में ही गिर पड़ा परन्तु इससे सत्संग में बैठे हुए सत्यनामी साधुओं की आंखों में लहू उतर आया। उन्होंने तुरन्त ही उस नराधम को पकड़ लिया और लगे पीटने। उसको पिटते देख स्वामी जी को बड़ी दया आ गई। महाराज ने साधुओं को समझाया—'इसकी चेष्टा से हमें कोई दुःख नहीं हुआ और यदि जूता लग भी जाता तो भी कौनसा रामबाण था। इसने जो कुछ किया है अज्ञान और सुरा (शराब) के वश वर्ती होकर किया है। इसलिए इस पर दया करो इसे छोड़ दो।"

तब साधुओं ने उसे छोड़ दिया।

(२)

योगीजन गुप्त बातों को जानने की इच्छा नहीं करते

स्वामी जी के विषय में यह प्रसिद्ध था कि वे पूर्ण योगी और सम्पूर्ण आध्यात्मिक तत्त्वों को जानते हैं। सारी रात समाधि में लीन रहते हैं।

एक दिन मढ़ी के नवाब ने पूछा कि "महाराज ! क्या कोई ऐसी विद्या भी है जिससे दूर स्थान के समाचार का ज्ञान हो सके। स्वामी जी ने उत्तर में कहा "योगीजन ऐसी गुप्त बातों को जानने की इच्छा नहीं करते। उनका मुख्य उद्देश्य सब चीजों में ब्रह्म सत्ता का जानना है।" इस उत्तर से नवाब महाशय को बड़ा सन्तोष प्राप्त हुआ।

(३)

पानी की एक बूंद भी न निकाल सके

स्वामी जी के बल की चर्चा सुनकर बहुतसे पहलवान उन्हें देखने आए। उस समय स्वामीजी स्नान करके आ ही रहे थे। महाराजने अपने दाहिने हाथ से कोपीन को पकड़कर बलपूर्वक निचोड़ डाला और फिर उन पहलवानों को कहा कि यदि आपमें से किसी को अपने बल का अभिमान हो तो वह इस कौपीन में से पानी की एक बूंद निकाल कर दिखाए। उन सबने एक-एक करके बल लगाया। वे दोनों हाथों से दबा दबाकर थक गए परन्तु पानी की एक बूंद भी न निकाल सके।

(४)

ईसाइयों के एजेन्ट नहीं आप धर्मावतार है।

एक सरवरिया धुरन्धर पंडित फर्रुखाबाद में आया था। उसको वहां एक पंडित ने कहा कि बहुत लोग दयानन्द को ईसाइयों का एजेन्ट कहते हैं। चलो किसी समय उसके पास चलें और इस बात का पता लगाएं।

वे दोनों रात के दो बजे स्वामी जी के पास पहुंचे। महाराज उस समय आसन लगाए बैठे थे। शिष्टाचार के पश्चात सरयूपारी पंडित ने स्वामी जी से अनेक श्रौत, स्मार्त और दार्शनिक प्रश्न पूछे। उनका उत्तर पाकर वह बड़ा सन्तुष्ट हो गया। चलते समय श्री चरण स्पर्श करके कहने लगा—

"हमने सुना तो यह था कि आप कपट वेषी, प्रच्छन्न ईसाई है परन्तु दर्शनों से पता लगा कि आप एक धर्मावतार है।"

अगले दिन उस ब्राह्मणवर्य ने सर्वसाधारण को कहना आरम्भ कर दिया कि "श्री दयानन्द जी जैसा दूसरा मनुष्य भारत भर में नहीं है। उन्होंने मुझे ऐसे शास्त्रीय रहस्य बताए हैं जो मैंने पहले कभी नहीं सुने थे। उनका वचन सर्वांश में सत्य है।"

सं० क०—रघुनाथ प्रसाद पाठक

राष्ट्र-रक्षा के लिए सन्नद्ध हो जाओ

सुरेश चन्द्र वेदालंकार एम० ए० एल० टी०
६, ए० ह० १ ओबरा (मिर्जापुर)

उत्तिष्ठत संनह्यध्वं मुदाराः केतुभिः सह ।
सर्पा इतर जना रक्षांस्यमित्राननु धावत ॥

अथर्व० ११।१०।१

(उदाराः) वीरो ! (उत्तिष्ठत) उठो, (संनह्यध्वम्) कमर कस लो, तैयार हो जाओ, (केतुभिः सह) झण्डों के साथ अर्थात् पताकायें अपने हाथों में पकड़ लो। (सर्पाः) जो भुजंग है, लम्पट हैं, कुटिल हैं; (इतरजनाः) अन्य, अर्थात् शत्रु लोग हैं (रक्षांसि) जो राक्षस हैं (अमित्रान्) उन सब बैरियों पर (अनुधावत) धावा बोल दो।

संसार में लोग अत्याचार करने वालों की, दूसरे के देश पर शक्ति के द्वारा आक्रमण कर उसे परतन्त्र करने वालों की निन्दा करते हैं। परन्तु यह ठीक है कि गुलाम बनाने वाला, अत्याचार करने वाला पापी है, दुष्ट है पर यह भी उतना ही सत्य है कि अत्याचार करने वाले की अपेक्षा अत्याचार सहने वाला व्यक्ति या राष्ट्र और भी अधिक पापी है। अतः इस वेद मन्त्र में राष्ट्र की रक्षा के लिए तत्पर रहने वालों को और राष्ट्र के लिए आत्म समर्पण करने वालों को उदार कहा गया है।

वेद का मन्त्र राष्ट्र के वीरों को प्रेरणा देते हुए स्पष्टतः कहता है:—"वीरो ! अपने हाथों में अपनी पताकायें पकड़ लो और अपने शत्रुओं पर धावा बोल दो। इन सर्प के समान कुटिल और विषैले शत्रुओं का मार भगाओ। इन राक्षसों के छक्के, छुड़ा दो और इन शत्रुओं को काट कर फेंक दो। सबको स्पष्ट बता दो कि विश्व के लोगो यह अच्छी तरह समझ लो कि हमारे राष्ट्र का एक-एक व्यक्ति इसके लिए सन्नद्ध है। वैदिक वीर शत्रुओं को सम्बोधित करते हुए कहता है:—

तीक्ष्णीयां सः परशोरग्नेस्तीक्ष्णतरा उत ।
इन्द्रस्य वज्रात् तीक्ष्णी यां सो येषमास्मि पुरोहितः ॥

अथर्व० ३।१९।१०

अर्थात् मैं अकेला नहीं हूं, मेरे सभी देशवासी वीर तीक्ष्ण और तेजस्वी हैं। वे परशु (कुल्हाड़े) की धार से भी तीक्ष्ण हैं, अग्नि की ज्वाला से भी तीक्ष्ण हैं। इन्द्र के वज्र से भी तीक्ष्ण हैं—जिनका मैं अगुआ हूं—बन्धु हूं।

वैदिक वीर के अन्दर कैसा अदम्य उत्साह है, कैसी वीरता की तरंग है—उमंग है, कैसा प्रबल आत्मविश्वास है। जो बाह्य या आन्तरिक शत्रु उसके इस उत्साह को मनोबल को कुचलना चाहेगा उसको हम नष्ट कर देंगे।

राष्ट्रवासियों को वेद उत्साह देते हुए कहता है:—

इतो जयेतो विजय, संजय जय स्वाहा।

अथर्व० ८।८।२४

राष्ट्र के नागरिक आगे बढ़ और इधर विजय पा, उधर विजय पा, कमाल की विजय हासिल कर। जीत, जीत, जीत हर क्षेत्र में जीत शाबाश।

सार्वदेशिक सभान्तर्गत स्थिर निधियां

(१९८३-१९८४)

पुरानी स्थिर निधियां

गंगाप्रसाद गढ़वाल प्रचार ट्रस्ट

सार्वदेशिक सभा के पूर्व प्रधान स्व० श्री पं० गंगाप्रसाद जी चीफ जज ने २ हजार के दान से एक स्थिर निधि स्थापित की थी जिसका ब्याज दानी महोदय तथा उनके बाद आर्य समाज टिहरी (गढ़वाल) की अनुमति से उक्त समाज के कार्यों पर खर्च किए जाने का प्रावधान किया गया था। इस समय ब्याज १४९०)४६ जमा हैं।

श्री मूलचन्द बजरंगलाल डीडवानी पीलवा (राजस्थान) स्मारक निधि

स्व० श्री पं० मूलचन्द जी ने अपने जीवन काल में ५०००) की राशि सभा को दान की थी जो उपर्युक्त निधि के नाम से जमा हैं। इसके ब्याज से महर्षि दयानन्दकृत ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश तथा अन्य साहित्य के प्रकाशन का प्रावधान हुआ था। इस निधि के ब्याज से दयानन्द दी मैन एण्ड हिज मिशन ट्रैक्ट छप चुका है। इस वर्ष ब्याज के २५०) जमा हुए गतवर्ष १२६६)०१ जमा थे अब १५१६)०१ जमा हैं।

श्री डा० सूर्य्यदेव शर्मा स्थिर निधि

श्री डा० सूर्यदेव शर्मा एम० ए० डी० लिट् (अजमेर) ने सत्यार्थ प्रकाश के १ या १।।) मूल्य के संस्करण के प्रकाशनार्थ १० हजार रुपए की स्थिर निधि कायम की जिसके ब्याज से यह ग्रन्थ छपा करेगा। पहले ४०००) की स्थिर निधि सार्वदेशिक की सहायतार्थ कायम की थी जिसकी स्वीकृति २३-४-६३ की अन्तरंग बैठक ने दी थी। श्री शर्मा जी ने ६०००) की राशि प्रदान करके इस स्थिर निधि के स्थान में सत्यार्थ प्रकाश निधि कायम की है। इसकी स्वीकृति १४-११-७६ की अन्तरंग बैठक ने दी। इस वर्ष इस निधि के ब्याज का ८००) रु० जमा हुआ। वर्ष के अन्त में कुल ४१००) जमा था।

श्री देवव्रत धर्मेन्दु एवं श्रीमती जाविश्री देवी आर्य साहित्य प्रकाशन निधि

दिल्ली निवासी श्री पं० देवव्रत श्री धर्मेन्दु के दो हजार के दान से ११-९-१९६३ की अन्तरंग की स्वीकृति से यह स्थिर निधि कायम हुई थी जिसके ब्याज से उनकी दयानन्द वचनामृत वैदिक सूक्ति सुधा और वेद संदेश नामक पुस्तकों के प्रकाशन का प्रावधान किया गया था। अब यह राशि १२ हजार कर दी गई है।

इस वर्ष दयानन्द वचनामृत व वेदसंदेश पुस्तक छपाई गई। १०-११-७१ की अन्तरंग के निश्चयानुसार इस निधि का नाम देवव्रत धर्मेन्दु जाविश्री देवी पुस्तक प्रचार निधि रखा गया।

श्री जगतराम महाजन १०० दयानन्द नगर अमृतसर

यह निधि १९६५ में श्री स्व० लाला जगत राम जी अमृतसर निवासी द्वारा प्रदत्त ४०००) के दान से स्थापित हुई और अन्तरंग ने इसकी २९-१२-१९६५ की बैठक में स्वीकृति प्रदान की। इस निधि के ब्याज से उड़ीसा के स्वामी ब्रह्मानन्द जी, केरल में आर्य युवक समाज द्वारा वहां की क्षेत्रीय भाषाओं में बारी-बारी से फ्री वितरण के लिए ट्रैक्टों के प्रकाशन की व्यवस्था हुई है। इस व्यवस्था के भंग होने की अवस्था में ईसाई मत खण्डन विषयक साहित्य के प्रकाशन के लिए सार्वदेशिक सभा अधिकृत की गई।

इस वर्ष ब्याज के २००) जमा हुए। वर्ष के अन्त में १२००) जमा है।

श्री लाला लब्भूराम (जालन्धर) स्मारक वैदिक साहित्य वितरण निधि

यह निधि लाला लब्भूराम जी ने ५ हजार की राशि से कायम की थी इसके ब्याज से सत्यार्थ प्रकाश एवं अन्य वैदिक साहित्य देश-देशान्तर में फ्री वितरण किए जाने की व्यवस्था की गई है। विदेशी भाषाओं में प्रकाशित साहित्य के लिए भी इस निधि का ब्याज प्रयुक्त हो सकेगा।

देश में हिन्दी तथा अन्य भारतीय भाषाओं का भी आवश्यकतानुसार साहित्य वितरित हो सकेगा। यह सहायता योग्य व्यक्तियों को मुफ्त या आधे मूल्य पर दी जावेगी।

दानी महोदय के निधन के पश्चात इसके क्रियान्वयन की सूचना उनके सुपुत्र श्री विश्वमित्र जी कपूर जालन्धर को दी जाया करेगी और वे यथा समय अपना प्रतिनिधि नियुक्त करेंगे। इस प्रकार परम्परागत यह प्रथा चलती रहेगी। प्रचुर साहित्य निःशुल्क देश-देशान्तर में वितरित किया गया।

वर्ष के अन्त में ब्याज के ११३०) जमा हैं।

श्री मोहन लाल जी मोहित मोरिशस स्थिर निधि

यह निधि १३-१-१९६५ की अन्तरंग के निश्चयानुसार ३ हजार रुपए के प्रारम्भिक दान से स्थापित हुई थी। सन १९७५ में यह राशि ५० हजार की गई।

इस निधि का ब्याज किसी आर्य विद्वान द्वारा लिखित और सार्वदेशिक सभा द्वारा स्वीकृत ग्रन्थ के प्रकाशन में सार्वदेशिक सभा द्वारा प्रयुक्त होगा। साथ ही मोरिशस के उन आर्य विद्यार्थियों को आवश्यकतानुसार सहायता दी जाएगी जो गुरुकुल व आर्य महा विद्यालय आदि में आर्य समाज की सेवार्थ उपदेश का प्रशिक्षण प्राप्त करते हों। वर्ष के अन्त में १८३८४)७० निधि के ब्याज के जमा थे।

श्री मनोहर सिंह पनगड़िया बनेड़ा (राजस्थान) स्थिर निधि

यह निधि श्री गुमान सिंह जी (पूर्व एकाउन्टेण्ट रूबी जनरल इन्श्योरेन्स कम्पनी ११ दरियागंज दिल्ली तथा लेखा निरीक्षक देहली राज्य आर्य केन्द्रीय सभा) ने ५ हजार रुपए के दान से अपने अग्रज श्री मनोहरसिंह के नाम से १९६७ में स्थापित की थी। ५-१-६७ को अन्तरंग बैठक ने इसकी स्वीकृति दी थी।

इसका ब्याज निर्धन छात्र-छात्राओं को जिनके अभिभावकों या माता-पिता की मासिक आय १५०) या इससे कम होगी और जो पुस्तकें खरीदने में असमर्थ होंगे पुस्तकों के क्रय कराने में व्यय होना निश्चित हुआ था। सहायता प्राप्त करने वाले छात्र को नियत फार्म पर आवेदन पत्र देना होता है जिसकी स्वीकृति श्री गुमानसिंह देते हैं। श्री गुमानसिंह यह अधिकार किसी भी व्यक्ति को दे सकते हैं। यदि प्राप्त ब्याज की राशि पुस्तकों के रूप में खर्च न हो तो दो वर्ष के बाद यह राशि श्री गुमान सिंह व उनके द्वारा नियुक्त व्यक्ति की अनुमति से सभा स्वयं किसी भी आर्य समाज द्वारा आवेदन पत्र प्राप्त करके (जैसी भी स्थिति हो) पात्र दीन, हीन, विधवा, अबला आदि की सहायता में खर्च करेगी। गत वर्ष इस निधि में १५९१)८५ शेष थे। इस वर्ष ब्याज के चार सौ रुपए जमा होकर कुल योग १९९१) ८५ रहा।

श्री स्व० बनवारी लाल पचेरी वाला (साहिब गंज बिहार) स्थिर निधि

यह निधि तीन हजार रुपए से कायम की गई थी। इसके ब्याज को अंग्रेजी साहित्य व सत्यार्थ प्रकाश के भारतीय भाषाओं के प्रकाशन व वितरण पर खर्च किए जाने की व्यवस्था की गई है।

उपयुक्त व्यक्तियों एवं संस्थाओं को साहित्य मुफ्त दिए जाने की भी एक शर्त निर्धारित की गई थी और उसका निर्णय सार्वदेशिक सभा पर छोड़ा गया था। इस निधि की राशिमय ब्याज के सन १९८६ में ५९२१) बैंक से मिलेगी जो बोंड के रूप में जमा हैं।

श्री स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती स्थिर निधि

श्री स्वामी दिव्यानन्द जी ११ सिविक सेक्टर भिलाई (म. प्र.) ने ४० हजार (चालीस हजार मात्र) दान देकर स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती स्थिर निधि' स्थापित की थी जिसकी स्वीकृति १४ १०-१९७३ की अन्तरंग बैठक ने दी। श्री स्वामी जी ने यह राशि ५० हजार कर दी है।

इस निधि के ब्याज से सत्यार्थ प्रकाश और आर्याभिविनय पुस्तकें हिन्दी तथा देश-विदेश की विविध भाषाओं में छपा करेंगे। प्रत्येक प्रकाशन पर अच्छे स्थान पर इस निधि का उल्लेख करना होगा। गत वर्ष इस निधि के ब्याज के १३२००) जमा थे। वर्ष के अन्त में ४ हजार रुपए जमा हुए इस प्रकार १७२००) ब्याज के शेष जमा है। (क्रमशः)

महात्मा गांधी और आर्य समाज

—श्री ला० ज्ञानचन्द जी ठेकेदार

(२)

इसमें जहां मालाबार आदि स्थानों के दंगों के सम्बन्ध में घटनाओं के बिल्कुल विरुद्ध सम्मति देते हुये आपने मुसलमानों का प्रत्यक्ष पक्षपात और हिन्दुओं के प्रति अन्याय किया वहां बिना प्रमाण के आर्यसमाज, उसके प्रवर्त्तक और सत्यार्थप्रकाश पर भी बिल्कुल अनुचित आक्षेप किये। जो सज्जन महात्मा जी के उद्देश्यों को जानते हैं वह यह तो मान ही नहीं सकते कि आपने उस समय यह दोषारोपण किसी धार्मिक विचार या केवल सत्यान्वेषण के लिये किया था क्योंकि न तो महात्मा जी का यह लेख इस उद्देश्य से ही लिखा गया था जैसा कि लेख के शीर्षक से प्रकट है और न महात्मा जी के उस समय के कार्यक्रम में धार्मिक अन्वेषण का विषय ही सम्मिलित था जिस समय यह घोषणा की गई थी वह समय भी इस आक्षेप का प्रेरक न था।

इस हेतु जहां यह मानना पड़ेगा कि उस असामयिक आक्षेप के, महात्मा जी जैसे सावधान सज्जन से, प्रकट होने का कारण धार्मिक था, सत्यान्वेषण नहीं वरन् केवल राजनीतिक था, वहां यह भी स्वीकार करना पड़ेगा कि यह आक्षेप महात्मा जी की आन्तरिक प्रवृत्ति का नहीं किन्तु बाहरी प्रभावों का परिणाम था जो कि महात्मा जी की बीमारी और हिन्दू-मुस्लिम दंगों के हेतु से उत्पन्न हुये दु:ख से दु:खी और समाचारों से अनभिज्ञता की दशा में लिखा गया था। मेरे इस कथन की पुष्टि महात्मा जी के निम्नांकित लेखों से होती है—

१—महात्मा जी की समालोचना के सम्बन्ध में जो तार आर्यसमाज आगरा ने आपको दिया था उसका उत्तर आपने यह दिया था—"मैंने समाज या ऋषि दयानन्द या स्वामी श्रद्धानन्द के सम्बन्ध में एक शब्द भी बिना विचार किये नहीं लिखा। मैं अपनी राय को आसानी से दबा सकता था, लेकिन जबकि उसका सम्बन्ध वर्तमान दशाओं से है,तब सत्य का अवलम्बन करते हुए मैं ऐसा न कर सका। हिन्दू मुस्लिम-वैमनस्य एक जीवित घटना है। उसको दूर करने की देश को बड़ी जरूरत है।

असल घटनाओं को छोड़ देने या रोकने से यह प्रयोजन सिद्ध नहीं हो सकता। ऐसे अवसरों पर सच्चाई को प्रकट करना अनिवार्य है। सत्य चाहे कितना कड़वा क्यों न हो।"

(नव जीवन, तेज दिल्ली, ८ जून १९२४)

२—डाक्टर महमूद ने मालाबार के मोपला उपद्रव का जो वर्णन महात्मा जी को दिया था, आपने उसका वह अंश घोषणा में लिखने से छोड़ दिया था जो मोपलों द्वारा हिन्दुओं को जबर्दस्ती मुसलमान बनाने का अपराधी ठहराता था। इस पर जब घटनाओं को जानने वाले सज्जनों ने डाक्टर महमूद को उनके वर्णन को असत्य समझकर कड़ी-कड़ी बातें लिखी तब उन्होंने महात्मा जी को लिखा कि आपने सारा वर्णन अपनी घोषणा में नहीं लिखा, इसलिए लोग मुझे मिथ्या वर्णन के लिए कोस रहे हैं। कृपया 'यंगइण्डिया' में उसको अवश्य शुद्ध कर दीजिए। इस पर महात्मा जी ने अपनी उस गलती को मान कर खेद के साथ यह कहा था कि घोर वैमनस्य के समय में मनुष्य अधिक सावधान या अधिक शुद्ध नहीं हो सकता।"

(नवजीवन, २९ जून १९२४, तेज दिल्ली, ३० जून, १९२४, यंगइण्डिया से उद्धृत)

३—महात्मा जी लिखते हैं "मैं आपको (आर्यसमाजियों को) विश्वास दिलाता हूं कि मैंने दु:खित-हृदय से वह टीका (समालोचना) लिखी थी। अब यह देखकर कि उससे बहुतों के हृदय को चोट पहुंची है मुझे भी उतना ही दु:ख होता है।"

(नव जीवन १५ जून, १९२४)

४—बाहरी प्रभावों के कारण आक्षेप किए जाने के सम्बन्ध में यह सन्देह अवश्य हो सकता है कि महात्मा जी जैसा उत्तर दायित्व पूर्ण नेता केवल दूसरों के कथन पर विश्वास करके ऐसी गलती नहीं कर सकता। इस सन्देह को दूर करने के लिये अगले पृष्ठों में जहां महात्मा जी के निजी लेख पेश किये जायेंगे, वहां पर मैं यह भी निवेदन कर दूंगा कि आपके भीतर यह दोष अब तक मौजूद है जैसा कि आपके निम्नांकित लेख से प्रकट है—"मैं अनुभव करता हूं कि एक पब्लिक कार्यकर्त्ता को दूसरों के भरोसे इस तरह काम नहीं करना चाहिए और ऐसी बात नहीं कहनी चाहिए जिसकी स्वयं जांच न करली हो या जिसका उसको पूरा निश्चय न हो। सत्य की पूजा करने वाले को बड़ी सावधानी से काम करना चाहिए। किसी की ऐसी बात पर विश्वास करना जिसकी जांच स्वय न की हो, मानो सचाई को पीछे फेंकना है। मुझे यह स्वीकार करते हुए दु:ख होता है कि मैं यह जानता हुआ भी अपने इस विश्वास कर लेने के स्वभाव पर अब तक विजय नहीं पा सका हूं, और इसका कारण यह है कि मैं शक्ति से अधिक कार्य करने का इच्छुक रहता हूं। इस इच्छा के कारण मेरे साथ कार्य करने वालों को मेरी अपेक्षा अधिक कठिनाई होती है।"

(यंग इण्डिया २४ सितम्बर, सन् १९२७, तेज दिल्ली, २९ सित० सन् १९२७, महात्मा जी की आत्म-लिखित जीवनी से)

राष्ट्रीय एकता

—क्षेत्रपाल शर्मा

भारत एक विशाल गणराज्य है, विशाल गणराज्य होने के साथ-साथ एक सुसंगठित राष्ट्र भी है। विश्व के सभी देशों में आबादी की दृष्टि से भी इसका द्वितीय स्थान है। विश्व का चाहे कोई भी देश क्यों न हो वह तब तक उन्नति नहीं कर सकता जब तक उस देश में रहने वाले प्राणियों में परस्पर मैत्री की भावना न हो, यह गुण व्यक्ति में तभी उत्पन्न होता है जब उसे बाल्यकाल से ही इस प्रकार की शिक्षा दी जाती है। प्रत्येक देश के लिए राष्ट्रीय एकता का होना परमावश्यक है। प्रत्येक व्यक्ति को अपने राष्ट्र से प्रेम रखना उतना ही आवश्यक है जितना कि दैनिक जीवन यापन के लिए भोजन। इस संदर्भ में राष्ट्र कवि मैथिलीशरण गुप्त ने जो उद्‌गार व्यक्त किये हैं उन्हें पढ़ते समय आंखें सजल हो जाती हैं।

"जो भरा नहीं है भावों से, बहती जिसमें रसधार नहीं।
वह हृदय नहीं वह पत्थर है, जिसमें स्वदेश का प्यार नहीं॥"

राष्ट्रीय एकता के सम्बन्ध में कविवर द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी ने निम्न भाव व्यक्त किये हैं:—

'रंग-रंग के रूप हमारे, अलग-अलग है क्यारी-क्यारी।
लेकिन हम सब मिलकर ही हैं, इस उपवन की शोभा सारी।"

एक सूत्र में बंधकर हमने हार गले का बनना सीखा।

एक-एक पौधे से मिलकर ही बाग बन जाता है, उसमें अनेक प्रकार के पौधे होते हैं और उसमें उन सभी का अपना अलग-अलग महत्व होता है। लेकिन यदि एक-एक पेड़ समाप्त होता चला जाय तो एक दिन ऐसा आयेगा कि सारा बाग ही समाप्त हो जायेगा। ठीक यही हालत राष्ट्र की है। राष्ट्र में प्रत्येक व्यक्ति का उतना ही महत्व होता है जितना कि बाग में एक पौधे का, चाहे वह पौधा छोटा हो या बड़ा।

देश का प्रत्येक व्यक्ति उस देश की एक इकाई होता है। आज का नागरिक कल के भावी भविष्य का निर्माता है। राष्ट्र का भविष्य उस राष्ट्र के नागरिक ही निर्धारित करते हैं अर्थात राष्ट्र के जैसे नागरिक होंगे उसी ढंग से राष्ट्र प्रगति की ओर अग्रसर होगा। जब सेना में कोई भी व्यक्ति भर्ती होता है तब उसे सर्वप्रथम यही शपथ दिलायी जाती है कि पहले वह भारतीय है और बाद में हिन्दू, मुस्लिम, सिख तथा ईसाई अर्थात देश के लिए जब किसी भी प्रकार का कोई संकट आएगा तब वह धर्म तथा जाति की परवाह न करके अपने राष्ट्र की रक्षा के लिए अपनी जान की बाजी लगा देगा। देश की रक्षा करना ही सैनिक का परम कर्तव्य हो जाता है।

प्रायः यह देखने में आया है कि जब हम कहीं भी कोई फार्म भरते हैं तो उसमें धर्म का एक अतिरिक्त कालम होता है, जिससे प्राणी मात्र में परस्पर वैमनस्य की भावना उत्पन्न हो जाती है। क्या उसमें इतना लिखना काफी नहीं है कि हम भारतीय हैं? क्योंकि भारत भूमि पर जन्मा प्रत्येक नागरिक भारतीय है।

हमारी भूतपूर्व प्रधानमन्त्री स्वर्गीया श्रीमती इन्दिरा गांधी का भी यही नारा रहता था कि "हम सब एक हैं, भारत में रहने वाला प्रत्येक व्यक्ति भाई-भाई है चाहे वह हिन्दू, मुस्लिम सिख तथा ईसाई या किसी भी जाति और धर्म को मानने वाला क्यों न हो? वह भारत मां की ही सन्तान है।

उदाहरणार्थ:—"हिन्दू मुस्लिम, सिख, ईसाई, आपस में सब भाई-भाई।"

राष्ट्रीय एकता के संदर्भ में किसी संस्कृत कवि ने भी एक लोकोक्ति द्वारा अपने विचार प्रगट किए हैं:—"संघः शक्ति कलियुगे।" इस सम्बन्ध में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी ने निम्न विचार प्रकट किए हैं:—"हम सभी एक ही परमेश्वर के उपासक हैं, जिसकी हम अलग-अलग नामों से पूजा करते हैं इसलिए हमें अपनी आधारभूत एकता को अवश्य बनाए रखना होगा तथा छुआछूत का परित्याग करना होगा। इसके साथ ही मनुष्यों के बीच ऊंच-नीच की भावनाओं का त्याग भी अत्यन्त आवश्यक है। राष्ट्रीय एकता ही हमारा दृढ़ संकल्प है।"

जापान जो पूर्णतया नष्ट हो गया था आज प्रगतिशील देशों में सबसे आगे है क्योंकि वहां के निवासियों में राष्ट्रीय एकता की ठोस भावना है। राष्ट्रीय एकता के लिए वहां रहने वाले प्राणी मात्र में आपस में एकता का होना आवश्यक है। एकता के सम्बन्ध में वृद्ध व्यक्ति द्वारा लाए गए लकड़ी के गट्ठर की कहानी जिसमें वह अपने चारों लड़कों को यह शिक्षा देता है कि एकता में कितनी शक्ति होती है, यह तो अक्सर बहुचर्चित ही है।

आज से कुछ समय पूर्व भारत दासता की बेड़ियों में जकड़ा हुआ था। गोरे लोग भारत में आए और उन्होंने भारतवर्ष पर राज्य सिर्फ इसी नीति के बलबूते पर किया कि भारतीयों में आपसमें फूट डालो और शासन करो। इस नीति में वे लोग सफल भी हुए जिसका परिणाम यह हुआ कि भारत जैसा महान देश जिसे कभी सोने की चिड़िया के नाम से पुकारा जाता था सदियों तक गुलामी की जंजीरों में जकड़ा रहा, क्योंकि यहां देशवासियों में सद्‌भावना नहीं थी, आपस में प्यार नहीं था।

जिस प्रकार विभिन्न प्रदेशों से मिलकर एक राष्ट्र का निर्माण होता है, प्रदेश अलग-अलग होते हैं, परन्तु राष्ट्र एक ही होता है। उसी प्रकार धर्म भी अनेक होते हुए ईश्वर एक ही होता है, चाहे हम उसे किसी नाम से क्यों न पुकारें। इस सम्बन्ध में किसी कवि ने कहा है:—

"प्रदेश भिन्न हैं, राष्ट्र एक है,
धर्म भिन्न हैं, परमात्मा एक है।"

बच्चों को विद्यार्थी जीवन से ही इस प्रकार की शिक्षा देनी चाहिए, जिससे उनमें राष्ट्रीय भावना का सर्वांगीण विकास हो सके और वे अपने देश के सर्वश्रेष्ठ नागरिक बन सकें तथा राष्ट्रकी मजबूती में अपना अमूल्य योगदान दे सकें। राष्ट्र के प्रत्येक नागरिक का यह कर्तव्य हो जाता है कि वह अपने राष्ट्र को मजबूत बनाने के लिए सभी प्रकार की कठिनाइयों का सामना कर सके। कोई भी राष्ट्र तभी शक्तिशाली हो सकता है जब उसका प्रत्येक नागरिक अपना यह कर्तव्य समझे कि राष्ट्र की सेवा करना उसका परम कर्तव्य है। चाहे कैसी भी परिस्थिति क्यों न हों वह अपनी जान की बाजी लगाकर भी राष्ट्र रक्षा करेगा। जब देश के प्रत्येक नागरिक के अन्दर इस प्रकार की भावना पैदा हो जायेगी तो वह राष्ट्र हमेशा प्रगति की ओर अग्रसर रहेगा और उसका दिन-प्रतिदिन चौमुखी विकास होगा तभी वह राष्ट्र बाह्य शक्तियों से भी अपनी सुरक्षा करेगा।

राष्ट्रीय एकता के लिए यह जरूरी है कि हम लोग सभी धार्मिक पर्वों को मिलजुल कर मनायें चाहे वह किसी का भी पर्व क्यों न हो, इससे हमारे आपसी सम्बन्ध और भी घनिष्ठ होते चले जायेंगे। संस्थाओं तथा सभी कार्यालयों में कर्मचारी और अधिकारी के बीच की जो खाई बनी हुई है, जिसके कारण लोगों में आपस में मतभेद पैदा हो जाते हैं, को समाप्त करना होगा तथा संस्था या कार्यालय में कार्य करने वाला व्यक्ति यह समझे कि उस संस्था में कार्य करने वाले सभी व्यक्ति चाहे वह अधिकारी हैं अथवा कर्मचारी सभी भाई-भाई हैं। ऐसा करने से राष्ट्रीय एकता को और भी बल मिलेगा।

उपरोक्त तथ्यों से यह स्पष्ट हो जाता है कि प्रत्येक के लिए राष्ट्रीय एकता का होना उतनाही महत्वपूर्ण है जितना कि उदर पूर्तिके लिए भोजन। अन्यथा वह दिन दूर नहीं है कि स्वतन्त्र भारत फिर से दासता की बेड़ियों में जकड़ जायेगा।

अन्त में हम कह सकते हैं कि "एकता में ही शक्ति है।" और वेद का मन्त्र भी हमें यही उपदेश दे रहा है:—

"संगच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम्।
देवा भागं यथा पूर्वे संजानाना उपासते॥"

विविध समाचार

श्रीमान कभी आइसक्रीम बेचते थे !

न्यूयार्क, ६ जनवरी, प्रधानमन्त्री राजीव गांधी ने एक बार एक बेकरी में काम किया था आइसक्रीम बेचीथी और यहां तक कि सड़क पर मजदूरी भी की थी ।

अमरीका के प्रमुख साप्ताहिक 'न्यूजवीक' ने आज खबर दी है कि श्री राजीव गांधी को अपने छात्र-जीवन के दौरान जेब खर्च जुटाने के लिये यह सब काम करने पड़े थे । कारण यह था कि भारतीय मुद्रा निर्यात् कानून के तहत वह एक वर्ष में मात्र २,००० डालर मंगा सकते थे और इसका दो तिहाई ट्यूशन में चला जाता था । बाकी खर्च के लिये उन्हें मेहनत करके पैसा जुटाना पड़ता था ।

(प० के० ७-१-८५)

प्रवासी भारतीय सरकार की नीति से असंतुष्ट

"प्रवासी भारतीयों के प्रति भारत सरकार को उत्साही भूमिका निभानी चाहिए । उसे अक्सर उनकी राजनैतिक सहायता करनी चाहिए । प्रवासी भारतीयों को अपनी जरूरतों के लिए खुद ही लड़ने को छोड़ दिया है । यह नीति बदली जावे ।'

'इंडियन मर्चेन्टस एसोसिएशन आफ यू. के. के उपाध्यक्ष प्रफुल पटेल ने यह बात कही है । वे एसोसिएशन की अनुसंधान परियोजना के सिलसिले में आजकल भारत का दौरा कर रहे हैं । परियोजना के तहत भारत सरकार की प्रवासी भारतीयों से सम्बन्धित आर्थिक, राजनैतिक, सामाजिक व सांस्कृतिक नीतियों की विस्तृत समीक्षा की जा रही है । समीक्षा रिपोर्ट के रूप में तीन माह के अन्दर भारत सरकार को दी जाएगी ।

श्री पटेल ने बताया कि अब तक प्रवासी भारतीयों की ओर से निवेश कराने पर बल दिया जाता रहा है लेकिन अन्य मामलों में उन्हें ज्यादा सहायता नहीं दी जा रही है । ब्रिटेन में पैदा हुए भारतीय बच्चे सांस्कृतिक तौर पर अपनी जन्मभूमि से कटे हुए हैं । भारतीय भाषाएं पढ़ाने के लिए किताबें नहीं मिलतीं ।

श्री पटेल के मुताबिक श्री राजीव गांधी की जीत से प्रवासी भारतीय खुश हैं । उन्हें उम्मीद है कि युवा मन्त्री मण्डल प्रवासी भारतीयों की दिक्कतों को अच्छी तरह समझेगा ।

श्री पटेल ने ब्रिटेन में 'खालिस्तान' का प्रचार करने वाले सिखों के प्रति ब्रिटिश सरकार की उदासीनता पर कड़ी चोट की । उन्होंने कहा कि ईरान और लीबिया से निष्कासित लोगों ने जब गड़बड़ी की तो उन्हें कुछ सप्ताहों में काबू कर लिया गया था । ब्रिटिश सरकार का काम उग्रवादियों को बढ़ावा देने का नहीं है । भारतीयों को ऐसे मामलों में कड़ा रवैया अपनाकर पश्चिमी देशों से साफ कह देना चाहिए कि अगर वे आतंकवादियों को बढ़ावा देंगे तो उनका भारत में स्वागत नहीं होगा ।

(ज० स० ५-१-०५)

राजीव सरकार का १० सूत्री कार्यक्रम

नई दिल्ली १७ जनवरी । राष्ट्रपति जैलसिंह ने अपने भाषण में १० सूत्री कार्यक्रम घोषित किया जो राजीव सरकार का भावी कार्यक्रम होगा । नई सरकार ने इन १० कार्यों को सम्पन्न करने का दायित्व उठाया है :

१—चुनाव प्रक्रिया में सुधार ।

२—चालू सत्र में दलबदल विरोधी विधेयक प्रस्तुत करना ।

३—प्रशासनिक व्यवस्था का प्रबल सुधार ।

४—नई कराधान नीति की घोषणा ।

५—नई शिक्षा नीति को तैयार करना

६—न्याय प्रकिया को सरल बनाना तथा शीघ्र न्याय के काम में तेजी लाना ।

७—महिलाओं के लिए नया राष्ट्रीय कार्यक्रम बनाना ।

८—१९८५ को युवा वर्ष के रूप में मनाना ।

९—वन तथा वन्य जीवन के विभाग का गठन करना ।

१०—गंगा के पानी को दूषित होने से रोकने के लिए केन्द्रीय गंगा प्राधिकरण का गठन करना ।

(पृष्ठ ४ का शेष)

प्रेसीडेन्ट रीगन ने मिसाइलों के हमले को रोकने के लिए बाह्य अन्तरिक्ष के सैन्यकरण की योजना का संकेत दिया है उससे दुनिया भर में भय और आतंक व्याप्त हो गया है । दिल्ली के शिखर सम्मेलन ने इस योजना का भी विरोध किया है और इसे रद्द कर देने की मांग की है ।

शिखर सम्मेलन ने मुख्य रूप से अणु आयुधों के निर्माण, उनके परीक्षण संग्रह में कमी और अन्त में उनके भंडारों को नष्ट करने की भी मांग की है । शिखर सम्मेलन के कुछ नेता महाशक्तियों तथा अपने को अणुअस्त्रों सेसज्जित करने में रत राष्ट्रों की राजधानियों में जाकर अपनी मागे मनवाने के लिए उन पर जार डालेंगे ।

अमेरिका और रूस १३ महीने के अन्तराल के बाद नियन्त्रण पर वार्त्तालाप करने के लिए राजी हो गए हैं । प्रसन्नता है विचारणीय विषयों में अणु आयुध भी सम्मिलित है । शिखर सम्मेलन मे भाग लेने वाले नेताओं ने इस घटना चक्र का स्वागत करते हुए जिसका उदघोषित लक्ष्य बाह्य आकाश और पृथ्वी पर भयंकर तम हथियारों की प्रति स्पर्धा को रोकना है अपील की है कि यह वार्त्तालाप तुरन्त सदभावना से शुरू की जाय ।

इस सम्मेलन की कोई ठोस उपलब्धि सामने आए या न आए परन्तु इस बात से सहसा ही इन्कार नहीं किया जा सकता कि महाशक्तियों पर अणु भंडारो को नष्ट करने के निमित समय पर पग उठाने के लिए अन्तर्राष्ट्रीय दबाव की भूमि तय्यार करने में इसका प्रत्यक्ष वा अप्रत्यक्ष योगदान नगण्य न होगा । महा शक्तियों पर प्रंकित कराए जाने की महती आवश्यकता है है कि उनका दायित्व न केवल अपने नागरिको के वा युरोपीय देशो के नागरिकों के प्रति ही अपितु संसार के अन्य भागो के मानवों परमात्मा के पुत्रों तथा अन्य प्राणियों के प्रति भी है । इस तथ्य की ओर भी घोषणा पत्र में उनका ध्यान आकृष्ट किया गया है । —रघुनाथ प्रसाद पाठक

आर्य समाजों की गतिविधियां

शम्भुदयाल सन्यास आश्रम गाजियाबाद

गढ़ी (सिरोरा) ११ जनवरी

श्री महर्षि दयानन्द शम्भुदयाल वैदिक सन्यास आश्रमके आचार्य श्री प्रेमाचार्य जी अपने सहयोगी श्री स्वामी सत्यमुनि जी सहित श्री मायाराम की भजन मण्डली लेकर गढ़ी (सिरोरा) जिला मेरठ पहुंचे। आपने इस गांव में तीन दिवस तक वेद-प्रचार किया। ग्रामीण बन्धुओं ने इस कार्यक्रम से प्रसन्न होकर आश्रम को ५०१) पांच सौ एक रुपए फुटकर दक्षिणा दी और आग्रह किया कि आप लोग कम से कम वर्ष में दो बार अवश्य हमारे गांव में वेद प्रचार करके हमें लाभान्वित किया करें।

इस आयोजन में श्री महाशय लक्ष्मीचन्द जी, पं० भागीरथ जी, श्री लच्छुराम गढी निवासी ने भरपूर सहयोग दिया बीस २० युवकों ने स्वात्म प्रेरणा से यज्ञानुष्ठान द्वारा यज्ञोपवीत धारण किये और इसी वर्ष अपने ग्राम में आर्य वीर दल प्रशिक्षण शिविर आमन्त्रित करके स्वामी प्रेम को वचन बद्ध किया कि, वह आर्य वीर दल का शिक्षक श्री हंस जी से मिलकर हमें उपलब्ध करा दें। गढी ग्राम शिविर का व्यय भार सहर्ष उठायेगा। —जनार्दन भिक्षु आचार्य

शोक समाचार

आर्य समाज उसका बाजार के भूतपूर्व प्रधान श्री मोहरलाल जी आर्य का निधन २६ नवम्बर ८४ को हो गया। इसके बाद ही भूतपूर्व मन्त्री तथा आर्य समाज उसका बाजार के संरक्षक श्री हरिप्रसाद जी आर्य का बम्बई में निधन ३० नवम्बर को हो गया—आर्य समाज के दोनों स्तम्भ थे तथा आर्य समाज की उन्नति में तन, मन, धन से सहायता करते थे परमात्मा से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्माओं को सद्गति प्रदान करें तथा परिवार को धैर्य प्रदान करें। —परमानन्द आर्य

श्री उमेशचन्द्र

—यह शोक समाचार उ० प्र० के आर्य जगत में बड़े दुःख के साथ सुना जाएगा कि आर्य समाज के कर्मठ, सुशील एवं अत्यन्त सरल स्वभाव वाले श्री उमेशचन्द्र जी स्नातक का सहसा स्वर्गवास हो गया है। जहां उन्होंने जनपद नैनीताल के पर्वतीय क्षेत्रों में वैदिक धर्म का बड़ी लगन से प्रचार प्रसार किया, वहां उन्होंने आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० की प्रमुख पत्रिका "आर्य मित्र" के सम्पादन में तथा सभा के अन्य प्रमुख कार्यों में भी महत्त्व-पूर्ण योगदान दिया है। वे सभा के कई उच्च पदों को भी सुशोभित करते रहे हैं। उनके इस आकस्मिक एवं असामयिक निधन से आर्य समाज को बड़ी क्षति पहुंची है जो निकट भविष्य में अपूरणीय है। उनके इस अचानक निधन पर मैं आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० की ओर से गहरा शोक प्रकट करता हूं। परमात्मा से प्रार्थना करता हूं कि वह उस दिवंगत आत्मा को सद्गति प्रदान करे तथा पारिवारिक जनों को इस असह्य वियोग के सहन के लिए धैर्य एवं विवेक प्रदान करे। हम आर्य जनों को उनके अधूरे कार्य को पूरा करने की शक्ति प्रदान करे। —इन्द्रराज

—विलक्षण प्रतिभा, सौम्य मृदु स्वभाव, आर्य विचारों में दृढ़ आस्था रखने वाले, स्वतन्त्र सैनानी, आर्य समाज के प्रधान, सभी को महान संकट में धैर्य धारण करने वाले चौधरी श्री मोतीसिंह आर्य का अपने पुत्र धीरराज सिंह के यहां ग्राम छांपसा जिला गाजियाबाद (उ० प्र०) में २१-१-८५ को निधन हो गया। आर्य समाज छांपसा को इनके निधन से भारी धक्का लगा है। उनके सरंरक्षण से समाज उन्नति के पथ पर आसीन हो रहा था। उनके निधन से हम सभी असहाय सा महसूस कर रहे हैं। हम आर्यजन प्रभु से प्रार्थना करते हैं कि दिवंगत आत्मा को सद्गति दे तथा शोकाकुल परिवार को धैर्य धारण की शक्ति दे। —देवेन्द्र कुमार मन्त्री

सम्पादक के नाम पत्र

बधाई सन्देश

श्रीयुत लाला रामगोपाल जी शालवाले के सार्वदेशिक सभा के पुनः सर्वसम्मति से प्रधान निर्वाचित होने पर उन्हें आर्यजनों और आर्य संस्थाओं के अनेक बधाई सन्देश प्राप्त हुए हैं। उन सन्देशों के सार स्वरूप आर्यसमाज दैवी इलैक्ट्रि कल्स रानीपुर हरिद्वार (उ० प्र०) का सन्देश उद्धृत किया जाना पर्याप्त है।

आदरणीय लाला जी सादर नमस्ते !

हमें यह जानकर अति प्रसन्नता हुई कि वर्ष १९८४-८५-८६ के लिये आप फिर सार्वदेशिक आर्यप्रतिनिधि सभाके प्रधान निर्वाचित होगये। हमारी ईश्वर से यही प्रार्थना है तथा हमें विश्वास है आर्य समाज ने जैसे गत १५ वर्ष में आपके संरक्षण में संसार में उच्च गौरव प्राप्त किया है आगे भी इसी प्रकार आप आर्य समाज की प्रतिष्ठा तथा गौरव को बढ़ाते हुये दीर्घ आयु को प्राप्त हो तथा नववर्ष आपका हर प्रकार से मंगलमय हो यह हमारी कामना है।

—दयानन्द स्वामी,
उप-प्रधान, आर्य समाज हरिद्वार

सार्वदेशिक पत्र से प्रभावित

आपकी सेवा में कुछ शब्द लिखते हुए मुझे बड़ी प्रसन्नता है। एक मित्र से मुझे यह ज्ञात हुआ कि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, सार्वदेशिक साप्ताहिक पत्र और वैदिक लाइट अंग्रेजी मैगजीन का प्रकाशन करती है। उन्होंने मुझे इन पत्रों की पुरानी प्रतियां भी दिखाई जिन्हें पढ़कर मैं बहुत प्रभावित हुआ।

सच तो यह है कि मैं गैर आर्य समाजी था परन्तु श्री विष्णुदयाल जी द्वारा अनूदित फ्रेंच सत्यार्थ प्रकाश के एक अध्याय को पढ़कर तमाम ग्रन्थ को पढ़ जाने की उत्सुकता हुई। मैंने डा० चिरंजीवि भारद्वाज कृत अंग्रेजी सत्यार्थ प्रकाश की एक प्रति खरीदी।

मैं पक्का धार्मिक व्यक्ति नहीं हूं फिर भी महान ऋषि और आर्य समाज की शिक्षाओं में विश्वास करना शुरू कर दिया।

वैदिक धर्म विषयक मेरा ज्ञान बहुत कम है, परन्तु मैं इसका सम्यक्-ज्ञान प्राप्त करना चाहता हूं इसी हेतु मैंने हिन्दी पढ़ना प्रारम्भ कर दिया है और कुछेक धार्मिक पुस्तके भी पढ़ डाली है जो काफी नहीं है। मैं आर्य समाज की देश देशांतर की प्रगतियों की जानकारी प्राप्त करने का इच्छुक हूं।"

श्यामसुधनक् लाविन टयूरे (Laventure)
रायल रोड पोस्ट ग्री. फ्लक (मौरीशस)

शंका समाधान

श्रीयुत रामशरणदास जी ५५३, जोशी रोड़, दिल्ली ५ का पत्र कई बार इसलिए मुझे प्राप्त हुआ कि मैं सार्वदेशिक २२ जनवरी १९८४ में 'सामयिक चर्चा' शीर्षक में—'बिजली द्वारा अन्त्येष्टि अमान्य' शीर्षक से छपे विचार पर कुछ लिखूं। यह भी अनुरोध है कि वह सार्वदेशिक में छपाया जाए। मुझसे ही यह अनुरोध करने का तात्पर्य है कि वे प्रामाणिकता पर बल दे रहे हैं। परन्तु लोग इस बात को भूल जाते हैं कि मेरी बात को वाद विवाद में नहीं लाया जा सकता। धर्मार्य सभा से सम्बद्ध होने और उसके अधिकारी होने से यह नियमतः सत्य है कि उसे विवाद में न लाया जावे और न किसी विवाद में मुझे खींचा ही जावे।

सार्वदेशिक पत्र में छपी बात प्रथमतः तो प्रामाणिक ही होनी चाहिए और होती भी है। परन्तु लेख में इसे चर्चा का विषय बना देने से यह सिद्ध है कि पत्र के कर्ता धर्ता लोग स्वयं उत्तरदायित्व नहीं लेना चाहते हैं। परन्तु श्री रामशरण दास को जो बात चाहिए वह तो उसमें आ गई है। उसे ध्यान से पढ़े तो सभी बातें आ जाती हैं।

प्रथम मूल बात तो यह है कि प्रामाणिकता महर्षि की संस्कार विधि की अन्त्येष्टि प्रक्रिया की है न कि किसी दूसरे के कहने या बनाई नईनई विधि की। इसका नाम 'अन्त्येष्टि' है। इसमें इष्टि पद लगा है जो यज्ञ की सूचना देता है। इष्टि मन्त्र घी, और सामग्री आदि के साथ होती है। महर्षि ने मनु आदि के अनुसार इसे संस्कार कहा है और इसी को नरमेध, पुरुष मेध, नरयाग और पुरुष याग भी कहा जाता है। १५ संस्कार जीवयुक्त शरीर के हैं और १६ वां अन्त्येष्टि जीव रहित शरीर मात्र का है।

बिजली की भट्टी पर शव को जलाने से शव का जलाना रूप कार्य मात्र हो सकता है। परन्तु इसे अन्त्येष्टि या अन्तिम संस्कार एवं पुरुषमेध आदि नहीं कहा जा सकता है। कारण यह है कि इसमें शरीर मात्र जलाकर राख कर दिया गया है—संस्कार और इष्टि की प्रक्रिया नहीं पूरी की गई है।

कुछ लोग समझते हैं और कहते है कि घी को सामग्री में मिलाकर सामग्री को शव पर डाल कर उसे भट्टी पर रख दिया जावेगा और मन्त्र इकट्ठे बोल दिए जावेंगे। परन्तु फिर भी प्रश्न यही होगा कि क्या यह इष्टि और संस्कार आदि कहा जा सकेगा ?

यदि घी, सामग्री आदि सभी यज्ञ की वस्तुओं को भाड़ में या बिजली की भट्टी पर रखकर जला दिया जावे मन्त्र इकट्ठे पढ़ दिये जावे तो यज्ञ की प्रक्रिया क्या पूरी हो जावेगी और इसे विधिवत यज्ञ कहा जा सकेगा ? नहीं! यह यज्ञ नहीं होगा। इसी प्रकार संस्कारों के विषय में भी कहा जा सकता है। जिस प्रकार यह यज्ञ नहीं कहा जावेगा उसी प्रकार बिजली की भट्टी पर शव जलाना भी अन्त्येष्टि या अन्तिम संस्कार नहीं कहा जा सकता है। अन्त्येष्टि विधि के पालन पूर्वक ही करनी चाहिए और वही प्रशस्त है।

—(आचार्य) वैद्यनाथ शास्त्री

सफल प्रचार कार्य

श्री श्याममुनि आर्य जिला उपप्रतिनिधि सभा बालूगंज भरथना (इटावा) तथा श्री कुशराम आर्य भजनोपदेशक ने अहेरीपुरा, केशरपुर आदि में प्रचार कार्य किया जो सफल रहा।

(पृष्ठ १ का शेष)

६—श्री अरविन्द घोष ने उनके विषय में कहा था—

"वे परमात्मा की इस विचित्र सृष्टि के एक अनोखे योद्धा और मनुष्य तथा मानवीय संस्थाओं का संस्कार करने वाले महान् शिल्पी थे।"

यह देश, स्वतन्त्रता के अग्रदूत, महान् समाज सुधारक, अन्ध-विश्वास और रूढ़िवाद की बेड़ियों को काटने वाले महान् सन्यासी महर्षि दयानन्द सरस्वती का सदा ऋणी रहेगा। महाकवि रवीन्द्रनाथ टैगोर ने भी उनके प्रति श्रद्धा व्यक्त करते हुए कहा था—

"मैं सादर प्रणाम करता हूं, उस महान् गुरु स्वामी दयानन्द को, जिनकी दूर-दृष्टि ने भारत की आत्मा सत्य और एकता का बीज देखा।"

७—आज देश की एकता और अखण्डता के लिये जो चुनौती दी जा रही है, उसका सामना करने के लिये हम सबको ऋषि दयानन्द द्वारा दिखाये गये देश प्रेम और भारतीयता के मूल मन्त्र से प्रेरणा लेनी चाहिये।

८—इन शब्दों के साथ मैं महर्षि दयानन्द सरस्वती को अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं।। जय हिन्द।।

इंका की जीत का कारण हिन्दू साम्प्रदायिकता नहीं —आडवाणी

नई दिल्ली ४ जनवरी। भारतीय जनता पार्टी के महासचिव श्री लालकृष्ण आडवाणी ने लोकसभा चुनावों में कांग्रेस (इ) की भारी विजय को अप्रत्याशित बताते हुए कहा है कि उसे हिन्दू साम्प्रदायिकता के कारण यह विजय हासिल नहीं हुई है।

एक अंग्रेजी साप्ताहिक को अपनी भेंटवार्ता में श्री आडवाणी ने कहा कि हिन्दू भावना का सवाल वहां उठता है जहां पंजाब और सिखों के मुद्दे मौजूद हैं किन्तु कांग्रेस (इ) को व्यापक स्तर पर पूरे देश में समर्थन मिला है।

उन्होंने कहा कि देश की जनता ने कांग्रेस (इ) और श्री राजीव गांधी को जो अवसर प्रदान किया है उसमें विपक्ष के न होने के कारण उन्हें निश्चित परिणाम हासिल करने होंगे। उन्होंने कहा कि वरिष्ठ राजनेताओं की बातों में वजन होता है चाहे व संसद में रहें अथवा बाहर। उन्होंने कहा कि जयप्रकाश नारायण भी संसद में नहीं थे पर उससे उनका महत्व कम नहीं हुआ।

(पं० के० ५-१-८५)

ऋषि मेले पर भाषण प्रतियोगिता

रविवार १० फरवरी ८५ को ११॥ बजे से राष्ट्र उत्थान में ऋषि दयानन्द का योगदान विषय पर बच्चों की भाषण प्रतियोगिता श्री महाशय धर्मपाल जी प्रधान आर्य केन्द्रीय सभा की अध्यक्षता में आर्य युवक परिषद की ओर से सम्पन्न होगी। विजेता बच्चों को पारितोषिक एवम् सर्वप्रथम बच्चों को सत्यार्थप्रकाश विशेषोपहार दिया जायेगा। प्रत्येक संस्था से एक बच्चे को चार मिनट का समय दिया जायेगा। बच्चों के नाम १६ फरवरी तक श्री पं० देवव्रत जी धर्मेन्दु आर्योपदेशक १६५४ कूंचा दखनीराय दरियागंज नई दिल्ली-२ के पते पर पहुंच जाने चाहिए।

—ओ३म प्रकाश, मन्त्री
आर्य युवक परिषद

सेना की महिला लेफ्टीनेन्ट वैदिक धर्म में

कानपुर—आर्य समाज मन्दिर गोविन्द नगर ... कानपुर के प्रधान श्री देवीदास आर्य ने भारतीय सेना में कार्यरत २७ वर्षीय महिला लेफ्टीनेन्ट कु० जोस्फीन सालीमन को उनकी इच्छानुसार ईसाई मत से वैदिक धर्म (हिन्दू धर्म) में प्रवेश कराया। उनका नाम साधना किया गया। विशेष शुद्धि संस्कार के पश्चात कु० साधना का विवाह २८ वर्षीय डा० अनिल गुप्त (सरजन) से हर्षोल्लास के वातावरण में वैदिक रीति से किया गया। कन्यादान की रस्म भी आर्य समाजी नेता श्री देवीदास आर्य व उनकी धर्मपत्नी श्रीमती ... देवी आर्या ने माता पिता के रूप में पूर्ण की तथा भाई के हाथ पत्रकार श्री जयनारायण भारती ने दिए।

श्री देवीदास आर्य ने समारोह में बताया कि इस विवाह में यह उल्लेखनीय बात है कि ... ने दिल्ली से होने वाले विवाह में मिलने वाले तीन लाख रुपए के दहेज को भी ठोकर मार दी है। समारोह में भारी संख्या में उपस्थित स्त्री पुरुषों ने वर वधू का हार्दिक स्वागत किया।

—श्याम प्रकाश शास्त्री, मन्त्री

क्रियान्वयन हेतु वर्ष १९८५ के शुभारम्भ के

"मानव शान्ति परिषद" दिल्ली का गठन किया गया एवं इसके पदाधिकारियों का सर्वसम्मत निर्वाचन निम्न प्रकार हुआ :—

श्री राजेन्द्र मोहन अध्यक्ष, श्री अशोक कुमार 'मधुर' मन्त्री
श्री कमल किशोर आर्य प्रचार मन्त्री, श्री ... कोषाध्यक्ष

ओ३म्
सार्वदेशिक
साप्ताहिक

दूरभाष [illegible] | सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र | [illegible] २७४७७१
वर्ष २० अंक १० | माघ शु० १२ सं० २०४१ रविवार १७ फरवरी १९८५ | वार्षिक मूल्य १५) एक प्रति ४० पैसे

महर्षि बोधोत्सव १७-२-१९८५ को समारोह पूर्वक मनाया जाय

सार्वदेशिक सभा प्रधान का आर्य जगत् को आह्वान

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री लाला रामगोपाल शालवाले ने एक प्रेस विज्ञप्ति के द्वारा आर्य समाजों, आर्य संस्थाओं एवं आर्य जनों को प्रेरणा की है कि १७-२-८५ को ऋषि बोधोत्सव समारोहपूर्वक मनाया जाए।

कार्य-क्रम

इस दिन सूर्योदय से पूर्व नगर-नगर एवं ग्राम ग्राम मे प्रभात-फेरियां निकाली जाएं।

इसी दिन प्रभात फेरी के पश्चात् आर्य समाज मन्दिरो मे यज्ञ किए जायें। आर्य मन्दिरो अथवा अन्य सार्वजनिक स्थानों पर विराट सभाएं की जाएं और महर्षि दयानन्द सरस्वती को भाव-भीनी श्रद्धाञ्जलि अर्पित की जाए। इस सभा मे वैदिक सिद्धान्त विषयक उपयुक्त साहित्य, ट्रैक्टादि वितरित किए जाएं।

सत्यार्थप्रकाश घर-घर पहुंचा कर लोगों मे एक जन-आन्दोलन का विषय बनाया जाए।

विशेष योग्य व्यक्तियों को आर्यसमाज का सदस्य बनाया जाए तथा यथासम्भव समाज मन्दिरों में अस्पृश्य एवं दलित कहे जाने वाले बन्धुओं के साथ सहभोज किए जाएं।

अस्पृश्यता के साथ दहेज प्रथा का अन्त हो इस सामयिक नारे को विशेष गति दी जाए।

ओम्प्रकाश त्यागी
सभा-मन्त्री

शिवरात्रि जगाने आयी हूं

उठो सपूतों ! आज तुम्हें ! शिवरात्रि जगाने आयी है।
[illegible] के गहन तिमिर को दूर भगाने आयी है।।
[illegible] इस पुण्य धरा पर;
[illegible] घना अन्धेरा है।
[illegible] की सैन्यवाहिनी,
[illegible] को घेरा है।
[illegible] का, कुविचार का,
आज [illegible] डेरा है।
सूरज तो उग आया लेकिन,
[illegible] नहीं सवेरा है।

ऋषि मुनियो की वसुन्धरा, पर सोती क्यो तरुणायी है ?
उठो सपूतो ! आज तुम्हे, शिवरात्रि जगाने आयी है।।
प्रेम-दया ममता समता के,
तत्व बिलखते रोते हैं।
सत्य धर्म के लक्षण सारे,
चिर निद्रा मे सोते है।
बढ़ हुए पाखण्ड चतुर्दिक
कालिख लीपे-पोते हैं।
मानवता के तत्व सुनहरे
गरिमा अपनी खोते हैं।
मद्यआलस्यप्रमाद भरी, सरिता जन हृदय समायी है।
उठो सपूतों ! आज तुम्हे ! शिवरात्रि जगाने आयी है।।

(शेष पृष्ठ २ पर)

ओम्प्रकाश [illegible]

सहसम्पादक—रघुनाथ प्रसाद पाठक

वेद और राष्ट्रीय उन्नति के कतिपय मौलिक सिद्धांत

—आचार्य वैद्यनाथ शास्त्री—

समाज रचना में व्यक्ति ही महत्वपूर्ण इकाई होते हैं। समाज के महान् विकसित स्वरूप को ही राज्य की संज्ञा दी जाती है। समाज कभी भी पूर्णता को प्राप्त नहीं होता। यह सदैव निर्माणावस्था में होता है।

प्रत्येक वैयक्तिक इकाई को कुछेक कर्त्तव्यों और दायित्वों का पालन एवं निर्वाह करना होता है। कन्फ्यूशस ने ठीक ही कहा था कि सामाजिक इकाईयों को नियमित करने के लिए मनुष्य को पारिवारिक इकाईयों को नियमित करना चाहिए। पारिवारिक इकाईयों को नियमित करने के लिए व्यक्तियों को नियमित करना चाहिए। इस प्रकार का विकास व्यक्तित्व का विकास कहा जाता है। अच्छे और सुविकसित व्यक्तित्व अच्छे राष्ट्र के द्योतक होते हैं। व्यक्ति का श्रेष्ठत्व उसके शारीरिक, मानसिक और आत्मिक विकास पर निर्भर होता है।

आदर्श व्यक्तित्व के विकास में शरीर, मस्तिष्क और आत्मा का स्वस्थ होना एक मुख्य तत्त्व होता है। मानव प्राणी की सर्वोपरि विशेषता सदाचार में निहित होती है।

राष्ट्रीय चरित्र राज्य की उन्नति के लिए एक अनिवार्य तत्त्व माना गया है। यह राष्ट्र के दर्जे को ऊंचा उठाता है। सुविकसित और शक्तिशाली राज्य का अर्थ है सदाचारी सभ्य और धार्मिक नागरिकों का समाज.वैदिक साहित्य में मनुष्य के लिए एक महत्त्वपूर्ण शब्द का प्रयोग किया गया है और वह है पुरुष जो व्यक्ति के विकास का द्योतक होता है जो मानव समाज की व्यवस्था में शारीरिक, बौद्धिक, आत्मिक और नैतिक दृष्टि से फिट बैठता हो वह पुरुष कहलाता है। पुरुष शब्द का अर्थ कुछ दार्शनिक रंग लिए होता है दूसरे शब्दों में उस पर कुछ दार्शनिक पुट लगी होती है, इसीलिए इसमें नर और नारी दोनों ही समवेत होते हैं। थोड़े से व्यक्ति ही जिन्होंने इस प्रकार की पूर्णता प्राप्त की होती है, राष्ट्रीय चरित्र को ऊंचा उठा सकते हैं।

किसी भी राष्ट्र के चरित्र निर्माण के लिए कुछेक मौलिक तत्त्व अनिवार्य होते हैं जिनकी उपेक्षा नहीं की जा सकती। यदि किसी समय राष्ट्र में इन मौलिक तत्त्वों का लोप हो जाता है तो वह चरित्रहीन बन जाता है जिसके फलस्वरूप उसका पूर्ण पतन हो जाता है। यदि कोई राष्ट्र नैतिक दृष्टि से दिवालिया बन जाता है तो मात्र कानून कायदों के बल पर किसी राष्ट्र पर न तो शासन किया जा सकता है और न उसे जीवित जाग्रत ही रखा जा सकता है। सदाचार के ये तत्त्व हैं:—

(१) सत्य और न्याय, ईमान्दारी और उदारता, स्वाभाविक-शक्ति, पुरुषार्थ, तप, नियन्त्रण, ज्ञान-विज्ञान, कला-कौशल, संघठन, त्याग-भाव, नियम और अनुशासन।

इन तत्त्वों पर भारतीय शास्त्रों मुख्यत. वेदों में प्रकाश डाला गया है और इनका स्वरूप सार्वभौम है। भूमण्डल के किसी भी राष्ट्र के लिए ये तत्त्व अनिवार्य होते हैं। यदि राष्ट्र के सभी निवासी आचार संहिता के रूप में इसका अनुसरण करें तो राष्ट्र में असन्तोष और अशान्ति व्याप्त नहीं हो सकती। इन सिद्धान्तों वा नियमों को व्यवहार में लाने वाले राष्ट्र का अस्तित्व देर तक कायम रहता है।

प्राणों के रहते हुए ही व्यक्ति जीवित कहा जाता है। यही बात किसी भी राष्ट्र पर चरितार्थ होती है। काई भी राष्ट्र चारित्रिक नियोजन के बिना मात्र भौतिक नियोजन से जीवित नहीं रहता। राष्ट्र अपनी मानवीय शक्ति पर निर्भर होता है। प्रकृति और प्राकृत सामग्री की तुलना में जन-शक्ति अधिक मूल्यवान होती है। यह तंत्र शक्ति कहलाती है, यही तन्त्र शक्ति प्रजातन्त्र, प्रशासन और राज्य के सिद्धान्तों का स्रोत होती है। यह मानव प्राणियों में पाई जाती है जो जीवित हस्ती के रूप में किसी राष्ट्र के अधिवासी और राज्य के नागरिक के नाम से जाने जाते हैं। मानवीय शक्तिमें ७ निम्नलिखित तत्त्व अन्तर्निहित होते हैं। (शेष पृष्ठ १६ पर)

आर्य कन्या पाठशाला हरदोई महोत्सव

आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० के मन्त्री श्री पं० मनमोहन जी तिवारी के शुभागमन के साथ कार्यक्रम प्रारम्भ।

सांस्कृतिक कार्यक्रमों के तत्त्वों में महर्षि के जीवन सम्बन्धी प्रसंगों तथा राष्ट्रीय प्रकरण में श्रीमती इन्दिरा गांधी और श्री राजीव गांधी के दृश्यों ने उपस्थित जनता का हृदय द्रवित कर दिया।

श्री मनमोहन जी तिवारी सभामन्त्री के स्वागत के उपरान्त उनके द्वारा पारितोषिक वितरण हुआ।

सभामन्त्री ने अपने संक्षिप्त भाषण में आर्य समाज तथा विद्यालय की प्रगति पर सन्तोष प्रकट किया।

विद्यालय की आचार्या एवं प्रबन्धक श्री रामेश्वर दयालु प्रधान श्री बक्षीसिंह ने ध्यान आकर्षित किया कि हम अपने जीवन में नैतिकता का ह्रास न होने दें। इससे हमारी गरिमा बढ़ेगी तथा जनता में छवि अच्छी बनेगी।

श्री मनमोहन जी तिवारी शान्तिपाठ के बाद लखनऊ वापिस हुए।

—डा० वंशगोपाल एम. ए. हरदोई

श्री ला० रामगोपाल जी शालवाले उ०प्र० जनपद-गोंडा में

आर्य समाज की युवा पीढ़ी के विशेष आग्रह पर सभाप्रधान और सच्चिदानन्द शास्त्री गोंडा पहुंचे। स्टेशन पर श्री प्रधानजी का भव्य स्वागत किया गया।

प्रातः महिला सत्संग में स्वागतके बाद श्री प्रधान जी ने सम्बोधित करते हुए आर्य समाज के कार्य कलापों की चर्चा की।

मध्याह्नोत्तर आर्य समाज के भवन में जिले के कार्यकर्त्ताओं ने प्रधानजी का स्वागत किया। साथ में मन्त्री श्री सच्चिदानन्द शास्त्री ने संक्षिप्त भाषण में आर्य समाज में नई पीढ़ी के आगमन को प्रगति पर बताया।

श्री ला० रामगोपाल जी शालवाले ने सामाजिक एवं राजनैतिक गतिविधियों पर व्यापक विचार दिये और कहा कि इस समय देश जिन परिस्थितियों से गुजर रहा है उनके दृष्टिगत आर्य समाज आंख बन्द करके नहीं रह सकता है। मीनाक्षीपुरम् पंजाब समस्या पर आर्य समाज ने जो किया—इस पर व्यापक विचार देकर जनता को अवगत किया। रात्रि में प्रधान जी दिल्ली को वापस लौट गये।

—शरद प्रकाश

(पृष्ठ १ का शेष)

दयानन्द के सैनिक हो तुम,
निर्भय आगे आओ।
दानवता से टक्कर लेकर,
शौर्य-शक्ति दिखलाओ।
कसम तुम्हें मातृभूमि की,
दानव मार गिराओ।
आर्य बनो ! संकल्पित हो,
यह जगती आर्य बनाओ।
प्राची से दे रही शक्ति वह बाल अरुण अरुणायी है।
उठो सपूतों ! आज तुम्हें ! शिवरात्रि जगाने आयी है॥

—राधेश्याम आर्य

सम्पादकीय

गुरुदेव दयानन्द

यों तो कितने ही महापुरुष हुए दुनिया में।
कोई गुरुदेव दयानन्द सा देखा न सुना॥

कवि की इन दो पंक्तियों में गागर में सागर भर गया है। वास्तव में संसार में अनेकों महापुरुष विभिन्न देशों में विभिन्न समयों में उत्पन्न हुए हैं और उन्होंने अनेक समकालीन सुधार भी किए परन्तु गुरुदेव दयानन्द सा सर्वांगीण सुधारक एवं विद्वान ब्रह्मचारी दुनिया में चिराग लेकर ढूंढने पर भी नहीं मिलेगा। जिस किसी दृष्टि से भी देखिए दयानन्द को मिश्री के डले की भांति सब ओर से मीठा (श्रेष्ठ) ही पाइएगा। संसार महात्मा गांधी को महापुरुष मानता था और भारत ने तो उन्हें राष्ट्रपिता कहकर सदा सम्बोधित किया है। वह महात्मा गांधी श्री विश्व कवि रवीन्द्रनाथ टैगोर को गुरुदेव कहकर सम्बोधित करते थे। उन्हीं गुरुदेव टैगोर ने एक स्थान पर ऋषि दयानन्द को वर्तमान और अतीत को मिलाने वाले 'गुरुदेव दयानन्द' कहकर बारम्बार प्रणाम किया है। इस प्रकार एक बड़े विद्वान के शब्दों में महात्मा गांधी के गुरुदेव टैगोर के गुरुदेव वास्तव में ऋषि दयानन्द संसार के ही गुरुदेव और कांग्रेस के इतिहासकार श्री सीताभि पट्टा रमैय्या के शब्दों में 'राष्ट्र पितामह' थे।

ऋषि दयानन्द ने जहां समस्त मानव जाति के लिए कल्याणकारी उपदेश दिए सदसत विवेकवती बुद्धि का प्रयोग करना सिखाया, भारत के अन्धविश्वास के झाड़ झंकार को साफ कर ज्योतिर्मय वेद ज्ञान का प्रकाश दिया वहां भारतीय प्राचीन आर्य सभ्यता एवं राष्ट्रीय गौरव की चेतना को यहां के लोगों में पुनर्जाग्रत करना उनकी भारतीय राष्ट्र को सबसे बड़ी देन उचितरीति से कही और मानी जाती है। इसी तथ्य को संसत्सदस्य प्रसिद्ध "राष्ट्रीयकवि स्व० श्री रामधारीसिंह दिनकर ने अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ संस्कृति के चार अध्याय (जिसकी भूमिका श्री पं० जवाहरलाल, नेहरू जी ने लिखी थी) में (पृ० ४५३) निम्न प्रकार पुष्टि की थी—

"जैसे राजनीति के क्षेत्र में हमारी राष्ट्रीयता का सामरिक तेज पहले तिलक में प्रत्यक्ष हुआ वैसे ही संस्कृति के क्षेत्र में भारत का आत्माभिमान स्वामी दयानन्द में निखरा। जो बात राजा राममोहन राय, केशवचन्द्र और रानडे आदि के ध्यान में न आई थी उसको लेकर स्वामी दयानन्द और उनके शिष्य आगे बढ़े और घोषणा कर दी कि कोई भी हिन्दू (आर्य) धर्म में प्रवेश पा सकता है—हमारा गौरव सबसे प्राचीन और सबसे महान्...वह जाग्रत हिन्दुत्व का महा समरनाद था। रणारूढ़ हिन्दुत्व के जैसे निर्भीक नेता स्वामी दयानन्द हुए वैसा और कोई नहीं हुआ।...दयानन्द के समकालीन अन्य सुधारक केवल सुधारक थे। किन्तु दयानन्द क्रान्ति के वेग से आगे बढ़े। वे हिन्दू धर्म के रक्षक होने के साथ ही विश्व-मानवता के नेता भी थे।"

जिस हिन्दू धर्म को पाश्चात्य ईसाई मिशनरी सूत का कच्चा धागा समझते थे, अमेरिका के विश्व प्रचारक जौन्सन पुसी फुट जैसे लोग जिस भारत को असभ्य कहकर पुकारते थे, पाश्चात्य इतिहासकार जिस भारत को सांपों और जंगलियों का देश कहा करते थे उसी भारत देश और उसी आर्य (हिन्दू) धर्म को ऋषि दयानन्द ने संसार की प्राचीनतम सभ्यता, धर्म और प्राचीन आवास का केन्द्र सिद्ध किया। लोगों की आंखें खुली और उन्होंने मनुस्मृति के इस श्लोक को बड़े ध्यान और निष्ठा के साथ पढ़ा और समझा जिसे ऋषि दयानन्द ने उनके सामने उपस्थित किया था।

एतद्देश प्रसूतस्य सकाशादग्र जन्मनः स्वं स्वं शिक्षेरन पृथिव्यां सर्व मानवः।

भारत वासियों की पराजय की भावना एवं हीन मनोवृत्ति को जो पाश्चात्य लेखकों ने हममें उत्पन्न करदी थी सर्वप्रथम ऋषि दयानन्द ने एक तीव्र विद्युत विस्फोट के साथ दूर किया।"

आज विश्व के ऐतिहासिक शोध कर्त्ताओं ने बड़े पुष्ट प्रमाणों से यह सिद्ध कर दिया है कि भारत का गौरव और भारत की सभ्यता एवं धर्म सबसे अधिक महत्वपूर्ण हैं जो इन्हें ऐसा नहीं समझते वे इतिहास से नितान्त अनभिज्ञ हैं। इसलिए गुरुदेव दयानन्द के ही हम आभारी हैं जिन्होंने हमारी आंखें खोली। महर्षि दयानन्द ही आधुनिक काल में प्रथम राष्ट्रवादी थे जिन्होंने 'स्वराज्य' का मन्त्र दिया और कांग्रेस के जन्म से बहुत पहले ही विशिष्ट पुरोगम प्रस्तुत करके स्वतन्त्रता का मार्ग प्रशस्त किया था। श्री स्व० श्री वी०जी० पटेल ने इस तथ्य की निम्न प्रकार पुष्टि की थी।

"बहुत से महानुभाव उनको सामाजिक और धार्मिक सुधारक कहते हैं परन्तु मेरी दृष्टि में तो ऋषि दयानन्द एक सच्चा पोलीटिकल लीडर था क्योंकि ऋषि दयानन्द ही प्रथम महानुभाव थे जिन्होंने यह कहा कि अन्यों का अच्छा शासन भी अपने शासन के तुल्य नहीं हो सकता। ४० वर्ष से जो पुरोगम इण्डियन नेशनल कांग्रेस का है वह सब प्रोग्राम वही है जो ऋषि दयानन्द ने आज से (१९२५ से) पचास वर्ष पहले हम सबके सामने रख दिया था। समस्त भारत की आर्य भाषा (हिन्दी), खद्दर व स्वदेशी का प्रचार, पंचायतों की स्थापना, अछूतोद्धार जात-पात निवारण आदि २। निदान वर्तमान कांग्रेस के प्रत्येक प्रोग्राम का अंश भगवान दयानन्द का ही बतलाया हुआ है। सचमुच हम भाग्यहीन थे जिन्होंने ५० वर्ष पहले ऋषि दयानन्द के कार्यक्रम को समझकर उस पर आचरण नहीं किया। ऋषि दयानन्द के बतलाए हुए प्रोग्राम को समझकर कार्य करते तो आज भारतवर्ष स्वतन्त्र हो गया होता।" (तेज डेली १५-२-१९२५)

प्रसन्नता है देश के संविधान में महर्षि दयानन्द और आर्यसमाज द्वारा निर्धारित कार्यक्रम के बड़े भाग को स्थान प्राप्त हुआ जिसकी वरीयता और उपयोगिता पर पूर्व राष्ट्रपति स्व० डा० राधाकृष्णन जी ने महर्षि बोध दिवस पर दिल्ली में आयोजित एक समारोह में (१९६३) महर्षि को श्रद्धांजलि अर्पण करते हुए निम्न प्रकार प्रकाश डाला था।

"जब देश पर संकट के बादल छाए हुए हों तब हमें शत्रु की चुनौती को स्वीकार करके उस शिक्षा को याद करना है जो स्वामी दयानन्द ने हमें दी।"

स्वामी दयानन्द एक महान् सुधारक और प्रखर क्रान्तिवादी महापुरुष तो थे ही साथ ही उनके हृदय में सामाजिक अन्यायों को उखाड़ फेंकने की प्रचण्ड अग्नि भी विद्यमान थी। उनकी शिक्षाओं का हमारे लिए भारी महत्व है क्योंकि आज भी हमारे समाज में बहुत सी विभेदकारी बातें विद्यमान हैं। हम अपनी फूट के कारण ही अतीत में पराधीनता के पाश में जकड़े गए। हमारे पारस्परिक भेद, और असहिष्णुता ही हमारे पतन का कारण बनी थीं। हमें अतीत की भूलों से शिक्षा ग्रहण करनी ही होगी तभी हमारा भविष्य उज्जवल और गौरवशाली बन सकेगा। आज की स्थिति का सामना दयानन्द के बताए हुये मार्ग पर चलकर ही किया जा सकता है।

जब आध्यात्मिक अव्यवस्था सामाजिक कुरीतियां तथा राजनीतिक दासता देश को जकड़े हुए थी तब महर्षि दयानन्द ने राजनीतिक, धार्मिक और सांस्कृतिक उद्धार का बीड़ा उठाया। सत्य, सामाजिक एकता और एक ईश्वर की आराधना का सन्देश उन्होंने दिया। उन्होंने शिक्षा और एक ईश्वर की पूजा की स्वतन्त्रता सभी के लिए उपलब्ध करने पर बल दिया था।

भारत के संविधान में सामाजिक क्षेत्र के लिये अनेक व्यवस्थाएं दयानन्द के उपदेशों से प्रेरणा लेकर ही की गई है।

"स्वामी दयानन्द ने स्वराज्य का जो सबसे पहले सन्देश हमें

सामयिक चर्चा—

फ्रान्स का उदाहरण

भूपाल जैसी दुर्घटनाओं और उनके फल स्वरूप व्यापक नर संहार की भावी संभावना को कम करने के लिए फ्रांस की क्रान्ति के बाद के उदाहरण का अनुसरण किया जाना अच्छा हल सिद्ध हो सकता है।

१७८९ की फ्रांस की क्रान्ति के बाद विस्फोटक पदार्थों के निर्माण के लिए जिम्मेवार व्यक्ति को स्वयं अपने परिवार सहित संयन्त्र के अहाते के भीतर आवास करना कानूनन अनिवार्य था।

इस अनिवार्यता ने लोगों के हृदयों में सुरक्षा की भावना पैदा की थी जो अनेक दशाब्दियों तक कायम रही। जो बात विस्फोटक पदार्थों के निर्माण के सम्बन्ध में सही है निश्चय ही वह कीट नाशक पदार्थों के निर्माण के सम्बन्ध में सही है और सही हो सकती है। —डा० पोप, न्यूयार्क

नमस्ते महिमा

प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी जम्मू के दौरे पर गई हुई थीं। वहां उनके विरोधियों ने जिनमें नवयुवकों की संख्या अधिक थी उनके विरोध प्रदर्शन का आयोजन किया। ज्यों ही वे लोग विरोधी नारे लगाते हुए श्रीमती इन्दिरा गांधी के पास पहुंचे त्यों ही उन्होंने (इन्दिरा जी ने) दोनों हाथ जोड़कर उन्हें नमस्ते की और वे नारे लगाना और विरोध प्रदर्शन करना भूल गए और उल्टे उन्हें नमस्ते करके लौट गए।

इस घटना का चामत्कारिक वर्णन अंग्रेजी के एक बड़े पत्रकार के शब्दों में स्पष्ट है जो इस प्रकार है :—

प्रश्न—क्यों जी ! जम्मू के विरोधी प्रधानमन्त्री के चक्कर में कैसे आ गए ?

उत्तर—भाई प्रधानमन्त्री और विरोधियों के बीच बिना बोले जो सांकेतिक बात हुई उसका अर्थ समझने की कोशिश कीजिए।

प्रश्न—क्या ?

उत्तर—विरोधी एक हाथ में झंडा लिए हुए थे और दूसरे हाथ को बगल से उठाकर नारे लगा रहे थे।

जी हां।

प्रधानमन्त्री ने अपने दोनों हाथ जोड़कर उनसे कहा—"बड़े, नादान हो, एक हाथ से नहीं, दो हाथ से। वैसे ही उन्होंने दोनों हाथ मिलाए नारी फुर्र से पार।

बात फुर्र होने की नहीं नमस्ते की है। प्रधानमन्त्री ने नारे लगाने वाले लड़कों से कहा—"धन्य है आपको ! मैं नमस्ते करती हूं।"

और जब लड़कों ने हाथ जोड़कर नमस्ते की (जो आधुनिक काल में आर्य समाज के प्रवर्तक स्वामी दयानन्द जी महाराज की विविध विशिष्ट देनों में से एक देन है) तो हमें शंकराचार्य जी का यह श्लोक याद आ गया :—

नमस्ते सते ते जगत् कारणाय।
नमस्ते स्थिते सर्व लोका श्रयाय ॥ (१९७५)

दल बदल विधेयक

२८-१-८५ को लोक सभा में पारित विधेयक में यह व्यवस्था की गई है कि :—

(१) संसद या विधान मण्डल के ऐसे सदस्यों की सदस्यता समाप्त हो जायगी जो सदन में अपनी पार्टी के निर्देश की अवहेलना करेगा।

(२) अपनी पार्टी को छोड़कर दूसरी पार्टी में शामिल हो जाने वाले सदस्यों की सदस्यता भी समाप्त कर दी जायगी।

(३) पार्टी के निर्देश की अवहेलना करके सदन मे अनुपस्थित रहने वाले सदस्य की सदस्यता भी समाप्त कर दी जायगी। परन्तु अनुमति ले लेने या पार्टी द्वारा पन्द्रह दिन में अनुपस्थिति को मुआफ (क्षमा) कर देने पर सदस्यता समाप्त नहीं होगी।

(४) निर्दलीय चुने जाने वाला कोई सदस्य यदि किसी राजनैतिक पार्टी में शामिल हो जायगा तो उसकी सदन की सदस्यता समाप्त हो जायगी।

(५) मनोनीत (नामजद) सदस्य को ६ महीने के अन्दर किसी राजनीतिक दल में शामिल होने की छूट होगी। इस अवधि के बाद किसी दल में शामिल होने वाले सदस्य की सदस्यता समाप्त हो जायगी।

(६) अध्यक्ष, उपाध्यक्ष या सभापति और उपसभापति चुने जाने पर राजनीतिक दल छोड़ने वाले सदस्य पर अयोग्यता की व्यवस्था लागू नहीं होगी क्योंकि इन पदों के लिए चुने जाने वाले सदस्य सदन में निष्पक्षता को बनाए रखने के लिए अपने राजनीतिक दलों से त्याग पत्र दे ही देते हैं। परन्तु वे लोग अपने मूल दल को छोड़कर किसी अन्य दल में शामिल नहीं हो सकेंगे।

(७) किसी दल का विभाजन हो जाने पर कमसे कम दो तिहाई सदस्यों के अलग हो जाने को दल बदल नहीं माना जायगा और दो तिहाई बहुमत के आधार पर राजनीतिक दलों के विलय को भी गलत नहीं माना जायगा।

(८) किसी सदस्य की सदस्यता समाप्त करने के मामले में फैसला करने का अधिकार सदन के अध्यक्ष या सभापति को होगा। उसका निर्णय अन्तिम होगा। उसे सदन की कार्यवाही माना जायगा और किसी अदालत में उसे चुनौती नहीं दी जा सकेगी।

१९६७ से १९७१ के बीच की अवधि में विभिन्न विधान सभाओं के लगभग ३५०० में से ५०० से भी अधिक सदस्यों ने दल बदल की। इसमें से कई लोग ऐसे भी थे जिन्होंने कई कई बार दल बदल किया। दूसरे शब्दों में इस अवधि मे हर सात मे से एक विधायक दल बदलू रहा।

एक और सर्वेक्षण के अनुसार १९६७ से १९७१ तक की अवधि में विभिन्न विधान सभाओं और लोकसभा में १८२१ दल बदलियां हुई। इन दल बदलुओं में १९१ लोगों को वजारती ओहदे दिए गए। एक प्रदेश में ६० दल बदल मन्त्री बनाए गए और एक प्रदेश में ३५ दल बदलुओं को मन्त्री पद प्रदान किए गए।

दल बदल के इस घृणित खेल के सम्बन्ध में जनता पार्टी के नेता श्री

(शेष पृष्ठ १३ पर)

दिया था उसकी आज हमें रक्षा करनी है। उनके उपदेश सूर्य के समान प्रभावशाली हैं। उन्होंने हमें यह भी महान् सन्देश दिया था कि हम सत्य की कसोटी पर कसकर ही किसी बात को स्वीकार करें।"

महर्षि दयानन्द देशवासियों को, शारीरिक, आत्मिक, सामाजिक दृष्टि से उन्नत, प्रशासकीय दृष्टि से सुरक्षित एवं बाहर वालों के लिए आदर्श रूप से देखना चाहते थे। अनेकानेक बाहरी प्रशस्तियों का दुहरवाना चाहते थे जिनमें से एक इस प्रकार है.—

"किसी भी प्रशासन के सुखद परिणाम मुख्यत: जनता के चरित्र पर निर्भर होते हैं। कौन-सा ऐसा प्राचीन वा अर्वाचीन राष्ट्र है जो आर्यों (हिन्दुओं) जैसा उच्च चरित्र दिखा सके। उनकी उदारता, सादगी, ईमानदारी, सत्यता, साहस, शिष्टता और नारी सम्मान उदाहरण रूप में प्रस्तुत की जाती है। सत्य तो यह है कि ये तत्व उनमें इतने अधिक समाविष्ट हैं कि कुदरत (प्रकृति) खड़ी होकर तमाम दुनिया को कह उठेगी कि मनुष्य ये ही हैं।"

देश में व्याप्त चारित्रिक अराजकता, अनेकानेक विसंगतियों, देश की अखण्डता और यहां तक कि स्वतन्त्रता के लिए खड़े खतरों की विद्यमानता में विज्ञ एवं राष्ट्र प्रेमियों के हृदयों में दयानन्द जैसे दिव्य मुक्तिदाता के पुन: आविर्भाव की कामना का उदय होना अनहोनी बात नहीं है।

जहां तक आर्य समाज का सम्बन्ध है वह अपनी शक्ति और सामर्थ्य के अनुसार अपने कर्त्तव्य पालन में निरत है और निरत रहेगा। आर्यसमाज के द्वारा स्वतन्त्रता संग्राम में दिया गया बढ़ा चढ़ा योगदान सर्वविदित है। इतना ही नही देश और विशाल समाज को उच्चकोटि के कार्यकर्मी एवं नेता देने का भी उसे श्रेय प्राप्त है।

महर्षि दयानन्द की शिक्षाएं

(ग्रन्थों से)

परमात्मा कब प्रत्यक्ष होते हैं ?

जैसे कान से रूप और चक्षु से शब्द ग्रहण नहीं हो सकता वैसे अनादि परमात्मा को देखने का साधन शुद्ध अन्तःकरण, विद्या और योगाभ्यास से पवित्रात्मा परमात्मा को प्रत्यक्ष देखता है। जैसे बिना पढ़े विद्या के प्रयोजनों की प्राप्ति नहीं होती वैसे ही योगाभ्यास और विज्ञान के बिना परमात्मा नहीं देख पड़ता। जैसे भूमि के रूपादि गुण ही को देख जान के गुणों से अव्यवहित सम्बन्ध से पृथिवी प्रत्यक्ष होती है वैसे इस सृष्टि में परमात्मा की रचना विशेष लिंग देख के परमात्मा प्रत्यक्ष होता है और जो पापाचरणेच्छा समय में भय, शंका (और) लज्जा उत्पन्न होती है वह अन्तर्यामी की ओर से है। इससे भी परमात्मा प्रत्यक्ष होता हैं। (स० प्र० स० १२)

(२) इस प्रत्यक्ष सृष्टि में रचना विशेष आदि ज्ञानादि गुणों से प्रत्यक्ष होने से परमेश्वर भी प्रत्यक्ष है और जब आत्मा मन, और मन, इन्द्रियों को किसी विषय में लगाता वा चोरी आदि बुरी वा परोपकारादि अच्छी बात के करने का जिस क्षण में आरम्भ करता है उस समय जीव की इच्छा ज्ञानादि उसी इच्छित विषय पर झुक जाती है, उसी क्षण आत्मा के भीतर से बुरे काम करने में भय, शंका और लज्जा तथा अच्छे कार्यों के करने में अभय निःशंकता और आनन्दोल्लास उठता है वह जीवात्मा की ओर से नहीं किन्तु परमात्मा की ओर से है जब जीवात्मा शुद्ध होके परमात्मा का विचार करने में तत्पर रहता है उसको उसी समय दोनों प्रत्यक्ष होते हैं।" (स०प्र० स० ७)

परमेश्वर का नाम स्मरण कैसे किया जाय ?

परमेश्वर के नामों का अर्थ जानकर परमेश्वर के गुण कर्म स्वभाव के अनुकूल अपने गुण, कर्म, स्वभाव को करते जाना ही परमेश्वर का नाम स्मरण है।" (स०प्र० स० ११)

परमेश्वर का कृपा-पात्र कौन बन सकता है ?

परमेश्वर उपदेश करता है कि:—

"(हे मनुष्यो लोगों) जो मनुष्य सबका उपकार करने और सुख देने वाले हैं, मैं उन्हीं पर सदा कृपा करता हूं अर्थात् उन्हें आशीर्वाद देता हूं।" (ऋग्वेदादि भा० भूमिका वेदोक्तधर्म)

ईश्वर की व्यवस्था में अधिक सुख किसे मिलता है ?

'जो मनुष्य जगत् का जितना उपकार करेगा उसको उतना ही ईश्वर की व्यवस्था में सुख प्राप्त होगा।

अहिंसा धर्म पर चलकर मनुष्य की क्या अवस्था हो जाती है ?

जब अहिंसा धर्म निश्चय हो जाता है तब (न केवल) उस पुरुष के मन से वैर-भाव छूट जाता है किन्तु उसके सामने का उसके सत्संग से अन्य पुरुष का भी वैर-भाव छूट जाता है।

(ऋ० भा० भू० उपासना विषय)

कितनी उम्र तक के बालकों के लिए नित्य कर्म का विधान नहीं है ?

'बालक मूर्ख (ना समझ) और छोटे होने के कारण माता-पिता के अधीन रहता है और आठ वर्ष की अवस्था तक उसमें धर्म सम्बन्धी काम करने की योग्यता नहीं होती) इसलिए हमारे धर्म शास्त्रों ने व्रत बन्ध (यज्ञोपवीत) होने से पहले बालकों के लिए नित्य कर्म का विधान नहीं किया है।"

(पूना का व्या० १४ नित्य कर्म और मुक्ति विषय)

दयानन्द बोधरात्रि

भारत रत्न मूलशंकर ने मंगलमूल विचार किया।
होकर दयानन्द ऋषि नामी, जीवन परमोदार किया॥
कौतुक देख चपल चूहे का, अबोधक रोग किया।
भवसागर के तर जाने का, परमोचित उद्योग किया॥
त्याग कुटुम्ब विलास विसारे, बनके गृही न भोग किया।
ब्रह्मचर्य व्रत धार सिधारे, सिद्ध मनोरम योग किया॥
बनकर योगिराज विज्ञानी, वैदिक धर्म प्रचार किया।
होकर दयानन्द ऋषि नामी, जीवन परमोदार किया॥

—कविवर पं० नाथूराम शर्मा 'शंकर'

बच्चों के साथ बहुत लाड़ प्यार मत करो

'उन्हीं के सन्तान विद्वान सभ्य और सुशिक्षित होते हैं जो पढ़ाने में सन्तानों का लाड़न कभी नहीं करते किन्तु ताड़ना ही करते रहते हैं।······· जो माता-पिता और आचार्य सन्तान और शिष्यों का ताड़न करते हैं वे मानों अपने सन्तान और शिष्यों को अपने हाथ से अमृत पिला रहे हैं। क्योंकि लाडन से सन्तान और शिष्य दोष युक्त तथा ताड़ना से गुण युक्त होते हैं और सन्तान शिष्य लोग भी ताड़ना से प्रसन्न और लाडन से अप्रसन्न सदा रहा करें। परन्तु माता-पिता तथा अध्यापक लोग ईर्ष्या (और) द्वेष से ताड़ना न करे किन्तु ऊपर से भय प्रदान और भीतर से कृपा दृष्टि रखें। (स०प्र० स० २)

"सन्तान और विद्यार्थियों का जितना लाडन करना है उतना ही उनके लिए बिगाड़ और जितनी ताड़ना करनी है उतना ही उनके लिए सुधार है, परन्तु ऐसी ताड़ना न करें कि जिससे अंग-भंग वा मर्म में लगने से विद्यार्थी वा लड़के लड़की लोग व्यथा को प्राप्त हो जायें।" (व्यवहा भानु)

स्वसन्तान का गुरु कौन है ?

अपने पुत्रों के प्रति गुरु होने का मुख्य अधिकार पिता को है······ इससे मुख्य कर पिता ही गुरु हो सकता है।

(वेद विरुद्ध मतखण्डन)

जो वीर्य दान से लेके भोजनादि कराके पालन करता है इससे पिता को गुरु कहते हैं और जो अपने सत्योपदेश से हृदय का अज्ञान रूपी अन्धकार मिटा देवें उसको भी गुरु अर्थात् आचार्य कहते हैं।"

(आर्योद्देश्य रत्नमाला)

अधर्मी गुरु के साथ कैसा व्यवहार करें ?

(वल्लभादि मतस्थ लोगों के गुरुपन का खण्डन करते हुए,

"ऐसे पाप कर्म कर्त्ता अधर्मी गुरु के त्यागने और मार डालने से पुण्य ही होता है, पाप नहीं। इस विषय में धर्म शास्त्र का प्रमाण है:—

'गुरु··········वा बहुश्रुत ब्राह्मण (यदि) यह सब आततायी धर्मनाशक, अधर्म के प्रवर्त्तक हो तो राजा विना विचार (उन्हें) मार डाले क्योंकि आततायी के मारने वाले को दोष नहीं लगता, उन्हें प्रसिद्ध में मारें वा अप्रसिद्ध में। सर्वथा क्रोध को क्रोध मारता है। किन्तु हिंसा नहीं कहाती। धर्म को छोड़कर सर्वथा जो अधर्म में प्रवृत्त हो वह आततायी कहाता है। (वेद विरुद्ध मत खण्डन)

प्रस्तोता—र०प्र० पाठक

दयानन्द ऋषिराज

समय था जब यह भारतवर्ष, बना भूमण्डल का सिरमौर।
अनुपम अद्भुत था उत्कर्ष, न समता का था कोई और ॥
गरजता गौरव-गरिमा गान, गगन मण्डल में सुस्वर ज्ञान।
मान महिमा में मुख्य महान्, प्रवर प्रज्ञों में पूज्य प्रधान ॥१॥

विश्व को दिया बुद्धि विवेक, दान करता था बन आचार्य।
अनोखा अतुल अकेला एक, रहा जगती में जिसका कार्य ॥
हुआ क्यों भारत जगत् प्रसिद्ध, विश्व में फैला जिसका नाम।
जगद्गुरु बना किस तरह सिद्ध, विशद विद्याबल, यही धनधाम ॥२॥

सकल वैभव का कारण एक, दिया जिसने भास्वत भूखण्ड।
हुए भारत में रत्न अनेक प्रखरतम जिनका तेज प्रचण्ड ॥
उन्हीं रत्नों में "शंकर मूल", बना जो दयानन्द ऋषिराज।
रहा जो सदा वेद अनुकूल, सजाया जिसने श्रुति का साज ॥३॥

वेद विद्या वारिधि के बीच, विन्ध्यवत् बढ़ा विलोडन हेतु।
रत्न ला धरे अनेकों खींच, बना अध्ययन साधना हेतु ॥
ब्रह्मर्षि वर वैदिक वागीश, अनुपम अद्वितीय असमान।
झुके जिसके सम्मुख शतशीश, पराविद्या में परम प्रमान ॥४॥

धन्य, "सत्यार्थ" विधाता, धन्य, वेद के वर व्याख्याता धन्य।
निगम आगम के ज्ञाता धन्य, अगम श्रुति के उद्गाता धन्य ॥
भव्य भारत के भर्ता धन्य सरस साहित्य समर्थक धन्य।
राष्ट्र-स्वातंत्र्य सुकर्ता धन्य, पुण्य पीयूष प्रवर्तक धन्य ॥५॥

विश्व में जब तक 'सूर्य' प्रकाश, गगन में जब तक उडुगण राज।
भूमि है जब तक है आकाश, सृष्टि का जब तक सारा साज ॥
रहेगा तब तक उसका नाम, बनाया जिसने आर्य समाज।
अमर है उसकी कीर्ति ललाम, वही था "दयानन्द ऋषिराज" ॥६॥

—डा० सूर्यदेव शर्मा साहित्यालंकार

बोध जगाना है

ऋषि दयानन्द ने जो पाया, वह ज्ञान हमें भी पाना है।
ऋषिका श्रुति शंख बजाना है, हमको फिर बोध जगाना है
जो धन्य मूलशंकर प्यारे, शिव निशा ईश का व्रत धारे
स्वयं तरे जग तार गए वे, दयानन्द ऋषि सूर्य सुखारे
सम्पदा सर्व को ठुकराया, त्यागा निज मोह परिजनों का
सच्चिदानन्द के बने पुत्र, शुद्ध चैतन्य सन्त हमारे ॥
ऋषि के पथ का अनुसरण सही, जग को करके दिखलाना है।
ऋषि का श्रुति शंख बजाना है, हमको फिर बोध जगाना है ॥
पाखण्ड खण्डिनी पुण्य पताका, ऋषिवर ने जो फहराई थी।
अन्याय रूढ़ियों पर आकर, जो अन्ध मठों पर छाई थी ॥
एक अकेले ने अविरल चल, था कंटक पथ को अपनाया।
नव धर्म-सूर्य से मेघ हटा, श्रुति विजय विश्व में पाई थी ॥
ऋषिवर की अरुणिम ओ३म् ध्वजा, नित लहर लहराना है।
ऋषिका श्रुति शंख बजाना है, हमको फिर बोध जगाना है ॥
भ्रम तिमिर तम को तोड़ दिया, जग जगमग जय ज्योति भरी।
मानवता का करके सिंगार, जड़ता से चेतनता उबरी ॥
दयानन्द ऋषि एक सूर्य ने, बहुसंख्य चन्द्र चमकाये हैं।
ऋषिवर का लेकर तत्व बोध, जिन धर्म क्षेत्र में क्रान्ति करी।
हे आर्यजनो होकर सचेत, ऋषि का आदर्श निभाना है।
ऋषिका श्रुति शंख बजाना है, हमको फिर बोध जगाना है ॥
श्रद्धानन्द सन्त, श्री लेखराम, लाजपतराय हे हंसराज।
अब आर्यजनों के अन्तर मे, फिर से आकर जाओ विराज ॥
ऋषि के बलिदानी सेनानी, स्वराज ध्येय के संधानी।
संकल्प पुनः सम्पुष्ट करो, ये देश रहा तुमको समाज ॥
जो दयानन्द के अनुयायी, पुरखों का मान बढ़ाना है।
ऋषिका श्रुति शंख बजाना है, हमको फिर बोध जगाना है ॥

बोध-रात्रि

(१)

आया एक मोड़ सत्य, वैदिक प्रकाश हेतु,
शिव यामिनी की भांति, घोर-तम छाया था !
आई थी अनेक बार, देश में शिव रात्रि ये,
वही जड़ पाहन को शिवजी ठहराया था !!
पिता साथ गये मूल, विविध व्यञ्जन लेके,
फल-फूल दैव भोग, शिव को चढ़ाया था !!
देखें मूल आवें शिव प्रसाद विवश हेतु,
विविध प्रकार आने बज-गान गाया था !

(२)

मूल कहा पिताजी को—"शिवजी आवेंगे कब,
रात्रि अधिक गई ये—प्रसाद को पायगा !"
पिता बोले—"यही शिव भोग लगे चलो घर,"
मूल-बोल कह—"हम पीछे घर आयगा।"
सारी गई रात्रि, आया नहीं देखा शिव,
देखा था मूषक दौड़, दौड़—आवे खायगा।
ऐसा देख मूल-मन, उथल-पुथल मची,
देखा नहीं शिव—अफसोस में रहायगा ॥

(३)

जड़को विलोक शिव-चेतन का ज्ञान हुआ,
उहा के विचार साथ खोज किये पाने को।
गये जहां देखा शिव, पाहन पूजा में लगे,
मन्दिर अनेक-शिव चले हैं दिखाने को ॥
पूछें तो बतावे शिव—"मन्दिर में आके देखो,
पाहन पूजक फिए, बोले मन-माने को।
रहे असमंजस में मूल देख पत्थर को,
सिर धुन-धुन कर लगे पछताने को ॥

(४)

अनेक विचार कर, चले शिव खोजने को,
दिल में तड़प यही, सत्य शिव पाने की।
खोजे मठ मन्दिर में, टन्न-टन्न बम्ब-बम्ब,
बोल-बोल पोप सब-करे धुन गाने की ॥
चले गिरि गुफाओं में, शिव हेतु किये खोज,
गये न सन्देह, मुनि देखी वो विराने की।
साधुओं संन्यासियों की रहा लेते चले मूल,
पता न लगावे कोई रह है ठिकाने की ॥

(५)

संशय के निवारण हेतु, गये जब मथुरा में,
मूल से भगाया भ्रम, गुरु पास जाय के।
वेद-ज्ञान दिये सत्य, वेदों की पताका स्वामी,
अविद्या अज्ञान सारा, संशय को मिटाय के।
देश में प्रकाश हुआ, घोर अन्धकार मिटा,
वैदिक विचार वेद-प्रकाश बढ़ाय के।
देश को बचाया स्वामी, जाता रसातल रोका,
'मनसार' सुखी भये, सत्य शिव पाय के ॥

—कवि कस्तूरचन्द 'मनसार'

ये सूर्य-चन्द्र तुम नहीं सही, हम तुम्हें दीप कह देते हैं।
ऋषिका प्रकाश तो पाया है, हम उससे ही बल लेते हैं ॥
अब द्वेष-द्वन्द्व को बन्द करो, ऋषि की हुंकार बुलन्द करो।
दीपकों न होना मन्द कहीं, नतिका तैल हम देते हैं ॥
ऋषि बोध-शोध सघन लेकर, आगे ही बढ़ते जाना है।
ऋषिका श्रुति शंख बजाना है, हमको फिर बोध जगाना है ॥

—देवनारायण भारद्वाज, बरेली

शिवरात्रि पर हमारा अपेक्षित संकल्प

[लेखक—डा० सत्यदेव आर्य, जयपुर]

शिवरात्री हर वर्ष आती है। सदियों से आती है—आती रहेगी। पौराणिकों द्वारा विभिन्न रूप में मनाई जाती है। व्रत उपवास रक्खे जाते हैं। रतजगा होता है। शिव जी की पूजा आराधना होती है। भांग छनती है। 'बमबम भोलेनाथ' के उद्घोषों से गले उतारी जाती है। रह रह कर आवाजें आती हैं 'बाबा तेरी जय बोलेंगे जय बोलेंगे। पौराणिक मान्यताओं में शिवरात्री का क्या महत्व है कम से कम मुझे ज्ञात नहीं, पर हम आर्यों के लिये इसका अत्यन्त ही विशिष्ट महत्व है—इसलिये कि यह बोधरात्रि है।

आज से १४८ वर्ष पूर्व इसी रात्री को किशोर मूलशंकर को बोध हुआ था। बोध यह हुआ कि जिस शिव जी की पाषाण मूर्ति पर अपवित्र चूहे उत्पात मचाएं, मिष्टान्नादि के चढ़ावे का निर्भयता से भक्षण करें और शिव जी इन्हें दूर भी न कर सकें तो यह सच्चे शिव नहीं। उसे तो बताया गया था कि शिव जी प्रचण्ड पाशुपतास्त्रधारी प्रबल प्रतापी, दुर्दान्त दैत्य दलनहारी, वर शाप प्रदाता महादेव है—परब्रह्म परमेश है, पर यह कैसे महादेव हैं जो चूहे तक को अपने ऊपर से हटा न सकें। नहीं! यह वह महादेव नहीं! तो फिर सच्चे शिव महादेव कौन से हैं? उसी को जानना चाहिए। साथ ही उसे यह भी संशय हुआ कि मूर्त्तियों पर फल पुष्प नैवेद्यादि का प्रसाद चढ़ा देने मात्र से क्या आशुतोष महादेव प्रसन्न होकर मनुष्यों के समस्त कष्ट संकटों का निवारण कर देते हैं? शायद नहीं। तो इनकी निवृत्ति के सही साधन क्या हो सकते हैं, इसे भी जानना चाहिए। ये संशय मूलशंकर के बोध का मूल कारण बनें। सच्चे शिव की खोज और संकट निवृत्ति मुक्ति प्राप्तिके साधनों की ढूढ तलाश में प्रवृत्त होने के कारण बने इसी से शिवरात्री मूलशंकर के लिए बोधरात्रि बनी। उसे मूलशंकर से महर्षि बना देने वाली रात्रि बनी। वेदों वालिया ऋषि बना देने वाली बनी और हम आर्यों के लिए बोधोत्सव का पवित्र पुनीत पर्व।

हर वर्ष हम यह पर्व मनाते हैं। महर्षि के बताये मार्ग पर चलने का संकल्प दोहराते हैं। व्यक्तिशः लिए गए संकल्प सम्भवतया कुछ अंशों में निभा पाते हैं, पर सामूहिक रूप में 'दयानन्द के वीर सैनिक बनने' और 'उसका काम पूरा करने' के संकल्प कितने निभा पाते हैं, इसका लेखा जोखा तो हमें ही लेना है। दयानन्द के मिशन को पूरा करने, उसके मन्तव्यों को घर घर पहुंचाने, सारे विश्व को आर्य बनाने की बात तो क्या, अपने अपनों को ही आर्य बनाने का दायित्व कितना निभा पाते हैं इसका मूल्यांकन तो हमें ही हृदय पर हाथ रख कर करना है।

मूलशंकर ने बोध रात्रि के समय सच्चे शिव को जान लेनेका जो संकल्प किया था उसे अपने १९ वर्ष की घोर तपस्या और सतत् साधना से पूरा किया। उसने सच्चे शिव को पहिचाना। उसने जाना कि सच्चा-कल्याण परब्रह्म परमेश्वर सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु निराकार, सर्वव्यापक, अजर अमर, सृष्टिकर्त्ता और जग-नियन्ता है, वह एक देशीय या एक स्थानीय हो नहीं सकता और न ही वह अवतारीय रूप में अवतरित ही होता है। वह तो सृष्टि का सृजनकर्त्ता सारे ब्रह्माण्ड में समाया हुआ है और सारे ब्रह्माण्ड को धारण किए हुए है। उसका न रूप है न आकार। वह तो वेद में वर्णित "स पर्यगाच्छुक्रमकायमव्रणम..." है। वह परि जगत्-व्यापक है; शुक्रम-सर्वशक्तिमान जगदुत्पादक है, अकायम्-शरीर रहित है, मूर्तिमान नहीं है, अव्रणम्-व्रण विकार रहित है, अस्नाविरम्-नाड़ी नस बन्धन रहित है, शुद्ध है, पवित्र है, पाप रहित है, कविः-सूक्ष्मदर्शी है; मनीषी है, परिभूः-सर्वोपरि वर्त्तमान है, स्वयम्भूः-स्वयं सिद्ध है, अनादि है तथा जीव के लिए यथातथ्यतः-ठीक ठीक, यथायोग्य कर्मफल प्रदाता है। अतः वह किसी स्थान विशेष पर किन्ही जीवों पण्डे पुजारियों, मठाधीशों द्वारा चार दिवारी में बन्द नहीं किया जा सकता और न ही किसी मूर्ति में प्रतिष्ठित किया जा सकता है। लेकिन महाभारत के बाद से अज्ञानान्धकार का जो घटाटोप छाया, अन्धविश्वासों और भ्रान्तियों का जो जाल फैला उसमें लोगों ने इस सच्चे शिव को परब्रह्म परमेश को भुला दिया। वाममार्गियों ने 'मद्यं मांसं च मीनं च मुद्रा मैथुनमेव च' और चारवाकों ने 'यावज्जीवं सुखम् जीवेत ऋणं कृत्वा घृतं पीवेत्' के सिद्धान्त निर्धारित कर दिए। ईश्वर के अस्तित्व तथा पुनर्जन्मके शाश्वत विधानही को नकार दिया। नास्तिकवाद फैला दिया। ऐसे ही बौद्धों ने ईश्वर शरणं गच्छामि के स्थान पर 'बुद्ध शरणं गच्छामि' का नारा दे दिया और जैनियों ने तीर्थंकरों को ही ईश्वरमान उनकी मूर्त्तियां स्थापित करने और उनकी ही पूजा अर्चना का सिलसिला शुरू कर दिया। पौराणिक फिर पीछे क्यों रहते? उन्होंने भी एकेश्वर की जगह अनेक ईश्वरों की कल्पना करके उन्हें अनेक आकार प्रकार की काल्पनिक मूर्त्तियों मे प्रतिष्ठित कर दिया। उनमें प्राण प्रतिष्ठा की भ्रामक प्रक्रियाएं निर्धारित कर दी। इतना ही नहीं ईश्वर को मनुष्य देहधारी अवतारों में भी अवतरित कर दिया। नदी तड़ाग, कूपवाव, वृक्षलता, नाग, कपि, वृषभ, मूषक (करणी मन्दिर के सफेद चूहे) आदि की भी पूजा अर्चना प्रचलित कर दी। पूजा पाठ अर्चअर्चन के निमित्त विविध पदार्थों का नियोजन कर दिया, जैसे जल दुग्ध, बिल्व पत्र, कमल, अमुक २ अन्य पुष्प, नारियल नैवेद्य, अमुक मोदक, केसर, भांग, शराब, बकरा, भैंसा आदि और यज्ञयाग में पशुबलि यहां तक कि नरबलि तक की व्यवस्था दे दी। सामाजिक क्षेत्र में जन्मना जात पांत, ऊंच नीच, छुआछूत, सवर्ण अवर्ण भेद, बाल विवाह, अनमेल विवाह, बहु-पत्नि व बहुपति विवाह, विधवा विवाह निषेध, सतीप्रथा, स्त्री शूद्रोनाधीयताम आदि की व्यवस्थाएं देकर हिन्दू जाति की जड़ों में घुन लगा दिया। हिन्दू समाज को असंगठित और अशक्त बना दिया।

महर्षि ने इन सभी कुरीतियों के विरुद्ध कड़ी आवाज उठाई। पुरजोर शब्दों में भोली भाली जनता को सचेत किया कि दुःख दर्द क्लेश आदि से छुटकारा पाने के लिए प्रचलित पूजा पाठ और अर्घ अर्चन लेशमात्र भी साधन नहीं बल्कि यह तो और भी अधिक दुःख दुर्दैन्य पैदा करने वाले कृत्य हैं। 'क्लेशकर्म विपाकाशय' से निवृत्ति और मुक्ति की प्राप्ति तो एक मात्र वेदोक्त विधान के अनुसार पुण्यात्मक कर्मों से ही प्राप्त हो सकती है। अज्ञानान्धकार और अन्धविश्वासों के घटाटोप पर कर्मठ कार्यकर्त्ता समाप्त होते जा रहे हैं। इनकी स्थानपूर्त्ति पूर्णतया हो नहीं रही है। युवा वर्ग आर्य समाज की ओर आकृष्ट होने में उदासीन है। उसके लिए कोई रोचक कार्यक्रम नहीं है। युवकों को आकर्षित किया जाना ही चाहिए।

साप्ताहिक अधिवेशनों के अनन्तर आर्य समाज का जन सम्पर्क माध्यम से प्रचार-प्रसार अपेक्षाकृत शिथिल है। हां पिछले एक दशक से शताब्दियों की बाढ़ अवश्य आई जिसमें आर्य समाज के संगठन और शक्ति का प्रदर्शन हुआ और आर्य समाज के सिद्धान्तों व महर्षि के गुण गान का उल्लेख दैनिक समाचार पत्रों तथा आकाशवाणी व दूरदर्शन के माध्यम से प्रसारित हो पाया। फिर भी आज का शिक्षित युवक अधिकांशतः महर्षि को ठीक से नहीं जानता। जब बात चलती है तो पूछता है कि क्या दया[illegible] शिव थे? अशिक्षित ग्रामीण जनता में तो महर्षि [illegible] भी अधिक सोचनीय है। प्रचलित प्रचार एवं जनसम्प[illegible]

सामाजिक सुधार, अछूतोद्धार, दलितोद्धार, शिष्टाचार, नारी शिक्षा, ब्रह्मचर्य माहात्म्य, आश्रम व्यवस्थादि पर चर्चा होती है तो महात्मा गांधी या अन्यान्य धार्मिक व सामाजिक नेताओं के नाम लिए जाते हैं जबकि इन सभी सुधारों के अग्रणी महर्षि दयानन्द थे। महात्मा गांधी ने स्वयं कहा है कि महर्षि युग प्रवर्त्तक थे। सच्चे समाज सुधारक थे। निश्चय ही हमारा यह अथक प्रयास होना चाहिए कि जहां सार्वजनिक जन सम्पर्क एवं प्रसार माध्यमों से जब कभी भी चयलित आप्त वचनों का प्रसारण हो तो केवल गांधी, बुद्ध, नानक, कबीर, अरविन्द, विवेकानन्द के वचनों का ही नहीं बल्कि महर्षि के वचनों का प्राथमिकता से प्रसारण हो। अभी हाल में दूरदर्शन पर महर्षि का यह वचन अवश्य प्रसारित हुआ था कि 'प्रत्येक को अपनी ही उन्नति में सन्तुष्ट न रह कर सब की उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिए।'

महर्षि के मन्तव्यों और आर्य समाज के सिद्धान्तों एवं कार्यकलापों का अधिकाधिक प्रचार प्रसार हो इसके लिए हमें पहले से कहीं अधिक सक्रिय प्रयास करने हैं। आज भी प्रचलित प्रचुर अन्धविश्वासों और मिथ्या मान्यताओं के विरुद्ध हमें प्रचार अभियान छेड़ना है। हर की पौड़ी पर और अन्यत्र भी आज भी असंख्य लोगों को 'गंगा मैया' अर्चना और आरती उतारते देखा जाता है। कुम्भ के मेलों व अन्य धार्मिक पर्वों पर कड़ाके की सर्दी में प्रयाग, हरिद्वार, कुरुक्षेत्र पुष्कर आदि स्थानों पर नदी-तालाबों में नहाने और अपने व अपने परिवार के सौ सौ पाप धोने की अन्ध विश्वासीय अभिलाषा में निमोनिया या अन्य संक्रामक रोगों के शिकार होते या भीड़ की भगदड़ में कुचले जाकर मौत के घाट उतरते देखा जाता है। नाग पंचमी के दिन नागों की पूजा और उनका जलूस निकाला जाता है। महाराष्ट्र के शिराला गांव में तो सार्वजनिक रूप से यह उत्सव बड़ी धूमधाम से मनाया जाता है। ऐसी गलत धारणा बना दी गई है कि इस दिन नाग-पूजा से नाग मनचाही मुरादें पूरी करते हैं। अज्ञानी अन्ध विश्वासी लोग कई दिनों पूर्व से नाग पकड़ने जंगलों में विचरते हैं। मुरादें तो क्या पूरी होती हैं कईयों को सर्प दंश से मरते अवश्य देखा जाता है। पर्वतीय स्थानों के मठ मन्दिरों में लाखों भक्तजन प्रभु दर्शनार्थ जाते हैं—बड़े बूढ़े और महिलाएं बड़ा कष्ट उठाती हैं। वैष्णोदेवी के चरणों में पहुंचते ही असाध्य रोगी भी रोगमुक्त हो जाते हैं ऐसी मिथ्या धारणाओं के फलस्वरूप लाखों भक्त जन 'मां' की जय बोलते हुए 'मां' के मन्दिर पहुंचते हैं। रोग मुक्ति तो हो नहीं पाती पर दुर्गम कष्टदायी मार्गों से होकर जाने में कई रोगी तो शायद अपनी देह मुक्ति ही कर बैठते हैं। वैष्णोदेवी के दर्शनार्थ सन् ८२ में जहां ७.७७ लाख भक्त जन गए वहां सन् '८३ में ८.७० लाख और सन्' ८४ में लगभग ९ लाख। बढ़ते अन्ध विश्वास का यह अच्छा द्योतक है। चलचित्र इस दिशा में अधिक भूमिका निभा रहे हैं। अधिकांश धार्मिक चलचित्रों में देवी देवताओं के काल्पनिक चमत्कारों का चित्रण होता है।

महर्षि ने इन अन्ध विश्वासों के प्रति जो अलख जगाया था उसे आज भी उतने ही, जोर शोर से जगाने की आवश्यकता है। इसके लिए आर्यजगत् के लब्ध प्रतिष्ठ महानुभावों को मिल बैठ कर कोई ठोस कार्यक्रम बनाना है और उसके क्रियान्वयन की रीति नीति निर्धारित करनी है। युवावर्ग को इसमें सक्रियता से संयोजित करना है। यही सब करने का हमें इस बोध-रात्रि पर संकल्प लेना है और इसे पूरा करने में पूर्ण निष्ठा एवं लगन से लगना है। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा से इस दिशा में यथेष्ट आदेश एवं मार्गदर्शन की उत्सुकता से अपेक्षा है।

टिप्पणि:—सार्वदेशिक सभा ने आर्य समाजों में भावी कार्यक्रम प्रचारित किया हुआ है और वह क्रियान्वित भी हो रहा है।

—सम्पादक

महात्मा गांधी और आर्य समाज

—श्री ला० ज्ञानचन्द जी ठेकेदार

(३)

अतः उपर्युक्त प्रमाणों से जहां मेरे ऊपर के इस कथन की पुष्टि होती है कि महात्मा जी की समालोचना केवल राजनीतिक प्रयोजन के लिए थी और वह बड़े दुःख की अवस्था में असावधानी से की गई थी, वहां आपकी अति वैमनस्य और असावधान दशा में की गई समालोचना के ठीक होने को भी सन्दिग्ध बनाती है। इस हेतु यहां पर यह कहना बहुत ठीक होगा कि महात्मा जी की इस खेद अथवा दुःख की अवस्था में केवल देश के प्रयोजनार्थ आर्यसमाज और उसके प्रवर्त्तक के धार्मिक मन्तव्यों और कार्यों पर की हुई समालोचना आपकी सरासर भूल थी। आपको सम्मति देने वाले आर्य समाज की धार्मिक और सामाजिक कार्य-तत्परता से भयभीत, उसके धार्मिक विरोधियों की ओर से आर्यसमाज के विरुद्ध सनातन धर्मी हिन्दुओं और जैनियों आदि को भड़का कर आर्यसमाज को कुचलने अथवा निर्बल बनाने वाली एक राजनीतिक चाल थी, जिसका यंत्र सरल-हृदय महात्मा को सम्भवतः यह विश्वास दिलाकर बनाया गया होगा कि आर्य समाज ही हिन्दू मुस्लिम एकता में एक रुकावट और दंगों का कारण है, और उसकी जड़ में आर्यसमाज के प्रवर्त्तक के रचे सत्यार्थप्रकाश के लेख हैं। यदि इसका प्रभाव सर्वसाधारण हिन्दुओं पर न रहे तो ऐक्य होना और दंगों का रुकना सम्भव है।

पाठक वृन्द ! मैंने जो कुछ कहा है वह मेरी कोरी कल्पना नहीं है। इसके लिए प्रबल प्रमाण मौजूद है और वे यह हैं कि महात्मा जी ने न केवल अपने झूठे विश्वास कर लेने के स्वभाववश अपने साथी मुसलमान कार्यकर्त्ताओं के प्रभाव में पड़कर अपनी प्रसिद्ध घोषणा में आर्यसमाज और उसके प्रवर्त्तक पर अनुचित आक्षेप ही किये वरन् ऋषि दयानन्द और आर्यसमाज ने जिन इस्लामी सिद्धान्तों की असत्यता को प्रकट किया था, केवल उनको महात्मा गांधी ने मुसलमानों के पक्षपातवश इस्लाम की रक्षा के विचार से ही उनके प्रभाव को नष्ट करने के लिए, जहां इस्लाम की अयुक्तिपूर्ण प्रशंसा की, वहां हिन्दुओं को इस्लाम की प्रतिष्ठा करने की प्रेरणा की, इसका प्रमाण आपके निम्नांकित लेखों से अच्छी तरह मिलता है—"जब पश्चिम अन्धकार और अप्रसिद्धि के गर्त्त में पड़ा था, पूर्वी क्षितिज पर एक तारा चमका और समस्त संसारको उसने प्रकाश और सुख पहुंचाया। इस्लाम कोई झूठा मजहब नहीं है अगर हिन्दू इसे सच्चे दिल से सन्तोष के साथ पढ़ें तो वह इसका उतना ही सम्मान करेंगे जितना मैं करता हूं।" (यंगइण्डिया, २९ मई, सन् १९२४, नव जीवन सन् १९२४, तेज दिल्ली, २ जून १९२४)।

शिवरात्रि पर्व और उसका महत्व

—आर्या मीरा यति, ज्वालापुर

हमारे भारत देश में त्योहारों का बहुत प्रचलन है। प्रत्येक धर्मको मानने वाले अपने अपने त्योहारों को भिन्न-भिन्न प्रकार से मनाते हैं। उनमें कुछ ऐसे त्योहार भी हैं जिनको अधिक लोग मिलकर मनाते हैं जैसे दीपावली,

आज जिस पर्व को हम सब लोग मना रहे हैं उसे शिवरात्रि के नाम से प्राय: लोग प्रकाश करते हैं। शिव शब्द शिवु कल्याणं धातु से बना है जिसका अर्थ होता है कल्याण करने वाला (कल्याण स्वरूप) अथवा मंगल करने वाला रात्रि का अर्थ रात होता ही है इसलिए इसे कल्याण करने वाली रात्रि कहते हैं।

हमारे पौराणिक लोग शिव के असली अर्थ को न जानकर दूसरे ही ढंग से इस पर्व को मनाते हैं। वे सब लोग आज के दिन व्रत रखते हैं और मंदिर में जाकर दिन में कई बार शिवजी की मूर्ति की पूजा करते हैं। इन लोगों की पूजा का प्रकार यह है कि शिवजी की प्रतिमा के मस्तक पर चन्दन का तिलक लगाते हैं और उसके आगे फल फूल नैवेद्य चढ़ाते, अगरबत्ती जलाते हैं। परन्तु शिवजी की प्रतिमा के ऊपर इन सब बातों का कोई प्रभाव नहीं पड़ता क्योंकि वह असली शिवजी तो नहीं है। यदि असली हों तो कुछ ग्रहण भी करलें वह तो ठहरे पत्थर के नकली शिवजी महाराज इस लिए उनके ऊपर मच्छर, मक्खी, चींटी, चूहे इत्यादि आकर चढ़ा हुआ नैवेद्य खोजते हैं और इन पौराणिक लोगों को फिर भी समझ नहीं आती वह फिर भी पूजा के ढंग को बदलने का प्रयास नहीं करते। वही पुरानी घिसी पिटी परम्परा को लिए चले आ रहे हैं। इससे क्या लाभ होता है वह इस ओर ध्यान ही नहीं देते वस्तु।

विचारणीय बात तो यह है कि जिस दिन शिवरात्रि का पर्व हो लोग इस झूठे व्रत को छोड़कर सत्य बोलने का व्रत लें। दृढ़ निश्चय से प्रतिज्ञा करें कि हम आयु पर्यन्त सत्य ही बोलेंगे। फिर शिवजी के गुणों को अपने जीवन के अन्दर धारण करे। वह लोग समाधि लगाया करते थे उनका जीवन भक्ति के रस से ओत-प्रोत था वह दीन-दुखियों के हित चिन्तक थे। हमारे वह बन्धु भी अपने जीवन में शिवजी की तरह गुणों को अपनाएं तो मैं समझती हूं कि वह सच्चे अर्थों में पूजा करते हैं। यदि वह केवल व्रत रख कर बढ़िया बढ़िया स्वादिष्ट भोज्य पदार्थ खाकर मन्दिर में जाकर केवल फूल चढ़ाकर दो चार पैसा शिवजी की प्रतिमा के आगे धरकर या कीर्तन जय शिव, जय शिव, करके घर आ जाते हैं तो बहुत भारी भूल करते हैं। इससे केवल समय ही नष्ट होता है मैंने यह बिलकुल यथार्थ लिखा ही है।

परन्तु आर्य लोग शिवरात्रि के पर्व को दयानन्द बोध रात्रि के नाम से पुकारते हैं। क्योंकि इस रात्रि ने मूलशंकर को दयानन्द बनने का मंगलमय मार्ग दिया था। यदि महर्षि को बोध न होता तो आज विश्व में वैदिक धर्म रूपी सूर्य का प्रकाश हुआ है वह न होता। यह बोध केवल दयानन्द को ही नहीं हुआ इसके प्रसाद का समस्त विश्व ही भोगी है। यदि इस रात्रि में बालक मूल शंकर सो जाता तो विश्व का भाग्य ही सो जाता। इस लिए आर्य लोगों को इस रात्रि पर विशेष गर्व है।

हमारे कुछ भाईयों ने आर्यों का क्या नामकरण किया है वह कहा करते हैं आर्य तो प्लेग की बीमारी है जैसे प्लेग चूहे से शुरू होती है इसी तरह से आर्य भी चूहे से ही तो शुरू हुए हैं। हमारा उनको यह कहना है कि जिस तरह से प्लेग का रोग फैलने पर सारे शहर की सफाई की जाती है इसी तरह से आर्यों ने संसार में जो अविद्या जन्य रोग थे उनको दूर करके भली प्रकार से सफाई कर दी। आज भारत में रहने वाले भिन्न-भिन्न मत सम्प्रदायों के मानने वाले भी महर्षि जी की बातों को सहर्ष स्वीकार करने लगे हैं कहां तो लोग पैदा होते ही कन्या को मार देते थे आज किसी परिवार में कन्या का जन्म होता है तो प्राय: कन्या के माता पिता को यही कहते सुना जाता है कि अजी लड़के और लड़की में क्या अन्तर है। उल्टा लड़कियां तो अच्छी होती हैं। यह तो पुत्रों से अधिक माता-पिता की सेवा करती हैं हमतो बड़े प्रसन्न हैं घर में लड़की आ गई है। कहां कहा करते थे पत्थर पैदा हो गया है। यह उस महर्षि जी का ही प्रताप है।

फिर पुरातन काल में लड़कियों की बचपन में ही शादी कर दी जाती थी इसमें वह निम्नलिखित श्लोकों का प्रमाण दे देते थे।

श्लोक:—अष्ट वर्षा भवेद गोरी नववर्षा च रोहिणी भवेत्कन्या तत ऊर्ध्वं रजस्वला माता चैव पितातस्या ज्येष्ठो भ्राता तथैव च। त्रयस्ते नरकं यान्ति दृष्टवाकन्या रजस्वलाम् ॥

यह श्लोक पाराशरी और शीघ्र बोध में लिखे हैं। महर्षि दयानन्द जी महाराज ने इन सबको उलट करके वेद और मनुस्मृति के आधार पर लोगों को बताया, कि कन्या की आयु कम से कम सोलह वर्ष और वर की आयु २५ वर्ष की होनी चाहिए तभी विवाह करें। यदि कोई अपनी पुत्री का विवाह इससे छोटी आयु में करता है तो वह घोर अपराध करता है। महर्षि जी की इस बात का भी लोगों पर इतना प्रभाव पड़ा और लोग मानने लग गए। अब देखो कोई जैनी हो या बौद्ध हो या पौराणिक सब लोग अठारह बीस वर्ष की आयु से कम अपनी पुत्रियों का विवाह नहीं करते। यह महान अन्तर स्वामी दयानन्द जी के कारण हुआ और उनके बोध होने का ही फल है।

फिर उस समय लोग कहते थे कि नारियों को विद्या नहीं पढ़ानी चाहिए। स्वामी जी महाराज ने इसके लिए बहुत प्रयत्न किया। परन्तु अन्य लोगों ने इसका घोर विरोध किया। फिर भी स्वामी जी दृढ़ निश्चय से प्रयत्नशील रहे। उसके लिए उन्हें बहुत संघर्ष करना पड़ा परन्तु अन्त में विजयश्री प्राप्त हुई।

अब देखो सब लोग अपनी लड़कियो को बी० ए०, एम० ए०, पी. एच. डी. तक करवा रहे है। यह नहीं कि ब्राह्मण क्षत्रिय ही अपनी लड़कियों को पढ़ाते हों आज शूद्र कहे जाने वाले लोगो की लड़कियां भी पढ़ लिखकर ऊंचे

ऊंचे पद पर आसीन हैं। महर्षि जी ने पैर की जूती को सिर का मुकुट बना दिया। हमारे ही देश में स्व० श्रीमती इन्दिरा गांधी जी ने पन्द्रह वर्ष के लगभग प्रधानमन्त्री के पद पर कार्य किया वह भारत देश का ही गौरव नहीं थी वह गुट निरपेक्ष की भी अध्यक्ष थी। उनके किए हुए कार्य को देखकर विदेशी भी चकित हो रहे थे, कि एक महिला इतना काम करती है। उसके अन्दर अनन्त गुण थे तभी उसकी मृत्यु पर भारत ही नहीं विश्व के लोग आंसू बहा रहे थे। महर्षि जी ने नारी जाति को फर्श से उठाकर अर्श पर बिठा दिया। तभी लोग उनके गीत गा रहे हैं। एक कवि ने ठीक ही लिखा था।

युग युग तक अमर रहेगी ऋषि दयानन्द की गाथा।
मानव उसको स्मरण करेगा कहकर भारत माता॥

इसी प्रकार से हमारे देश में छुआछूत का बहुत रोग फैला हुआ था। यदि किसी सवर्ण के साथ हिन्दु का वस्त्र भी लग जाता था तो वह अपने को भ्रष्ट हुआ समझता था और उसी समय वस्त्र उतार कर धोता और स्नान कर दूसरे वस्त्र बदलता था। परन्तु अब यह बातें कहीं देखने को भी नहीं मिलतीं। सबसे प्रथम आर्य समाज ने ही अछूतोद्धार का काम किया। स्वामी श्रद्धानन्द जी ने गुरुकुल कांगड़ी खोला तो उसमें हरिजन लड़के भी पढ़ने के लिए रखे हुए थे। कई लोग स्वामी जी से झगड़ा करते थे परन्तु उन्होंने परवाह नहीं की उसके फलस्वरूप धीरे-धीरे लोग समझने लगे। महर्षि जी के पुण्य प्रताप से अब यह छुआछूत प्रायः समाप्त हो चुकी है। उन्होंने अपने समय में लोगों को समझाया कि कोई ऊंचा और नीचा नहीं है सब एक परम पिता की सन्तान है उन्होंने वेद का प्रमाण देकर बताया कि देखो वेद प्रभु की वाणी है प्रभु अपनी वाणी में स्वयं ही कह रहे हैं :

मित्रस्याहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे।
मित्रस्य चक्षुषा समीक्षा महे॥

अर्थात सब को मित्र की दृष्टि से देखो। स्वामी जी अपने उपदेशों में यही बताया करते थे कि परमात्मा सब के हृदय में रम रहे हैं। यदि उसका साक्षात्कार करना चाहते हो तो उसकी बनाई हुई सृष्टि से घृणा नहीं अपितु स्नेह करो। ऋषि जी के इन उपदेशों का लोगों पर बहुत प्रभाव पड़ा उसके फलस्वरूप आज नक्शा ही बदल गया।

पाठक वृन्द यह कितनी भारी उपलब्धि है। इसी प्रकार के अन्य अनेक प्रकार के रोग थे जिनका शमन महर्षि जी ने किया। उनके पीछे भी बहुत कार्य हुआ। जो सुधार का काम आर्यसमाज ने आज तक किया ... में एक भी संस्था ऐसी नहीं हुई जिसने इतना सुधार का काम किया हो। उन लोगों का इस ओर कभी ध्यान ही नहीं जाता वे लोग तो अपने धर्म को चौका चूल्हा तक ही सीमित रखते हैं उनके हृदय इतने विशाल कहां हैं।

स्वामी दयानन्द जी ने आज के इस पवित्र दिन में ... सदा के लिए त्याग कर सच्चे शिव की प्राप्ति का मार्ग पकड़ा था। इसलिए वह महान बने। उनके सूर्य की तरह प्रकाशमय जीवन को देखकर किसी कवि ने लिखा था।

अन्धकार की पूर्ण रजनी में देव सूर्य सा आया था,
मिटती मानवता का रक्षक क्रांति किरण ले आया।
प्रेम २ का राग मिलन का अदभुत स्वर में गाया,
मुग्ध हुए जो भी सुन पाए अपना नाम भुलाया॥

आज भारत के कोने-कोने में ही नहीं, विदेशों में भी जहां आर्य समाजें हैं वहां पर आर्य वानप्रस्थाश्रम या संन्यास आश्रम है वहां पर यह ऋषि बोध पर्व के नाम से सब आर्य लोग धूमधाम से इस पर्व को मना रहे होंगे। फिर टंकारा में तो इस वर्ष रजत जयन्ती मनाई जा रही है वहां पर अनेकों विद्वान, साधु महात्मा महर्षि जी को अपनी ओर से श्रद्धा सुमन भेंट कर रहे होंगे।

इस पुनीत पर्व पर हम सबका यह नैतिक कर्तव्य हो जाता है, कि हम महर्षि जी के बताये हुए मार्ग पर स्वयं चलकर दूसरों को भी चलाने का प्रयास करें। हम अधिक से अधिक वेद प्रचार का कार्य वाणी और लेखनी से करें तभी हम महर्षि जी के चरणों में सच्ची श्रद्धांजलि अर्पित कर सकेंगे। अन्त में मेरी मंगलमय देव प्रभु से यह प्रार्थना है कि मुझे वह इसी तरह से वेद प्रचार का कार्य करने की शक्ति अन्तिम श्वांस तक देते रहें ताकि मैं उस देव दयानन्द के ऋण से उऋण होकर इस जीवन यात्रा को सफल करके ही परलोक गमन करूं।

उत्सव

आर्य समाज मवाना कलां का शताब्दी समारोह दिनांक १८,१९,२०,२१ व २२ फरवरी १९८५ ई० को मनाया जा रहा है।

आर्य समाज सिलीगुड़ी का १२वां वार्षिकोत्सव १५ से १७ फरवरी ८५ तक मनाया जायगा जिसमें श्री स्वा० सत्यप्रकाश श्रीमती सावित्री देवी शर्मा वेदाचार्य बरेली श्री प्रियदर्शनजी सि० भूषण कलकत्ता तथा श्री पं० सत्यपाल पथिक (आकाशवाणी के कलाकार, अमृतसर) आर्य विद्वान एवं उपदेशक भजनोपदेशक सम्मिलित होकर जनता को लाभान्वित करेंगे।

सर्वेश्वर जी, मन्त्री

ऋषि दयानन्द और बोधोत्सव

—श्री प्रो० सत्यव्रत जी सिद्धांतालंकार

उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य तथा अन्तिम चरण में भारत का भाग्य एक नया मोड़ ले रहा था। सदियों से सुप्त पड़ी इस देश की चेतना अव्यक्त से व्यक्त की तरफ सुषुप्ति से जागृति की तरफ प्रगति की तरफ अग्रसर हो रही थी। इस जागृत चेतना की अभिव्यक्ति का क्या रूप था? सदियों से सोई पड़ी यह चेतना जब भारत के नव प्रभात में अंगड़ाई लेकर आंख खोलने लगी, तब १७७२ में बंगाल में राजाराम मोहनराय ने और १८३४ में रामकृष्ण परमहंस तथा इसी काल के आस पास स्वामी विवेकानन्द ने जन्म लिया, १८२४ में गुजरात में महर्षि दयानन्द ने जन्म लिया, १८९३ में मद्रास में थियोसोफिकल सोसाइटी ने जन्म लिया, १८८४ में महाराष्ट्र में प्रार्थना-समाज ने और दक्खन एजूकेशन सोसाइटी ने जन्म लिया और इसी काल में मुसलमानों में चेतना के संचार के लिए सर सैयद अहमद ने जन्म लिया। ये सब भारत की विभूतियां थीं और इस देश के नव-निर्माण का सपना लेकर गंगा और हिमालय की इस देव-भूमि का सदियों का संकट काटने के लिए प्रकट हुई थीं।

उन्नीसवीं शताब्दी में भारत में जिन विभूतियों ने जन्म लिया उनमें से ऋषि दयानन्द का बोधोत्सव पर्व हम आज मना रहे हैं। ऋषि दयानन्द आये थे समय के दास बनकर नहीं आये, समय को अपना दास बनाने के लिए आये। महापुरुष यही कुछ करते हैं। हम समझते हैं कि हमें जमाने के अनुसार चलना है, महापुरुष जमाने की गर्दन पकड़ कर उसे अपने अनुसार चलाते है। वे खुद नहीं बदलते, जमाने को बदलते हैं। एक समाज शास्त्री ने कहा है कि यह जीवन एक ललकार है, एक चेलेंज है, आह्वान है। साधारण लोग इस ललकार को सुन कर, इस चेलेंज और इस आह्वान को देखकर जीवन-संग्राम से भाग खड़े होते हैं, जमाने का रंग पकड़ लेते है, महापुरुष जीवन की ललकार का, जीवन के आह्वान का उत्तर देते है, वे इस चेलेंज का जवाब देते हुए जीवन की समस्याओं के साथ जूझ जाते हैं, जूझते हुए प्राणों की बाजी लगा देते हैं, परन्तु इस संघर्ष में पीठ नहीं दिखाते हैं, जमाने को पलट देते हैं।

ऋषि दयानन्द जब इस देश के रणांगन में उतरे तब उन्हें चारों तरफ ललकार ही ललकार सुनाई दी, चारों तरफ चेलेंज ही चेलेंज नजर आए। सबसे बड़ा चेलेंज था विदेशी राज्य का। उनके सामने ललकार उठी—क्या विदेशी राज्य को बर्दाश्त करोगे? ऋषि दयानन्द की आत्मा ने जवाब दिया—विदेशी राज्य को बर्दाश्त नहीं करूंगा। उन्होंने राजस्थान के राजाओं को अंग्रेजी शासन के प्रति विद्रोह करने के लिए तैयार करना शुरू किया। ऋषि दयानन्द के जीवन का बहुत बड़ा भाग राजस्थान के राजाओं को संगठित करने में बीता।

१८७१ में इस देश के गवर्नर जनरल लार्ड नार्थब्रुक थे। कलकत्ता के लार्ड बिशप ने लार्ड नार्थब्रुक तथा ऋषि दयानन्द में एक भेंट का आयोजन किया। इस भेंट में दोनों में जो बातचीत हुई उसका विवरण लार्ड नार्थब्रुक ने अपनी डायरी में किया। यह डायरी लंदन में इंडिया-हाऊस में आज भी सुरक्षित है।

लार्ड नार्थब्रुक ने कहा—'पंडित दयानन्द, आप मत-मतान्तरों का खंडन करते हैं। हिन्दुओं, ईसाइयों, मुसलमानों के धर्म की आलोचना करते है। क्या आप को अपने विरोधियों से किसी प्रकार का खतरा नहीं है? क्या आप सरकार से किसी प्रकार की सुरक्षा नहीं चाहते?'

ऋषि दयानन्द ने उत्तर दिया—"अंग्रेजी राज्य में सबको अपने विचार प्रकट करने की पूरी स्वतन्त्रता है इसलिए मुझे किसी से किसी प्रकार का खतरा नहीं है।" इस पर खुश होकर गवर्नर जनरल ने कहा कि "अगर ऐसी बात है तो आप अपने व्याख्यानों में अंग्रेजी राज्य के उपकारों का वर्णन कर दिया कीजिए। अपने व्याख्यान के प्रारम्भ में जो आप ईश्वर प्रार्थना किया करते हैं, उसमें देश पर अखण्ड अंग्रेजी शासन के लिए भी प्रार्थना कर दिया कीजिए।"

यह सुनकर ऋषि दयानन्द ने उत्तर दिया—"श्रीमान जी, यह कैसे हो सकता है? मैं तो सायं प्रात: ईश्वर से यह प्रार्थना किया करता हूं कि इस देश को विदेशियों की दासता से शीघ्र मुक्त करे।"

लार्ड नार्थब्रुक ने इस घटना का उल्लेख अपनी उस साप्ताहिक डायरी में किया जो वे भारत से प्रति सप्ताह हर मैजेस्टी महारानी विक्टोरिया को भेजा करते थे। इस घटना का उल्लेख करते हुए वे लिखते हैं कि "मैंने इस बागी फकीर की कड़ी निगरानी के लिए गुप्तचर नियुक्त कर दिए हैं।"

देश की परतन्त्रता ही ऋषि दयानन्द के सन्मुख चेलेंज बनकर नहीं खड़ी थी, वे अपने समाज में जिधर नजर उठाते थे उन्हें चेलेंज ही चेलेंज दीख पड़ते थे, उनके कान में देश की समस्याओं की ललकार ही ललकार सुनाई पड़ती थी। वे महापुरुष इसलिए थे क्योंकि वे किसी चेलेंज को सामने देखकर दम तोड़कर नहीं बैठते थे, किसी ललकार को सुनकर चुप नहीं रहते थे। समाज की हर समस्या से वे जूझे, हर फ्रंट पर डटे, हर अखाड़े में छाती तानकर खड़े रहे। कौन सी समस्या नहीं थी जो इस देश के महावृक्ष को घुन की तरह खा रही थी। स्त्रियों को पर्दे में बन्द रखा जाता था, उन्हें शिक्षा का अधिकार नहीं था। ऋषि दयानन्द ने रूढ़िवादी समाज की इस ललकार का उत्तर दिया। ऋषि दयानन्द ने पहले पहल आवाज उठाई कि स्त्रियों को वे सब अधिकार हैं जो पुरुषों को हैं। जैसे वेदमन्त्रों का साक्षात्कार करने वाले पुरुष ऋषि हैं, वैसे वेदमन्त्रों का साक्षात करने वाली स्त्री ऋषिकाएं भी हैं। लोपामुद्रा, श्रद्धा, विश्ववारा, यमी, घोषा आदि स्त्री ऋषिकाओं के नाम पाए जाते हैं। ऋषि दयानन्द ने 'स्त्री शूद्रौ नाधीयाताम्' के नारे को रद्दी की टोकरी में फेंक दिया। 'शूद्र' संज्ञा देकर समाज के जिस वर्ग के साथ हम अन्याय तथा अत्याचार कर रहे थे, जिन्हें हमने मनुष्यता के अधिकारों से भी वंचित कर दिया था, उनके अधिकारों की रक्षा के लिए वे उठ खड़े हुए। ऋषि दयानन्द ने सामाजिक व्यवस्था के लिए एक नया दृष्टिकोण दिया। उन्होंने जन्म की जात-पांत को मानने से इन्कार कर दिया। जब जन्म से जात पांत ही नहीं, न कोई जन्म से बड़ा न जन्म से छोटा, तब शूद्र कौन और अछूत कौन? समय था जब समाज के एक वर्ग के लिए 'अछूत' शब्द का प्रयोग किया जाता था। आज हम उसके लिए 'हरिजन' शब्द का प्रयोग करते हैं। परन्तु किसी को हम 'अछूत' कहें, या 'हरिजन' कहें—अर्थ दोनों का एक ही है, वह हमसे अलग हैं, एक पृथक वर्ग का है, हमारे समाज का हिस्सा नहीं। आर्य समाज ने 'अछूत' शब्द का प्रयोग नहीं किया, 'हरिजन' शब्द का प्रयोग भी नहीं किया। आर्य समाज ने 'दलित' शब्द का प्रयोग किया। 'दलित'—अर्थात्, जिसे मैंने दल रखा है, जिसके अधिकारों को मैंने ठुकरा रखा है। 'अछूत'—शब्द में जिसे 'अछूत' कहा गया उसे बुरा माना गया, मैंने दूसरे को दबाया इसीलिए बुरा माना गया। ये दोनों शब्द एक ही भाव को व्यक्त करते हैं, परन्तु दोनो में दृष्टिकोण कितना भिन्न हो जाता है। आर्य समाज ने इस बात को समझा कि जब हम 'अछूत' शब्द का, या 'हरिजन'—शब्द का प्रयोग करते है, तब हम समाज की समस्या ही बने रहने देते हैं, चेलेंज चेलेंज ही बना रहता है। यही कारण है कि पहले 'अछूत' एक वर्ग बना हुआ था, अब 'हरिजन' एक वर्ग बन गया है, और वह समाज के एक पृथक वर्ग के तौर पर अपने अधिकार मांगता है। जब तक हम 'अछूत' या 'हरिजन' बने रहेंगे तभी तक तो विशेष अधिकारों की मांग कर सकेंगे, इसलिए जिस रास्ते पर हम चल रहे हैं उस पर तो 'अछूत' या 'हरिजन' बने रहना नफे का सौदा है। आज अनेक ब्राह्मण बालक अपने को 'अछूत' या 'हरिजन' कहलाना पसन्द करते हैं क्योंकि उससे उन्हें छात्रवृत्ति मिलती है, राजनीति के अखाड़े के अनेक उम्मीदवार अपने को 'अछूत' या 'हरिजन' सिद्ध करने के लिए अदालतों में दौड़ते हैं क्योंकि इससे उन्हें असेम्बली या पार्लियामेंट की मेम्बरी मिलती हैं। परन्तु इससे क्या समाज की समस्या हल होगी? ऋषि दयानन्द इस समस्या से जूझे थे। उन्होंने समाज के शब्द कोष से 'अछूत'—शब्द को ही हटा दिया था।

समाज जीता-जागता एक चेलेंज है, चारों तरफ से ललकार है, आह्वान है, पुकार है। हम इस चेलेंज का जवाब इस ललकार और आह्वान का प्रत्युत्तर देंगे या नहीं देंगे? हम समाज के चेलेंज को देखते हुए भी नहीं देखते, ललकार को सुनते हुए भी नहीं सुनते। शरीर में पीड़ा हो, उसे जो

सार्वदेशिक सभान्तर्गत स्थिर निधियां

(गतांक से आगे)

(१९८३–१९८४)

पुरानी स्थिर निधियां

श्रीमती कौशल्या देवी (अमृतसर) स्थिर निधि

श्रीमती कौशल्या देवी (१६ मजीठा रोड़ अमृतसर) ने (दस हजार रुपया मात्र) के दान से यह स्थिर निधि कायम की है। इसके ब्याज से वेदाध्ययन करने वाले छात्र-छात्राओं को छात्र-वृत्तियां दी जाया करेंगी। २१-३-१९७६ को अन्तरंग बैठक ने इसकी स्वीकृति दी। बाद में इस निधि को बढ़ाकर इन्होंने १२०००) कर दिया। इस वर्ष ब्याज का छात्रवृत्ति के रूप में ९६०) व्यय हुआ।

स्व० राजवैद्य मूलचन्द जी आर्य (दिल्ली) स्थिर निधि

६५००) (छः हजार पांच सौ रुपया मात्र) के दान से स्व० राजवैद्य मूलचन्द आर्य स्थिर निधि स्थापित की गई है। इसके ब्याज से आर्य गुरुकुल एटा (उत्तर प्रदेश) में पढ़ने वाले छात्र को सहायता दी जाया करेगी। २७-३-७३ की अन्तरंग बैठक ने इसकी स्वीकृति दी। इस वर्ष ब्याज के ५२०) जमा हुए। गत शेष ५४८)८० था। आर्य गुरुकुल एटा को पांच सौ बीस रुपए दिया गया। शेष ५४८)८० रहा।

श्रीयुत माधोप्रसाद तथा श्रीमती विद्यावती स्थिर निधि

यह निधि श्री माधोप्रसाद आर्य वानप्रस्थ आश्रम ज्वालापुर (सहारनपुर) ने दस हजार के दान से कायम की है। इसकी स्वीकृति १६-११-१९७५ की अन्तरंग बैठक ने दी। इस निधि का ब्याज वैदिक धर्म के प्रचार एवं समाज कल्याण पर खर्च होगा। बाद में बढ़ाकर यह राशि १५ हजार रुपए कर दी गई। इसके अतिरिक्त उन्होंने १५ हजार रुपए धरोहर रूप में जमा कराया था जो बढ़ाकर २० हजार रुपया कर दिया गया, तथा यथा समय स्थिर निधि में परिवर्तित होगा। गत वर्ष १ हजार ६ सौ रुपया जमा था। १ हजार दो सौ रुपए इस वर्ष का ब्याज जमा हुआ। व्यय २ हजार रुपया हुआ। शेष ८००) जमा रहा।

स्व० लाला बाबूराम शाहदरा दिल्ली स्मारक स्थिर निधि

दिल्ली शाहदरा के प्रसिद्ध एवं वयोवृद्ध आर्य स्व० लाला बाबूराम जी ने एक वसीयत के द्वारा जो दान किया था उसमें से इस सभा को लगभग ४५ हजार नकद १ मकान, १ प्लाट २ सौ वर्ग गज का प्राप्तव्य था। ४६०५१)५३ नकद प्राप्त हुआ तथा शाहदरा का मकान ४ हजार रुपए में बेच दिया गया। १९-३-६४ की अन्तरंग ने यह दान स्वीकृत किया था। इस दान से सभा शाहदरा में बाबूराम आर्य औषधालय के नाम से एक आयुर्वेदिक औषधालय चलाती रही है जो अब अनिवार्य कारणों से बन्द है।

दयानन्द आश्रम

२२५०) की यह निधि शुद्ध हुए मुसलमान बन्धुओं (नव मुस्लिमों) की सहायतार्थ १९२७ में कायम की गई थी। इसका ब्याज इसी कार्य में व्यय होता है।

श्री धरियालाल जी का दान

श्री धरियालाल जी जानकीगंज लश्कर ग्वालियर निवासी ने वेद प्रचारार्थ ५ हजार रुपये की राशि २१-१-१९६० को सभा को दान में दी थी।

लाला जगन्नाथ जी का दान

स्व० श्री लाला जगन्नाथ जी दिल्ली निवासी ने अपनी पांच हजार रुपए की पोस्ट आफिस की जीवन बीमा पालिसी इस सभा को दान में दी थी। इसमें से २ हजार रुपए दानी के निर्देशानुसार सर्वदानन्द साधु आश्रम हरदुआगंज को दे दिए गए थे, शेष ५३०५)८६ सभा को प्राप्त हुए थे। इसका ब्याज वैदिक साहित्य के प्रकाशन पर व्यय किया जाता है। शेष ५३०५)८६ पर गत वर्ष तक ब्याज के ३२६५)७६ जमा थे। इस वर्ष ब्याज के २६५) जमा हुए। वर्ष के अन्त में ३५३०)६६ जमा रहे।

इस ब्याज से श्री स्व० वैद्य रामगोपाल शास्त्री जी की 'आर्य दास आर' अंग्रेजी पुस्तक २ हजार छपवाई थी।

श्री मोहनलाल लखोटिया स्थिर निधि

श्री मोहनलाल जी लखोटिया निकेतन १/ए, नवलोक प्रेस कलकत्ता द्वारा प्रदत्त (पांच हजार रुपए मात्र) के दान से यह स्थिर निधि कायम की गई। २१-३-१९७८ की अन्तरंग बैठक ने इसकी स्वीकृति दी। इसके ब्याज के ८ सौ रुपए जमा थे। इस वर्ष ब्याज के ४ सौ रुपए जमा हुए। वर्ष के अन्त में एक हजार दो सौ रु० शेष जमा रहे।

श्री स्व० रामलुभायापुरी साहित्य प्रचार निधि

श्री रामलुभायापुरी दिल्ली के दस हजार के दान से श्री रामलुभायापुरी साहित्य प्रचार तथा सहायता निधि के नाम से यह निधि स्थापित हुई। १६-११-१९७५ की अंतरंग ने इसकी स्वीकृति दी। इसके ब्याज के २४२) गत वर्ष नाम थे। ८ सौ रु० इस वर्ष जमा हुए। वर्ष के अन्त में १५८) जमा में शेष रहे।

(क्रमशः)

अनुभव न करे वह जीवित नहीं मृत है, समाज के शरीर में रोग हो, उसे जो दूर करने के लिए छटपटाने न लगे वह मृत समान है। ऋषि दयानन्द ने समाज के शरीर की पीड़ा को, इसके रोग को अनुभव किया, इसीलिए वे जीवित थे। उन्हें तो अपने समय का सारा समाज एक चेलेंज के रूप में दीखा। हिन्दुओं का रूढ़िवाद एक महान चेलेंज था। जहां देखो वहां प्रथा की दासता, रूढ़ि की गुलामी। जो चला आ रहा है उससे इधर नहीं हो सकते, उधर नहीं हो सकते। ऋषि दयानन्द ने रूढ़िवाद की इस थोथी दीवार को एक धक्के में गिरा दिया। अगर पौराणिकधर्म उन्हें एक चेलेंज के रूप में दीख पड़ा तो ईसाइयत और इस्लाम भी उन्हें चेलेंज देता हुआ दीख पड़ा। हिन्दुओं की जड़ जहां अपने कर्मों से खोखली हो रही थी, वहां ईसाइयत तथा इस्लाम भी उसे कमजोर करने में कुछ उठा नहीं रख रहे थे। ऋषि दयानन्द जहां अपनों से जूझे, वहां बाहर वालों से भी उसी तरह से जूझे। वे पौराणिकों मतवादियों से, ईसाइयों से, मुसलमानों से—सबसे जूझ पड़े। दुनियां भर के अन्ध को जला डालने की उनमें हिम्मत थी। वह एक सूरमा थे जो दुनियां भर के रूढ़िवाद से टक्कर लेने के लिए उठ खड़े हुए थे।

ऐसे लोग दुनियां को बदल देने के लिए पैदा हुआ करते हैं। वे आते हैं, एक नई लहर चला जाते हैं, संसार को एक नया दृष्टिकोण दे जाते हैं। पुराना—जड़वाद उन्हें बर्दाश्त नहीं कर सकता, और वे उस पुराने जड़वाद को बर्दाश्त नहीं कर सकते। वे जहर उगलते हैं, आग कूड़े-करकट को राख करते चले जाते हैं। लेकिन यह दुनिया भी ऐसी है कि उन्हें देर तक बर्दाश्त नहीं कर सकती। वे भी इसके लिए तैयार होते हैं। सुकरात अपने जमाने को बदलने के लिए आया था, उसे जहर का प्याला पीना पड़ा। ईसा मसीह एक नई दुनिया का सपना लेकर आया था, उसे जिन्दा सूली पर लटक जाना पड़ा। दयानन्द अपने देश और जाति को नए ढांचे में ढालने को आया था, दूध में पिसा हुआ कांच पीकर प्राण गंवाने पड़े। गांधी एक नया संसार बना रहा था, उसे गोली का शिकार हो जाना पड़ा। दुनियां, दुनियां को बदल देने वालों को बर्दाश्त नहीं करती, परन्तु जहर देने वाले, गोली चलाने वाले, तलवार उठाने वाले देखते हैं, और हाथ मल-मल कर देखते हैं कि जहर पीकर गोली खाकर और प्राण देकर जो चले जाते हैं वे अपने पीछे एक ऐसी शक्ति छोड़ जाते हैं जो एक नवीन संसार का निर्माण कर देती है, एक नई दुनियां बना देती है। ऋषि दयानन्द भी अपने जमाने से जूझे, जमाने ने उन्हें जहर दे दिया, लेकिन जहर पीने के बाद विदाई की वेला में उनसे जो शक्ति की धारा फूटी उसने सदियों से ऊसर पड़ी हुई इस भूमि का नक्शा ही बदल दिया। परमात्मा करे, हमारा देश भारत, महर्षि दयानन्द के सपनों का साकार रूप होकर महानता में हिमालय सा, पवित्रता में गंगा-सा और विश्व में शान्ति की धारा बहाने में चन्द्रमा-सा उठ खड़ा हो।

सम्पादक के नाम पत्र

ईश्वर की प्रेरणा

जो आदर्श भावनाएं हमारे अन्तंमन में सदा बनी रहती हैं, हमारा चरित्र उन्हीं से निर्मित होता है। जो भी कुछ सत्य, न्यायपूर्ण श्रेष्ठ व उच्च है हमें उसी का ही चिन्तन करना चाहिए :

हम एवं हमारा वातावरण हमारे विचारों, विश्वासों व इच्छाओं का ही फल है। हम जो भी सोचते हैं चाहते हैं और विश्वास करते हैं वही हमारे जीवन को ढालता है। मनुष्य को प्रगति पथ पर आगे ले जाने वाली यह विलक्षण शक्ति ईश्वर की प्रेरणा ही है : और यह प्रेरणा, आन्तरिक प्रेरणा ही है जिसने व्यक्ति को उसे सदा महान जीवन बिताने के लिए प्रेरित किया है।

हमारे जीवन के वे स्वप्न, जिनके पीछे हम अपनी सारी शक्ति लगा देते हैं, अन्ततः हमें अपनी मंजिल तक पहुंचा देते हैं। अतीत के पृष्ठों को पलटने पर विदित होता है कि किस प्रकार मानव सफलता के द्वार खुलते चले गए और सफलता के शिखर पर आ पहुंचे, जिसके कि कभी वह स्वप्न मात्र देखा करते थे।

मानव पर सत्य को जीवित रखने का बहुत बड़ा दायित्व भी है। और केवल इतना ही नहीं बल्कि उन्हें संसार को वह सन्देश भी देना है जिसे वे ईश्वर से लेकर आए हैं।

दुर्भाग्यवश विचारों की संकीर्णता व दुष्टता ने मानव को भ्रमित कर दिया है।

उनके लिए तो संसार एक शिकार का मैदान है जहां पर वे अपनी इच्छाओं की पूर्ति के लिए जो चाहें कर सकते हैं, भले ही वहां दूसरों के दुख का कारण ही क्यों न बने।

और तब वे यह भी भुला देते हैं कि उन्हें भी संसार की उन्नति के लिए कुछ करना है।

जिन आविष्कारों और महान पुरुषों ने अपने जीवन की निर्धनता और कठिनाइयों से संघर्ष कर, जो कुछ भी निर्माण किया है, उसी का उपयोग आज हम कर रहे हैं।

उसी निर्माण कार्य को आगे बढ़ाने के लिए ही तो हमारा जन्म हुआ है न कि उसे विनष्ट करने के लिए ?

व्यक्तिगत चरित्र निर्माण व सफलता का रहस्य मात्र शक्तियों का ज्ञान प्राप्त करना ही रहा है।

क्योंकि व्यक्ति जन्म से ही महान पैदा नहीं होता, बल्कि वह तो स्वयं के प्रयत्नों पर, ही निर्भर है।

तब हम भी क्यों न अपना लक्ष्य उसी प्रकार प्राप्त करें ?

—आनन्द मुसाफिर

सहसचिव, इन्टरनेशनल पांयनियर्स क्लब

पूरनपुर, पीलीभीत

(पृष्ठ ४ का शेष)

मधु दण्डवते के विचार भी उल्लेखनीय हैं। उन्होंने लोक सभा में कहा कि दल बदल दो तरह की होती है—थोक और परचून। उन्होंने कहा कि इस राजनीतिक बीमारी में परचून दल बदल इतनी खतरनाक नहीं थी जितनी कि थोक दल बदल, जो कि सदन का स्वरूप ही बदल देती है।

श्री दण्डवते ने यह भी कहा कि १९६७-६८ के केवल १० मासके अन्दर ही ४३८ सदस्यों ने दल बदल की थी जिनमें से २१० को पुरस्कार स्वरूप मन्त्री पद मिला। इससे स्पष्ट है कि दल बदल सिद्धांत के कारण नहीं व्यक्तिगत स्वार्थ के कारण होती थी।

इससे पहले १९६३, १९६७, १९७१ और १९७३ में दल बदल को रोकने के चार बार प्रयत्न कांग्रेस के शासन काल में किए गए और पांचवीं बार १९७७ में जनता पार्टी के शासन काल में दल बदल विरोधी विधेयक लोकसभा में आया मगर पांचों ही बार यह बेल मेंढ़े न चढ़ सकी।

अतः जो काम १९६३ से अब तक पांच बार प्रयत्न करने पर भी नहीं हो सका था और जिसे स्वयं श्री राजीव गांधी की माता श्रीमती गांधी भी पूरा नहीं कर सकीं, उस ऐतिहासिक काम को पूरा करके श्री राजीव गांधी ने एक अभूतपूर्व सफलता प्राप्त की है जिसे उनकी एक और बड़ी उपलब्धि कहा जा सकता है।

—रघुनाथप्रसाद पाठक

आर्य समाज सिखों को हिन्दू मानता है

हिन्दू सिख एकता में बाधक आर्य समाज नहीं बल्कि अकाली हैं।

कानपुर। केन्द्रीय आर्य सभा कानपुर तथा जिला आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान विख्यात आर्य समाजी नेता, श्री देवीदास आर्य ने सिख लेखक डा० महीपसिंह के इस आरोप को सफेद झूठ की संज्ञा दी है कि आर्य समाज ने हिन्दू सिख के बीच दरार पैदा की है। तथा आर्य समाज ने प्रचार किया कि सिख हिन्दू नहीं है। यद्यपि वास्तविकता यह है कि आर्य समाज सिखों को हिन्दू समझता है और हिन्दू सिख एकता में बाधक अंग्रेज भक्त अकालियों को ही मानता है।

श्री देवीदास आर्य ने आगे कहा है कि आर्य समाज का उदघोष 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' अर्थात संसार को आर्य बनाना है। इसी आधार पर आर्यसमाज अपने जन्म काल से शुद्धि का आन्दोलन चलाकर विधर्मियों को भी आर्य (हिन्दू) बनाता रहा है। भला ऐसा उदार हृदय समाज सिखों को जो सभ्यता, संस्कृति, धर्म, रीतिरिवाज से पूर्ण हिन्दू हैं उनको गैर हिन्दू कैसे मान सकता है ? इतिहास साक्षी है कि अंग्रेजों के इशारे पर अकालियों ने स्वर्ण मन्दिर से हिन्दू देवी देवताओं की मूर्तियां निकाल कर फेंक दी थी तथा अपने को हिन्दुओं से अलग बताया था। गत वर्ष इन्होंने संविधान को जला जलाकर मांग की थी कि संविधान से धारा २५ को हटा दिया जाये जिसमें सिखों को हिन्दू बताया गया है। आर्य समाज ऐसे आन्दोलन का जो हिन्दू शक्ति को कमजोर बना रहा है, सख्त विरोधी रहा है।

श्री देवीदास आर्य ने अन्त में कहा कि डा० महीप सिंह ने अपने वक्तव्य में आनन्दपुर प्रस्ताव का समर्थन किया है। यह खेद की बात है। महीप सिंह जैसे सफेद पगड़ी वाले कुछ सिख नेतागिरि और कट्टरता के कारण अकालियों को भी मात करते हैं। ऐसे लोग गुप्त रूप से खालिस्तान के समर्थक प्रतीत होते हैं। आर्य समाज शुद्ध राष्ट्रवादी देशभक्त संस्था है वह खालिस्तान के सपने को पूरा नहीं होने देगा।

—श्याम प्रकाश शास्त्री

मन्त्री

निःशुल्क अन्तर्जातीय विवाहों के लिए सम्पर्क करें

संयोजक

अन्तर्जातीय विवाह विभाग

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, महर्षि दयानन्द भवन

रामलीला मैदान, नई दिल्ली-११०००२

फोन : २७४७७१-२६०९८५

Akhil Bharat Varshiya Shradha Nand Dalit Udhar Sabha (Regd.) Delhi

Affiliated With Sarvadeshik Arya Pratinidhi Sabha

Arya Samaj Mandir, Arya Nagar, Pahar Ganj New Delhi-55

Yatra to South East Asia

(Bangkok, Pattaya, Kuala Lumpur Penang and Singapore)

22nd March to 2nd April 1985

ORGANISERS :

Travel Corporation (I) PVT. LTD.

C-36, Connaught Place, New Delhi-110001

Phones : 350645/310383

THAILAND : (Bangkok & Pattaya)

Population : 50 Millions Capital : Bangkok
Language : Thai Currency : US1 = Baht 22
Climate : Rainy 27°-28° (Mar to May) What to wear : Cotton & light. weight clothes
Shopping hours : Mon-Fri 08.00 to 19.00 hrs Sun 08.00 to 17.00 hrs.
Banking hours : Mon-Fri 08.30 to 15.30 hrs.

Malaysia : (Kuala Lumpur & Penang)

Population . 13 45 millions Capital : Kuala Lumpur
Language : Malay-English widely spoken Currency : US1 = Malaysian Ringgit 22
Climate : 25· C All year What to wear : Lightweight Clothes
Shopping hours : Mon-Sat 09.00 18.00 hrs.
Banking hours : Mon-Fri 10 00 to 15 00 Sat 0 9.30 to 11 30 hrs.

Singapore : (Singapore)

Population : 2,5000 00 Capital : Singapore
Language : Malay, Tamil Chinese, English Currency : US 1=S 2 12
Climate : 31·C All year What to wear : Lightweight clothes
Shopping hours : Mon to Fri 10.00 to 21.30 hrs Sun : 10.00 to 18.00
Banking hours : Mon to Fri 10.00 to 15.00 Sat 09 30 to 11.30 hrs.

The Tour Cost Rs. 7800/- Include Air Fare, Dinner, Breakfast Sight Seeing by Buses etc.

21st March : Get-together at 4 P. M for handing over of documents.

22nd March: Report at Palam airport International departure at 18° hrs.

DAY DATE	PLACE	ITINERARY
March-1985		
FRI. 22nd	DELHI	Depart by flight AI : 306 at 21.00 hrs Bangkok
SAT. 23rd	BANGKOK	Arrive at 02.20 hrs. Proceed for pattaya by delux motorcoach through the scenic countryside.
	PATTAYA	Arrive Pattaya transfer to hotel Regent Marina or similar. Rest of the day free to explore the magnificent beaches or sample the various water sports available Dinner and overnight at hotel.
SUN 24th	PATTAYA	Breakfast at hotel and thereafter drive to Bangkok, the busy Thai Capital of teeming streets and numerous temples.
	BANGKOK	Arrive Bangkok and transfer to Hotel Manohra or similar, Rest of the day free Dinner and overnight at hotel.
MON 25th	BANGKOK	Breakfast at hotel Leave by coach for sightseeing of Bangkok by delux motor-coach and English speaking guide visiting the Wat Pho (temple of the Reclining Budha the fabulous Emerald Budha, drive past the Grand Palace where the flag is at full mast when the Emperor is in residence. Return to the hotel. Afternoon free for shopping for Thai Silk and local handicrafts. Dinner and overnight.
TUE. 26th	BANGKOK	Breakfast, Thereafter transfer to airport to connect MH : 415 at 09.00 hrs for Kuala Lumpur the capital of Malaysia
	KUALA LUMPUR	Arrive at 11.50 hrs and proceed for city sightseeing Visiting the National Mosque the Museum, drive past the King's Palace and thereafter proceed to Batu Caves- the beautiful limestone caves which houses the holy temple of Lord Murugan-climb up the stairs to visit the temple. Return to the city and transfer to hotel South East Asia or similar. Dinner and overnight at hotel.
WED. 27th	KUALA LUMPUR	After breakfast leave for Penang.
	PENANG	Arrive Penang and transfer to hotel Maclist or similar. Dinner and overnight at hotel.
THU. 28th	PENANG	Breakfast. Thereafter proceed for city sightseeing visiting Port Cprnwallis, the museum, the Snake Temple where the snakes sleep during the day time and roam about in the night and lastly a visit to the batik factory which is native to this sea port. Return to hotel. Dinner and overnight.
FRI 29th	PENANG	Breakfast. Thereafter leave for Kuala Lumpur.
	KUALA LUMPUR	Arrive and transfer to Hotel south East Asia or similar Dinner and overnight.
SAT 30th	KUALA LUMPUR	Breakfast. Transfer to airport to depart by MH : 671 at 08.45 hrs Singapore.
	SINGAPORE	Arrive Singapore at 09.35 hrs and proceed for city sightseeing visiting the Botanical Garden, Tiger Balm Garden, drive past Raffles Place upto Mount Faber to have a panoramic view of the city of singapore. Thereafter proceed to Hotel Royal or similar. Dinner and overnight at hotel.
Sun. 31st	singapore	Breakfast. Day free for shopping. Dinner and overnight.
APRIL-1985		
Mon. 1st	singapore	Breakfast. Morning free. Check out at 12 noon Afternoon transfer to airport to connect AI : 403at 18.10'hrs for Bombay.
	Bombay	Arrive Bombay at 22 15 hrs. In Transit Leave Bombay for Delhi by AI: 803 at 6.
Tue. 2nd	Delhi	Arrive Delhi at 8 hrs.

Bal Ram Rana
General Secretary
Phone : 562510

R. B. Batra
Vice President

Ram Lall Malik
President
52/78, Karol Bagh, New Delhi.5

आर्य समाजों की गतिविधियां

मुरादाबाद नगर मंडलीय आर्य सम्मेलन

१७, १८, १९ फरवरी १९८५

विशाल शोभा यात्रा—कवि सम्मेलन

वेद सम्मेलन— बृहद् यज्ञ

महिला जागरण राष्ट्ररक्षा सम्मेलन

सम्मेलन का भव्य आयोजन

इस अवसर पर पधारने वाले महानुभाव

माननीय श्री लाला रामगोपाल जी शालवाले

„ „ सच्चिदानन्द जी शास्त्री

„ „ प्रो० उत्तमचन्द जी शरर

„ „ प्रभात शोभा जी

„ „ प्रेमचन्द जी श्रीधर

„ „ प्रो० शेरसिंह जी

मण्डल की सभी आर्य समाजें सादर आमन्त्रित भोजन निवास की समुचित व्यवस्था। —राममोहन, मन्त्री

डैनियल दिनेशसिंह का शुद्धि संस्कार

अल्मोड़ा, आर्यसमाज मन्दिर ताड़ीखेत में बसन्तपंचमी (२६ जनवरी १९८५ गणतन्त्रदिवस) यज्ञ पर डैनियल दिनेशसिंह का शुद्धि संस्कार पं० रामदत्त पाण्डेय साहित्यरत्न की अध्यक्षता में पं० प्रेमदेव शर्मा के पौरोहित्य में सम्पन्न हुआ। स्वामी गुरुकुलानन्द कन्चाहारी ने वैदिक धर्म की दीक्षा देकर डैनियल दिनेशसिंह का नाम दिनेशचन्द्र आर्य घोषित किया एवं उनके पूर्वजों के वंश 'शिल्पकार-वंश' में प्रतिस्थापित किया। महात्मा भक्तमुनि ने वैदिक साहित्य (सत्यार्थप्रकाश आदि) भेंट किया।

—स्वामी गुरुकुलानन्द सरस्वती

श्री प्रेमचन्द शास्त्री दिवंगत

यह लिखते हुए बड़ा दुःख होता है कि श्री प्रेमचन्द जी शास्त्री लम्बी बीमारी के बाद २९-१-१९८५ को हम सबसे सदैव के लिए वियुक्त हो गए।

सार्वदेशिक पत्र की व्यवस्था तथा सम्पादन में हमें उनका कई वर्ष पर्यन्त उल्लेखनीय सहयोग प्राप्त रहा।

इससे पूर्व १५-२० वर्ष तक उन्होंने आर्य समाज दीवान हाल दिल्ली के कार्यालय में एक उच्च पद पर कार्य किया था जो एक प्रकार से उनके जीवन्त कार्यकलाप का मुख्यतम केन्द्र रहा था।

श्री शास्त्री गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर के पुराने योग्य स्नातक थे। वे सुलेखक और साहित्यकार भी थे। उनके लेख आर्य पत्रों के अलावा हिन्दुस्तान नवभारत आदि दैनिक पत्रों में प्रायशः छपते रहते थे।

इस महान् वियोग में हम उनके परिजनों के प्रति हार्दिक समवेदना प्रकट करते हुए दिवंगत आत्मा की सद्गति के लिए प्रभु से प्रार्थना करते हैं। —रघुनाथप्रसाद पाठक

वार्षिक चुनाव

आज दिनांक १०-२-८५ रविवार में "आर्य समाज, दरियागंज, नई दिल्ली-२ का वार्षिक चुनाव सम्पन्न हुआ, जिसमें निम्न पदाधिकारी सर्वसम्मति से चुने गये :—

१—श्री वी. बी. विमल प्रधान, २—श्री धर्मपाल गुप्त, उपप्रधान

३—श्री एस. एम. भटनागर, उ.प्र. ४—श्री वीरेन्द्रलाल रस्तगी मन्त्री

५—श्री दत्त यादव आर्य, उपमन्त्री।

इसके साथ २ यह भी निर्णय हुआ कि "होली" के पुण्य-पर्व पर दिनांक २ मार्च ८५ से ६ मार्च १९८५ तक श्री आचार्य पुरुषोत्तम जी, एम. ए. की वेद कथा भी होगी। —मन्त्री

अन्तर्जातीय विवाह केन्द्र

मुझे यह जानकर हर्ष हो रहा है कि जब से इस सभा में श्री चन्द्र भाई ने अन्तर्जातीय विवाह केन्द्र को सुचारु रूप से चलाना आरम्भ किया है तब से सभा मे भिन्न २ प्रान्तों से जहां कार्य की प्रशंसा भरे पत्र प्राप्त हो रहे हैं वहां अनेक बन्धुओं ने हर प्रान्त में प्रान्तीय प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में इस प्रकार के "अन्तर्जातीय विवाह केन्द्र" खोलने के सुझाव दिए हैं जो कि आज की परिस्थितियों के अनुकूल लगते हैं। मैं इस विज्ञप्ति द्वारा सभी महानुभावों का धन्यवाद करता हूं जिन्होंने प्रशंसा भरे पत्र भेजकर इस कार्यालय का उत्साह बढ़ाया है तथा उपरोक्त सुझाव के लिए पृथक से प्रान्तीय सभाओं से सम्बन्ध स्थापित किया जा रहा है। आप सभी की सूचनार्थ यह बताते हुए मुझे प्रसन्नता हो रही है कि अब तक १०३ अन्तर्जातीय विवाह सम्पन्न हो चुके हैं। —पृथ्वीराज शास्त्री

सभा उप-मन्त्री

बसन्त मेला-हकीकतराय बलिदान दिवस सफलता पूर्वक सम्पन्न

अखिल भारतीय हकीकतराय समिति और आर्य समाज विनय नगर नई दिल्ली की ओर से रविवार दिनांक २७ जनवरी, १९८५ को प्रातः ८-३० बजे से दोपहर २ तक आर्यसमाज मन्दिर वाई ब्लाक सरोजिनी नगर, नई दिल्ली में बड़े समारोह पूर्वक मनाया गया। प्रातः ८-३० बजे से ९ बजे तक पं० कृष्णदत्त शर्मा शास्त्री जी पुरोहित आर्यसमाजने बृहद यज्ञ कराया। ९-३० बजे से ११ बजे तक श्री गुलाबसिंह राघव के मनोहर भजन हुए और महाशय धर्मपाल जी प्रधान आर्य केन्द्रीय सभा ने वीर हकीकत को श्रद्धांजलि अर्पित की ११ बजे से १-३० बजे तक बच्चों ने वीर हकीकत के जीवन पर कविता, भाषण प्रतियोगिता में भाग लिया जिसमे गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ और आर्य बाल गृह पटौदी हाउस के बच्चों ने भी भाग लिया। जो आर्य समाज के विचारों से ओतप्रोत था।

अन्त मे स्वामी दीक्षानन्द जी सरस्वती की अध्यक्षता में श्रद्धांजलि सभा हुई जिसमे श्री सूर्यदेव जी प्रधान दिल्ली, आर्य प्रतिनिधि सभा, श्री ईश्वर नारायण जी हाथी दांत वाले, श्री कृष्ण चोपड़ा सुपुत्र स्वर्गीय श्री उत्तमचन्द चोपड़ा, श्री रतनचन्द जी सूद, श्री जगदीशराय सूद, श्री देवव्रत धर्मेन्दु आर्योपदेशक, श्री हरबसलाल कोहली प्रधान, दक्षिण दिल्ली आर्य प्रचार मण्डल, श्री सरदारीलाल वर्मा व दक्षिण दिल्ली की सभी आर्य समाजों के अधिकारी उपस्थित हुए और वीर हकीकत को श्रद्धांजलि अर्पित की।

श्री रतनलाल सहदेव, प्रधान समिति ने स्वर्गीय श्री उत्तमचन्द चोपड़ा, श्रीमती पुरुषोतमदेवी चोपड़ा व श्रीमती सरस्वती सूद के लिए विशेष प्रार्थना कराई। श्री चोपड़ा जी के परिवार की ओर से सभी के लिए प्रीतिभोज का प्रबन्ध किया गया। कार्यक्रम में हजारों लोग उपस्थित थे।

—रोशनलाल गुप्त, मन्त्री

आर्य विद्यार्थी सभा का वार्षिक निर्वाचन

२७ जनवरी, रविवार दयानन्द वेद विद्यालय में "आर्य विद्यार्थी सभा" का वार्षिक निर्वाचन श्री आचार्य हरिदेव जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। सभा मे विद्यार्थियों के ज्ञान वृद्धि हेतु तीन स्तरीय शैक्षिक, सांस्कृतिक, एवं साहित्यिक विषयों पर प्रति रविवार को आयोजन किया जायगा। तथा समय-समय पर छात्रों के उत्साह वर्धन हेतु सभा द्वारा पुरस्कृत किया जायेगा। सभा में सर्वसम्मति से निम्न पदाधिकारी चुने गए।

प्रधान श्री धूमकेतु वेदार्थी, उप-प्रधान श्री जगन्नाथ शास्त्री व सुभाष चन्द्र आर्य, मन्त्री श्री धर्मेन्द्र कुमार उपाध्याय, उप-मन्त्री श्री सूर्यदेव बन्धु व देवेन्द्र कुमार, कोषाध्यक्ष श्री पं० नरेन्द्र कुमार "आलोक"।

(पृष्ठ २ का शेष)

(१) अस्तित्व (सत्ता), ज्ञान, एकता, महत्त्वाकांक्षा, उत्पादन, न्याय भावना और सत्यान्वेषण की प्रवृत्ति। भूर, भुव, स्व, मह जन तप और सत्य की इस वैदिक सूक्ति मे ये स्पष्टत वर्णित है। प्राणायाम क्या है? प्राणायाम उपासक को आत्मा के वास्तविक स्वरूप का ... देता है जो प्रकृति से नितान्त भिन्न होता है। ये आत्मा ... और विश्वात्मा मे अपरिमित परिमाण मे पाए जाते हैं, ये ... सम्मिश्रण मे भी जो प्रकृति और आत्मा के पारस्परिक क्रिया प्रक्रियाओं का परिणाम होता है, अपने विशुद्ध रूपो को बनाए रखते हैं।

चेतन प्राणी मे ये सातो चीजे बनी रहती है। अचेतन इनमे से बहुत-सी चीजो से शून्य रहते हैं। उनमे केवल दो ही रहती है अर्थात् अस्तित्व और तारतम्य। यह शक्ति व्यक्तियो के माध्यम से सोसाइटियों और राज्यो मे विकसित रूप लिए होती है। राष्ट्र का जीवन इसी पर निर्भर होता है।

आज सच्चरित्रता अन्धविश्वासों पर आधारित है

आज-कल सच्चरित्रता समाज मे व्याप्त कुछेक अन्धविश्वासों पर आधारित है जो व्यक्तियों के विकास मे बाधक है। उन्हे परिस्थितियों और अवस्थाओं की संज्ञा दी जाती है। बहुत से व्यक्ति इन अन्धविश्वासों का शिकार होने के कारण इनके विरुद्ध आवाज नही उठाते। उनकी धारणा है कि समय (काल) ही उन्हे अपनी अंगुलियो पर नचाता है। समय ही उन वस्तुओं को मनचाहा रूप देता है।

परन्तु यह नितान्त मिथ्या विश्वास है और यह ऐसा रोग है कि इसका बिना किसी उपेक्षा के शमन होना चाहिए। सत्य तो यह है कि समय और ज्वार मानव के निर्माता नहीं होते। यह मानव ही है जो समय और परिस्थिति का निर्माण करता है। वह कठिनाइयों और बाधाओं के होते हुए भी उन्हे अपने अनुकूल बना लेता है। समस्त महान पुरुषों को विषम परिस्थितियों का सामना करना पड़ा है परन्तु उन्होंने उन परिस्थितियों को अपने मार्ग के अनुकूल बना लिया था।

उन्होने समय और परिस्थिति की विभीषिका का परिहार करके पृथ्वीतल पर एक अच्छे युग का सूत्रपात किया था। महाभारत का कथन है 'राजा ही समय को बदल सकता है और समय (काल) मे उसे बदलने की शक्ति नहीं होती। इस प्रकार मनुष्य किसी भी परिस्थिति मे क्यों न हो अपना मार्ग बना लेता और उसे समस्त ... कर लेता है।

अन्त में मुझे यह कहना है कि वेद राष्ट्रोत्थान के अनेक ... सुनहरे सिद्धांतो से ओत प्रोत है। हम अथर्ववेद के १२ वें कांड के मन्त्र १ से प्रेरणा ग्रहण कर सकते हैं जिसका भावार्थ निम्न प्रकार है—

सत्य और ईमानदारी महत्ता और उदारता, दीक्षा और दीक्षा, स्वाभाविक बल, पुरुषार्थ और परिश्रम सहित तप, अनुशासन, विज्ञान, कला-कौशल संगठन और त्याग राष्ट्र के जनक विधाता होते हैं।

हमारी प्रार्थना है कि यह पृथ्वी जिसमें मानव जाति की विगत कालीन समस्त उपलब्धियां सुरक्षित हैं और भविष्य मे उपलब्ध किए जाने के लिए समृहीत है हमारे जीवन के लिए अधिकाधिक अवसर प्रदान करे।

सार्वदेशिक प्रेस ... दिल्ली-२ में मुद्रित तथा ... प्रकाशक मुद्रक और प्रकाशक के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

ओ३म्

सार्वदेशिक

साप्ताहिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

[१९७२९४९०८६] वर्ष २० अङ्क १९]

चैत्र शु० १० सं० २०४२ रविवार ३१ मार्च १९८५

दयानन्दाब्द १६१ दूरभाष । ३७४७७१ । वार्षिक मूल्य १५) एक प्रति ४० पैसे

पंजाब समस्या पर श्री शालवाले प्रधानमन्त्री जी से मिले

दिल्ली २७ मार्च।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले आज प्रधान मन्त्री श्री राजीव गांधी से मिले। उन्होंने प्रधान मन्त्री को पंजाब की समस्या और उस पर हिन्दू जनता के विचारों से अवगत कराया। बातचीत के दौरान श्री शालवाले ने पंजाब में वातावरण के सुधार के लिए अकालियों की भांति वहां के नजरबन्द हिन्दू नेताओं को भी अविलम्ब रिहा करने की मांग की।

श्री शालवाले ने शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी के धन से गुरुद्वारों में शस्त्रास्त्र की ट्रेनिंग देने के प्रावधान तथा हाल में चण्डीगढ़ आदि में हुई हिंसात्मक घटनाओं की ओर भी प्रधान मन्त्री का ध्यान आकृष्ट करते हुए आग्रह किया कि पंजाब समस्या के सम्बन्ध में पंजाब के विशिष्ट हिन्दुओं से भी प्रधानमन्त्री का विचारविमर्श करना आवश्यक है।

श्री शालवाले ने बाद में एक प्रेस वक्तव्य में कहा कि प्रधान मन्त्री जी ने उन्हें आश्वासन दिया है कि सरकार पंजाब के नजरबन्द हिन्दुओं को रिहा करने पर विचार कर रही है।

श्री शालवाले ने यह भी कहा कि प्रधान मन्त्री ने आश्वासन दिया है कि चुनाव के समय जिन नीतियों की घोषणा की थी, सरकार उससे पीछे नहीं हटेगी। उन्होंने यह भी बताया कि पंजाब के हिन्दुओं का एक शिष्टमण्डल शीघ्र ही प्रधान मन्त्री से मिलकर अपनी स्थिति स्पष्ट करेगा। प्रधान मन्त्री ने शिष्टमण्डल से मिलने की स्वीकृति दे दी है।

—सच्चिदानन्द शास्त्री
उप-मन्त्री
सार्वदेशिक सभा, दिल्ली

पंजाब में अकालियों की ठेकेदारी समाप्त करनी होगी

आर्यसमाज देश की आजादी के आंदोलन की आत्मा है

आर्यसमाज स्थापना दिवस पर आर्य नेताओं का उद्बोधन

नई दिल्ली, २४ मार्च। "जब मैं भारत की आजादी के आंदोलन का इतिहास पढ़ता हूं तो मेरे सामने यह एकदम स्पष्ट हो जाता है कि उस इतिहास में से यदि आर्यसमाज को निकाल दिया जाय तो जैसे आजादी के आन्दोलन की रूह निकल जायेगी।" ये शब्द आज यहां दिल्ली के महापौर श्री महेन्द्रसिंह साथी ने बिठ्ठल भाई पटेल भवन के परिसर में मनाये जाने वाले आर्यसमाज स्थापना दिवस पर कहे। दिल्ली की समस्त आर्य समाजों की ओर से बुलाई गई एक सार्वजनिक विशाल सभा को वे सम्बोधित कर रहे थे।

उन्होंने भाव-विह्वल होकर कहा कि "कल ही मुझे एक चिट्ठी मिली है, जिसमें लेखक ने अपना नाम तो दिया है, परन्तु अपना पता नहीं दिया। उस चिट्ठी में मुझसे कहा गया है कि १० अप्रैल तक तुम यह बता दो कि तुम हिन्दुओं के साथ हो या सिखों के साथ क्योंकि १० अप्रैल के बाद हमने हिन्दुओं का साथ देने वाले सिखों को खत्म करने का फैसला कर लिया है।" उन्होंने कहा कि पता न होने से मैं उस चिट्ठी के लेखक को तो जवाब नहीं दे सकता किन्तु इस सार्वजनिक सभा में मैं सबके सामने यह घोषणा करता हूं कि न मैं हिन्दुओं के साथ हूं और न अन्य किसी के साथ हूं मैं तो देश की आत्मा के साथ हूं, अब तक जिन हिन्दुओं ने देश की आजादी में अपना योग दिया है, और अब देश की एकता और अखण्डता के लिए जूझ रहे हैं, मैं उन हिन्दुओं के साथ भी हूं और उन सिखों के साथ भी हूं। परन्तु देश के साथ गद्दारी करने वाले या देश का विघटन चाहने वाले और खून की होली खेलने वाले सिखों के साथ मैं बिल्कुल नहीं हूं।

उन्होंने पंजाब की समस्या की चर्चा करते हुए कहा कि जब से उग्रवादियों ने अपना अलगाववाद का आन्दोलन फैलाया है, तब से पंजाब का विकास रुक गया है। लहलहाते पंजाब के खेत उजड़ गये हैं और कारखाने बन्द हो गये हैं। पंजाब के नाम पर बन्दूक की गोली से अपना इरादा पूरा करने वालों ने जहां सारे देश को अपने विरुद्ध कर लिया है, वहां पंजाब की सबसे अधिक हानि की है। क्या वे पंजाब की पानी की समस्या को खून के दरिया से हल करना चाहते हैं। और चण्डीगढ़ शहर को आदमियों की हड्डी से निर्माण करना चाहते हैं? देश का सबसे पहला बड़ा भाखड़ा बांध अकालियों ने नहीं, सारे देश ने बनाया है। इसी तरह चण्डीगढ़ शहर भी पंजाब ने नहीं, सारे देश ने बनाया है? अगर आज पंजाब को जरूरत हो तो सारा देश उसके लिए अपनी सब नदियां उड़ेल सकता है, बशर्ते कि पंजाब के हमारे इन बहके हुए भाइयों को सद्बुद्धि आ जाये।

उन्होंने तालियों की गड़गड़ाहट के बीच कहा कि सारी समस्या की जड़ यह है कि अकालियों ने पंजाब के नाम पर अपनी मनमानी करने का ठेका ले रखा है। जो अकाली नहीं है, वह सिख नहीं हो सकता, यह गुरु ग्रन्थ साहब में कहीं नहीं लिखा। न ही गुरु नानक

(शेष पृष्ठ २ पर)

सम्पादक—ओम्प्रकाश पुरुषार्थी सहसम्पादक—रघुनाथ प्रसाद पाठक

खतरनाक नजरया (भयानक दृष्टिकोण)

पाकिस्तान के जनरल जियाउल हक की तारीफ करनी होगी कि ज्योंही हिन्दुस्तान और पाकिस्तान में ताल्लुकात की बेहतरी की स्थिति पैदा होती है चार या आपका कोई खैरख्वाह कोई ऐसी बात कह देता है या कर डालता है जिससे सारा बना बनाया खेल बिगड़ जाता है। इन्हीं दिनों एक तरफ प्रधानमन्त्री श्री राजीव गांधी ने अपना खास दूत पाकिस्तान भेजा है और दूसरी तरफ जनरल जिया साहब ने कनाडा के अखबार 'टू रन टू स्टार' को एक मुलाकात के दौरान ऐसी बातें कह दी हैं, जिनसे लाजमी तौर पर एक मर्तबा फिर से दोनों मुल्कों में तू तू मैं मैं शुरू हो जायगी। आपने फरमाया कि आपके मुल्क ने हिन्दुस्तान में दस करोड़ मुसलमानों से जो सलूक हो रहा है इसके खिलाफ कोई अन्तर्राष्ट्रीय वावेला नहीं किया इससे पाकिस्तान की हिन्दुस्तान के लिए दोस्ती की ख्वाहिश का इजहार होता है। आगे चल कर आपने कहा "मैं आशा करता हूं—मैं अधिक जजबात का इजहार नहीं करूंगा, लेकिन इस्लाम एक सार्वभौम धर्म है—जो अन्तर्राष्ट्रीय सीमा को नहीं मानता और न ही किसी के जिस्म के रंग को। पिछले आठ वर्षों में बावजूद इस बात के कि हिन्दुस्तान में मुसलमानों का कत्ल होता रहा है और इनका खून बहता रहा है और इनके प्रति गैर हमदर्दाना रवैया अपनाया गया है और पाकिस्तान ने अपनी जबान नहीं खोली। बयान किया जाता है कि जनरल जिया के इस इरशाद पर (कथन पर) भारत सरकार ने एतराज किया है। सरकार सिर्फ लफजी एतराज करती है या इससे कुछ ज्यादा भी यह तो वही जानती है—परन्तु आम लोगों का यह पूरा हक है कि जनरल जिया से पूछें कि तुम होते कौन हो हिन्दुस्तान के मुसलमानों से हमदर्दी करने वाले। जिस मुल्क ने एक भी हिन्दू अपने यहां न रहने दिया और जो थे इन्हें समाप्त कर दिया—इसका क्या हक बनता है कि भारत के मुसलमानों की वकालत करे—भारत में मुसलमानों से क्या सलूक होता है यह वह बेहतर जानते हैं।

दुनिया भी देख सकती है कि अपने विरुद्ध जुल्म से तंग आकर कितने मुसलमान भारत से चले गए हैं। विभाजन के समय मुसलमानों की कुल आबादी इस देश में दो। ढाई करोड़ के करीब थी और आज यहां आठ करोड़ के करीब है। इसी से कोई अनुमान लगा सकता है कि मुसलमान किस तरह भारत में अपनी जिन्दगी बसर कर रहे हैं। इन्हें मुकम्मल अधिकार मिले हुए हैं। उच्च से उच्च पदों पर आसीन हैं। दो मुसलमान भारत के राष्ट्रपति रह चुके हैं—वायु सेना का चीफ मुसलमान रह चुका है? मुख्यमन्त्री मुसलमान है—गवर्नर मुसलमान है। सुप्रीमकोर्ट में मुसलमान हैं। सरकारी सेवा में यह लोग अपनी योग्यता के अनुसार चुने जाते हैं। सारांश यह कि देश के विधान में इन पर किसी प्रकार का प्रतिबन्ध नहीं है। पाकिस्तान ही है जो यह कहता है किसी उच्चतम पद किसी गैर मुस्लिम नागरिक का अधिकार नहीं बनता। जनरल जिया को भारतीय मुसलमानों का ख्याल तो आयगा जिनको भारत में गैर मुसलमानों की तरह सब अधिकार मिले हुए हैं। परन्तु वह अपने मुल्क में इन लोगों से क्या व्यवहार कर रहे हैं जो अपने आपको मुसलमान कहते हैं। आपका दावा है कि इस्लाम एक सार्वभौमिक धर्म है जो कि न तो भूखेत्र की सीमा को मानता है और न ही रंग या नस्ल को—क्यों नहीं? ईरान और ईराक में इस समय जो प्रेम लीला हो रही है वह इस्लाम की सार्वभौमिकता का प्रदर्शन ही तो करती है। पाकिस्तान में अहमदियों से जो व्यवहार हो रहा है इसे इस्लाम की सार्वभौमिकता ही कहा जाएगा।

वहां शीया तबके से जो दुर्व्यवहार हो रहा है वह इस्लाम की खूबियों का बेहतरीन प्रमाण है। इस सब के बावजूद अगर ज० जिया—साहब को भारतीय मुसलमानों से होने वाले व्यवहार पर मरोड़ लग गए हैं तो यही कहा जाएगा कि आप किसी अच्छे डाक्टर से परामर्श करें—जहां तक भारत का सम्बन्ध है इसमें सब नागरिकों को समान अधिकार प्राप्त हैं। बावजूद इसके इन्हें या किसी और को अगर कोई शिकायत है तो इसे अपने गिरेहबान में झांक कर देखना होगा कि इनसे ऐसा व्यवहार क्यों हो रहा है। मैं यह मानता हूं कि कुछ मुसलमानों के प्रति आम लोगों का यह रवैया नहीं होना चाहिए—परन्तु इसके लिए वह मुसलमान स्वयं ही दोषी हैं। क्योंकि ये वे लोग हैं जो ज० जिया को ही अपना रहनुमा और सरपरस्त समझते हैं। इनके इशारे पर नाचते हुए वह ऐसा ढंग अपनाते हैं जिस पर आम लोगों को शिकायत होती है। कोई इस बात से इनकार नहीं करता कि भारत में साम्प्रदायिक झगड़े होते रहते हैं परन्तु इसके लिए भी ज०जिया ही जिम्मेदार हैं जो पाकिस्तान समर्थक हिन्दुस्तानी मुसलमानों को आए दिन इशारा करते रहते हैं कि इनका सरपरस्त हिन्दुस्तान से बाहर बैठा है—ऐसे मुसलमानों से किसी की हमदर्दी नहीं हो सकती और यह वही हैं जो ज० जिया से बढ़कर आम भारतीयों की शिकायत करते हैं। जे० जिया की ऐसे मुसलमानों से सहानुभूति भारत को कोई हानि नहीं पहुंचा सकती। परन्तु ऐसे मुसलमानों को काफी देर तक जरूर तंग कर सकती है, क्योंकि इसके बाद इनका कोई अधिकार नहीं रहता कि भारत के आम नागरिकों से यह लोग किसी सहानुभूति की आशा करें—जिन भारतीय मुसलमानों ने ज० जिया को अपना सरपरस्त मान लिया है इन्हें आम भारतीयों से किसी प्रकार की सहानुभूति की आशा नहीं करनी चाहिए।

के० नरेन्द्र
प्रताप १९-१-८५

(पृष्ठ १ का शेष)

ने या गुरु गोविन्दसिंह ने अकाली दल का निर्माण किया है। अकाली दल एक राजनीतिक पार्टी मात्र है। वह सब सिखों की प्रतिनिधि नहीं है। हरेक सिख को अधिकार है कि वह किसी भी राजनीतिक पार्टी में शामिल हो सकता है और फिर पंजाब तो केवल अकालियों का क्या, केवल सिखों का भी नहीं है। उसमें तो हिन्दू भी रहते हैं और उनका भी उस पर उतना ही अधिकार है जितना सिखों का। इस लिए इस समय समस्त सिखों को मिलकर यह फैसला करना है कि पंजाब से अकालियों की यह ठेकेदारी समाप्त करने में वे हमारे साथ कन्धे से कन्धा लगाकर पंजाब के जनमत को जागृत करने में सहयोग दें।

कानून और न्याय राज्यमन्त्री श्री हंसराज भारद्वाज ने आर्य समाज के कार्यों के प्रति अपनी श्रद्धाञ्जलि प्रकट करते हुए सामाजिक समानता और राष्ट्र की उन्नति के लिए किये गये उसके प्रयासों की सराहना की। श्री पं० शिवकुमार शास्त्री ने बताया कि किस प्रकार ऋषि दयानन्द ने सत्य सनातन वैदिक धर्म पर पड़े अज्ञान के आवरण को हटाकर उसका बुद्धि संगत समुज्ज्वल रूप प्रकट किया। प्रो० बलराज मधोक ने श्री साथी के विचारों का समर्थन करते हुए कहा कि पंजाब की असली राजधानी तो चण्डीगढ़ नहीं, लाहौर होनी चाहिए और हिन्दुओं और सिखों को इसी मांग को लेकर खड़े होना चाहिए। इससे सारे देश में जहां नव चेतना आयेगी, वहां पंजाब की समस्या के समाधान का भी रास्ता खुलेगा। दिल्ली विश्वविद्यालय के प्रवक्ता डा० वाचस्पति उपाध्याय ने आर्य समाज स्थापना दिवस को समस्त आर्य समाजियों का साझा जन्म दिवस बताते हुए इस दिन आर्यसमाज की उन्नति के लिए संकल्प लेने का आह्वान किया।

सभा अध्यक्ष श्री रामगोपाल शालवाले ने अपने ओजस्वी भाषण में आर्य समाज द्वारा अब तक किए गए कार्यों की समीक्षा की और आर्य जनों का आह्वान किया कि वे तन-मन-धन से राष्ट्र-निर्माण के कार्य में जुट जायें और आत्महीनता की भावना को छोड़ दें, क्योंकि देश का और देश के माध्यम से सारे संसार का जितना हित आर्यसमाज कर सकता है, उतना और कोई संस्था नहीं कर सकती। सभा का संचालन आर्य केन्द्रीय सभा के प्रधान श्री सूर्यदेव ने किया।

आर्यसमाज दक्षिण कैलीफोर्निया (अमेरिका)

इस समाज का १४-४-८५ को आर्यसमाज मन्दिर में वार्षिक चुनाव होगा। ३ मार्च को नारवाक मन्दिर में प्रातः ६ बजे गायत्री महा यज्ञ सम्पन्न हुआ जिसमें अनेक श्रद्धालु आर्यजनों ने उत्साह-पूर्वक भाग लिया।

—बी० के० वर्मा, प्रधान

सम्पादकीय

महर्षि दयानन्द और आर्य समाज द्वारा सफल वैचारिक क्रान्ति

जिस समय भारत वर्ष में अनेक मतमतान्तर फैले हुए थे, जिस समय वेद के सूर्य पर अज्ञान एवं मिथ्या ज्ञान के बादल मंडरा रहे थे उस समय जगद् गुरु दयानन्द ने टंकारा में प्रणव धनुष की टंकार की थी। मोर्वी वाले की टंकार ने ईरानी, कुरानी, पुराणी, जैनी, सनातनी सबको सोते से जगा दिया था। टंकार को सुनकर मुहम्मदी तलवार गिर पड़ी, मिश्र के भव्य मीनार गूंज उठे। चीन, जापान, अमेरिका, अफ्रीका, यूरोप के अमर संस्कृति परिवार जाग उठे (प्रथमा संस्कृति विश्ववारा:) का वैदिकनाद फिर होने लगा। जोसेल्टर कन्फ्यूशस और ईसा मसीह ने हां में हां भरी। टंकारे की टंकार अद्भुत थी। वह एक धधकती ज्वाला थी जिसमें कि संसार के मत-मतान्तर भस्म हो रहे थे जिसे देखकर एन्ड्रजैक्सन डेविड जैसे विद्वान एक बार अवाक रह गए। ईसाई, मुसलमान और पुराणी उस आग को बुझाना चाहते थे, पर वह धधकती जाती थी। ज्वाला ने मत-मतान्तरों को भस्म करके सत्य सनातन वैदिक धर्म के कुन्दन को संसार के सम्मुख ला रखा। संसार ने समझ लिया कि सबके सब मत वैदिक धर्म के पवित्र सोते से निकले हैं और समस्त सच्चाई का मूल वैदिक धर्म है।

सर सय्यद अहमद खां ऋषि दयानन्द के मित्र और प्रशंसक थे। कुरान की व्याख्या करने का उनका प्रयास ऋषि के प्रयास से बिल्कुल मिलता है।

सबसे पहले सेन्ट अगस्टाइन ने बाइबिल के त्रित्ववाद Trinity की वैदिक व्याख्या की है। Father, son, holy ghost उनकी दृष्टि में क्रमश: सत, चित, आनन्द है जो कि वेद में ईश्वर का नाम है। कई वर्ष हुए डीनइन्हा ने भी सेन्टपाल के गिरजा घर में उपदेश देते हुए इसी प्रकार की व्याख्या की थी। सर हर्बर्ट रिस्ले ने १९१७की सेन्सज रिपोर्ट में यह भविष्यवाणी की थी कि—

"आर्य धर्म समस्त हिन्दुओं का धर्म होकर रहेगा।"

लन्दन में संसार के विद्यमान धर्मों की सभा में सनातन धर्म के प्रसिद्ध व्याख्याता पं० श्याम शंकर ने खुले तौर पर यह घोषणा की थी कि हिन्दुओं का वास्तविक नाम आर्य है, धर्म की सबसे सच्ची कसौटी केवल वेद हैं, हिन्दू लोग वर्णाश्रम धर्म को स्वीकार करते हैं। सभी हिन्दू मूर्ति पूजक नहीं है और आर्य धर्म में छुआछूत को महत्व नहीं दिया गया। इसी प्रकार के विचार बुद्ध गया के महन्त की यूनिवर्सल रिलीजन नामक पुस्तक में (१९२७ में प्रकाशित) भी पाए जाते हैं।

परन्तु भगवान दयानन्द की यह क्रान्ति यहां तक सीमित नही है। उन्होंने पाश्चात्य सभ्यता में रंगे हुए नवयुवकों के दिल और दिमागों को बदलने के लिए बैकटु दी वेदाज का सुन्दर सन्देश दिया। ऋषि के चरण चिन्हों पर चलते हुए महात्मा अरविन्द घोष ने वेदों की मनोवैज्ञानिक व्याख्या की जिसे देखकर पाश्चात्य संसार दंग रह गया। श्री पं० गुरुदत्त विद्यार्थी ने ऋषि की शैली का अनुसरण करते हुए वेदों के कुछ मन्त्रों की वैज्ञानिक व्याख्या की जिसने वैज्ञानिक जगत में हल-चल मचा दी।

इसी प्रकार आधुनिक काल में डा० रेले ने अपनी 'वैदिक गाइड' नामक पुस्तक में देवताओं की प्राणी शास्त्रोक्त व्याख्या करके विद्वानों के लिए नया मार्ग खोला। आज ऋषि दयानन्द की वेदों के यौगिक

शैली विजयोन्मुख है, इस विषय का स्वाभाविक परिणाम यह है कि संसार के बड़े-बड़े मस्तिष्क हिल गए हैं। संसार के बड़े-२ विकासवादियों, संशयवादियों, नास्तिकों आदिको के मुख बन्द हो गए हैं। और वे दबी जुबान से वेदों की प्रशंसा करने लग गए हैं, यह है क्रान्तिकारी दयानन्द की विचार के क्षेत्र में अद्भुत क्रांति।

महर्षि ने चौमुखी लड़ाई लड़ी, भारत की धार्मिक, सामाजिक और राजनीतिक जागृति और सुधार में आर्यसमाज का जो रचनात्मक योगदान रहा है वह सर्वविदित है।

स्वराज्य का मूल मन्त्र देने वाले महर्षिदयानन्द ही थे। स्वतन्त्रता का मार्ग प्रशस्त करने वाला सर्वप्रथम आर्यसमाज ही था। महर्षि दयानन्द मन, आत्मा और देश का स्वराज्य चाहते थे। आर्यसमाज इसी स्वराज्य की स्थापना और रक्षा के लिए कृत संकल्प है।

आर्य समाज स्थापना दिवस पर संगृहीत धन सभा में शीघ्र भेजा जाय

सार्वदेशिक सभा प्रधान की आर्य समाजों को प्रेरणा

देश देशान्तर के आर्य समाजों को प्रेरणा की जाती है कि सार्वदेशिक सभा के आदेशानुसार आर्य समाज स्थापना दिवस के अवसर पर सभा के वेद प्रचार कार्य के निमित्त की गई अपील पर संगृहीत धन शीघ्रातिशीघ्र भेज दें। इसमें विलम्ब न होना चाहिए। यदि किसी समाज ने इस अवसर पर धन सग्रह न किया हो तो वह अब अपने सदस्यों से, उनके परिवारों से तथा अन्य आर्य समाज के प्रेमियों एवं हितैषियों से संगृहीत करें।

आर्य समाजों को यह विदित ही है वा विदित होना चाहिए कि सार्वदेशिक सभा की स्थिर आय का साधन प्रान्तीय सभाओं की सहमति से इस दिवस पर धन की अपील ही निर्दिष्ट किया हुआ है।

वर्तमान संकटाकीर्ण स्थिति में मौखिक एवं लेखबद्ध वेद प्रचार कार्य को देश देशान्तर में मुख्यत: उन क्षेत्रों में जहां प्रान्तीय सभाएं नहीं है आगे बढ़ाने और उसे गहरा रूप देने की कितनी बड़ी आवश्यकता है इसकी सहज ही कल्पना की जा सकती है।

आशा है आर्य समाजें और आर्य जन सभा के हाथ मजबूत करने और परम्परानुसार अपने कर्त्तव्य का पालन करने में आगे आयेंगे।

इस राशि की मात्रा अधिकाधिक रहे विशेषत: बड़े-२ समाजों की यह बात विशेष रूप से ध्यान में रहनी चाहिए।

धन मनीआर्डर या बैंक ड्राफ्ट (सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा) के द्वारा भेजा जाय। यह दान सूची सार्वदेशिक में छपती रहेगी।

—रामगोपाल शालवाले
सभा-प्रधान

चार क्षेत्रों के निर्माण का सुझाव

अखिल भारतीय साधु समाज हिमाचल प्रदेश के प्रधान श्री स्वामी कृष्णानन्द जी ने पटियाला में ९ मार्च को यह सुझाव दिया है कि यदि देश को राज्यों के बजाय चार क्षेत्रों में विभाजित कर दिया जाय तो राज्यों की समस्याओं का हल सहज ही हो जाय।

उन्होंने कहा कि पंजाब में जब तक सामान्य स्थिति कायम न होवे तब तक वहां से सेना न हटाई जाय। उन्होंने अकालियों को यह भी प्रेरणा की कि वे भड़काने वाले बयान न देवें। उन्होंने अपने पंथ को बड़ी से बड़ी क्षति पहुंचाई है।

स्वामी जी ने यह भी कहा कि विविध वर्गों को आरक्षण दिए जाने की प्रणाली को समाप्त किया जाय। एक मात्र आर्थिक आधार पर ही आरक्षण दिया जाय।

मुसलमानों के लिए भी परिवार नियोजन अनिवार्य किया जाय।

सामयिक चर्चा—

शिक्षा का उद्देश्य

हमें यह विश्वास नहीं कर लेना चाहिए कि किसी विषय की जानकारी किसी दूसरे को देना ही शिक्षा है। यदि आप अपनी मानसिक और आध्यात्मिक शक्ति का भी विकास नहीं करेंगे तो आप केवल पशु बन जायेंगे। जीवन के स्वामी नहीं।

मानव स्वभावके दूसरे पहलू को उन्नत नहीं किया जायगा तो विज्ञानकी प्रगति मानवता के लिए विनाशक ही सिद्ध होगी सहायक नहीं। अणु शक्ति का स्रोत मनुष्य को ज्ञात हो गया है वह उसे मानवता, सौन्दर्य व जीवन के लिए प्रयोग में लाता है अथवा मानव जीवन नष्ट करने के लिए प्रयोग में यह बात अणु शक्ति पर नहीं वरन उसका उपयोग करने वाले मानव पर निर्भर है। दुनिया छोटी होती जा रही है इसलिए हमारे हृदय बड़े होने चाहिए।

भारत में छात्रों पर अपना मत थोपा नहीं जाता बल्कि उनसे कहा जाता है कि वे सत्य को स्वयं परख कर अपने अनुकूल सन्मार्ग चुनलें। हमें व्यक्ति की प्रतिष्ठा कायम रखनी चाहिए क्योंकि समाज में व्यक्ति का एक महत्व पूर्ण स्थान है।

जब अध्यापकों या आचार्यों को सम्मान मिलना बन्द हो जाता है, जब अधिकारियों की आज्ञा नहीं मानी जाती तभी देश का पतन आरम्भ हो जाता है। परन्तु यदि अध्यापक का सम्मान होता है तो उसे छात्रों से घनिष्ठ सम्बन्ध बनाना चाहिए।

छात्रों को कलियों के समान समझना चाहिए। वे फूलों के रूप में विकसित होने जा रहे हैं। मार मारकर हकीम बनाने की प्रथा ठीक नहीं है।

कालेजों में छात्रों की संख्या आवश्यकता से अधिक है इसलिए वहां अनुशासन नहीं रह सकता और अध्यापकों या शिक्षकों और छात्रों के निकट सम्बन्ध नहीं बन पाते।

यह गुरुकुल (कांगड़ी) इनी गिनी शिक्षा संस्थाओं में से है जिन्होंने अंधकार पूर्ण समय में ज्ञान का दीपक प्रज्वलित रखा। अन्यत्र शिक्षा के क्षेत्र में जिन सिद्धांतों पर अमल हो रहा है उन्हें सबसे पहले गुरुकुल में चलाया गया।

(उपराष्ट्रपति डा० राधाकृष्णन के दीक्षान्त भाषण का सार, अप्रैल १९५५)

शिक्षा प्रणाली में परिवर्तन क्यों आवश्यक है ?

(१)

जो शिक्षा प्रणाली पराधीनता के काल मे हम पर थोपी गई और जिसका हम स्वतन्त्रता के इस काल में अब तक अवलम्बन करते आ रहे हैं उसका ध्येय मनुष्य को जीवन के लिए तय्यार करना और जीवन के व्यापार को उत्तम रीति से सम्पादन करने के योग्य उसे बना देना है। उत्तमता या जीवन की तय्यारी का अर्थ लगभग ९० प्रतिशत लोग किसी को आजीविका कमाने के मार्ग पर डाल देना समझते हैं। आजीविका कमाना विस्तृत दृष्टिकोण के बजाय जो शिक्षा का सच्चा उद्देश्य होना चाहिए एक संकुचित और स्वार्थ पूर्ण दृष्टिकोण है। इस दृष्टिकोण के अनुसार व्यक्ति को किसी व्यवसाय के योग्य बना देना है जिसके द्वारा वह जीवन में धन, पद और प्रभुता प्राप्त कर सके।

व्यक्ति और समाज पर पड़ने वाले प्रभाव की दृष्टि से इस प्रकार की शिक्षा का उद्देश्य हानिकारक है। यह उद्देश्य बड़ा घन्धा है और सांसारिक असफलता के विरुद्ध यह ध्येय कोई संरक्षण भी नहीं है।

इस चिकने मार्ग के विरुद्ध जिस पर मनुष्य को सत्य की अपनी यात्रा पर चलना होता है संरक्षण की तो बात ही क्या है ?

शिक्षा प्राप्त करना और जैसे तैसे अपने गुजारे का प्रबन्ध करना एक चीज है परन्तु यह देखना कि वह शिक्षा किस प्रकार जीवन की वास्तविक तय्यारी करा सकती है कहीं ज्यादा महत्व पूर्ण चीज है। यदि कोई व्यक्ति किसी शिक्षा से विशेषताओं से दीक्षित नहीं होता है तो वह शिक्षा; शिक्षा कहे जाने के योग्य नहीं है। वर्तमान शिक्षालयों मे सबसे बड़ी त्रुटि यह है कि इसने विशेषताओं में गड़बड़ पैदा कर दी है कि साधारण कोटि का शिक्षित व्यक्ति जीवन के मुख्य ध्येय का निर्णय करने की भयंकर भूल कर बैठता है। श्रीयुत डा० जे. ऐच स्लोडन, ठीक कहते हैं कि "अपने पैरों के नीचे की धूल को देखना और मोतियों से असंकृत ऊपर के गुम्बद को न देखना, इस छोटे से संसार को देखना और किसी दूसरे संसार को न देखना निर्णय की सबसे बड़ी भूल है जो मानवी आत्मा कर सकती है। शिक्षा बड़ी निराशा जनक असफलता है और यह अच्छा होता कि इसका हम कभी प्रकाशन पाते यदि वह हमें उन शाश्वत मूल्यों (विशेषताओं) को देखने और पसन्द करने में समर्थ नहीं बनाती है जो, प्लेटो के शब्दों में शरीर और आत्मा के समस्त सौन्दर्य और समस्त पूर्णता में जिनके वे योग्य है विकसित होती है।" प्लेटो के मतानुसार उच्च शिक्षण का उद्देश्य आत्मा को ऐन्द्रिय जगत के अध्ययन पूर्वक उसके वास्तविक अस्तित्व के मनन की ओर ले जाना है।"

भारत वर्ष ने अपने अतीत काल में अध्ययन और ज्ञान, ऐहिक और आध्यात्मिक शिक्षा को इसलिए मिलाने का यत्न किया था कि जिससे पुरुष और स्त्रियां जीवन के परीक्षणों और मुसीबतों के सहने और उत्तम जीवन बनाने के लिए पूर्णत: तय्यार हो सके।

क्या वर्तमान भारत वर्ष शिक्षा के क्रियात्मक हल के लिए अपने प्राचीन इतिहास के पृष्ठों को नहीं खोल सकता है ?

अकाली अड़े रहे तो महा पंजाब के सिवा कोई चारा न रहेगा

श्री कुलदीप नैय्यर लिखते हैं : (पं. के. २१-१-८५)

"श्री लोंगोवाल और श्री जगदेव सिंह तलवन्डी दोनों ने और विशेषत: श्री तलवंडी ने जो धौंस पट्टी अपने बयान में दी है वह मसले को हल करने में सहायक नहीं होगी।

हो सकता है कि उन्होंने जो बयान दिए हैं वे मुख्यत: इसी भावना से प्रेरित होकर दिए हों कि कहीं उन्हें कमजोर ही न समझ लिया जाय। किंतु जलती को बुझाने का यह कोई तरीका नहीं है।

मेरी जानकारी के अनुसार यदि ये नेता पुराने ढर्रे पर ही चलते रहे और उन्होंने अपना अड़ियल रवैय्या न बदला तो सरकार पंजाब, हिमाचल और हरियाणा को मिलाकर एक राज्य बनाने के अपने सुझाव को पुनः सामने ला सकती है।

श्री भजनलाल का यह बयान कि वह विलय सम्बन्धी अपने प्रस्ताव पर डटे हुए हैं उनका व्यक्तिगत रवैया मानकर टाल नहीं दिया जाना चाहिए क्योंकि इस सारे अरसे में वे नई दिल्ली से लगातार सम्पर्क बनाए हुए हैं।

अकालियों को इस तथ्य को स्मरण रखना चाहिए कि भारत के लोगों ने कांग्रेस(इ) के पक्ष में लोकसभा चुनावों में प्रचण्ड मतदान कर उसे विजयी बनाकर अकालियों द्वारा उग्रवादियों के प्रति अपनाए गए ढुलमुल रवैए के प्रति भी अपना फैसला दिया है।"

एक प्रेरक प्रसंग

श्रीयुत स्व० महाशय कृष्ण जी कलम के धनी थे। प्रताप और प्रकाश के माध्यम से जनता उनकी कलम के चमत्कार पर विस्मित और विमोहित रहती थी। इतना ही नहीं उनकी लेखनी की तमाम पंजाब में धाक रहती थी। दिल्ली आने पर भी प्रताप सभी वर्गों के लोगों के आकर्षण का केन्द्र रहा।

श्री स्व० पं० इन्द्र जी विद्यावाचस्पति का कार ड्राइवर एक सिख बंधु था। एक दिन पंजाब की अशांति के बारे में वह पंडित जी से वार्तालाप कर रहा था। वार्तालाप के दौरान उसने कहा कि यदि पंजाब में मिलाप और प्रताप अखबार बन्द हो जाय तो शांति की स्थापना में बड़ी मदद मिल सकती है।" इस पर पंडित जी ने उससे पूछा 'जब प्रताप के बारे में तुम्हारी ऐसी बुरी राय है तो तुम उसे रोजाना खरीदकर पढ़ते ही क्यों हो ?

यह सुनकर क्षण भर के लिए सिख ड्राइवर लज्जित हो गया परन्तु दूसरे ही क्षण उसने गम्भीर भाव में कहा "क्या करूं महाशय कृष्ण लिखते इतना अच्छा हैं कि प्रताप को पढ़े बिना मुझसे रहा नहीं जाता।"

—रघुनाथ प्रसाद पाठक

आदर्श योगी ऋषि दयानन्द

आज लोक की तरह परलोक को भी दुनियादारों ने व्यवसाय का साधन बना रक्खा है। कोई रूहों को बुलाने आदि का व्यवसाय करता है। कोई समाधि लगाने का ढोंग करके पैसे बनाता है। कोई दो मिनिट में ईश्वर के दर्शन करा देने का स्वांग रचकर स्त्रियों और पुरुषों को ठगता है। अस्तु इस प्रकार के अनेक व्यवसाय धन कमाने के लिए पेशे आज प्रचलित हो रहे हैं। इन पेशो के द्वारा मनुष्य धन तो कमा सकता है परन्तु योगी नहीं बन सकता। योग पेशा नहीं अपितु एक प्रक्रिया है जिसके द्वारा मनुष्य शारीरिक, मानसिक और आत्मिक स्वस्थता या बल प्राप्त किया करता है। योग के द्वारा इन्द्रियों और मन में, मन और आत्मा में, आत्मा और परमात्मा में मेल (Harmony) उत्पन्न हुआ करता है।

ऋषि दयानन्द ने अपनी आयु का बड़ा भाग इसी सामंजस्य के प्राप्त करने में लगाया था। उनमें जहाँ आत्मिक बल था जिससे मृत्यु से उन्होंने निर्भीकता प्राप्त की और इसीलिए मृत्यु शय्या पर मुस्कराते, गुरुदत्त जैसे नास्तिक को आस्तिक बनाते और यह कहते हुए कि प्रभु ! आपने अच्छी लीला की, आपकी इच्छा पूर्ण हो दुनिया से कूच किया वहां मानसिक बल भी बहुमात्रा में था जिससे उन्होंने सफलता के साथ देश का नेतृत्व किया और शारीरिक बल भी था जिससे जहां उनके हाथों से राव कर्णसिंह की तलवार के टुकड़े-टुकड़े हो गए वहां दूसरी ओर घोर जंगलों में उनकी हुंकार मात्र से वनैले जन्तु रीछ आदि भयभीत होकर इधर-उधर हो जाया करते थे।

योग की भूमिका

योग का काम निट्शे का कल्पित अहंकार पूर्ण एव मदोन्मत्त पुरुष बनाना नहीं न जूलियस सीजर्स वा नैपोलियन की कोटि का मनुष्य बनाना है। उसका काम श्री कृष्ण, गौतमबुद्ध वा दयानन्द जैसे महामानवों का बनाना है। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए योग की प्रक्रिया में निम्न शिक्षाओं का समन्वय है।

१—ब्रह्मचर्य—उत्पादक शक्ति के लिए सम्मान का भाव उत्पन्न कर देना ब्रह्मचर्य कहा जाता है। इन्द्रिय, मन आदि सभी के लिए ब्रह्मचर्य की जरूरत है। नेत्रों के ब्रह्मचर्य की जरूरत है। नेत्रों के ब्रह्मचर्य की पूर्ति 'मित्रस्य चक्षुषा समीक्षा महे' की शिक्षा को ग्रहण करने से हुआ करती है। मन का ब्रह्मचर्य काम क्रोधादि के दमन से पूरा होता है। इसी प्रकार अन्य बाह्य और अन्त करणों के ब्रह्मचर्य की कल्पना कर लेनी चाहिए। ब्रह्मचर्य का मुख्य आदर्श यह समझ लेना है कि मनुष्य का शरीर ईश्वर का मन्दिर है और ऐसी भावना रखते हुए सदैव उसका मान करना चाहिए। यह ब्रह्मचर्य प्रणाली मनुष्य के अन्तःकरणों को विश्वभावना से ओत-प्रोत कर दिया करती है।

२—बोध और प्रतिबोध—इन्द्रियों के द्वारा प्राप्त ज्ञान (बोध) से बुद्धि आदि भीतरी इन्द्रियों की शुद्धि हुआ करती है और आत्मा द्वारा प्राप्त ज्ञान (प्रति बोध) आत्म शुद्धि होती है और इन दोनों प्रकार की शुद्धियों से धारणा (चित्त की एकाग्रता) और ध्यान (चित्त के निरोध) की सिद्धि हुआ करती है।

३—अन्तर्मुखी होना—चित्त की वृत्तियों के निरोध से योगी अन्तर्मुख वाला होकर उस अवस्था को प्राप्त होता है जिसे तुरीय कहते हैं और जिसमें अहंकार के सर्वथा अभाव से वह ब्रह्म का साक्षात्कार किया करता है। अस्तु। इन प्रक्रियाओं को पूर्ति होने से मनुष्य सचमुच मनुष्यत्व रखने वाला मनुष्य बन जाया करता है। उसके भीतर बल होता है, दिव्य ज्योति होती है। उसके सामने से दुई का पर्दा हटा हुआ होता है और वेद की शिक्षानुसार 'यस्तु सर्वाणि···'(यजु० ४०।६) परमात्मा में सबको और सबमे परमात्मा को देखता हुआ मोह और शोक दोनों से ऊपर हो जाता है और समझने लगता है कि संसार में जन्म लेना पतन नहीं वरन् ऊपर उठने का साधन है और इसीलिए उसे एक एक प्राणी के भीतर प्रभु की दिव्य ज्योति दिखाई देने लगती है।

ऋषि दयानन्द इन्ही विभूतियों से सम्पन्न होकर आर्यसमाज जैसा विश्वभावनामय समाज बनाने में सफल हुए जिसका मुख्य उद्देश्य संसार का उपकार करना है अन्यथा वे भी कोई सम्प्रदाय खड़ा कर सकते थे। (महात्मा नारायण स्वामी जी की डायरी से)

कुरआन में ओ३म् है ?

—डा० आनन्द सुमन

पूर्व (डा० रफत अखलाक)

ओ३म् परम् पिता परमेश्वर का प्रमुख नाम है। ओ३म् किसी जाति, मजहब, सम्प्रदाय या समाज का सूचक नहीं। ओ३म् सर्व-व्यापक, सर्व शक्तिमान, सृष्टि के रचयिता परम पिता परमेश्वर का सूचक है। ओ३म् विश्व शान्ति व मानव एकता का प्रतीक भी है। ओ३म् में तीन अक्षर हैं।

अ=परमात्मा। उ=जीवात्मा, म्=प्रकृति

या=इस प्रकार कहें

अ=परमात्मा=सत्, चित आनन्द

उ=जीवात्मा=चित, सत

म=प्रकृति=सत

अर्थात् सच्चिदानन्द,

परमात्मा, जीवात्मा, प्रकृति का मिश्रण ही ओ३म् है। कुछ लोगों को भ्रान्ति है कि ओ३म् केवल वेद में ही है। किन्तु यह एक कटु सत्य है कि ओ३म् प्रत्येक मत सम्प्रदाय में समाया है।

ओ३म्=सब शक्तिमान, स्वयम् भू (वेद)

अल्लाह=सर्व शक्तिमान्, न्यायकारी (कुरआन)

गाड=सर्व व्यापक, पालक (बाईबिल)

ओंकार=सर्वाधार, रक्षक (ग्रन्थसाहब)

यह स्पष्ट उपदेश मेरा नहीं—समस्त ग्रन्थों का है कुरआन में तो स्पष्ट ओ३म् है। देखे—

कुरआन में प्रथम अध्याय है सुरह अलबकर अर्थात् गाय का अध्याय। इस अध्याय में ईश्वर, समाज, स्त्री व गाय पर मिले-जुले विचार प्रकट किये गये हैं, इस अध्याय की प्रथम आयत निम्न प्रकार है।

अलिफ, लाम, मीम, जाले कल किताबों ला रैब। अलिफ, लाम, मीम,-हमने तुम्हें किताब दी है इसके आसमानी होने में कोई शंका नहीं।

प्रश्न यह है कि जालेकल किताबों ला रैब का अर्थ है तब अलिफ लाम मीम का अर्थ क्यों नही है। यदि है तो लिखा क्यों नहीं गया—हमारे मौलवी बन्धु कहते हैं कि यह तो अल्लाह का हुक्म है कि इसका कोई अर्थ ही नही है। किन्तु शंका का समाधान केवल यह कह देने मात्र से नही हो जाता—कर्म हुआ—इसका अर्थ है कोई कर्त्ता अवश्य है, ज्ञात होता है कि किसी बात को छिपाया जा रहा है। हमारी मान्यता है कि वैदिक धर्म से बचने के लिए इन शब्दों का अर्थ नहीं किया गया। देखें—

अलिफ=अ=परमात्मा या अल्लाह

लाम=उ=प्रकाश करने वाला या जीवात्मा

मीम—म्=कल्याण कारक या प्रकृति

(शेष पृष्ठ ६ पर)

(पृष्ठ ५ का शेष)

अरबी अलिफ—"अ" (संस्कृत) ईश्वर को अकार इसलिए कहते है कि संसार का आरम्भ उसी के द्वारा होताहै अर्थात् आदि मूल

अरबी लाम=संस्कृत "ल" अर्थ प्रकाश स्वरूप अर्थात् जीवात्मा जो प्रकाश स्वरूप है अर्थात् उ जो लाम का सूचक है अरबी मीम= संस्कृत 'म' जो कल्याण कारक है या जो महान् बनाता है।

कुरआन के अलिफ लाम मीम का वास्तविक अर्थ यही होना चाहिए, किन्तु हमारे मुस्लिम बन्धु इसे स्वीकार नहीं कर पायेंगे क्योंकि अहम् जो मन में है।

हमने माना अलिफ=अ=परमात्मा=आदिमूल=सृष्टि का रचनाकार=परम् प्रकाश=सबका रक्षक लाम=उ=जीवात्मा= प्रकाश स्वरूप=परमेश्वर का अंश, मीम=म् प्रकृति=कल्याणकारक =महान् बनने वाली, किन्तु यहां एक भ्रान्ति का निवारण करते चलें। प्रकृति तभी कल्याणकारक है जब जीवात्मा परमात्मा में लीन हो जाय। देखे—

सत्य+चित+आनन्द
परमात्मा+जीवात्मा+प्रकृति

यदि चित्त को सत्य में रमा लिया जाय या चित्त सत्य में लीन हो जाये तभी आनन्द की प्राप्ति होती है। किन्तु यदि चित्त सत्य को त्याग कर आनन्द की ओर भागे तब क्या आनन्द प्राप्त होगा? आनन्द ईश्वर की तरह ही एक अनुभूति हैं। धन के बल पर ऐश्वर्यशाली भोगी बनकर आनन्द प्राप्त नहीं होता। आनन्द तो वास्तव में ईश्वर को बसा लेने से प्राप्त होता है। तब क्या आनन्द प्राप्त होगा? आनन्द तो मात्र एक अनुभूति है अतएव आनन्द प्राप्ति का साधन यही है कि पहले सत्य को प्राप्त करें—तब आनन्द तो स्वयं ही प्राप्त हो जायेगा कैसे—देखें एक छोटी सी कथा—

एक मनुष्य ने अपनी परछाई को देखा। उसकी इच्छा हुई कि परछाई को पकड़ ले, उसने हाथ बढ़ाया परछाई थोड़ा आगे बढ़ गई! वह भी आगे बढ़ा,परछाई थोड़ा और आगे बढ़ गई वह मनुष्य भागने लगा। परछाई भी उसके थोड़ा आगे भागने लगी, वह काफी देर तक दौड़ता रहा अन्त यह कि थक कर चूर हो गया, गिर गया, थोड़ी देर में होश आया। सामने एक भद्र पुरुष खड़े थे—भद्र पुरुष ने पूछा क्यों मनु की सन्तान कैसे गिर गये। उत्तर दिया—परछाई पकड़ने दौड़ा था। किन्तु हाथ ही नहीं आती। भद्र पुरुष मुस्कराये कहा—हे मनुज कितने भोले अज्ञानी हो तुम, अरे कहीं परछाई के पीछे भागने से परछाई पकड़ पाओगे। मनुज पैर पड़ गया—बोला महाराज तब किस विधि से हाथ आएगी बताइए, भद्र पुरुष ने कहा यदि परछाई प्राप्त करना चहते हो तो परछाई की विपरीत दिशा में भागो परछाई तो स्वयं तुम्हारे पीछे-पीछे आएगी। तुम उससे मोह करोगे—वह तुमसे दूर जाएगी तुम उससे जितना दूर जाओगे वह उतना ही तुम्हारे पास आएगी और भद्र पुरुष चले गए मनुज काफी देर तक सोचता रहा क्या इस विधि से परछाई को पा जाऊंगा। उठा, उठकर परछाई की विपरीत दिशा में चला चौक पड़ा परछाई तो उसके पीछे-पीछे चली आ रही थी। यही तो वास्तविक आनन्द है कि हम परछाई की ओर भागेंगे तब आनन्द प्राप्त नहीं होगा। किन्तु यदि हम परछाई के विपरीत दिशामें भागेंगे तब वह तो बेचारी हमारी दासी है ही स्वयम् पीछे-पीछे आएगी।

आनन्द, सत्य व चित्त के बिना नहीं रह सकता इसलिए हमें सत्य की ओर ही चित्त लगाना चाहिए आनन्द तो प्राप्त हो ही जाएगा।

कुरआन में ओ३म् है। आपने उपरोक्त प्रमाणों के आधार पर यह देख ही लिया होगा।

सत्य है कहा जाये या न कहा जाये। खिड़की है चाहे खोली जाये या न खोली जाये। किन्तु यदि सत्य है तो उसे बोला जाना चाहिए। खिड़की है तो उसे खोला जाना चाहिए।

कोई माने या न माने किन्तु यह तो सत्य है कि कुरआन में ओ३म् है। वास्तव में संस्कृत समस्त भाषाओं की जननी है। कोई भी भाषा उससे अछूती नहीं—इसलिये कहीं न कहीं किसी न किसी रूप में वह सर चढ़कर बोल ही जाती है और कोई करे या न करे—उसके करने या न करने से होता भी क्या है। यह सत्य है कि कुरआन में ओ३म् हैं।

पैरिस को जिस तरह जंगी विनाश से बचाया गया था, उसी भांति गुरुद्वारों की भी रक्षा की जा सकती थी

लंदन में खालिस्तानी ग्रुप एक-दूसरे को नीचा दिखाने के लिए तरह-तरह के हथकंडे इस्तेमाल कर रहे हैं। कम्युनिस्ट दोनों के आरोपों के जवाब में बयान दे रहे हैं और उनका दावा है कि वह खालिस्तानियों के बखिए उधेड़ रहे हैं।

कम्युनिस्ट समर्थक भारतीय मजदूर सभा के मन्त्री सरदार निरंजन सिंह तूर ने तथाकथित खालिस्तानी राष्ट्रपति डा० जगजीत सिंह चौहान के आरोपों का करारा उत्तर देते हुए यहां के खालिस्तान समर्थक साप्ताहिक में लिखा है कि मैं डा० साहब से प्रार्थना करता हूं कि वह सिखों पर दया करें। उनके उत्तेजक बयानों से सिखों को कोई फायदा नहीं हुआ। उन्होंने बयान दिए और इसके नतीजे में कितनी ही हिन्दू-सिख स्त्रियां विधवा हो गईं और कितने ही हिन्दू-सिख बच्चे अनाथ हो गए। डा० साहब ने इनके लिए फूटी कौड़ी भी नहीं भेजी। वह कांग्रेस सरकार को या अकाली दल को चाहे कुछ न भेजें, परन्तु अपनी पसन्द की किसी संस्था को ही आर्थिक सहायता भेज दें परन्तु वह तो ऐसी हरकतों में लगे हुए हैं जिनके कारण और न जाने कितने हिन्दू-सिख बच्चे अनाथ और स्त्रियां विधवा होंगी। डा० साहब हम पर आरोप लगाते हैं कि हम ने सरकार और कांग्रेस से गठजोड़ कर रखा है, परन्तु वह अपने दिल से पूछें और छाती पर हाथ रखकर बताएं कि क्या उन्होंने १९६८ में अकाली मन्त्रिमंडल भंग करने के लिए कांग्रेस से गठबंधन नहीं किया था? कम्युनिस्टों ने गुरनाम सिंह को धोखा नहीं दिया था। हम ने कांग्रेस की हिमायत नहीं की। हमने उसके एकाधिकारवाद की निन्दा की है, परन्तु हमने यह भी कहा है कि जरनैल सिंह भिंडरावाले ने पहले कांग्रेस के हाथों में खेल कर और फिर हिन्दुओं के खिलाफ खुली घृणा और 'मड़की वारन दी मुहिम तेज करके" और हरमन्दिर साहिब को हथियारों की छावनी बनाकर कांग्रेस सरकार को तथाकथित दमन की मशीनरी चलाने का बहाना दिया था। हमारे विचार में डा० साहब के गैर जिम्मेदारी वाले बयानों ने साम्प्रदायिक तत्वों को खून खराबा करने के लिए बहाना दिया। उन्होंने आरोप लगाया है कि ब्रिटेन में गुरुद्वारों पर कम्युनिस्टों का कब्जा है, इसलिए आपको काला धन नहीं मिल रहा। हम काले धन के विरोधी हैं। आपको किस बात की कमी है। आपके पहले मित्र याहिया खान थे। अब जनरल जिया आपके मित्र हैं और फिर सी. आई. ए. आपके साथ हैं। आप पंजाब के वित्त मन्त्री रहे हैं इसलिए आपके पास धन की कमी नहीं हो सकती।

इसी खालिस्तानी साप्ताहिक में एक व्यक्ति ने डा० चौहान से पूछा है कि आपने अपने हिसाब में लिखा है कि आपने ७८० पौंड डाक खर्च पर लगाए और ४५१० पौंड विमानों के टिकटों पर खर्च किये। क्या आप "न्यूज-लैटर" लिखते रहे हैं? आपने किसी गुरुद्वारा कमेटी को तो कोई पत्र नहीं लिखा। आप ब्रिटेन से बाहर कहीं नहीं गए तो फिर हवाई टिकटों पर कैसे ४५१० पौंड लग गये। पीड़ित परिवारों को आपने एक पैसा भी नहीं दिया। भाई जसबीर सिंह को छुड़ाने के लिए कुछ भी नहीं किया।

गुरुद्वारों पर कब्जे की कोशिशें

साऊहाल के ऐतिहासिक गुरुद्वारे पर कब्जा करने के लिए तलवन्डी ग्रुप ने भिंडरावाले और भाई जसबीर सिंह के अनुयाइयों से गठजोड़ कर लिया है। यह वही गुरुद्वारा है जिसके मन्त्री श्री बेअन्त सिंह ने कुछ दिन पहले जनता पार्टी के नेता जार्ज फर्नांडीज का स्वागत किया था। यह स्थान लंदन में लोंगोवाल ग्रुप का गढ़ है, परन्तु यह ग्रुप भी खालिस्तान का समर्थक है। गत सप्ताह प्रबन्धक कमेटी के पदाधिकारियों का चुनाव करने के लिए एक बैठक हुई। पहले सुझाव दिया गया कि सभी ग्रुप 'पांच प्यारे' नियुक्त करें और वह जो पदाधिकारी नियुक्त करें, उन्हें प्रबन्ध सौंप दिया जाय। परन्तु श्री बेअन्त सिंह के नाम पर झगड़ा हो गया और दोनों ओर से एक दूसरे पर पंथ से गद्दारी के आरोप लगाकर नारे लगाये जाने लगे। इस पर प्रबंधकों ने बैठक स्थगित कर दी और घोषणा कर दी कि चुनाव अप्रैल में होंगे। यह कहकर प्रबन्धक चले गये। इसके विरोधियों ने बैठक करके 'पांच प्यारे' चुन लिए और उन्होंने घोषणा कर दी कि हम सिखी मर्यादा के अनुसार स्वयं पदाधिकारी नियुक्त कर देंगे। इसके बाद जिसकी इच्छा हो वह अदालत मे जाए। इस बात की आशंका है कि इस गुरुद्वारे पर कब्जा करने के लिए दोनों ग्रुपों में खून-खराबा भी हो सकता है।

कनाडा में विरोध

इस बीच कनाडा में विलियम लेक गुरुद्वारे पर कब्जा करने के लिए हुल्लड़बाजी के लिए आए लोगों को संगत ने बुरी तरह से भगा दिया। खालिस्तानियों की धमकियों की परवाह न करते हुए संगत ने ११ में से १० ऐसे लोगों को चुना, जो खुलकर खालिस्तान की मांग का विरोध करते हैं। नए अध्यक्ष सुरेन्द्र पाल सिंह ने कहा कि हम अपने इस पवित्र स्थान को खालिस्तानी राजनीति का अखाड़ा नहीं बनने देंगे। हम हिन्दुओं और सिखों को आपस में लड़ाने और भारत के टुकड़े-टुकड़े करने की साजिशों में किसी हालत में भाग लेना नहीं चाहते। उन्होंने कहा कि हम ईंट का जवाब पत्थर से देना भी जानते हैं।

दूसरी ओर न्यूयार्क के एकमात्र गुरुद्वारे पर कब्जा करने के लिए आतंकवादियों ने कई शहरों से आकर हल्ला बोल दिया और ग्रन्थी ज्ञानी गुरदीप सिंह को काबू करके उससे अखण्ड पाठ शुरू करा दिया। अब यह हालत है कि प्रबन्धकों के आग्रह पर पुलिस बाहर खड़ी इस बात की प्रतीक्षा कर रही है कि कब्जा करने वाले बाहर निकलें तो उन्हें पकड़ लिया जाय और अन्दर यह हालत है कि एक के बाद दूसरा अखण्ड पाठ शुरू हो जाता है और सिलसिला खत्म होने में नहीं आता।

सर्वेक्षण का नाटक

लन्दन में खालिस्तानियों की एक नई दुकान कायम हुई है, इसका नाम है "बोर्ड आफ ब्रिटिश सिख"। इसने ९५ सवालों का एक पत्र प्रकाशित किया है और इस देश मे रहने वाले सिखों को कहा है कि वह इनका जवाब दें क्योंकि वह खालिस्तान के सवाल पर सर्वेक्षण करना चाहते हैं। इन सवालों में से एक यह है कि क्या आपके विचार में भारत से अलग खालिस्तान बनना चाहिए और क्या इसके लिए किसी विदेशी ताकत से सहायता ली जाए तो किस रूप में? एक और सवाल यह है कि क्या जरनैल सिंह भिंडरावाले सिखों के दिलों की धड़कनों का प्रतिनिधित्व करते थे? क्या सेना की कारंवाई पर उन्हें सेना के सामने हथियार डाल देने चाहिए थे? क्या ब्रिटेन में रहने वाले सिख पंजाब के मसले के हल के लिए संघर्ष करें और क्या विदेशी सिखों की हरकतों से भारत मे सिखों को नुकसान पहुंच सकता है?

भारत के सिख पीड़ितों के नाम पर चन्दे एकत्र करके हड़प कर जाने वाले ब्रिटेन में नहीं बल्कि कनाडा में भी सक्रिय हैं। वैनकूवर से प्रकाशित होने वाले साप्ताहिक में श्री दर्शनसिंह सेखी ने आरोप लगाया है कि ओन-ट्रारिओ में एक नेता ने ४० हजार डालर सिख पीड़ितों के नाम से एकत्र किये और वह सारी रकम डकार गया। पीड़ितों को एक पैनी भी नहीं भेजी। इसी साप्ताहिक मे फ्रैंसकों के श्री रणबीर सिंह सेखों ने मुख्य ग्रन्थियों के नाम एक 'खुले पत्र' में धमकी दी है कि यदि सरकार से बात चीत करके खालिस्तान लिये बिना कोई समझौता किया तो उन्हें और अकाली नेताओं को 'बड़ी भारी कीमत' देनी पड़ेगी। पत्र में लिखा है कि अकाली नेताओं में भ्रष्टाचार बढ़ रहा है। हम उन पर विश्वास करने को तैयार नहीं। इसी समाचार पत्र के सम्पादक ने अपने सम्पादकीय में जत्थेदार कृपालसिंह पर उग्रवादियों के हमले को सिख परम्परा के अनुसार ठीक करार दिया है।

"सिखों को क्या करना चाहिए" के शीर्षक से एक महानुभाव ने इसी समाचार पत्र में लिखा है कि मैं जिस तरह इन्दिरा गांधी की हत्या के बाद हुए खून-खराबे को अच्छा नहीं समझता इसी तरह मैं यह समझता हूं कि गुरुद्वारों में लड़कर जानें देना आत्महत्या है। सिखों को मालूम था कि सर-

कार की विजय होगी। गुरुद्वारों में लड़ने की तैयारी करना एक तरह से सरकार को टैंक लाने का निमन्त्रण देना था। उन्हें बाहर आकर मुकाबला करना चाहिए था। इससे गुरुद्वारों का नुकसान न होता। दूसरे महायुद्ध में फ्रांस ने पैरिस शहर को खाली करके बचा लिया था। मैं अपना नाम नहीं लिख रहा क्योंकि क्या पता मुझे ही कोई खत्म करदे !

गंगासिंह ढिल्लों ने पैंतरा बदला

गंगासिंह ढिल्लों ने फिर पैंतरा बदल लिया है। उसने कुछ दिन पहले श्री गुरनाम सिंह तीर के द्वारा बयान दिया था कि मैंने कभी खालिस्तान की मांग का समर्थन नहीं किया। मैं तो भारत की एकता का समर्थक हूं, परन्तु अब उसने एक टेप रिकार्ड किये बयान में कहा है कि मैंने श्री गुरनाम सिंह तीर को ऐसा बयान देने का अधिकार नहीं दिया था। वह मेरे सम्पत्ति वाले केस में वकील हैं परन्तु मेरे राजनीतिक वकील नहीं। मैं तो हमेशा खालिस्तान की मांग का समर्थक रहा हूं।

इस पर खालिस्तान समर्थक साप्ताहिक 'इंडो कैनेडियन टाईम्ज' ने लिखा है कि ढिल्लों राजनीतिक पैंतरे बदलने का आदी है। जब तीर साहिब के द्वारा एक बयान प्रकाशित हुआ था तो उन्होंने उस समय इसे क्यों नहीं झुठलाया ? वह यही बात श्री तीर को कह सकते थे, परन्तु उन्होंने ऐसा नहीं किया। ढिल्लों ने १९८१ में चीफ खालसा दीवान की अन्तर्राष्ट्रीय कान्फ्रेंस में 'अलग कौम' का नारा लगाया था। इसके बाद चन्डीगढ़ में एक पत्रकार सम्मेलन में कहा था कि मैं खालिस्तान का समर्थक नहीं। यदि यह बयान समाचार पत्रों ने गलत प्रकाशित किया था तो उस समय तो वह भारत में थे। वहां इसको झुठला क्यों नहीं दिया ? ढिल्लों अपना स्टैण्ड बदलता रहता है। इसने न्यूयार्क मे कहा था कि मैं श्री दीदार सिंह की विश्व सिख फैडरेशन को तबाह कर दूंगा। उन्हें आम तौर पर पंथ से अधिक कुर्सी प्यारी होती है। इसलिए उनके बयानों का कुर्सी युद्ध के अनुसार बदलते रहना स्वाभाविक है। सिख नेताओं को अपने कुर्सी युद्ध में समाचार पत्रों को घसीटना नहीं चाहिए।

इसी बीच श्री ढिल्लों ने सिख समाचार पत्र में विज्ञापन प्रकाशित कराये हैं कि उन्हें पाकिस्तान के गुरुद्वारों में काम करने के लिए रागी और पाठी चाहिएं। उन्हें वह उचित वेतन देंगे। उन्होंने यह घोषणा भी की है कि वह वैसाखी उत्सव पर ननकाना साहिब में अमृत प्रचार सम्मेलन करेंगे। कहा जाता है कि उन्होने पाकिस्तान के राष्ट्र को लिखा है कि वह इस अवसर पर भारत की शिरोमणि कमेटी को कोई महत्व न दें बल्कि मेरे प्लान पर अमल करने की सुविधा दी जाए। इस सवाल पर खरबपति दीदार सिंह और मेजर जनरल भुल्लर से उनकी टक्कर की आशंका है। दोनो ग्रुप सशस्त्र होकर ननकाना साहिब पहुंचेगे।

पं० विष्णुदत्त को धमकियां

साऊथाल के क्षेत्र में रहने वाले कम्युनिस्ट नेता पं० विष्णुदत्त शर्मा, जो इन दिनों 'चर्चा' नाम के समाचार पत्र ने खालिस्तान के बखिए उधेड़ रहे हैं, को खालिस्तानियों की ओर से हत्या की धमकियां मिल रही हैं।

(पं० के० ११-३ ८५)

अच्छा नागरिक कैसे बना जाय ?

आर्य समाज द्वारा संचालित शिक्षण संस्थाओं को आर्य जगत् के विद्वान् श्री आर्य नरेश जी ने कहा कि मनुष्य बनाने में दूसरा स्थान गुरु का है। मनुष्य कितना भी पढ़-लिख जाय लेकिन यदि वह संस्कृति विहीन हो तो वह शिक्षित नहीं कहलायगा। जैसा कि वेदों में लिखा है "मनुर्भव"। मनुंर्भव का विश्लेषण करते हुए उन्होंने कहा कि हम अपनी संस्कृति को अपना कर ही मनुष्य बन सकते हैं। आज हम बालकों को भारतीय संस्कृति सिखलाकर ही भारत का उद्धार कर सकते हैं। उनकी जिज्ञासा को सही ढंग से हल करके उनको भारत का अच्छा नागरिक बना सकते हैं।

शाम को आर्य कुमारों को सम्बोधित करते हुए कहा कि आज का युवक फैशन परस्त होता जा रहा है। उसके हृदय में अपने गुरु व बड़ों के प्रति श्रद्धा नहीं है। कम परिश्रम करके अधिक लाभार्जन की प्रवृत्ति मन में बैठती जा रही है। उनके जीवन का लक्ष्य खाओ, पीओ और जीयो, येन केन प्रकारेण शिक्षा को डिगरीयां प्राप्त कर अर्थ प्राप्ति की ओर बेतहाशा भाग रहे हैं। परिणामस्वरूप जो भारत का नक्शा हमारी कल्पना का था वह धूमिल व बिगड़ता जा रहा है। आज महाविद्यालयों में डिस्को डांस (एल०एच०डी०) नशीले पदार्थों का सेवन करने की होड़ हो गई है। उस युवक से हम क्या आशायें रख सकते हैं। इन बुराइयों के लिये हमें इतिहास खोजना पड़ेगा। इसलिये आर्य युवक परिषद् का गठन किया है और उनमें संस्कृति सभ्यता का ज्ञान देना प्रारम्भ किया जा रहा है। मैं चाहूंगा आपका रहन सहन आपकी बोल-चाल आपका हाव-भाव अन्य युवकों की तुलना में अलग दिखाई देना चाहिये तभी आप आर्य कहला सकते हैं।

रात्रि को आर्य सभा को सम्बोधित करते हुए आपने कहा कि आज हम देख रहे हैं कि बचपन में ही बच्चों को चश्में लगने लगे हैं बाल सफेद हो गये हैं डायबिटीज की बीमारियां है तन ऐसा दुबला पतला जिसकी हम कल्पना नही कर सकते हैं। सबके बारे में क्या कभी आपने सोचा है ? वह क्यों हो रहा है इसका मूल कारण है कि यह बालक जिस फैक्ट्री से ढलकर आ रहा है उस फैक्ट्री में कच्चे माल का ही उपयोग हो रहाहै। मैं माता पिताओं से अपेक्षाकरूंगा कि उनका जीवन संयमित व नियमित हो। उनके आचार विचार शुद्ध एवं पवित्र हो। आप बोते हैं बीज बबूल के अपेक्षा करते हैं कि फूल गुलाब के उसमें उग जावे यह कैसे सम्भव है ? मनुष्य को आज जो प्रवृत्ति है वह जानवरों से अधिक मेल खा रही है। पशु-पक्षी भी अपने लिये खाते-पीते हैं अपने लिये जीते व मरते हैं। परन्तु मानव परिवार समाज देश के लिये जीता है और मरता है। रोटी कपड़ा मकान भारतीयों का कभी लक्ष्य नहीं रहा है यह तो पश्चिम की हवा है। हमारे यहां तो गृतो देव ने ४९ दिन उपवास रखने के बाद ५० वें दिन उन्हें खाद्य सामग्री मिलो और उस सामग्री को खाने बैठे इतने में एक भूखा आया में भूखा हूं मुझे दे दीजिये। उन्होंने दे दिया। यह है हमारे देश की संस्कृति इसका अनुकरण करना चाहिये तभी हम भारतीय कहलाने की पात्रता रखते हैं।

आपने कहा कि हमें जात पात से ऊंचा उठकर गुणकर्म स्वभाव के आधार पर चलना चाहिये। आपके साथ पधारे सेवा निवृत्त आर० पी०एस० डिप्टो पोलिस कमिशनर (महाराष्ट्र) बापू बाघमारे वन्देमातरम् ने भी सम्बोधित किया। स्वागत प्रधान पं० रामचन्द्र जी ने किया व आभार प्रदर्शन श्री कैलाशचन्द्र पालीवाल ने किया।

— मन्त्री आर्य समाज, खण्डवा

रामनवमी के दिन जिस महान् विभूति का जन्म हुआ—आर्य जगत के महान् तार्किक शास्त्रार्थ महारथी

श्री पं० रामचन्द्र जी देहलवी

श्री जगदीशप्रसाद एरन आर्य आर्यसमाज नीमच

आर्य जगत् के महान् तार्किक शास्त्रार्थ महारथी श्री पण्डित रामचन्द्र देहलवी प्रायः देहलवी जी के नाम से सम्बोधित किये जाते थे। आपकी आर्य जगत में ही क्या सारे भारत में अपनी विद्वता तर्क शैली, शीरी जुबानी, अथक परिश्रम व धुन के धनी होने के कारण प्रसिद्धि थी। आप अंग्रेजी, हिन्दी, संस्कृत, अरबी तथा फारसी के पूर्ण विद्वान् थे। आपने वैदिक साहित्य के साथ-साथ व पौराणिक जैन, सनातनी, मुस्लिम व ईसाई धर्म का भी पूर्ण मन्थन किया था।

इस महान् विभूति का जन्म सन् १८८१ में राम नवमी के पवित्र दिन नीमच केन्ट (म० प्र०) में हुआ था। आपके पूज्य पिता जी श्री मुंशी छोटेलाल जी मिजाज से धार्मिक प्रवृत्ति के थे। आपकी माता श्रीमती राम देई दिल्ली की रहने वाली थीं। पण्डित रामचन्द्र जी को आर्यसमाजी बनाने का श्रेय इन्हीं को है। आपने अपनी प्रारम्भिक शिक्षा नीमच में ही की तथा बाद में आप इन्दौर उच्च शिक्षा हेतु चले गये।

१८ वर्ष की अल्पायु में ही आपका विवाह दिल्ली निवासी श्रीमती कमलादेवी नामक विदुषी कन्या से हुआ। जीविकोपार्जन के लिए आपने नीमच में ही एक प्रायमरी स्कूल से अध्यापन कार्य प्रारम्भ कर दिया किन्तु परमात्मा को जिस विभूति से महान् कार्य करवाने हों वह एक जगह कैसे ठहर सकती है। गृह कलह के कारण कुछ दिन बाद आप अपनी ससुराल देहली आ गये।

आपकी आर्थिक स्थिति अच्छी न थी। फिर भी धर्म प्रचार के लिये कहीं भी जाते तो तांगा खर्च तक अपनी जेब से देते थे। धर्म प्रचार की ऐसी लगन थी कि लगातार १५ वर्ष (सन् १९१० से १९२५ तक दिल्ली के फव्वारे तथा गांधी ग्राउण्ड पर आप वैदिक धर्म के सत्य स्वरूप को बतलाते रहे तथा विरोधियों को मुंह तोड़ उत्तर देते रहे। प्रतिदिन हजारों की सख्या में उपस्थिति रहती। धुन के इतने पक्के थे कि पुत्र तथा पत्नी के देहावसान के दिन भी आपने कथा बन्द न रखी। इस काल में पण्डित जी की तार्किक शैली तुरन्त बुद्धि व अनुपम कार्य प्रणाली का बोलबाला सारे भारत में हो गया। आप कुरान पढ़ने के लिए एक हाफिज को गोद में उठाकर रात को घर लाते व दिन होने से पहले मस्जिद में छोड़कर आते क्योंकि हाफिज लूला था तथा मुसलमान किसी अन्य मत वाले को कुरान पढ़ने देने के पक्ष में नहीं थे। इसी प्रकार बड़ी कठिनाई से आपने बाइबिल का भी अध्ययन किया। आप जब सस्वर आयत पढ़ते थे तो अच्छे-अच्छे मौलवी दांतों तले उंगली दबा लेते थे। फिरोजपुर वार्षिकोत्सव पर तो इसी लिए एक पठान लड़की ने आपके स्वर पर लट्टू होकर १०) रु० भेंट किए।

आपका पहला शास्त्रार्थ बाड़ा हिन्दू राव मे मुसलमानों से हुआ जिसके निर्णायक न्यायाधीश रेवरेन्ड मिस्टर जुड़ास थे। विजय श्री का सेहरा आपके मस्तक पर बंधा। आप वैदिक शास्त्रार्थ समर में "भीम" नाम से विख्यात हुए। इसके बाद आपने जीवन समर में भारत के प्रत्येक शहर में घूम-घूम कर विविध मतावलम्बियों से शास्त्रार्थ किए।

आपकी सफलता का राज यह था कि आपको सभी सिद्धान्तों का सही व गम्भीर अध्ययन था। आप कभी दूसरे धर्मावलम्बियों के औलियों व नेताओं के लिए अपशब्द नही कहते थे। सिद्धान्तों के स्वयं के आचरणों में धारण करते थे। आपके प्रचार की गति का अनुमान इससे लगा सकते हैं कि आप अकेले ने हैदराबाद में ७ दिन में १२५ व्याख्यान दिये तथा निजाम की नीद हराम कर दी, उसकी धर्मान्धता के विरुद्ध शखनाद आपने ही किया था। पंजाब में हिन्दी रक्षा आन्दोलन के समय कैरों शाही के विरुद्ध विशाल जत्था लेकर सत्याग्रह की आग में कूद पड़े थे।

लगभग ८० वर्ष की आयु तक उसी तरह घूम-घूम कर धर्म ध्वजा लहराते रहे। इसके बाद आपने बाहर जाना कम कर दिया क्योंकि एक रिक्शा दुर्घटना के कारण आपके बायें हाथ में कम्पन हो गया था। इसके बाद पण्डित जी लगातार कमजोर होते चले गए। आप अपनी पुत्री के यहां हापुड़ में रहने लगे। सन् १९६७ तक तो आप इतने कमजोर हो गए कि अपने आप उठ बैठ भी नही सकते थे। पूरा परिवार आपकी सेवा करता था।

अक्टोबर १९६७ में ही आपकी रुग्णावस्था का हाल सुनकर सार्वदेशिक सभा के वर्तमान प्रधान लाला रामगोपाल शालवाले तथा मन्त्री श्री ओ३म्प्रकाशजी त्यागी व वैद्य श्री प्रह्लादजी आपको देहली ले आए। इर्विन अस्पताल तथा दीवानचन्द नर्सिङ्ग होम में आपका इलाज चला। आर्य जगत् में आपकी बीमारी का समाचार जगल की आग के समान फैल गया। लगातार ३ माह तक मृत्यु से संघर्ष करते रहने के बाद ३ फरवरी को यह ज्योतिर्मय दीप बुझ गया।

४ फरवरी १९६८ के रेडियो ने यह दुःख भरा समाचार सारे संसार को सुना दिया। वैदिक धर्म का प्रबल प्रहरी, शास्त्रार्थ केहरी, महर्षि का अनन्य भक्त, ओ३म् का जाप करता हुआ 'ओ३म्' में विलीन हो गया। निगम बोधघाट पर पूर्ण वैदिक पद्धति से आपका अन्त्येष्टि सस्कार किया गया।

आर्य समाजों की गतिविधियां

धर्म परिवर्तन के समाचार से आर्यसमाज में हलचल

दिल्ली २१ मार्च १९८५

उत्तर प्रदेश के नवाबगंज पुलिस थाने के कुछ गांवों में पैट्रोडालर के बल पर हरिजनों के धर्मपरिवर्तन के समाचार पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले ने बड़ी गम्भीरता से इस काण्ड की जांच का आदेश आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश को दे दिया है। इसके अतिरिक्त श्री शालवाले ने गोण्डा बहराइच और नवाबगंज की आर्य समाजों को तुरन्त उक्त क्षेत्र में जाकर विदेशी षड़यन्त्र के बारे में पूरी जानकारी देने के निर्देश दिए हैं।

श्री शालवाले ने कहा आर्य समाज धर्म परिवर्तन के उक्त मामले को बड़ी गम्भीरता से लेता है और रिपोर्ट प्राप्त होने पर सार्वदेशिक सभा का शिष्टमण्डल नवाबगंज का दौरा करेगा और धर्म परिवर्तन के तथ्यों की जांच करेगा।

सच्चिदानन्द शास्त्री
उपमन्त्री सभा

चिकित्सा केन्द्र

समस्त आर्य सज्जनों को यह जान कर प्रसन्नता होगी कि आर्य समाज मन्दिर दरियागंज, नई दिल्ली में ग्राम जनता के चिकित्सार्थ एक "होम्योपैथिक" धर्मार्थ चिकित्सालय का शुभारम्भ दिनांक २२-३-८५ में डा० योगेश कुमारजी करवाल के तत्वावधान में प्रारम्भ हो गया है। इस शुभ कार्य के प्रेरणास्रोत समाज के प्रधान व मन्त्री जी विशेष धन्यवाद के पात्र हैं।

विश्वास है कि इस पुण्य कार्य का लाभ जनता अधिक से अधिक उठायेगी।

—सम्पादक

उत्सव

भरथना (इटावा) आर्य समाज का वार्षिकोत्सव ९, १०, ११ मार्च को समारोह पूर्वक मनाया गया। —श्याम मुनि आर्य

उपप्रधान जिला आर्य सभा भरथना

श्री मुख्यतार खान के परिवार द्वारा वैदिक धर्म में प्रवेश

हिन्दू शुद्धि समिति के मन्त्री स्वामी सेवानन्द जी के प्रयत्न से ग्राम कतलूपुर जिला सोनीपत के वासी श्री मुख्यतार खान सुपुत्र श्री मोमाखान ने अपने परिवार सहित गत सप्ताह यज्ञ करने के पश्चात् स्वेच्छा से वैदिक धर्म में प्रवेश कर लिया। अब उनका नाम शुद्ध करने के पश्चात मुख्यतार सिंह रखा गया है। —केदारसिंह आर्य, कार्यालयाध्यक्ष

गैस पीड़ितो की सेवा सहायता का कार्य विवरण

भोपाल में गैस पीड़ितों की सेवा में दयानन्द सेवाश्रम संघ मध्य प्रदेश अन्तर्गत अखिल भारतीय दयानन्द संघ दिल्ली गत जनवरी से संलग्न है। आठ पीड़ित कालोनीयों में लगभग दस हजार कपड़े, १०० कम्बल तथा ५०० गरम स्वेटर व सूट बांट चुका है। यह सहयोग आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान आर्य समाज मंगलोर व हिन्दू सेवा दल कैथल ने बड़ी मात्रा में प्रदान किया है। स्थाई सहयोग के लिए एक सिलाई प्रशिक्षण केन्द्र जय प्रकाश कालोनी में गत जनवरी से खोल दिया गया है। इस सन्दर्भ में एक बाल कल्याण केन्द्र भी शीघ्र आरम्भ किया जा रहा है। बाल कल्याण केन्द्र के लिए जे० पी० कालोनी के अध्यक्ष ने एक प्लाट दान में दिया है। इस कार्य में सहयोग देने के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के वरिष्ठ उपप्रधान श्री रामचन्द्रजी वन्देमातरम ने स्वयं कार्य का अवलोकन करते हुए पांच हजार रुपये दान दिये हैं। अन्य आर्य समाजें व प्रतिनिधि सभाएं गैस आसव व्यक्तियों की सही अर्थों में सेवा करे। जिन्होंने सहयोग अभी तक दयानन्द सेवाश्रम म० प्र० भोपाल को दिया है उनके प्रति हम आभार प्रदर्शित करते हैं और आशा करते हैं कि शीघ्र स्थाई कार्य पूरा करने के लिए अधिक से अधिक सहयोग देंगे।

गौरीशंकर कौशल पूर्वविधायक	माधुरी शरण	स्नेहलता हांडा
उपप्रधान	कोषाध्यक्ष	मन्त्री

धन व सामग्री भेजने का पता :

प्रधान दयानन्द सेवाश्रम संघ मध्यप्रदेश आर्यसमाज तात्याटोपे नगर, भोपाल
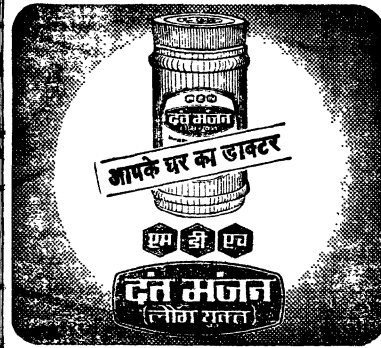
पं० दुर्गादास रोग शय्या पर

आर्य गजट (पाटौदी हाउस दरियागज) दिल्ली के यशस्वी सचालक एव सम्पादक तथा आर्य नेता श्री प० दुर्गादास जी अर्द्धांग से पीड़ित रोग शय्या पर पड़े हैं। उनका समुचित उपचार हो रहा है। परमात्मा से प्रार्थना है कि उन्हें शीघ्रही पूर्ण आरोग्य प्रदानकरें जिससे वे अपनी विविध मूल्यवान गतिविधियो मे सलग्न होने मे समर्थ हो जाये।

—रघुनाथप्रसाद पाठक

श्री देवीदास आर्य की धर्मपत्नी का निधन

कानपुर। सुविख्यात महिला उद्धारक एव आर्य समाजी नेता श्री देवीदास आर्य की धर्मपत्नी एव नगर की सक्रिय समाजसेविका श्रीमती गणेशदेवी आर्या (पूर्व अध्यक्ष, स्त्री-आर्यसमाज) का निधन दि० १४-१-८५ (शुक्रवार) को हृदयगति अवरुद्ध हो जाने के कारण हो गया।

नगर के असख्य नर-नारियों एवं गणमान्य नागरिको ने शवयात्रा मे भाग लेकर दिवगता को भावभीनी श्रद्धाजलि अर्पित की। दाह सस्कार पूर्ण वैदिक-रीति से गोविन्द नगर श्मशान घाट मे सम्पन्न हुआ। आर्य कन्या इन्टर कालेज, आर्य कन्या विद्यालय आदि अनेक शिक्षण सस्थायें शोक मे बन्द रही।

—शुभकुमार वोहरा
मन्त्री

इस महान वियोग मे हम अपनी और सार्वदेशिक परिवार की ओर से श्री देवीदास जी तथा परिजनो के प्रति समवेदना प्रकट करते हुए दिवंगत आत्मा की सद्गति के लिए प्रभु से प्रार्थना करते हैं।

—रघुनाथ प्रसाद पाठक
स० सम्पादक

१०१५०—पुस्तकालयाध्यक्ष
पुस्तकालय गुरुकुल कांगड़ी
विश्वविद्यालय हरिद्वार
जि०—सहारनपुर उ० प्र०

आर्य वीर दल

आर्य वीर दल उपमण्डल तिलहर का एक प्रशिक्षण शिविर दि० १३ फरवरी से १७ फरवरी ८५ तक आर्य समाज बबनिया पो० जैतीपुर (शाहजहांपुर) के तत्वावधान मे श्री युद्धवीरसिंह आर्य के सयोजन में स्वामी विवेकानन्द स्मारक जू० हाई स्कूल सलेमपुर, जैतीपुर (शाहजहांपुर) के प्रांगण में सम्पन्न हुआ। इसमें ५३ शिविरार्थियो को प्रशिक्षित किया गया। शिविर प्रशिक्षण का कार्य श्री गगाराम आर्य एव सियाराम आर्य, रामपुर ने किया। शिविर की अध्यक्षता स्वामी सेवानन्द सोमाश्रित ने की।

—ओम प्रकाश भारती

वार्षिक यज्ञ महोत्सव

सम्भु दयाल दयानन्द वैदिक सन्यास आश्रम महर्षि दयानन्द मार्ग दयानन्द नगर गाजियाबाद का २८वा यज्ञ महोत्सव ७ से १४ अप्रैल तक सम्पन्न होगा। इस अवसर पर सुप्रसिद्ध सन्यासियो, विद्वानों के उपदेश, प्रवचन और सगीताचार्यों के भजन होंगे।

—प्रेमानन्द सरस्वती
आश्रमाचार्य

सार्वदेशिक प्रैस [illegible] दिल्ली में मुद्रित तथा रघुनाथ प्रसादपाठक मुद्रक और प्रकाशक [illegible] सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा [illegible] दिल्ली-१ से प्रकाशित।

ओ३म्

सार्वदेशिक

साप्ताहिक

पंजिका संख्या [१९७२१४५२०८६]
वर्ष २० अंक १७]

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र
वैसाख कृ० १ सं० २०४२ रविवार ७ अप्रैल १९८५

दूरभाष [११ दूरभाष । २७४७७१]
वार्षिक मूल्य १५) एक प्रति ४० पैसे

शिक्षा पद्धति में परिवर्तन सम्बन्धी सुझावों के लिए शिक्षामन्त्री श्री कृष्णचन्द्र पन्त की घोषणा का स्वागत

दिल्ली २ अप्रैल। देश में चल रही वर्तमान शिक्षा पद्धति में विशेष परिवर्तन करने का संकेत तो प्रधान मन्त्री श्री राजीव गांधी ने पहले ही कर दिया था। अब भारत के शिक्षामन्त्री श्री कृष्णचन्द्र पन्त ने देश के शिक्षा शास्त्रियों से इस सम्बन्ध में अपने-अपने सुझाव देने की घोषणा की है।

शिक्षा मन्त्री की उक्त घोषणा का स्वागत करते हुए सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले ने श्री पन्त को पत्र लिख-कर निवेदन किया है कि सार्वदेशिक सभा सरकार की इस घोषणा का स्वागत करती है और सरकार को इस सम्बन्ध में हर प्रकार से सहयोग करने का आश्वासन देती है। उन्होंने यह भी बताया कि शीघ्र ही देश के शिक्षा शास्त्रियों की एक कमेटी का गठन करके उसकी बैठक बुलाने का भी निर्णय लिया गया है।

श्री शालवाले ने यह भी संकेत किया है कि सार्वदेशिक सभा की कार्यकारिणी के आगामी अधिवेशन में भी जो ७ अप्रैल को दिल्ली में होने जा रहा है, इस विषय पर विचार किया जायेगा।

सच्चिदानन्द शास्त्री
उपमन्त्री-सभा

श्री पृथ्वीराज शास्त्री के स्वास्थ्य में अब सुधार

सार्वदेशिक सभा की ओर से जारी विज्ञप्ति में बताया गया है कि सार्व-देशिक सभा के उप मन्त्री और अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ के कोषाध्यक्ष श्री पृथ्वीराज शास्त्री जो इन दिनों दिल्ली के राममनोहर लोहिया अस्पताल में उपचार पर हैं, अब पहले से स्वास्थ्य लाभ की ओर अग्रसर हैं।

परमात्मा श्री शास्त्री जी को शीघ्र आरोग्य और दीर्घ जीवन प्रदान करे, यही हमारी कामना है।

—रघुनाथ प्रसाद पाठक

राम के आदर्शों पर चल कर ही सुख शांति : भगत

नई दिल्ली, ३१ मार्च। केन्द्रीय संसदीय कार्यमन्त्री श्री हरिकिशन लाल भगत ने यहां कहा कि विश्व में भगवान राम के आदर्शों पर चलकर ही सुख शांति स्थापित हो सकती है।

श्री भगत आज यहां आर्य समाज दीवान हाल में आयोजित राम-जन्मोत्सव समारोह में बोल रहे थे। समारोह की अध्यक्षता श्री रामगोपाल शालवाले ने की।

उन्होंने कहा कि राम राज्य में कोई भी व्यक्ति व्यभिचारी, शराबी, बेईमान नहीं था। इसीलिए महात्मा गांधी ने रामराज्य को आदर्श बनाया था।

श्री रामगोपाल शालवाले ने कहा कि आज भगवान राम के आदर्शों पर चलने की देश को आवश्यकता है। नवयुवकों को भगवान राम के आदर्शों से प्रेरणा लेनी चाहिए। आज हमारे देश को चारों ओर से जो खतरे है उनको देखते हुए हमें विचार करना होगा कि देश की अखण्डता व सुरक्षा किस प्रकार सुरक्षित रह सकती है।

श्री ओम्प्रकाश त्यागी ने श्री राम जन्म दिवस पर राष्ट्रीय एकता व अखण्डता की रक्षा का संकल्प लेने का आह्वान किया। (सम्वाददाता)

टंकारा में ऋषि बोधोत्सव व रजतजयन्ती के अवसर पर यजुर्वेद पारायणयज्ञ की पूर्णाहुति के अवसर पर श्री सत्यानन्द जी मुंजाल (सपत्नी) को आशीर्वाद देते हुए महात्मा आर्यभिक्षु जी साथ में खड़े हैं गुजरात के मन्त्री श्री रत्नप्रकाश गुप्त।

सम्पादक—ओम्प्रकाश पुरुषार्थी

सहसम्पादक—रघुनाथ प्रसाद पाठक

देश में प्रजातन्त्र और उसका हृदय ठीक प्रकार कार्य कर रहा है

विधान सभा के निर्वाचन में अधिकांश राज्यों में कांग्रेस (आई) को प्रबल लोकमत मिला, जो इस बात को प्रकट करता है कि देश की सामान्य जनता ने राष्ट्रीय एकता और अखण्डता को ही इस चुनाव का भी मुख्य मुद्दा माना है। परन्तु साथ ही जिन राज्यों में जनता ने यह समझा कि कांग्रेस (आई) का स्थिर विकल्प है, वहां पुनः विरोधी दलों को अवसर प्रदान किया। इससे यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि देश में प्रजातन्त्र और उसका हृदय ठीक स्थान पर है। इन चुनावों ने पुनः यह दर्शाया कि विश्व में सबसे परिपक्व लोकतन्त्र भारत में ही है। साथ ही, यह भी सिद्ध कर दिया कि चुनावों में जन मानस का स्थान ही सर्वोपरि होता है। चुनावों में प्रयुक्त प्रचार साधन आदि की बात गौण है। जनता नए सिरे से देश का पुनर्निर्माण चाहती है, यह भी असन्दिग्ध है। पिछले लोक सभा निर्वाचन के उपरान्त युवा प्रधानमन्त्री माननीय श्री राजीव गांधी ने प्रशासनिक एवं न्याय व्यवस्था का सुधार, काले धन पर आधारित समानान्तर अर्थव्यवस्था की समाप्ति, पड़ोसी देशों से स्पष्टवादिता एवं विरोध पक्ष को आदर देने सम्बन्धी जो घोषणाएं कीं, उनका बहुत व्यापक प्रभाव हुआ। प्रगति के अनेक कार्यक्रम समयबद्ध रूप से चलेंगे, ऐसा विश्वास प्रकट किया गया। ३५ वर्षों में दल-बदल रोकने का प्रभावी उपाय नहीं हो सका। यह एक मास के अन्दर ही दल बदल विरोधी कानून के रूप में सामने आ गया जिससे लोकतन्त्र की मर्यादा की रक्षा की जा सके। इस विधेयक के पारित होने से विरोधी दलों को ही अधिक लाभ होगा, जिनके विधायक सत्ता पक्ष की ओर सरलता से आकर्षित हो जाते थे। पत्रकारों की स्वतन्त्रता से भी लोक अभिव्यक्ति को बढ़ावा मिलेगा। पर साथ ही पत्रकारिता के सही विकास के लिए पीत-पत्रकारिता से भी बचना चाहिए।

केन्द्र सरकार की उपरोक्त प्रगतिशील एवं जनहितकारी नीतियों ने जनमानस को प्रभावित किया और उसका परिणाम विधान सभा चुनाव परिणामों के रूप में सामने है। निःसन्देह बहुमत ने पुनः श्री राजीव गांधी के नेतृत्व में विश्वास व्यक्त किया है। इस सन्दर्भ में, एक विचारणीय बात जरूर है। वह यह कि चुनाव इतने महंगे हो गए हैं कि ९९ प्रतिशत लोग चुनाव नहीं लड़ सकते। इस प्रश्न पर अवश्य विचार होना चाहिए अन्यथा आम जनता की चुनाव-प्रक्रिया में दिलचस्पी नहीं रहेगी, जो जनतन्त्र के लिए घातक होगा।

—डा० आनन्द प्रकाश
उप मन्त्री —सार्वदेशिक सभा, दिल्ली

परमाणु युद्ध जनित शीत से बहुत मरेंगे

वाशिंगटन, ३ मार्च (राटर)। अमरीकी रक्षा विभाग ने कहा है कि परमाणु युद्ध से धुएं व धूल के बादल उत्पन्न हो सकते हैं जिनसे सूर्य के ढके जाने के कारण तापमान जमाव बिन्दु तक गिर सकता है और व्यापक पैमाने पर लोग मारे जा सकते हैं।

अमरीकी रक्षा विभाग ने कल १७ पृष्ठों की एक रिपोर्ट में पहली बार मौसम सम्बन्धी महत्वपूर्ण बड़े परिवर्तनों की बात को स्वीकार किया है कि इससे 'परमाणु शीतऋतु' उत्पन्न हो सकती है और पूरी पृथ्वी जमाव बिन्दु से भी कम तापमान की गिरफ्त में आ सकती है।

अमरीकी रक्षामन्त्री श्री केस्पर बीन बर्गर द्वारा जारी उक्त रिपोर्ट के अनुसार निश्चित तौर पर यह नहीं बताया जा सकता कि परमाणु युद्धजनित शीतकाल कितना लम्बा होगा।

भेंट के लिए हिन्दी पुस्तकें

महोदय,

जन्म विवाह तथा इसी प्रकार के अन्य विशेष अवसरों पर जहां विभिन्न प्रकार की पुस्तकें भेंट की जाती हैं, वहां अच्छी रुचि वाले लोग पुस्तकें देना पसन्द करते हैं। पुस्तकें एक अच्छे मित्र का कार्य करती हैं। वातावरण के प्रभाव के कारण अंग्रेजी पुस्तकें भेंट करने की प्रथा चल निकली है। कईबार चाहने पर भी अवसर के अनुकूल उपयुक्त हिन्दी पुस्तकें नहीं मिल पाती और जो मिलती हैं, उनकी छपाई आकर्षक नहीं होती तथा सामग्री भी उच्च स्तर की नहीं होती। लेकिन ऐसा नहीं कि ऐसी पुस्तकों का सर्वथा अभाव है। अच्छी पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं तो उनकी जानकारी जनता को नहीं हैं। पाठकों से अनुरोध है कि उन्हें इस प्रकारकी पुस्तकें अथवा भेंट करने योग्य अन्य वस्तुएं हिन्दी में छपी दिखाई पड़ें तो वे 'महामन्त्री, हिन्दी व्यवहार संगठन, डी-३५, साउथ एक्सटेंशन, भाग एक, नई दिल्ली-११००४९' को सूचित करने की कृपा करें। आशा है इस प्रकार का विवरण उपलब्ध रहने से हिन्दी-प्रेमी जन उन वस्तुओं का उपयोग कर सकेंगे तथा भेंट के लिए अंग्रेजी में प्रकाशित सामग्री की ओर नहीं दौड़ेंगे। इससे समाज को बदलने में भी सहायता मिल सकेगी।

—मन्त्री

टि०—मन्त्री महोदय को सार्वदेशिक सभा के पुस्तक भण्डार तथा गोविन्दराम हासानन्द नई सड़क दिल्ली से सम्पर्क करके निर्दिष्ट पुस्तकों के सम्बन्ध में उनसे भी जानकारी प्राप्त करनी चाहिए।

—संपादक

सम्पादकीय

मानव कल्याणकारी महर्षि दयानन्द जी

आर्य प्रतिनिधि सभा गुजरात प्रान्त के प्रधान श्री रतन प्रकाश जी गुप्त की प्रार्थना पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री ओम्प्रकाश त्यागी आर्यसमाज, काकरिया, अहमदाबाद गये और आर्यसमाज की स्थापना पर दिनांक १८ मार्च दिन सोमवार को अपने विचार व्यक्त किये। उनके भाषण का सार इस प्रकार है :—

धार्मिक दृष्टि से महर्षि दयानन्दजी ने एक ऐसे प्रतिष्ठित ब्राह्मण परिवार में जन्म लिया जहां सभी लोग नित्य वेद पाठ और पूजा-पाठ करते थे। शिवरात्रि के दिन दयानन्द को भी उपवास करना पड़ा, परन्तु शिव-रात्रि को शिव की मूर्ति पर चूहों का उपद्रव देख उनकी श्रद्धा शिव-मूर्ति पर नहीं रही। कुछ समय पश्चात उनकी बहन और श्रद्धेय चाचा की मृत्यु हो गई। उनके हृदय में सच्चा शिव क्या है, और मृत्यु का स्वरूप क्या है, ऐसा भाव जम गया विद्वानों से चर्चा करने के पश्चात उन्हें ज्ञात हुआ कि वह सही रूप से खोज करें तो उन्हें दोनों के दर्शन होंगे।

शिव और मृत्यु की खोज में दयानन्द के हृदय में इस लोक से निराशा हो गई, और वह परिवार छोड़कर बाहर निकल गये, परन्तु परिवार वाले उन्हें पकड़ लाये, और उनके विवाहकी व्यवस्था की गई। महर्षि दयानन्दजी विवाह की बात सुनकर घर से इतनी दूर निकल गये कि किसी को उनकी खोज भी नहीं मिली। वह सन्यासी बने, और योगियों की खोज में वह हिमालय की कन्दराओं में घूमे और नदियों के किनारे दौड़े और जहां जो ज्ञान प्राप्त हुआ स्वीकार किया।

दयानन्द युवा-अवस्था में थे उस समय १८५७ ई० में अंग्रेजों के विरुद्ध क्रान्ति हुई। दयानन्द जैसा क्रान्तिकारी चुप कैसे रहता ? उन्होंने देश को आजाद कराने का भरसक प्रयत्न किया, परन्तु सफल न हो सके। अंग्रेजों के कानून ने उनकी आवाज को बन्द कर दिया था। महर्षि दयानन्द जी से जब उनके जीवन का वृतान्त जानने का प्रयत्न किया तो उन्होंने उस क्रान्ति के दिनों का वर्णन नहीं किया, और नाहीं अपने माता-पिता का वर्णन किया।

महर्षि दयानन्द ने क्रान्ति के दिनों का वर्णन नहीं किया, और क्रान्ति के पश्चात उनके जीवन में आजादी के प्रति मोह स्वदेशी वस्त्र का उपयोग अपने देश को स्वतन्त्र बनाने की घोषणा, मन्त्रों के अर्थों में चक्रवर्ती राज्य की कल्पना, अन्तिम समय राजाओं के मध्य रहना और आर्यसमाज क्रान्तियों के पास बनाने से उनके मूल-काल की याद आती थी। सन १९८० ई० में जब अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन लन्दन में हुआ तो आर्य जगत के प्रसिद्ध इतिहासकार को सार्वदेशिक सभा ने अपने व्यय पर लन्दन भेजा। उनकी खोजों से सिद्ध हो गया है कि दयानन्द ने १८५७ ई० की क्रान्ति में भाग लिया।

दयानन्द भटक रहे थे कि एक दिन एक व्यक्ति ने उन्हें भारत के एक वृद्ध संन्यासी श्री वृजानन्द जी के पास भेज दिया। दयानन्द ने उनकी किवाड़ों को खटखटाया। अन्दर से आवाज आई कि कौन है—? दयानन्द का यही उत्तर था कि यही जानने के लिये वह उनके पास आये हैं। उन्होंने दर्वाजा खोला और पूछा क्या पढ़े हो। उन्होंने कहा कि अपनी पुस्तकों को यमुना में बहा दो। दयानन्द ने यही किया, और खाली हाथ उनके पास आ गये।

श्रद्धेय स्वा० वृजानन्द जी ने बड़ी इच्छा से उन्हें पढ़ाया, और कभी २ एकान्त में बैठकर बातें करते थे। कारण यही था कि स्वामी वृजानन्द और उनके साथी स्वा० पूर्णानन्द जी १८५७ की क्रान्ति में भाग ले चुके थे। इसी पर उनकी चर्चा होती थी। पढ़ाई का अन्तिम समय आया कि स्वा० वृजानन्द जी ने उनके यौवन को मांग लिया।

डा० हरिप्रकाश ने गुरुकुल कांगड़ी के मुख्याधिष्ठाता पद का कार्यभार संभाला

ला० रामगोपाल शालवाले सभा प्रधान तथा ला० सोमनाथ जी मरवाह द्वारा गुरुकुल कांगड़ी में परिवर्तन

१० मार्च, हरिद्वार।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले, श्री ओम्प्रकाश त्यागी (मन्त्री) तथा श्री सच्चिदानन्द शास्त्री, पं० सत्यदेव विद्यालंकार गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार में पधारे। श्री रामगोपाल शालवाले अपने साथियों के साथ सीधे गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी गए। वहां पहले ही सैंकड़ों कार्यकर्ता एवं कर्मचारी उनकी प्रतीक्षा कर रहे थे। प्रेम एवं सदभाव के वातावरण में उक्त अवसर पर डा० हरिप्रकाश ने गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी के व्यवसायाध्यक्ष पद से त्यागपत्र दिया तथा श्री बलदेव आयुर्वेदालंकार को फार्मेसी के व्यवसायाध्यक्ष पद पर नियुक्त किया गया।

फार्मेसी के हाल में सैंकड़ों कर्मचारियों एवं अधिकारियों के मध्य श्री रामगोपाल जी शालवाले ने घोषणा की कि आज से डा० हरिप्रकाश गुरुकुल कांगड़ी के मुख्याधिष्ठाता पद पर आसीन होंगे। उन्होंने सभी कर्मचारियों और अधिकारियों से श्री बलदेव जी को भी पूर्ण सहयोग देने की अपील की। इसी मध्य दिल्ली से श्री सोमनाथ जी मरवाह, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के कुलपति श्री बलभद्र कुमार हूजा तथा सत्यव्रत सिद्धांतालंकार भी वहां पहुंच गए।

फार्मेसी से सभा-प्रधान जी के साथ उपरोक्त सभी लोग गुरुकुल कांगड़ी के कार्यालय गए। वहां पर श्री बलभद्र कुमार हूजा ने गुरुकुल कांगड़ी के मुख्याधिष्ठाता के पद से अपना त्यागपत्र दे दिया और उनके स्थान पर डा० हरिप्रकाश को गुरुकुल कांगड़ी का मुख्याधिष्ठाता नियुक्त किया गया। डा० हरिप्रकाश ने अपने पद का चार्ज ग्रहण कर लिया है।

इस अवसर पर सभी महानुभावों ने डा० हरिप्रकाश के मुख्याधिष्ठाता पद ग्रहण करने पर अपनी शुभकामनाएं प्रकट की।

सच्चिदानन्द शास्त्री
उपमन्त्री सभा

महर्षि दयानन्द जी ने सन १८५७ ई० की क्रान्ति की ज्वाला हृदय में लेकर सन १८७७ में राज दरबार के समय दिल्ली के समय एक धार्मिक सम्मेलन बुलाया जिसमें पण्डित, मौलवी, पादरी आदि को बुलाया। मानव की दयनीय अवस्था का ध्यान देकर दयानन्द ने कहा कि जब संसार के प्रत्येक पदार्थ को ईश्वर ने एक धर्म दिया है, तो मानव को भी एक धर्म दिया है। बुद्धि पूर्वक उसे खोजें और सब लोग उसे माने। पादरी और मौलवियों ने साफ कह दिया कि उनकी बाइबिल और कुरान ईश्वर का सन्देश है। उन्हें वह नहीं छोड़ेंगे। दयानन्द ने घोषणा कर दी कि वह सत्य के पुजारी हैं और असत्य को सहन नहीं करेंगे। अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश को लिखते हुये उन्होंने शेष चार समुल्लास सभी धर्मों में व्याप्त असत्य का खण्डन करने पर ही लगाया, और पहिले दस समुल्लासों में अपना विचार रखा।

महर्षि दयानन्द समूची मानव जाति को एक सचाई पर लाना चाहते थे। यही विचार उन्होंने सत्यार्थ प्रकाश की भूमिका में लिखें कि यदि मानव अपने अन्दर से रागद्वेष को छोड़ दे और बुद्धि पूर्वक विचारे तो सब एक सचाई पर आ सकते हैं। सत्यार्थ प्रकाश में एक स्थान पर सम्वत् १९१४ का उल्लेख करते हुए उन्होंने लिखा कि यदि भारत में योगीराज कृष्ण होता तो अंग्रेजों को भगा देता।

सत्यार्थ प्रकाश लिखने के पश्चात् महर्षि ने आर्य समाज के दस नियम बनाये। उन्हें पढ़ने से ज्ञात होता है कि वह स्वच्छ रूप से मानवता का पुजारी था। ईश्वर और वेद की चर्चा कर जब उन्होंने लिखा कि प्रत्येक आर्य सत्य को माने असत्य को नहीं। अपनी ही उन्नति में सन्तुष्ट न होकर सबकी उन्नति में अपनी उन्नति देखो। अपने हितकारी कार्य में आदमी स्वतन्त्र और सार्वजनिक कार्य में परतन्त्र है यही धारणा दयानन्द की थी। (क्रमशः)

सामायिक चर्चा–

भारत का मुस्लिमकरण

अभी हाल में काश्मीर की विधान सभा में विरोधी पार्टी नेशनल कान्फ्रेन्स के नेता अताउल्ला सुहरावर्दी ने यह कहा बताते हैं कि भारत में मुसलमानों की जनसंख्या लगभग १४ करोड़ है और वे चाहते हैं कि इसमें काफी वृद्धि हो जाये जिससे कि कुछेक दशाब्दियों में भारत मुस्लिम राज्य बन जाय। कलकत्ता के एक साप्ताहिक के साथ भेंट वार्ता के दौरान हाजी मस्तान ने यह कहा बताते हैं कि भारत की मुस्लिम जन संख्या २० करोड़ है।

लोगों को शिकायत है कि भारत सरकार ने १९८१ की जनगणना रिपोर्ट के धार्मिक आधार पर किए गए परिगणन के आंकड़ों का प्रकाशन जान-बूझकर रोक रखा है। लोगों की आम धारणा यह है कि भारत की कुल आबादी १ अरब है। यह स्वीकार करते हुए भी कि मुसलमानों की आबादी सिर्फ लगभग १४ करोड़ है और ईसाई, पारसी आदि अन्य अल्पसंख्यक वर्गों की २॥ करोड़ मान ली जाय तो हिन्दुओं की कुल जनसंख्या लगभग ५४ करोड़ रह जाती है जिनमें सिख और बौद्ध भी शामिल हैं।

विभाजन के तत्काल बाद भारत में मुसलमानों की कुल जनसंख्या लगभग ३॥ करोड़ थी, क्योंकि कुल १० करोड़ की आबादी में से विभाजन से कुछ समय पूर्व ही लगभग ६॥ करोड़ मुसलमान (३॥ करोड़ पश्चिमी पाकिस्तान ३॥ करोड़ पूर्वी पाकिस्तान (वर्तमान बंगला देश) पाकिस्तान गए थे। विभाजन के तत्काल बाद भारत की कुल जनसंख्या में हिन्दुओं की संख्या २८ करोड़ थी। यह तथ्य इस बात से सहज ही सुस्पष्ट हो जाता है कि पिछले ३१ वर्षों में मुसलमानों की संख्या ४०० प्रतिशत और हिन्दुओं की १०० प्रतिशत बढ़ी है। अर्थात् मुसलमान ३॥ करोड़ से बढ़कर १४ करोड़ हुए और हिन्दू २८ से ५४ करोड़। इस परिपेक्ष्य में यह सम्भावना सुनिश्चित सी ही देख पड़ती है कि भारत कुछ ही दशाब्दियों में मुस्लिम बहुल देश बन जायेगा और हिन्दू अल्पसंख्यक वर्ग में परिवर्तित हो जायेगा। परमात्मा न करें यदि एक बार ऐसा हो गया तो भारत धर्म निर्पेक्ष बना न रह पाएगा और श्री सुहराव वर्दी की इच्छानुसार यह इस्लामिक राज्य बन जायेगा। इस थ्यूरी को जिस चीज से बल मिलेगा वह भी दृष्टव्य है। अल्पसंख्यक आयोग ने भारत सरकार को प्रेरणा की है कि वह मुसलमानों के शरीअत कानून में कोई हस्तक्षेप न करे साथ ही मुसलमानों के लिए परिवार नियोजन सम्बन्धी कोई कानून नहीं बनना चाहिए। मुसलमान परिवार नियोजन का इसलिए विरोध करते हैं कि कृत्रिम साधनों से ऐसा करना उनके मजहब के खिलाफ है।

इस मामले में भारत के मुसलमान पाकिस्तान और बंगला देश के मुसलमानों से ज्यादा कट्टर देख पड़ते हैं क्योंकि इन दोनों देशों में परिवार नियोजन का प्रचार और क्रियान्वयन बड़ी सरगर्मी के साथ हो रहा है। और यह प्रमाणित किया जा रहा है कि बंगला देश और पाकिस्तान के मुसलमानों की संयुक्त संख्या भारतीय मुसलमानों की संख्या से काफी कम है।

भारत के धर्म निर्पेक्ष स्वरूप को वास्तव में बनाए रखने के लिए राष्ट्रवादी सुधारक तत्त्वों एवं आर्यसमाज की ओर से यह मांग उठी और उठ रही है कि सब नागरिकों के लिए समान विधि संहिता बनाई जाय वा नागरिक अधिकार रक्षा कानून बनाया जाय। इसके अभाव में मुसलमानों पर सिविल और क्रिमनल मामलों में शरीअत कानून की सम्बद्ध धाराएं लागू की जायें। विवाह के लिए हिन्दुओं का मुसलमान बनना कानून द्वारा वर्जित किया जाये।

एक दूसरा सुझाव जो बड़ा महत्त्वपूर्ण देख पड़ता है वह यह है कि देश और समाज की वर्तमान स्थितिमें वोटों की राजनीतिसे हाथ खींचा जाय उस समय तक जब तक कि इसे बरदाश्त न बना दिया जाय? प्रथम पग के रूप में मतदाताओं की शिक्षा आदि की कोई योग्यता अवश्य निर्धारित की जाय।

स्वागत योग्य निर्णय

'स्त्री धन' विषयक उच्चतम न्यायालय का निर्णय जहां स्वागत योग्य है वहां न्यायपालिका के इतिहास में युगान्तरकारी भी है। यद्यपि कानून की दृष्टि में हिन्दू नारी पुरुष के समान स्तर पर है तथापि व्यवहारतः वे बड़ी बाधाओं से आवेष्टित रहती है। प्रायशः घरों में लड़कों की तुलना में लड़की की स्थिति दयनीय रहती है मुख्यतः शिक्षा के मामले में। विवाह के बाद बहू पति और सास श्वसुर के अंगूठे के नीचे दबी रहती है यद्यपि आर्य समाज के प्रयास से इस स्थिति में बहुत कुछ सुखद परिवर्तन आ गया है।

बहुओं को जलाकर मार डाले जाने की आधुनिक घटनाओं से स्पष्ट है कि अत्यन्त सुशिक्षित लड़कियां भी इस अत्याचार से मुक्त नहीं रहती। दहेज के लिए निर्दोष बहुओं को जलाकर मारना वा उन्हें मारपीट तंग करके आत्म-हत्या के लिए मजबूर करना जहां घोर पाप है वहां हिन्दू समाज को बदनाम करने का दुष्कृत्य भी है जिसकी पापियों को अनुभूति होती प्रतीत नहीं होती। इस स्थिति के निराकरण के लिए दृष्टिकोण में सुखद परिवर्तन होना जरूरी है जिससे कि लड़कियों के हृदयों में असमान व्यवहार की भावना पैदा न हो, पत्नियों की दासियों के सदृश दुर्व्यवहार वा प्रताड़ना की और उनके कर्त्तव्यों और अधिकारों के अनुष्ठानों एवं उपभोग में बाधाओं के डाले जाने की शिकायत न हो। दृष्टिकोण के इस बदलाव में प्रचार, सुधार, सामाजिक सुव्यवस्था का कार्य और न्यायपालिका का सहयोग बड़े प्रभावी और सहायक सिद्ध हो सकते हैं।

जहां तक न्याय पालिका और कानून का प्रचलन करने वाले अधिकारियों का सम्बन्ध है उन पर स्त्रियों के हितों पर ध्यान रखने और उनकी रक्षा करने की बहुत बड़ी जिम्मेवारी आयद हो जाती है।

दहेज के लिए बहुओं को जलाकर मार डाले जाने के मामलों में कानूनी कार्यवाही न किए जाने की आम शिकायत है और उनमें भी जो थोड़े से मामले अदालतों के सामने आए हैं उनमें भी विश्वसनीय साक्षियों के न होने से अदालतें अपराधियों को सजा देने में विफल रही हैं। यह सब कुछ होते हुए भी न्यायालयों का विशेषतः उच्चतम न्यायालय का स्त्रियों के हितों की रक्षा करने की दिशा में रिकार्ड अच्छा रहा है। स्त्रीधन दहेज की वास्तविक व्याख्या किया जाना भी जरूरी है साथ ही उस प्रावधान पर पुनर्विचार हो जिसके तहत लड़की को पिता की सम्पत्ति में से हिस्सा मिलने की व्यवस्था है।

उच्चतम न्यायालय के अभी हाल के एक निर्णय से यह बात एक बार पुनः सुस्पष्ट हो गई है।

—रघुनाथप्रसाद पाठक

महर्षि दयानन्द का वार्त्तालाप और उपदेश

(१)

काशी शास्त्रार्थ सार

अपने मुखिया सेनापतियों के पांव उखड़ते देख सारे पण्डित एक बार ही चिल्लाकर पूछने लगे 'बताओ वेद में प्रतिमा शब्द है या नहीं ?

स्वामी जी ने शान्त भाव में उत्तर दिया "वेद में प्रतिमा शब्द तो है।" फिर उन लोगों ने क्रम से पूछा—"यदि वेद में प्रतिमा शब्द है तो किस प्रकरण में ? और आप इसका खण्डन क्यों करते हैं?

स्वामी जी ने उत्तर में कहा—'प्रतिमा शब्द यजुर्वेद के ३२ वें अध्याय के तीसरे मन्त्र में हैं। यह सामवेद के ब्राह्मण में भी विद्यमान है परन्तु पाषाण आदि की प्रतिमा के पूजन का विधान कहीं भी नहीं है इसलिए मैं इसका खण्डन करता हूं।

उनके पूछने पर स्वामी जी ने उन प्रकरणों का विस्तार पूर्वक वर्णन कर दिया जिनमें प्रतिमा शब्द आया है। इस पर उच्छृंखल पण्डित चुप हो गए।

इतने काल बाल शास्त्री जी को विश्राम मिल गया और वे फिर प्रश्न करने लगे परन्तु दो तीन प्रश्न करके फिर मौन हो गए। उसके बाद विशुद्धानन्द जी ने स्वामी जी से पूछा"वेद कैसे उत्पन्न हुए हैं ?

स्वामी जी—वेदों का प्रकाश ईश्वर ने किया है ?

विशुद्धानन्द जी—वेदों का प्रकाश किस ईश्वर से हुआ है न्याय वर्णित ईश्वर से, वा योग कथित ईश्वर से वा वेदान्त प्रतिपादित ईश्वर से ?

स्वामी जी—क्या आपके निश्चय में अनेक ईश्वर है ?

विशुद्धानन्द जी—ईश्वर तो एक ही है परन्तु वेदों के प्रकाशक ईश्वर का क्या लक्षण है, यह बताइए।

स्वामी जी—उसका लक्षण सच्चिदानन्द है।

विशुद्धानन्द जी—ईश्वर और वेद में क्या सम्बन्ध है ?

स्वामी जी—वेद और ईश्वर में कार्यकारण भाव सम्बन्ध है ?

विशुद्धानन्द जी—जैसे मन में और सूर्य आदि में ब्रह्मबुद्धि करके 'प्रतीक' उपासना करनी कही है वैसे ही शालिग्राम आदि में ईश्वर भावना करके पूजनमें क्या हानिहै?

स्वामी जी—शास्त्र में मन आदि में ब्रह्मोपासना करने का तो विधान है परन्तु पाषाणादि में उपासना करने का वचन किसी भी शास्त्र में नहीं मिलता।

यह सुनकर विशुद्धानन्द जी की तो अपनी वाणी को विराम लेना पड़ा परन्तु माधवाचार्य ने पूछा—

"उद्बुध्य स्वाग्ने' इस मन्त्र में 'पूर्त' शब्द पड़ा है उसका आप क्या अर्थ करते हैं ? और मूर्तिपूजन अर्थ क्यों नहीं करते।"

स्वामी जी—'यहां 'पूर्त' शब्द से कुआं, तडागवापी और (उद्यान) (बगीचा) आदि लोक हितकर कार्यों का ग्रहण किया जाता है। पूर्त शब्द पूर्ति का वाक्य है। इससे मूर्ति पूजा का ग्रहण कदापि नहीं हो सकता। विशेष जानना चाहते हो तो इस मन्त्र का निरुक्त और ब्राह्मण देख लीजिए।

मूर्ति पूजा के पक्ष में माधवाचार्य निरुत्तर हो गए और थोड़ा विश्राम लेकर पूछने लगे 'पुराण शब्द वेदों में आया है कि नहीं ?

स्वामी जी—पुराण शब्द तो वेद में अनेक स्थलोंमें विद्यमान है परन्तु वह है पुरातन अर्थ का द्योतक। उसमें ब्रह्म वैवर्त्त और भागवतादि पुराण ग्रन्थों का ग्रहण नहीं हो सकता।

(क्रमशः)

(२)

परोपकार के बिना नर जीवन मृग जीवन से उच्च नहीं

एक दिन एक साधु ने (प्रयाग कुम्भ के अवसर पर (सं० १९२६) महाराज से प्रवृति और निवृति मार्ग पर शास्त्रार्थ किया। उसे पराजित करने के बाद स्वामी जी ने अपने व्याख्यान में कहा—"क्रियात्मक जीवन ही शुभ जीवन है। सारा दृश्यमान जगत अपनी नित्य क्रिया में निरन्तर प्रवृत्त है। हमारे शरीर भी इस विशाल सृष्टि के अंश मात्र है। जब विराट देह में निरन्तर गति है क्रिया है और प्रवृत्ति है तो हममें जो उसके अंश रूप हैं निवृत्ति और निष्क्रियता का होना असम्भव है। आर्य धर्म में वेद विहित कर्मों का करना प्रवृत्त मार्ग निषिद्ध कर्मों का त्यागना ही निवृत्ति मार्ग है। जो इस मर्म को मन में धारण किए बिना निवृति का राग अलापते हैं उन्हें वैदिक धर्म का बोध ही नहीं हुआ है। जो लोग सत्योपदेश, प्रजा प्रेम और लोक हित के कार्यों को छोड़कर अपने को परम निष्क्रिय मानते हैं उनमें भी देह का भरण पोषण नहीं छूट सकता। मधूकडी मांगने के लिए वे भी दो कोस तक जाते हैं। यों ही तीर्थों पर घूमते फिरते हैं। सच तो यह है कि सत्य और जन-कल्याण के लिए अपने सुखों को त्यागना-जीवन तक को लगा देना ही सर्वोत्तम त्याग है। परोपकार के बिना नर जीवन मृगजीवन से उच्च नहीं है।

एक उद्दंदण्ड का हृदय परिवर्तन

काशी का राम स्वामी मिश्र महामहोपाध्याय नामक एक दुराभिमानी पण्डित स्वामी जी महाराज को नित्य गाली दिया करता था। एक दिन वह उनका मुख न देखने की प्रतिज्ञा के कारण रात को स्वामीजी के पास शास्त्रार्थ के लिए आया और कहने लगा 'तेरे जैसे पतित पुरुष के साथ मैं देववाणी (संस्कृत) में बोलना पाप समझता हूं इसलिए देश भाषा में बात-चीत होगी। परन्तु तुम्हे पहले मेरी एक शर्त माननी पड़ेगी।

स्वामी जी ने हंसकर कहा "आप मुझे संस्कृत भाषा बोलने से तो रोकते हैं परन्तु संस्कृत भाषा के शब्द बोलने देंगे ? अच्छा यही सही अब आप अपनी शर्त कहिए।

उसने कहा—"मैं अपने साथ एक छुरी लाया हूं। वह दोनों के बीच रखो जायेगी। जो शास्त्रार्थ में हार जायेगा उसकी इससे नाक काट दी जायेगी।

स्वामी जी ने हंसते हुए कहा—"पण्डित जी ! एक शर्त मेरी भी मान लीजिए। वह यह है कि एक चाकू भी रख लिया जाये। जो हममें से हार जाय उससे उसकी जीभ काट दी जाये क्योंकि नाक तो इन बातों में निर्दोष है। वाद-विवाद में जो कुछ अनर्थ होता है वह जीभ द्वारा ही होता है।

कोई एक घण्टे तक स्वामी जी ने उसके साथ वार्त्तालाप किया। स्वामी जी के व्यवहार, तर्क और विद्वत्ता से वह इतना प्रभावित हुआ कि वह अपनी उद्दण्डता के लिए उनसे क्षमा मांगने लग गया।

महर्षि की शिक्षाएं

(ग्रन्थों से)

मनुष्य रूप में गधा कौन है ?

"जो अन्यदेव अर्थात ईश्वर से भिन्न] श्रोत्रादि इन्द्रिय अथवा कोई देहधारी विद्वान देव कोब्रह्म जान अथवा उपासना करे वा ऐसा अभिमान करे कि मैं तो ईश्वर का उपासक नहीं—उससे मेरा कोई प्रयोजन नहीं किन्तु ईश्वर नहीं है वा ऐसा कहता है कि मैं ही ब्रह्म हूं सो इन्द्रियों वा देहधारी विद्वानों का पशु है जैसा कि बैल या गर्दभ वैसा वे मनुष्य है जो परमेश्वर की उपासना नहीं करते।

(वेदान्तिध्वान्त निवारण)

—सं० क० रघुनाथ प्रसाद पाठक

भोपाल गैस कांड—

आर्य समाज द्वारा अनाथ बच्चों की रक्षा एवं व्यवस्था

सभा प्रधाना एवं मन्त्री जी द्वारा मुख्यमन्त्री अर्जुनसिंह से भेंट

विश्व की सर्वाधिक भयावह रासायनिक दुर्घटना यूनियन कार्बाइड कम्पनी भोपाल में हुई गैस रिसन से हजारों व्यक्ति पीड़ित, प्रभावित एवं मौत के शिकार हुए। इस दुर्घटना में बहुत से बच्चे अपने मां-बाप से बिछुड़ गये और निराश्रित हो गये।

आर्य प्रतिनिधि सभा मध्य प्रदेश व विदर्भ नागपुर ने माननीय श्री अर्जुनसिंह, मुख्यमन्त्री मध्य प्रदेश शासन, भोपाल को तार व पत्र भेज कर सूचित किया कि यह सभा अपने अन्तर्गत संचालित दयानन्द सेवाश्रम, गुरुकुल आर्य शिक्षण संस्थाओं तथा आर्य समाज मन्दिर के माध्यम से कम से कम पांच सौ बच्चों के सम्पूर्ण पालन-पोषण, शिक्षा-दीक्षा आदि व्यवस्था करने को तैयार है।

इस तारतम्य में आर्य प्रतिनिधि मण्डल ने श्री तनवन्तसिंह कीर राज्य-मन्त्री स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मध्य प्रदेश शासन तथा श्री अर्जुनसिंह, मुख्यमन्त्री मध्य प्रदेश, शासन से भोपाल में भेंट की। प्रतिनिधि मण्डल में श्रीमती कौशल्यादेवी सभा प्रधान, श्री रमेशचन्द्र सभा मन्त्री, श्री रामचन्द्र आर्य खण्डवा तथा श्री कैलाशचन्द्र पालीवाल खण्डवा अन्तरंग सभासद सम्मिलित थे। इस भेंट में गैस पीड़ित बच्चों की व्यवस्था की जानकारी प्राप्त की गई तथा यह अनुरोध किया गया कि निराश्रित एवं अनाथ बच्चों को आर्य समाज को सौंप दिया जाय, ताकि पूर्व घोषित योजनाओं के अनुसार उनके पालन-पोषण की व्यवस्था की जा सके। इस सम्बन्ध में शासन द्वारा नियुक्त राहत कार्य प्रभारी अधिकारियों से भी भेंट की गई। प्रतिनिधि मण्डल के सदस्यों ने आर्य समाज मन्दिर टी० टी० नगर में स्थापित शिविर में उपस्थित आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के सर्वश्री हेतराम जी, विद्यासागर शास्त्री तथा मध्य भारतीय सभा के सर्वश्री त्रिवेणी सहाय वानप्रस्थ, श्री बजाज, श्री यमुना प्रसाद शास्त्री से भी सम्बन्धित विषय पर विचार-विमर्श किया। श्री माधुरीशरण अग्रवाल और श्री गौरीशंकर कौशल से भी भेंट की गई और सम्पूर्ण परिस्थिति पर विचार विमर्श किया गया। इस प्रतिनिधि मण्डल ने उक्त महानुभावों के साथ प्रभावित क्षेत्रों का भ्रमण किया और प्रभा वितपरिवारों से भी साक्षात्कार किया। उपरोक्त महानुभावों के साथ गैस त्रासदी से उत्पन्न विभिन्न सामाजिक परिस्थितियों का विवेचन किया गया। भोपाल में दयानन्द आश्रम की स्थापना की योजना पर भी विचार विमर्श तथा प्रभावित बस्तियों के निरीक्षण के पश्चात जो स्थिति स्पष्ट हुई वह निम्न प्रकार से है :—

(१) शासन अपनी नीति के अन्तर्गत अनाथ एवं निराश्रित बच्चों की व्यवस्था शासकीय स्तर पर कर रही है। किसी भी स्वयंसेवी संस्था को बच्चों की व्यवस्था का कार्य नहीं सौंपा जायेगा।

(२) शासन केवल ऐसे व्यक्तियों को बच्चे सौंपना चाहती है, जो कानूनी तौर पर अपना दत्तक पुत्र बनाकर रखने को तैयार हों। इस समय शासन द्वारा स्थापित शिविर में केवल ८ बच्चे हैं। प्रभावित बस्तियों का निरीक्षण करने से यह बात सामने आई कि ऐसे बच्चों को उन बस्तियों में पड़ोसियों, मित्रों अथवा रिश्तेदारों ने उनका संरक्षक बनकर अपने पास रखा हुआ है। ये बस्तियां पूरी तरह से पिछड़ी हुई बस्तियां हैं जिन्हें झुग्गी झोपड़ियां भी कहते हैं। बच्चों को इस प्रकार पास रखने की इच्छा के पीछे यह लोभ की भावना स्पष्ट दिखाई पड़ती है कि निकट भविष्य में इस दुर्घटना के फलस्वरूप भारी मुआवजे के मिलने की आशा है। इन परिस्थितियों में अभी फिलहाल सभा द्वारा प्रस्तावित दयानन्द बाल संवर्धन केन्द्र हेतु बच्चे उपलब्ध होना सम्भव नहीं प्रतीत होता है। किन्तु प्रभावित बस्तियों पर निरन्तर सर्वेक्षण जारी रखने की आवश्यकता है और ऐसी सम्भावना है कि अप्रैल के महीनेमें परिस्थितियां बदल जायेंगी और बहुतसे बच्चे अपने को निराश्रित और बेसहारा स्थिति में पायेंगे। उस समय इन्हें स्वयं सेवी संस्थाओं द्वारा संरक्षण का आश्रय प्रदान करने की आवश्यकता होगी। निःसन्देह उस समय आर्य समाज अपने सेवा कार्य को प्रशस्त कर सकता है। भोपाल के आर्य बन्धुओं ने इस स्थिति के प्रति पूर्ण जागरूकता प्रदर्शित की और यह संकल्प व्यक्त किया कि वे आगामी समय में सारी परिस्थितियों पर निगाह रखेंगे और आवश्यकतानुसार आर्य प्रतिनिधि सभा मध्य प्रदेश व विदर्भ द्वारा संचालित दयानन्द बाल सम्वर्धन केन्द्र दयानन्द सेवा आश्रम, टाटीबन्ध-रायपुर, गुरुकुल होशंगाबाद तथा अन्य प्रस्तावित योजनाओं का उपयोग इस कार्य हेतु करेंगे।

(३) प्रभावित बस्तियों का निरीक्षण करने के बाद यह बात भी सामने आई कि विधवा और निराश्रित स्त्रियों को भी सहायता पहुंचाने की आवश्यकता है। इन बस्तियों की सामाजिक परिस्थितियों और स्त्री पुरुषों की मानसिकताओं का अध्ययन करने पर यह पता चलता है कि अपने परिवार और स्थान से मोहग्रस्त हैं और किसी दूसरे स्थान पर जाकर रहना सामान्य परिस्थितियों में पसन्द नहीं करेंगे। अतएव इन बस्तियों के अन्दर व निकटवर्ती स्थानों में ही कोई रचनात्मक सेवा योजना अधिक सफल हो सकती है। इस सम्बन्ध में सर्वसम्मत यह धारणा थी कि भोपाल में उपयुक्त स्थान पर दयानन्द सेवा आश्रम की स्थापना की जावे जिसके अन्तर्गत प्रारम्भ में निराश्रित महिलाओं के लिए सिलाई-कढ़ाई प्रशिक्षण एवं उद्योग केन्द्र संचालित किया जावे। इन बस्तियों में ही बच्चों के लिए दयानन्द बाल मन्दिर की स्थापना की जावे। भोपाल के आर्य समाज के कार्यकर्ताओं से हुए विचार-विमर्श में आर्य प्रतिनिधि सभा मध्य प्रदेश व विदर्भ, नागपुर की प्रधान श्रीमती कौशल्यादेवी और मन्त्री श्री रमेशचन्द्र ने अपनी सभा की ओर से उक्त सेवा योजनाओं के लिए सभी प्रकार का सहयोग प्रदान करने की तत्परता प्रदर्शित की।

यह उल्लेखनीय है कि भोपाल स्थित आर्य समाज के कार्य-कर्ताओं एवं सदस्यों ने तथा आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के अधिकारियों ने इस दुर्घटना के समय तन-मन-धन से बड़ी तत्परता पूर्वक सेवा कार्य किया। बिना किसी भेद भाव के इस दुर्घटना से पीड़ित व्यक्तियों की हर प्रकार से सहायता की है। आर्य समाज मन्दिर टी० टी० नगर और दयानन्द नगर में पीड़ित व्यक्तियों के लिए शिविर खोले गए, जिनमें सैकड़ों आबाल, वृद्ध, नर-नारियों ने आश्रय लिया। —रमेशचन्द्र, मन्त्री सभा

(आर्य सेवक फरवरी १९८५)

क्या गंगाजल का वैज्ञानिक महत्त्व समाप्त हो रहा है?

—श्री वृजकिशोर 'मस्क' (प० चम्पारण)

गंगा नदी का महत्व न सिर्फ हिन्दू संस्कृति एवं भारतवर्ष में, वरन विश्व के अन्य भागोंमें भी सम्मान पा से रहाहै। हिन्दू (आर्य संस्कृति) जो कि वैज्ञानिकता पर आधारित है, उसमें गंगाजल का इतना महत्व भी क्या गंगाजल की किसी वैज्ञानिक विशेषता के कारण है, यह प्रश्न उठना सहज है। जिस तरह तुलसी, पीपल, नीम एवं आंवले इत्यादि का हिन्दू धर्म में समावेश-विशेष गुणवत्ता एवं औषधीय गुण के कारण है ठीक उसी तरह गंगाजल का भी महत्व अपने अन्दर विशेष वैज्ञानिकता समेटे हुए हैं।

फ्रांस के सब प्रतिष्ठित वैज्ञानिक डाक्टर हेरेल का उल्लेख करना आवश्यक है जिन्होंने गंगाजल पर अनेकानेक वैज्ञानिक प्रयोग एवं परीक्षण किये। उन्होंने स्पष्ट शब्दों में कहा कि 'गंगा नदी विश्व में एकमात्र ऐसी नदी है जिसके जल में संक्रामक रोगों के कीटाणुओं को मारने की अदभुत क्षमता है।'

इतना ही नहीं किसी भी साधारण जल में गंगाजल मिला देने से उसमें भी गंगाजल का गुण व्याप्त हो जाता है। कहने का अर्थ यह कि पूरा का पूरा जल गंगाजल बन जाता है। गंगाजल की दूसरी विशेषता यह है कि इसे अगर वर्षों तक रखा जाय तो भी यह सड़ता नहीं और न ही इसमें दुर्गन्ध ही उत्पन्न होती है।

डा० हेरेल ने अपने प्रयोगों की सफलता से यह सिद्ध कर दिया कि गंगाजल में हैजा, टी० बी०, अतिसार; संग्रहणी आदि के साथ अन्य कई असाध्य कहे जाने वाले रोग ठीक करने की अदभुत क्षमता विद्यमान है। गंगाजल के इसी औषधीय क्षमता द्वारा उन्होंने 'बैक्टीरियोफेज' नामक दवा भी बनाई थी।

पहले कुछ लोगों की मान्यता थी कि गंगा नदी के जल की तरह ही चैटेल बायोन, मोन्टेडोर, सेन्ट नेक्टेयर आदि जल स्रोतों में भी रोग नाशक शक्ति विद्यमान है। यूरोपीय देशों में इन्हें अत्यन्त ही पवित्र माना जाता है। परन्तु सन १९३० में डा० मोनोद ने यह स्पष्ट किया कि इन जल स्रोतों में कुछ ऐसे रासायनिक पदार्थ घुले-मिले हैं जो बीमारियों में लाभ पहुँचाते हैं। परन्तु उनके इस तथ्य को डा० नेल्सन ने यह कहकर धूमिल कर दिया कि गंगाजल में इन स्रोतों से बहुत ज्यादा गुण विद्यमान है। एक अन्य डाक्टर ने यह स्पष्ट किया कि अगर किसी व्यक्ति की जीवन-शक्ति समाप्त हो रही हो और उसे गंगाजल पिलाया जाय तो उसकी स्थिति में आश्चर्यजनक ढंग से सुधार होने लगता है।

गंगाजल पर अनेकानेक वैज्ञानिक प्रयोग होते रहे हैं और उनके परिणाम भी चौंकाने वाले सिद्ध हुए हैं। गंगाजल में कुछ ऐसे तत्व पाए गए जो दुनिया के किसी भी जल स्रोत में नहीं मिलते चाहे वह आमेजन हो, मिसीसिपी हो टेम्स हो या वोल्गा क्यों न हो। गंगाजल से प्राप्त कीटाणु निरोधक तत्व का नाम वैज्ञानिकों ने 'कालोइड' रखा।

आज से सैकड़ों वर्ष पूर्व जब अपने देश का व्यापार अरब आदि राष्ट्रों से चलता था उस समय भी वहां के मुस्लिम व्यापारी गंगाजल की शक्ति को स्वीकारते थे। डा० नेल्सन के अनुसार उस समय टेम्स नदी का जल जो लन्दन से जहाजों पर टैंक में भरकर लाया जाता था वह बम्बई बन्दरगाह पर पहुंचने से पहले ही खराब हो जाता था। परन्तु हुगली नदी का जल जो यूरोपीय देशों को ले जाया जाता था वह कभी भी खराब नहीं होता था। उस समय विभिन्न रासायनिक प्रक्रियाओं से समुद्र के खारे जल को शुद्ध कर पीने योग्य बनाने की विधि ज्ञात न थी। इसीलिए गंगाजल ही जहाजों पर भरकर ले जाया जाता था। इस कारण से भी गंगाजल की वैज्ञानिकता स्वयं सिद्ध प्रतीत होती है।

आज जबकि पर्यावरण प्रदूषण का खतरा बढ़ रहा है और कल कारखानों का टनों गन्दगी मलबा एवं अवशिष्ट पदार्थ गंगाजल में मिल रहा है, गंगाजल भी भयंकर रूप से प्रदूषित होता जा रहा है। इसके बावजूद गंगाजल की वह गुणवत्ता एकाएक समाप्त नहीं हो गई। उसके उन स्थलों पर जहां नाममात्र का प्रदूषण है या जहां तक प्रदूषण है ही नहीं, वहां के जल में अभी भी वह गुण विद्यमान हो सकता है।

गंगाजल में फैल रहे निरन्तर प्रदूषण पर शोध कर रहे एक अनुसंधान दल ने बताया है कि गंगाजल में नाइट्रेट एवं बायोकेमिकल आक्सीजन डिमांड की मात्रा निरन्तर बढ़ रही है। इसके कारण जल में घुले प्राणवायु की मात्रा कम पड़ती जा रही है। लगभग १५ करोड़ मानवीय तथा २१ करोड़ पशुओं की आबादी से होकर गुजरने वाली गंगा नदी में उसके उदगम स्थल से लेकर अन्त तक लगभग १६००० से ज्यादा नदियां और जलस्रोत अपने साथ ढेर सारा कचरा और अवशिष्ट पदार्थ लेकर मिलते हैं।

इसके अतिरिक्त गंगा के विभिन्न तटों पर शवदाह का कार्य भी होता है जिसके कारण राख एवं मुर्दों के अवशिष्ट भी गंगा में मिलते रहते हैं। अकेले वाराणसी में ही २० से ३० हजार तक शवदाह प्रतिवर्ष होते हैं। इतने शव को जलाने के लिए लगभग ११ हजार टन लकड़ी आदि की आवश्यकता होती है। इन लकड़ियों के जलने से लगभग २००० से १००० टन तक राख एवं शव के अवशेष इत्यादि तथा १ हजार टन हड्डियों के चूर्ण आदि गंगाजल में मिलते हैं।

पिछले दिनों गंगाजल में फैल रहे प्रदूषण को लेकर काफी जनाक्रोश देखने को मिला। गंगा के प्रदूषण को कम करने के लिए काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के सिविल इन्जि० विभाग के डा० नारायण ने कहा था कि हमें इस तरह की योजना पर अमल करना चाहिए जिससे गंगा में मिलने वाले कल कारखानों एवं अन्य गंदे पानी को उपचारित करके छोड़ा जाय। विश्व स्वास्थ्य संगठन के पर्यावरण सलाहकार डा. बी० डी० नागचौधरी ने कहा है कि इस समस्या के समाधान के लिए लगभग १४० करोड़ रुपया व्यय होगा।

इतने बड़े भूभाग को सिंचित कर उसमें फसल के रूप में लहलाने वाली गंगा नदी का जल अनगिनत कल-कारखानों के विषैले जल आदि को भी अपने साथ प्रवाहित कर ले जाती है। परन्तु अभी भी ऐसा विश्वास किया जाता है कि गंगा के जल का वह अदभुत गुण उसके कुछ स्थलों में विद्यमान है।

लेकिन भयंकर प्रदूषण को देखकर सहज ही ऐसा विश्वास नहीं होता कि गंगा के अमृत तुल्य जल का वैज्ञानिक प्रभाव अभी भी बरकरार है। पूरे देश में गंगा जल में निरन्तर हो रहे प्रदूषण को रोकने के लिए जनमानस में सुगबुगाहट है। कहीं-कहीं यह सुगबुगाहट उभरकर भी सामने आई है परन्तु प्रशासन को किसी विशेष बात पर गौर करने का समय कहां है? वर्तमान में गंगाजल के प्रदूषण को रोकने के लिए कारगर उपाय युद्ध स्तर पर नहीं किये गये तो निश्चित रूप से अमृत तुल्य जल हलाहल बन जायेगा और इसके दुष्परिणाम सभी को भोगने पड़ेंगे।

(हिन्दू विश्व, फरवरी ८५)

सम्पादक के नाम पत्र

आज का समाज

हमारे धर्म ग्रन्थों में तथा हमारे पूर्वजों ने मनुष्य जाति को आदेश दिया है, कि वह सदैव मनसा, वाचा तथा कर्मणा का प्रयोग करें अर्थात जैसा मन में हो वैसा ही कर्म वचन में व्यवहार में होना आवश्यक है। इन पर अनुकरण करना अति आवश्यक है। इससे समाज में शांति बनी रहती है। इस लक्ष्य को अपना कर व्यक्ति का लोक परलोक दोनों सफल हो जाते हैं। वैसे यह मार्ग कठिन प्रतीत होता है, किन्तु इसका अनुसरण करने से आत्मा शांत रहती है। किन्तु आज हमारा समाज इसके विपरीत चल रहा है। यहां तक कि भाई-भाई से भी अपने भाव प्रकट करने में संकोच करता है। उनमें वास्तविक प्रेम नहीं रहा। कभी कभी तो ऐसा देखा जाता है कि उनमें शत्रुता हो जाती है और एक दूसरे के प्राण तक लेने को उतारू हो जाते हैं। राम लक्ष्मण तथा भरत का भ्रातृ प्रेम आज लोप हो गया।

सत्यमेव जयते भारत राज्य के प्रमाण पत्रों पर तथा विश्व विद्यालयों के प्रमाण पत्रों पर अंकित होता है किन्तु आज कल यह वाक्य केवल प्रमाण-पत्रों में प्रयोग के लिए ही रह गया है। समाज में इसका लोप होता जा रहा है। आज यदि कोई कर्मचारी अपने अफसर की हां में हां नहीं मिलाता तो वह कभी उन्नति का मुख नहीं देख सकता यहां तक कि कभी कभी उसे नौकरी से भी पृथक कर दिया जाता है। मनसा, वाचा कर्मणा का लोप हो गया है। हम अपनी संस्कृति को तिलाञ्जलि देते जा रहे हैं। केवल धन को ही अपना सर्वस्व मान कर अपना अनमोल जीवन नष्ट कर रहे हैं। जिस मनुष्य देह के लिए देवगण भी इच्छा रखते हैं उसे थोड़े से सोने चांदी के टुकड़ों के लिए बेच देते हैं। आज देश की स्थिति बहुत बिगड़ गई है। यहां तक कि अपने स्वार्थ के लिए अधिक बड़े से बड़ा पाप करने से भी संकोच नहीं करता। जिन व्यक्तियों को समाज में सभ्य तथा अग्रणी माना जाता है आज उनकी यह वृत्ति है। कितने उद्योगपति तथा भारत सरकार के कर्मचारी रक्षा मन्त्रालय, प्रधान मन्त्री मन्त्रालय, राष्ट्रपति मन्त्रालय, तथा अर्थ विभाग के गुप्त भेदों के पत्रों को विदेशों में भेजने के अपराध में पकड़े गए हैं। झूठी शान के लिए वह धन के लालच में आकर देश द्रोही विश्वासघाती बन गए हैं। जिस मातृ भूमि से सब कुछ प्राप्त करते है उस जननी जन्म भूमि को फिर से विदेशियों के पैरों तले रौंदवाने में उन्हें लज्जा नहीं आती। भगवान ने अपनी रचना में मनुष्य को सबसे अधिक बुद्धिमान बनाया है। उसे कर्म करने के लिए स्वतन्त्रता दी है। यदि मनुष्य पशुओं जैसा ही बिना सोचे समझे व्यवहार करे तो उससे निकृष्ट और कौन हो सकता है? एक कवि ने कहा है—

जिसको न निज गौरव तथा निज देश का अभिमान है।
वह नर नहीं है पशु निरा और मृतक समान है॥

पक्षिगण भी जिस वृक्ष पर बसेरा लेते हैं, वह भी उसी के साथ प्राण न्योछावर करने में सौभाग्य समझते हैं। एक बार एक यात्री जंगल में से जा रहा था, अकस्मात वहां पर अग्नि ने अपना प्रचण्ड रूप धारण कर लिया, उसने देखा कि थोड़ी दूर पर एक वृक्ष पर पक्षीगण निश्चिन्तता से बैठे हुए हैं। यात्री ने उनको सम्बोधित करते हुए कहा; ऐ पक्षियो! तुम उड़ क्यों नहीं जाते, कुछ ही क्षणों में यह वृक्ष भी अग्नि की चपेट में आ जाएगा। पक्षियों का उत्तर था—

फल खाए जिस वृक्ष के कीन्ह अंधेरे पात।
धर्म हमारा है यही, जलें इसी के साथ॥

यदि पक्षी भी इस प्रकार सोचते हैं तो मनुष्य को जिसे प्रभु ने बुद्धि दी है उत्तम कर्म करने के लिए, शक्ति दी है उसे क्या करना चाहिए इसका निर्णय स्वयं पाठक गण कर सकते हैं।

नित्य समाचार पत्रों में पढ़ने को मिलता है कि आज उस बैंक में डकैती हुई, दो चार घरों में चोरी, बस या रेलगाड़ी में यात्रा करते हुए यात्रियों को लूट लिया, कुछ को मौत के घाट उतार दिया। यदि ध्यान से सोचें कि इसका मुख्य कारण क्या है? तो मेरे विचार में आजकल प्रत्येक व्यक्ति ठाठ बाट से रहना चाहता है। बिना परिश्रम किए धन प्राप्त हो जावे यह सोचता है।

यदि शासन न हो तो पाप करने से नहीं सकुचाता। धार्मिक शिक्षा का अन्त होता जा रहा है। नव युवकों को अपने पूर्वजों के इतिहास का परिचय ही नहीं उनको विदेशी लेखकों और अंग्रेजी उपन्यासों का ही ज्ञान है। सब स्थानों पर धन का ही बोल बाला है, किसी भी स्थान पर जाओ धनी का ही आदर है। घूस देकर बड़े से बड़ा पाप करने पर भी मुक्त हो जाते हैं। धन के लालच में भोली भाली नवयुवा वधू को अग्नि में आहुति दे दी जाती है। नेतागण जिनको जनता अपना प्रतिनिधि चुनकर लोक सभा, विधान सभा में भेजती है, वह सज्जन भी धन एकत्रित करने से नहीं सकुचाते। उनकी भी यही इच्छा होती है कि आने वाले चुनाव के लिए तथा दो तीन पीढ़ियों के लिए धन एकत्रित कर लें।

उद्योगपति भी इसी चिन्ता में रहते हैं कि दस के पचास रु० बन जावें। खाद्य पदार्थों में मिलावट की जाती है। गौ को हिन्दू धर्म में माता का स्थान प्राप्त है उसका वध करना महा पाप समझा जाता है। राजा पृथ्वीराज ने गोमाता पर अपनी सेना को वार करने से रोका था। आज विदेशों से गौ की चरबी मंगवा कर वनस्पति तेल में तथा साबुन में प्रयोग की जाती है। किसी का कोई धर्म नहीं है, केवल पैसा ही सब कुछ है यही भाई है यही बन्धु! जिस व्यक्ति की आर्थिक स्थिति कमजोर होती है उसका समाज में कोई स्थान नहीं है। मदिरा पान करना, क्लबों में ताश (जुआ) खेलना सभ्यता समझी जाती है। अपनी भाषा का प्रयोग करना भूल रहे हैं। जो अंग्रेजी नहीं बोलता वह असभ्य गिना जाता है। अंग्रेजी बोलना सभ्यता का चिन्ह है। जो विदेशी भाषा नहीं बोलता उसका समाज में कोई स्थान नहीं, वह मूर्ख है। परिवार के सदस्यों तथा बालकों के साथ भी अंग्रेजी का प्रयोग किया जाता है। यदि उनसे कहा जाये कि अपनी भाषा का प्रयोग करो, तो उत्तर मिलता है, कि अंग्रेजी अन्तर्राष्ट्रीय भाषा है। इसका अपनाना अत्यन्त आवश्यक है इसको जाने बिना बच्चे कभी उन्नति नहीं कर सकते।

पूज्य बापू का स्वप्न स्वतन्त्र भारत का बिल्कुल बदल गया है। पूज्य बापू ने स्वतन्त्रता प्राप्त करने के पश्चात भारत वासियों को साधारण जीवन व्यतीत करने का आदेश दिया था तथा कहा था कि सबको अपने देश का सेवक समझना चाहिए। ऊंच और नीच की भावना का त्याग करो तभी हम वास्तविक स्वतन्त्रता देख पायेंगे। उस महान आत्मा ने स्वयं एक चादर तथा मूंज की चप्पल पहन कर सत्य में निष्ठा रखते हुए देश को बृटिश जैसी महान शक्ति से मुक्ति दिलाई, किन्तु आज तो भोग विलास का जीवन है चोरी, शराब, घूस खोरी का बोल बाला है। देश और जाति का इने गिने व्यक्तियों के ही हृदय में ध्यान है। चारों ओर युद्ध के बादल छाए हुए हैं। विदेशी शक्तियां भारत को सुदृढ़ तथा शक्तिशाली नहीं देख सकती। आज प्रत्येक भारत वासी का कर्तव्य है, कि वह वही भावना जो स्वतन्त्रता के आन्दोलन के समय में थी अपनाए, तथा देश और जाति की रक्षा के लिए हर क्षण उद्यत रहे, तभी यह स्वतन्त्रता स्थिर रह सकेगी। कहीं ऐसा न हो कि भारत माता फिर परतन्त्रता की जंजीरों में जकड़ दी जावे।

इस स्वतन्त्रता का सूर्य उदय करने के लिए सहस्त्रों देश भक्तों ने सर्वस्व न्यौछावर कर हंसते हंसते फांसी के फन्दे को चूमा। अनेकों प्रकार की कठोर यातनाएं सही। क्या हम उन महान आत्माओं के ऋण से उऋण हो सकते हैं?

भगवान सबको सदबुद्धि प्रदान करे, यही हार्दिक प्रार्थना है।

—सरला कपिला
ए-११, ग्रीन पार्क, नई दिल्ली

परिवर्तन

"सार्वदेशिक' के ३ मार्च १९८५ के अंक में 'भगवान' शब्द पर श्री रघुनाथ प्रसाद पाठक की टिप्पणी पढ़ी जिसमें उन्होंने महर्षि दयानन्द के नाम से पूर्व भगवान शब्द जोड़ने का औचित्य प्रतिपादित किया है।

इस विषय में यह ध्यान देने योग्य है कि समय के साथ साथ शब्दों के अर्थ और उसकी छाया में परिवर्तन होता रहता है। संस्कृत में यद्यपि भगवान शब्द का प्रयोग विभूतिमान भाग्यशाली आदि 'किसी व्यक्ति' के अर्थ में हुआ है तथापि आजकल की प्रचलित हिन्दी में यह शब्द प्रायः देवता या ईश्वर के अर्थ में अधिक प्रयुक्त होता है। अतः मेरे विचार में आज की भाषा में भ्रान्ति से बचने के लिए महर्षि दयानन्द के नाम से पूर्व इस शब्द का प्रयोग न करना ही अधिक श्रेयस्कर है।

—कृष्ण लाल
प्रोफेसर, विश्वविद्यालय दिल्ली-७

सत्य सनातन आर्य धर्म

सत्य सनातन धर्म से अभिप्राय वैदिक धर्म है क्योंकि 'सनातन' शब्द का अर्थ नित्य है। आर्य शब्द के जो अर्थ प्राचीन ग्रन्थों के आधार पर संस्कृत वाङ्मय की कोषों में दिए गए हैं उनका यहां स्मरण करा देना अप्रासंगिक न होगा। वेदों में मनुष्य जाति के 'आर्य' और 'दस्यु' ये दो विभाग बनाए गए हैं जैसे कि सुप्रसिद्ध विज्ञानी ह्यार्यान ये चे दस्यवो बर्हिष्मते रन्धया शासदव्रतान् (ऋ० १।५१।८) इत्यादि में कहा है कि जो अव्रत अर्थात सत्य भाषणादि शुभव्रत और उत्तम कर्मों से रहित दुराचारी, विषय लम्पट, उत्तम कर्म में विघ्न डालने वाले स्वार्थ साधन तत्पर लोग हैं वे अनार्य वा दस्यु तथा विद्या धर्मादि उत्कृष्ट स्वभावाचरण युक्त मनुष्यों को आर्य जानो।

मनुस्मृति के 'आर्य रूप मिवा नार्य कर्मभि, स्वैर्विभावयेत (१०।५७) इत्यादि श्लोकों में भी धर्मात्मा के लिए आर्य शब्द का प्रयोग करते हुए कहा गया है कि जो वेषादि द्वारा अपने को आर्यों के तुल्य दिखाए ऐसे अनार्य की परीक्षा उसके दुष्कर्मों द्वारा करनी चाहिए।

महाभारत उद्योग पर्व में आर्यों का लक्षण करते हुए बताया गया है कि जो शान्त हुए वैर को फिर बढ़ाता नहीं किन्तु शांति की स्थापना का सदा प्रयत्न करता है, जो अभिमान नहीं करता जो कभी निराश नहीं होता अथवा नाश को प्राप्त नहीं होता। जो आपत्ति के आने पर भी कभी बुरा कार्य नहीं करता उसे आर्य लोक आर्य स्वभाव वाला कहते हैं।

महाभारत शांति पर्व में 'आर्य शील' का वर्णन इस प्रकार किया गया है—

"आर्य शील वाला पुरुष वह है जो अपने सुख में बहुत अधिक खुश नहीं हो जाता और दूसरों के दुःख में जो कभी प्रसन्नता प्रकट नहीं करता, दान देकर जो पश्चात्ताप नहीं करता।

वसिष्ठ स्मृति में 'आर्य' का निम्न लिखित लक्षण स्वर्णाक्षरों में किया गया है।

"आर्य उसे कहते हैं जो कर्तव्य कर्म को सदा करता रहता है और पापों से सदा दूर रहता तथा जो पूर्ण सदाचारी है।

निरुक्त में श्री यास्काचार्य ने आर्य का अर्थ 'ईश्वर पुत्र:' ऐसा किया है अर्थात सबके स्वामी परमेश्वर का सच्चा पुत्र जो परमेश्वर का सच्चा भक्त और उसकी आज्ञानुसार शुभ कर्मों के करने में सदा तत्पर रहता है।

शब्द रत्नावली नामक संस्कृत कोष में आर्य 'शब्द का अर्थ पूज्य: श्रेष्ठः ऐसा दिये हैं। शब्द कल्पद्रुम आदि संस्कृत कोषों में आर्य शब्द के अन्य अर्थ—

"मान्य, उदार, चरित, शान्त चित्त, न्याय पथावलम्बी, प्रकृता चार, शील, सतत कर्तव्य कर्मानुष्ठाता इत्यादि दिए हैं जिनका तात्पर्य यह है कि जो अपने उत्तम गुणों के कारण माननीय हो, जिसका चरित्र उदार हो, जिसका चित्त शांत हो, जो न्याय के मार्ग का अवलम्बन करने वाला हो, जो पूर्ण सदाचारी हो, जो कर्तव्य कर्म को निरन्तर करने वाला हो उसे आर्य कहते हैं।

धर्म

धर्म शब्द धृञ=धारणे इस धातु से बनता है जिसको लेकर श्री वेदव्यास जी ने महाभारत में कहा है—

'धारणाद धर्म इत्याहु: धर्मो धारयते प्रजा:।
यत्स्याद धारण संयुक्त सधर्म इतिनिश्चय ॥

अर्थात जिसके द्वारा सारी प्रजा वा सब समाज और जगत् का धारण किया जा सके, जिसके धारण करने से समाज का कल्याण और उद्धार हो वह धर्म कहलाता है इस प्रकार धर्म एक अत्यन्त व्यापक शब्द है जिसके अन्दर सभी उत्तम गुणों और कर्मों का समावेश हो सकता है, जो व्यक्ति, समाज, राष्ट्र और जगत का कल्याण करने वाले और उन्हें उन्नति और शान्ति के मार्ग पर ले जाने वाले हों।

वैशेषिक शास्त्रकार कणाद मुनि ने वेदों के पावमानी र्वन्तु न इमं लोक मथो अमुष। कामान्त्स मर्धयन्तु नो देवीर्देवै समाहृता।

पावमानी:...(सामवेद उत्तरा- पु ५ मं० ८) इत्यादि मन्त्रों के अनुसार जिसमें वैदिक शिक्षा का फल इहलौकिक और पारलौकिक उन्नति के रूप में बताया गया है धर्म का लक्षण इस प्रकार किया है—

यतोऽभ्युदय नि: श्रेयस सिद्धि: स धर्म:

अर्थात जिससे इस लोक में उन्नति और मोक्ष की प्राप्ति हो वह धर्म है। सत्य सनातन वैदिक धर्म का इससे उत्तम लक्षण करना कठिन है। मनुस्मृति में—

धृति क्षमा दमोऽस्तेयं शौचमिन्द्रिय निग्रह:
धी विद्या सत्यम क्रोधो दशकं धर्म लक्षणम्।

श्लोक द्वारा धर्म के दस लक्षण बताए गए हैं। धैर्य, क्षमा, मन को वश में करना, चोरी का विचार तक मन में न लाना, सब प्रकार की पवित्रता, इन्द्रियों को वश में रखना, बुद्धि को बढ़ाना, सत्ज्ञान को प्राप्त करना। मन वचन कर्म से सत्य के व्रत का पालन करना और क्रोध न करना ये सब बातें वैयक्तिक धर्म के अन्दर आती हैं।

सनातन धर्म का लक्षण मनु महाराज ने संक्षेप में इस प्रकार बताया है:

सत्यं ब्रूयात् प्रियं ब्रूयात न ब्रूयात्सत्यम प्रियम्।
प्रियं च नानृत ब्रूयात्, एषं धर्म सनातन: ॥

अर्थात सनातन नित्य वेदोक्त धर्म यह है कि मनुष्य सदा सत्य बोलें, प्रिय वचन बोले, सत्य को भी यथा सम्भव अप्रिय रूप से न बोले और जो बात असत्य है वह कितनी भी प्रिय मालूम होती हो उसे कभी न कहे।

सत्य सनातन आर्य धर्म का आधार वेद

इस सनातन आर्य धर्म का आधार वेद है। जिसका प्रकाश आर्यों के युक्ति युक्त मन्तव्यानुसार सृष्टि के आरम्भ में मंगलमय भगवान ने अग्नि, वायु, आदित्य व अंगिरा नामक ऋषियों के पवित्र हृदय में किया। परमात्मा समस्त संसार के माता-पिता के समान है। जिस प्रकार माता पिता बच्चों के कल्याण के लिए उन्हें अच्छा ज्ञान देते हैं इसी प्रकार सर्वशक्तिमान प्रभु ने मानव मात्र के कल्याणार्थ वेद ज्ञान को सृष्टि के आरम्भ में प्रकाशित किया क्योंकि जब तक कोई ज्ञान देने वाला न हो तब तक स्वयं ज्ञान की

प्राप्ति नहीं हो सकती। यह बात सभी के अनुभव से सिद्ध है और अमीरिया के राजा असुर बानी पाल अकबर आदि के परीक्षणों द्वारा इतिहास सिद्ध है (अर्थात भेड़ियों आदि द्वारा पालित नर बच्चों को नैमित्तिक ज्ञान न मिलने से उन्हीं के रूपों में पाया गया है अर्थात वे उन्हीं के अनुसार चलते फिरते, और मानसिकता दिखलाते देख पड़ते हैं—सम्पादक)

इस ईश्वरीय ज्ञान की आवश्यकता को वर्तमान कालीन सुप्रसिद्ध अनेक वैज्ञानिकों ने भी उपर्युक्त उक्ति के आधार पर स्वीकार किया है। इंग्लैंड के सुप्रसिद्ध विज्ञानवेत्ता प्रो० फ्लेमिंग एफ. ए. डी. एस. सी.—एफ. आर. ऐस. ने दी सुप्रीम इन्टैलो जैन्स इन ऐंड अबव नेचर विषयक अपने व्याख्यान में जो साइंस ऐंड रिलीजन बाई सेविन मैन आफ साइंस (Science and Religion by seven men of science) नामक पुस्तक में छपा है ईश्वर के अस्तित्व को विज्ञान द्वारा सिद्ध करते हुए कहा है —

'यदि मनुष्य को निश्चित यथार्थ ज्ञान प्राप्त करना हो तो वह केवल असहाय मानव बुद्धि या तर्क द्वारा मनुष्य के मन का उसके साथ सम्बन्ध होने पर ही प्राप्त हो सकता है।"

वेद का अर्थ ज्ञान है इसीलिए वेदों के अन्दर हमें वैयक्तिक, पारिवारिक सामाजिक, राष्ट्रीय सब कर्तव्यों और प्राकृतिक तथा आध्यात्मिक विषयों के प्रतिपादक मन्त्र उपलब्ध होते हैं।

(ऋ० (१०।९०।९) अथर्व० (१०।९।२०) ऋ० (८।७५।६)

इत्यादि मन्त्रों के अनुसार जिनमें परमात्मा को वैदिक ज्ञान का दाता बताते हुए उसकी वाणी (वेद) को नित्य कहा गया है :

वेदान्त १।३।२९, महाभारत १२।२३३।२४, सांख्य ५।५१, मनु—

इत्यादि वचनों द्वारा भी वेद व्यास, कपिल, मनु प्रभृति सब प्राचीन ऋषि, मुनि तथा शास्त्रकार एक स्वर से वेदों को नित्य स्वतः प्रमाण और धर्म का मूल स्वीकार करते हैं।

यहां इतना लिख देना आवश्यक है कि वेदों का ज्ञान ईश्वर ने जो समस्त संसार का पिता है मनुष्य मात्र के कल्याण के लिए दिया है यत: यथेमां (यजु. २६।२) ऋ० १०।१९१।२) इत्यादि वेद मन्त्रों के अनुसार बताया गया है कि इस कल्याण कारिणी वेदवाणी का उपदेश ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र अति शूद्र सब मनुष्य मात्र के लिए समान रूप से परमात्मा ने किया है। वेदों के पढ़ने का अधिकार सब मनुष्यों का है।

(स्वामी धर्मानन्द)

श्री जयप्रकाश का मुस्लिम विद्वानों के साथ सफल शास्त्रार्थ

कपूरथला। श्री पं० जयप्रकाश आर्य का भाषण डनलप-लाईन में जमकर हुआ। बड़ी प्रसन्नता हुई। कलकत्ता के आए हुए मौलाना मेहदी हसन और दूसरे मुस्लिम विद्वानों के लिखित दिए गए तीस प्रश्नों का उत्तर पं० जयप्रकाश जी ने दिया वह सराहनीय था। आचार्य रामानन्द जी ने कहा—मैंने पहली बार इतना अकाट्य प्रमाण देते हुए किसी को सुना है। दूसरे दिन जब मौलाना मेहदी हसन हार गए तो एक नास्तिक को पकड़ कर लाए। उसने कहा मैं इस पर शास्त्रार्थ करूंगा कि ईश्वर नहीं है परन्तु किसी धर्म ग्रन्थ के प्रमाण को नहीं मानूंगा। मुझे वह प्रमाण चाहिए जिसको बुद्धि स्वीकार करे। बहस की जगह डनलप से तीन मील दूर रखी गई। हम लोग परेशान थे कि पण्डित जी क्या उत्तर देंगे और मौलवी खामखां इनको नीचा दिखाना चाहते थे।

पण्डित जी ने इसे स्वीकार कर लिया। हालांकि यह पण्डित जी का विषय नहीं था। मुबाहिसा दोपहर के शंका समाधान के समय ही होना था। हम लोग ठीक समय पर पहुंचे। पं० जयप्रकाश जी करीब २॥ घंटे लेट पहुंचे। मौलाना लोगों ने कहा कि कल जयप्रकाश जी ने मुसलमानों को बेइज्जत किया था परन्तु आज भाग खड़े हुए। हम लोग भी बेईज्जती महसूस कर रहे थे। २॥ घंटा बाद पण्डित जी सीधे मच पर पहुंचे। मौलाना मेहदी हसन ने कहा कि वह आर्यसमाज का नेता जो समय पर मंच पर न आ सके वह क्या बहस करेगा?

पंडित जी ने कहा मौलाना एक आश्चर्यजनक घटना रास्ते में घट गई जिसके कारण देर होना स्वाभाविक था। मैं जब मंजिल से चला तो आप सभी जानते हैं कि रास्ते में नदी पार करनी पड़ती है। नदी पर मैं जैसे ही पहुंचा, हमने एक आश्चर्यजनक चीज देखी। नदी के किनारे लगे हुए वृक्ष अपने आप कटकर गिर रहे थे। दूर तक किसी आदमी का नामोनिशान नहीं था, वह वृक्ष गिरने के बाद अपने आप चिरे जा रहे थे। वह पटरियाँ अपने आप जुड़कर कश्ती की शकल बन रही थी और फिर अपने आप नदी में तैर रही थी। इस घटना को देखकर मैं इतना मुग्ध हुआ कि आपके शास्त्रार्थ का ख्याल नहीं रहा। आने वालों ने कहा यह सब झूठ है, वृक्ष का कटना और पुनः जुड़ना—यह असम्भव है। पंडित जी ने कहा अगर वृक्ष खुद से नहीं कट सकता, कश्ती नहीं बन सकती तो यह पूरी दुनिया अपने आप कैसे चल सकती है? इसका भी चलाने वाला कोई जरूर होगा। मुबाहिसा करने वाले भाग खड़े हुए। लोगों ने तालियां बजाईं और बड़ा अच्छा प्रभाव पड़ा। —कैलाशनाथ शास्त्री

आर्य समाजों की गतिविधियां

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय का वार्षिकोत्सव

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय का वार्षिकोत्सव गत वर्षों की भांति इस वर्ष भी ९ से १४ अप्रैल १९८५ तक बड़ी धूम-धाम से मनाया जा रहा है। इस अवसर पर वेद, शिक्षा, राष्ट्र निर्माण आदि सम्मेलनों के साथ-साथ दीक्षान्त समारोह का भी आयोजन किया गया है जिसमें उच्चकोटि के शिक्षा-शास्त्री राजनेता पधार रहे हैं।

निर्वाचन

आर्य समाज झिलमिल, शाहदरा दिल्ली ३२ का वार्षिक चुनाव सम्पन्न हुआ। प्रधान-पं० अशोक कुमार शास्त्री, कोषाध्यक्ष-आचार्य सुशीराम शर्मा, मन्त्री-पं० सुशील चन्द्र शास्त्री निर्वाचित हुए।

विनीत—राष्ट्रीय एकता विचार मंच
प्रधान कार्यालय

आर्य समाज मयूर विहार पटपड़गंज क्षेत्र का तृतीय वार्षिकोत्सव

दिनांक १०-२-८५ (रविवार) प्रातः ८-३० बजे से १-०० बजे तक आर्य समाज मयूर विहार (सब्जी मण्डी पाकेट १९ की पीछे) समारोह पूर्वक मनाया गया। सभी आर्य प्रेमियों को निमन्त्रण है।

—सत्य नारायण तलवाड़
अन्तरंग सदस्य

शोक समाचार

हम बड़े दुःख के साथ सूचना देते हैं कि आर्य समाज शक्तिनगर अमृतसर के उपप्रधान श्री ला० छोटी लाल जी का कुछ समय की बीमारी के पश्चात १९-३-८५ को देहान्त हो गया है। वह आर्य समाज शक्तिनगर के एक महान स्तम्भ थे। उनकी वैदिक धर्म एवं यज्ञ के प्रति अगाध श्रद्धा थी वह लगभग ५० वर्ष तक आर्य समाज की सेवा करते रहे उनकी अनथक सेवाएं प्रेरणा स्रोत का कार्य करेंगी।

डा० हर भगवान आर्य, प्रचार मन्त्री
आर्य समाज शक्तिनगर, अमृतसर

—बरेली, १६ मार्च। प्रसिद्ध आर्य समाजी नेता श्री जी० डी० तपस्वी का १५ मार्च को हृदयगति रुक जाने से देहान्त हो गया। वे पिछले कुछ समय से अस्वस्थ चल रहे थे।

अन्त्येष्टि संस्कार सर्वश्री आचार्य विश्वश्रवाः व्यास, सन्तोष 'कण्व' तथा सत्यपाल शास्त्री ने कराया।

तपस्वी जी ने आर्य समाज के कार्यों में उत्साह, लगन और निष्ठा से भाग लिया। वे अपने पीछे पत्नी व पुत्र को छोड़ गए हैं।

सम्पूर्ण आर्य जगत की हार्दिक श्रद्धांजलि। —सन्तोष 'कण्व'

होली मिलन समारोह सम्पन्न

क्षेत्रीय आर्य सभा शिवाजी नगर का होली मिलन समारोह स्थानीय राधाकृष्ण मंडल गोविन्द स्वामी महाविद्यालय के प्रांगण में ६ मार्च को बड़ी धूम-धाम के साथ सम्पन्न हुआ। क्षेत्र के चारों ओर से लगभग २५ गांवों से हजारों लोग गाजे-बाजे के साथ पैदल चलकर यहां पधारे थे। लोग जाति, धर्म, सम्प्रदाय को भूल गए थे। और सभी परस्पर गले से गले मिलकर रंग-गुलाल लगा रहे थे। एवं होली गीत गाकर विभोर हो रहे थे।

अन्त में रामलखनसिंह ने सभा को सम्बोधित किया और आज ही नव-निर्वाचित रोसड़ा क्षेत्रीय विधायक श्री भोला मांडरको विजय की बधाई दी।

—रामखेलावन मंडल 'सत्यार्थ शास्त्र'
ग्राम भगतवारा पो० भठोरा (समस्तीपुर, बिहार)

साहित्य समीक्षा

गर्ग मुख महा चपेटिका

लेखक—डा० शिवपूजन सिंह कुशवाह
प्रकाशक—हरियाणा साहित्य संस्थान गुरुकुल झज्जर
साइज—१८×२२+८
पृ०—१२२, मूल्य—६)
प्राप्ति स्थान—डा० शिवपूजन सिंह, कुशवाह शास्त्री एम० ए०
वेदवाणी कार्यालय, पो० बहालगढ़ (सोनीपत)

यह पुस्तक मेरठ के डा० राजेन्द्र कुमार गर्ग कृत 'दयानन्द गाली पुराण' नामक अत्यन्त आपत्ति जनक एवं अशिष्ट पुस्तक के उत्तर में प्रकाशित की गई है। महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा बौद्ध जैन, वाम मार्ग प्रभृति सम्प्रदायों के खंडन में जो प्रमाण दिए गए हैं उनकी अकाट्यता एक बार पुनः इस तथ्य से प्रतिपादित हुई देख पड़ती है कि लेखक ने अपने प्रमाणों के अभाव की पूर्ति अशिष्ट भाषा के प्रयोग से की है जिसमें समालोचक (लेखक) की योग्यता शिष्टता और उच्च स्तर के सिवा अन्य सब कुछ प्रति लक्षित हुए बिना नहीं रहता। प्रस्तुत ग्रन्थ में डा० गर्ग की आलोचना का सप्रमाण सविस्तार खंडन किया गया है। —सच्चिदानन्द शास्त्री

जीवन संगिनी की आवश्यकता

४० वर्षीय आर्य डाक्टर के लिए सुशील, सुशिक्षित जीवन-संगिनी चाहिए। अनाथा, परित्यक्ता तथा विधवा को प्राथमिकता एवं स्नातक प्रशिक्षित, स्नातकोत्तर प्रशिक्षित तथा रिसर्च स्कालर को वरीयता। न्यूनतम योग्यता मैट्रिक। शीघ्र सम्पर्क करें।

डा० रामप्रसाद सिंह 'आर्य' डी० एस० सी० ए०
ग्राम गेरुआरी, पो० भवानी, वाया-मसमलमोला
जिला-पटना, (बिहार) पिन कोड—८०१२११

R. N. 626/57 Licensed to post without pre-payment License No, 92 Post in D.P.S.O. on 4 4 85

सावधान ! नीचे छपे ग्राहक नं० वाले सज्जन ध्यान दें :—

मुझे बताया गया है कि सार्वदेशिक पत्र के कुछ ग्राहकों पर कई-कई वर्ष का शुल्क शेष है और रिमाइन्डर भेजने पर भी शुल्क अभी तक कार्यालय में जमा नहीं किया है जिनमें आर्य समाजें भी सम्मिलित हैं। इस प्रकार के सदस्यों, व आर्य समाजों के अधिकारियों से मेरा निवेदन है कि वे पन्द्रह दिन के अन्दर मनि० द्वारा धन भिजवाने का कष्ट करें अन्यथा हमें सखेद सार्वदेशिक पत्र उनको भेजना बन्द करना पड़ेगा। ऐसे कुछ ग्राहकों के नम्बर यहां नीचे दिये जा रहे हैं।

—ओम्प्रकाश त्यागी
सभा-मन्त्री

ग्राहक संख्या :—७८०४, ७८०६, ७८१२, ७८१३, ७८१४, ७८१५, ७८१६, ७८१७, ७८१८, ७८१९, ७८२०, ७८२१, ७८२२, ७८२७, ७८२८, ७८२९, ७८३१, ७८३२, ७८३३, ७८३५, ७८३७, ७८४०, ७८४१, ७८४३, ७८४५, ७८४६, ७८४९, ७८५२, ७८५५, ७८५६, ७८५७, ७८५८, ७८५९, ७८६३, ७८६५, ७८६६, ७८७०, ७८७१, ७८७२, ७८७४, ७८७६, ७८७९, ७८८०, ७८८१, ७८९०, ७९२१, ७९२३, ७९२५, ७९२८, ७९२९, ७९३०, ७९३६(बी), ७९३९, ७९४०, ७९४३, ७९४४, ७८९६, ७८९७, ७८९८, ७९०१, ७९०३, ७९०५, ७९०६, ७९४६, ७९५१, ७९५२, ७९५३, ७९५४, ७९५६, ७९६०, ७९६४, ७९७२, ७९७३, ७९७७, ७९७८, ७९७९, ७९८७, ७९९५, ८०००, ८००१, ८००४, ८००५, ८००६, ८००९, ८०११, ८०१२, ८०१३, ८०१६, ८०१७, ८०१८, ८०१९, ८०२०, ००२१, ८०२३, ८०२७, ८०२८, ८०३३, ८०३४, ८०३५, ८०३६, ८०३७, ८०४१, ८०४२, ८०४६, ८०४७, ८०४८, ८०४९, ८०५०, ८०५१, ८०५२, ८०५३, ८०५४, ८०५६, ८०५७, ८०५८, ८०५९, ८०६०, ८०६४, ८०६५।

नोट :—चैक तथा ड्राफ्ट "सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा" के नाम भेजें। मनिआर्डर व चैक भेजते समय अपनी ग्राहक संख्या अवश्य लिखें।

तीन सशस्त्र

नई दिल्ली। ६-३-८५ को दिल्ली की जम... ...ावी क्षेत्रके एक मकानमें कल रात डकैती डालने आए ... ...माशों में से तीन को गिरफ्तार कर लिया।

गिरफ्तार डकैतों के नाम हैं:—शमशाद (३२), इरशाद (२८) और सलीम उर्फ बिल्लू (२५)। ये सभी रामपुर (उत्तर प्रदेश) के हैं। इनके पास से २ देसी रिवाल्वर और १ देसी पिस्तौल और दस कारतूस भी बरामद किए हैं।

मध्य क्षेत्र पुलिस उपायुक्त श्री प्रमोद कंठ के अनुसार ये डकैत गली कासिम जान में श्री मकबूल अहमद के घर कल रात लगभग ९।। बजे पहुंचे और रिवाल्वर की नोक पर उनसे कहा—जो कुछ है, दे दो वरना...

तभी श्री अहमद के लड़के महबूब को बाहर भागने का मौका मिल गया। महबूब ने बाहर आकर शोर मचाया तो पड़ौसी इकट्ठे हो गए और उन्होंने गश्त पर निकले सब इन्स्पेक्टर श्री सुरेन्द्रकुमार को सूचना दे दी। सब इन्स्पेक्टर जब डकैतों को पकड़ने पहुंचा तो डकैतोंने उन पर गोली चलाई लेकिन सब-इन्स्पेक्टर बच गया। तीन डकैत पकड़े गए लेकिन दो भागने में सफल हो गए।

सार्वदेशिक प्रेस पटौदी हाउस दरियागंज नई दिल्ली-२ में मुद्रित तथा रघुनाथ प्रसाद पाठक मुद्रक और प्रकाशक के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दयानन्द भवन, नई दिल्ली-१ से प्रकाशित।

ओ३म्

सार्वदेशिक साप्ताहिक

सृष्टिसम्वत् १९७२९४९०८६] | सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र | दयानन्दाब्द १६१ दूरभाष । २७४७७१
वर्ष २० अङ्क २०] | वैसाख शु० ८ सं० २०४२ रविवार २८ अप्रैल १९८५ | वार्षिक मूल्य (१) एक प्रति ४० पैसे

धर्म निर्पेक्षता के लवादे में साम्प्रदायिकता

पृ० १२५ पर मि० अकबर कहते हैं कि दयानन्द सरस्वती इस्लाम के एकेश्वरवाद से प्रभावित थे मुख्यतः नवमुस्लिमों को पुनः हिन्दूधर्म में लाने के उद्देश्य से। यह कहना भी बेहूदा एवं असंगत है। एकेश्वरवाद की थ्योरी वेदों, उपनिषदों द्वारा निसृत एवं समर्थित है। स्वामी दयानन्द सरस्वती ही वे महानुभाव थे जिन्होंने वेदों और बाद के कालों की गन्दगी से रहित उनकी पवित्रता की ओर जाने का आह्वान किया। यह कहना कि वे इस्लाम से प्रभावित थे अत्यन्त हास्यास्पद ही है। इस्लाम की उथली फिलासफी हिन्दू (वैदिक) धर्म की गूढ़ फिलासफी में योगदान कर सकती है, यह कहना भी मन-तरंग के अतिरिक्त और कुछ नहीं हो सकता।

(सुप्रसिद्ध पत्रकार ऐम०जे० अकबर कृत 'इण्डिया दी सीज विदिन नामक पुस्तक की वी-पाई द्वारा समीक्षा का अवतरण (आर्गेनाइजर २१-४-८५) रूपा ऐन्ड को द्वारा प्रचारित)

शिक्षा पद्धति में परिवर्तन

संस्कृत विद्वानों की विचार गोष्ठी आर्यसमाज दीवान हाल में

केन्द्रीय शिक्षा मन्त्रालय को भेजे जाने वाले सुझावों के निर्धारणार्थ संस्कृत विदों की एक गोष्ठी २६-४-१९८५ को आर्यसमाज दीवानहाल दिल्ली में सायं ५॥ बजे होगी।

१—सार्वदेशिक सभा प्रधान श्रीयुत रामगोपाल जी शालवाले के निर्देशानुसार बुलाई गई इस गोष्ठी का मुख्यतम केन्द्र बिन्दु होगा 'नई शिक्षा प्रणाली में देववाणी संस्कृत के स्थान और शिक्षा मन्त्रालय को अपने विचारों के अनुकूल बनाने के उपायों का निर्धारण।

सच्चिदानन्द शास्त्री
उपमन्त्री सभा

दूध की बहुतायत, पांच लाख गायों की शामत !

लन्दन, १३ अप्रैल। पश्चिम यूरोप में इस साल के आखीर तक करीब पांच लाख गायों की हत्या कर दी जाएगी। यूरोपीय साझा बाजार ने किसानों को चेतावनी दी है कि जो लोग एक सीमा से ज्यादा दूध या दूध से बनी चीजों का उत्पादन करेंगे उन्हें भारी जुर्माना भरना होगा।

स्पेन की महारानी की बहन राजकुमारी इरीन गोवध पर रोक लगाने की कोशिश कर रही हैं।

पहले यहां किसानों को गायों को पालने के लिए सहायता मिलती थी। अब धीरे-धीरे इसे वापस लिया जा रहा है और कहीं-कहीं तो रोक दिया गया है। नतीजतन उनके पास अनुपयोगी गायों को कसाइयों के हाथ बेचने के सिवा और कोई उपाय नहीं रह गया है। और अब इसका परिणाम यह होगा कि यूरोप भर के कोल्ड स्टोरेजों में गोमांस का अम्बार लग जायगा।

साझा बाजार के एक प्रवक्ता ने बताया कि पश्चिम यूरोप के किसानों के पास ८५ हजार टन मक्खन और दूध की बनी चीजें जैसे पाउडर आदि का ६११ हजार टन भंडार पहले से है। प्रवक्ता ने कहा कि ग्रीस और इटली को छोड़कर साझा बाजार के हर सदस्य देश के पास दूध और दूध से बनी चीजों की भरमार है। जितनी मांग नहीं है उससे ज्यादा सप्लाई है। इसलिए उनके पास इस भंडार को जैसे-तैसे खर्च करने के अलावा कोई चारा नहीं है ताकि इनके रख-रखाव में होने वाला खर्च बचाया जा सके।

प्रवक्ता ने यह नहीं बताया कि अब तक कितनी गायों का वध किया जा चुका है।

किसानों के संगठन नेशनल फार्मर्स यूनियन के एक प्रवक्ता ने कहा कि हम फिलहाल जरूरत से ज्यादा उत्पादन नहीं कर रहे। फिर भी मक्खन के मामले में हम ६१ प्रतिशत और दूध से बनी अन्य चीजों के मामले में ११७ प्रतिशत आत्मनिर्भर हैं। साझा बाजार मक्खन के मामले में पूरी तरह आत्मनिर्भर है। दूध की बनी अन्य चीजें जरूरत से १२३ प्रतिशत ज्यादा हैं।

दूध से बनी चीजों के दाम हर वर्ष तय किए जाते हैं। उदाहरण के लिए इस वर्ष मक्खन का दाम १,६७७ पाउंड प्रति टन और मक्खन निकाले गए दूध का दाम १०२६ पाउंड प्रति तय किया गया है।

साझा बाजार ने सदस्य देशों के किसानों के लिए एक निश्चित कोटा तय कर दिया है। जो किसान इस सीमा का पालन नहीं करते उन्हें भारी जुर्माना अदा करना पड़ता है। ऐसे किसानों को उस विशेष व्यवस्था का लाभ भी नहीं लेने दिया जिसके तहत कम उत्पादन करने वालों को प्रोत्साहन दिया जाता है। साझा बाजार की कोटा सीमा १९८३ के उत्पादन स्तर से ४.१ प्रतिशत कम निश्चित की गई है।

प्रवक्ता ने बताया कि ब्रिटेन में १९८३ से अब तक करीब दो लाख गायों की हत्या की जा चुकी है और हर महीने गोवध का सिलसिला जारी है। कहा जाता है कि केवल कमजोर गायों का ही वध किया जाता है। प्रवक्ता से पूछा गया कि क्या फालतू गायें गरीब देशों को नहीं भेजी जा सकतीं जहां दूध की कमी है। उसका जवाब था कि भेजी तो जा सकती हैं लेकिन उन्हें वहां पहुंचाने का खर्च कौन उठाएगा ?

(शेष पृष्ठ ११ पर)

सम्पादक—[illegible]

सहसम्पादक—रघुनाथ प्रसाद पाठक

सम्पादक के नाम पत्र

धर्मान्तरण हरिजन आरक्षण

उपर्युक्त सन्दर्भ में न० भा० टा० (१२ अप्रैल) में सोहनलाल सुमनाक्षर का प्रत्युत्तर, राजपालसिंह और चांदनी रहमानी (१२ अप्रैल) के पत्र में प्रकाशित हुए हैं। इससे पूर्व सिफायत साहब ने भी अपनी टिप्पणी पत्र में दी है। मुरादाबाद से आजमखां साहब भूतपूर्व एम० एल० ए० के नाम से भी एक पत्र सीधा भेजा हुआ है। ये सभी पत्र तथा इनके साथ के० दास (गढ़वाल) और लखमीचन्द ने भी इस विषय पर अपने विचार दिए हैं।

ये सभी पत्र और विचार पढ़ने से बड़ा रोचक और यथार्थ विश्लेषण निकल रहा है। सुमनाक्षर भाई की दृष्टि में बहराइच में हुआ वर्तमान सामूहिक धर्म-परिवर्तन और पहले हुए मीनाक्षीपुरम धर्मपरिवर्तन की घटनाओं में प्रलोभन या आर्थिक दबाव कोई नहीं रहा। इस विषय में अन्तरात्मा की आवाज पर इक्का-दुक्का या किसी परिवार द्वारा धर्म-परिवर्तन को चाहे मान भी लिया जाय, परन्तु सामूहिक धर्म-परिवर्तन का स्पष्ट कारण प्रलोभन, रियायतें प्राप्त करना अथवा शक्तिशाली वर्गों द्वारा निर्बल वर्गों पर धर्म-परिवर्तन का दबाव सौदेबाजी के लिए होता है। विश्व में और विशेष कर से हिन्दुस्तान में इस्लाम और ईसाइयत की ओट में देश के विखण्डन के षडयन्त्र बराबर चल रहे हैं। मध्य प्रदेश, उड़ीसा, अरुणाचल जैसे अनेक राज्यों में इस प्रकार के धर्म-परिवर्तन, को रोकने के लिए अधिनियम पारित हो चुके हैं। यह दूसरी बात है कि सत्ता की भूखी राजनैतिक पार्टियां उन पर अमल करने से कतराती हैं। न्यायमूर्ति नियोगी कमेटी की व अन्य रिपोर्टें तथा मीनाक्षी पुरम के सम्बन्ध में सरकारी रिपोर्टें प्रकाशित हो चुकी हैं। उनको पढ़कर धर्मान्तरण को देखा जाना चाहिए। निष्पक्ष गैर सरकारी सूत्रों ने भी राजनीति से परे हटकर इस दुष्कृत्य की ओर सर्वसाधारण और सरकार का ध्यान खींचा है। यह स्मरण रहे कि आर्य समाज संगठन कोई राजनैतिक दल नहीं है और वह सदैव राष्ट्र और समाज के हित में निष्पक्ष विचार प्रस्तुत करता रहा है, जब कि अन्य व्यक्तियों या संगठनों के स्वार्थ और नीति राजनैतिक सौदेबाजी से प्रायः जुड़ी हुई है। सुमनाक्षर जी को याद होगा कि १९२१ को काकीनाडा कांग्रेस के अधिवेशन में मौ० मुहम्मद अली ने अध्यक्ष पद से हरिजनों को आधा-आधा हिन्दू और मुसलमानों में बांटने का सुझाव दिया था। जनतन्त्र के इस लबादे में लेबनान के मुसलमान और ईसाई कट्टरपंथी वर्षों से युद्ध कर रहे हैं। उद्देश्य है संख्या वृद्धि द्वारा राजनैतिक ताकत हासिल करना। कटु सत्य है कि ६० फीसदी भारतीय मुसलमानों के वोटों के आधार पर पाकिस्तान बना। (बहराइच में पठान अब भी वहां सर्वेसर्वा हैं। वे सदा से मुस्लिमलीगी रहे हैं। धर्म-परिवर्तन करने वाले इन नटकंजरों को सभा में ताजा प्राप्त रिपोर्टों के अनुसार खेत की मजदूरी मिलनी लगी है अरबी के मदरसे व उर्दू की शिक्षा के अलावा तबलीगियों से उनको नकद सहायता सामान मिला है। रिपोर्ट से हमें यह भी पता लगा है कि आज भी हिन्दू की भांति मुसलमान भी दूर से उनके हाथों या बर्तनों में भीख डालते हैं। उनका सामाजिक दर्जा पूर्ववत मुसलमानों में नीचा है। सैयद पठान और मुगलों में उनके विवाह अब भी नहीं हो सकेंगे। (बौद्धिया, राजाश्रय और राजदण्ड से हरिजनों के अलावा अन्य हिन्दू भी) अतीत में मुसलमान बने हैं। अनेक शिक्षित व पढ़े लिखे हिन्दू और उनके ज्यादा लोकप्रिय अभिनेता और अभिनेत्रियां इस्लामी कानून का सहारा लेकर धर्मान्तरण कर रही हैं। मुसलमान चार बीवी रख सकता है।

हरिजनों के लिए आरक्षण के सम्बन्ध में चांदनी रहमानी का पत्र स्पष्ट कर देता है कि आरक्षण को बनाए रखने के लिए ही हरिजन धर्मान्तरण से रुके हुए हैं। वे इस दिशा में सोचने वाले हरिजनों द्वारा आरक्षण के समर्थन को निहित स्वार्थ मानते हैं। यह इससे भी स्पष्ट हो जाता है कि हाल ही में दक्षिण भारतीय ईसाई चर्च के एक धर्माधिकारी ने ईसाई बने हिन्दुओं व पिछड़े वर्गों के लिए संरक्षणों की मांग के लिए [illegible] प्रस्ताव किया (हिन्दू दैनिक, मद्रास ७ अप्रैल, पृष्ठ ११, [illegible])। [illegible] के [illegible] से प्राप्त रिपोर्टों से हमें पता लगा है कि वहां के १० हजार लोगों को आर्थिक सहायता और ऋणों के [illegible] का लालच देकर मुसलमान बना लिया गया है फिर उन्हीं अनुसूचित वर्गों को दी जाने वाली आर्थिक सुविधाएं, छात्रवृत्तियां, अनुदान और ऋण सरकार से उनको मिल रहे हैं। उनको मराठी के स्थान पर अरबी और उर्दू पढ़ाई जा रही है। आरक्षण सम्बन्धी कतिपय गलत नीतियों के कारण समस्त भारतीय जनता जिनमें हरिजन भी शामिल हैं उनका सर्वहारा और दुर्बल वर्ग चक्की में पिस रहा है। इस विषय में जन्मना उच्चवर्ग, जन्मना पिछड़े वर्ग और जन्मना हरिजन इनको कोई विशेषाधिकार नहीं दिया जाना चाहिए। यह अन्याय है। स्व० डा० अम्बेडकर ने इसीलिए हरिजनों को मुस्लिम या ईसाई बनने की सलाह नहीं दी। वे स्वयं जीवन के अन्तिम काल में आरक्षण के विरोधी थे। वे मानने लगे थे कि इसके लगातार चलते रहने से समाज में निरन्तर भेदभाव और स्वयं हरिजनों में आत्महीनता और अकुशलता घर कर रही है। इससे बड़ी क्या विडम्बना होगी कि जन्मना ब्राह्मण होने के कारण ही डा० अम्बेडकर की पत्नी सविता अम्बेडकर को सुरक्षित सीट से लोकसभा का चुनाव नहीं लड़ने दिया गया।

हम अपने समस्त पत्र लेखकों का ध्यान अंग्रेजी के एक राष्ट्रीय दैनिक स्टेट्समैन १३-१-८४ में प्रकाशित योजना की ओर दिलाते हैं, जिसमें मुस्लिम देशों से वार्षिक आने वाले ७०० करोड़ पैट्रो डालर को उपयोग राजनैतिक असन्तुलन धर्मान्तरण द्वारा करने की विशाल योजना प्रकाशित हुई है। इन साम्प्रदायिक इस्लामी संगठनों ने मिलकर धर्मान्तरण द्वारा बंगलादेश और पाकिस्तान के बाद एक तीसरे इस्लामी देश बनाने की योजना बनाई है। पश्चिमी जर्मनी, अमेरिका तथा विदेशों से ईसाइयत के प्रचार के नाम पर देश के सामाजिक और राजनैतिक ढांचे को पंगु बनाया जा रहा है। काश्मीर, केरल और पूर्वांचल के राज्यों से और इन इस्लामी संगठनों से देश के सामने आने वाला संकट स्पष्ट हो चुका है। यह नहीं भूलना चाहिए कि केवल हिन्दू जनसंख्या के बहुमत के कारण ही भारत आज धर्म-निरपेक्ष राष्ट्र है।

लखमीचन्द जी का विचार है कि सफाई का काम सामान्य वर्ग को भी दिया जाए। यह एक उचित मांग है। सफाई कर्मचारी आज अपने पैतृक पेशे को छोड़कर सरकारी नौकरियों और रोजगारों के कामों में बराबर आ रहे हैं जब कि सफाई कर्मचारी के रूप में अन्य वर्गों को स्थान न मिलने की शिकायतें मौजूद हैं।

आजमखां साहब का लिखना है कि इस्लाम भारत में अखलाक (सद्व्यवहार) के बल पर फैला है न कि तलवार के जोर पर अपने उस पत्र में उन्होंने मुझे आर०एस०एस० या विश्व हिन्दू परिषद् या भारतीय जनसंघ का कार्यकर्ता बताकर साम्प्रदायिक विद्वेष का दोषी बताया। मैं इनमें से किसी संगठन का कार्यकर्ता नहीं हूं। उस पत्र में आजमखां साहब ने कहा है 'तुम जैसे कमीनों पर गुस्सा आता है।" क्या यही अखलाक उनको इस्लाम से मिला है? मुरादाबाद का असालतपुरा मुहल्ला जहां के वे निवासी हैं चाकूबाजी और छुरेबाजी के लिए अब भी मशहूर है। उनका कहना है कि अगर तुम्हारे धर्म में सचमुच अखलाक की है, तो किसी मुसलमान को धर्म तबदील करने को कहिए। क्या जवाब देगा? मेरे सामने श्रीमती डा० जाहिदा ऐजाज ऐराकी (लखनऊ विश्वविद्यालय), डा० एहसान अखलाक, अलीगढ़ मुस्लिम यूनीवर्सिटी (नवाब छतारी के पौत्र), अरबी के आलिम फाजिल डा० निरंजीवन जैसे अनेक उदाहरण हैं, जिन्होंने अपने पूर्वजों का धर्म स्वीकार किया है। रहमानी जी साहब ने सच ही लिखा है कि कोई भी विचारशील देशभक्त धर्मनिरपेक्ष मुसलमान किसी दूसरे धर्म के अनुयायी को मुसलमान बनाना नहीं चाहेगा। विचारशील मुसलमान तो रामकृष्ण के जन्म स्थानों और मथुरा और काशी में मन्दिरों को गिराकर मस्जिदों को बनाने जैसे कामों को अच्छी निगाह से नहीं देखते।

बहराइच में केवल नट और कंजर वर्गों के लोग ही मुसलमान बने हैं। इसी दृष्टि से उनका उल्लेख किया गया है, किसी अपमान के रूप में नहीं। मुस्लिम या उनके पक्षधर हरिजनों को राष्ट्रद्रोही कैसे नहीं कहा। यदि हरिजनों के [illegible] बनने में भी राजपालसिंह व भाई सुमनाक्षर [illegible] होते हैं, तो वह हरिजनों की सबसे बड़ी [illegible] कर रहे हैं। आजकल सब स्थानों में [illegible] की जाति की [illegible] लोगों पर [illegible] को पता है। आर्य समाज पण्डितों में जन्मना हरिजन भी सम्मिलित हैं। इस्लाम से हिन्दू धर्म में आए स्व० पण्डित देवदत्त (बरेली) और स्व० पं० [illegible] एम. ए. (हरदोई) आजीवन शुद्धीकरण एवं प्रचार में लगे रहे।

— [illegible]

सम्पादकीय

सिखपृथकतावाद की जड़ें

श्री योगेन्द्र वधवा दिल्ली लिखते हैं। (हिन्दु० टाइम्स ४-४-८५)

"निस्सन्देह सिख वर्ग ने अनेक स्वतन्त्रता सेनानी पैदा किए परन्तु इसके साथ ही हम इस तथ्य की उपेक्षा नहीं कर सकते कि इस वर्ग का एक बड़ा भाग ब्रिटिश गवर्नमेंट की 'फूट डालो राज करो' की नीति का शिकार भी हुआ जो साम्प्रदायिक वैमनस्य को प्रोत्साहित करती थी।"

ब्रिटिश इण्डिया आफिस ने सिखों के ग्रन्थों के अध्ययन की योजना बनाई थी और यह कार्य विदेशी विद्वानों के सुपुर्द किया गया था जिसकी पहल १८६९ में अर्नेस्ट ट्रम्प नामक विद्वान ने की थी। इन विद्वानों द्वारा प्रस्तुत अधिकांश दस्तावेजों में बड़ी चतुराई से सिख मत के कुछेक शास्त्रों की गलत व्याख्या की गई थी और कुछेक सिद्धान्तों और मन्तव्योंके मनमाने ऐसे अर्थ किए थे जिससे कि सिखों में संघभेद पैदा हो सके जो कि उन विद्वानों का मुख्य लक्ष्य था। जर्मन विद्वान डा० ट्रम्प ने जो व्याख्या प्रस्तुत की थी वह आयोजकों की आशानुरूप न थी। मि०ट्रम्प का निष्कर्ष था कि 'नानक देव पूर्णतः हिन्दू थे' उनका यह भी निष्कर्ष था कि गुरु नानक देव जी ने हिन्दू अध्यात्म वाद की शिक्षाओं की तथा वेदों और पुराणों के प्रभुत्व की निन्दा की थी। (ट्रम्प का आदि ग्रन्थ, साहिब का अनुवाद पृ० सी-ऐल० सी० ७)।

फिर भी अपने मुवक्किलों को प्रसन्न करने के लिए इन जर्मन विद्वान ने कह दिया कि सिखों की बाहरी विशेषताएं (चिन्ह) उन्हें हिन्दुओं से पृथक करती हैं और पहिचान के इन चिन्हों के लुप्त हो जाने पर सिख पुनः हिन्दू दायरे में पहुंच जायेंगे। इस तरह हिन्दू धर्म ने सिखों के लिए एक खतरे का रूप ले लिया था। सिख पंथ खतरे में है यह नारा अनेकों ब्रिटिश विद्वानों और प्रशासकों का बन गया। श्री एम-ए० मकालिफ ने जो एक सीनियर सिविल सर्वेन्ट थे, अपनी पुस्तक 'सिख धर्म' में जो सरकारी सहायता से १९०१ में छपी थी शरारत से भरे इस नारे की डुगडुगी बजाने में हद कर दी थी। इस पुस्तक में श्री ट्रम्प की कड़ी आलोचना की गई थी जिन्होंने गुरु नानक देव को पक्का हिन्दू सिद्ध किया था।

मकालिफ ने यह आरोप भी लगाया कि मि० ट्रम्प ने सिख गुरुओं की निन्दा की है। वस्तुतः मकालिफ का यह महान् ग्रन्थ हिन्दुओं और सिखों में भेद-भाव बढ़ाने की दिशा में एक बहुत बड़ा प्रयास था।

अंग्रेज हिन्दुओं और सिखों में फूट डालने का उपक्रम कर रहे थे। उन्होंने सिखों के लिए पृथक निर्वाचन क्षेत्र नियत किए, उन्हें मुफ्त भूमि खंड पुरस्कार रूप दिए गए और सरकारी नौकरियों में उन्हें वरीयता प्रदान की गई। विदेशी शासकों ने सिख सैनिकों और सरकारी कर्मचारियों के लिए खालसा चिन्हों (पंच ककार) का धारण करना अनिवार्य किया। सहज धारी (दाढ़ी, मूछ रहित) सिख दूसरे दर्जे के सिख माने जाने लगे।

गुरु गोविन्द सिंह जी ने 'निर्मला प्रचारक संघ' के नाम से सिख मिशनरियों के एक संस्थान की स्थापना की थी और वे लोग संस्कृत भाषा और वेदों के अध्ययन के लिए काशी भेजे गए थे। ये निर्मले सिख हिन्दुओं और सिखों को मिलाने वाली बड़ी कड़ियां थीं। अंग्रेजों ने इन्हें अलग-थलग रहने के लिए प्रोत्साहित किया। इसी प्रकार अंग्रेजी प्रशासन ने स्वदेशी के प्रचार का खंडन और १८७२ की मलेर कोटला की घटना के बाद राष्ट्र वादी नामधारी सिखों को गैर सिख घोषित करने के लिए अकाल तख्त के अधिकार का प्रयोग किया।"

सिख धर्म ग्रन्थों के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि दसों गुरु विभाजक धार्मिक मत-भेदों को पसन्द नहीं करते थे। अन्य समस्त भारतीय सन्तों के सदृश वेदों से आध्यात्मिक प्रेरणाएं लेते हुए उन्होंने असाम्प्रदायिक रुख अपनाया था। यही दृष्टिकोण पाश्चात्य विद्वानों का केन्द्र बिन्दु था और संघ-भेद पैदा करने के लिए उन्होंने इसकी मनमाने ढंग से गलत व्याख्या की। साथ ही हिन्दू धर्म और सिख पन्थ की मौलिक एकता की अवहेलना करते हुए बाहरी क्रिया-कलापों की विभिन्नताओं को बढ़ा-चढ़ा कर प्रस्तुत किया। निर्भय समाज सुधारकों के रूप में गुरुओं ने अज्ञान और अन्धविश्वासों में डूबी हुई जनता का उद्धार किया। गुरु लोग भारतीय संस्कृति के रक्षक भी रहे।

विश्व बन्धुत्व के उच्च आदर्शों के विपरीत आज हम धार्मिक कट्टरता, थोथे क्रियाकलाप पूजा अनुष्ठान दसों गुरुओं की उदात्त शिक्षाओं को पृष्ठ भूमि में पड़ते देखते हैं।

गुरु गोविन्द सिंह जी ने कहा था "राहत प्यारी मोको सिख प्यारा नाहीं"। अर्थात् मुझे जो प्यारा है वह राहत नैतिक सदाचार-मय जीवन न कि मात्र सिख होना।" क्या हम इस महान् उक्ति पर विचार करते हैं?" आत्म निरीक्षण का और गुरुओं के प्रेरणादायक प्रेम के सन्देश पर ध्यान देने का यही समय है जिसकी तमाम मानव जाति में प्रचार की आज महती आवश्यकता है।

सिख मामला और अमेरिकी प्रोफेसर

अगर प्रोफेसर लियो रोज खालिस्तानियों की धज्जियां नहीं उड़ाते तो भारत को बदनाम करने की एक और कोशिश सफल हो जाती। मानव अधिकारों की रक्षा के नाम पर गंगासिंह ढिल्लो एण्ड कम्पनी ने कुछ धन्धेबाजों से सांठगांठों की और अमेरिकी कांफ्रेंस के परिसर में एक मजमा खड़ा कर लिया। इस मजमे में भारत पर क्या-क्या तोहमतें नहीं लगाई गईं। राल्फसिंह ने कह दिया कि पंजाब में सारे मर्दों को कत्ल कर दिया गया है और अब अगले २० साल तक वहां कोई जवान आदमी देखने तक को नहीं मिलेगा। ऐसी बातें मजाक का विषय बन जाना चाहिए। लेकिन एक तो भारत के बारे में अमेरिकी लोगों को ज्यादा पता नहीं है और दूसरे, इस तरह के जुल्म क्योंकि वियतनाम, कम्पूचिया, ईरान और लातीनी अमेरिका में होते रहे हैं, इसलिए इस बात की पूरी आशंका रहती है कि वे राल्फ सिंह जैसे सिरफिरो की बातों पर एतबार कर लें। यों भी बार-बार दोहराए जाने पर झूठ भी सच लगने लगता है। ऐसी हालत में भारतीय दूतावास इस मजमे का विरोध नहीं करता तो क्या करता? यह मजमा तो अभी शुरुआत भर है। इसके बहाने खालिस्तानी चाहते हैं कि जून में राजीव गांधी की यात्रा को चोपट कर दिया जाए। षड़यन्त्र यह है कि राजीव के अमेरिका पहुंचने के पहले या उनके वहां रहते ही सिखों के सवाल पर वाशिंगटन में संसदीय सुनवाइयां करा दी जाएं। 'सुनवाइयों' का प्रचार अमेरिका में जमकर होता है और उनमें बोलने की छूट का इस्तेमाल हर गवाह अपने ढंग से करता है।

अच्छा हुआ कि शुरुआती मजमे में ही विदेश विभाग की ओर से आए प्रो० लियो रोज ने गुब्बारे में पिन चुभो दी। प्रो० रोज प्रसिद्ध भारतीय हैं और प्रायः हर साल भारत आते हैं। उन्होंने दो-टूक शब्दों में कहा है कि भारत के सिखों की शिकायतें बोगस है। अन्य अल्पसंख्यकों की तुलना में सिख समाज उन्नत और समृद्ध हैं और जब तक सिख भारत के बहुसंख्यकों के साथ तालमेल नहीं करेंगे, वे आराम से नहीं रह सकेंगे। प्रो० रोज ने नवम्बर के दंगों के बारे में थोड़ी गैर-जिम्मेदाराना बात जरूर कह दी है लेकिन उन्हें शायद खुशी होगी कि भारत सरकार ने जांच बैठा दी है। प्रो० रोज ने विदेशों में बसे सिखों को कहा है कि वे खुद तो वहां मजे मार रहे हैं,

सामायिक चर्चा—

गोदुग्ध विष के प्रभाव से रहित

अमेरिका के विश्व विख्यात विष विज्ञान शास्त्री डा० एस० ए० पीपल्स ने तथा अन्य अनुसंधान कर्त्ताओं ने यह मत व्यक्त किया है कि गऊ के देह में कोई ऐसी प्राकृतिक विशेषता है कि वह जो दूध देती है उसमें संखिए का प्रभाव नहीं रहता। पौधों को खाने वाले कीड़ों को मारने के लिए कृमिहर औषधियों में संखिया मुख्य रूप से पड़ा होता है।

अनेक अनुसंधानों से पता चला है कि उक्त कृमिहर चारे को खाकर भी गऊ जो दूध देती है उसमें संखिए का कोई प्रभाव नहीं पाया जाता।

अन्य स्तनपायी पशुओं एवं मानव माताओं में यह देखा गया है कि उन्हें जो थोड़ी मात्रा में भी संखिया मिलता रहता है वह उनके शरीरों में जमा होता रहताहै और कालान्तर में उसके कारण उनकी मौत हो जाती है।

न्यूयार्क स्थित विज्ञान एकादमी की एक बैठक में भी इस बात की पुष्टि की गई थी कि गाय की देह में कोई ऐसी विशेषता है कि वह संखिए का विष समाप्त कर देती है। आश्चर्य की बात यह है कि गऊ के शरीर की अन्य मांस पेशियों आदि में संखिए के चिह्न पाए जाते हैं परन्तु दूध में संखिए का एक कण भी नहीं होता।

गोहत्या बन्द

दिल्ली के बाद शाह शाह आलम और उदयपुर के महाराणा भीमसिंह के मध्य सन् १७०० में एक राजनीतिक संधि हुई थी। उस सन्धि की अनेक धाराओं में दूसरी धारा यह थी कि—

उक्त घटना का उल्लेख करते हुए कर्नल जेम्स टाड लिखते हैं:—

"सन् १८१७-१८ में राजपूतों के साथ ब्रिटिश गवर्नमेन्ट की जो सन्धि हुई थी उसमें सब प्रस्तावों के बीच में गोहत्या निवारण का ही मुख्य प्रस्ताव था। (टाडराज स्थान)

भोपाल के दिवंगत अफसर को पुरस्कार की समुचित सिफारिश

भोपाल गैस कांड की न्यायिक जांच कर रहे न्यायमूर्ति श्रीनिपुण कुमार सिंह ने भोपाल के रेलवे स्टेशन अधीक्षक स्व० हरीश धुर्वे को मरणोपरान्त शौर्य पुरस्कार प्रदान करने की सिफारिश की है।

उन्होंने यह सुझाव भी दिया है कि गैस रिसन के तत्काल बाद बेखबर रेल यात्रियों के प्राण बचाने के लिये अपने प्राणों पर खेल जाने वाले इस अधिकारी की स्मृति में रेलवे क्षेत्र में एक स्मारक स्थापित किया जाए।

न्यायमूर्ति श्री सिंह ने कहा है कि ऐसा स्मारक रेलवे कर्मचारियों और खासतौर से स्व० धुर्वे जैसे प्रशासन के महत्वपूर्ण व्यक्तियों को सतत प्रेरणा प्रदान करता रहेगा।

न्यायमूर्ति श्रीसिंह ने कहा है कि रेलवे के कुछ कर्मचारियों द्वारा उन्हें बताया गया है कि स्वर्गीय धुर्वे ने दो दिसम्बर की रात को गैस त्रासदी के समय पड़ोसी स्टेशनों को टेलीफोन करके यात्री गाड़ियां रुकवाई और इस प्रयास में कर्त्तव्य के प्रति उच्च कोटि के समर्पण और अपूर्व साहस का परिचय देते हुए अपने प्राण गंवा दिए। लेकिन उन्होंने यात्रियों को बचा लिया।

लेकिन उनकी कुचालों के नतीजे भारत में रहने वाले सिखों को भुगतने पड़ रहे हैं। जो कुछ प्रो० रोज ने कहा है और भारत की जो मैदानी सच्चाइयां हैं, उम्मीद है कि उनके प्रकाश में अमेरिकी सरकार अब इस मामले पर संसदीय सुनवाई आयोजित नहीं होने देगी। (नव० १८-४-८६)

बधाई

११ अप्रैल १६८५ को हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग के ४२ वें अधिवेशन में, जो गाजियाबाद में हुआ था सुप्रसिद्ध आर्य साहित्यकार श्री क्षेमचन्द्र जी सुमन, श्री पं० उदयवीर जी शास्त्री एवं श्री पं० युधिष्ठिर मीमांसकका उनकी हिन्दी की सेवाओं के आदर स्वरूप सार्वजनिक अभिनन्दन किया गया और उन्हें सम्मेलन की सर्वोच्च मानदउपाधि 'साहित्य वाचस्पति' प्रदान की गई।

उत्तर प्रदेश प्रशासन के मन्त्री सुप्रसिद्ध हिन्दी सेवी तथा उसके हितों के रक्षक श्री वासुदेवसिंह जी ने इन महानुभावों की हिन्दी सेवाओं की भूरि-भूरि प्रशंसा की। इस सम्मेलन का उदघाटन पर्यावरण राज्य मन्त्री श्री वीरसेन ने किया था। इस अभिनन्दन के लिए हम अपनी तथा सार्वदेशिक परिवार की ओर से उन्हें हार्दिक बधाई देते हैं। प्रसन्नता है कि इन महानुभावों के माध्यम से आर्य समाज की राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रति की गई मूर्धन्य सेवाओं को एक बार पुन: मान्यता दी गई और एक प्रकार से आर्य समाज का ही अभिनन्दन किया गया।

प्रेरक प्रसंग

—महात्मा हंसराज जी

महात्मा हंसराज जी दयानन्द निर्वाण अर्ध शताब्दी अजमेर (१६३३) में आयोजित सार्वदेशिक आर्य महा सम्मेलन के मन्च से भाषण दे रहे थे। मंच पर बैठे कुछेक महात्मा और संन्यासी आपस में यह कानाफूंसी कर रहे थे कि लाला हंसराज को कहा जाय कि वह संन्यास की दीक्षा लें। उन्होंने अपनी यह बात श्री स्वामी सर्वधानन्द जी को कही कि वे हंसराज जी को यह परामर्श दें। स्वामी जी ने उनके प्रस्ताव को अस्वीकार करते हुए कहा "जिस व्यक्ति ने संन्यासियों जैसा और कुछेक अवस्थाओं में उससे भी बढ़कर त्याग किया है और त्याग का जीवन बिता रहा है उससे संन्यास ग्रहण करने के लिए कहना उसके त्याग भाव का अपमान करना है।"

(२)

जिस दिन महात्मा हंसराज जी महान प्रकाश में विलीन हुए थे उस दिन पंजाब की विधान सभा की बैठक चल रही थी। अंग्रेज गवर्नर ने फोन पर अध्यक्ष महोदयको अधिवेशन स्थगित करने का निर्देश दिया। जब उन्होंने सदन को सूचना दी तो कई मुस्लिम लीगी सदस्यों ने सदन के स्थगन का जोरदार विरोध किया। सदस्यों के इस रुख से मुख्य मन्त्री सर सिकन्दर हयात खां को क्षोभ और रोष हुआ। उन्होंने कहा "माननीय सदस्यों को ज्ञात होना चाहिए कि उनका मुख्य मन्त्री महात्मा हंसराज जी का शिष्य है जिनका आधुनिक पंजाब के निर्माण में बड़ा योगदान रहा है, और वह उसका ऋणी है अतः हाउस को स्थगित करना ही होगा।"

इस पर विरोधी सदस्य एकदम चुप हो गए। अध्यक्ष शाहबुद्दीन जी ने स्थगन की घोषणा करते हुए यह भी कहा कि आपका स्पीकर भी महात्मा हंसराज जी का शागिर्द रहा है।

उल्लेखनीय है कि सर सिकन्दर को कालेज में नियमित रूप से दाखिल किए बिना उनकी प्रार्थना पर डी. ए. वी. कालेज में पढ़ाई और पुस्तकों आदि की व्यवस्था महात्मा हंसराज जी ने करके उनकी सहायता की थी।

—रघुनाथ प्रसाद पाठक

आचार्य की आवश्यकता

कन्या गुरुकुल मणियार तहसील नारनौल जिला महेन्द्रगढ़ (हरियाणा) के लिए प्राज्ञ, विशारद शास्त्री परीक्षाओं के सफल शिक्षण के लिए एक सुयोग्य आचार्य की आवश्यकता है। अपनी शैक्षिक योग्यता एवं अनुभव आदि के उल्लेख पूर्वक निम्नलिखित पते पर आवेदन अथवा व्यक्तिगत सम्पर्क करें। ५००) रुपये मासिक दक्षिणा के अतिरिक्त भोजन, आवास आदि की सब सुविधाएं प्रदान की जाती हैं।

कलावती आचार्य, कन्या गुरुकुल मणियार
तहसील नारनौल, जिला महेन्द्रगढ़ (हरियाणा)

महर्षि दयानन्द का वार्त्तालाप और उपदेश

काशी शास्त्रार्थ सार

विशुद्धानन्द जी—बृहदारण्यक उपनिषद में पुराण शब्द आया है। यह आपको प्रमाण है कि नहीं? यदि प्रमाण है तो बताओ वहां पुराण शब्द किसका विशेषण है?

स्वामी जी—बृहदारण्यक का पुराण शब्द मुझे मान्य है। परन्तु यह किसका विशेषण है यह पुस्तक दिखाइए बता दूंगा।

तब जो पुस्तक लाकर स्वामी जी को दिखाने लगे वह बृहदारण्यक नहीं थी किन्तु गृह्य सूत्र का एक ग्रन्थ था। माधवाचार्य ने उस ग्रन्थ का पन्ना पकड़ कर कहा इसमें पुराण शब्द किसका विशेषण है?

स्वामी जी—पाठ तो पढ़िए।

माधवाचार्य जी ने ब्राह्मणानीति-हास स पुराणानीति यह पढ़कर सुनाया।

स्वामी जी—यहां पुराण शब्द ब्राह्मण शब्द का विशेषण है, इसका तात्पर्य यह है कि ब्राह्मण पुरातन अर्थात् सनातन है।

बाल शास्त्री—क्या कोई ब्राह्मण नूतन भी है?

स्वामी जी—ब्राह्मण नवीन तो नहीं है परन्तु किसी को सन्देह करने का अवसर ही न मिले इसलिए यह विशेषण रखा गया है।

विशुद्धानन्द जी—इस पाठ में ब्राह्मण और पुराण इन दो शब्दों के बीच इतिहास शब्द व्यवधान का पड़ा है इसलिए पुराण शब्द विशेषण नहीं हो सकता।

स्वामी जी—यह कोई नियम नहीं है कि व्यवधान होने पर विशेषण न हो सके। देखिए भगवद् गीता के 'अजो नित्यः शाश्वतोऽयं पुराणो न हन्यते हन्यमाने शरीरे' इस श्लोक में विशेषण कितना दूर पड़ा है।

विशुद्धानन्द जी—'इतिहास पुराणानि' इस पाठ में यदि इतिहास शब्द पुराण शब्द का विशेषण नहीं है तो क्या इससे यहां नवीन इतिहास ग्रहण करोगे?

स्वामी जी—इतिहास पुराणः पंचमो वेदानां वेदः छान्दोग्य के इस पाठ में पुराण शब्द इतिहास शब्द का विशेषण है। इस पर वामनाचार्य आदि अनेक पंडित कहने लगे कि यह पाठ उपनिषद में नहीं है। स्वामी जी ने उन्हें बल पूर्वक कहा 'मैं लिखे देता हूं और आप भी लिख दीजिए कि यदि ऐसा पाठ उपनिषद में निकल आए तो आपकी हार समझी जाए और न निकले तो आपकी जय।"

यह सुनकर सब के मुख बन्द हो गए और कितनी ही देर तक सारे सभा स्थल में सन्नाटा छाया रहा। जब देर तक किसी ने कोई प्रश्न न किया तो स्वामी जी ने ललकार कर कहा "आप में से जो व्याकरण जानते हैं वे बताएं कि व्याकरण में कहीं कल्प संज्ञा की गई है अथवा नहीं?

बाल शास्त्री—संज्ञा तो नहीं की है परन्तु एक स्थल पर भाष्यकार ने उपहास अवश्य किया है।

महाराज का हृदय रो पड़ा

स्वामी जी महाराज एक दिन काशी में गंगा तट पर बैठे प्रकृति के स्वाभाविक सौन्दर्य को निहार रहे थे। उसी समय एक स्त्री मरा हुआ बच्चा हाथों पर उठाए गंगा में प्रविष्ट हुई। कुछ गहरे जल में आकर उसने बच्चे के शरीर पर लपेटा हुआ कपड़ा उतार लिया और बालक के निर्जीव कलेवर को 'हाय हाय के आर्तनाद के साथ पानी में प्रवाहित कर दिया।)

स्वामी जी उस समय अपने हृदय को थाम न सके। जब उन्होंने देखा कि वह स्त्री बच्चे के शरीर पर लपेटे हुए कपड़े को धोकर हवा में सुखाती और रोती घर को जा रही है तो उन्होंने दुःख सागर में निमग्न होकर मन ही मन कहा कि भारत देश इतना निर्धन इतना कंगाल है कि माता अपने कलेजे के टुकड़े को तो नदी में बहा चली है परन्तु उससे वस्त्र इसलिए नहीं बहाया गया कि उसका मिलना कठिन है इसके बिना उसका निर्वाह न हो सकेगा। इससे बढ़कर देश की दरिद्रता का उदाहरण मिलना कठिन है।

उस समय महाराज ने प्रण किया कि कुछ काल तक मैं इन्हीं की भाषा में प्रचार कर इनके दुःख दूर करने के साधन उपस्थित करूंगा।

आर्य समाज और हैदराबाद के लौह-पुरुष--पं. नरेन्द्र जी

—बाबूलाल अग्रवाल

आर्य समाज का कार्य हो या जनजीवन का कार्य, पण्डित जी बिना कार्य के रह नहीं सकते थे, सम्पूर्ण समय में अपनी चिन्ता छोड़कर देश-जाति धर्म के लिए समर्पण-भाव ही उनका मुख्य उद्देश्य था। जो व्यक्ति सारे जीवन भर कार्य व्यस्त रहा हो वह अन्त में शांत कैसे रह सकता है? आर्यसमाज की शताब्दी, वह भी अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर बम्बई के बजाय दिल्ली में होने का निश्चय जैसे ही सुना, बीमारी की चिन्ता छोड़कर दिल्ली की ओर प्रस्थान कर दिया। दिन भर की दौड़-धूप से थकान का होना स्वाभाविक था, भक्त व सभा के अधिकारी विशेष आग्रह करते रहे कि आप एक जगह बैठकर आदेश निर्देश दें पर वह भला कैसे शांत बैठते। सरल उत्तर था कि अब जीवन के अन्त में चुप कैसे बैठूं। (जब सारा जीवन ही कर्मठता की निशानी रही।) बस यह भाग-दौड़ उन्हें आतुरालय तक ले जाने के लिए बाध्य हुई और अन्तिम परिणाम तक पहुंचकर ही दम लिया।

आज पण्डित जी हमारे मध्य नहीं हैं पर उनके क्रिया-कलाप तथा सदा देने वाला मार्ग-दर्शन भविष्य में भी पथ-प्रदर्शक बना रहेगा। उनकी आत्मा की शांति हेतु उनके कार्यों को गति देते रहें यही उनका स्मरण पृष्ठ रहेगा।

१९३९ में समाज सुधार तथा हिन्दुओं के धार्मिक अधिकारों पर से प्रतिबन्ध उठाने के लिए आर्य समाज का ऐतिहासिक सत्याग्रह हुआ। देश के कोने कोने से आर्य भाई सत्याग्रह करने आए तथा सरकार के भीषण अत्याचारी आक्रमणों के आगे भी सत्याग्रह रुका नहीं। निजाम शासन आर्यसमाज की सब शर्तों पर राजी था परन्तु पं० नरेन्द्र जी को छोड़ना नहीं चाहता था। घनश्याम सिंह जी इस बात पर अड़े हुए थे कि यदि सरकार पं० नरेन्द्र जी को छोड़ना नहीं चाहती तो समझौता हो नहीं सकता। सर अकबर हैदरी स्वयं पं० नरेन्द्र जी से मिलने मनानूर गये। इसके बाद ही उनको रिहा किया गया। पं० नरेन्द्र जी से निजाम शासन कितना भयभीत था इस घटना से अनुमान हो सकता है।

उस समय जब यहां सांप्रदायिक दंगे हुए, २१ आर्य समाजियों को पकड़ कर उन पर मुकद्दमा चलाया गया। इसमें ठाकुर उमराव सिंह जी तथा पं० सोहनलाल जी भी थे पं० नरेन्द्र जी को इनकी ओर से गवाही देने हाई-कोर्ट में उपस्थित होना था पर चार दिन पहले ही उन्हें मनानूर में नजरबंद कर दिया गया। हैदराबाद सरकार ने चंचलगुडा जेल में लाकर एक विशेष अदालत में पण्डित जी का बयान लिया। धूलपेट निजाम के शासनकाल में विद्रोहियों का गढ़ समझा जाता था और इसमें सन्देह नहीं कि वीर राजपूतों, लोधक्षत्रियों की इसी बस्ती ने स्वतन्त्रता संग्राम के समय वीरता पूर्वक अत्याचारों का मुकाबला किया। इन्हें घोर आपत्तियां झेलनी पड़ी। आर्य समाज

(शेष पृष्ठ ९ पर)

शिक्षाएं ग्रन्थों से

यदि कोई धनवान निर्धन हो जाए तो कैसे रहे?

(गृहस्थ लोग कभी प्रथम पुष्कल धनी होकर पश्चात दरिद्र हो जाय उससे (वह) अपनी आत्मा का अपमान न करे कि 'हाय, हम (तो) निर्धन हो गए इत्यादि विलाप भी न करें किन्तु मृत्यु पर्यन्त लक्ष्मी की उन्नति में पुरुषार्थ किया करें और लक्ष्मी को दुर्लभ न समझें।"

(संस्कार विधि गृहस्थ पृ० ८०)

सं. क.—रघुनाथ प्रसाद पाठक

पंजाब समस्या और अकाली दल का स्टैंड

संत लौंगोवाल से कुलदीप नैयर की लम्बी भेंटवार्ता

(३)

प्र० : क्या आपको विशेष विमान द्वारा ले जाया गया ?

उ० : हां।

प्र० : क्या उन तीन दिनों में दरबार साहब परिसर छोड़ने से पहले आपने भिंडरावाले से भेंट की थी ?

उ० : हममें से कोई भी भिंडरावाले से नहीं मिला। क्योंकि चारों ओर भारी फायरिंग हो रही थी। यदि कोई बाहर जरा भी सिर निकालता तो वही गोली का निशाना बन जाता।

प्र० : इन्टरव्यू के दौरान आपने कहा कि आपसे किसी अधिकारी ने यह नहीं कहा कि वे किसी को गिरफ्तार करना चाहते हैं। मान लीजिए कि सरकार ने आपसे भिंडरावाला को गिरफ्तार कराने में सहायता देने को कहा होता तो क्या आप ऐसा करते ?

उ० : यदि ऐसा कुछ होता तो हरेक को यह सोचना पड़ता कि उसे ऐसी स्थिति में क्या करना चाहिए ? हम यह सोचते कि हमारे हित में उचित बात क्या है ? शायद हम शांति बनाए रखते हुए स्वयं को शहादत के लिए पेश कर देते।

प्र० : मान लीजिए सरकार ने भिंडरावाले को गिरफ्तारी देने के लिए कहा होता ?

उ० : यह फैसला करना सन्त भिंडरावाले का काम था।

प्र० : क्या भिंडरावाला और आप में सैनिक कार्रवाई से पूर्व के सप्ताहों में कोई सम्पर्क बना हुआ था ?

उ० : हमारे सम्बन्ध इस प्रकार के थे कि हममे बहुत कम बात होती थी।

प्र० : कहा जाता है कि आप दोनों में बोल चाल नहीं थी ? क्या यह बात सही है ?

उ० : छः माह से हमारे मध्य कोई बोलचाल नहीं थी। सन्त भिंडरावाले ने ६ माह तक मुझसे कोई बातचीत नहीं की। मुझे नहीं पता कि इसका कारण क्या था ? उन्हें किसी ने कुछ कहा था और उन्होंने मुझसे न बोलने की कसम खा ली थी। हालांकि वे अकाली दल के कार्यक्रमों का पालन करते रहे। हम ग्रामीणों में यह आम बात है कि हम नाराजी में बोलचाल बन्द कर देते हैं। मैंने लोगों को उनके पास भेजा कि आखिर हमारी लड़ाई किस बात पर है। हम तो सिखों के हितों पंजाब के अधिकारों के लिए लड़ रहे हैं। इसके अलावा हम दोनों में कोई मतभेद नहीं है। उनका जवाब था कि वह इस मामले में कुछ नहीं कर सकते क्योंकि उन्होंने मुझसे बात न करने की कसम खाई हुई है।

प्र० : उन्होंने यह कसम क्यों खाई थी ?

उ० : किसी ने उनके मन में मेरे प्रति विष घोल दिया था।

प्र० : क्या आपको इस बात से आश्चर्य नहीं हुआ था कि अकाल तख्त में इतनी बड़ी संख्या में हथियार थे और उन्हें इतने लम्बे समय से वहां इकट्ठा किया जा रहा था ?

उ० : हमारा यह विश्वास है कि इतने अधिक हथियार उस स्थान में नहीं लाए जा सकते। वहां तीन बैरियर थे। एक गेट में, एक जलियांवाला बाग में तथा एक उससे पहले। इसके अतिरिक्त उस मार्ग में और भी जांच चौकियां थी। प्रत्येक व्यक्ति की वहां तलाशी होती थी चाहे वह मर्द हो या औरत। इसी प्रकार सूटकेसों, सामान तथा वाहन की भी तलाशी होती थी। यह क्रम एक साल से जारी था। सरकार ने एक भी यात्री को हथियारों के साथ क्यों नहीं पकड़ा अगर सरकार ने एक भी व्यक्ति को हथियार लाते हुए नहीं पकड़ा तो फिर यह बात कैसे कह सकते हैं कि हथियार परिसर के अन्दर थे। असल में हमें बदनाम करने के लिए ही सरकार सेना के हथियार वहां लाई तथा उसने मन्दिर परिसर में ये हथियार रखवाए।

प्र० : लेकिन वास्तविकता यह है कि अकाल तख्त से भारी फायरिंग हुई और कई सैनिक उससे मारे गए ?

उ० : मैं उन लोगों की बात कह सकता हूं जो लोग मेरे सामने मरे, उनके पास कोई भी हथियार नहीं था। उन्होंने तो शांतिपूर्वक अपनी गिरफ्तारियां दी थीं।

प्र० : आप तो इस ओर थे। मैं तो अकाल तख्त की बात कर रहा हूं। वहां आप उपस्थित नहीं थे।

उ० : उस तरफ भी जो मरे वे निर्दोष थे तथा वे वहां तीर्थ यात्रा के लिए आए थे तथा वहां फंस गए थे।

प्र० : यह सही है कि कुछ तीर्थ यात्री भी थे लेकिन वहां अन्य लोगों ने अकाल तख्त मे किले बन्दी नहीं कर रखी थी और वे बंकरों से हमला नहीं कर रहे थे ?

उ० : सरकार ने ही गोली बारी के बाद शवों को उठवाया। हमने नहीं फिर हम कैसे कह सकते हैं कि वे शव अकाल तख्त से ही उठाए गए।

प्र० : कम से कम ४०० सैनिक मारे गए ?

उ० : जब इतनी बड़ी गोला बारी हो रही हो तो कौन जानता है कि किसकी गोली से कौन मरा।

प्र० : क्या आप यह समझते हैं कि हथियारों को गुरुद्वारों में रखा जाए ?

उ० : हां, हथियारों को गुरुद्वारो मे रखा जाना चाहिए। हम उनकी पूजा करते हैं। हम अकाल तख्त में, केसगढ़ साहिब में हथियारों की पूजा करते हैं। यहां तक कि इंग्लैंड के गुरुद्वारों में भी हम यह पूजा करते हैं।

प्र० : मैं कृपाण व तलवार की बात नहीं कर रहा हूं, मैं तो स्टेनगन जैसे हथियारों की बात कर रहा हूं ?

उ० : पुराने जमाने में तलवारें होती थीं। अब समय बदल गया है तथा हथियारों का भी आधुनिकीकरण हो गया है। हथियार रखने में कोई बुराई नहीं है उनका दुरुपयोग बुरा है।

प्र० : गुरुद्वारों में हथियार रखने की अनुमति दिए जाने के उपरांत क्या आप यह अनुभव नहीं करते कि मन्दिरों और मस्जिदों को भी इसी प्रकार की अनुमति दी जाए।

उ० : स्वतन्त्रता के बाद १९४७ में सरकार बनी। १९८२-८३ तक गुरुद्वारों में हथियार रखने पर प्रतिबन्ध क्यों नहीं लगा ? सरकार ने यह नाटक जान-बूझकर खेला। लोग उस समय भी हथियार रखते थे, वे उनकी पूजा करते थे। सिख उनकी पूजा करते थे। वे एक समय में पांच हथियार रिवाल्वर, बन्दूक इत्यादि लेकर चलते थे। कुछ तो सवा मन का भाला लेकर चलते थे।

प्र० : निश्चय ही ये बातें काफी असंगत सी हैं, जबकि आपको यह पता है कि दरबार साहिब परिसर से किस प्रकार के हथियार मिले हैं, तथा वे जितनी संख्या में मिले हैं, उनकी तुलना में आपके बताए हथियारों की बात तर्क संगत प्रतीत नहीं होती है ?

उ० : सन्त भिंडरावाले व उनके अंग रक्षक वर्षों से यात्रा करते थे तथा अपने साथ अपने लाइसेंसी हथियार भी ले जाते थे। अपने इन्हीं हथियारों के साथ वे दिल्ली भी गए थे और वहां उन्होंने प्रार्थना भी की। अनेक लोग वहां उनके प्रति आदर प्रकट करने के लिए भी आए। ज्ञानी जैलसिंह ने भी संभवतः एक भोग रखवाया था, हालांकि मैं इस बारे में निश्चित रूप से नहीं कह सकता। बूटा सिंह भी उनके प्रति आदर प्रकट करते थे पर गुप्त रूप से। सन्त भिंडरावाले अपने इन्हीं हथियारों व अन्य वस्तुओं को भारत के विभिन्न भागों में अपने साथ ले गए थे। उस समय वे अवैध क्यों नहीं थे और अब वे अवैध क्यों हो गए ?

प्र० : अगर सरकार सभी धर्म स्थलों चाहे वे गुरुद्वारे, मन्दिर, मस्जिद हों, में हथियार रखने पर प्रतिबन्ध लगाने का कानून बना दे ?

उत्तर—इस बात का फैसला करना तो देश का काम है। लेकिन सिख हथियारों पर किसी प्रकार के प्रतिबन्ध को स्वीकार नहीं करेंगे ? यह ठीक

है कि लाइसेंसधारियों को अपने हथियारों के साथ लाइसेंस लेकर चलना चाहिए। अगर वह कानूनों का उलंघन करता है तो उसे गिरफ्तार किया जाना चाहिए। वस्तुत: सरकार को पंजाब में सभी लोगों को हथियार देने चाहिए, विशेषकर सीमावर्ती लोगों को। उन्हें मजबूत किया जाना चाहिए ताकि जरूरत पड़ने पर वे पाकिस्तान से अपनी रक्षा कर सकें।

प्रश्न—आपकी राय में सिखों के समक्ष इस समय सर्वाधिक महत्वपूर्ण प्रश्न क्या है ?

उत्तर—आत्म सम्मान को किस प्रकार बहाल करें।

प्रश्न—सरकार के वह निर्णय कौन-से हो सकते हैं जिनसे सिखों की प्रतिष्ठा बहाल हो ?

उत्तर—सिखों को परेशान किया जाना बन्द किया जाए, उन्हें परेशान करने के लिए जो भी कदम उठाए गए है, उन्हे वापस लिया जाए। सिखों की हत्या के दोषियों को दण्डित कर सरकार अपनी सदाशयता का परिचय दे। विशेष अदालतें खत्म की जाएं। आतंकवादी विरोधी कानून समाप्त किया जाए। सभी बन्दी युवकों को रिहा किया जाए। विमान अपहर्त्ताओं व सैनिक भगोड़ों को भी रिहा किया जाए। उसके बाद सिख यह निर्णय करेंगे कि वे अपने सम्मान को किस प्रकार बनाए रख सकते हैं ? उसके उपरान्त हम उठाए जाने वाले कदमों का निर्णय करेंगे तथा सरकार को बताएंगे कि स्थिति में सुधार के लिए क्या-क्या किया जाना चाहिए ?

प्रश्न—एक तो जांच, दूसरा बन्दी युवकों की रिहाई-लेकिन इसके बावजूद उन लोगों का क्या होगा जिनके विरुद्ध हिंसा के आरोप हैं ?

उत्तर—आपको पता है ही कि सरकार किस प्रकार के केस बनाती है। सरकार यह कार्य उसी भांति करती है जिस प्रकार ब्रिटिश सरकार करती थी।

प्रश्न—आप इन केसों की तुलना पांडे, बिल्ला तथा इसी प्रकार के केसों से कर रहे हैं, लेकिन क्या ये विमान अपहृर्त्ता अलगाववादी नहीं हैं ?

उत्तर—उन्होंने न्याय पाने के लिए अपना विरोध प्रकट किया था।

प्रश्न—क्या विमान अपहरण न्यायोचित है तथा अपनी माग मनवाने के लिए अकाली आन्दोलन का एक भाग है ?

उत्तर—अपने घर परिवार में अपनी मांग मनवाने के लिए शांतिपूर्ण विरोध प्रकट करने का हरेक को अधिकार है।

प्रश्न—क्या आप विमान अपहृर्त्ताओं के बचाव के लिए अपने वकील पाकिस्तान भेजेंगे ?

उत्तर—मैं ९ माह तक जेल में रहा हूं तथा रिहाई के बाद आजकल गांव मे घूम रहा हूं। इस प्रश्न पर अकाली दल की अमृतसर में होने वाली बैठक में विचार किया जाएगा। दुनिया में यह बात आम है कि परिवार का कोई सदस्य अगर कोई गलती करता है तो आमतौर पर परिवार के लोग कहते हैं कि हमारा बच्चा निर्दोष है। और अपने बच्चो को निर्दोष सिद्ध कराने के लिए वे यथा सम्भव प्रयास करते हैं। जब बच्चा निर्दोष सिद्ध हो जाता है तो उसे रिहा कर दिया जाता है।

प्रश्न—इस स्थिति में क्या आप सोचते हैं कि सैनिक भगोड़ों के विरुद्ध कोई कार्रवाई नहीं होनी चाहिए ?

उत्तर—नहीं उनके विरुद्ध कोई केस नहीं होना चाहिए। उन्होंने तो अपना विरोध प्रकट किया था। अगर वे चाहते तो विद्रोह करके भारी हानि पहुंचा सकते थे। उन्होंने तो केवल यही किया कि वे हरमन्दिर साहिब के लिए ही रवाना हुए। सेना अपने धर्म अथवा गुरु के नाम पर देश के प्रति निष्ठा की शपथ दिलाती है और अगर एक जवान जब धर्म के नाम पर शपथ लेता है तो फिर वह कैसे अपने धर्म का अनादर सह सकता है ?

प्रश्न—फिर सेना में अनुशासन कैसे बनाए रखा जा सकता है ?

उत्तर—यह तो सरकार की जिम्मेदारी है। उसे देश का अनुशासन बनाए रखना चाहिए। अल्पसंख्यकों को संरक्षण प्रदान करना चाहिए। तथा उनमें अपने प्रति उपेक्षा की भावना नहीं पनपने देनी चाहिए। इन सबकी जिम्मेदारी सरकार की है।

प्रश्न—मान लीजिए न्यायिक जांच होती है और सभी लोगों को रिहा कर दिया जाता है तो उससे उपयुक्त वातावरण बनेगा ?

उत्तर—उस वातावरण को देखा जा सकता है पर इसके लिए प्रयास आवश्यक हैं।

प्रश्न—और जब वह वातावरण बन जाएगा तब ?

उत्तर—तब पंजाब की भारी भरकम समस्या को हल करने पर विचार-विमर्श हो सकेगा।

प्रश्न—अब जेल से बाहर आने के बाद आप कैसा अनुभव करते हैं !

उत्तर—बाहर आने के बाद हम यह अनुभव करते हैं कि इस देश जिसके लिये हमने इतने बलिदान किए हैं, मैं जर्मन सरकार द्वारा यहूदियों के साथ किए गए व्यवहार की तरह ही हमारे साथ भी हमें देश से बाहर निकालने के लिए परेशान किया जा रहा है। हमारी यही चिन्ता है।

प्रश्न—क्या आप यह सोचते हैं कि सिख इस देश में बराबरी के दर्जे के नागरिक की तरह नहीं रह सकते हैं ?

उत्तर—हरेक सिख यह सोचता है कि उसके लिए इस देश में कोई स्थान नहीं है। उसके मन में रोष है। वह इस बात को लेकर हैरान है कि आखिर उसका स्तर क्या है तथा वह अपनी प्रतिष्ठा को पुन: किस प्रकार प्राप्त कर सकता है और जब वह इसका प्रतिकार करेगा तो यह देश के लिए एक खतरनाक बात होगी। सभी को इसका परिणाम भुगतना होगा और देश भी नष्ट हो सकता है।

प्रश्न—विवाद का मुख्य मुद्दा आनन्दपुर साहिब प्रस्ताव नहीं बल्कि एक समुदाय, एक कौम है ?

उत्तर—राष्ट्रीय झण्डे के तीन रंग हैं और वह एक झण्डा है। इसी प्रकार सिख एक अलग कौम है इसी प्रकार मुसलमान और हिन्दू हैं। तीनों ही कौमों का एक राष्ट्रीय झण्डा है। मैं एक पंजाबी हूं, लेकिन जब मैं बाहर जाता हूं तो उस समय मैं एक भारतीय हूं।

प्रश्न—अगर सिख अलग कौम है तो क्या उनके लिए अलग राष्ट्र चाहिए ?

उत्तर—हम अलग देश नहीं चाहते। हम स्वयं को अपने देश से अलग नही करना चाहते हैं। सरकार का तो एक तख्त है, हमारे पांच तख्त हैं। गुरुओं ने पांच तख्त बनाए थे। हम अलगाववाद नही चाहते लेकिन अगर सरकार ने हम पर दबाव डाला तो हम इस बारे में सोचेंगे और कहेंगे कि आओ इसका फैसला कर लें। आप कैसे कह सकते हैं कि हमारा देश नहीं है अथवा तुम्हें कुछ कहने का अधिकार नहीं है क्यों कि तुम केवल २० हो और हम ८० हैं।

प्रश्न—जगजीतसिंह चौहान जैसे लोग लोगों मे मतभेद बढ़ा रहे हैं। वे भारत के विरुद्ध दुष्प्रचार कर रहे हैं। इस बारे में आपका क्या विचार है।

उत्तर—अगर आप पिछले सात ७ सालों के रिकार्ड पर नजर डालें तो आपको पता चल जाएगा कि उसके पीछे कौन था, उसे किसने बढ़ावा दिया। कृपया इस बात की जाच करें। इतिहास बताएगा कि उसे किसने यह नारा लगाने योग्य बनाया। मैं इस बारे में कुछ नही कह सकता लेकिन कांग्रेस के पिछले ७ वर्षों के रिकार्ड का अध्ययन करें।

प्रश्न—क्या आप कुछ ऐसे कदम उठाने जा रहे हैं जिससे हिन्दुओं के मन से आशंकाएं समाप्त हों ?

उत्तर—ऐसी बात नहीं कि हम ऐसा नही करना चाहते हैं। हम तो पहले से यह करते आ रहे हैं। देश में बड़ी संख्या में सिखों को लूटा गया व कइयों की हत्या की गई लेकिन पंजाब में उसकी प्रतिक्रिया स्वरूप कुछ हुआ ? कांग्रेस सिखों को समाप्त करना चाहती है इसलिए उन्होंने कांग्रेस के विरुद्ध संघर्ष प्रारम्भ किया है। सिखों का हिन्दुओ, मुसलमानों, ईसाईयों से कोई झगड़ा नहीं हैं। हमारा झगड़ा तो उस व्यक्ति से है जो दिल्ली के सिंहासन पर बैठा है और हमें समाप्त करने की कोशिश में हैं।

प्रश्न—आपका झगड़ा तो श्रीमती गांधी से था, राजीव गांधी से नहीं। यह बात निश्चित थी कि श्रीमती गांधी ने आपको रिहा नही किया होता क्योंकि यह बात उनकी अपनी योजना व तौर-तरीकों के विपरीत थी ?

उत्तर—श्रीमती गांधी पर्दे के पीछे रहकर कार्य करती थी। पर उन्होंने (राजीव) तो गद्दी पर बैठतेही खुलेआम वह सब कुछ किया। यह सब उनके

कहने पर ही हुआ। वह तो आतंक के इस मामले में अपनी मां से भी आगे बढ़ गए। इसीलिए हर सिख उनके विरुद्ध सोचने के लिए मजबूर होगया है।

प्रश्न—क्या आप यह नहीं जानते हैं कि उन्होंने तुरन्त दंगोंपर नियन्त्रण कर लिया अन्यथा ये दंगे और आगे १ सप्ताह तक भी जारी रह सकते थे? राजीव गांधी का कहना है कि श्रीमती गांधी के शव को घर लाने के तुरन्त बाद से ही उन्होंने कदम उठाए।

उत्तर-हमारे अपने सूत्रों के अनुसार यह बात तो उस समय होनी ही थी। श्रीमती गांधी की हत्या से यह नहीं हुआ। यह बात तो दो दिन बाद होनी ही थी और यही कारण है कि देश भर में एक ही प्रकार के हथियार व बारूद वितरित किये गए। अन्यथा आप यह कैसे कह सकते हैं कि देश भर में एक ही जैसे दंगे हुए? यह पूर्व नियोजित था और यह होना ही था।

प्रश्न—क्या आपके कहने का यह अर्थ है कि श्री गांधी ने इनकी योजना बनाई थी?

उत्तर—उनके कामों से तो ऐसा ही लगता है। उन्होंने उन्हें (सिखों को) उग्रवादी अलगाववादी कहकर बदनाम किया तथा कहा कि वे देश के टुकड़े कर देंगे जबकि तथ्य यह है कि ने उनके विरुद्ध कुछ भी प्रमाणित नहीं कर सके।

इन्दिरा बनाम राजीव

प्रश्न—क्या अकाली दल श्रीमती गांधी और श्री राजीव गांधी में कोई गुणात्मक अन्तर देखता है और नेताओं की रिहाई को सद्भावना का प्रतीक नही अनुभव करता है?

उत्तर—श्रीमती गांधी आनन्दपुर साहिब प्रस्ताव को मानती थी जबकि वह (राजीव) कहते हैं कि इस पर बात भी नहीं करेंगे। उन्होने आनन्दपुर साहिब प्रस्तावों के नाम पर हमें देश भर में बदनाम किया। दोनों में काफी अन्तर है। जब हमने श्रीमती गांधी से कहा था कि प्रस्ताव मे अलगाववाद की कोई बात नही है तो उन्होंने हिन्दू नेताओं से जालन्धर में कहा था, अकालियों ने कहा है कि उनके प्रस्ताव में अलगाववाद की कोई बात नहीं है। आनन्दपुर साहिब प्रस्ताव में जो कुछ भी कहा गया है वह उनके वायदे है जबकि राजीव ने रेडियो, टेलीविजन व समाचार पत्रों में आनन्दपुर साहिब प्रस्ताव के बारे में इस प्रकार का प्रचार किया कि सिखों की छवि खराब हो गई। उनमें व श्रीमती गांधी में बहुत अन्तर है।

प्रश्न—मान लीजिए सरकार दंगों के बारे में जांच के आदेश दे देती है, बन्दियों को रिहा कर देती है, चण्डीगढ़ पंजाब को देती है तथा अन्य मामलों पर विचार के लिए आयोग नियुक्त कर देती है तो उस पर आपकी क्या प्रतिक्रिया होगी?

उत्तर—तब हम इस बात को देखेंगे कि इससे कौम (सिख) सन्तुष्ट है।

प्रश्न—लेकिन यही तो आपकी मांगें हैं और अगर सरकार अन्ततः इनको मानने की घोषणा करती है तो इसमें आपको क्या हिचक है?

उत्तर—(श्री बरनाला द्वारा) अगर ऐसा होता है तो फिर बात ही समाप्त हो जाएगी। हम केवल लड़ने के लिए लड़ाई नहीं लड़ रहे हैं।

श्री लोंगोवाल ने कहा—उन्हें आनन्दपुर प्रस्ताव स्वीकार कर लेने दो। वस्तुत उन्होंने हाल ही में ये अवरोध पैदा किए हैं। अगर वे इन अवरोधों को हटा देते हैं तो फिर आगे कोई बाधा नहीं होगी।

प्रश्न—एक बार आपने कहा था कि आनन्दपुर साहिब प्रस्ताव आधार रूप से केन्द्र-राज्य सम्बन्धों की व्याख्या करने के लिए है तथा आप इसे आयोग को सौंपने के पक्षधर थे। अब सरकारिया आयोग का गठन हो गया है। यही तो आपका स्टैंड था कि प्रस्ताव को सरकारिया आयोग को प्रेषित कर दिया जाए?

उत्तर—अब हमारे सन्देह पक्के हो गए हैं। अब हमें यह विश्वास हो गया है कि सरकार हमें (सिखों को) इस देश में नहीं रहने देना चाहती है।

प्रश्न—इसका अर्थ यह है कि तब एक स्थिति में कोई परिवर्तन नहीं आ सकता।

उत्तर—जब तक सरकार अपना मन नहीं बदलती, तब तक समस्या का समाधान नहीं निकल सकता।

प्रश्न—मुझे एक बात स्पष्ट कर लेने दें। क्या आपका कहने का यह मतलब है कि आनन्दपुर साहिब प्रस्ताव को सरकारिया आयोग को सौंपे जाने के बाद भी इस आयोग के सम्बन्ध में आपकी मांग पूरी नहीं होगी?

उत्तर—सरकारिया आयोग असंगत हो गया है।

प्रश्न—क्या इसका अर्थ यह है कि आपने पहले जो कुछ कहा था, वह अब समाप्त हो गया है?

उत्तर—ये बातें उस समय तक तो ठीक थीं जब तक कि उन्होंने अकाल तख्त को क्षति नहीं पहुंचाई तथा अन्य बातें नहीं कीं। अब उन्होंने सिखों को काफी विचलित कर दिया है। सरकार और सिखों के मध्य एक खाई पैदा हो गई है, और यह तब तक बनी रहेगी जब तक देश है।

प्रश्न—क्या आप लाला जगत नारायण जी की हत्या के बाद से पंजाब में हुई हिंसक घटनाओं की जांच कराने के लिए तैयार हैं?

उत्तर—अब यह एक पुरानी कहानी है। हम इसकी मांग कई वर्षों से करते रहे हैं। संसद में इस बारे में प्रश्न पूछे गए। श्रीमती गांधी ने कई वक्तव्य दिए। इसका अर्थ यह है कि वह दोषी थीं। हम नहीं। हमने यह मांग की थी कि इन घटनाओं की वह अपनी किसी एजेंसी से जांच कराएं। लेकिन उन्होंने ऐसा नहीं किया। उन्होंने कहा कि यह आवश्यक नहीं है। दूसरे शब्दों में कहा जाए तो वह अपने अपराध को सार्वजनिक रूप से सामने नहीं आने देना चाहती थीं।

प्रश्न—क्या इसका मतलब यह है कि आप पंजाबके घटनाक्रम की जांच नहीं करवाना चाहते हैं?

उत्तर—अब हम पंजाब के घटनाचक्र की जांच की मांग से बहुत आगे निकल आए हैं। अब वह समय तो कब का बीत चुका है। (बरनाला ने हस्तक्षेप किया कि अब इस प्रकार की बात का कोई फायदा नहीं होगा)।

प्रश्न—अब अगर पंजाब में नए चुनाव होते हैं तो क्या अकाली उनमें भाग लेंगे?

उत्तर—अकाली दल इस बात को देखेगा कि वे किस प्रकार चुनाव करना चाहते हैं?

प्रश्न—इसका अर्थ यह है कि अकाली दल भिंडरावाला की भांति होता जा रहा है।

उत्तर—अकाली दल ने कभी भी ऐसा कोई कदम नहीं उठाया है जिसमें लोगों में दूरी बढ़े। दल ने हमेशा लोगों की व भारत की एकता को अपने सामने रखा है। अपने इस संघर्ष में भी हमने इन बातों को अपने सामने रखा है। इस समय सिख सरकार के प्रति गुस्से में भरे हुए हैं कि कोई नहीं जानता कि इसका परिणाम क्या होगा।

प्रश्न—लेकिन आप देश और सरकार को एक ही तराजू पर नहीं तोल सकते?

उत्तर—सरकार भी तो देश की है।

प्रश्न—सरकार को तो वहां से हटाया जा सकता है पर देश तो आपका है।

उत्तर—अगर इस प्रकार की भावना हो कि यह हमारा देश है तथा यहां हमें बराबर के अधिकार हैं, तो बात बन सकती है।

प्रश्न—क्या इस प्रकार की कोई भावना नहीं है?

उत्तर—आज इस प्रकार की भावना नहीं है। जो कुछ सिखों के साथ हुआ है, उसके बाद तो नहीं है। यह उनके लिए एक दुखद अनुभव था। आप भी हैरान होंगे कि उनके मन में यह सब क्या है।

प्रश्न—आप सिखों को शांत करने के लिए अपना क्या दायित्व समझते हैं?

उत्तर—सिखों ने देश के विरुद्ध कभी कोई कार्य किया है? जब उन्होंने कुछ किया ही नहीं तो फिर दूसरा प्रश्न उठता ही नहीं। मैं केवल यही कह सकता हूं कि सिखों में नाराजी है तथा मैं नहीं जानता कि यह क्या स्वरूप धारण करेगी।

कुलदीप नैयर—सरकार ने आपको रिहा करके कम-से-कम एक अच्छा कार्य आर्य तो किया है।

(क्रमशः)

(पृष्ठ ५ का शेष)

के आन्दोलन में इनका बड़ा योग रहा। पण्डित जी को जिन लोगों ने बहुत निकट से देखा है जानते हैं कि पक्षपात नाम को नहीं था। प्रत्येक वर्ग तथा जाति के लोग उनके व्यक्तिगत मित्र थे जिनमें बहुत से मुसलमान भी हैं। पोलिस एक्शन के बाद की परिस्थिति का मुकाबला उन्होंने शांति समितियों को स्थापित करके किया। मुस्लिम मुहल्ले का दौरा किया तथा बहुत से मुसलमानों की उन्होंने यथा संभव सहायता की। कांग्रेस में अच्छे मुसलमान उन्हीं के प्रयत्नों के कारण आ सके। पण्डित जी ने 'हैदराबाद को हिन्दु मुस्लिम एकता' पर भी पुस्तक लिखी है, नवयुवकों में नवयुवक हृदय सम्राट कहलाने लगे। बोलते बड़ा मीठा और सरिता के समान। सरस्वती उनकी जबान पर बैठी हुई थी न किसी की निन्दा करते थे और न किसी का दिल दुखाते थे। पण्डित जी बहुत अच्छे पत्रकार भी थे। निजाम के समय वैदिक आदर्श सप्ताहिक का संपादन इतने अच्छे ढंग से किया कि पत्रिका की गणना शीघ्र ही उर्दू के उच्चकोटि के समाचार पत्रों में होने लगी।

१९४६ में मुशीराबाद में जो स्टेट कांग्रेस अधिवेशन हुआ उसके आप ही मन्त्री थे। पुलिस एक्शन के बाद पं० नरेन्द्रजी प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी आन्ध्र और नगर कांग्रेस के प्रधान चुने गये, जनता में वे जनार्दन दिखाई देते थे। अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के सदस्य भी रहे और नानलनगर अधिवेशन की स्वागत समिति के महामन्त्री। पंडित जी के व्यक्तिगत गुणों तथा राष्ट्रीय भावनाओं का प्रधान मन्त्री पं० जवाहरलाल नेहरू और लाल बहादुर शास्त्री बहुत आदर करते थे।

आर्य समाज तथा कांग्रेस के अतिरिक्त पं० नरेन्द्रजी कई सभा सोसायटियों तथा शिक्षा संस्थाओं से सम्बन्धित थे। हिन्दी प्राच्य महाविद्यालय हिन्दी प्रचार सभा, भारत सेवक समाज, आदम जात सेवक संघ, हरिजन खादी समिति और कितनी ही ऐसी राष्ट्रीय संस्थाएं उनकी योग्यता तथा पूर्ण निष्काम सेवाओं से लाभान्वित हुई। पं० नरेन्द्रजी उन लोगों में से थे जिनके व्यक्तित्व से कुर्सी तथा समाज की शोभा होती है। अपने व्यक्तित्व में वे स्वयं एक शानदार संस्था थे।

पंडितजी की वीरता व साहस ने स्वयं मुसलमानों को तब चकित कर दिया जब इत्तेहादुल मुसलमीन की एक विशाल जन सभा में पण्डितजी उपस्थित थे और नवाब बहादुरयार जंग सरकार की अपनाई हुई नीति पर टीका टिप्पणी करते हुए कहरहे थे कि तीन बालिश्त के नरेन्द्र ने सारे निजाम राज्य को हिलाकर रख दिया है।

पंडितजी निजाम के शासन काल में जिस निर्भीकता से बोलते और टीका टिप्पणी करते थे उसका अनुमान उनके इन शब्दों से हो सकता है। हैदराबाद हिन्दुस्तान का सबसे बड़ा जेल खाना है। १९४५ में हुमायतगंज (वर्तमान रामकृष्ण पुरमंज) की एक विराट सभा में आपने कहा था—'हमारा पहला काम हैदराबाद के चित्रपट को बदलना है जब हम इसमें सफल हो जायेंगे तो शासन की कोई शक्ति हमें आगे बढ़ने से नहीं रोक सकेगी। जनता की मांगों के आगे सरकार को झुकना ही पड़ेगा' स्टेट कांग्रेस कायम हो या आदि समाज। पण्डितजी सरकार को खरी-खरी सुनाने में तनिक भी संकोच नहीं किया करते और न यह सोचते थे कि परिणाम क्या होने वाला है पं० नरेन्द्रजी के साहस तथा उनकी निडरता के चर्चे घर-घर सुनाई देते है निजाम के शासन काल में वे कभी झुके नहीं उन्हें कड़े से कड़ा दण्ड मिला पर वे हंसते मुस्कराते सारी आपत्तियों को झेल गये। रजाकारों के भयंकर समय में भी वे पैदल तथा तांगे पर खुले आम घूमते फिरते थे उनके साहस की जितनी प्रशंसा की जाय कम है।

पं० नरेन्द्र जी एक सच्चे देशभक्त थे। जहां उन्हें देश के अहित में कोई बात दिखाई दी, उन्होंने सरकार को ललकारा और डरे नहीं, आपके गुणों को दो शब्दों में तो लिखा नहीं जा सकता पर हां वे जिन्दा शहीद थे।

बचपन का निडरता तेज ही जवानी में अंगार बनके चमका था फिर दिन की संध्या में चेहरे की लालिमा कैसे समाप्त होती ? तीनों कालों में ओज पूर्ण रहे। इन्हीं सब विशेषताओं ने आपको हैदराबाद में तथा समस्त आर्य जगत में लोक प्रिय बना दिया।

जिसको न निज गौरव तथा निज देश का अभिमान है।
वह नर नहीं नर पशु निरीह और मृतक समान है।

आइए। हम सब मिलकर श्रद्धेय पं० नरेन्द्रजी (स्वामी सोमानन्द जी) की पुण्य तिथि के अवसर पर शान्त गम्भीरता पूर्वक विचार करें और ऋषि के महान मिशनको जिस मानव ने अपने कन्धों पर अकेले वहन किया था उसे हम सब मिलकर अपने ऊपर ले तभी आर्य समाज का कार्य सुचारू रूप से चल सकेगा।

(१) नाना में लिखना है पण्डित जी के नाम से एक मार्ग का नाम।

(२) पण्डित जी का एक चौराहे पर प्रतिमा लगाना।

(३) एक हिन्दी कालेज खुलने जा रहा है उसका नाम भी पंडित जी के नाम से ही रखा जाए। पंडित जी ने जो काम किया निजाम राज्य में उसका एक-एक क्षण का भी हम पण्डित जी का ऋण नहीं चुका सकते, आर्य समाज और कांग्रेस और आन्ध्र सरकार यह सबकी जिम्मेदारी है ये काम को जल्दी से जल्दी पूरा करें।

सुख वैभव को त्यागकर कटक पथ अपनाने वाले तुमको हमारा प्रणाम शत् शत् प्रणाम।

हैदराबाद के लोह-पुरुष पं० नरेन्द्र जी सौभाग्य से उनसे बहुत ही निकट रहने का मुझे अवसर मिला, मैं पहले से ही आर्य समाज के जलसों में जाता था पं० विनायक राव जी विद्यालंकार अध्यक्ष और श्री चन्दूलाल जी मन्त्री थे तब भारत वर्ष से सन्त महात्मा संन्यासी आर्य समाज के विद्वान जो आते थे उनको सुनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था उस समय पं० रामचन्द्र जी देहलवी की बड़ी चर्चा थी पंडित जी के बारे में क्या लिखूं उनमें क्या खूबी नहीं थीं ढूंढने पर भी वह नहीं मिलती पंडित जी ने हैदराबाद के लोह पुरुष पं० नरेन्द्र नाम की किताब मुझे अपने हाथों से दी थी तब पं० नरेन्द्र जी से मैंने विनती की आप इस पर अपने हाथ से अपना नाम लिखकर दीजिए तब पंडित जी ने अपने नाम के हस्ताक्षर किए और उस पर ११-५-७५ तारीख भी लिखकर दी मैं उस किताब को कई बार पढ़ता रहता हूं और पंडित जी के बताए हुए रास्ते पर विचार करता हूं। अस्तु।

(राष्ट्र नायक हैदराबाद)

देशदेशान्तर प्रचार

परिपत्र

आर्य प्रतिनिधि सभा, दक्षिण अफ्रीका
विश्व आर्य सम्मेलन

श्रीमान/श्रीमती

सप्रेम नमस्ते

आपको यह जानकर प्रसन्नता होगी कि उपरोक्त सभा तारीख १४, १५, १६ दिसम्बर को अपने हीरक महोत्सव और विश्व आर्य सम्मेलन का आयोजन कर रही है, जिसके लिये सार्वदेशिक सभा (रामलीला मैदान, नई दिल्ली, ११०००२) की अनुमति मिल चुकी है। हम आशा करते हैं कि भारत से और अन्य देशों से अधिक से अधिक व्यक्ति यहां आकर इसे सफल बनायें। इसके लिए आप निम्न लिखित तैयारियां अभी से चालू कर देवें।

१. अपना पासपोर्ट बनवा लेवें। उसमें प्रवास के देशों में साउथ अफ्रीका का नाम अवश्य लिखवा लेवें। सामान्य रूप से साउथ अफ्रीका के लिए भारत सरकार अनुमति नहीं देती है। पासपोर्ट के सम्बन्ध में स्थानीय एयर सर्विस के एजेंट आपको मार्गदर्शन दे सकेंगे। आप हमें भी लिखें जिससे हम यहां से वीसा (Visa) फोर्म आपको भेज देंगे।

२. भारत की प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभायें सार्वदेशिक सभा से सम्पर्क स्थापित करें। सम्भव है कि उन्हें यात्रियों का अधिक कोटा न मिले, तो आप स्वतन्त्र प्रयत्न करें।

३. अन्य भाई बहन भी स्वतन्त्र रूप से पासपोर्ट और यहां के प्रवेश पाने की अनुमति के प्रयत्न करें।

४. अपने मार्ग व्यय और प्रवास के लिए आवश्यक धनराशि इकट्ठी करें, और ऐक्सचेंज के नियमों को समझ लेवें।

५. इस सम्बन्ध में हम से भी शीघ्र पत्र व्यवहार चालू कर देवें, जिससे हम आपको आवश्यक मार्ग दर्शन दे सकेंगे।

श्री ऐस. रामभरोसे : प्रधान—आर्य प्रतिनिधि सभा, साउथ अफ्रिका
पं० नरदेव वेदालंकार : सभापति—वेद निकेतन, साउथ अफ्रिका
३५ क्रोस स्ट्रीट, ४००१ डरबन, साउथ अफ्रिका
35 Cross Street, 4001 Durban South Africa.

ऋतु अनुकूल हवन सामग्री

हमने आर्य यज्ञ प्रेमियों के आग्रह पर संस्कार विधि के अनुसार हवन सामग्री का निर्माण हिमालय की ताजी जड़ी बूटियों से प्रारम्भ कर दिया है जो कि उत्तम, कीटाणु नाशक, सुगन्धित एवं पौष्टिक तत्वों से युक्त है। वह आदर्श हवन सामग्री अत्यन्त अल्प मूल्य पर प्राप्त है। थोक मूल्य ४) प्रति किलो।

जो यज्ञ प्रेमी हवन सामग्री का निर्माण करना चाहें वह सब ताजी हिमालय की वनस्पतियां हमसे प्राप्त कर सकते हैं, वे चाहें तो कुटवा भी सकते हैं यह सब सेवा मात्र है।

योगी फार्मेसी, लक्सर रोड
डाकघर गुरुकुल कांगड़ी २४९४०४, हरिद्वार [उ० प्र०]

गोद्रिका टापू में सामूहिक यज्ञ

मौरिशस टापू की थोड़ी दूरी पर रोद्रिक टापू ३५० माइल की दूरी पर पाया जाता है। इसकी लम्बाई ९ माइल की है और चौड़ाई ४ माइल की है।

यहां की मुख्य फसल मकई और नीबू है। पर वर्षा की कमी के कारण ये दो फसलें कभी-कभी चौपट हो जाती हैं।

तीन दिनों की यात्रा पर यहां पर मुझे शुक्रवार ता० २१ मार्च को जाने का अवसर प्राप्त हुआ था। यहां की राजधानी पोर-माथुरें मानी है, जो समुद्र तट पर है। हिन्द महासागर के मध्य में यह टापू है।

यहां पर मौरिशस टापू की देख-रेख में सब कुछ होता है। यह टापू का ही भाग है। इस प्रकार और दो टापू हैं जो मौरिशस के साथ में है, जिनके कारण हिन्द महासागर का काफी समुद्री भाग हमारे साथ है।

रोद्रिका में मौरिशस में कार्य करने जाने वाले ऊंचे ओहदेदारों ने सन १९७० में एक मन्दिर का निर्माण किया है। इस मन्दिर के पास कहीं भी किसी आर्य पुरोहित को जाकर यज्ञ करने का सौभाग्य प्राप्त नहीं हुआ था। पर मैंने लौटने से थोड़ा समय पूर्व वहां की जनता की मांग पर उस मन्दिर की छाया में वैदिक सिद्धान्त के अनुसार यज्ञ किया। यह भगवान की कृपा है यहां पर आर्य समाज के कार्यों का बखान करने का शुभावसर मुझे प्राप्त हुआ, संसार के इस लघु भू-भाग में।

उन्हीं दिनों मौरिशस के शिक्षामन्त्री श्री ह० परसुराम जी, श्री र० गुरदयाल जो शिक्षा विभाग के स्थाई सचिव और इसी मन्त्रालय के ऊंचे अधिकारी श्री रा० रामचरण जी सरकारी कार्यों के लिए गए थे तो वहां के प्रधान श्री तारानी जी के आमन्त्रण पर यज्ञ में शामिल होने के लिए पधारे थे। मौके पर अनेक परिवार जुट चुके थे। बड़ी श्रद्धा से गजाधर परिवार ने प्रसाद तैयार करके लाए; यज्ञ में शामिल हुए और सब आमन्त्रितों का सत्कार किया।

शान्ति पाठ के बाद हमने वहां की धार्मिक गतिविधियों पर विचार विनिमय किया। साहस से धार्मिक कार्य करने के लिए लोगों को प्रोत्साहित किया। क्योंकि, हाल वहां पर आकर कार्य करने वाले एक युवक जो हमारी भाषा-भाषी है, उन्होंने एक गोरभाषी युवती से शादी कर ली है।

—पं० धर्मवीर घूरा शास्त्री
उपदेशक आर्य समाज मौरिशस, वाक्वा

आवश्यकता है?

राजस्थान की आर्य समाजों में वेद प्रचार के लिये आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के अन्तर्गत कार्य करने वाले विद्वान्, भजनोपदेशक एवं उपदेशक वक्ताओं की। मासिक दक्षिणा योग्यतानुसार दी जायेगी अपने पूर्ण विवरण सहित सूचना श्री जेठमल आर्य मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान, उपकार्यालय आबूरोड के पते पर भिजवाने की कृपा करें। —जेठमल आर्य मन्त्री

आर्य समाजों की गतिविधियां

शुद्धि संस्कार

बृहस्पतिवार दि० १४-३-८५ को प्रातः ५ बजे आर्य समाज मन्दिर सरीताका नागपुर में पूना निवासी श्री शमशेर अली मोहमद बेहराम एम०ए० ने स्व० इच्छापूर्वक आर्य (वैदिक) धर्म में प्रवेश लिया। यह शुद्धि-संस्कार श्री संपतराम आर्य (उपमन्त्री-सभा) के पुरोहित्य में सहर्ष सम्पन्न हुआ। वैदिक धर्म में दीक्षा लेने पर उनका परिवर्तित नाम श्री सूर्य प्रकाश आर्य रखा गया। इस शुभ अवसर पर काफी संख्या में आर्य महानुभाव उपस्थित रहे।

आर्यसमाज की ओर से श्री सूर्यप्रकाश आर्य को सत्यार्थप्रकाशादि आर्य साहित्य भेंट किया गया। श्री सूर्य प्रकाश आर्य ने सबका आभार माना और स्वयं अपने हाथों से प्रसाद बांटा।

—मन्त्री

—आर्य समाज नैनीताल में दिनांक ३ मार्च १९८५ को श्री देवेन्द्रसिंह पुत्र श्री पककीरसिंह, निवासी हरसान बाजपुर जो कि ईसाई परिवार से हैं की शुद्धि उनकी इच्छा से पुनः हिन्दू धर्म में प्रविष्ट कराया गया शुद्धि के बाद उनका नाम सुरेन्द्रसिंह रखा गया इस अवसर पर श्री गुरुदेव विद्यालंकार ने शुद्धि संस्कार सम्पन्न कराया।

(पृष्ठ १ का शेष)

उसने सुझाव दिया कि जो देश गाएं मंगाना चाहें वे साझा बाजार से सीधे बात कर सकते हैं। साझा बाजार के कृषि आयुक्त एण्ड्रीफसेन से बातचीत की जा सकती है। ये देश उन सहायता एजेन्सियों से भी सम्पर्क कर सकते हैं जो गायों को पहुंचाने का खर्च उठाने को तैयार हों।

कांचिपुरम के शंकराचार्य की शिष्या राजकुमारी इरीन इस कोशिश में हैं कि फालतू गायें यहां से भारत व अन्य देशों को नाममात्र के खर्च पर भेजी जाएं। कुछ परोपकारियों ने खर्च उठाना मंजूर किया है।

जानकार सूत्रों ने बताया कि भारत सरकार ने कुछ गाएं मंगाने पर साझा बाजार से बातचीत करना सिद्धान्त मानलिया है। बातचीत जारी है।

पशुओं पर क्रूरता पर रोक लगाने का काम करने वाली रायल सोसायटी के प्रवक्ता ने कहा कि गायों का वध दुःखद है लेकिन मामला तभी सामने आयेगा जब उनका बर्बर तरीके से वध किया जाता हो।

—बी० के० तिवारी
जन सत्ता १४-४-८५

आर्य समाज दीवान हाल का

शताब्दी–समारोह

वेद-प्रचार, ग्राम-प्रचार तथा गोसंवर्धन एवं मंदिर निर्माण के लिए

२१ लाख रुपए की अपील

आर्य समाज दीवान हाल की अन्तरंग सभा ने निश्चय किया है कि आगामी दिसम्बर १९८५ को आर्य समाज की शताब्दी मनाई जावे।

वेद प्रचार, ग्राम-प्रचार, तथा गोसंवर्धन केन्द्र की सहायता के लिए २१ लाख रुपए की तीन निधियां स्थापित की जावें।

इस अवसर पर एक विशाल समारोह का भी आयोजन किया जाय।

आर्य समाज दीवान हाल के विगत एक सौ वर्ष का इतिहास भी प्रकाशित किया जाय।

सूर्यदेव (प्रधान) मूलचन्द (मन्त्री)

—आर्य समाज हजूरीबाग में एक स्त्री जो पहले मुसलमान बना ली गई थी वह अपनी दो लड़कियों और दो लड़कों के साथ इस्लाम धर्म को छोड़कर पुनः वैदिक धर्म में लौट आई है। पूर्वनाम नजाना, रशीदा, शकुन्ता, शौकत और अनवर से बदल कर सावित्री, वीणा, शोभा अशोक और सुशील रखा गया।

—प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा, जम्मू

—आर्य समाज मन्दिर बोला गोकर्णनाथ में दिनांक १७-३-८५ रविवार को एक मुस्लिम दम्पत्ति का शुद्धि संस्कार पं० गिरधारीलाल शर्मा जी की अध्यक्षता में पं० केशवदेव शर्मा के पौरोहित्य में सम्पन्न हुआ उनका नाम श्री भगवानदीन तथा श्रीमती गंगादेवी रखा गया। —मन्त्री आर्य समाज

—आर्य कन्या गुरुकुल नरेला में श्री मुख्त्यार खां पुत्र श्री बोदा गांव कबलुपुर जि० सोनीपत ने सपरिवार की स्वेच्छा से वैदिक धर्म में दीक्षा ली।

—मन्त्री हिन्दू शुद्धि सभा

श्री छोटूसिंह जी के स्वास्थ्य में पर्याप्त सुधार

श्री छोटूसिंह जी एडवोकेट (अलवर) पिछले कुछ समय से अस्वस्थ हैं और उनके रोग का उपचार जयपुर के हस्पताल में हो रहा है।

सभा मन्त्री श्री ओम्प्रकाश जी त्यागी अभी हाल में उनसे मिलने जयपुर गए थे। प्रसन्नता है कि वे रोग से प्रायः मुक्त हो गए हैं और शीघ्र ही उन्हें अस्पताल से छुट्टी मिलने वाली है। प्रभु से प्रार्थना है कि वे शीघ्रातिशीघ्र पूर्ण आरोग्य प्राप्त कर अपनी बहुमूल्य प्रवृत्तियों में संलग्न हो जाएं।

—रघुनाथ प्रसाद पाठक

वार्षिकोत्सव

विदित हो कि आर्य समाज रेलवे कालोनी समस्तीपुर (बिहार) का प्रथम वार्षिकोत्सव दिनांक २९।५।८५ से २।६।८५ तक होना निश्चित किया गया है।

—पं चदेव पान्डेय, मन्त्री

अन्तर्जातीय विवाह

पुत्री

२३ वर्ष ५-५" बी.एस.सी.बी.एड (अध्यापिका) ११००) मासिक(मोतीनगर)
२३॥ वर्ष ५-२" बी.एस.सी.बी.एड (अध्यापिका) १३००) „ (दिल्ली)
२१ „ ५-५" बी. ए. योगा ट्रेनिंग(अध्यापिका) १२००) मासिक (दिल्ली)
२८ „ ५-३" बी. ए. (स्टैनो) सरकारी सेवा १५००) मासिक (दिल्ली)
२४ „ ५-२" बी. ए. इन्टीरयर डैकोरेशन सेवा १०००) „ „
२४ „ ५-२" बी. ए. नरसरी ट्रेनिंग (अध्यापिका) ६००) माह (दिल्ली)
२५ „ ५-१" बी. ए. स्टैनो (सेवा डी. जी. पी. टी.) १०००) (दिल्ली)
२२ „ ५-२" बी. ए. (इन्टीरयर डैकोरेशन समाप्त) दिल्ली (चण्डीगढ़)

पुत्र

१७ वर्ष ५-७" बी. ई. मैकेनिकल सेवा सीमेंट क० ३१००) दिल्ली
२६ „ ५-७॥" एम. ए. मैनेजर इन्श्योरेन्स (बीमा) ३०००) „
२८ „ ५-३" बी. काम सेवा सिमको २८००) दिल्ली
२५ „ ५-७" बी. काम अपना कार्य टाइपराइटर क० २०००) दिल्ली
२८ „ ५-६" बी. ए. अपना कार्य (गिफ्ट शाप) २०००) दिल्ली
३१ „ ५-८" बी. काम (सेवा ओसवाल) १६००) दिल्ली
३० „ ५-७" एम. बी. बी. एस डाक्टर अपना क्लीनिक ५०००) दिल्ली
३१ „ ५-४" बी. काम बी. ए. सेवा बैंक (बैरीन) ३००८०) बैहरीन
३० " ५-८" एम. बी. बी. एस. डाक्टर सेवा हस्पताल २५००) दिल्ली

सम्पर्क करें—

चन्द्र प्रकाश आर्य
संयोजक अन्तर्जातीय विवाह केन्द्र
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
३/५ महर्षि दयानन्द भवन, नई दिल्ली-२

गुरुकुल ... ... जिन पर
पिछले दिनों गुरुकुल के निष्कासित मुख्या... ... ... तथा उनके साथियों ने मथुरा में प्राण घातक हमला किया था पर वह प्रभु कृपा से बाल-बाल बच गए थे। ४-४-१९८५ को संभाल लिया है। यह भी समाचार मिला है कि योगेन्द्रसिंह पुलिस के कब्जे में हैं और उसके विरुद्ध कानूनी कार्यवाही हो रही है। (सम्पादक)

शोक समाचार

—श्री पं० रामचन्द्र जी आर्य मुसाफिर जी अजमेर निवासी का स्वर्गवास हो गया परमात्मा उनकी आत्मा को शान्ति दे।

—बसलू आर्य समाज के भूतपूर्व प्रधान तथा कर्मठ आर्य नेता डा० एस० आर० शर्मा जी का देहली में देहान्त हो गया।

—स्वतंत्रलता शर्मा, प्रधान
आर्य समाज बसलूर

निर्वाचन

आर्य समाज वालोतरा का वर्ष १९८५-८६ के लिये निम्न प्रकार निर्वाचन सर्वसम्मति से दिनांक ३१-३-८५ को समाज की साधारण सभा में हुआ। प्रधान श्री घीसुलाल जी सोनी, मन्त्री श्री रामस्वरूप आर्य, कोषाध्यक्ष श्री बृजमनोहर जी निर्वाचित हुए। —मन्त्री

सार्वदेशिक प्रेस पटौदी हाउस दरियागंज नई दिल्ली में मुद्रित तथा रघुनाथ प्रसाद पाठक मुद्रक और प्रकाशक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ... नई दिल्ली-२ से प्रकाशित।

ओ३म्
सार्वदेशिक
साप्ताहिक

सृष्टिसम्वत् १९७२९४९०८६] वर्ष २० अंक २२]

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र
ज्येष्ठ कृ० ८ सं० २०४२ रविवार १२ मई १९८५

दयानन्दाब्द १६१ दूरभाष । ३७४७७१
वार्षिक मूल्य १५) एक प्रति ४० पैसे

गऊओं का भारत में सामूहिक स्थानान्तरण सम्भव

भारत वर्ष गऊओ के झुडो को एशिया के उप महाद्वीपो के डेयरी फार्मों मे पहुचाने के लिए, युरोपियनो की सहायता प्राप्त करने का प्रयास कर रहा है। यूनान की राजकुमारी ऐरेने जो स्पेन की महारानी सोफिया की बहिन और एक भारतीय गुरु की शिष्या है, पर्दे के पीछे इस कार्य के लिए प्रयत्नशील है।

यदि गऊओ का उठाया जाना स्वीकृत हो गया तो युरोप की २ लाख गऊए वर्ष के अन्त तक भारत पहुचा दी जायेगी। भारत सरकार ने २० हजार (बीस हजार) गऊए तत्काल मगाए जाने की व्यवस्था की है जो प्राय सभी भोपाल के निकटवर्ती डेयरी फार्मों मे रखी जायेंगी जहा अभी हाल मे हुए गैस काड से पशु धन की भी बहुत बडी क्षति हुई थी।

इस समय तक फास, पश्चिमी जर्मनी बेल्जियम और हालैंड भारतीय प्रार्थना पर सहानुभूति पूर्वक विचार करने के लिए सहमत हो गए हैं। परन्तु फास के कृषिमन्त्री एव आक्सफाम प्रभृति स्वय सेवी संस्थान इस आयोजन के विरुद्ध है। उनका कहना है कि युरोप की गऊए भारतीय अवस्थाओ क लिए उपयुक्त न होगी।

भारत की दिलचस्पी उस समय हुई जबकि ई०ई० सी० ने फालतू दूध और मक्खन के सम्बन्ध मे कुछ करने की माग उठाई थी।

साढे ८ लाख टन फालतू मक्खन और ६ लाख ३१ हजार टन जमाए गए दूध के पहाड खडे हो जाने के कारण युरोप के डेयरी फार्मों के सचालकों को नियत परिमाण मे उत्पादन के आदेश दिये गए। इसके परिणाम स्वरूप अकेले ब्रिटेन मे डरियों की गऊओ मे से १॥ लाख की कमी की गई। ई०ई०सी० के डेयरी फार्मों मे इस वर्ष गऊओं की सख्या का सब योग अधिक से अधिक ५ लाख तक होन की सम्भावना है।

नई दिल्ली की ओर से जो दलील पेश की जा रही है वह यह है कि गऊओं की हत्या करने के बजाय उन्हे हवाई जहाजो वा पानी के जहाजों के द्वारा भारत पहुचा दिया जाय जहा उनकी बडी आवश्यकता है। भारत मे गऊओ की सख्या पूर्व से ही १८ करोड ३० लाख है जो ससार की किसी भी सख्या से बढी-चढी है।

यद्यपि भारत मे बहुत सी गऊए उपेक्षित रहती आवारा छोड दी जाती और रोगोसे पीडित होकर असमय मर जातीहैं तथापि हिंदुओ द्वारा वे सौभाग्य के प्रतीक के रूप मे पूजी जाती है।

राजकुमारी ऐरेने जो प्रायश मैडिड मे रहती है इन दिनो अपनी योजना के क्रियान्वयन मे ब्रिटिश सहायता की प्राप्ति के लिए सचेष्ट मे है। अपनी माता यूनान की स्वर्गीया महारानी फ्रेडरिका के सदृश ही वे काची (दक्षिण भारत) के जगद गुरु की अनुयायी है।

मैड्रिड स्थित भारतीय राजदूतावास के एक प्रवक्ता ने कहाहै—

"मुझे ज्ञात हुआ है कि राजकुमारी ने निजी तौर पर फास, इग्लैंड, पश्चिमी जर्मनी और बेल्जियम की गवर्नमेन्टों से सहायता की याचना की है। गऊओ के स्थानान्तरण का सिद्धान्तत निर्णय होने पर, भारत सरकार इन गवनमेन्टो का प्ररणा करेगी।

ब्रुसेल्स स्थित ई०ई०सी के एक प्रवक्ता ने कृषि कमिश्नर की ओर से कहा है—

'क्या ऐसा करना बुद्धिसगत होगा? किसी गऊ का भेजना मनोरजक तो है परन्तु अत्यन्त खर्चीला है। भारत का जलवायु और चरागाह युरोपियन गऊ के लिए अनुकूल न होगी। भारतीयों को दूध पाउडर, आदि भेजा जाना ज्यादा सुगम है।"

आक्स फाम के प्रवक्ता का कहना है कि युरोप की डेयरियों की उच्च कोटि की गऊओ का भारत मे जीवित रहना दूभर हो जायेगा।

(शेष पृष्ठ २ पर)

श्रद्धेय श्री लाला रामगोपाल शालवाले का अभिनन्दन

दिल्ली ७ मई १९८५

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के यशस्वी प्रधान श्रद्धेय श्री लाला रामगोपाल शालवाले के सम्मान मे आगामी १, २ जून १९८५ को प्रस्तावित अभिनन्दन समारोह कतिपय कारणो से स्थगित करना पड रहा है। इस अभिनन्दन समारोह के आयोजन की तयारिया चल रही हैं और समारोह की भावी तिथियो की निश्चित घोषणा शीघ्र ही की जायेगी।

—डा० आनन्द प्रकाश
सयोजक अभिनन्दन समारोह समिति

महात्मा हसराज दिवस समारोह दिल्ली—मच पर श्री रामगोपाल शालवाले श्री सोमनाथ मरवाह श्री स्वामी सत्यप्रकाश और केन्द्रीय शिक्षामन्त्री श्री कृष्णचन्द्र पन्त दिखाई दे रहे हैं।

सम्पादक—ओमप्रकाश पुरुषार्थी

सहसम्पादक रघुनाथ प्रसाद पाठक

आर्यसमाज का भावी कार्यक्रम

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने मानव मात्र के विचारों में क्रान्ति लाने के लिये आर्यसमाज को एक सक्षम माध्यम बनाया। यों तो महर्षि के लेख के अनुसार उनके क्रान्तिकारी विचार ब्रह्मा से लेकर जैमिनी पर्यन्त के विचार ही हैं जिनका मूल आधार वेद ही हैं। आर्य जाति अपने प्राचीन गौरव को प्राप्त करे और मानव मात्र को जीवन की दिशा मिल सके, यह ऋषि की तीव्र अभिलाषा थी। गत सौ वर्षों के इतिहास में आर्यसमाज ने मानव समाज के हित के लिए चतुर्मुखी विकास योजनाएं बनाई। उन्हें क्रियान्वित भी किया। इससे बौद्धिक वर्ग विशेष रूप से प्रभावित हुआ। सभी को आगे बढ़ने की प्रेरणा भी प्राप्त हुई। परन्तु जीवन का चतुर्मुखी विकास कार्यक्रम शिथिल न हो जाये, आगे चलता रहे, इस दिशा में विचार करना आज फिर आवश्यक है। इसी विचार से भविष्य में आर्यसमाज के कार्यक्रमों की रूपरेखा मेरी दृष्टि में निम्नांकित प्रकार से होनी चाहिए—

१—आर्यसमाज के मन्दिर केवल बाह्य पूजा पद्धति के ही केन्द्र न बनें, अपितु उनमें आने वाला प्रत्येक व्यक्ति आत्मप्रेरणा, धार्मिक भावना और अन्तर्ज्योति को प्राप्त कर सके, ऐसी व्यवस्था हो।

२—आर्य जाति की पूजा पद्धति में "यज्ञ" का विशेष स्थान है। वस्तुत: यज्ञ मानव जाति के सर्वकल्याण भाव का आदर्श कर्म है। इसकी प्रत्येक धार्मिक क्रिया को सत्य, श्रद्धा तथा भक्ति के साथ करने ही पर लाभ की आशा की जा सकती है। यदि थोड़ा ध्यान-पूर्वक इसे किया जाये तो निश्चय ही धार्मिक भावना की वृद्धि होगी। उचित यही है कि केवल बाह्य कर्म न बनाकर जीवन मे इसी मूल भावना अर्थात् अनासक्ति—इदं न मम की भावना को जीवन में उतारा जाए।

३. वेदोपदेश—वेद ईश्वर की कल्याणी वाणी है जो मानव तथा मानव समाज में जीवन की प्रत्येक अवस्था में विचार देने में समर्थ है। इसीलिए श्रद्धापूर्वक यज्ञ कर्म के अनन्तर ऋषि ने वेदोपदेश का होना आवश्यक बताया है। उचित तो है कि स्वाध्यायशील उपदेशक अपने चिन्तन के आधार पर अनुकूल भाषा में अर्थात् देश की भाषा का ध्यान रखते हुए वेद प्रवचन करे। आर्य जन वेद का स्वाध्याय कर उसके प्रवचन का भी अभ्यास करें।

आर्य जनों को, यदि यह सुविधा प्राप्त न हो सके, तो पुस्तक से ही वेद-प्रवचन पढ़ा जाये अथवा सुयोग्य विद्वानों के कैसेटों का सदुपयोग भी किया जाना लाभकारी हो सकता है। ध्यान रहे कि वेदोपदेश से पूर्व वातावरण को सात्विक बनाने के लिए अच्छे स्तर पर धार्मिक संगीत भी आवश्यक है।

४—योग साधना महर्षि दयानन्द ने यों तो बीज रूप में सन्ध्या के मन्त्रों में योग करने का संकेत अथवा जाप का भी संकेत दिया है। उसका परम उद्देश्य जीवन में अनासक्त होकर अन्तर्मुखी होते हुए आत्मा तथा परमात्मा का दर्शन लाभ है। योग साधना के लिए प्राणायाम, अर्थ सहित जप का अभ्यास और मन्त्रार्थ चिन्तन का अभ्यास आवश्यक है।

५—शिक्षण—प्रत्येक आर्यसमाज को धर्म, संस्कृति, सभ्यता और आत्म-चिन्तन के विचारों का प्रसार करने के लिए शिक्षा को भी उसी दिशा में ढालना चाहिए। शिक्षा ऐसी हो जिसके द्वारा नवयुवक तथा नवयुवतियों को भी भौतिक और आध्यात्मिक जीवन की शिक्षा आर्यसमाज दे सके। शिक्षा एकांगी न हो अर्थात् केवल मात्र अक्षर ज्ञान ही शिक्षा का लक्ष्य न हो। जागरण उसका उद्देश्य हो। आर्यसमाज की सभी शिक्षा संस्थाओं में नैतिक धार्मिक शिक्षा अनिवार्य हो, जिससे वैदिक धर्म का अन्य धर्मों से तुलनात्मक परिचय प्राप्त हो।

६—नवयुवकों तथा नवयुवतियों को आर्यसमाज की ओर आकर्षित करने के लिए वैदिक धर्म के विषय में संवाद, भाषण और कविताओं आदि का कार्यक्रम देकर प्रोत्साहित करना चाहिए। साथ ही शारीरिक विकास के लिए व्यायाम आदि की रुचि का कार्यक्रम भी होना चाहिए और सभी प्रकार से ये नवयुवक अनुशासनप्रिय होते हुए धर्मप्रिय हों।

७—पिछड़े वर्ग में सेवा—प्रत्येक प्रान्त की प्रतिनिधि सभा अपना कर्तव्य जाने कि उसके प्रान्त में कम से कम एक ऐसा "सेवाश्रम" हो जिसमें जाति के उपेक्षित बच्चों को, युवा वर्ग को अथवा प्रौढ़ वर्ग को शिक्षा, स्वास्थ्य सेवा और कुटीर उद्योग के माध्यम से सहायता मिले। उनका जीवन स्तर गिरने न पाये अपितु उसमें निरन्तर उन्नति हो।

८—आर्यसमाज के अधिकारियों में आज सब से बड़ी कमी यह है कि पुराने लोगों की भांति जनसम्पर्क का कार्यक्रम लुप्त हो गया है, जिसके परिणामस्वरूप आर्य सदस्यों में सहानुभूति, स्नेह और हित की भावना नहीं रही।

आवश्यक है कि इस कार्यक्रम को पुन: शुरु किया जाये। कम से कम मास में एक सप्ताह अथवा कुछ दिन, जैसी भी सुविधा हो, सभी सदस्यों के सुख-दुःख का पता और सहायता की आवश्यकता को जाना जाय, जिससे सभी आर्य सम्पर्क कार्यक्रम के द्वारा बृहद् परिवार का रूप ले सकें।

यदि उपरोक्त विचारों को भावी वर्षों में सक्रिय रूप से अपनाया जाये, तो मेरे विचार में निश्चय ही आर्यसमाजों की उन्नति होगी।

ओम्प्रकाश त्यागी
महामन्त्री
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

निर्वाचन

इस वर्ष आर्य समाज बैंकौक के कार्य कर्त्ताओं का जो चुनाव आर्य समाज के विधान के अनुसार हुआ है वह इस प्रकार है:—

१. प्रधान—श्री सहदेव सिंह
२ उप-प्रधान—श्री चन्द्रिका सिंह
३. मन्त्री—श्री संग्राम सिंह
४. उप मन्त्री—श्री दिनेश सिंह
५ पुस्तकाध्यक्ष—श्री वेद प्रकाश मौर्य
६. कोषाध्यक्ष—श्री पलकधारी चन्द
७. निरीक्षक—श्री नरसिंह शाही

—संग्राम सिंह मन्त्री
आर्य समाज बैंकाक

वेद प्रचार

श्री योगेश्वर चन्द्र मन्त्री आर्य समाज जनकपुरी बी० ब्लाक दिल्ली सूचित करते हैं कि उनके क्षेत्र में गत मास "बैसाखी पर्व" महात्मा हंसराज का जन्म' "रामनवमी पर्व" "सालसा का जन्म" इत्यादि पर्व सार्वजनिक स्थानों पर बड़े उत्साह पूर्वक मनाए गए। इनमें विद्वानों के प्रवचनों का प्रबन्ध किया गया अनेक परिवारों ने अपने बच्चों के मुण्डन संस्कार कराए जनता पर बड़ा अच्छा प्रभाव पड़ा।

(पृष्ठ १ का शेष)

आस्ट्रेलिया से भारत भेजी गई गऊओं का फुट रिन्डर पैस्ट (पशुओं की मन्दी व संक्रामक बीमारी) का टीका लगते ही समाप्त हो गया था।"

भारतीय अधिकारियों का कथन है कि राजकुमारी ऐरेने ने युरोप और उत्तरी अमेरिका के उदार धनी मानी दानियों को भारत में गऊओं के भेजने का खर्च वहन करने की अपील की है।

गोहत्या विरोधी एक भारतीय संघठन ने भारत सरकार को प्रेरणा की है कि वह वायुयान द्वारा गऊओं को भारत लाए। परन्तु एयर इण्डिया के एक प्रवक्ता ने कहा है कि "पूर्णत: जवान गऊओं का वायुयान द्वारा लाया जाना अत्यन्त महंगा होगा जिसका वहन करना भारत सरकार के लिए असम्भव प्राय: होगा। गऊएं। १४० बछड़ों से भरे वायुयान को लंदन से दिल्ली भेजने का खर्च ही ६६ हजार पौंड बैठेगा।"

श्याम भाटिया (ओबजर्वर लंदन)
(ट्रिब्यून १-३-८२)

स्थानीय

दिल्ली हाईकोर्ट में ११ वर्षों से चले आ रहे मुकदमे का अन्त

आर्य शिक्षा समिति अनाज मंडी शाहदरा दिल्ली के विवाद का सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले द्वारा

ऐतिहासिक निर्णय

आर्य शिक्षा समिति अनाज मण्डी, शाहदरा, दिल्ली सिविल रिट सं० ४७-१९७५ आर्य शिक्षा समिति व अन्य विरुद्ध शिक्षा निर्देशक व अन्य केस दिल्ली उच्च न्यायालय द्वारा ११-२-८५ को दोनों पक्षों की सहमति पर माननीय न्यायाधीश ने सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले को निर्णय के लिए दे दिया।

हाई कोर्ट के इस आदेश के अनुसार सार्वदेशिक सभा के प्रधान ने दोनों पक्षों को अपना पक्ष प्रस्तुत करने हेतु स्वयं अथवा अपने वकीलों को भेजने के लिए निर्देश दिया। इसके अतिरिक्त यदि उनके पास कोई लिखित प्रमाण अथवा प्रतिवेदन हो तो उसे भी मंगाया गया।

सभा प्रधान जी ने दोनों पक्षों तथा उनके प्रतिनिधियों को कई बार सुनकर १६-४-८५ को आर्य शिक्षा समिति के सदस्यों की सूची निर्धारित करके घोषित कर दी और इसकी एक प्रति सभी निर्धारित सदस्यों को इस आदेश के साथ भिजवा दी गई कि २८-४-८५ को आर्य शिक्षा समिति का चुनाव भी सम्पन्न किया जायगा, वे सब उक्त तिथि में चुनाव में भाग लें।

सभा प्रधान जी के इस आदेश को एक पक्ष के ४ सदस्यों ने पुनः हाई-कोर्ट से स्टे लेने की कोशिश की किन्तु माननीय न्यायाधीश ने उनकी प्रार्थना को नकारा करते हुए एक निवेदन पत्र सार्वदेशिक सभा के प्रधान जी को लिखा कि वे उक्त व्यक्तियों को सुनाना उचित समझें तो चुनाव से पहले उनकी बात भी सुन लें, उन्हें आगे नियमित मानना अथवा न मानना यह सब अधिकार सभा प्रधान के सुरक्षित रहेंगे।

न्यायालय के इस प्रतिवेदन के आधार पर उक्त चारों व्यक्तियों के नाम सभा प्रधान जी की ओर से नोटिस भेजे गए कि वे २७-४-८५ को अपना पक्ष प्रस्तुत कर सकते हैं किन्तु चारों में से कोई भी प्रधान जी के सामने अपना पक्ष प्रस्तुत करने नहीं आया।

दिनांक २८-४-८५ को दोपहर २ बजे आर्य शिक्षा समिति की कार्यकारिणी तथा विद्यालय की प्रबन्ध समिति का चुनाव, आर्य समाज अनाज मण्डी, शाहदरा, दिल्ली में सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले की अध्यक्षता में सर्वसम्मति से निम्न प्रकार सम्पन्न हुआ।—

कार्यकारिणी समिति—

१—अध्यक्ष	श्री आनन्द प्रकाश शर्मा
२—उपाध्यक्ष	श्री फतचन्द पाण्डे
३—मन्त्री	श्रीमती डा० मंजू अग्रवाल
३—कोषाध्यक्ष	श्री रतनलाल गर्ग

सदस्य—सर्वश्री राजकुमार शर्मा, फकीरचन्द शर्मा, ज्ञान प्रकाश गुप्त बनवारी लाल (पदेन-प्रधान आर्य समाज अनाज मण्डी शाहदरा)

प्रबन्ध समिति—

१—प्रधान	श्री ओम्प्रकाश गुप्त
२—उप प्रधान	श्री मेघराज
३—प्रबन्धक	श्री निरंजनलाल गौतम
४—कोषाध्यक्ष	श्री जयभगवान गर्ग

सदस्य—सर्वश्री रघुनाथ प्रसाद शर्मा, बृजमोहन शर्मा, त्रिलोकी नाथ शुक्ला, श्रद्धानन्द (पदेन मन्त्री आर्य समाज)

इस चुनाव की सूचना शिक्षा निर्देशक, दिल्ली प्रशासन, क्षेत्रीय शिक्षा अधिकारी, बैंक आदि को भिजवा दी गई है। दिल्ली उच्चन्यायालय को इस केस के निर्णय की प्रति भी शीघ्र भिजवाई जा रही है।

कार्यालय सचिव—सा. सभा

बुलगारिया ने अल्पसंख्यकों को पृथकता समाप्त कर दी

बुलगारिया की कम्यूनिस्ट गवर्नमेंट ने मुसलमान नागरिकों मुख्यतः तुर्कियों को राष्ट्रीय धारा में विलीन करने के लिए कार्यवाही शुरू कर दी है। उनकी संख्या एक करोड़ की कुल आबादी में १० लाख बताई जाती है।

इन नागरिकों को अपने मुस्लिम नाम बदलकर बुलगारियन नाम रखने के आदेश दिए गए हैं और इनका सख्ती से पालन कराया जा रहा है। इतना ही नहीं तुर्की भाषा को छोड़ने की उनको आज्ञा दी गई है।

उद्घोषित उद्देश्य

इस अभियान का उद्घोषित उद्देश्य उन मजहबी अनुयायियों को जो अपने नामों और राष्ट्रीयता का दुरुपयोग करते हैं, साम्यवादी राज्य और सम्मिलित संस्कृति के हितों की रक्षार्थ मुख्य धारा में शामिल करना है।

एक समीक्षक की दृष्टि में इस्लाम के उन्हीं तत्वों की सन्तानों को जो अन्य देशों में स्थानीय संस्कृति का विनाश करने में माहिर (विख्यात) थे अपनी ही कड़वी दवाई का जायका (स्वाद) लेना पड़ रहा है। एक ओर बुलगारिया में इस्लाम की रक्षार्थ जहां वे संघर्षरत हैं दूसरी ओर बुलगारिया में मुसलमानों को अत्याचार का शिकार बनाए जाने की शिकायतें भी हो रही हैं। वे कह रहे हैं कि बुलगारिया की १ करोड़ आबादी में मुसलमान १० लाख नहीं वरन २५ (पच्चीस) लाख हैं।

राष्ट्रीय धारा में विलीन किए जाने के इस अभियान में मुसलमानों को पैट्रोव, दिमिट्रोव आदि नाम रखने के लिए विवश किया जाना भी शामिल है।

इस ओर जबर्दस्ती के निराकरणार्थ कड़ा संघर्ष करने के लिए मुसलमानों को विवश किया हुआ है जिसको दबाने के लिए बुलगारिया के प्रशासन को पुलिस और सेना का प्रयोग करना पड़ रहा है, मुख्यतः तुर्की मुस्लिम बहुल क्षेत्रों में।

समाचार में कहा गया है कि बुलगारिया के कम्यूनिस्ट प्रशासन ने मुसलमानों के स्कूल बन्द कर दिए हैं। मस्जिदों को गोदामों में परिवर्तित तथा कब्रगाहों का बुलडोजरों से सफाया कर दिया गया है। हजारों मुसलमान जेलों में बन्द कर दिए गए हैं और हजारों ही मौत के घाट उतार दिए गए हैं।

तुर्की गवर्नमेंट के प्रति शिकायत

इन अत्याचार पीड़ितों को टर्की गवर्नमेन्ट के विरुद्ध शिकायत है कि उसने अपने ही सगे सम्बन्धियों के मामले में प्रशासकीय स्तर पर कोई सीधी प्रभावी कार्यवाही करने से इन्कार कर दिया है। अवश्य उसने शरणार्थियों को तुर्किस्तान में शरण देना स्वीकार किया है। तुर्की के प्रधान एवरेन ने वैसे बुलगारिया गवर्नमेन्ट को रैटियक विरोध पत्र भी भेजा है।

लन्दन के इस्लामी पत्र की प्रतिक्रिया

लन्दन के इस्लामिक रिव्यू अरबिया के अनुसार बुलगारिया के निवासी अल्पसंख्यक तुर्कियों की जिनकी वहां काफी संख्या है, मुस्लिम सांस्कृतिक पहचान को मिटाने के उद्देश्य से ही प्रशासकीय दमन चक्र में तेजी आ गई है यद्यपि यह क्रम १०० वर्ष से चलता आ रहा है तथापि कम्यूनिस्टों के निर्दय हथकण्डों के माध्यम से ही हाल के कुछेक वर्षों में अत्याचारों ने भयंकर रूप ले लिया है।

बुलगारिया प्रशासन का स्पष्टीकरण

बुलगारिया गवर्नमेन्ट के एक प्रवक्ता का कहना है कि अपने देश के इन भाई बहिनों को, जिनकी राष्ट्रीय भावना विदेशी आक्रान्ताओं के द्वारा शताब्दियों पर्यन्त कुंठित या लुप्त की जाती रही है पुनः बुलगारियन संयुक्त परि-

सामायिक चर्चा–

ईसाई प्रचारक गिरफ्तार

यह जानकर प्रसन्नता हुई कि नेपाल प्रशासन ने इस एकमात्र हिन्दू राज्य में ईसाइयत का प्रचार करने के कारण एक दर्जन से अधिक प्रचारकों को गिरफ्तार किया है और यह अभियान प्रशासन की ओर से जारी है।

इस सम्बन्ध में यह कहना बहुत जरूरी है कि नेपाल जैसे सीमावर्ती स्वतन्त्र राज्य में सत्ता की राजनीति से प्रभावित मात्र संख्या की वृद्धि के लिए, ईसाइयत का पदार्पण और विस्तार वहां हिन्दू धर्म और राष्ट्रीयता के लिए खतरा है विशेषतः तब जब कि वह प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष राजनीतिक प्रभाव बढ़ाने और सत्ता प्राप्त करने का हथियार बनी हुई हो, वहां भारत के विरुद्ध दुरभि संधियों के क्रियान्वयन का मार्ग भी साफ करना या ऐसा करने का सन्देह पैदा करना भी है।

आवश्यकता इस बात की है कि इस विषय को राजनीतिक लाभालाभ की दृष्टि से नहीं अपितु हिन्दू धर्म, हिन्दुओं की राष्ट्रीयता और नेपाल सहित भारत की अखण्डता एवं एकता की रक्षा के परिपेक्ष्य में देखना चाहिए।

श्रीयुत छोटूसिंह जी ऐडवोकेट रोग मुक्त

सार्वदेशिक सभा प्रधान श्रीयुत रामगोपाल जी शालवाले को प्राप्त पत्र से यह जानकर बड़ी प्रसन्नता हुई कि श्रीयुत छोटूसिंह जी जिनका वर्षों से जयपुर के एक हस्पताल में उपचार हो रहा था रोग मुक्त हो गए हैं और उन्हें हस्पताल से मुक्त किया जा रहा है। पूर्ण आशा है कि वे शीघ्र ही पूर्ण आरोग्य लाभ कर अपनी नियमित गतिविधियों में संलग्न होने में समर्थ हो जायेंगे।

श्री छोटूसिंह जी ने एक सन्देश में उन समस्त आर्य समाजों, आर्य बन्धुओं, अपने मित्रो, सहयोगियों एवं हितैषियों के प्रति उनकी शुभकामनाओं के लिए आभार प्रकट करते हुए कहा है कि उनसे उन्हें बड़ा संबल प्राप्त हुआ है।

धार में वापस लाया जा रहा है। बहुत से लोगों ने इस्लामी मदान्धता से अपने को मुक्त कर लिया है। हमें एक साथ मिलकर कम्यूनिज्म की ओर आगे बढ़ना है।".

उल्लेखनीय है कि बुलगारिया गवर्नमेंट ने 'अल्पसंख्यक को अमान्य कर दिया है साथ ही सब नागरिकों के लिए अपनी राष्ट्रीयता बलगेरियन लिखना सिखाना अनिवार्य कर दिया गया है और ऐसा बलात भी कराया जा रहा है।

संसार भर के अधिसंख्य मुसलमान राष्ट्रीय धारा में विलीन किए जाने की इस कार्यवाही को इस्लाम विरुद्ध उदघोषित कर रहे हैं। उन्हें इस बात पर बड़ा रोष है कि इस्लामिक गवर्नमेंट इस विषय में मौन क्यों हैं ?

इस प्रकार के अत्याचारों का घोर विरोध करते हुए भी हम यह प्रश्न किए बिना न रहेंगे कि क्या मुख्यतः भारत के अल्पसंख्यक कहे जाने वाले वर्ग और प्रशासन इस घटनाक्रम से कोई पाठ ग्रहण करेंगे ? क्या बहुसंख्यक वर्गों के वे लोग जिनकी आस्था मातृभूमि एवं राष्ट्रभूमि भारत मे न होकर अन्यत्र है तथा राजनीतिक दल या उनके अधिसंख्य सदस्य एवं प्रशासकीय मशीनरी के वे अंग जो तुष्टीकरण की नीति से बहु संख्यकों को उनके हितों के बलिदान से अल्पसंख्यक वर्गों में परिवर्तित करते हैं, हवा के रूख को समय रहते पहचानेंगे ?

निश्चय ही उन राष्ट्रवादी अल्प संख्यक वर्गों को या उनके अंगों को यह देखकर प्रसन्नता होगी कि वर्तमान भारत में अल्पसंख्यक वर्ग अपेक्षाकृत सुखी और निश्चिन्त जीवन व्यतीत कर रहे हैं और निहित स्वार्थ रखने वाले उनके कट्टरपंथी बन्धु इस प्रकार के घटनाक्रम के परिपेक्ष्य में 'उपर्युक्त तथ्य को झुठला न सकेंगे और नाही भ्रम पैदा करने में पूर्णतः सफल ही हो सकेंगे।

धीमान जी का महान् वियोग

श्रीयुत मिहिर चन्द धीमान (तुलसी निवास ११५ बनारस रोड सल्किया हावड़ा) अब हमारे मध्य नहीं रहे, यह लिखते हुए अत्यन्त दुःख होता है। उन्होने मुख्यतः बंगाल में आर्य समाज की जड़ जमाने में सराहनीय कार्य किया। कलकत्ता २१ विधान सरणि मार्ग स्थित आर्य समाज तथा आर्य प्रतिनिधि सभा बंगाल को उन्नत एवं शक्तिशाली बनाने में जिन आर्य श्रेष्ठियों का हाथ रहा उनमें धीमान जी का एक विशिष्ट स्थान रहा।

पंजाब के आर्य बन्धु बाहर जहां जहां गए उन्होंने आर्य समाज की जड़ जमाने और उसे चमकाने का श्रेय प्राप्त किया तथा कर रहे हैं। श्री धीमान जी भी इस श्रेय में बड़ी हद तक भागीदार रहे।

वे बड़े प्रतिभावान, कुशल कर्मठ धीर वीर बड़ी सूझबूझ के आर्य श्रेष्ठि थे। सार्वदेशिक सभा के साथ सदस्य, अन्तरंग सदस्य आदि के रूप में उनका लम्बे समय तक सम्पर्क बना रहा। १९४८ के सार्वदेशिक आर्य महासम्मेलन कलकत्ता को सफल बनाने में उनका भी विशेष योगदान रहा था। उसी अवसर पर हमें उनकी लोकप्रियता, प्रभाव और कार्य कुशलता की बड़ी सुन्दर झांकियां देखने को मिली थी।

वस्तुतः उनका निधन आर्य समाज की महती क्षति है।

परमात्मा से दिवंगत आत्मा की सद्गति के लिए प्रार्थना करते हुए उनके परिजनों के प्रति हार्दिक समवेदना प्रकट करते हैं।

सभा प्रधान श्री रामगोपाल जी शालवाले ने अपने शोक सन्देश में ठीक ही कहा है कि श्री धीमान जी के निधन से जो क्षति हुई है उसकी पूर्ति असंभव नहीं तो कठिन अवश्य है और उनका अभाव समय समय २ पर खटकेगा।

वे अपने पीछे पत्नी (श्रीमती भगवती देवी, २ पुत्रियां विद्या, कौशल्या और सुपुत्र गुरदेव धीमान छोड़ गए हैं।

प्रेरक संस्थान

शराबी का हृदय परिवर्तन

वह पक्का शराबी था। मित्रों के अलावा ग्राम में आने वाले साधुओं को भी शराब पिलाने का आदी था।

एक दिन एक आर्य सन्यासी प्रचारार्थ उसके ग्राम में पहुंचे और गांव से बाहर जाकर ठहर गए। रात्रि के समय वह पियक्कड़ शराब पीकर अपने साथियों के साथ उन संन्यासी के पास पहुंचा और उनसे पूछा कि क्या उनके पास कोई बर्तन है। संन्यासी महोदय ने पूछा कैसा बर्तन, तो उसने शराब पीने के लिए बताया। इस पर उन्होंने उसे कटोरा दे दिया। कुछ क्षण के पश्चात वह संन्यासी जी के पास आया और उन्हें भी शराब पीने की प्रेरणा करने लगा। संन्यासी महोदय के इन्कार करने पर वह बिगड़ उठा और उन्हें गालियां देने और धमकाने लग गया परन्तु संन्यासी अपने निषेध पर दृढ़ रहे।

दूसरे दिन जब उसका नशा उतर गया तो उसे रात की बात याद आई, और वह अपने साथियों को साथ लेकर नहीं वरन् अकेला ही संन्यासी महोदय के पास गया और कहा 'महाराज ! मुझे कोई प्रायश्चित बताए" क्योंकि मैंने आपको गालियां दी थीं।"

संन्यासी जी ने कहा "यदि आप प्रायश्चित करते हैं तो आज से शराब पीना छोड़ दो।" उसने कहा "महाराज ! मैंने इससे पहले अनेक साधुओं को शराब पिलाई है और गालियां भी दी हैं परन्तु जिस तरह आपने शांति से गालियां सुनीं और अब धैर्य से उपदेश दे रहे हैं इससे मैं आपके सामने सिर्फ शराब ही नहीं बल्कि आज से चोरी, जुआ और व्यभिचार भी छोड़ता हूं तो सन्यासी महोदय ने उसे आशीर्वाद दिया और कहा तुम्हारी यह सुमति सदा बनी रहे।"

उसका नाम था सेवासिंह। इसके बाद यही सरदार सेवासिंह धर्मात्मा व्यक्ति हो गए। लोग आश्चर्य चकित थे। पुराने साथियों ने कई बार उन्हें व्यसनों में फसाने की चेष्टा की परन्तु वे सफल न हुए।

—रघुनाथ प्रसाद पाठक

महर्षि दयानन्द का वार्त्तालाप और उपदेश

गीता को प्रक्षिप्त कहना मान्य नहीं

प्रयाग के कुम्भ मेले पर प्रचार करने के उपरांत महाराज मिर्जापुर चले गए। वहां मूर्ति पूजन और कुरीतियों का बड़े बल से खंडन होने लगा। मिर्जापुर में दास कृष्णदास नामक एक वैरागी महन्त रहता था। वह महाभारत के संशोधन में लगा हुआ था। वास्तव में वह महाभारत में चौबीस हजार श्लोक रखना चाहता था। परन्तु उस समय उसने जो पुस्तक छपवाई थी उसमें तीन हजार ही श्लोक थे। उसने भगवद् गीता को भी प्रक्षिप्त समझकर निकाल दिया था।

सुगन्धि लाल नामक एक धनी व्यक्ति गीता का बड़ा भक्त था। वह वैरागी बाबा की इस अनधिकार चेष्टा से बहुत ही चिढ़ गया। उसने बाबा के इस अनर्थ की दुहाई महर्षि के आगे आकर दी। महाराज ने कहा 'उनका गीता को प्रक्षिप्त कहना सत्य नहीं है। इस पर जब उनका मन करे शास्त्रार्थ करलें।" छोटूराम नामक एक व्यक्ति स्वामी जी से उपनिषद पढ़ने आया करता था। उसने महाभारत की वह पुस्तक भी स्वामी जी को लाकर दिखाई। महाराज ने सबके सामने उस पुस्तक को दोषपूर्ण सिद्ध कर दिया। छोटूराम ने बाबा जी को भी स्वामी जी की सम्मति सुना दी। इससे बाबा रुष्ट तो बहुत हुए परन्तु शास्त्रार्थ से यह कहकर टालते रहे कि हम दूसरे के स्थान पर नहीं जाया करते। स्वामी जी ने उन्हें बहुतेरा समझाया कि वह स्थान भी हमारा नहीं है। वहां नहीं आ सकते तो पास के बगीचे में आ जाइए या गंगा के तट पर बैठकर विचार कर लीजिए परन्तु बाबा जी ने एक न मानी। वह इतना भयभीत हुआ कि जिस रास्ते पर स्वामी जी आया-जाया करते थे उसने उधर जाना ही छोड़ दिया।

(२)

मूर्तियां न वर दे सकती है और न शाप

मिर्जापुर में जगन्नाथ ने हाथ जोड़कर स्वामी जी से विनय की 'हम कैसे जानें कि मूर्ति पूजन अच्छा नहीं है ?" स्वामी जी ने उत्तर दिया 'मूर्ति पूजन के लिए वेद में कोई आज्ञा नहीं है और ईश्वर सर्वज्ञ है उसे कोई वश में नहीं कर सकता। तुम मूर्तियों को ईश्वर मानते हो और फिर अपने हाथ से ताला लगाकर उन्हें मन्दिर में बन्द कर देते हो। तुम्हीं सोचो कि इनमें ईश्वरीय शक्ति कहां है ? ये न वर दे सकती हैं और न शाप। ये जड़ रूप हैं। यदि कल्याण चाहते हो तो हृदय में परमात्मा का पूजन किया करो।"

अन्त में जगन्नाथ ने नमस्ते करके कहा "हमें लोगों ने बहका रखा था कि आप रामकृष्ण आदि के विरुद्ध बोलते हैं। परन्तु यह तो आज ही ज्ञात हुआ कि आप केवल मूर्तियों का खण्डन करते हैं।" तत्पश्चात वे लोग चले गए।"

शिक्षाएं ग्रन्थों से

अधर्मी का नाश एक दिन अवश्य होता है

मनुष्य निश्चय करके जाने कि इस संसार में जैसे गाय की सेवा का फल दूध आदि शीघ्र नहीं होता वैसे ही किए हुए अधर्म का फल भी शीघ्र नहीं होता। किन्तु धीरे धीरे अधर्म कर्त्ता के सुखों को रोकता हुआ सुखों की जड़ों को काट देता है। पश्चात् अधर्मी दुःख ही दुःख भोगता है।

(संस्कार विधि, गृहस्थ)

अध्यात्मसुधा

नियम-पालन

डा० कृष्णलाल आचार्य

स्वतन्त्रता और नियम-पालन दोनों साथ-साथ चलते हैं। स्वतन्त्रता का अर्थ उच्छृंखलता कदापि नहीं। नदी स्वतन्त्र है, परन्तु वह एक निश्चित मार्ग पर तटों के बीच चलती है। और जब भी वह उस मार्ग को छोड़ देती है, अथवा तट तोड़ कर बाहर निकलती है, फैल जाती है तो विनाश का कारण बनती है। जब शिशु छोटा होता है, परतन्त्र होता है तो उसे दूसरों के आश्रय की आवश्यकता होतीहै, माता-पिता उसका ध्यान रखते हैं परन्तु जैसे ही वह बड़ा होता है, स्वतन्त्र होता है तो उसे अपना बुरा-भला स्वयं सोचकर स्वास्थ्य, शिक्षा आदि के सम्बन्ध में नियमों पर आचरण करना होता है अन्यथा उसके दुष्परिणाम भावी जीवन में उसके सामने आते हैं। पूर्वजों के अनुभवों से बहुत कुछ वह सीखता है। नियम बन्धन नहीं, मुक्ति का मार्ग है।

प्रकृति में हम सर्वत्र नियम देखते हैं। विज्ञान इन नियमों का ही अध्ययन करता है। जैसे शरीर की एक-एक नाड़ी नियमपूर्वक कार्य करके शरीर का संचालन करती है और उसमें विकार आने पर शरीर में विकार आ जाता है, उसी प्रकार एक-एक परमाणु अपने निश्चित मार्ग पर चलता हुआ पदार्थों के स्वरूप को धारण करता है, शक्ति बढ़ाता है और उसमें विस्फोट होने पर विनाश होता है। हां, यदि उसे नियन्त्रण में, नियमों में बांधा जाये तो वह निर्माण में भी सहायक होता है।

वेद के अनुसार परमेश्वर स्वयं नियमों का स्वामी है, पालक है। इसी लिए उसे एक ओर जहां पूर्ण स्वतन्त्र, सबका नेतृत्व करने वाला अग्नि कहा है वहीं उसे नियमों का स्वामी भी कहा है—'अग्ने व्रतपते' विज्ञान का नियम है कि प्रत्येक क्रिया की उतनी ही विरोधी प्रतिक्रिया अवश्य होती है; इसी प्रकार व्यक्ति तथा राष्ट्र जो कुछ करता है उसका उसी प्रकार का फल ईश्वर अवश्य देता है। वेद में ईश्वर द्वारा क्षमा का कोई नियम नहीं है। यदि ऐसा हो तो बहुत सरल है आप बुराई करते जायं और वह क्षमा करता जाये। कहीं नियम की, संयम की आवश्यकता ही नहीं।

तो क्या ईश्वर दयालु नहीं है ? ईश्वर को तो परम दयालु कहा गया है। वह तो ऐसा मित्र है कि जिसका मित्र न तो कभी मारा जाता है और न ही पराजित होता है—'न यस्य हन्यते सखा न जीयते कदाचन।' परन्तु कोई उसका मित्र बने तो सही। वह प्रकाशस्वरूप इन्द्र है, दीप्ति तथा तेज से युक्त है। वैसा ही उसका मित्र होना चाहिए जिसने नियमपालन से शरीर और बुद्धि दोनों को तेजस्वी बनाया है, जो चलता है, सत्य मार्ग का अनुसरण करता है। आलस्य में नहीं रहता—'इन्द्र इच्चरतः सखा।' गति ही जीवन का नियम है। जहां जीवन है, वहां गति है, वहां कर्म है। हृदय में निरन्तर गति होती है। हृदय-गति रुकी तो जीवन समाप्त। नाड़ी में स्पन्दन होता है तो हम कहते हैं कि वह जीवित है। नाड़ी रुकते ही मृत्यु।

इसीलिए वेद कहता है कि कर्म करते हुए ही सौ वर्ष तक जीने की इच्छा करे—कुर्वन्नेवेह कर्माणि। प्रकृति का नियम ही ऐसा है कि प्रत्येक आदमी कर्म करता ही है। तभी तो गीता में कहा है कि कोई भी प्राणी एक क्षण भी कार्य किए बिना नहीं रह सकता—न हि कश्चित् क्षणमपि जातु तिष्ठत्यकर्मकृत्। कार्यते ह्यवशः कर्म सर्वः प्रकृतिजैर्गुणैः॥

अब प्रश्न यह है कि कार्य करना नियम है तो इसका भी नियम होना चाहिए कि कौन सा कार्य किया जाये और कौन सा न किया जाये। बड़े-बड़े क्रान्तदर्शी विद्वान् भी इस विषय में अनिश्चय की स्थिति में आ जाते हैं—कि कर्म किमकर्मेति कवयोऽप्यत्र मोहिताः। इसीलिए वेद में सूत्ररूप में कर्तव्य क्या है, यह समझा दिया है—मा गृधः कस्यस्विद्धनम्। अर्थात् किसी के भी धन का लोभ न करो। यह लोभ ही अकर्मण्यता, चोरी, डाके, बलात्कार, तस्करी, रिश्वत, भ्रष्टाचार का मूल है। इसीलिए राज्य इनके विरुद्ध नियम बनाता है। इन्हीं को समाज विरोधी कार्य कहा जाता है। लोभ मनुष्य को राक्षस बना देता है। यह लोभ ही तो है जो दहेज मांगने

मातृत्व की ओर

माता की पदवी प्राप्त करने वाली कन्याओं के जानने योग्य बातें

(४)

आज सुबह मैंने बुढ़िया के कमरे का फर्श फिनाइल से धुलवाया था। बुढ़िया के रिश्तेदारों के हाथ भी फिनाइल से धुलवाए थे। बुढ़िया को दवाई भी हाथ धुलवाने के बाद दी और उन सब लोगों को फिनाइल का प्रयोग करने की हिदायत दी थी। यदि ये लोग मेरी हिदायत्त पर चलेंगे तो कीटाणु मर जायेंगे और हैजे का प्रसार रुक जायेगा।

दमयन्ती ने सन्देह से कहा 'जीजी! यह तो जादू की सी बात मालूम होती है। क्या तुम्हें निश्चय है कि कीटाणु मर जायेंगे और हैजा फैलने से रुक जायेगा?"

कमला हसी और बोली 'कीटाणु जरुर मर जायेंगे। मुझे तो पूर्ण निश्चय है।"

अब तपेदिक को ले लो। यह बीमारी बड़ी घातक होती है। इस बीमारी में खांसी के द्वारा फेफड़ों में बहुत से कीटाणु थूक के जरिए बाहर आते हैं और तन्दुरुस्त आदमी के शरीर में प्रविष्ट हो जाते हैं। थूकना भयंकर रोगों के प्रसार का एक मामूली तरीका है। रोगियों के मल-मूत्र को घरों के आस-पास और सड़कों पर डाल देने तथा उन तालाबों में नहाने और उनका जल पीने से जहां मनुष्य अपनी गन्दगियों का परित्याग करते हैं भयंकर बीमारियां फैलती हैं खराब पानी भी बीमारी की जड़ होती है। यदि तालाब का पानी पिया ही जाय तो उसे गर्म करके पीना चाहिए। इस पर दमयन्ती ने प्रसन्न होकर कहा जीजी!! ठीक कहती हो। एक बार बोर्डिंग हाउस के दोनों कुएं सूख गए थे और नलों का पानी भी बन्द हो गया था। तालाब से पानी की व्यवस्था की गई थी। इस्तेमाल से पहले पानी गर्म किया जाता था। अध्यापिका प्रमिला बाई खड़ी होकर अपने सामने पानी गर्म कराया करती थी।"

कमला ने कहा 'ठीक कीटाणु तेज गर्मी में नही रह सकते। पीने से पूर्व दूध को गर्म करके कीटाणु रहित कर लेना चाहिए। सूर्य की गर्मी में भी कीटाणु मर जाते हैं। तुम्हे जब कभी अपने कपड़ों में कीटाणुओं के होने का भय हो तो उन्हें पानी मे उबालकर गर्म कर लो। वे कीटाणु रहित हो जायेंगे।

अब मैं तुम दोनों से यह प्रश्न करती हूं कि बताओ बीमारी से बचने का साधारण (आम) नियम क्या है? इस प्रश्न ने दोनों लड़कियों को चक्कर में डाल दिया और वे आश्चर्य और लज्जा से एक दूसरे की तरफ देखने लग गई। कमला उठी और रसोई में जाकर एक थाली उठा लाई जिसे सुशीला ने खाना खाने के बाद बिना धोए रख दिया था। कमला ने सुशीला को थाली देते हुए कहा "जाओ इसे धो लाओ" सुशीला इसका मतलब न समझ सकी। वह सोचने लगी हमारे पाठ से इस थाली का क्या सम्बन्ध हो सकता है? बहिन की आज्ञा का पालन करने के लिए सुशीला नल पर गई और उस पर पानी डालकर और हाथ से मलकर बहिन के पास ले आई। कमला ने थाली को देखकर पूछा—'शील! क्या यह साफ है।' शील ने उत्तर दिया "हां! जीजी!! यह साफ है।" कमला ने कहा 'इसके काले धब्बों को देखो! सुशीला ने कहा 'जी जी! ये नहीं छूट सकते।

इस पर दमयन्ती उठी और कहा "लाओ मैं साफ करूं यह कहकर वह नल पर गई और राख से धो-पोंछकर ले आई। थाली के धब्बे छूट गए थे परन्तु उसमें चमक नहीं आई थी। कमला ने यह देखकर मुस्कराकर कहा—' धब्बे मिट गए है। परन्तु यह साफ नहीं देख पड़ती। अब इसकी सफाई की मेरी बारी है। वह कहकर वह उठी और उसे अच्छी तरह साफ करके कपड़े से पोंछा और उसमें शीशे जैसी चमक आ गई। लड़कियों को दिखलाकर कमला ने पूछा—"क्या यह अब साफ है दोनों लड़कियों ने लजाते हुए कहा— "हां, अब यह साफ है।" परन्तु तुम दोनों ने मुझे कहा था कि पहले ही यह साफ थी। क्या सफाई की भिन्न-भिन्न किस्में होती हैं?

सुशीला ने शर्माते हुए कहा—"वास्तव में पहले यह साफ नहीं थी। एक प्रकार से साफ जरूर थी।

कमला ने कहा कि यदि मैं इस थाली को उस बीमार बुढ़िया के घर ले जाती तो मुझे कैसे निश्चय होता कि उसमें कीटाणु नहीं थे।

दमयन्ती ने कहा—'आप इसे फिनायल साबुन और गर्म पानी से धोकर कीटाणु रहित करती।

ठीकहै तुम लोग इस विषय को समझ गई हो। अब तुम बीमारी को रोकने का साधारण नियम बताओ।

सुशीला ने तत्काल उत्तर दिया—"सफाई रखना साधारण नियम है,

कमला ने कहा—"ठीक, गन्दगी और बीमारी साथ-साथ चलती है। घर के आस-पास के कूड़े कचरे और सड़कों की गन्दगी से रोग पैदा होते हैं। दूषित थूक भी बीमारी की जड़ होता है। तालाबों का गन्दा पानी जहरीला होता है। शरीर के मैल से दाद इत्यादि घृणित रोग फैलते हैं। बीमारी से बचने का एक मन्त्र स्वच्छता है। (क्रमश)

की प्रेरणा देता है, जो डर को दिखलाता है—उसका मोल लगवाता है, जो दूसरे को कन्या और अपनी बहू तक को कष्ट पहुंचाने की, उसे मारने की प्रेरणा देता है।

ईश्वर ऐसे नियम-विरोधी, समाज-विरोधी राक्षसों को अवश्य दण्डित करता है। उससे छिपकर, बचकर कोई नहीं जा सकता। वह दयालु है तो इस रूप में कि वह नियम सिखाता है, हमें सन्मार्ग पर लाता है। गुरु के समान उसका दण्ड ही कृपा है। उसके सत्य-नियम का पवित्र पुण्य सर्वत्र फैला हुआ है—ऋतस्य तन्तुर्विततः पवित्र आ। अच्छा कार्य करने वाले को सत्य की नौकाएं पार लगा देती हैं, सफल बनाती हैं, सफल बनाती है—सत्यस्य नावः सुकृतमपीपरन्।

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार के दीक्षांत समारोह पर

श्री पं. सत्यदेव भारद्वाज वेदालंकार

उपप्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

का

दीक्षान्त भाषण

(१३-४-८५)

"तत्सत्"

"सत्यं शिवं सुन्दरम्"–"सत्यं परं धीमहि"

कुलं पवित्रं जननी कृतार्था वसुन्धरा पुण्यवती च तेन।
अपारसंवित्सुखसागरेऽस्मिन् लीन परे ब्रह्मणि यस्य चेतः॥

इन शब्दों के साथ, सौम्य-स्वभाव नवदीक्षित नवस्नातको ! मेरा स्नेह और सत्कार तुम्हें स्वीकृत हो।

विश्वविद्यालय गुरुकुल कांगड़ी के अधिकारिगण ने इस वर्ष दीक्षान्त भाषण देने के लिए निमन्त्रित कर मुझे आहूत किया है, इसके लिए मैं सबका आभारी हूं। मुझे अपने गुरुकुलों से विशेष स्नेह है, जो स्वाभाविक है, क्योंकि मैं भी आपकी तरह से ही, गुरुकुलों में ब्रह्मचारी रहते हुए, इसी कुलभूमि से स्नातक रूप में दीक्षित हुआ था। मेरे मन, बुद्धि और आचार-विचार पर गुरुकुल शिक्षा का अमिट प्रभाव रहा है और उसके द्वारा संसार की सब तरह की भिन्न-भिन्न विपदाओं, संकटों और आधि व्याधियों में से गुजरते हुए प्रभु में अगाध विश्वास रखते हुए, किसी भी रूप में सदा कर्मयोगी निःश्रेयस मार्ग का दर्शन करता रहा हूं। जीवन-यात्रा में समय-समय पर गुरुकुल बन्धुओं से मिलते हुए सदा ऐसा अनुभव हुआ है जैसे अपने सगे जैसे गुरु-भाइयों से मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ हो। इस मिलन में कितना स्नेह, श्रद्धा, सरलता और पारस्परिक विश्वास प्राप्त होता है, इसके बारे में तो यही कहूंगा—"स्वयं तदन्तःकरणेन गृह्यते।"

जब गुरुकुल कुरुक्षेत्र में अध्ययन किया तो वैदिक ब्रह्मचर्य जीवन में 'भगवद्गीता' ने अद्भुत जीवन-ज्योति के लिए वैदिक कर्मयोग का अमिट आलोक प्रदान किया। गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ में भारत की राजधानी दिल्ली या इन्द्रप्रस्थ के उत्थान और पतन का इतिहास सदा सामने रहा और जब गुरुकुल कांगड़ी की पुरानी और नई भूमि मे आवास हुआ तो गंगा का वातावरण सदा के लिए जीवन पर छा गया। गंगा अपने साधारण स्वरूप को छोड़कर 'ज्ञान गंगा' के प्रवाह में हमें तैराती थी, डुबकियां दिलाती थी और अनमोल जीवन-प्रवाह का मधुर सन्देश देती थी। यहां पर ही अनुभव होता था कि गंगा के साथ खड़े पर्वत, जंगल, नदी नीर, सभी अपना अपना संदेश लिए हमें जीवन के विकासक्रम को दे रहे थे। गुरुजनों की कृपा से हमें कर्तव्य का उद्बोधन होता था और जिस कुलमाता की गोद में हम प्रेम से पल रहे थे उसके संवेदन से सहसा हृदय की धड़कनों में एक गूंज उठती अनुभव होती थी, जिसके स्वर थे :—

वन पर्वत में नदी नीर में आता जो पाया संदेश।
तेरी पुण्यपताका लेकर फैला दूंगा देश-विदेश॥

सचमुच यह भावना सदा साथ में रही और तदनुसार भारत तथा विश्व के विविध प्रदेशों में यथाशक्ति और यथासम्भव वैदिक पुनीत सन्देश पहुंचाने में मैंने तन, मन, धन आदि सभी साधनों से कार्य किया है। आर्य संस्कारों के रंगे सभी अपने पारिवारिक जनों से भी पर्याप्त सहायता मिली।

यह सब कुछ गुरुजनों की कृपा का फल था। गुरुजनों का प्रेम तथा शिक्षाओं में उद्बोधन सदा आनन्दप्रद रहा है। उनके आशीष् वचनों का वरदान भी मिलता रहा है, इसी से नतमस्तक होकर अपने सब गुरु जनों का विशेष श्रद्धा के साथ अभिनन्दन करता हूं। यथायोग्य रूप से गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के चरमोत्कर्ष की भी हृदय से कामना करता हूं।

अपने इस युग की आत्मा का स्वरूप कुलपिता श्रद्धेय स्वामी श्रद्धानन्द के अभिवादन से प्रमुख पथ था। वैदिक ज्ञान की विशुद्ध धारा, गुरु-शिष्य परम्परा द्वारा, शिक्षा दीक्षा की सरस्वती के प्रवाह रूप में अक्षुण्ण रूप से प्रवाहित हुई थी। परन्तु बीच में आ गयी बहुत सी चट्टानों से टकरा गई और भिन्न-भिन्न धाराओं में बहने लगी। मुख्य धारा कुछ विलुप्त-सी प्रतीत होती है—जब से भारत विप्लव या विभाजन की अवस्थाओं में से गुजर रहा है, भविष्य ने इस सबका निर्णय करना है। इसी से यह कहने का साहस करता हूं कि महर्षि दयानन्द की वैदिक श्रद्धा फिर से किस रूप में उभरेगी यह अब भविष्य का विषय हो गया है। वर्तमान तो धूलधूसरित या धूमिल है।

वैदिक वाङ्मय में, 'व्रतेन दीक्षामाप्नोति, दीक्षया दक्षिणामाप्नोति, दक्षिणया श्रद्धामाप्नोति, श्रद्धया सत्यमाप्यते" इस मन्त्र का सन्देश हमारी सम्पूर्ण शिक्षा का उपसंहार बता रहा है। ब्रह्मचर्य व्रत से आगे बढ़ते बढ़ते श्रद्धा की प्राप्ति और उससे परम सत्य का दर्शन या अनुभव, यही परमार्थता है जिससे अभ्युदय और निःश्रेयस का मार्ग प्रशस्त होता है। "यो यच्छ्रद्धः स एव सः।"

इन दिनों संसार विशेष रूप से दो विभागों में बंट गया है। दोनों का स्वरूप दक्षिणपक्ष (Right Wing) और वामक या वाम पक्ष (Left Wing) में है। निःश्रेयस मार्ग की तरफ सदा दक्षिणपक्षीय जाते हैं और क्रांतिमय लौकिक प्रेयमार्गी वामक पक्ष के हैं। ये सत् और असत् की विचारधारायें हैं। एक तरफ दैवीय प्रवृत्ति उभरती है और दूसरी तरफ आसुरी प्रवृत्ति। परिणाम दैवी संपत् का संचय या आसुरी संपत् की प्राप्ति होता है। इस पर गीता के विशेष प्रवचन ध्यान देने योग्य हैं। संसार को इन दो दृष्टियों में आसानी से समझा जा सकता। दीक्षा से दक्षिण पथ का अनुसरण करना ही वैदिक वाङ्मय का आदेश है। श्रेय मार्ग अभ्युदय को समुचित रूप से स्वयं ही खींच लाता है और इससे 'धर्मसिद्धि' प्राप्त हो जाती है—"यतोऽभ्युदयनिःश्रेयससिद्धिः स धर्मः।" अतः धर्म का सदा ध्यान रखना उचित है—"धर्मो धारयते प्रजाः।"

निराहार रहने मे लोगों ने व्रत-दीक्षा को समझ लिया है। यह आरोग्य का एक साधन है। हमारी महान शिक्षायें इससे बहुत आगे बढ़ जाती हैं। योग दर्शन में महर्षि पतञ्जलि ने यम नियमों के विवेचन में यमों को अर्थात अहिंसा सत्यास्तेयब्रह्मचर्यापरिग्रहा यमाः एता. जातिदेशकालसमयानवच्छिन्ना सार्वभौमाः महाव्रतम्", कहकर संसार को सार्वभौम महाव्रत का सन्देश दिया है जिससे संयमित संसार सुख और शान्ति को आसानी से प्राप्त कर सकता है। संसार को सार्वभौम महाव्रत में दीक्षित किया जाना शिक्षा का सार्वभौम यौगिक अंग माना है जिससे शिक्षा की पूर्णता होती है। योगिराज पतञ्जलि के यम नियम (Law and Order) एक शाश्वत सनातन आर्य धर्म हैं। इनके प्रति निरपेक्षता तो आत्महत्या के रूप में ही समझी जानी चाहिए। यही वैदिक धर्म मार्ग है।

संसार के प्रथम कानूनदाता महर्षि मनु के "दशक धर्मलक्षणम" एवं "आचारः प्रथमो धर्मः", "न हि सत्यात् परो धर्मः", 'व्रतं ते अनृतात् सत्यमुपैमि" आदि वचन तथा वैदिक धर्म का मानव धर्म सदा ही मनुष्यों को "सर्वभूतहिते रताः", 'वसुधैव कुटुम्बकम", सर्वजनसुखाय", "सर्वजनहिताय" "मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे" आदि से मनुष्यो की सार्वभौम विचारधारा की ओर ध्यान खींचता है। हमारे ऋषियों ने या धर्मग्रन्थों ने दैशिक दृष्टि (Nationalist View) को तुच्छ समझते हुए मानव मात्र को भाई-बन्धु रूप में ही पहिचाना है। "माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः", 'पृथिव्यै शकरं नमः", "नमो मात्रे पृथिव्यै" आदि वैदिक पृथिवी सूक्त के मन्त्रोपदेश और निर्देश हमारी संस्कृति को संसार के उच्चतम शिखर पर ले जाते हैं।

भौतिक विज्ञान की उपलब्धियों से संसार एक बहुत छोटी इकाई बन गया है। रेडियो, टेलीविजन, टेलीफोन, कम्प्यूटर आदि के आविष्कार तथा तेज रफ्तार से उड़ने वाले हवाई जहाजों से दुनिया अब एकदेशीय है। हमारे सब विचार अब सार्वभौम दृष्टि से ही होने चाहिएं। संसार को विनष्ट करने वाली प्रवृत्तियों—बड़े-बड़े एटम बम, मिसाईल्स, जंगी जहाज, विषैली गैसें, कीटाणु बम आदि के हथियारों—का सम्बन्ध प्राणिमात्र के जीवनों से है। आवश्यकता है कि जीवन मात्र को नष्ट करने वालों—आसुरी प्रवृत्ति वालों—के प्रति विरोध भावना बचपन से ही बच्चों की शिक्षा का अभिन्न

बंध हो। इससे जहां सदाचार या धर्मसंस्थापना होती है और नैतिकता के धर्मचक्र का प्रवर्तन होता है, मनुष्यों को संरचना पाने में जनता के नैतिक प्रभाव का बल प्राप्त हो जाता है। पृथिवी सूक्त के वैदिक संदेश को एक सार्वभौम शाश्वत धर्म के रूप में संसार की सब संस्थाओं, शिक्षणालयों, धर्म स्थानों में गर्व से रख सकते हैं। कोई भी मतमतान्तर इससे उच्च रूप में वैतृत्व न दे सकेगा। शब्द स्पष्ट हैं—

"सत्यं बृहद् ऋतमुग्रं दीक्षा तपो ब्रह्म यज्ञः पृथिवीं धारयन्ति, सा नो भूतस्य भव्यस्य पत्नी, उरुं लोकं पृथिवी नः कृणोतु।" "मानो द्विक्षत कश्चन मा नो द्विक्षत कश्चन।"

नवदीक्षित स्नातको, यहां पर 'दीक्षा' शब्द पर विशेष ध्यान देना। साथ के शास्त्र वचनों को भी याद रखना—

माता मे पृथिवी देवी, पिता देवो महेश्वरः।
मनुजाः भ्रातरः सर्वे स्वदेशो भुवनत्रयम्॥

इसके बाद मैं आपको याज्ञिक-दीक्षा की तरफ भी आकर्षित करना चाहूंगा। हमारी शिक्षा-दीक्षा में यज्ञ की प्रधानता है—"यज्ञो वै श्रेष्ठतमं कर्म।" हमें पञ्चमहायज्ञों पर चिन्तन को समाप्त नहीं करना चाहिए। राष्ट्रीय दृष्टि से राजसूय तथा राष्ट्रमेध यज्ञों का भी नवीन रूप में विधान समझना चाहिए। इससे हम चक्रवर्ती राज्य (One World Welfare State) की दिशा को भी दृष्टि में रख सकते हैं। भिन्न-भिन्न अन्तर्राष्ट्रीय संगठन संगतिकरण रूप से यज्ञ रूप में प्रवृत्त हो रहे हैं। हमें भी इस तरफ आगे बढ़ना है। इन यज्ञों में लौकिकता का विशेष प्रभाव न हो सके परन्तु आध्यात्मिकता पनपती हो, इसे ध्यान में रखना चाहिए।

संसार में आधुनिक वैज्ञानिक युग में मनुष्य आकाश में दूर से दूर पहुंच रहा है। चन्द्रमा पर तो वह अपने पैर भी जमा चुका है। धरती के विस्तृत भूखण्डों पर, उत्तरी व दक्षिणी ध्रुवों के विशाल प्रदेशों पर भी पर्यवलोकन हो रहा है। समुद्रों और धरती की गहराइयां भी मापी जा रही हैं। इन सब बड़ी बड़ी दूरियों और गहराइयों को मापते हुए लौकिक पुरुषों ने अपनी बड़ी बड़ी विजयों के झण्डे गाड़े हैं। परन्तु इस धरती पर बसने वाले मानवों के हृदयों, मनों और बुद्धियों की गहराइयों को मापना अभी तक सीखा नहीं गया है। मनुष्य के मन और हृदय को अन्दर से जीतने में और उसमें प्रेम और सहानुभूति, उत्साह, सहायता तथा वीरता आदि का शांतिमय सन्देश नहीं दिया जा सका है। यह मार्ग अभी तक प्रशस्त नहीं हुआ। यहां पर आकर भौतिक विज्ञान असफल हो गया है। यहीं से हमें श्रेयमार्ग को प्रशस्त करना है और यह यज्ञमय जीवन से प्रारम्भ होता है। "बहुविधा यज्ञाः वितताः ब्रह्मणो मुखे" का ध्यान रखते हुए हमें वर्तमान में द्रव्य-यज्ञों के प्रति बढ़ती प्रवृत्ति को अन्ध-श्रद्धा की तरफ जाने से रोकना होगा। हमें यज्ञों की विविधता तथा विशालता को भी समझना चाहिए। संयतेन्द्रियता से ये यज्ञ ज्योतिर्मय हो जाते हैं। समझना चाहिए कि—

द्रव्ययज्ञास्तपोयज्ञा योगयज्ञास्तथापरे।
स्वाध्यायज्ञानयज्ञाश्च यतयः संशितव्रताः॥
श्रेयान् द्रव्यमयाद् यज्ञात् ज्ञानयज्ञः परंतप।
सर्वं कर्माखिलं पार्थ ज्ञाने परिसमाप्यते॥
नायं लोकोऽस्त्ययज्ञस्य कुतोऽन्यः कुरुसत्तम।
श्रद्धावान् लभते ज्ञानं तत्परः संयतेन्द्रियः।
ज्ञानं लब्ध्वा परां शान्तिमचिरेणाधिगच्छति॥

श्रद्धापूर्वक विभिन्न यज्ञों से, यज्ञमय जीवन से, ज्ञान प्राप्त करते हुए शांति की प्राप्ति सहज हो जाती है। हमारे भूतकाल में ज्ञानयज्ञ का अनुष्ठान सदा तीव्र रूप से अग्रसर होता हुआ, सामाजिक जीवनों में विशुद्ध दृष्टि (Vision) या चिन्तन को प्रदान करता था। ज्ञान की धारा लौकिक और अलौकिक, प्रेय और श्रेय, आसुरी तथा दैवी, वामपक्षी या दक्षिणपक्षी आदि द्वन्द्वों में संघर्षात्मक दृष्टि से आगे बढ़ी थी। दर्शन शास्त्र या आन्वीक्षिकी विद्या का इसमें विशेष भाग है। बड़े-बड़े ऋषि, मुनि और आचार्य जब उपरोक्त असद् और सद् विचारधाराओं पर गम्भीर मन्थन करते थे तो जातियों के जीवन परिवर्तित हो जाते थे। धर्म, संस्कृति, सभ्यता और समाज-रचना के नये नये स्रोत बह निकलते थे और संसार को नवजीवन प्राप्त होता था। मैं वर्तमान युग में ज्ञानी पुरुषों में भारतीय आन्वीक्षिकी विद्या या दर्शनशास्त्र की पूर्ण चर्चा का किया जाना आवश्यक समझता हूं। यह विश्वविद्यालयों की पुण्यस्थली में ही समुचित रूप से हो सकेगा। जब 'धर्मनिरपेक्ष' शब्द बार बार सुना जाता है तो लौकिक दृष्टि से धर्म शब्द तिरस्कृत हो जाता है। जब वैदिकी ज्ञानधारा "आचारः प्रथमो धर्मः", "धर्म चर" का उद्घोष करती है तो 'Secular' शब्द धर्म निरपेक्षता के अर्थों में 'आचार निरपेक्षता' की तरफ खींच ले जाता है। यही कारण है कि वर्तमान भारतीय समाज में 'भ्रष्टाचार' बुरी तरह से फैलता जा रहा है और नैतिक मूल्य गिर रहे हैं। 'धर्म संस्थापन' या 'धर्मचक्र प्रवर्तन' एक हंसीमात्र दिखाई देते हैं। धर्म शब्द महान है—यह कर्तव्य, पुण्यकार्य, कानून तथा व्यवस्था आदि में मुख्यतः प्रयुक्त होता है। 'धर्मनिरपेक्ष' शब्द को सरकारी रूप से तिलांजलि दी जानी चाहिए। भिन्न-भिन्न मतों या सम्प्रदायों के साथ धर्म शब्द का व्यवहार हमारी अशिक्षा का परिचायक है। सब सम्प्रदायों के प्रति उदारता का परिचय देना, विभिन्न मतभेदों में भी पारस्परिक आदर भाव रखना, मानवमात्र को भाई चारे से बर्तना, ईश्वर के प्रति श्रद्धा और विश्वास रखना 'Secular' शब्द का अर्थ नहीं है। भारत में इस विषय में अर्थ का अनर्थ किया जाना रोकना चाहिए। 'Secular' विचारधारा वामपक्षीय लौकिक विचारधारा है जो अनीश्वरवादी नास्तिक विचारों से ओत प्रोत हो जाती है। (क्रमशः)

पं० बनारसीदास चतुर्वेदी महाकाल में लीन

हिन्दी पत्रकारिता और साहित्य के साक्षी पुरुष बनारसीदास चतुर्वेदी लगभग एक सदीजी कर आज महाकाल में लीन हो गए। फिरोजाबाद में २ मई गुरुवार की शाम अपने निवास पर उनकी वे आंखें मुद गई जो ९१ साल से अपने आसपास को देख और अंकित कर रही थीं।

चतुर्वेदी जी का पहला लेख १९१२ के 'नवजीवन' (मई-जून) में छपा था। तब से पिछले ७३ सालों में उन्होंने भारतीय समाज के अतीत और वर्तमान को लेकर हजारों पृष्ठ लिखे जो अब हमारे लिए एक दस्तावेज की तरह है।

चतुर्वेदी जी का जन्म २४ दिसम्बर १८९२ को फिरोजाबाद में हुआ। पिता गनेशीलाल चौबे आगरा के एक प्राइमरी स्कूल में शिक्षक थे। चतुर्वेदी जी ने १९२४ में इंटरमीडिएट की परीक्षा पास की और फर्रुखाबाद के एक हाई स्कूल में शिक्षक हो गए। इसके तुरन्त बाद उन्हें राजकुमार कालेज इन्दौर में अध्यापकी मिली और वहां वे १९२० तक रहे।

गांधी जी के राजनीति में प्रवेश के साथ ही उन्होंने नौकरी छोड़ दी और १९२० और २१ के बीच दीनबन्धु एण्ड्रूज के साथ शांति निकेतन में रहे। इसी साल वे साबरमती चले आए जहां १९२१ तक महात्मा गांधी के सानिध्य में आश्रम जीवन बिताया।

१९५२ में राज्य सभा के सदस्य मनोनीत किए गए और १९६४ तक रहे।

१९५९ और १९६९ में उन्होंने रूस की यात्राएं कीं।

इस दौरान विभिन्न पत्रकार संगठनों का नेतृत्व करके वे पत्रकारों की जीवन दशा सुधारने के लिए उनके अधिकारों की लड़ाई भी लड़ते रहे।

प्रवासी भारतीयों की सेवा तथा साहित्य सेवियों की कीर्ति रक्षा के लिए उन्होंने अनेक कदम उठाए। राष्ट्रीय अभिलेखागार दिल्ली तथा के० एम० मुन्शी विद्यापीठ आगरा में ये सामग्रियां सुरक्षित हैं।

इस तरह की संगठनात्मक व्यस्तताओं के बीच भी चतुर्वेदी का लेखन संसार भी काफी बड़ा है। इनकी प्रमुख पुस्तकें हैं, फीजी द्वीप में मेरे इक्कीस वर्ष, प्रवासी भारतवासी, फीजी की समस्या, विश्व की विभूतियां, प्रिंस क्रोपाटकिन का आत्म चरित्र और भारत भक्त ऐण्ड्रूज आदि।

लेकिन चतुर्वेदी जी के लेखन संसार का परिचय अधूरा रह जायगा अगर इस बातकी चर्चा न की जाए कि अपने लम्बे जीवनमें उन्होंने एक लाख से अधिक पत्र लिखे। इन पत्रों में अपने समय का जीता जागता इतिहास सुरक्षित है। नए सिरे से साहित्य का इतिहास लिखते हुए इन पत्रों की गहरी प्रासंगिकता है।

साहित्य की दुनिया में चतुर्वेदी जी एक रचनाकार लेखक ही नहीं बल्कि पत्रकार लेखक थे। उन्होंने रचनाधर्मी साहित्य नहीं लिखा पर साहित्य की दुनिया में अगर कभी उन्हें कुछ गलत लगा तो आन्दोलन चला कर आवाज उठाई। 'घासलेट साहित्य विरोधी आन्दोलन' और 'कस्मै देवाय' आन्दोलन इसका उदाहरण है।

साहित्य के इतिहास में बनारसीदास चतुर्वेदी जैसे लेखक पत्रकारों का सबसे बड़ी भूमिका यह होती है कि वे सामाजिक यथार्थ से लेखन का रिश्ता बनाने के लिए अपनी पत्रकारिता और संगठनात्मक कार्यों से एक पुल बनाते हैं। यह पुल पूरे समय को एक युग से दूसरे युग में ले जाता है।

चतुर्वेदी जी ने अपने जीवन के उद्देश्यों में ऐतिहासिक मानव चरित्रों के अध्ययन को पहला महत्व दिया था। महात्मा गांधी, रविन्द्रनाथ ठाकुर, श्री निवास शास्त्री, रामानन्द बाबू जैसे भारतीय इतिहास पुरुषों के चरित्र की बारीकियां तो उन्होंने बताई हों, साथ-साथ थोरो, गेरीसन, तुर्गनेव टालस्टाय, गोर्की, रोमारोला, स्टीफन, जिफ आदि विदेशी महापुरुषों की निजी जिन्दगी के मानवीय गुणों को भी सामने लाने की कोशिश की। इतिहास में निर्णायक व्यक्तियों के निर्माण में ये मानवीय गुण कितने सहायक हुए, चतुर्वेदीजी के अध्ययन का यही विषय था। —जनसत्ता ३-५-८५

टिप्पणि :—श्री चतुर्वेदी जी वर्षों पर्यन्त विशाल भारत का सफल सम्पादन भी करते रहे थे। —संपादक सार्वदेशिक

साहित्य समीक्षा और प्राप्ति स्वीकार

जीवन-सुधा

जीवनोपयोगी भजनों का अभूतपूर्व संग्रह

सन्ध्या, प्रार्थना एवं यज्ञ आदि

संकलनकर्ता व प्रकाशक

आर्य युवक परिषद, दिल्ली

१६५४ कूचा दखिनीराय दरियागंज

दिल्ली

२०×३०/१६ पृ० ११२ मूल्य ४)

यह पुस्तक उच्चकोटि के भजनों एवम प्रार्थनाओं आदि का अच्छा संग्रह है। इस संग्रह की एक विशेषता या भी है कि इसमें वे भजन भी दिए गए हैं जो अब से बीसियों वर्ष पूर्व भा भाषा रचना आदि की दृष्टि से बड़े लोकप्रिय और श्री राजपाल एण्ड सन्ज आदि पुस्तक प्रकाशकों के इस प्रकार के प्रकाशनों की शोभा रहे हैं।

अश्लील भजनों एवं संगीत के इस पतित युग में सात्विक भजनों एवं संगीत के प्रचार की कितनी बड़ी आवश्यकता है और इसका कितना महत्व है इसका सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है।

—रघुनाथ प्रसाद पाठक

आर्य समाजों की गतिविधियां

पैट्रो डालर के बल पर

हिन्दू शुद्धि संरक्षणीय समिति समालखा

पत्रों में बहराईच उत्तर प्रदेश में हिन्दू नटों के सामूहिक धर्म परिवर्तन का समाचार सुनकर, पढ़कर हिन्दू शुद्धि संरक्षणीय समिति के महामन्त्री स्वामी सेवानन्द जी जो इस इलाके में नेपाल के साथ-साथ लगता है हालात जानने के लिए पहुंच जाने पर पता लगा कि यह हिन्दु नटों का सामूहिक इस्लाम में धर्म परिवर्तन कोई आर्थिक तंगी व सामाजिक तिरस्कार के कारण सम्भव नहीं है इसके पीछे पेट्रोडालर और विदेशी षड़यन्त्र काम कर रहा है और यह षड़यन्त्र १९८१ से चल रहा है। इसी कारण समय-२ पर धर्मपरिवर्तन होता रहा जिस पर और किसी का विशेष ध्यान नहीं पहुंचा। बंगला देश की सीमा से लेकर नेपाल को सीमा के साथ-साथ बस्ती गोंडा और बहराईच आदि जिलों में धर्म परिवर्तन करवाकर मुस्लिम बेल्ट बनाये जाने का षड़यन्त्र चल रहा है। इस काम में अन्य मुस्लिम संगठनों के साथ-२ मिल्ली इमदादी सोसाईटी का बड़ा हाथ है जिनके पास करोड़ों की सम्पत्ति है जिसका धर्मपरिवर्तन में प्रयोग होता है। स्वामी जी ने नटों को समझाया है। वह वीर शिवाजी के वंशज हैं वह लोभ या अन्य आकर्षण से धर्मपरिवर्तन कैसे कर सकते हैं? उन्होंने तो हिन्दु धर्म की रक्षार्थ बड़े कष्ट सहे हैं जिनका उन लोगों पर अच्छा प्रभाव पड़ रहा है और पुन: धर्म में लौट रहे हैं। अन्य समिति के सदस्य वहां जावेंगे। स्वामी जी सामान्य स्थिति हो जाने तक वहीं ठहरेंगे।

—ओम्प्रकाश प्रधान, समिति
समालखा हिन्दु शुद्धि संरक्षण समिति

शुद्धि

नई दिल्ली दिनांक २२-४-८५ को हिन्दू महासभा भवन में मोहम्मद अली नामक नवयुवक का हिन्दूकरण समारोह सम्पन्न हुआ जिसमें उसका नाम माधव रखा गया। हिन्दू महासभा के तत्वावधान में शुद्धि विधि का पौरोहित्य श्री पं० अभिविनय भारती जी ने किया। शुद्धि प्रमाण पत्र श्री गोपाल गोडसे उपाध्यक्ष अखिल भारत हिन्दू महासभा ने दिया। इस समारोह में गणमान्य सर्वश्री विशन स्वरूप पटवारी जी, कृष्ण प्रकाश लूथरा जी, श्रीमती अनिता रानी लूथरा जी उनकी सुपुत्री सीमा लूथरा, सेन सिंह, विजय कुमार जी, अश्विनि कुमार जी, एस० पाठक आदि लगभग पचास नागरिकों ने उपस्थित होकर माधव को शुभकामनाओं सहित आशीर्वाद दिया।

कुछ दिन पूर्व एक ईसाई कन्या रेमिज सुपुत्री श्री स्वस्टीन फ्लाविय का शुद्धिकरण हिन्दू महासभा भवन में सम्पन्न हुआ और उसका विवाह श्री दयाराम सैनी नामक युवक के साथ दिनांक ३० मार्च १९८५ को सम्पन्न हुआ।

—डा० सुरेन्द्रसिंह सोढा
कार्यालय सचिव

राधेश्याम वैदिक योगाश्रम गुरुकुल बुराड़ी, दिल्ली

आपके राधेश्याम वैदिक योगाश्रम गुरुकुल बुराड़ी दिल्ली-९ का प्रथम वार्षिक महोत्सव दिनांक २४-२५-२६ मई ८५ शुक्र, शनि, रविवार को धूमधाम के साथ मनाया जा रहा है। —स्वामी आनन्द वेश, संचालक

महाविद्यालय ज्वालापुर में वैदिक शोध संस्थान की स्थापना

हरिद्वार, ११ अप्रैल, शिक्षा मन्त्रालय, भारत सरकारके आर्थिक सहयोग से गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर (हरिद्वार) में इस वर्ष से वैदिक शोध संस्थान की स्थापना की गई है। वेदों और वैदिक साहित्य पर वैज्ञानिक दृष्टिकोण से शोध कार्य कराने की व्यवस्था की गई है। गुरुकुल के वर्तमान कुलपति डा० कपिलदेव द्विवेदी आचार्य को इसका निदेशक नियुक्त किया गया है। —हरिगोपाल शास्त्री, प्रचारामात्य

पं० भूदेव शास्त्री का निधन

अजमेर स्थित महर्षि दयानन्द निर्वाण न्यास के पूर्व मन्त्री पं० भूदेव शास्त्री, एम. ए., एम. एड. सिद्धांत शिरोमणि (६९ वर्ष) का हाल ही में हृदयगति रुक जाने से स्वर्गवास हो गया। पं० भूदेव जी एक प्रखर विद्वान, ओजस्वी वक्ता और मिशनरी कार्यकर्त्ता थे। उन्होंने आर्य सिद्धांतों का विशेष अध्ययन गुरुकुल वृन्दावन में किया और सन १९३८ में वह स्नातक मेरे साथ ही हुए थे। बलवन्त राजपूत कालेज आगरा केन्द्रीय हिन्दी संस्थान आगरा और पं० जियालाल ट्रेनिंग कालेज अजमेर में वे प्रोफेसर रहे। उनकी योजना आर्य साहित्य का प्रकाशन और भारत तथा विदेश में प्रचार करने की थी। संस्कृत, हिन्दी और अंग्रेजी तीनों भाषाओं में वे निष्णात थे। प्रचार और न्यास के कामों से उत्तर भारत के अनेक समाजों में कथा, यज्ञ, लेखों और भाषणों के द्वारा वे यह कार्य कर रहे थे। सक्रिय रूप से वे आर्य समाज के लिए समर्पित थे। उनके निधन से आर्य समाज की महती क्षति हुई है।

उनके पीछे उनकी पत्नी व बच्चे हैं। बच्चे सब योग्य एवं कार्यरत हैं, केवल एक शिक्षिका एम. ए. बी, एड. कन्या का विवाह होना शेष था। भगवान उनकी आत्मा को सद्गति व परिवार को सान्त्वना प्रदान करे।

—सहपाठी स्नातक

शोक प्रस्ताव

आर्य समाज जौनपुर की आयोजित यह सभा अपने भूतपूर्व प्रधान एवं विदेशों में आर्य समाज जौनपुर की ओर से महासम्मेलनों में प्रतिनिधित्व करने वाले श्री बाबूराम जी प्रधान की असामयिक मृत्यु पर शोक प्रकट करती है। स्वर्गीय श्री बाबूराम जी प्रधान कर्मठ सज्जन तथा प्रभावशाली व्यक्तित्व समाज सेवी थे। सामाजिक क्षेत्र में उनकी सेवायें सदा स्मरण रहेंगी।

यह सभा परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना करती है कि दिवंगत आत्मा को सद्गति एवं शोकाकुल परिवार को धैर्य प्रदान करे।

—मन्त्री

—आर्य युवा नेता तथा पत्रकार श्री प्रमोद कुमार विनोद (सुपुत्र श्री शि-स० विनोद) का जो कि दैनिक "प्रभात" के लोकप्रिय संपादक थे ४२ वर्ष की आयु में निधन हो गया। आपने मौरिशस में भी धर्म प्रचार किया था।

—मौरिशस आर्य समाज के पुरोहित पं० सुखदेव हेमराम जी मौरिशस में यज्ञ कराने के उपरान्त इस संसार से यह कहते चल बसे "अरे अभी तो मुझे महर्षि का कार्य करना था" उनकी आयु ६० वर्ष की थी।

—श्री वीरेन्द्र जी वर्मा आर्य समाज कासगंज (एटा) के कार्य कर्ता का निधन। वह अविवाहित थे और उन्होंने लगभग एक लाख का मकान उ. प्र. आर्य प्रतिनिधि सभा को दान में दे दिया।

—श्री पं० ब्रजनन्द कुमार जी शास्त्री सुपुत्र श्री अम्बिका प्रसाद जी जो कि अमेठी में रणञ्जय स्नातकोत्तर महाविद्यालय के प्राध्यापक थे ७-४-८५ को निधन होने पर महान शोक।

—सनातन धर्म फरीदकोट (पंजाब) के मन्त्री जी सूचित करते हैं कि प्रतिष्ठित विद्वान श्री वीर साहब के देहान्त पर फरीदकोट आर्य समाज के सदस्यों ने उनके दाह संस्कार में पूरा योगदान दिया तथा समाज में 'शान्ति यज्ञ कर कृतार्थ किया।

आर्य वीरों के बढ़ते कदम

देश के सभी प्रान्तों में प्रान्तीय शिविरों का आयोजन

१—राजस्थान आर्य वीर दल के तत्वावधान में २०-५-८५ से ३०-५-०५ तक विशाल प्रशिक्षण शिविर—स्थान राजकीय माध्यमिक विद्यालय—बहरामा (जि० अलवर)।

२—बिहार आर्य वीर दल की ओर से ११-५-८५ से ३०-५-८५ तक प्रशिक्षण शिविर—स्थान आर्य समाज हजारी बाग तथा दूसरा शिविर ७-६-८५ से १६-६-८५ तक आर्य समाज नगर में।

३—हरियाणा आर्य वीर दल का शिविर २०-६-८५ से ३०-६-८५ तक स्थान—डी० ए० वी० स्कूल पलवल में लगाया जा रहा है। रोहतक में २४-५-८५ से २६-६-८५ तक।

४—उत्तर प्रदेश—"मथुरा" में १ जून से ६ जून तक

५—मध्य प्रदेश—"विदिशा" में ७ जून से १४ जून तक

६—दिल्ली प्रदेश आर्य वीर दल का शिविर ३१-५-८५ से २-६-८४ तक आर्य समाज गांधी नगर में।

सम्मेलन सम्पन्न

आर्य वीर दल दिल्ली प्रदेश का विशेष कार्यकर्ता सम्मेलन शनिवार २७-४-८५ सायं ५ बजे डा० देवव्रत जी उपप्रधान संचालक की अध्यक्षता में बड़े उत्साह पूर्ण वातावरण में सम्पन्न हुआ। इसमें ११८ आर्य युवकों ने भाग लिया, दिल्ली के संचालक श्री अवस्थी जी ने बड़े ही मार्मिक शब्दों में आर्य समाज के उद्देश्यों की पूर्ति के लिए आर्य वीर दल की आवश्यकता पर बल देते हुए सभी से सहयोग की प्रार्थना की। दिल्ली के अधिष्ठाता श्री रसवन्त जी ने आगामी ३ शिविरों के सम्बन्ध में जानकारी दी। श्री विरमाणी जी (मन्त्री आर्य वीर दल) ने अब तक किए गए कार्यों का विवरण सुनाया। भारतवर्ष के आर्य वीर दल की गतिविधियों से परिचय कराया। आर्य समाज हनुमान रोड की ओर से विशेष जलपान के उपरान्त सम्मेलन समाप्त हुआ। इसमें भिन्न २ कालोनियों से आए हुए प्रतिनिधियों ने अपने विचार रखे तथा शिविरों को सफल बनाने में अपनी २ समाजों से सहयोग का आश्वासन दिया। श्री चन्द्रप्रकाशजी ने मंच का संचालन कार्य अति कुशलता से किया।

—आर्य वीर दल का प्रथम शिविर ३१ ५-८५ से ३-६-८५ तक यमुना-पार क्षेत्र में लगाया जाएगा।

उत्सव

आर्य समाज शाह सैमद (देवरिया) का वार्षिकोत्सव दि० ६, ७, ८ जून को और ८, ९ जून को जीवपुर एव १० को हिलोरा का मनाया जायगा।

—आर्यसमाज सरस्वती विहार दिल्ली का ८ वां उत्सव दि० ६ से १२-५-८५ तक यज्ञ के ब्रह्मा स्वामी स्वरूपानन्द जी तथा प्रवचन श्री स्वामी जगदीश्वरानन्द जी, भजन श्री आशानन्द जी, दि० १२-५ को ऋषिलंगर।

सात्विक दान

आर्य समाज जमानिया (गाजीपुर) के मन्त्री श्री धनेन्द्र नाथ वर्मा ने २ हजार रुपया की पुस्तकें आर्य समाज को दान में दी है जिनमें सत्यार्थ प्रकाश का वितरण मुफ्त किया गया है।

जमानिया तहसील के अन्तर्गत देहाती क्षेत्रों के २० ग्रामों में वेद प्रचार का कार्यक्रम सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ।

बिना दहेज का विवाह

आर्य समाज द्वारा दहेज बिना विवाह कार्यक्रम बड़े पैमाने पर, भिन्न-२ समाजों द्वारा अनेक विवाह सम्पन्न कराए जा रहे हैं। दो ऐसे सादे ढंग तथा बिना दहेज और जात पात तोड़कर आदर्श विवाह आर्य समाज फरीदकोट (पंजाब) में श्री इन्द्रराज जी का श्रीमती सन्तोष के साथ तथा श्री बिहारी लाल जी का श्रीमती रानी के साथ सम्पन्न हुआ। इस वर्ष ने पहली बार वेद उपदेश सुने।

वैदिक विवाह

१९-४-८५ को श्री पुरुषोत्तम दास जी (पोस्ट मास्टर) फरीदकोट की सुपुत्री का विवाह प्रातः ८ बजे श्री आर्य भूषण जी के पौरोहित्य में सम्पन्न हुआ।

—कु० उर्मिला

गुरुकुल माध्यमिक विद्यालय ततारपुरके वार्षिक महोत्सव पर ब्रह्मचारी सुरेन्द्रसिंह आजाद द्वारा संचालित शाखा का निरीक्षण करते हुए आचार्य धर्मपाल जी (संचालक सा०आ० वीर दल कमिश्नरी मेरठ)

सार्वदेशिक आर्य वीर दल
गुरुकुल महाविद्यालय ततारपुर (गाजियाबाद)

हापुड़ से ६ मील पूर्व गढ़ मार्ग पर स्थित गुरुकुल महाविद्यालय ततारपुर में सार्वदेशिक आर्य वीर दल की दैनिक शाखा चलती है जिसमें आर्य वीर प्रतिदिन भारतीय व्यायाम का प्रशिक्षण प्राप्त करते हैं। विजयादशमी पर व्यायाम प्रतियोगिता हुई एवं १६, १७, १८ मार्च को गुरुकुल के २०वें वार्षिक महोत्सव पर आर्य वीरों ने आकर्षक व्यायाम प्रदर्शन किया जिसमें आसन-दण्ड बैठक-लाठी भाला-परश-स्तूप-तलवार एवं प्राणायाम द्वारा गले से बांस से लोहे का सरिया मोड़ना-जंजीर तोड़ना-कांच पीसना आदि २ कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए। सार्वदेशिक आर्य वीर दल के प्रधान संचालक श्रीमान् बाल दिवाकर जी हंस ने आर्य वीरों को आशीर्वाद एवं पुरस्कार प्रदान किया। प्रमाण-पत्र वितरित किए गए। व्यायाम का संचालन ब्र० सुनील कुमार आर्य व्यायाम शिक्षक ने किया। इस अवसर पर पूज्य स्वामी ओमानन्द जी महाराज का उपदेश प्रभावशाली रहा। कार्यक्रम की सफलता में श्री आचार्य अनिल जी शास्त्री, श्री सुरेन्द्रसिंह जी आजाद गुरुकुल के अधिकारी एवं आर्य समाज ततारपुर के नवयुवकों का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

—नेत्रपाल आर्य, कार्यालयाध्यक्ष

प्रवेश प्रारम्भ

श्रीमद् दयानन्द गुरुकुल विद्यापीठ गदपुरी जिला फरीदाबाद में नवीन सत्र १९८५-८६ के लिए प्रवेश प्रारम्भ है। इस बार विशारद एवं शास्त्री के छात्रों के लिए निःशुल्क भोजन एवं आवास की व्यवस्था की गई है। प्रवेश के इच्छुक छात्र शीघ्रता करें।

—स्वामी विद्यानन्द प्रबन्धक

आर्य समाज, सेक्टर ३ फरीदाबाद (हरियाणा)

ईश कृपा से आर्य समाज नं० ३ न्यू टाउन की नवनिर्मित यज्ञशाला एवं रसवन्त सरोवर (प्याऊ) का उद्घाटन समारोह पूर्ण वैदिक रीति से सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर आर्य जगत के प्रकाण्ड विद्वान तपोनिष्ठ आचार्य प्रवर प्रेम मित्र जी ने जहां अपने करकमलों से यज्ञशाला का शंखध्वनि के साथ उद्घाटन किया वहां १२-४-८५ से १४-४-८५ तक अपने वेदामृत का जनता को पान कराते रहे। श्रीयुत गुलाबसिंह जी रावत ने अपनी संगीत कला से जनता को भक्ति रस में विभोर कर दिया। हरियाणा के विधायक कर्मठ समाज सेवी युवक हृदय सम्राट श्री ए० सी० चौधरी ने वेद मन्त्रों के मध्य दीपक जलाकर प्याऊ का उद्घाटन किया तथा जनता को वचन दिया कि उक्त प्याऊ में पानी का अभाव नहीं होने दिया जायेगा। इसकी अध्यक्षता श्री एफ. एस. चवन जिला समाज कल्याण अधिकारी ने की। विधायक महोदय ने सार्वजनिक धर्मशाला के लिए जमीन दिलाने का भी वचन दिया। आर्य समाज के प्रधान श्री बल्देवचन्द्र आर्य ने सभी का धन्यवाद किया तथा हजारों लोगों ने अन्त में एक साथ बैठकर प्रीतिभोज किया। सायंकाल आर्य कार्यकर्ताओंकी संगोष्ठी श्री लक्ष्मणदास जी बल्लभगढ़ की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई और वेद प्रचार, निशुल्क औषधालय तथा पुस्तकालय के निर्माण की योजना बनाई गई। —सत्यदेव आर्य

मन्त्री आर्य समाज नं० ३

न्यू टाउन फरीदाबाद

दीक्षा संस्कार सम्पन्न

जिला उप प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री हरिशंकर जी शर्मा का "दीक्षा संस्कार वानप्रस्थ" बड़े उत्साह और पूर्ण धार्मिक वातावरण में हुआ। इसी उपलक्ष में पं० द्विजराज शर्मा ने एक अति सुन्दर गाय गुरुकुल देवरिया को दान में दी—जनता ने अति श्रद्धा से शर्मा जी को विदा किया।

—गजाधर, प्रधान

श्री रामेश्वर

कि वहां पर श्री

प्रदीप कुमार शास्त्री के

वीर दल के ५० युवकों ने योग आसन तथा अन्य

स्थित जनता में आर्य समाज के प्रति आकर्षण पैदा किया।

लुटेरा पकड़ा गया

नई दिल्ली। कनाट प्लेस पुलिस ने बस कंडक्टर श्री रोहताश की मदद से तीन में से एक लुटेरे को मौके पर ही दबोच लिया अभियुक्त का नाम जगमोहनसिंह है। पुलिस सूत्रों के अनुसार बाकी दो लुटेरों की भी शिनाख्त हो गई है।

नई दिल्ली क्षेत्र पुलिस उपायुक्त श्री बी० के० गुप्त के अनुसार स्टेट्समैन से रूट नं० ७७ की बस में सवार हुए कर्मपुरा, निवासी श्री राजेन्द्रकुमार भसीन को अभियुक्तों ने घेर लिया था। उनमें से एक ने उनका पर्स निकाल लिया तथा दूसरे ने उनकी सोने की जंजीर झटक ली। श्री भसीन के शोर मचाने पर कंडक्टर ने लुटेरों में से एक जगमोहन को वहीं दबोच लिया। तभी वहां सिपाही जयलालसिंह और सुरेन्द्रसिंह भी पहुंच गए और उन्होंने अभियुक्त गिरफ्तार कर लिया।

श्री रोहताश ने तो बस से भागे एक दूसरे लुटेरे को भी पकड़ लिया था, लेकिन वह चाकू से उन्हें घायल कर फरार हो गया। श्री रोहताश को पुरस्कृत किया जा रहा है।

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज नई दिल्ली में मुद्रित तथा रघुनाथ प्रसाद पाठक मुद्रक और प्रकाशक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा रामलीला मैदान नई दिल्ली से प्रकाशित।

सृष्टिसम्वत् १९७२९४९०८६]
वर्ष २० अंक २४]

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र
ज्येष्ठ शु० ६ सं० २०४२ रविवार २६ मई १९८५

दयानन्दाब्द १६१ दूरभाष । २७४७७१
वार्षिक मूल्य १५) एक प्रति ४० पैसे

श्री रामगोपाल शालवाले के नेतृत्व में पंजाब के हिन्दू नेताओं के शिष्टमंडल की प्रधानमंत्री श्री राजीव गांधी से भेंट

पंजाब की स्थिति पर ज्ञापन प्रस्तुत

दिल्ली १७ मई १९८५

पजाब के हिन्दू नेताओ ने आज सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले के नेतृत्व मे प्रधानमन्त्री श्री राजीवगाधी से भट की और उन्हे पजाब की परिस्थितियो के सदर्भ मे एक ज्ञापन दिया। प्रधानमन्त्री जी ने शिष्टमण्डल के साथ अपनी लम्बी बात-चीत मे आश्वासन दिया कि पजाब समस्या के समाधान मे पजाब के अल्पसख्यको के हितो और देश के बहुमत की भावनाओ का पूरा आदर और सम्मान किया जायेगा। उन्होने यह भी प्रकट किया कि पजाब मे उग्रवादियो के साथ थोडे से लोग है सभी सिक्ख उनके साथ नही हैं।

शिष्टमण्डल ने निम्न ज्ञापन प्रधानमन्त्री जी को प्रस्तुत किया -

१—पजाब के अकाली नेताओ की रिहाई, सिक्ख छात्र फैडरेशन से पाबन्दी हटाने की घोषणा दिल्ली मे हुई हिसक घटनाओ की जाच के आदेश के उपरान्त उग्रवादियो के हौसले काफी बढे है। उन्होने इसे अपनी विजय समझा है जिससे वातावरण खराब हो गया है।

२—श्री अर्जुनसिह को पजाब भेजने के उपरान्त उनकी राय के अनुसार जो कुछ हुआ, वह केवल उग्रवादियो और अकालियो को खुश करने मात्र रहा जिसका परिणाम अन्य समुदायो के लिए हानिकर सिद्ध हुआ।

३—दिल्ली मे हाल ही मे उग्रवादियो ने जो हिसात्मक विस्फोट किए हैं, इसके पीछे किसी विदेशी शक्ति का हाथ हो सकता है। इसके लिए सरकार को विशेष नीति निर्धारित करनी चाहिए।

४—पजाब मे पुलिस तथा प्रशासन मे सिक्खो का बहुमत है, इसलिए वहा के हिन्दुओ के साथ कोई न्याय नही हो सकता है। इसलिए पजाब के अन्य समुदायो के लोगो को भी प्रशासन तथा पुलीस मे पूरा प्रतिनिधित्व मिलना चाहिए।

५—लोगोवाल सहित सभी अकाली नेता प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गाधी की हत्या की निन्दा करने को भी तैयार नही अपितु लोगोवाल ने सतवन्तसिह और बेअन्तसिह के घर जाकर उन्हे श्रद्धाञ्जलि देते हुए शहीदो की सज्ञा दी है।

६—भू०पू० विदेशमन्त्री सरदार स्वर्णसिह ने लन्दन से प्रकाशित एक वक्तव्य मे साफ कहा है कि भिण्डरावाला बुरा आदमी नही था। उसने ५ व्यक्ति मरवाए तो पुलिस ने ९५ मार दिए। उनका यह कहना कि आनन्दपुर प्रस्ताव पृथकतावादी नहीहै तथा प्रधानमन्त्री और राष्ट्रपति मे गहरे मतभेद है—राष्ट्र के लिए घातक है।

७—चण्डीगढ-फाजिल्का और अबोहर के विषय मे वहा की जनता की राय लेकर निर्णय किया जाये। अकालियो का निर्णय वहा की जनता पर न थोपा जाये।

८—उग्रवादियो के विरुद्ध सख्ती से निपटने के लिए सरकार कोई ठोस कानून बनाये ताकि देश के जन-जीवन और सम्पत्ति की रक्षा हो सके।

९—यदि सरकार ने कमजोर नीति अपनाकर अकालियो को प्रसन्न करने की नीति का परित्याग न किया तो देश का बहुमत सरकार को समर्थन न देगा बल्कि खुलकर विरोध करेगा।

१०—वर्तमान नीति मे परिवर्तन करके पजाब के राज्यपाल श्री अर्जुनसिह के स्थान पर किसी योग्य व्यक्ति को आसीन किया जाये।

११—पजाब के मामले मे जो भी बात चीत हो, उसमे पजाब के सभी धार्मिक व राजनीतिक समुदायो व सस्थाओ के प्रतिनिधियो को भी सम्मिलित किया जावे।

शिष्टमण्डल के सदस्यो के नाम

१—श्री रामगोपाल शालवाले—प्रधान सार्वदेशिक सभा दिल्ली
२—श्री गोपीचन्द भाटिया—प्रधान दुर्ग्याना मन्दिर, अमृतसर
३—श्री रामलुभाया प्रभाकर मन्त्री दुर्ग्याना मन्दिर अमृतसर
४—श्री जगदीश तागडी—प्रधान हिन्दू शिवसेना पजाब
५—श्री सत्यानन्द मुजाल—उपप्रधान सार्वदेशिक सभा लुधियाना
६—श्री किशनकुमार—आर्यसमाज भटिण्डा
७—श्री प्रकाशचन्द्र मेहरा—प्रधान शास्त्री मार्किट अमृतसर
८—श्री भोलानाथ दिलावरी—आर्यसमाज शक्तिनगर अमृतसर
९—श्री नन्दकिशोर—मन्त्री आर्य केन्द्रीय सभा अमृतसर
१०—श्री एस०के सब्रवाल एडवोकेट, जालन्धर
११—श्री तुलसीदास जैतवानी—प्रधान व्यापार मण्डल, लुधियाना
१२—श्री चतुर्भुज मित्तल—प्रधान व्यापार मण्डल, जालन्धर
१३ श्री कैलाश शर्मा—प्रधान मन्दिर कमेटी, लुधियाना
१४—श्री ओम्प्रकाश त्यागी—महामन्त्री सार्वदेशिक सभा, दिल्ली
१५—श्री जगन्नाथ मिश्र, दुर्ग्याना अमृतसर
१६—श्री सोमनाथ मरवाह सीनियर एडवोकेट एव कोषाध्यक्ष सार्वदेशिक सभा, दिल्ली
१७—महाराज कृष्ण खन्ना—जालन्धर
१८—प्रो० शेरसिह—प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा, रोहतक
१९—प्रो० वेदव्यास—प्रधान आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, दिल्ली
२०—श्री सूर्यदेव—प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली
२१—श्री कृष्णकान्त एडवोकेट लुधियाना
२२—श्री लक्ष्मीचन्द, दिल्ली

सच्चिदानन्द शास्त्री
उपमन्त्री सार्व०सभा

सम्पादक—ओम्प्रकाश पुरुषार्थी
सहसम्पादक—रघुनाथ प्रसाद पाठक

कुरान पर रोक लगाने सम्बन्धी याचिका रद्द

कलकत्ता १३ मई।

कलकत्ता उच्च न्यायालय ने आज यह याचिका नामन्जूर कर दी, जिसमे कुरान पर प्रतिबन्ध लगाने की मांग की गयी थी।

एटार्नी जनरल के, परासन और राज्य के महाधिवक्ता एस. के आचार्य की दलीलें सुनने के बाद न्यायमूर्ति बी. सी. बसक ने कहा कि याचिका को रद्द करने के कारण वह बाद में सुनाएंगे। नागरिकों द्वारा यह याचिका दायर किए जाने के बाद इस पर देश में भारी असन्तोष जाहिर किया गया था।

महाधिवक्ता ने दलील दी कि कानून के तहत इस याचिका पर विचार नहीं किया जा सकता। श्री परासन ने भी उनकी दलीलों का समर्थन किया। ये दलील सुनने के बाद न्यायालय इस निर्णय पर पहुंचा कि याचिका में कोई दम नहीं है।

याचिका दायर करने वाले श्री चांदमल चोपड़ा ने कहा कि चूंकि कुरान घृणा और हिंसा का उपदेश देती है, इसलिए इस पर प्रतिबन्ध लगाया जाना चाहिए।

महाधिवक्ता श्री आचार्य ने दलील दी कि उच्चतम न्यायालय के फैसले के अनुसार भारतीय दण्ड संहिता की धारा २९५ के तहत कुरान भी बाइबल और गुरु ग्रन्थ साहिब की तरह सुरक्षित ग्रन्थ है। उच्चतम न्यायालय यह फैसला दे चुका है कि कुरान, बाइबल और गुरु ग्रन्थ साहिब धार्मिक ग्रन्थ है और इन्हे न तो नष्ट किया जा सकता है और न ही काटा बिगाड़ा जा सकता है।

केन्द्रीय विधि मन्त्री श्री अशोक सेन ने कलकत्ता उच्च न्यायालय के उक्त निर्णय का स्वागत किया है। उन्होंने एक बयान मे कहा कि इस फैसले पर पूरे देश को खुशी होगी। यह याचिका कुछ भ्रमित लोगों द्वारा दायर की गयी।

उधर श्रीनगर में आज पुलिस ने पथराव कर रही भीड़ को तितर-बितर करने के लिए आसूगैस छोड़ी। प्रदर्शनकारी कलकत्ता उच्च न्यायालय में दायर उस याचिका पर विरोध प्रकट कर रहे थे, जिसमें 'कुरान' पर प्रतिबन्ध लगाने की मांग की गयी है। ये लोग उच्च न्यायालय के खिलाफ नारेबाजी कर रहे थे।

इस्लामाबाद से प्रे. ट्र. : पाकिस्तान के धार्मिक एवं अल्पसंख्यक मामलों के राज्य मन्त्री श्री मकबूल अहमद खां ने आज एक बयान में कहा कि कुरान के खिलाफ यह याचिका धार्मिक असहिष्णुता की प्रतीक है।

(हिंदु० १४-५-८५)

भारत में सिख समृद्ध, अमरीका में शरण नहीं

नई दिल्ली १६ मई ८५ (प्रे ट्र)

मियामी के एक अमरीकी आप्रवासी न्यायाधीश श्री सिमी मेजोर ने एक भारतीय सिख नागरिक को शरण देने से इन्कार करते हुए अपने निर्णय में अमरीकी विदेश मन्त्रालय से सम्बद्ध आप्रवासी अपील बोर्ड और मानव अधिकार एवं मानवता मामलों के ब्यूरो की एक रिपोर्ट का हवाला दिया है।

जज द्वारा उद्धृत उक्त रिपोर्ट में कहा गया है कि भारत में सिख समुदाय पूरी तरह से हर सुविधा का लाभ उठा रहा है। सिख बहुल राज्य पंजाब की भारत में प्रति व्यक्ति आमदनी सबसे अधिक है। अमृतसर में की गई सैनिक कार्रवाई सिख समुदाय के खिलाफ न होकर हिन्दुओं व नरमपंथी सिखों के हत्यारे आतंकवादियो के खिलाफ थी।

अमरीकी विदेश मन्त्रालय द्वारा एकत्र सूचनाओं के आधार पर तैयार रिपोर्ट के इस अंश का भी न्यायाधीश ने हवाला दिया है कि उस देश में सिखों का किसी भी प्रकार का कोई उत्पीड़न नहीं है। वहां सिख उच्च सरकारी पदों पर आसीन हैं। यहा तक कि भारत के सर्वोच्च पद राष्ट्रपति पद पर भी एक सिख ही है।

इस निर्णय से अमेरिका में शरण लेने के इच्छुक सिख उग्रवादी उलझन में पड़ गए हैं। न्यायाधीश ने शरण की अनुमति देने से इन्कार करते हुए कहा कि प्रार्थी के परिपत्र से पता चलता है कि वह भारत द्वारा जारी 'वान्टेड लिस्ट' मे भी नही है।

रिपोर्ट मे भारत के संवैधानिक अधिकारों का भी सन्दर्भ दिया गया है और पुनः दोहराया गया है कि आतंकवादी गतिविधियां और हिंसा अमरीका मे शरण लेने का आधार नहीं हो सकती।

(हिन्दु० १७-८५)

देशान्तर प्रचार

आर्य प्रतिनिधि सभा अमेरिका (वैस्टकोस्ट) कैलीफोर्निया का वार्षिक निर्वाचन सम्पन्न

१४-५-१९८५ को आर्य प्रतिनिधि सभा अमेरिका का वार्षिक चुनाव श्री बालकृष्ण शर्मा की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। अधिकारियों का निर्वाचन निम्न प्रकार हुआ :

प्रधान—	बाल कृष्ण शर्मा
उप प्रधान—	श्री वी. पी. कृष्ण भल्ला
मन्त्री—	श्री मदनलाल गुप्त
उपमन्त्री—	श्री अशोक कुमार शर्मा, एम. डी. (सुपुत्र श्री बालकृष्ण शर्मा)
कोषाध्यक्ष—	श्री महेश चन्द्र महाजन (स्व० जस्टिस मेहरचन्द महाजन के निकट सम्बन्धी)
पब्लिक रिलेशन आफीसर—	श्री अरुण कुमार पुरी
सहायक सदस्य—	श्रीमती सन्तोष शर्मा,
,,	श्री नन्द किशोर, आनन्द

—बालकृष्ण शर्मा (प्रधान)

P. O. Box 955
Huntington PARK
CALIFORNIA-90255

उत्सव

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद दिल्ली प्रदेश का विशाल आर्य युवक प्रशिक्षण योग व साधना शिविर दिनांक १४-६-८५ से २३-६-८५ तक स्वामी जगदीश्वरानन्द जी महाराज एवं ब्रह्मचारी आर्य नरेश जी की अध्यक्षता में गुरुकुल कण्वाश्रम कलाल घाटी कोटद्वार पोडी गढ़वाल में लगने जा रहा है।

—मन्त्री आर्य युवक परिषद

—आर्य समाज सम्भल का वार्षिकोत्सव दिनांक २५, २६, २७ मई १९८५ को मनाया जा रहा है। इसमें आर्य जगत के नेता एवं संन्यासी गण पधार रहे हैं।

—मन्त्री

—गढ़वाल वेद प्रचार समिति देहरादून के तत्वावधान में आर्य समाज चोपड़ा कोट गढ़वाल के सहयोग से आर्य सम्मेलन दिनांक ३१-५-८५ को आयोजित हो रहा है इस सम्मेलन मे अनेक आर्य नेता एवं संन्यासी पधार रहे है।

सम्पादकीय

आर्य समाज और राष्ट्रीय आन्दोलन

महात्मा गांधी ने जिस यज्ञ की पूर्ति की उसका प्रारम्भ महर्षि दयानन्द ने किया था

यह एक निर्विवाद तथ्य है कि १९ वीं शती में महर्षि दयानन्द ही राष्ट्रीय जागृति के सर्व प्रथम सूत्रधार थे। उन्होंने ही देशवासियों को 'स्वराज्य का उद्घोष प्रदान किया था। उन्होंने ही देश-प्रेम की भावना का संचार करके विदेशी दासता से मुक्ति प्राप्त करने की प्रेरणा दी थी। उन्होंने ही धर्म प्रचार, सुधार समाज एवं देशोत्थान के कार्यक्रम के द्वारा स्वराज्य का मार्ग प्रशस्त किया था। तभी कांग्रेस के इतिहासकार श्री सीतारमैय्या पट्टाभि रमैया ने गांधी जी को राष्ट्र पिता और महर्षि को राष्ट्र पितामह की उपाधि से अलंकृत करके देशवासियों की कृतज्ञता और सम्मान की भावना अभिव्यक्त की थी।

महात्मा गांधी जी के नेतृत्व में छिड़े स्वाधीनता आन्दोलन की व्याप्ति और उसको सफलता की दिशा में ले जाने में आर्य समाज के सर्वोपरि योगदान को देश-विदेश के बड़े २ मनीषी और राजनीतिज्ञ मुक्त कण्ठ से स्वीकार करते आ रहे हैं। असहयोग आन्दोलन में सत्याग्रह करके जेलों में जाने वालों में आर्य जनों की संख्या सर्वाधिक थी यह तथ्य सर्वविदित ही है। देश को और प्रशासन को परिश्रवान देश भक्त उच्चकोटि के नेता और कार्यकर्ता-प्रदान करने का सर्वाधिक श्रेय आर्यसमाज को ही प्राप्त है।

आर्य समाज के रचनात्मक कार्यक्रम की यथा राष्ट्रभाषा हिन्दी, स्वदेशी, अस्पृश्यता निवारण, दलितोद्धार, शिक्षा प्रसार, गोहत्या बन्दी, नशाबन्दी आदि की वरीयता इस तथ्य से सुस्पष्ट है और हो चुकी है कि संविधान में इसे स्थान दिया गया है जिसकी स्वीकारोक्ति राष्ट्रपति श्रीयुत डा० राधाकृष्णन जैसे अनेक तत्व वेताओं एवं राजनीतिज्ञों द्वारा अनेक बार हो चुकी है।

आर्य समाज के उद्देश्य, वैदिक धर्म के प्रचार, धार्मिक एवं सामाजिक सुधार, वैदिक संस्कृति के प्रसार, कुरीति निवारण, शिक्षा प्रसार, नारी-रक्षण सेवा सहायता, विकास, रक्षा आदि कार्यक्रम की उत्कृष्टता और देश देशांतर में इसके फैलाव के परिप्रेक्ष्य में इसका सार्वभौम स्वरूप सहज ही स्पष्ट हो जाता है, इसे साम्प्रदायिक कहना या मानना इसके लक्ष्य और स्वरूप की अनभिज्ञता या शरारत का द्योतक है।

आर्य समाज जिस वैदिक धर्म का प्रचार करता है वह वैज्ञानिक भी है। उसके सिद्धांत शाश्वत एवं सार्वभौम एवं सार्वकालिक है क्योंकि वह ईश्वर प्रदत्त वेदज्ञान पर आधारित है। राजनीति इस धर्म का अविभाज्य अंग है। शुरू में भी लाला लाजपतराय जी के अतिरिक्त अन्य भी बहुत से आर्य समाजी कांग्रेस में भाग लेने लगे थे परन्तु इसका यह अभिप्राय न समझना चाहिए कि उस समय (१८८५-१९००) आर्य समाजियों की अधिक संख्या कांग्रेस से सहमत थी या उसमें दिलचस्पी रखती थी। अधिक संख्या ऐसे लोगों की थी जो उससे सहमत न थे। लाला लाजपतराय जी ने अपनी आत्म-कथा में इस असहमति के दो कारण लिखे। पहला यह कि वे लोग यह विश्वास नहीं रखते थे कि कांग्रेस अंग्रेजी राज्य को हटाने में समर्थ होगी। उनका कहना था कि 'कांग्रेस की नींव कुछ अंग्रेजों ने (ह्यूम साहब) डाली है और अंग्रेज अपने देश के हितैषी हैं इसलिए यह कभी सम्भव नहीं कि कांग्रेस भारत वर्ष के लिए राजनीतिक स्वतन्त्रता प्राप्त करने में समर्थ हो। उन लोगों के कांग्रेस में विश्वास न होने का दूसरा कारण यह था कि उन्हें हिन्दू मुसलमानों के मेल में विश्वास न था। उनका विचार था कि हिन्दू मुसलमानों में मेल का उद्योग हिन्दुओं के लिए हानिकर है।" लाला जी ने अपने आत्म चरित्र में लिखा है कि साधारण तौर पर लाहौर के आर्य समाजी नेताओं की यही राय थी। धार्मिक प्रवृति के आर्य समाजी यह भी समझते थे कि उन्हें अपनी सारी शक्ति वैदिक धर्म के प्रचार में लगानी चाहिए। नौकरियों और ओहदों के लिए किए गये आन्दोलन में शामिल होना उन्हें व्यर्थ सा प्रतीत होता था। कांग्रेस की नीति में धार्मिकता का अभाव है, उनका प्रस्तावों, व्याख्यानों और डेपुटेशनों पर विश्वास न था और नाही वे आतंकवाद पर भरोसा रखते थे।

कांग्रेस के प्रति उनकी उपेक्षा का मूल कारण एक अस्पष्ट परन्तु गहरा आदर्शवाद था। एक अंग्रेज ने लिखा था कि "किसी भी आर्य समाजी की खाल को खुरच कर देखो तो अन्दर छुपा हुआ क्रांतिकारी देश भक्त लिखा हुआ दिखाई देगा" यह बात सच थी। जो व्यक्ति महर्षि दयानन्द के उपदेशामृत से पला हो वह दासता से घृणा करे और स्वराज्य की अभिलाषा रखे यह तो स्वाभाविक ही था तो भी उस समय कुछेक व्यक्तियों को छोड़कर आर्य समाज के सभासदों ने कांग्रेस के वार्षिक आन्दोलनों में पूरा भाग नहीं लिया। यह सम्मति तब तक कायम रही जब तक महात्मा गांधी ने उसका नेतृत्व संभालकर उसके कार्यक्रम को उच्च स्तर तक पहुंचाया या दूसरे शब्दों में उसमें आदर्शवाद को प्रविष्ट किया।

इतिहास इस बात का साक्षी है कि जिस महायज्ञ की पूर्ति गांधी जी ने की उसका प्रारम्भ महर्षि दयानन्द ने किया था और कांग्रेस में आदर्शवाद की प्रविष्टि होने पर स्वाधीनता आन्दोलनने राष्ट्रीय स्वरूप लिया, स्वतन्त्रता प्राप्ति के इस आन्दोलन में आर्य समाजी किसी से पीछे नहीं रहे यहां तक कि वे यह अगली पंक्ति में रहे।"

खर्राटे लेने से सांस बन्द हो सकती है!

हेलसिंकी, १३ मई। सावधान! खर्राटे लेना खतरनाक है। धूम्रपान तथा अत्यधिक चर्बीयुक्त भोजन करने से होने वाले अत्यधिक तनाव की स्थिति खर्राटों से भी हो सकती है। फिनलैंड के डाक्टरों का कहना है कि जोर-जोर से खर्राटे लेने से १० सैकिंड तक सांस बन्द हो सकती है। डाक्टरों का कहना है कि यदि रात भर ३० बार और एक घंटे में सात बार सांस बन्द हुई तो ऐसा होना खतरनाक भी साबित हो सकता है। डाक्टरों ने ३,८४७ पुरुषों तथा ३६६४ महिलाओं से इस बारे में पूछताछ की। ९ प्रतिशत पुरुषों तथा ३.६ प्रतिशत महिलाओं का जवाब था कि वे लगभग रोज ही खर्राटे भरते हैं।

२५ प्रतिशत महिलाओं तथा ११ प्रतिशत पुरुषों ने कहा कि वे कभी भी खर्राटे नहीं भरते। शेष लोगों का जवाब था कि वे अक्सर ही ऐसा कर बैठते हैं। ज्यादातर मोटे लोग खर्राटे भरते हैं।

खर्राटे लेने वालों में अत्यधिक तनाव तो होता ही है, साथ ही ऐसे ५०, ६० प्रतिशत लोगों में उच्च रक्तचाप की शिकायत भी पाई गई। खर्राटों से बचना है तो पीठ के बल मत सोइये। लेकिन बेचारे मोटे लोगों के समक्ष तो पीठ के बल लेटने के अलावा कोई चारा ही नहीं है।

हिन्दू तत्व

श्री ऐम. जी गुप्त आगरा 'उपर्युक्त शीर्षक से लिखते हैं:

"सिक्खों की इस दलील का कि भारतीय संघ से सम्बद्ध राज्यों को अधिकाधिक स्वायत्तता दी जानी चाहिए कोई औचित्य हो सकता है परन्तु भारतीय राज्य के भीतर पंजाब को पृथक राज्य में परिवर्तित करने की मांग करने का उन्हें कोई अधिकार नहीं है और न ही हो सकता है।

सिख उचित रीत्या सिख धर्म पर गर्व कर सकता है परन्तु सच्चाई यह है कि हिन्दू न केवल हिन्दू धर्म पर ही अपितु सिख धर्म पर भी गर्व करता है।

किसी भी धार्मिक सम्प्रदाय का यह अधिकार नहीं है कि वह पूजा स्थलों को शस्त्रागारों में परिवर्तित करके वहां से अन्य मतावलम्बियों एवं पार्टियों के नेताओं या प्रशासन या राज्य के प्रमुख अधिकारियों की हत्याओं का योजनाबद्ध अभियान चलाए। इस कथन में बड़ा वजन है कि यदि सिक्खों को घाव लगे हैं तो हिन्दुओं को भी लगे हैं। कोई भी हत्यारा शहीद नहीं बन सकता। ऐसा लगता है कि अकाली नेतृत्व को अभी तक रोग के ठीक स्वरूप का भान नहीं हुआ है जिससे कि वह पीड़ित है। उसे ईमानदारी से स्पष्टतः यह बताना चाहिए कि वह क्या चाहता है? और इसकी आवश्यकता क्या है।"

सामायिक चर्चा—

स्वराज्य

स्व० श्री पं० दीनदयालु जी के शब्दों में स्वराज्य की परिभाषा में तीन मुख्य वस्तुएं सन्निहित हैं। प्रथम यह कि राष्ट्र का शासन उनके हाथों में होनाचाहिए जो राष्ट्र के अंग हों। दूसरा यह कि राज्य प्रशासन राष्ट्रहित में संचालित हो जिसका अर्थ यह है कि नीतियां मात्र राष्ट्रहित के लिए ही निर्धारित की जाय। तीसरा यह कि राष्ट्रहित को सुरक्षित रखने के लिए गवर्नमेंट की अपनी ही शक्ति हो। दूसरे शब्दों में आत्म-निर्भरता के बिना स्वराज्य का विचार तक करना गलत है।

यदि राष्ट्रवादियों द्वारा संचालित गवर्नमेंट किसी बाहरी राष्ट्र के दबाव में हो या उसकी अनुयायी हो तो स्वराज्य बेमानी हो जाता है।

यदि राज्य सुरक्षा के मामले में आत्म निर्भर न हो, नीतियों के निर्धारण मे स्वतन्त्र न हो और आर्थिक दृष्टि से स्वावलम्बी न हो तो उस पर राष्ट्र हित के विरुद्ध कार्य करने के लिए दबाव डाला जा सकता है इस प्रकार की परवशता राज्य को नष्टभ्रष्ट कर देती है।

एकात्मक राज्य का अर्थ घोर तानाशाही का केन्द्र बिन्दू नहीं होता। नाही प्रान्तों का उसमें सर्वथा विलय हो जाता है, प्रान्तों को भी विविध प्रशासनिक अधिकार प्राप्त रहेंगे प्रान्तीय स्तर के नीचे के जनपद प्रभृति विविध इकाइयों (Entities) को भी उपयुक्त अधिकार प्राप्त होगा। पंचायतों तक को अधिकार प्राप्त रहने चाहिए। हमारे यहां पंचायतों को बड़ा महत्व पूर्ण स्थान प्राप्त रहने की परम्परा थी। उन्हें कोई भी भङ्ग नहीं कर सकता था। आज हमारे संविधान में पंचायतों को कोई स्थान प्राप्त नही है।

इन पंचायतों को कोई अधिकार अपने हक के रूप में प्राप्त नहीं होते। उनका अस्तित्व राज्यों की दया पर निर्भर होता है उन्हें राज्य की ओर से ही कुछेक अधिकार प्राप्त होते हैं। यह जरुरी है कि उनके अधिकार मौलिक समझे जाएं। इस प्रकार सत्ता के विकेन्द्रीकरण का कार्य पूर्ण हो साथ ही नीचे स्तर की इन इकाइयों में सत्ता का वितरण हो जायगा और समस्त इकाइयां एकात्मक राज्य के चहुं ओर केन्द्रित हो जायेगी।

अच्छी पार्टी

कौन सी पार्टी अच्छी होती है? वह जो मात्र व्यक्तियो का समूह न होकर अपितु सुगठित संगठन होता है जिसका लक्ष्य सत्ता प्राप्ति की इच्छा से रहित होता है। इस प्रकार की पार्टी उसके सदस्यों के लिए साधन होती है साध्य नहीं, और उसके सामान्य सदस्यो की निष्ठा साध्य के प्रति होनी चाहिए।

पाकिस्तान के अहमदियों ने अपना प्रार्थना पत्र वापस लिया

पाकिस्तान के १५० अहमदियों ने जिन्होने स्वीडन में राजनीतिक शरण प्राप्त करने के लिए प्रार्थना पत्र दिया था अपना प्रार्थना पत्र वापस ले लिया है इसलिए कि उनके कथनानुसार उनके साथ अपमान जनक व्यवहार किया गया था।

उन्होंने कहा "हम समझते थे कि स्वीडन वह देश है जो मानवी अधिकारों का सम्मान करता है। परन्तु शरणार्थियों के रूप में हमें अपमानित और हमारे साथ दुर्व्यव्यहार भी किया। इसकी बनिस्बत अन्य कोई चीज भी अच्छी हो सकती है।

ये लोग उन ३०० अहमदियों में से हैं, जो पिछले वर्ष अगस्त में स्वेडन की राजधानी स्टाक होलम गए थे। अन्य १०० इससे पूर्व ही स्वेडन से स्वेच्छया चले गए थे और उनमें से कुछेक ने इंग्लैंड पश्चिमी जर्मनी तथा हालैंड में शरण ले ली थी।

अपमानित किए जाने की एक घटना के रूप मे उनमें से एक ने कहा कि उन्हें नियम से सुअर का मांस परोसा जाता था। हमारे विरोध करने पर कि हम मुसलमान सुअर का मांस नहीं खाते हैं हमें उत्तर मिला हमने तुम्हें यहां आने के लिए आमन्त्रित नहीं किया था।"

इसके अलावा स्वेडन में आने पर यहां की पुलीस ने उनके साथ अपराधियों जैसा व्यवहार किया। कुछेक को ६ दिन तक पुलीस की हिरासत में रखा गया। उन्हें हजामत बनाने तथा साफ कपड़े पहनने की भी सुविधा नहीं दी गई। परिवार छिन्न भिन्न किए गए। कई दिन तक माता पिता और उनके बच्चे आपस में न मिल पाए।

प्रार्थना पत्र वापस लेने के बाद २ शरणार्थी कैम्प छोड़ कर वे अपने परिचितों या रिश्तेदारों के पास चले गए हैं। उनका मूल प्रार्थना पत्र खारिज कर दिया गया और उन्हें स्वीडन छोड़ने का आर्डर दे दिया गया है।

स्टाक होल्म से पी० टी० आई द्वारा
१-४ ८१ को प्रसारित समाचार

गुरु नानक देव के जीवन की एक घटना

एक बार गुरु नानक देव जी अपने एक भक्त के साथ किसी गांव में पहुंचे। गांव के लोगों ने उनके साथ बड़ा दुर्व्यवहार किया। गुरु नानक जब उस ग्राम से विदा होने लगे तो उनके उस भक्त ने ग्राम वालों के दुर्व्यवहार पर बड़ा दुःख और रोष प्रकट किया। महात्मा ने भक्त से कहा रोष करने की जरुरत नहीं है। परमात्मा से प्रार्थना करो कि यह ग्राम सदा आबाद रहे।

दूसरे दिन गुरु नानक एक दूसरे ग्राम में गए। उस ग्राम के लोगों ने उनके साथ बड़ा अच्छा व्यवहार किया। जब उस ग्राम से विदा होने लगे तो गुरु नानक ने अपने भक्त से कहा—परमात्मा से प्रार्थना करो कि यह ग्राम शीघ्र उजड़ जाय। इस पर भक्त को बड़ा आश्चर्य हुआ और हाथ जोड़कर बोला।

"महाराज, जिस ग्राम के लोगों ने आपके साथ बुरा व्यवहार किया था उसको तो आप बसा हुआ देखना चाहते हैं परन्तु जिस ग्राम के लोगों ने आपके साथ अच्छा व्यवहार किया था आप उसके उजड़ने की कामना करते हैं, यह कहां का न्याय है?"

गुरु नानक जी ने उत्तर दिया "उस बुरे ग्राम के लोगों को उसी ग्राम में रहना चाहिए। यदि वे बाहर गए तो अन्यत्र जाकर गन्दगी फैलायेंगे और यदि इस ग्राम के लोग इसे छोड़ कर अन्यत्र जायंगे तो अच्छाई ही फैलायेंगे।"

यह सुनकर भक्त चुप हो गया।

प्रेरक प्रसंग

हैद्राबाद का धर्मयुद्ध अपने पूर्ण उत्कर्ष पर था। स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी फील्ड मार्शल के रूप में मनमाड के शिविर से उसका सब्य संचालन कर रहे थे। इससे पूर्व शोलापुर के शिविर से उसका संचालन उन्हीं के द्वारा होता रहा था। वे प्रतिदिन रात को ९ बजे सार्वदेशिक सभा कार्यालय दिल्ली को फोन पर दिन भर की गतिविधि की जानकरी देते और सभा कार्यालय से आवश्यक जानकारी प्राप्त किया करते थे।

एक दिन फोन पर जब उन्होंने अपने इस निश्चय की सूचना दी कि वे शीघ्र ही जेल जाने वाले हैं तो हम अवाक् रह गए। उन्होंने अपने निश्चय पर प्रकाश डालते हुए कहा "अपने बच्चों को जेल भेजते भेजते मेरे मन में ग्लानि पैदा हो गई है। मुझ जैसे बड़े का अब बाहर रहना अच्छा नहीं लगता। आत्मा की आवाज को आगे दबाए रखना मेरे लिए कठिन है। आप लोग आएं और केन्द्र का कार्य संभाल लें।"

सभा मन्त्री श्री प्रो० सुधाकर जी ने उन्हें अपना निश्चय स्थगित रखने की प्रार्थना की पर वे निश्चय बदलने के लिए उद्यत न हुए। जब उन्हें महात्मा नारायण स्वामी जी के इस लिखित आदेश का स्मरण कराया गया कि उनको मिलाकर सभा के अमुक अमुक अधिकारी और कर्मचारी सत्याग्रह न कर सकेंगे और बाहर रह कर सत्याग्रह के संचालन का कार्य करेंगे तो वे एक दम मौन हो गए और यह कहकर फोन रख दिया कि "आप लोगों की इच्छा। आप सब मुझे पिंजड़े में बन्द पक्षी की तरह छट पटाता हुआ देखना पसन्द करोगे।"

यह थी उस महाभाग की अनुशासन प्रियता।

—रघुनाथप्रसाद पाठक

महर्षि दयानन्द का वार्त्तालाप और उपदेश

संन्यासी लोग किसी को मारा-पीटा नहीं करते

छोटूसिंह का सारा घमण्ड स्वामी जी के पास तो खंड खंड हो गया था परन्तु घर जाकर वह फिर स्वामी जी का अनिष्ट चिन्तन करने लगा। एक रात उसने दो बलिष्ठ मनुष्य स्वामी जी को सताने के लिए भेजे। जब वे स्वामी जी के निवास स्थान पर पहुंचे तो उस समय महाराज पंडित रामप्रसाद जी को कुछ बात चीत समझा रहे थे। वे उजड्ड मुंडे बार-बार हंसने और छेड़छाड़ करने लगे। एक दो बार तो महाराज ने उन्हें कोमल शब्दों से समझाया परन्तु जब देखा कि ये टलने ही में नहीं आते तो स्वामीजी ने प्रबल हुंकार गर्जना की। इससे वे दोनों पामर पुरुष कांप उठे और बेहोश होकर जमीन पर गिर पड़े। उस समय रामप्रसाद जी को भी अपने दोनों कानों में अंगुलियां डाल लेनी पड़ी।

महाराज और रामप्रसाद जी ने उन उद्दण्डों को पानी के छींटे देकर सचेत किया। जब वे उठकर बैठे तो पसीना-पसीना हो रहे थे।

स्वामी जी ने कहा कि संन्यासी लोग किसी को मारा-पीटा नहीं करते इसलिए डरो नहीं। कपड़े संभाल कर निर्भयता से चले जाओ।

चक्री शब्द का वास्तविक अर्थ

पंडित गजाधर से वार्तालाप करते समय महाराज ने मनुस्मृति में आए 'चक्री' शब्द का अर्थ कुम्हार किया। इस पर गजाधर ने कहा कि इसका अर्थ तेली है और कुल्लूक ने भी तेली ही अर्थ किया है स्वामी जी ने हंसकर कहा कि कुल्लूक तो उल्लूक है, उसकी बात जाने दो। आप यह तो सोचो कि तेली के पास चक्र नहीं होता, वह कोल्हू से काम करता है। चक्र कुम्हार के पास ही होता है इसलिए उसी का नाम चक्री है।

जब काशी नरेश ने क्षमा मांगी

ज्येष्ठ सम्वत १९२७ के आरम्भ में स्वामी जी मिर्जापुर से प्रस्थान कर गंगा के किनारे विचरते हुए बनारस आ पहुंचे और दुर्गा कुंड के निकट लाला माधोदास के बाग में ठहरे।

महाराजा ईश्वरी नारायण सिंह जी ने एक दिन स्वामीजी के पास अपना आदमी भेजकर उनके दर्शनों की इच्छा प्रकट की। स्वामी जी ने इस विषय में बाबा जवाहर लाल से सम्मति ली कि महाराज के पास जाना चाहिए या नहीं? जवाहरलाल जी ने कहा कि शास्त्रार्थ में आपके साथ जो अनीति और अनुचित व्यवहार हुआ है महाराजा अब आपका सम्मान करके उसका प्रायश्चित करना चाहते हैं। उन्हें पश्चाताप भी हुआ है। परन्तु इच्छा तो यही है कि वे आपके आश्रम पर आकर क्षमा मांगे।

एक दिन महाराजा के आदमी गाड़ी लेकर स्वामी जी को लेने आ गए स्वामी जी ने यह सोचकर कि हमारी ओर से उनके मन में कोई उद्वेग न बना रहे गाड़ी पर सवार हो गए। स्वामी जी के दर्शनों के लिए कामाक्षा देवी का स्थान नियत किया गया था। जब महाराजा ने स्वामी जी को आते देखा तो उठ खड़े हुए और आगे आकर स्वागत किया। स्वामीजी को सम्मान पूर्वक भीतर लाकर एक सुवर्ण सिंहासन पर बिठाया। उनके गले में अपने हाथों से एक पुष्पमाला पहराई और सादर नमस्कार करके आप भी पास के चांदी के सिंहासन पर बैठ गए।

इसके अनन्तर महाराजा ने हाथ जोड़कर स्वामी जी से विनय की कि हमारे कुल में मूर्तिपूजा परम्परा से चली आती है। मैं भी बचपन से श्रद्धा पूर्वक कुल धर्म का पालन करता हूं। इसलिए चिरकाल के धर्मानुराग से ही शास्त्रार्थ में आपकी अवज्ञा हो गई। आप संन्यासी हैं इसलिए क्षमा कर दीजिए। स्वामी जी ने गम्भीर भाव से कहा कि हमारे मन में इन बातों का लेशमात्र भी संस्कार नहीं है।"

अन्य भी अनेक बातें होती रही और अन्त में जब स्वामी जी चलने लगे तो महाराजा ने बहुत से चांदी के रुपए और फलादि स्वामी जी को भेंट किए और बड़े आदर से गाड़ी में बैठाकर उनको विदा किया। इस स्वामी जी कोई ढाई मास काशी में ठहरे।

काशी नरेश के सामने मुख्यतः बड़े २ निष्पक्ष विद्वानों, नेताओं और समाचार पत्रों की प्रतिक्रिया थी जिन्होंने उन्हें बड़ी हद तक विचलित किया हुआ था जिनमें से कुछेक पत्रों की प्रतिक्रिया इस प्रकार है।

रुहेलखंड समाचार पत्र

स्वामी दयानन्द जी मूर्तिपूजा के विरुद्ध हैं। उनका शास्त्रार्थ कानपुर के पंडितों से भी हुआ था और अब उन्होंने काशी के पंडितों को भी जीत लिया है। (कार्तिक सं० १९२६ का अंक)

ज्ञान प्रदायिनी लाहौर

इसमें सन्देह नहीं कि पंडित लोग मूर्ति पूजा की आज्ञा वेदों में नहीं दिखा सके।" (चैत्र सम्वत १९२६ का अंक)

हिन्दू पैट्रियाट

कुछ समय हुआ रामनगर के महाराजा ने एक सभा बुलवाई। इसमें काशी के बड़े-२ पंडित बुलाए गए थे। वहां स्वामी दयानन्द और पंडितों के मध्य एक लम्बा वाद होता रहा। पंडित लोग यद्यपि अपने शास्त्र ज्ञान का अति गर्व करते थे परन्तु हुई उनकी बड़ी भारी हार।"

रामप्रसाद! पराया फल खाकर तुमने चोरी की है

स्वामी जी महाराज अपने विद्यार्थियों तथा साथ रहने वाले पंडितों और सेवकों को भी छोटे-२ पापों से बचने की शिक्षा दिया करते थे।

कासगंज में एक दिन स्वामी जी स्नान के लिए पास के एक बाग में जा रहे थे। उस समय रामप्रसाद स्नान के उपकरण उठाए महाराज के पीछे-पीछे चला आता था। एक पका आम पेड़ से गिरकर रास्ते में पड़ा था। महाराज तो उसे लांघ गए परन्तु पीछे चलते हुए राम प्रसाद ने वह उठा लिया। स्वामी जी ने उसकी इस क्रिया (हरकत) को देखकर उसे कहा—"राम प्रसाद! यह बाग तुम्हारा नहीं है इसलिए पराया फल उठाकर तुमने एक प्रकार की चोरी की है।" अपने स्थान पर आकर स्वामी जी ने उस पर एक रुपया की सजा भी दी।

शिक्षाएं ग्रन्थों से

ब्याज अधिक से अधिक कितना लेना और देना चाहिए?

'सवा रुपए सैंकड़े से अधिक, चार आने से कम ब्याज न लेवे (और) न देवे। जब दुगना धन आ जाय (तो) उससे आगे कौड़ी न लेवे, न देवे। जितना कोई कम ब्याज लेगा उतना ही उसका धन बढ़ेगा और कभी धन का नाश और बुरी सन्तान उसके कुल में न होंगे।

(संस्कार विधि गृहस्थ)

सं. कर्त्ता—रघुनाथ प्रसाद पाठक

सम्पादक के नाम पत्र

लाला रामगोपाल शालवाले और डंका

"डा० प्रशान्त वेदालंकार का 'क्या आर्य समाज को राजनीति में भाग लेना चाहिए ?' लेख दो किस्तों में पढ़ा। श्री शालवाले जी आर्य समाज को सदैव राजनीति से ऊपर रखकर हिन्दू समाज के लिए रचनात्मक कार्य करते रहे हैं। क्या धर्मान्तरण, क्या साम्प्रदायिक दंगे या अन्य समस्याएं वे सार्वदेशिक सभा के यशस्वी प्रधान के रूप में ईमानदारी से हिन्दू समाज की सुरक्षा के लिए इनका निराकरण करते रहे हैं। इसलिए वे करोड़ों आर्य-समाजियों और हिन्दुओं के लिए अभिनन्दनीय हैं।

मेरा यह सुविचारित मत है कि १९८४ के संसदीय निर्वाचनों में राष्ट्रीय एकता और अखण्डता के लिए पूज्य शालवाले जी ने कांग्रेस आई को आर्य समाज का समर्थन देकर एक महत्वपूर्ण सामयिक कार्य किया है। १९६७ में वे भारतीय जनसंघ के चांदनी चौक से स्वयं प्रत्याशी के रूप में सांसद निर्वाचित हुए थे। उस समय उन्होंने आर्य समाज का समर्थन जनसंघ और भारतीय क्रान्ति दल को दिलवाया था। १९७७ में भी श्री शालवाले जी ने जनता पार्टी का समर्थन कराया था।

किन्तु जनता पार्टी और उसके वर्तमान भाजपा घटक ने ३ वर्ष में राष्ट्र-विरोधी और मुस्लिम-अकाली ईसाई तुष्टीकरण के जो कार्य किये उससे श्री वाजपेई और डा० प्रशांत वेदालंकार का भाजपा दल कांग्रेस (आई) की कार्बन कापी या 'बी' टीम बन गया। क्या अल्पसंख्यक आयोग के निर्माण में श्री वाजपेई और उनके घटक दल के ९८ सांसद उत्तरदायी नहीं थे ? क्या विदेश मन्त्री के रूप में श्री वाजपेयी ३७० वीं धारा के वकील नहीं बन गये थे ? क्या अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय को अल्पसंख्यक स्वरूप दिलाने के लिए जनता सरकार द्वारा विधेयक लोकसभा में पारित नहीं किया गया था ? १९७७ में उ० प्र० में जनता सरकार में भाजपा घटक के कम से कम १५ मन्त्री या उपमन्त्री थे। फिर भी वाजपेई और डा० प्रशान्त जी ने अयोध्या में राम के मन्दिर के ताले क्यों नहीं खुलवाए ? अपितु विदेश मन्त्री के रूप में वीसा ढीला कर श्री वाजपेई पाकिस्तान का ताला खोल आये जिससे पाकिस्तानी कमाण्डोज ने घुसपैठ कर भारत में स्थान स्थान पर दंगे कराये। उस समय १९७८-७९-८० में अलीगढ़ के वीभत्स साम्प्रदायिक दंगों में श्री शालवाले, प्रो० मधोक, प्रो० रामसिंह और श्री के० नरेन्द्र ने हिन्दुओं की सभी तरह से सहायता की, किन्तु श्री वाजपेई और भाजपा के नेताओं ने हिन्दुओं के ५००-५०० व्यक्तियों के प्रतिनिधि मण्डलों से वार्ता तक नहीं की, जबकि श्रीमती इन्दिरा गांधी ने हर पहलू पर सन्तोष प्रद ढंग से वार्ता की। इन प्रतिनिधि मण्डलों का नेतृत्व मैंने ही प्रायः किया था।

१९८० के निर्वाचनों में विजयी होने के पश्चात् श्रीमती इन्दिरा गांधी को बाध्य होकर अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय को अल्पसंख्यक स्वरूप देना पड़ा तो भाजपा के एक भी सांसद ने इसका विरोध नहीं किया। श्रीमती गांधी से १९७९ में मैंने वार्ता की थी। वे इस विश्वविद्यालय को अल्पसंख्यक स्वरूप दिए जाने की घोर विरोधी थीं।

श्रीमती गांधी की हत्या से एक माह पूर्व के श्री वाजपेई, श्री राम जेठमलानी, प्राणनाथ लेखी, सिकन्दर बख्त आदि भाजपा के नेताओं के वक्तव्य पाकिस्तान, अकाली दल और फारुख अब्दुल्ला के समर्थन में दिए हुए हैं। श्रीमती इन्दिरा गांधी की हत्या के बाद दिल्ली में सिखों की हत्या होने पर श्री वाजपेई ने कहा कि २७२० के लगभग सिख दिल्ली में मारे गए हैं जिनके नाम और पते भी उन पर हैं किन्तु पंजाब में मारे गए हिन्दुओं, तोड़े गए मन्दिरों एवं पुजारियों की हत्या के बारे में कभी आपने न तो रिकार्ड ही बनाया और भाजपाई दूकानदार कार्यकर्ता हरवंश लाल खन्ना की हत्या से पूर्व न आपने पंजाब जाना ही उचित समझा।

अतः भाजपा जैसी हिन्दू विरोधी पार्टी को सबक सिखाने के लिए श्री शालवाले जी द्वारा आर्य समाज का डंका को समर्थन देना सामयिक ही रहा। श्री शालवाले जी ने प्रो० बलराज मधोक का सदैव की भांति इस बार भी तन; मन; धन से समर्थन किया था किन्तु हिन्दू राष्ट्र एवं हिन्दू राज्य के समर्थक इस महान नेता का हिन्दू राष्ट्र का कथित समर्थक आर. एस.एस. ही पूरी शक्ति से विरोध करता है। —डा० गंगाराम, सार्वदेशिक महामन्त्री- उ०प्र० जनसंघ, अलीगढ़

(पंजाब केसरी में सार रूप प्रकाशित)

गोरक्षा

इस बार के सार्वदेशिक में विदेशी गाय धन के बारे में छपा है, क्या ही अच्छा हो, यदि आप भारत सरकार को अवगत करवा देवें और कोई सर्व-सम्मत हल द्वारा ये फालतू गाय बछड़े भक्तों तक पहुंचाई जावें, सरकार जब इन पर लाखों रुपए खर्च कर सकती है तो फिर भारत की संस्कृति की प्रतीक गाय के लिए क्या कुछ भी नहीं कर सकती ?

ओम प्रकाश 'अंशु'
८२, आर्य भवन, प्रेमनगर, करनाल

बधाई

आदरणीय पुरुषार्थी जी,

सार्वदेशिक नियमित मिल रहा है इसके लिए मैं आभारी हूं। सार्वदेशिक का शीर्ष वाक्य "कृण्वन्तो विश्वमार्यम" पाठकों पर एक जादुई प्रभाव डालने वाला है। एक दूसरे को जोड़कर विश्वमैत्री की कल्पना भारतीयता का मूल रहा है। इसी भारतीयता का प्रतीक है सार्वदेशिक। इसकी सामग्री तथ्यपरक शोधपूर्ण और पूर्ण जानकारी से लबालब भरी होती है। महर्षि दयानन्द जी पर सम्पादकीय मन पर अमिट छाप छोड़ गया।

हर अंक की सामग्री बेहद रोचक व ज्ञानवर्धक तथा हृदय पर अमिट प्रभाव डालने वाली है। श्रेष्ठ प्रकाशन के लिए बधाई स्वीकार कीजियेगा।

पालिका समाचार आपको मिल रही होगी, उस पर अपने विचार लिखियेगा। सहयोग व सम्पर्क बनाये रखियेगा।

—श्याम सुन्दर शर्मा, सम्पादक
पालिका समाचार, नई दिल्ली, नगरपालिका

बहराइच में धर्मान्तरण एक षड्यन्त्र के तहत कराया गया

धर्म एक व्यक्तिगत मामला है। हर व्यक्ति को अधिकार है कि वह अपनी इच्छानुसार धर्म को माने या न माने। वह अपना धर्म छोड़ भी सकता है। साथ ही कोई दूसरा धर्म स्वीकार भी कर सकता है किन्तु सामूहिक रूप से धर्मान्तरण होने से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि यह आस्था परिवर्तन का मामला नहीं है। सामूहिक धर्म परिवर्तन का अर्थ ही यह हो जाता है कि इसके पीछे कोई न कोई संगठित शक्ति है, जो भारत के आन्तरिक मामलों में हस्तक्षेप करके असन्तुलन व तनाव उत्पन्न करना चाहती है। बहराइच में पिछले पांच वर्षों से सामूहिक धर्म परिवर्तन का जो सिलसिला चला आ रहा है, उसके पीछे भी एक ऐसी ही संगठित शक्ति की झलक मालूम पड़ती है जो खतरनाक अन्तर्राष्ट्रीय षडयन्त्र को अपने ढंग से क्रियान्वित कर रही है।

प्रशासनिक उपेक्षा का परिणाम

उत्तर प्रदेश का बहराइच जनपद भारत-नेपाल सीमा की १२८ किलोमीटर लम्बी सीमा रेखा निर्धारित करता है। अधिकांशतः घने जंगलों से घिरा यह जिला घाघरा और उसकी सहायक नदी सरयू तथा कौडियाला नदियों के साथ-साथ राप्ती व बपसा जैसी अनेक नदियों द्वारा भी सिंचित है परन्तु विपुल वन व खनिज सम्पदा से युक्त उर्वरा धरती वाला यह जिला शासन व प्रशासन की उपेक्षा के कारण शैक्षिक व औद्योगिक क्षेत्र से पिछड़ा ही नहीं अपितु विकास की दृष्टि से भी लगभग शून्य है, सम्पन्न वर्ग तो समानता और निजी साधनों के बल पर अपना अस्तित्व बनाए हुए हैं, परन्तु हरिजन, गिरिजन, वनवासी एवं निर्बल जातियों, वन जातियों तथा कमजोर वर्गों के लिए तो आजादी के बाद से आज तक शासन व प्रशासन की यह लगातार उपेक्षा असहनीय पीड़ा बन बैठी और ज्यादातर लोगों की आर्थिक चूलें चरमरा गई। फिर भी ये जातियां जिनको सरकार व प्रशासन ने अपनी निहित स्वार्थ-पूर्ति के पश्चात थोड़ी बहुत ही सही, आर्थिक सहायता एवं सुविधाएं उपलब्ध कराता रहा, धर्मान्तरणकर्ता षडयन्त्रकारियों का नरम चारा नहीं बन पाई। परन्तु इन लोगों द्वारा हल्का सा आतंक एवं प्रलोभन दिये जाते ही स्थिति नाजुक हो जाती है। 'बुभुक्षितः किम न करोति पापम्' ? के अनुसार भूखा अपने साथ सारी दुनिया को खा डालने के सपने तक संजो लेता है। बड़ी संख्या में लड़ाकू जातियों के लोग पराजय के पश्चात इन्हीं जंगलों में शरण लेते रहे हैं। इनमें से बहुत से राजस्थान से आकर बसे हैं। बहुतों ने अपना स्थाई निवास नहीं बनाया, कबीलों के रूप में भ्रमण करते रहे। इसी कारण अनुसूचित जन-जातियों की बड़ी संख्या इस जिले में है। इन्हीं में से एक 'नट' इस समय धर्मान्तरण का लक्ष्य है, जिनकी इस जिले में संख्या २०,००० के आस पास है। इनका कलंदर नामक एक वर्ग मुगल काल में ही मुसलमान बना लिया गया था।

* इसके पीछे संगठित शक्ति है, जो भारत के घरेलू मामलों में हस्तक्षेप करके असंतुलन व तनाव पैदा करना चाहती है, * इस शक्ति ने प्रशासन द्वारा निर्बलों की उपेक्षा का लाभ उठाया, * यह प्रचार भ्रामक है कि कलमा पढ़ने वाले नट पहले से ही मुसलमान थे, * 'कलमा पढ़ाओ' कार्यक्रमों के पीछे आरिफ मोहम्मद खान के एक खास व्यक्ति का नाम विशेष चर्चित, * अनेक नटों को जबरी मुसलमान बनाया गया।

नट मूलतः हिन्दू हैं। इनमें से बहुत बड़ा वर्ग शिवाजी महाराज के गुरिल्ला सैनिकों के वंशज हैं। इनके नेता 'माना' नामक पूर्वज, जो शिवाजी के सहयोगी थे, मराठों के पराभव के बाद इधर भाग आये थे। कुछ राजस्थान से भाग कर आये हैं। आज भी युद्ध, कलाबाजी, व्यायाम और शिकार करना ही इनका मुख्य कार्य है। हल जोतना वर्जित है। विवाह संस्कार होता है। मडप एवं भांवर की प्रथायें प्रचलित हैं।

चार वर्ष पूर्व प्रथम चरण में जो धर्मान्तरण ६ ग्रामों में हुए थे, वे सभी बहराइच नगर के पड़ोस के थे। इस समय नगर से दूर नेपाल की सीमा के पास का क्षेत्र चुना गया। मिहींपुरवा क्षेत्र के बाबागंज और मलहीपुर विकास खंडों की १४ ग्राम-सभाएं, जो पूर्व काल में नान पारा और नवाबगंज के मुसलमान जागीरदारों के अन्तर्गत रही हैं, मुस्लिम बहुल हैं। यहां इस समय ७० प्रतिशत से लेकर ७५ प्रतिशत तक आबादी मुसलमानों की है। इसी क्षेत्र के १२ ग्रामों में सामूहिक धर्म परिवर्तन हुआ है। अतः शासन की ओर से किया जा रहा यह प्रचार कि यह धर्म परिवर्तन सवर्ण हिन्दुओं के अत्याचारों के परिणाम स्वरूप हुआ है, भ्रामक है।

सांसद का हाथ

सन १९८३-८४ का काल खंड कुछ शांति से गुजर पाया था कि लोकसभा निर्वाचन एवं उसके परिणाम लिए हुए सन १९८५ आ पहुंचा। जब फरवरी मास में विधान सभा चुनावों की प्रक्रिया अपने पूर्ण रूप में चल रही थी, उस समय चुनाव प्रचार कर रहे कार्यकर्ताओं द्वारा बहराइच जनपद में २०० से अधिक नटों द्वारा सामूहिक धर्मान्तरण करने की घटना प्रकाश में आने से सम्पूर्ण क्षेत्र में एक खलबली सी मच गई थी। बहराइच के सांसद आरिफ मोहम्मद खान व उनके हमसफर कथित पी. आर. ओ. गयासुद्दीन उर्फ गयास साहब इस सम्बन्ध में विशेष चर्चा के केन्द्र थे। जनस्रोतों पर आधारित व्यापक सर्वेक्षण से यह स्पष्ट हुआ कि लोक सभा चुनाव से लेकर विधान सभा चुनाव तक सम्पन्न हुए समस्त 'कलमा' पढ़ाओ कार्यक्रमों की तैयारी एवं सफलता में इस व्यक्ति का सक्रिय एवं प्रत्यक्ष योगदान रहा है। यह विशेष उल्लेखनीय है कि फरवरी व दिसम्बर, १९८४ तथा जनवरी व फरवरी ८५ को रहमत गांव का सामूहिक जलसा एवं धर्मान्तरित हिन्दुओं के लगभग सभी गांव उसी क्षेत्र में थे जो गयास साहब को लोकसभा चुनाव में आरिफ खान के चुनाव अभियान हेतु सौंपे गये थे।

१९८२ के बाद से अभियान

सन १९८२ में आयोजित मुस्लिम सम्मेलन के पश्चात प्रथम चरण में ५७ परिवारों के २३१ व्यक्तियों का धर्मान्तरण कराया गया था। कोतवाली देहात क्षेत्र के टटवां गांव के ११ परिवारों के ४९ सदस्य, खाले पुरवा गांव के २१ परिवारों के १०२ सदस्य, रामगांव के १० परिवारों के ४० सदस्य, थाना हजूरपुर के गांव नटपुरा के ४ परिवारों के १२ सदस्य, थाना कैसरगंज के गांव कुढ़ोमी के ६ परिवारों के २२ सदस्य, थाना नानपारा के गांव असरफा के दो परिवार के ६ सदस्य व बटेथा विधान सभा चुनावों के मध्य द्वितीय चरण में ३१ परिवारों के २१२ सदस्यों, थाना नवाब गंज क्षेत्र के गांव चौरी के एक परिवार के ३, रहमत गांव के ८ परिवारों के २०, चुनौनी गांव के दो परिवारों के ११, सामोदरवा गांव के तीन परिवारों के १४, मलहीनपुर थाना क्षेत्र में नयापुरवा गांव के एक परिवार के ५, रुपइडिहा थाना क्षेत्र के शिवपुरा गांव के तीन परिवारों के १०, मलीहरपुर थाना क्षेत्र के गांव किशरन्ट के एक परिवार के ६, रुपईडीहा थाना क्षेत्र में लालिमपुरा गांव के एक परिवार के पांच, दरगाह थाना क्षेत्र के गांव ललहा के दो परिवारों के ४, रिसीया थाना क्षेत्र के गांव ललहा के दो परिवारों के ४, रिसीया थाना क्षेत्र के गांव बमहीया के एक परिवार के ४ और बहुसुलिया गांव के ८ परिवार के २६ सदस्यों का द्वितीय चरण में धर्मान्तरण किया गया।

धर्मान्तरण के संगठित तन्त्र

शहर में घंटाघर के पास मिलि ईमदादी सोसायटी का कार्यालय है। ८ वर्ष पूर्व मुसलमानों को आर्थिक सहायता प्रदान करने के उद्देश्य से इस सोसायटी का गठन किया गया था। गठन के समय से ही एक सरकारी स्कूल के अध्यापक श्री रहीम उल्ला इसके सर्वेसर्वा तथा संचालक हैं। इस सोसायटी के विरुद्ध आयकर का भी एक मामला चल रहा है, किन्तु जिस अधिकारी

महर्षि दयानन्द सरस्वती के इतिहास विषयक मन्तव्य और आर्यसमाज

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपने ग्रन्थों में जो अनेक इतिहास विषयक मन्तव्य प्रतिपादित किए हैं, उनमें मुख्य निम्नलिखित हैं—

(१) सृष्टि के प्रारम्भ से पांच हजार वर्ष पूर्व समयपर्यन्त पृथिवी पर आर्यों का सार्वभौम चक्रवर्ती राज्य रहा। यह दशा स्वायम्भव मनु से शुरू कर पाण्डव राजा युधिष्ठिर के समय तक रही।

(२) जितनी भी विद्या, संस्कृति, विज्ञान व मत संसार में फैले, वे सब आर्यावर्त (भारत) से ही प्रसारित हुए। प्राचीन समय में सर्वत्र वैदिक धर्म का प्रचार था, या अन्य देशों के निवासी ऐसे मतों के अनुयायी थे जिनका प्रादुर्भाव वैदिक धर्म से हुआ था।

(३) महाभारत युद्ध व कौरव पाण्डवों का काल अब से लगभग पांच हजार वर्ष पूर्व था। स्वायम्भव मनु से युधिष्ठिर तक जो राजा भारत में हुए, उनका इतिहास महाभारत आदि ग्रन्थों में लिखा है। युधिष्ठिर के पश्चात अनेक राजवंशों ने भारत के विविध प्रदेशों पर राज्य किया। इनमें दिल्ली (इन्द्रप्रस्थ) के राजाओं की वंशावली महर्षि ने सत्यार्थ प्रकाश में दी है, जिसके अनुसार बारहवीं सदी के अन्तिम भाग में दिल्ली का राजा यशपाल था, जिसे परास्त कर शहाबुद्दीन गौरी ने भारत में अपने प्रभुत्व का सूत्रपात किया था।

(४) आधुनिक विद्वानों ने भारतीय इतिहास के जिस तिथिक्रम का प्रतिपादन किया है, वह महर्षि को स्वीकार्य नहीं था। आधुनिक विद्वान वेदों की रचना काल २००० से १२०० ईस्वी पूर्व तक मानते हैं। पर महर्षि वेदों को अपौरुषेय मानते थे। आधुनिक इतिहासकार जो महाभारत के काल को १००० ईस्वी पूर्व के लगभग मानते हैं और राजा विक्रमादित्य के समय को जो पांचवीं सदी ईस्वी में मानते हैं वह महर्षि को स्वीकार नहीं था।

(५) प्राचीन आर्य सभ्यता की उन्नति के सर्वोच्च शिखर पर पहुंच हुए थे। मनुष्य की सभ्यता का आदि युग पाषाण युग था, जबकि वह जंगली और असभ्य जीवन व्यतीत करता था, धीरे धीरे मनुष्य सभ्यता के मार्ग पर अग्रसर हुआ, यह मत महर्षि को स्वीकार्य नहीं था। सभ्यता और संस्कृति के क्षेत्र में वे विकासवाद को नहीं मानते थे।

(६) आर्यों का आदि निवास स्थान त्रिविष्टप (तिब्बत) था, जहां से आकर वे सप्तसिन्धु (?) बसे। 'आर्य' किसी जाति विशेष का नाम नहीं है, और न ही उससे किसी नस्ल का बोध होता है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने वेदों की अपौरुषेयता, एकेश्वरवाद, षड्दर्शनों में अविरोध, राजधर्म आदि के सम्बन्ध में जो मन्तव्य प्रतिपादित किए हैं, उनकी पुष्टि के लिए आर्य समाज के विद्वानों ने पर्याप्त परिश्रम किया है। पर उनके इतिहास विषयक मन्तव्यों के सत्यासत्य की जांच के लिए या उनके समर्थन में अभी तक कोई महत्वपूर्ण कार्य नहीं किया गया। केवल पण्डित भगवद्दत्त बी. ए. रिसर्च स्कालर तथा आचार्य रामदेव जी ने इस दिशा में कार्य किया था। आचार्य जी ने 'भारत का प्राचीन इतिहास, तीन खण्डों में लिखा था, जो महर्षि के मन्तव्यों के पूर्णतया अनुरूप था। इस इतिहास के दो खण्डों के लिखने में मैंने भी आचार्य जी को सहयोग दिया था पर गत पचास वर्षों में न डी. ए. वी. कालेजों ने इस सम्बन्ध में कोई कार्य किया, न गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय न और न ही किसी आर्य प्रतिनिधि सभा व सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने।

भारत के स्कूलों, कालिजों और यूनिवर्सिटियों में भारत का जो इतिहास पढ़ाया जाता है, वह महर्षि के मन्तव्यों के अनुरूप नहीं है। आर्य समाज की शिक्षण-संस्थाओं में भी ऐसा ही इतिहास पढ़ाया जाता है। इसका परिणाम यह है कि केवल उच्च शिक्षा प्राप्त लोगों में ही नहीं, अपितु (शिक्षा के व्यापक प्रसार के कारण) सर्व साधारण जनता में भी इतिहास विषयक वे धारणाएं बद्धमूल होती जाती हैं, जो महर्षि के मन्तव्यों के विरुद्ध हैं।

गत वर्षों में विश्व के विविध देशों में पुरातत्व सम्बन्धी जो खोज हुई है, और प्राचीन साहित्य का जो विवेचनात्मक अध्ययन किया गया है, उससे बहुत से ऐसे संकेत व प्रमाण उपलब्ध हुए हैं, जो महर्षि के इतिहास विषयक मन्तव्यों की पुष्टि करते हैं। उनसे ज्ञात होता है कि अत्यन्त प्राचीन काल में ईजिप्त, एशिया माइनर, मध्य एशिया आदि सर्वत्र वैदिक धर्म का प्रभाव विद्यमान था, और दक्षिण-पूर्वी एशिया के देशों में भी प्राचीन हिन्दू (आर्य) धर्म की सत्ता थी। विविध देशों में आर्य राजाओं के शासन के प्रमाण भी प्रकाश में आए हैं पर महर्षि के मन्तव्यों के सत्यासत्य के निर्णय के लिए अभी बहुत खोज व परिश्रम की आवश्यकता है। यह कार्य विद्वानों की एक ऐसी मण्डली द्वारा किया जाना चाहिए जो जहां संस्कृत भाषा के पूर्णतया ज्ञाता तथा प्राचीन भारतीय साहित्य व इतिहास में पारंगत हों, वहां साथ ही जिनमें से अनेक फ्रेंच, जर्मन, रूसी, चीनी व तिब्बती आदि भाषाएं भी जानते हों, और जिन्हें ईजिप्त, ग्रीस, चीन, एशिया माइनर, ईरान आदि देशों के प्राचीन इतिहास की भी समुचित जानकारी हो। ऐसे विद्वानों द्वारा गम्भीर रूप से खोज के अवसर ही महर्षि के इतिहास विषयक मन्तव्यों की पुष्टि कर सकना सम्भव होगा। क्या कोई आर्य शिक्षण-संस्था इस महत्वपूर्ण कार्य को अपने हाथ में लेने को उद्यत है?

—सत्यकेतु विद्यालंकार

से यह मामला उठाया था, उसका स्थानान्तरण करा दिया गया था। धर्मान्तरण के लिए आवश्यक धन इसी सोसायटी के माध्यम से ही उपलब्ध होता है। इसके अतिरिक्त यहां दारुल उलूम मदरसा देवबन्द द्वारा संचालित एक आवासीय विद्यालय भी है जिसका उद्देश्य शैक्षणिक कम, धार्मिक अधिक दिखाई देता है। भारतीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय इस्लामिक नेताओं के भाषण एवं अन्य गतिविधियों में संलिप्त रहने के कारण यह संस्था इस्लामिक शिक्षा प्रसार के लिये कृतसंकल्प दिखाई पड़ती है।

जिला प्रशासन ने इस सामूहिक धर्म परिवर्तन की घटना को पूर्ण रूप से दबाने की कोशिश की थी। १६ फरवरी को इस घटना के ठीक दो दिन बाद जब विभिन्न हिन्दू संगठनों के प्रतिनिधि मंडल ने मिलकर इसकी जानकारी जिला प्रशासन को दी तो पहले इस घटना का प्रतिवाद करते हुए जिला अधिकारी ने कहा था कि यह सब आरिफ खान के विरोध का प्रयास राजनीति से प्रेरित है। तत्पश्चात उन लोगों ने धर्मान्तरण प्रभावित क्षेत्र का चप्पा-चप्पा छानकर परावर्तित लोगों के नाम, ग्राम व संख्या सहित विवरण प्रस्तुत कर धर्मान्तरण को प्रमाणित किया। फिर जब जिला प्रशासन ने नटों को हिन्दू व अनुसूचित जनजाति वर्ग में मानने से साफ इंकार कर दिया, तब नट उपजाति के सामाजिक, सांस्कृतिक धार्मिक व ऐतिहासिक प्रमाणों को प्रस्तुत कर हिन्दू समाज का अभिन्न अंग मानने को विवश कर दिया गया था, जिसके प्रमाण स्वरूप सरकारी अभिलेखों को भी प्रस्तुत करना पड़ा था।

धर्मान्तरण की इस घटना के पीछे जहां अशिक्षा, प्रशासन द्वारा उपेक्षा तथा हिन्दू समाज में व्याप्त छुआछूत आदि कुरीतियां थीं, वहीं विदेशी धन का प्रभाव और जबरदस्ती व धमकी आदि से भी इंकार नहीं किया जा सकता क्योंकि धर्मान्तरण प्रभावित क्षेत्र मुस्लिम बहुल है इसलिए इस दलील में कोई भी दम नहीं कि यह हिन्दू समाज द्वारा सताये जाने पर हुआ है। और जबरदस्ती का एक मामला थाना नानपारा के ग्राम बसरका का प्रकाश में आया है। जब इस गांव के वृद्ध नटों ने जबरन मुसलमान बनने से मना कर दिया तो एक प्राथमिक विद्यालय के मुसलमान अध्यापक के नेतृत्व में उनकी पिटाई करके जबरदस्ती कलमा पढ़वाया गया था।

—रवीन्द्र मोहन यादव
(पं. के. १-५-८३)

श्री लालमन आर्य निबन्ध प्रतियोगिता के परिणाम

इस प्रतियोगिता में दो विषय थे : (१) 'महर्षि दयानन्द के सपनों का भारत" तथा वर्तमान चारित्रिक संकट समस्या और समाधान", जिसमें देश भर से २७६ प्रतियोगियों ने भाग लिया। इन निबन्धों का मूल्यांकन आर्य समाज के तीन प्रसिद्ध विद्वानों द्वारा किया गया, जिनके नाम इस प्रकार से हैं—

(१) श्री क्षितीश कुमार जी वेदालंकार, "सम्पादक आर्य जगत"
(२) डा० वाचस्पति जी उपाध्याय "दिल्ली विश्वविद्यालय"
(३) डा० धर्मपाल जी, "प्रधान सम्पादक आर्य सन्देश"

इस निबन्ध प्रतियोगिता में निम्नलिखित व्यक्तियों को पुरस्कृत किया गया-

प्रथम पुरस्कार : संयुक्त विजेता—

(१) श्री कृष्ण देव शास्त्री, पाणिनि महाविद्यालय बहालगढ़ सोनीपत ५००/- रु०
(२) श्री महेन्द्र कौशिक, ८, जीवन भवन, देवपुरा आश्रम, हरिद्वार, ५००/- रु०

द्वितीय पुरस्कार : संयुक्त विजेता : —

(१) डा० सूर्य प्रकाश विद्यालंकार—के. एच. १५७ कविनगर, गाजियाबाद २५०)
(२) श्री मिश्री लाल मीना—ग्रा० मउखेड़ा, वाया-बिवाई, जयपुर, २५०)

तृतीय पुरस्कार : संयुक्त विजेता :

(१) श्री विनोद कुमार—क्वाटर नं० ७६९/११/१११/टाऊनशिप, बी एच ई. एल. हरिद्वार, १५०)
(२) कुमारी अख्तर उन्नीसा—म० नं०-२५ हमीदिया अस्पताल के पीछे भोपाल १५०)

मूल्यांकन के हिसाब से १० प्रतियोगियों को सान्त्वना पुरस्कार दिए गये, जिनके नाम इस प्रकार हैं :—

१—श्री राजबीर सिंह मलिक,	छपरोली मेरठ	५०)
२—श्री शिवपुरी गोस्वामी,	रातानाड़ा, जोधपुर	५०)
३—श्रीमती शर्मी माथुर,	हनुमान चौक, जोधपुर	५०)
४—श्री कृष्ण बिहारी लाल,	प्रवक्ता, जवाहरनगर, हाथरस	५०)
५—डा० जयदत्त उप्रेती शास्त्री,	अध्यक्ष संस्कृत विभाग, कुमाऊ वि० वि० परिसर, अल्मोड़ा	५०)
६—श्री कैलाश बिहारी वर्मा	अतिरिक्त जिला एवं सत्र न्यायाधीश सिविल कोर्ट (बिहार)	५०)
७—श्री सुनीता वासवानी,	कोतवाली के प स, भोपाल	५०)
८—श्री मोहम्मद असलम,	१९९-रामनगर, मेरठ	५०)
९—श्री सत्येन्द्र शर्मा,	आर्य नगर, सतना	५०)
१०-शकुन्तला श्रीवास्तव	बालाघाट, म० प्र०	५०)

श्री लालमन आर्य काव्य रचना प्रतियोगिता

स्कूली स्तर पर आयोजित की गई इस प्रतियोगिता में विद्यार्थियों को पुरस्कृत किया गया।

प्रथम पुरस्कार : संयुक्त विजेता—

१—मनीषा होली चाईल्ड स्कूल,
२—श्री सुशील वर्मा हंसराज माडल स्कूल,

द्वितीय पुरस्कार : संयुक्त विजेता—

१—प्रीति हंसराज माडल स्कूल,
२—श्री आकाशद्वीप जिन्दल पब्लिक स्कूल

तृतीय पुरस्कार।—

१—अर्पिता डी. ए. वी. पब्लिक स्कूल वेस्ट पटेल नगर,

श्री लालमन आर्य चित्रकला प्रतियोगिता

स्कूली स्तर पर दो भागों में कक्षा छठवीं से आठवीं एवं नवीं से बारहवीं दो समूहों में यह प्रतियोगिता आयोजित की गई, जिसमें निम्नलिखित विद्यार्थियों को पुरस्कृत किया गया, जिनके नाम निम्नलिखित है :

माध्यमिक कक्षायें —

प्रथम पुरस्कार:—

(१) श्री रोहित खतुड़िया कक्षा आठवीं कुलाची हंसराज माडल स्कूल

द्वितीय पुरस्कार—

(२) श्री इकबा बबवा कक्षा आठवीं हंसराज माडल स्कूल

तृतीय पुरस्कार—

(३) श्री मनोज जैन, कक्षा छठवीं डी. ए. वी. माडल स्कूल, पूर्वी शालीमार बाग

उच्च कक्षाएं —

प्रथम पुरस्कार :

(१) बिन्दू नवीं हंसराज माडल स्कूल,

द्वितीय पुरस्कार :

(२) श्री निर्मल मरवाह दसवीं कुलाची हंसराज माडल स्कूल

तृतीय पुरस्कार :

(३) श्री रवि कुमार, नवीं हंसराज माडल स्कूल

आर्य समाजों की गतिविधियां

एक अनूठा और अनुकरणीय सत्प्रयास--रचनात्मक पद्धति में

महर्षि दयानन्द बलिदान शताब्दी

वैदिक मिशनरी निर्माण योजना के क्रम में

१. आर्य वीर दल प्रशिक्षण शिविर

यह शिविर समायोजन दि० २६ मई से ९ जून तक सोत्साह सम्पन्न हो रहा है। इसमें सामान्यतः सभी प्रदेशों और मुख्यतः उत्तर प्रदेश हरियाणा एवं राजस्थान के ऐसे ही निष्ठावान आर्य वीर भाग लेंगे।

शिविरार्थी २५मई की शाम तक वेद मंदिर मथुरा पहुंचें। शिविर शुल्क नहीं है। सभी श्रद्धानुसार दान देकर व्यय पूर्ति करें।

इस शिविर में सार्वदेशिक आर्य वीर दल के प्रधान संचालक श्री पं० बाल दिवाकर जी 'हंस' सहायक संचालक श्री पं० देवव्रत जी आचार्य श्री रामसिंह आर्य श्री ब्र० सत्यव्रत सत्यम् श्री अनिल आर्य आदि उच्च कोटि के नेता एवं शिक्षक भाग ले रहे हैं। शिविर का संचालन श्री जय नारायन जी आर्य करेंगे।

२. आर्य कार्यकर्त्ता/कार्यकर्त्री प्रशिक्षण शिविर

रचनात्मक पद्धति में महर्षि दयानन्द बलिदान शताब्दी के संदर्भ में यह एक अन्य महत्वपूर्ण शिविर है जिसमें सम्पूर्ण जीवन दानी अथवा आंशिक समय दानी अथवा प्रतिदिन आर्य समाज के कार्य के लिए कुछ समय निश्चित रूप से योजनाबद्ध रूप में देने वाले भाग लेंगे। यह शिविर भी उपर्युक्त तिथियों में उपर्युक्त स्थान पर ही हो रहा है। डा० सुरेशचन्द्र जी वेदालंकार, डा० स्वामी दिव्यानन्द जी सरस्वती, डा० भवानीलाल जी भारतीय आदि उच्च कोटि के विद्वान प्रशिक्षण देंगे।

३. भव्य एवं विराट समारोह ७ से ९ जून

उक्त तिथियों मे महर्षि दयानन्द बलिदान शताब्दी के साथ ही विरजानन्द वैदिक साधनाश्रम की रजत जयन्ती, आर्योपप्रतिनिधि सभा मथुरा की स्वर्ण जयन्ती सम्पन्न हो रही है। दिनांक ७ जून को श्रद्धा दिवस दि० ८ जून को संकल्प दिवस तथा दिनांक ९ जून को बलिदान दिवस का आयोजन होगा। वेद मंदिर (वैदिक मिशनरी निर्माण केन्द्र) के भवन का उद्घाटन होगा। आर्य युवा जागरण सम्मेलन आर्य महिला जागरण सम्मेलन, आर्य किसान सम्मेलन, हिन्दू संगठन शुद्धि सम्मेलन, तथा बलिदान सम्मेलन (श्रद्धाञ्जलि समारोह) एवं कवि सम्मेलन तथा वेद एवं वैदिक साहित्य संगोष्ठी, वैदिक परिवार संगोष्ठी आदि संगोष्ठियां होंगी। विद्वद् अभिनन्दन एवं बलिदानी वीरों का अभिनन्दन एवं पुरस्कार वितरण भीहोगा। अनेकों सन्त, विद्वान् तथा उच्चस्तरीय राज नेता भाग ले रहेहैं।

समारोह के संयोजक आचार्य प्रेम भिक्षु जी ने १ जून से ६ या ७ जून प्रात. तक पद यात्रा सप्ताह की प्रेरणा की है। यह सम्पूर्ण आयोजन ग्राम प्रचार को आधार बनाकर किया जा रहा है।

अभयदेव (प्रधान)　　वंशीधर (प्रधान)
डा० द्वारिकाप्रसाद आर्य (मन्त्री)　　सुरेशचन्द्र आर्य (मन्त्री)
आर्योप प्रतिनिधि सभा मथुरा　　श्री विरजानन्द ट्रस्ट मथुरा
खुशीलाल विजय(सम्पादक स्मारिका) श्यामसुन्दर आर्य(मंत्री समारोह)

समारोह-स्थल-वेद मन्दिर वृन्दावन मार्ग मथुरा
(चमेली देवी गर्ल्स कालेज के सामने, डी०ए०वी० हाई स्कूल के साथ)

वार्षिकोत्सव

आर्य समाज रेलवे कालोनी समस्तीपुर का प्रथम वार्षिकोत्सव दिनांक २५-५-८५ से २-६-८५ तक होना निश्चित किया गया है। इससे पहले २७, और २८ मई को योगशिविर का भी आयोजन किया गया है।

पं॰ घरेव पाण्डेय, मन्त्री-आ. स., समस्तीपुर

आर्य समाजों से निवेदन

आर्यसमाज मोदीनगर के सदस्य जिनका नाम शम्भुदयाल वैद्य है एक सप्ताह से अपने भाई के पास लक्ष्मीबाई नगर नई दिल्ली गए थे और वहां से फिर कहीं चले गए हैं। उन्हें आर्य समाज में जाने की बड़ी लगन है। हो सकता है किसी समाज में रह रहे हो। अतः दिल्ली या दिल्ली से बाहर की किसी आर्य समाज में विद्यमान हों या उनके आवास की जानकारी हो तो कृपया सूचना आर्य समाज मोदीनगर (मेरठ) को तुरन्त भिजवा दें या टेलीफोन नं० ३३१६२५२ पर फोन कर दें।　　—ओम्प्रकाश त्यागी, मन्त्री

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली

गुरुकुल झज्जर में सार्वदेशिक आर्य वीर दल प्रशिक्षण एवं शिक्षक शिविर

१४ जून से २३ जून १९८५ तक

आर्य समाज में नवयुवकों को दीक्षित करने के लिए गुरुकुल झज्जर में सार्वदेशिक आर्य वीर दल का शिविर १४ जून से २३ जून तक आयोजित किया जा रहा है जिसका संचालन डा० देवव्रत आचार्य उपप्रधान संचालक सार्वदेशिक आर्य वीर दल करेंगे।

योग्यता:—छात्र कम से कम आठवीं कक्षा उत्तीर्ण होना चाहिए।

प्रवेश शुल्क:—२०) रुपये

नोट:—(१) १३ जून को सायंकाल तक गुरुकुल में पहुंच जायें।
(२) गुरुकुल झज्जर, रेवाड़ी राजमार्ग से एक किलोमीटर दक्षिण पश्चिम में स्थित है।

पश्चिमी उत्तर प्रदेश आर्य वीर दल प्रशिक्षण शिविर

आर्य वीर दल के संगठन को शक्तिशाली बनाने हेतु श्री प्रेम भिक्षु जी के आश्रम मथुरा में आर्य वीर दल प्रशिक्षण शिविर श्री जयनारायणजी आर्य संचालक आगरा कमिश्नरी की देखरेख में २६ मई से ९ जून तक लगाने का निश्चय किया गया है। प्रान्त की सभी आर्य समाजों तथा आर्य वीर दल के अधिकारियों से प्रार्थना है कि कम से कम दो आर्य वीर शिक्षण हेतु अवश्य भेजे। वहां पर किसी प्रकार का शुल्क नहीं लिया जायेगा। अपना गणवेश, भोजन पात्र, बिस्तर साथ लावें १००) खर्च करने पर नया गणवेश भी कार्यालय से प्राप्त कर सकते हैं। अधिक जानकारी के लिए श्री प्रेमभिक्षु जी वैदिक साधना आश्रम सत्य प्रकाश वेद मन्दिर वृन्दावन मार्ग मथुरा से पत्र व्यवहार करें।　　—डा० बालकृष्ण आर्य "विकल"

प्रान्तीय संचालक
सार्वदेशिक आर्य वीर दल पश्चिमी
फतेहपुर (उ० प्र०)

दयानन्द पब्लिक स्कूल का उद्घाटन

आर्य समाज माडल टाउन दिल्ली ९ के २९ वें वार्षिकोत्सव के अन्तिम दिन १२ मई को श्री लाला रामगोपाल शालवाले (प्रधान सार्वदेशिक सभा)के करकमलों द्वारा आर्यसमाज में दयानन्द पब्लिक स्कूल (नर्सरी से ५ वीं तक) का उद्घाटन बहुत ही हर्षोल्लास के साथ प्रातः ९-१० बजे हुआ। पश्चात ऋषिलंगर भी हुआ।

गोहाटी आर्य वीर दल प्रशिक्षण शिविर सानन्द सम्पन्न

१—आर्य वीरों शहीदों और महर्षि दयानन्द को कर्मक्षेत्र में वीरता और सेवा भाव जगाकर श्रद्धांजलि अर्पित करो।

—श्री हंस

२ - टेलीवीजन से आर्य वीरों के अनेक व्यायामों की छवि सारे असम में दिखाई जायेगी।

गोहाटी,

आर्य समाज गोहाटी के तत्वावधान और असम आर्य प्रतिनिधि सभा के संरक्षण में सार्वदेशिक आर्य वीर दल गोहाटी प्र० शिविर १८ अप्रैल से २८ अप्रैल तक सम्पन्न हुआ। शिविराध्यक्ष का उत्तरदायित्व श्री पं० बालदिवाकर हंस प्रधान संचालक आर्य वीर दल नई दिल्ली ने किया और दीक्षान्त भाषण भी विशिष्ट अतिथि के रूप में उन्होंने किया। समारोह की अध्यक्षता एक मू० पू० ए० पी० ने की। व्यायाम प्रशिक्षण का उत्तरदायित्व श्री ब्र० सत्यव्रत सत्यम् गुरुकुल चित्तौड़ राजस्थान ने संभाला। कन्याओं के शिविर का संरक्षण—सुश्री मधु स्मृतिसिंह ने किया।

श्री हंस ने अपने ओजस्वी दीक्षान्त भाषण में आर्य वीरों को आवाहन करते हुए उन्हें कर्म क्षेत्र में उतरने की सलाह दी, जिससे युवाशक्ति चरित्रोपासक बने—"मेरी दृष्टि में महर्षि दयानन्द और देश के शहीदों को यही सच्ची श्रद्धांजलि होगी।" आपने आगे कहा आप गौरवपूर्ण इतिहासका निर्माण कर रहे हैं पूर्व से पश्चिम और उत्तर से दक्षिण तक भारत के चप्पे-चप्पे पर आपको उत्तरदायित्व संभालना है। भगवान रामने दोनों भुजाएं उठाकर कहा था "निशिचर हीन करो महीं सो आप उन्हीं राम के वंशज होने के नाते उत्तरदायित्व संभालें। हिमालय, ब्रह्मपुत्र के आंचल में अवस्थित असम प शिविरायोजन किया है। डा. नारायणदास, ओम्प्रकाश आनन्द एवं श्री संजय कुमार जी के साथ-साथ उनके परम सहयोगी प्यारेलाल आर्य (दम्पति) का वरुण शर्मा का अपूर्व सहयोग हममें आत्मीयता का सृजन कर रहा है। मैं आशा कर सकता हूं कि आर्य वीर दल आर्य समाज के संरक्षण में सारे असम में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह कर सकेगा।

अध्यक्ष पद से भाषण करते एक विद्वान शिक्षा शास्त्री ने कहा आर्यसमाज की महान सेवाओं ने सदैव मानवोचित व्यवहार और संस्कारों को जगाने में महत्व पूर्ण भूमिका का निर्वाह कियाहै। मैं आप लोगों का आभारी हूं कि आपने मुझे युवाशक्ति के मध्य में बुलाकर उनके उत्तम भविष्य हेतु प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया है। यह कार्य महर्षि दयानन्द के मिशन का मानव हित में रचनात्मक है।

सभी आर्य वीरों के प्रशिक्षण काल में सीखे व्यायामों का हृदयग्राही प्रदर्शन तुमुल हर्ष ध्वनि के साथ सराहा गया। असम सरकार के टेलीवीजन विभाग ने व्यायाम के भिन्न-भिन्न कौशलों की फिल्म ली जो साप्ताहिक कार्य कर्मों में समस्त असम में दिखाई जायेगी।

श्री हंस की आर्य वीर दल के गौरवपूर्ण इतिहास के सन्दर्भ में एक वार्ता टेलीवीजन वालों ने ली। संक्षेप में आर्य वीरों एवं आर्य वीरांगनाओं के कौशल पूर्ण सम्भावनों और व्यायाम प्रदर्शनों का सर्वसाधारण पर गहरा प्रभाव पड़ा। आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान एव मन्त्री ने निकट भविष्य में पुनः असम के लिए समय देने का प्रधान संचालक जी से अनुरोध किया और व्यायाम शिक्षक श्री सत्यव्रत सत्यम् सहित बेतकी की फूलमालाओं के साथ वस्त्रोपहार से, दोनों महानुभावों का भाव भीना स्वागत् किया।

—मधु स्मृति, संवाददाता

निर्वाचन

दि० ५-५-८५ को जिला उपप्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री अमरसिंह जी की अध्यक्षता में आर्य समाज नया कविनगर गाजियाबाद का निर्वाचन संपन्न हुआ। निम्नलिखित पदाधिकारी निर्वाचित हुए:

प्रधान— डा० जगदीश चन्द्र जी

मन्त्री— श्री सुधीर कुमार जी

कोषाध्यक्ष— श्री चन्द्रभूषण जी बंसल

सुधीर कुमार,—मन्त्री
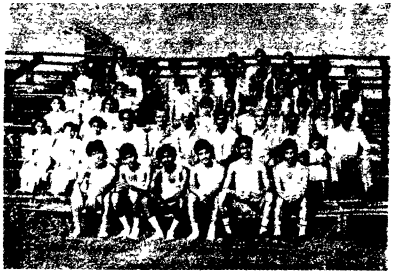
गोहाटी आर्य वीर दल प्रशिक्षण शिविर में भाग लेने वाले वीर एवं प्रधान संचालक श्री बालदिवाकर हंस जी एक साथ दिखाई दे रहे हैं।

प्रवेश

—संस्कृत महाविद्यालय गुरुकुल सिंहपुरा—जीन्द रोड रोहतक में दयानन्द के मन्तव्यानुसार आर्य पाठ विधि से अध्ययन करने के लिए छात्रों का प्रवेश प्रारम्भ हो चुका है। प्रवेश के लिए इच्छुक छात्र कम से कम १०वीं कक्षा पास होना चाहिए। अध्ययन रत दस छात्रों को २००) रुपए प्रति मास छात्रवृति दी जायगी। छात्रों के लिए म० द० वि० वि० रोहतक के आर्ष विभाग की विशारद-शास्त्री एवं आचार्य की परीक्षाएं देने की व्यवस्था रहेगी। अन्तिम तिथि ३० जून ८५

उत्सव समाचार

—पाणिनि कन्या महाविद्यालय वाराणसी का १४वां वार्षिकोत्सव ३१ मई से २ जून तक मनाया जाएगा।

—आर्य समाज शाहजहांपुर का १०८ वर्षीय वार्षिकोत्सव २४ मई से २६ मई ८५ तक मनाया जाएगा।

—आर्यसमाज गांधी नगर दिल्ली का २१वां वार्षिकोत्सव ६ मई से १२ मई ८५ तक सम्पन्न हुआ। वेदपारायण यज्ञ कथा, आर्य महिला सम्मेलन आर्य वीर सम्मेलन का आयोजन ५-५-८५को दोपहर बाद एक विशाल शोभा यात्रा का आयोजन किया गया। स्थान-स्थान पर सार्वदेशिक सभा के प्रधान माननीय लाला रामगोपाल जी शालवाले का पुष्प मालाओ से स्वागत किया गया। स्वागत करने वालों में अनेक सिख बन्धु भी थे। स्वर्णसिंह जी जोश जलूस में सैकड़ो आर्य जनों की टोली में आगे चल रहे थे।

रजि० नं० डी० (सी०) १७८ सार्वदेशिक साप्ताहिक (२६-५-१९८५) बिना टिकट भेजने का लाइसेंस नं० ९३
R. N. 626/57 Lieeassd to post withoutprepayment, License No. 93 Post in D.P.S.O. on 23-5-85

महात्मा हंसराज जन्म-दिवस समारोह

आर्य समाज सान्ताक्रूज बम्बई में रविवार २१-४-८५ को प्रातः शिक्षा-शास्त्री प्रो० बलराज मधोक (दिल्ली) की अध्यक्षता में महात्मा हंसराजजन्म-दिवस-समारोह मनाया गया।

प्रातः यज्ञ व प्रार्थना की गई। इसके पश्चात् दिल्ली डी. ए. वी. स्कूल के धर्म शिक्षक श्री कृष्णदत्त शर्मा ने महात्मा हंसराज द्वारा की गई आर्य-समाज की सेवा के प्रति कृतज्ञता प्रकट की।

आर्य विद्वान आचार्य सोमदेव जी ने अपने वक्तव्य में कहा कि महात्मा हंसराज ने सेवा के माध्यम से आर्य सिद्धान्तों को जन-साधारण में पहुंचाया था एवं अनेक गरीब व निर्धन बच्चों को सेवा के माध्यम से अपने समीप रखकर उन्हें आर्य समाज का दिग्गज विद्वान बनाया। इस अवसर पर पन्डित सियाराम "निर्भय" आरा (बिहार) विशेष रूप से उपस्थित थे। उन्होंने महात्मा जी के जीवन पर पढ़ी कविताओं से सबको मन्त्र मुग्ध कर दिया।

आर्य समाज के प्रधान श्री देवेन्द्र जी कपूर ने जो महात्मा हंसराज के शिष्य रहे हैं, अनेक व्यक्तिगत अनुभव सुनाकर उपस्थित लोगों को आह्वान किया कि हम महात्मा जी के समान अपने जीवन को सात्विक एवं सुयोग्य बनाकर आर्य समाज की सेवा करें।

प्रो० मधोक ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि लार्ड मेकाले की जिस शिक्षा-पद्धति के विरोध में महात्मा हंसराज जी ने अपना सर्वस्व बलिदान कर दिया था—आज वह शिक्षा-पद्धति पूर्व से भी अधिक अपनाई जा रही है। हमारी शिक्षा पद्धति में आमूल-चूल परिवर्तन की आवश्यकता है। इस देश के हर विद्यार्थी को नैतिक शिक्षा, हितोपदेश, पञ्चतन्त्र व रामायण जैसे ग्रन्थ अनिवार्य रूप से पढ़ाये जाने चाहिए ताकि भारतीय संस्कृति की गरिमा को हर नागरिक समझ सके। उन्होंने कहा कि हमारी शिक्षा-प्रणाली में राष्ट्रीय भावनाओं का समावेश होना चाहिए। यही महात्मा हंसराज के प्रति हमारी श्रद्धाञ्जलि होगी।

आर्य समाज के महामन्त्री कैप्टिन देवरत्न आर्य ने समारोह का संयोजन किया व आगन्तुक विद्वानों का सम्मान व धन्यवाद किया।

आर्य गढ़वाल वेद प्रचार ... चोपड़ा कोटबली सैण ... आयोजित किया जा रहा है। कार्य... रहेगा।

—मंत्री
गढ़वाल वेद प्रचार ...
अधोई वाला तरला देहरादून

शोक समाचार

आर्य जगत के देदीप्यमान श्री मिहिरचन्द जी धीमान का आकस्मिक निधन हावड़ा में २३-४-८५ को प्रातः ३॥ बजे हुआ। दाह संस्कार में लगभग एक हजार व्यक्तियों ने भाग लिया। आप अनेक वर्षों तक सार्वदेशिक सभा के उपप्रधान रह चुके थे उनकी मृत्यु पर वहां की अनेक संस्थाएं और विद्यालय आदि बन्द हो गए। आर्य विद्यालय सलकिया हावड़ा ने अपने पूरे स्टाफ और छात्र-छात्राओं सहित शव यात्रा में भाग लिया।

—श्रीमती कौशल्या देवी प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा मध्यप्रदेश की पूज्य माता जी का निधन हो गया है।

सार्वदेशिक प्रेस, दरियागंज नई दिल्ली में मुद्रित तथा रघुनाथप्रसाद पाठक मुद्रक और प्रकाशक के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, महर्षि दयानन्द भवन, नई दिल्ली-१ से प्रकाशित।

सृष्टिसम्वत् १९७२९४९०८६] सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र दयानन्दाब्द १६१ दूरभाष । २७४७७१
वर्ष २० अङ्क २६] अषाढ़ कृ० ७ सं० २०४२ रविवार ९ जून १९८५ वार्षिक मूल्य २०) एक प्रति ५० पैसे

श्रद्धेय लाला रामगोपाल शालवाले के अभिनन्दन के अवसर पर ११ लाख रुपये की सम्मान राशि संकलित करने के सन्दर्भ में निवेदन

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के यशस्वी प्रधान श्रद्धेय लाला रामगोपाल शालवाले के अभिनन्दन के अवसर पर उन्हें ११ लाख रुपये की सम्मान राशि भेंट करने का निश्चय किया गया है। सम्मान राशि कोष के लिये धन संग्रह करने का कार्य प्रारम्भ हो चुका है। इस संदर्भ में निम्नलिखित बातें ज्ञातव्य हैं—

१—अभिनन्दन समारोह के साथ सम्मानराशि भेंट करने के पीछे यह भावना है कि अभिनन्दन समारोह की स्मृति में एक स्थायी कोष की भी स्थापना की जावे, जिसके सूद से सहायता कार्य (विशेषकर आर्यसमाज के प्रचारकों, वृद्ध उपदेशकों, विधवाओं निराश्रित महिलाओं तथा सुयोग्य विद्यार्थियों की सहायता) गोरक्षा प्रकल्प एवं माननीय लालाजी के प्रिय कार्यों को प्रोत्साहन दिया जा सके। इस स्थायी कोष का निर्माण सार्वदेशिक सभा के अन्तर्गत होगा और एतदर्थ इस सभा में अभिनन्दन समिति का खाता खोल दिया गया है।

२—सम्मान राशि के लिये धन संग्रह, सार्वदेशिक सभा की रसीद बुकों पर किया जायेगा, ताकि दाताओं को आयकर से छूट का लाभ प्राप्त हो सके। जो धन सार्वदेशिक सभा में सीधा प्राप्त होगा, उसके लिये यहां से सीधे रसीद भी भेज दी जायेगी। सार्वदेशिक सभा में चेक अथवा बैंक ड्राफ्ट द्वारा ही धन भेजा जाये जो "सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली" के नाम होने चाहियें और अनिवार्य रूप से "क्रास्ड" होने चाहिये।

३—आर्य समाजों तथा अन्य संस्थाओं (विशेषकर शिक्षण संस्थाओं) को चाहिये कि वे धन-राशि एकत्रित कर उसे चैक या बैंक ड्राफ्ट द्वारा सार्वदेशिक सभा को भेजें।

४—आर्य प्रतिनिधि सभायें अपनी रसीद बुकों पर धन संग्रह कर सकतीं हैं। यदि उन्हें आयकर से मुक्ति प्राप्त है तो उसका लाभ दाताओं को उनके द्वारा ही मिल जायेगा, अन्यथा जिन दाताओं को आवश्यकता होगी, उन्हें आयकर से मुक्ति का प्रमाणपत्र बाद में सार्वदेशिक सभा की ओर से भेज दिया जायेगा।

५—धन संग्रह अभियान में उन संस्थाओं के संचालकों एव महानुभावों का भी सहयोग प्राप्त करना चाहिये, जिनकी माननीय लाला जी के प्रति श्रद्धा है और जो उनके प्रिय कार्यों के समर्थक एवं सहयोगी हैं।

६—ज्ञातव्य है कि आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश ने १९ मई को मेरठ में सम्पन्न अपनी अन्तरंग बैठक में यह निश्चय किया कि सम्मान राशि के कम से कम एक लाख रुपये का सहयोग प्रदान करेंगे। अन्य आर्य प्रतिनिधि सभाओं से भी प्रार्थना है कि वे अपनी अन्तरंग बैठक में इस आशय का निर्णय अति शीघ्र करें। सम्मान राशि का लक्ष्य पूर्ण करने के लिये हमें उत्साह पूर्वक धन संग्रह करना है।

७—स्थान-स्थान पर इस कार्य के लिये स्थानीय और क्षेत्रीय समितियां भी गठित की जा सकती हैं, परन्तु ऐसी किसी भी समिति को धन संग्रह के पूर्व हमसे अथवा उस प्रान्त की आर्य प्रतिनिधि सभा से अनुमति प्राप्त कर लेना अनिवार्य है।

८—धन संग्रह के लिये अभिनन्दन समिति ने भी कच्ची रसीदें छपवाई हैं। इन रसीदों पर प्राप्त धन के लिये सार्वदेशिक सभा की पक्की रसीद बाद में धन प्राप्त हो जाने के उपरान्त भेजी जायेगी। यह पक्की रसीद दाताओं को अथवा धन संग्रहित करने वाली संस्थाओं को भेजी जायेगी। इच्छुक व्यक्ति अथवा संस्थायें अभिनन्दन समिति को पत्र लिखकर कच्ची रसीदें मंगा सकते हैं।

९—धन संग्रह के लिये अपील का भी प्रकाशन किया जा रहा है।

१०—दाताओं के नाम सार्वदेशिक एवं आर्यसमाज की अन्य प्रमुख पत्रिकाओं में प्रकाशित किये जाते रहेंगे।

११—इस विषय में अन्य स्पष्टीकरण अथवा अतिरिक्त जानकारियां अभिनन्दन समिति से प्राप्त की जा सकती हैं।

डा० आनन्द प्रकाश संयोजक अभिनन्दन समारोह समिति	**ओम्प्रकाश त्यागी** मन्त्री सार्वदेशिक सभा
इन्द्रनारायण कोषाध्यक्ष अभिनन्दन समारोह समिति	**सोमनाथ मरवाह** अध्यक्ष अभिनन्दन समारोह समिति

कार्यालय :—
३/५ महर्षि दयानन्द भवन, रामलीला मैदान, नई दिल्ली-२

सम्पादक—ओम्प्रकाश पुरुषार्थी
सहसम्पादक—रघुनाथ प्रसाद पाठक

आतंकवाद से सामाजिक स्तर पर निपटना होगा

—सत्येन्द्र पाल सिंह

इन सबसे अलग चीज है आतंकवाद का मनोबल तोड़ना। सरकार अपने सख्त कानूनों और कारंवाई से तो उनसे निपटेगी ही, लेकिन आवश्यक नहीं कि इससे उनका मनोबल टूट ही जाए। उनकी गतिविधियां दब जरूर जाएंगी कुछ समय के लिए। रावण से युद्ध करते करते जब मर्यादा पुरुषोत्तम राम थकने व निराश होने लगे तो उनके द्वारा सही निशाने पर लगाया गया एक तीर रावण की नाभि को भेदता हुआ उतना कारगर सिद्ध हुआ जितना कई दिनों से चला आ रहा घमासान युद्ध भी नहीं। आज हमें उसी दूरदर्शिता से काम लेते हुए आतंकवाद की नाभि पर प्रहार करना है। वह नाभि है हिन्दू-सिख एकता को नष्ट करने की साजिश जिसको विफल करने के लिए एक व्यापक जन अभियान का चलाया जाना जरूरी है।

आज आतंकवादियों का साफ और एकमात्र मकसद है हिन्दू और सिखों के बीच घृणा, द्वेष और अविश्वास की दीवार खड़ी करना और साम्प्रदायिकता को हवा देना ताकि लोग आपस में लड़ें, बलवे हों, दंगे हों ताकि वे आम सिखों की सहानुभूति व समर्थन अर्जित कर सकें, इस दावे की बिना पर कि भारत में सिख सुरक्षित नहीं और अपना 'राज' ही एक रास्ता है। श्रीमती इन्दिरा गांधी की अमानुषिक हत्या के पश्चात भड़क उठे दंगों से ऐसा लगा कि क्या आतंकवादी सचमुच बाजी जीतने जा रहे हैं? लेकिन घटनाक्रम तेजी से बदला। हाल ही में उत्तर भारत के विभिन्न प्रान्तों में हुई बम विस्फोट की घटनाओं के बावजूद कायम रखा गया साम्प्रदायिक सदभाव इस बात का द्योतक है कि राम, बुद्ध, नानक, महावीर के मानव प्रेम के सन्देश आज भी वायु मण्डल में तैर रहे हैं और देश की धरती में अभी भी वे विशेषताएं मौजूद हैं जिनसे तमाम झटकों को सहकर भी एक खड़ा रह सकता है हमारा भारत।

सिखों को यह समझना होगा कि वे उसी संस्कृति का एक अंग है जिसके गौरव की रक्षा के लिए गुरुतेग बहादुर और गुरु गोविंद सिंह ने त्याग व बलिदान के अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत किये। यदि वे गुरु गोविन्द सिंह की स्तुति और आराधना में नतमस्तक हो जाते हैं, तो वे यह क्यों भूलने लगते हैं कि उन्हीं गुरु गोविन्द सिंह ने स्वयं 'रामावतार' भी लिखा था। यदि वे सच्चे सिख हैं तो गुरुवाणी 'अव्वल अल्ला नूर उपाया कुदरत दे सब बन्दे' का अर्थ समझने की चेष्टा क्यों नहीं करते। जो सिख रोज सुबह शाम अरदास की अन्तिम पंक्तियों में 'नानक नाम चढ़दी कला तेरे भाने सरबत का भला' करता है क्या वह अपने धर्म से हटता नहीं जब वह जाति धर्म के नाम पर विद्वेष, अलगाव, विभाजन और निर्दोष हत्याओं की बात सोचता है। जिस देश के कोने-कोने में उसके गुरुओं की स्मृतियां किसी न किसी रूप में जुड़ी हुई है कोई सिख कैसे सोच सकता है, उस धरा उस संस्कृति से अलग होना। यदि हमारे लिए अमृतसर स्वर्णमन्दिर पवित्र स्थल है तो क्या पटना साहब हजूर साहब की पवित्रता किसी मायने में कम है। स्वयं एक सिख होने के नाते मैं गर्व से कह सकता हूं कि हमारी परम्पराएं हमारे संस्कार कहीं भी महान हिन्दू संस्कृति से अलग नहीं दिखाई देते और यह अधिक पुरानी नहीं तीन सौ साल पहले की तो बात है जब गुरु गोविन्द सिंह ने हिन्दू समाज के ही सदस्यों को अमृतपान कराकर वीरोचित संस्कार दिए तथा अपना शिष्य बनाया था। हरेक सिख को नेकनीयती से यह मानना होगा कि यह देश उसका अपना देश है, इस देश की संस्कृति उसकी अपनी संस्कृति है। उसी परम्परा के तहत जो गुरु तेग बहादुर, गुरु गोविन्द सिंह से सरदार भगतसिंह और हाल के वर्षों में जनरल अरोड़ा ने कायम रखी है देश को कमजोर करने वाली हर ताकत की खिलाफत करनी होगी एक सच्चे सिख के नाते। समस्याएं हो सकती हैं, मतवैभिन्य हो सकता है, किन्तु उसके सुलझाने के रास्ते भी हैं। झगड़े होते हैं, सुलझते हैं किन्तु परिवार नहीं टूटा करते।

जो समझदारी वक्त के इस नाजुक मोड़ पर सिखों से अपेक्षित है वही बहुसंख्यक समुदाय को भी दिखानी होगी। फर्क करना होगा सिख और सिख में और साफ तौर पर पहचान बनानी होगी उन बहुसंख्यक सिखों की जिनका न तो आतंकवाद न पंजाब की अकाली राजनीति से दूर का कोई वास्ता है और जो शांति व सदभाव से जीना चाहते हैं। आज यह बात सही अर्थों में माननी होगी कि दिल्ली, उत्तरप्रदेश, बिहार या बंगाल में बैठे किसी सिख से पंजाब की गतिविधियों का रिश्ता जोड़कर हम आतंकवादियों के पक्ष को ही मजबूत कर रहे होंगे। सिखों को पंजाब के चश्मे से देखने की मानसिकता नितांत बीमार मानसिकता है। इसे हरगिज खत्म करना होगा। इसी तरह पंजाबमें पहचान कायम करनी होगी राष्ट्रवादी तथा विघटनकारी तत्वों की। ऐसा करके हम आतंकवादियों को एकदम अलग थलग और कमजोर बना सकने में निश्चय ही कामयाब हो सकेंगे।

इधर पंजाब के बाहर देश के अन्य हिस्सों में बसने वाले सिखों ने जिस तरह खुलकर आतंकवादी कारंवाइयों की भर्त्सना की है और पंजाब में भी अकाली नेता लौंगोवाल, बादल व तोहड़ा ने जो रूख अख्तियार किया है और देश में जो साम्प्रदायिक सदभाव कायम रखा गया है उसे देखते हुए लगता है कि आतंकवाद का दौर अब अधिक कायम रहने वाला नहीं। आवश्यकता है एक सशक्त सामाजिक प्रतिरोध और आवश्यक समझदारी की।

लाला रामगोपाल शालवाले अभिनन्दन समिति

महर्षि दयानन्द भवन, रामलीला मैदान, नई दिल्ली-२

सार्वदेशिक सभा के उपमन्त्री डा. आनन्दप्रकाश आर्य प्रतिनिधि सभाओं का निरीक्षण करने तथा उनके कार्यों की प्रत्यक्ष जानकारी प्राप्त करने के उद्देश्य से १० जून से १४ जुलाई के मध्य सात प्रान्तों की यात्रा करेंगे। यात्रा का अन्य उद्देश्य श्रद्धेय लाला रामगोपाल शालवाले के अभिनन्दन के अवसर पर सम्मान राशि के रूप में ११ लाख रुपये एकत्रित करने के सम्बन्ध में परामर्श करना है। वे १८ जूनको जयपुर, २० से २२ जून तक अहमदाबाद, २४ से २६ जून तक बम्बई और २८ व २९ जून को हैदराबाद रहेंगे। इसके बाद का कार्यक्रम बाद में घोषित होगा।

—कार्यालय सचिव
सार्वदेशिक सभा

इकीर

हवन (यज्ञ) और वर्षा

यद्यपि 'यज्ञ' का अर्थ बहुत विशाल है किन्तु यहां यज्ञ का सुन्दर अर्थ इच्छानुसार पानी बरसाना है। आर्यों की सभ्यता में इच्छानुसार पानी बरसाना एक विशेष आविष्कार है। आर्य सभ्यता में इस आविष्कार की महत्ता इसलिए है कि मनुष्य का निर्वाह पशुओं पर, पशुओं का निर्वाह वृक्षों पर और वृक्षों का वर्षा पर अवलम्बित है। यदि पानी न बरसे तो वृक्षों के अभाव से पशुओं का और पशुओं के अभाव से मनुष्यों का अभाव हो जाय। कहने का तात्पर्य यह है कि प्राणि मात्र का निर्वाह केवल वर्षा पर ही अवलम्बित है। इसलिए आर्यों ने इच्छानुसार पानी बरसाने की विद्या का आविष्कार किया था। इस विद्या का आविष्कार आर्यों के मौलिक ज्ञान-यज्ञ के द्वारा हुआ था। यज्ञ के द्वारा ही इच्छानुसार पानी बरसाया जाता था। शतपथ ब्राह्मण ५।३ में लिखा है कि 'अग्नेर्वै धूमो जायते धूमादभ्रमभ्राद्वृष्टि:' अर्थात् अग्नि से धूम, धूम से बादल, और बादलों से वृष्टि होती है। इसी बात को मनुस्मृति में इस प्रकार कहा है कि-

> अग्नौ प्रास्ताहुति: सम्यगादित्यमुपतिष्ठते ।
> आदित्याज्जायते वृष्टिर्वृष्टेरन्नं तत: प्रजा: ॥
>
> मनु० ३।७६।

अर्थात् अग्नि में डाली हुई आहुतियां सूर्य की किरणों में पहुंचती है और सूर्य की किरणों से वृष्टि होती है तथा वृष्टि से अन्न और अन्न से प्रजा उत्पन्न होती है। यही बात भगवद्गीता में कृष्ण इस प्रकार कहते हैं—

> अन्नाद्भवन्ति भूतानि पर्जन्यादन्नसंभव: ।
> यज्ञाद्भवति पर्जन्यो यज्ञ: कर्मसमुद्भव: ॥

अर्थात् अन्न से सब प्राणी उत्पन्न होते हैं, अन्न वर्षा से उत्पन्न होते हैं, वर्षा यज्ञों से उत्पन्न होती है और यज्ञ कर्मों से उत्पन्न होते हैं।

इन वर्णनों से पाया जाता है कि आर्यों ने किसी खास प्रकार के यज्ञ से इच्छानुसार पानी बरसाने की विद्या ढूंढ निकाली थी। इस प्रकार की विद्या असम्भव नहीं है। इस जमाने में भी कुछ लोग इच्छानुसार पानी बरसा सकते हैं। 'ऋग्वेदिक इण्डिया' पृ. ५५५ में बाबू अविनाशचन्द्रदास कहते हैं कि इस समय भी जंगली जातियों में वर्षा बरसाने वाला मौजूद है। वह वर्षा बरसाने के लिए कुछ किया करता है और वर्षा बरसा लेता है।"

जंगली कही जाने वाली जातियों में इसका बड़ा मान है। इसी तरह का एक वर्णन लाहौर के कर्मवीर पत्र के २४ मार्च सन १९२८ के अंक में छपा है। उसमें लिखा है कि—'सन् १९२१ में केलीफोर्निया में मिस्टर हैट फील्ड ने कहा है कि मैं आकाश से पानी बरसा सकता हूं। वहां के किसानों ने २ हजार पौंड देकर अपने यहां पानी बरसाना मंजूर किया। लिखा पढ़ी हो गई और रुपया बैंक में जमा कर दिया गया। मिस्टर हैट फील्ड ने एक झील के किनारे सुनसान स्थान में अपनी झोंपड़ी बनाई और अपनी क्रिया प्रारम्भ की। तीसरे ही दिन पानी बरसना शुरू हो गया और उन्होंने २ हजार पौंड बैंक से ले लिए। मिस्टर हैट फील्ड ने पानी बरसाने की विद्या को सिद्ध कर लिया है। वे पानी बरसाने के ५०० (पांच सौ) प्रयोग कर चुके हैं। प्रत्येक बार उन्हें सफलता हुई है। वे ऊंचे २ टीलों या मीनारों पर आग जलाकर कुछ ऐसे पदार्थ डालते हैं जिनके योग से भाप घनी होकर बरसने लगती है।" इसी प्रकार की किसी क्रिया के द्वारा पूर्व कालीन आर्य भी इच्छानुसार पानी बरसाते थे। वेद में जो 'निकामे निकामे पर्जन्यो वर्षतु।' लिखा है उसका यही मतलब है कि जब जब वर्षा की कामना की जाती है तब तब यज्ञ के द्वारा पानी बरसता है।

पानी बरसाने वाले यज्ञों में घी का बड़ा खर्च होता है क्योंकि घी में हवा के रोकने और दूसरे तरल पदार्थों को अपने साथ जमा देने का गुण है। इसलिए अग्नि के द्वारा आकाश में घी इतना अधिक फेंका जाता है कि वह घी भाप रूप होकर ऊपर की ओर अपना एक सीधा मार्ग बना लेता है जिसमें वायु प्रवेश नहीं कर सकता। घी का वायु प्रतिरोधक गुण हम रोज अपने अनुभव से देखते हैं। हम देखते हैं कि सर्दी के दिनों में वायु प्रवेश से बचने के लिए घी, मक्खन मलाई या मोम को चेहरे पर मलते हैं। एक ही साथ एक कटोरी में पानी भरकर और दूसरी में घी भरकर आग में चढ़ाने से हमको दिखलाई पड़ेगा कि घी शांत रूप से धीरे २ जलकर कम हो रहा है पर पानी वाली कटोरी की पेंदी में छोटे-छोटे बुदबुदे उत्पन्न होते हैं। बुदबुदे बढ़ते हैं फूटते जाते हैं और पानी कम होता जाता है। पानी में बुदबुदों के उत्पन्न होने का कारण पानी में हवा का प्रवेश है। और घी में बुदबुदों के न होने का कारण हवा प्रतिरोध है। पानी में हवा प्रविष्ट हो जाती है, पर घी में प्रविष्ट नहीं हो सकती। इन दोनों अनुभवों से ज्ञात होता है कि घी में हवा के प्रतिरोध करने का गुण है। यही कारण है कि अग्नि के द्वारा जब आकाश में घी फेंका जाता है तो वह अपने अन्दर वायु को नहीं घुसने देता और दूर तक ऊपर की ओर एक सीधा स्तूपाकार मार्ग बना देता है। फल यह होता है कि नीचे घनी वायु विरल होकर उड़ जाती है और उस घृत मार्ग में आकाश स्थित जल वाष्प भर जाता है और घी में पानी को जमा देने की शक्ति होने के कारण जल वाष्प सघन हो जाता है और पानी होकर बरस पड़ता है। घी में पानी के जमाने की शक्ति भी सबके अनुभव में है। हम देखते हैं कि सर्दी के दिनों में घी के साथ छाछ का पानी भी जम जाता है उसी तरह ऊपर के जल वाष्प की ठंडक से घृत वाष्प भी जम जाता है और अपनी जमावट के साथ साथ जल वाष्प को भी सघन बना देता है और पानी के रूप में बरसा देता है। अनुमान होता है कि प्राचीन आर्यों ने घृत के द्वारा जल बरसाने की विद्या सिद्ध कर ली थी जिससे वे इच्छानुसार जल बरसा लेते थे और जल से वन वृक्षों और वनवृक्षों से पशुओं और पशुओं तथा वनवृक्षों से समस्त मनुष्यों के सर्व संकट को दूर कर देते थे।

मुस्लिम बहुल संभल में आर्य समाज

हिन्दुओं से शक्तिशाली संगठन बनाने की अपील

संभल की जनसभा में सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले की सिंह गर्जना

आर्यसमाज सम्भल के वार्षिकोत्सव के अवसर पर एक बड़ी जनसभा को सम्बोधित करते हुए सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले ने देश के समक्ष विद्यमान अभूतपूर्व संकट को देखते हुए, हिन्दू जनता का आह्वान किया कि वे आत्म रक्षा और देश की सुरक्षा के लिए शक्तिशाली संगठन बना ले। संभल में कुछ वर्ष पूर्व भयंकर साम्प्रदायिक दंगे हुए थे जिनमें हिन्दुओं को जन और धन की अपार क्षति उठानी पड़ी थी। आर्य समाज के आवाहन पर सार्वदेशिक सभा ने वहां की पीड़ित हिन्दू जनता की प्रशंसनीय सहायता की थी। उस संकट की घड़ी में भी श्री शालवाले के नेतृत्व में वहां एक प्रतिनिधि मण्डल गया था जिसने ४८ घण्टे के भीतर ही हिन्दुओं पर हुए अत्याचारों से पूरे राष्ट्र को अवगत कराया और सरकारी एवं गैर सरकारी माध्यम से लाखों रुपयों की सहायता वहां पहुंचाई। लाला जी के वहां पहुंचने पर अनेक गणमान्य नागरिकों ने उनकी आगवानी की और संभल की हिन्दू जनता की सहायता के लिए किए गए उनके साहसिक कार्यों की भूरि-२ प्रशंसा की। अपने मार्मिक भाषण में श्री शालवाले ने हिन्दुओं को आत्मनिर्भर होने की प्रेरणा दी। इस कार्यक्रम में लाला जी के साथ सार्वदेशिक सभा के उपमन्त्री डा० आनन्द प्रकाश भी उपस्थित थे। उन्होंने अपने भाषण में आर्य समाज के क्रान्तिकारी स्वरूप का परिचय देते हुए कहा कि इस संस्था का विश्वभर में कोई विकल्प नहीं है। आपने कहा कि वैदिक धर्म की शिक्षाओं पर आधारित सामाजिक व्यवस्था और शासन प्रणाली से ही राष्ट्र सुखी बन सकता है। आर्य समाज के नियमों में सत्य को अपनाने पर बल दिया गया है। सत्यार्थ प्रकाश ने भारत में ही नहीं अपितु पूरे विश्व में हिन्दुओं को विधर्मी होने से बचाया।

—सच्चिदानन्द शास्त्री
उपमन्त्री सभा

सामयिक चर्चा–

गुरुकुल वृन्दावन के नाम पर धोखाधड़ी

श्री योगेन्द्रसिंह की नई शरारत

गुरुकुल के हीरक जयन्ती समारोह का आयोजन

अवैध और धन संग्रह का एक षडयन्त्र

विश्वस्त सूत्रों से पता चला है कि गुरुकुल वृन्दावन से निष्कासित मुख्याधिष्ठाता श्री योगेन्द्रसिंह ने गुरुकुल वृन्दावन के हीरक जयन्ती समारोह के नाम पर एक पत्र विभिन्न व्यक्तियों एवं कार्यकर्त्ताओं को भेजा है। उस पत्र की प्रतिलिपि से ज्ञात हुआ है कि उसमें कई केन्द्रीय मन्त्रियों, महाराष्ट्र और उत्तर प्रदेश मुख्यमन्त्रियों कई संसद सदस्यों और कई दानवीर आर्य श्रेष्ठियों के नाम संरक्षक एवं उपसमिति के संयोजकों के रूप में लिखे गए हैं। इसका कार्यालय का पता भी दिल्ली स्थित किसी संसद सदस्य के निवास का दिया गया है। निश्चय पूर्वक यह कहा जा सकता है कि उपरोक्त महानुभावों के नाम का प्रयोग धन एकत्र करने का षडयन्त्र है।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले ने श्री योगेन्द्रसिंह की इस कारंवाई को गुरुकुल वृन्दावन के नाम पर धोखाधड़ी और धन एकत्र करने का षडयन्त्र बताते हुए आर्य जनता, समस्त आर्यसमाजों और दानी महानुभावों से अपील की है कि वे इस षडयन्त्र से सावधान रहें और श्री योगेन्द्रसिंह को इस अवैध कार्य में कोई सहयोग न करें। श्री योगेन्द्र सिंह को आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश ने गुरुकुल के मुख्याधिष्ठाता पद से गुरुकुल की सम्पत्ति हथियाने, गबन करने एवं हिंसा एवं अनुशासन,हीनता के आरोप में निष्कासित कर दिया है और उनके स्थान पर श्री स्वामी धर्मानन्द को गुरुकुल महाविद्यालय का मुख्याधिष्ठाता नियुक्त किया गया है और वेही इस समय गुरुकुल के वैध मुख्याधिष्ठाता हैं।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से सभी सम्बन्धित महानुभावों और आर्य जनता व आर्य समाजों का ध्यान इस धोखाधड़ी की ओर आकर्षित किया जा रहा है। — मन्त्री सार्वदेशिक सभा, दिल्ली

गोरक्षा के प्रति भारत की जनता कितनी ईमानदार ?

श्री क्षितीश वेदालंकार गो पूजकों को गोपालन का आह्वान करते हुए ठीक ही लिखते हैं :— (पं. के. २० मई १९८५)

"अब पता लगा है कि भारत सरकार यूरोप से २० बीस हजार गायें मंगा रही है। क्यों न आर्य समाज सरकार से आग्रह करके सौ से लेकर एक हजार तक गाएं प्राप्त करे और व्यवस्थित ढग से डेरी उद्योग को चलाए। अन्य हिन्दू संस्थाओं को भी यही व्यावहारिक दृष्टिकोण अपनाना चाहिए।

इससे जहां अनेक नवयुवकों को रोजगार मिलेगा वहां देश की बहुत बड़ी कमी को पूरा करने का अवसर भी मिलेगा। इस उद्योग में घाटे का तो प्रश्न ही नहीं।"

जहां तक आर्य समाज का सम्बन्ध है श्री क्षितीश जी की सूचनार्थ यह लिख देना जरूरी है कि सार्वदेशिक सभा दिल्ली में एक विशाल गोरक्षा एवं गोदुग्ध केन्द्र स्थापित करने वाली है जिसके लिए पर्याप्त भूमि एवं गोचर भूमि प्राप्त की जा चुकी है। इस केन्द्र में एक समय में १००० तक गउओं के रखने का प्रावधान है।

गोपालकों के समक्ष जहां प्रशासकीय विविध कठिनाइयां हैं वहां गोचर भूमियों के अभाव की सबसे बड़ी कठिनाई है। गोपालन के कार्य को सुगम बनाने के लिए इसका समाधान जरूरी है और येनकेन समाधान करना ही होगा।

निस्सन्देह गोरक्षा और गोहत्या बन्दी के लिए छेड़े गए आन्दोलनों के साथ-साथ गोपालन का कार्य भी परमावश्यक है।

शकुन्तला देवी

गणित की जादूगरनी शकुन्तला देवी, जो अपने अद्भुत मस्तिष्क से कम्प्यूटरों को पराजित कर देती हैं, नागपुर में कुछ बुद्धिवादियों के प्रदर्शन से हार गई : सब जानते हैं कि शकुन्तला देवी गणित के बहुत कठिन प्रश्नों को कुछ क्षण में मन ही मन हल कर देती हैं और देश-विदेश में अपनी इस मानसिक शक्ति के लिए विख्यात हैं। पर सरकार के किसी विभाग ने देश के किसी भी विश्वविद्यालय ने या निजी या सार्वजनिक प्रतिष्ठान ने उनकी विलक्षण प्रतिभा का कोई भी उपयोग करना उचित नहीं समझा। शकुन्तला देवी एक महत्वाकांक्षी महिला हैं। यश तथा धन अर्जित करने के लिए वे नगर-नगर अपनी मानसिक शक्तियों का प्रदर्शन करती हैं। उनका कहना है कि वे एक गणित संस्थान की स्थापना करना चाहती हैं जिसके लिए वे पैसा इकट्ठा कर रही हैं। पर बदकिस्मती यह है कि शकुन्तला देवी ने इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए लोगों की जन्म कुण्डलियां बनाना और उन्हें गंडे-तावीज बेचना शुरू कर दिया है। भारतीयों की कमजोरी है कि वे भौतिक क्षेत्र में चमत्कार कर दिखाने वाले को आध्यात्मिक क्षेत्र का भी अवतारी पुरुष मान बैठते हैं। अपने भविष्य के बारे में जानने और आगामी विपत्तियों का शमन करने की उत्कट अभिलाषा नेता से लेकर जनता तक में बलवती है। फलित ज्योतिष तथा चमत्कारी सन्तों-बाबाओं में करोड़ों का विश्वास है। किन्तु ऐसे भी लाखों बुद्धिवादी हैं जो इसे धोखा और ढकोसला समझते हैं और ऐसी प्रवृत्तियों के विरुद्ध सक्रिय हैं। ऐसे ही एक दल ने शकुन्तला देवी को अपना एक प्रदर्शन रद्द कर देने पर बाध्य किया। ईश्वर या प्रकृति ने शकुन्तला देवी को एक शक्ति दी है लेकिन वे उसका प्रयोग ग्रहों और अनिष्टों को सन्तुष्ट करने के तरीकों में कर रही हैं। क्या यशस्वी डाक्टर, इंजीनियर, वैज्ञानिक आदि भी ऐसा ही करने लगें, भले ही वे धर्मार्थ कोई संस्था खोलने के लिए ऐसा कर रहे हों? हमारे शास्त्रों में ईश्वरीय शक्तियों का दुरुपयोग करने वाले मानव को एक दण्ड यह भी मिलता है कि वह अपनी विद्या भूल जाता है। नागपुर में बुद्धिवादियों के प्रदर्शन से शायद शकुन्तला देवी को यह अहसास हुआ हो कि वे भी अपनी विद्या का सही प्रयोग भुलाती जा रही हैं।

न भा. २९-५-८५

श्रीयुत पृथ्वीराज जी पूर्ण स्वस्थ

यह लिखते हुए प्रसन्नता होती है कि प्रभु की कृपा से श्री पृथ्वीराज जी शास्त्री उपमन्त्री सार्वदेशिक सभा पूर्ण आरोग्य लाभ करके अपने कार्य कलाप में संलग्न होने में समर्थ हो गए हैं। वे गत २ मास से रुग्ण थे। उनकी रुग्णावस्था में उनके मित्रों, सहयोगियों और प्रशंसकों से उन्हें बहुसंख्य शुभ कामना सन्देश प्राप्त हुए हैं जिनकी पृथक २ प्राप्ति स्वीकार करना सम्भव नहीं है अतः वे सार्वदेशिक पत्र के माध्यम से उन सभी के प्रति आभार प्रकट करते हैं। वस्तुतः उनसे उन्हें रोग से छुटकारा पाने में बड़ा संबल प्राप्त हुआ है।

—रघुनाथ प्रसाद पाठक

सार्वदेशिक के वार्षिक चन्दे में ४) की वृद्धि

कागज इत्यादि की मंहगाई के कारण सार्वदेशिक पत्र के वार्षिक चन्दे में वृद्धि करने के लिए हम विवश हो गए हैं। अब इसका चन्दा १६) के बजाय २०) नियत किया गया है।

आशा है हमारे कृपालु ग्राहक और पाठक हमारी विवशता को अनुभव करते हुए अपनी कृपा बनाए रखेंगे। इतना ही नहीं अन्यों को भी इसका ग्राहक बनाकर हमें अपना मूल्यवान सहयोग देंगे।

—ओमप्रकाश त्यागी
सभा-मन्त्री

महर्षि दयानन्द का वार्त्तालाप और उपदेश

जब निर्भयता पर समस्त बाजार चकित रह गया

एक दिन महाराज कासगंज (एटा, उ० प्र०) के बाजार में चले जा रहे थे। उस समय सामने से एक बलिष्ठ सांड आ निकला। वह सांड लोगों को मारा करता था और उनके पीछे दौड़ा भी करता था। सब लोग मारे डर के चबूतरे पर चढ़ गए और स्वामी जी को भी ऐसा ही करने के लिए पुकार कर कहने लगे परन्तु स्वामी जी एक पग भी इधर उधर न हुए। सीधे सांड की ओर चलते गए। जब उसके बहुत निकट पहुंच गए तो सांड आप ही रास्ता छोड़कर एक ओर से निकल गया।

स्वामी जी के दृढ़ धैर्य और निर्भयता पर सारा बाजार चकित रह गया। चौबसुख ने कहा "महाराज ! यदि सांड सींग चलाता तो आप क्या करते ? स्वामी जी ने हंसकर कहा "और क्या करते ? सींग पकड़ कर उसे परे धकेल देते।"

(२)

मैं आप सबके समीप ही हूं

एक दिन जब महाराज अपने भक्तों को पूर्व से सूचना दिए बिना जलेसर से प्रस्थान करने लगे तो उन्हें बड़ा दुःख हुआ और उन्होंने कुछ दिन और ठहरकर सत्संग से लाभान्वित करने की विनय की। परन्तु स्वामी जी अपने संकल्प पर दृढ़ रहे। उनके भक्त उन्हें विदाई देने हेतु कुछ दूरी तक महाराज के साथ गए। जब वे वापस लौटने लगे तो विरह वेदना से उनका हृदय उद्वेलित हो उठा।

स्वामी जी महाराज अपने प्रेमियों को व्याकुल देखकर स्नेह रस से सने हुए शब्दों में सम्बोधन करके बोले : "इतने अधीर क्यों होते हो। अभी तो कई बार जलेसर में आना होगा। संन्यासी पवन (वायु) की भांति अप्रतिबंध विहारी होते है। उनसे इतनी ममता बांधना दु:ख ही उठाना है।

"जब तुम मेरे वचनों पर चलोगे, अपने चरित्र को उच्च बनाओगे और परोपकार के कार्यों में रत रहोगे तो मैं आपसे दूर नहीं हूं। आपके समीप ही हूं।"

(३)

जब अंग्रेज इंजीनियर की चिढ़ भक्ति भाव में परिणत हुई

स्वामी जी महाराज जमालपुर (बिहार) के रेलवे स्टेशन पर टहल रहे थे क्योंकि मुंगेर को जाने वाली गाड़ी के लिए एक घंटे की प्रतीक्षा करनी पड़ गई थी।

उस समय वहां एक अंग्रेज इंजीनियर पत्नी सहित खड़ा था। उस इंजीनियर की पत्नी ने एक कोपीनधारी साधु को अपने सामने घूमता देखकर बुरा मनाया। इंजीनियर महाशय ने तुरन्त स्टेशन मास्टर के पास जाकर कहा "यह कौन नंगा टहल रहा है। इसे इधर उधर घूमने से रोक दो।" स्टेशन मास्टर ने महाराज से अति विनीत भाव से कहा—

"भगवन ! दूसरी ओर चलकर कुर्सी पर आराम कीजिए। मुंगेर जाने वाली गाड़ी के आने में अभी बड़ी देर है।"

स्वामी जी पहले ही सब कुछ समझ गए थे। इसलिए उन्होंने स्टेशन मास्टर को कहा 'जिस महाशय ने मुझे हटा देने के लिए आपको यहां भेजा है उसे जाकर कह दीजिए कि हम उस युग के मनुष्य हैं जिस युग में बाबा आदम और माता हव्वा अदन के उद्यान (बाग) में प्रायशः नंगे घूमते थे"। महाराज ने पहले की तरह ही घूमना जारी रखा।

इंजीनियर ने पुन: स्टेशन मास्टर को बुलाकर अपना आदेश दुहराया। इस पर स्टेशन मास्टर ने कहा 'महाशय ! यह कोई भिखमंगा तो है नहीं जिसे मैं स्टेशन के अहाते से निकाल दूं। यह तो हम और आप जैसों को कुछ भी न समझने वाला एक स्वतन्त्र संन्यासी है।"

इस पर इंजीनियर ने महाराज का भी नाम पूछा। स्टेशन मास्टर ने कहा 'इनका नाम दयानन्द सरस्वती है।" इंजीनियर महाशय यह कहता हुआ कि क्या ये प्रसिद्ध रिफार्मर (सुधारक) दयानन्द सरस्वती है तत्काल उठ खड़ा हुआ और पास जाकर उसने विनीत भाव में नमस्ते की और कहा "चिरकाल से मेरे मन में आपके दर्शनों की इच्छा थी। यह मेरा सौभाग्य है कि यहां आपके दर्शन हो गए।"

तब तक मुंगेर जाने वाली गाड़ी खड़ी रही। इंजीनियर महाशय महाराज से वार्त्तालाप करते रहे और गाड़ी चलने पर 'नमस्ते' करके चले गए।'

वैदिक धर्म

एक दिन सब स्वीकार करेंगे।
शुद्ध सनातन वेद धर्म को,
सादर हृदय धरेंगे ॥ १ ॥
भूत भक्त निन्दक दुर्वादी,
पाहन ग्राह परेंगे ॥ २ ॥
तम जीवी मार्तण्ड सामूहे,
कबलां सांस भरेंगे ॥ ३ ॥
'रामचन्द्र' अज्ञान जनित सब,
दम्भ द्वेष विदरेंगे ॥ ४ ॥

—रामचन्द्र मिश्र (मथुरा)

शिक्षाएं (ग्रन्थों से)

गृहस्थों को स्वयं कब भोजन करना चाहिए

"माता, पिता, आचार्य, अतिथि, पुत्र; भृत्यादि को भोजन कराके पश्चात् गृहस्थ को भोजनादि करना चाहिए।

(पंच महायज्ञ विधि बलि वैश्य देव)

उपवास किन्हें नहीं करना चाहिए ?

गर्भवती वा सद्यो विवाहिता स्त्री, लड़के वा युवा पुरुषों को तो कभी उपवास न करना चाहिए, परन्तु यदि किसी को करना भी हो तो जिस दिन अजीर्ण (बदहजमी) हो, भूख न लगे उस दिन शर्बत वा दूध पीकर रहना चाहिए। जो लोग भूख में नहीं खाते और बिना भूख के भोजन करते हैं (वे) दोनों रोग सागर में गोते खा दुःख पाते हैं। (स. प्र. समु. ११)

स. कर्ता : रघुनाथ प्रसाद पाठक

भारत की राष्ट्रीय शिक्षा-नीति के आधारभूत तत्व

लेखक—डा० जयदत्त उप्रेती, अध्यक्ष संस्कृत विभाग,
कुमाऊं विश्वविद्यालय परिसर, अल्मोड़ा।

उद्देश्य—राष्ट्रीय शिक्षापद्धति का उद्देश्य यह होना चाहिए, जो भारत राष्ट्र के प्रति प्रेम, समर्पण, एकत्व, सुरक्षा और देशभक्ति की ऐसी भावना शिक्षार्थियों में जगा सके, जिससे राष्ट्र सब प्रकार से शक्तिशाली, सम्पन्न और उन्नत हो। साथ ही, भारत का पुरातन आध्यात्मिक और सांस्कृतिक गौरव क्षीण न होने पावे, प्रत्युत उत्तरोत्तर उत्कर्ष को प्राप्त हो।

उक्त उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए राष्ट्रीय शिक्षा-नीति में निम्नांकित बातें आधारभूत तत्व के रूप में स्वीकार की जानी चाहिए:—

(१) प्रत्येक भारतवासी के लिए एक समान शिक्षा-पद्धति हो। यह पद्धति समाज और राष्ट्र की उन्नति की भावना लिए हुए व्यक्ति की शारीरिक, बौद्धिक और आत्मिक उन्नति में विशेषतः, और आर्थिक उन्नति में सामान्यतः सहायक होनी चाहिए। शारीरिक उन्नति का तात्पर्य है—ब्रह्मचर्य, संयम, सात्विक भोजन तथा व्यायामादि के द्वारा शरीर को सर्वांगतया दृढ़, स्वस्थ और नीरोग रखने के उपाय बताये जांय और तदनुसार व्यवहार कराया जाय। बौद्धिक उन्नति का तात्पर्य है—सामान्य व्यवहारोपयोगी विषयों की जानकारी तो अनिवार्यतया सबको पहुँचाई ही जाये, परन्तु जिज्ञासु, मेधावी तथा विशेष प्रतिभाशाली छात्रों को अपनी रुचि के अनुकूल विषय में अधिकाधिक ज्ञान और योग्यता अर्जित करने में विशेष सहायता दी जाए। आत्मिक उन्नति का तात्पर्य है—मनुष्य के जीवन की सफलता न केवल अपने कल्याण में निहित है, अपितु सबके कल्याण में है—इस प्रकार की भावना का उदय होना ही आत्मिक उन्नति का प्रथम सोपान है। अतः ऐसी शिक्षा दी जानी चाहिए जो प्राणिमात्र के प्रति दया और प्रेम की भावना जगावे विशेषतः मनुष्यों के बीच में परस्पर प्रेम, सौहार्द, मैत्री, और बन्धुत्व की भावना जगा सके। सब प्रकार की हिंसा, चाहे वह मनुष्यों से सम्बन्धित हो अथवा अन्य पशु, आदि प्राणियों से, रोकी जा सके। अपने प्राणों की रक्षा के महत्व के समान दूसरे के प्राणों की रक्षा के महत्व की भावना बढ़ाई जा सके।

(२) सह-शिक्षा की प्रथा दोषपूर्ण होने से समाप्त की जानी चाहिए। और कक्षा पांच से आगे बालक और बालिकाओं की शिक्षा की पृथक्-पृथक् व्यवस्था होनी चाहिए।

(३) बालिकाओं को अन्य सामान्य शिक्षा के साथ गृह-कार्य जैसे, पाकशाला, सिलाई, बुनाई, कढ़ाई, संगीत आदि तथा आयुर्वेद सम्बन्धी व्यावहारिक ज्ञान विशेषतः दिया जाना चाहिये।

(४) आठ या दस वर्ष की आयु के बाद अथवा कक्षा पांच उत्तीर्ण होने के अनन्तर आगे की शिक्षा के लिए बालक तथा बालिकाओं के निवासार्थ आवश्यक रूप से अपने-अपने विद्यालय के समीप छात्रावास होना चाहिये जिसमें उनके रहन-सहन, खान-पान, चाल-चलन आदि की अच्छी देखभाल हो सके। उन छात्रावासों में यथासम्भव प्रातः सायं सन्ध्या-प्रार्थना, हवन की व्यवस्था होनी चाहिये, जिससे विद्यार्थियों में नम्रता आदि चारित्रिक गुणों का विकास हो सके। यम-नियमों का इस अवस्था में पालन कराया जाना छात्र के भावी जीवन के लिए लाभप्रद है।

(५) प्रत्येक विद्यालय और महाविद्यालय में पढ़ने वाले छात्रों और छात्राओं की वेषभूषा एक समान और नियत होनी चाहिये। इससे धनी-निर्धन के भेद को दूर करने में बड़ी सहायता मिलती है। दूसरे सहपाठियों में पारस्परिक प्रेम बढ़ता है।

(६) विविध कक्षाओं में प्रवेश, परीक्षा, अध्ययन-अध्यापन आदि के सम्बन्ध में समान नीति नियम होने चाहिए। किसी भी छात्र के साथ किसी भी प्रकार का भेद या पक्षपात किया जाना अनुचित है। आरक्षण की प्रथा समाप्त होनी चाहिये। योग्यता तथा प्रतिभा को महत्व दिया जाना चाहिये, न कि किसी कुल-विशेष को। हां, निर्धनों, अनाथों और असहायों, चाहे वे किसी भी कुल में क्यों न पैदा हुए हों, की सब प्रकार से सहायता की जानी चाहिए।

(७) वर्तमान में महाविद्यालय तथा विश्वविद्यालय स्तर पर गठित होने वाले छात्र-संघों पर रोक लगा दी जानी चाहिए क्योंकि इन छात्र-संघों से प्रायः रचनात्मक कार्यक्रम और विध्वंसात्मक कार्य अधिक होते हैं तथा आये दिन राजनीतिक झगड़े पैदा होते हैं, जिससे विद्यालयों का शान्त वातावरण भंग होता है और अन्ततः अध्ययन-अध्यापन पर कुप्रभाव पड़ता है। यदि किसी प्रकार का उनका संगठन होना वांछनीय ही हो तो शैक्षिक संगठन अथवा विषयानुसार परिषदें होनी चाहिये, जिनमें साहित्यिक, सांस्कृतिक अथवा बौद्धिक और शारीरिक उन्नति सम्बन्धी कार्यक्रम होने चाहिए।

(८) छात्रावासों के समीप गोशालाओं का भी प्रबन्ध होना चाहिए, जिससे विद्यार्थियों को दुग्ध, घृत, आदि पदार्थ उपलब्ध हो सकें।

(९) व्यावसायिक क्षेत्र अर्थात् रोजगार में शीघ्र जाने के इच्छुक छात्रों की कक्षा १० या कक्षा १२ की परीक्षा के साथ-साथ रुचियों की जांच की जानी चाहिये, जिससे उसके पश्चात् उन्हें उस-उस व्यावसायिक अथवा प्राविधिक प्रशिक्षण में भेजा जा सके। उच्चशिक्षा में प्रवेश नियन्त्रित कर उसमें प्रवेश केवल योग्य प्रतिभाशाली छात्रों को ही दिया जाना चाहिए, जिससे शिक्षा का स्तर उन्नत हो सके।

(१०) योग्य, मेधावी और प्रतिभाशाली छात्र-छात्राओं को अपनी बुद्धि और प्रतिभा का पूर्ण विकास करने का अवसर प्रदान किया जाना चाहिये। कला, विज्ञान, प्रविधि, साहित्य, कृषि, वाणिज्य, क्रीड़ा, अनुसन्धान आदि विभिन्न क्षेत्रों में आगे बढ़ने के पूर्ण अवसर योग्य और होनहार छात्रों को दिये जाने चाहिये।

(११) समस्त देश में राष्ट्रभाषा हिन्दी का अध्ययन-अध्यापन तत्काल आरम्भ किया जाना चाहिए। देश को एकसूत्र में बांधने के लिए समूचे राष्ट्र की एक सम्पर्क भाषा का होना नितान्त आवश्यक है। सारे देश की एक भाषा का होना उसकी एकता की सूचक है। हिन्दी के साथ-साथ भारत की गौरवमयी भाषा संस्कृत का अध्ययन भी माध्यमिक स्तर तक अनिवार्य तथा उसके आगे वैकल्पिक किया जाना चाहिए। तृतीय स्थान पर प्रादेशिक भाषा और चतुर्थ स्थान पर उर्दू, अंग्रेजी तथा अन्य विदेशीय भाषाएं वैकल्पिक अध्ययन के विषय होने चाहिए।

(१२) भारतवर्ष का इतिहास, विशेष रूप से प्राचीनकाल से सम्बन्धित, नये रूप से लिखा जाना आवश्यक है, जिससे कि छात्रों को भारत के अति गौरवपूर्ण अतीत की सही जानकारी दी जा सके। वर्तमान में पढ़ाया जा रहा इतिहास या तो तथ्यों को छूता ही नहीं, अथवा इतिहास की सही तिथियां नहीं बतलाता। उदाहरणार्थ प्राचीन इतिहास में वैदिक काल के नाम से तथ्यों को मन चाहे ढंग से प्रस्तुत किया गया है, जो कि अधिकांश असत्य हो गया है। वेद, उपनिषद आदि भारत के प्राचीनतम वाङ्मय पर लिखने के जो अधिकारी नहीं थे, वे भी उस पर अपनी अल्पज्ञता अथवा अज्ञानता को लेखनी से व्यक्त करने लगे, जिससे वर्तमान में लिखित प्राचीन इतिहास इतिहासाभास मात्र है, सत्य इतिहास नहीं। जहां वेदों का एक-एक शब्द आज भी वेदज्ञ विद्वानों के लिये रहस्यपूर्ण और गूढ़ार्थक होने से पहेली बना हुआ है, वहां सर्वथा अवेदज्ञ लोग वेद में ओछापन देखें और दिखावें, वह कैसे सह्य और प्रशस्त माना जा सकता है। अतः भारतीय इतिहास के मर्मज्ञ विद्वान स्व० भगवद्दत्त-रचित वैदिक वाङ्मय का इतिहास, भारतवर्ष का इतिहास जैसे ग्रन्थों की सहायता से प्राचीनकालीन इतिहास नये रूप से लिखा जाकर पढ़ाया जाना चाहिए। इसी प्रकार रामायण तथा महाभारत की कथाओं को कल्पित मानने के कारण तत्सम्बन्धी इतिहास या तो लिखा ही नहीं गया है, या काल-गणनादि की दृष्टि से अयथार्थ लिखा गया है। इस सब को विशेषज्ञ विद्वानों की सहायता से पुनः यथार्थ रूप में लिखे जाने की आवश्यकता है।

(१३) धर्मशिक्षा का भी माध्यमिक स्तर तक की कक्षाओं में प्राविधान होना चाहिए। वेद, उपनिषद, रामायण, महाभारत, महाकवियों, सन्तों तथा महापुरुषों के सुभाषितों से सब मानवों के हित को सिद्ध करने वाली मुख्य मुख्य बातों के संकलन से धर्मशिक्षा पर पुस्तकें तैयार की जानी चाहियें, जिनके अध्ययन से विद्यार्थी सच्चरित्र बन सकें। वर्तमान में धर्मशिक्षा का प्रचलन न होने से व्यक्ति, समाज तथा राष्ट्र का चारित्रिक स्तर नीचे गिरता जा रहा है इसका निराकरण धर्मशिक्षा या सत्य के नियमों के कड़ाई से परिपालन से ही हो सकता है।

भारत के राजनैतिक पुनर्जागरण पर आर्य समाज का प्रभाव

—डा० डी. पी. श्रीवास्तव पी.एच.डी.

(१)

कर्नल अल्काट का महर्षि दयानन्द को पत्र

क्रमांक ७१, ब्राडवे, न्यूयार्क, १८ फरवरी

सेवा में

परम माननीय पंडित दयानन्द सरस्वती भारतवर्ष।

आदरणीय गुरु जी,

अमेरिकन और दूसरे अनेक विद्यार्थी जो सच्चे मन से आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्ति के इच्छुक हैं आपके चरणों में स्वयं को समर्पित करते हैं और आपसे विनम्र प्रार्थना करते हैं कि हमें ज्ञान-ज्योति प्रदान कीजिए। उन्होंने साहस-पूर्ण कार्य किया है, अतएव जनसाधारण का ध्यान उनकी ओर आकृष्ट हुआ। वे स्थापित व्यवस्थाओं जिनसे प्रभाव सम्पन्न स०पत्रों और व्यक्तियों के लौकिक हित या व्यक्तिगत पक्षपात शृंखलित है, की निन्दा के पात्र बन गए। हमें नास्तिक, धर्म-विद्रोही और बहुदेववादी कहा गया है। हमें केवल नवयुवकों और उत्साही पुरुषों की ही नहीं, वरन ज्ञान वान और पूजनीय महापुरुषों की सहायता की भी आवश्यकता है। इस कारण से हम आपके चरणों में उसी भाव से आ रहे हैं जिस भाव से बालक अपने माता-पिता के चरणों में आते हैं और हम प्रार्थना करते हैं कि हमारे गुरुजी, हमारी ओर निहारिये, हमें मार्ग दर्शन दीजिए कि हम क्या करें ? हमें परामर्श दीजिए और हमारी सहायता कीजिए। देखिए, हम आपकी सेवा में अभिमान से नहीं, विनीत भाव से आ रहे हैं, और हम आपके परामर्श को स्वीकार करने और आप जैसा बतलावें उसे करने को तत्पर हैं।

(हस्ताक्षर) हैनरी एस० आल्काट

अध्यक्ष थियासोफिकल सोसायटी

स्वामी दयानन्द ने उपरोक्त पत्र का निम्न उत्तर दिया जो उनके धार्मिक राष्ट्रवाद और विश्ववाद का परिचायक है—

महर्षि का उत्तर

"स्वस्ति श्रीयुत अनिन्द्य गुणों से अलंकृत, सनातन सत्य धर्म के प्यारे, पाखण्ड मत से निवृत्तचित्त अद्वैत ईश्वर की उपासना के इच्छुक बन्धुवर्ग महाशय श्रीयुत हैनरी एस० अल्काट प्रधान व श्रीमती मैडम एच० पी० ब्लेवाटस्की मन्त्री तथा थियासोफिकल सोसायटी के सभासदों के प्रति दयानन्द सरस्वती का आशीर्वाद हो।

श्रीमानों ने जो पत्र श्रीमन्महाशय मूल जी ठाकरसी हरिश्चन्द्र चिन्ता-मणि तुलसीराम यादव जी के द्वारा मेरे पास भेजा है उसे देखकर अत्यन्त आनन्द हुआ।

अहो अनन्त धन्यवाद के योग्य एक सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञ, एकरस, व्यापक सच्चिदानन्द, अनन्त, अखण्ड अजन्मा, निर्विकार, अविनाशी, न्याय, दया, विज्ञानादि गुण के आकार, सृष्टि, स्थिति, प्रलय के मुख्य निमित्त कारण, सत्य, गुण, कर्म, स्वभाव वाले निर्भ्रान्त, अखिल विद्यायुक्त जगदीश्वर की कृपा से पांच सहस्र वर्षों का समय बीतने के पश्चात महाभाग्य के उदय से अलमस्त व्यवहार वाले, हमारे प्यारे आप पाताल देश निवासियों का हम आर्यावर्त निवासियों के साथ फिर परस्पर प्रीति का उद्भव, परोपकार और पत्रव्यवहार का समय आया है।

मैं आपके साथ अत्यन्त प्रेम से पत्र व्यवहार करना स्वीकार करता हूं। मैं आपके पत्रों का उत्तर दूंगा। जहां तक मेरा सामर्थ्य है सहायता भी दूंगा।

क्रीस्तादि मतों के सम्बन्ध में जैसी आपकी सम्मति है वैसी ही मेरी है। जैसे ईश्वर एक है वैसे ही सब मनुष्यों का भी एक ही मत होना चाहिए।...

मैं परमात्मा से प्रार्थना करता हूं कि कब ऐसा होगा जब परमेश्वर की कृपा और मनुष्यों के प्रयत्न से इनका नाश होगा और परम्परा से आर्यों से सेवित एक सत्य धर्म सब मनुष्यों में निश्चित होगा ?"

—ह० दयानन्द सरस्वती

थियासोफिकल सोसायटी और आर्य समाज का सम्बन्ध अधिक समय तक संयुक्त न रह सका किन्तु आलकाट और ब्लेवाटस्की की विनयशीलता और पूर्व के व्यक्ति (दयानन्द) के प्रति नतमस्तक होने का प्रभाव भारत की राजनैतिक पुनर्जागरण की दिशा में उल्लेखनीय है। इससे भारतवासियों को स्वाभिमान हुआ कि उनका वैदिक धर्म इतना श्रेष्ठ है कि उसकी ओर पश्चिम के व्यक्ति आकर्षित हो सकते हैं। अभी तक भारतवासी पश्चिम के गोरे लोगों के प्रति नतमस्तक थे, पर आर्य समाज और थियासोफिकल सोसायटी के संयुक्तीकरण के द्वारा पश्चिम के गोरे लोग पूर्व के महात्मा के प्रति नतमस्तक हुए। भारतवासियो के दैनिक अनुभव के यह ठीक विपरीत घटना थी, क्योंकि उन्हें नित्यप्रति अपने अंग्रेज शासकों के प्रति दीन होना पड़ता था इस घटना के द्वारा उनकी धार्मिक श्रेष्ठता के भाव ने राष्ट्रीय अहम्भाव को ऊंचा उठाया।

जब कि ब्रह्म समाज आन्दोलन हिन्दू धर्म, ईसाई धर्म और इस्लाम धर्म के समान आदर्शों को खोजने का प्रयत्न करता था, आर्य समाज ने इस बात पर जोर दिया कि केवल वेद ज्ञान और धार्मिक सत्य के भण्डार हैं। वेदों में निहित ज्ञान के आधार पर आर्य समाज समस्त विश्व पर भारत का प्रभाव स्थापित करना चाहता था। इस मान्यता ने भारत के राजनैतिक पुनर्जागरण को महान शक्ति से युक्त किया। इस तथ्य को मैकडानल्ड जैसे अंग्रेज राज-नीतिज्ञ ने भी स्वीकार किया था।

'स्वामी दयानन्द का कहना था कि कुरान और बाइबिल नहीं अपितु वेद ज्ञान के भण्डार हैं।[२] उनके मत में वेदों में केवल दार्शनिक और धार्मिक सत्य ही नहीं वरन प्राणि शास्त्र, रसायन शास्त्र, खगोल विद्या यन्त्र विज्ञान सैन्य विज्ञान सम्बन्धी ज्ञान विद्यमान है। दयानन्द ने ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका में इस पर विस्तार से प्रकाश डाला है। उसके अनुसार गणित विद्या, बीजगणित रेखागणित, भी वेदो से ही सिद्ध होता है"[३] वेदों में समुद्र में चलने वाले जहाज, आकाश में चलने वाले विमान[४]' और ऐसे यानों का उल्लेख है। जिनसे "तीन दिन और तीन रात में द्वीप-द्वीपान्तर में जा सकते हैं।[५]"

वेदों में तार विद्या और विद्युत का उल्लेख भी मिलता है।' सत्यार्थ प्रकाश में उन्होंने लिखा है कि श्रीकृष्ण तथा अर्जुन ने 'अश्वतरी' अथवा अग्नियान नौका में बैठकर अमेरिका की यात्रा की थी।[६]' दयानन्द के उप-रोक्त गवेषणापूर्ण विचारों ने भारतवासियों को निराशा की कीचड़ से ऊपर खींचा। दयानन्द की अभिलाषा अपने देशवासियों में ऐसा स्वाभिमान उत्पन्न करने की थी जो ठोस तथ्यों पर आधारित हो। इसके भण्डार की खोज की और उसे अपने देशवासियों के सामने रखा जिससे वे अपनी प्राचीन परम्परा-गत विरासत में स्वाभिमान कर सकें। दयानन्द चाहते थे कि भारत मानव समाज का गुरु और वेदों में प्रस्तुत वात्सल्य आदर्शों का समर्थन होने के नाते दुनियां के देशों के बीच सम्मानपूर्ण स्थान प्राप्त करें। वे यह कार्य पश्चिम का अनुकरण करके नहीं अपितु भारत को अपने पैरों पर खड़ा करके और 'स्वधर्म' का आचरण करके करना चाहते थे। (क्रमशः)

---

१. उद्धृत विश्व प्रकाश "लाइफ एण्ड टीचिंग्स आफ स्वामी दयानन्द" पृ० १११

१. उद्धृत लाखीराम, "महर्षि दयानन्द का जीवन चरित्र", भाग २, पृ० ७४१-७५०

२. जे० आर० मैकडानल्ड "दी अवेकनिंग आफ इण्डिया" पृ० ३६-३७'

३. "सत्यार्थ प्रकाश" पृ० १६०

४. ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका पृ० १५७

५. उपरोक्त पृ० २०७

६. उपरोक्त पृ० २११

योग सिद्धि में वाञ्छित चित्त व्यवस्था

लेखक—डा० सत्यदेव आर्य, एम.बी. १६१ बापू नगर जयपुर

योग का सामान्य शाब्दिक अर्थ तो केवल 'मिलन या 'जोड़' ही होता है जैसे एक और एक दो, लेकिन व्याकरण के अनुसार योग पद 'युजिर् योगे' और 'युज् समाधौ' धातुओं में घञ् प्रत्यय से सिद्ध होता है जिसका अर्थ है 'जोड़' या 'समाधि'। योग दर्शन में 'योगः समाधिः' अर्थ में इसका प्रयोग अधिक अभिष्ट है। समाधि में ही योग बनता है। लेकिन किसका योग किस के साथ ? स्पष्ट है चेतन जीवात्मा का चेतन परमात्मा के आनन्दमय स्वरूप के साथ योग। इसी अवस्था में जीवात्मा को मोक्ष सुख की अनुभूति होती है। लेकिन आजकल अधिकांश प्रचलित अर्थ में योग को केवल शारीरिक सूक्ष्म व्यायाम कतिपय आसन और षट्कर्म क्रियाओं तक ही सीमित किया जाता गया है जो अयथार्थ एवं भ्रान्तिपूर्ण है। व्यायाम आसन आदि तो अष्टांग योग के केवल एक ही अंग 'आसन' में समाविष्ट हो जाते हैं। योग सिद्धि अर्थात् समाधि की सिद्धि में महर्षि पातञ्जलि चित्त की वृत्तियों के निरोध का निर्देश देते हैं यथा "योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः" (यो. ४-१-२) अर्थात् चित्त की वृत्तियों का निरोध ही योग है।

प्रश्न उठता है—यह चित्त की वृत्तियां हैं क्या ? चित्त का यहां अभिप्राय है अन्तःकरण—जिसमें मन, बुद्धि, चित्त और अहंकार का समावेश है, चित्त का बाह्य विषयों में व्यापार-लगाव, भटकाव आदि। इन्द्रियों के माध्यम से चित्त बाहरी विषयों में रमता रहता है, प्रकृति जन्य मायामोह के प्रपञ्चों में फंसा रहता है और तब साधारण-'व्युत्थान'-दशा में इसकी प्रायः तीन अवस्थाऐं होती हैं जो अयोग की अवस्थाऐं हैं। यह हैं १) क्षिप्त २) मूढ़ और ३) विक्षिप्त।

क्षिप्तावस्था में चित्त रजोगुणी रहता है। अति चंचल, चपल, विचलित, डांवाडोल, व अस्थिर बना रहता है। किसी भी विषय में स्थिर हो नहीं पाता ठीक वैसे ही जैसे वायु वेग में दीपक की अस्थिरता। मूढ़ावस्था में चित्त तमोगुणी बना रहता है। तामसिक प्रवृत्ति का प्राबल्य लिये रहता है। आलस्य प्रमाद और काम क्रोध लोभ मोह की प्रधानता लिये रहता है। धर्म अधर्म के विवेक से विहीन अपने निहित कर्त्तव्य कर्म के प्रति उदासीन बना रहता है। कह सकते हैं कि बुझे दीप की भांति स्वतः को और अपने आस पास को अन्धकारमय-अज्ञानान्धकार की स्थिति में बनाये रखता है। विक्षिप्तावस्था में चित्त की चंचलता एवं चपलता कुछ मन्द पड़ जाती है। कुछ स्थिरता आने लगती है, लेकिन केवल अल्पकालिक ही जैसे वायु वेग के आंशिक ठहराव में दीपक की आंशिक स्थिरता। इस अवस्था में चित्त की प्रवृत्ति कुछ ज्ञान विवेक और वैराग्य की ओर झुकने लगती है। लेकिन यह तीनों अवस्थाएं योग की परिधि में नहीं आती। योग की परिधि में आती हैं इनसे इतर दो अन्य अनुवर्ती अवस्थाएं जो हैं एकाग्र और निरुद्ध।

एकाग्रावस्था में चित्त इन्द्रियों द्वारा बाहरी विषयों के व्यापार से विरत होकर अध्यात्म चिन्तन-मनन में प्रवृत्त होने लगता है और किसी एक विषय में स्थिर हो जाता है। तब वह विषयके स्थूल से सूक्ष्म और सूक्ष्म से सूक्ष्मतर तत्त्वों को जानने व उनके स्वरूप का साक्षात्कार करने की स्थिति में आ जाता है लेकिन इस अवस्था में पूर्व अनुभूत संस्कार चित्त पर बने रहते हैं जो यदाकदा उभर कर साधक की साधना में आंशिक विघ्न बाधा उत्पन्न कर देते हैं। फिर भी अभ्यास से साधक इस स्थिति को दृढ़ बनाने में सफल हो जाता है। इसी अवस्था को योग की भाषा में 'विवेकख्याति' या सम्प्रज्ञात समाधि कहते हैं।

निरुद्धावस्था में साधक पूर्व अनुभूत विषयों के संस्कारों से भी छुटकारा पा लेने में सफल हो जाता है। संस्कारों को उद्बुद्ध होने ही नहीं देता। चित्त को आत्मा में लीन करके उसके स्वरूप का बोध कर पाता है। उस स्थिति में "तदा द्रष्टुः स्वरूपे अवस्थानम्" (यो. ४-१-३) आत्मा अपने स्वरूप में अवस्थित होकर सर्व द्रष्टा परमात्मा के आनन्द स्वरूप में स्थित हो पाता है। यही असम्प्रज्ञात समाधि है—निर्बीज समाधि है। यही मोक्ष सुख की स्थिति है।

इस स्थिति की उपलब्धि के लिये साधक को पूर्ण प्रयास एवं निष्ठा से योग के आठों अंगों का अनुष्ठान करना पड़ता है। योग के यह आठ अंग हैं—यम, नियम, आसन, प्राणायाम प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि। इनमें यम-नियम योग सोपान की प्रथम पैड़ी बनते हैं। इनका अनुशासन साधारण व्यक्ति के लिए तथा विशेषकर साधक के लिए अत्यन्त ही आवश्यक है। यह व्यक्ति साधक के व्यक्तित्व में निखार लाते हैं, योग बीज बोने के निमित्त क्षेत्र को परिष्कृत करते हैं चित्त को शुद्ध पवित्र और निर्मल बनाते हैं और उसकी प्रसन्नता बनाये रखने में प्रमुख भूमिका निभाते हैं, जिससे चित्त की वृत्तियों का निरोध आसानी से किया जा सके। यम अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह मानवीय नैतिक कर्त्तव्य कर्म हैं जो समाज में अन्यों के साथ निभाये जाते हैं और नियम-शौच, सन्तोष, तप, स्वाध्याय और ईश्वर प्रणिधान अपने स्वयं के निभाने योग्य आचरणीय कृत्य हैं।

इनके अनन्तर चित्त की प्रसन्नता को और अधिक मुखरित करने हेतु महर्षि पातञ्जलि योग दर्शन में विशिष्ट व्यवहार का निर्देश देते हैं कि "मैत्रीकरुणामुदितोपेक्षाणांसुखदुःख पुण्यापुण्य विषयाणां भावनातश्चित्तप्रसादनम्" (यो. ४-१-३३) अर्थात् सुखी के साथ मैत्रीभाव दुःखी के साथ करुणा-दयाभाव, पुण्यात्मा के साथ मुदिता-हर्षभाव और अपुण्यों के साथ उपेक्षाभाव रखें। सुखी लोगों के साथ मैत्रीभाव से उनके सुख में सुखी होने की भावना स्वतः ही उजागर होती है। मित्रता में ईर्ष्या द्वेष व डाह का स्थान नहीं रहता। सच्चा मित्र अपने मित्र की बढ़ती सुख सुविधा, सफलता सम्पन्नता, लोकप्रियता आदि देखकर सदा प्रसन्न ही होगा। ईर्ष्या भाव कभी भी प्रदर्शित नहीं करेगा। दुःखियों के साथ दयाभाव रखने, सहानुभूति एवं सहयोग करने, उनके दुःख दूर करने का प्रयास करने या इस दिशा में सन्मार्ग प्रदर्शित करने के मानवीय व्यवहार चित्त की सम्यक शान्ति व प्रसन्नता को उत्तरोत्तर प्रस्फुटित करते हैं। उनके साथ घृणा और नफरत की भावना अमानवीय कृत्य हैं जो उन्हें और अधिक दुःखी करते हैं तथा उभयपक्षीय चित्त में अशान्ति पैदा करते हैं। पुण्यात्माओं के प्रतिष्ठित जीवन पर समाज द्वारा उनको सम्मानित किए जाने पर हर्षित होना शिष्ट व्यवहार है जिससे मन में मुदिता मुखरित होती है, लेकिन ईर्ष्यावश यदि उनकी प्रतिष्ठा को ठेस पहुंचाने की नीयत से उनमें झूठमूठ के दोष निकालकर उन्हें बदनाम करने की प्रवृत्ति रखें तो यह आसुरी असूयावृत्ति बनती है जो व्यक्ति को मनुष्यपन से गिरा देती है और साधक के मन को मलिन कर देती है जिससे उसे योग सिद्धि हो नहीं पाती। अपुण्य लोगों के साथ न मैत्री और न ही द्वेष की भावना रखना उचित है। उनके साथ तो उपेक्षावृत्ति रखना ही अपेक्षित है। उन्हें सहायता व सहयोग देने या सन्मार्ग प्रदर्शित करने में बहुधा विपरीत फल ही हाथ लगता है। ऐसे व्यक्ति अपने हितैषियों व सहयोगियों के साथ दुर्व्यवहार करने और हानि पहुंचाने मे भी नहीं हिचकिचाते।

इस प्रकार योगसिद्धि में चित्तवृत्तियों का निरोध, यमनियमों का निष्ठा से अनुपालन, चित्त की प्रसन्नता बनाये रखने हेतु, निर्दिष्ट आचार व्यवहार का अनुशीलन एवं योग के अन्य अंगों के अनुष्ठान से समाधि सिद्धि और मोक्ष सुख प्राप्ति में साधक सफल हो पाता है।

सार्वदेशिक पत्र के बढ़ते हुए आजीवन सदस्य

ग्राहक संख्या :—

८५५३ मन्त्री जी आर्य समाज रानी बाग शकूर बस्ती दिल्ली
१२११६—श्री जगदीश शरण जी १५ बिहारी नगर गाजियाबाद (उ० प्र०)
१२११७—श्रीमती शशि चरला ४६ वेस्ट ऐवेन्यू-५, पंजाबी बाग नई दिल्ली
१२०४५ – महा० आर्य भिक्षु द्वारा श्रीमती लीलावती गुप्त कुटिया नं० ५० ज्वालापुर सहारनपुर
८४११ – श्री राजकृष्ण नंबर हरि निवास हिसार (हरि०)
५१६१—मा० मांगेराम ग्राम जूगलान हिसार (हरि०)
६८७८—श्री चन्द्रमोहन आर्य बेरी वाला बाग दिल्ली-६
६५७२—श्री मन्त्री जी आर्य समाज तिमारपुर दिल्ली
११८७—हवन सामग्री भण्डार ६३१, त्रिनगर दिल्ली-३५
९६२०—एस० एम० डोंगरा देहरादून (उ० प्र०)
१०८८५—श्री प्रहलाद भाई कान जी भाई पटेल वर्कशाप रोड मेहसाना (गुजरात)
११९९०—श्रीमती शकुन्तला मकला ४, नयागंज गाजियाबाद (उ० प्र०)
१२१२३—श्री विनोद जी बेदवानी १८ भाई सराबा नगर लुधियाना
१२१२४—श्री अविनाश जी अवरोल ४७३ माडल टाऊन लुधियाना
१२१४०—श्री मन्त्री जी आर्य समाज परमानन्द बस्ती बीकानेर (राज०)
१२१५१—श्री शिवदयाल जी टुटेजा मार्फत सरताज इण्डस्ट्रीज लुधियाना
१२१५२—श्री हरबन्स जी ठल सुखदेव नगर लुधियाना
१२१५३— आर्यसमाज लुधियाना
१२१५४—श्री अशोक कुमार जी राजपूत एडवोकेट सुखदेव नगर लुधियाना
१२१५५—श्री अनिल जी सरपाल इण्डस्ट्रीज लुधियाना
१२१२८—श्री राजेन्द्रलाल श्री शादीलाल इण्टर प्राईजज शामली मुजफ्फर नगर
१२१७३—श्री मन्त्री जी आर्य समाज घाटकोपर बम्बई
७७८६—श्री मन्त्री जी आर्य समाज सी ब्लाक जनकपुरी दिल्ली
१२२५४—श्री शिवजीराम बद्री नारायण नया बाजार महबूबाबाद वारंगल
१०३१२—श्री रामकिशन जी ३०३८ कूचा सोहनलाल बाजार सीताराम दिल्ली
९१३१—श्री चन्द्रप्रकाश जी बरसलीगज नई सराय, बिहार शरीफ नालन्दा (बिहार)

देशान्तर प्रचार

आर्य प्रतिनिधि सभा, दक्षिण अफ्रीका विश्व आर्य सम्मेलन

श्रीमान/श्रीमती

सप्रेम नमस्ते !

आपको यह जानकर प्रसन्नता होगी कि उपरोक्त सभा तारीख १४, १५, १६ दिसम्बर को अपने हीरक महोत्सव और विश्व आर्य सम्मेलन का आयोजन कर रही है, जिसके लिए सार्वदेशिक सभा (रामलीला मैदान, नई दिल्ली-११०००२) की अनुमति मिल चुकी है। हम आशा करते हैं कि भारत से और अन्य देशों से अधिक से अधिक व्यक्ति यहां आकर इसे सफल बनावें, इसके लिए आप निम्न लिखित तैयारियां अभी से चालू कर देवें।

(१) अपना पास पोर्ट बनवा लेवें, उसमें प्रवास के देशों में साउथ अफ्रिका का नाम अवश्य लिखवा लेवें। सामान्य रूप से साउथ अफ्रीका के लिए भारत सरकार अनुमति नहीं देती है। पासपोर्ट के सम्बन्ध में अपने स्थानीय सर्विस के एजेण्ट आपको मार्ग दर्शन दे सकेंगे। आप हमें भी लिखें जिससे हम यहां की वीसा (visa) फोर्म आपको भेज देंगे।

(२) भारत की प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभाएं सार्वदेशिक सभा से सम्पर्क स्थापित करें, सम्भव है कि उन्हें यात्रियों का अधिक कोटा न मिले, तो आप स्वतन्त्र प्रयत्न करें।

(३) अन्य भाई बहन भी स्वतन्त्र रूप से पासपोर्ट और यहां के प्रवेश पाने की अनुमति के प्रयत्न करें।

(४) अपने मार्ग व्यय और प्रवास के लिए आवश्यक धनराशि इकट्ठी करें, और एक्सचेंज के नियमों को समझ लेवें।

(५) इस सम्बन्ध में हम से भी शीघ्र पत्र व्यवहार चलू कर देवें, जिससे हम आपको आवश्यक मार्गदर्शन दे सकेंगे।

श्री एस० रामभरोसे— प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा, साउथ अफ्रीका
पं० नरदेव वेदालंकार— सभापति, वेद निकेतन, साउथ अफ्रीका
३५ कोस स्ट्रीट, ४००१ डरबन, साउथ अफ्रीका]

आर्य समाजों की गतिविधियां

श्री पं० युधिष्ठिर जी का अभिनन्दन समारोह सम्पन्न

आर्य समाज सान्ताक्रुज बम्बई द्वारा आयोजित दिनांक १९ मई १९८५ को पूजनीय पं० युधिष्ठिर जी मीमांसक अभिनन्दन समारोह पर पं० जी को स्वर्ण पदक एवं ७५०००) रु० की थैली भेंट की गयी।

समारोह की अध्यक्षता लोक सभा अध्यक्ष श्री बलराम जी जाखड़ ने की और प्रो० वेद व्यास जी मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित हुए। केप्टिन देवरत्न आर्य ने मुख्य अतिथियों का स्वागत किया।

आर्य वीरदल हरियाणा

हरियाणा आर्य वीरदल के तत्वावधान में यहां निम्नलिखित स्थानों पर शिविरों का आयोजन किया जा रहा है वहां उनके अधिकारी जनसंपर्क करके लगभग एक हजार युवकों को मदिरा पान तथा धूम्रपान छुड़वाने के लिए प्रयत्नशील हैं।

(१) "गुरुकुल झज्जर" (रोहतक) में श्री संजय कुमार के नेतृत्व में तिथि १४-६-८५ से २१-६-८५ तक।

(२) "फरीदाबाद" सैक्टर १९ में श्री कन्हैया लाल मेहता के नेतृत्व में १६-६-८५ से २३-६-८५ तक।

(३) पलवल में श्री सत्यपाल आर्य की देख रेख में २३-६-८५ से ३०-६-८५ तक।

इन शिविरों में सार्वदेशिक आर्य वीर दल के प्रधान संचालक श्री बाल दिवाकर हंस तथा आचार्य देवव्रत जी भी पहुंच रहे हैं।

अन्य शिविरों की सूचना बाद में दी जाएगी।

महाराष्ट्र आर्य वीरदल का शिविर

महाराष्ट्र आर्य वीर दल का "मानवता संस्कार शिविर" बड़ी सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ। इसमें १२५ युवकों ने भाग लिया। शिक्षण का कार्य श्री राममूर्ति जी ने किया। श्री बालदिवाकर जी हंस, आचार्य सोमेराव जी एम ए. सुग्रीव काले तथा मायाचारी गुरु जी सरीखे अन्य विद्वानों ने बौद्धिक देकर युवकों को उत्साहित किया। श्री शिवराज माणिक महाप्रभु ने वीर व्यायामशाला के लिए भूमिदान दिलाने का संकल्प किया।

आर्य समाजों के निर्वाचन

—आर्यसमाज शाहगंज आगरा, राजेन्द्र प्रसाद कुलश्रेष्ठ प्रधान ताराचन्द आर्य मन्त्री मदन मोहन वर्मा कोषाध्यक्ष।

—स्त्री आर्यसमाज शाहगंज श्रीमती किरनदेवी प्रधान श्रीमती राजकुमारी मन्त्री श्रीमती उमा गोयल कोषाध्यक्ष।

—स्त्री आर्य समाज करोलबाग नई दिल्ली श्रीमती सुशील महता प्रधान श्रीमती कृष्णा रखवन्त मन्त्री श्रीमती सावित्री कपूर कोषाध्यक्ष।

—आर्य समाज छोटी सादड़ी (राज०) बुद्धिशंकर उपाध्याय प्रधान विजयचन्द पचोरी मन्त्री मथुरालाल कोषाध्यक्ष।

—आर्य समाज बिलबोई असम झिल्लीराम कार्कि प्रधान रामबहादुर गिरोला मन्त्री नवकुमार क्षेत्री कोषाध्यक्ष।

—स्त्री आर्य समाज नया बांस गाजियाबाद श्रीमती शारदा आर्य प्रधान श्रीमती दयावती मन्त्री श्रीमती जया कुमारी कोषाध्यक्ष।

—आर्य समाज महर्षि दयानन्द स्मारक कर्णवास बुलन्दशहर भैयालाल वर्मा प्रधान करनसिंह वर्मा मन्त्री राजवीरसिंह कोषाध्यक्ष।

—गुरुकुल महाविद्यालय बैरगनिया रामगोपाल अग्रवाल प्रधान रमाशंकर प्रसाद मन्त्री रामावतार शर्मा कोषाध्यक्ष।

—आर्य समाज चण्डीगढ़ से० ३२ श्रीमती सत्या बेरी प्रधान राजेन्द्र प्रसाद शर्मा मन्त्री श्रीरेश आनन्द कोषाध्यक्ष।

—तपोवन आश्रम ट्रस्ट वैदिक साधन आश्रम देहरादून रामनाथ भारत प्रधान देवदत्त बाली मन्त्री चिरञ्जीलाल कोषाध्यक्ष।

चुनाव सम्पन्न

आर्य समाज का नाम	प्रधान	मन्त्री	कोषाध्यक्ष
आ. समाज शाहजहांपुर	श्री बहादत्त	ओमप्रकाश वाजपेयी	
दयानन्द मठ चम्बा	भगवती प्रसाद पन्त	प्रो. श्यामलाल मल्होत्रा	विश्वजीत महाजन
आर्य समाज पंजाबी बाग दिल्ली २६	गिरधारीलाल गुलाटी	वेदप्रकाश छतवाल	श्री धर्मवीर
आर्य समाज आर्य नगर गाजियाबाद	सेवाराम जी	हरपाल जी प्रभाकर	हरिकृष्ण जी
आर्य समाज शक्तिनगर मिर्जापुर (उ. प्र.)	प्रनेशचन्द्र जी	रमेशचन्द्र जी राय	शिवकरणजी
आर्य समाज पूना	सुभाषचन्द्र जी बजाज	सोमदत्त जी वाचस्पति	—

वर्तमान शिक्षा प्रणाली में परिवर्तन के लिए कुछ सुझाव

१—अंग्रेजी का साम्राज्यवाद शिक्षा से बिलकुल हटा दिया जावे। तभी राष्ट्र भाषा की व्यापकता तथा उसकी उचित साहित्यिक समृद्धि हो सकेगी।

२—पब्लिक स्कूलों में अंग्रेजी भाषा का माध्यम शिक्षा के लिए खतरनाक है, क्योंकि यह समाज में विषमता पैदा करता है तथा मानव का शोषण करना सिखाता है।

३—प्राइमरी तक शिक्षा सारे राष्ट्र में निःशुल्क होनी चाहिए ताकि गरीब भी शिक्षा से वंचित न रहें। ग्रामीण जनता के लिए रात्रि में प्रौढ़ शिक्षा की व्यवस्था हो।

४—राष्ट्र की एकता और अखण्डता के लिए सारे राष्ट्र में एक ही शिक्षा पद्धति कायम की जाय।

५ समाज तथा सामान्य जन जीवन की समृद्धि के लिए औद्योगिक शिक्षा की नितांत आवश्यकता है।

६—महिला शिक्षा के लिए जबरदस्त जन भावना तैयार की जाय ताकि भारत की प्रत्येक महिला साक्षर व शिक्षित हो सके।

७—माननीय लाल बहादुर शास्त्री जब भारत के प्रधानमन्त्री थे तो उन्होंने कलकत्ता के अपने भाषण में कहा था कि देश के प्रत्येक प्रान्त में एक एक संस्कृत विश्वविद्यालय स्थापित किया जायगा। उनकी मृत्यु के बाद उनका यह स्वप्न अधूरा ही रह गया।

८—संस्कृति के इस संघर्ष मे आर्य संस्कृति को विश्वव्यापी बनाना होगा ताकि मनुष्यमात्र आनन्द की अनुभूति ले सके।

९—अध्यात्म का ज्ञान सर्वसाधारण को सुलभ हो सके उसके उपाय खोजे जाने चाहिए।

१०—भारत फिर से जगद्गुरु बन सके ऐसी आगामी योजना बनाई जानी चाहिए।

११—भारत के समस्त गुरुकुलों को मिलकर एक अलग योजना बनानी चाहिए ताकि विश्व को उनकी उपयोगिता मालूम हो सके।

१२—अनुसन्धान के क्षेत्र में व्यवहारिक उपयोगिता को ध्यान में रखकर ही आगे बढ़ा जाय।

१३—सादा जीवन और उच्च विचार शिक्षा का आदर्श होना चाहिए।

१४—प्राइमरी शिक्षा में विषयों व पुस्तकों की कमी की जाय ताकि विद्यार्थी पुस्तकों के भार से दब न जावें।

—कपिलदेव द्विवेदी
कुलपति
गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर
हरिद्वार

—डा० गौरीशंकर आचार्य
प्रधान-सभा
गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर
हरिद्वार

—वेद संस्थान राजौरी गार्डन नई दिल्ली में "साधना शिविर" २० मई से २६ मई ८५ तक आयोजित किया गया। इसका प्रमुख विषय "राष्ट्रीय चरित्र" था इसमें महात्मा दयानन्द जी, श्री [illegible] सिंह डा० [illegible] शर्मा—[illegible] आदि पधारे।

शोक समाचार

यह लिखते हुए अति दुःख होता है कि महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा, बाजेगांव (जि० नान्देड़) के वेद प्रचार विभाग के अधिष्ठाता माननीय श्री नरसिंहराव जी उर्फ बापू साहब बाघमारे का दुखद निधन बम्बई में अकस्मात् हो गया है। उनका पार्थिव शरीर बम्बई से उनके निवास गृह निलवा लाया गया जहां पूर्ण वैदिक रीतिसे उनका अन्त्येष्टि संस्कार किया गया। इस अवसर पर महाराष्ट्र के एक मन्त्री श्री निलंगेकर के अतिरिक्त लगभग दस हजार का जनसमुदाय शव यात्रा में उपस्थित था।

स्मरण रहे, श्री बापू साहब बाघमारे महाराष्ट्र सभा के भूतपूर्व प्रधान स्वर्गीय श्री आनन्दमुनि जी के अग्रज थे। श्री मुनि जी (पूर्वाश्रमी श्री शेषराव बाघमारे) व श्री बापू साहब दोनों ही कट्टर आर्य समाजी थे। मराठवाड़ा के सातों जिलों व भूतपूर्व हैदराबाद में आर्य समाज के प्रचार-प्रसार मे इन दोनों ही भाइयों ने सर्वस्व अर्पण कर दिया। इनका सारा परिवार ऋषि का अनुयायी है। दोनों भाइयों की सन्तानों का अन्तरजातीय विवाह कराकर इन बाघमारे बन्धुओं ने अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत किया है। श्री बापू साहब महाराष्ट्र के सेवा निवृत्त डी. एस. पी. रहे हैं। पूरे भारत में कुख्यात मानवत के नरबलि हत्याकाण्ड की जांच का विशेष कार्य गृह विभाग ने आपको सौंपा था। उसे पूरी निष्ठा से पूरा कर, आपने अपराधियो को पकड़ने मे सफलता प्राप्त की। उसी निष्ठा के फलस्वरूप राष्ट्रपति ने पुलिस का विशिष्ट सेवा पदक देकर आपको सम्मानित किया था। उस समय मेरे से आपने कहा था कि यह सब आर्य समाज की महती कृपा का ही फल है। अभी दिनांक २७ एप्रिल ८५ को नान्देड़ में आयोजित महाराष्ट्र प्रा. प्र. नि. सभा की प्रतिनिधि व अन्तरंग सभा मे आपसे वेदप्रचार की योजना पर प्रत्यक्ष व विस्तृत बातचीत हुई थी। परन्तु, किसे पता था कि आर्य समाज का यह सजग प्रहरी अकस्मात् ही इतनी जल्दी प्रभु का प्यारा हो जाएगा। विधाता भी बड़ा निष्ठुर जान पड़ता है। पुलिस विभाग से सेवा निवृत्त होने के अनन्तर आप पूरे राज्य में वेदप्रचार का पूरी लगन से कार्य करते रहे। विदर्भ के कुछ देहातों में आदिवासी लोगों के हुए सामूहिक धर्मान्तरण की चर्चा छिड़ने पर आपका मनोवेग इतना तीव्रतर होता देखा गया था कि जिसे लिखा नहीं जा सकता। विगत मई १९८४ में आर्य समाज के वेदप्रचार सप्ताह में व अन्य अनेक अवसरों पर आपके जालना के कई व्याख्यान प्रभावशाली रहे। आपके प्रवचन की शैली अत्यन्त मनोरंजक व बोधप्रद रहती थी। श्रोता मन्त्रमुग्ध हो जाते थे। आपके बारे में जितना भी लिखा जाए थोड़ा ही है। यह समाचार लिखते समय भी लेखनी स्वयं रो रही है। मन: स्थिति ठीक नहीं है। प्रभु उनकी आत्मा को सद्गति व शोक सन्तप्त परिवार को धैर्य प्रदान करे, यही प्रार्थना है।

—महादेव आर्य, रामनगर जालना

वस्तुत: श्री बापू का निधन आर्य समाज की महती क्षति है। —सम्पादक

शोक समाचार

श्री जयपाल विद्यालंकार अध्यक्ष संस्कृत विभाग हंसराज कालेज दिल्ली के पूज्य पिता श्री सुरजनसिंह जी का २२-५-८५ को दिल्ली में अचानक हृदय गति बन्द हो जाने से देहावसान हो गया। श्री सुरजनसिंह दृढ़ आर्य और उत्साही कार्यकर्मी थे। उनकी आयु ८२ वर्ष की थी।

इस महान वियोग में हम श्री जयपालजी तथा परिजनों के प्रति समवेदना का प्रकाश करते और दिवंगत आत्मा की सद्गति के लिए प्रभु से प्रार्थना करते हैं। —रघुनाथ प्रसाद पाठक

विशाल आर्य युवक प्रशिक्षण शिविर

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद दिल्ली प्रदेश का विशाल आर्य युवक प्रशिक्षण योग व साधना शिविर दिनांक १४-६-८५ से २३-६-८५ तक स्वामी जगदीश्वरानन्द जी महाराज एवं ब्रह्मचारी आर्य नरेश जी की अध्यक्षता में गुरुकुल कण्वाश्रम कलाल घाटी कोटद्वार पौड़ी गढ़वाल में लगने जा रहा है। शिविर की जानकारी हेतु निम्न पते पर सम्पर्क करें।

मन्त्री केन्द्रीय आर्य युवक परिषद
आर्य समाज कबीर बस्ती
पुरानी सब्जी मण्डी दिल्ली-११०००७

टिमरवानी बालवाड़ी के स्थापना अवसर पर लिया गया चित्र

दयानन्द सुनीता प्रेमबाड़ी के स्थापना अवसर पर श्रीमती प्रेमलता शास्त्री शिक्षा प्रचार के लिए प्रेरणा देती हुई।

प्रवेश प्रारम्भ

गुरुकुल विश्व विद्यालय वृन्दावन

१ जुलाई ८५ से प्रारम्भ, नि:शुल्क बी० ए० स्तर तक की शिक्षा, सादा भोजन, नियमित दिनचर्या, उत्तम देख भाल के लिए प्रारम्भिक भोजन शुल्क ६०) मात्र में ६ से १२ वर्ष तक के बालकों का प्रवेश गुरुकुल विश्व विद्यालय वृन्दावन में दिलाएं। साइंस, संस्कृत, बायलोजी सहित इन्टर परीक्षा उत्तीर्ण छात्र आयुर्वेद महाविद्यालय में प्रवेश ले सकते हैं।

—स्वामी कर्मानन्द, मुख्याधिष्ठाता

(२)

गुरुकुल चित्तौड़

देश का प्रसिद्ध शिक्षणालय आपका चिर परिचित गुरुकुल चित्तौड़गढ़ अरावली की सुन्दर पहाड़ियों मे गंभीरी नदी के तट पर एकान्त स्थल पर अवस्थित है, शिक्षा यहां सर्वथा निःशुल्क दी जाती है।

महामा शास्त्री व आचार्य कक्षा के छात्रों के लिए छात्रवृत्ति का भी प्रबन्ध है। पढ़ाई १ जुलाई से प्रारम्भ होती है, नवीन बालकों का प्रवेश १५ जून से प्रारम्भ होना है, प्रवेश सम्बन्धी अन्य जानकारी के लिए मुख्याधिष्ठाता श्री गुरुकुल चित्तौड़गढ़ राजस्थान-३१२००१। इस पते से पत्र-व्यवहार वा सम्पर्क करें।

उत्सव

—आर्य समाज बिहारीगढ़ सहारनपुर का वार्षिकोत्सव २१, २२ मई को समारोह मनाया गया। —मा० उदयसिंह मन्त्री

—७ से १० जून तक कविराज श्री प० इन्द्रसेन विश्व प्रेमी के आवास स्थान पर एच ब्लाक २४१ न्यू कवि नगर गाजियाबाद में उन्हें आशीर्वाद प्रदानार्थ एक समारोह का आयोजन किया गया है। श्री प्रेमी जी ने देश देशान्तर में अनेक वर्षो तक सफल प्रचार किया था। —कु० सुनीता आर्य

नई यज्ञशाला का उद्घाटन

आर्य समाज अशोक विहार फेज I दिल्ली के विशाल प्रांगण में नव-निर्मित यज्ञशाला का विधिवत् रूप से उद्घाटन ६ मई १९८५ प्रातःकाल की शुभ वेला में वेदमन्त्रों के उच्चारण से श्रीमती पुष्पा जी सबदेवा के करकमलों से सम्पन्न हुआ। उद्घाटन समारोह की अध्यक्षता आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वान श्री जैमिनी जी शास्त्री ने ब्रह्मा के रूप में की।

यज्ञशाला के निर्माण हेतु श्रीमती सबदेवा ने २५ हजार रुपए की राशि अपने स्व० पति श्री तिलकराज सबदेवा की पुण्य स्मृति में दान रूप में दी। इस यज्ञशाला के निर्माण का संकल्प लगभग १२ वर्ष पूर्व सबदेवा परिवार ने किया था। चिरकाल का यह स्वप्न अब साकार हुआ है।

संगमरमर पर अंकित वेद सूक्तियों से सुशोभित यह यज्ञशाला देश विदेश की सभी आधुनिक यज्ञशालाओं में उच्चकोटि की बनी है।

इस समाज का १३ वां वार्षिकोत्सव भी हुआ जिसकी समाप्ति १२ मई को हुई। १० मई को महिला सम्मेलन एवं ११ मई को बच्चों की गायन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। श्री इन्द्रमान जी कालड़ा द्वारा यज्ञ का सारा खर्च दिया गया। —विश्वभूषण आर्य, मन्त्री

आर्योपप्रतिनिधि सभा वाराणसी

उपप्रतिनिधि सभा ने अपनी २८-४-८५ की बैठक में गुरुकुल वृन्दावन, बहराइच के धर्मान्तरण और उग्रवादी अकालियों के सम्बन्ध में प्रस्ताव पारित किए हैं। गुरुकुल वृन्दावन का कार्यभार सम्भालने पर श्री कर्मानन्द जी को बधाई देते हुए उन पर हुए घातक प्रहार की भर्त्सना की तथा अपराधियों को कड़ी से कड़ी सजा देने की प्रशासन को प्रेरणा दी है। बहराइच के धर्मान्तरण पर चिन्ता प्रकट करते हुए इसे रोकने के लिए प्रभावी कदम उठाए जाने की प्रशासन से मांग की है जिसके पीछे मुख्यतः देश से बाहर के देश विरोधी धार्मिक और राजनीतिक तत्वों का हाथ है। उग्रवादी अकालियों की देश विरोधी कार्यवाहियों को कड़े हाथों से कुचलने का प्रशासन को आह्वान किया गया है। यह बैठक ५२ मंगला प्रसाद आर्य के निवास स्थान पर हुई थी। — आशीष कुमार, प्रचार मन्त्री

दि. १९-५-८५ को आर्यसमाज हरजेन्द्रनगर कानपुर में उषा पुत्री श्री एम० दयाल निवासी बाबूपुरवा ने सहर्ष स्वेच्छया ... को ग्रहण किया तत्पश्चात श्री भारत भूषण पुत्र श्री सावन मल आयु २८ वर्ष निवासी बाबूपुरवा के साथ पाणिग्रहण संस्कार श्री देवेन्द्र देव आर्य के पौरोहित्य में सम्पन्न हुआ।

—मंगाराम आर्य, मन्त्री आ. स. हरजेन्द्र नगर, कानपुर

(२)

एक बीस वर्षीय हरिजन युवक निवासी ग्राम मनोहर वाली जिला बिजनौर, जिसे कि लगभग ६ माह पूर्व मुसलमान बनाकर ग्वालियर मध्यप्रदेश जमात में भेज दिया गया था अफजलगढ़ आर्य समाज को सूचना मिलने पर आर्य समाज के मन्त्री व सदस्यों ने मिलकर स्थानीय पुलिस को साथ लेकर युवक को ग्वालियर से बुलाया और उसे वैदिक धर्म के विषय में समझाया जिसके कारण वह पुनः स्वेच्छा से वैदिक धर्म में प्रविष्ट हो गया। युवक का पूर्व नाम गंगाराम ही रख दिया गया है। इस अवसर पर श्री विजयपाल सिंह जी प्रधान, यतीश कुमार आर्य मन्त्री व राजनाथ सिंह आर्य पूर्व मन्त्री आर्य समाज व राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के अनेक कार्यकर्ता शामिल थे —यतीश कुमार आर्य, मन्त्री

सार्वदेशिक प्रेस, दरियागंज नई दिल्ली में मुद्रित तथा रघुनाथ प्रसाद पाठक मुद्रक और प्रकाशक के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ... नई दिल्ली-२ से प्रकाशित।

सृष्टिसम्वत् १६७२६४६०८६]
वर्ष २० अङ्क २७]

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र
आषाढ़ कृ० १३ सं० २०४२ रविवार १६ जून १९८५

दयानन्दाब्द १६१ दूरभाष : ३७४७७१
वार्षिक मूल्य २०) एक प्रति ५० पैसे

सभा अधिकारियों का द० भारत का सफल दौरा

मीनाक्षीपुरम् मदुरै आदि में प्रचार, हरिजनोद्धार एवं रक्षा का कार्य प्रगति पर

मीनाक्षीपुरम् में आर्यसमाज मन्दिर यज्ञशाला और औद्योगिक केन्द्र की स्थापना

हरिजन बन्धुओं के लिये कच्ची झोंपड़ियां हटाकर पक्के क्वार्टर बना दिये गये।

आर्यसमाज देश की एकता और अखण्डता की रक्षा और प्रशासन को सहयोग देने के लिए कृत संकल्प।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा (इन्टर नेशनल एर्यन लीग) दिल्ली के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले, वरिष्ठ उप-प्रधान श्री प० वन्देमातरम रामचन्द्रराव महामन्त्री श्री ओम्प्रकाश त्यागी तथा श्री वी०किशनलाल (हैदराबाद के पूर्व मेयर) ने निम्नलिखित संयुक्त वक्तव्य जारी किया: –

वक्तव्य

मदुरै ७ जून १९८५

सार्वदेशिक सभा देश के इस भाग में रहने वाले भारतीयों की उस सहायता के लिए आभार प्रकट करती है जो उन्होंने पश्चिमी एशिया से उठें सांस्कृतिक तूफान को छिन्न-भिन्न करने के सभा के प्रयासों को सफल बनाने के लिए प्रदान की है यद्यपि कुछ हद तक ही उसका जोर कम हो पाया हैं। इस बार यह तूफान दक्षिण के मार्ग से आया है न कि परम्परागत बोलन और खैबर की घाटियों के मार्ग से। हमारा कहना यह नहीं है कि तूफान का सर्वथा शमन हो गया है। अब यह अशान्त स्थितियों का लाभ उठाते हुए उत्तर प्रदेश के बहराइच तथा गुजरात आदि में कुछ अधिक तेजी के साथ वर्षा हो रहा है।

सभा की यह सुनिश्चित सम्मति है कि चाहे वह सांस्कृतिक आक्रमण हो, भाषायी अहम् हो वा धार्मिक पुनरुत्थान वाद हो, इन सबका लक्ष्य एक ही है अर्थात् भारत में स्वतन्त्र राज्यों की स्थापना। पंजाब में शरारत आनन्दपुर साहब प्रस्ताव के साथ शुरु हुई जिसमें सिखों ने सविधान की भाषा भावना और इतिहास के विरुद्ध अपने को पृथक् कौम या राष्ट्र होने का दावा किया। आज का बहु व्यापी आतंकवाद जो पंजाब में और अभी हाल में देहली में और उसके आस-पास देखा गया है पृथक राज्य प्राप्ति की उनकी इच्छा का परिणाम है।

यदि भारत में आन्तरिक शान्ति बनी रहने दी जाय और कम से कम एक दशाब्दी तक वह बाह्य आक्रमण से मुक्त रहे तो निश्चय ही वह इतना शक्तिशाली हो जायगा कि बड़ी से बड़ी ताकत का भी जो उसे कमजोर करने का प्रयास करेगी, सफलता पूर्वक मुकाबला करने में समर्थ होगा। देश को इस स्थिति में न आने देने के लिए ही उसे स्वतन्त्र राज्यों में विखण्डित करने का षडयन्त्र रचा गया है। खालिस्तान की पुकार से और पाकिस्तान आदि विदेशी ताकतों से इसे जो सहायता मिल रही है उनसे हमारी आंखें खुल जानी चाहियें।

आर्य समाज धार्मिक संघठन है परन्तु इसका लक्ष्य देश की अखंडता और एकता बनाए रखना भी है। ऐसा करना वह राजनैतिक आवश्यकता तथा धार्मिक कर्त्तव्य की पूर्ति समझता है। हम राज-नीतिक स्वार्थों वा उद्देश्यों की पूर्त्यर्थ धर्म और भाषा के प्रयोग के विरुद्ध हैं अत. हमारी माग है कि अकाली दल, मुस्लिम लीग तथा आल इण्डिया मजलिसे इत्तहादुल मुसलमीन जैसी राजनीतिक पार्टियों पर प्रतिबन्ध लगाया जाय।

(शेष पृष्ठ २ पर)

सम्पादक—ओम्प्रकाश पुरुषार्थी

सहसम्पादक—रघुनाथ प्रसाद पाठक

श्रद्धेय लाला रामगोपाल शालवाले के सम्मान राशिमें श्री लाला इन्द्रनारायणजी ने ११ हजार रुपए का दान दिया

दिल्ली। आर्य जनता को यह जानकर हर्ष होगा कि श्रद्धेय लाला रामगोपाल शालवाले के अभिनन्दन समारोह के अवसर पर भेंट की जाने वाली सम्मान राशि में प्रथम सहयोग, ११ हजार रुपए के सात्विक दान रूप में अभिनन्दन समिति के कोषाध्यक्ष श्री लाला इन्द्रनारायण जी से प्राप्त हुआ है।

माननीय लाला इन्द्रनारायण जी ने लाला जी के शतायु होने की कामना करते हुए आर्य जनता से पुनः अपील की है कि सम्मान राशि के ११ लाख रुपए के लक्ष्यको पूरा करने के लिए उत्साह पूर्वक धन संग्रह करके सार्वदेशिक सभा दिल्ली को भेजें।

ज्ञातव्य है कि आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश की अन्तरंग सभा ने मेरठ में १६ मई को सम्पन्न हुई बैठक में यह निर्णय किया है कि उत्तर प्रदेश की ओर से कम से कम एक लाख रुपए की राशि संग्रहीत करेंगे।

डा० आनन्द प्रकाश
संयोजक—अभिनन्दन समिति

(पृष्ठ १ का शेष)

आर्यसमाज हिन्दू समाज में व्याप्त अस्पृश्यता आदि सामाजिक बुराइयों के निराकरण के लिए सतत प्रयत्नशील है जिससे कि वह किसी भी रूप में देश के विघटन की कोशिश को विफल करने के लिए अधिकाधिक शक्तिशाली बनने में समर्थ हो जाय। पंजाब में यह जो भूमिका निभा रहा है और ऐसा करते हुए उसने अनेक कुर्बानियाँ दी हैं, (श्री लाला जगतनारायण जी, श्री रमेश जी तथा श्री बलवीर सिंह जी आदि की शहादत,वे सर्वविदित है यहां इनका विशेष उल्लेख करने की आवश्यकता नहीं है।

आर्यसमाज की राजनोतिक सत्ता प्राप्ति के संघर्ष में कतई रुचि नहीं है परन्तु हम इसे,भारतीय हाथों में और ऐसे हाथों में देखना चाहते हैं जो देश की एकता और अखण्डता की रक्षा के लिए संघर्ष करने तथा इसके नैतिक मूल्यों को अक्षुण्ण और अविकृत रखने के लिए कृत संकल्प हो।

इस दिशा में श्री राजीवगांधी द्वारा किए गये प्रयासों का मात्र देश की अखण्डता बनाए रखने के अपने व्रत के परिपेक्ष्य में हम स्वागत करते हैं।

हमें प्रसन्नता है कि श्री ऐम.जी. रामचन्द्रन लगभग पूर्णतः स्वस्थ और अब भारतीय संघ के अविभाज्य अंग के रूप में तमिलनाडू में राज्य का संचालन करने की स्थिति में हो गए हैं।

पड़ोस के आन्ध्र प्रदेश के राज्य में क्षेत्रवाद की ओर फिसलन स्पष्टतः देख पड़ रही है। तमिलनाडू में ऐसा नहीं हो रहा यह शुभ संकेत है।

जनता और तमिलनाडू प्रशासन से अपील

वक्तव्य को समाप्त करने से पूर्व हम तमिलनाडू की जनता और गवर्नमेंट को अपील करते हैं कि वे अपने को ऐसा संगठित करें कि जिससे वे विघटनकारी शक्तियों से लोहा लेने में समर्थ हों चाहे वे किसी भी रूप में अपना भद्दा सिर उठाने का प्रयत्न करें। आर्य समाज विघटनकारी शक्तियों की उनकी लड़ाई में सहायता करने के लिये सदैव उद्यत रहेगा।

मीनाक्षीपुरम् और मदुरै में आर्यसमाज के दृढ़ केन्द्र बनाए जायेंगे

मीनाक्षीपुरम् और मदुरै अब आर्यसमाज की गतिविधियों के सुदृढ़ केन्द्र बनाए जायेंगे। हम एक वैदिक विद्यालय की स्थापना का भी आयोजन कर रहे हैं जो सभी के लिए खुला होगा।

हमें आशा ही नहीं विश्वास है कि समस्त धर्माचार्यों का इस कार्य में हमें सहयोग मिलेगा।

हत्या की साजिश कनाडा में रची जा रही थी

लन्दन, १६ मई (प्रे. ट्र.)। सडे टाइम्स ने खबर दी है कि अमरीका के संघीय जांच ब्यूरो (एफ. बी. आई) ने हाल में प्रधानमन्त्री श्री राजीव गांधी की हत्या की जिस साजिश का भंडाफोड़ किया है इसका केन्द्र कनाडा था।

वाशिंगटन व लन्दन से मिले सबूतों पर आधारित सडे टाइम्स की इस खबर के अनुसार अमरीकी अधिकारियों का कहना है कि ब्यूरो ने इस सिलसिले में जिन चार या पांच सिखों को पकड़ा है वे अवैध रूप से अमरीका में रह रहे थे। वे संभवतः कनाडा से अमरीका में आ घुसे थे।

अखबार ने अधिकारियों को यह कहते उद्धृत किया है कि अमरीकी गुप्तचर संगठन को ऐसा नहीं लगता है कि सिख उग्रवादियों से अमरीका में आतंकवाद का कोई उल्लेखनीय खतरा है। वह यह भी नहीं मानता कि बर्मिंघम (अलबामा) में भाड़े के सिपाहियों के एक स्कूल में तोड़फोड़ का प्रशिक्षण लेने के लिए सिखों के पहुंचने के बाद ब्यूरो को महज इतफाक से इस साजिश का पता चल गया।

अखबार की खबर के अनुसार स्कूल के मालिकों ने ब्यूरो से सम्पर्क किया और बाद मे छद्मवेशी एजेन्टों ने श्री राजीव गांधी तथा हरियाणा के मुख्यमन्त्री श्री भजनलाल की हत्या करने के लिए मदद पाने की कथित कोशिश में लगे सिखों का वीडियो तैयार कर लिया।

खबर में कहा गया है कि उग्रवादी ब्रिटेन अमरीका और कनाडा में सिख समाज मे सक्रिय हैं और भारतीय गुप्तचर अधिकारी यह पता लगाने की कोशिश कर रहे हैं कि दिल्ली मे हाल में हुए बम-विस्फोटों का इस साजिश से कोई लगाव है या नहीं। इस काम में उन्हे इस बात से परेशानी हो रही है कि प्रोपैगंडा से लेकर आतंक फैलाने तक के कार्यों में तरह तरह के अजीबोगरीब गुट लगे हुए हैं।

अखबार के अनुसार ब्रिटेन के सिख प्रकाशनों में संकेत दिया गया है कि सिख उग्रवादियों ने कनाडा में फौजी प्रशिक्षण शिविर कायम कर लिए हैं। यहां के एक पंजाबी अखबार में हाल के अंकों में अन्तर्राष्ट्रीय सिख यूथ फेडरेशन हाई कमान के लिए एक विज्ञापन छापा है जिसमें अमरीका व कनाडा में संपर्क के लिए टेलिफोन नम्बर भी दिए गए हैं।

(हिन्दु० २७ ५-८५)

सम्पादकीय

संसार को आर्य कैसे बनाएं?

प्रथम साधन आर्य जीवन

महर्षि दयानन्द ने आर्य समाज की स्थापना इस उद्देश्य से की थी कि संसार भर में वैदिक धर्म का प्रचार करके मनुष्य मात्र को आर्य बनाया जाय। उद्देश्य जितना महान है उतना ही विशाल भी है और उसकी पूर्ति उससे भी अधिक कठिन प्रतीत होती है। कठिनाई के अनेक कारण हैं। उन कठिनाईयों में से सबसे बड़ी यह है कि आर्यत्व स्वयं एक कठिन वस्तु है। ईसाई उसे कहते हैं जो ईसाई पादरियों द्वारा बतलाए गए सिद्धांतों को स्वीकार करता हो। मुसलमान वह समझा जाता है जो हजरत मुहम्मद और कुरान शरीफ पर एतकाद (विश्वास) रखे। इस दृष्टि से ईसाई या मुसलमान को पहचानना बहुत आसान है। परन्तु आर्य शब्द की व्याख्या इतनी सरल नहीं है। आर्य शब्द देववाणी का है इसका अर्थ है श्रेष्ठ। जिसका आचार और विचार दोनों श्रेष्ठ हों वह आर्य कहलाता है। महर्षि दयानन्द ने अपने स्थापित किए हुए समाज का नामकरण न तो अपने नाम से किया न अन्य किसी के नाम से। उन्होंने समाज का नाम आर्य समाज और उसके सदस्यों का नाम आर्य रखा। इसकी यही सुन्दरता है कि महर्षि ने नामकरण द्वारा ही अपने अभिप्राय को सर्वथा स्पष्ट कर दिया।

वह आर्य समाज को अन्य मतमतान्तर की भांति कोई पन्थ नहीं बनाना चाहते थे और न वे यह चाहते थे कि केवल किन्हीं मन्तव्यों को मानकर कोई व्यक्ति धार्मिक समझा जा सके। वह धार्मिक तभी समझा जा सके जब उसके कर्म भी आर्यत्व लिए हों।

आर्य किसे कहते हैं? इसका सरलतम उत्तर यह है कि जिसके विचार शुद्ध और उसके कर्म भी आर्यत्व लिए हों।

दूसरा प्रश्न

दूसरा प्रश्न यह उत्पन्न होता है कि धर्म क्या है? इस प्रश्न के उत्तर में महर्षि ने काशी के शास्त्रार्थ में जो उत्तर दिया था वह अत्यन्त सरल और सुबोध है। आपने मनु का यह श्लोक उद्धृत किया था—

> धृति क्षमा दमोऽस्तेयं शौचमिन्द्रिय निग्रहः।
> धीर्विद्या सत्यम क्रोधो एत दशकं धर्मलक्षणम् ॥

धृति, क्षमा, दम, अस्तेय, शौच, इन्द्रिय निग्रह, धी, विद्या, सत्य, अक्रोध जो मनुष्य इन दस गुणों को अपने जीवन में धारण कर लेता है वह धार्मिक होने से आर्य पदवी के योग्य है।

वैदिक सिद्धांत सत्य होने के कारण मनुष्य के जीवन को धार्मिक बनाते हैं। सत्य सिद्धांत, सत्य कर्म के आधार होने के कारण धार्मिक जीवन के लिए आवश्यक है परन्तु यदि केवल सिद्धांत तो हों परन्तु उनके अनुसार कर्म न हों तो मनुष्य धार्मिक या आर्य नहीं कहला सकता। इस विचार परम्परा से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि वही व्यक्ति आर्य कहलाने के योग्य है जिसका जीवन धर्मानुकूल और श्रेष्ठ हो।

बाह्य चिन्ह

ऐसे व्यक्ति के बाह्य चिन्ह क्या होंगे? किसी विशेष प्रकार के कपड़े या किसी विशेष प्रकार के तिलक आदि धार्मिकता या आर्यत्व के चिन्ह नहीं हो सकते। यदि वस्तुतः उसके जीवन में धर्म के लक्षण विद्यमान हैं तो उसके चेहरे पर शान्ति होगी। व्यवहार में उदारता और क्षमा होगी। वह क्रोध या लोभ के वश में नहीं आयगा। उसके लिए सार्वजनिक भ्रष्टाचार (अर्थात रिश्वत लेना या देना) सर्वथा असम्भव होगा। सारांश यह कि उसका जीवन अच्छे और उच्च जीवन का एक आदर्श होगा। वह सबके साथ प्रेम का व्यवहार करेगा। दीन दुखियों की सहायता करेगा और अत्याचारियों के सामने चट्टान के समान खड़ा रहेगा। भय या लोभ उसे अच्छे मार्ग से न गिरा सकेंगे। वह निजी जीवन में अच्छा पुत्र, सदाचारी गृहस्थ, अच्छा पड़ोसी और अच्छा नागरिक होगा।

ये सब आर्यत्व के चिन्ह हैं। यह स्पष्ट है कि यदि हम मनुष्यमात्र को वैदिक धर्म का उपदेश देकर आर्य बनाना चाहते हैं तो सबसे पहला कार्य जो हमें करना चाहिए वह यह है कि हम अपने आपको आर्य बनावें। यदि हमारे मन में और हमारे आचरण में आर्यत्व नहीं तो हम वैदिक धर्म और आर्य समाज के विषय पर चाहे कितने ही व्याख्यान दें और उन व्याख्यानों में महर्षि दयानन्द का नाम लेकर कितनी ही तालियां बजवाएं, श्रोताओं पर हमारे शब्दों का कोई प्रभाव नहीं पड़ सकता। इसके विपरीत यदि हम मन, वाणी और कर्म से आर्य और सच्चे वैदिक धर्मी हैं तो हमारे दो चार सीधे-सादे शब्द भी लोगों के हृदयों में परिवर्तन उत्पन्न कर सकते हैं। जो व्यक्ति आर्यत्व से पूर्ण है वह यदि मौन भी रहे तो केवल उसके जीवन का दृष्टान्त दूसरों को आर्य बनाने के लिए काफी है।

जिन महानुभावों ने महर्षि के बोए हुए बीज को सींचकर वृक्ष के रूप पहुंचाने का श्रेय प्राप्त किया उनके जीवन की विशेषता यह थी कि वे क्रियात्मक धर्म के नमूने थे। वे सच्चे थे और निर्भय थे। लोभ या भय के कारण अपनी टेक को छोड़ना उनके स्वभाव के विरुद्ध था। किसी नगर या ग्राम में यदि एक भी ऐसा आर्य होता था तो आस-पास के लोग उसे बड़े आदर की दृष्टि से देखते थे। कभी कभी यह भी होता था कि लोग उसके विचारों से सर्वथा असहमत हों परन्तु फिर भी उस निर्भय, सच्चे और व्यवहार के खरे आर्य समाजी के जीवन से प्रभावित होकर लोग आर्य समाज की ओर झुक जाते थे।

इस समय भी ऐसे आर्य समाजियों से समाज सर्वथा शून्य नहीं है वे सर्वत्र पाए जाते हैं परन्तु विडम्बना यह है कि साधारण जनता और आर्य की विभाजक पहिचान प्रायशः खत्म हो गई है या हो रही है। साधारण जनता हमारे खिर अपने से ऊंचे नहीं समझती।

अतः हम आर्यजनों का कर्त्तव्य है कि हम आत्म निरीक्षण का अभ्यास प्रारम्भ करें, अपनी त्रुटियों को छोड़कर अपना जीवन उपदेशात्मक बनाएं। और महर्षि महर्षि दयानन्द के इस कथन को भी हृदयंगम रखें कि किसी का उपकार करने में समर्थ न होने पर अपकार न करना भी उपकार करना ही होता है।

अश्वमेध का अर्थ

सम्पादकीय(नवभा. २६मई)'नया अश्वमेध' में कहा गया है कि अश्वमेध यज्ञ राजा को चक्रवर्ती सम्राट घोषित किये जाने के लिए किया जाता था, न कि विश्व शान्ति के लिये; बिल्कुल सत्य है। लेकिन अश्वमेध का वास्तविक अर्थ घोड़े की बलि नहीं है यह सही है कि श्रीराम ने दिग्विजय के लिए श्याम वर्ण का घोड़ा छोड़ा था किन्तु यज्ञ की पूर्ण आहुति पर उसका वध (मेध) नहीं किया गया था। वाल्मीकि ने अपनी रामायण में इस कृत्य का कहीं वर्णन नहीं किया है।

अश्वमेध का अर्थ है:
राष्ट्रं वा अश्वमेधः
अन्न हि गौः
अग्निर्वा अश्वःआज्यं मेधः

५-शतपथ ब्राह्मण

'राजा न्याय धर्म से प्रजा का पालन करे, विद्यादि को देने, यजमान और अग्नि में घी आदि का होम अश्वमेध, अन्न, इन्द्रियां, किरण, पृथ्वी आदि को पवित्र रखना गोमेध, जब मनुष्य मर जाए तब उसका विधिपूर्वक दाह करना नरमेध है। —सत्यार्थप्रकाश पृ० २०२ एकादश समुल्लास

सुरेश/अकोला, भारतीय लोक प्रकाशन संस्थान, नई दिल्ली।

आरक्षण नीति और उच्चतम न्यायालय

१० मई १९८५ को सुप्रीम कोर्ट ने जो निर्णय दिया वह कर्नाटक सरकार की आरक्षण विषयक प्रार्थना से सम्बद्ध है। उक्त राज्य सरकार ने सुप्रीम कोर्ट से यह प्रार्थना की थी कि राज्य सरकार पिछड़े वर्गों के लिए आयोग बिठाना चाहती है और उस आयोग के मार्ग दर्शन के लिए कुछ सिद्धांत तय किए जायें। राज्य सरकार के विरुद्ध कुछ याचिकाएं न्यायालय में प्रस्तुत की गई थी। राज्य सरकार ने सरकारी सेवा में ६६ प्रतिशत और व्यावसायिक विद्यालयों में ६४ प्रतिशत आरक्षण का आदेश पिछड़े वर्गों आदि के लिए दिया था। फलतः सामान्य जन के लिए सरकारी सेवा में केवल ३४ प्रतिशत स्थान रह गए। इसी प्रकार व्यावसायिक विद्यालयों में केवल ३६ प्रतिशत स्थान रह गये। इन सरकारी आदेशों की वैधता का प्रश्न याचिकाओं में उठाया गया था। कर्नाटक सरकार ने सुप्रीम कोर्ट से यह प्रार्थना की थी कि आरक्षण से सम्बद्ध सभी कानूनी प्रश्नों पर निश्चित मत निर्धारित किया जाय जिससे कि निकट भविष्य में प्रस्तावित आयोग को उचित मार्ग दर्शन मिले।

१९५० से अब तक जो अदालती फैसले इस विषय पर हुए हैं उनमें से कुछ परस्पर विरोधी भी है। जो महत्वपूर्ण प्रश्न उपस्थित हुए हैं वे ये हैं—

(१) किस वर्ग को पिछड़े हुए वर्ग की व्याख्या में सम्मिलित किया जाय।

(२) आरक्षण कितने प्रतिशत तक वैध माना जाय।

(३) क्या आरक्षण की प्रणाली सदा के लिए कायम रखी जा सकती है। क्या इस प्रणाली में और आरक्षण के परिमाण में समय-समय पर और क्रमशः कमी करना आवश्यक है?

सुप्रीम कोर्ट ने अपने १० मई १९८५ के निर्णय में इन सभी प्रश्नों के विषय में संवैधानिक स्थिति के विश्लेषण का गम्भीर प्रयत्न किया। आरक्षण तीन प्रकार के वर्गों के लिये दिया जा सकता है।

(१) पिछड़ी जातियों के लिये

(२) पिछड़ी जन जातियों के लिये

(३) सामाजिक और आर्थिक दृष्टि से पिछड़े वर्गों के लिये

इनमें से प्रथम दो वर्गों की सूची तो राष्ट्रपति के आदेश से तय की जाती है जिसमें परिवर्तन संसद द्वारा निर्मित अधिनियम से किए जाते हैं किंतु तीसरे वर्ग के विषय में ऐसा कोई आदेश जारी करने का प्रावधान संविधान में नहीं है और न ही संविधान में पिछड़े वर्ग की परिभाषा की गई है। इस स्थिति में प्रश्न यह उठता है कि किन वर्गों को पिछड़ा वर्ग माना जाय? क्या इन वर्गों की सूची बनाने में आर्थिक पैमाने ध्यान में लिये जा सकते हैं? या केवल जाति के आधार पर वर्गीकरण किया जा सकता है?

१९५० से आज तक जो कानूनी विचार धारा रही है वह यह है कि केवल जाति या दरिद्रता ही पिछड़े वर्ग का माप नहीं है। मई १९८५ के निर्णय में सुप्रीम कोर्ट ने प्रश्न के कुछ पहलुओं को अधिक स्पष्ट किया है यद्यपि पांचों न्यायाधीशों ने पृथक निर्णय दिये हुए हैं। चीफ जस्टिस यशवंत विष्णु चन्द्रचूड़ ने यह मत व्यक्त किया है कि पिछड़ा वर्ग वही हो सकता है जो अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के समान हो किन्तु यह भी आवश्यक है कि वह वर्ग आर्थिक दृष्टि से भी पिछड़ा हुआ हो। उसके लिये राज्य सरकार को चाहिए कि वह आर्थिक सीमा रेखा को उद्घोषित करें।

जस्टिस वेंकट रमैया ने भी जाति एवं आर्थिक स्थिति दोनों की संयुक्त कसौटी तय की है।

जस्टिस ए. पी. सेन ने दरिद्रता पर कुछ अधिक बल दिया। उनके मतानुसार सरकारी सेवा में या विद्यालयों में आरक्षण का लाभ उन्हीं वर्गों को दिया जा सकता है जो कि दरिद्र हों और जाति की कसौटी केवल इस उद्देश्य के लिए उपयोग में ली जा सकती है कि क्या अमुक जाति अनुसूचित जाति या अनुसूचित जनजाति के समान है या नहीं?

जस्टिस देसाई ने इससे भी आगे बढ़कर आर्थिक स्थिति पर ही जोर दिया और यह मत व्यक्त किया कि दरिद्रता ही एकमात्र [illegible] कसौटी है। जस्टिस रेड्डी ने भी आर्थिक दरिद्रता को महत्व पूर्ण माना। उन्होंने सामाजिक दशा को गौण बताया और यह भी कहा कि सामाजिक स्थिति निर्धारित करने के लिये जाति, [illegible] [illegible], व्यवसाय [illegible] तत्वों को ध्यान में लिया जा सकता है। यद्यपि पांचों न्यायाधीशों ने अपनी अपनी शैली से कसौटियां बताई है फिर भी ऐसा प्रतीत होता है कि सभी न्यायाधीशों ने आर्थिक कसौटी को एक आवश्यक तत्व माना है, भविष्य में जब किसी वर्ग को पिछड़ा बताना है तो कानूनी दृष्टि से यह जरूरी हो गया है कि उस वर्ग के व्यक्तियों की आर्थिक स्थिति को भी ध्यान में लिया जाय। केवल जाति के आधार पर किसी वर्ग को आरक्षण का लाभ नहीं दिया जा सकता।

सुप्रीम कोर्ट ने इस प्रश्न की भी चर्चा की है कि आरक्षण कितने प्रतिशत तक किया जा सकता है। जस्टिस वेंकट रमैया ने इस प्रश्न पर बड़े विस्तार से लिखा और यह मत व्यक्त किया कि ५० प्रतिशत से अधिक आरक्षण अवैध होगा। जस्टिस ए. पी. सेन ने तो यह भी कहा कि आरक्षण के परिमाण की कुछ सीमाएं होती है और उन सार्वजनिक सेवाओं में आरक्षण होना ही नहीं चाहिए जिनमें व्यावसायिक, वैज्ञानिक अथवा अन्य विशेष प्रकार के ज्ञान या दक्षता अपेक्षित हों। ऐसी सेवाओं में स्थानों की पूर्ति केवल गुणवत्ता (मैरिट) के आधार पर ही की जानी चाहिए।

क्या आरक्षण की प्रणाली सदैव के लिए चलती रह सकती है? इस प्रश्न का उत्तर देते हुए जस्टिस देसाई ने कहा कि निश्चित अवधि होनी चाहिए। अन्यथा जो विशेषाधिकार अतीत के अन्याय को दूर करके संतुलन को पुनः स्थापित करने के लिए दिए गए हैं वे स्वयं स्थापित हित बन जायेंगे।

जस्टिस ए. पी. सेन ने केन्द्र सरकार को कुछ सुझाव दिया है कि पिछड़े वर्ग की गणना और समय समय पर सूची में सुधार करने के लिए एक स्थाई आयोग की नियुक्ति की जाय जो प्रत्येक राज्य में सामाजिक और आर्थिक सर्वेक्षण करता रहे।

एक तरफ पिछड़े वर्गों के उत्थान का प्रश्न है तो दूसरी ओर अन्य वर्गों के विकास का प्रश्न है। इन दो प्रश्नों के बीच संतुलन बनाये रखने का कठिन कार्य अन्त में न्यायालयों पर ही आ पड़ता है। हम यह कह सकते हैं कि सुप्रीम कोर्ट का निर्णय इस कार्य की कठिनता का द्योतक है।

पृष्ठ भूमि

एक अधिवक्ता के शब्दों में—

"भारतीय संविधान में यह स्वीकार किया गया है कि धर्म, जाति, लिंग तथा जन्म स्थान के आधार पर किसी भी व्यक्ति के प्रति भेदभाव न किया जाय। राज्य से सहायता प्राप्त करने वाले विद्यालयों की संविधान की धारा २९ (१) में यह आदेश दिया गया है कि किसी भी नागरिक को प्रवेश से इस आधार पर वंचित न रखा जाय कि वह अमुक धर्म, जाति या [illegible] का है। इस सामान्य सिद्धांत के अपवाद स्वरूप कुछ विशेष प्रावधान संविधान में किए गए हैं जिनके अन्तर्गत अनुसूचित जाति, अनुसूचित जन जाति और पिछड़े वर्ग के व्यक्तियों के लिए विद्यालयों में और सार्वजनिक सेवाओं में आरक्षण किया जा सकता है। इन व्यक्तियों के हक में कुछ प्रकार के [illegible] विशेषाधिकार भी सरकारी आदेशों से दिए जा सकते हैं विशेष तौर पर सरकारी सेवाओं में आरक्षण का स्पष्ट प्रावधान संविधान की धारा १६४ में किया गया है।

आरक्षण की अनुमति तो दे दी गई है किन्तु आरक्षण किस मात्रा में किस प्रकार से दिया जाय यह प्रश्न [illegible] और [illegible] की सरकारों पर छोड़ दिया गया है। स्पष्ट है कि आरक्षण का आदेश गम्भीर विचार के बाद दिया जाना चाहिए। कारण यह है कि संविधान यह [illegible] [illegible] है कि सभी नागरिक समान है। संरक्षण की इस प्रणाली से सामान्य सिद्धांत और व्यवहार के बीच संघर्ष होता है। इसी संघर्ष को सुलझाने का भार न्यायालयों पर है।"

—रघुनाथ [illegible]

सभ्यता और संस्कृति

आर्य संस्कृति की महत्ता

—श्री ओमप्रकाश त्यागी

सभ्यता को प्रायः संस्कृति का पर्यायवाची शब्द समझा जाता है। इसका अर्थ क्या है यह बात साधारण व्यक्ति नहीं जानता सभ्यता शब्द का प्रयोग किस भाव को प्रकट करने के लिए किया जाता है उसका स्पष्टीकरण भी कठिन प्रतीत होता है। कई लोग तो सभ्य व्यक्ति से केवल यही तात्पर्य लेते हैं कि वह सुन्दर वेष में रहता है, उत्तम भवनों में निवास करता है। घोड़ा, गाड़ी मोटर तथा अन्य सांसारिक वैभव के पदार्थों का सेवन करता है। जिस जाति को रेल, तार, नहरें, जहाज, वायुयान, बड़े-बड़े कल कारखाने, वैभव सम्पन्न पूंजी पति, बड़े-२ विद्यालय तथा विश्वविद्यालय, सिनेमा, थिएटर तथा विलासिता के सभी सामान प्राप्त हो वह जाति सभ्य जाति कहलाती है। तथा इन साधनों से हीन जाति को असभ्य माना जाता है? सारांश यह कि भौतिक बाह्याडम्बर को ही सभ्यता का नाम दिया जाता है। सभ्यता के इस संकुचित अर्थ को हम स्वीकार नहीं करते।

सभ्यता संस्कृति मानव की उपज है

सभ्यता, संस्कृति वस्तुतः मानव की ही उपज है। मनुष्य के अतिरिक्त अन्य कोई प्राणी इसका सपादन नहीं कर सकता। सभ्यता संस्कृति मानव जीवन की वह विशेषता है जिसके कारण मनुष्य को प्राणिमात्र पर शासनाधिकार सिद्ध होता है। इसी विशेषता के कारण उसको अशरफ-उल-मखलूकात अथवा श्रेष्ठतम सत्ता माना जाता है। पर सभ्यता संस्कृति का वास्तविक स्वरूप क्या है इसकी विवेचना आवश्यक प्रतीत होती है।

सभ्यता संस्कृति का वास्तविक स्वरूप

हमने ऊपर यह लिखा है कि संस्कृति मनुष्य की ही उपज है। मनुष्य की सारी शक्तियां इसके सम्पादन में लगती है। संस्कृति का सम्पादन मानव की सम्पूर्ण शक्तियों के विकास का बोधक समझना चाहिए। यदि उसके सम्पादन में समस्त शक्तियों का प्रयोग न हो ऐसी सभ्यता, संस्कृति एकांगी मानी जायगी और उसके द्वारा मानव जाति का उच्चगौरव सिद्ध न हो सकेगा मनुष्य की समस्त शक्तियों का स्रोत उसकी आत्मा है। आत्मा में भाव (Feeling) विचार (Thinking) और वृत्ति (Willing) तीनों व्यवहारों का समावेश रहता है। उसकी सभी शक्तियां इन तीनों व्यवहारों द्वारा ही प्रकाशित होती है। सभ्यता, संस्कृति अन्ततः इन तीनों व्यवहारों—भाव, विचार तथा वृत्ति के सम्मिश्रण का फल मानी जायगी।

भावों के विस्तार से ललित कलाएं—चित्रकारी, संगीत, नृत्य, भवन निर्माण विद्या, अभिनय धार्मिक जीवन आदि की प्राप्ति होती है। विचार शक्ति के विकास से साहित्य, दार्शनिक वा वैज्ञानिक ज्ञानका प्रादुर्भाव होता है वृत्ति शक्ति की सहायता से उपर्युक्त विचारों को मनुष्य कार्यरूप में परिणत करके बड़े बड़े महत्व के आयोजन जुटाकर शक्ति पराक्रम तथा साहस का परिचय देता है। पहाड़ों को काट देना, बड़ी २ नदियों को नहरों में परिणत कर देना, जंगलों को काटकर शहरों को बसा देना, बड़े-२ विशाल भवनों, स्मारकों तथा आश्चर्य जनक घटनाओं को मूर्त रूप दे देना यह सब वृत्ति शक्ति के खेल दिखाई देते है।

आत्मिक शक्तियों का समन्वयात्मक विकास ही वास्तविक संस्कृति

आत्मा की इन तीनों शक्तियों के समुचित एवं समन्वयात्मक विकास द्वारा जिस संस्कृति का प्रादुर्भाव होगा वही संसार को सुख, शान्ति और शाश्वत आनन्द दे सकती है। जातियों का प्राचीन इतिहास भी इसी सिद्धांत का समर्थन करता है। जिस जिस देश में मनुष्य समाज ने उन्नति की ओर पग बढ़ाया है वहीं उसके सामने यह प्रश्न उठा है कि उन्नति से क्या तात्पर्य लिया जावे। क्या शरीर को संवारना, उसे सुन्दर आभूषणों तथा वस्त्रों से ढकना अच्छा खाना पीना तथा सुखभोग करना यही सभ्यता और संस्कृति का सार है? रोमन लोग इसी को संस्कृति का सार मानते थे।

उठो नौजवानो

उठो नौजवानों समय आ गया है,
संभलने के दिन है संभलना पड़ेगा।
सकल राष्ट्र पर घोर संकट के छाए,
तूफान बनकर निकलना पड़ेगा।
खुले आम नित बम्ब विस्फोट होते;
बन परवाना दीपक पर जलना पड़ेगा।
गजब ढा रहे देश द्रोही यहां पर,
विष उगलने लगे सर कुचलना पड़ेगा।
छोड़ दो आस विश्वास इन जालिमों का
स्वयं तीव्र शूलों पर चलना पड़ेगा।

ले०—स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती

इसीलिए वे खाते थे, खूब खाते थे, वा खाकर उल्टी कर देते थे, पुनः खाने को तय्यार हो जाते थे। खाने-पीने की कला में कमाल कर चुके थे। परन्तु इस अति का फल उन्हें भोगना पड़ा। संसार की जीवन यात्रा में अन्य आवश्यक उपयोगी बातों की ओर ध्यान न देकर वे अन्त में पिछड़ गए। रोमन लोगों से अधिक तो यूनानियों की सभ्यता समन्वय युक्त थी। यूनानी सौन्दर्य से प्रेम करते थे। ललित कलाओं के पुजारी थे; विचार स्वातन्त्र्य के प्रेमी थे। परन्तु राष्ट्रविद्या में व्यक्ति और समाज का ठीक सम्बन्ध न समझकर वे समाज व्यवस्था को चिरकाल तक ठीक न रख सके। रोमन लोगों ने ५०० (पांच सौ) वर्ष तक अपना साम्राज्य स्थापित रखा परन्तु यूनानियों को बौद्धिक उन्नति का मार्ग छोड़कर भोग-विलास तथा आडम्बरों में इतना फंस गए कि अन्त में उनकी सभ्यता को भी अन्तिम नमस्कार कहकर चल देना पड़ा।

आर्य संस्कृति ही यूनान ने ग्रहण की थी

भारत वर्ष की संस्कृति ही वस्तुतः यूनान देश ने ग्रहण की थी परन्तु यूनानी सर्वांश में उसे ग्रहण न कर सके। भारत में दर्शन, विज्ञान तथा धर्म तीनों की उन्नति में आर्य लोग तत्पर रहते थे। तीनों को ही वे आत्मा की उपज समझते थे। दार्शनिक तथा वैज्ञानिक सिद्धांतों की सहायता से भारतवासी धर्म के हितों की रक्षा करके अपने जीवन को समन्वित विकास के मार्ग पर चलाते थे। आत्मा परमात्मा और प्रकृति तीनों की सत्ता को स्वीकार करके तीनों के परस्पर सम्बन्धों को समझकर कर्त्तव्यात्मक जीवन व्यतीत करते थे, प्रकृति और परमात्मा के बीच में आत्मा की विद्यमानता जब एक व्यक्ति या जाति स्वीकार कर लेती है तो उसको प्रकृति सम्बन्धी व्यवहार, और परमात्मा सम्बन्धी व्यवहार अर्थात भौतिक और आध्यात्मिक उन्नति दोनों को ही दृष्टि में रखना पड़ता है। इसीलिए भारत वर्ष में भारतीय समाज अभ्युदय या लौकिक उत्कर्ष तथा निःश्रेयस या मोक्ष की सिद्धि दोनों को अपना जीवन आदर्श बनाता था।

पाश्चात्य सभ्यता भोग प्रधान है

आधुनिक सभ्यता जो वस्तुतः युरोपीय सभ्यता वा पाश्चात्य सभ्यता के नाम से प्रसिद्ध है इसमें भी भौतिक उन्नति का अंश प्रधान है। आत्मा को यह सभ्यता स्वीकार नहीं करती। जर्मन देश का प्रसिद्ध दार्शनिक डाक्टर आईकन यूरोप की सभ्यता को Soul less Civilization आत्मा रहित संस्कृति का नाम देता है। बात ठीक भी है। आधुनिक सभ्यता के भीतर भौतिक तथा लौकिक उत्कर्ष का प्रसार अच्छी तरह मिलता है परन्तु आत्मा की मौलिक तथा भावात्मक शक्तियां दबी रहती हैं और उनके विकास का पूरा अवसर नहीं दिया जाता, पाश्चात्य सभ्यता को अपनी मशीनगनों, गोला बारूद तथा अणु आदि बमों का इतना अभिमान रहा है कि आत्मा के बल को वह पहचानती ही नहीं परन्तु मुख्यतः महर्षि दयानन्द द्वारा चलाए गए आर्य समाज के आन्दोलन से पाश्चात्य विचारकों की आंखें खुलीं और वे पाश्चात्य सभ्यता का दिवाला निकलता अनुभव करते रहे वा कर रहे हैं। वे इस मत के बन रहे हैं कि सभ्यता का बाह्याडम्बर तो ऊपर के बहुमूल्य

भारत के राजनैतिक पुनर्जागरण पर आर्य समाज का प्रभाव

—डा० डी. पी. श्रीवास्तव पी.एच.डी.

(२)

आधुनिक भारत के पुनर्जागरण में समाज सुधार के कार्यों का उल्लेखनीय महत्त्व रहा है। दयानन्द ने समाज सुधार के प्रति समुचित ध्यान दिया। वे एक महान और साहसी समाज सुधारक थे। उन्होंने कहा कि वंश परम्परागत जाति व्यवस्था जिसका आधार गुण न होकर जन्म है वेद-विहित नहीं है। उन्होंने चारों वर्णों को स्वीकार किया किन्तु ब्राह्मणवाद की कटु आलोचना की। उन्होंने जन्म के आधार पर ब्राह्मणों की सर्वोच्च स्थिति स्वीकार नहीं की। ब्राह्मणों ने मनुस्मृति को अपने अधिकारों और विशेष स्थिति का आधार बना रखा था। दयानन्द ने मनुस्मृति से ही यह सिद्ध किया कि उत्तम विद्या और स्वभाव वाला व्यक्ति ही ब्राह्मण कहलाने योग्य है। "जो शूद्र कुल में उत्पन्न हो के ब्राह्मण क्षत्रिय और वैश्य हो जाय वैसे ही जो ब्राह्मण क्षत्रिय और वैश्य कुल में उत्पन्न हुआ हो और उसके गुण कर्म स्वभाव शूद्र के सदृश हों तो वह शूद्र हो जाए। जातिगत और वर्णगत भेदभावों को दूर करके दयानन्द भारत में सामाजिक एकता की स्थापना करना चाहते थे: जिससे भारत राष्ट्रीय दृष्टि से एक हो सके।

भारतीय समाज में व्याप्त अछूत प्रथा की दयानन्द ने तीव्र भर्त्सना की और घोषणा की कि वेदों में इसको कहीं स्वीकार नहीं किया गया है। आर्य समाज ने अछूत और समाज के अन्य निम्न वर्गों के वेद पढ़ने के अधिकार को स्वीकार किया और उन्हें यज्ञोपवीत धारण करा के हिन्दू समाज का सम्मानपूर्ण सदस्य बनाने का प्रयत्न किया और इस प्रकार उन्हें वही अधिकार व स्थिति प्रदान की जो कि सवर्ण हिन्दुओं की थी। दयानन्द ने देखा कि अछूत लोग बड़ी संख्या में मुसलमान व ईसाई मतों को स्वीकार कर रहे हैं। अतएव भारत के समाज सुधार कार्य में अछूत प्रथा के निवारण की ओर उन्होंने पर्याप्त ध्यान दिया। इतना ही नहीं आर्य समाज ने अन्य धर्मों को स्वीकार करने वाले हिन्दुओं की शुद्धि करके उन्हें वापस हिन्दू समाज का सदस्य बनाया। यदि आर्य समाज शुद्धि कार्य नहीं करता तो १९४७ में देश के विभाजन के समय मुसलमान जनसंख्या और अधिक होती और सम्भवत: इस आधार पर भारत को और अधिक प्रदेश से हाथ धोना पड़ता। अछूतों और पिछड़े वर्गों को सामान्य हिन्दू समाज के स्तर पर लाना एक लोकतन्त्रवादी कार्य था जो आधुनिक भारत के राजनैतिक पुनर्जागरण में उल्लेखनीय है। अछूत प्रथा का विरोध करने में स्वामी दयानन्द कितने व्यवहारवादी और निष्ठावान थे, इसका परिचय उनके जीवन की निम्न घटना से मिलता है। "एक दिन सुखवासीलाल साध (जो अछूत थे) स्वामी जी के लिये कढ़ी और भात बनवा कर लाये और उन्होंने उसे खाया। इस पर ब्राह्मणों ने कहा कि आप भ्रष्ट हो गये जो साधो के घर का भोजन खा लिया। महाराज ने उत्तर दिया कि "भोजन दो प्रकार से भ्रष्ट होता है एक तो यदि किसी को दुःख देकर धन प्राप्त किया जावे और उससे अन्न आदि क्रय करके भोजन बनाया जावे दूसरे भोजन मलिन हो या उसमे कोई मलिन वस्तु गिर जावे। साधु लोगों का परिश्रम का पैसा है उससे प्राप्त किया हुआ भोजन उत्तम है।" (क्रमश:)

१. "सत्यार्थ प्रकाश" पृष्ठ ७७
२. घासीराम "महर्षि दयानन्द का जीवन-चरित्र" भाग १ पृष्ठ १३४

और भीतर की निस्सारता पर अवलम्बित रहता है मनुष्य समाज सुखी नहीं बन सकता।

देशवासियो सचेत हो जाओ

भारत वासियो को भी अब सचेत हो जाना चाहिए। उन्हें पाश्चात्य सभ्यता के खोखलेपन को दृष्टि से ओझल नहीं करना चाहिए।

संस्कृति एवं सभ्यता का सार यही है जिसका निरुपण प्राचीन आर्यों ने किया था और जिसे पुनर्जीवित करके प्रचारित व प्रसारित करने का बीड़ा महर्षि दयानन्द ने उठाया था और आर्य समाज अपने जन्मकाल से ही जिसे उठाए हुए है।

वह सार इस प्रकार है:—

(क) परार्थभाव के अधीन स्वार्थ भाव को रखना। जो व्यक्ति या समाज अकेला धन या वैभव का भोग करता है वह धन का नहीं पाप का भोग करता है।

(ख) बुद्धि की शक्ति के साथ हृदय की शक्तियों या नैतिक शक्तियों को भी विकसित करना। विज्ञान की चकाचौंध में मनुष्य की आत्मा को न भूल जाना। विज्ञान मानव के लिए है, मनुष्य को विज्ञान के अर्पण नहीं किया जा सकता।

(ग) सत्य, सौन्दर्य तथा सादा जीवन और उच्च विचारों से पूर्ण स्नेह और घनिष्ठ सम्बन्ध स्थापित रखना। आध्यात्मिक प्रयोजनों को भौतिक प्रयोजनों पर तरजीह (वरीयता) देना। सत्य को सदा प्रधान मानकर धन और वैभव को सदा उसकी रक्षा के लिए खर्च करना।

(घ) अधिकारों और कर्त्तव्यों की होड़ में कर्त्तव्यों पर अधिक जोर देना। कर्त्तव्यों के पालन करने में अधिकारों की प्राप्ति समझना और उनके पालन करने के बाद अपने अधिकारों पर डटे रहना।

(च) व्यक्ति और जाति के जीवन को यज्ञ स्वरूप मानना और दूसरों की भलाई और उत्कर्ष के लिए यत्न करते रहना।

उपसंहार

यदि सभ्यता एवं संस्कृति का उपर्युक्त सार स्वीकार कर लिया जाय तो संसार में न्याय, नियम, प्रेम, सेवा, सुख शान्ति तथा समन्वय का राज्य स्थापित हो जायगा और कलह क्लेश तथा अन्तर्जातीय विद्वेष सब मिट जावेंगे।

अमर शहीद ये दो लाड़ले

गुरु गोविन्दसिंह जी के बच्चों की धर्म पर कुर्बानी

लेखक—आचार्य सूर्यदेव शास्त्री

सूबा सरहिन्द ने गुरु गोविन्दसिंह के दिल पर चोट पहुँचाने के ख्याल से उनके दो छोटे बच्चों को मुसलमान बनाने का निश्चय किया। उन दिनों गुरु गोविन्दसिंह ने मुगल सेनाओं के छक्के छुड़ाए हुए थे और औरंगजेब ने उनकी बढ़ती हुई शक्ति और वीरता को देखकर झुंझलाकर उनकी गिरफ्तारी या हत्या का पंजाब के सभी सूबों के हाकिमों को आदेश दिया हुआ था। दैवयोग से युद्ध में से बिछुड़कर उनके दो छोटे बच्चे सूबा सरहिन्द के हाकिम के हत्थे चढ़ गए थे। उसने गुरु गोविन्दसिंह के दिल पर चोट पहुंचाने के विचार से उन दोनों छोटे बच्चों को मुसलमान बनाने का निश्चय किया।

भरे दरबार में जोरावरसिंह और फतेहसिंह नामक इन बच्चों से वजीरखां नामक सूबेदार ने कहा 'ऐ बच्चों! तुम दोनों को दीन इस्लाम की गोद में आना मन्जूर है या कत्ल होना।" दो तीन बार पूछने पर जोरावरसिंह ने कहा 'कत्ल होना मन्जूर है।" वजीरखां बोला (बच्चो) दीन इस्लाम में आकर सुख से दुनिया की मौज हासिल करो। अभी तो तुम्हारा फलने फूलने का समय है। मौत से भी इस्लाम धर्म को बुरा समझते हो। जरा सोचो। अपनी जिन्दगी को क्यों गंवा रहे हो?"

जोरावरसिंह शेर के बच्चों की तरह हंसकर बोले "हिन्दू धर्म से बढ़कर संसार में कोई धर्म नहीं है। अपने धर्म पर मरने से बढ़कर सुख देने वाला दुनिया में कोई कार्य नहीं। अपने धर्म पर मर मिटना तो हमारे कुल की रीति है। हम लोग इस क्षण भंगुर जिन्दगी की परवा नहीं करते मर मिट कर भी धर्म की रक्षा करना ही हमारा अन्तिम ध्येय है—चाहे तुम कत्ल करो या तुम्हारी जो मर्जी हो करो।" इसी तरह भाई फतेहसिंह की ओज भरी वाणी से शाही दरबार आश्चर्य चकित हो उठा। मनही मन लोग हैरान हो गए। दरबार के सभी सूबों ने शाबाशी दी पर अन्यायी शासक को यह कैसे सहन होता?

काजियों और मुल्लाओं की राय से इन्हें दीवार में चुन वाने की बात तय हुई। फौरन इसका इन्तजाम हो गया। एक गज की दूरी पर दोनों भाई दीवार में चुने जाने लगे। धर्मान्ध सूबेदार ने कहा "ऐ बालको! अभी भी तुम्हारे प्राण बच सकते हैं। कलमा पढ़कर इस्लाम धर्म स्वीकार करलो। मैं तुम्हें नेक सलाह देता हूं।"

वीर जोरावरसिंह ने गर्जना करते हुए कहा "अरे अत्याचारी न राधम! अब तू क्या बकता है मुझे तो आज खुशी है कि पंचम गुरु अर्जुनदेव और दादा गुरु तेग बहादुर के मिशन को पूरा करने के लिए मैं अपनी कुर्बानी कर रहा हूं। तेरे जैसे अत्याचारियों से यह धर्म मिटने का नहीं बल्कि हमारे खून से इसके पौधे सींचे जा रहे हैं। आत्मा अमर है इसे कौन मार सकता है?

दीवार शरीर को ढकती जा रही थी। छोटे भाई फतेहसिंह की गर्दन तक दीवार आ गई थी। वह पहले ही आंखों से ओझल हो जाने वाले थे। जोरावरसिंह ने देखा भाई फतेहसिंह पहले ही मृत्यु का आलिंगन कर रहा है। उनकी आंखों में आंसू आ गए। हत्यारे सूबेदार ने समझा कि "अब मुलजिम नम्र हो रहे हैं। मन ही मन प्रसन्न होकर बोला "जोरावर! अब भी बता दो तुम्हारी इच्छा क्या है? रोने से कुछ नहीं बनता।"

जोरावर ने गम्भीरता से उत्तर दिया—'आज मैं बड़ा अभागा हूं कि अपने छोटे भाई से पहले जन्म लिया, माता का दूध और मातृ भूमि का अन्न जल ग्रहण किया। धर्म की शिक्षा ली किन्तु धर्म की खातिर जीवन दान देने का सौभाग्य मेरे से पहले छोटे भाई फतेह को प्राप्त हो रहा है। धन्य है वह इसीलिए आज मुझे दुःख हो रहा है कि मैं भाई फतेह के बाद अपनी कुर्बानी कर रहा हूं

देखते, देखते दोनों बालक दीवारों में चुन दिए गए।

मा भूः कृतघ्नो मुधा

सारमेय सुतः बहिष्कृ दयानन्द राजे भवन् ।
तुच्छतां नात्मनो वेत्ति प्रकृति हि शुनस्तु सा ॥
स्वक्तवान् चौरय पूर्णं यो जीवने सदनं स्वकम् ।
दोष-दृष्टि मुंनौ तस्मिन् नियतं नर-सूकरः ॥
बालब्रोया यतो यस्य ब्रह्मचर्य व्रतं मुनेः ।
प्रशस्तंमुखं तं यो दूषयेत् स मलाशनः ॥
घूको द्रष्टुं न शक्नोति भास्करं किन्तु यो जनः ।
अम्मनो विमलाक्षोऽसौ विद्यादेव विभांकथम् ॥
किं ते नाऽन्धा न पश्यन्ति दयानन्दाख्य भास्वतः ।
दीधितीः सर्वतो व्याप्ता अज्ञानान्धतमोनुदः ॥
भर्त्सयामास यो भूपं वेश्यासक्तं सभागृहे ।
प्रलपंस्तं रमासक्तं कोऽयं मूढ़ो न लज्जते ॥
शुभ्रं यस्य यशः करोति वसुधामद्यापि निष्कल्मषां ।
वेदान् कुण्ठित गौरवानपि मुदा निन्ये प्रतिष्ठां पुनः ॥
आढ्यं राष्ट्रगतं समाजघटितं वैयक्तिकं योऽहरत्
पात्रं ते प्रणतेर्मुनिः स नियतं मा भूः कृतघ्नो मुधा ॥

—धर्मवीर शास्त्री एम. ए.

सम्पादक के नाम पत्र

आर्य समाज की संस्थाओं में धर्मशिक्षाध्यापक का स्थान

आर्य जगत् में स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती जी का डी०ए०वी० संस्थाओं के विषय पर लेख इस शताब्दी वर्ष में बड़ा सामयिक है। उन्होंने ठीक ही पूछा है कि तब के डी० ए० वी० कालेज और विद्यालय और आज की डी० ए० वी० संस्थाओं में कितना अन्तर है। यह भी उनका कहना सटीक है कि महात्मा जी के काल में डी० ए० वी० संस्थाओं में रुपयों की हमेशा तंगी रहती थी, मुझे पता चला है कि डी० ए० वी० संस्थाओं के अस्थायी धर्मशिक्षा अध्यापक अधिकांश में ग्रीष्मावकाश का वेतन नहीं पाते। प्राय: वे अस्थायी ही होते हैं, और समाज में पुरोहित का भी काम करते हैं। उपर्युक्त योग्यता और वृत्ति वाले धर्मशिक्षा अध्यापक भला ऐसी दशा में कैसे काम कर सकते हैं?

आर्य समाज को गौरव प्राप्त है कि महात्मा हंसराज, प्रिंसिपल दीवान चन्द, पं० गंगाप्रसाद उपाध्याय जैसे कुछ डी०ए०वी० संस्थाओं के प्रिंसिपल। मुख्याध्यापक शिक्षा और समाज दोनों के क्षेत्र में त्यागपूर्वक काम करते रहे, प्रचार कार्य किया और लेखन, कार्य को आगे बढ़ाया, पर अब कितने प्रिंसिपल मुख्याध्यापक अथवा धर्मशिक्षा अध्यापक उस भावना और योग्यता के हमारी शिक्षा संस्थाओं में काम कर रहे हैं? यह एक वेदनजनक प्रश्न है। उनका गौरव कितना है?

मेरे स्व० पिता पं० मंगलदत्त शर्मा (स्वामी विश्वेश्वरानन्द सरस्वती) ने अबोहर और कलकत्ता दोनों स्थानों पर धर्म शिक्षा अध्यापन का कार्य किया। उनकी पत्नी (मेरी माता जी) ने भी अबोहर में आर्य पुत्री पाठशाला स्थापित की थी। अबोहर के लोग, स्त्री-पुरुष, आर्य समाजी-गैर आर्य-समाजी आज भी उन दोनों को आदर से याद करते हैं। जीवनकाल में भी उनको बड़ा सम्मान मिला। कलकत्ता आर्य समाज के करोड़पति प्रधान स्व० चौ० छज्जूराम और सेठ दीपचन्द पोद्दार उनको आर्य कन्या विद्यालय में धर्मशिक्षा अध्यापक होने पर भी परिवार का अंग मानते थे और सम्मान देते थे। उनको निवास भोजन स्वयं यहीं से देते थे, वेतन भी। यही बात गुरुकुल वृन्दावन के उपदेशक विद्यालय के उनके आचार्य होने पर रही। मुझे भी १० मास तक जीवन में सीनियर कैम्ब्रिज तक शिक्षा देने वाले एक ऐसे आवासीय पब्लिक स्कूल (विकास विद्यालय रांची) में कार्य करने का अवसर मिला) जिसके संस्थापक ट्रस्टी एक सनातनी सेठ स्व० गोपाणी जी थे, मैं आज भी कृतज्ञता से उनका स्मरण इसलिए करता हूं कि उन्होंने मेरा स्थान और मर्यादा प्रिंसिपल के बराबर (ऊंची से कुछ ही कम) दे रखी थी। मुझे यूनीफार्म की पश्चिमी वेषभूषा से छूट मिली हुई थी। वहां मेरा विषय नैतिक शिक्षा संस्कृत और हिन्दी थी। रिटायर होने के बाद लगभग दो वर्ष तक फीजी में पं० विष्णुदेव मेमोरियल स्कूल में भी धर्मशिक्षा देने का मुझे अवसर मिला। वहां आर्य प्रतिनिधि सभा के अधिकारी प्रिंसिपल से उच्च स्थान धर्म शिक्षाध्यापक को (मुझे) देते थे। आज यदि उपयुक्त व्यक्तियों को डी० ए० वी० संस्थाओं में चयन हो, और आर्य समाज की संस्थाओं में उचित सम्मान मिले तो उससे संस्थाओं की विशेषता स्वत: स्पष्ट हो जायेगी। सादगी और निर्धन परन्तु प्रतिभावान छात्र-छात्राएं और शिक्षक अपने चरित्र और शिक्षा से आर्य समाज का नाम ऊंचा कर सकेंगे। धर्म शिक्षाध्यापक उस प्रक्रिया की धुरी होना चाहिए।

— मधुव्रत स्नातक

सिद्धांतों का दुरुपयोग न करें

गुरुकुल इन्द्र प्रस्थ फरीदाबाद से निकलने वाली पाक्षिक पत्रिका "मन्त्र-दृष्टा" के अप्रैल १९८५ के अंक में एक फलित ज्योतिष पत्रिका "ज्योतिष-समाचार" के सम्बन्ध में एक विज्ञापन प्रकाशित हुआ है जिसके अनुसार पत्रिका में राशि भविष्य, व्यापार भविष्य आदि फलित ज्योतिष काफी सरल तरीके से समझाया गया है पत्रिका जन साधारण के लिए उपयोगी बताई गई है। आश्चर्य की बात तो यह है कि जब गुरुकुल जैसी संस्थाएं ही अनार्ष सिद्धांतों का प्रचार करेंगी तो फिर आर्ष सिद्धांतों का प्रतिपादन कौन करेगा।

मैं आपकी पत्रिका के माध्यम से मन्त्र दृष्टा पाक्षिक से अपील करना चाहता हूं कि भविष्य में अनार्ष सिद्धांतों में विश्वास रखने वाले विज्ञापन प्रकाशित नहीं किए जावें।

—ज्ञानचन्द गोयल

उपमन्त्री आर्य युवक परिषद, मालव (मेवात)

साहित्य-समीक्षा

(चारों वेदों का उर्दू में अनुवाद)

आर्य समाज विश्व में वेदों का प्रचार यदि करना चाहता है तो संसार की सब भाषाओं में वेदों की व्याख्या प्रकाशित करनी होगी। केवल हिन्दी से काम नहीं चल सकता। दाराशिकोह ने जब अरबी भाषा में उपनिषदों का अनुवाद किया तब अरब देशों के लोगों ने उपनिषदों का महत्व समझा। आर्य समाज इस दिशा में सौ वर्ष उदासीन रहा है।

पं० आशुराम जी आर्य-पुरोहित ने चण्डीगढ़ में बैठकर चारों वेदों का उर्दू अनुवाद करके प्रकाशित करने का कार्य आरम्भ किया है। यजुर्वेद के उर्दू अनुवाद का एक भाग छप गया है।

अभी महर्षि नगर में विश्व-वैदिक विद्वत सम्मेलन हुआ। पांच सौ विद्वान पधारे। विचार हुआ कि विश्व में वेद-प्रचार कैसे हो। मेरा प्रस्ताव पास हुआ कि—"सर्वासु देशभाषासु भवेद व्याख्याधुना श्रुते:। संस्कृत भाषा में ही सम्मेलन हुआ। प्रस्ताव था सब देश भाषाओं में वेद की व्याख्या हो।

भारत वर्ष में कई हजार आर्य समाजें हैं प्रत्येक आर्य समाज का कर्त्तव्य है कि पं० आशुराम जी कृत चारों वेदों के उर्दू अनुवाद की जो-जो प्रति छपती जावे अपने आर्य समाज के लिए लेता जावे और जो ऋषिभक्त प्रकाशन में सहयोग देवें। इससे ही पण्डित आशुराम जी का साहस बन सकेगा। पं. आशुराम जी अन्य सब काम को छोड़कर केवल इस काम पर ही लग जावें, काम लम्बा है। मनुष्य का जीवन अल्प है। महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जीवन के अन्त में यह इच्छा प्रकट करके चले गए कि वेद की संसार की भाषाओं में व्याख्या हो महर्षि भक्तो! ऋषि-तर्पण करो यदि तुम ऋषिभक्त हो।

—आचार्य विश्वश्रवा: व्यास, वेदाचार्य, एम. ए.

नया प्रकाशन

१—वीर बैरागी (भाई परमानन्द)	८)
२—माता (भगवती जागरण) (श्री सत्यानन्द)	१०) सैं०
३—बाल-पथ प्रदीप (श्री रघुनाथ प्रसाद पाठक)	२)

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

महर्षि दयानन्द भवन, रामलीला मैदान, नई दिल्ली-१

देशान्तर प्रचार

मोरिशस में दो भारतीय विद्वान

रविवार दिनांक १२ मई सन् १९८५ को क्लेटकों वाक्वा के आर्य समाज भवन में भारत से पधारे हुए दो विभूतियों को सम्मानित किया गया था। वे दो महानुभाव थे डाक्टर गुप्त जी जो मोरिशस स्थित भारतीय दूतावास के प्रथम सचिव हैं और श्री हरिश्चन्द्र सूद जी जो चीनी उद्योग के क्षेत्र में विशेषज्ञ के रूप में कार्यरत हैं।

मौके पर आर्य सभा के प्रधान श्री मोहनलाल मोहित जी, आर्य सभा के उपप्रधान श्री लधुमया लाछाया जी आर्य रत्न और आर्य सभा के अनेक विद्वान और विदुषियां उपस्थित थे।

समाज मन्त्री श्री सत्यदेव प्रियतम जी ने कहा कि भारत से बहुत लोग या संसार की अनेक दिशाओं से अनेक महानुभाव यहां पर विशेषज्ञ के रूप में कार्य करने आते हैं पर बहुत कम ऐसे महानुभाव मिलेंगे जो सूद जी के समान साधारण लोगों के साथ इस प्रकार घुल-मिल कर रहते हैं।"

डाक्टर गुप्त जी ने अपने भाषण के दौरान कहा कि "प्रथम तो मैं मोरिशस आर्य सभा के प्रधान श्री मोहित जी को बधाई दूंगा क्योंकि आप ने त्याग तपस्या तथा लगन के साथ यहां पर भी आर्य समाज की निस्वार्थ सेवा की है और ५ लाख रुपया देकर महर्षि दयानन्द संस्थान कार्य चालू करने में द्रव्य का हाथ बढ़ाकर आपने आर्य समाज के प्रति अपनी आस्था बताई, आपका प्रारम्भ किया हुआ यह यज्ञ बढ़े यही हमारी कामना है।" फिर आपने महर्षि दयानन्द जी के बारे में कहा कि "वे भारत की एक महान् विभूति थे महात्मा गांधी के युग में भारत ने अंगड़ाई ली और महर्षि दयानन्द जी ने वेदों का भाष्य किया जिससे उन लोगों के अद्भुत साहस का परिचय मिला है।"

"दयानन्द जी ने सुन्दर ढंग से मुक्ति की, सेवा की व्याख्या की। धन्य है वे ऋषि जिन्होंने मनुष्य को मनुष्य के रूपमें देखा और उन्होंने विष को धारण करते हुए जगन्नाथ को सच्चाई के साथ जीने के लिए रास्ता बताया और उन्हें नया जीवन प्रदान किया।"

आपने आगे कहा—"यदि ईश्वर को जानना है, आत्मा को जानना है, तो अपने को भी जानना चाहिये। आर्य समाज के १० नियम वेदों का निष्कर्ष है।"

आपने महर्षि दयानन्द जी के गृह त्याग गुरु विरजानन्द जी के मिलन पर अच्छे उदाहरण प्रदान किये थे। आपका यह भाषण दयानन्द जी के कार्यों पर एक खुली पुस्तक के समान था।

श्री हरिश्चन्द्र सूद जी ने अपने धन्यवाद भाषण के दौरान कहा कि "मैं १९९२ में भी मोरिशस इसी कार्य के लिए परिवार सहित आया था और पिछले वर्ष भी आया और अब तो कुछ ही दिनों में भारत वापस होने वाला हूं। कार्य के बाद जो भी समय मुझे मिलता रहा आप लोगों के बीच में अपने आपको पाकर मैं धन्य समझता था। आप लोगों ने यहां पर आर्य समाज के लिए जो कार्य किया है वह संसार के इतिहास में सुवर्ण अक्षरों द्वारा अंकित रहेगा। शायद जितना त्याग और जितनी तपस्या आपके पूर्वजों ने बीते १५० वर्षों तक भारत से आकर यहां पर की है, अपनी भाषा और संस्कृति की रक्षा के लिए उतना उपकार का काम कम लोगों ने किया होगा। आप लोग उनके बताये गये सही मार्गों पर चलते हुए अपने-अपने घरों में अपनी भाषा में, अपने बच्चों से बात-चीत करने का पूरा प्रयत्न कीजियेगा।"

उसी अवसर पर श्रीमती सूद जी को भी सम्मानित किया गया था। आपने कहा कि जब मैं भारत से मोरिशस आने लगी तो मुझे ऐसा अनुभव होने लगा था कि मैं विदेश जा रही हूं पर मोरिशस आने के बाद जब मैंने आप लोगों से भेंट की, बातें कीं, आप बहनों का पहनावा देखा और आप लोगों को हमारी भारतीय भाषाओं में बातें करते देखा तो ऐसा लगा कि मैं भारत ही में हूं। अब तो मैं यह कहूंगी कि यह टापू एक लघु भारत ही है। आप लोग यहां पर भारत ही की जनता के समान मन्दिरों में वेद मन्त्रों का पाठ करती है यज्ञ-सत्संग किया करती है, आशा है आप मिल-जुलकर इसी प्रकार महर्षि दयानन्द जी के सन्देश को आगे बढ़ायेंगे।"

अन्त में सभा के अध्यक्ष श्री महादेव रितु जी ने सबको धन्यवाद समर्पण किया।

टापू की अनेक दिशाओं के हमारे आर्य समाजी भाई परिवार सहित इस कार्य में विराजे थे। दोनों विद्वानों के भाषण प्रभावशाली थे।

—धर्मवीर धूरा
आर्य समाज वाक्वा (मोरीशस)

धर्मरक्षा महाभियान

शुद्धि

पलपल कोदुल ग्राम (तमिलनाडु) में १-२-८५ को श्री नारायण स्वामी जी (मद्रास) आर्य महोपदेशक के पौरोहित्य में ४ ईसाई नवयुवक वैदिक धर्म में दीक्षित हुए और उनके हिन्दू नाम रखे गए। उन्हें यज्ञोपवीत दिए गए। इस अवसर पर श्री शास्त्री जी तथा श्री रामनचन्द्रन जी के वैदिकधर्म की महत्ता पर प्रवचन भी हुए।

इस स्थान पर ईसाई पादरियों द्वारा हरिजनों पर ईसाइयतग्रहण करने के लिए जोर डाला जा रहा है परन्तु हरिजन बन्धु संयुक्त रूप से ईसाइयों के इस दबाव का निराकरण कर रहे हैं।

उन्होंने अपने ग्राम के एक स्कूल का निर्माण करने का आयोजन किया है और निर्माण कार्य हो रहा है। श्री नारायण स्वामी जी ने कार्यार्थ उन्हें १००) की सहायता दी है।

श्री नारायण स्वामी जी तथा श्री रामचन्द्रन की प्रचार यात्राओं के दौरान ६५ ईसाइयों तथा २ मुस्लिमों की शुद्धियां हुईं। इनमें १ मुस्लिम कुमारी शकीला बेगम(२१ वर्ष) का हिन्दू नाम वासु की रखा रखा गया और उसका विवाह सत्यमूर्ति नामक एक नवयुवक से करा दिया गया।

आर्य समाजों की गतिविधियां

सामाजिक बुराइयों को समाप्त करने हेतु 'शराब तथा दहेज बन्दी आन्दोलन के लिए सहयोग की अपील'

शराब के बढ़ते हुए प्रचार तथा उसके सेवन करने से सामाजिक बुराईयां बढ़ रही हैं। जहां शराब खरीदने पर मेहनत से कमाया गया धन खर्च होता है, वहां शराब के सेवन करने पर स्वास्थ्य तथा चरित्र नष्ट होता है। अतः गत वर्ष से सभा की ओर से शराब बन्दी आन्दोलन चलाया जा रहा है। ग्राम बालावास जिला हिसार, ग्राम माहरी जिला सोनीपत, ग्राम सिहोटी जिला रोहतक, में ग्राम वासियों ने संघर्ष करके शराब के ठेके बन्द करवा दिये हैं। कई अन्य ग्रामों में भी संघर्ष जारी है।

आर्य समाज सदा ही सामाजिक बुराईयों को समाप्त कराने में अग्रणी रहा है। अतः हरियाणा के आर्य समाजों के कार्यकर्ताओं से निवेदन है कि जिन ग्राम पंचायतों की ओर से शराब के ठेके बन्द करने के लिए प्रस्ताव सरकार को भेजे गये थे, परन्तु फिर भी वहां ग्रामीण जनता की इच्छा के विरुद्ध ठेके खोल दिए हैं, वहां धरना देकर शराब की बिक्री बन्द करावें तथा अपने निकट के ग्रामों की सर्वखाप पंचायतें बुलाकर शराब पीने तथा दहेज लेने-देने पर पाबन्दी लगवाने का कार्यक्रम बनवाने का यत्न करें। सितम्बर मास से पूर्व पंचायतों से ठेके बन्द करवाने के प्रस्ताव भी सरकार को भिजवा दें।

अब ग्रामीण जनता में दोनों बुराइयों को समाप्त करने के लिए चेतना आ रही है। किसान, मजदूर तथा महिलाएं भी शराब के ठेकों को बन्द करवाने के लिए यत्नशील हैं।

अतः इस वातावरण के अनुसार आर्यसमाज के कार्यकर्ताओं को शराब तथा दहेज बन्दी आन्दोलन को गतिशील करने में पूरी शक्ति के साथ जुट जाना चाहिए। सभा की ओर से प्रचार के लिए मांग आने पर भजनमंडलियों का कार्यक्रम बनाया जायेगा।

निवेदक।

ओमानन्द सरस्वती	शेरसिंह	सत्यवीर शास्त्री	रामकृष्ण
प्रधान	प्रधान	मन्त्री	कोषाध्यक्ष
परोपकारिणी सभा	आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा, सिद्धांती भवन,		
अजमेर (राजस्थान)	दयानन्द मठ, गोहाना मार्ग, रोहतक-१२४००१		

उत्सव

"१८ मई सायं ७ बजे आर्य समाज हडसन लाईन में आर्य कुमार सभा, किंग्जवे का वार्षिक उत्सव श्री सरदारी लाल वर्मा पूर्व प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा की अध्यक्षता में मनाया गया। अध्यक्ष महोदय ने आर्य कुमार सभा के संगठन को और दृढ़ करने पर जोर दिया और सभा के सस्ते वैदिक साहित्य की प्रशंसा की, श्री खरैती लाल भाटिया मन्त्री आर्य समाज हनुमान रोड ने आत्मा के विकास से ही मानव की उन्नति निर्भर है, पर अपने विचार प्रकट किए।

श्री देवेन्द्र गुप्त (स्वागताध्यक्ष) ने सभा की वार्षिक रिपोर्ट पढ़ी इसके पश्चात डा० सतीशचन्द्र कुमोजा को उनकी कार्य कुशलता के लिए सम्मानित किया गया। डा० साहिब के करकमलों से पारितोषिक बांटे गए। डा. साहिब ने कहा कि शिक्षा संस्थानों को शिक्षा के साथ-साथ लघु उद्योगों की शिक्षा भी देनी चाहिए। इसके पूर्व २४ अप्रैल सभा के स्थापना दिवस पर सभा प्रधान श्री परिक्षित सहगल द्वारा ध्वजारोहण किया गया। इस अवसर पर डा० धर्मपाल मन्त्री आ. प्र. सभा ने मनुर्भव पर भाषण दिया और कहा कि आर्यकुमार सभा का प्रकाशन विभाग अति उत्तम है। २१ अप्रैल से १७ मई तक २४ दिन भिन्न-भिन्न स्थानों पर वेदप्रचार होता रहा और पं. सत्यकाम वेदालंकार के प्रवचन होते रहे।"

—उमेश कुमार बतरा, मन्त्री

—आर्य समाज नैनीताल का एक सौ ग्यारह वर्षीय वार्षिकोत्सव २० मई से २७ मई तक मनाया गया। उत्सव में अन्य विशेष कार्यक्रमों के अतिरिक्त नैनीताल के उन वृद्ध जनों का सम्मान किया गया, जिनकी आयु ८० वर्ष से ऊपर थी।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा का वार्षिक अधिवेशन

प्रो० शेरसिंह प्रधान, प्रो० सत्यवीर शास्त्री मन्त्री तथा ला० रामकिशन जी कोषाध्यक्ष सर्वसम्मति से निर्वाचित।

सभा का आगामी वर्ष के लिए वेदप्रचारादि विभाग के लिए २०, ११, १५० रुपये का बजट स्वीकार।

रोहतक—१९ मई ८५ आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा का वार्षिक अधिवेशन ११ बजे दयानन्द मठ, रोहतक की यज्ञशाला में बड़े उत्साह तथा शान्ति के वातावरण में सम्पन्न हुआ। हरियाणा के कोने-कोने से भारी संख्या में प्रतिनिधि सम्मिलित हुए। गतवर्ष दिवंगत हुए आर्यकार्यकर्ताओं को भाव-भीनी श्रद्धांजलि दी गई और उग्रवादी आतंकवादियों की हरियाणा में भी बम विस्फोट करने के लिए घोर निन्दा की गई। सरकार से अनुरोध किया गया कि वह उग्रवाद को सख्ती से कुचल देवें।

हरियाणा में शराब तथा दहेज विरोधी आन्दोलन चलाने का कार्यक्रम बनाया गया अन्य एक प्रस्ताव द्वारा इलाहाबाद उच्च न्यायालय के न्यायाधीश जी द्वारा इतिहास में पहली बार संस्कृत भाषा में अपना निर्णय लिखने पर बधाई दी। आगामी वर्ष १९८५-८६ के लिए सभा के विभिन्न वेदप्रचार आदि विभागों का २०, ११, ५० रुपये का बजट स्वीकार किया गया।

आगामी वर्ष के लिए प्रो शेरसिंह जी को सर्वसम्मति से प्रधान चुना गया और उन्हें ही शेष पदाधिकारियों अन्तरंग सदस्यों आदि को मनोनीत करने का पूर्ण अधिकार दिया गया। उन्होंने प्रदत्त अधिकार के अनुसार शेष अधिकारियों को निम्न प्रकार मनोनीत किया :—

प्रधान—प्रो. शेरसिंह २. उपप्रधान महाशय भरतसिंह वानप्रस्थी दयानन्द मठ रोहतक। ३. बहिन सुभाषिणी देवी आचार्या कन्या गुरुकुल खानपुर (जिला सोनीपत), श्री कन्हैयालाल जी महता बल्लबगढ़ (फरीदाबाद) प्रधान दयानन्द पब्लिक शिक्षण संस्थाएं फरीदाबाद। ५. मन्त्री प्रो. सत्यवीर शास्त्री डालावास जिला भिवानी। ६. उपमन्त्री आचार्य सुदर्शनदेव हरिसिंह कालोनी; रोहतक (अध्यक्ष संस्कृत विभाग राजकीय महाविद्यालय नलवा जिला हिसार। ७. प्रो. सत्यवीर विद्यालंकार निवाड़, जिला सोनीपत। डाबूराम किसान कालेज हिसार। ८. कोषाध्यक्ष श्री लाला रामकिशन प्रधान आर्य समाज बहादुरगढ़ मंडी रोहतक। ९. पुस्तकाध्यक्ष आचार्य यशपाल जी आर्य हिन्दी महाविद्यालय चरखीदादरी, जिला भिवानी।

प्रो. शेरसिंह ने तीसरी बार सर्वसम्मति से चुने जाने पर सभी प्रतिनिधि महानुभावों के प्रति आभार प्रकट करते हुए विश्वास दिलाया कि वे सभी के सहयोग से हरियाणा में आर्य समाज के संगठन को और अधिक सुदृढ़ करने का पूरा यत्न करेंगे। आपने आर्य समाजों को अपील करते हुए प्रदेश में वैदिक धर्म के प्रचार के प्रसार कार्य में सहयोग करने का अनुरोध किया।

—केदारसिंह आर्य कार्यालयाध्यक्ष

आर्य समाज मोती बाग में वेद प्रचार

आर्य समाज मोती बाग के तत्वावधान में दिनांक १-५-८५ से ४-५-८५ तक पूरे इलाके में जिसमें साउथ मोती बाग, मोती बाग (१), शास्त्री निकेतन; मोती बाग, नानक पुरा, आनन्द निकेतन, शान्ति निकेतन और सत्य निकेतन शामिल हैं वेद प्रचार हुआ।

श्री आशानन्द जी आर्य भजनोपदेशक द्वारा मैजिक लैंटर्न से प्रचार किया गया जिसकी हजारों नर-नारियों ने प्रशंसा की और विशेषतः बच्चों पर बड़ा अच्छा प्रभाव पड़ा। ५-५-८५ को पूर्ण आहुति अवसर पर भव्य समारोह हुआ, जिसमें सर्वश्री लाला रामगोपाल जी शालवाले, श्याम सुन्दर स्नातक यशपाल जी सुधान्शु, तथा सूटानी जी ने अपने विचार प्रकट किये लोगों ने श्री भूमानसिंह राघव जी के भजन बड़े प्यार से सुने, डी. ए. वी. स्कूल सैक्टर-५ रामाकृष्ण पुरम के छात्र-छात्राओं ने सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया। कई गणमान्य व्यक्तियों को सामाजिक कार्य करने के लिये प्रोत्साहित किया गया। ऋषि लंगर में ५००-६०० लोगों ने भाग लिया जिसमें अधिकतर पिछड़े वर्ग के लोग विशेषतः आमन्त्रित थे सब ने एक स्वर में सम्पूर्ण कार्यक्रम की प्रशंसा की। इस धार्मिक वातावरण में सबके और श्री सतीश कालड़ा जी (शान्ति निकेतन) ने रुपये १००) प्रदान किये और आगे समय में ऐसे कार्यक्रम आयोजित करने की प्रेरणा दी।

—[illegible], मन्त्री

डी.ए.वी. शताब्दी का प्रथम समारोह लाहौर में

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के वार्षिक अधिवेशन में सुझाव

प्रो० वेदव्यास जी पुन. प्रधान निर्वाचित कालिज कमेटी का १२॥ करोड़ का बजट पारित

नई दिल्ली, २६ मई। देशभर से आए तीन सौ प्रतिनिधियों की उपस्थिति में आर्य समाज अनारकली, मन्दिर मार्ग में आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा का वार्षिक अधिवेशन अत्यन्त उत्साहपूर्ण वातावरण में सम्पन्न हुआ।

निर्विरोध चुनाव की अपनी परम्परा का पालन करते हुए इस वर्ष भी प्रो. वेदव्यास जी सर्व सम्मति से प्रधान चुने गए और कार्यकारिणी के निर्माण का अधिकार उन्हें दिया गया। अन्य सभाओं में चुनावों को लेकर जिस प्रकार अखाड़े बाजी होती है, उसका यहां सर्वथा अभाव देखकर जो प्रतिनिधि पहली बार सभा के अधिवेशन में आए थे, वे बड़े चकित हुए।

ट्यूस्टन (अमेरिका) से आए श्री रामचन्द्र महाजन और मोरीशस से आए श्री हरिश्चन्द्र सूद का माल्यार्पण द्वारा स्वागत किया गया। विभिन्न प्रतिनिधियो ने आर्य समाज के गत वर्ष के और आगामी वर्षों के कार्यकलाप के सम्बन्ध मे अपने आलोचनात्मक और रचनात्मक सुझाव रखे। जब श्री नारायणदास ग्रोवर ने पूर्वांचल में प्रादेशिक सभा और डी.ए वी. कमेटी द्वारा किये जा रहे शानदार कार्य का विवरण दिया तो प्रतिनिधिगण उत्साह से भर उठे।

सभा का वार्षिक विवरण और बजट प्रस्तुत किया गया, जो स्वीकृत हुआ। उससे पहले दिन डी.ए.वी. कालिज कमेटी की बैठक में सब प्रिंसिपलों की उपस्थिति मे कमेटी का साढ़े बारह करोड़ रुपये का बजट पारित हुआ। कालिज कमेटी के प्रधान प्रो० वेदव्यास जी ने डी.ए.वी. शताब्दी के उपलक्ष्य में किये जाने वाले कार्यों पर विस्तार से प्रकाश डाला। हरियाणा में दयानन्द अकादमी, होशियारपुर में शोध सस्थान और ग्राम विकाश तथा पिछड़े वर्गों की उन्नति के लिए अपनाई गई बहुत सी परियोजनाओ से डी०ए०वी० आन्दोलन की व्यापकता का पता लगता था।

डी.ए.वी. शताब्दी के सम्बन्ध में आर्यजगत् के सम्पादक श्री क्षितीश वेदालंकार ने जब सुझाव दिया कि शताब्दी सम्बन्धी प्रथम समारोह लाहौर में उसी स्थान पर होना चाहिए जहां अब से सौ वर्ष पूर्व डी.ए.वी. स्कूल की स्थापना हुई थी, तब सब प्रतिनिधि हर्ष विभोर हो उठे। देर तक करतल ध्वनि करके तथा वैदिक धर्म की जय के नारे लगाकर प्रतिनिधियों ने इस सुझाव का स्वागत किया।

सभा के इस वार्षिक अधिवेशन को सम्बोधित करने वालों में प्रमुख व्यक्ति हीरो साइकिल्स उद्योग, लुधियाना के मालिक श्री सत्यानन्द मुंजाल, सार्वदेशिक सभा के कोषाध्यक्ष श्री सोमनाथ मरवाह, ट्यूस्टन से आए श्री रामचन्द्र महाजन, नैतिक शिक्षा परामर्श दाता प्रो० रत्नसिंह तथा अन्य महानुभाव थे। शास्त्रार्थ महारथी श्री अमरस्वामी जी महाराज ने आशीर्वाद के रूप में प्रादेशिक सभा के कार्य में निरन्तर गतिशील बने रहने की प्रेरणा दी। सभामन्त्री श्री रामनाथ सहगल, डी ए वी. समिति के संगठन सचिव श्री दरबारी लाल तथा प्रो. वेदव्यास जी की कर्मठता की प्रशंसा करते हुए नई आशा और नया उत्साह लेकर प्रतिनिधि गण विदा हुए।

वैदिक संस्कार

श्री आचार्य शम्भुनाथ आर्य की अध्यक्षता में श्री आनन्द बिहारी के पुत्र चि० अजय का वैदिक रीति से उपनयन संस्कार आर्यसमाज मन्दिर बक्सर में सम्पन्न हुआ जिसका उपस्थित लोगों पर बड़ा अच्छा प्रभाव पड़ा।

आर्यभिक्षु जी वानप्रस्थ
पुस्तकाध्यक्ष
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
नई दिल्ली

चित्र मे बाये से दायें श्री सुधीर सचदेव श्रीमती पुष्पा सचदेवा, मन्त्री विजयभूषण आर्य श्रीमती प्रेमशील महेन्द्र मन्त्राणी श्रीमती पद्मा तलवाड़ आर्य महिला सभा दिल्ली

कोल इण्डिया के सहयोग से दयानन्द एंग्लो वैदिक कालेज रांची में प्रो० वेदव्यास जी द्वारा आधार शिला का शिलान्यास

प्रवेश सूचना

महर्षि दयानन्द ट्रस्ट टंकारा में प्रवेश "अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय" में नये सत्र के लिए प्रवेश एक जुलाई १९८५ से प्रारम्भ हो रहा है प्रवेश की अन्तिम तिथि १५ जुलाई ८५ है प्रशिक्षण समय मे (जो कि चार वर्ष का है) ट्रस्ट की ओर से उपदेशक विद्यार्थियों को आवास, भोजन, वस्त्र व पुस्तकें और अन्य आवश्यक वस्तुएं निःशुल्क दी जाएगी। प्रवेशार्थी की आयु १६ से २४ वर्ष और कम से कम मैट्रिक (हाई स्कूल) उत्तीर्ण होना चाहिए नियमावली ट्रस्ट से निःशुल्क मंगा सकते हैं, अनुशासन का पालन करना अनिवार्य होगा।

रजि० नं० डी० (सी०) १७८ सार्वदेशिक साप्ताहिक (१६-६-१९८५) बिना टिकट भेजने का लाइसेंस नं० U ९३
R. N. 626/57 Licenssd to post withoutprepayment, License No. 93 Post in D.P.S.O. on 14-6-85

कुछ लोगों द्वारा मानोकलां की शांति भंग करने का कुचक्र

जौनपुर, २८ मई। खेत सराय थानान्तर्गत ग्राम मानीकलां निवासी रामसमुझ का भाई बोखई पुत्र बाबूनन्दन उम्र ९ वर्ष बहुत दिनों से डा. नजीर अहमद के यहां घरेलू काम करता था। ५ दिन पूर्व हरिजनों को पता चला कि उस बालक को मस्जिद में नमाज पढ़ाई जाती है। इस पर बालक के अभिभावक ने डाक्टर के घर जाकर अपने अबोध बालक की मांग की। इस पर उनको जबाव मिला कि हमारे मजहब मे जो आता है, तो उसे जाने नहीं दिया जाता। बालक बड़ी मस्जिद के इमाम के सरक्षण मे है। अधिक मिन्नत करने पर हरिजनों को धमकी मिलने लगी कि सभी लोग चले जाइए, अन्यथा परिणाम बुरे होंगे।

मामला अधिक तूल पकड़ता देखकर उस बालक को कल डाक्टर साहब ने एक रिश्तेदार की मोटर साइकिल पर बैठाकर कही अन्यत्र भेज दिया।

आज ग्राम के सैकड़ों हरिजन उपरोक्त फरियाद को लेकर जिला अधिकारी के दरबार में इकट्ठा हुए लेकिन जिलाधिकारी साहब के वाराणसी मीटिंग में चले जाने के कारण परगनाधिकारी साहब श्री वेणी प्रसाद के यहां अपनी फरियाद लेकर गए। हरिजनों ने थानाध्यक्ष को भी उपरोक्त बातों की जानकारी दे दी हैं।

उपरोक्त बातो की जानकारी जब एक पत्रकार ने एक उच्च पुलिस अधिकारी को दी तो बात पूरी भी नहीं हुई होगी कि तब तक उत्तर फोन पर मिल गया कि इस व्यक्तिगत मामले में मैं क्या कर सकता हूं ?

बैठे बिठाए कुछ समाज विरोधी लोग ऐसे ही कुछ न कुछ रचना करके शांति व्यवस्था बिगाड़ने का प्रयास करते रहते हैं। प्रशासन को बड़ी ही सूझ बूझ से इस मामले को हल कराना चाहिए। (तरुणमित्र २९-५-८५)

निर्वाचन

आर्य समाज; अनाज मण्डी, शाहदरा, दिल्ली-३२ के २९-५-८५ को सम्पन्न वार्षिक अधिवेशन मे वर्ष १९८५-८६ के लिये निम्नलिखित पदाधिकारी निर्विरोध चुने गये :—

प्रधान — श्री बनवारीलाल

उपप्रधान—सर्वश्री निरन्जनलाल गौतम, मेधाकर आर्य, रतनलाल गर्ग

मन्त्री—श्री श्रद्धानन्द

उपमन्त्री—श्री ज्ञान प्रकाश

कोषाध्यक्ष—श्री हरपालसिंह

प्रचारमन्त्री — श्री निष्ठाकर आर्य

पुस्तकाध्यक्ष—श्री योगेश्वर शर्मा

—श्रद्धानन्द मन्त्री

उत्सव

—महर्षि दयानन्द मेला समिति मथुरा की ओर से ६-६-८५ से १०-६-८५ तक एक विशाल मेले का आयोजन किया गया।

—आर्य समाज विद्युतगृह कासिमपुर का वार्षिकोत्सव १२से १४ ५-८५ तक मनाया गया।

दिल्ली के स्थानीय विक्रेताः—

(१) मै० इन्द्रप्रस्थ आयुर्वेदिक स्टोर, ३७७ चांदनी चौक, (२) मै० ओम् आयुर्वेदिक एण्ड जनरल स्टोर, सुभाष बाजार, कोटला मुबारकपुर (३) मै० गोपाल कृष्ण भजनामल चड्ढा, मेन बाजार पहाड़ गंज (४) मै० शर्मा आयुर्वेदिक फार्मेसी, गडोदिया रोड, आनन्द पर्वत (५) मै० प्रभात कैमिकल क०, गली बताशा, खारी बावली (६) मै० ईश्वर दास किसन लाल, मेन बाजार मोती नगर (७) श्री वैद्य भीमसेन शास्त्री. ५३७ लाजपतराय मार्किट (८) दि-सुपर बाजार, कनाट सर्कस, (९) श्री वैद्य मदन लाल ११-शकर मार्किट, दिल्ली।

शाखा कार्यालयः —
६३, गली राजा केदार नाथ,
चावड़ी बाजार, दिल्ली-६
फोन नं॰ २६९८३८

सार्वदेशिक प्रेस, दरियागंज नई दिल्ली में मुद्रित तथा रघुनाथप्रसाद पाठक मुद्रक और प्रकाशक के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, महर्षि दयानन्द भवन, नई दिल्ली-२ से प्रकाशित।

ओ३म्

सार्वदेशिक

साप्ताहिक

सृष्टिसम्वत् १९७२९४९०८६]
वर्ष २० अंक २१]

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

आषाढ़ शु' ११ सं० २०४२ रविवार ३० जून १९८५

दयानन्दाब्द १६१ दूरभाष : ३७४७७१
वार्षिक मूल्य २०) एक प्रति ५० पैसे

अमेरिका में क्या हुआ ?

श्री राजीव गांधी के प्रेस सम्मेलन में उग्रवादियों की शरारत

वाशिंगटन के प्रेस क्लब में प्रधान मन्त्री राजीव गांधी ने खालिस्तान के सम्बन्ध में जो संकेत किया इससे पाकिस्तान का क्रोधित होना स्वाभाविक था। खालिस्तानी भी कुछ कम लज्जित नहीं हो रहे। बहुत कम लोगों को पता है कि प्रेस क्लब में जिन सिख सज्जनों को देखकर श्री राजीव गांधी ने यह रिमार्क किया वह खालिस्तानी गंगासिंह ढिल्लो और इसके तीन चार साथी थे। इन लोगों ने केसरी रंग की पगड़ियां पहनी हुई थी और इनके साथ लोक सभा का एक सदस्य जेम्स केरमीन था। मिस्टर कोरमीन इन दिनों अमेरिकन कांग्रेस में खालिस्तानियों का सबसे बड़ा ढिंढोरची बना हुआ है।

जब श्री गांधी अमेरिका पहुंचे न थे तो इस बात का बड़ा खतरा अनुभव किया जा रहा था कि अमेरिका के कुछ सिख आपके विरुद्ध प्रदर्शन करेंगे। वास्तव में इनकी ओर से घोषणा भी हो गई थी कि वह जहां भी जायेंगे इनका पीछा किया जायेगा लेकिन ऐसा नजर आता है कि अमेरिकन सरकार ने इन खालिस्तानियों पर स्पष्ट करदिया कि यदि अमेरिका में रहना है तो मनुष्यों की तरह रहना होगा। ठीक है कि आज ये लोग अमेरिकन नागरिक बन गये हैं इसलिये इन्हें वह सब सुविधाएं और वैधानिक सुरक्षाएं प्राप्त है जो अमेरिकन नागरिकों को हैं।

लेकिन इसके विपरीत इनको बता दिया गया था कि अमेरिकन अधिकारियों के पास दर्जनों ऐसे अधिकार हैं कि यदि वे चाहें तो इनका जीना हराम कर सकते हैं। ऐसा दिखाई देताहै कि इस धमकी का प्रभाव हुआ और इन तत्ते खालिस्तानियों ने अपने इरादों पर विचार किया और उत्तम यह ही समझा कि राजीव का पीछा न किया जावे। इन्हें यह भी बता दिया गया कि श्री राजीव गांधी अमेरिका सरकार के निमन्त्रण पर वहां आये हैं इसलिये अमेरिकन सरकार यह देखेगी कि इन्हें किसी प्रकार की कोई परेशानी न हो। इसका प्रमाण यह था कि आज तक किसी विदेशी की सुरक्षा के इतने कड़े प्रबन्ध न हुए थे जितने राजीव गांधी के लिये किये गये। इस प्रकार इन खालिस्तानी सिखों ने केवल एक ही प्रदर्शन किया और श्री गांधी जहां जाते वहां और प्रदर्शन करने का साहस न किया।

(शेष पृष्ठ २ पर)

"यह तो अपनी मां (श्रीमती इन्दिरा गांधी) की तरह ही है।"
भारत पर शासन करने के पागल हिन्दू कुत्तों के स्वप्न ले रहा है।
मां ने अभी एक हिन्दू राज्य स्थापित कर रखा था। इसकी मां ने सिखों से जो कुछ किया उसके बदले उसे बड़ी आसान मौत मिली।
राजीव को इतनी आसान मौत न मिलेगी—
किसी समझौते का प्रश्न ही नहीं है। केवल एक ही हल है और वह है भारत का शान्तिपूर्ण विभाजन।

(उग्रवादी प्रीतमसिंह बिन्दरा द्वारा प्रेस क्लब में श्री राजीव गांधी के भाषण के समय प्रगट किए गए उद्‌गार)

श्री राजीव गांधी

श्री राजीव गांधी की अमेरिकन यात्रा के अन्य चार राष्ट्रों की यात्रा की अपेक्षा अन्य कई पहलू थे। अमेरिका की जन-सामान्य जनता, सम्मति निर्माता, राजनैतिक एवं प्रशासकीय नेता असाधारण रूप से उस व्यक्ति के सम्बन्ध में अधिकाधिक जानकारी प्राप्त करने के लिए उत्सुक थे जो पिछले आठ महीनों से दिल्ली से भारत का संचालन करने का प्रयास कर रहा है। सोवियत रूस विरोधी एक महान् शक्ति और उसके मित्रों पर सन्देह करने वाले के रूप में अमेरिका स्वयं यह जानने के लिए उत्सुक था कि राजीव गांधी किस प्रकार का व्यक्ति है। उनके सम्बन्ध मे उन्हें बहुत कुछ ज्ञात नहीं था, इसका एक कारण तो यह था कि भारत में उन्हे अपनी माता श्रीमती इन्दिरा गांधी) और नाना (श्री पं० जवाहरलाल नेहरू) के सदृश बहुत कम पब्लिसिटी प्राप्त हुई थी। अमेरिका की (संसारके अन्य भागों की भी) धारणा थी कि वे एक परिपक्व नेता नहीं हैं वरन् नेता के रूप में निर्माणाधीन हैं, साथ ही असन्दिग्ध आदर्श रीति-नीति एवं स्थिति से सुस्पष्टतः अथित नहीं हैं। इससे पूर्व उनकी रूस की यात्रा ने उनके व्यक्तित्व और नीतियों की जानकारी के लिए अमेरिका की उत्सुकता बढ़ा दी थी।
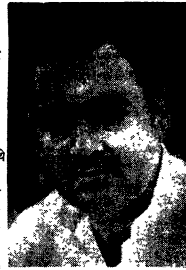
सौभाग्य से अमेरिका की लोकतान्त्रिक परम्परा और प्रचार विभाग को धन्यवाद देना चाहिए जिसके दृष्टिगत उस प्रतिक्रिया का ठीक-ठीक अन्दाजा लगाना सम्भव हो गया है जो श्री राजीव गांधी को आमन्त्रित करने वालों की हुई थी।

अमेरिका की यात्रा श्री राजीव गांधी की क्षमता, सदाशयता और सम्पर्क में आने वाले लोगों के साथ व्यवहार कुशलता का परीक्षण था जिसमें वे पूरी तरह सफल रहे और इसका देश-विदेश में व्यापक रूप में सुप्रभाव पड़ा है।

(ट्रिब्यून १८-६-८५)

सम्पादक—ओमप्रकाश त्यागी   प्रकाशक—रघुनाथ प्रसाद पाठक

(पृष्ठ १ का शेष)

इस प्रकार वर्ल्ड सिख आर्गनाइजेशन की धमकियां धरी की धरी रह गईं।

जिन पांच खालिस्तानियों का वर्णन मैंने ऊपर किया है ये चुपचाप एक मेज पर एक कोने में बैठे हुए थे। इन्होंने कोई हरकत न की लेकिन जो लोग प्रधानमन्त्री की सुरक्षा में लगे हुए थे उन्होंने इन लोगों पर कड़ी नजर रखी थी। जब श्री गांधी कमरे में दाखिल हुए तो जो चार सौ लोग वहां आये हुए थे खड़े हो गये और इन्होने दीर्घ करतल ध्वनि से आपका स्वागत किया। किन्तु ये पांचों बैठे रहे। जब श्री गांधी ने महाराजा रणजीत सिंह के राज्य का वर्णन करते हुए यह कहा कि इनकी राजधानी लाहौर थी तो सारा हाल कहकहों से गूंज उठा लेकिन ये पांचों खालिस्तानी जल-भुनकर कवाब हो गये। इसका उत्तर ये लोग और तो कुछ न दे सके किन्तु एक ने अत्यन्त जलते हुए लहजे में कहा कि "प्रधानमन्त्री को यह पता होना चाहिये कि सिखों ने पहले दिल्ली को जीता था" जब लंच समाप्त हो गया तो केसरिया पगड़ी पहने एक सिख ने ऊधम मचाने की कोशिश की थी। इसके मुख पर घृणा और नाराजी प्रकट रूप में दिखाई दे रही थी और इसने कड़ी आवाज में कहा—"यह तो अपनी मां की तरह ही है भारत पर शासन करने के पागल हिन्दू कुत्तों के स्वप्न ले रहा है। मां ने अभी एक हिन्दू राज्य स्थापित कर दिया था" इसके बाद इसने अपनी जेब से केसरिया रंग का एक विजिटिंग कार्ड निकाला जिस पर इसका नाम लिखा था प्रीतमसिंह बिन्दरा प्रेजीडेन्ट पंथिक काज इनकारपोरेटिड। बाद में इसने एक रिपोर्टर को बताया कि "मैं केवल यह कहना चाहता हूं कि इसकी मां को तो बड़ी आसान मृत्यु मिली थी इसे इतनी आसान मौत न मिलेगी। इसकी मां ने सिखों से जो कुछ किया इसके बदले में उसे बड़ी आसान मृत्यु मिली, किन्तु प्रायः यह व्यक्ति इतनी आसान मौत न मरेगा। जहां तक मृत्यु का प्रश्न है इसकी हालत कही बदतर होगी···। इसनें पहला नारा यह दिया कि पंजाब की समस्या यह हल करेगा क्या आपने इसे ऐसा करते हुए देखा है ?" यह देश समाप्त हो चुका है।

कोई प्रश्न ही नही कि प्रधानमन्त्री का कत्ल किया न जायेगा। अवश्य किया जायगा। एक बात और भी याद रखिये कि रूसी भारत पर अधिकार करने वाले हैं। वह इस भांति क्रोधित हुआ कि इसे अपनी वाणी पर भी कन्ट्रोल न रहा। यह बहकी-बहकी बातें करने लगा था। इतना तेज बोल रहा था कि इसे सांस भी पूरी तरह नहीं आ रहा था · रूस और दूसरे देश इसे शस्त्र देंगे सिख नहीं। सिख दबी हुई स्वतन्त्रता नहीं चाहते। हम स्वतन्त्र कौम हैं। हम वे लोग हैं जिन्होंने इसका भाग्य बदल दिया था। गुलामी से स्वतन्त्रता ले दी थी और यह फिर भी होगा आप देख लेना" इस प्रकार वह न जाने क्या क्या उटपटांग बातें करता रहा था। इसके एक-एक शब्द से इसके मन की आग और जलन प्रकट हो रही थी। दूसरे एक ओर कोने में कुछ और रिपोर्टरों ने गंगासिंह ढिल्लों को घेर रखा था। जब इससे श्री गांधी के इस रिमार्क का कि अकाली दल ने अपनी मांग पूरी तरह स्पष्ट नहीं की का संकेत किया गया तो इसने उत्तर दिया कि यह वही पुराना उज्र है जो इसकी माता जी किया करती थीं। सिख मसला पिछले ३७ वर्षो से बहस के अन्दर है और इन्हें इसका सब कुछ अच्छी तरह पता है।" इसके बाद किसी ने इसका ध्यान अकाली दल के प्रस्ताव में गड़बड़ की ओर दिलाया तो इसने उत्तर दिया कि किसी प्रस्ताव में ऐसी बातें होना कोई निराली बात नहीं है यह सब स्वाभाविक है। इस समय पंजाब और भारत में परिवर्तन हो रहा है पंजाब पर भारतीय सेना का अधिकार है और जोगिन्दर सिंह और उसके साथी इसे भारत सरकार से स्वतन्त्र कराने में प्रयत्नशील हैं आगे चलकर इसने कहा कि किसी समझौते का प्रश्न ही नहीं है। केवल एक ही हल है जिस पर बड़ी शांति से बातचीत हो सकती है। यह भारत का शांतिपूर्ण विभाजन है जिस प्रकार सिंगापुर और मलेशिया में हुआ था। ताकि वे अच्छे पड़ोसियों की तरह रह सकें।

प्रेस वलब वालों ने गंगासिंह ढिल्लों को लंच में आने की आज्ञा तो दे दी थी किन्तु इसकी मेज एक कोने में लगा रखी थी इसके साथ पेनसीलवीनिया राज्य की लोक सभा का सदस्य पीटर एच कोस्ट था। बाद में एक सम्वाद-दाता ने सैक्योरिटी वालों से पूछा कि क्या इन्होंने ढिल्लों और इसके साथियों को इस बात की आज्ञा दे दी थी कि वे सब अपनी कृपाणों के साथ लंच में सम्मिलित हों ? इसका उत्तर उन्होंने यह दिया कि इसकी आज्ञा न थी। जब ढिल्लों से पूछा गया तो इसने उत्तर दिया कि इसके पास कृपाण थी किन्तु यह दिखाने के लिए तैयार न हुआ कि यह इसने कहां रखी थी ? जब सैक्योरिटी वालों से दोबारा पूछा गया तो इसने यह ही कहा कि किसी को लंच में कृपाण लेकर आने की आज्ञा न दी गयी थी। स्पष्ट यह है कि गंगासिंह ढिल्लों ने इस लंच में प्रवेश पाने के लिए अपने सिखी उसूल को भुला दिया था कि सिख प्रत्येक समय शस्त्र साथ रखते हैं। इसे पता था कि यदि इसने कृपाण रखने पर जोर दिया तो प्रबन्धक इसे हाल में कदम न रखने देंगे। इसलिए इसने इनकी बात मानकर अपनी कृपाण कहीं बाहर रख दी।

—नरेन्द्र (वीर अर्जुन २०-६-८४)

गुरु का सिख निर्दोष लोगों की हत्या नहीं कर सकता

—लौंगोवाल

संगरूर १६ जून। लौंगोवाल अकाली दल के प्रधान श्री हरचन्द सिंह लौंगोवाल ने आतंकवादी सरगर्मियों की कठोर शब्दों में निन्दा की है और ऐलान किया है कि गुरु का कोई सच्चा सिख निर्दोष हिन्दुओं की हत्या नहीं कर सकता।

कल रात स्थानीय पंचायत भवन में प्रमुख हिन्दुओं की एक सभा को सम्बोधित करते हुए श्री लौंगोवाल ने कहा—"कोई सिख, जो किसी निर्दोष हिन्दू की हत्या करता है, वह गुरु तेगबहादुर की हत्या करता है और ऐसा व्यक्ति कभी सच्चा सिख नहीं हो सकता।"

अकाली दल द्वारा मोर्चा शुरू किये जाने के बाद यह पहला अवसर है कि श्री लौंगोवाल ने हिन्दुओं की किसी सभा को सम्बोधित किया है। इस सभा का आयोजन राज्य के दोनों समुदायों में फैली भ्रान्तियों को दूर करने और सदभाव को बढ़ाने के लिए किया गया।

श्री लौंगोवाल ने घोषणा की कि कोई भी, चाहे कितना शक्तिशाली हो; हिन्दुओं और सिखों के बीच सदियों पुराने प्यार के सम्बन्धों को कमजोर नहीं कर सकता। उन्होंने हिन्दुओं से अपील की कि वे प्रादेशिक, आर्थिक और राजनीतिक मांगों को, जो सभी पंजाबियों की हैं, पूरा कराने में उनके दल को सहयोग दें।

अकाली दल के प्रधान ने कहा कि आनन्दपुर साहिब प्रस्ताव खालिस्तान की मांग का समर्थन नहीं करता। उन्होंने कहा कि उनका दल देश की एकता और अखण्डता के लिए पूरी तरह प्रतिबद्ध है। श्री लौंगोवाल ने कहा—"हमने देश की एकता, अखण्डता और रक्षा के लिए हमेशा संघर्ष किया है, हम इसके खण्डित होने की बात कभी सोच ही नहीं सकते।"

श्री लौंगोवाल ने अपने इस कथन को दोहराया कि उनके दल की लड़ाई सरकार के साथ है, हिन्दुओं के विरुद्ध नहीं। उन्होंने कहा कि हिन्दुओं में फैली भ्रांतियों को दूर करने के लिए अकाली दल शीघ्र ही ऐसी और बैठकों का आयोजन करेगा। उन्होने आरोप लगाया कि पंजाब में आतंकवाद के पीछे कांग्रेस (इ) का हाथ है और मांग की कि सभी तरह की घटकों को समाप्त करने के लिए सभी घटनाओं की न्यायिक जांच कराई जाए।

अकाली विधायक श्री सुखदेव ढींडसा ने कहा कि उनकी पार्टी ने पंजाब की समस्याओं के बातचीत द्वारा समाधान के लिए हमेशा सरकार को सहयोग दिया है।

संगरूर बार एसोसियेशन के प्रधान श्री रामस्वरूप, व्यापार मंडल के प्रधान श्री प्रेम गोयल और कई अन्य हिन्दू नेताओं ने श्री लौंगोवाल से आग्रह किया कि वह आतंकवादियों और उग्रवादियों के विरुद्ध एक मजबूत स्टैंड लें और हिन्दुओं की आशंकाओं को दूर करें।

वार्ता के अनुसार श्री लौंगोवाल ने कहा कि यदि किसी को आपत्ति हो तो उनका दल आनन्दपुर प्रस्ताव पर पुनर्विचार को तैयार है। उन्होंने कहा कि हिन्दुओं को यदि इस प्रस्ताव के बारे में कोई आशंका है तो उसे दूर किया जा सकता है। उन्होंने कहा कि हमने कभी खालिस्तान की मांग नहीं की। सरकार सत्ता में बने रहने के लिए सिखों को आतंकवादी और खालिस्तान समर्थक बता रही है। श्री लौंगोवालों ने पंजाब में साम्प्रदायिक सौहार्द पर बल दिया।

सम्पादकीय

आर्य संस्कृति के मूल मन्त्र

आत्म-तत्व

आर्य संस्कृति की विचार धारा के २ रूप है—एक इह लौकिक और दूसरा पारलौकिक। आर्य संस्कृति ने जीवन के कार्यक्रम का निर्माण जिस विचार को आधार बनाकर किया है, वह विचार है शरीर के पीछे आत्मा है प्रकृति के पीछे परमात्मा है। शरीर आत्मा का साधन है और प्रकृति परमात्मा का साधन है। यह इह-लौकिक विचार है जिससे आर्य संस्कृति ने अपने जीवन के प्रति दृष्टि-कोण को बनाया है। शरीर हो, आत्मा न हो, प्रकृति हो परमात्मा न हो तो जीवन की दिशा एक तरफ चली जाती है। शरीर हो परन्तु आत्मा का साधन हो, प्रकृति हो परन्तु वह परमात्मा का साधन हो तो जीवन की दिशा दूसरी तरफ चल पड़ती है।

आर्य संस्कृति की जीवन दिशा इस दूसरी तरफ ही गई है। इस दिशा की ओर जाते हुए आर्य संस्कृति के इहलौकिक जीवन का कार्यक्रम बना है। निष्काम कर्म आश्रम व्यवस्था, यज्ञ, अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह प्राणी मात्र मे आत्म-भावना आर्य संस्कृति के इन सब इहलौकिक विचारो का उद्गम आत्मतत्त्व की कल्पना से ही हुआ है।

आत्मतत्त्व एक पारलौकिक कल्पना नही है। आर्य संस्कृति मे आत्मतत्त्व को एक वैसी ही इहलौकिक वस्तु माना गया है जैसे हम प्रकृति तत्त्व को मानते हैं। हां जैसे जो लोग प्रकृति को ही यथार्थ तत्त्व मानते हैं वे प्रकृति की छान-बीन मे लग जाते हैं और प्रकृति के सम्बन्ध मे भी सैकडो पार लोकिक कल्पनाए कर डालते हैं वैसे क्योकि आर्य संस्कृति के उपासक आत्मतत्त्व को यथार्थ तत्त्व मानते थे इसलिए आत्म तत्त्व के पारलौकिक स्वरूप की उन्होने भी खूब छानबीन की। खूब चर्चा की।

क्या आत्म तत्त्व प्रकृति जैसा एक स्वतन्त्र तत्त्व है जिससे हम सबका भिन्न-भिन्न आत्मा विकसित होता है? क्या आत्म तत्त्व परमात्मा का भी आधारत तत्त्व है? क्या प्रकृति तत्त्व का विकास भी इस आत्म तत्त्व से होता है? आत्मा परमात्मा एक हैं या इनका मौलिक भेद है। जड चेतन एक हैं या इनका मौलिक भेद है?

त्रैतवादियो की तरह आत्मा, परमात्मा इन तीनो को पृथक्-पृथक् मानें, परमात्मा और प्रकृति को यथार्थ सत्ता माने। आत्मा को परमात्मा की रचना माने? वेदान्तियो की तरह प्रकृति जीव को ब्रह्म का ही रूपान्तर मानें। ये सब दार्शनिक विचार हैं। इन सब विचारो को आर्य संस्कृति ने जन्म दिया है। इन सब विचारो का आर्य संस्कृति के विकास पर भी प्रभाव पडा है। परन्तु इन सब विचारों का आधार इहलौकिक विचार, इन सब विचारों का सार वह विचार जो भिन्न-भिन्न पारलौकिक विचारो के होते हुए भी सबमे समान है एक ही विचार है और वह यह कि आत्म तत्त्व एक इहलौकिक यथार्थ सत्ता है।

हमें अपने वैयक्तिक और सामाजिक जीवन का विकास इस सत्ता को मानकर करना है। इसके बिना माने नहीं। प्रकृति तत्त्व के सम्बन्ध में भिन्न-भिन्न कल्पनाओं के होते हुए भी इसका अन्तिम पारलौकिक रूप क्या है, परमाणु है, इलेक्ट्रोन है। वे भी धन ऋण विद्युत के आवेश के कुछ हैं या कुछ नही इन विविध कल्पनाओं के होते हुए भी प्रकृति तत्त्व को आधारभूत सत्य मानकर जीवन का एक प्रकार का विकास बन बना है और बनता चला जा रहा है। ठीक इसी प्रकार आत्म तत्त्व के सम्बन्ध मे भिन्न-भिन्न कल्पनाओं के होते हुए भी इसका अन्तिम पारलौकिक रूप क्या है एकत्व ठीक है द्वैत ठीक है त्रैत ठीक है मुक्ति का स्वरूप क्या है? मुक्ति से लौट आते हैं, नही आते पुनर्जन्म कैसे होता है? आत्मा पशु योनि मे लौट कर जाता है नही जाता—इन विविध मान्यताओ पर विचार करते हुए इन सब मे एक मत न होते हुए भी आत्म तत्त्व को आधार भूत तत्त्व मानकर जीवन का एक दूसरे प्रकार का विकास क्रम बना था जो आर्य संस्कृति के विचारको ने बनाया था। उनका दावा था कि जीवन की यही दिशा मनुष्य का सुख-शान्ति और सन्तोष दे सकती है, दूसरी नही।

हमने सदियो तक दूसरी दिशा मे जाकर देख लिया। उससे न सुख मिला, न शान्ति मिली, न सन्तोष मिला। ज्यो ज्यो हम इस दिशा की ओर बढते हैं त्यो-त्यो सुख शान्ति और सन्तोष से दूर होते चले जा रहे हैं। क्या आज समय नही आ गया कि हम इस आत्म तत्त्व को प्रकृति की तरह यथार्थ मानकर उसके मार्ग पर भी चलकर देखें और देखें कि जिस सुख, शान्ति और सन्तोष की खोज मे मानव समाज भटक रहा है वह ऋषि मुनियो के बताए मार्ग पर चलने से मिलता है वा नही।

ये सुविचार हैं जो श्री प्रो० सत्यव्रत जी ने अपनी पुस्तक आर्य संस्कृति के मूलतत्त्व (पृ० ९६-९८) मे व्यक्त किए हैं।

बिना विवाद का विवाद

उत्तरप्रदेश मे उर्दू के सवाल को लेकर कुल्हड मे फिर उबाल आ गया है। उर्दू अकादमी के सदस्यों ने इस्तीफा दे दिया है और मुख्य-मन्त्री से कहा जा रहा है कि वे नागरिक आपूर्ति मन्त्री को अपनी मन्त्रि परिषद से बर्खास्त कर दें। प्रो० वासुदेवसिंह से नाराजी का कारण यह है कि उन्होने पत्रकारिता दिवस पर हिन्दी भवन मे आयोजित गोष्ठी मे कहा था कि उर्दू अकादमी वाले जिस तरह उर्दू को दूसरी राजभाषा बनाने का सवाल उठा रहे है, उसका जवाब देने के लिए हिन्दी अकादमी को भी खडा होना चाहिए। यह प्रो० वासुदेव सिंह का निजी मत था और इसे प्रकट करने का उन्हें उतना ही अधिकार है जितना उर्दू अकादमी जैसी सरकारी संस्था मे पद-भार स्वीकार करने वाले किसी व्यक्ति को है।

कठिनाई यह है कि उर्दू अकादमी वाले अपनी बात कहने का अधिकार तो चाहते हैं और मानते हैं कि सरकारी स्थिति मे भी उन्हें अपने निजी विचार जाहिर करने का बुनियादी हक हासिल है, पर यही अधिकार वे किसी ऐसे व्यक्ति को देने को तैयार नही, जो उनसे भिन्न राय रखता हो और हिन्दी को हिन्दी भाषी प्रदेश की एकमात्र भाषा रखने का आग्रह करता हो।

उत्तरप्रदेश सरकार उर्दू के पठन-पाठन के लिए पुष्कल धन खर्च कर रही है। वह पाच हजार अध्यापक नियुक्त कर रही है। प्रो० वासुदेवसिंह सरकार के इस निर्णय का विरोध नही करते। उर्दू संविधान की एक मान्य भाषा है। पर एक समूचे समाज को जो हिन्दी और देवनागरी की मूल धारा के साथ एकाकार हो गया है, जब एक ऐसी लिपि की ओर खीचने की कोशिश की जाती है, जो भारतीय इतिहास के एक अलग दौर की याद दिलाती जाती है, तब कुछ कान यदि खडे हो तो गलत नही।

हिन्दी उर्दू की गगा जमुना भाषा और देवनागरी लिपि उत्तर-प्रदेश समाज मे इतनी रचपच गई है कि पाकिस्तान से आए एक लेखक के अनुसार पाकिस्तानी भी इसलिए देवनागरी लिपि मे हिन्दुस्तानी पढते हैं ताकि हिन्दुस्तान से आने वाले अपने रिश्तेदारो के खत पढ सकें। झगडा यहा हिन्दी-उर्दू का नही, बल्कि लिपि का है। प्रो० वासुदेवसिंह का कहना सिर्फ यह है कि जब प्रदेश के हर व्यक्ति ने अपनी बोली को लिपिबद्ध करने के लिए देवनागरी लिपि को एकमात्र लिपि मान लिया है, तब किसी दूसरी लिपि का बोझ लादने

सामायिक चर्चा—

पंजाब असम आदि की समस्याओं का स्थायी समाधान भाषायी राज्यों का विघठन और केन्द्र के एकात्मक शासन की संस्थापना ही है

एक वरिष्ठ पत्रकारके शब्दोंमें पंजाब समस्या का समाधान शक्यहै परन्तु उस ढंग से नहीं,जिस ढंग से प्रायशः सभी राजनेता सोचते हैं। अकालियों के आपस में मिल जाने तक की प्रतीक्षा करते रहने में समाधान सन्निहित नहीं है क्योंकि किसी को भी लम्बे समय तक प्रतीक्षा करनी पड़ सकती है।

अखिल भारतीय स्तर पर कुछेक मौलिक कार्यवाही किए जाने से ही समाधान हो सकता है। इसके लिए तीन महत्त्वपूर्ण निर्णय लेने होगे। पहला यह कि भाषायी आधार पर राष्ट्र का विभाजन घातक सिद्ध हुआ है। दूसरा संघीय ढांचे ने अनावश्यक तनावों को जन्म दिया है। तीसरा देश को एकता के सूत्र में बांधने का सर्वोत्तम ढंग है भाषायी राज्यों और संघीय ढांचे का विघटन और एकात्मक शासन की संस्थापना।

जीवन के घातक तथ्यों का सामना करना हमारे लिए अनिवार्य है। हमारी वर्तमान समस्त जटिल समस्याओं की पृष्ठ भूमि में प्रादेशिकता की प्रबल भावना क्रियारत है जिसका उद्भव देश के भाषायी विभाजन में हुआ है।

प्रत्येक भाषायी राज्य के नेता इस आपराधिक विभाजन को स्थिर रूप देने के इच्छुक हैं जिससे कि वे लोगों की प्रादेशिकता की भावना को भड़का कर उन पर अपने राजनीतिक प्रभुत्व को सशक्त बना सकें। इससे अन्ततोगत्वा देश की एकता को ही क्षति पहुंचती है।

जितनी अधिक देर तक हम भाषायी राज्यों की मांग करते रहेंगे उतनी ही अधिक मात्रा में देश को क्षति पहुंचाते रहेंगे। प्रादेशिकता की भावना जनता को राष्ट्रीय एकता की धारा में विलीन न होने देगी।

भाषायी राज्यों की पागलपन की पारस्परिक प्रतिद्वंदिता में जैसाकि आजकल हो रहा है इसकी इतिश्री हो जायेगी। आज सर्वत्र अलगाव ही देख पड़ रहा है। राज्यों के लिए अधिकाधिक सत्ता प्राप्ति की विवेकहीन मांग के आवरण में केन्द्रीय गवर्नमेंट को कमजोर एवं उपेक्षित करने की बड़ी चतुराई से कोशिश की जा रही है।

यह सोचते हुए कि ये राज्य भाषायी है और यह इसका सबसे बड़ा अनिष्टकारी पहलू है। आमतौर पर केन्द्र और राज्यों के पारस्परिक सम्बन्धों के प्रसंग में चर्चा की जाती है यह सिवा प्रादेशिकता की भावना के और कुछ नहीं है जो अपने को शाश्वत रूप देने पर तुली देख पड़ रही है। ऐसा कभी भी न होने देना चाहिए।

हमारी सम्मति में संघीय ढांचा समाप्त करके इसके स्थान में एकात्मक शासन संस्थापित कर दिया जाना चाहिए।

जब देश स्वतन्त्र हुआ था तब हमारे कर्णधारों को गवर्नमेंट आफ इण्डिया ऐक्ट १९३५ के नमूने पर ही कार्य करना पड़ा था क्योंकि उन्होंने इसे सफलता पूर्वक क्रियान्वित होते देखा था। परिस्थितियों के दृष्टिगत उनका विश्वास था कि संघीय ढांचा न केवल उपयुक्त ही वरन् क्रियान्वित किए जाने के योग्य भी था। इसीलिए मनु सूबेदार प्रभृति दूरदर्शी लोगों की बात जिन्होंने एकात्मक शासन पद्धति का प्रस्ताव किया था आगे न बढ़ सकी थी। दिग्गज संविधान वेत्ताओंसे समान अधिकारों पर लड़ाई नहीं लड़नीथी। फलत: एकात्मक शासन पद्धति का प्रस्ताव एक ओर उठाकर रख दिया गया था

१९३५ के ऐक्ट पर बने संविधान के अनुसार प्रशासन बहुभाषा-भाषी प्रान्तों, कमिश्नरियां तथा जिला बोर्डों में विभाजित रहता था और ये सब केन्द्र के अधीन रहते थे। गवर्नरों की नियुक्तियां भी केन्द्रीय गवर्नमेंट ही करती थी।

का क्या मतलब ? उर्दू अकादमी या उर्दू के हामियों को स्पष्ट करना चाहिए कि वे भाषा के लिए कह रहे हैं या लिपि के लिए। उर्दू भाषा तो प्रदेश में चल रही है। देवनागरी लिपि के माध्यम से बढ़ती हिन्दी-उर्दू की गंगा-जमुनी धारा को बांटने की कोशिश का विरोध ऐसा प्रत्येक व्यक्ति करेगा, जो देश की एकता का पोषक है। प्रो० वासुदेवसिंह इस संघर्ष में अकेले नहीं। (न०भा० १९-६-८१)

बधाई और शुभ कामना

श्री मनुदेव अभय एम० ए०, बी० ऐड विद्यावाचस्पति सम्पादन-कला विशारद १३ अ० लक्ष्मण मार्ग, सुदामा नगर इन्दौर लिखते हैं—

"यह सन्तोष का विषय है कि सार्वदेशिक पत्र नियमित रूप से प्राप्त हो रहा है। पत्र का स्तर भी निरन्तर अच्छा होता जा रहा है। मेरी शुभ कामना है कि प्रभु-कृपा से यह पत्र वैदिक धर्म एवं आर्यसमाज की निरन्तर सेवा करता रहे।"

उपदेश का अधिकार

एक बार एक स्त्री अपने लड़के को लेकर महात्मा नानक के पास गई। उस लड़के के समस्त शरीर पर फोड़े फुन्सियां छाई हुई थीं इसके कारण वह बहुत दुःखी था। वह गुड़ बहुत खाता था और उसकी इस आदत को छुड़ाने में माता-पिता सफल न हुए थे। उस स्त्री ने महात्मा नानक से कहा—"महाराज, आप किसी तरह इस लड़के की आदत छुड़वा दें।" महात्मा ने कुछ क्षण सोच कर कहा—"देवि ! तुम चार पांच दिनों के पश्चात् इस लड़के को लेकर आना" स्त्री ने ऐसा ही किया। महात्मा जी ने लड़के को चूमकर कहा—"बेटा! इस गुड़ की आदत से ही तुम्हें फोड़े-फुन्सियों का कष्ट उठाना पड़ रहाहै। तुम इस आदत को छोड़ दो।तुम्हें शान्ति मिल जायेगी" यह सुनकर स्त्री ने गुरु नानक जी से कहा—"यह बात तो तुम उस दिन भी कह सकते थे। आज कहने से क्या खास बात हो गई है ?"

महात्मा ने उत्तर दिया—"देवि ! उस दिन मैंने यह उपदेश इसलिए नहीं दिया था कि मैं स्वयं गुड़ खाता था। मैं समझता था कि जब मैं स्वयं गुड़ खाने का आदी हुं तो मुझे इस लड़के को उपदेश देने का कोई अधिकार नहीं है और न मेरा उपदेश प्रभावशाली हो सकता है। उसके दूसरे दिन से हीं मैंने गुड़ खाना छोड़ दिया है। अपने निश्चय में बल लाने के लिए ही मैंने चार पांच दिन की मुहलत (अवकाश) चाही थी।" महात्मा जी की यह बात सुनकर स्त्री बड़ी प्रभावित हुई और महात्मा के उपदेश से उस लड़के ने अपनी आदत छोड़ दी।"

एक प्रेरक प्रसंग

—महात्मा गांधी

महात्मा गांधी एक बार अपने कुछ भक्तों और सहयोगियों के साथ बनारस गए थे। श्रीयुत डा० भगवानदास जी ने पूर्व से ही उनके आवास की व्यवस्था अपने मकान पर की थी और दो बड़े कमरों में पलंगों, बिस्तरों और फर्श की व्यवस्था कर रखी थी।

जब महात्मा जी ने अपने साथियों के साथ उन कमरों को और उनकी साज सज्जा को देखा तो वे कुछ अनमने हो गए और श्री डा० साहब के सुपुत्र श्री श्रीप्रकाश को कहा 'इन पलंगों, बिस्तरों और फर्श को हटाकर चटाइयों और तख्तों की व्यवस्था करो।"

श्रीप्रकाश जी ने निवेदन किया कि 'महाराज ! इस व्यवस्था में कुछ सामान बाजार से खरीदकर मंगाना होगा।" आप कुछ समय इन कमरों में ही विश्राम करें।' परन्तु महात्मा जी तय्यार न हुए।

इस पर श्रीमती सरोजिनी नायडू ने जो उनके साथ गई थी, व्यंग करते हुए कहा—

'महात्मा जी ! आपको गरीब बनाने के लिए श्रीप्रकाश जी को काफी पैसा खर्च करना पड़ेगा।" यह सुनकर महात्मा जी तथा श्री प्रकाश जी मुस्करा पड़े।

—रघुनाथप्रसाद पाठक

ईश्वर सत्ता और विज्ञान

श्री स्वामी धर्मानन्द जी विद्यामार्तण्ड

अंग्रेजी शिक्षा प्राप्त किन्तु संस्कृत ज्ञान शून्य युवकों के अन्दर यह विचार प्रायः फैला हुआ है कि वर्तमान विज्ञान (Science) ईश्वर की सत्ता से साफ इन्कार करता है। वर्तमान विज्ञान के अनुसार सारे जगत में विकास का नियम (Evolution) काम कर रहा है। उसी नियम के अनुसार सृष्टि बनती जाती है। उसके लिए सृष्टिकर्ता ईश्वर को मानने की कोई आवश्यकता नहीं क्योंकि विकास वाद (Evolution Theory) और सृष्टि-कर्तृत्व वाद (Creation Theory) का परस्पर घोर विरोध है। इस लेख में मैं यह दिखाना चाहता हूं कि इस प्रकार के विचार भ्रान्तिपूर्ण हैं तथा वर्तमान सुप्रसिद्ध वैज्ञानिकों के मत विषयक अज्ञान को सूचित करते हैं।

(१) विज्ञान का प्रत्येक विद्यार्थी न्यूटन के नाम से अवश्य ही परिचित होगा जिसने आकर्षण नियम (Law of Grav·tation) का प्रतिपादन किया। अपने ज्योतिष शास्त्र विषयक अन्तिम ग्रन्थ 'Prıncepia' में उस प्रसिद्ध वैज्ञानिक शिरोमणि ने स्पष्ट शब्दों में लिखा था कि —

"All this materıal unıverse ıs the handı work of the omnı scient and omnipotent creator"

अर्थात् यह सारा भौतिक जगत् एक सर्वज्ञ और सर्वशक्तिमान् ईश्वर की रचना है। जगत के अन्दर जो नियम और व्यवस्था (Law and order) दृष्टिगोचर हो रहे हैं और जिनमें से बहुतों का ज्ञान ज्योतिष शास्त्र द्वारा होता है उन्हें देखकर ही न्यूटन जैसे वैज्ञानिक शिरोमणि को सर्वशक्तिमान् ईश्वर की सत्ता को स्वीकार करना पड़ा इसमें कोई सन्देह नहीं। यह इस बात का स्पष्ट प्रमाण है कि किस प्रकार विज्ञान ईश्वर की सत्ता में विश्वास को दृढ़ करता है।

(२) इसी भाव को मन में रखकर इंग्लैंड के गत शताब्दी के प्रसिद्ध वैज्ञानिक लार्ड केल्विन् (Lord Kelwın) ने अपने एक भाषण में यह स्पष्ट घोषणा की थी —

"Scıence Posıtıvely affirms creatıve Power we are absolutely forced by Pcıence to belive with p rfect confidence ın a Dırectıve Sower ın an ınfluence other than physıcal or electrical forces"

Quoted ın "Scıence & Relıgıon' by seven Men of Scıence P 48

अर्थात् विज्ञान प्रबल और स्पष्ट रूप से कर्तृत्व शक्ति वा ईश्वर का समर्थन करता है। विज्ञान हमें इस बात के लिए पूर्णतया बाधित कर देता है कि हम एक नियामक शक्ति में दृढ़ विश्वास रखें जो भौतिक वा विद्युच्छक्ति आदि से पृथक् है।

(३) विज्ञान किस प्रकार ईश्वर सत्ता में विश्वास के लिए हमें बाधित करता है इस बात को डा० फ्लेमिंग M A D Sc F R S ने अपने "Supreme Intellıgence ın and above Nature" इस शीर्षक के व्याख्यान में जो लन्दन में २२ से २९ नवम्बर १९१४ में मनाये गये विज्ञान सप्ताह (Scıence week) में दिया गया था और जो अन्य उस सप्ताह में दिये गये व्याख्यानों के साथ (Scıence and Relıgıon' by Seven men of Scıence नामक सुप्रसिद्ध पुस्तक में छपा बहुत अच्छी तरह बताया था। उसमें ईश्वर के अस्तित्व को सिद्ध करने के लिये उन्होंने विज्ञान शास्त्र के आधार पर निम्न लिखित मुख्य प्रमाण दिये —

(क) Order अथवा क्रम जो ग्रह उपग्रह की एक दूसरे से दूरी तथा नियमित गति आदि से प्रकट है। किसी सुन्दर बाग के क्रम को देखकर जैसे बुद्धिमान माली का अनुमान होता है वैसे ही सौर मण्डल तथा ग्रह उपग्रहों में क्रम को देखकर चेतन कर्ता का अनुमान होता है। Bode's Law आदि वैज्ञानिक नियमों का जिक्र करते हुए डा० फ्लेमिंग कहते हैं।—

'It seems to me to gıve a strong Indication of the operatıons of a Designıng mind ın the construction of our solar system' (P 39)

(ख) स्थिरता (Stabılıty)—एक पक्के जहाज को देखकर जो समुद्र के प्रबल थपेड़ों और तूफानों का मुकाबला कर सकता है जिस प्रकार बुद्धिमान निर्माता का अनुमान होता है ऐसे ही इस भूमि रूप पक्के जहाज को तथा सूर्य-चन्द्रादि को देखकर जो करोड़ों वर्ष से कायम हैं सर्वज्ञ चेतन कर्ता का स्मरण होता है।

(ग) Dırectıvıty—नियमन अचेतन अणु आदि के लिए किसी नियामक की आवश्यकता है। कार्बन (Carbon), OXygen (ओक्सिजन) Hydrogen (उद्जन) Nıtrogen (नत्रजन), Sulphur (गन्धक) और फास्फोरस (Phosphorus) इन छः प्रकार के अणुओं से मिलकर प्रायः सब पदार्थ रबर, कुनीन, नील (Indıgo) काफी आदि बनते हैं, केवल उनके मेल में अन्तर है। ऊपर संयोग में उस नियम को रखने वाला सर्वज्ञ ईश्वर है। ये अणु मिलकर स्वयं जगत के पदार्थों को बना देते हैं। यह कथन ऐसे ही है जैसे कि कोई प्रेस में छपी कविता के बारे में कहे कि अपने आप ही मशीन के अक्षर जुड़ गये और उन्होंने कविता बना दी। यह बात जैसे असम्भव और अविश्वसनीय है वैसे ही अणुओं का स्वयं मिलकर बिना चेतन कर्ता के सृष्टि बनाना भी है।

(घ) Intellıgıbılıty—बुद्धिगम्यता—इस सृष्टि के अन्दर एक विशेष प्रकार का क्रम नियमादि दृष्टिगोचर होता है जो चेतन कर्ता को स्पष्ट सूचित करता है। उदाहरणार्थ यदि किसी बंगले के दरवाजे पर लैटिन में Cave canem ऐसे लिखा हुआ हो, जिसका अर्थ 'कुत्तों से सावधान रहो' है उससे तो स्पष्ट पता लगेगा कि जिसने ये वाक्य लिखे हैं वह लैटिन अवश्य जानता होगा। यह कोई कल्पना नहीं कर सकता कि कुत्तों ने ऐसा लिख दिया होगा। ऐसे ही यद्यपि हम जगत के नियमों को पूर्णतया नहीं समझ सकते हैं पर जितने अंश तक हम समझ सकते हैं उससे भी बुद्धिमान कर्ता की सत्ता निस्सन्देह सूचित होती है। इन सब प्रमाणों के आधार पर डा० फ्लेमिंग ने ईश्वर की सत्ता को विज्ञान के प्रकाश में सिद्ध किया है। उपर्युक्त वैज्ञानिकों के अतिरिक्त हर्शेल (Herschell) डाल्टन, फैरडे, ब्रूस्टर (Brewster), टेट स्टोक्स, मेक्सवेल आदि प्रसिद्ध वैज्ञानिकों ने भी ईश्वर सत्ता में अपना विश्वास प्रकट किया है। उस विषय में "Religion of Scıence" विज्ञान धर्म नामक प्रसिद्ध ग्रन्थ के लेखक डा० माल्कस ने लिखा है —

'While Scıence does not speak of God, ıt teaches God, for every law of nature ıs a part of God's beıng" P 22

The relıgıon of scıence ıs not atheıstıc but theıstıc P 23

"God ıs that whıch determınes the shape of nature and dırects the course of energy"

अर्थात् यद्यपि विज्ञान मुख्यतया ईश्वर का प्रतिपादन नहीं करता तो भी ईश्वर के विषय में यह सिखाता है, क्योंकि प्रकृति का प्रत्येक नियम ईश्वर का एक अंश और उसका सूचक है। 'विज्ञान धर्म नास्तिक नहीं किन्तु आस्तिक है।" परमेश्वर ही है जो प्रकृति के स्वरूप का निर्णय करता तथा प्रकृति शक्ति को प्रेरित करता है। इत्यादि। आशा है इतने लेख से उन सुशिक्षित लोगों का भ्रम दूर हो जाएगा जो यह समझते हैं कि वर्तमान विज्ञान वा सभी वैज्ञानिक ईश्वर के अस्तित्व से इन्कार करते हैं।"

सम्पादक के नाम पत्र

बैंकों में हिन्दी

बैंक आफ इंडिया की गोलमार्केट मन्दिर (रामकृष्णपुरम) स्थित शाखा में लिखित सूचना टांगी हुई है कि यदि कोई व्यक्ति चाहे तो उत्तरी क्षेत्र (दिल्ली, पंजाब, हिमाचल प्रदेश, राजस्थान, बिहार मध्यप्रदेश और उत्तर-प्रदेश) में स्थित बैंक शाखाओं के लिए डिमान्ड ड्राफ्ट आदि हिन्दी में तैयार करके दिए जा सकते हैं। इस सम्बन्ध में मेरा सुझाव है कि समस्त राष्ट्रीय कृत बैंकों को न केवल उत्तरी क्षेत्र की अपनी शाखाओं के लिए, अपितु समस्त देश की शाखाओं के लिए इस प्रकार के ड्राफ्ट चैक हिन्दी में ही तैयार करके भेजे जाया करें। हां, यदि कोई ग्राहक या पार्टी अंग्रेजी में उसे बन वाना पसन्द करे, तो उसे उसका उल्लेख करना चाहिए। क्योंकि हिन्दी राजभाषा और अंग्रेजी सह राजभाषा संविधान के अन्तर्गत स्वीकृत है, इस लिए हिन्दी में यह काम करने के लिए बैंक को स्वत ही पहल करनी चाहिए इससे समस्त देश में राजभाषा सम्बन्धी नीति का भली-भांति परिपालन भी हो सकेगा और अंग्रेजी में काम चाहने वाले ग्राहक और पार्टियों को भी असुविधा या जबरदस्ती नहीं होगी। सह राजभाषा के लिए इतनी सुविधा दी जानी आवश्यक है जबकि राजभाषा हिन्दी के लिए विशेष रूप से ग्राहक या पार्टी का अनुरोध संविधान की भावना और उसके परिपालन के विपरीत पड़ती है। इस सम्बन्ध में वित्त मन्त्रालय के बैंकिंग डिवीजन का ध्यान भी खींचा गया है।

—ब्रह्मदत्त स्नातक

क्या बढ़ती हुई जन संख्या चिन्तनीय है ?

पिछले लगभग २० वर्षों से बढ़ती हुई जनसंख्या के प्रति विशेष चिन्ता प्रकट की जा रही है। कहा यह जाता है कि यदि जनसंख्या की वृद्धि का यही हाल रहा तो आगामी कुछ ही वर्षों के बाद मनुष्यों को रहने के लिए जमीन और खाने के लिए अन्न भी मिलना कठिन हो जायगा। संसार के अनेक देश जनसंख्या की वृद्धि को रोकने के लिए सतत प्रयत्नशील हैं। भारत भी इस सम्बन्धमें किसी अन्य देश से पीछे नहीं हैं। शासन की ओर से 'छोटा परिवार सुखी परिवार जैसे आकर्षक नारों का प्रचार कर तरह तरह के साधनों द्वारा परिवार नियोजन किया जा रहा है। इस कार्य मे प्रलोभन देने के अतिरिक्त कभी कभी जबरन व अयोग्य तरीके अपनाए जाने की भी खबरें समाचार पत्रों मे पढ़ने में आती हैं। यहां तक कि अविवाहित युवा पुरुषों एवं प्रजनन शक्ति के सर्वथा अयोग्य स्त्री-पुरुषों के भी परिवार नियोजन सम्बन्धी आपरेशन कर दिये जाते हैं।

जनसख्या मे वृद्धि हुई है इसमे दो राय नही हो सकती। परन्तु भारत में जनसख्या की वृद्धि के कुछ और भी कारण हो सकते हैं। प्रतिवर्ष हजारो की सख्या मे घुसपैठियों का आगमन भी जनसख्या मे वृद्धि का एक कारण है। बगलादेश से विदेशियों के आने का सिलसिला अभी भी जारी है। अखिल भारतीय असम छात्र संघ के अध्यक्ष श्री प्रफुल्ल मोहन्ती के कथनानुसार असम में (ताजा स्थिति के अनुसार) ४८ लाख विदेशी मौजूद हैं। पाकिस्तान से भी समय समय पर घुसपैठिये आते रहते हैं। अभी हाल ही में गृहमन्त्री श्री एस बी चह्वाण ने राज्य सभा मे बताया कि तमिलनाडु सरकार से प्राप्त रिपोर्टों के अनुसार जुलाई १९८३ से १४ अप्रैल १९८५ तक श्रीलंका से ८७ हजार ६२७ शरणार्थी भारत में पहुंचे हैं। इस प्रकार विदेशियों तथा शरणा-र्थियों का भारत मे 'आगमन एवं प्रावास भी भारत की जनसख्या की वृद्धि को काफी प्रभावित करता है। परन्तु यह कारण उपेक्षणीय है तो प्राकृतिक तौर पर होने वाली जनसख्या की वृद्धि भी चिन्तनीय नहीं है। क्योंकि प्रति-दिन हजारों की सख्या में अनेकानेक बीमारियों से मरने वाले लोगों के अति रिक्त दंगे, लड़ाई झगड़े रेल, बस, ट्रक नौका तथा अन्य अनेकों दुर्घटनाओं में एवं समय समय पर होने वाली बाढ लू, शीतलहर व तूफान इत्यादि प्राकृतिक विपदाओं से भी हजारो व्यक्ति प्रतिवर्ष मरते रहते हैं। कभी कभी महायुद्धों के कारण भी भीषण मानव विनाश होता है। इस प्रकार स्वयं प्रकृति ही करोड़ों वर्षों से जन्म और मृत्यु में सन्तुलन बनाए रखती चली आ रही है। हमें उसकी चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं है। फिर भी यदि किसी कारण से जनसख्या की वृद्धि पर नियन्त्रण आवश्यक ही हो तो ब्रह्मचर्य का पालन और संयम ही परिवार नियोजन का सर्वोत्तम प्राकृतिक उपाय है। अत प्राज दिन जितना पैसा कृत्रिम परिवार नियोजन पर खर्च किया जा रहा है उतना यदि सदाचार व चरित्र निर्माण के लिए तथा मनुष्य के धन व स्वास्थ्य की सम्पूर्ण परिवार को तबाह करने वाली और उसे (शराबी को) असमय में ही मृत्यु की गोद में पहुंचाने वाली शराब की बन्दी के लिए किया जाय और कानून के द्वारा भी शराब पर रोक लगाई जाय तो मनुष्य जाति का परम कल्याण होगा क्योंकि आज दिन बढ़ती हुई गुडागिरी, हत्या, बलात्कार, चोरी, डकैती इत्यादि का मूलकारण शराब का उत्पादन व प्रचार व प्रसार है।

प्रमुख चिन्तनीय विषय

जन सख्या की वृद्धि के सम्बन्ध में गम्भीर चिन्ता का विषय कुछ और ही है और वह है शासन द्वारा किसी वर्ग विशेष को जनसख्या की वृद्धि में छूट देना और दूसरे किसी वर्ग या जाति विशेष के लोगो पर प्रतिबन्ध लगाना। जबकि कानून सभी धर्म, जाति और वर्ग के लोगों के लिए एक समान होना चाहिए। परन्तु अल्पसख्यक आयोग ने भारत सरकार को यह सलाह दी है कि वह मुसलमानों के शरीयत कानून में कोई दखल न दे साथ ही मुसलमानों के लिए परिवार नियोजन सम्बन्धी कोई कानून नहीं बनना चाहिए।' भारत के मुसलमान परिवार नियोजन का इसलिए विरोध कर रहे हैं कि उनके विचार से कृत्रिम साधनों द्वारा ऐसा करना उनके मजहब के खिलाफ है। ऐसी अवस्था में यदि हिन्दुओं के लिए परिवार नियोजन सम्बन्धी कोई कानून बना और मुसलमानों को चार-चार शादी करने व अपनी सख्या दिन दूनी रात चौगुनी बढ़ाने की छूट दी गई तो कुछ ही दशाब्दियों में मुसलमान बहुसख्यक और हिन्दू अल्पसख्यक वर्ग मे परिणत हो जायेंगे। उस समय कतिपय मुस्लिम नेताओं के मनसूबे व इच्छानुसार यदि भारत दूसरा पाकिस्तान बन गया तो कोई आश्चर्य न होगा। उस समय हमारे नेताओं की धर्म निरपेक्षता और मुस्लिम तुष्टीकरण की नीति भी न रह जायगी जिसके मुसलमानो को परिवार नियोजन से छूट दी जा रही है। प्राप्त आंकड़ों के अनुसार भारत के स्वतन्त्र होने के बाद में अब तक मुसलमानों की सख्या हिन्दुओं की सख्या की तुलना में दुगनी बढ़ी है जिसकी बाबत खास वजह मुसलमानो को परिवार नियोजन से छूट देना है।

अत भारत सरकार को चाहिए कि वह यदि जनसख्या की वृद्धि को रोकने के लिए कोई कानून बनावे तो सभी वर्गों व धर्मों के लोगो पर समान रूप से लागू होने के लिए बनावे अथवा परिवार नियोजन से सभी को छूट दे।

—काशीनाथ शास्त्री
लोहिया (महाराष्ट्र)

गोवंश निर्यात कानून का उल्लंघन

पंजाब और हरियाणा से गोवंश का निर्यात कानूनन बन्द है फिर भी हावड़ा आदि के कसाईखानों के लिए दैनिक १५ २० गोवंश की बोगियां (जिनमें प्रत्येक में ८ गाय एवं ८ बछड़े होते हैं) केवल बाबा बकूरबस्ती रेलवे स्टेशन से निकलती हैं।

उक्त जानकारी देते हुए अखिल भारतीय गो संरक्षण परिषद के अध्यक्ष परम पूज्य महामण्डलेश्वर स्वामी श्री वीरेश्वर विदेही हरि जी महाराज ने दुःख प्रकट करते हुए कहा कि यह उस समय हो रहा है जबकि उन्हें रेलमन्त्री चौधरी बंसीलाल जी का एक विशेष पत्र मिला है कि रेलवे में गोवंश का लदान बन्द कर दिया है। जा रही बोगियो के नम्बर—१५७४१- ए. रेलवे २८०२८, २८८३० ए रेलवे, ६५०७२ सी आर ७५७२६ सी आर. ८१७००, २०८२२ सी आर, २१९८२ ब रेलवे, ३४६६३, १३६१४ ए. रेलवे, २५४८६ ५२४५१ हैं।

—छबी जीवन लाल, मांधव प्रधान मन्त्री
सर्वदलीय गोरक्षा महाभियान समिति
१८१ वालकेश्वर मार्ग, बम्बई

अंग्रेज आर्य समाज पर पाबंदी लगाना चाहते थे

—हरिदत्त वेदालंकार

वर्तमान शताब्दी के पहले दशक में ब्रिटिश सरकार आर्य समाज को राजद्रोही संस्था समझती थी। अंग्रेज समझते थे कि आर्य समाज के अधिवेशनों में ब्रिटिश सत्ता के विरुद्ध बगावत का प्रचार किया जाता है।

सन १९०७ के आरम्भ में अंग्रेजों को यह आशंका थी कि १८५७ के प्रथम स्वातन्त्र्य संग्राम की स्वर्ण जयन्ती के अवसर पर भारतवासी पुनः बड़े पैमाने पर विद्रोह करने वाले हैं। तत्कालीन भारत के ब्रिटिश स्वामित्व वाले अखबारों का कहना था कि पंजाब के सुप्रसिद्ध आर्य समाजी नेता लाला लाजपतराय ने एक लाख आदमियों की सेना एकत्र कर ली है और पंजाब में वे ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध प्रबल आन्दोलन चला रहे हैं। सरकार ने लाला लाजपतराय और सरदार अजीतसिंह को गिरफ्तार कर लिया और उन पर कोई मुकदमा चलाये बिना ही उन्हें निर्वासित कर मांडले (बर्मा) में नजरबन्द कर दिया।

उन दिनों अंग्रेज विद्रोह की आशंका से इतने अधिक भयभीत थे कि वाइसराय लार्ड मिन्टो, स्वयं अपने कथनानुसार, रात को राइफल बिस्तर पर रखकर सोया करते थे।

पंजाब के ब्रिटिश अधिकारी उस प्रान्त में राजद्रोह की भावना उत्पन्न करने के लिए प्रधान रूप से आर्य समाज को उत्तरदायी समझते थे। पंजाब के छोटे लाट सर डेन्जिल इबटसन ने आर्य समाजियों के एक शिष्ट मंडल से बड़े स्पष्ट शब्दों में कहा था कि उन्हें 'प्रायः सभी डिप्टी कमिश्नरों से यह सूचना मिली है कि जहां जहां आर्य समाज है, वह बगावत का केन्द्र है।

सेना विभाग के उच्च अधिकारियों द्वारा इस विषय में प्रस्तुत की गई रिपोर्टों तथा अन्य सामग्री के आधार पर मार्च १९१० में भारत के तत्कालीन प्रधान सेनापति ओ. एम क्रीच ने यह निर्णय किया कि सेना में आर्य समाजियों की भर्ती पर तुरन्त प्रतिबन्ध लगाने के बारे में आवश्यक आदेश जारी किये जाएं।

किन्तु गृह विभाग इसके लिये तैयार न हुआ और वाइसराय लार्ड मिन्टो ने जंगी लाट क्रीच के उपर्युक्त प्रस्ताव को अस्वीकृत कर दिया।

आर्य समाजियों का मामला पुनः

अप्रैल १९०८ में जाटों की दसवीं रेजीमेंट के बारे में यह प्रश्न सेना में पुनः उठाया गया। वर्तमान हरियाणा राज्य उन दिनों पंजाब प्रान्त का अंग था और आर्य समाज का एक प्रमुख गढ़ था। वहां के किसान जाटों में आर्य समाज अतीव लोकप्रिय था और हरियाणवी जाट बहुत बड़ी संख्या में सेना में भरती हुआ करते थे। कहा जाता था कि दसवीं जाट रेजीमेंट के सैनिकों में आर्य समाज का प्रभाव सबसे अधिक था।

१८९९में जब यह रेजिमेंट सिल्चर पहुंची तो वहां से प्रधान सेनापति को हिन्दी में बहुत से ऐसे गुमनाम पत्र मिले, जिनके आरम्भ में 'ओ३म' लिखा हुआ था, जिसे आर्य समाज में परमेश्वर का सर्वोत्तम नाम समझा जाता है। कुछ सैनिक अधिकारियों ने इसे सन्देह की दृष्टि से देखा। १९०४ में, जब रेजिमेंट कानपुर पहुंची, तो सिपाहियों ने अपनी आर्यसमाजी आदत के कारण कानपुर आर्यसमाज के साप्ताहिक सत्संगों में जाना शुरू किया। यह बात सैनिक अधिकारियों को बहुत आपत्तिजनक प्रतीत हुई। उन्होंने एक आज्ञा जारी करके सैनिकों के आर्यसमाज की सभाओं में जाने पर प्रतिबन्ध लगा दिया।

आर्य समाज की जांच

१९०६ में बंग भंग के बाद जब स्वदेशी आन्दोलन ने जोर पकड़ा तो सेना के महा-प्रशासक ने दसवीं जाट रेजिमेंट की राजद्रोहात्मक गतिविधियों की जांच का काम रेजिमेन्ट के अधिकारी लेफ्टिनेन्ट कर्नल प्रेसी को सौंपा।

कर्नल प्रेसी ने जांच की और जाट रेजिमेन्ट के सैनिकों में स्वदेशी के प्रचार की खबरों को सर्वथा निर्मूल और निराधार पाया। उन्हें केवल एक घटना इस प्रसंग में उल्लेखनीय लगी। वह यह थी कि दो वर्ष पूर्व उनके पूर्वाधिकारी लेफ्टिनेन्ट कर्नल हन्टर ने चार सिपाहियों को 'सत्यार्थ प्रकाश' रखने और मांस न खाने के आरोप में फौज से बर्खास्त कर दिया था। अपनी रिपोर्ट में प्रेसी ने कहा कि उनकी सम्मति में 'ये सभी आरोप तथ्यों पर आधारित नहीं है, अपितु कल्पना-प्रसूत है। लेकिन प्रेसी इस बात को अच्छी तरह समझ गये कि सरकार आर्य समाजी सैनिकों के प्रति कड़ा रुख अपनाना चाहती है, अतः उन्होंने अपनी रेजिमेन्ट के सिपाहियों पर कई प्रकार के प्रतिबन्ध लगाए।

मार्च १९०८ में कर्नल प्रेसी आठ महीने की लम्बी छुट्टी पर इंग्लैंड चले गये और मेजर राइट को उनके स्थान पर कमांडिंग अफसर बनाया गया। राइट को यह सूचना मिली कि सुबेदार हरिराय का गरम दल के नेता विपिनचन्द्रपाल से न केवल सम्पर्क है, अपितु वह कुछ सिपाहियों के साथ मिलकर गुप्त बैठकें भी करता है। इसके लिए उन्होंने उन सब व्यक्तियों को दंडित किया। उन्हीं दिनों प्रशिक्षण के लिए उस रेजिमेन्ट का कानपुर से मिदनापुर तबादला हुआ। बंगाल में उसके सैनिकों द्वारा सुप्रसिद्ध क्रान्तिकारी खुदीराम बोस के घर की तीर्थयात्रा की जाने की खबर गुप्तचरों ने अधिकारियों को दी। इस बीच प्रेसी छुट्टी से वापस आ गये और सरकार ने उन्हें पुनः उस रेजीमेन्ट की राजद्रोहात्मक गतिविधियों के बारे में जांच करके रिपोर्ट भेजने को कहा।

संस्कृत सत्यार्थप्रकाश के नये संस्करण का सार्वदेशिक सभा द्वारा प्रकाशन

'सत्यार्थ प्रकाश' में ठीक है

लेफ्टिनेन्ट कर्नल प्रेसी को रेजिमेन्ट के सैनिकों पर लगाये गये राजद्रोह के सभी आरोप निराधार प्रतीत हुए। उन्होंने अपनी रिपोर्ट में लिखा, 'व्यक्तिगत रूप से मुझे सत्यार्थ प्रकाश में राजद्रोह की कोई बात नहीं दिखाई देती है और यह आरोप सर्वथा निराधार प्रतीत होता है कि रेजिमेन्ट के अधिकांश सैनिक आर्य समाजी हैं।…मैं यह नहीं समझता हूं कि कोई व्यक्ति इतने मात्र से आर्यसमाजी कहलाने का अधिकारी हो जाता है कि वह उसकी सभा में सम्मिलित हुआ और या स्वामी दयानन्द सरस्वती की शिक्षाओं पर दिये जाने वाले भाषण सुनना पसन्द करता है।'

सेना में आर्य समाज का प्रभाव बढ़ने के बारे में कई अन्य रिपोर्टें प्रधान सेनापति को प्रस्तुत की गईं। अगस्त १९०८ में गुप्तचरों ने सरकार को यह सूचना दी कि साधुओं के वेश में बहुत से व्यक्ति भारतीय सेनाओं में बगावत का प्रचार कर रहे हैं। इस सूचना का आधार यह था कि एक आर्यसमाजी उपदेशक पं० दौलतराम ने झांसी छावनी के सैनिकों की एक सभा को सम्बोधित किया था तथा उसमें 'सत्यार्थ प्रकाश' की कथा की थी। इसके लिए एक उपदेशक को मैजिस्ट्रेट ने दंडित किया।

जाटों को सेना में भरती करने वाले अफसर मेजर जेमिसन ने नवम्बर १९०८ में यह रिपोर्ट दी कि 'जिन जिलों में जाटों की भरती होती है, उनमें आर्य समाज का प्रचार है और आर्यसमाज में राजद्रोह की शिक्षा दी जाती है। हिसार तथा करनाल के जाटों में इस ढंग का प्रचार करने वाले उपदेशक जाते रहते हैं और ऐसे राजद्रोही विचारों से ओतप्रोत आदमी भारतीय सेना का सिपाही बनने के लिए सर्वथा अनुपयुक्त और अवांछनीय है।'

बेली का नोट

इसी प्रकार की रिपोर्ट अन्य कई अधिकारियों से भी प्राप्त होने पर सेना विभाग के महाप्रशासक कार्यालय के मेजर बेली ने १ मार्च १९१० को

प्रधान सेनापति के विचारार्थ इस विषय में एक विस्तृत नोट लिखा। इसमें मेजर बेली ने कहा कि आर्य समाजी यद्यपि अपने राजनीतिक उद्देश्यों के बारे में कोई खुला प्रचार नहीं करते हैं, तथापि उनका लक्ष्य संक्षेप में यही है कि भारत भारतीयों के लिए है। वे स्वायत्त शासन तथा पंचायत पद्धति पर बल देते हैं, शासन के वर्तमान स्वरूप की खुली आलोचना करते हैं और ऐसे प्रयासों में कोई कसर नहीं रखते, जिनसे जनता के मन में वर्तमान शासन के प्रति असन्तोष उत्पन्न हो तथा उसमें स्वदेशी, स्वायत्तपन और आत्म-त्याग की भावना बढ़े।

इस आधार पर आर्य समाज को राजद्रोही सिद्ध करते हुए मेजर बेली ने यह सुझाव दिया था कि पहले तो भारतीय सेना में आर्य समाज के प्रभाव, आर्य समाज को मानने वालों की संख्या और उनके पदों के विषय में पूरी जानकारी एकत्र की जानी चाहिए और फिर सेना में आर्य समाज के घातक प्रभाव को बढ़ने से रोका जाना चाहिए।

प्रधान सेनापति का फैसला

मेजर बेली की रिपोर्ट एक अन्य उच्च सैनिक अधिकारी बारेट की टिप्पणी के साथ २२ मार्च १९१० को प्रधान सेनापति के समक्ष निर्णय के लिए प्रस्तुत की गई। किन्तु प्रधान सेनापति क्रीच ने उनसे असहमति प्रकट करते हुए कहा 'मैं इस विषय में सुझाई गई प्रक्रिया का क्रम उलट देना चाहता हूं। पहले सेना में आर्य समाजियों के प्रवेश को रोकने के लिए कदम उठाए जाने चाहिए और बाद में इस बात की जांच की जानी चाहिए कि सेना में आर्य समाज का प्रभाव किस मात्रा में है।'

गृह-विभाग का विरोध

उपर्युक्त नोट जब तत्कालीन गृह सचिव और वाइसराय की कौंसिल के होम मेम्बर के पास भेजे गये तो दोनों ने प्रधान सेनापति क्रीच के प्रस्ताव का कड़ा विरोध किया। गृह सचिव एच स्टुअर्ट मानते थे कि यदि सैनिक अधिकारियों ने ऐसा आदेश जारी किया तो निश्चय ही इस विषय पर भारत सरकार को आवेदन-पत्र दिए जायेंगे भारत मंत्री को स्मृति पत्र भेजे जायेंगे और पार्लमेंट में प्रश्न उठाए जायेंगे। होम मेम्बर एडम्सन ने भी इस निर्णय का विरोध करते हुए जोर देकर कहा कि इस विषय में पंजाब और संयुक्त प्रांत की सरकारों की सम्मति जान कर उसके बाद ही कोई कार्यवाई की जाए।

उन दोनों प्रांतों की सरकारों ने भी प्रधान सेनापति के निर्णय के विरुद्ध सम्मति दी। इस बारे में तत्कालीन गृह सचिव की टिप्पणी में कहा गया था कि इन सरकारों का कहना है कि समूचे आर्यसमाज को राजद्रोही संस्था घोषित करना नितांत मूर्खतापूर्ण कार्य होगा।

किन्तु सेना विभाग अपने निर्णय को स्वीकृत कराने के लिए लगातार आग्रह करता रहा। प्रधान सेनापति ने संयुक्त प्रांत के उप-पुलिस अधीक्षक नेल्सन की लिखी 'संयुक्त प्रांत में आर्य समाज' नामक पुस्तक पढ़ने के बाद २८ मई, १९१० को पुन एक टिप्पणी में लिखा, यदि इस पुस्तक की बातें सही हैं, तो मेरी सम्मति में यह और भी अधिक आवश्यक हो जाता है कि सेना में आर्य समाज के प्रसार को रोकने के लिए आवश्यक कदम उठाए जाए।'

वाइसराय का आदेश

इस प्रकार जब सेना विभाग और गृह विभाग अपने अपने दृष्टिकोण पर अड़ गए तो इस विषय के सारे कागजात अन्तिम निर्णय के लिए वाइसराय लार्ड मिंटो के समक्ष प्रस्तुत किये गये। वाइसराय ने १७ जून, १९१० को इस मामले में अपना आदेश दिया और उसमें गृह विभाग का समर्थन करते हुए लिखा।

'मेरी सम्मति से समूचे आर्य समाज को राजद्रोही होने के कारण अवैध घोषित करना गम्भीर राजनीतिक गलती होगी। सेना में आर्य समाजियों की भरती पर लागू किये जाने वाले भारत सरकार के निर्णय को इसी रूप में देखा जाएगा। मुझे इसमें तनिक भी सन्देह नहीं है कि ऐसा निर्णय भारत में और इंगलैंड में भयंकर विरोध उत्पन्न करेगा।'

इस प्रकार वाइसराय लार्ड मिंटो ने सेना में आर्य समाजियों की भरती पर सामान्य रूप से प्रतिबन्ध लगाने के प्रधान सेनापति क्रीच के प्रस्ताव को रद्द कर दिया। असल में वे अपनी पिछली गलती को दुहराकर नई मुसीबत मोल नहीं लेना चाहते थे। तीन वर्ष पहले १९०७ में पंजाब सरकार के छोटे लाट सर डेन्जिल इबटसन के आग्रह पर उन्होंने लाला लाजपतराय और सरदार अजीत सिंह को गिरफ्तार करके बगैर मुकदमा चलाए मांडले भेज दिया था। उन अवैध गिरफ्तारियों के विरुद्ध भारत में इतना प्रबल आन्दोलन और ब्रिटिश पार्लमेन्ट में इतना हंगामा हुआ कि भारत मन्त्री लार्ड मार्ले के आग्रह पर उन्हें छह महीने बाद उन दोनों नेताओं को रिहा कर देना पड़ा था। अब वे प्रधान सेनापति के आग्रह पर सेना में आर्य समाजियों की भर्ती पर पाबन्दी लगाकर नया जन आन्दोलन नहीं खड़ा करना चाहते थे।

(प्रे ट्र फीचर)

भारत के राजनैतिक पुनर्जागरण पर आर्य समाज का प्रभाव

—डा० डी. पी. श्रीवास्तव पी.एच.डी.

(४)

आर्य समाज के समाज सुधार सम्बन्धी कार्यों से भारतीय समाज का पर्याप्त मात्रा में लोकतन्त्रीकरण हुआ जिसे आधुनिक भारत के राजनैतिक पुनर्जागरण के निमित्त एक महत्त्वपूर्ण सोपान कहा जा सकता है। सामाजिक सुधार का आधार दयानन्द ने पश्चिम के आदर्शों से ग्रहण न करके अपने देश के प्राचीन आदर्शों से ग्रहण किया यह बात राष्ट्रीय पुनर्जागरण की दृष्टि से बहुत महत्त्वपूर्ण है। इससे सामाजिक सुधार के कार्यों को भारत में राष्ट्रीय दिशा प्राप्त हुई और दयानन्द के विचारों को वे कट्टर पंथी हिन्दू भी अपना सके जो पश्चिमी सभ्यता से नाक-भौं सिकोड़ते थे। दयानन्द के समाज सुधार सम्बन्धी विचारों ने देश-भक्ति की भावना जागृत की। उनका कहना था कि भारत पर विदेशी शासन इस कारण स्थापित हुआ कि भारत के सामाजिक जीवन में अनेक विकृतियों का समावेश हो गया और वैदिक आदर्शों का पतन हो गया। उनकी समस्त शिक्षाओं में यह बात अन्तर्निहित थी कि यदि भारतीय लोगों में पुनः वैदिक आदर्शों का समावेश हो जाए तो वे पुनः स्व-शासन के योग्य हो जाएंगे।

दयानन्द के राष्ट्रवादी विचार व कार्य आधुनिक भारत के राजनैतिक पुनर्जागरण में उल्लेखनीय हैं। राष्ट्रीय पुनरुत्थान का आह्वान करने में दयानन्द ने ऐसी बातों पर जोर दिया कि भारतीय लोग अपने आर्य स्वाभिमान को न भूलें, आत्म-विश्वास को न खोवें और स्वयं अपनी उन्नति के प्रयास करें। आर्य समाज ने प्राचीन भारत की गरिमा से प्रेरणा ग्रहण की और केशवचन्द्र सेन के ब्रह्म समाज की इस कारण आलोचना की कि वह हिन्दुओं की हीनता को स्वीकार करता था और भारत में सामाजिक तथा धार्मिक सुधार इस निमित्त करना चाहता था कि अंग्रेजी पढ़े-लिखे भारतवासी पाश्चात्य सामाजिक व्यवहार के अनुकूल बन जायें। जबकि केशवचन्द्र का कहना था कि बृटिश शासन ने भारतवासियों को अपने स्वयं की दासता से मुक्त किया है दयानन्द का कहना था कि भारतवासियों को अपने स्वयं के प्रयत्नों से भारत की प्राचीन महानता को पुर्नस्थापित करना चाहिये। दयानन्द को प्राचीन भारत के अप्रतिम ज्ञान में उत्कट विश्वास था। उनका कहना था कि "जितनी विद्या विश्व में फैली है वह सब आर्यावर्त देश से मिश्र वालों उनसे यूनान और उनसे यूरोप देश में तथा उससे अमेरिका आदि देशों में फैली है।" दयानन्द का प्राचीन भारत पर आधारित राष्ट्रवाद इस बात से सिद्ध है कि उन्हें हिन्दू नाम तक से इस कारण चिढ़ थी कि हिन्दू शब्द फारसी भाषा से निकला है वे हिन्दू शब्द के स्थान पर 'आर्य' शब्द का प्रयोग पसन्द करते थे।

दयानन्द की स्वदेश भक्ति और निर्भीकता का प्रमाण जनवरी सन १८७३ में अंग्रेज गवर्नर जनरल लार्ड नार्थब्रुक से हुई उनकी भेंट से मिलता है। नार्थब्रुक के यह पूछने पर कि क्या आप अपने व्याख्यानों के प्रारम्भ में ईश्वर से "देश पर अखण्ड अंग्रेजी शासन के लिये प्रार्थना भी किया करेंगे?" स्वामी दयानन्द ने उत्तर दिया कि 'मैं किसी ऐसी बात को मानने में असमर्थ हूं क्योंकि यह मेरा दृढ़ विश्वास है कि मेरे देशवासियों को अबाध राजनीतिक उन्नति और संसार के राष्ट्रों में समानता का दर्जा पाने के लिए शीघ्र पूर्ण स्वतन्त्रता मिलनी चाहिए। श्रीमान जी! ईश्वर से नित्य सायं प्रातः उसकी अपार कृपा से इस देश की विदेशियों की दासता से मुक्ति की हो मैं प्रार्थना करता हूं।" लार्ड नार्थब्रुक ने इस घटना का उल्लेख इंडिया आफिस, लन्दन को भेजी जाने वाली अपनी एक साप्ताहिक रिपोर्ट में किया था और भारत सचिव को सूचित किया था कि सरकार को इस विद्रोही फकीर पर निगाह रखने के आदेश दे दिये गये हैं।

सर वेलेंटाइन चिरोल, जिन्होंने इंग्लैंड के 'दी टाइम्स' नामक समाचार पत्र की ओर से भारत में फैली हुई अशांति का पता लगाने के लिए इस देश का १९०७ से १९१० तक भ्रमण किया, ने लिखा था कि उस समय आर्य-समाज ब्रिटिश शासन विरोधी राजनैतिक आन्दोलन से घनिष्ठ रूप से सम्बन्धित था। चिरोल के विचार का खण्डन करते हुए प्रसिद्ध आर्य समाजी नेता मुंशी राम और रामदेव ने लिखा था कि आर्य समाज ब्रिटिश शासन समाप्ति के हेतु कार्य नहीं कर रहा था। इसके विपरीत आर्य समाज की मान्यता थी कि उस देश में राजनैतिक आन्दोलन करना निरर्थक है जहां लाखों मानव अछूत माने जाते हैं ऐसे देश की स्वतन्त्रता और लोकतन्त्र की बात करना शोभनीय नहीं है। भारत में विदेशी शासन तब तक जारी रहेगा जब तक देश में धार्मिक और सामाजिक सुधार नहीं हो जाते। मुंशीराम का कहना था कि एक आर्य इंग्लैंड के निष्पक्ष और धर्म-सहिष्णु शासन के स्थान पर मूर्तियों की पूजा करने वाले हिन्दुओं अथवा गाय का वध करने वाले मुसलमानों का शासन पसन्द नहीं करेगा।

१—'सत्यार्थ प्रकाश' पृ० ६६-७७
२—दयानन्द के शब्द, उद्धृत, हरबिलास सारदा, "लाइफ आफ दयानन्द सरस्वती" पृ० १६५
३—"सत्यार्थ प्रकाश", पृ० २१४
४—लाजपतराय "ए हिस्ट्री आफ दी आर्य समाज" पृ० २०३
५—"सत्यार्थ प्रकाश पृ० २६४

आर्यसमाजों की गतिविधियां

बधाई

आर्यसमाज मैनपुरी के साप्ताहिक सत्संग दिनांक १९-९-८५ की यह साधारण सभा प्रयाग उच्च न्यायालय के न्यायमूर्ति माननीय पं० बनवारी लाल यादव द्वारा संस्कृत में दिये गये निर्णय पर हार्दिक प्रसन्नता प्रकट करती है और माननीय न्यायाधीश को कोटिशः बधाइयां भी सेवार्पित करती हैं जिन्होंने संस्कृत में निर्णय देकर देव-वाणी को गौरवान्वित करने के साथ-साथ स्वतन्त्र भारत के इतिहास में एक अनुपम अध्याय की सृष्टि की है और इस राष्ट्र के कोटि-२ जनमानसों में श्रद्धापूर्ण स्थान बनाया है।

यह सभा आर्य जगत की शिरोमणि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा एवं सभी प्रादेशिक आर्य प्रतिनिधि सभाओं से भी अनुरोध करती है कि इस निर्णय की प्रतिलिपियां लेकर अपनी प्रमुख पत्रिकाओं में प्रकाशित कर जन-जन को प्रेरणा देते हुए देववाणी संस्कृत के व्यापक प्रसार को दिशा दें ताकि उसके पठन पाठन एवं दैनिक व्यवहार का मार्ग प्रशस्त हो सके।

—नरेन्द्रार्य (अन्तरंग सभासद्)
आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र०

स्वामी विद्यानन्द जी सरस्वती प्रधान मन्त्री श्री राजीव गांधी द्वारा सम्मानित:

आर्य विद्वत परिषद् के संयोजक श्री स्वामी विद्यानन्द जी सरस्वती को उनकी 'तत्वमसि' पुस्तक पर उत्तर प्रदेश संस्कृत अकादमी की ओर से प्रधानमन्त्री श्री राजीव गांधी द्वारा ५,०००/-रुपये का विशेष पुरस्कार व प्रशस्ति पत्र से सम्मानित किया गया। यह समारोह मंगलवार ७ मई १९८५ को तीनमूर्ति भवन में उत्तर प्रदेश के राज्यपाल की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ व मुख्य मन्त्री श्री नारायण दत्त तिवारी ने सभी विद्वानों का माल्यार्पण द्वारा सम्मान किया।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा तथा दिल्ली की आर्यसमाजों, आर्य शिक्षण संस्थाओं की ओर से हम उन्हें हार्दिक बधाई देते हैं, तथा उनकी दीर्घायु की प्रभु से कामना करते हैं।

— डा० धर्मपाल आर्य
सभा-महामन्त्री

श्री पं० विश्वनाथ जी विद्यालंकार सम्मानित

'उत्तर प्रदेश संस्कृत अकादमी' ने वेदोपाध्याय पण्डित विश्वनाथ जी विद्यालंकार जी का अथर्ववेद के कां० सं० ११, १२, व १३ के भाष्य पर सम्मान किया है। ये पुस्तक आपने न्यास में ही छप रही है। इस समय पं० जी की आयु ९६ वर्ष की है तथा वे अभी अथर्व वेद का भाष्य कर रहे हैं व ११-२० कां० का पहले कर चुके हैं। आपने सामवेद का आध्यात्मिक भाष्य भी किया है।

—प्रतापसिंह चौधरी
चौधरी नारायणसिंह प्रताप सिंह
धर्मार्थ न्यास करनाल

डा० देव शर्मा संस्कृत विभागाध्यक्ष नियुक्त

आर्य समाज शिक्षा सभा अजमेर ने अपने अधीनस्थ संचालित दयानन्द महाविद्यालय के संस्कृत स्नातकोत्तर विभाग के अध्यक्ष पद पर गुरुकुल कांगड़ी के स्नातक डा० देव शर्मा वेदालंकार को विभागाध्यक्ष नियुक्त किया है। डा० देवशर्मा ने अपना कार्य विधिवत् संभाल लिया है।

श्री वेदालंकार अच्छे वक्ता, उच्चकोटि के विद्वान् तथा अत्यन्त मधुरभाषी हैं। आपके पिता श्री रामनारायण जी शास्त्री (बिन्दकी कानपुर) मूर्धन्य आर्य विद्वानों में से थे।

—आर्यसमाज शिक्षा सभा
अजमेर

उत्सव

आर्यसमाज, अल्मोड़ा का ८१वां वार्षिकोत्सव ९, १०, ११ जून, १९८५ को सानन्द सम्पन्न हुआ। उत्सव में स्वामी गुरुकुलानन्द सरस्वती, आचार्य वीरेन्द्र मुनि शास्त्री तथा आचार्य ओमित्र शास्त्री (क्रमशः उपाध्यक्ष एवं मन्त्री, विश्ववेद-परिषद्, लखनऊ) एवं श्री पन्नालाल जी "पीयूष", संगीताचार्य के धार्मिक एवं सामजिक विषयों पर हुए सारगर्भित प्रवचनों तथा भजनोपदेशों और सन्ध्या, यज्ञ, प्रार्थना के पवित्र वातावरण ने उपस्थित श्रोताओं को आनन्दित कर दिया। इस अवसर पर एक विवाह संस्कार भी आचार्य ओमित्र शास्त्री के पौरोहित्य में सम्पन्न हुआ। उत्सव को सम्पन्न करने के लिये तन, मन, धन से सहयोग देने वाले सभी महानुभावों के प्रति समाज के अधिकारियों के द्वारा कृतज्ञता व्यक्त की गई।

— डा० जयदत्त उप्रेती शास्त्री
मन्त्री,
आर्य समाज, अल्मोड़ा

डी. ए. वी. शताब्दी स्मारक होस्टल रांची का शिलान्यास

प्रो० वेद व्यास प्रधान डी० ए० वी० कालेज मैनेजिंग कमेटी (दिल्ली) द्वारा डी० ए० वी० पब्लिक स्कूल बोकारो स्टील सिटी के प्रांगण में १० लाख रुपए से बनने वाले होस्टल का १६-५-८५ को शिलान्यास किया गया। इसमें मुख्यत: छोटा नागपुर के पिछड़े हुए आदिवासियों के प्रतिभावान १०० छात्रों की शिक्षा और आवास आदि की व्यवस्था रहेगी।

श्री मुनीश्वर चन्द्र दे तरफदार (मैनेजिंग डाइरेक्टर बोकारो स्टील प्लांट)ने शताब्दी समारोह की अध्यक्षता की।

डी. ए. वी. शताब्दी वैदिक प्रतिष्ठान कैम्प

इस क्षेत्र के १० डी० ए० वी० पब्लिक स्कूलों के १०० छात्रों ने सात दिवसीय शिविर में भाग लिया। छात्रों ने दैनिक संध्या हवन के मन्त्र शुद्ध उच्चारण व भावार्थ सहित कण्ठस्थ किए।

श्री प्रो० रत्नसिंह, श्री पं०जयमगल आदि विद्वानों के उपनिषदों, वेदों और वैदिक धर्म एवं वैदिक संस्कृति पर उपदेश व व्याख्यान भी हुए। सरल योग प्रशिक्षण भी दिया गया। —ऐन० डी० ग्रोवर

डी० ए० वी० पब्लिक स्कूल

राजेन्द्र नगर (रांची)

विविध समाचार

—वैदिक साधन आश्रम तपोवन देहरादून में विद्या निकेतन के भवन का शिलान्यास भूतपूर्व नगरपालिका अध्यक्ष कुंवर बृजभूषण ने किया और पांच सौ रुपये आश्रम को प्रदान किए – आश्रम के अधिकारियों की ओर से धन्यवाद किया गया।

५—श्री दीनानाथ सिद्धान्तालंकार कुछ समय से अस्वस्थ चल रहे हैं, भगवान उनको शीघ्र निरोग करें – वह इस समय ८२ वर्ष के हैं।

—आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के युवा मन्त्री श्री रामनाथ जी सहगल सूचित करते हैं कि डी० ए० वी० शताब्दी वैदिक प्रशिक्षण शिविर जो कि ५ मई से आरम्भ हुआ था बड़ी सफलता से सम्पन्न हुआ। इस शिविर में एक सौ छात्रों ने भाग लिया और सभी का प्रथम उपनयन संस्कार किया गया—वयोवृद्ध आर्य नेता तथा सभा के प्रधान प्रो० वेद व्यास जी के प्रभावशाली तथा सारगर्भित प्रवचनों से छात्र तथा अन्य श्रोताओं ने लाभ उठाया।

इस शिविर में भिन्न-२ विषयों पर समय-२ पर अनेक विद्वानों के उपदेश होते रहे—मुख्यत. प्रो० रतनसिंह जी तथा बाबू दरबारी लाल जी ने आज की स्थिति में अंग्रेजी माध्यम से बच्चों की शिक्षा का विस्तार से डी० ए० वी० का दृष्टिकोण बताते हुए घोषणा की कि डी० ए० वी० स्कूल (चाहे वह पब्लिक स्कूल है) का अन्तिम लक्ष्य आर्य समाज के सिद्धान्तों का प्रचार तथा आर्य समाज को शक्तिशाली बनाना है।

उन्होंने माना कि डी० ए० वी० संस्थाओं में वांछित धर्म शिक्षा का अधिक ऊंचे स्तर पर न होने का कारण आर्यसमाजी प्रि० और अध्यापकों का न मिलना और बताया कि वह इस दिशा में प्रयत्नशील है आर्य जनता से सहयोग की प्रार्थना की गई।

आर्य वीर दल, दिल्ली का शिविर सम्पन्न
श्री सूर्यदेव जी द्वारा बच्चों को पुरस्कार

आर्य वीर दल, दिल्ली प्रदेश का ग्रीष्मकालीन शिविर ३१ मई से २ जून ८५ तक राम देवी पुत्री पाठशाला कृष्ण नगर में सम्पन्न हुआ जिसमें यमुनापार की समाजों से १९ नवयुवकों ने उत्साहपूर्ण भाग लिया। शिविरार्थियों हेतु खाने पीने एवम् ठहरने की नि:शुल्क व्यवस्था की गई।

रविवार, २ जून को समापन समारोह के अवसर पर आर्य वीरों ने व्यायाम, प्राणायाम एवं लाठी चलाने का सुन्दर कार्यक्रम प्रस्तुत कर उपस्थित दर्शकों का मन मोह लिया। इस अवसर पर सभा प्रधान श्री सूर्यदेव जी ने सभा को सम्बोधित करते हुये कहा कि आज की विषम परिस्थितियों में देश एवम समाज को निष्ठावान आर्य वीरों की परम आवश्यकता है। युवकों में अथाह एवम् असीमित शक्ति को एक नियन्त्रित कार्य पद्धति में परिणत कर आर्य वीर दल ने सराहनीय कार्य किया है। उन्होंने एक बार फिर आश्वास्त किया कि आर्य वीरों को उत्साहित एवम प्रोत्साहित करने हेतु सभा कभी पीछे नहीं रहेगी।

सार्वदेशिक आर्य वीर दल के तत्वावधान में प्रान्तीय आर्य वीर दल के शिविरों की सूचना

(१) ब्रह्मचर्य प्रशिक्षण शिविर २४-६-८५ से ३०-६-८४ तक आत्म शुद्धि आश्रम रोहतक में होगा।

(२) दिल्ली प्रदेश का प्रान्तीय शिविर १-७-८५ से ७-७-८५ तक रघुमल कन्या विद्यालय मद्रास होटल में लगाया जा रहा है।

(३) पलवल में २०-६-८५ को दसके शिविर का उदघाटन शिक्षा शास्त्री श्री कन्हैयालाल जी करेंगे।

(४) हरियाणा प्रान्तीय महासम्मेलन इस बार २० से २२ सितम्बर तक कैथल में होगा।

अभिनन्दन

(५) आर्य समाज जीतपुर मेरठ की एक विशाल जनसभा में लाला रामगोपाल जी शालवाले का हार्दिक स्वागत किया गया। लाला जी ने देश की अवस्था पर प्रकाश डालते हुए आर्य समाज द्वारा की जा रही सेवाओं की जानकारी दी। इस अवसर पर महाशय जगतसिंह के सम्बन्ध में लिखी पुस्तक भेंट की गई। श्री ओम्प्रकाश शास्त्री खतौली वाले तथा श्री सच्चिदानन्द शास्त्री के ओजस्वी भाषण हुए।

निर्वाचन

आर्य समाज चूना मण्डी पहाड़गंज नई दिल्ली का वार्षिक निर्वाचन तिथि ९-६-८५ रविवार को प्रात. ९ ३० बजे आचार्य पं० हरिदेव जी की अध्यक्षता में निम्न प्रकार से सम्पन्न हुआ।

प्रधान—श्री प्रियतमदास जी रसवन्त

उपप्रधान—श्री बन्सीलाल जी पाहूजा

,, श्री गणेशदास जी

,, श्री प्रेमप्रकाश जी चोपड़ा

मन्त्री—श्री सुरेन्द्र कुमार जी पाहूजा

कोषाध्यक्ष—श्री चिरंजीलाल जी दुआ

अधिष्ठाता आर्य वीर दल—श्री सतीश जी भाटिया

—श्यामदास सचदेवा, उपमन्त्री

शोक समाचार

पं० भूदेव जी शास्त्री के निधन पर आर्यसमाज मैनपुरी में एक विशाल शोक सभा का आयोजन कर दिवंगत आत्मा की सद्गति के लिए प्रार्थना की गई।

२—आर्य समाज फिरोजाबाद के कोषाध्यक्ष श्री प्रेम नारायण जी के योग्य सुपुत्र श्री लोकेश शर्मा के आकस्मिक मृत्यु पर अति दु:ख प्रकट किया।

३—स्वामी देवानन्द जी संस्थापक गुरुकुल आर्य नगर हिसार तथा वेद मन्दिर फतेहाबाद) का २०-५-८५ को एक दुर्घटना में निधन होने पर गुरुकुल हिसार के आचार्य श्री रामस्वरूप जी शास्त्री की अध्यक्षता में शोक सभा का आयोजन किया गया और स्वामी जी के बीते जीवन की क्रान्तिकारी घटनाओं का वर्णन किया गया तथा श्रद्धांजलि दी गई।

उत्सव

(६) बरेली में उत्तर प्रदेश का शिविर सफलता पूर्वक सम्पन्न इसमें लगभग ७५ युवको ने भाग लिया।

आवश्यकता है

गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन मे निम्न रिक्त स्थानों के लिए प्रत्याशियों के योग्यता तथा न्यूनतम वेतन का उल्लेख करते हुए आवेदन पत्र ३० जून ८५ तक के लिए आमन्त्रित किये जाते हैं —

१	प्रधानाचार्य	१	प्रशासन का अनुभव, संस्कृत, दर्शन वेद का अध्ययन करा सकें। योग्यता सम्बन्धित विषय मे एम ए आचार्य।
२	संस्कृत अध्यापक	१	साहित्याचार्य, वाराणसी संस्कृत वि० वि० परीक्षोत्तीर्ण, ५ वष का अनुभव हो।
३	व्याकरणाचार्य	१	व्याकरणाचार्य, वाराणसी संस्कृत वि० वि० परीक्षोत्तीण ३ वष का अनुभव हो।
४	बी टी सी	१	जो ५ वर्ष का अनुभव रखता हो।
५	चौकीदार	२	सेना निवृत्त बन्दूक के लाइसेंन्स वालो को वरीयता दी जावेगी।
६	लिपिक	१	जो हिन्दी, अंग्रेजी का टकण कर सके, ३ साल का अनुभव हो।
७	संरक्षक	२	कम से कम शास्त्री परीक्षोत्तीर्ण आर्य विचार धारा वाले को वरीयता, आयु ४० वष से ऊपर हो।

—स्वामी कर्मानन्द
मुख्याधिष्ठाता
गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन

प्रवेश

—आर्ष गुरुकुल ऐरवा कटरा इटावा में प्रवेश १५ जूनसे प्रारम्भ जिसकी अन्तिम तिथि ३० जुलाई है। प्रवेश पाने वाले बच्चे हिन्दी पचम् कक्षा उत्तीर्ण प्रवेश पा सकते है। महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक से सम्बन्धित। परीक्षा प्रथमा से लेकर आचार्य पर्यन्त की मान्यता है।

—स्वामी देवानन्द कृते प्रधानाचार्य

—दयानन्द गुरुकुल पटल मार्ग गाजियाबाद मे प्रवेश चालू है। जो सज्जन अपने बच्चो को गुरुकुलीय शुद्ध वातावरण मे शिक्षा दिलाना चाहते है वे सम्पर्क निम्न पते पर करें। दयानन्द गुरुकुल
पटेल मार्ग गाजियाबाद ८३

—गुरुकुल होशगाबाद मे प्रवेश प्रारम्भ आ र्य प्रतिनिधि सभा मध्य प्रदेश व विदर्भ के द्वारा सचालित ग्राम कुञ्जो के मध्य नर्मदा नदी के पावन तट पर स्थित पाचवीं कक्षा उत्तीर्ण विद्यार्थियो का २० जून से ३० जुलाई तक प्रवेशहेतु निम्न पते पर सम्पर्क करें। —प्रबन्धक गुरुकुल होशगाबाद (म प्र)

—गुरुकुल महाविद्यालय शुक्रताल मुजफ्फर नगर उ० प्र० में प्रवेश १ जुलाई से आरम्भ है। ६ से शास्त्री तक सभी विषयों का हिन्दी संस्कृत अंग्रेजी गणित आदि विषयों के शिक्षण की व्यवस्था है। प्रवेश न्यूनतम योग्यता पांचवी पास प्रवेश सम्बन्धी जानकारी हेतु निम्न पते पर सम्पर्क करे। प्रधानाचार्य
गुरुकुल महाविद्यालय शुकताल मुजफ्फरनगर (उ०प्र०)

दिल्ली के स्थानीय विक्रेताः—
(१) मै० इन्द्रप्रस्थ आयुर्वेदिक स्टोर, ३७७ चादनी चौक, (२) मै० ओम् आयुर्वेदिक एण्ड जनरल स्टोर सुभाष बाजार, कोटला मुबारकपुर (३) मै० गोपाल कृष्ण भजनामल चड्ढा, मेन बाजार पहाड गज (४) मै० शर्मा आयुर्वेदिक फार्मेसी, गडोदिया रोड, आनन्द पर्वत (५) मै० प्रभात केमिकल क०, गली बताशा, खारी बावली (६) मै० ईश्वर दास किसन लाल, मेन बाजार मोती नगर (७) श्री वैद्य भीमसेन शास्त्री ५३७ लाजपतराय मार्किट (८) दि-सुपर बाजार, कनाट सर्कस, (९) श्री वैद्य मदन लाल ११ शकर मार्किट, दिल्ली।

शाखा कार्यालयः—
६३, गली राजा केदार नाथ, चावड़ी बाजार, दिल्ली-६
फोन नं० २६६८३८

सार्वदेशिक प्रेस, दरियागज नई दिल्ली में मुद्रित तथा रघुनाथप्रसादपाठक मुद्रक और प्रकाशक के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन, नई दिल्ली-२ से प्रकाशित।

ओ३म्
सार्वदेशिक
साप्ताहिक

सृष्टिसम्वत् १९७२९४९०८६] सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र दयानन्दाब्द १६१ दूरभाष । ३७४७७१
वर्ष २० अङ्क १०] श्रावण कृ० ७ सं० २०४२ रविवार ७ जौलाई १९८५ वार्षिक मूल्य २०) एक प्रति ४० पैसे

युवा शक्ति को चरित्रोन्मुख करके उनमें राष्ट्रीयता के भाव जगाइये ।

आर्य वीर दल के विकास में आर्थिक अभाव नहीं होने दूंगा

गुरुकुल झज्जर में आर्य वीर व्यायामशाला का सभा-प्रधान द्वारा शिलान्यास

गुरुकुल झज्जर में आर्यवीरदल शिक्षक प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न

झज्जर २३ जून ।

स्वामी ओमानन्द सरस्वती द्वारा संस्थापित गुरुकुल झज्झर में सार्वदेशिक आर्य वीर दल प्रशिक्षण शिविर बड़े ही उत्साह वीरोचित वातावरण में सम्पन्न हुआ । इस अवसर पर सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री लाला रामगोपाल शालेवाले, मन्त्री श्री ओम्प्रकाश त्यागी, भू०पू० रक्षामन्त्री श्री प्रो० शेरसिंह तथा सार्वदेशिक आर्य वीर दल के प्रधान संचालक श्री पं० बालदिवाकर हंस पूज्य स्वामी ओमानन्द

गुरुकुल झज्जर आर्य वीर दल शिक्षक प्रशिक्षण शिविर मे सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री लाला रामगोपाल वानप्रस्थ ने प्रशिक्षण में सुधे आर्य वीरों का यशोगान करते हुए घोषणा की कि आर्य वीर दल के प्रचार-प्रसार हेतु आर्थिक अभाव नहीं होने दिया जायेगा । सभा-मन्त्री श्री ओम्प्रकाश त्यागी पीछे दिखाई दे रहे हैं । दाहिनी ओर श्री बाल दिवाकर हंस प्रधान संचालक आर्य वीर दल राजस्थान आर्य वीर दल के संचालक श्री सत्यवीर एम०ए० से आवश्यक मन्त्रणा कर रहे हैं ।

सरस्वती आदि अनेक लब्ध प्रतिष्ठित आर्य नेता उपस्थित थे ।

शिविर में १७३ आर्य वीरों ने भाग लिया, प्रशिक्षण के पश्चात् उन्हें शिक्षक, सह शिक्षक एवं शाखा नायक आर्य वीर दल की उपाधियों से अलंकृत किया गया । इस अवसर पर दीक्षान्त भाषण में वीरों को उद्‌बोधित करते हुए श्रीयुत शालवाले ने कहा कि आर्यसमाज की भावी आशा आर्य वीर दल को सुसंगठित करने में निहित है । आपने कहा कि "मैं सभा प्रधान के नाते आप लोगों को आश्वासन देता हूं कि दल संगठन के प्रसार हेतु आर्थिक कठिनाई आप लोगों को अनुभव नहीं करने दी जायेगी । युवा शक्ति को चरित्रोन्मुख करके उनमें राष्ट्रीयता के भावों को जगाइये ।" लाला जी ने साधना मन्दिर आर्य वीर व्यायामशाला का भी शिलान्यास किया ।

सभामन्त्री श्री ओम्प्रकाश त्यागी ने दल के संगठन की गरिमा और उसके औचित्य पर प्रकाश डालते हुए कहा कि—"आर्यसमाज के कार्य कर्त्ताओं को चाहिये कि वह अपना सर्वात्मना और सर्वतोमुखी सहयोग आर्य वीर दल कार्यकर्त्ताओं को प्रस्तुत करें अन्यथा आर्य समाज भवन खाली पड़े रह जायेंगे । आपने श्री हंसजी को बधाई दी कि उन्होंने अपने सहयोगियों का अच्छा चयन करके दल को सुदृढ़ दिशा दी है ।

प्रो० शेरसिंहजी ने आश्वासन दिया कि हरियाणा सभा आर्य वीर दल के हक में प्रांतीय स्तर पर योग्य शिक्षक नियुक्त करेंगी । स्वामी ओमानन्द सरस्वती ने ओजस्वी शब्दों में आर्य वीर दल संचालकों की भूरि-भूरि प्रशंसा करते हुए दृढ़ शब्दों में आश्वास्त किया कि मैं आर्य वीरदल का एक स्थाई प्रशिक्षण केन्द्र हरियाणामें स्थापित करने की आवश्यकता अनुभव करता हूं । आपने दल के प्रधान संचालक श्री बालदिवाकर हंस से अनुरोध किया कि इसलिए गुरुकुल भूमि में आज ही मान्य लाला रामगोपाल जी प्रधान सभा से साधना मन्दिर आर्य वीर दल व्यायामशाला का शिलान्यास करने का आग्रह करें । मैंने यहां अनेक उत्तरदायित्व सम्भाले हुए है इसके लिए भी धन संग्रह करूंगा और अगले वर्ष गुरुकुल में १००० युवकों का प्रशिक्षण शिविर आयोजित किया जायेगा । करतल ध्वनि और गगन भेदी नारों से

(शेष पृष्ठ २ पर)

सम्पादक—ओम्प्रकाश पुरुषार्थी सहसम्पादक—रघुनाथ प्रसाद पाठक

सार्वदेशिक सभा के उपमन्त्री डा० आनन्द प्रकाश की सफल जयपुर यात्रा

सार्वदेशिक सभा के उपमन्त्री डा० आनन्द प्रकाश १८ जून को पूर्वान्ह मे जयपुर पहुचे। रेलवे स्टेशन पर आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के कार्यालय मन्त्री एव आर्य समाज कृष्णपोल बाजार के मन्त्री श्री ओ३मप्रकाश जी ने अन्य आर्य बन्धुओ के साथ उनका स्वागत किया। प्रतिनिधि सभा के कार्यालय मे आपने वरिष्ठ उप-प्रधान प्रोफसर नेतिराम शर्मा, मन्त्री श्री जेठमल आर्य एव कोषाध्यक्ष श्री हेतराम आर्य व अन्य प्रमुख आर्यजनो से आर्यसमाज के सगठन को व्यापक बनाने की दृष्टि से सार्वदेशिक सभा की योजनाओ पर विस्तृत चर्चा की और आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के कार्यों का परिचय प्राप्त किया। प्रतिनिधि सभा की वर्तमान स्थिति के सम्बन्ध में एक निरीक्षण आख्या तैयार की गई। राजस्थान की प्रधान आर्य समाज कृष्णपोल बाजार, जिसका क्रान्तिकारी इतिहास रहा है आज भी हिन्दुओ के ऊपर आये हुए सकट का सामना करने मे अग्रणी रहती है। इसकी सक्रियता और जन समस्याओ से जूझने की प्रवृत्ति अनुकरणीय है। १९ जून को आर्य समाज आदर्श नगर मे एक बैठक आयोजित की गई, जिसमे जयपुर की तीनो प्रमुख आर्य समाजों (कृष्णपोल बाजार, आदर्श नगर तथा मोती वटला) के प्रधान व मत्री तथा आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के प्रमुख अधिकारी सम्मिलित हुए। इस बैठक मे डा० आनन्द प्रकाश ने आर्य समाज को गतिशील बनाने के सम्बन्ध मे अपने विचार प्रकट किये और श्रद्धेय लाला रामगोपाल शालवाले के अभिनन्दन के अवसर पर भेंट की जाने वाली सम्मान राशि मे सहयोग देने की अपील की। प्रोफेसर नेतिराम शर्मा, श्री केशव देव वर्मा, प्रधान आर्य समाज वटला श्री आर० डी० खन्ना प्रधान आर्य समाज आदर्शनगर, श्री रामलाल गुलाटी, प्रधान वैदिक कन्या विद्यालय तथा श्री सत्यव्रत, मन्त्री आर्यप्रतिनिधि सभा राजस्थान ने इस अपील का पूर्ण समर्थन किया और यह निश्चय हुआ कि प्रतिनिधि सभा द्वारा अपनी अन्तरग बैठक मे इस आशय का निर्णय ले लिये जानेके उपरात धन सग्रह आरम्भ किया जायेगा। आर्य समाज आदर्श नगर मे चल रहे आर्य वीर दल शिविर मे उप मन्त्री जी ने अपना बौद्धिक प्रवचन भी दिया। जयपुर के दौरे की सफलता के लिए उपमन्त्री जी ने आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के मन्त्री श्री जेठमल आर्य जी के प्रति विशेष आभार प्रकट किया है।

कार्यालय मन्त्री
सार्वदेशिक सभा

साहित्य समीक्षा

वेदार्थ कल्पद्रुम

प्रकाशक—सावदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, रामलीला मैदान नई दिल्ली

मूल्य ६०)

अभी आचाय विशुद्धानन्दजी की वेदाथ कल्पद्रुम नामक पुस्तक निकली है। पौराणिक लेखक करपात्री जी की वेदार्थ पारिजात नामक पुस्तक का शास्त्रीय उत्तर विवेकशील प्रतिभाशाली विद्वान प० विशुद्धानन्द मे लिखा है। पौराणिक विद्वान आचार्य विशुद्धानन्द की पुस्तक 'वेदाथ कल्पद्रुम' जब पढ़ेंगे तो उनके चेहरे सुन्न जायगे।

इस पुस्तक की सस्कृत सुन्दर तथा कादम्बरी की शैली पर है।

आर्य भाईयो से मैं कहता हू कि सभी आर्य समाजों मे इस पुस्तक को मगाकर रखना चाहिए। ऐसे विद्वान का सर्वत्र आदर होना चाहिए।

—बिहारीलाल शास्त्री, बरेली
(आर्य मित्र २-६ ८२)

अदभुत कर्म कौशल और निष्काम सेवावृत्ती पं. हेतराम को सड़क दुर्घटना ने हमसे छीन लिया

समवेदना से सभी हैंवाध्य शोकाञ्जलि पूर्ण श्रद्धांजलि अर्पित कर रहे हैं।

अलवर २५ जून।

कर्मठ कम कौशल के धनी और निष्काम वैदिक धर्म पर न्योछावर प्रकृति के सौम्य देवता स्वरूप श्री प० हेतराम आर्य अलवर २५ जून को एक टेम्पो की टक्कर दुर्घटना में चल बसे।

प० हेतराम श्री छोटूसिंह प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के दाहिने हाथ थे। अलवर मे आर्य समाजें कन्या वैदिक विद्यालय जिला वैदिक धर्म प्रचार सभा आदि ऐसा कौन सा सस्थान था जिसे श्रद्धेय पडित जी ने अत्यन्त धर्म निष्ठा के साथ अपने खून से न सींचा हो।

वे वर्षों आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री पद को सुशोभित करते रहे। पिछले अनेक वर्षों से वे सभा के कोषाध्यक्ष का पद जिम्मेदारी से सम्हाले हुए थे। मित भाषिता, सहज प्रकृति और अध्यवसाय उनके जीवन में स्पष्ट परिलक्षित होते थे। आर्यवीर दल के वे पुराने मजे हुए सैनिक थे जिन्होंने श्री छोटूसिंह के साथ २ अलवर आर्यवीर दल में प्रशिक्षण प्राप्त किया था। आप टीचस ट्रेनिंग स्कूल के अध्यापक पद से रिटायर हुए थे। शिक्षा जगत में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका रही वर्षों छात्रावास के सुपरिन्टेन्डेन्ट पद पर सेवा करते रहे। सक्षेप में पंडित हेतराम व्यक्ति नहीं वैदिक धर्म प्रचार प्रसार की एक सस्था थे।

वे अपने पीछे अपनी धर्म पत्नि दो पुत्र पौत्र और पुत्रियां छोड़ गये हैं।

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान, जिला सभा अलवर अपने कर्मठ सेवक के प्रति शोकाञ्जलि अर्पित करती है और प्रभु, दिवगत आत्मा को सद्गति और उनके परिवार को धैर्य प्रदान करे ऐसी प्रार्थना करती है।

—सम्पादक

(पृष्ठ १ का शेष)

सभा स्थल गूज उठा। सार्वदेशिक आर्य वीर दल के प्रधान सचालक श्री हसजी ने आर्य वीर दल के गौरव पूर्ण इतिहास की समीक्षा करते हुए कहा, नोआखाली हैदराबाद की पुलिस कार्यवाही अथवा कराची सत्यार्थ प्रकाश सत्याग्रह और बाढ़ भूकम्प आदि विषम परिस्थितियों मे दल ने अपनी महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह किया और भविष्य मे भी वह राष्ट्र निर्माण कार्यों में युवाशक्ति को जुटाने हेतु प्रशिक्षित करना अपना परम कर्त्तव्य समझता है जिसका वह आर्य नेताओं की देख-रेख मे समायोजन करता रहेगा।

आपने पूज्य ओमानन्द जी के अनुग्रह पूर्ण आशीर्वाद को स्वीकारते हुए गुरुकुल द्वारा शिविरार्थियो की सेवाओं की, प्रशंसा की और श्री रामवीर शास्त्री की सयोजन शक्ति की हार्दिक सराहना करते हुए उन्हें बधाई दी।

अन्त मे आर्य वीरों ने यौगिक आसन, सैनिक शिक्षा, लाठी, तलवार, जूडो कराटे के लिए प्रशिक्षण का प्रभावोत्पादक व्यायाम प्रदर्शन किया जिसके लिए डा० देवव्रत व्यायामाचार्य की भूरि-भूरि प्रशस्ति की गई। स्मरण रहे डाक्टर साहब ने पूरा समय देकर अनेक सहयोगियो के साथ शिविरार्थियों को प्रशिक्षित किया था।

इस अवसर पर श्री रामाज्ञा वैरागी (बिहार) श्री सत्यवीर एम० ए० सचालक राजस्थान दल ने विशिष्ट अतिथि के रूप में शिविर मे भाग लिया। असम उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र और राजस्थान से भी युवक प्रशिक्षणार्थ पधारे थे।

सक्षेप में यह शिविर अपनी महिमा मयी गरिमा स्थापित कर सम्पन्न हुआ।

सम्पादकीय

विदेशी मुद्रा अर्जन के लिए बिहार से प्रति मास १५०० शिशु मुंडो का तथाकथित निर्यात मानवता के प्रति घोर अपराध

भारत की छवि को और उसकी वरिष्ठ संस्कृति को विकृत और दूषित करने वाला दुष्कृत्य

प्रशासन से इस अमानवीय कृत्य को कड़े हाथों से रोकने की आर्य समाज की मांग

समाचार पत्रों से यह जानकर कि विदेशी मुद्रा के लोभ वश बिहार से प्रतिमास १५०० शिशु मुंडो का निर्यात किया जाता है किसी भी सहृदय मानवतावादी और भारतीय संस्कृति के प्रेमी का हृदय चीत्कार किए बिना नहीं रह सकता, इससे जहां देश की बदनामी होती है वहां हमारी संस्कृति की छवि भी धूमिल होती है।

सार्वदेशिक सभा प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले तथा महामंत्री श्री ओम्प्रकाश जी त्यागी ने इस समाचार पर खेद तथा आश्चर्य प्रकट करते हुये उपर्युक्त प्रतिक्रिया व्यक्त की तथा प्रशासन से मांग की है कि इस प्रकार की घटनाओं की ठीक-ठीक जांच करके अपराधियों को सजा दें और इस कुत्सित व्यापार की अविलम्ब इतिश्री करें।

उल्लेखनीय है कि रसायन शालाओं में प्रयोगार्थ बन्दरों के निर्यात को जिनके द्वारा विदेशी मुद्रा अर्जन की जाती है घोर-विरोध होने पर प्रशासन द्वारा बंद कर दिया गया था। प्रयोगशालाओं में बन्दरों पर घोर अत्याचार होते उन्हें घोर पीड़ा सहन करनी पड़ती एवं अनेकों की जाने भी जाती रहती हैं।

आकाश में भयावह कांड

कनिष्क नामक एअर इंडिया के वायुयान के ३२१ यात्रियों (बालक दल सहित) के समुद्र में लीन हो जाने की दुर्घटनाकी प्रतिक्रिया स्वरूप समस्त संसार में 'भय, शोक और दुःख व्याप्त हो गया है।" यह कांड रविवार (२५-६--८५) के प्रातः आयरलैंड के समुद्रतट पर हुआ। यह वायुयान मान्ट्रील (कनाडा) से लंदन के रास्ते दिल्ली बम्बई जा रहा था। वायुयान यात्रा के इतिहास की यह भयंकरतम घटनाओं में से है। कनाडा और भारत के परिवार तथा अन्य अपने प्रियजनों से जिनमें विवाहित जोड़े, विवाहार्थ जाने वाली नवयुवतियां और बच्चे भी शामिल थे सदैव के लिए बिछुड़ गए हैं। इस महती क्षति के लिए उनके प्रति हार्दिक समवेदना ही प्रकट की जाएगी। हम भी अपनी तथा सार्वदेशिक परिवार की ओर से समवेदना प्रकट करते हैं। इस कांड में यदि किसी का हाथ था जो अनुसंधान से सुस्पष्ट होगा, तो उसने मानव जाति के प्रति घोर अपराध किया है जिसकी सजा से (आत्मा की या कानून की) वह कभी बच न सकेगा। भारतीय प्रजा को यह या इस प्रकार का कांड अन्ततोगत्वा आपस में मिलाने का ही कार्य करता और कांड के करने वालों को मुंहकी खानी पड़ती है।

सैनिकों का बढ़िया कारनामा

काश्मीर के दो सैनिक बधाई के पात्र हैं जिन्होंने एक महिला को अपहर्ताओं के चंगुल से छुड़ाया और अपहर्ताओं को पुलिस के हवाले किया।

यह घटना २० जून को कर्णनगर के आस पास घटित हुई। एक हिन्दू देवी अपने पुत्र से मिलने के लिए वेद मन्दिर जा रही थी जहां वह नौकरी करता है। समाचार के अनुसार मार्ग में एसियन खां और सरदार खां नामक दो व्यक्तियों ने उसे बलात कार में डालकर उसका शील भंग करने की चेष्टा की। उसकी चीख पुकार को सुनते ही दो सैनिक जवानों ने एक ट्रक के द्वारा कार का पीछा किया और महिला को मुक्त करके अपराधियों को पुलिस के हवाले कर दिया।

भारतीय संस्कृति सृष्टि के सभी प्राणियों की एकता पर बल देती है
—राजीव गांधी

वाशिंगटन जून २१, (पी० टी० आई)

स्मिथ सोनियन नामक संस्थान ने आज भारत महोत्सव के प्रोग्राम के एक अंग के रूप में त्रिदिवसीय सेमीनार (गोष्ठी) का आयोजन किया।

श्री राजीव गांधी प्रधान मन्त्री ने अपने सन्देशमें कहा कि "भारत ने शताब्दियों पर्यन्त अन्य देशों के विद्वानों और तत्ववेत्ताओं को अपनी ओर आकृष्ट रखा है। उनमें मिश्र, यूनान और अरब के विद्वान भी थे जिन्होंने हमारे दर्शन विज्ञान आदि का अध्ययन किया था। साथ ही चीन तथा एशिया के कई पर्यटकों को भी जो बौद्ध विद्वानों से भेंट करने के लिए हमारे प्राचीन विश्वविद्यालयों में आए थे।

मध्य काल में मुसलमानों के कई विद्या केन्द्रों का उद्भव हुआ। युरोप के संस्कृत से परिचित होने पर कई विद्वान और विशेषज्ञ उभर कर आए यथा भाषाविद् धर्म के तुलनात्मक अध्येता आदि २।

भारत को विकास मान देशों की कोटि में रखने में उसके ज्ञान-विज्ञान के अनेक सुविकसित पहलुओं से ध्यान हटाने की प्रवृत्ति क्रियारत देख पड़ती है।

भारत की सुप्रसिद्ध छवियां बदलती रही हैं। अमीरी से गरीबी में, बहुतायत से भुखमरी में, बिरली आबादी से घनी आबादी आदि-२ में। इन सबके आधार पर सन्तुलित मूल्यांकन नहीं होता।

भारत के किसी पहलू पर विशेषज्ञ होना उसका समष्टिगत मूल्यांकन करने की अपेक्षा कहीं ज्यादा सरल होता है।

भारतीय संस्कृति सृष्टि के सभी प्राणियों की एकता पर बल देती है।

मुस्लिम ने अंतरिक्ष से कहा पृथ्वी गोल है

इस्लाम का कहना है कि पृथ्वी गोल नहीं है, चपटी है लेकिन सऊदी अरब के शाही परिवार के सुल्तान सुलेमान उल साऊद पहले मुस्लिम हैं जो अन्तरिक्ष से देखकर पृथ्वी को गोल बता रहे हैं।

सुल्तान पहले मुस्लिम अन्तरिक्ष यात्री है। वह अमेरिका के अन्तरिक्ष शटल डिस्कवरी से पृथ्वी को गोल घुमता देख रहे हैं। शहजादे सुल्तान अंतरिक्ष से लौटकर अपने धर्म में प्रचलित बात का कैसे खण्डन करते हैं, यह तो समय बताएगा पर वे अन्तरिक्ष में जाने वाले प्रथम मुसलमान माने जाएंगे।

सामायिक चर्चा—

शिर मुंडों का निर्यात

कुमारी सुनीता चन्दोसी लिखती हैं—

हाल ही में एक समाचार पत्र में बिहार से शिशु मुंडों के निर्यात का दिल दहलाने वाला समाचार पढ़कर सिर झुक जाना स्वाभाविक है। क्या हम इतने लालची हो गये हैं कि अपने मुर्दा बच्चों की खोपड़ियों को भी बेचने में नहीं हिचकते। जितनी बड़ी संख्या में बच्चों के कटे हुए सिरों का निर्यात किया जा रहा है उसकी पूर्ति प्राकृतिक ढंग से मरे हुए बच्चों से तो हो नहीं सकती। निश्चय ही इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए बच्चों का अपहरण किया जाता होगा। साथ ही इससे भी इंकार नहीं किया जा सकता कि कुछ लोग जो घोरतम दरिद्रता का जीवन व्यतीत कर रहे हैं वे चन्द पैसों के लोभ में अपने बच्चों को इन पाशविक व्यापारियों को बेच देते हों।

कोई भी सभ्य देश चाहे कितना भी गरीब क्यों न हो वह इस घिनौने व कुत्सित व्यापार की अनुमति नहीं देगा। क्या सोचते होंगे वहां के लोग हमारे देश के बारे में जहां कि शिशु मुण्ड निर्यात किए जाते हैं। आश्चर्य की बात यह है कि सरकारी अधिकारी जिनके ऊपर प्रशासन की देखभाल का उत्तरदायित्व है कैसे इस प्रकार की गतिविधियों से अनभिज्ञ बने रहते हैं या वे जानकर भी कोई कार्रवाई नहीं करना चाहते? शायद उन्हें इससे कुछ प्राप्त होता होगा।

नौकरी से पृथक करना निन्दनीय

समाचार पत्रों में यह पढ़कर दुःख और आश्चर्य हुआ कि मदुरई की पंडियन रोडवेज कार्पोरेशन ने एक विधवा को सर्विस से इस आरोप पर पृथक कर दिया कि उसने पुनर्विवाह कर लिया था। इस पृथककरण का आधार कोई नियमादि हो सकते हैं क्योंकि धन लक्ष्मी नामक इस विधवा को दयाभाव से प्रेरित होकर काम पर लगाया गया था उस समय जबकि उसके पति कार्पोरेशन के एक संवाहक की मृत्यु हुई थी। साथ ही नियुक्ति के समय उसने पुनर्विवाह की बात छुपाई थी जो नियुक्ति के १४ दिन पूर्व हो १४ महीने तक वैधव्य का दुःख भोगने के पश्चात उसने पुनर्विवाह किया था। परन्तु जैसा कि धन लक्ष्मी ने बताया है उसका दूसरा पति यासुदास बिजली का काम करता है जिससे २००) मासिक की आय होती है जो दोनों के गुजारे के लिए काफी नहीं हो।

यदि यह बात, भी ठीक न हो और यासुदास उसका निर्वाह करने में समर्थ हो, तब भी कार्पोरेशन को संविधान की और नारी उद्धार के लिए बने कायदे कानूनों की भावना का अनुसरण करना चाहिए था और यासुदास को बधाई देनी चाहिए थी। यदि यासुदास की यह आंशिक धारणा रही हो कि उसकी पत्नी भी कमाएगी तब भी कार्पोरेशन को इस प्रकार के विवाह में सहायता करने पर प्रसन्न होना चाहिए था। इसके बजाय उसने कुछेक कायदे कानूनों का अनुसरण किया और कहा कि काम पर लगने की वह हकदार नहीं थी और इसी कारण उसे पृथक कर दिया गया। विचित्र बात यह है कि एक लेबर कोर्ट ने उसकी पुनर्नियुक्ति का आर्डर दिया और पुनर्नियुक्ति के शीघ्र बाद ही कार्पोरेशन ने उसे पृथक कर दिया।

यह आशा की जाती है कि लेबर कोर्ट एक बार पुनः न केवल उस महिला की सहायता ही करेगी अपितु कार्पोरेशन के प्रबन्ध विभाग की भी उचित है कि वह उस व्यक्ति का पता लगाकर उसे सजा दे जो धन लक्ष्मी से बदला लेने के कुत्सित कार्य में तल्लीन है।

यदि नियमों में सुधार आवश्यक हो तो वह सुधार भी तुरन्त कर देना चाहिए। यदि यह बर्खास्तगी बनी रहने दी गई तो इससे गवर्नमेंट के नारी उद्धार विषयक दावों की निस्सारता ही उजागर होगी।

इस घटना के सन्दर्भ में हुई अनेक प्रतिक्रियाओं में से एक बड़े पत्रकार की प्रतिक्रिया प्रस्तुत की जा रही है।

सराहनीय कार्य

आर्य समाज जोगबनी पूर्णिया (बिहार) के पत्र से (७-६-८५) यह जानकर प्रसन्नता हुई कि उसने एक नेपाली कन्या को एक दुष्ट के चंगुल से छुड़ाकर जो १॥ मास तक उसके चंगुल में रही थी उसके घर पहुंचा दिया। उसे वस्त्रादि के साथ विदा किया। इस कार्य में आर्य समाज के मन्त्री श्री रामनारायण जी, श्री रामलाल मंडल तथा श्री नर बहादुर की भूमिका प्रशस्त रही।

मैं स्वामी दयानन्द जी के जीवन पर मुग्ध हूं

—महात्मा गांधी

"मैं जब अफ्रीका में था, बाबा छज्जूसिंह ने स्वरचित स्वामी दयानन्द जी की अंग्रेजी जीवनी मेरे पास भेजी थी। मैं स्वामी जी के जीवन पर मुग्ध हूं। मेरी तभी से ऋषि में प्रबल भक्ति और श्रद्धा है।"

(श्री पं० धर्मदेव विद्या वाचस्पति की महात्मा गांधी जी से भेंट के विवरण का एक अवतरण)

एक प्रेरक प्रसंग

मरने की तैयारी

श्री गया प्रसाद आर्य समाज हैदराबाद के पुराने कार्य कर्ताओं में से एक थे।

आप सरकारी नौकरी में थे और श्रीयुत स्व० केशोराव जी की सम्मति से आर्य समाज का काम किया करते थे।

जिस समय आपने पेंशन ली तब भी आर्य समाज के कार्यों में समय दिया करते थे। प्रतिमास जब आप पेंशन लाते तो अपने साथ चन्दन भी खरीद कर लाते थे।

अन्त में जब आप बीमार पड़े तो श्री स्व० विनायकराव जी को बुलवाया। वहां और बातें की वहां यह भी कहा कि महर्षि दयानन्द ने शरीर के बोझ के सम चन्दन चिता के लिए लिखा है। मैंने चन्दन का प्रबन्ध कर रखा है। अमुक स्थान पर इतना चन्दन पड़ा है। पूछा गया इतना वहां कैसे आ गया। आपने बताया मैं प्रतिमास खरीदकर वहां रखता रहा हूं। मैंने यह अपनी अन्त्येष्टि के लिए जमा किया है।

आपकी धर्मपत्नी पास बैठी थी। अन्त्येष्टि की बात सुनकर उनकी आंखों में आंसु आ गए। आपने कहा "तुमने मेरे साथ रहकर कुछ नहीं सीखा है। तुम्हारे पुत्र आज्ञाकारी है। तुम्हें कोई कष्ट न होने देंगे और परमात्मा सबका रक्षक है। साथ ही सबको मरना है। मरना मेरे लिए भी कोई नई बात नहीं है। यदि तुम रोओगी तो मुझे भी दुःख होगा। धैर्य धारण करो और मुझे मौत की गोद में शांति से जाने दो।"

आपकी धर्मपत्नी यह सुनकर चुप हो गई और आपने शरीर प्रसन्नता पूर्वक शांति से परमात्मा का स्मरण करते हुए त्यागा।

—रघुनाथ प्रसाद पाठक

सभा प्रधान श्री शालवाले की भाभी दिवंगत

सभा प्रधान माननीय श्री रामगोपाल जी शालवाले की भाभी श्रीमती जानकी देवी पद्मावती का ८० साल की उम्र में २१-६-८५ को दिल्ली में देहावसान हो गया है। वह अपने पीछे ४ पुत्र और एक पुत्री तथा भरापूरा परिवार छोड़ गई हैं।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के कार्यालय में शोक सभा में दिवंगत आत्मा की सद्गति के लिए प्रार्थना की गई और परमात्मा से उनके दुःखी परिवार और सम्बन्धियों के प्रति हार्दिक संवेदना प्रकट की गई।

अन्त्येष्टि संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से निगम बोध घाट पर सम्पन्न हुआ। दिल्ली के अनेक गणमान्य महानुभाव और आर्य नेता व विद्वान अन्त्येष्टि संस्कार में सम्मिलित हुए।

—कार्यालय सचिव

महर्षि दयानन्द का वार्त्तालाप और उपदेश

जब केशवचन्द्र सेन को आश्चर्य चकित किया !

जिस समय स्वामी जी कलकत्ता गए उस समय श्री केशवचन्द्र सेन कलकत्ता में नहीं थे। वे जब आए तो महाराज से मिलने प्रमोद कानन में गए और दर्शन करके देर तक बात-चीत करते रहे। महाराज ने उनका नाम आदि कुछ न पूछा।

केशवचन्द्रसेन जी ने वार्त्तालाप में स्वामी जी से कहा—"क्या आप कभी केशवचन्द्र सेन से मिले हैं ? स्वामी जी ने उत्तर दिया— "हां मिला हूं।" उन्होंने कहा "वह तो कलकत्ते में नहीं था। आप उसे कब मिले थे ?" स्वामी जी ने हंसकर कहा "अभी मिला हूं और आप ही केशवचन्द्र सेन हैं।" सेन महाशय ने कहा यह आपने कैसे जान लिया कि मैं ही केशवचन्द्र सेन हूं।" स्वामी जी ने उत्तर दिया कि "जैसी बात आपने की है ऐसी किसी दूसरे की नहीं हो सकती।" स्वामी जी की ऊहा शक्ति से वे बड़े प्रसन्न हुए और उसी समय से उनके हृदय में महाराज के प्रति प्रेम और आदर का भाव उत्पन्न हो गया।

वैदिक धर्म ही सच्चा है

एक दिन केशवबाबू ने स्वामीजी से पूछा "इस समय हमारे सामने बाइबिल, कुरान और वेद इन पुस्तकों के आधार पर तीन बड़े धर्म हैं। सभी अपने को सच्चा कहते हैं।

हमें कैसे ज्ञात हो कि इनमें से वास्तव में कौन सा सच्चा है ? स्वामी जी ने उत्तर में कुरान और बाइबिल के दोष दिखाकर कहा "पक्षपात और इतिहासादि दोषों से विवर्जित केवल वेद ही है। वह केवल उपदेश ही करता है इसलिए वैदिक धर्म ही सच्चा है।"

केशवचन्द्र सेन के दो सुझाव स्वीकृत

स्वामी जी की युक्तियों को सुन और उनकी अपरिमित प्रतिभा का परिचय पाकर एक बार केशवचन्द्र सेन ने कहा 'शोक है कि वेदों का अद्वितीय विद्वान अंग्रेजी नहीं जानता अन्यथा इंग्लैंड जाते समय वह मेरा मनचाहा साथी होता।" स्वामी जी ने भी हंसकर कहा "शोक है कि ब्राह्म समाज का नेता संस्कृत नहीं जानता और लोगों को उस भाषा में उपदेश देता है जिसे वे समझते नहीं।"

एक दिन केशवचन्द्रसेन ने स्वामी जी को कहा कि "आप संस्कृत में ही बात-चीत करते हैं जो लोग संस्कृत नहीं जानते उनको पण्डित लोग कुछ और ही समझा देतेहैं इसलिए आप देश भाषा में व्याख्यान देने का यत्न करें। स्वामी जी ने उनकी सम्मति को मान लिया।

केशवचन्द्रसेन ने स्वामी जी से यह भी निवेदन किया कि अब आप सभा आदि में जाते हैं इसलिए वस्त्र धारण कर लें तो अच्छा है।" स्वामी जी ने इस सुझाव को भी स्वीकार कर लिया।

जब एक मुसलमान को आदर पूर्वक सत्संग में सम्मिलित होने दिया

एक दिन स्वामी जी कलकत्ता में अपने आसन पर विराजमान थे। उनके पास अनेक जिज्ञासु सन्देह मिटा रहे थे। उस समय एक मुसलमान सज्जन वहां आ गया। वह सत्संग में तो आना चाहता था परन्तु मकान के भीतर प्रवेश करने में झिझकता था। स्वामी जी ने उसे आदर से कहा "बिना संकोच भीतर चले आइए और समीप आकर बैठिए। मैं ऐसे तुच्छ भेद-भाव अच्छे नहीं समझता।"

उस सज्जन को स्वामी जी के सत्संग में बड़ी प्रसन्नता प्राप्त हुई।

अध्यात्म-सुधा

प्राण

(२)

भार्गव वैदर्भि ने पिप्पलाद से पूछा कि मनुष्य शरीर के धारण और प्रकाश न करने वाले कौन हैं और उनमें कौन श्रेष्ठ है !

पिप्पलाद ने उत्तर दिया कि आकाश आदि पंच तत्त्व, मन, वाणी, आंखें, श्रोत्रादि ज्ञान और कर्मेन्द्रियां इस शरीर को धारण और प्रकाशन करने वाले हैं। एक बार इन इन्द्रियों को अभिमान हुआ और प्रत्येक ने अभिमान से कहा कि उनमें से प्रत्येक इस शरीर को धारण कर रहा है। इस पर इनसे प्राण ने कहा कि वे अविवेक ही से ऐसा कह रहे हैं। असल में शरीर को तो मैं अपने को पांच भागों में विभक्त करके धारण कर रहा हूं। प्राण की इस बात को इन्द्रियों ने स्वीकार नहीं किया। इस पर प्राण ने अपने दावे को प्रमाणित करने के लिए शरीर से निकलना चाहा। उसके निकलने के साथ ही इन्द्रियों ने देखा कि उन्हें भी निकलना पड़ रहा है तब उन्हें विश्वास हुआ कि प्राण के साथ ही वे शरीर में रहती हैं और प्राण के निकलने पर उन्हें भी शरीर छोड़ देना पड़ता है। इस प्रकार का विश्वास होने पर उन्होंने प्राण को अग्नि, पर्जन्य मृत्यु, पृथिवी आदि कहते हुए उसकी स्तुति की। इन्द्रिय प्राण सम्वाद भाव स्पष्ट है। इस सम्वाद द्वारा शिक्षा यह दी गई है कि मनुष्य को प्राण की सर्व श्रेष्ठता की रक्षा करनी चाहिए। उसकी रक्षा के साधन ये हैं—

१—प्राणायाम द्वारा प्राण की पुष्टि करनी चाहिये। प्राण की पुष्टि से एक ओर हृदय फेफड़े आदि पुष्ट होते हैं तो दूसरी ओर आयु की वृद्धि होती है।

२—जिस प्रकार अपने कार्य में प्रमाद रहित होकर प्राण तत्पर रहते हैं उसी प्रकार की तत्परता मनुष्य को अपने कर्त्तव्य कर्मों में लानी चाहिए।

३—जिस प्रकार स्वार्थ रहित होकर प्राण निरन्तर दिन रात अपना कार्य करते हैं उसी का अनुकरण करते हुए मनुष्यों को भी स्वार्थ रहित (निष्काम) होना चाहिए जिससे उसकी स्थिर निष्कामता जीवन के अन्तिम ध्येय प्राप्ति का साधन बन सके।

४—मनुष्य जब प्राणायाम परायण हो जाता हैं तभी प्रत्याहारादि के अभ्यासो को काम में लाते हुए आत्म-परायण बना करता है। आत्म-परायण होने से ही उसके हृदय के पटल खुलते हैं और वह हृदय-मन्दिर में घुसकर अपने चिरिच्छित प्रियतम के दर्शन करके कृत्यकृत्य हो जाता है।

(म० नारायण स्वामी जी की डायरी से)

(ग्रन्थों से)

स्त्री पुरुष का वियोग न होना चाहिए

"स्त्री वा पुरुष का वियोग कभी न होना चाहिए। पति और स्त्री का वियोग दो प्रकार से होता है, कहीं कायार्थ देशान्तर में जाना और दूसरा मृत्यु से वियोग होना। इनमें से प्रथम (वियोग) का उपाय है कि (यदि) दूर देश में यात्रार्थ जावे तो स्त्री को भी साथ रखे। इसका प्रयोजन यह है कि बहुत समय तक वियोग न रहना चाहिए। (स०प्र० स० ४)

मधुपर्क किसे कहते हैं ?

मधुपर्क उसको कहते हैं जो दही में घी या शहद मिलाया जाता है। उसका परिमाण १२ (बारह) तोले दही में ४ (चार) तोले शहद

(शेष पृष्ठ ९ पर)

भारत के राजनैतिक पुनर्जागरण पर आर्य समाज का प्रभाव

—डा० डी. पी. श्रीवास्तव पी.एच.डी.

(५)

आर्यसमाज भले ही स्पष्ट रूप से ब्रिटिश शासन का विरोध करने वाला न रहा हो किन्तु दयानन्द की उत्कट राष्ट्रवादी विचार धारा ने निःसन्देह भारत के राजनीतिक पुनर्जागरण को आगे बढ़ाया। जे० आर० मैकडानल्ड ने लिखा है कि भारत के आंग्ल-भारतीय पदाधिकारी आर्य समाज को एक राजनीतिक संस्था मानते थे—ऐसी संस्था जिसकी रहस्यात्मक विचारधारा थी और जो लुके छिपे रूप में ब्रिटिश शासन विरोधी कार्य करती थी। कमिश्नर, डिपुटी कमिश्नर, जिला मजिस्ट्रेट, पुलीस के पदाधिकारी आदि लोग आर्य समाज का राजद्रोही संगठन मानते थे और अनेक लोगों को केवल इस आधार पर दोषी ठहराया जाता था कि वे आर्य समाज के सदस्य होते थे।॥ आर्यसमाज के प्रयत्नों से उत्तरी भारत विशेषतः पंजाब में भारत की दबी हुयी स्व० चेतना पुनः मुखरित हुयी जिसने देश के राजनीतिक पुनर्जागरण को समृद्ध किया। आधुनिक युग में दयानन्द आक्रामक हिन्दुत्व के प्रथम महा पुरुष थे। आगे चलकर आक्रामक हिन्दुत्व की यही भावना स्वामी विवेकानन्द में मुखरित हुई। आर्य समाज ने भारतवासियों में अपनी निजी परम्परा और संस्कृति में स्वाभिमान जागृत किया। सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की आत्मा को देकर आर्यसमाज ने राजनीतिक पुनर्जागरण के लिए शक्तिशाली और ठोस आधार प्रदान किया। दयानन्द के राष्ट्रवादी विचारों में भारत के प्रति प्रगाढ प्रेम का विचार भी पर्याप्त महत्व रखता है। उन्होंने लिखा था कि "यह आर्यावर्त्त देश ऐसा है जिसके सदृश भूगोल में दूसरा कोई देश नहीं है इसीलिए इस भूमि का नाम सुवर्ण भूमि है क्योंकि यही स्वर्णादि रत्नों को उत्पन्न करती है।+ आर्यावर्त्त देश ही सच्चा पारस मणि है जिस कोकिलोहे रूप दरिद्र विदेशी छूते ही स्वर्ण अर्थात् धनी हो जाते हैं।× आर्थिक दृष्टि से भारत का शोषण करने वाले ब्रिटिश शासन के प्रति उनका यह अप्रत्यक्ष कटाक्ष था।

आधुनिक भारत के राजनीतिक पुनर्जागरण के सन्दर्भ में दयानन्द के राजनैतिक विचारों का उल्लेख आवश्यक है। यह बड़े आश्चर्य की बात है कि दयानन्द के अनुयायी उनके राजनीतिक दर्शन को उचित महत्त्व न दे सके। हर विलास शारदा द्वारा सम्पादित दयानन्द स्मृति ग्रंथ दयानन्द (काम मेमोरेशन वाल्यूम १९३३ में आधुनिक भारतके इस महान राजनीतिक विचारक के राजनैतिक दर्शन पर कोई स्पष्ट और विवेचनात्मक लेख प्रस्तुत नहीं किया गया है। उनके राजनीतिक विचार सत्यार्थ प्रकाश के छठे समुल्लास और ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका संस्कार विधि, व्यवहारभानु, आर्याभिविनय, ऋग्वेद भाष्य तथा यजुर्वेद भाष्य में स्थान-स्थान पर मिलते हैं। ये विचार उन्होंने स्वतन्त्र रूप में प्रकट न करके प्राचीन ग्रन्थों की टीका करते हुए प्रकट किए हैं। दयानन्द ने राज्य प्रणाली पर पर्याप्त प्रकाश डाला है। उनके मत में राज्य जीवन के सर्वोपरि उद्देश्यों की पूर्ति के निमित्त (धर्म रक्षार्थ—सम्पादक) स्थापित रहता है। राज्य का उद्देश्य अपने नागरिकों का केवल भौतिक कल्याण करना नहीं अपितु मानव जीवन के चार बड़े पुरुषार्थों, धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की प्राप्ति में सहायक बनना है।

ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका में उन्होंने राज्य की अवयवी प्रकृति पर प्रकाश डाला है जिसमें ईश्वर की भुजाओं की उपमा-राज्य की शक्ति से उसके उदर की उपमा राज्य के कोष से, उसकी ग्रीवा व नाभि की उपमा प्रजाजनों के गुण व समृद्धि से, उसकी जंघाओं की प्रजाजनों और राज्य सभा के बीच स्थापित एकता और सहयोग से दी है।॥ राज्य और समाज की प्रकृति के प्रति अवयवी धारणा रखते हुए भी दयानन्द सरस्वती समष्टिवादी और निरंकुशतावादी दृष्टि-कोण को नहीं अपनाते हैं जैसा कि हम आगे चलकर देखेंगे। उनका दृष्टिकोण लोकतान्त्रिक है। ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका में अनेक स्थलों पर दयानन्द ने शासक और शासित वर्गों के बीच सहयोग स्थापित रखने की आवश्यकता पर बल दिया है। उनके मत में राज्य की तब तक समृद्धि नहीं हो सकती न तब तक उसमें अच्छा शासन हो सकता है जब तक शासक और शासित वर्गों के हित एक न हों। दयानन्द के ये विचार उस समय के ब्रिटिश शासकों की अप्रत्यक्ष रूप से आलोचना करने वाले तो थे ही, वे स्वतन्त्र भारत की शासन नौका के लिए भी प्रकाश स्तम्भ की भांति है।

॥ दी अवेकनिंग आफ इण्डिया पृ० ३५-३६

+ सत्यार्थ प्रकाश पृ० २६२

× उपरोक्त ,, २६२

॥ ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका पृ० ५३५

+ उपरोक्त पृ० १६६, व्यवहारभानु ७६२, ऋग्वेद के अनेक मन्त्रों की व्याख्या में भी ऐसे विचार हैं जैसे मंडल २ के २७, १३ मंडल २ के ३८, ३० मंडल ६ के २८, आदि।

(पृष्ठ ५ का शेष)

या ४ (चार) तोले घी मिलाना चाहिये। यह मधुपर्क कांसे के पात्र में होना उचित है।"

(संस्कारविधि विवाह संस्कार)

मधुपर्क किन्हें देना चाहिए ?

राजा, आचार्य, श्वसुर, चाचा और मामा आदि का अपूर्वागमन जब हो और स्नातक अर्थात् जब विद्या और ब्रह्मचर्य पूर्ण करके ब्रह्मचारी घर को आवे इनको मधुपर्क देना होता है।

(संस्कारविधि समावर्त्तन संस्कार)

क्या योनियां ८४ (चौरासी) लाख हैं ?

चौरासी लाख योनियां हैं वा न्यूनाधिक हैं तो इन गपोड़ कथाओं के वर्णन करने की भी कोई आवश्यकता नहीं है। जगत् में जितनी योनियां हैं इसका शोध लगा गिनकर हमारे शास्त्री लोग बतावें।

(पूना का व्याख्यान ६ पुनर्जन्म विषय)

—सं० कर्त्ता रघुनाथप्रसाद पाठक

देर आयद दुरुस्त आयद

शिरोमणि अकाली दल के प्रधान सन्त हरचन्द सिंह लोंगोवाल ने गत दिवस संगरूर में प्रमुख हिन्दुओं और सिखों को सम्बोधित करते हुए आतंकवादी गतिविधियों की तीव्र आलोचना की। उन्होंने कहा कि—

"कोई भी गुरु का सच्चा सिख निर्दोष हिन्दुओं की हत्या नहीं कर सकता। जो भी सिख एक निर्दोष हिन्दू की हत्या करता है, वह मानो गुरु तेग बहादुर की हत्या करता है और इस प्रकार वह सच्चा सिख नहीं माना जा सकता।

हिन्दू और सिख एक ही मां बाप के दो बेटे हैं। मेरी पार्टी की लड़ाई सरकार के विरुद्ध है न कि हिन्दुओं के विरुद्ध। सरकार ने राजनैतिक लाभ उठाने के उद्देश्य से सिखों को आतंकवादी, साम्प्रदायिक और खालिस्तान समर्थक कहकर बदनाम करके हिन्दुओं में आतंक फैलाया है जबकि मेरी पार्टी हिन्दू-सिख एकता और देश की अखण्डता के लिए वचनबद्ध है।"

यहां यह बात उल्लेखनीय है कि सन्त लोंगोवाल की यह पहली बैठक हिन्दू सिखों में साम्प्रदायिक एकता को बढ़ावा देने और दोनों सम्प्रदायों में पायी जाने वाली उन गलत फहमियों को दूर करने के लिए बुलाई गई थी जिनसे अकाली दल का मोर्चा शुरू होने के समय पंजाब पर बहुत बुरा असर पड़ा है। सन्त लोंगोवाल ने इस बैठक को सम्बोधित करते हुए यह भी कहा कि—

"वर्षों से चले आ रहे हिन्दू-सिख के प्यार को कोई कमजोर नहीं बना सकता। हिन्दू पंजाबियों की सांझी क्षेत्रीय, राजनैतिक व आर्थिक मांगों की प्राप्ति के लिए अकाली दल को सहयोग दें।"

सन्त लोंगोवाल का कहना था कि—

"आनन्दपुर साहिब प्रस्ताव न तो खालिस्तान का समर्थन करता है और न ही उसकी मांग करता है। सिखों ने सदा देश की अखण्डता व देश की सुरक्षा के लिए कुर्बानियां की हैं, ऐसी दशा में वह देश को नुकसान पहुंचाने वाली बात सोच भी नहीं सकते। आनन्दपुर प्रस्ताव केवल पंजाब के लिए ही नहीं बल्कि सारे देश के लिए है। अगर फिर भी हिन्दुओं के मन में इसके बारे में कोई शंका हो तो आनन्दपुर साहिब प्रस्ताव पर पुनर्विचार किया जा सकता है।"

सिखों को आतंकवाद के विरुद्ध डट कर स्टेंड लेने का अनुरोध करते हुए सन्त लोंगोवाल ने कहा कि—

"सिख आतंकवाद के विरुद्ध कड़ा स्टेंड लें ताकि हिन्दुओं के मन से डर हट सके। सिख सम्प्रदाय में घृणा और आतंकवाद का कोई स्थान नहीं है और यह गुरुओं की शिक्षाओं के भी विरुद्ध है।"

किसी का नाम लिए बगैर सन्त लोंगोवाल ने कहा कि—

"देश के सबसे बड़े महत्त्वपूर्ण पद पर आसीन व्यक्ति ने ही जगजीतसिंह चौहान, बाबा सन्तासिंह, मास्टर तारासिंह अकाली दल और दल खालसा आदि अपने एजेंटों के माध्यम से आतंकवाद को जन्म दिया और उसका विस्तार किया।"

इसके अतिरिक्त सन्त लोंगोवाल ने यह भी फैसला किया है कि वह पंजाब के हिन्दू पीड़ित परिवारों से भी उनके पास जाकर मिलेंगे और उन्हें सान्त्वना देंगे।

उपरोक्त बयान में जितनी भी बातें सन्त लोंगोवाल ने कही हैं वे सर्वथा स्वागत योग्य हैं क्योंकि इनसे पंजाब की परिस्थितियों को सामान्य बनाने में निश्चित ही सहायता मिलेगी। हम समझते हैं कि ये सब बातें एक बार कह देने से ही काम नहीं चलेगा बल्कि इन बातों को पंजाब में जगह-जगह रह-रह कर दोहराना पड़ेगा। इसके साथ ही यह सब कुछ कहने से भी अधिक महत्वपूर्ण बात यह होगी कि इन सब बातों पर अमल किया जाय ताकि लोगों को यह विश्वास हो सके कि अकाली दल की कथनी और करनी एक है, कोई अन्तर इसमें नहीं है।

यह भी एक विडम्बना ही है कि जहां सन्त लोंगोवाल उपरोक्त वातावरण को सुधार और अच्छा बनाने वाली बातें कह रहे हैं वहां उनके साथ ही पंजाब के भूतपूर्व मुख्यमन्त्री सरदार प्रकाश सिंह बादल पूरी तरह मौन साधे बैठे हैं और जत्थेदार गुरचरण सिंह टोहरा उसी पुरानी डगर पर चल रहे हैं जिस पर चलकर पंजाब की लगी बुझेगी नहीं बल्कि उसके और अधिक भड़कने की संभावनाएं ही उससे पैदा हो सकती है। जरूरत इस बात की है कि जो कुछ सन्त लोंगोवाल अब कह रहे हैं, वही सरदार बादल भी कहें और वही सरदार टोहरा भी कहें। जब तक अकाली नेताओं की यह 'तिकड़ी' एक ही स्वर में नहीं बोलेगी तब तक पंजाब के लोगों की शंकाएं पूरी तरह निर्मूल नहीं हो सकेंगी।

अगर आरम्भ में साढ़े तीन चार साल पहले ही—

—यह हुक्मनामा जारी हो जाता कि निर्दोष हिन्दुओं का खून बहाने वाला गुरु का सिख नहीं है।

—संत लोंगोवाल और अन्य अकाली दल यह घोषणा करते कि हिन्दू और सिख एक ही मां बाप के दो बेटे हैं और संसार की कोई भी शक्ति उन्हें अलग नहीं कर सकती।

—अगर पीड़ित हिन्दू परिवारों के आंसू पोंछने के लिए संत जी और अन्य अकाली नेता गये होते।

—अगर उग्रवादियों, आतंकवादियों और पृथकतावादियों का डटकर विरोध किया होता और दरबार साहिब परिसर में हथियारों के भंडार जमा किये जाने और समाज विरोधी तथा देशद्रोही तत्वों को वहां शरण देने के विरुद्ध वह डट जाते और किलेबन्दियां वहां वह न होने देते।

—अपनी मांगों को धर्म से न जोड़कर सभी पंजाबियों की सांझी मांगें उन्होंने बनाया होता और सभी वर्गों को विश्वास में लेकर वे चले होते।

—आनन्दपुर साहिब प्रस्ताव पर हठ धर्मी का रवैया अपनाने और उसे अपनी प्रतिष्ठा का प्रश्न बनाने की बजाय उसके शंकापूर्ण भागों पर पुनर्विचार करने की बात उन्होंने पहले ही कही होती तो :-

हमारी यह मान्यता है कि बेगुनाह लोगों का जितना खून पंजाब में और उसके कारण देश के अन्य भागों में बहा है, वह नहीं बहता, पंजाब की जो भयावह तबाही हुई है, वह न होती तथा सिख समाज और देश के लिए जो समस्याएं उत्पन्न हुई हैं, वह नहीं होतीं और पंजाब की समस्या भी कभी की हल हो चुकी होती।

बहरहाल जो बातें संत लोंगोवाल ने अब कही हैं, वे बातें उन्हें जगह-जगह और बार-बार कहनी चाहिएं, उनके साथी सरदार बादल और जत्थेदार टोहरा को भी खुलकर उनकी पैरवी करनी चाहिए और सभी अकाली नेताओं को इन बातों पर सच्चे मन से अमल करना चाहिए। ऐसा करके ही पंजाब में परिस्थितियों को सामान्य बनाने और पंजाब समस्या को हल करने में सहायता मिल सकती है और किसी तरह नहीं। हम संत लोंगोवाल के इस बयान का स्वागत करते हुए केवल इतना ही कहना चाहते हैं कि—

'देर आयद दुरुस्त आयद'

—विजय
(पं. के. १८-६-८५)

भारतीय सभ्यता में स्त्री जाति का स्थान

—श्री महात्मा नारायण स्वामी जी

(२)

स्वामी शंकराचार्य और स्त्री जाति

श्री मद्शंकराचार्य के नाम से उनकी लिखी हुई वर्णित एक लघु पुस्तिका प्रश्नोत्तरी के नाम से प्रसिद्ध है। उसमें स्त्रियों के सम्बन्ध में कुछ के उत्तर अत्यन्त आपत्तिजनक हैं। एक प्रश्न में कि 'नरक का द्वार कौन है!' उत्तर दिया गया है कि 'स्त्री'। फिर एक दूसरा प्रश्न है कि 'विश्वास पात्र कौन नहीं है?' इसका भी 'स्त्री' ही उत्तर दिया गया है। फिर प्रश्न है कि "कौन सा वह विष है जो अमृत के समान प्रतीत होता है। उत्तर में वह विष 'स्त्री' को को बतलाया गया है। इस प्रकार के और ऐसे ही आपत्तिजनक प्रश्नोत्तर एक दर्जन से भी अधिक है जो इस पुस्तक में दिये गये हैं। स्त्री जाति के अपमान की यह प्रवृत्ति कम नहीं हुई किन्तु बराबर बढ़ती ही गई। तुलसीदास जी ने भी 'ढोल गंवार' वाली चौपाई का ढोल पीटकर इसमें भाग लिया।

स्वामी दयानन्द और स्त्री जाति

आर्य समाज के प्रवर्तक,स्वामी दयानन्द सरस्वती का ध्येय केवल वेदों का प्रचार करना था। इसलिए उनके लिए अनिवार्य था कि वे स्त्री जाति की अपमान वृद्धि न करते। उन्होंने उदयपुर में एक ८, ९ वर्ष की बालिका के सामने नत मस्तक होकर देशवासियों को बतला दिया कि वे एक छोटी सी बालिका को भी मातृ शक्ति के रूप में देखते हैं और चाहते हैं कि देश और जाति में मातृवत्परदारेषु' की शिक्षा का फिर से मान होने लगे।

श्रीयुत रंगा अय्यर M.L.A. ने अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ फादर इण्डिया Father India में उचित रीति से लिखा है कि "१९वीं शताब्दी में ऋषि दयानन्द सरस्वती महिलाओं को उनके प्राचीन मान सम्मान पर आरूढ़ करने के लिए मसीहा के रूप में आए।"

यह बड़ी प्रसन्नता की बात है कि स्त्री जाति के सम्बन्ध में अब जाति का दृष्टिकोण बदला हुआ है। अब प्रत्येक माता पिता अपनी कन्या को सुशिक्षित देखना चाहता है और प्रत्येक युवक पढ़ी-लिखी कन्या से ही विवाह करने का इच्छुक है। परिवर्तन काल जाति के लिए बड़ा कठिन काल हुआ करता है। ऐसे समय को जरा सी भी भूल विनाशक हो जाया करती है। (क्रमशः)

अहिन्दी भाषी कर्मचारियों के लिए हिन्दी निबन्ध प्रतियोगिता

केन्द्रीय सरकारके अहिन्दी भाषी कर्मचारियों के लिए केन्द्रीय सचिवालय हिन्दी परिषद, नई दिल्ली ने १९-२० जुलाई, १९८५ को देश के सभी प्रमुख नगरों में हिन्दी निबन्ध प्रतियोगिता का आयोजन करने का निश्चय किया है। इसमें ऐसे सभी अहिन्दी भाषी सरकारी कर्मचारी जिनका हिन्दी का ज्ञान बी० ए० स्तर से कम है, भाग ले सकेंगे उन्हें निम्नलिखित विषयों में से किसी एक पर निबन्ध लिखना होगा :—

(क) कम्प्यूटर उपयोग और देश की उन्नति,

(ख) राष्ट्र की सुरक्षा,

(ग) देश की एकता और राजभाषा हिन्दी,

प्रतियोगिता में प्रवेश निःशुल्क है। इच्छुक व्यक्ति अपने नाम, पूरापता, कार्यालय का नाम तथा मातृभाषा आदि की सूचना भेजकर परिषद कार्यालय, एक्स. वाई-६८. सरोजिनी नगर, नई दिल्ली-११००२३, से विस्तृत नियम मंगवा सकते हैं।

अच्छे स्तर के निबन्धों पर अनेक पुरस्कार व प्रशस्ति-पत्र देने की व्यवस्था है। इस आयोजन का मुख्य उद्देश्य अहिन्दी भाषी सरकारी कर्मचारियों में हिन्दी के प्रति अभिरुचि उत्पन्न करना है। यह परिषद के विभिन्न रचनात्मक कार्यक्रमों में महत्वपूर्ण है।

सार्वदेशिक' पत्र के आजीवन सदस्य बनिये

किसी साप्ताहिक पत्र के ग्राहक बनने पर पत्र की ओर से चन्दे की बार बार मांग बार-बार मनिआर्डर भेजना आदि कठिनाइयां आया करती रहती हैं—इन कठिनाइयों से बचने के लिए पत्र का आजीवन सदस्य बन जाना ही श्रेयस्कर होता है १११ रुपये भेजकर सार्वदेशिक साप्ताहिक पत्र के आजीवन सदस्य बन जाइये। —सभा-मन्त्री

देशान्तर प्रचार

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन डर्बन (दक्षिण अफ्रीका)

दिल्ली १२ जून।

वेद निकेतन डर्बन के प्रधान पं० नरदेव विद्यालंकार ने दक्षिण अफ्रीका में होने वाले अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन के सम्बन्ध में निम्न सूचनाएं हमें प्रकाशनार्थ भेजी है। तदनुसार वहां पहुंचने वाले दर्शकों के लिए ३० दिन की बजाय ६० दिन ठहरने की अनुमति भारत सरकार को देने की दिशा में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा कार्यवाही करेगी। वैसे विदेश जाने वालों को पासपोर्ट में सामान्यतर दक्षिण अफ्रीका जाने की अनुमति नहीं दी जाती। फिर भी सरकार से पत्र व्यवहार हो रहा है।

२—वीसा के प्रार्थना पत्र का फार्म ठीक तरह से भरने पर, उनके कथनानुसार विशेष कठिनाई की संभावना नहीं है। (आवेदन-पत्र के इच्छुक वीसा फार्म की कापी इस सभा से प्राप्त कर सकते हैं।) प्रतिनिधि सभाएं इस सम्बन्ध में अपने प्रदेश। क्षेत्र में भी ये सूचनाएं प्रकाशित करावें।

३—(१) वीसा फार्म के साथ पासपोर्ट के पहले चार पृष्ठों की फोटो स्टेट कापी, जिसमें पासपोर्ट नम्बर व्यक्ति की पहचान सार्वदेशिक सभा में प्रवेश करने की अनुमति आदि हो, वह भेजना जरूरी है। पासपोर्ट भेजने की आवश्यकता नहीं है। हर एक व्यक्ति के दो फोटो ग्राफ होने चाहिए जिनके पीछे उसके हस्ताक्षर स्पष्ट अक्षरों में (अंग्रेजी में पूरा नाम तथा जन्म तारीख लिखी हो।)

(२) ट्रेवल एजेन्ट से जांच करके एलो फीवर तथा कोलेरा के टीकों के सर्टिफिकेट वीसा के फार्म के साथ भेजे जाय।

३—(४) पास पोर्ट में प्रवास के देशों में साउथ अफ्रीका प्रवेश पर निषेध लिखा रहता है। इसको रद्द करवाना आवेदन के लिए जरूरी है। प्रवासी के लिए अगर डर्बन पहुंचने पर पासपोर्ट फीस भरनी होगी तो उनकी ओर से आर्य प्रतिनिधि सभा साउथ अफ्रीका इस फीस को भर लेगी।

ज्ञात हुआ है कि बम्बई और गुजरात से दर्शकों का एक अच्छा समूह इस अवसर पर वहां पहुंचेगा।

४—भारत सरकार से दक्षिण अफ्रीका मे प्रवेश की अनुमति दिलाने में संभावित विलम्ब को देखकर श्री नरदेव जी का सुझाव है कि पासपोर्ट के पहले चार पृष्ठों की फोटो कापी एवं वीसा फार्म पहले भेज देना चाहिए। दक्षिण अफ्रीकी सरकार वीसा फार्म पर यह मानकर स्वीकृति दे देती है कि वहां उपस्थित रहने के समय तक भारत सरकार की अनुमति पास पोर्ट पर मिल जायेगी।

ओम्प्रकाश त्यागी
महामन्त्री,
सार्व० आ० प्र० सभा दिल्ली

हमारी पूर्वी अफ्रीका की चिट्ठी

आर्य प्रतिनिधि सभा पूर्वी अफ्रीका का निर्वाचन २४-११-१९८४ को सर्वसम्मति से हुआ। इसके तुरन्त बाद ही मैं स्वयं और उपप्रधान श्री महेन्द्र जी ने सभी आर्य समाजों का दौरा किया। समाजों में हमने अपनी सभा के भजनोपदेशक श्री पं० सत्यपाल जी मधुर को लगातार भेजा है? उनका प्रचार कार्य बड़ा सफल रहा। अभी हम अंग्रेजी भाषा भाषी प्रचारकों को नियुक्त करने पर विचार कर रहे हैं इस देश में इस्लाम और ईसाइयों के प्रचार केन्द्र बड़ी सफलता पूर्वक सक्रिय हो रहे हैं।

आपको यह जानकर प्रसन्नता होगी कि कीनिया राज्य सरकार ने यहां की सभी शिक्षण संस्थाओं में धर्म शिक्षा कानूनन अनिवार्य कर दी है। इस सत्र से यह लागू हो गई है और इसी सत्र में पहली बार बच्चों को परीक्षा में बैठना होगा। इस्लाम और ईसाइयों ने अपने पाठ्यक्रम सरकार को भेज दिए हैं। किन्तु हमारे सामने कई कठिनाइयां थीं जिन्हें श्रीयुत डा० वेदीराम जी शर्मा ने ऐसे सुलझे हुए ढंग से निपटाया कि सरकार तथा सभी धार्मिक जनता प्रसन्न हुई। उन्होंने तथा श्री महेन्द्र जी भल्ला (उ० प्रधान सभा) ने सरकार से हिन्दू धर्म के पाठ्यक्रम को कीनिया राज्य की सभी शिक्षा संस्थाओं में लागू करने की स्वीकृति प्राप्त करने में अनथक परिश्रम किया। डाक्टर वेदीराम जी को सरकार ने अपने धार्मिक पाठ्यक्रम निर्माण के लिए पैनल पर ले लिया। सिख भाईयों ने हिन्दू धर्म के स्लेबस (पाठ्यक्रम) के अन्तर्गत आने में कुछ रुकावट डाली और अपना पृथक पाठ्यक्रम पेश किया। किन्तु डाक्टर साहिब की सूझ बूझ और योग्यता से सभी को शान्त होना पड़ा और जो स्लेबस उन्होंने सरकार को भेजा वही लागू हुआ। इससे आर्य समाज का सम्मान जनता में काफी बढ़ा है।

आर्य समाज और सभी संस्थाओं के स्कूलों कालेजों में अब हिन्दू धर्म भी पढ़ाया जाता है।

—हरवंशराय साही, प्रधान
आर्य प्रतिनिधि सभा, पूर्वी अफ्रीका नैरोबी

आर्यसमाजों की गतिविधियां

निर्वाचन

—आर्य समाज कोटा आर्य समाज रोड रामपुरा १९-५-८५ है।

प्रधान—श्री सोमेश्वर जी
मन्त्री—श्री बनवारीलाल
कोषाध्यक्ष—श्री कल्याण मल

—आर्य समाज बल्लभगढ़।

प्रधान—श्री बाबूराम जी
मन्त्री—श्री सुरेश कुमार ऐडवोकेट
कोषाध्यक्ष—श्री सुभाषचन्द्र जी

—आर्य सभा सिलीगुड़ी।

प्रधान—श्री जवाहरलाल आर्य
मन्त्री—श्री सर्वेश्वर झा
कोषाध्यक्ष—श्री सुभाष चन्द्र

—आर्य समाज पश्चिम बिहार ब्लाक १३ ए-३ नई दिल्ली।

प्रधान—श्री बी. एम. चौधरी
मन्त्री—श्री धर्मवीर शास्त्री
कोषाध्यक्ष—श्री हरिश्चन्द्र बधरव

—आर्योपप्रतिनिधि सभा वाराणसी का वार्षिक निर्वाचन आज दिनांक ९-६-८५ को आर्य समाज मन्दिर लल्लापुरा में दो पहर बाद २ बजे डा० आनन्द प्रकाश जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ, इसमें निम्न पदाधिकारी चुने गये :—

प्रधान—श्री शंकरलाल पोद्दार
उपप्रधान—श्री भगवत प्रसाद आर्य
,, —श्री बुद्धिराम प्रसाद वैद्य
,, —श्री केदारनाथ आर्य
मन्त्री—श्री अशोक कुमार त्रिपाठी
उपमन्त्री—श्री राजेन्द्र प्रसादसिंह
,, —श्री रवि प्रकाश जी
,, —श्री ज्वाला प्रसाद आर्य
प्रचार मन्त्री—श्री आशीष कुमार गोस्वामी
कोषाध्यक्ष—श्री मेवालाल जी आर्य
आर्य वीर दल अधिष्ठाता—श्री मदन बिहारी खन्ना
आय व्यय निरीक्षक—श्री बुद्धदेव जी

—अशोक कुमार त्रिपाठी, मन्त्री

—आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के पदाधिकारी एवं अन्तरंग सदस्य।

१—प्रधान प्रो० शेरसिंह पूर्व रक्षाराज्य मन्त्री
२—उपप्रधान भरतसिंह वानप्रस्थी. दयानन्द मठ, रोहतक
३— ,, बहिन सुभाषिणी, कन्या गुरुकुल खानपुर जि० सोनीपत
४— ,, श्री कन्हैयालाल जी महता, फरीदाबाद
५—मन्त्री श्री प्रो० सत्यवीर शास्त्री, डालावास जिला भिवानी
६—उपमन्त्री आचार्य सुदर्शनदेव हरिसिंह कालोनी, रोहतक (अध्यक्ष संस्कृत विभाग राजकीय महाविद्यालय, नलवा, जि. हिसार)
७—उपमन्त्री प्रो० सत्यवीर विद्यालंकार तिहाड़, जि० सोनीपत (छज्जूराम किसान कालेज हिसार)
८—कोषाध्यक्ष ला० रामकिशन प्रधान आर्य समाज बहादुरगढ़ मण्डी जि० रोहतक
९—पुस्तकाध्यक्ष आचार्य ऋषिपाल आर्य हिन्दी महाविद्यालय चरखीदादरी जि० भिवानी

इसके अतिरिक्त २६ अन्तरंग सदस्य निर्वाचित हुए।

सम्पन्न उत्सव

आर्य समाज शंकरपुर (नेपाल) में दिनांक १-६-८५ से ७-६-८५ पं० राजेन्द्र प्रसाद शास्त्री जी के आचार्यत्व में वेद कथा सम्पन्न हुई।

आर्य समाज चिटगोप्पा जि० बिदर कर्नाटक में श्री विट्ठल राव की कुकड़ाल ने ११-६-८५ को वानप्रस्थ आश्रम ग्रहण किया है। दीक्षा श्री विश्वम्भर मुनि वानप्रस्थ ने दी।

विवाह सम्पन्न

ग्राम तराई (नेपाल) के आर्य प्रचारक श्री रामचन्द्रसिंह जी क्रान्तिकारी की सुपुत्री का विवाह पर्सी जिला नेपाल के विन्ध्यवासिनी मन्दिर में श्री के. शास्त्री ध्रुव जी एवं सुवंश जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ।

ब्रह्मचर्य प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न २६ मई से ३० मई तक गुरुकुल आम सेना में आचार्य धर्मानन्द जी की प्रेरणा से शिविर सम्पन्न हुआ।

शोकसमाचार

आर्य समाज प्रेम नगर करनाल के प्रांगण में सैकड़ों स्त्री पुरुषों की यह शोक सभा श्री जगतरामजी की जो कि ३ जून से अपनी वेदकथा का कार्यक्रम कर रहे थे। उनकी कुसुम कुमारी (विवाहिता) के दुःखदाई निधन पर हार्दिक शोक प्रकट करती है।

—मन्त्री आर्य समाज

शुद्धि समाचार

हिन्दू शुद्धि संरक्षणीय समिति हरियाणा

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के तत्वावधान में गांव उत्तरोला (गोण्डा) में ११ मुसलमान राजपूत शुद्ध हुए।

दिनांक १६-६-८५ को १२ बजे आर्य समाज उत्तरोला में शुद्धि कार्य सम्पन्न हुआ। उसमें ११ मुसलमानों ने स्वेच्छा से यज्ञोपवीत धारण किया और वैदिक धर्म की दीक्षा ली। स्वामी देवानन्द महामन्त्री हिन्दू शुद्धि संरक्षणीय समिति और संसार मणि आर्य भूतपूर्व अब्दुल्ला के प्रयत्नों से सफल हुआ। इस कार्य में आर्य समाज उत्तरोला के प्रधान श्री ज्ञानेश्वर प्रसाद और मन्त्री श्री जगदीश प्रसाद जी, उपाध्यक्ष डा० धर्मपाल आर्य कोषाध्यक्ष श्री गोपी प्रसाद, महाशय छेदीलाल जी उपस्थित हुए।

	पुराना नाम	नया नाम	
१.	आस मोहम्मद	चन्द्र बहादुरसिंह	पुत्र आरिस
२.		राम कुमारी	पत्नी चन्द्र बहादुरसिंह
३.		रूपरानी	पुत्री ,, ,,
४.		चम्पा	,, ,, ,,
५.		पत्ता	,, ,, ,,
६.		केतकी	,, ,, ,,
७.	नूर मुहम्मद	अशोक विक्रम थापा	,, ,, ,,
८.	नूर जहां	सरोज देवी	पत्नी अशोक विक्रम थापा
९.	हलीमा	कु० आशा	पुत्री ,, ,,
१०.	फरीदा	कु० शारदा	,, ,, ,,
११.			,, ,, ,,

स्वामी देवानन्द जी द्वारा १०० हरिजनों को यज्ञोपवीत

दिनांक १८-६-८५ को स्वामी देवानन्द जी ने गांव कुकरकाट नगला भारखाड़ी पो० उमरेन जिला इटावा में तीन परिवारों में यज्ञ तथा पूरे गांव के करीब १०० हरिजनों का यज्ञोपवीत संस्कार कराया।

प्रधान मन्त्री की विदेश यात्रा सफल रही

प्रधान मन्त्री श्री राजीव गांधी जी की इस माह में विदेश यात्रा बहुत कुछ सफल रही, ऐसा विदेशी अखबारों के प्रचार माध्यम से संकेत मिलता है। भारत के युवा प्रधानमन्त्री का विदेशों में भव्य स्वागत एवं विशेष अमरीकी राष्ट्रपति श्री रिगन द्वारा भारत की नीतियों की काफी कुछ सराहना की गयी।

अब भारत की करोड़ों लोगों की आंखें श्री राजीव जी के निर्भीक वक्तव्यों की सराहना करती है। जिस तरीके से पाकिस्तान को परमाणु बम्ब सम्बन्धी सामग्री नई टेक्नोलोजी सम्बन्धी भारत की आवश्यकता, भारत की एकता और अखण्डता पर दृढ़ निश्चय, भारत सहित विश्व से आतंकवाद को समाप्त करना, भारत की सभी देशों के साथ समान विदेश नीति पर ऐसे अनेक गम्भीर मामलों को उठाकर भारत की छवि को बढ़ाया है। हम सभी को खुशी है कि सारी दुनिया में भारतीय प्रधान मन्त्री की शान बढ़ी है।

अतः हम श्री राजीव जी से प्रार्थना करते हैं कि जिस सतर्कता एवं बुद्धिमत्ता से यात्रा सफल की उसी तरीके से देश के अन्तर्गत नाजुक स्थिति का भी दृढ़ता से मुकाबला करके पंजाब, आसाम और गुजरात आन्दोलन तुरन्त समाप्त करें जिससे कि स्थिर सुख शांति स्थापित हो सके।

—अशोक कुमार, प्रधान
राष्ट्रीय एकता विचार मंच
८/८२, सिमल स्टोरी, रमेश नगर
नई दिल्ली-१५

चुनाव समाचार

मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा का चुनाव सम्पन्न हुआ जिसमें निम्न पदाधिकारी निर्वाचित हुए :—

श्री पं० रामगुरु जी शर्मा प्रधान, श्री बसराम आर्य मन्त्री, श्री रणवीर सिंह जी राणा कोषाध्यक्ष, श्री रामचन्द्र जी शर्मा अधिष्ठाता आर्य वीर दल।

—सभा मन्त्री

श्री कैप्टिन देवरत्न आर्य पं० युधिष्ठिर जी मीमांसक के अभिनन्दन समारोह में पण्डित जी के प्रति अपने उद्गार प्रकट करते हुए। मंच पर श्री सोमदेव जी शास्त्री, श्री इन्द्रबल मल्होत्रा, श्री जगदीशचन्द्र मल्होत्रा, मन्त्री आर्य विद्या मन्दिर, श्री ओंकारनाथ प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा बम्बई विराजमान हैं।

धर्मेन्दु जी सम्मानित

परोपकारिणी यज्ञ समिति दिल्ली के संरक्षक आर्य अनाथालय के मन्त्री तथा आर्य युवक परिषद् के प्रधान वयोवृद्ध आर्य नेता श्री पं० देवव्रत जी धर्मेन्दु को "बाल हितैषी संघ (रजि०) दिल्ली" द्वारा दिल्ली नगर निगम रंगशाला के सुसज्जित मंच पर भारी जनसमूह के बीच उनकी साठ वर्षीय समाज सेवा के कार्यों में रात-दिन संलग्न रहने पर समाज सेवी उपाधि से समाऽलंकृत किया गया।

कमल किशोर आर्य
प्रचार मन्त्री
आर्य युवक परिषद् (रजि०) दिल्ली

आर्य समाज थापर नगर मेरठ में हिन्दू-सिख एकता दिवस

आर्य समाज थापर नगर, मेरठ के साप्ताहिक सत्संग (दिनांक १६-६-८५ रविवार) की यह विशाल सभा, जिसके सभापति पं० इन्द्रराज जी, प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश हैं, देश की अराजक परिस्थितियों में देश की एकता, अखण्डता एवं प्रभुसत्ता की रक्षा के लिये हिन्दू-सिख एकता को प्राथमिकता देती है और प्रस्ताव पारित करती है कि हिन्दू-सिख एक थे, एक हैं और एक रहेंगे। विशाल हिन्दू धर्म की रक्षा के लिये गुरुओं का बलिदान अविस्मरणीय है। इसे व्यर्थ नहीं किया जा सकता। देश को स्वतन्त्र करवाने और धर्म की रक्षा के लिये हिन्दू और सिख वीरों का बलिदान बड़ा महत्व रखता है।

आज यह विशाल समुदाय भारत की एकता, अखण्डता और प्रभुसत्ता की रक्षा का संकल्प लेता है। यह सम्मेलन उग्रवाद, हिंसा और विघटनात्मक शक्तियों का पूरी तरह से विरोध करता है तथा सब से आग्रह पूर्वक अनुरोध करता है कि ऐसे व्यक्तियों और शक्तियों का ध्यान रखे जो देश को कमजोर करने में लगी हुई हैं तथा इन्हें हतोत्साहित करके कानून के हवाले करें।

विदेशी शक्तियों के षडयन्त्र को विफल करने के लिए यह हिन्दू सिख सम्मिलित जनसमूह देश एवं धर्म की रक्षा का पवित्र व्रत लेता है।

इस सभा के मुख्यवक्ता पं० इन्द्रराज जी, ब्रिगेडियर सरदार कुलदीपसिंह जी, डा० हरमहेन्द्रसिंह ग्रेवाल जी, माता मेलादेवी जी, प्रो० गुरबचनसिंह जी मलिक, मेजर सरदार सूरतसिंह जी, पं० ओम्प्रकाश जी शास्त्री (खतौली); सरदार सोहनसिंह जी, श्री मुनव्वराज खन्ना आदि थे। जिसका संचालन श्री नन्दलाल जी पाहवा, मन्त्री आर्य समाज, थापर नगर ने किया।

—नन्दलाल पाहवा, मन्त्री

२ खालिस्तानी गिरफ्तार

बम्बई २० जून। बम्बई के सहार अन्तर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे के गुप्तचर विभाग ने आज तथाकथित खालिस्तान राष्ट्रीय परिषद् के दो सिख सदस्यों को गिरफ्तार किया। हेमबर्ग (पश्चिमी जर्मनी) से आ रहे थे।

गुप्तचरों ने उनसे कुछ अवांछनीय दस्तावेज और खालिस्तान समर्थक कागजात जब्त किए।

गिरफ्तार सिखों के नाम रेशमसिंह और हरभजनसिंह बताये गए हैं।

बरामद दस्तावेजों से संकेत मिले हैं कि दोनों १६७६ के तथाकथित खालिस्तान राष्ट्रीय परिषद के सदस्य हैं और भारत सरकार के खिलाफ जनमत तैयार करने के लिए दुनिया भर की यात्रा कर चुके हैं।

पूछताछ के दौरान दोनों सिखों ने स्वीकार किया कि उन्होंने नकली नामों और जाली पासपोर्टों से पश्चिम जर्मनी, अमरीका, ब्रिटेन, स्विट्जरलैण्ड, संयुक्त अरब अमीरात हालैण्ड और कनाडा की यात्रा की। उन्होंने कहा कि खालिस्तान के बड़े नेताओं के आदेश पर वे भारत लौटे हैं।

सूत्र ने कहा कि रेशमसिंह और हरभजनसिंह पहली बार २६ अप्रैल, १६८३ में ब्रूसेल्स गए थे तथा इन्दिरा गांधी की हत्या से कुछ हफ्ते पूर्व बदले भेष में दिल्ली आए थे।

कुख्यात आतंकवादी तरलोचन गिरफ्तार

फिरोजपुर २० जून पंजाब पुलिस ने आज एक कुख्यात आतंकवादी तरलोचनसिंह सहित चार आतंकवादियों को गिरफ्तार किया। तरलोचनसिंह की गिरफ्तारी पर एक हजार रुपए इनाम घोषित था।

तरलोचन सिंह के पास से एक स्टेनगन और तीन अन्य आतंकवादियोंके पास से एक बन्दूक और एक रिवाल्वर बरामद की गई है।

संगरूर से प्राप्त खबर के अनुसार वहां पुलिस ने अखिल भारतीय सिख छात्र महासंघ के एक कार्यकर्त्ता हरिन्दरसिंह बली को राष्ट्रीय सुरक्षा कानून के तहत गिरफ्तार कर लिया है।

हरिन्दरसिंह अपनी गतिविधियों और भड़कीले भाषणों से माहौल खराब कर रहा था।

लुधियाना, २० जून। लुधियाना पुलिस ने ... के नाम से प्रसिद्ध लोक गायिकाओं सुरजीत कौर और जसपाल कौर को आज गिरफ्तार कर लिया।

जिला पुलिस प्रमुख श्री जे०पी० पांडेय ने आज यहां संवाददाताओं को बताया कि दोनों को राष्ट्र-विरोधी गतिविधियों के कारण गिरफ्तार किया गया।

बताया जाता है कि दोनों ने २६ अप्रैल को स्थानीय गुरुनानक इंजीनियरिंग कालेज में जनरैलसिंह भिंडरावाले के समर्थन में आपत्तिजनक गीत गाये थे तथा आपत्तिजनक भाषण दिए थे।

सार्वदेशिक प्रेस, दरियागंज नई दिल्ली में मुद्रित तथा रघुनाथप्रसादपाठक मुद्रक और प्रकाशक के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन, नई दिल्ली-१ से प्रकाशित।

ओ३म्

सार्वदेशिक

साप्ताहिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

सृष्टिसम्वत् १९७२९४९०८६]
वर्ष २० अङ्क ३१]

श्रावण कृ० १२ वि० २०४२ रविवार १४ जोलाई १९८५

दयानन्दाब्द १६१ दूरभाष । २७४७७१
वार्षिक मूल्य २०) एक प्रति ५० पैसे

स्त्री पुरुषों की मौलिक समानता और कानून

शरीअत आदि कानून देश की एकता, धर्मनिर्पेक्ष वाद की भावना के विरुद्ध

प्रशासन द्वारा नियुक्त कमेटी का मन्तव्य, समान विधि संहिता के निर्माण पर बल

भारत में स्त्रियों की स्थिति की जांच पड़ताल के लिए भारत
सरकार ने १९७५ में एक कमेटी नियुक्त की थी। उसकी रिपोर्ट में
समान विधि संहिता के निर्माण पर बड़ा बल दिया गया था। कमेटी
ने विस्तार पूर्वक यह सुस्पष्ट किया था कि 'प्रत्येक धर्म के कानून
स्त्री जाति के प्रति न्याय पूर्ण नहीं है। उसने इस अन्याय के निरा-
करणार्थ कानूनों में कुछेक सुधारो के सुझाव भी दिए थे। इस पर
भी रिपोर्ट में कहा गया है कि—

"स्वतन्त्रता के २७ वर्ष बाद भी समान विधि संहिता का न
होना वह असंगति है जिस पर धर्म निर्पेक्षबाद, साइंस और आधु-
निकता कितना ही बल दे दें तब भी वह मिट न सकेगी।
विविध धर्मों के व्यक्तिगत कानून पुरुषों और स्त्रियों में असंगत
भेदभाव से परिपूर्ण हैं जो मौलिक अधिकारों का अतिक्रमण करते हैं।
संविधान की भूमिका में प्रत्येक नागरिक को समान अधिकार
देने का वायदा किया गया था। इन कानूनों की विद्यमानता में उस
वायदे से मुकर जाना नहीं तो और क्या है? इन कानूनों का बनाए
रखना राष्ट्रीय एकता और धर्म निर्पेक्षवाद की भावना के भी विरुद्ध
है (जिसमें अल्पसंख्यक बहुसंख्यक आदि वर्गों को कोई मान्यता प्राप्त
नहीं होती—सम्पादक)

उल्लेखनीय है कि आर्यसमाज, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
के माध्यम से, देश की सूत्रबद्धता, भावात्मक व राष्ट्रीय एकता, स्त्रियों
की स्थिति में सुधार के निमित्त, प्रशासन से समान विधि संहिता वा
नागरिक अधिकार सहिता के निर्माण की कई बार मांग कर चुका
है। इतना ही नहीं सभा-प्रधान श्री शालवाले ने अधिवक्ताओं और
संविधान विदों से कानून का मसविदा भी बनवाकर भारत सरकार
को क्रियान्वयन के लिए भेजा था।

पिछले २ वर्षों से इस प्रकार के कानून के अभाव में, उच्चतम
न्यायालय जिन कठिनाइयों के समाधान में संलग्न है वे सर्वविदित
है। परन्तु खेद है संविधान के शब्दों और भावना के विरुद्ध प्रशासन
समान नागरिक अधिकार संहिता बनाने में आगे नहीं आ रहा है
जिसका कारण तुष्टिकरण की रीति नीति के सिवा और क्या हो
सकता है?

ओम्प्रकाश त्यागी
महामन्त्री-सभा

श्रीयुत युधिष्ठिर जी मीमांसक को अभिनन्दन पत्र भेंट करते हुए।
लोक सभा अध्यक्ष श्री बलराम जाखड उनके पास आर्य समाज
शान्ताक्रुज के महामन्त्री श्री कैप्टिन देवरत्न आर्य खड़े हैं
तथा आचार्य सोमदेव जी शास्त्री बैठे हैं।

Accomodation in Punjab

पंजाब में समझौता

सरकार अभी तक यह निर्णय नहीं कर सकी कि पंजाब में असे-
म्बली के नये चुनाव कराये जायें या राष्ट्रपति शासन और एक वर्ष
के लिए स्थापित रखने के लिये विधान में संशोधन किया जाये।
सम्पूर्ण परिस्थितियों पर विचार हो रहा है और पूरी छानबीन के
बाद कोई निर्णय किया जायेगा।

इसी मध्य इस बात पर अनुमान लगाने प्रारम्भ हो गये हैं कि
यदि चुनाव हों तो किस-किस पार्टी में गठजोड़ होगा। इस अनुमान
का तात्पर्य यह है कि प्रत्येक यह समझ रहा है कि कोई अकेली पार्टी
बहुमत प्राप्त न कर सकेगी। इस समय बड़ी पार्टियां पंजाब में चार
हैं। यों इनके धड़े हैं। ये चार ये हैं—अकाली दल, भारतीय जनता
पार्टी, कांग्रेस और कम्युनिस्ट। अकाली दल कितने धड़ों में बंटा हुआ

(शेष पृष्ठ ११पर)

सम्पादक—ओम्प्रकाश पुरुषार्थी

सहसम्पादक—रघुनाथ

गुजरात प्रान्त में आर्य समाज के बढ़ते कदम

सार्वदेशिक सभा के उपमन्त्री डा० आनन्द प्रकाश २० जून को त्रिदिवसीय यात्रा पर अहमदाबाद पहुंचे। प्रथम दिवस, गुजरात आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री मंगल सैन चोपड़ा, मन्त्री श्री रतन प्रकाश गुप्त एवं कोषाध्यक्ष श्री हरिश्चन्द्र पंचाल से गुजरात प्रान्त में आर्य समाज के संगठन की वर्तमान स्थिति तथा प्रतिनिधि सभा के कार्यों के सम्बन्ध में विस्तृत चर्चा की। गुजरात की प्रतिनिधि सभा अपने संगठनात्मक एवं प्रचार कार्यों को नए सिरे से व्यवस्थित कर रही है। इस सभा के समक्ष कुछ पूर्ववर्ती कठिन समस्यायें हैं, जिनसे निपटने का कार्य भी चल रहा है। प्रान्त की अनेक आर्यसमाजें तथा संस्थाएं इस सभा से सम्बन्धित नहीं हैं, उन्हें प्रतिनिधि सभा के अन्तर्गत लाने का प्रयास करना भी उचित है।

दयानन्द दर्शन नामक पत्रिका का प्रकाशन भी इस सभा द्वारा पिछले एक वर्ष से सफलता पूर्वक किया जा रहा है। प्रतिनिधि सभा का एक विशेष अभियान समाज के पिछड़े वर्ग से निकट सम्पर्क करने और उनमें आर्य समाज के प्रति निकटता का भाव उत्पन्न करने का है, जो बहुत ही प्रशंसनीय है। द्वितीय प्रातःकाल आर्य नगर कालोनी के आर्यसमाज में उपमन्त्री जी का भाषण हुआ। इस आर्य समाज की यह विशेषता है कि कमजोर वर्ग के व्यक्तियों की समाज है, जिन्होंने कालोनी बसाने के साथ ही एक सुन्दर आर्यसमाज भी बनाया है। समाज के प्रधान श्री तुलसीदास एडवोकेट के नेतृत्व में यह समाज गतिशील है। इस अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री चोपड़ा जी व उपप्रधान श्री धर्मवीर खन्ना भी उपस्थित थे और उन्होंने आर्यसमाज द्वारा सामाजिक क्रान्ति लाने पर बल दिया। अपराह्न में गुजरात प्रतिनिधि सभा की अन्तरंग बैठक हुई जिसमें डा० आनन्द प्रकाश जी का स्वागत किया गया। बैठक में गुजरात प्रान्त में वेद प्रचार के कार्य को तीव्र करने का निश्चय किया गया। श्री जयन्ती लाल जी साहित्य प्रचार का कार्य बहुत उत्साहपूर्वक कर रहे हैं। उन्होंने पिछले वर्ष में गुजराती भाषा में अनेक छोटे-बड़े ट्रैक्ट प्रकाशित किए हैं।

श्रद्धेय ला० रामगोपाल जी शालवाले अभिनन्दन समारोह में दी जाने वाली सम्मान राशि-संग्रह में सहयोग देनेका भी बैठकमें निश्चय किया गया। प्रान्त में व्याप्त आरक्षण विरोधी आन्दोलन के सम्बन्ध में गहराई से विचार किया गया और समस्या के समाधान के विषय में सन्तुलित प्रस्ताव पारित हुआ। तृतीय दिवस, उप मन्त्री जी सभा प्रधान, सभा मन्त्री जी के साथ गांधी नगर गए। वहां पर आर्य समाज का आलीशान भवन बन रहा है, जिसका निरीक्षण किया गया। यद्यपि अहमदाबाद में कर्फ्यू लगा हुआ था और नित्य ही हिंसक दंगे चल रहे थे, परन्तु फिर भी प्रान्तीय सभा के अधिकारियों ने अपना पूरा समय देकर इस दौरे के कार्यक्रम को सफल बनाया। गुजरात प्रांत में आर्य समाज के कार्य की बहुत व्यापक सम्भावनाएं हैं और आर्य समाजों के पास शक्ति भी हैं। आशा करनी चाहिए कि प्रतिनिधि सभा को सबका सहयोग प्राप्त होगा।

सभा सूचना

१ जौलाई १९८५ से सार्वदेशिक सभा के कार्यालय सचिव का कार्य श्री सुरेश चन्द्र पाठक ने सम्भाल लिया है। वे प्रसिद्ध संस्कृत विद्वान और गुरुकुल वृन्दावन के मुख्य अध्यापक स्वर्गीय श्री पं० शंकर देव पाठक के पुत्र हैं जिन्होंने संस्कृत में सत्यार्थप्रकाश का अनुवाद किया था और अनेक ग्रन्थों की रचना की। उनकी स्व० माता जानकी देवी जी एक प्रतिष्ठित संस्कृत विदुषी और आर्य परिवार की थीं। श्री पाठक पिछले दिनों भारत सरकार के विदेश मन्त्रालय में अवर सचिव के पद से रिटायर हुए थे।

ओम्प्रकाश त्यागी
महामन्त्री सभा

सोडल मन्दिर के पुजारी और हिन्दू नेताओं की रिहाई की मांग

हाल ही में पंजाब सरकार ने भारत सरकारके आदेश पर सैकड़ों उग्रवादियों को रिहा कर दिया है इनमें से बहुतों की हिंसा व देश-द्रोह के आरोप में गिरफ्तारियां हुई थीं। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले ने आज एक पत्र प्रधान मन्त्री श्री राजीव गांधी को भेजकर जालन्धर स्थित सोडल मन्दिर के पुजारी श्री अनिल कुमार पाठक की रिहाई के सम्बन्ध में पत्र लिखा है। पत्र में बताया गया है कि सोडल मन्दिर के पुजारी अनिल कुमार को गत वर्ष १९ जून को गिरफ्तार किया गया था और उन्हें अभी तक रिहा नहीं किया गया है। श्री शालवाले ने इस बात पर खेद प्रकट किया कि एक ओर पंजाब सरकार उग्रवादियों और देश द्रोहियों को छोड़ रही है परन्तु दूसरी ओर हिन्दू नेताओं को बिना कारण गिरफ्तार रखा जा रहा है। श्री शालवाले ने अपने पत्र में लिखा है इस गिरफ्तारी के कारण श्री अनिल कुमार की पत्नी व बच्चे गम्भीर संकट में हैं। उन्होंने प्रधान मन्त्री से अनुरोध किया है कि जेलों में बन्द अनिल कुमार तथा अन्य हिन्दू नेताओं को,जबकि उन पर हिंसा के आरोप नहीं हैं, तुरन्त रिहा करने के लिए पंजाब सरकार को प्रेरित करें।

सच्चिदानन्द शास्त्री
उप मन्त्री

पाकिस्तान में हिन्दुओं की दुर्दशा

चर्चा है कि पाकिस्तान के विदेशमन्त्री ने तीन दिन की दिल्ली वार्ता में यह सुझाव स्वीकार नहीं किया कि पाकिस्तान में बचे-खुचे हिन्दुओं को हिन्दू धर्म की पुस्तकें भारत से मंगाने की सुविधा दी जाए। हालांकि साहित्य के आदान-प्रदान की बात सांस्कृतिक समझौते में है।

अनुमान है कि पाकिस्तान में कुछ लाख हिन्दू विशेषकर हरिजन रह गए हैं। कुछ हजार सवर्ण हिन्दू भी सिन्ध और उत्तर पश्चिम सीमा प्रांत में है। हिन्दुओं को हिन्दी और संस्कृत की शिक्षा की इजाजत नहीं है। हिन्दू धर्म की पुस्तकें छापने की भी इजाजत नहीं।

१९४७ के दंगों में सभी हिन्दू पुस्तकें बर्बाद कर दी गई थीं। परिणाम यह है कि विवाह तक पढ़ने के लिए पुस्तकें नहीं।

भारत से जाने वाले हिन्दुओं के सामान की तलाशी ली जाती है और हिन्दू धर्म की पुस्तको को जब्त कर लिया जाता है। पाकिस्तान के एक-दो हिन्दुओं को ही भारत आने की इजाजत मिलती है और जब लौटते हैं तो उनके सामान की तलशी लेकर हिन्दू धर्म की पुस्तकों को छीनकर जला दिया जाता है।

(सां०न०भा० टाइम्स ५-७-८५)

टिप्पणी—आशा है भारत सरकार वास्तविकता से जनसाधारण को शीघ्र अवगत करेगी।—सम्पादक

श्री बनारसीदास चतुर्वेदी को श्रद्धांजलि

ज्ञानपुर (वाराणसी) विश्वभारती अनुसन्धान परिषद में एक शोकसभा का आयोजन किया गया, जिसमें वयोवृद्ध पत्रकार श्री बनारसीदास चतुर्वेदी के निधन पर शोक प्रकट करते हुए गुरुकुल महाविद्यालय, ज्वालापुर (हरिद्वार) के कुलपति एवं संस्था के निदेशक डा० कपिलदेव द्विवेदी ने कहा कि "श्री चतुर्वेदीजी ने जो देशसेवा, क्रान्तिकारियों का आश्रयदान, साहित्य साधना एवं पत्रकारिता का जो आदर्श प्रस्तुत किया वह सदा अनुकरणीय रहेगा।"

डा० द्विवेदी ने कहा कि उनकी पवित्रता और आदर्शपरता जन-जन को सदा प्रेरणा देती रहेगी।

डा० विभु मिश्र, डा० भारतेन्दु, एवं अन्य कई व्यक्तियों ने उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की। अन्त में दिवंगत महान आत्मा की सद्गति के लिए दो मिनट का मौन रखा गया।

७-५-८५ —आर्येश 'आर्य', प्रचार मन्त्री,

सम्पादकीय

कुरआन की चर्चा

इधर कई दिनों से मुस्लिम नेता परेशानी अनुभव कर रहे हैं, वैसे तो उनकी परेशानी कभी कम नहीं थी परन्तु इधर कुछ और बढ़ गई है। एक मुस्लिम महिला के पक्ष में सर्वोच्च न्यायालय ने जो निर्णय दिया है उससे उन्हें अपना भविष्य अन्धकार की ओर जाता प्रतीत हो रहा है। न्यायालय के निर्णय ने कुरआन के नाम पर संविधान प्रदत्त अधिकारों के छीनने को अनुचित ठहराया है। निर्णय का सबसे बड़ा नुकसान है कोई मुसलमान स्त्रियों को अपनी खेती समझने की कल्पना नहीं कर सकेगा। इस निर्णय को मुस्लिम नेता वैयक्तिक क्षेत्र में दखल मानते हैं। न केवल न्यायालय के निर्णय को अनुचित बता रहे हैं अपितु संविधान से उस धारा को हटाने की भी मांग कर रहे हैं जिससे भारत के नागरिक को समान अधिकार प्राप्त होते हैं।

इस विषय पर विचार करते हुये संविधान सभा की बहस पर दृष्टि डाली जाय तो समझने में आसानी होगी। संविधान सभा में पांच मुस्लिम सदस्य थे जिन्होंने इस धारा पर बहस के समय अपने विचार व्यक्त किये। उनमें से एक सदस्य ने इस धारा को अनुचित और मुस्लिम धार्मिक नियम में दखल माना। दूसरे सदस्य ने भविष्य में खतरे की आशंका व्यक्त की, शेष लोगो ने धीरे-धीरे इस समाज को इसके लिये तैयार करने की सलाह दी। डा० अम्बेडकर का स्पष्ट मत था कि संविधान और कुरआन के प्रसंगमें संविधान ही मान्य होगा। संविधान मानव अधिकारों की रक्षा का दस्तावेज है यदि कोई इस अधिकार को छीनने की कोशिश करेगा तो भारतीय नागरिकके नाते संविधान उसकी रक्षा करेगा।

केवल कुरआन के उद्धरण से मनुष्यकी बलि आज के युग मेंनहीं दी जा सकती, क्योंकि भारत के मुसलमान जो कह रहे हैं और चाहते हैं वह न मुस्लिम परम्परा में अनिवार्य है न समाज या व्यक्ति के हित में है। मुस्लिम देशों से अधिक कुरान की प्रतिष्ठा कहीं और नहीं हो सकती वहां भी बहुविवाह और एकपक्षीय तलाक को मान्यता नहीं दी गई है। वहां के समाज ने कुरआन के निर्देश रहते जिन सुधारों को स्वीकार किया है उसकी तुलना में कुरआन की दुहाई देकर सामाजिक बुराइयों को दूर न करना अपने समाजका अहित करनाहै।

दूसरी बात यह है कि यह पर्सनल ला बड़ा एक पक्षीय है। इसमें सिविल कानून मानने का मुस्लिम नेता आग्रह करतेहैं परन्तु क्रिमिनल पक्ष आते ही आंखें चुराने लगते हैं। दुर्जनतोष न्याय से यदि यह मान भी लिया जाय कि मुस्लिम पर्सनल ला रहना चाहिए तो हम चाहेंगे क्रिमिनल ला भी उसी तरह लागू किया जाना चाहिये और चोरी का दण्ड हाथ काटना और बलात्कार के अपराधी को पत्थरों से मारकर हत्या करनी चाहिए परन्तु इस पक्ष में मुस्लिम नेता सुधारवादी बन जाते हैं और कहते हैं इसमें युग के अनुसार सुधार होना चाहिए। सुधार का यदि अवसर है तो हमारी दृष्टि में सभी स्थानों पर सुधार होना चाहिए।

तार्किक दृष्टि से जहां सभी राष्ट्र स्त्री, पुरुष को सम्प्रदायों से ऊपर उठकर जीवन यापन का, प्रगति का, स्वतन्त्रता का अवसर देने के पक्ष में हैं तो भारत के मुस्लिम वर्ग को उससे वंचित रखने का किसे अधिकार मिल जाता है? और क्यों?

अब तक इस देश में मुस्लिम वर्ग की समस्या को उनके मुल्लाओं और नेताओं के हाल पर छोड़ा हुआ है परन्तु जैसे-जैसे शिक्षा और सामाजिक चेतना का उस वर्ग में प्रभाव बढ रहा है तो उन्हें अनुभव हो रहा है,जो अन्याय उनके साथ धर्म के नाम पर किया जाता है उससे उनमें संघर्ष भावना जागे यह स्वाभाविक है,ऐसे में मुस्लिम नेताओं को चाहिए कि वे संविधान की व्यर्थ की निन्दा छोड़कर अपने समाज का हित करने में आगे आयें।

कुरआन एक प्रसंग में चर्चित रहा जब हैदराबाद निवासी श्री चोपड़ा ने कलकत्ता हाईकोर्ट में कुरान पर प्रतिबन्ध लगाने की मांग करते हुये याचिका दाखिल की और वह विचारार्थ स्वीकार भी कर ली गई। इससे एक ओर मुसलमानों में हड़कम्प मच गया वहां सरकार परेशान हो गई। परिणामस्वरूप सरकार ने आवश्यकता से अधिक उतावलापन दिखाया जिससे ऐसा लगा वह न्यायालयों को अपने विचारों के अनुकूल बनाना चाहती है। चाहे जो हो अन्ततोगत्वा वह याचिका खारिज हो गई। बावेला शान्त हुआ। याचिका मे प्रतिबन्ध मांग का निराकरण करते हुए न्यायालय ने अपने निर्णय में स्पष्ट किया कि किसी समुदायके आस्था प्राप्त ग्रन्थ पर प्रतिबन्ध उचित नही परन्तु, साथ ही यह भी स्पष्ट किया कि इससे संवैधानिक अधिकार किसी को भी धर्म के नाम पर नहीं मिल सकते। जब हम बौद्धिक शक्ति को शारीरिक बल से दबाने को चेष्टा करते हैं तो हम पिछड़ जाते हैं। स्वामी दयानन्द जी ने पूरे जीवन प्रत्येक विरोधी विचार को शास्त्रार्थ के लिये ललकारा, उसे सिद्ध करने का आग्रह किया, समझकर छोड़ने के लिये समझाया परन्तु विचार को बल प्रयोग से दूर करने की बात नहीं कही। अतः किसी विचार पर केवल विचार होने के कारण प्रतिबन्ध लगाना अनुचित है जैसा कि मान्य न्यायाधीश का विचार है किन्तु आपके विचार समाज का अहित करते हैं तो आप दण्ड के भागी अवश्य होगे।

दूसरी बात हमारे सोचने की है हम भारत के नागरिक हैं। यह हमारा देश, इस देश के सभी नागरिकों ने जो भिन्न समुदाय, विचार,

लाला हंसराज गुप्त महान् राष्ट्रवादी थे

दिल्ली ४ जुलाई।
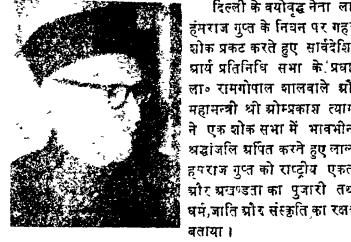
दिल्ली के वयोवृद्ध नेता ला० हंसराज गुप्त के निधन पर गहरा शोक प्रकट करते हुए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान ला० रामगोपाल शालवाले और महामन्त्री श्री ओम्प्रकाश त्यागी ने एक शोक सभा में भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए लाला हंसराज गुप्त को राष्ट्रीय एकता और अखण्डता का पुजारी तथा धर्म,जाति और संस्कृति का रक्षक बताया।

लाला हंसराज गुप्त के पिता कट्टर आर्य समाजी थे। इनका परिवार आर्य समाजी सिद्धान्तों का अनुयायी है। स्वर्गीय लाला जी पहले आर्य समाज के कर्मठ कार्य कर्ता भी रहे थे। आर्य समाज की अनेक सस्थाओं से उनका जीवन भर सम्बन्ध रहा है। लाला हंसराज गुप्त सार्वदेशिक सभा के भी आजीवन सदस्य थे। कुछ वर्ष पूर्व वह आर०एस०एस० में चले गये और उसकी सेवा में जीवन पर्यन्त लगे रहे। उनका लम्बा जीवन स्वयं में एक राजनैतिक इतिहास है। यह कई बार दिल्ली के महापौर चुने गये। उनके निधन से जहां एक अनुभवी राजनैतिक नेता हमसे छिन गया है वही राष्ट्रीय एकता, अखण्डता और संस्कृति का महान् सेवक और राष्ट्रवादी नेता हमसे सदा-सदा के लिए बिछुड़ गया है।

लाला हंसराज गुप्त के देहावसान पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का कार्यालय दिवंगत आत्मा के सम्मान में शोक प्रस्ताव पारित करने के उपरान्त बन्द कर दिया गया।

सच्चिदानन्द शास्त्री
उपमन्त्री-सभा

सामायिक चर्चा–

श्री ला० हंसराज गुप्त दिवंगत

श्रीयुत लाला हंसराज जी गुप्त हमारी पार्थिव आंखों से ओझल हो गए तथापि वे हमारी मानसिक आंखों से ओझल नहीं हुये हैं और न होंगे। उनका महान् व्यक्तित्व, उसकी छवि तथा जन-सेवा के कीर्तिमान सदा हमारी आंखों के सामने रहेंगे।

श्री गुप्त पांच वर्ष दिल्ली नगर-निगम के महापौर रहे। दिल्ली की अनेक शैक्षणिक, सामाजिक और सांस्कृतिक संस्थानों ने उनके योगदान और मार्ग दर्शन से लाभ उठाया। दिल्ली के सार्वजनिक जीवन में उन्हें उच्च स्थान प्राप्त रहा।

श्री गुप्त आर्यसमाज की ही देन थे। उनके पूज्य पिता श्री गुलराज गोपाल गुप्त परोपकारिणी सभा के वर्षों तक एक प्रमुख कर्त्ता-धर्त्ता और सार्वदेशिक सभा के वर्षों पर्यन्त सदस्य रहे थे। वे इंजीनियर थे।

श्री गुप्त सार्वदेशिक सभा के आजीवन सदस्य थे। बलिदान भवन जिसमें श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज का बलिदान हुआ था सुप्रसिद्ध दानी श्री सेठ रघुमल जी की सम्पत्ति थी। श्री रघुमल जी ला० हंसराज जी के श्वसुर थे। सेठ जी के निधन के पश्चात् यह तथा अन्य सम्पत्ति रघुमल ट्रस्ट के अधीन करदी गई जिसके मुख्य कार्यकारी श्री हंसराज जी गुप्त थे। स्वामी जी के बलिदान के पश्चात् जब सभा ने इस भवन को स्मारक भवन के रूप में परिवर्तित करने का प्रस्ताव किया और ट्रस्ट के समक्ष इसे सभा के नाम बिना धन लिए ट्रांस्फर करने की मांग रखी तो इसे अन्ततोगत्वा स्वीकार कराने में श्री गुप्त जी की भूमिका बढ़ी-चढ़ी रही थी।

जब सभा ने रामलीला ग्राउन्ड स्थित वर्तमान भवन (दयानन्द भवन) को क्रय किया था तब भी उचित मूल्य के निर्धारण में उन्होंने बड़ा महत्व पूर्ण योगदान किया था। एक बार वे जब सभा कार्यालय में पधारे तो बताया कि एक बड़े धनी व्यापारी इस भवनको १०लाख (दुगने मूल्य) में खरीदने के इच्छुक थे परन्तु उन्होंने उसे यह कहकर मना कर दिया था कि सभा व्यापारिक संस्थान नहीं है उसने अपने कार्य के लिए ही यह भवन खरीदा है। श्री गुप्त जी ने अनेक आर्य छात्र छात्राओं को वजीफे देकर उनकी शिक्षा में योग दान किया। विधवाओं, असहाय देवियों एवं पीड़ितों की सहायता करने में वे सदैव उद्यत रहते थे।

१९४८-५० में दिल्ली की आर्य विद्या सभा की कार्यकारिणी के सदस्य रहे। श्री म० कृष्ण, चौ० देसराज,मा० शिवचरण दास, लाला नारायण दत्त आदि अनेक नेता उसके सदस्य उन दिनों थे।

श्री गुप्त सुप्रसिद्ध स्वतन्त्रता सेनानी भी थे। राष्ट्र हित के कार्यों का उनका रिकार्ड भी विशुद्ध रहा।

वे बड़ी सूझ बूझ के महानुभाव थे। उनके सोचने और सही निर्णय करने का ढंग, सुस्पष्ट, साफ और सत्वर रहता था।

श्री गुप्त जी की निधन के समय आयु ८२ वर्ष की थी। वे अपने पीछे ४ पुत्र २ पुत्रियां और पत्नी छोड़ गए हैं। ४-७-८५ को निगमबोध घाट पर १२ बजे दोपहर उनका वैदिक विधि से अन्त्येष्टि संस्कार कर दिया गया जिसमें मूर्द्धन्य आर्य नेताओं के अलावा अनेक राजनेता राज्याधिकारी एव पत्रकार बड़ी संख्या में सम्मिलित थे।

भाषा आदि रखते हैं, सबकी आस्था इस देश में है। हमारा आदर्श हमारा संविधान है। अतः हमारे विचार हमारे लिये कितने भी पवित्र और ऊंचे हों आवश्यक नहीं देश व अन्य नागरिक भी उसे वैसा ही मानें। परन्तु सबके लिये संविधान समान रूप से ग्राह्य है, अतः राष्ट्रीयता के लिये असहमति के प्रति उदारता को अपनाना होगा। राष्ट्र हमारे अस्तित्व और अस्मिता का आधार है। धर्म हमारी विचार यात्रा का ज्ञापक। अतः कोई भी धर्म जो यहां की राष्ट्र की एकता, अखण्डता को ललकारता हो स्वीकार्य नहीं हो सकता। (परोपकारी जून, जौलाई १९८५)

जान की परवाह न कर लुटेरे को दबोचा

दो व्यक्तियों को दो-दो हजार रु० पुरस्कार

नई दिल्ली, २९ जून। दिल्ली के पुलिस आयुक्त श्री वेद मरवाह ने आज दो व्यक्तियों—कमलसिंह और चन्दनसिंह को बहादुरी के लिए दो-दो हजार रु० नकद तथा प्रशंसा पत्र देने की घोषणा की है।

बताया गया है कि इन दोनों बहादुर व्यक्तियों ने अपनी जान की परवाह न करते हुए, अलमोड़ा के रहने वाले एक कथित लुटेरे बचनसिंह को आज दोपहर उस समय दबोच लिया जब कि वह अशोक विहार में एक ४० वर्षीय महिला को लूटने के बाद अपना रास्ता साफ करने के लिए गोलियां चलाता हुआ भाग रहा था। पकड़े जाने के भय से बचनसिंह ने श्री कमलसिंह और चन्दनसिंह पर गोली चलाकर उन्हें घायल कर दिया। दोनों को अस्पताल मे दाखिल कराया गया है।

पुलिस के अनुसार बचनसिंह राजधानी के छवि गृहों पर पिछले ७ वर्ष से टिकटों की काला बाजारी किया करता था। उसने रोशन आरा रोड की एक महिला श्रीमती प्रकाश देवी को पिस्तौल दिखा कर सोने की जंजीर और कुछ नकद राशि लूट ली थी। उक्त महिला अशोक विहार के बस स्टाप पर बस की प्रतीक्षा में खड़ी थी।

श्री कमलसिंह और चन्दनसिंह दोनों ही इस मार्ग से आ रहे थे कि महिला द्वारा सहायता के लिए चीख पुकार सुन कर उस ओर दौड़ पड़े। दोनों को पीछा करते देख बचनसिंह ने अपनी देशी पिस्तौल से उन पर चार फायर किए। दोनों को एक-एक गोली लगी।

गोली से घायल होने के बाद भी दोनों बहादुर व्यक्तियों ने दिल्ली सशस्त्र पुलिस के दो सिपाहियों प्रेमदत्त और विद्यानन्द के साथ मिल कर अभियुक्त का पीछा किया और बचनसिंह को पकड़ने में सफल हो गए। पुलिस प्रवक्ता के अनुसार इन दोनों सिपाहियों को भी पुलिस आयुक्त की ओर से समुचित पुरस्कार दिया जा रहा है।

एक प्रेरक प्रसंग

—श्री डा० चिरंजीवि भारद्वाज

डा० चिरंजीवि भारद्वाज (सत्यार्थ प्रकाश के सुप्रसिद्ध अंग्रेजी अनुवादक) लाहौर में डाक्टरी पढ़कर बड़ौदा में डाक्टरी का काम करने पर नियुक्त हो गये थे। वहां उन्हें प्लेग ड्यूटी पर लगाया गया था। उस समय वहां प्रथा थी कि डेढ़ (अस्पृश्य) लोग जब रेल से उतरते तो फाटक पर आकर खड़े रहते। जब लोग टिकिट देकर चले जाते तो बाबू को दिखाकर अपना टिकिट जमीन पर रख देते और बाहर निकल जाते।

डाक्टर जी ने जब उन्हे छूकर देखना शुरु किया तो हल्ला मच गया कि डाक्टर भी डेढों को छूते हैं। इस पर डाक्टर भी अड गए और कहा कि मैं ऐसा ही करूंगा। उन्होंने वहीं दलितोद्धार का कार्य प्रारम्भ कर दिया। वहां भी जनगणना में वे लोग अपने को आर्य लिखवाते थे। परन्तु जनगणना के लेखक देवता न लिखते थे जब जोर दिया गया तो उन्होंने आर्य (डेढ़) लिखना शुरु कर दिया। तब न्यायालय में अभियोग चलाया गया। वहां पर वे यही कहते थे कि वे डेढ़ हैं इसलिए हम डेढ़ लिखते हैं।

डाक्टर जी का पक्ष यह था कि यदि वे ईसाई या मुहम्मदी हो जायें तो आप ईसाई (डढ) या मुसलमान (डेढ़) लिखेंगे या नहीं? तब वे तो ईसाई या मुसलमान ही लिखेंगे। इस पर डाक्टर जी ने कहा "अब भी आर्य हो लिखो साथ में डेढ़ शब्द क्यों लिखते हो। अन्त में न्यायालय में फैसला हो गया कि इन्हें आर्य ही लिखा जाय। डेढ़ शब्द उड़ा दिया जाये। वहां से नौकरी छोड़कर आप इंग्लैंड चले गये थे।

—रघुनाथप्रसाद पाठक

संस्कृत सत्यार्थप्रकाश के नये संस्करण का सार्वदेशिक सभा द्वारा प्रकाशन

आर्यसंस्कृति का आधिभौतिक उन्नति का चित्र

इस दृष्टिकोण को आधार बनाकर जिस सभ्यता का उदय हुआ उसका स्वरूप क्या था ? आर्य संस्कृति में सब प्रकार की भौतिक समृद्धि की कामना की जाती थी सुख ऐश्वर्य के लिए, संसार के प्राकृतिक वैभव के लिए दिल खोलकर प्रयास होता था । तभी तो राष्ट्र के उत्थान के लिए यजुर्वेद में जो प्रार्थना की गई उसमें कहा गया था—

"आ ब्रह्मन ब्राह्मणो "

अर्थात राष्ट्र में तेजस्वी ब्राह्मण हों, शूरवीर क्षत्रिय हों, भर-भरकर दूध देने वाली गउएं हों भारी भारी भार उठाने वाले बैल हो, सरपट दौड़ने वाले घोड़े हों । गांव तथा नगर में अपनी बुद्धि के लिए मानी जाने वाली देवियां हों । यजमान के वीर युवा पुत्र हों जो जहां जाएं विजय का डंका बजाते जाएं । रथों पर सवारी करें । सभाओं में भाषण दें जिस जगह हम चाहें बादल बरसें, वनस्पतियों में पके हुए फल लदे हों । हम सबका योग क्षेम हो कल्याण हो । हम सबकी सब तरह की समृद्धि हो ।"

धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष

लेकिन समृद्धि का इस तरह का उनका सपना था । धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष इन चार शब्दों में आर्य संस्कृति की जीवन के प्रति दृष्टि समा जाती थी । इन चारों मे मुख्य स्थान धर्म का था । धर्म पर दो दृष्टियों से विचार किया जा सकता है—विचारात्मक और क्रियात्मक । विचारात्मक दृष्टि से विचारकों ने अनेक विचार रखे हैं । इन विचारों का सम्बन्ध आत्मा, परमात्मा और प्रकृति से है । कोई कुछ मानता है और कोई कुछ ।

क्रियात्मक दृष्टि से धर्म का अभिप्राय उन व्यावहारिक बातों से है जो जीवन को प्रेरणा देती हैं । जैमिनि ने मीमांसा दर्शन में कहा है "जो प्रेरणा में वह धर्म है ।"

जीवन को प्रेरणा देने वाली बातें कौन सी है ? अहिंसा, सत्य, अस्तेय ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह । इन्ही से तो व्यक्तियों का समाज का और राष्ट्र का जीवन स्थापित होता रहता है । शान्ति से बरतें या लड़ाई झगड़ा करें । विश्व शान्ति का नारा लगाएं या डंडे के जोर से बोलें, दूसरे की चीज पर हाथ डाले या न डालें ब्रह्मचर्य से जीवन व्यतीत करें या लम्पटता को भी जीवन में स्थान दें । संसार को भोगते ही रहें या किसी समय इसे छोड़ भी दें—ये बातें जीवन को प्रेरणा देने वाली हैं । क्रियात्मक है व्यावहारिक है । इन्हीं को आर्य संस्कृति में क्रियात्मक धर्म कहा गया है ।

आर्य सस्कृति का कहना है कि अहिंसा, सत्य, अस्तेय आदि सार्वत्रिक है और सार्वभौम है । योगदर्शन मे इन्हें 'सार्वभौमा: महाव्रतम' कहा गया है । ये व्रत नहीं महाव्रत है ।

किसी देश काल में इन महाव्रतों में से किसी एक का उल्लंघन करना ही अधर्म है । इस दृष्टि से हिंसा, असत्य, चोरी करना, अब्रह्मचर्य, परिग्रह ये सब अधर्म है । इसी दृष्टि से आर्य संस्कृति में उसकी राजनीति में उच्च ध्येयों की सिद्धि के लिए बुरे उपायों का अवलम्बन करना वर्जित है ।

ध्येय की सिद्धि हो गई तो साधन उचित हों या अनुचित हो कोई परवाह नहीं । अंग्रेजी में इसे "ऐंड जस्टी फाइज दी मीन्स" कहा जाता है-यह बात आर्य संस्कृति नहीं मानती । आर्य संस्कृति तो कार्य कारण के अटल नियम को आधार बनाकर चलती है । यदि साधन बुरे हैं तो उनका बुरा फल मिलना ही चाहिए । वर्तमान ध्येय की सिद्धि बुरे साधनों से हो गई सो हो गई परन्तु बुरे साधन स्वयं एक कर्म है और जैसे प्रत्येक कर्म कार्यकारण के नियम से बधा हुआ है वैसे ही ये कर्म-ये बुरे साधन अपना बुरा कर्मफल लावेगी । फिर कैसे कहा जाय कि साध्य की सिद्धि हो गई तो साधन का उचित अनुचित होना कोई अर्थ नहीं रखता ?

जो विचारधारा अहिंसा, सत्य आदि को सार्वभौम महाव्रत मानती है कार्यकारण के नियम को अटल मानती है वह अनुचित साधनों से उद्देश्य की सिद्धि करने के लिए तय्यार नहीं हो सकती । अनुचित साधनों से उद्देश्य की सिद्धि के लिए वही तय्यार हो सकता है जो इन साधनों को स्वतन्त्र कर्म न मानता हो । कर्मफल को न मानता हो । कार्य कारण के नियम को अवश्य न मानता हो ।

(फाउन्टेन हैड आफ रिलीजन सं० ९ पृ० ११५, ११६)

'पारिजात' प्रणेतुर्वै मन्ये, वृत्तिर्मृषाऽऽविला

व्यतीते नाधिके काले दयानन्दाभिधे मुनौ ।
करपात्रीति नाम्नैको दोष मारोपयज्जन: ॥ १ ॥
तेनोक्तं यद्दयानन्दो वेद मन्त्रार्थ-पद्धतिम् ।
दूषयामास तां सर्वां माऽऽप्तोऽस्मिँल्लोके सनातनी ॥ २ ॥
प्रसङ्गंसोत्कटं सोऽत्र भाष्य कारो महीधरम् ।
यज्ञानां स्वेष्टि मन्त्रार्थे तत्प्रतिज्ञा परीक्ष्यताम् ॥ ३ ॥
'यजमान-प्रियाऽश्वेन शेता सर्वं' रतेच्छया ।
स्थापयेद् वीर्यमाकृष्य साऽऽत्म-योनौ च वाजिन: ।'४॥
व्याख्या महीधरस्येयं करणत्रिमताऽस्ति किम् ।
तदिष्टा किञ्च वेदार्थ-पद्धतिरेषा सनातनी ॥ ५ ॥
कुत्सितैरेभिरर्थैश्चेद् रक्ष्यते वेद-गौरवम् ।
क्षीयते तत् पुन: कस्मात् केऽन्ये वेदस्यशत्रव: ॥ ६ ॥
यज्ञानां स्वेष्टिमन्त्रार्थं दयानन्दकृतं मनाक् ।
श्रयतां 'मानवैरीश: स्तूयता विश्वरक्षक:' ॥ ७ ॥
'पारिजात' प्रणेतुर्वै मन्ये, वृत्ति र्मृषाऽऽविला ।
दयानन्द मनिन्दद् या याऽऽनन्दम्महीधरम् ॥ ८ ॥
दयानन्द: क्व वेदानां समुद्धर्ता दिनेश्वर: ।
क्वाऽन्धकारे स्थिता: धूका वेदभाष्यकृतोऽपरे ॥ ९ ॥
सत्यमेतं पुरस्कृत्य प्रमतेश्चिर वैरिण: ।
शासनेने कृत कस्य हितं, वक्तुं मयक्षमते ॥१०॥

—धर्मवीर शास्त्री
एम० ए० साहित्याचार्य
EI/२१ पश्चिम विहार
नई दिल्ली-६३

पाणिनि कन्या महाविद्यालय वाराणसी के वार्षिकोत्सव की आंखों देखी झलक

अप्रैल मास प्रतिवर्ष की भांति आया और विद्यालय भक्त श्रद्धालु जनों के वार्षिकोत्सव सम्बन्धी पत्र आने लगे, तिथियां निर्धारित हुई और चिरप्रतीक्षित ३१ मई व १, २ जून की तिथि सन्निकट आ गई। महोत्सव में भाग लेने हेतु २९ मई से हैदराबाद, सिकन्द्राबाद, मुरादाबाद, इलाहाबाद, धनबाद, नागोर, भरतपुर, गंगापुरसिटी, गया, सोनीपत, पानीपत, जयपुर, सहारनपुर, लक्सर, मायंग, केराकत, नैपाल सिलीगुड़ी आदि दूर-२ स्थानों से श्रद्धालु श्रोता परिवार इस पाणिनि कन्या महाविद्यालय को आर्यों का तीर्थ समझकर पधारने लगे तथा भारी वैवाहिक लगन के होते हुये भी अच्छी संख्या में स्थानीय जनों के अतिरिक्त विशिष्ट नागरिकों पत्रकारों एवं विद्वानों ने आकर उत्सव के कार्यक्रमों को बड़ी तन्मयता से देखा।

महोत्सव में पधारे हुए—आर्य जगत् के प्रसिद्ध संन्यासी पूज्यपाद अमर स्वामी जी महाराज, श्री पं० शान्ति प्रकाश जी शास्त्रार्थ महारथी, महोपदेशक श्री पं० सत्यमित्र जी शास्त्री, श्री धर्मवीर जी विद्यालंकार, श्री भारतभूषण जी वेदालंकार, श्री पं० सुद्युम्नाचार्य जी, प्रो० राजेन्द्र जी जिज्ञासु, श्री ओम्प्रकाश जी वर्मा रेडियो सिंगर तथा स्थानीय विद्वानों में श्री पं० ज्वालाप्रसाद जी गौड़, विद्वत्प्रवर श्री पं० शशिधर मिश्र जी, श्री पं० सुधाकर जी दीक्षित, सुश्री डा० प्रेमलता शर्मा संगीत विभागाध्यक्ष, बी० एच० यू० एवं श्री पं० अभय नाथ जी तिवारी आदि विद्वानों की समुपस्थिति ने जन-समुदाय को हर्षित किया, विद्यालय की हो रही निरन्तर प्रगति पर आप सबने हर्ष एवं सन्तोष व्यक्त किया।

३१ मई वार्षिकोत्सव का प्रथम दिवस सुमधुर वेद-मन्त्रोच्चार से प्रारम्भ हुआ। आध्यात्मिक भावना से ओत-प्रोत श्रद्धालु भक्तों से परिपूर्ण यज्ञवेदी थी। ब्रह्म यज्ञ, बृहद्देव यज्ञ, तथा बलिवैश्वदेवयज्ञ का कुशल संचालन विद्यालय की पू० आचार्या सुश्री डा० प्रज्ञा देवी जी ने किया। ध्वजोत्तोलन ९२ वर्षीय तप.पूत सन्यासी श्री अमर स्वामी जी के करकमलों द्वारा हुआ। श्री पं० ओम्प्रकाश जी वर्मा के भजनोपदेश, छात्राओं का सहगान एवं पू० स्वामी जी का आशीर्वादात्मक भाषण हुआ।

रात्रिकालीन सभा सामूहिक सन्ध्या, भजनोपदेश एवं विद्वानों के प्रवचनों से आरम्भ हुई। आज ब्रह्मचारिणियों के कार्यक्रमों में वेद-मन्त्रों के अष्ट विकृतिपाठ, अष्टाध्यायी की अन्त्याक्षरी, पंचोपदेश भाषण एवं सुमधुर गायन के अतिरिक्त दो प्रतियोगितायें हुईं। प्रथम "श्लोक अन्त्याक्षरी प्रतियोगिता" जिसमें कु० सुमित्रा प्रथम, कु० सुमति द्वितीय तथा तृतीय स्थान कु० ऋचा एवं कु० नम्रता ने अर्जित किया। द्वितीय थी—सद्यो वाक् प्रतियोगिता" इसमें तत्काल दिये गये विभिन्न विषयों में संस्कृत सम्भाषण कला की परीक्षा थी। निर्णायक गण थे—"श्री पं० सुद्युम्नाचार्य प्रवक्ता"—मु० म० डि० का० बलिया, २—श्री पं० सुधाकर दीक्षित, दर्शन विभागाध्यक्ष—सं० वि० वि० वाराणसी, तथा ३—श्री पं० सत्यमित्र जी शास्त्री शास्त्रार्थ महारथी गोरखपुर। निर्णायक मण्डल ने कन्याओं के संस्कृत में सद्यः वक्तृता की प्रशंसा की तथा संस्कृत एवं संस्कृति की निष्ठापूर्ण सेवाओं के लिये पू० आचार्या जी की भूरिशः सराहना की।

प्रतियोगिनी छात्राओं में—वसुधा देवी हैदराबाद प्रथम, मधुमती अमृतसर एवं कु० मृदुला गाजीपुर द्वितीय तथा कु० यशोलता सिलीगुड़ी ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। प्रतियोगिता के अनन्तर "इयं देववाणी सदा सेवनीया" संस्कृत गीत वातावरण की रसमयता को द्विगुणित कर रहा था। आज श्री पं० धर्मवीर जी विद्यालंकार के गुरुकुल शिक्षा प्रणाली पर हुये भाषण को सभी ने सराहा।

१ जून, पुनः सन्ध्या, यज्ञ भजन प्रवचन आदि के कार्यक्रम विधिवत् सम्पन्न हुए। अनेकों समागत भाई बहिनों ने नित्य यज्ञ करने की यज्ञमण्डप में प्रेरणा ही नहीं ली अपितु पू० आचार्या जी से यज्ञोपवीत ग्रहण कर अपने संकल्प की निष्ठा व्यक्त की। इसके अनन्तर नवनिर्मित कार्यालय विभाग का उद्घाटन श्रीमती बहिन कमला देवी जी इलाहाबाद ने बैंड एवं वंशीवादन के साथ वेद मन्त्रों से आहुति देकर समारोह पूर्वक किया। श्री पं० भारत-भूषण जी वेदालंकार एवं श्री पं० सत्यमित्र जी शास्त्री का आध्यात्मिक तथा विद्यालयीय गरिमा परिपूर्ण भाषण हुये।

रात्रिकालीन सभा सन्ध्योपासना एवं विद्यालयीय स्नातिका कु० नन्दिता शास्त्री एम० ए० के ध्रुपद गायन से आरम्भ हुयी। जिसे सुन सभी झूम उठे। प्रो० राजेन्द्र जिज्ञासु जी का शोधपूर्ण जोशीला भाषण हुआ। आज के कन्याओं के कार्यक्रमों का शुभारम्भ वेद मन्त्र गायन से हुआ। आज के कार्यक्रमों में सर्वाधिक लोकोपयोगी, शिक्षा॰ युगानुरूप कार्यक्रम था—"राष्ट्रीयता की आधारशिला एवं उसके विकास के उपाय" विषय पर आधारित भाषण प्रतियोगिता के निर्णायक थे। १—श्री डा० अभयानाथ जी तिवारी—सेन्ट्रल हिन्दू ब्वाय स्कूल वाराणसी, २—श्रीमती विनोदबाला जी—अध्यापिका—आल इण्डिया रेडियो वाराणसी, ३—श्री पं० विश्वमित्र जी शास्त्री प्राध्यापक टाण्डा। निर्णायक मण्डल ने अपना निर्णय प्रस्तुत करते हुए कहा—"सभी कन्याओं ने बहुत ही उत्तम बोला अतः निर्णय करना अति कठिन रहा पुनरपि एकाध नम्बरों की न्यूनाधिकता से कन्याओं ने प्रथम द्वितीय स्थान प्राप्त किया हैं।" इस प्रतियोगिता में प्रथम स्थान कु० विभा शामली, द्वितीय कु० सरस्वती आगरा तथा तृतीय स्थान अष्टवर्षीया कु० श्रुतिकीर्ति ने प्राप्त किया। प्रतियोगिता के अनन्तर जहां "सुनो सुनो देश वालो ! कहानी अपनी" इस लोक धुन में आबद्ध राष्ट्रीय गीत ने जनता को मन्त्र मुग्ध कर दिया वहीं प्रतियोगिता से पूर्व ब्र० नम्रता के "कांग्रेस के सौ वर्ष" विषय पर आधारित हास्यव्यंग काव्य पाठ ने श्रोतृवर्ग को हास्यरस में निमग्न कर दिया। लघ्वी कन्याओं द्वारा संस्कृत में प्रस्तुत "चटका ब्रूते चूं चूं चूं वदति कुक्कुटः कुक्कू कू" सांकेतिक गान को तो लोगों ने खूब ही सराहा। वस्तुतः पशु पक्षियों की बोली का यह अभिनय अत्यन्त सजीव एवं आकर्षक था। आज कन्याओं के कार्यक्रमों का समायोजन कु० मृदुला एवं ब्र० रमा कर रही थीं जिनमें नववर्षीया नेपाल प्रदेशीया कु० रमा के कुशल मंच संचालन ने तो सभा में जान डाल दी थी।

२ जून उत्सव का अन्तिम दिवस, आज प्रातःकाल यज्ञशाला में पूर्णाहुति का दिन था। प्रभुदेव भी प्रातःकाल से ही अपने अमृत रस की बूंदों से धरती को तृप्त करने लगे जिससे व्यवस्था की दृष्टि से क्षणिक-क्षणिक चिन्ता अवश्य हुई किन्तु धन्य उस प्रभु की लीला, १० मिनट में ही वर्षा अवरुद्ध हुई, आसमान स्वच्छ हुआ और प्रतिदिवस की भांति ठीक ६॥ बजे से अग्निहोत्रादि के कार्य प्रारम्भ हुये।

संकल्प शक्ति के इस अपूर्व प्रभाव को देखकर सब गद्गद कंठ थे। अपार हर्ष सबमें व्याप्त था और आध्यात्मिक भावनाओं से परिपूर्ण यजमान हाथों में चन्दन की समिधा, प्रचुर मात्रा में गोले लिये हुये तथा विद्यालयीय गोशाला का शुद्ध गोघृत के साथ पाठशाला में पधारे। सुदूर प्रान्तों से आये कई भक्तों ने अपने पुत्र-पुत्रियों एवं पोत्रों के चूड़ाकर्म, नामकरण, उपनयन, एवं वेदारम्भादि संस्कार पू० आचार्या जी से कराये। यज्ञवेदी पर दिये गये आध्यात्मिक उपदेशों का सर्वसाधारण पर अमिट प्रभाव पड़ा।

रात्रिकालीन अन्तिम सभा में सन्ध्या भजनोपदेश के पश्चात् श्री भारतभूषण जी वेदालंकार, प्रो० राजेन्द्र जिज्ञासु एवं श्री पं० सत्यमित्र जी शास्त्री के प्रभावकारी भाषण हुये। आज ब्रह्मचारिणियों के खेलकूद शारीरिक व्यायाम प्रदर्शन का दिवस था किन्तु इससे पूर्व पू० आचार्या जी ने संक्षेपेण वार्षिक विवरण प्रस्तुत करते हुये वार्षिक उत्सव की निर्विघ्न समाप्ति हेतु परमपिता परमात्मा को एवं सभी समागत विद्वानों अभ्यागतों को धन्यवाद दिया। तदनन्तर कन्याओं ने शौर्यपूर्ण तलवार, भाला, छुरी, झूले पर विशेष आसन, विभिन्न

भारतीय सभ्यता में स्त्री जाति का स्थान

—श्री महात्मा नारायण स्वामी जी

(२)

परिवर्तन काल

स्त्री जाति के भी इस परिवर्तन काल में बड़ी सावधानी अपेक्षित है। कुछेक ध्यान में रखने योग्य सावधानियों का यहां उल्लेख किया जाता है—

(१) स्त्री और पुरुष मनुष्य जाति के दो भाग हैं और दोनों के लोक सम्बन्धी आवश्यकताएं और कर्त्तव्य भी पृथक-२ है। जो लोग कन्याओं को शिक्षा दिलाने के उत्साह में 'उन्हें वही शिक्षा जो पुत्रों को दो जाती है दिलाने लगते हैं, बड़ी भूल करते हैं। सच तो यह है कि प्रचलित शिक्षा पद्धति में देश की परिस्थिति और जाति की आवश्यकताओं पर दृष्टि डालकर मौलिक परिवर्तन करने की जरूरत है तब वह पुत्रों के लिए भी उपयोगी बन सकती है और पुत्रियों के लिए तो उसे एक दम बदल देना पड़ेगा।

(२) दूसरी बात सम्मिलित शिक्षा (Co-Education) है। प्राचीन काल से इस देश में यही सिद्धांत बराबर माना और काम में लाया जाता रहा है कि बालकों और बालिकाओं की शिक्षा पृथक-२ होनी चाहिए। पश्चिमी देशों की नकल करके इस देश में कई जगह कन्या और पुत्रों को आश्रमों में इकट्ठा रखा गया और उन्हें एक ही शिक्षालय में एक ही पाठविधि से शिक्षा देने का प्रबन्ध किया गया। मुझे जहां तक मालूम हो सका है प्रत्येक जगह इस परीक्षण में असफलता हुई। इसलिए इस सम्बन्ध में भी यही नियम प्रसिद्ध रहना चाहिए कि दोनों बालकों और बालिकाओं की शिक्षा पृथक-२ होनी चाहिए। कुछ समय बीता जब अमेरिका की एक शिक्षा सम्बन्धी रिपोर्ट में यह शिकायत की गई है कि अधिकतर स्त्री अध्यापिकाओं से शिक्षा पाकर और उनकी अनेक बातों का अनुकरण करके लड़के Womanized (स्त्रीवत) हो गये।

(३) तीसरी बात यह है कि इस समय शिक्षा पाने वाली कन्याओं में शारीरिकोन्नति की ओर से उदासीनता आ रही है। इस कुटेव का फल यह है कि अनेक स्त्रियां पहले ही प्रसव काल में मौत के मुंह में समा जाती हैं। पुराना तरीका गृह सम्बन्धी सभी काम स्वयं करने का बहुत अच्छा था परन्तु उन्हें तो अब पढ़ी लिखी स्त्रियां छोड़ रही है और उसके स्थान में कोई और ही व्यायाम करती ऐसा भी प्रायः नहीं देखा जाता। इसलिए आवश्यक है कि कन्याओं को विवाह से पहले और विवाह के बाद भी किसी न किसी प्रकार का व्यायाम चाहे वह गृह कार्य के रूप में हो चाहे और किसी प्रकार का अवश्यमेव करना चाहिए।

माता का सबसे बड़ा काम जैसा कि बड़े-२ समाज शास्त्रियों तथा राष्ट्रायकों ने कहा है कि बलवान पुत्रों और बलवती पुत्रियों का पैदा करना है। यदि माता स्वयं निर्बल हो तो वह किस प्रकार बलवान सन्तान पैदा कर सकती है?

प्रकार के स्तूप तथा जलती हुई मशालों के चमत्कारी खेल लगातार दो घण्टे तक प्रस्तुत किये। इन रोमांचकारी चित्ताकर्षक दृश्यों को देखकर जनता मन्त्र मुग्ध हो उठी। इस वर्ष खेलों में प्रतिवर्ष में भी अधिक निखार, सुसंयतता एवं विशेष उत्साह स्फूर्ति थी ऐसा लोगों ने अनुभव किया। इन सभी तीनों दिनों के कार्यक्रमों में श्रद्धेया बहिन सेवा देवी की व्यवस्था एवं कार्यकुशलता सदैव की भांति रही।

अन्त में कन्याओं को विभिन्न पुरस्कारों से पुरस्कृत किया गया जिसमें विशिष्ट वीरचक्र पुरस्कार कु० धारणा को पू० अमर स्वामी जी के करकमलों द्वारा प्रदान किया गया तथा शेष पुरस्कार श्री सेठ कन्हैयालाल जी इलाहाबाद ने प्रदान किये। तदनन्तर शान्ति पाठ के पश्चात् वार्षिकोत्सव समाप्त हुआ। —माधुरी तर्कप्सुका

पा० क० म० वि० वाराणसी-५

बाल जगत्

ईश्वर विश्वासी बालक

एक देश का बादशाह बरसों से बीमार था। बड़े-बड़े हकीमों के इलाज से भी वह रोग मुक्त न हुआ। अन्त में पड़ोसी देश के एक नामी हकीम को बुलवाया गया। उसने बादशाह के रोग का निदान करके एक दवाई बताई। वह दवाई थी एक विशेष कोटि के एक छोटे से जीवित बालक के कलेजे का सेवन करना।

प्रधान मन्त्री ने बालक की खोज शुरू कर दी और बड़ी ढूंढ तलाश के बाद एक बालक मिला जिसे एक अच्छी खासी रकम देकर माता-पिता से खरीद लिया गया।

हकीम के निर्देशानुसार बालक का कत्ल किया और जिगर निकाला जाना बादशाह की मौजूदगी (उपस्थिति) में होना था अतः बादशाह अपने प्रधानमन्त्री तथा कुछेक मुसाहिबों (राज्य परिषद के सदस्य) के साथ कत्ल किए जाने के स्थान पर बैठ गया।

लड़के को जब कत्ल के लिए एक ऊंचे स्थान पर खड़ा किया गया तो वह आसमान की तरफ देखकर हंसा। कत्ल किए जाने वाले लड़के का रोने के बजाय हंसना एक बड़ी अनहोनी बात थी। लड़के की इस हरकत से बादशाह और प्रधानमन्त्री आदि चकित रह गए। बादशाह ने जल्लाद को इशारे से रोककर लड़के से हंसने का कारण पूछा। लड़के ने उत्तर में कहा 'जहांपनाह! जिन मां बाप ने मुझे बड़े लाड़ प्यार से दस साल तक पाला-पोसा उन्होंने ही मुझे पैसे के लालच में बेच दिया। देश के जिस बादशाह से प्रजा रक्षा की आशा करती है वही अपने स्वार्थ की सिद्धि के लिए मेरा कत्ल करा रहा है। कुदरत के इस खेल को देखकर मैं हंसा और एकमात्र परमात्मा ही मुझे रक्षक देख पड़ा इसीलिए मैंने आसमान की तरफ निगाह उठाई थी।' लड़के का यह उत्तर सुनकर बादशाह मर्माहत हो गया। वह अपने आसन से उठा, और लड़के के पास जाकर उसका मुंह चूमा और उसे छाती से लगाया। जल्लाद ने अपनी तलवार म्यान में रखी और वह वहां से चला गया।

बादशाह लड़के का हाथ पकड़कर राजमहल में ले गया और पुत्रवत उसका लालन-पालन करने लगा। परमात्मा की कृपा से ठीक उपचार के बाद बादशाह भी शीघ्र ही रोगमुक्त हो गया। —रघुनाथप्रसाद पाठक

एक बार मुझे भ्रमण करते हुए बिजनौर जिले के एक ग्राम के निकट एक जंगली कही जाने वाली जाति (हबूड़ा) की एक माता को बच्चा जनते हुए देखने का अनायास अवसर मिल गया। मुझे एक बड़े घने वृक्ष की छाया में सड़क के किनारे ग्रीष्म ऋतु की दुपहरी में एक दिन विश्राम करने के लिए बाधित होना पड़ा। उसी समय हाबूड़ा वर्ग का एक जत्था वहां आया और उसी वृक्ष की छाया में वह भी ठहर गया। वहां आते ही उस जत्थे के साथ वाली एक स्त्री के बच्चा पैदा हुआ। नाम मात्र की सहायता एक दूसरी स्त्री ने दी अन्यथा सारे कार्य स्वयं बच्चा पैदा करने वाली माता ने कर लिए। थोड़ी देर बाद उस बच्चे को एक टोकरे में रखकर और उस टोकरे को अपने सिर पर रखकर चल दी। कठिनता से इस काम में ३ घण्टे लगे होंगे। परन्तु पढ़ी लिखी माताएं ३ घन्टे नहीं किन्तु ३ सप्ताह में मुश्किल से काम करने के योग्य होती हैं। यह भेद शारीरिक परिश्रम से उदासीनता का ही फल है।

(४) शारीरिकोन्नति के लिए यह भी अत्यन्त आवश्यक है कि कन्याओं के विवाह की आयु १६ (सोलह) वर्ष से किसी हालत में भी कम न हो। अल्पायु में विवाह होने का यही दुष्परिणाम नहीं होता कि स्त्रियां और उनकी सन्तान निर्बल होती है बल्कि इसका इससे भी अधिक भयंकर परिणाम बाल-विधवाओं की संख्या में वृद्धि भी होता है।

भारत के राजनैतिक पुनर्जागरण पर आर्य समाज का प्रभाव

—डा० डी. पी. श्रीवास्तव पी.एच.डी.

(६)

दयानन्द अधिनायक वाद के विरोधी और सीमित राजतन्त्र के समर्थक थे। उन्होंने वेदादि शास्त्रों के आधार पर सीमित राजतन्त्र की शासन पद्धति का समर्थन किया है। उन्होंने एक व्यक्ति के शासन को पसन्द नहीं किया है। सत्यार्थ प्रकाश में उन्होंने लिखा है कि "एक को स्वतन्त्र राज्य का अधिकार न देना चाहिए किन्तु राजा को सभापति तदाधीन सभा, तदाधीन राजा और सभा प्रजा के अधीन और प्रजा राज सभा के अधीन रहे।✽ पुनः जो प्रजा से स्वतन्त्र स्वाधीन राज वर्ग रहे तो राज्य में प्रवेश से प्रजा का नाश किया करे जिस लिए अकेला राजा स्वाधीन व उन्मत्त होकर प्रजा का नाशक होता है। अर्थात वह राजा प्रजा को खाए जाता है इसलिए किसी एक को राज्य में स्वाधीन न करना चाहिए। जैसे सिंह व मांसाहारी हृष्ट-पुष्ट पशु को मारकर खा लेते हैं वैसे स्वतन्त्र राजा प्रजा का नाश करता है अर्थात किसी को अपने से अधिक न होने देना श्रीमान को लूट-खूंट अन्याय से धन दण्ड लेकर अपना प्रयोजन पूरा करेगा।"♣]

ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका में भी उन्होंने एक व्यक्ति के शासन का विरोध किया है। उन्होंने लिखा है कि 'जहां एक मनुष्य राजा होगा वहां प्रजा ठगी जाती है।+ पुनः 'जहां एक मनुष्य राजा होता है वहां वह अपने लोभ से प्रजा के पदार्थों की हानि हो करता चला जाता है। इसलिए राजा को प्रजा का घातक अर्थात हनन करने वाला भी कहते हैं। इस कारण से एक को राजा कभी नहीं मानना चाहिए।★ एक व्यक्ति के शासन के विरुद्ध दयानन्द के विचार अप्रत्यक्ष रूप से ब्रिटिश शासन-पद्धति के अन्तर्गत भारत के एक गवर्नर जनरल या प्रांत के एक गवर्नर की सर्वोपरि और निरंकुश स्थिति की आलोचना से भरे हुए थे।

सरकार के संगठन में दयानन्द ने तीन प्रकार की सभाओं का उल्लेख किया है—राजार्य सभा (जिसमें राज्य के कार्य सिद्ध किए जाएं। धर्मार्य सभा (जिससे धर्म का प्रचार और अधर्म की क्षति होती रहे।) विद्यार्य सभा (जिससे सब प्रकार की शिक्षाओं का प्रचार होता जाय।×

उन्होंने सत्यार्थ प्रकाश में लिखा है कि 'जब तक मनुष्य धार्मिक रहते हैं तभी तक राज्य बढ़ता रहता है और जब दुष्टाचारी होते हैं तब नष्ट भ्रष्ट हो जाता है। महा विद्वानों को धर्म सभा अधिकारी (और) प्रशंसनीय धार्मिक पुरुषों को राजसभा के सभासद और जो उन सबमें सर्वोत्तम गुण कर्म स्वभाव युक्त महान पुरुष हो उसको राज सभापति रूप मानकर सब प्रकार से उन्नति करें।"

तीनों सभाओं की सम्मति से राजनीति के उत्तम नियम, और नियमों के अधीन सब लोग वर्तें, सबके हित कारक कामों में सम्मति करें। सर्वहित करने के लिए परतन्त्र और धर्म युक्त कार्यों में अर्थात् जो-जो निज के काम हैं उन उन में स्वतन्त्र रहें।"

दयानन्द के इन विचारों में सार्वजनिक कल्याण और जन सम्मति के लोकतन्त्रात्मक आदर्श निहित है। जो आधुनिक भारत के राजनैतिक पुनर्जागरण में उल्लेखनीय महत्त्व रखते हैं। दयानन्द ने इन सभाओं के सदस्यों के लिए अत्यन्त उच्च योग्यताएं निर्धारित की हैं और अविद्यायुक्त मूर्खों के इन सभाओं में चुने जाने के विरुद्ध प्रजाजनों के लिए चेतावनी दी है। सभाओं के सदस्य केवल विद्वान ही नहीं अपितु श्रेष्ठ कर्म करने वाले भी होने चाहिएं योगाभ्यास के द्वारा उन्हें अपने मन पर नियन्त्रण रखना चाहिए।

✽ सत्यार्थ प्रकाश पृ० १२५
♣ ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका पृ० १२६
+ ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका पृ० १२६ ३५७
★ सत्यार्थ प्रकाश पृ० १२५
× सत्यार्थ प्रकाश पृ० १२५

केन्द्रीय आयुर्वेद अनुसंधान, मार्ग ६६, पंजाबी बाग, नई दिल्ली-११००२६ के सन्दर्भ में एक झलक

लेखक—सच्चिदानन्द शास्त्री

नई दिल्ली, केन्द्रीय आयुर्वेद एवं सिद्ध अनुसंधान परिषद (स्वास्थ्य मन्त्रालय) के अन्तर्गत संचालित केन्द्रीय आयुर्वेद अनुसंधान संस्थान, "धन्वन्तरि भवन, पंजाबी बाग को ढंग से देखने का तथा वहां की गतिविधियों से अपने आपको व जन-मानस को अवगत कराने का समुचित अवसर आज प्राप्त हुआ। दिनांक २१-५-१९८५ शनिवार पूर्वाह्न ११ बजे धन्वन्तरि भवन अवस्थित केन्द्रीय आयुर्वेद अनुसंधान संस्थान पहुंच कर सर्वप्रथम अपने गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर के मित्र डा० महेन्द्र कुमार त्यागी, अनुसंधान अधिकारी से भेंट कर के हार्दिक प्रसन्नता हुई। उन्होंने संस्थान के वर्तमान प्रभारी सहायक निदेशक महोदय डा० प्रमोद कुमार जैन से परिचय कराया। तदनन्तर डा० त्यागी जी के साथ संस्थान के सभी विभागों व अनुभागों तथा संस्थान की विभिन्न गतिविधियों की जानकारी प्राप्त की। संस्थान की समस्त आयुर्वेद अनुसंधान-परक गतिविधियों को देखते हुए यह निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि परिषद (भारत सरकार) ने "गागर में सागर" समेटने का प्रयास किया है। क्योंकि इतने अधिक कार्यक्रम संस्थान के पास हैं जिसको समेटने/चालू रखने के लिए आवश्यक स्थान नितांत अपर्याप्त है। यहां सभी प्रकार के रोगियों की चिकित्सा पूर्ण रूप से निःशुल्क आयुर्वेदीय पद्धति के अनुसार की जाती है। संस्थान के पास अपना ६० शय्याओं का सुसज्जित अन्तरंग चिकित्सालय है। यहां विभिन्न रोगों से पीड़ित आतुरों को प्रविष्ट कर के समुचित चिकित्सा-व्यवस्था की जाती है। अनुसंधान की दृष्टि से निदान-चिकित्सात्मक, द्रव्य-परिचयात्मक, द्रव्यगुण-कर्मात्मक तथा रासायनिक परीक्षणात्मक अनुसंधान के क्षेत्र में भिन्न-भिन्न परियोजनाओं पर कार्य हो रहा है। निदान-चिकित्सात्मक अनुसंधान के क्षेत्र में वायु के विकार (जोड़ों के दर्द) कास-श्वास तथा स्त्रियों के भिन्न-भिन्न प्रकार के रोगों की, रक्त-चाप (ब्लड-प्रेशर), मधुमेह, अपस्मार, अम्लपित्त, यकृतविकार, इत्यादि के ऊपर विशिष्ट अनुसंधान कार्य किया जा रहा है। अनुसंधानपरक अध्ययनों को संचालित बनाने के लिए सभी प्रकार के आवश्यक प्रयोगशालीय परीक्षण (विकृति-विज्ञानीय तथा जैव-रासायनिक) व क्ष-किरण, ई सी. जी. इत्यादि की समुचित व्यवस्था है। संस्थान से सम्बद्ध एक सबल नैदानिक एकक भी कार्यरत है जो क्षेत्र के ग्रामीण अंचलों में निःशुल्क चिकित्सा उपलब्ध कराती है। आज के युग की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए, परिवार कल्याण कार्यक्रम के महत्व को समझते हुए संस्थान में परिवार कल्याण परियोजना

केन्द्रीय आयुर्वेद अनुसन्धान संस्थान पंजाबी बाग, नई दिल्ली डा० महेन्द्रकुमार त्यागी अनुसंधान अधिकारी निदेशक महोदय डा० प्रमोदकुमार जैन आदि अधिकारीगण परामर्श करते हुए चित्र में दिखाई दे रहे हैं।

को एक नया रूप दिया गया है। इस क्षेत्र में भिन्न-भिन्न प्रकार की आयुर्वेदीय औषधियों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। इसको प्रमाणित करने के ध्येय से परिषद (केन्द्रीय स्वास्थ्य मन्त्रालय) केन्द्रीय आयुर्वेद अनुसंधान संस्थान को यह उत्तरदायित्व सौंपा है। संस्थान में इसका संचालन डा० (श्रीमती) राज त्यागी, अनुसंधान अधिकारी के निरीक्षण के अन्तर्गत चल रहा है।

संस्थान से सम्बद्ध एक अनुसंधान पुस्तकालय भी है जो कि अनुसंधान-कर्ताओं को पर्याप्त लाभप्रद है।

इतनी अल्प अवधि में (लगभग ६ वर्ष) में ही संस्थान को देश तथा तथा विश्व के अनेकों देशों (विश्व-स्वास्थ्य-संगठन) के प्रतिनिधि मण्डलों सहित अनेकों जाने-माने आयुर्वेद मनीषियों तथा वैज्ञानिकों के स्वागत करने का सुअवसर प्राप्त हुआ है।

हमें बताया गया है कि संस्थान जिस क्षेत्र में स्थित है, उसके आस-पड़ोस में बहुत सी पुनर्वास-बस्तियां हैं जहां कि हजारों की संख्या में रोगी संस्थान द्वारा प्रतिदिन निःशुल्क चिकित्सा का लाभ उठाते हैं। संस्थान के पास अपना स्वयं का कोई भवन भी नहीं है और न ही कोई अपनी सुसज्जित औषधि-निर्माणशाला है जो कि इस प्रकार के अनुसंधान संस्थान/चिकित्सालयों के लिए अनिवार्य है।

सम्पूर्ण जानकारी के अनुसार जितनी संख्या में तथा जिस प्रकार की निःशुल्क सुविधायें यहां उपलब्ध हैं उसको बराबर सभी को उपलब्ध करने के लिए पर्याप्त धनराशि की आवश्यकता है। संस्थान के कार्यक्रमों को देखते हुए ऐसा लगता है कि यहां कर्मचारियों/चिकित्सकों का भी पर्याप्त अभाव है।

आर्यसमाजों की गतिविधियां

आर्य समाजों के निर्वाचन

दिल्ली—दक्षिण दिल्ली वेद प्रचार मण्डल का निर्वाचन २६-५-८५ को श्री मदन मोहन शास्त्री की अध्यक्षता में निम्न प्रकार से सम्पन्न हुआ।

प्रधान—श्री हरबंससिंह सेठ, महामन्त्री श्री रामशरणदास

उपप्रधान—श्री कृष्णलाल सूरी, हरबसलाल कोहली

श्रीमती सरला पाल

मन्त्री—श्री चन्द्रप्रकाश आर्य ओम्प्रकाश मावल

कोषाध्यक्ष—श्री शालिगराम गौतम, देवराज जुनेजा

लेखा निरीक्षक चुने गए।

	प्रधान	मन्त्री	कोषाध्यक्ष
माडल टाऊन—	महावीर प्रसाद अबोल,	कृष्णचन्द्र शर्मा,	ओम्प्रकाश गोयल
अमर कालोनी—	मुलकराज डाबर,	ओमेन्द्रनाथ उप्पल,	सुरेन्द्र सहगल
राजौरी गार्डन—	हरीबाबू गुप्त,	नन्दकिशोर भाटिया,	ओम्प्रकाश मलिक
तिमारपुर—	भीमसिंह,	कृष्णदेव,	वेद ऋषि
भोपाल—	माधुरी शरण अग्रवाल,	जयदेव शर्मा,	जमना प्रसाद गुप्त

अमृतसर लोहगढ़—प्रि० धर्मवीर जी पसरीचा अन्य अधिकारियों की नियुक्ति का भार भी उन्हें सौंपा गया

लुधियाना—	यशपाल वालिया,	डा० धीवालिया,	रामचन्द जी
महापुरी (चौंडा)—	श्री० पी० गुप्त,	श्री कृष्ण आर्य,	रविन्द्र कुमार आर्य
चौंडरा (बुलन्द शहर)—	लालता प्रसाद जाटव,	रामबाबू गुप्त,	चौधरी चरणसिंह
जालन्धर शहर—	रामलुभाया नन्दा,	मास्टर लालचन्द नन्दा,	प्रेमचन्द्र भाटिया
अमरोहा—	धर्मेन्द्र कुमार आर्य,	सीताराम बन्धु,	अवनीश कुमार
सागर—	कृष्णदेव कोहली,	बद्रीप्रसाद मुंशी,	बद्रीनारायण
बड़नपुर—	इन्द्र किशोर मिश्र,	राज कुमारसिंह,	रमेश कुमार वाजपेयी
काजिमपुर—	शेरसिंह आर्य,	चन्द्रपालसिंह सिरोही,	प्रेमचन्द गुप्त

जिला आर्य उपप्रतिनिधि सभा

उन्नाव—	रविशंकर शर्मा,	आचार्य शिवदास,	मिश्रीलाल आर्य
आर्य नगर गाजियाबाद—	छेदालाल शर्मा,	नारायणदास,	ओमपाल जी
छिंदवाड़ा—	चन्द्र शेखर जी,	दारा नरसिंघवा,	बबका जिन्दवरवा
इन्दौर—	गणपति शर्मा,	कृष्ण गोयल,	जयराम सदारवानी
कृष्ण नगर दिल्ली—	राज कुमार मेहरा,	अशोक पठानिया,	ओम्प्रकाश बुधवार
कठुआ—	रूपलाल जी,	म० अमरनाथ,	बुर्दलाल जी
सरनौल—	कालूराम आर्य,	प्रह्लाद आर्य,	अयोध्या प्रसाद
लल्लापुरा वाराणसी—	मेवालाल,	लक्ष्मी नारायण,	गुरुदेव आर्य
मुजफ्फरपुर बिरनौधोवार—	पन्नालाल आर्य,	कुल भूषण,	रामकृष्ण
जोधपुर—	केसरसिंह सांखला,	गुलाबसिंह,	योगेशचन्द्र
कानपुर देहात—	देव द्विवेदी ऐडवोकेट,	मुरलीधर एम.ए.,	बहबालाल पुरवार

आर्य उपप्रतिनिधि सभा

मुरादाबाद—	विक्रमसिंह,	हरिश्चन्द्र	वीरसिंह
गुरदासपुर (गु० विभाग)—	मास्टर जगदीश राज,	अमरनाथ कोहली,	द्वारकानाथ शर्मा
जालौर—	रामदत्त भाटी,	नाथु जी आर्य,	तेजसिंह अधिष्ठाता

आर्य वीर दल चुने गए

फिरोजपुर छावनी—	रामचन्द्र आर्य,	जितेन्द्र ठाकर,	देवराज बत्रा

आर्य विद्या सभा

हरियाणा—प्रो० शेरसिंह जी प्रधान के नेतृत्व में ३१ आर्य बन्धुओं की कार्यकारिणी घोषित हुई।

आर्य युवक व्यायाम शाला सदर बाजार, लखनऊ-२

न्याय मूर्ति श्री श्री०न बारीलाल यादव को भेजा गया सन्देश

श्रीमान के द्वारा उच्च न्यायालय में संस्कृत भाषा में किया गया 'बाद' का निस्तारण भारत के इतिहास में नया अध्याय है जिसने देश विदेश के समस्त संस्कृत प्रेमियों के हृदय को गर्व से उल्लसित कर दिया है।

निःसन्देह श्रीमान के प्रति अनायास समस्त आर्य परिवारों के हृदय में श्रद्धा उत्पन्न कराने वाला यह कृत्य एक नैष्ठिक वैदिक तथा प्राच्य भारतीय संस्कृति एवं देववाणी में सिक्त आर्य परिवार की ही देन है।

आपके स्वस्थ दीर्घायु की कामना सहित अनेकानेक साधुवाद।

(जयदेव शर्मा)	(जयदेवसिंह आर्य)	(कृष्णानन्द यादव)
प्रचार मन्त्री	संगठन मन्त्री	प्रबन्धक

(पृष्ठ १ का शेष)]

है कोई नही जानता। सन्त हरचन्दसिंह लोगोवाल तो है ही लेकिन बाबा जोगिन्दरसिंह इन्हें चेलेंज कर रहा है। यह सर्वविदित है कि सन्त जी को अकालियो का बहुमत प्राप्त है। लेकिन बाबा जोगिन्दर सिंह के साथ आल इण्डिया सिख स्टुडेन्ट फैडरेशन है जिससे सन्त जी यह समझते हैं कि फैडरेशन नवयुवक सिखो की संस्था है। इसके अलावा आपको यह भी पूरा विश्वास नही कि प्रकाशसिंह बादल और जत्थेदार गुरुचरणसिह टोहरा क्या रोल अदा करते है। श्री बादल को कोई शिकायत परेशान कर रही है और टोहरा साहब दूध मे नहा कर आये तब भी आप पर भरोसा करना कठिन होगा। आप की सबसे बडी विशेषता आपकी चतुरतापूर्ण मनोवृत्ति है।

स्वाभाविक रूप मे सन्त हरचन्दसिह लोगोवाल अपने दिल मे प्रश्न कर रहे हैं कि ऐसे विश्वसनीय साथी पर कितना भरोसा करे। इनके अलावा भी अकालियो मे धडे है किन्तु ये कुछ नेताओ के आस दास घूमते हैं। जगदेवसिंह तलवण्डी का धडा है लेकिन इसने इस समय बाबा जोगिन्दरसिंह को अपना नेता मान लिया है क्योकि वह समझ रहा है कि यह ८४ वर्षीय बाबा सन्त लोगोवाल से बेहतर रूप मे पेश आ सकता है।

यह तो हुआ अकालियो का हाल।

कांग्रेसियो का क्या हालहै? यह शायद भगवान भी नही जानता। इन्ही दिनो जनरल राजेन्द्रसिंह स्पेरो को पजाब कांग्रेस का प्रधान बनाया गया है। आपसे पहले श्री सन्तोखसिंह रणधावा प्रधान थे। इन्हे दूसरे कांग्रेसियो के आरोप पर प्रधानता से अलग कर दिया गया। जिन्होने यह कहा कि इनके और इनके बेटे के सिख आतक-वादियो से सम्बन्ध है। हाई कमान ने इनका और इन पर आरोप लगाने वाले दोनो का झटका कर दिया। कहा जाता है कि श्री रणधावा साहब श्री दरबारा साहब के धड से सम्बन्धित है और आरोप लगाने वाले ज्ञानी जैलसिंह के धडे के हैं। इन दोनो धडो के अन्दर कई छोटे धडे हैं।

कम्युनिस्ट दो पार्टियो मे बटे हुए है। कम्युनिस्ट मार्क्सिस्ट जो बीजिंग समर्थक है और साधारण कम्युनिस्ट जो रूस के धन से खरीदे हुए हैं। बाकी रह गई भारतीय जनता पार्टी। यह हिन्दुओ की समझी जाती है लेकिन इसके राजनैतिक जमनास्टिक्स ने पजाब के हिन्दुओ को भ्रम मे डाल दिया है। किसी समय भाजपा नेता अकालियो के मतवाले थे हालाकि अकाली इन्हे घृणा से ठुकराते रहे। अकालियो ने जब निर्दोष और निरीह हिन्दुओ का कत्ल आम शुरु दिया तब भी ये अकालियो का दामन न छोड सके क्योकि ये समझते थे कि इनके साथ मिले रहने पर इन्हे कुछ प्राप्त हो सकता है। अन्त मे जब देवी इन्दिरा ने ब्ल्यू स्टार आप्रेशन की आज्ञा दी तो पजाब के हिन्दुओ ने यह अनुभव किया कि इनका रखवाला कोई तो है। भाजपा वाले तो जवानी जमा खर्च भी न कर रहे थे इसलिए इनकी गिनती न तीन मे न तेरह मे।

इस प्रकार ये चार बडी पार्टिया हैं। कहने को सबके नेता यही घोषणा कर रहे है कि वे किसी दूसरे को दूर से भी छूना नही चाहते लेकिन अपने राजनीतिज्ञो की विचारधारा को जानते हुए प्रत्येक यह कह रहा है कि पता नही कि अन्तिम समय पर कौन किसके साथ सहयोगी बन जाये। जब प्रत्येक का उद्देश्य अधिकार प्राप्त करना है तो किसी सिद्धान्त का किसको ध्यान है और अपने बच्चो को कौन बांध रखता है। आज अकाली कह रहे हैं कि वे कांग्रेसियों को हरगिज मुह न लगायेंगे और भाजपा वाले डींग मार रहे हैं कि वे अकालियो के साथ बैठने को तैयार नही हालाकि हर कोई जानता है कि पजाब मे कोई सी भी पार्टी स्वय सरकार नही बना सकती और निश्चित रूप में कोलीशन बनेगी। इनकी घोषणाओ से ही अनुमान किया जा सकता है कि ये पार्टिया कितने पानीमे है और कितनी ईमानदार है।

—नरेन्द्र (वीर अर्जुन ५-७-८५)

काम अधूरे थोडे से पूरे कर आऊगा।
जिस दिन मेरा कवि मर जाए मैं मर
जाऊगा।

सारस्वत मोहन 'मनीषी' सम्मानित

पिछले दिनो अखिल भारतीय तरुण सघ का वार्षिक समारोह देहरादून मे कविवर ताराचन्द पाल 'बेकल' की अध्यक्षता और डा० योगेन्द्रनाथ शर्मा 'अरुण' के सान्निध्य मे बडी सफलता के साथ सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर डी ए वी कालेज अबोहर के हिन्दी प्राध्यापक, आग के अक्षर, आधा कफन" तथा बूंद बूंद वेदना जैसे सशक्त काव्य-सकलनो के रचयिता और हिन्दी-काव्य मच के युवा कवि श्री सारस्वत मोहन 'मनीषी" को 'तरुण श्री १९८४' की उपाधि से विभूषित करके मानपत्र, स्मृति चिह्न शाल और नकद पुरस्कार से विधिवत् सम्मानित किया गया।

—महेन्द्र प्रताप असीजा
प्रधान 'भारत भारती,' अबोहर

बिना रटे केवल तीन मास में संस्कृत सीखें
अष्टाध्यायी का चमत्कार

निःशुल्क संस्कृत शिक्षण सत्र

दिनाक २२ ५-८५ से ७-६-८५ तक चलेगा। मुख्यालय आर्य समाज, राजगज, आगरा।

प्रिय महोदय

आगरा मे तीन शिविर चल रहे हैं:—

(१) आर्य समाज, राजगज, आगरा मे प्रात ९ से ११ बजे तक

(२) सनातन धर्म सभा भवन, शहजादी मण्डी, आगरा, मे सार्य ४॥ बजे से ६ बजे तक

(३) सेक्सरिया गर्ल्स इन्टर कालेज, बेलन गज आगरा मे प्रात ६॥ बजे से ८ बजे तक

विशेष जानकारी के लिए श्री चन्द्रप्रकाश द्विवेदी से भी आर्य समाज, राजगज, आगरा मे प्रात तथा साय ७ से ९ बजे तक सम्पर्क किया जा सकता है।

श्याम सुन्दर वर्मा अध्यक्ष
सरवनशाल इन्डस्ट्रीज
मसा देवी, राजा मण्डी, आगरा

रवि प्रकाश शर्मा मन्त्री
४५, ७५ नगला अटीता
लोहा मण्डी आगरा

स्व० डा० मोहनसिंह मेहता को श्रद्धांजलि

आज आर्य समाज मन्दिर मे साप्ताहिक सत्सग के उपरान्त एक शोक-सभा आयोजित कर स्व० डा० मोहनसिंह जी मेहता के आकस्मिक निधन पर दो मिनट का मौन रखकर श्रद्धाजलि अर्पित की गई तथा ईश्वर से प्रार्थना की गई कि उनकी आत्मा को सदगति प्रदान करें एव परिजनो को इस वज्रपात को सहन करने की क्षमता प्रदान करें।

इस अवसर पर श्री जयसिंह जी मेहता, श्री सुरेशचन्द्र जी गुप्त, श्री पन्नालाल जी पीयूष आदि ने डा० मेहता को विख्यात शिक्षाविद, कूटनीतिज्ञ एव समाज सेवी कहकर अपने विचार प्रकट करते हुए कहा कि डा० मेहता के द्वारा किये गये कार्य हमेशा याद किये जाते रहेगे।

साथ ही विमान दुर्घटना मे मृत व्यक्तियो को भी श्रद्धाजलि अर्पित की गई।

—ज्ञानप्रकाश गुप्त मन्त्री
आ० स० दयानन्दमार्ग उदयपुर

आर्य समाज, पोरबन्दर

श्री पुण्यश्लोक राजरत्न, राजमित्र, व्याख्यान. वाचस्पति, आर्यतत्ववेत्ता, अछूतोद्धारक महात्मा पडित आत्माराम जी अमृतसरी कुलपति (आर्य कन्या महाविद्यालय, बडोदा) का ११९ वा जन्मदिवस उनकी पावन स्मृति मे आर्य समाज, पोरबन्दर में मनाया गया।

दुर्गेश पडित
मानद सभ्य

कानजीभाई प्रधान
जे वी. थानकी, मन्त्री

ओ३म्
सार्वदेशिक
साप्ताहिक

सृष्टिसम्वत् १९७२९४९०८६]
वर्ष २० अङ्क ३४]

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र
श्रावण कृ० ३ सं० २०४२ रविवार २८ जौलाई १९८५

दयानन्दाब्द १६१ दूरभाष : २७४७७१
वार्षिक मूल्य ३०) एक प्रति ५० पैसे

धर्म युद्ध की समाप्ति के बाद प्रगति युग की शुरुआत

यह समाचार प्रसन्नता के साथ सुना जायेगा कि चार वर्ष पुराना धर्म युद्ध का मोर्चा उसके सेनापति सन्त हरचन्दसिंह लोंगोवाल ने समाप्त करने की घोषणा कर दी है। इस दौरान हिंसा और विनाश की शक्तियां पंजाब में मंडराती रहीं। प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी शहीद हुईं। भारतीय स्वाधीनता के शत्रु और पृथकतावादियों ने स्वर्ण मन्दिर को अड्डा बनाकर सारे देश को आतंकित कर रखा था। आतंकवादियों को जो निहत्थे स्त्री-पुरुष, बालकों की हत्या में विनाश और लूट में लगे रहे उनको शहीद की संज्ञा दी गई। उसके बाद वर्तमान परिस्थितिमें प्रधानमंत्री श्री राजीवगांधी ने जिस राजनैतिक सूझ-बूझ के साथ सन्त लोगोंवाल के साथ समझौते के मेमोरडंम पर २४-७-८५ को अपनी सहमति दी, उसे एक ऐतिहासिक दस्तावेज माना-जाना चाहिए। भारतीय सेना के अनुशासन की पूरी रक्षा हो सकेगी।

इस प्रसंग में हमें महाभारत युद्ध के अन्तिम क्षणों का स्मरण हो आता है। सूच्यग्र नैव दास्यामि कहने वाले दुर्योधन का मानमर्दन हुआ। दोनो पक्षों को अपार क्षति हुई। देश और विदेश में साम्प्रदायिक ज्वालाएं भारत के शत्रुओं ने लगा दी थीं। आर्यसमाज और यह सभा बराबर सतर्कता से स्थिति मे परामर्श देती रही और कार्य करती रही। सरकार और जनता दोनों ने हमारे दृष्टिकोण को सराहा। महाभारत के भीष्मपितामह और गुरु द्रोणाचार्य कौरवों के अन्याय और पापों को देखते रहे। उन्होंने अपने कर्त्तव्य का पालन नहीं किया। धर्मयुद्ध के सन्तनाम से पुकारे जाने वाले नायक धर्म और अधर्म को पहचानने और कहने मे चूक गये। सुबेरे का भूला भटका शाम को घर वापस आ जाये तो अच्छा ही अच्छा है। इस दृष्टि से हम इस समझौते पर अपने नवयुवा प्रधानमन्त्री को साधुवाद देते हैं और अकाली सन्त-सिपाही को बधाई देते हुए आशा करते हैं कि पंजाब की राजनीति की कढ़ी में हर पांचवें साल उबाल लाने का अकालियों का अब तक का रवैया सही मार्ग पर आ जायेगा। और वे समझौते की शर्तों को ईमानदारी से पालन करेंगे। राष्ट्रवादी शक्तियों और पंजाब के हिन्दू और सिखों को अब निर्माण के मार्ग पर आगे बढ़ना चाहिए।

—ब्रह्मदत्त स्नातक
प्रवै० प्रेस एवं जनसम्पर्क सलाहकार

सूचना

११ अगस्त का सार्वदेशिक का अङ्क स्व० रघुनाथप्रसाद पाठक की स्मृति में प्रकाशित होगा। आप संक्षेप में उनके संस्मरण शीघ्र भेज सकते हैं। —सम्पादक

श्री रामगोपाल शालवाले का प्रेस वक्तव्य

धर्मान्तरण विदेशी साजिस

लखनऊ, जुलाई। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने विदेशी धार्मिक संगठनों द्वारा आदिवासियों, निर्धन और निर्बल वर्ग के लोगों का धर्मान्तरण कराने को एक बड़ा षड्यन्त्र बताया है।

सभा के प्रधान रामगोपाल शालवाले तथा भूतपूर्व सांसद पंडित शिवकुमार शास्त्री ने आज यहां एक प्रेस कान्फ्रेंस में बताया कि आर्यसमाज धर्मान्तरण को रोकने तथा जो धर्म बदल चुके हैं उनको आर्य धर्म में वापस लाने में निरन्तर क्रियाशील हैं। ज्ञातव्य है कि उत्तर प्रदेश के बहराइच, गोंडा, बनारस, मिर्जापुर तथा कुछ अन्य जिलों में धर्मान्तरण किये जाने के समाचार प्रकाश में आये हैं।

दोनों नेताओं ने उर्दू को प्रदेश की दूसरी राजभाषा का दर्जा न दिये जाने की मांग की और कहा कि प्रदेश में उर्दू भाषी लोग १० प्रतिशत से भी कम हैं। उनके लिए उर्दू को राजभाषा का दर्जा दिया जाना न्यायोचित नही है।

श्री वासुदेवसिंह वीर पुरुष

उत्तरप्रदेश में कुछ साम्प्रदायिक भावना के मुसलमान संगठन उर्दू को अद्वितीय राजभाषा बनाने की मांग कर रहे हैं। यह अलगाव वादी प्रवृत्ति है। उत्तर प्रदेश के ही मुसलमानों ने भारत के बंटवारे

(शेष पृष्ठ १२ पर)

वेद-ज्ञान की खान है ?

प्रसिद्ध वैज्ञानिक राजारमन्ना की घोषणा

मद्रास, प्रसिद्ध वैज्ञानिक श्री राजारमन्ना ने सभी धर्म-जाति और सम्प्रदाय के लोगो से आग्रह किया है कि वे वेदों का अध्ययन करें क्योंकि वेद ज्ञान की खान हैं।

यहां कपाली शास्त्री परिवार जन्म शताब्दी-स्मारक में व्याख्यान देते हुए उन्होंने कहा, कि यह दुर्भाग्य की बात है कि पुराने विद्वान् वेदों का ज्ञान स्वयं तक सीमित रखते हैं और युवा पीढ़ी कुछ भी नहीं जान पाती।

उन्होंने सलाह दी कि टेलीविजन पर लोगों की जानकारी के लिये वेदों पर पहले कार्यक्रम चलाया जाय, ताकि मानव जाति के पुरातन ग्रन्थों का ज्ञान उससे मिले। उन्होंने कहा अंग्रेजीसाहित्य पर किताबें लिखने से अच्छा वेदों पर खोज करना चाहिये।

सम्पादक—ओम्प्रकाश पुरुषार्थी

दक्षिण अफ्रीका में विश्व आर्य सम्मेलन का निमन्त्रण

फीजी द्वीप समूह के प्रतिनिधि भी पहुंच रहे हैं

आपको यह जानकर प्रसन्नता होगी कि उपरोक्त सभा दिनांक १४, १५, १६ दिसम्बर १९८५ को अपने हीरक महोत्सव और विश्व आर्य सम्मेलन का आयोजन कर रही है। जिसके लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली की अनुमति मिल चुकी है। हम आशा करते हैं कि भारत से और अन्य देशों से अधिक से अधिक व्यक्ति यहां पहुंच कर इसे सफल बनावें। इसके लिए निम्नलिखित तैयारियां इच्छुक यात्री अभी से कर दें।

१—अपना पासपोर्ट बनवा लेवें। उसमें प्रवास के देशों में "साउथ अफ्रीका का नाम अवश्य लिखवा लेवें। वैसे सामान्य रूप से साउथ अफ्रीका के लिए भारत सरकार अनुमति नहीं देती है। पासपोर्ट के सम्बन्ध में आपका स्थानीय ट्रेवल एजेन्ट या क्षेत्रीय पासपोर्ट कार्यालय आपको मार्ग दर्शन दे सकेंगे। आप हमें भी लिखे जिससे हम यहां का वीसा फार्म आपको भेज देंगे।

२—भारत की प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभायें सार्वदेशिक सभा से सम्पर्क स्थापित करें। सम्भव है उन्हें यात्रियों का ब्यौरा अधिक न मिले तो आप स्वतन्त्र प्रयत्न करें।

३—अन्य भाई-बहन भी स्वतन्त्र रूप से पासपोर्ट और यहाँ के प्रवेश पाने की अनुमति के लिए प्रयत्न करें।

४—अपने मार्ग व्यय और प्रवास के लिए आवश्यक धन राशि इकट्ठी करें और एक्सचेंज के नियमों को समझ लेवें। हवाई यात्रा के लिए "वापसी टिकट" बनवाना आवश्यक है। दिल्ली से डरबन का एक तरफ का किराया लगभग १६,०००) रुपये और बम्बई से डरबन का किराया लगभग १७,५००) रुपये होगा। निश्चित किराया अपने "ट्रेवल एजेन्ट" से मालूम कर लें।

५—हमारी राय यह है कि आने वाले प्रतिनिधि तथा प्रवासी बन्धु मारिशस होकर डरबन पहुंचें। लौटते समय "लुसाका" तथा नैरोबी होते हुए वापिस भारत आ सकते हैं। यदि वे ऐसा चाहें। अन्यथा मारीशस होकर ही वापिस आ सकते है।

६—प्रवासी भाई बहिन यदि वे चाहें तो, होटल में ठहर सकते हैं। जिसका किराया लगभग १२.५० अमेरिकन डालर प्रति व्यक्ति प्रति दिन होगा। वैसे सभा स्थानीय आर्य अनाथालय में भी ठहरने की व्यवस्था कर रही है। जिसका किराया मात्र ५ अमेरिकन डालर प्रतिदिन होगा।

७—आप चाहें तो डरबन में तीन सप्ताह तक ठहर सकते हैं। वैसे सम्मेलन का कार्य ४-५ दिन में समाप्त हो जायेगा।

८—यदि आप सम्मेलन के कार्यक्रम में संगीत, नृत्य अथवा अभिनय के कार्यक्रम देने में रुचि रखते हो तो इसकी सूचना हमें सितम्बर १९८५ से पूर्व अवश्य भेज दें। जिससे आपको उन प्रोग्रामों में शामिल करने पर विचार किया जा सके।

९--वीसा के फार्म की कापी सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा देहली से प्राप्त की जा सकती है। वीसा फार्म के साथ पासपोर्ट के पहले चार पृष्ठों की फोटो स्टेट कापी, जिसमें पासपोर्ट नवम्बर व्यक्ति की पहचान, साउथ अफ्रीका में प्रवेश करने की अनुमति आदि हो भेजना आवश्यक है। पासपोर्ट भेजने की आवश्यकता

पं० रघुनाथ प्रसाद पाठक की स्मृति में स्थापित स्थिर-निधि में सभाएं समाजें तथा आर्य बन्धु मुक्त हस्त से धन भेजें।

आर्यसमाज दीवान हाल की महती सभा में श्री पाठक जी को शोक श्रद्धाञ्जलि दी गई। इस अवसर पर श्री पाठक जी की स्मृति में एक स्थायी निधि खोलने का प्रस्ताव पास किया गया जिसके द्वारा उनकी लिखी हुई पुस्तकों एवं लेखों आदि का प्रकाशन भविष्य में भी किया जाता रहे। प्रस्ताव पारित होने पर निम्नलिखित महानुभावों ने अपनी ओर से धन देने का आश्वासन दिया है। आर्य जनता से निवेदन है इस निधि को स्थायित्व देने हेतु आप अधिक से अधिक दान सार्वदेशिक सभा कार्यालय दिल्ली को भेजने की कृपा करें।

१ - दयानन्द सेवाश्रम संघ की ओर से	५०००)
२—श्री रामगोपालजी शालवाले प्रधान सार्व०सभा	१०००)
३—श्री सूर्य नारायण शर्मा	१
४—श्री केशव चन्द पाठक	१
५—आर्य समाज दीवान हाल	२
प्राप्त धन राशि	
६—श्री ब्रह्मदत्त जी स्नातक	२०१)
७ - श्री राधाकृष्ण वर्मा C/o आ० स० दीवानहाल	२०१)
८—श्री कमलेश कुमार C/o आ० स० दीवानहाल	१०१)

—सभा-मन्त्री

संस्कृत सत्यार्थप्रकाश के नये संस्करण का सार्वदेशिक सभा द्वारा प्रकाशन

नहीं है। हर व्यक्ति के दो फोटोग्राफ होने चाहिये जिसमें पीछे उसके हस्ताक्षर स्पष्ट अक्षरों मे (अंग्रेजी मे पूरा नाम व जन्म तारीख लिखी हो)।

१०—ट्रवल ऐजेन्ट से जांच करके यलो फीवर तथा कोलरा' के टीके का सर्टीफिकेट फार्म के साथ भेजे जावें।

११—पासपोर्ट में प्रवास के देशो मे "साउथ अफ्रीका प्रवेश पर निषेध" लिखा रहता है। इसको रद्द करवाना, आवेदक के लिए जरूरी है। भारत सरकार से दक्षिण अफ्रीका में प्रवेश की अनुमति मिलने में प्राय कुछ विलम्ब होता है अत. हमारा सुझाव है कि आप अपने पासपोर्ट के पहले चार पृष्ठों की फोटो कापी एवं वीसा फार्म पहले ही भरकर हमें भेज दें। दक्षिण अफ्रीकी सरकार वीसा फार्म पर यह मानकर अनुमति दे देती है कि वहां पहुंचने के समय तक भारत सरकार की अनुमति पासपोर्ट पर मिल जायेगी।

१२ –डरबन में दिसम्बर मास में हल्की गरमी पड़ती है वहां इस समय मध्य ग्रीष्म ऋतु का समय होता है। अतः पहनने के लिए हलके कपड़ों की ही आवश्यकता होती है।

१३—इस सम्बन्ध में अधिक जानकारी प्राप्त करने और मार्ग दर्शन के लिए हमसे भी शीघ्र पत्र व्यवहार शुरु कर दें।

पुनश्चय एक प्राप्त समाचार के अनुसार फीजी दीप समूह पहुंचेंगे (साऊथ पैसेफिक) से १०-१२ प्रतिनिधि भी इस अवसर पर

श्री एस. रामभरोसे
प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा साउथ अफ्रीका
३५, क्रास स्ट्रीट डरबन,
(साउथ अफीका)

पं. नरदेव वेदालंकार
सभापति, वेद निकेतन
साउथ अफ्रीका

नटों द्वारा धर्मपरिवर्तन

सभा कार्यालय में बहराइच के बाद अब बाराबंकी और मिर्जापुर में भी नटों द्वारा इस्लाम ग्रहण करने के समाचार अखबारों के माध्यम से आ रहे हैं। एक प्रमुख आर्य एवं सम्मान्य कार्यकर्ता ने कृपापूर्वक अखबार की कतरन बिना किसी पत्र या टिप्पणि के हमें भेजी है। उनका प्रयोजन स्पष्ट है कि यह सभा इसे रोके। न करने या कर पाने पर आर्य समाजी अखबार सरलता से समालोचना भी करते हैं। जो स्वागत योग्य है। परन्तु एक प्रश्न यहां उठ खड़ा होता है कि धर्म परिवर्तन के इन स्थलों पर या तहसील कस्बे या जिले या प्रान्त में कोई आर्य समाज या आर्य समाजी नहीं रहता, जो आवश्यक कार्यवाई करे। उन नटों के धर्म परिवर्तन के कारणों या सुख दुख को पूछे या उसमें शामिल हो? सार्वदेशिक सभा एक डायनेमो है।

एक शक्ति का केन्द्र है। इस पावर हाउस के लिए ईंधन और साधन जुटाना प्रत्येक आर्य का काम है। आर्य समाज के नियम में इसका स्पष्टतया उल्लेख है। यदि ऐसा नहीं होगा और राजा के तालाब में दूध डालने की आज्ञा का पालन सब लोग पानी डालकर ही करेंगे, तब न राजा न उसकी आज्ञा का कोई महत्व रह जाता है। सार्वदेशिक सभा का महत्व इसी बात से बनता है कि उसके घटक अर्थात प्रतिनिधि सभाएं जिला उपसभाएं स्थानीय आर्यसमाज के कार्यकर्ता ही नहीं अपितु प्रत्येक आर्य वैदिक धर्म के प्रचारकों अपना मुख्य कर्त्तव्य समझें। हम यह बात इसलिए और भी कहना चाहते हैं कि अगले मास में वेद प्रचार सप्ताह मनाने की योजना बनेगी, और उस अवसर पर वेद के स्वाध्याय के साथ आर्य समाज के कार्य को आगे बढ़ाना आवश्यक है। बहराइच पूर्वी उत्तर प्रदेश के इन धर्म परिवर्तनों के समाचार को सुनकर सबसे पहले यह सभा ही कमर कस के उठी है। सभा की ओर से प्रान्त, जिले और स्थानीय कार्यकर्ताओं को इस सम्बन्ध में न केवल पत्र लिखकर आदेश दिए गये हैं, अपितु सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले इसी मास में उन स्थानों पर पहुंचकर आर्य कार्यकर्ताओं के सहयोग से धर्म परिवर्तन को रोकने के लिए आवश्यक कार्यवाही करेंगे।

यू० पी० में वर्तमान धर्मपरिवर्तन का मुख्य कारण आर्थिक ही है। वस्तुतः वक्फ बोर्ड और खाड़ी देशों से आ रही करोड़ों रुपए की राशि का असर धर्मान्तरण पर पड़ रहा है। क्योंकि हरिजनों के नट-कंजर जैसे समुदायों को सरकार की आरक्षण नीति एवं हरिजन योजनाओं का १ प्रतिशत भी लाभ नहीं मिला जबकि कतिपय हरिजन जातियां और परिवार इसका भरपूर और अनुचित सभी लाभ उठा रहे हैं। नट व अन्य गरीब इस प्रलोभन का शिकार वे निर्धनतावश हो गए हैं। बहराइच मुस्लिम पठान जमींदारों का गढ़ आज भी है। वे सदा मुस्लिम लीगी सदा से रहे हैं।

ताजा प्राप्त रिपोर्टों के अनुसार इस नट कंजरों का धर्मपरिवर्तन से जमात के साथ जमींदारों के यहां जमीन एवं बेठ मजदूरी मिलने लगी है। अरबी के मदरसे व उर्दू शिक्षा की व्यवस्था के अलावा नकद सहायता भी अल्प मात्रा में दी गई है, परन्तु आज भी उनको हिन्दुओं की भांति मुसलमान दूर से उनके हाथों पर बर्तन में भीख के रूप में डालते हैं। उनका सामाजिक दर्जा मुस्लिमों में पूर्ववत् नीचा है। वे इस जन्म में सैयद, पठान, मुगल न बन सकेंगे और न उनकी सन्तान उनमें विवाह कर सकेगी। मुस्लिम शासन में मुसलमान बनने वाले हरिजनों के अलावा वे पराजित सवर्ण भी थे, जो ओलिया, राज्याश्रय एवं राजदंड से मुसलमान बने। करोड़ों व्यक्ति आज हिन्दू बन गए हैं। स्व० डा० अम्बेडकर का दूसरा विवाह एक ब्राह्मण महिला से हुआ, फिर भी अस्त स्वार्थ के हरिजन उनको हरिजन नेता ही कहते हैं। हरदोई के स्वर्गीय प० शालिग्रामस्वरूप एम० एस० ए०, बरेली के स्व० देवदत्त, गाजीपुर के स्व० अलीबख्श सूफी इस्लाम के मौलवी होते हुए भी पूर्वजों के धर्म में वापस आ गए और अब भी (जोधपुर) प्रो० ऐयाज ईरानी, एडवोकेट डा० अमीर अली एवं सैंकड़ों विदेशी हिन्दू धर्म की शरण में बराबर आ रहे हैं। आर्य समाज सदा से मानव मात्र के अधिकारों का पक्षधर रहा है। राजनैतिक स्वार्थों के कारण हरिजनों के स्वयंभू नेता अपनी बिरादरी, कुटुम्ब और बेटे-बेटियों के लिए ही बैंक, जमीन और नौकरियों का लाभ भरपूर उठा रहे हैं। इस अवस्था दरिद्र और कम संख्या वालों की पूछ हरिजन नेताओं द्वारा न करना उनके व हिन्दू धर्म के लिए अन्ततः आत्मघाती होगा। सवर्ण हिन्दू इनके लिए केवल आर्यसमाज के द्वार खटखटाते हैं। इनका सक्रिय सहयोग कूप के बराबर और सबसे सम्मानपूर्वक व्यवहार करना उनकी रचना नहीं।

—ब्रह्मदत्त स्नातक

अवै० प्रेस एवं जनसम्पर्क सलाहकार

स्वराज्य हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है

१ अगस्त लोकमान्य बालगंगाधर तिलक की पुण्य तिथि है। तिलक के एक जीवनी लेखक ने उनके सम्बन्ध में एक जगह लिखा है कि जिन दिनों अपने और अपने देश हित के सम्बन्ध में कुछ सोचना भी राजद्रोह था और कहीं एकान्त में भी अंग्रेजी शासन का विरोध बम्ब विस्फोट करने के समान घोर अपराध था, और अंग्रेज नौकरशाही की पुलिस तो दूर, एक दुबले पतले चौकीदार की लाल पगड़ी भी सैंकड़ों व्यक्तियों की आवाज को भारी बना देती थी, किन्तु उस कन्टकाकीर्ण समय से उत्पन्न होकर लोकमान्य तिलक ने ही हमें सबसे पहले यह गुरुमन्त्र दिया था—

"स्वराज्य हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है।"

निस्सन्देह तिलक गांधी युग से पहले एक प्रचण्ड सूर्य के समान, भारत की राजनैतिक क्षिति पर उभरे थे। लाल (बाल गंगाधर तिलक), पाल (विपिन चन्द्र पाल) और लाल (लाला लाजपत राय) की त्रिमूर्ति के वे आकाशमान्य नक्षत्र थे। उनकी सेवाएं सदैव राष्ट्र स्मरण करता रहेगा। परन्तु इसके साथ ही देश की वर्तमान साम्प्रदायिक राजनीति की जड़ उस १९१६ के लखनऊ पैक्ट के अन्तर्गत जमीं, जबकि उनके सभापतित्व में कांग्रेस ने मुस्लिम लीग के साथ पैक्ट करके साम्प्रदायिक आधार पर पृथक निर्वाचन को स्वीकार किया था, जो आगे जाकर पाकिस्तान का आधार बना। परन्तु यह निर्विवाद है कि जिस निर्भीकता और त्याग का उदाहरण देश के सामने तिलक महाराज ने रखा, और महाराष्ट्र में गणेशोत्सव आदि के द्वारा जो जागरण उन्होंने पैदा किया, वह उनकी राष्ट्र के प्रति अनुपम देन थी। हम उनको इस अवसर पर प्रणाम करते हैं।

भारत की राजधानी दिल्ली के नार्थ ब्लाक स्थित केन्द्रीय सचिवालय के पिछले विशाल गेट पर एक सूक्ति अंग्रेजी के काल में लिखी गई थी। उसको उस मार्ग पर आते जाते या दफ्तर में घुसने वाले हजारों लाखों नागरिकों और सरकारी अधिकारियों ने पढ़ा होगा। इसका कुल मिलाकर कितना प्रभाव या जागृति हुई, यह देखने में नहीं आता। किसी देश भक्त की निम्न लिखित ये सूक्ति की पंक्तियां कितनी सार्थक है—

Liberty will not descend to a people. A people must raise them selves to liberty. It is a blessing that must bs earned, befor it can be enjoyed.

अर्थात स्वाधीनता यों ही नहीं मिल जाती। लोगों को उसके लिए कमर कसनी होगी और इसका सुफल भोगने के लिए पहले इसकी प्राप्ति के लिए आशीर्वाद लेना होगा।

इस प्रसंग में हमें महर्षि दयानन्द सरस्वती के उन प्रेरणादायक क्रान्तिकारी भाषणों और लेखों का स्मरण हो आता है जिसके अन्तर्गत कांग्रेस की स्थापना से बहुत पूर्व और तिलक महाराज के 'स्वराज्य हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है" कहने से बहुत पहले "कोई चाहे कितना ही क्यों ना करे अपने देश में अपना राज्य सर्वोपरि होता है' ' तथा स्वदेशी वस्त्रों और वस्तुओं के व्यवहार का सक्रिय उपदेश उन्होंने देशवासियों को दिया था। निस्सन्देह स्वामी दयानन्द जैसे राष्ट्र पुरुषों की भावना और वाणी लोकमान्य तिलक तथा उनके बाद के भारतीय राष्ट्रीय नेताओं की विचारधारा और कार्यप्रणाली में देखने को मिलती है।

सूचना

पिछले दिनों सार्वदेशिक सभा के उपमन्त्री श्री प० सच्चिदानन्द शास्त्री तीन मास पूर्व कुछ अस्वस्थ होकर अपने घर हरदोई चले गए थे। उनको लू लगने से ज्वर व कमजोरी हो गयी थी। सभा में लौटने के बाद आयुर्वेदिक चिकित्सा व विशेषज्ञ की जाच से लाभ नहीं हुआ। अब वे सभा प्रधान की सलाह पर उनके निजी चिकित्सक के इलाज में है और उससे उनको लाभ प्रतीत होता है। उनको पूर्ण विश्राम की सलाह दी गयी है।

आशा है प्रभु कृपा से वे शीघ्र स्वस्थ होकर कार्य करने लगेंगे।

—कार्यालय सचिव

एक प्रश्न चिन्ह

कानून से क्रांति नहीं होती

(सर्व समाज क्रांति का अलम्बरदार रहा है, पर उसे राजनीति के लिये पकड़कर नहीं। साधना-तप-त्याग और बलिदान उसके संबल रहे हैं। उद्धृत कतिपय अनेक यहां और रचनात्मक पक्ष का लेखक ने विवेचन किया है।

—सम्पादक

अजमेर के दीवान बहादुर हरविलास शारदा की कोशिशों से बने बाल विवाह रोकने के शारदा एक्ट को लागू हुए पचपन साल हो गए। लेकिन अभी राजस्थान में हर साल आखा तीज पर हजारों बच्चों की शादियां होती हैं। कम से कम मजदूरी का भी कानून बना हुआ है लेकिन किसी भी राज्य में जाकर देख लीजिए उस पर अमल नहीं होता। कानून से समाज में परिवर्तन नहीं हो सकता। असल बदलाव तो लोगों को बदल कर ही लाया जा सकता है। ऐसी बातें हम आजादी के बाद से लगातार सुनते आ रहे हैं। प्रधानमन्त्रियों, मुख्यमन्त्रियों से लेकर थोड़ी भी समझ रखने वाले छुटभैया राजनैतिक तक जोर देते रहे हैं कि समाज सरकारी कोशिशों से भी नहीं बदलेगा। इसके लिए गांवों-शहरों में अलख जगाने वाले सेवा-भावी कार्यकर्ताओं की स्वयंसेवी संस्थाओं की जरूरत है जो जड़ों में जाकर लोगों में काम कर सकें।

लेकिन कोई आठ साल पहले एक शुरूआत हुई जिसने सामाजिक बदलाव के दर्शन और जानी-मानी कोशिशों को एक उलट मोड़ दे दिया। सुप्रीमकोर्ट में न्यायमूर्ति कृष्ण अय्यर और न्यायमूर्ति भगवती ने लोकहित के मुकदमों की सुनवाई शुरू की। याचिका दायर करने वालों का भुक्तभोगी होना जरूरी नहीं रहा। कोई भी नागरिक सार्वजनिक महत्व का कोई भी मामला कोर्ट में उठा सकता था। आम नागरिक को मिली इस लोक सभा स्टैंडाई वाली हैसियत ने कुछ ऐसा रूप लिया जैसे दिल्ली में शहंशाह के महल के बाहर लगी घंटी बजाओ बजाओ। शहंशाह के दरबार में सुनवाई होगी और इंसाफ मिलेगा। इस मध्ययुगीन उपमा को कई सामाजिक कार्यकर्ता, वकील और न्यायमूर्ति पसंद नहीं करेंगे। लेकिन लोकहित के मुकदमों का यही हल हुआ है। ठीक है कि इससे बरसों से बिना मुकदमों के हिरासत में सड़ने कुछ सौ लोग रिहा हुए। कुछ बंधुआ मजदूरों को भी 'मुक्त' करवाया गया। लेकिन कुल मिलाकर सामाजिक अन्याय और प्रशासनिक-राजनैतिक हित स्वार्थों की सोची समझी लापरवाही में कोई फर्क नहीं आया। आखा-तीज पर जैसे अभी भी हजारों बच्चों की शादियां होती हैं वैसे ही हवालात में बेकसूर लोग बन्द होते हुए, मरते गए और बंधुआ मुक्त होने के बाद फिर बंधुआ हो गए।

पांच छह सालों में लोकहित वाद होकर फैशन में आ गया। सामाजिक कुरीतियों और अन्याय से लड़ने वाले कार्यकर्ता और उनकी संस्थाएं दौड़ी-दौड़ी हाई कोर्ट या सुप्रीम कोर्ट जाने लगी। अचानक लगने लगा कि कानून न सिर्फ सामाजिक बदलाव बल्कि क्रांति का भी औजार हो सकता है। न्यायमूर्ति भगवती ने जो तरीका अपनाया उसे तुलजापुरकर जैसे न्यायमूर्तियों ने गलत माना और विवाद भी किया। लेकिन वातावरण बन गया कि दिल्ली में अदालत के बाहर लगी घंटी बजाने से सुनवाई होगी और इंसाफ मिलेगा।

इसी बीच सत्ता में वापस आई कांग्रेस (आई) ने गरीबों को कानूनी सहायता देने के नाम पर बड़े भोंपू वाला कार्यक्रम छेड़ा। जगह-जगह इसके लिए शाखाएं खोली गईं। सेमीनार और गोष्ठियां की गईं जिनमें कहा गया कि गरीब लोगों को न्याय देना राज्य का कर्तव्य है और इसे दिलाने में स्वयंसेवी संस्थाओं का बड़ा योगदान हो सकता है। ऐसी हवा चली कि जो संस्थाएं विनोबा के 'सरकारी काम असरकारी नहीं होता' वाले मन्त्र पर सामाजिक बदलाव के काम में सरकार की मदद लिए बिना बरसों से काम कर रही थी वे भी लोकहित वाद और गरीबों की कानूनी मदद के झांसे में आ गईं। इनमें से कई संस्थाएं गांधी जी की रचनात्मक संस्थाओं से निकली या प्रेरित थीं और सरकार से दूर रह कर समाज परिवर्तन में लगी थीं। सरकार विरोध नहीं तो उससे उदासीनता के कारण ये जन आंदोलनों में हिस्सा लेती थीं। इनमें से कई संस्थाओं ने [illegible] के आंदोलन में या तो सीधे सहयोग दिया था या उनसे सहानुभूति रखती थीं।

जब इन संस्थाओं पर सरकार का दबाव आ रहा था, वे राजनैतिक रूप से बदनाम की जा रही थीं और उनके वित्तीय साधन काटे जा रहे थे। इन्दिरा गांधी ने इमरजेंसी के पहले और बाद का सही सबक लिया था कि ऐसे मैदानी संगठनों और कार्यकर्ताओं को बेअसर करो जो सत्ता के समानान्तर केन्द्रों को ताकत पहुंचा सकते हैं। विपक्ष अपनी तीस साल की जमा पूंजी ढाई साल के राज में पहले ही गवां चुका था। उसका मनोबल रसातल में था और वह मध्यावधि का दुःखद सपना देखकर जैसे नींद में चिल्लाने लगता था। उसमें न इच्छा थी न शक्ति कि लोगों के पास सीधे जाता और उन्हें संगठित करता। इसलिए राजनीति की सत्ता से निरपेक्ष सेवा और परिवर्तन की सत्ता वाले जो भी केन्द्र थे उन्हें ऐसे काम में लगाना था कि एक, वे विपक्ष को फिर पांव जमाने की जमीन न दे सकें, दो, खुद ऐसी सत्ता न बन सकें जो सरकार को चुनौती दे सके।

आजादी की लड़ाई में वकील वकालत छोड़कर सामाजिक कार्यकर्ता बनते थे ताकि लोगों जागृत करके संगठित किया जा सके और अंग्रेजों से लड़ा जा सके। वे अदालतों और कानूनी कार्रवाई को छोड़कर सीधी राजनैतिक और सामाजिक कार्रवाई में लगते थे क्योंकि गांधी जी ने समझाया था कि लोग जाग जाएं और तय कर लें कि अपना काम खुद करेंगे और अपना राज आप चलाएंगे तो कोई भी विदेशी ताकत भारत को गुलाम नहीं रख सकती। दरअसल गांधी जी की अगुआई में कांग्रेस और देश की आजादी की लड़ाई-अर्जियों, फरियादों और कानूनों से निकल कर सामूहिक जन कार्रवाई बन गई। गांधी जी लाखों लोगों की हिस्सेदारी इस जागरण और संघर्ष में चाहते थे इसीलिए उनका जोर अहिंसा पर था। अहिंसक संघर्ष में कोई भी भाग ले सकता है। आजादी के ज्यादातर बड़े नेताओं की तरह गांधी जी खुद वकील थे, मोतीलाल और जवाहरलाल नेहरू भी थे और सरदार पटेल भी थे। लेकिन कानूनी कार्रवाई उन्हें देश की आजादी की तलवार कभी नहीं लगी।

आजादी के बाद जवाहरलाल नेहरू सरकार की ओर से हमेशा कहते थे कि असल क्रांति लोगों को बदलने से आयेगी। नेहरू सरकार में होते हुए भी सामाजिक परिवर्तन में सरकार की भूमिका बहुत छोटी मानते थे। और विनोबा और जे॰पी॰ तो क्रान्ति के लिये सरकार और राजनीति से दूर रहकर सामाजिक और आर्थिक बदलाव का मैदानी काम करने पर जोर देते थे। खूनी क्रान्ति में भरोसा करने वाले दलों को मैं जान-बूझकर छोड़ रहा हूं क्योंकि कानूनी तो क्या लोकतांत्रिक तरीकों को भी वे क्रान्ति को धोखा देना मानते हैं। इमरजेन्सी के पहले तक सरकारी मदद से किये गये काम में चमक नहीं मानी जाती थी वह चाहे सेवा का हो या सामाजिक बदलाव का। मोटे तौर पर माना जाता था कि सरकार, प्रशासन और मौजूदा कानून यथास्थिति के पोषक हैं और जो लोग बदलाव चाहते हैं उन्हें अपनी चुनी हुई सरकार से भी दूरी रखनी चाहिए और जरूरी हो तो अहिंसक संघर्ष भी करना चाहिए। इस रवैए के गुण आजादी के बाद के महीनों में खुद गांधी जी के सरकार के प्रति रवैए में देखे जा सकते हैं। वे कांग्रेस को भंग करके लोक सेवक संघ इसीलिए बनाना चाहते थे कि सामाजिक-आर्थिक आजादी लाने के लिये सरकार पर अंकुश लगाने वाली सेवाभावी सामाजिक सत्ता होना जरूरी है। जवाहरलाल नेहरू और लालबहादुर शास्त्री जनसेवा थे और उनकी सरकारें भी परिवर्तन चाहती थीं। फिर भी वे और उनकी सरकारें प्रतिष्ठान मानी जाती थीं।

लेकिन इन्दिरा गांधी आईं और नई रोशनी लाईं। सरकार ने एक के बाद एक समाजवादी कदम उठाए। नौकरशाही से अपेक्षा की गई कि वह सरकारी कार्यकर्ताओं की तरह काम करे। न्यायपालिका से उम्मीद की गई कि वह सामाजिक बदलाव के दर्शन के प्रतिबद्धता दिखाए। कानून, नियम और परम्पराओं को ताक में रखकर कमजोर वर्गों की मदद करने और गरीबी हटाने के कार्यक्रमों की धूम मच गई। आखिर जब और बोल में भी पार्टी की सरकार के कार्यक्रम पार्टी के कार्यकर्ताओं ने पूरे किये और उन्होंने

(शेष पृष्ठ १० पर)

एक प्रश्न चिन्ह

हृदयं चेतनास्थानम्

लेखक : श्री वीरेन्द्रसिंह पमार

आधुनिक विज्ञानवादियों ने कुछ समय पूर्व अपना निर्णय व्यक्त किया है कि चेतना और जीवन का केन्द्र मस्तिष्क है। भारतीय आयुर्वेदाचार्यों ने और योगीजनों ने आज से सहस्रों वर्ष पूर्व यह निर्णय कर दिया था कि चेतना का स्थान मस्तिष्क सहस्रारसहस्र दल कमल है। परन्तु कुछ काल से लोग कुछ संशयास्पद तथ्यों के कारण वक्षःस्थ रक्त संवाहक हृदय को चेतना स्थान कहने लगे हैं। इसी मान्यता का निराकरण श्री पमार ने सीधे सादे और सरल ढंग से सप्रमाण यहां प्रस्तुत किया है।

इन विचारों के लिए लेखक उत्तरदायी हैं। —सम्पादक

'हृदय चेतना स्थानम्" पढ़कर सामान्यतः सभी जनों का ध्यान वक्षोन्त: स्थित रक्ताशय-हृदय की ओर जाता है। क्यों कि लोक में जिसे दिल अथवा हार्ट कहते हैं उसी के लिये हृदय शब्द का प्रयोग किया जा रहा है। इसी लिए सम्भवतः अनेक विद्वान एवं आयुर्वेद विशारद इसी अंग के साथ चेतना को जोड़ देते हैं और सुश्रुत के उपरिलिखित श्लोक का अर्थ करते हुए शरीर के इसी अंग को, जो वक्षोन्तस् में स्थित है, चेतना स्थान भी मान लेते हैं। इतना ही नहीं वे अपने मत की पुष्टि में अनेक तर्क भी उपस्थित करते हैं।

चेतना स्थान शरीर का कौन सा अंग है, यदि इसका विवेचन सुचारु रूप से कर लिया जाय तो यह निश्चय हो जायेगा कि "हृदय" नामक वह कौनसा शरीरांग है जिसे सुश्रुत ने चेतना स्थान कहा है। अतः सर्वप्रथम इसका निश्चय आयुर्वेद के प्रमाणों से ही करना उपयुक्त होगा।

चेतना का अर्थ ज्ञान है। मनुष्य किस अंग से ज्ञान प्राप्त करता है यह सम्भवतः सभी विद्वज्जनों को विदित है। किसी वस्तु के शब्द रूप, रस गन्ध स्पर्श का ज्ञान मस्तिष्क को होता है। ज्ञानतन्तुओं (ज्ञान संवाहक नाड़ियां नर्वस्) द्वारा तथा ज्ञानेन्द्रियों के गोलकों के माध्यम से वस्तुओं का ज्ञान मस्तिष्क को होता है और कर्मेन्द्रियों द्वारा जो कार्य कराना है उसका आदेश भी मस्तिष्क द्वारा इन्हीं ज्ञानतन्तुओं के माध्यम से पहुंचाया जाता है। हम जब सोचते हैं पढ़ते हैं, याद करते हैं तो उसका प्रभाव मस्तिष्क पर ही पड़ता है। अत्यधिक सोच, विचार और अध्ययन से मस्तिष्क थक जाता है, परन्तु विश्राम करने के बाद वह थकान दूर हो जाती है और वह पुनः अपना कार्य करने में सक्षम हो जाता है। यह ऐसा अनुभव है जो प्रत्येक मनुष्य को होता है। मेधा स्मृति, विवेक आदि का स्थान भी यही है। सुख-दुख की अनुभूति चेतना स्थान मस्तिष्क में ही होती है, रक्त संवाहक केन्द्र में नहीं। आधुनिक शल्य चिकित्सा शास्त्रियों ने शरीर के अंगों, उनके रूप आकार, स्थान कार्य आदि का विशद अध्ययन किया है। उनके अनुसार मस्तिष्क ही ज्ञान, विज्ञान, मेधा, स्मृति आदि का केन्द्र है और चेतना स्थान है। वक्षोन्तः स्थित हृदय चेतना शून्य है और उसका कार्य केवल रक्त को पम्प करना है, वह रक्त संवाहक केन्द्र मात्र है। वैदिक वाङ्मय के निम्न लिखित उदाहरण से इसकी संगति ठीक बैठती है। ऐतरेय उपनिषद् में लिखा है।

यदेतत् हृदयं मनश्चैतत्। संज्ञानं, आज्ञानं, विज्ञानं, मेधा, दृष्टि, धृतिः मतिः, मनीषा, जूति, स्मृतिः, संकल्पः, क्रतुः, असुः, कामो, वश इति सर्वाण्येतानि प्रज्ञानस्य नामधेयानि।

"हृदयं चेतना स्थानम्" पढ़कर ही अपना मत बना लेना कुछ पूर्वाग्रह का संकेत देता है। यदि उसके आगे का पद भी साथ में पढ़ें और विचारें तो चेतना स्थान मस्तिष्क ही सिद्ध होता है, जिसे वैदिक वाङ्मयमें और आयुर्वेद में हृदय नाम से उल्लिखित किया गया है। सुश्रुत का पूरा श्लोक है:—

> हृदयं चेतना स्थानमुक्तं सुश्रुतदेहिनाम।
> तमोभिभूते तस्मिंस्तु निद्रा विशति देहिनाम्॥

अर्थात् तमोगुण से प्रभावित होने पर चेतना स्थान हृदय (मस्तिष्क) सो जाता है निष्क्रिय हो जाता है। अनुभव में यही आता है कि सोते समय मस्तिष्क का व्यापार बन्द हो जाता है, परन्तु रक्त संवाहक केन्द्र का व्यापार चलता रहता है। उस पर निद्रा का कोई प्रभाव नहीं पड़ता। निद्रा के सम्बन्ध में प्रश्नोपनिषद में अधिक विस्तार से लिखा है—एवं तत्सर्वं परेदेवे मनस्येको भवति। तेन तर्ह्येष पुरुषो न शृणोति, न न पश्यति, जिघ्रति न रसयते न स्पृशते, नाभिवदते, नादत्ते, नानन्दयते, न विसृजति, नेयायते, स्वपितीत्याचक्षते।

अर्थात् जब पुरुष सो जाता है, उस समय सभी इन्द्रियों का ज्ञानेन्द्रियों और कर्मेन्द्रियों का व्यापार मन में समाहृत हो जाता है और वह कुछ भी नहीं करता है, सोता रहता है।

यही बात सुश्रुतसंहिता में निम्न लिखित श्लोक द्वारा व्यक्त की गई है।

> पुण्डरीकेण सदृशं हृदयं स्यादधोमुखम।
> जाग्रतस्तद् विकसति स्वपतश्च निमीलति॥

अर्थात् जाग्रतावस्था में हृदय (मस्तिष्क) का व्यापार चलता है और सो जाने पर वह व्यापार बन्द हो जाता है। जैसे कमल का खिलना बन्द हो जाना।

यह चेतना स्थान वह भाग है जिसे मस्तिष्क कहा जाता है। इसको प्रमाणित करने के लिए सुश्रुत तथा चरक संहिता के निम्न लिखित श्लोक पाठकों के अनुशीलनार्थ यहां दिये जा रहे हैं ए-।

> हृदयं चेतनास्थान—मुक्तं सुश्रुतदेहिनम्।
> तमोभिभूते तस्मिंस्तु निद्रा विशति देहिनाम्॥

अर्थात् हृदय चेतना स्थान है। उसके तम द्वारा प्रभावित होने पर मनुष्य को निद्रा आ जाती है।

चरक चिकित्सा स्थानउन्माद चिकित्सा अध्याय।

> तैरल्प सत्वस्य मेलाः प्रदुष्टा.॥
> बुद्धेर्निवास हृदयं प्रदूष्य।
> स्रोतांस्य धिष्ठाय मनोवहानि
> प्रमोहयन्तीह नरस्य चेतः॥
> धी विभ्रम. सत्व परिप्लवश्च
> पर्याकुलादृष्टिर-धीरता च।
> अबद्धवाक्त्वंहृदयं च शून्यं
> सामान्यमुन्माद गदस्य लिङ्गम्॥
> रुक्षाल्पशी तान्नविरेकधातुक्षयो
> पवासैर निलोतिवृद्धः।
> चिन्तादिजुष्ट हृदयं प्रदूष्य
> बुद्धिस्मृति चाप्युपहन्ति शीघ्रम॥

ऊपर के श्लोकों से यह स्पष्ट है कि उन्माद रोग मस्तिष्क का रोग है। मस्तिष्क मे विकार आने पर रोगी की विचार शक्ति, विवेक शक्ति, तथा कल्पना शक्ति सभी विकृत हो जाती है और रोग की उग्रता के अनुसार मनुष्य विविध प्रकार के उन्माद का शिकार हो जाता है। इन श्लोकों में सर्वत्र मस्तिष्क के लिये हृदय शब्द का प्रयोग किया गया है। सुश्रुत का एक और उदाहरण द्रष्टव्य है—

गर्भस्य खलु सम्भवतः पूर्वं शिरः सम्भवतीत्याह शौनकः शिरोमूलत्वात् प्रधानेन्द्रियाणां, हृदयमिति कृतवीर्यो बुद्धे मनसश्च स्थानत्वात्।

अर्थात् गर्भ में सबसे पूर्व शिर बनता है क्यों कि वह मुख्य इन्द्रियों (ज्ञानेन्द्रियों) का मूल है, ऐसा शौनक कहते हैं। परन्तु कृतवीर्य के मत में सबसे पहले (हृदय) मस्तिष्क बनता है, क्योंकि वह बुद्धि और मनका आश्रयस्थल है।

अमरकोश मे हृदय शब्द की व्याख्या में लिखा है।

> चित्त तु चेतो हृदयं स्वान्तं हृन्मानसंमनः।

ऊपर लिखे सभी उदाहरण आयुर्वेद तथा वैदिक वाङ्मय के यह सिद्ध करते हैं कि चेतना स्थान हृदय मस्तिष्क ही है, वह रक्तसंवाहक केन्द्र हृदय नहीं।

अब सुश्रुत संहिता के अनुसार शास्त्र विहित बात प्रत्यक्ष से भी सिद्ध होनी चाहिए सुश्रुत का कथन है—

> प्रत्यक्षतो हि यद्दृष्टं शास्त्र दृष्टं च यद्भवेत्।
> समासतस्तदुभयं भूयो ज्ञान विवर्धनम्॥

इसको मानते हुए अब हम शल्य क्रिया द्वारा प्राप्त प्रत्यक्ष ज्ञान का

उल्लेख करना आवश्यक समझते हैं।

सुश्रुत ने हृदय को पुण्डरीकाकार बताया है। शंकराचार्य ने भी बृहदारण्यक उपनिषद् में "कतम आत्मेति कोऽयं विज्ञानमयः प्राणेषु हृद्यन्त ज्योतिः" पुरुष का भाष्य करते हुए लिखा है हृच्छब्देन पुण्डरीकाकारो मांसपिण्डम्, तात्स्थ्याद् बुद्धिर्हृत् तस्या हृदि बुद्धौ, अन्तरिति बुद्धि व्यतिरेक प्रदर्शनार्थम्। ज्योतिरवभासात्मकत्वादात्मोच्यते।

अर्थात् हृदय पुण्डरीकाकार है और वह बुद्धि, या चेतना का स्थान है।

चरक सूत्रस्थान में इसका विवरण इस प्रकार है—

हृदि तिष्ठति यच्छुद्धरक्त मीषत्सपीतकम।
ओजः शरीरे संख्यातं तन्नाशान्ना प्रणश्यति॥

अर्थात् हृदय (मस्तिष्क) के अन्दर हल्का पीला द्रव होता है। आधुनिक शल्यचिकित्सा शास्त्रियों ने भी इसी प्रकार प्रत्यक्ष किया है। कविराज गणनाथ सेन (प्रत्यक्षशारीरम) के शब्दों में वह इस प्रकार है—

आज्ञाकन्दोनाम धूसर वस्तु भूयिष्ठो
कन्दो ब्रह्मगुहामुभयतो वर्तते।

अर्थात् आज्ञा कन्द नामक दो ग्रन्थियों के बीच ब्रह्म गुहा है, जिसमें धूसर कस (हलका पीला) रंग का द्रव होता है। ब्रह्म गुहा क्या है? इसका वर्णन उसी ग्रन्थ में इस प्रकार है "च ब्रह्मगुहा ब्रह्मयोनिर्वा नाम आज्ञाकन्दयोरन्तराले मध्य रेखायां स्थिता गुहा तनु त्रिकोण परिखाकारा। तदेव क्वचित् ब्रह्महृदय मिति वा व्यवहरन्ति प्राचः।"

अर्थात् त्रिकोण परिखा के आकार के स्थान को प्राचीन विद्वान (आयुर्वेद तथा वैदिक वाङ्मय के प्रणेता) ब्रह्महृदय अथवा हृदय कहते हैं।

शल्य चिकित्सा पुस्तकों में मस्तिष्क को बीच में काट कर चित्रों में दिखाया गया है। उससे यह स्पष्ट है कि मस्तिष्क कमलाकार है और उसमें एक रिक्त स्थान है। वहां धूसर रंग का द्रव है, ऐसा वर्णन भी है।

ऊपर लिखे सभी प्रमाण यह सिद्ध करने को पर्याप्त हैं कि चेतना स्थान हृदय शरीर में कपालाभ्यन्तर स्थित मस्तिष्क है वक्षान्तः स्थित रक्त संवाहक केन्द्र नहीं।

अब एक प्रश्न और है जो समाधान चाहता है। वह है आयुर्वेद में हृदय शब्द का प्रयोग रक्त संवाहक केन्द्र (रक्ताशय) के लिए भी किया गया है। इसलिए हृदय शब्दसे उसी अंगको क्यों न लिया जाय? कपालस्थित अंग को हृदय न कह कर मस्तिष्क ही क्यों न कहा जाय? यह प्रश्न औचित्यपूर्ण है और ऐसा ही होना चाहिए था। परन्तु अपने प्राचीन ग्रन्थों में, विशेषतः वैदिक वाङ्मय में एक शब्द का प्रयोग अनेक अर्थों में किया गया है। वहां केवल सन्दर्भ से ही उचित अर्थ का प्रतिपादन होता है। आत्मा शब्द का प्रयोग जीवात्मा, परमात्मा दोनों के लिये तो स्थल स्थल पर हुआ ही है, कुछ स्थलों में आत्मा शब्द शरीर (देह) के लिए भी प्रयुक्त हुआ है। गौ, अश्व, आपः पयस, आदि भिन्न भिन्न अर्थों में प्रयुक्त हुए हैं।

आयुर्वेद को उपवेद माना गया है, इसलिए यह भी वैदिक वाङ्मय के अन्तर्गत है और इसमें भी अनेक शब्द अनेकार्थक हैं। उदाहरणार्थ हृदय शब्द मस्तिष्क और रूप रक्त संवाहक केन्द्र के, लिये तथा पयस दूध और पानी के लिए तथा प्रयुक्त किए गए हैं।

आयुर्वेद में अनेक शब्द ऐसे भी हैं जो लोक व्यवहार में कुछ अर्थ देते हैं और आयुर्वेद में कुछ और। जैसे रात्रि वाचक शब्द रजनी, निशा आदि हल्दी के लिये मेघ वाचक शब्द नागरमोथा के लिए, विश्व शब्द सोंठ के लिए, वानरी शब्द कौंच के लिए आदि आदि। इसलिए यह कोई आश्चर्य का विषय नहीं है, यह तो मानव कीप्रवृत्ति के अनुकूल ही है।

अन्त में सुविज्ञ आयुर्वेद विशारदों से निवेदन है कि "हृदयं चेतनास्थानम्" पर अच्छी तरह विचार कर शास्त्रों का अनुशीलन करें और प्रत्यक्ष ज्ञान से संगति बैठाकर निश्चय पर पहुंचे, तभी इस भ्रान्ति का कि "रक्त संवाहक केन्द्र चेतना स्थान है" निराकरण हो सकेगा।

अंग्रेजी के हार्ट से जिस अंग (हृदय) की अभिव्यक्ति होती है वह आधुनिक विज्ञान के अनुसार चेतनाशून्य है। इसलिए सुश्रुतादि ग्रन्थों में जिस चेतना-स्थान को हृदय संज्ञा दी है उसका वास्तविक अर्थ समझकर मस्तिष्क को ही चेतना स्थान मानना शास्त्र सम्मत होगा।

(स्वास्थ मासिक पत्र ७।८५)

शिलांग आर्यसमाज का स्वर्ण जयन्ती समारोह सम्पन्न

श्री पृथ्वीराज शास्त्री उत्तर पूर्वी भारत के दौरे से वापस लौटे

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के उपमन्त्री और अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ के कोषाध्यक्ष श्री पृथ्वीराज जी शास्त्री आसाम और मेघालय की आर्य जनता की विशेष प्रार्थना पर वे १३ जुलाई को आर्य समाज शिलांग के स्वर्ण जयन्ती समारोह में सम्मिलित हुए। उस अवसर पर वहा वेद यज्ञ और प्रवचन हुए। शिलांग में चल रहे दो डी०ए० वी० स्कूलों का कार्यक्रम बहुत ही शानदार ढंग से सम्पन्न हुआ। इसमे मेघालय के शिक्षामन्त्री भी सम्मिलित हुए। हजारों लोग इस समारोह मे सम्मिलित हुए। यहां पर खेल, संगीत तथा सांस्कृतिक कार्यक्रम बहुत रोचक रहे। आर्यसमाज के मन्त्री श्री जैन वेद ज्ञान से विशेष प्रभावित हुए।

शिलांग से श्री पृथ्वीराज शास्त्री गुहवाठी से बोकाजान, दीमापुर, झोपड़ाजान आदि मे दयानन्द सेवाश्रम संघ के केन्द्रों को देखने गए। इस समय वहां पर विद्यालय में अवकाश था किन्तु सभी कर्मचारी व अधिकारी वहां उपस्थित थे। समस्त केन्द्र बहुत ही अनुशासन से चलाए जा रहे हैं।

श्री शास्त्री जी ने बताया कि आदर्श ग्राम के पास एक विशेष सभा का आयोजन किया गया जिसमें श्री दोलोई तथा आसाम सरकार के कई अधिकारी सम्मिलित थे। उस अवसर पर कार्बी एंग्लांग के लोगों में विकास एवं प्रगति के साथ-साथ उन्हें राष्ट्रीय धारा से अलग न होने देने के लिए विशेष योजनाओं पर भी विचार हुआ।

— कार्यालय सचिव

जागृति के गीत

करो प्रचार वेद का पावन, हर हृद में घृत दीप उजारो।
देखो कितने पृथक हो रहे, अंग विच्छिन्न हमारे ॥
प्रत्यक्ष साक्षी मीनाक्षी के, सूरज चांद सितारे।
पुनन्तु मा देवा मन्त्रों से, उनको पुनः उबारो ॥
चल रहा प्यारा कफन, आज सर के सामने।
जल रहा प्यारा वतन, हाय सब के सामने ॥
स्वर्ण मन्दिर अन्दर अपने, अमृत धार बहाओ।
आज अवसर है……
इतिहास ज्योति पर जलने का, अब बेजुबां को बचाने का।
बेमिसाल हो रहा हाल, अब शम्मा पर परवाने का।
कब तक मौन बने रहोगे, ऐ मन्दिर गुरुद्वारो…॥
एकता हममें बडी है, यह दुनिया को दिखा दो।
वर्ण पंथ समाजिक का, पाठ प्रिय सबको सिखा दो ॥
प्रीति पूर्व अनुसार धर्म को, यथायोग्य व्यवहारो……।
अनभ्यास वेदों का, आचरण का वजन ॥
अन्नदोष आलस्य से ब्राह्मण मृत्यु का करता भजन।
अब अकथन दान का नित, दृढ़ प्रतिज्ञ व्रत धारो…॥
भगत सिंह आजाद बिस्मिल, शूर सपूत सन्तानों की।
शपथ शहीदों के शोणित की, वीर वीर बलिदानों की ॥
अपनी आहुति देकर 'मोहन', मां का भार निवारो।

—आचार्य मदन मोहन एडवोकेट, मौठ, झांसी

नया प्रकाशन

१—वीर वैरागी (भाई परमानन्द)	८)
२—माता (भगवती जागरण) (श्री स्वण्डानन्द)	५०) सैं०
३—बाल-पथ प्रदीप (श्री रघुनाथ प्रसाद पाठक)	२)

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
महर्षि दयानन्द भवन, रामलीला मैदान, नई दिल्ली-२

सार्वदेशिक आर्य वीरदल दिल्ली प्रदेश के प्रशिक्षण शिविर के समापन समारोह पर भव्य आयोजन

नई दिल्ली ७ जुलाई १९८५

सार्वदेशिक आर्य वीरदल दिल्ली प्रदेश के रघुमल आर्य कन्या विद्यालय राजा बाजार में आयोजित प्रशिक्षण शिविर के समापन समारोह पर यज्ञ के उपरान्त सार्वदेशिक आर्य वीरदल के प्रधान संचालक श्री बालदिवाकर हंस जी ने सभी प्रशिक्षित आर्य वीरों व कार्यकर्ताओं को शपथ दिलाई और आर्य वीर दल को सशक्त बनाने व प्रत्येक आर्य समाज में इसकी शाखा खोलने का आवाहन किया। इसके बाद लगभग ८० प्रशिक्षित आर्य वीरों ने तलवार चलाने, लाठी चलाने, आग के गोले में से कूदने व योगासनों का एक घन्टे तक भव्य प्रदर्शन करके दर्शकों को मन्त्रमुग्ध कर दिया। उनके अभ्यास के विभिन्न प्रदर्शनों का बार बार करतल ध्वनि से स्वागत किया गया। दिल्ली प्रदेश के अधिष्ठाता श्री प्रियतम दास रसवन्त जी ने ग्रीष्मकालीन में आयोजित इस दूसरे शिविर की उपलब्धियों व आर्य वीरदल की सक्रियता व भावी कार्यक्रमों की रूपरेखा पर अपने विचार प्रस्तुत किये।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सूर्यदेव ने प्रत्येक आर्य समाज में अधिष्ठाता की नियुक्ति व सभा की ओर से हर प्रकार के सहयोग देने का आश्वासन दिया। सभा के महामन्त्री डा० धर्मपाल आर्य ने दिल्ली में आर्य वीर दल हेतु एक शिक्षक की नियुक्ति करने की घोषणा की एवं शिविर में दिये गए प्रशिक्षण की सराहना की। श्रीमती प्रकाश आर्या, मन्त्राणी प्रान्तीय आर्य महिला सभा दिल्ली प्रदेश ने कार्यक्रम की मुक्त कण्ठ से प्रशंसा करते हुए महिला सभा की ओर से यथोचित सहयोग देने का आश्वासन दिया।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री ओमप्रकाश त्यागी (भूतपूर्व सांसद) ने अपने अध्यक्षीय भाषण में झज्जर में स्थाई रूप से स्थापित किये जा रहे आर्य वीर दल प्रशिक्षण केन्द्र का उल्लेख करते हुए आर्य वीर दल के लिए स्थायी कोष बनाने पर विचार प्रकट किया। उन्होंने की वर्तमान परिस्थितियों में जबकि सामाजिक मूल्यों का ह्रास व अलगाववादी तत्वों का आतंक बढ़ रहा है, राष्ट्र रक्षा हेतु आर्य वीरदल की महत्ता पर प्रकाश डाला। श्री त्यागी जी ने आर्यवीर दल की गतिविधियों में सक्रियता लाने के लिए कई महत्वपूर्ण सुझाव दिए तथा प्रत्येक आर्य समाज में एक अधिष्ठाता की नियुक्ति पर बल दिया। अध्यक्ष महोदय के कर कमलों द्वारा आर्य वीरों को प्रमाण पत्र एवं पुरस्कार वितरित किए गये। सभा में सर्वश्री लाला इन्द्रनारायण जी हाथी दांत वाले, आचार्य देवव्रत जी, रणवीर सिंह जी राणा आदि ने भी अपने विचार प्रस्तुत किये। शिविर में प्रथम पुरस्कार विजेता आर्य समाज चूना मण्डी, पहाड़गंज के श्री सतीशकुमार द्वितीय पुरस्कार विजेता आर्य समाज नारायण विहार के श्री माया सिंह जी यादव, तृतीय पुरस्कार विजेता आर्यसमाज मण्डावली के श्री अतुल कुमार रहे। अनुशासन में प्रथम पुरस्कार विजेता आर्य समाज कृष्णनगर (यमुनापार) श्री कृष्ण मित्र कौशल रहे। कार्यक्रम आर्य समाज के कई शीर्षस्थ नेता, उपदेशक, आर्य समाज के पदाधिकारी, कार्यकर्त्ता व पत्रकार आदि भी उपस्थित थे। समारोह के समापन के पश्चात् प्रीतिभोज का आयोजन भी किया गया।

—श्याम सुन्दर विरमानी
मन्त्री—सार्वदेशिक आर्य वीर दल दिल्ली प्रदेश

अन्तर्राष्ट्रीय युवा वर्ष के प्रसंग में—

विदिशा में शांति महायज्ञ एवं आर्य वीरदल का प्रांतीय प्रशिक्षण शिविर सानन्द सम्पन्न

विदिशा में ११ से २० जून ८५ तक आर्य समाज, महिला आर्य समाज एवं प्रांतीय आर्य वीर दल के तत्वावधान में आयोजित शांति महायज्ञ एवं प्रांतीय प्रशिक्षण शिविर आर्य वीरदल एवं आर्य वीरांगना-दल उत्साह पूर्ण वातावरण में सम्पन्न हुआ।

जैन उ०मा० विद्यालय में प्रतिदिन वेद मन्त्रों की पवित्र ऋचाओं के साथ शांति महायज्ञ को श्रद्धेय आचार्य चन्द्रदेव जी कुलपति आर्य गुरुकुल कृष्णपुर पूज्य स्वामी सर्वानन्द जी सरस्वती वाराणसी एवं गुरुकुल होशंगाबाद के आचार्य श्री अमृतलाल शर्मा तथा ब्रह्मचारियों ने सम्पन्न कराया। आर्यवीरों का शारीरिक प्रशिक्षण जैन उच्चतर मा० विद्यालय में तथा आर्य वीरांगनाओं का स्थानीय महिला कल्याण केन्द्र में सम्पन्न हुआ।

महिलाओं को योगासन का प्रशिक्षण पू० स्वामी सर्वानन्द जी ने एवं राणा रामसिंह जी ने दिया। युवकों को लाठी, तलवार, छुरी, भानचाकू एवं प्राचीन भारतीय व्यायाम विविध दण्ड बैठक आदि का प्रशिक्षण कुरुक्षेत्र से पधारे श्री कृष्णपाल जी एवं सत्यव्रत जी सत्यम ने दिया। आधुनिक व्यायाम जूडो कराटे का प्रशिक्षण आर्यवीरों के लिए जूडो कराटे में राष्ट्रपति द्वारा स्वर्ण पदक प्राप्त श्री सुरेश श्रीवास्तव एवं उनके दो सहयोगी प्रशिक्षकों ने दिया। आर्य वीरांगनाओं के लिए कु० ममता राव के निर्देशन में कु० सुधा आचार्या ने दिया। प्रशिक्षण काल में २ बार प्रभातफेरी प्रातः ५ से ६ बजे नगर के विभिन्न भागों में निकाली गई।

इस आम सभा को माननीय ओमप्रकाश जी त्यागी पूर्व संसद सदस्य महामन्त्री सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, माननीय बाल दिवाकर जी हंस प्रधान संचालक सार्वदेशिक आर्यवीर दल दिल्ली, आचार्य चन्द्रदेव शास्त्री पं० विजय जी महोपदेशक आर्य प्रतिनिधि सभा म० भारत आदि ने सम्बोधित किया। अध्यक्षता प्रधान आर्य समाज विदिशा श्री सीताराम आर्य ने की, संचालक आर्यवीर दल के प्रांतीय संचालक श्री बाबूलाल आर्य आनन्द ने किया।

श्री ओमप्रकाश त्यागी ने राष्ट्र की ज्वलन्त समस्याओं पर प्रकाश डाला तथा उसमे आर्य समाज एवं आर्य युवजनों की सराहनीय भूमिका का विशद विवेचन किया। संकीर्ण जाति बन्धनों को ढीला करने दहेज की विभीषिका का उन्मूलन करने, ईसाई मिशनरी एवं पान इस्लामिक संगठन द्वारा पेट्रो-डालर आदि के बल पर हिन्दुओं के धर्म परिवर्तन आदि पर कड़ी निगाह रखने के लिए आर्यवीरों-वीरांगनाओं एवं उपस्थित जन समूह को सचेत किया। आपने अपने समापन भाषण में राष्ट्रीय भावात्मक एकता के लिए आर्य समाज की सेवाओं को ही एकमात्र विकल्प बताया।

श्री बालदिवाकर हंस जी प्रधान संचालक सार्वदेशिक आर्यवीर दल ने— उदात्त राष्ट्रीय भावनाओं, चरित्र निर्माण एवं विश्व मंगल की ओर उन्मुख होने के लिये सेवा, त्याग और बलिदान के लिये कमर कस कर तैयार होने के लिये जन आह्वान किया।

इस अवसर पर आर्यवीरों एवं वीरांगनाओं के शारीरिक व्यायाम, योगासन, लाठी, तलवार एवं जूडो-कराटे आदि का आकर्षक प्रदर्शन हुआ उपस्थित जनसमूह ने तालियों की गड़-गड़ाहट और गगनभेदी जयघोषों और उदघोषों से वातावरण को निनादित किया। इसका उद्घाटन ११ जून ८५ को आर्य समाज विदिशा के वयोवृद्ध नेता एवं प्रसिद्ध समाज सेवी बाबू रामसहाय जी ने किया था उन्होंने १८५७ के प्रथम स्वाधीनता संग्राम में आर्य समाज के महान योगदान के उन घटनाओं को उद्धृत किया जो अभी तक प्रकाश में नहीं आयी हैं।

श्री बाल दिवाकर हंस ने समापन भाषण में चरित्र निर्माण पर विशेष बल दिया और युवाशक्ति को ग्राम विकास में भाग लेने हेतु प्रेरित किया माता कौशल्यादेवी ने आगे बढ़ने की प्रेरणा दी और शिविर की सहायतार्थ

१—विदिशा आर्य वीर एव वीरांगना दलों के समापन समारोह में भाषण करते हुए श्री बालदिवाकर हंस प्रधान संचालक आर्य वीर दल, माननीय ओम्प्रकाश त्यागी महामन्त्री सार्वदेशिक सभा गोरीशंकर कौशल, बाबूलाल आनन्द (सचालक) और श्री रामचन्द्र अधिष्ठाता आर्य वीर दल मध्यप्रदेश के साथ बैठे हैं।
२—विदिशा में तलवार चलाते हुए आर्य वीरों का आकर्षक पैंतरा।
३—विदिशा में प्रशिक्षित आर्य वीरांगनाएं प्रदर्शन में भाग लेते हुए।

१०००) का अनुदान भी दिया। श्री यशपाल जी आर्य सभा मन्त्री ने ५००) मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से दिए जाने हेतु घोषणा की।

पं० विजय जी महोपदेशक, श्री देवेन्द्र जी शर्मा अधिष्ठाता आर्य वीरदल श्री गोरीशंकर जी कौशल वरिष्ठ उपप्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा के भी समय-समय पर मार्गदर्शित उद्बोधन हुए। नगर की सभी आर्य समाजों के पदाधिकारी एवं प्रतिनिधि गण, विदिशा, रायसेन, सीहोर, गुना आदि जिलों की आर्य समाजों ने एवं आर्य वीर दल के कार्यकर्ताओं और माता ताराबाई के नेतृत्व में महिलाओं ने भारी संख्या में भाग लिया। माता कौशल्या देवी के अतिरिक्त बहन सुश्री पदमा गायकवाड़ ने भी विद्वतापूर्ण प्रवचन किये। समापन के अन्त में श्री रामचन्द्र शर्मा अधिष्ठाता आर्य वीर दल ने सभी का आभार माना।

संवादक—आर्य वीर दल मध्यप्रदेश

अनमोल वचन

दुश्मन की गोलियों का हम सामना करेंगे।
आजाद ही रहे हैं—आजाद ही रहेंगे ॥ —चन्द्रशेखर आजाद

वर्तमान में आत्म-रक्षा के लिए—राष्ट्र के उद्धार के लिए जो शक्ति हमें चाहिये—वह जंगलों या एकान्त गुफाओं में तपस्या से नहीं मिलेगी। वह प्राप्त होगी निष्काम कर्मयोग के द्वारा संग्रामरत रहने पर। अन्याचार को मिटाने का जो व्यक्ति प्रयत्न नहीं करता—वह अपने मनुष्यत्व का अपमान करता है। —नेताजी सुभाषचन्द्र बोष

अंग्रेजी शिक्षा पाया हुआ कोई भी हिन्दू अपने धर्म में श्रद्धा नहीं रख सकेगा। मेरा यह दृढ़ विश्वास है कि अगर हम लोगों की शिक्षा योजना पूर्णतया क्रियान्वित हो गई—तो आज सैंतीस वर्षों बाद बंगाल के उच्च वर्ग में भी कोई मूर्तिपूजक नहीं रह जायेगा। —लार्ड मैकाले

ओ३म्ः——न चितसभ्रेषते जनो न रेषन्मनो यो आस्यघोरमाविवासात।
यज्ञेयैं इन्द्रे दधते दुर्वासिश्चयत्स राय ऋतयाः ऋतेजा ॥ —ऋग्वेद ७।२०।६

जो सत्य में उत्पन्न सत्य का पालक यज्ञादि कर्म सम्पृक्त श्रद्धार्चनों को प्रभु समर्पित करता है—यद्यपि वह यदा-कदा प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से हानि भी उठाता है—परन्तु अन्ततः वह अहिंस मनः-यज्ञ मन्तव्यों द्वारा उद्भूत क्लेशों को सहकर भी धन-धान्य सम्पदाओं का राष्ट्र में सदैव सृजन करता है।

गीता का सन्देश सारे विश्व के लिए है। किसी भी देश जाति या समाज में कोई भी ऐसा व्यक्ति नहीं है जिसके लिए गीता में कोई लाभप्रद सन्देश न हो। सकल वेद-शास्त्र पारंगत पण्डित से लेकर निपट,निरक्षर, मूर्ख तक चक्रवर्ती सम्राट से लेकर घास-फूंस की झोपड़ी में रहकर दिन काटने वाले अकिंचन तक तथा इस मायामय संसार से पूर्णतः विरक्त रहने वाले ज्ञानी पुरुषों से लेकर इसी में आमूल-चूल अनुरक्त कामुको तक बालक वृद्ध, स्त्री-पुरुष सभी के लिए गीता में अमूल्य सन्देश भरे पड़े हैं। —गोस्वामी गणेशदत्त जी

स्त्री क्या है ? साक्षात त्यागमूर्ति है। जब कोई स्त्री किसी काम में जी-जान से लग जाती है तो वह पहाड़ को भी हिला देती है। —महात्मा गांधी

अस्पृश्यता का कोई शास्त्रीय आधार नहीं है। परमेश्वर के घर का दरवाजा किसी के लिए बन्द नहीं हैं और यदि वह बन्द हो जाये तो वह परमेश्वर नहीं। —लोकमान्य तिलक

राजनीति "स्वार्थ" का साधन नहीं—सेवा का माध्यम है। वह स्वयं में साध्य नहीं—साध्य है लोक-कल्याण, जो राजनीति हमें मंजिल तक नहीं पहुँचा सकती—वह त्याज्य है। —स्व० प० दीनदयाल उपाध्याय

(पृष्ठ ४ का शेष)

प्रशासन और न्याय पालिका को पार्टी के ही औजार माना। नई रोशनी वाले हिन्दुस्तान में पार्टी कार्यकर्त्ता पैसा कमाने वाला दलाल हो गया और पार्टी का कार्यक्रम पूरा करने की जिम्मेदारी प्रशासन और फिर न्यायपालिका की मानी गई। इसमे दलाली तो खूब चली लेकिन कार्यपालिका, न्याय-पालिका पार्टी ही नहीं एक व्यक्ति की इच्छाए पूरी करने वाली संस्थाए बनी गई। नई रोशनी में नया सिर्फ यही था कि संविधान और लोकतन्त्र के ढांचे से ऊपरी तौर पर कोई छेड़छाड़ नहीं की गई पर अन्दर से उसे खोखला कर दिया गया। प्रतिष्ठान और परिवर्तन की ताकतों का फर्क मिटा कर असली और बुनियादी परिवर्तन को धोखा दिया गया क्योंकि नई रोशनी का मकसद क्रांति नहीं था। राज्य पर वैयक्तिक सत्ता को नया औचित्य देना था।

विफलता उभरी

जब देश को आजाद कर के नया समाज बनाना था तब कानून सही औजार नहीं हो सकता था। लेकिन जब यथास्थितिवाद को मंजूर कर लिया गया और सारी उपलब्धि मौजूदा मशीनरी को बदलने के बजाय उससे बेहतर काम लेने पर आ गई तो स्वाभाविक ही था कि समाज परिवर्तन के मैदानी काम मे लगे कार्यकर्ता और संस्थाए सीधी सामाजिक कार्रवाई के बजाए कानून से सामाजिक अन्याय दूर करने का रास्ता पकड़ लें। इसमें दोष कानून हाई कोर्ट या सुप्रीम कोर्ट का नहीं था। इसमें असली उन्हीं कार्यकर्ताओं और संस्थाओं की थी जो कांग्रेस और विपक्ष दोनों की ही खिलाफ राजनीति को देख देख कर बड़ों और मैदान से उखड़ कर खिलाफ सामाजिक कार्य में लग गई थीं। इनमें गांधी संस्थाएं भी शामिल थीं। कानून से सामाजिक न्याय और लोकहितवाद से बुनियादी परिवर्तन के विचार को मानना सीधी सामाजिक और राजनैतिक कार्रवाई को छुट्टी करना था। लेकिन हमने देखा कि अदालतों के फैसलों के बाद भी बंधुआ मजदूरों की मुक्ति नहीं हुई, दहेज हत्याए नहीं रुकीं, हवालात में बेकसूर लोगों का ठूंसना और मारा जाना बन्द नहीं हुआ।

लोकहित मे इसलिए भटकाव है कि वह समाज में बदलाव नहीं ला सकता। उसके लिए कुछ माहौल बना सकता है पर कानूनी कार्रवाई सीधे और सामूहिक संघर्ष की एवजी नहीं हो सकती। बाल-विवाह दहेज, छुआ-छूत, न्यूनतम मजदूरी और बन्धुआ विरोधी कानूनों का बेअसर होना क्या सबूत नहीं है कि कानून सामाजिक परिवर्तन और क्रान्ति का औजार नहीं हो सकता।　　　　(जनसत्ता से साभार)

आर्यसमाजों की गतिविधियां

श्री जगदीशचन्द्र जी बाधवा जी का अभिनन्दन

जिला आर्य उपप्रतिनिधि सभा झांसी के भूतपूर्व प्रधान एवं वर्तमान संरक्षक श्रीमान शान्ति प्रसाद जी की प्रेरणा से आर्य समाज सदर बाजार झांसी कोषाध्यक्ष एवं जिला आर्य उपप्रतिनिधि सभा झांसी के उपमन्त्री श्रीमान जगदीशचन्द्र जी बाधवा के राजकीय सेवानिवृत होने पर रविवार दिनांक ७ जुलाई १९८५ को प्रातः ८ बजे आर्य समाज मन्दिर सदर बाजार झांसी में अभिनन्दन हुआ इस अवसर पर आर्य जगत के नेता भी उपस्थित थे।

—मन्त्री, आर्य समाज

वैदिक ऋषि तत्व पर गोष्ठी

राजौरी गार्डन में स्थित वेद संस्थान में रविवार १४ जुलाई को स्वामी विद्यानन्द की अध्यक्षता में एक गोष्ठी हुई जिसमें सुश्री प्रतिभा पुरुषा ने वैदिक ऋषियों मे से तीन हिरण्य गर्भ हिरण्य स्तूपा और हिरण्य स्तूप के स्वरूप पर प्रकाश डाला गोष्टि में अनेक विद्वानों ने भाग लिया।

— मन्त्री, वेद संस्थान

श्री महावीरसिंह जी स्वामी महानन्द बने कौड़ियागंज

आर्य समाज कौड़ियागंज, अलीगढ़ का वार्षिकोत्सव २२, २३ और २४ जून १९८५ को उत्साह पूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर श्री महावीरसिंह राघव जी ने सन्यास आश्रम ग्रहण किया। स्वामी आत्मानन्द सरस्वती ने उन्हें दीक्षा दी सन्यास ग्रहण करने पर स्वामी महानन्द सरस्वती नाम से अलंकृत किया।

आर्यप्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश लखनऊ का ९९ वां अधिवेशन तथा वार्षिक निर्वाचन

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का ९९वां वार्षिक अधिवेशन २७, २८ जुलाई, १९८५ को डी० ए० वी० कालेज लखनऊ में हुआ। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान लाला रामगोपाल जी शालवाले का पूर्ण निर्देशन इस अवसर पर रहा। समस्त उत्तर प्रदेश से आर्यसमाजों से १,५०० के लगभग प्रतिनिधि उपस्थित थे। भूतपूर्व संसद सदस्य पं० शिवकुमार शास्त्री जी इस अवसर पर पधारे। और आर्य जगत् के श्रेष्ठ विद्वान् भी सम्मिलित हुए।

सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री शालवाले ने अपने ओजस्वी भाषण से प्रदेश के आर्यसमाजियों मे नवीन प्रेरणा और जागृति उत्पन्न की। तथा धर्मान्तरण के विरुद्ध संगठित होकर कार्य करने की प्रेरणा दी।

वार्षिक निर्वाचन

१९८५ के लिए सर्वसम्मति से निम्नलिखित पदाधिकारियों का चयन किया गया—

प्रधान—पं० इन्द्रराज जी, मेरठ
उप प्रधान—१: श्री देवीदास आर्य, कानपुर
२. श्री प्रेम चन्द्र शर्मा, हाथरस
३. श्रीमती सन्तोष कपूर (एम० एल० सी०) मिर्जापुर
४. पं० सच्चिदानन्द शास्त्री, दिल्ली
५. श्री धर्मेन्द्रसिंह
मन्त्री— श्री मनमोहन तिवारी, लखनऊ
उप मन्त्री—१. श्री जयनारायण अरुण, बिजनौर
२. श्री देवपाल आर्य, मुजफ्फर नगर
३ श्री बांकेलाल बंसल, नैनीताल
४. डा० विनय प्रताप, गोरखपुर
५. श्री जितेन्द्र कुमार जलाली, अलीगढ़
कोषाध्यक्ष—श्री कृष्ण बलदेव महाना, लखनऊ
सहायक कोषाध्यक्ष—श्री वीरेन्द्र आर्य, अमरोहा
पुस्तकालय अध्यक्ष—श्री विजयपाल शास्त्री, कानपुर
उप ,, ,, —श्री सुरेन्द्र स्नातक

— मनमोहन तिवारी
मन्त्री, आ०प्र० सभा, उ०प्र०, लखनऊ

वेद प्रचार सप्ताह

आर्य समाज मुगलसराय में वेदप्रचार सप्ताह दिनांक २० जुलाई १९८५ से २६ जुलाई तक मनाया जायेगा इस अवसर पर आर्य जगत के विद्वान प० सत्यदेव शास्त्री स्वामी व्रतानन्द जी एवं प० रामप्रसाद जी पाण्डेय भजन मण्डली के द्वारा वेद प्रचार का कार्यक्रम सम्पन्न होगा।

—मन्त्री, आर्य समाज

१—शोभायात्रा में आर्य वीर, बीच मे श्री सत्यपाल आर्य प्रधान शिक्षक
२ व ३— विदिशा मे आर्य वीरो का दल प्रशिक्षण लेते हुए।

(मुख्य समाचार पृष्ठ ८ पर)

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद, दिल्ली प्रदेश के तत्वावधान में शिक्षक व अधिकारी शिविर ३ व ४ अगस्त, १९८५
स्थान—आर्यसमाज मन्दिर, पजाबी बाग (पश्चिमी) दिल्ली-२६
(निकट—सहदेव मल्होत्रा आर्य पब्लिक स्कूल)
ध्वजारोहण:—शनिवार ३ अगस्त १९८५ साय ५ बजे, आर्य नेता श्री रामलाल मलिक द्वारा
समापन — रविवार ४ अगस्त साय ६ बजे

—धर्मवीर
महामन्त्री

"सूचना"

भारतीय सार्वजनिक विचार मच के द्वारा स्वर्गीय सन्दीप कक्कड़ "लेखमाला" के लिए आपके अमूल्य उपयोगी विचार अपेक्षित हैं। विषय "ज्वलन्त समस्या पजाब" पर २५ अगस्त ८५ से पूर्व सयोजक के पते भेजें। विचारों का प्रकाशन पुस्तकीय आकार मे होगा।

—कमल किशोर आर्य
सयोजक 'लेखमाली'
भा० सा० वि० म० दिल्ली
१०-ए।१५ शक्ति नगर, दिल्ली-७

(पृष्ठ १ का शेष)

में प्रमुख भूमिका का निर्वाह किया था। अब ऐसा नही हो सकता है उर्दू पृथक भाषा नही है और जब उत्तर प्रदेश की बोली फारसी लिपि में लिख दी जाती है तो वह उर्दू कहलाती है। उर्दू भाषा उत्तर प्रदेश में १० प्रतिशत से भी कम है और यह कहा तक उचित है कि विदेशी फारसोलिपि को हिन्दी के लिये प्रयोग किया जाये। लाल जी ने उत्तर प्रदेश के पूर्ति मन्त्री प्रो० वासुदेवसिंह की सराहना की और उन्होने सवैधानिक रूप से उर्दू को दूसरी भाषा का विरोध किया उसकी सराहना की और उत्तरप्रदेश वासियों को विश्वास दिलाया कि आर्यसमाज उनके सघर्ष के साथ है और उर्दू को किसी भी प्रकार से बढावा नही मिलना चाहिये क्योंकि आज की उर्दू की मांग कल उत्तर प्रदेश में नये पाकिस्तान के निर्माण की माग हो सकती है। शालवाले ने सरकार से अनुरोध किया कि मतो के लालच में अनुचित पग न उठ वें—नहीं तो अकेले भाषा के ही प्रश्न पर यदि समस्त हिन्दी वासी आर्यसमाज के नेतृत्व में एक हो जायेंगे तो सरकार का पतन हो जायेगा।

माननीय शालवाले ने पत्रकारों को धन्यवाद देते हुए उनसे राष्ट्र-हित में सहयोग की याचना की और भारत सरकार से भी अनुरोध किया कि पाकिस्तान की परमाणु योजना को निरस्त करने के लिये भारत को स्वयं परमाणु योजना की परिधि में आगे आना चाहिये।

आर्यसमाज विगत सौ वर्षों से वैदिक संस्कृति, राष्ट्रीय एकता और देश के नैतिक उत्थान के लिये सघर्षरत हैं और भारत के सौ वर्ष के इतिहास में आर्य समाज का बलिदान सर्वोपरि है और इन्हीं प्रश्नों पर भविष्य में भी रहेगा।

कवि जीवानन्द

कवि श्री जीवानन्द आर्य प्र... भक्ति आश्रम में पूज्य श्री गुरुवर ब्रह्मानन्द सर... दिक्षा ग्रहण करके स्वामी सच्चिदानन्द सरस्वती नाम अलंकृत। और देश जाति तथा वेद प्रचार के लिये कटिबद्ध रहकर अपना सर्वस्व त्याग कर दिया।

— पं० सुभाष चन्द्र शास्त्री
उत्कलीय वेद प्रचारक

नशीले पदार्थ सेवन के विरुद्ध आर्य वीर दल टंकारा का अभियान

सात पुलिस मैनों ने भी शराब, बीड़ी आदि छोड़ी।

टंकारा सार्वदेशिक आर्य वीर दल के आर्य वीरों ने राष्ट्रीय उत्थान कार्यक्रम के अन्तर्गत नगर और सरकारी कार्यालयों में उन लोगों से सम्पर्क स्थापित किया जो शराब, बीड़ी, सिगरेट, गांजा, भांग इत्यादि नशीले पदार्थों का सेवन करते हैं।

वीरों ने उन्हें सत्-साहित्य पढ़ने को दिया और उन्हें समझाया कि इस दुर्व्यसन के कारण आप लोगों के परिवार और राष्ट्र को कितनी हानि पहुंची है।

प्रसन्नता की बात है इसका व्यापक प्रभाव पड़ा और सात पुलिस मैनों ने नशीले पदार्थ न पीने की प्रतीज्ञा की।

—मन्त्री आर्य वीर दल

सार्वदेशिक प्रेस, दरियागंज नई दिल्ली में मुद्रित तथा रघुनाथप्रसादपाठक मुद्रक और प्रकाशक के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन, नई दिल्ली-२ से प्रकाशित।

ओ३म्

सार्वदेशिक साप्ताहिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

सृष्टिसम्वत् १९७२९४९०८६] वर्ष २० अङ्क ३५]
श्रावण कृ० १० सं० २०४२ रविवार ११ अगस्त १९८५
दयानन्दाब्द १६१ दूरभाष । २७४७७१ वार्षिक मूल्य २०) एक प्रति ५० पैसे

श्री रघुनाथप्रसाद पाठक स्मृति अंक

अनुशासन के मूर्तिमान प्रतिनिधि श्री रघुनाथ प्रसाद पाठक की याद में

अपने काम पर लगे रहना, चुप-चाप कर्त्तव्य का पालन करते रहना, किसी नींव के पत्थर की तरह भवन के भार को सहन करते हुये उसकी दीवारों और छत को थामते हुये बिना मिनिलोकैषणा और वित्तैषणा के अपनी जिम्मेदारी को समझते हुये अपने सभी साथियों के साथ मिलजुल कर काम करना, कठिन से कठिन परिस्थितियों मे भी कदम पीछे न हटाना, अपनी अगाध विद्या, योग्यता और काम करने की असीम क्षमता को कभी उजागर न करना—महर्षि दयानन्द और आर्यसमाज के मन्तव्यों के प्रचार और प्रसार मे लेखनी का न रुकना, पंडित लेखराम की वसीयत को चुपचाप मूर्तरूप देने में दिन-रात लगे रहना।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा मे कार्यालय एव सार्वदेशिक पत्रिका में सहसम्पादक के रूप में हर समय नियमोपनियम तथा सभा के संविधान के विरुद्ध किसी को काम न करने देना, लेखनी के धनी, अनुशासन को अपने जीवन में आमूल चूल धारण करने वाले, आर्यसमाज के मूक सेवक स्वर्गीय श्री रघुनाथ प्रसाद पाठक की केवल मात्र याद ही शेष रह गई है। — श्री रामगोपाल शालवाले

श्री पाठक जी की क्षति अपूरणीय

सार्वदेशिक साप्ताहिक से माननीय रघुनाथ प्रसाद जी पाठक के निधन का समाचार पढ़कर अत्यन्त दुःख हुआ। पाठक जी सभा में केवल उप मन्त्री ही न थे। इससे बढ़कर बहुत कुछ थे। इतनी लम्बी अवधि तक समाज की सेवा करना तथा कार्यालय वा पत्रिका को चलाना उनका ही कार्य था। परिवार को, समाज को तथा 'सार्वदेशिक' परिवार को उनके चले जाने से जो क्षति पहुची है उसका पूरा होना अतीव कठिन है। प्रभु से प्रार्थना है कि वह दिवगत आत्मा को शान्ति प्रदान करें तथा शोक सन्तप्त परिवार को इस दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करे। —सत्यानन्द मुञ्जाल

रा० सा० श्री चौ० प्रतापसिंह जी का स्वर्गवास

करनालनिवासी रा० सा० श्री चौधरी प्रतापसिंह जी का कुछ समय की बीमारी के पश्चात् २६-२७ जुलाई को मध्य रात्रि में लगभग दो बजे निधन हो गया। आपने वैदिक ग्रन्थों के प्रकाशन एवं वैदिक सस्कृति के प्रचारार्थ "रा० ब० श्री चौ० नारायणसिंह प्रतापसिंह धर्मार्थ ट्रस्ट" की स्थापना की थी। करनाल में एक बृहत् पुस्तकालय बनाया। देहली मे लाजपतराय भवन के अन्तर्गत वेद-भवन की स्थापना की। आप वैदिक ग्रन्थों के प्रकाशन में विद्वानों की सदा सहायता करते रहते थे।

अच्छे सम्पन्न धनी व्यक्ति होते हुए भी आप में अभिमान की गन्धमात्र नहीं थी। विद्वानों के प्रति सदा नम्रता और सम्मान का भाव रखते थे।

रामलाल कपूर ट्रस्ट, बहालगढ़ के आप मान्य सदस्य थे। सदा ट्रस्ट की विविध प्रकार से सहायता करते रहते थे। आपके इस आकस्मिक निधन से वैदिक धर्म, आर्यसमाज और रामलाल कपूर ट्रस्ट की जो हानि हुई है, वह अपूरणीय रहेगी।

रामलाल कपूर ट्रस्ट के सदस्य और वेदवाणी के समस्त पाठकों की ओर से परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते है कि वह उनकी आत्मा को सद्गति प्रदान करे तथा आपके पारिवारिक जनों को और शान्ति प्रदान करें। —युधिष्ठिर मीमांसक

माकन की हत्या षडयंत्रों की कड़ी

युवा सांसद श्री ललित माकन और उनकी पत्नी श्रीमती गीतांजलि माकन की दर्दनाक हत्या पर गहरा शोक प्रकट करते हुए श्री रामगोपाल शालवाले ने कहा कि श्री माकन की हत्या उग्रवादियों के पुराने षडयन्त्रों की एक कड़ी है।

श्री शालवाले ने सरकार से कहा कि इस प्रकार के देशद्रोही हत्यारों के प्रति उदार नीति मे परिवर्तन नहीं किया गया, तो भविष्य मे देश के सामने अनेक गम्भीर सकट उपस्थित हो सकते हैं। —रामगोपाल शालवाले

आतंकवादियों द्वारा सांसद ललित माकन व उनकी पत्नी की हत्या

दक्षिण दिल्ली क्षेत्र से निर्वाचित संसद सदस्य युवा नेता श्री ललित माकन (३५ वर्ष) की ३१ जुलाई को प्रातः दस बजे उनके निवास स्थान पर खुलेआम हत्या कर दी गई। इसके साथ ही उनकी पत्नी श्रीमती गीतांजलि और एक अन्य कार्यकर्ता को भी गोली मारकर समाप्त कर दिया गया। उनके ड्राइवर के भी कई गोलियां लगी है। (शेष पृष्ठ ४ पर)

सम्पादक—ओम्प्रकाश पुरुषार्थी

सहसम्पादक—सच्चिदानन्द शास्त्री

स्वाध्यायी और मननशील पाठक जी

श्री रघुनाथ प्रसाद पाठक के देहावसान के समाचार से अति खेद और आघात हुआ। वे न केवल सार्वदेशिक सभा के सुयोग्य, कर्मठ, जागरूक प्रहरी थे, अपितु समस्त आर्य जगत के लिए कुशल विद्वान निरपेक्ष निस्पृह, सेवा-परायण व महर्षि के आदेशों को क्रियान्वित करने के लिए सतत उद्योगशील व्यक्ति थे।

श्री पाठक जी सार्वदेशिक सभा के यशस्वी कर्मठ, उत्साही, बहुश्रुत, अच्छे सुलझे हुए विद्वान और सुयोग्य कार्यकर्ता रहे, यही नहीं वे स्वयं ही संस्था बन गये थे। दीर्घकालीन ६० वर्षों की सेवा की अवधि में जिस निपुणता, दीर्घदृष्टि एवं सभा व समाज के प्रति लगन व निष्ठा महर्षि स्वामी दयानन्द जी के प्रति अप्रतिम श्रद्धा, त्याग भावना व कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया है, वह अप्रतिम है। कई मन्त्री, प्रधान व उपप्रधान आए और गये, पर निरन्तर उन्होंने निष्पक्षता से, कर्त्तव्य बुद्धि से और दक्षता से सभा का कार्य भार सुचारू रूप से सम्भाला अनेक झंझावातों में पक्षापक्ष के दलदलों के संघर्ष के होते हुए भी, किसी प्रवाह में न बहते हुए सुन्दर रीति से जलकमलवत् कार्य करते हुए सदैव सभा के हित को ही ध्यान में रखा, यह उनकी विशेषता थी पुराने से पुराने रिकार्ड या किसी प्रकारकी माहिती सूचना न मिले तो अपनी स्मृतिगर्भ से अनेक रहस्य का उदघाटन करते और प्रमाण प्रस्तुत करने के साथ कहां क्या सुरक्षित किन फाइलों में है, वह ढूंढ निकालते और अनेक बार योग्य मार्ग दर्शन कर अपनी गरिमा का परिचय देते रहे।

नानाविध विषयों पर लेख और पुस्तिकाएं प्रसिद्ध करके अपने स्वाध्याय और मननशीलता का वे परिचय देतेथे। अजातशत्रु और सबके साथ मिलकर कार्य को किस प्रकार सम्पन्न करना, इसमें प्रवीण थे।

उनके निधन से सार्वदेशिक सभा को तथा समस्त आर्य जगत को महान क्षति पहुंची है, जिसकी पूर्ति होना सम्भव नहीं।

प्रभु उनकी आत्मा को चिरन्तन शांति प्रदान करे।

—प्रतापसिंह शूरजी वल्लभदास

श्री रघुनाथ प्रसाद पाठक चल बसे

स्वर्गीय श्री प० रघुनाथ प्रसाद पाठक एक दृढ़ विश्वासी आर्य सामाजिक परिवार से थे। वे पत्रकार और लेखक थे। उनमें आर्य धर्म रग-रग में समाया था। उन्होने सार्वदेशिक मासिक और साप्ताहिक के सह-सपादक के रूप मे बहुत सुन्दर कार्य किया। सह सम्पादक का कार्य तो अन्तिम क्षण तक किया। उन्होने कई उत्तम पुस्तकें लिखी हैं।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की स्थापना १९०८ ईस्वी में हुई थी। कुछ ही समय के बाद से पाठक जी सभा के कार्यालय में नियुक्त होकर कार्य पर आये और कार्यालयाध्यक्ष आदि का कार्य करते रहे। कहना चाहिए कि सभा की पूर्वावस्था से आज तक वे सभा से सम्बद्ध रहे। उनके निधन से एक पुरानी पीढ़ी का कार्यकर्ता चल बसा। पूज्य स्वामी श्रद्धानन्द जी, महात्मा नारायण स्वामी जी तथा श्री प० केशवदेव जी शास्त्री आदि की पाठक जी पर बड़ी कृपा दृष्टि रही। यही कारण है कि एक लेखक के पद पर कार्य करने वाले पाठक जी अपने स्वाध्याय और परिश्रम से एक अच्छे खासे साहित्यकार और पत्रकार का स्थान ले सके। पाठक जी में एक बहुत बड़ा गुण यह था कि कोई कैसा भी अधिकारी आवे उसके साथ उनकी पट जाती थी। वे सबके मनोविज्ञान को भांपकर वैसा ही बन जाते थे। यदि उनकी दृष्टि में कोई विरुद्ध बात होती थी तो दूसरे प्रकार से सम्बद्ध अधिकारी की दृष्टि मे ला देते थे। यह ही एक ऐसा सुगुण था और अटूट कार्यनिष्ठा थी कि वे ऐसी संस्थाओं में कार्य करने में इतने लम्बे अर्से तक, कहना चाहिए अन्त तक सफल रहे।

मेरे साथ भी उनका पर्याप्त सम्पर्क रहा। सभा में अनेक चढ़ाव-उतार आए परन्तु मुझमें उनकी श्रद्धा भावना बनी रही और अन्तिम क्षण तक अटूट रही। जब भी नियम, विधान, विधि और धर्म सम्बन्धी तथा संघटनात्मक कोई उलझन आ पड़ें वे समाधानार्थ मेरे पास उपस्थित कर देते थे और समाहित हो जाते थे। यह कार्यक्रम उनका उस समय भी था जब मैं दिल्ली रहता था और आज तक चलता रहा। मुझमें उनका दृढ़ विश्वास था कि किसी भी समय किसी भी समस्या का तत्काल समाधान आचार्य जी कर देंगे। वे कहा करते थे और मेरे लिए परिचय लिखने में कई समय लिखा भी कि "आचार्य जी महर्षि दयानन्द के सिद्धांतों और रीति नीति के परम व्याख्याकार हैं।" मैं उन पर विश्वास रखता था और अपना व्यक्ति ही नहीं अपितु घरेलू व्यक्ति सा समझता था।

आर्य समाज और महर्षि के प्रति उनकी अनन्य भक्ति थी। उनके भाई स्वर्गीय प० शंकरदेव जी पाठक थे जिन्होंने सत्यार्थ प्रकाश का संस्कृत भाषा में अनुवाद किया और बहुत बड़े विद्वान थे। पाठक जी का परिवार आर्य भावना से भरपूर है।

मृत्यु तो किसी को छोड़ती नहीं। यदि उसके यहां कोई विकल्प होता तो वह मृत्यु न कहाती। श्री पाठक जी ८५ वर्ष तक कर्मण्य जीवन बिताते हुए विदा हुए। इस घटना से आर्य समाज की एक महती अपूरणीय क्षति हुई। भगवान उन्हें अपनी व्यवस्था मे अपनावे और परिवार जनों आदि को धैर्य दे।

—आचार्य वैद्यनाथ शास्त्री

मधुरभाषी पाठक जी

सार्वदेशिक पत्रिका में यह पढ़कर हार्दिक दुख हुआ कि श्री रघुनाथ पाठक जी की मृत्यु हो गई है। इनकी मृत्यु से सार्वदेशिक सभा के कार्यालय का निष्ठावान स्तम्भ टूट गया। श्री पाठक जी सार्वदेशिक सभा में लगभग ५० वर्षों से अधिक तक समर्पित रहे। पूज्य महात्मा नारायण स्वामी जी के सभापतित्व काल से मृत्यु पर्यन्त उनकी सेवा का यह क्रम चलता रहा। इस लम्बी अवधि मे निष्ठापूर्वक सेवा करने के बावजूद सदा वे सबके प्रिय पात्र बने रहे। श्री पाठक जी मधुर भाषी, आर्य सिद्धांतो के मर्मज्ञ एवं स्वाध्यायशील व्यक्ति थे। सार्वदेशिक सभा के सह सम्पादक के रूप में सभा मे उनकी सेवाएं स्तुत्य हैं। अवकाश प्राप्ति के बाद भी सभा ने इन्हें अवैतनिक कार्यालय अधीक्षक के रूप मे बनाए रखा था और वे अपनी सेवाएं निष्ठापूर्वक देते रहे थे।

उनकी दिवंगत आत्मा को शान्ति प्राप्त हो इसके लिए परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करता हुआ शोक संतप्त परिवार के सदस्यों के लिए मैं अपनी ओर से तथा बिहार के समस्त आर्य समाजों एवं शिक्षण संस्थाओं की ओर से हार्दिक संवेदना व्यक्त करता हूं और उनसे विवेकपूर्वक धैर्य धारण करने की कामना करता हूं।

—वासुदेव शर्मा प्रधान
बिहार राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा

शोकसम्वेदना

सार्वदेशिक साप्ताहिक के यशस्वी सपादक एवं आर्यसमाज के निष्ठ वान कार्यकर्त्ता, उच्चकोटि के साहित्यकार, अनेक भाषाओं के ज्ञाता, उत्कृष्ट कोटि के लेखक तथा वैदिक सिद्धांतों के आस्थावान श्री रघुनाथ प्रसाद जी पाठक की अल्परुग्णता के कारण दिनांक १६ ७ १९८१ को ८५ वर्ष की आयु में निधन हुआ, यह जानकर इस सभा को तथा सभी आर्य प्रेमियों को गहरा आघात पहुंचा।

आपके निधन से न केवल भारत की अपितु समस्त जगत की अपूरणीय क्षति हुई है, जिसकी पूर्ति निकट भविष्य में असम्भव है। आप एक कर्तव्यनिष्ठ कार्यकर्ता थे। अपने को जीवन के गौरव पद पर आसीन किया था।

यह सभा उस विधाता से प्रार्थना करती है कि दिवंगत आत्मा को सद्गति प्रदान करें तथा शोकाकुल परिवार को कष्ट सहन करने के लिए धैर्य एवं सांत्वना प्रदान करें।

माणिकराव शास्त्री
मन्त्री

रामचन्द्रराव कल्याणी
प्रधान

आर्य प्रतिनिधि सभा आन्ध्र प्रदेश

श्रद्धांजलि

पाठक जी की जीवन-यात्रा पर चिन्तन के कुछ स्वर

अमर जीवन को प्राप्त करने का सर्वश्रेष्ठ उपाय है—यश प्राप्त करना। सत्कृति से मनुष्य को जो सत्कीर्ति मिलती है वह वस्तुतः उसका नवजीवन ही है। महाकवि कालिदास ने राजा दिलीप से कहला [illegible] सुन्दर ढंग से व्यक्त किया है कि हे सिंह! तुम इस नश्वर शरीर पर दया मत करो। मेरे जैसे व्यक्तियों को शरीर का मोह नहीं, हम लोग तो अपने यशरूपी शरीर को महत्व देते हैं तुम बचना चाहते हो तो मेरे यश को नष्ट होने से बचाओ। मुझे ऐसा करने को न कहो, जिसमें मेरा यश मिट्टी में मिल जाय।

यशोपार्जन ही सच्चा जीविकोपार्जन है। प्रसिद्धि ही महासिद्धि है जो इस स्थूल शरीर के विनाश के बाद भी युगों युगों तक जीवित रहने में ही गौरव है यशस्वी पुरुष ही इस प्रकार का जीवन प्राप्त प्राप्त कर सकता है। मनुष्य अपने गुण और चरित्र से ही यशस्वी होता है। अतएव जिसको जीवन से सच्चा अनुराग है उसे इस प्रकार अपने चिरस्थायी जीवन का निर्माण करना चाहिये। महाकवि अकबर ने लिखा है कि—

> हंस के दुनिया में मरा कोई, कोई रो-के मरा।
> जिन्दगी पाई मगर उसने जो कुछ हो के मरा॥

कुछ होकर मरने का तात्पर्य है कि मरने के बाद भी जीवित रहना। यह कर्मोपार्जित सत्कीर्ति द्वारा ही सम्भव है।

> स्वकर्म निरतो यो हि स यशः प्राप्नुयान्महत्॥ महाभारत

कर्तव्य परायण व्यक्ति ही सच्चा यशः पा सकता है, लौकिक जीवन की यही सबसे अलौकिक बात है। मिट्टी की चलती-फिरती मूर्ति मिट्टी में मिलने के पहले इसी प्रकार अपने जीवन तत्व को सुरक्षित एवं सम्बन्धित करके नवजीवन का निर्माण कर सकती है। अपनी दुनिया को छोटी मत होने दो। उसकी संकीर्णता एवं लक्ष्य-हीनता से जीवन नीरस एवं अस्त-व्यस्त हो जाता है उसके क्षेत्र को बढ़ाते रहने से जीवन में सरसता व नित्य-नूतन स्फूर्ति उत्पन्न होती है। यही नवजीवन है। मनुष्य को भूतकाल का भूत न बनकर भविष्य की ओर देखते हुए नित्य आगे बढ़ना चाहिये।

वेद के विचार से उन्नत होना और आगे बढ़ना प्रत्येक जीव का लक्षण है—

> आरोहणमाक्रमणं जीवतो जीवतोऽयनम्॥ अथर्व०

जीवन के लिये आवश्यक है उसकी रुकना नहीं चाहिये। मनुष्य के हृदय की एक-एक धड़कन और प्रत्येक श्वास से ईश्वर का यह सन्देश सुनाई पड़ता है कि चलते रहो। चलते रहना ही जीवन की प्रकृति या सद्गति है। रुक जाना ही उसकी विकृति दुर्गति है। तत्व-दर्शी ऋषियों ने मनुष्य मात्र को यह उपदेश दिया है कि चलती [illegible] है। परिश्रम से थके बिना सौभाग्य की प्राप्ति नहीं होती। बैठे हुए आलसी को पाप घर दबाता है। ईश्वर उसी का [illegible] है जो दिन-रात चलता है यत: गतिशील रहता है।

> नानाश्रान्ताय श्रीरस्ति······
> पापो नृषद्वरो जन इन्द्रइत्: सखा।
> चरैवेति चरैवेति॥ ऐतरेय ब्राह्मण

[illegible] उद्योग करने वाला आत्मा पुरुषार्थी होता है। [illegible] के पाप [illegible] में ही नष्ट हो जाते हैं। अतः [illegible] रहो यह [illegible] मार्ग है।

[illegible] जीवन की सार्थकता का यही मूल मन्त्र बताया था—आनन्द। किसी दूसरे की शरण में न जाकर अपनी अपनी आत्मा का ही आश्रय लो। सत्य को दीपक की भांति पकड़े रहो और बिना रुके आगे बढ़ते जाओ। महापुरुषों के वाक्यों से नहीं, उनके चरित्र से भी यही भासित होता है कि जीवन की क्रियाशीलता ही सफलता का रहस्य है।

स्व० पं० रघुनाथप्रसाद पाठक (बांये से प्रथम चश्मा लगाए) सभा के अधिवेशन में गहन परामर्श की मुद्रा में।

एक अनुभवी विचारक ने बड़े और छोटे व्यक्तियों में यही अन्तर माना है कि एक तो प्रगतिशील होता है, दूसरा घुटने टेके पड़ा रहता है।

हमें उत्कर्ष की ओर चलना है। उठ जाने का भाव है—चल पड़ना, आगे बढ़ना। चलते रहने से जीवन की उन्नति क्यों होती है इसको जानने व समझने के लिये जीवन के यथार्थ रूप को देखना चाहिये।

मानव जीवन प्रकृति का अंग है, प्रकृति द्वारा उसकी पोषण तभी हो सकता है। जब तक वह अपने प्राकृति का गुण धर्म को धारण किये रहेगा। अप्राकृतिक होने पर विनाश अवश्यम्भावी है। अपने जीवन के आदर्श को समझने के लिये हमें जगत को और उसकी प्रगति के रहस्य को समझना चाहिये। मानव प्रकृति विश्व प्रकृति से भिन्न नहीं हो सकती।

फलं प्राप्ति तक उद्योग करने वाला व्यक्ति पुरुषार्थी कहलाता है। मानव के पाप भव मार्ग में नष्ट हो जाते हैं इसलिये चलते रहो।

> पुष्पिण्यौ चरतो जंघे, भूष्णुरात्मा फलग्रहिः।
> शेरे अस्य सर्वे पाप्मानः श्रमेण, प्रपथे हताः॥
> चरैवेति चरैवेति। ऐतरेय ब्राह्मण:

मनुष्य अपने जीवन में तन्मय व तल्लीन अनुभव करता है तब वह उसी में देखने लगता है उस अवस्था में उसे भौतिक शरीर की चिन्ता न रहकर काम की धुन में श्रम कष्ट का अनुभव नहीं करता। क्योंकि उसका प्राण उस काम में मग्न हो जाता है,तब उसे शरीर का ध्यान नहीं रहता। केवल कर्तव्य एवं कार्य के महत्व का ध्यान रहता है। इस प्रकार स्वार्थ का बलिदान, सुखासक्ति का परित्याग करके ही मनुष्य महत्वपूर्ण कार्य कर सकता है। कार्य की महत्ता से ही किसी मनुष्य की महत्ता प्रकट होती है तुम जो भी कुछ करते हो, उसमें पूर्ण रूप से दिखाई पड़ो। मनुष्य को अपने प्रत्येक कार्य पर अपने व्यक्तित्व की छाप योग्यता की मुहर लगा देनी चाहिये। उसके द्वारा उसकी महिमा उसी प्रकार प्रकट होनी चाहिये जैसे सृष्टि से ईश्वर की, कविता से कवि की, और वृक्ष से बीज की। सत्कर्म ही सद्गुण का स्थापक होना चाहिये। यही आत्म बलिदान का प्रयोजन है।

—आनन्द मित्र

सामायिक चर्चा—

हिन्दुओं के देश में हिन्दुओं का भविष्य क्या है ?

वरिष्ठ पत्रकार-सम्पादक, आर्य नेता श्री वीरेन्द्र जी का विचारोत्तेजक लेख परिचय

मुझसे पूछा जा सकता है कि मैंने यह सवाल क्यो उठाया है। इसके दो कारण हैं। एक का सम्बन्ध अतीत से है और एक का भविष्य से। पाकिस्तान बना तो बहुत कुछ हमारी अपनी भूल से। हम यह कहकर अपना पीछा छुड़ा लेते हैं कि यह सब कुछ अंग्रेज ने कराया था हमारे नेताओ ने जो गल्तिया की थीं उन्हें हम दृष्टिविमत कर देते हैं।

आज तो अंग्रेज यहा नही है। अगर कल को ऐसे हालात पैदा हो जाए कि एक नए पाकिस्तान की मांग शुरु हो जाए तो फिर हम क्या करेंगे। इस प्रसंग में हमे तीन शर्तों को याद रखना चाहिए। पहली यह कि कई बड़ी-बड़ी ताकतें भारत को कमजोर करने का प्रयास कर रही हैं। वह एक ओर उन लोगों की पीठ ठोकतें का प्रयास कर रही है जो खालिस्तान का नारा लगा रहे हैं यह ताकतें कल को उन लोगों का समर्थन भी करेंगी जो इस्लाम के नाम पर एक और बटवारा चाहते हैं।

दक्षिण भारत मे मीनाक्षीपुरम् तथा रामनाथपुरम मे हिन्दू हरिजनों का ईमान खरीदने का जो प्रयास किया गया था, उसे कौन नहीं जानता। अगर आर्य समाज इस खतरा को देखते हुए वहा न पहुचता तो यह क्षेत्र हिन्दुओ के हाथ से निकल गए होते।

हमे यह भी नही भूलना चाहिए कि अरब देशों से इस उद्देश्य के लिए बहुत भारी धन आ सकता है। इस समय भी आ रहा है। जम्मू कश्मीर उत्तर प्रदेश और कुछ दक्षिण भारत के ऐसे क्षेत्र हैं जहा यह रुपया खर्च हो रहा है। जहा पहले मस्जिद बनाने का प्रयास किया गया था वहा आज आर्य समाज मन्दिर बन रहा है। इसलिए अरब देशों से आया हुआ रुपया हमारे देश मे जो खतरा खड़ा कर सकता है उसकी उपेक्षा नही करनी चाहिए।

तीसरा कारण जो हमारे लिए कठिनाई पेश कर रहा है वह पाकिस्तान है। पाकिस्तान मे अब बहुत थोड़े हिन्दू रहते हैं। वहाँ हिन्दू धर्म का प्रचार भी नही हो सकता। हमारे देश मे पाकिस्तान बन जाने के पश्चात् भी आज ८ करोड मुसलमान रहते हैं। उनकी सहायता के लिए अरब देश भी मदद देते हैं और पाकिस्तान भी जो कुछ कर सकता है करता है।

इसके अतिरिक्त हमे अपनी भी एक कमजोरी की ओर देखना चाहिए। वह यह कि आज भी हमारे देश मे बहुत बड़ी सख्या उन लोगो की है जिन्हे हम हरिजन कहते हैं। वह लोग अधिकाश आर्थिक रूप से पिछड़े होते हैं। ईसाइयो और मुसलमानो दोनो का पूरा जोर इन्ही पर लगता है। इस्लाम और ईसाइयत दोनो के पास धन की कमी नही है। इसलिए दोनो हमारे हरिजनो को खरीदने का प्रयास करते हैं। यही मीनाक्षीपुरम् और रामनाथपुरम मे हुआ है।

यह भ्रम उस समय तक चलता रहेगा जब तक हमारे देश में छुआछात का रोग समाप्त नहीं होता। हमें यह स्वीकार करना पड़ेगा कि हमारे अनगिनत भाई आज भी इसका शिकार हो रहे हैं। देश के दो महापुरुषों ने उसके विरुद्ध अपनी आवाज उठाई थी पहले महर्षि दयानन्द सरस्वती ने उसके बाद महात्मा गांधी ने। महर्षि जन्म के आधार पर किसी को अछूत नही मानते थे इसलिए उन्होंने अपने आन्दोलन का नाम दलित उद्धार रखा था, गांधी जी ने अछूतों को हरिजन की संज्ञा दे दी इसका एक परिणाम यह भी है कि हरिजन अपने आपको हिन्दुओ से अलग एक वर्ग समझने लग गए हैं। चूकि सरकार की ओर से उन्हे कुछ अधिकार मिले हुए हे इसलिए वह अपने आपको हिन्दुओ से अलग समझने लग गए हैं। बाल्मीकि या रविदासी हिन्दुओं से अलग कैसे हो सकते हैं यह मेरे लिए समझना कठिन है। इस तथ्य से भी इन्कार नही हो सकता कि इनमे यह भावना उत्पन्न हो रही है। जब उन्हें रोकने का प्रयास किया जाता है तो वह ईसाई या मुसलमान बनने की धमकी देने लगते हैं।

इस समस्या का यही समाधान है वह यह कि सवर्ण हिन्दू भी अपना दिमाग साफ करें और जन्म के आधार पर किसी को अछूता न समझें। कोई व्यक्ति नैतिकता से गिरा हुआ हो या किसी ऐसे रोग से पीड़ित हो जो छूतछात से दूसरो को भी लग सकता है उससे दूर रहना तो समझ मे आ सकता है।

किन्तु किसी ऐसे व्यक्ति को अछूत कहना जो अपने आपको महर्षि बाल्मीकि की सन्तान कहता हो या गुरु रविदास का अनुयायी हो उसे हम अछूत कैसे कह सकते हैं। अगर हम महर्षि बाल्मीकि को अपने महापुरुष न समझें तो भगवान राम को कैसा समझेंगे। यही कुछ गुरु रविदास के बारे में भी कहा जा सकता है।

हमें अपनी भूल स्वीकार करनी चाहिए। धर्म की गलत व्याख्या ने हिन्दुओ को जितनी हानि पहुचाई है किसी दूसरी चीज ने नहीं पहुचाई। हमारे देश के मुसलमानों और ईसाइयो की बडी सख्या उन लोगों की है जिनका सम्बन्ध हिन्दू परिवारों से है। बादशाह अकबर के बारे में कहा जाता है कि वह हिन्दू बनना चाहते थे किन्तु उस समय के पण्डित इसके लिए तैयार नहीं हुए। कश्मीरी मुसलमानों का भारी बहुमत पहले के कश्मीरी पण्डित ही थे। अफगानिस्तान के शाह शुजा ने जब महाराजा रणजीतसिंह से समझौता किया था तो महाराजा ने एक शर्त यह भी पेश की थी कि सोमनाथ मन्दिर के दरवाजे जो महमूद गजनी बलपूर्वक ले गया था वापस किए जाए वह उसने कर दिए। किन्तु सोमनाथ मन्दिर के पुजारियों ने यह कहकर दूसरी बार वह दरवाजे मन्दिरों में इसलिए नहीं लगवाए कि इन्हे मलेछों के हाथ लगे हुए हैं। वही दरवाजे अमृतसर के दरबार साहिब म लगा दिए गए।

निष्कर्ष यह कि हिन्दुओं ने कई बार स्वयं अपने पावों पर कुठाराघात किया है। अब भी वह अगर न समझे तो हिन्दुओ को उनके अपने ही देश मे कोई नही बचा सकता।

(वीर प्रताप से साभार)

(पृष्ठ १ का शेष)

स्मरण रहे कि इन आतंकवादियों ने दिल के समान इसी समय भा० प्रधान मन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी की हत्या की थी। दुर्भाग्यवश इस केस के सिलसिले म आतंकवादियों ने उनको हिट लिस्ट में रखा था। कहते हैं कि एक घंटा पूर्व स्कूटरों से सैर होकर आतंकवादी उनके कीर्तिनगर निवास पर मौजूद रहे। अभी तक हत्यारों का पता नही चल सका।

श्री ललित माकन एक युवक सांसद और मजदूर कार्यकर्ता थे। उनकी पत्नी श्रीमती गीतांजलि छात्र आन्दोलन से सम्बन्धित रहीं और आन्ध्रप्रदेश के राज्यपाल श्री शंकरदयाल शर्मा की पुत्री थीं। अब उनकी एकमात्र पुत्री (६ वर्ष) अवन्तिका है। स्मरण रहे कि श्री माकन संसद व दिल्लीवासी के पूर्व सदा कार्यालय में प्रचार भी दे सार्वदेशिक सदस्य का आशीर्वाद व सहयोग लेने के लिए आए और विश्व हिन्दू पर पुनः एकता स्थापना के लिए। राजधानी में दिन दहाड़े इस हत्याकांड पर बहुत रोष और असुरक्षा की भावना है। प्रधान मन्त्री द्वारा अकाली दल के प्रेसीडेंट हरचन्दसिंह लोंगोवाल से किये गये समझौते की स्याही सूख भी नहीं पाई थी कि हिंसाकांड का तांडव पुनः शुरू हो गया है।

—महारत्न स्नातक

अवै० हैड एव जनसम्पर्क सलाहकार

श्री पाठकजी के निधन पर शोक सन्देश

—२२-७-८५ के 'सार्वदेशिक' पत्र का २१ जुलाई का अंक प्राप्त हुआ तो मुख पृष्ठ पर "श्री रघुनाथ प्रसाद पाठक दिवगत" शीर्षक के अन्तर्गत श्री पाठक जी के केवल चार दिन की बीमारी के फलस्वरूप हुए निधन का अत्यन्त दुःखद समाचार पढ़ा। जिसको सुनकर हमारे समस्तगण वेदनाग्रस्त हो गये।

स्वर्गीय पाठक जी से आपके कार्यालय मे मेरी गत वर्षों मे कई बार व्यक्तिगत भेंट हुई थी। वास्तव मे वे आर्य जगत के एक तपस्वी, तेजस्वी, निष्ठावान व्यक्ति थे। एक माने हुए विद्वान लेखक तथा पत्रकार भी थे। हमने उन जैसे विनम्र, हसमुख तथा सरल स्वभाव वाले व्यक्ति कम ही देखें हैं, जो दूसरो के प्रति अपनी पूरी सहानुभूति प्रदर्शित करते हुये उनकी समस्याओ के समाधान हेतु अपना समय देने के लिये सदा तत्पर रहते थे।

हम समझते हैं कि आर्य जगत्, विशेषकर हमारी शिरोमणि सभा, के लिये ऐसे व्यक्तियो की क्षति की पूर्ति करना बड़ा कठिन है।

शोक सभा

२१ जुलाई को प्रात कालीन सत्सग के उपरान्त समाज मन्दिर मे एक शोक सभा आयोजित की गई। जिसमे सम्मिलित सभी पुरुष एव महिला सदस्यो द्वारा पाठक जी के निधन पर गहरा शोक व्यक्त किया गया, तथा दो मिनट का मौन धारण कर परमपिता परमात्मा से उनके आत्मा की सद्गति और उनके परिवारजनों एव सहस्रो शोकातुर प्रशसकों को धैर्य प्रदान करने की प्रार्थना की गई।

—त्रिलोकी नाथ भट्ट
प्रधान, आर्यसमाज, ताजगज, आगरा

—स्वर्गीय रघुनाथ प्रसाद पाठक काफी अरसे से 'सार्वदेशिक पत्र' से सह सम्पादक के नाते सम्बन्धित रहे। इनका नाम और सार्वदेशिक शब्द एक-दूसरे के पूरक बन चुके थे, इनकी मृत्यु से आर्य ससार को महान क्षति हुई है, प्रभु उनकी आत्मा को सद्गति प्रदान करे।

—ओमप्रकाश 'प्रभु'
कचहरी (करनाल)

—इस आर्यसमाज के सदस्यों को ऋषि भक्त और आर्यसमाज के सच्चे सेवक श्री रघुनाथ प्रसाद जी पाठक के आकस्मिक निधन के समाचार से अत्यन्त क्षोभ हुआ। परमपिता दिवगत आत्मा को सान्निध्य प्रदान करे और दुःखी परिवार को सन्तोष। श्री पाठक जी के निधन से आर्यसमाज की लेखन शक्ति को भारी आघात पहुचा है। परमात्मा इस अभाव को पूरा करें।

—मन्त्री, आर्यसमाज, फीरोजाबाद

—यह जानकर बहुत दुःख हुआ कि श्री प० रघुनाथ प्रसाद पाठक जी का स्वर्गवास हो गया है। जब से सार्वदेशिक सभा से सम्पर्क हुआ तब से श्री पाठक जी को सभा मे ही देखता रहा हूं। उनका सारा जीवन इस सभा को पनपाने मे लग गया। सभा और पाठक जी, परस्पर पर्यायवाची शब्द हो गए थे। सदा निश्छल, पार्टीबाजी से दूर, मुस्कराहट भरा चेहरा और ऋषि के प्रति अनन्य भक्ति उनमे प्रमुख गुण थे। वे चले गए। उस पीढ़ी की कड़िया टूटती जा रही हैं। प्रभु की इच्छा।

—सत्यदेव विद्यालंकार
नई दिल्ली

—श्री रघुनाथ प्रसाद पाठक का निधन सुनकर हम सभी को हार्दिक कष्ट हुआ और हम सपरिवार उस दिवगत आत्मा को श्रद्धाञ्जलि अर्पित करते हैं और ईश्वर से उनकी आत्मा की शान्ति की कामना करते हैं, और उनके परिवार को शोकमुक्त होने की कामना करते हैं।

—आपका (ग्राहक सख्या ११६४०)

—सार्व०साप्ताहिक में प० रघुनाथ प्रसादजी के अकस्मात देहावसान का समाचार पढ हृदय को भारी आघात पहुचा। उनका सारा जीवन आर्यसमाज को ही समर्पित रहा। एक लम्बे समय से सार्वदेशिक सभा को उनकी अमूल्य सेवाएं अन्तिम समय तक प्राप्त होती रही। महर्षि के मन्तव्यो और वैदिक मान्यताओं के प्रसार-प्रचार मे वह जीवन-पर्यन्त सलग्नता के साथ जुटे रहे। निश्चय ही उनके निधन से आर्य जगत की जो क्षति हुई है वह आदरणीय है। प्रभु दिवगत आत्मा को चिर शान्ति प्रदान करें और उनके सभी पारिवारिक परिजनों को इस दारुण दुःख के सहन का सम्यक् साहस और ध्रुव धैर्य।

— जयदेव आर्य, जयपुर

—श्री प० रघुनाथ प्रसाद पाठक के निधन का समाचार पढकर अत्यन्त दुःख हुआ। उनका मेरे से पुराना सम्पर्क था। वे आर्यसमाज के सिद्धहस्त लेखक, सम्पादक तथा पुरातन इतिहासज्ञ थे। कृपया उनके पुत्रो को मेरी सवेदना से अवगत करा दें।

—डा० भवानी लाल भारतीय
चण्डीगढ

शोक सभा

विश्ववेद परिषद चण्डीगढ़ द्वारा आर्य समाज सैक्टर २२ में ३०-७-८५ को पारित प्रस्ताव — इस परिषद के सभी सदस्य प० रघुनाथ प्रसाद पाठक भूतपूर्व सम्पादक सार्वदेशिक के दुखद समाचार (मृत्यु) को सुनकर बड़े दुःखी मन से परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि परमात्म उनकी आत्मा को शांति प्रदान करे उनके परिवार को इस दुःख का सहने की क्षमता प्रदान करे।

उन्होने जिस क्षमता से सार्वदेशिक में कार्य किया। आर्य पुत्रात्माओ को निभाया वह अनुकरणीय है।

हम सब इस दुख में सम्मिलित होते हुए अपसे प्रार्थना करते हैं कि आप हमारा प्रस्ताव उनके परिवार तक पहुच कर अनुगृहीत करेगे।

—र जे द्र मन्त्री

शोक प्रस्ताव

आर्यसमाज लखीमपुर की यह सभा सार्वदेशिक साप्ताहिक के सहसम्पादक श्री रघुनाथ प्रसाद पाठक के निधन पर शोक व्यक्त करती है। अपनी लेखनी द्वारा किये गए आर्य समाज व आर्य जगत पर उपकारो के लिए वे सदैव याद किये जायेगे। परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना है कि वे दिवगत आत्मा को शान्ति प्रदान करे। मन्त्री आर्यसमाज लखीमपुर

नवीन प्रवेश तथा आवश्यकता

गुरुकुल आर्य नगर (हिसार) हरियाणा में नवीन छात्रों का प्रवेश प्रारम्भ हो चुका है। पाठ्यक्रम विश्वविद्यालय गुरुकुल कांगड़ी के अनुसार है। प्रवेशार्थी बालक की आयु १० वर्ष से कम न हो तथा वह कम से कम स्कूल की तृतीया कक्षा उत्तीर्ण हो। गुरुकुल की जलवायु उत्तम तथा स्वास्थ्यप्रद है। अपने बालको को प्रविष्ट कराने के इच्छुक सज्जन निम्न पते पर पत्र-व्यवहार करें।

गुरुकुल मे एक बी० एस० सी० अध्यापक की भी आवश्यकता है जो उत्तर प्रदेश शिक्षा बोर्ड के पाठ्यक्रमानुसार नवमी तथा दशमी कक्षाओ को सामान्य विज्ञान तथा गणित पढ़ा सकें। अंग्रेजी आदि पढाने के लिए एक बी० ए० बी० एड० अध्यापक की भी आवश्यकता है। वेतन योग्यतानुसार दिया जायेगा। प्रार्थी महानुभाव निम्न पते पर पत्र व्यवहार करें अथवा मिले। गुरुकुल हिसार शहर से तीन मील की दूरी पर बालसमन्द रोड के निकट नहर के किनारे पर स्थित है।

—आचार्य, गुरुकुल आर्य नगर
पो० आर्य नगर, जि० हिसार
(हरियाणा)

शोक-समाचार

—आर्य समाज के दैदिप्यमान नक्षत्र श्री रघुनाथ प्रसाद जी पाठक के निधन का समाचार जानकर अत्यन्त दुःख हुआ। कृपया उनके परिवार जनों तक हमारी समवेदना पहुंचाने का कष्ट कीजिए।

—गंगाराम वानप्रस्थ, हैदराबाद

—आर्य समाज शाहपुरा ने सार्वदेशिक सभा के आजीवन सदस्य व टंकारा ट्रस्ट के प्रधान वयोवृद्ध आर्य नेता लाला हंसराज जी के निधन पर व सार्वदेशिक साप्ताहिक के यशस्वी सम्पादक श्री रघुनाथ प्रसाद जी पाठक के भी निधन पर हार्दिक शोक प्रकट किया। परमात्मा से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्माओं को शान्ति व शोक सतप्त परिवार को धैर्य प्रदान करे।

—यह जानकर बड़ा दुःख हुआ कि श्री रघुनाथ प्रसाद पाठक सम्पादक "सार्वदेशिक पत्रिका" का निधन हो गया। मैं सार्वदेशिक पत्रिका के लेखों को बड़ी रुचि के साथ पढ़ता हूं। श्री पाठक जी द्वारा प्रस्तुत सामग्री बड़ी प्रेरणाप्रद होती थी। स्वामी जी का वार्तालाप और जीवन चरित्र उनके द्वारा पत्रिका में देकर पत्रिका में चार चांद लग जाता था। अब यह प्रसंग पढ़ने को न मिल सकेगा। इसके लिए हमेशा पाठक जी याद आते रहेंगे। मैं परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करता हूं कि श्री पाठक जी की आत्मा को शान्ति प्रदान करे। —हरिनाथ वर्मा, भोपाल

—आदरणीय वयोवृद्ध श्री पाठक जी को दिवगत समाचार पढ़ अपनी सभा मध्य से एक महान तकनीकी साहित्य, लेखक व विद्वान की कमी अनुभव कर रहे हैं। पर प्रभु के नियम को हम मनुष्य कैसे बदल सकते हैं।

—पं० अयोध्या प्रसाद वेदबक पिलखना, अलीगढ़

—यह सभा पाठक जी के देहावसान पर अपने नेता के प्रति शोक समवेदना प्रस्ताव पारित कर दुख प्रकट करती है।

प्रभु उनकी आत्मा को सदगति प्रदान करें एवं उनके दुखी परिवार व हम सबको उनके धर्मयुक्त मार्ग पर चलने की शक्ति प्रदान करें।

—भीष्मदेव आर्य वानप्रस्थी, शिवगंज

—श्री रघुनाथ प्रसाद पाठक के निधन का समाचार जानकर भीलपरा (राजकोट) आर्य समाज के सभी सदस्य भाई बहनो को हार्दिक दुख हुआ। वे सार्वदेशिक पत्र के सहसम्पादक तथा कार्यालयाध्यक्ष भी थे। उनकी सेवायें प्रशंसनीय है।

बृहदयज्ञ के बाद तीन बार गायत्री मन्त्रोच्चारण के साथ दो मिनट का मौन धारण कर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की गयी। परम कृपालु परमात्मा दिवगत आत्मा को शांति प्रदान करे, यही कामना है।

—मन्त्री आर्य समाज राजकोट

आर्य समाज का एक दीवाना चल बसा

श्री पाठक जी के निधन का समाचार सुनकर हृदय विदीर्ण हो उठा। झट मुंह से निकला आर्य समाज का एक दीवाना चल बसा' जिसने पूरी निष्ठा से जीवन भर वैदिक धर्म तथा महर्षि दयानन्द के 'सर्वतोमुखी क्रान्ति' के मिशन की सेवा की। जवानी तो प्रचार-प्रसार एवं लेखन प्रकाशन में लगाई ही थी, बुढ़ापे की विकलताओं को सहते हुए भी सार्वदेशिक सभा और सार्वदेशिक प्रेस में जब भी उनके दर्शन करता, लगनपूर्वक कार्य करने की प्रेरणा पाता।

आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य के महामन्त्री के नाते उनसे मेरा घनिष्ट सम्बन्ध हो गया था और कई अवसरों पर मुझे उनका पथ-प्रदर्शन मिला। उन्हें श्रद्धा-सुमन भेंट करता हूं प्रभु से प्रार्थना करता हूं कि उन जैसे दीवाने बड़ी संख्या में आर्य समाज में पैदा हों।

(प्रिंसीपल) ओम्प्रकाश, नई दिल्ली

धर्म प्रचार के लिए ६० पैसे में १० पुस्तकें

प्रचार के लिए भेजी जाती हैं। धर्म शिक्षा, वैदिक सन्ध्या, हवन-मन्त्र, पूजा किसकी, सत्यपथ, प्रभु भक्ती, ईश्वर प्रार्थना, आर्यसमाज क्या है, दयानन्द की अमर कहानी, जितने चाहें सैट मगावें।

हवन सामग्री ३.५० प्रति किलो, मुक्ति का मार्ग ४० पैसे, उपासना का मार्ग, ६० पैसे, भगवान कृष्ण ४० पैसे सूची मंगावें।

वेद प्रचारक मण्डल दिल्ली-५

—महात्मा रलीलाराम वैदिक वानप्रस्थाश्रम आनन्दधाम गढ़ी ऊधमपुर (जम्मू-कश्मीर) के महोपदेशक आचार्य रामजीलाल शर्मा का १५ जुलाई ८५ को एक पहाड़ी नदी में बह जाने से अचानक देहान्त हो गया। आचार्य जी वेदों, शास्त्रों, दर्शनों, आयुर्वेद और ज्योतिष के प्रकाण्ड पण्डित थे। वे महान कर्मकाण्डी और प्रभावशाली वक्ता थे। उन्होंने आश्रम को अपना जीवन दान किया हुआ था। —गोपाल भिक्षु

—गुरुकुल वृन्दावन विद्या सभा मन्त्री स्नातक ओमप्रकाश वैद्य के लघु-भ्राता स्नातक श्री विश्वप्रकाश वैद्य आयुर्वेद शिरोमणि का दि० १८-७-८५ को गोओं के आपस में लड़कर धक्का लगने से दुर्घटना के कारण असामयिक निधन हो गया है। आर्य जगत इस पर दुख प्रकट करता है।

आर्य जगत की ओर से दिवगत आत्मा की सदगति एवं शोक सन्तप्त परिवार को धैर्य धारण करने की ईश्वर से प्रार्थना की गई।

—स्वामी कर्मानन्द

—आर्य समाज शाहजहांपुर (रजिस्टर्ड) अपने भूतपूर्व प्रधान नगर के सुप्रसिद्ध राजनैतिक, सामाजिक, धार्मिक नेता, निष्काम, कर्मयोगी, परम-विद्वान, स्वतन्त्रता-संग्राम के निःस्वार्थ सेनानी, कर्मठ कर्मकाण्डी श्रद्धेय श्री पं० ब्रह्मदत्त शुक्ल जी के असामयिक निधन पर हार्दिक शोक प्रकट करता है।

श्री शुक्ल जी एक आदर्श महामानव थे उनका सम्पूर्ण जीवन आदर्शोन्मुख रहा। ऐसे त्यागी, धर्मपरायण, कर्तव्य निष्ठ व्यक्तित्व कभी-कभी ही अवतरित होते हैं। 'सादा जीवन उच्च विचार' के प्रतीक श्री शुक्ल जी का अभाव सदा ही खलता रहेगा। —मन्त्री

वैदिक कैसट

प्रसिद्ध संगीतकार भूवो रतन द्वारा महर्षि दयानन्द के जीवन पर संगीत भरी भजनमाला-श्रद्धा इसके अतिरिक्त संध्या-यज्ञ, आर्य भजन माला, भजन-सिन्धु आर्य संगीतिज्ञा गायत्री महिमा आदि श्रेष्ठ कैसट सार्वदेशिक सभा में उपलब्ध इसके अतिरिक्त पुराने और सस्ते कैसट भी कम दामों में उपलब्ध हैं। प्रबन्धक

कैसट विभाग, सार्वदेशिक सभा

चण्डीगढ़ में वेद प्रचार

आषाढ़, श्रावण की पौर्णमासी यज्ञ एवं वेद गोष्ठी समारोह श्री सुखराम कुषवाल चीफ इंजीनियर और श्री रत्न गंगा राम एडवानी के परिवारों में सम्पन्न हुए जिनमें ब्रह्मचारी आर्य नरेश डा० पुष्पावती मातृ-मन्दिर काशी, दीवान बालकृष्ण वेदालंकार और डा० भवानीलाल भारतीय के वेद प्रवचन हुए।

—केन्द्रीय आर्य समाज २६ जुलाई को विशाल वेद समागम इसकी ओर से अनाज मण्डी के विशाल मैदान में बड़ी धूमधाम से मनाया गया जिस में महात्मा अमर स्वामी जी ब्रह्मचारी आर्य नरेश, प्रो० वेदमुनि डा० गणेश दास और ठाकुर दुर्गासिंह, अमरसिंह की भजनमंडली ने खूब आनन्दित किया। महर्षि दयानन्द और ला० लाजपत राय की वीरगाथाओं को सुनाया गया।

—आशुराम आर्य, चण्डीगढ़

मुसलमान युवक का धर्मान्तरण

डा० अख्तर जमाल उम्र ३५ वर्ष सुपुत्र श्री समीउर रहमान, मुहल्ला एवं पो० हायाघाट, थाना-हायाघाट, जिला दरभंगा (बिहार) का विवाह संस्कार सुश्री शीला कुमारी उम्र ३४ वर्ष सुपुत्री स्वर्गीय रामचन्द्र प्रसाद, मुहल्ला-रामचौक टाउन, पो० एवं जिला दरभंगा के साथ आर्य समाज मन्दिर मीठापुर पटना-१ में २७ जून, १९८५ को संध्या ७ बजे वैदिक रीति से सम्पन्न हुआ। पं० बनारसी सिंह "विजयी", मन्त्री, संस्कार प्रशिक्षण विद्यालय, यारपुर पटना-१ द्वारा डा० जमाल को इस्लाम धर्म से हिन्दू धर्म में शुद्धिकरण किया गया तथा इनका नामकरण श्री अभय जीवन आर्य किया गया। तदोपरान्त विवाह संस्कार वैदिक रीति से सम्पन्न कराया गया।

समारोह में उपस्थित महानुभावों एवं देवियों ने वर-वधू को आशीर्वाद दिया।

—राम किसन सिंह
मन्त्री आर्य समाज, मीठापुर, पटना-१
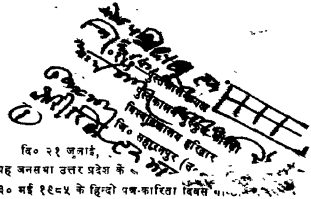
दि० २१ जुलाई, ... ंग की यह जनसभा उत्तर प्रदेश के ... श्री द्वारा ३० मई १९८५ के हिन्दी पत्र-कारिता दिवस ... साहसिक वक्तव्य का पूर्ण समर्थन करते हुए राज्य सरकार से अनुरोध करती है कि वह उर्दू को द्वितीय राजभाषा बनाए जाने जैसा अवैधानिक विधेयक पुनः विधानसभा में कदापि प्रस्तुत न करे जबकि इस पर उच्च न्यायालय भी अपनी टिप्पणी दे चुका है।

यह जनसभा माननीय वासुदेव जी को उनके साहसिक वक्तव्य पर धन्यवाद देते हुए उन्हें विश्वास दिलाती है कि आर्य समाज सदैव उनका समर्थन व सहयोग करेगा और आवश्यकता पड़ने पर कठोर पग उठाने से भी कदापि पीछे न रहेगा।

—रामफल आर्य
कार्यवाहक मन्त्री, आ. स. सभल (मुरादाबाद)

चुनाव सम्पन्न

कोकराझार (आसाम) में आर्य समाज मन्दिर की विधिवत स्थापना की गई है। चुनाव निम्न प्रकार सम्पन्न हुआ : प्रधान श्री भक्त बहादुर क्षत्री मन्त्री श्री लक्ष्मण आर्य और कोषाध्यक्ष श्री फुलेन कुमार।

सार्वदेशिक प्रेस, दरियागंज नई दिल्ली में मुद्रित तथा रघुनाथप्रसाद पाठक मुद्रक और प्रकाशक के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन, नई दिल्ली-२ से प्रकाशित।

ओ३म्
सार्वदेशिक
साप्ताहिक

दूरभाष १२७२१४१०८६]
वर्ष २० अङ्क २६]

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र
श्रावण शुक्ल ...०४२ रविवार १८ अगस्त १९८५

दयानन्दाब्द १६१ दूरभाष : २७४७७१
वार्षिक मूल्य २०) एक प्रति ५० पैसे

सार्वदेशिक सभा का शिष्टमण्डल सहारनपुर में

सहारनपुर में हजारों मुस्लिम साम्प्रदायिकों द्वारा हिन्दुओं पर आक्रमण व अत्याचार

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा देहली का एक शिष्टमण्डल सभा प्रधान श्री लाला रामगोपाल जी शालवाले के नेतृत्व में सहारनपुर पहुंचा जिसमें सभामन्त्री श्री ओम्प्रकाश जी त्यागी तथा सच्चिदानन्द शास्त्री उपमन्त्री सभा साथ थे।

आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० तथा स्थानीय जनता की सूचना पर शिष्टमण्डल वहां आर्य समाज खालापार पहुंचा और नगर के विशिष्ट नागरिकों, पत्रकारों व अन्य संस्थाओं के प्रतिनिधियों से मिला। श्री प्रधान सभा ने २२ जुलाई की घटना की विस्तृत जानकारी ली। दुर्घटना का कारण एक साधारण छोटी सी मस्जिद और एक विशाल मन्दिर की दीवार को लेकर था, जिसके निर्माण करने पर दोनों पक्षों की सहमति भी हो गई थी। किन्तु जब मन्दिर की दीवार ऊंची की जाने लगी। तभी नगर की सभी मस्जिदों में यह आवाज दी गई कि मस्जिद शहीद हो गई। सब मुसलमान तैयार होकर वहां पहुंचे, और दुकाने जलाई गई, रास्ते चलते व्यक्तियों की हत्यायें की गई और सम्पत्ति लूटी गई। इसके बाद प्रशासन सतर्क हो गया और बड़ी दुर्घटना होने से बच गई।

यह हमला पूर्व नियोजित षड्यन्त्र था, अन्यथा ८-१० हजार व्यक्ति एक समुदाय पर धावा न बोलते। स्थानीय बहुसंख्यक हिन्दू इस काण्ड से आतंकित हैं। भू०पू० लोकसभा सदस्य श्री रशीद मसूद का पहुंचना अति घातक रहा। उन्होने मुस्लिमो को भड़काया, जिससे वे हमलावर हुए। किन्तु जब इन्होने देखा, कि भूल हमारी है तो कहा—कि जो हुआ सो हुआ? अब आगे शान्ति प्रेम के साथ रहा जाय। किन्तु प्रश्न था कि इतना बडा हमला हुआ क्यों और कैसे? इतनी देर तक प्रशासन क्या करता रहा? स्थानीय पुलिस को उचित कार्यवाई करने से रोका गया।

बाद में पी० ए० सी० लगाई गई, मुस्लिमों ने मांग की है कि पी०ए०सी० हटाई जाय।

मुख्यमन्त्री श्री नारायणदत्त तिवारी के उस क्षेत्र में जाने पर हिन्दुओं के प्रतिनिधियों को सूचना तक नहीं दीगई। केवल स्थानीय दुकानदारो से ही बातें कर लीं और मुस्लिम व रसीद मसूद साहब साथ रहे।

मुख्यमन्त्री महोदय के जाने से राहत कार्य में कुछ आर्थिक सहयोग सरकार की ओर से दूकानदारों को दिया गया। हत्या में मृत दो हिन्दुओं को २०-२० हजार रुपये का अनुदान भी दिया गया।

सभा-प्रधान दुर्घटनास्थल भी देखने गये। जली दूकाने भी देखी। मन्दिर की दीवार जिस पर विवाद किया गया वह भी देखी। यह कोई ऐसी बात नहीं थी जिस पर झगड़ा व हमले की नौबत बनती।

सभा-प्रधान ने जिलाधीश तथा एस०एस०पी० श्री गोपाल से भेंट करके इस काण्ड की पूरी जानकारी ली। प्रशासन ने श्री प्रधान जी तथा श्री त्यागी जी को बताया कि यदि प्रशासन सतर्क न होता, तो न जाने क्या हो सकता था और इस बात पर अधिकारी भी सहमत थे कि यह योजनाबद्ध षड्यन्त्र था।

आर्यसमाज के शिष्टमण्डल से पूर्व कोई प्रतिनिधि मण्डल हिन्दुओं की बात सुनने नहीं गया था। श्री लाला रामगोपाल जी शालवाले श्री ओम्प्रकाश जी त्यागी के जाने से हिन्दू आर्य जनता का मनोबल ऊंचा हुआ और सान्त्वना भी मिली, शिष्ट मण्डल ने सुरक्षा की दृष्टि से फिलहाल पी०ए०सी०न हटाकर सख्त प्रशासन की माग की।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का अन्तरंग अधिवेशन ११-८-८५ सम्पन्न

आर्यसमाज में युवा पीढ़ी को लाने का आह्वान

देशभर में आर्य वीर दल शिविरों के आयोजन की घोषणा

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का अन्तरंग अधिवेशन ११-८-८५ को आर्य समाज मन्दिर दीवानहाल, दिल्ली में सभा-प्रधान माननीय श्री रामगोपाल जी शालवाले की अध्यक्षता में प्रात १० बजे प्रारम्भ हुआ। अधिवेशन में हरियाणा से श्री स्वामी ओमानन्द सरस्वती, पजाब से प्रमुख उद्योगपति श्री सत्यानन्द मुंजाल, आंध्रा से हैदराबाद के भू०पू० मेयर श्री बी० किशनलाल, प्रादेशिक सभा के प्रधान प्रो० वेदव्यास, पं० शिवकुमार शास्त्री, श्री ओम्प्रकाश जी त्यागी, आर्य वानप्रस्थाश्रम के प्रधान श्री आर्य भिक्षु आदि महानुभावों ने अधिवेशन में भाग लिया।

अधिवेशन में प्रमुख आर्य विभूतियां—श्री मिहिरचन्द धीमान (हावड़ा), श्री बाबूराव जी वाघमारे (महाराष्ट्र), पं० हेतराम जी (अलवर), लाला हसराज गुप्त (दिल्ली ,रायसाहब चौधरी प्रतापसिंह (करनाल), और सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के भू०पू० कार्यालयाध्यक्ष तथा सार्वदेशिक साप्ताहिक के सम्पादक पं० रघुनाथप्रसाद पाठक के निधन पर गहरा दु:ख प्रकट किया। दिवंगतों की आत्माओं की सद्गति और शोक संतप्त परिवारोंके प्रति सवेदना प्रकट की गई।

अधिवेशन में सर्वसम्मति से युवा पीढ़ी को आर्यसमाज में लाने का आह्वान करते हुए सभा प्रधान श्री रामगोपाल जी शालवाले ने देशभर मे आर्य वीर दल शिविरों के आयोजन की घोषणा की। सार्वदेशिक आर्य वीर दल और प्रान्तीय आर्य वीर दलों को इस सम्बन्ध मे विशेष निर्देश दिए गए हैं। इसके अतिरिक्त प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा, आर्यसमाजों व आर्य संस्थाओं को भी इस ओर विशेष जागरूक होकर युवा पीढ़ी को आर्य समाज में लाने का आह्वान किया गया है।

—सच्चिदानन्द शास्त्री

सम्पादक—ओम्प्रकाश पुरुषार्थी

प्रबन्ध-सम्पादक—सच्चिदानन्द शास्त्री

श्रावणी पर्व और कृष्णजन्माष्टमी पर्व को

वेद प्रचार-सप्ताह उत्साह पूर्वक मनायें

सभाप्रधान श्री ला० रामगोपाल शालवाले की अपील

इस शुभावसर पर आर्यसमाज को नव-जीवन देने की योजना के साथ हम ग्रामों की ओर चलें और उन श्रद्धालु-जनों तक ऋषि का सन्देश पहुंचायें।

२—महर्षि का पावन सन्देश उच्च शिक्षाविदों, गुरु-शिष्यों के मन मन्दिरों तक भी पहुंचाने का प्रयत्न करें। आर्यसमाज का संदेश उच्च शिक्षा विदों एवं संस्थाओं में हम नकारात्मक ही सिद्ध हो रहे हैं इधर भी पर्याप्त ध्यान देने की आवश्यकता है।

इस अवसर पर समस्त आर्यजन धर्म प्रचार बढ़ते पाखण्ड का खण्डन, राष्ट्र रक्षा चरित्र निर्माण, मानव समाजोत्थान, गोरक्षा व उनका पालन और विश्व को आर्य बनाने का संकल्प ले। अत्यन्त पवित्रता, गम्भीरता एवं शालीनता के साथ आर्यसमाज मन्दिरों संस्थाओं व घरों पर श्रावणी पर्व धूम-धाम से सम्पन्न कर भगवान श्री कृष्णचन्द्र जी महाराज पावन गीतोपदेश जन-जन तक पहुंचायें उनका चरित्र महाभारत में कितना उच्च है।

श्रावणी उपाकर्म का कार्य नये यज्ञोपवीत धारण कर प्रवचन करें इसी दिन हैदराबाद-सत्याग्रह के उन-पावन बलिदानियों का स्मरण कर श्रद्धाञ्जलि अर्पित की जाय।

सप्ताहभर विद्वानों के वेद प्रवचन वैदिक ग्रन्थों का स्वाध्याय और सामाजिक कुरीतियों यथा-दहेज, बाल-विवाह, मद्यपान, आदि कुरीतियों के निवारण का भी व्रत लें।

तभी हमारा भविष्य सुधरेगा, ऋषि के अनुयायियों से सविनय प्रार्थना है कि प्रत्येक मूल्य पर आपसी मतभेदों को भुलाकर आत्म-हत्या के मार्ग से हटकर जीवन का, आशा का सत्य सन्देश जन-मानस तक पहुंचाये।

ओ३म्प्रकाश पुरुषार्थी
सभा-मन्त्री

हैदराबाद-सत्याग्रह-बलिदान दिवस

३० अगस्त (श्रावणी पर्व पर) को मनाइये

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा देहली के दिनांक ११-१०-४० के नियमानुसार हैदराबाद-सत्याग्रह में अपने प्राणों की आहुति देने वाले आर्य वीरों की पुण्यस्मृति में श्रावण शुक्ला पूर्णिमा-तदनुसार-शुक्रवार ३० अगस्त १९८५ को आर्यसमाज मन्दिरों में सत्याग्रह-बलिदान स्मारक दिवस मनाया जाय। इसी दिन श्रावणी का पुण्य पर्व भी है। इसका कार्यक्रम आर्य पर्व-पद्धति के अनुसार श्रावणी उपाकर्म के साथ मिलकर करें।

धर्मवीरों के प्रति श्रद्धांजलि
धर्मवीर नामावली गुणगान
फिर शान्ति पाठ के साथ कार्यक्रम सम्पन्न करें।

– ओमप्रकाश त्यागी
मन्त्री सभा

श्रावणी पर्व-विशेषांक की प्रतीक्षा कीजिए

आपका अपना प्रमुख-पत्र

सार्वदेशिक साप्ताहिक

आर्यसमाजों—शिक्षणालयों एवं घरों में मंगाकर जहां हमारा सहयोग करेंगे वहीं पर नवीन सूचनाओं, शुभ-सन्देशों-निर्देशों की सही तथा—समय पर जानकारी भी प्राप्त करेंगे।

आजीवन सदस्य	२५१) रुपए एवं
वार्षिक मूल्य	२०) रु०

– सच्चिदानन्द शास्त्री

अन्तर्देशीय आर्य महासम्मेलन डरबन (दक्षिण-अफ्रीका)

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरंग सभा की मीटिंग दिनांक ११ अगस्त १९८५ को दीवानहाल (आर्यसमाज) देहली में सम्पन्न हुई। एक पारित प्रस्ताव के द्वारा श्री स्वामी सत्यप्रकाश जी सरस्वती को आगामी दिसम्बर १९८५ में डरबन (दक्षिण-अफ्रीका) में होने वाले आर्य महासम्मेलन का अध्यक्ष मनोनीत किया गया।

—ओ३म्प्रकाश त्यागी

सच्चर मुख्य न्यायाधीश

न्यायमूर्ति श्री राजेन्द्र सच्चर ने दिल्ली हाईकोर्ट के मुख्य न्याया-धीश का पदभार सम्भाल लिया। श्री सच्चर ने हिन्दी में शपथ ली।

स्वतन्त्रता सेनानी श्री भीमसेन सच्चर के पुत्र श्री राजेन्द्र सच्चर २२ दिसम्बर १९२३ को लाहौर में पैदा हुए। १९५२ उन्होंने पंजाब हाईकोर्ट शिमला में वकालत शुरु की। फरवरी ७० में उन्हें दिल्ली हाईकोर्ट का न्यायाधीश नियुक्त किया गया था।

१९७३ में हुई बोइंग ७३७ दुर्घटना की एक सदस्यीय जांच समिति का काम श्री सच्चर को सौंपा गया था। सन् ७५ में वे पहली बार सिक्किम हाईकोर्ट के मुख्य न्यायाधीश बने।

धर्म प्रचार के लिए ६० पैसे में १० पुस्तकें

प्रचार के लिए भेजी जाती हैं। धर्म शिक्षा, वैदिक सन्ध्या, हवन-मन्त्र, पूजा किसकी, सत्यपथ, प्रभु भक्ती, ईश्वर प्रार्थना, आर्यसमाज क्या है, दयानन्द की अमर कहानी, जितने चाहें सैट मगावें।

हवन सामग्री ३.५० प्रति किलो, मुक्ति का मार्ग ४० पैसे, उपासना का मार्ग, ६० पैसे, भगवान कृष्ण ४० पैसे सूची मगावें।

वेद प्रचारक मण्डल दिल्ली-५

सम्पादकीय

पंजाब समझौता और काश्मीर

२४ जुलाई को भारत के प्रधानमन्त्री और अकाली दल के अध्यक्ष हरचन्दसिंह लौंगोवाल के बीच जो समझौता हुआ है, उसका सारांश अपने पिछले ४ अगस्त के अंक में दे चुके हैं। हमने तब शुभ कामनाएं देते हुए भी अकाली दल की विगत परम्पराओं को देखते हुए कुछ आशंकाएं प्रकट की थीं। आज बहुत से पत्र यह कहते नहीं थकते कि इस प्रकार का समझौता यदि सरकार और अकाली दल के बीच पहिले हो जाता तो पंजाब और देश को इस दौरान जो विनाश और कड़वाहट भुगतनी पड़ी वह न देखनी पड़ती। कल्पना प्रसूत इस तर्क को एक ओर रखकर, इस समझौते के सम्बन्ध में जो अनगिनत प्रतिक्रियाएं हमें पढ़ने और सुनने को मिलीं, उसके परिप्रेक्ष्य में आज हम कुछ अधिक स्पष्ट रूप से अपना चिन्तन पाठकों के सामने रखने की स्थिति में हैं।

हमारी समझ से देश की एक क्षेत्रीय और साम्प्रदायिक पार्टी के साथ प्रधानमन्त्री का समझौता करना एक गलत और अशुभ परम्परा है। दूरदर्शन के २ अगस्त के कार्यक्रम में टेलीग्राफ के सम्पादक एम० जे० अकबर के साथ हुई भेंट वार्ता में पंजाब के राज्यपाल अर्जुनसिंह ने स्वीकार किया कि पंजाब में कांग्रेस के साथ हुए अकालियों के समझौते पर स्व० प्रधानमन्त्री जवाहरलाल नेहरू ने १९५६ में अपने हस्ताक्षर नहीं किए थे। उनके पश्चात स्व० इन्दिरा गांधी ने भी प्रधानमन्त्री के रूप में अकालियों के साथ किए गए किसी समझौते पर स्वयं हस्ताक्षर नहीं किए थे। एक राजनैतिक दल के रूप में कांग्रेस अध्यक्षका दूसरे राजनैतिक दल (यदि वह क्षेत्रीय साम्प्रदायिक न हो) तो उस दशा में समझौता हानिकारक नहीं रहता। इस समझौते में आपत्तिजनक बात यह है कि हरियाणा और राजस्थान के हितों के संरक्षक वहां के स्थानीय प्रतिनिधि नहीं, अपितु स्वयं प्रधानमन्त्री ने अपने ऊपर यह जिम्मेवारी ओढ़ली। लोकतन्त्र में केवल शासक पार्टी ही नहीं अपितु विरोधी पक्ष को भी साथ लेना परम आवश्यक होता है। समझौते में यह दूसरी बड़ी चूक हुई है। इसके परिणामस्वरूप इन दोनों राज्यों की जनता अकालियों के सामने घुटने टेक देने की कार्यवाही से दुःखी है।

अगर इस समझौते को सिखों के सभी माने जाने वाले नेता और गुट स्वीकार कर लेते और हिंसा तथा विनाश का मार्ग बन्द हो जाता, तो भी यह एक बड़ी उपलब्धि मानी जा सकती थी। वर्तमान घटनाओं के परिप्रेक्ष्य में जो अकाली आन्दोलनकारी सरकार और कांग्रेसके मुकाबले में एकजुट होकर मोर्चा लगा रहे थे। वे अलग २ खेमों में बटकर इस समझौते को तारपीडो करने में जी जान से जुटे हुए हैं। ऐसी दशा में पंजाब और देश की समृद्धि और शान्ति की कल्पना "दिल्ली दूरस्त" लगती है।

समझौते के समर्थन में कतिपय राष्ट्रीय अंग्रेजी और हिन्दी के समाचार पत्र अपने स्तम्भ लेखकों के द्वारा इस प्रकार की विचारधारा को फैला रहे हैं कि पंजाब पूर्णरूपेण पंजाबी भाषी राज्य और भौगोलिक दृष्टि से एक है। वस्तुत: यह एक बड़ा षडयन्त्र है जिसके द्वारा कि अकाली पक्ष को खुश करने के लिए न केवल हिन्दू बहुल अपितु प्रमुख रूप से हिन्दी भाषा भाषी अबोहर फाजिलका के क्षेत्रों से हरियाणे के दावे को नाकारा जा रहा है। अकाली ज्ञानी करतारसिंह जब पंजाब के राजस्व मन्त्री कांग्रेस मन्त्रिमण्डल में थे, तब उन्होंने बीच की कड़ी के एक हिन्दी भाषी गांव को मुक्तसर तहसील में मिलाकर हिन्दी भाषियों के साथ अन्याय किया था। अबोहर व फाजिलका इसी शताब्दी में हरियाणा के वर्तमान सिरसा जिले के ही एक भाग थे। यहां की बोली, रीत त्यौहार और वेश-भूषा पंजाब से सदा अलग चलती आई है।

आर्य समाज अबोहरको यह गौरव प्राप्त है कि १९०१ में यहां पर हिन्दी माध्यमकी आर्य पुत्री पाठशाला की स्थापना स्वर्गीया पण्डिता सुन्दर देवी जी ने की थी। उस पाठशाला की पढ़ी सैंकड़ों हजारों लड़कियों ने विवाह के बाद निकटस्थ फाजिलका, कोटकपूरा, मलोट जैसे क्षेत्रों में हिन्दी को घरों की भाषा बना दिया था। स्मरण रहे स्व० स्वामी केशवानन्द जी का फाजिलका का साधु आश्रम और अबोहर का हिन्दी सदन बहुत बाद में १९१६ के लगभग बना था। बाद में तो पंजाब हिन्दी साहित्य सम्मेलन का अधिवेशन महात्मा हंसराज के सभापतित्व में और अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन का अधिवेशन अबोहर में स्वयं डा० अमरनाथ झा के सभापतित्व में हुआ था। अबोहर फाजिलका क्षेत्र हिन्दी के तीर्थस्थान हैं।

चण्डीगढ़ के बारे में जनसंघ और हिन्दुस्तान हिन्दू मंच के प्रधान प्रो० बलराज मधोक ने हाल ही में प्रधानमन्त्री राजीव गांधी को लिखे पत्र में पंजाब को चण्डीगढ़ देते समय कुछ आवश्यक शर्तों का निर्धारण सुझाया है। तदनुसार चण्डीगढ़ यूनीवर्सिटी को केन्द्रीय अधिकार क्षेत्र में बनाये रखने और वहां पंजाबी को देवनागरी लिपि में लिखने की सुविधा प्रदान करने की मांग की है।

काश्मीर के सम्बन्ध में पत्र लेखक का यह कहना सर्वथा उचित है कि काश्मीर के सम्बन्ध में संविधान की धारा ३७० को जारी रखने से ही पंजाब की वर्तमान समस्या को जन्म मिला है और यह गुत्थी बराबर उलझती गई है। अत: इसको तुरन्त दूर करके उक्त दोनों राज्यों में बढ़ती हुई अलगाववादी शक्तियों का उन्मूलन करना बहुत जरूरी है। भारत के उत्तरी सैनिक क्षेत्र के कमाण्डर जनरल छिब्बर ने हाल ही में रहस्य का उद्घाटन किया है कि पाकिस्तान में हर सैनिक अधिकारी को कमीशन देने से पहले यह शपथ दिलाई जाती है कि वह १९७१ में हुई पाकिस्तान की पराजय का पूरा बदला भारत से लेकर रहेगा। इस पृष्ठ भूमि के साथ काश्मीर और पंजाब की बिगड़ती हुई दशा में इस्लामी बम का पाकिस्तान द्वारा निर्माण भारत के लिए एक बड़ी चुनौती है। काश्मीर का मुसलमान अपने आपको पहले मुसलमान, दूसरे नम्बर पर काश्मीरी कहता है। वह भारतीय बनकर रहने को तैयार नहीं। कमोवेश यही रुख सिख साम्प्रदायिक संगठनों ने अपना रखा है और उसका प्रतीकार न तो सरकार और न कोई राजनैतिक पार्टी सोच रही है।

राष्ट्रवादी शक्तियों को साथ में लेकर शासनतन्त्र से भ्रष्टाचार और अयोग्यता को दूर करके आज की इस समस्या को समस्त देशवासी हिम्मत से हल कर सकते हैं। इस धारा को आगे बढ़ाने में प्रत्येक आर्य स्त्री और पुरुष, बालक और वृद्ध को अपनी शक्ति जुटानी होगी।

—सच्चिदत्त स्नातक
सर्व० प्र० एवं जन सम्पर्क सलाहकार

अ० भा० गुरुद्वारा कानून

अगर सभी धर्मस्थानों के लिए पृथक पृथक अखिल भारतीय कानून बना दिए गए तो देश की अपनी अखिल भारतीय सरकार का क्या होगा? धर्म की सत्ता को किसी भी स्तर पर मजबूत कर हम उसे राजनीतिक खेल खेलने को ही प्रोत्साहन देते हैं, यह बात पिछले पचास-पचपन सालों के इतिहास से स्पष्ट है। इस इतिहास से क्या हम कोई सबक नहीं लेना चाहते? इनकी सारी केन्द्रीय सत्ताएं जब धर्म के जोश और उससे मिलने वाले पैसे के बल पर इस देश में चलेंगी, तो संसद और केन्द्रीय सरकार की सत्ता को कोई क्यों पूछेगा? फिर धर्मनिरपेक्षता कहां शरण लेगी? क्या हम भारत को मध्यकालीन यूरोप बना देना चाहते हैं जहां राजा और पोप लड़ाइयों में उलझे रहा करते थे? यहां श्री सूर्यकान्त बाली के एक सामयिक लेख के कुछ अंश हैं।

सन्त हरचन्दसिंह लौंगोवाल ने जिन मांगों को लेकर धर्मयुद्ध शुरू किया था, उनमें अखिल भारतीय गुरुद्वारा कानून बनाने की मांग भी शामिल थी।

अब अकाली दल चाहता है कि भारत भर के गुरुद्वारों की व्यवस्था इसी कमेटी के अन्तर्गत करने के लिए एक कानून बनाया जाए। सच्चाई यह है कि न केवल देश के दूसरे तबकों में, बल्कि खुद सिखों में भी, इस कानून पर आम सहमति नहीं है। इस कानून को बनाने के कई पहलू हैं जिन पर

सामयिक चर्चा—

१५ अगस्त पर स्वतन्त्रता का आभास!

जिन स्वप्नों को साकार करने का इरादा किया था क्या वह सब पूरे हुए? क्या जिस समाजवाद को लाना चाहते थे, वह क्या सही आ सका है। तो फिर आज १५ अगस्त की पावन बेला में हम सब गम्भीरता से विचार करें यह माना कि हमने उद्योग, कृषि, विज्ञान और तकनीकी के क्षेत्र में बहुत उन्नति की है। परन्तु जहां खेत में पैदावर बढ़ी, वहां हर आंगन में भूख के बहुत पौधे भी पैदा हुए। जनसंख्या-जनसंख्या वृद्धि ने बहुत से स्वप्न पूरे नहीं होने दिये। यहां पर भी हम व्यावहारिक दृष्टि से पिछड़ गये। क्यों प्रत्येक राष्ट्र का लोकतन्त्र तभी सफल होताहै—जब उस देशका कानून व व्यवस्था भी समान हों, यही भूल हमें खा रही हैं हिन्दू—एक बीबी, दो या तीन बच्चे बस, दूसरी ओर—४ बीबी बच्चे अनगिनत। परिणामतः आंगन की पौध बढ़ रही है और भूमि का कटान अधिक हो रहा है, रेल लाइन, सड़क, ईंट-भट्टे, नहरें आदि के द्वारा भूमि घटी है।

इस असमानता से राष्ट्र में बुद्धि-भेद पैदा हुआ, फिर विद्रोह ने जन्म लिया। विद्रोह में लाभ कम, हानि अधिक हो जाती है जहां देखो वहां आन्दोलन, फिर विस्फोट उसके विनाश के क्षण यहीं सब आज स्वतन्त्रता के बाद हो रहा है। जो सपने महात्मा गांधीने दिखाये थे क्या हमने पूरे किये, गोहत्या बन्द होगी, शराब-नशा पूर्णतया बन्द होगा। राष्ट्र नैतिकता का आधार बनेगा, क्या सब सत्य सिद्ध किये। मानवता को मिटाने हेतु हम स्वयं आज जिम्मेदार हैं, आजादी के बाद हमारे युवा प्रधान मन्त्री उन गरीब पर्वतीय अञ्चलों में गये, और क्या देखा? भूखा-नंगा, साधन-विहीन फटा, जीर्ण-शीर्ण, मुंह पिचका पेट-पीठ एक बना इन्सानी ढांचा। आत्मा तड़प उठी, और बोल? जब सभी को रोटी, कपड़ा, मकान, स्वास्थ्य और शिक्षा न दे सकेंगे तो कैसी आजादी, उन्होंने दु:खी और भूखे व्यक्ति को आभास कराया कि हम सुराज्य लाने में बहुत दूर हैं। यह ठीक है कि अल्प-काल में जो सपने संजोये थे उन्हें पूरा करने में सक्षम हुए हैं!

वैसे आजादी के इस काल में कुछ पीछे की बाड़ को काटकर आगे की सीमा रेखा खीची है।

आज हम १६ लाख टन से अधिक खाद्यान्न पैदा कर रहे हैं, ५ गज कपड़े की जगह २० गज कपड़ा उपलब्ध है। जहां २ प्रतिशत व्यक्ति शिक्षित थे वहां साक्षरों का प्रतिशत ४० से ऊपर हो गया है। बुनियादी दुर्बलता को कोई नहीं देखना चाहता है—सत्ता पार्टी को छोड़िये, जो इनमें बीमारी थी और है—वहां जनता के प्रतिनिधि भी आये थे अलादद्दीन का चिराग लेकर—नारा क्या था?

सभी हाथों को रोजगार, हर खेत को जल-चार रोटी देने के लिये शिक्षा का प्रसार—पर वैसे ही चले गये।

हम तो जनता के सामने यही दोहराते हैं कि—

जब तक न मिटेगी भूख, और नग्नता ढक पायेगी।
जब तक न देश की कोटि-कोटि, जनता रोटी पायेगी॥
जब तक न देश के नौनिहाल, समुचित शिक्षा पायेंगे—
जब तक न ग्राम की चौपालों पर कृषक बन्धु गायेंगे॥

तब तक हम अखिल गति से आगे की ओर साहस, संकल्प और सिर गर्व के साथ उठाये बढ़ते चले जायेंगे।

सफलताओं के साथ विफलताओं की ओर दृष्टिपात करना मुख्य उद्देश्य है। मेरी मान्यता है कि रोटी, कपड़ा और मकान ही सब कुछ नहीं हैं हमने भूखे, नंगे रहकर भी आजादी की लड़ाई लड़ी।

परन्तु आज अपनों के हाथों ही मां का आंचल फाड़कर बेइज्जत किया जा रहा है। अलगाववादी, साम्प्रदायिक, जातिवादी, देशद्रोही तत्वों को बढ़ावा जहां मिला है वहां भ्रष्टाचार का बढ़ावा, नैतिकता का ह्रास, यह सब विशेषताएं व दुर्बलताओं का सिंहावलोकन न करके चलेंगे, तो आज १५ अगस्त की पावन बेला में गम्भीर चिन्तन, मनन हम करें और भविष्य का नवनिर्माण करने का संकल्प करें।

—सच्चिदानन्द शास्त्री

पुनः १५ अगस्त आया

प्रत्येक वर्ष जब भी १५ अगस्त निकट आता है भारत का शिक्षित वर्ग यह सोचने पर बाध्य हो जाता है कि हमारी स्थिति क्या है और हम किधर जा रहे हैं। प्रत्येक वर्ष राष्ट्र के सम्मुख अनेकों समस्याएं खड़ी होती हैं। सच तो यह है कि समस्याओं और कठिनाइयों के बिना जीवन उदासीन सा रहता है परन्तु फिर भी हमारे देश के सामने जो समस्याएं हैं वे कुछ निराली ही हैं। यदि मैं यह कहूं कि इनमे से अधिकाश वे हैं जो हमने स्वयं निर्मित कर रखीहैं तो अधिक गलत न होगा। आज हमारे सामने सबसे बड़ी समस्या पंजाब की है। जब मैं पंजाब की ओर संकेत करता हूं तो मेरे मस्तिष्क में अकालियों का विद्रोह नही है। यह विद्रोह तो सरकार किसी भी समय समाप्त करके रख सकती है।

अतः मैं इसे कोई महत्व नहीं देता। मैंने पहले भी कई बार कहा है कि किसी राष्ट्र में अन्दरूनी विद्रोह सफल नहीं हो सकता जब तक कोई बाहरी शक्ति इसे प्रोत्साहित न करे। आज हमारे उग्रवादी अकाली मित्र यह विश्वास कर रहे हैं कि पाकिस्तान उनकी सहायता पर आयेगा। वह हुआ नहीं और न ही इस की कोई सम्भावना है। पाकिस्तान आज से पूर्व कई बार यह चेष्टा करके देख चुका है कि भारत पर आक्रमण का क्या परिणाम होता है। इस समय जबकि सोवियत रूस की सेनाएं इसकी सीमा पर खड़ी हैं और उनकी शक्ति इतनी है कि पाकिस्तान को अमरीका की सारी सैनिक सहायता के बावजूद चन्द दिनों के अन्दर-२ इस्लामाबाद के सारे साम्राज्य को समाप्त किया जा सकता है। इसलिये यदि पाकिस्तान के शासकों का दिमाग ही खराब न हो जाए, वे भारत की ओर दृष्टि न करेंगे। मैं यह मानता हूं कि आज पाकिस्तान के सैनिक वर्ग में बड़ी उछल कूद हो रही है। अमरीका और कुछ योरूपीय देशों से इसे जो सामरिक सहायता मिल रही है, मुस्लिम देशों से जो सहायता इसे मिल रही है और भारत के अन्दर जो पाकिस्तानी समर्थक तत्व हैं, उनको देख कर पाकिस्तानी सैनिकों के हौंसले बढ़ जाते हैं और वे सोचते हैं कि क्यों न एक बार फिर से अपने भाग्य की परीक्षा करें। परन्तु जिन लोगों के हाथ में – पाकिस्तानी व विदेशी—वे भली-भांति जानते हैं कि पाकिस्तानी सैनिकों की उछल-कूद का परिणाम क्या होगा।

शेष पृष्ठ ९ पर)

विचार न किया गया तो भारत को फिर से उसी आतंकवादी ताण्डव में फंसाना पड़ सकता है, जहां से वह अभी उबर ही रहा है।

पंजाब से बाहर के सिख भी इस तरह के कानून के पक्ष में नहीं हैं। इसके कुछ कारण है। सारे भारत में फैले सिखों का देश की समस्याओं के प्रति नजरिया वैसा नहीं है जैसा पंजाब के अकाली दल का है। शेष भारत में रहने वाले सिख देश की एकता और अखण्डता को आधार मानकर अपना जीवन यापन कर रहे हैं। पंजाब के अकाली दल ने हमेशा धर्म की बैसाखियों पर राजनीति की चाल चली है जबकि शेष भारत के सिखों ने आस-पास की परिस्थितियों के आधार पर अपना राजनीतिक दृष्टिकोण विकसित कर लिया है।

पंजाब का अकाली दल पंजाब से बाहर के सिखों की परवाह कतई नहीं करता और पंजाब से बाहर के सिखों ने अपना जीवन श्रम और सामाजिक सदभाव के सहारे निर्धारित किया है। पूरे भारत में फैले सिखों में अब इतनी स्वाधीयता आ चुकी है कि वे अपने गुरुद्वारों के प्रबन्ध का केन्द्रीयकरण अमृतसर या चण्डीगढ़ मे नहीं चाहते। यही कारण रहा है कि अकाली दल की अखिल भारतीय गुरुद्वारा कानून की मांग का समर्थन पंजाब से बाहर के सिखों ने कभी नहीं किया। दिल्ली के सिखों ने तो इसका विरोध किया।

(न. भा टा)

मुस्लिमों द्वारा भी सुधार की मांग—

शरिअत बनाम समान नागरिक कानून

—मुजफ्फर हुसैन

इन दिनों देश के कट्टरपंथी मुस्लिमों में धार्मिक भावना का ज्वार आया हुआ है। कोई भी उर्दू पत्र उठाकर देख लीजिए उसमें शरिअत को बचाने का आह्वान किया जाता है और बड़े-बड़े मुस्लिम नेता एक ही स्वर बुलन्द करते हुए नजर आते हैं कि हम अपने परसनल ला में सरकार के हस्तक्षेप को बिल्कुल बरदाश्त नहीं करेंगे। भारत में परसनल ला धार्मिक कम है और राजनीतिक अधिक। पिछले ३८ साल से इस हथियार के सहारे मुस्लिम नेता राजनीति करते आए हैं। और कोई भी दल की सरकार हो उसमें परसनल ला को सर्वोपरि होने की बात स्वीकार करवाते चले आए हैं। वोटों की राजनीति में परसनल ला की स्थिति मुस्लिमों में वही है जो हिन्दू मतदाताओं में गाय की है। (मुख्यतः यह एक राष्ट्रीय और आर्थिक प्रश्न है—ब्रह्मदत्त स्नातक) यानी ये दोनों पवित्र हैं और देश में विद्यमान कानून से ऊपर हैं। आसमानी किताब की तरह न तो इन पर बहस हो सकती है और न ही कोई विचार-विमर्श। इन दोनों पर हाथ लगाने का अर्थ है गर्म तेल में अपनी उंगलियां जलाना।

यह एक प्राकृतिक नियम है कि कोई चीज कितनी ही पवित्र हो यदि वह दुःखदायी है तो बहुत लम्बे समय तक लोग उसे सहन नहीं कर सकते। हिन्दू धर्म में सती प्रथा को किसी समय आदर्श माना जाता था, किन्तु यह प्रथा क्रूर और अमानवीय होने के कारण बहुत समय तक नहीं टिक सकी। समाज में ज्यों ही जागरुकता आई कि उसे जड़ से उखाड़ दिया गया। इन्सान हो या समाज वही वस्तु अपनाई जाएगी और लम्बे समय तक टिकेगी जिसमें सरलता होगी। जटिलता और कठोरपन चूंकि प्रगति में बाधक होते हैं इसलिए न तो कोई व्यक्ति उसे स्वीकार करेगा और न ही समाज। किसी शक्ति के आतंक से उसे कुछ दिन के लिए स्वीकार कर भी लिया गया तो उसमें अनेक प्रकार की विकृतियां पैदा हो जाएंगी। परसनल ला के अन्तर्गत गुलाम और लौण्डी को खरीदना तथा बेचना वैध है, किन्तु अब हम देखते हैं कि बदली हुई परिस्थितियों में यह कानून उन इस्लामी देशों में भी नहीं है जहां इस्लामी शरिअत का राज होने का दावा किया जाता है। आज के युग में न तो कोई पुरुष-स्त्री को खरीदा जा सकता है और न ही उसे बेचा जा सकता है। यदि ऐसा होने लगे तो किसी भी देश का संविधान और कानून ऐसा करने की आज्ञा नहीं देगा। इस्लामी व्यवस्था लागू करने वाले जानते हैं कि मध्ययुग का यह बदनाम कानून आज की प्रगतिशील दुनिया में कोई स्वीकार करने को तैयार नहीं। इसका दूसरा अर्थ यह हुआ कि परसनल ला परिवर्तित किया जा सकता है। यह स्वयं इस्लाम के विद्वान स्वीकार करते हैं।

परसनल ला क्या है? इस्लामी व्यवस्था में कुरान, हदीस और सुन्ना के आधार पर जो कानून बनाए गए हैं वे परसनल ला के नाम से जाने जाते हैं। इनमें दीवानी और फौजदारी दोनों प्रकार के कानून होते हैं। ब्रिटिश सरकार ने जब शरिअत एक्ट बनाया तब १९३७ में इन कानूनों को एकत्रित करके उनकी इस्लामी आस्था के आधार पर व्याख्या की गई। इस्लामी कानूनों का जो फौजदारी भाग था उसे तो स्वीकार नहीं किया गया किन्तु दीवानी कानूनों को परसनल ला के नाम से अपना लिया गया।

ब्रिटिश कानूनों में इस प्रकार की व्यवस्था की गई कि कोई भी भारतीय वह किसी भी धर्म, जाति और वर्ग का हो उस पर फौजदारी दायरे में वही कानून लागू होंगे जो ब्रिटिश संसद ने बनाए हैं। यानी कि इण्डियन पीनल कोड सभी नागरिकों पर समान रूप से लागू होगा। इस्लामी व्याख्या के अनुसार चोरी करने वाले के हाथ नहीं काटे जायेंगे, बल्कि इण्डियन पीनल कोड में चोरी के दंड के लिए जो व्यवस्था की गई उसे स्वीकारा जाएगा। हत्यारे मुस्लिम को धारा ३०२ या ३०७ के अन्तर्गत दंडित किया जाएगा, न कि इस्लामी कानून के अन्तर्गत।

किन्तु अचानक ही यह परसनल ला का शोर फिर क्यों उठ खड़ा हुआ। सामान्य रूप से जब चुनाव हों या कोई साम्प्रदायिक दंगा हुआ हो तो परसनल ला की दुहाई देकर मुल्ला-मोलवी जुनून की ज्योत जलाते हैं, किन्तु इस बार ऐसा कुछ न होने पर भी परसनल ला खतरे में है, यह शोर चारों ओर से सुनाई देने लगा। पिछली ईद २१ जून को मनाई गई और २२ जून को परसनल ला बोर्ड एवं अन्य मुस्लिम संगठनों के आह्वान पर 'शरिअत बचाओ दिवस' मनाया गया। इस दिन न केवल मुस्लिम बाजार और प्रतिष्ठान बन्द रखे गए बल्कि यह आग्रह भी रखा गया कि दूसरे लोग भी बन्द रखें। इस बन्द के आयोजन का कारण लोग समझ नहीं पाए। जब उन्हें पता चला कि यह सब कोई न्यायालय में हुए मुकदमे के फैसले की प्रतिक्रिया स्वरूप हो रहा है, तब लोग जान पाए कि परसनल ला फिर एक बार खतरे में पड़ गया है।

एक महिला का साहस

इस बार परसनल ला को चुनौती एक मुस्लिम महिला की ओर से मिली। इस्लाम में महिलाओं की रक्षा और समानता के लिए ढेरों कानून हैं। जगह-जगह कुरान में भी इसका विवरण आया है किन्तु बादशाहों ने इस्लामी की अपनी इच्छा अनुसार व्याख्या की और मुल्ला-मोलवियों की सहायता से मुस्लिम समाज को 'पुरुष प्रधान' समाज का दर्जा दे दिया। स्त्री केवल भोग-विलास का साधन बनकर रह गई। कोई कोना ऐसा न छोड़ा जिसके आधार पर स्त्री जाति का शोषण न किया हो। विवाह, तलाक, सम्पत्ति सभी को इस दायरे में घसीट लिया गया। इस्लामी कानून में स्त्री को भी पुरुष से तलाक लेने का अधिकार है जिसे 'खुला' की संज्ञा दी जाती है उसे जानबूझकर भुला दिया गया। बहुविवाह करते समय जो शर्तें कुरान और हदीस में रखी गई हैं उसे नजर अन्दाज कर दिया गया। साम्राज्यवादियों ने अपनी वासना की तृप्ति के लिए इस्लाम को अय्याशी का लाइसेंस बना दिया।

उपरोक्त कथन उस मामले से बहुत स्पष्ट हो जायेगा जिसके कारण इस समय परसनल ला बोर्ड और उसके पिछलग्गुओं की नींद हराम हो गई है। इस घटना की शुरुआत इन्दौर के मुकदमे से हुई। ६५ वर्षीय मोहम्मद खान इन्दौर के वकील हैं। श्री खान ने १९३२ में शाह बानो नामक मुस्लिम लड़की से विवाह किया था किन्तु ४३ वर्ष की हरी-भरी गृहस्थी के पश्चात १९७५ में उन्होंने शाह बानो को तलाक दे दिया। तलाक के साथ ही अपने पांच बच्चों को भी उसकी मां के साथ घर से निकाल दिया। शाह बानो ने इन्दौर न्यायालय का दरवाजा खटखटाया और माननीय न्यायाधीश से निवेदन किया किया कि वह बूढ़ी हो चुकी हैं। उसकी बेटियां शादी योग्य हैं, ऐसी स्थिति में वह किस प्रकार अपना जीवन यापन करे। न्यायालय को चाहिए कि वह उसके पति को बाध्य करे कि उसे भरण-पोषण का उचित व्यय दिलाया जाए। इन्दौर के न्यायाधीश ने उसकी इस प्रार्थना को स्वीकार करते हुए पति को कहा कि अपनी भूतपूर्व पत्नी के गुजर-बसर के लिए उसे ६० रुपये प्रति माह प्रदान करे। मोहम्मद खान ने उच्च न्यायालय में इसके विरुद्ध अपील दायर की। यहां भी मोहरे उल्टे पड़े और मामला शाह बानो के पक्ष में गया और धनराशि ६० बढ़ाकर १७९ रु० २० पैसे कर दी गई।

(क्रमशः)

हो गया स्वराज्य अब सुराज चाहिए

"स्वराज्य" और "सुराज"

(सम्पादकाचार्य स्व. पं. हरिशंकर शर्मा, आगरा)

पड़ा अहिंसा-यज्ञ में, सत्य धर्म का आज्य,
हां, 'स्वराज्य" तो हो गया, हुआ न किन्तु "सुराज्य"!
राजनीति रम रही सत्य शेष है,
सत्य का न काम कहीं छद्म वेष है,
सुख-समृद्धि नष्ट हुए, कष्ट क्लेश है,
हाय, दुःख सह रहा 'स्वतन्त्र देश' है,
भाषणों की भूख नहीं, नाज चाहिए—
हो गया स्वराज्य, अब सुराज चाहिए।
हाय! हाय! हाय! कर कराह सब रहे,
इस प्रकार हाय! हम तबाह कब रहे,
भुखमरी की भूतनी किलकार रही है,
अन्नहीन मानवों को मार रही है,
इस विपत्ति—वज्र-पात से बचाइये—
हो गया स्वराज्य, अब सुराज चाहिए!
मिल रही न शुद्ध वस्तु, भाव चढ़ रहे,
हो रहे अनर्थ अनाचार बढ़ रहे,
चोर, जार, डाकुओं का वेग बड़ा है,
स्वार्थ-सिन्धुओ से आज काम पड़ा है,
बिगड़े हुए समाज का बानिक बनाइये—
हो गया स्वराज्य, अब सुराज चाहिए!
नौकरी, उद्योग या व्यवसाय नहीं है,
लाखों गरीब रो रहे कुछ आय नहीं है,
चिथड़ों का है अभाव न रहने को झोंपड़ा,
हां, देशवासियों पं ये संकट बड़ा पड़ा,
बेकार व्यक्तियों को काम काज चाहिए—
हो गया स्वराज्य अब सुराज चाहिए!
शिक्षा में न आदर्श न अपना महत्व है,
इन थोथी पोथियों में न कुछ तथ्य तत्व है,
परदेशियों की सभ्यता सब पर सवार है,
भारत की भावनाओं पर ममता न प्यार है,
इस दास मनोवृत्ति को मन से गिराइये—
हो गया स्वराज्य, अब सुराज चाहिए!
जिससे हुए स्वतन्त्र वह तप त्याग नहीं है,
सहयोग न सहकार न अनुराग कहीं है,
आदर न श्रद्धा न व्यवस्था का नाम है,
बस रात दिन स्वार्थ देव को प्रणाम है,
मानवता मर रही,इसे अमृत पिलाइये—
हो गया स्वराज्य, अब सुराज चाहिए!
आशा थी जब स्वराज्य का सुख सूर्य उगेगा,
सोये हुए "स्वदेश" का सौभाग्य जगेगा,
हो जाएगी धन-धान्य से भरपूर भारती,
हंस-हंम स्वतन्त्रता की उतारेंगे आरती,
गांधी के भक्त होके न गौरव गिराइये—
हो गया स्वराज्य अब सुराज चाहिए!
राजनीति विश्व का विनाश कर रही,
धर्महीन हाय! हो हताश कर रही,
द्वेष दम्भ से न कभी काम चलेगा,
सत्य सूर्य से ही सुख-सरोज खिलेगा,
"रामराज्य" का सुदृश्य फिर दिखाइये—
हो गया स्वराज्य, अब सुराज चाहिए!

'स्वाधीनता दिवस : हमारा संकल्प'

—राधेश्याम 'आर्य' एडवोकेट
मुसाफिर खाना, सुलतानपुर (उ० प्र०)

आज हम अपने स्वाधीनता दिवस की अड़तीसवीं वर्षगांठ मना रहे हैं। निःसन्देह हमने भौतिक क्षेत्र में असीमित प्रगति की है। निर्माण, विज्ञान, टेक्नालोजी, सेना व खाद्यान्न के क्षेत्रों में आश्चर्यजनक विकास हुआ है। राष्ट्र का बाह्य स्वरूप पूर्णतया परिवर्तित हो गया है। उद्योगों की प्रगति भी कम गौरव की बात नहीं है। लेकिन इसके विपरीत उसी गति से राष्ट्रीय चरित्र का भी पतन हुआ है। ऋषि मुनियों की पवित्र संस्कृति के देश में आज मानवता कराह रही है। सारे देश में निम्नस्तर से लेकर उच्चस्तर तक, प्रत्येक क्षेत्र में भीषण भ्रष्टाचार, अकर्मण्यता स्वार्थान्धता का साम्राज्य फैला हुआ है। भाई-भाई के खून का प्यासा हो गया है। साम्प्रदायिक तनाव, अराष्ट्रीय, गतिविधियां राष्ट्र के माथे पर कलंक बनी हुई हैं। घूसखोरी का बाजार गर्म है। तस्करी, काले धन की बहुतायत है। अपहरण, बलात्कार, डकैती, हत्या आज के युग में साधारण-सी बात है। दहेज के नाम पर हत्याएं निरन्तर हो रही हैं। व्यवस्था, शान्ति की जिम्मेदार पुलिस स्वयं भ्रष्टाचार के शिकंजे में फंसी हुई है। नैतिकता, मानवीयता सच्चरित्रता, सद्भावना लुप्त होती जा रही है। यदि इन्सान की इन्सानियत नहीं रहेगी, तो इस असीमित भौतिक विकास का क्या होगा?

आइए! हम भारत के लोग, स्वाधीनता दिवस के पुण्य पर्व पर संकल्प लें एक महान राष्ट्र के निर्माण का और भारत में फैल रही दानवी प्रवृतियो का समाप्त करने का यही स्वाधीनता के लिए मर मिटने वालों के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

अमर रहे यह दिवस महान

बढ़ो सपूतों! हम भारत का,
नव निर्माण करें।
जर्जर से अपने समाज में,
नूतन प्राण भरें।
जगे पुनः प्यारे भारत में—
त्याग-तपस्या व बलिदान।
अमर रहे यह दिवस महान॥
स्वतन्त्रता की बलि वेदी पर,
हुए समर्पित, शीश असंख्यक।
बन्धन मुक्त बनाने मां को—
चलीं क्रान्ति की लहरें व्यापक।
अमर शहीदों ने जिसके हित—
दिया विहंस कर अपने प्राण।
अमर रहे यह दिवस महान॥
रक्षा में इसकी कटिबद्ध,
प्रतिज्ञाओं से हम आबद्ध,
धूल चटायेंगे अरि दल को—
हम हैं सजग तथा सन्नद्ध,
ऐश्वर्यों से हों पूरित सब—
खेत-बाग-वन व खलिहान।
अमर रहे यह दिवस महान॥

—राधेश्याम 'आर्य'

१५ अगस्त को वह ऐतिहासिक रात

—स्वर्गीय प्रकाशवीर शास्त्री

देश को पराधीन हुए यूं तो कई सदियां बीत गयी थीं, पर अंग्रेज को भारत मे आये अभी पौने दो सौ साल हुए थे, मुगलों और अंग्रेजों के राज में एक अन्तर यह था कि मुगल खून खराबी में अधिक विश्वास रखते थे और अंग्रेज कूटनीति मे, यूं अंग्रेजों ने भी बल प्रयोग अथवा अपनी क्रूरता मे कोई कसर नहीं उठा रखी थी, १८५७ के अत्याचार और जलियांवाला बाग उसी के उदाहरण थे, फिर भी मुगलों की तुलना मे अंग्रेजों के अत्याचार कुछ हल्के थे, लेकिन एक बात दोनों में समान थी, भारत की सम्पदा जैसे और जितने हाथों से लूटी जा सके, लूटो, निरीह भारतवासी मन मसोस कर यह सब देख रहे थे।

आखिर पन्द्रह अगस्त १९४७ का यह भाग्यशाली दिन आ ही गया, जब देशवासियों की साधना पूरी हुई पन्द्रह अगस्त का सूरज निकलने से पहले चौदह अगस्त की आधी रात को सब की आंख घड़ी की सूई पर टिकी हुई थीं, कितनी उत्सुकता और तेजी से रात्रि में बारह बजने की प्रतीक्षा हो रही थी, ससद के केन्द्रीय कक्ष में जहां स्वतन्त्रता की यह घोषणा होनी थी वहां अध्यक्ष के आसन पर विराजमान राजेन्द्र बाबू ने जब यह कहा– अब घड़ी की सूई को बारह तक पहुंचने में ठीक आधा मिनट शेष रह जाता है, मैं घड़ी की इन तीस सैकेंड़ों की उत्सुकता से प्रतीक्षा कर रहा हूं। उस समय सबको लग रहा था—आज इस घड़ी को हो क्या गया है, कुछ ही क्षणों में सूई वहां पहुंच गयी और बारह बजते ही अध्यक्ष तथा सदस्य खड़े हो गये, राजेन्द्र बाबू ने सदस्यो की प्रतीज्ञा लेने के लिए सावधान किया और पहले हिन्दुस्तानी में सदस्यों से इन शब्दों में प्रतिज्ञा ग्रहण करवायी—

'अब जब कि हिन्दवासियों ने त्याग और तप से स्वतन्त्रता हासिल कर ली है, मैं—जो सविधान परिषद का एक सदस्य हूं, अपने को बड़ी नम्रता से हिन्द और हिन्दवासियों की सेवा के लिए अर्पित हूं, जिससे यह प्राचीन देश संसार गौरवपूर्ण स्थान प्राप्त कर सके और संसार में शान्ति स्थापित करने और मानव जाति के कल्याण में अपनी पूरी शक्ति लगा कर खुशी-खुशी हाथ बटा सके।

संविधान परिषद में सदस्यों द्वारा शपथ ग्रहण करने के बाद लार्ड माउंटबेटन को वायसराय की बजाय उन्हें गवर्नर जनरल के पद पर नियुक्त करने की सूचना देने का भी निश्चय हुआ, अध्यक्ष श्री राजेन्द्र बाबू ने प्रस्ताव करते हुए कहा—अब वायसराय को इस बात की सूचना दे दी जाय कि भारतीय विधान परिषद ने भारत का शासनाधिकार ग्रहण कर लिया है, इस सिफारिश को भी स्वीकार कर लिया है कि १५ अगस्त १९४७ से लार्ड माउंट बेटन भारत के गवर्नर जनरल होंगे, यह सन्देश स्वयं अध्यक्ष तथा श्री जवाहरलाल नेहरू द्वारा लार्ड माउंटबेटन तक पहुंचाने का भी निश्चय हुआ।

भारत का वर्तमान राष्ट्रध्वज भी इसी अवसर पर भारतीय महिला समाज की ओर से श्रीमती हंसा मेहता ने अध्यक्ष महोदय को भेंट किया, जिन महिलाओं की ओर से अशोक चक्रांकित यह तिरंगा ध्वज अध्यक्ष महोदय को भेंट किया गया, उन ७४ महिलाओंमें श्रीमती विजयलक्ष्मी पण्डित, श्रीमती सरोजिनी नायडू, राजकुमारी अमृतकौर, कुमारी मणिबेन पटेल आदि के अतिरिक्त वर्तमान प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी भी सम्मिलित थीं, श्रीमती हंसा मेहता ने राष्ट्रध्वज भेंट करते हुए कहा—पहली राष्ट्रीय पताका जो इस महिमा[illegible] भवन पर सुशोभित हो, उसे भारतीय महिला समाज एक उपहार की तरह उपस्थित कर रहा है, अपनी स्वतन्त्रता के प्रतीक स्वरूप इस पताका को उपस्थित करते हुए हम पुनः राष्ट्र के लिए अपनी सेवाएं अर्पित करती है, महान भारत की प्रतीक यह पताका सदा फहराती रहे और विश्व पर आज जो संकट की कालिमा छाई है, उसे यह प्रकाश दे।

भारतीय स्वाधीनता की घोषणा से पूर्व अध्यक्ष श्री राजेन्द्र बाबू, प्रधानमन्त्री श्रीजवाहरलाल नेहरू और सर्वपल्लि डाक्टर राधाकृष्णन के संक्षिप्त ऐतिहासिक भाषण भी हुए, राजेन्द्र बाबू ने तो यहीं से अपनी बात प्रारम्भ की– आज हम अपने देश की बागडोर अपने हाथों में ले रहे हैं, इस अवसर पर हमे उस परमपिता की याद करनी चाहिए जो मनुष्य और देशों के भाग्य बनाता है, डा० राधाकृष्ण ने भी अपने भाषण में भारत की सांस्कृतिक विरासत की चर्चा करते हुए कहा—इस देश का भविष्य फिर वैसा ही महान् होगा जैसा इसका अतीत महिमामय रहा है।

चौदह अगस्त की उस चिरप्रतीक्षित रात्रि में भारतीय नेताओं ने अपने मन के जो उदगार प्रगट किये उनमें प्रसन्नता के साथ-साथ उनकी व्यथा भी अलग बोल रही थी, कार्यवाही संक्षिप्त थी पर एक-एक शब्द अपना अध्याय बनाता चल रहा था। देश के विभाजन को लेकर सबके मन दुःखी थे, आखिर दम तक सबने यत्न किया कि किसी तरह विभाजन रुक जाय। पर मुस्लिम लीग की हठ और अंग्रेज की कूटनीति के आगे उन्हें हार माननी पड़ी, देश में जो लूट-पाट और मार-काट का दौर चल रहा था, उससे और भी अधिक सब परेशान थे। नेहरू जी अपने मन की उस व्यथा को न रोक सके और कह उठे—

'हमारे दिल में खुशी है। लेकिन यह भी हम जानते हैं कि हिन्दुस्तान भर में खुशी नहीं है, हमारे दिल मे रंज के टुकड़े काफी हैं, दिल्ली से बहुत दूर नहीं—बड़े-बड़े शहर जल रहे हैं, वहां की गर्मी यहां आ रही है, ऐसे मे खुशी पूरे तौर से नहीं हो सकती, लेकिन फिर भी हमे इस मौके पर हिम्मत से सब बातों का सामना करना है, न हाय-हाय करनी है न परेशान होना है, जब हमारे हाथ में बाग-डोर आयी है तो फिर ठीक तरह से गाडी को चलाना है।

देश जिनके त्याग, तप और बलिदानो से स्वतन्त्र हुआ उन्हे इस अवसर पर भला कैसे भुला जा सकता था। राजेन्द्र बाबू ने कहा— जिन्होंने इस दिन को लाने के लिए अपने प्राण न्योछावर कर दिये। हंसते हँसते फासी के तख्तों पर चढ़ गये। गोलियो के शिकार बने, जेलखानों और कालेपानी के टापू मे घुल-घुल कर अपने जीवन का उत्सर्ग किया। आज का यह दिन उनकी तपस्या और त्याग का ही फल है, नेहरू जी ने भी उन्हें भाव-भरे हृदय से श्रद्धांजलि दी।

पन्द्रह अगस्त को प्रातः दस बजे भारतीय विधान परिषद की बैठक फिर कांस्ट्रीट्यूशन हाल नयी दिल्ली में सम्पन्न हुई, अध्यक्ष राजेन्द्र बाबू के साथ भारत के प्रथम गवर्नर जनरल लार्ड माउंट बेटन और उनकी धर्मपत्नी भी इसमे पधारीं, प्रारम्भ में भारत के ऐतिहासिक स्वाधीनता पर्व के लिए विदेशो से आये कुछ विशेष स्वाधीनता सन्देश पढ़कर सुनाये गये, इनमे चीन, कनाडा, आस्ट्रेलिया इंडोनेशिया, नेपाल और सयुक्त राज्य के प्रधानमन्त्री के सन्देश भी सम्मिलित थे। उसके बाद गवर्नर जनरल ने ब्रिटिश सम्राट का एक सन्देश पढ़कर सुनाया—

'इस ऐतिहासिक दिन, जब कि भारत ब्रिटिश राष्ट्रमण्डल में एक स्वतन्त्र और स्वाधीन उपनिवेश के रूप में स्थान ग्रहण कर रहा है, मैं आप सबको अपनी हार्दिक शुभ कामनाएं भेजता हूं।

'आपके इस स्वाधीनता महोत्सव में प्रत्येक स्वतन्त्राप्रिय राष्ट्र भाग लेना चाहेगा, क्योंकि पारस्परिक स्वीकृति द्वारा सत्ता का जो यह हस्तांतरण हुआ है, उससे एक ऐसे महान लोकतन्त्रीय आदर्श की पूर्ति हुई है जिसे ब्रिटेन और भारत दोनो देशों के लोग समान रूप

(शेष पृष्ठ ९ पर)

भारत के राजनैतिक पुनर्जागरण पर आर्य समाज का प्रभाव

—डा० डी. पी. श्रीवास्तव पी.एच.डी.

(७)

प्रजाजनों को बुरे सदस्यों को चुनने के विरुद्ध चेतावनी देते हुए आधुनिक भारत के इस महान गुरु ने लिखा है कि सब सभासद् और सभापति इन्द्रियों को जीतने अर्थात् अपने वश में रख के सदा धर्म में वर्तें और अधर्म से हटे हटाए रहें। इसलिए रात-दिन योगाभ्यास भी करते रहें। क्योंकि जो जितेन्द्रिय अथवा अपनी इन्द्रियों को जीते विना बाहर की प्रजा को अपने वश में रखने में समर्थ कभी नहीं हो सकता। (सत्यार्थ प्र० पृ० १११)

लोकतन्त्र के अभी इतने ऊंचे स्तर के प्रतिनिधियों का स्वरूप आना केवल भारत में ही नहीं अपितु विश्व के सारे देशों में आना शेष है। आजकल राजनीतिक दल कोरे प्रस्ताव पास करके रह जाते हैं, कि जनता उन उम्मीदवारों को चुने जो ईमानदार और कार्य कुशल हों। प्रतिनिधियों के सम्बन्ध में दयानन्दके विचार एवं आदर्श-परक कल्पना प्रस्तुत करते हैं जो लोकतन्त्र के जीवन को उदार बनाने के लिए आवश्यक है।

सभा का सगठन उच्च स्तर का हो उसके प्रति दयानन्द पर्याप्त मात्रा में सजग है। उन्होंने लिखा है कि "अज्ञानियों के सहस्रों, लाखों करोड़ों मिल के जो कुछ व्यवस्था करें उसे कभी न मानना चाहिए। जो ब्रह्मचर्य सत्यभाषणादि व्रत, वेद विद्या वा विचार से रहित जन्म-मात्र के शूद्रवत वर्तमान है उन सहस्रों मनुष्यों के मिलने से भी सभा नहीं कहाती। जो अविद्यायुक्त मूर्ख वेदों को न जानने वाले मनुष्य जिस धर्म को कहें उसको कभी नहीं मानना चाहिए, क्योंकि जो मूर्खों के कहे धर्म के अनुसार चलते हैं उनके पीछे सैकड़ों प्रकार के पाप लग जाते हैं।" (स० प्र० पृ० १३९, १३०)

दयानन्द राज्य की आज्ञा पालन न करने की उस परिस्थिति में उचित ठहराते हैं जब विधि वा आज्ञा उन लोगों के द्वारा प्रचारित की गई है। जो वेदों से अनभिज्ञ है। दयानन्द का यह विचार अविनय अवज्ञों जैसा है।

आर्य समाज

आर्यसमाज संस्था के रूप में भी लोकतन्त्रात्मक आधार पर संगठित किया गया है। बौद्ध काल के बाद भारत में यह प्रथम लोक-तन्त्रात्मक संस्था थी। मध्य और आधुनिक युगों के पंथों और सम्प्रदायों में भी संस्थापक की प्रमुखता रहती थी और गुरु के रूप में उनकी पूजा की जाती थी।

१९वीं शताब्दी के अनेक सम्प्रदायों में भी यह बात देखने को मिलती है। दयानन्द ने आर्य समाज के अन्तर्गत अपने लिए कोई विशिष्ट स्थान नहीं रखा। इससे स्पष्ट है कि वे किसी भी रूप में गुरु-पूजा को स्थान नहीं देना चाहते थे।

(घासीराम कृत महर्षि दयानन्द जीवन भाग-२ पृ० ४२४)

उनकी इच्छा थी कि आर्यसमाज बौद्धिक और लोकतान्त्रिक आधार पर अपने धार्मिक और सामाजिक विचारों तथा संगठनात्मक नीतियों का निर्धारण करें। यह कहना अतिशयोक्ति न होगा कि आर्यसमाज भारत में पहली शुद्ध लोकतान्त्रिक संस्था थी। इस दृष्टि से आधुनिक भारतीय चिन्तन तथा आचारमें आर्यसमाज का अद्वितीय योगदान है।

न्याय राज्य पर बल

दयानन्द ने न्याय राज्य पर बहुत बल दिया और उनका विश्वास था कि जिस राज्य में अन्याय स्थापित रहता है वह राज्य बहुत समय तक स्थिर नहीं रह सकता। उन्होंने सत्यार्थ प्रकाश में लिखा है "अभिमानी अन्यायकारी अविद्वान लोगों का राज्य बहुत दिन नहीं चलता।" (स० प्र० पृ० २६३)

न्यायकारी राज्य ईश्वरीय राज्य होता है। इस बात का उल्लेख ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका में किया है। "जो मनुष्य इस प्रकार के उत्तम पुरुषों की सभा से न्यायपूर्वक राज्य करते हैं उनके लिए पर-मेश्वर प्रतिज्ञा करता है कि "हे मनुष्यो! तुम धर्मात्मा होके न्याय से राज्य करो क्योंकि जो धर्मात्मा पुरुष है मैं उनके 'क्षात्रधर्म' और सब राज्य में प्रकाशित करता हूं और सर्वदा मेरे समीप रहते हैं। न्यायकारी राज्य समृद्ध रहता है। न्याय पालक राजा को अनेक प्रकार से लक्ष्मी प्राप्त होती है और उसके खजाने की हानि कभी नहीं होती।" (ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका पृ० २३९, २५०)

दयानन्द का कहना है कि मरा हुआ न्याय मारने वाले का नाश और रक्षित किया हुआ न्याय रक्षक की रक्षा करता है। इसलिए न्याय का हनन कभी न करना चाहिए। जो सब ऐश्वर्यों को देने और सुखों की वर्षा करने वाला न्याय है उसका लोप करता है उसी को विद्वान लोग वृषल अर्थात् शूद्र और नीच जानते हैं इसलिए किसी मनुष्य को न्याय का लोप करना उचित नहीं है।"

(स० प्र० पृ० १५२)

श्री पाठक जी को श्रद्धांजलियां

समर्पित व्यक्तित्व

श्री रघुनाथ प्रसाद पाठक के निधन का समाचार सुनकर स्तब्ध रह गया। आर्य समाज के प्रति वे पूर्णतः समर्पित थे। जिस लगन, निष्ठा और तत्परता से उन्होंने कार्य किया, भावी पीढ़ियों के लिए वह एक उदाहरण है। आयु में छोटे होते हुए भी वे मुझसे पहले चले गए। अतीत की कितनी ही बातें उनके समर्पित व्यक्तित्व की याद दिला रही हैं।

—बिहारी लाल शास्त्री
रामपुर गार्डन, बरेली

कुशल सम्पादक

पाठक जी अत्यन्त सरल और सहृदय व्यक्ति थे। महात्मा नारायण स्वामी जी की प्रेरणा से वे जीवन पर्यन्त आर्य समाज का कार्य करते रहे। 'सार्वदेशिक पत्र का उन्होंने कुशलता से सम्पादन किया। अच्छे लेखक और समर्पित कार्यकर्ता के रूप में वे सदैव याद किए जाते रहेंगे।

—सावित्री देवी (वेदाचार्या), बरेली

मूक कर्मयोगी

पाठक जी के देहावसान से धक्का लगा। उन्होंने आर्य समाज की महान सेवा की है। प्रचार व चाटुकारिता से दूर पाठक जी दत्तचित्तता से अन्तिम समय तक महर्षि के मिशन में सक्रिय रहे। आर्य समाज के इतिहास के वे एक जीवित कोष थे। मूक कर्मयोगी को मेरा अन्तिम प्रणाम!

—सन्तोष 'कण्व'

—तहसील आर्य सभा तिलहर में स्वनाम धन्य एवं निर्भीक सम्पादक एवं अनेक पुस्तकों को लिखने वाले श्री रघुनाथ प्रसाद पाठक के सम्बन्ध में बताया और उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की। सभा ने एक प्रस्ताव पास कर दिवंगत आत्मा की सदगति के लिए ईश्वर से प्रार्थना की।

उपस्थित आर्यजनों ने आर्य समाज की क्षति बतायी। श्रद्धांजलि के पश्चात कार्यवाही स्थगित कर दी गई।

—वीरसिंह आर्य, मन्त्री

— आर्य समाज गया ने सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली-२ के प्रमुख कार्यकर्ता श्री रघुनाथ प्रसाद पाठक जी के निधन पर शोक प्रस्ताव पारित किया।

—जगदम्बा प्रसाद, मन्त्री

(पृष्ठ ७ का शेष)

से कार्यान्वित करने के लिए कटिबद्ध रहे हैं, यह बड़ी ही उत्साह-वर्धक बात है, यह सब शान्तिपूर्ण परिवर्तन द्वारा सम्पन्न हो सका है।

'भविष्य में आपको बड़ी जिम्मेदारियों का भार वहन करना है किन्तु जब मैं आपके द्वारा प्रकट की गयी राजनीतिज्ञता तथा किये गये त्यागों का विचार करता हूं, तो मुझे विश्वास हो जाता है कि भविष्य का भार आप समुचित रूप से वहन कर सकेंगे।

भारतीय स्वाधीनता के इस ऐतिहासिक पर्व पर जहां भारत-वासी फूले नहीं समा रहे थे और हंसी-खुशी और नाच-गानों द्वारा अपनी प्रसन्नता व्यक्त कर रहे थे वहां देश के दूरदर्शी नेता आने वाले भारत की तस्वीर बनाने के लिए कड़े परिश्रम और संकल्प का स्वप्न देख रहे थे, पंडित जी ने तो अपने भाषण का प्रारम्भ ही यहां से किया—कई वर्ष हुए जब हमने किस्मत की एक बाजी लगायी थी, अब समय आ गया जब हम उसे पूरा करें, एक मंजिल पूरी हुई। लेकिन भविष्य के लिए एक प्रण और प्रतिज्ञा हमें करनी है, वा हिन्दुस्तान के लोगों की सेवा करनी है, हिन्दी के सुप्रसिद्ध कवि रंग जी ने इन्हीं भावों को अपनी कलम में पिरो कर लिखा था—

ओ विप्लव के थके साथियो!
विजय मिली विश्राम न समझो॥

स्वाधीनता का यह अट्ठाइसवां पर्व आज फिर विकासोन्मुख भारत के कानों में उन्हीं शब्दों को दोहरा रहा है।

आर्य विदेश यात्रा

प्रोग्राम : दिल्ली पालम से बेंकाक, पटैया, (थाईलैंड, सिंगापुर (सिंगापुर) हांगकांग से दिल्ली पालम

प्रस्थान दिल्ली पालम — ११-१०-१९८५
वापस दिल्ली — २१-१०-१९८५

विशेष जानकारी के लिए आर्य समाज करोल बाग दिल्ली से सम्पर्क करें। फोन नं० ५६७४५८

—रामलाल मलिक

(पृष्ठ ४ का शेष)

अपनी ही नासमझी से वे सोवियत रूस को वह स्वर्णिम अवसर नहीं देना चाहते जिसके लिए रूस प्रतीक्षा कर रहा है। इसलिए हमें अकाली उग्रवादियों की सहायतार्थ पाकिस्तानी इरादों पर अधिक चिन्तित होने की आवश्यकता नहीं है।

बावजूद इस सबके मैं यदि पंजाब की स्थिति का संकेत कर रहा हूं तो इसलिए कि मैं यह अनुभव करता हूं कि आज पंजाब में जो कुछ हो रहा है वह एक प्रकार से उस बात का प्रतीक है जिसकी ओर मैं वर्षों से संकेत कर रहा हूं। हमारा दुर्भाग्य है कि सैकड़ों वर्षों की दासता पश्चात् हममें जो हीन भावना और चरित्र हीनता अथवा स्वार्थ की जो भावना उत्पन्न हो गयी थी उसे दूर करने के लिए हमारे शासकों ने कोई प्रयत्न नहीं किया। प्रश्न यह है कि अकाली विद्रोह क्या है? कौन नहीं जानता कि अकाली जिन मांगों को प्रस्तुत करके मोर्चे लगाते रहे हैं वे सबके सब निरर्थक और स्वार्थ पर आधारित हैं। परन्तु इन्हीं मांगों के समर्थन में जो आन्दोलन चला है उसने यह प्रदर्शित कर दिया है कि सैकड़ों नहीं, हजारों ही बल्कि लाखों कहा जाए तो शायद अत्योक्ति न होगी, सिख देश के वफादार नहीं हैं। इनकी ओर से जब खालिस्तान की मांग का नारा लगता है तो इससे यही स्पष्ट होता है कि इन के दिलों में देशभक्ति नाममात्र ही है। इसके लिए मैं उन्हें दोष नहीं देता दोष अपनी सर-कार को देता हूं, अपने नेताओं को देता हूं, अपने पथ-प्रदर्शकों को देता हूं जिन्होंने किसी क्षण जनता में वह देशभक्ति की भावना पैदा नहीं कि जो करनी चाहिए थी। देशभक्ति किसी देश के कारखानों, फैक्टरियों, पर्वतों, नदी-नालों के प्रति नहीं होती, इसकी मान्यताओं, मूल्यों तथा परम्पराओं के प्रति होती है। जब सारे देश का वाता-वरण ही भौतिकता के रंग में रंगा हो तो इन आध्यात्मिक मान्यताओं और मूल्यों के प्रति किसी की निष्ठा होगी है। आज अकाली सिखों ने अपने दिल की यह भावना हमारे समक्ष प्रस्तुत कर दी। यदि अकाली सिख इस प्रकार देशद्रोही बन सकते हैं तो अन्य भारतीयों से क्या आशा होगी।

यह है विचार जो १५ अगस्त के दिन मेरे मस्तिष्क को झक-झोरता है। १५ अगस्त का दिन मेरे लिए इसलिए महत्वपूर्ण है क्यों कि मैं इसे आत्मनिरीक्षण का दिन मानता हूं। इस दिन मुझे यह सोचना है कि मैंने पिछले वर्ष में अपने देश को शक्तिवान बनाने में क्या योगदान दिया है। जब मैं अपने चारों ओर के वातावरण को देखता हू तो मैं चिन्तित हो उठता हूं और उस चिन्ता का प्रतीक हमारे ये अकाली मित्र हैं। इनकी रविश यह सिद्ध करती है कि कोई भी व्यक्ति देशद्रोही बन सकता है और इसे देशभक्त बनाने के लिए एक विधिवत प्रयास करना पड़ता है। हमारे चारों ओर हमारे शत्रु हम पर वार करने को तत्पर बैठे हैं। इसलिए प्रत्येक नागरिक में देशभक्ति और भारत के प्रति निष्ठा की भावना को कूट-कूट कर भरना आवश्यक है। बड़े खेद के साथ कहना पड़ता है कि आज इस बात की ओर किसी का ध्यान नहीं। इसका परिणाम यह है कि कहीं पंजाब में और कहीं कश्मीर में, कहीं भारत के पूर्वी सीमावर्ती क्षेत्रों में और कहीं देश के अन्य राज्यों में देशद्रोह और अनिष्ठा के प्रदर्शन होतेहैं। १५अगस्त का दिन इसलिए महत्वपूर्ण है कि हम यह सोचें कि इस प्रकार की जो प्रवृत्ति है वह क्यों बढ़ती जा रही है। प्रत्येक भारतीय पर इस बात का उत्तरदायित्व है कि वह सोचे कि इसे कैसे रोका जाना है।

—नरेन्द्र

अनमोल वचन

दुश्मन की गोलियों का हम सामना करेंगे।
आजाद ही रहे हैं—आजाद ही रहेंगे॥ —चन्द्रशेखर आजाद

वर्तमान में आत्म-रक्षा के लिए—राष्ट्र के उद्धार के लिए जो शक्ति हमें चाहिये—वह जंगलों या एकान्त गुफाओं में तपस्या से नहीं मिलेगी। वह प्राप्त होगी निष्काम कर्मयोग के द्वारा संग्रामरत रहने पर। अत्याचार को मिटाने का जो व्यक्ति प्रयत्न नहीं करता—वह अपने मनुष्यत्व का अपमान करता है। —नेताजी सुभाषचन्द्र बोष

अंग्रेजी शिक्षा पाया हुआ कोई भी हिन्दू अपने धर्म में श्रद्धा नहीं रख सकेगा। मेरा यह दृढ़ विश्वास है कि अगर हम लोगों की शिक्षा योजना पूर्णतया क्रियान्वित हो गई—तो आज सैंतीस वर्षों बाद बंगाल के उच्च वर्ग में भी कोई मूर्तिपूजक नहीं रह जायेगा। —लार्ड मैकाले

ओ३म्ः—न चितसभ्रेषते जनो न रेषन्मनो यो आस्यघोरमाविवासात।
यज्ञैर्य इन्द्रे दधते दुर्वासिक्षयत्स राय ऋतपाः ऋतेजा॥ —ऋग्वेद ७।२०।६

जो सत्य में उत्पन्न सत्य का पालक यज्ञादि कर्म सम्पृक्त श्रद्धाचेनों को प्रभु समर्पित करता है—यद्यपि वह यदा-कदा प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से हानि भी उठाता है—परन्तु अन्ततः वह अहिंस मनः-यज्ञ मन्तव्यों द्वारा उद्भुत क्लेशों को सहकर भी धन-धान्य सम्पदाओं का राष्ट्र में सदैव सृजन करता है।

गीता का सन्देश सारे विश्व के लिए है। किसी भी देश जाति या समाज में कोई भी ऐसा व्यक्ति नहीं है जिसके लिए गीता में कोई लाभप्रद सन्देश न हो। सकल वेद-शास्त्र पारंगत पण्डित से लेकर निपट, निरक्षर, मूर्ख तक चक्रवर्ती सम्राट से लेकर घास-फूस की झोंपड़ी में रहकर दिन काटने वाले अकिंचन तक तथा इस मायामय संसार से पूर्णतः विरक्त रहने वाले ज्ञानी पुरुषों से लेकर इसी में आमूल-चूल अनुरक्त कामुकों तक बालक वृद्ध, स्त्री-पुरुष सभी के लिए गीता में अमूल्य सन्देश भरे पड़े हैं। —गोस्वामी गणेशदत्त जी

स्त्री क्या है? साक्षात त्यागमूर्ति है। जब कोई स्त्री किसी काम में जी-जान से लग जाती है तो वह पहाड़ को भी हिला देती है। —महात्मा गांधी

अस्पृश्यता का कोई शास्त्रीय आधार नहीं है। परमेश्वर के घर का दरवाजा किसी के लिए बन्द नहीं है और यदि वह बन्द हो जाये तो वह परमेश्वर नहीं। —लोकमान्य तिलक

राजनीति "स्वार्थ" का साधन नहीं—सेवा का माध्यम है। वह स्वयं में साध्य नहीं—साध्य है लोक-कल्याण, जो राजनीति हमें मंजिल तक नहीं पहुँचा सकती—वह त्याज्य है। —स्व० पं० दीनदयाल उपाध्याय

आर्यसमाजों की गतिविधियां

पं० बिहारीलाल शास्त्री अस्वस्थ

आर्य जगत के वयोवृद्ध विद्वान श्री पं० बिहारी लाल शास्त्री का पैर फिसल जाने के कारण कूल्हे की हड्डी टूट गई है। आवश्यक उपचार के बाद उन्हें अस्पताल से छुट्टी दे दी गई है। अब वे घर पर ही स्वास्थ्य लाभ कर रहे हैं।

शास्त्री जी इस समय ९७ वर्ष के हैं। इस अवस्था में भी उनका उत्साह और लगन पूर्ववत् है।

हम सब उनके स्वास्थ्य लाभ की कामना करते हैं।

—सच्चिदानन्द शास्त्री
उपमन्त्री सभा

आर्यवीर दल के समाचार

हरियाणा आर्यवीर दल के पदाधिकारियों का एक विशेष शिविर देहरादून में गतमास श्री पूज्य महात्मा दयानन्द जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ।

—आर्य वीरदल बम्बई का दीक्षान्त समारोह शिविर २१ ७ ८५ को गुरुकुल घाटकोपर में श्री प्रो० एम वेंकटराव की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर वीरों का शानदार प्रदर्शन बड़ा प्रभावशाली रहा। दल के संचालक श्री गुलजारी लाल ने सबका धन्यवाद दिया।

शुद्धि समाचार

आर्य समाज हाथरस (अलीगढ़) में ग्राम सुजान, पो. अल्हेपुर में ३२ मुस्लिम स्त्री पुरुष एवं बच्चों को पुन: वैदिक धर्म मे ले आए इनमें मुसलमानों के मुख्य व्यनिम मौलाना फैयाजअली खां और उसका पूरा परिवार अग्रणी था। सभी के नाम परिवर्तित किये गये। श्री रमेशचन्द्र आर्य मन्त्री आर्य समाज ने जनता के सहयोग के लिए धन्यवाद किया।

"कवियों से"

परोपकारिणी यज्ञ समिति दिल्ली के सरक्ष आर्य समाज के प्राण प्रसिद्ध समाज सेवी विद्वान् नेता श्री पं० देवव्रत "धर्मेन्दु" जी के साठ वर्षीय सामाजिक जीवन की एक झलक से जन-सामान्य को अनुप्राणित करने के लिए "कवि की कविता" नामक संग्रह शीघ्र ही प्रकाशित किया जा रहा है। आर्य जगत् की शोभा एव राष्ट्र के सजग प्रहरी कवियो से नम्र सिवेदन है कि अपनी मौलिक रचना पूज्य आर्य नेता के जीवन से सम्बन्धित यथाशीघ्र भेजें।

—कमल किशोर आर्य
महामन्त्री
परोपकारिणी यज्ञ समिति
१०-ए।१५ शक्ति नगर, दिल्ली ७

एक परिवार विधर्मी होने से बचा

तिजारा दि० २६ ७ ८५ सिरोली खुर्द का बास घूसला का तहसील तिजारा (राज०) का निवासी एक बाल्मीकि परिवार रामसिंह, हरप्यारी दम्पत्ति एवं उनके दोनो पुत्र प्रमूलाल शीशराम प्रलोभन में आकर विधर्मियों के धर्मपरिवर्तन के षड्यन्त्र मे आ गए। हरप्यारी धर्मपरिवर्तन के लिए कदम धर चुकी थी एवं उनके दोनो बालकों को विधर्मियों के अज्ञात मदरसे में भेजा जा चुका था रामसिंह के छोटे भाई रामस्वरूप ने २३-७ ८ को आर्य समाज तिजारा से इस विषय में सहायता की प्रार्थना की तब आर्य समाज ने स्थानीय पुलिस का एवं विश्व हिन्दू परिषद का सहयोग लेकर हरप्यारी रामसिंह को श्री छज्जूराम बाल्मीकी तिजारा के यहां सुरक्षित टिका दिया एवं पर्याप्त प्रयास पश्चात दि० २८-७-८५ को दोनों बालकों की बरामदगी में सफलता मिल गई।

दि० २९-७ ८५ को श्री आचार्य सत्यप्रिय जी तिजारा के अह्वान में शुद्धियज्ञ एव धर्म पर दृढ़ रहने का मार्मिक सत्संग हुआ। शुद्ध परिवार को आर्य समाज की ओर से वस्त्र प्रदान किये गये। उपस्थित बाल्मीकी आदि सभी सज्जनो ने आर्य समाज का आभार व्यक्त किया।

—विशनदास आर्य, मन्त्री, अलवर

वैदिक धर्म में प्रवेश

श्री सी० डी० शुक्ला एडवोकेट मन्त्री आर्य समाज राईट टाऊन जबलपुर सूचित करते हैं कि आर्य समाज द्वारा ८ युवक और युवतियों को जो कि पूर्व मुसलमान तथा ईसाई थे वैदिक धर्म में प्रवेश कराकर उनका विधिवत विवाह सस्कार भी कराया गया।

—मन्त्री

आवश्यकता

श्रीमद्दयानन्द अनाथालय आगरा के लिए, प्रबन्धक पद हेतु एक सेवा भावी एव शिक्षित व्यक्ति की आवश्यकता है। आयु ४० से ५० तक हो, अनुभवी व्यक्ति को प्राथमिकता दी जायेगी।

—मन्त्री

पंजि० नं० डी० (सी०) १७८ सार्वदेशिक साप्ताहिक (१८-८-१९८५) बिना टिकट भेजने का लाइसेंस नं० U ९३
R. N. 626/57 Licensed to post withoutprepayment, License No. 93 Post in D.P.S.O. on 16-8-85

प्रधान मन्त्री को पत्र
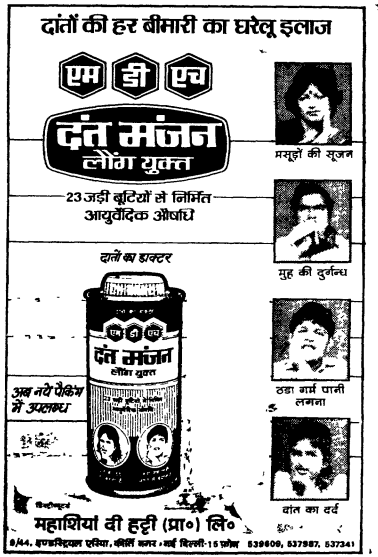
आदरणीय राजीव जी गांधी,
प्रधान मन्त्री, भारत सरकार
नई दिल्ली।
मान्यवर,

अब जबकि पाकिस्तान परमाणु बम छोड़ने में सक्षम हो गया है तो भारत को भी अपनी परमाणु नीति में अविलम्ब परिवर्तन कर परमाणु बम का निर्माण शीघ्र से शीघ्र करना चाहिये। श्रेष्ठ हथियारों के अभाव में महाराणा सांगा की भारतीय सेवा बाबर की सेना से इसलिये पराजित हो गई थी, क्योंकि आक्रान्ता बाबर पद उस समय तोपखाना था जबकि राणा सांगा की राजपूत सेनायें अपने परम्परागत हथियारों—तलवार और भाले से ही लड़ रही थी।

पाकिस्तान भारत का स्थायी शत्रु है तथा उसकी सन्धि-वार्ता उसी प्रकार अविश्वसनीय है जैसे कि मुहम्मद गोरी की सन्धि-वार्त्ता पृथ्वीराज चौहान से धोखे पर आधारित सिद्ध हुईं।

परमाणु बम के निर्माण के सन्दर्भ में हम आपसे किसी दिन वार्ता करना चाहते हैं क्योंकि राष्ट्रीय एकता और अखण्डता के प्रश्न पर हमने श्री लाला रामगोपाल शालवाले के निर्देश पर आपके दल का समर्थन किया था। हमें उचित दिन और समय से सूचित करें ताकि नई दिल्ली आकर आपसे भेंट कर वार्ता कर सकें। शेष शुभ !

—डा० मंगाराम व रामप्रसाद वार्ष्णेय
मन्त्री, प्रीमियर नगर कालोनी, अलीगढ

टंकारा ट्रस्ट के आचार्य की नियुक्ति

आर्य समाज के विद्वान डा० धर्मवीर जी विद्यालंकार ट्रस्ट के आचार्य नियुक्त हुए हैं और उन्होंने १८-७-८५ से इस पद पर सुचारु रूप से कार्य आरम्भ कर दिया है।

—मन्त्री

आर्य समाजों के वेदसप्ताह तथा पा...

—आर्य समाज शक्तिनगर अमृतसर-श्री प० सत्यपाल जी की अध्यक्षता मे ११ से १८-८-८५ तक यजुर्वेद परायण यज्ञ प्रातः ७ ३० से ८-३० तक।

—आर्य समाज कोटद्वार-द्वारा वेद प्रचार तथा यज्ञ ३० ८-८५ से १०-८-८५ तक इसमें श्री उत्तमचन्द शरर ब्रह्मचारी आर्य नरेश श्री हरीसिंह पधार रहे हैं।

—आर्य समाज बहराइच (उ. प्र.) का स्वर्ण जयन्ती समारोह २४ अक्तूबर से २८ अक्तूबर ८५ तक।

—आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य की साधारण सभा की बैठक रविवार १८-८-८५ को साय ३ ३० बजे आर्य समाज मन्दिर हनुमान रोड नई दिल्ली में। इसमें आगामी वर्ष के लिए अधिकारियों एवं अन्तरंग सभा का निर्वाचन होगा।

आर्य समाज सान्ताक्रुज द्वारा सेवाकार्य

पिछले दिनों इस समाज द्वारा निशुल्क नेत्र चिकित्सा तथा आप्रेशन कैम्प का आयोजन किया गया जो अति सफल रहा। शिविर का उद्घाटन महाराष्ट्र सरकार के स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मन्त्री डा० अनिल बरहाड़े ने बड़ी श्रद्धा से यज्ञ करने के उपरान्त किया।

—कै० देवरत्न आर्य

सार्वदेशिक प्रेस, दरियागंज नई दिल्ली में मुद्रित तथा ओम्प्रकाश त्यागी मुद्रक और प्रकाशक के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन, नई दिल्ली-२ से प्रकाशित।

ओ३म्
सार्वदेशिक
साप्ताहिक

दूरभाष १६७२१४१०८६] वर्ष २० अङ्क ३८]
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र
भाद्रपद कृ० ८ सं० २०४२ रविवार ८ सितम्बर १९८५
दयानन्दाब्द १६१ दूरभाष : २७४७७१ वार्षिक मूल्य २०) एक प्रति ५० पैसे

तेरा कर्म करने का अधिकार है तू कर्त्तव्य कर्म कर

कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतꣳ समाः ।
एवं त्वयि नान्यथेतोऽस्ति न कर्म लिप्यते नरे ॥
यजु० अ० ४० ॥

भावार्थ—मनुष्य आलस्य को छोड़कर सब देखने हारे न्यायाधीश परमात्मा और करने योग्य उसकी आज्ञा को मानकर शुभ कर्मों को करते हुए और अशुभ कर्मों को छोड़ते हुए ब्रह्मचर्य के सेवने से विद्या और अच्छी शिक्षा को पाकर उपस्थ इन्द्रिय के रोकने से पराक्रम को बढ़ाकर अल्प मृत्यु को हटावें, युक्त आहार-विहार से सौ वर्ष की आयु को प्राप्त होवें। जैसे-जैसे मनुष्य सुकर्मों में चेष्टा करते हैं। वैसे-वैसे ही पाप कर्म से बुद्धि की निवृत्ति होती है और विद्या, अवस्था और सुशीलता बढ़ती है।

एक वेद मन्त्र से हजारों गीता पैदा हो सकती है परन्तु एक गीता से एक वेदमन्त्र नही पैदा किया जा सकता है। यह विचार गीता जयन्ती पर उ० प्र० के मुख्यमन्त्री स्व० डा० सम्पूर्णानन्द जी ने व्यक्त किये थे। यह विचार व्यक्त करने पर उन्हें साम्प्रदायिकता की उपाधि विधर्मियों ने दी थी।

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन ।
मा कर्म फल हेतुर्भू मा ते सङ्गोऽस्त्व कर्मणि ॥
गीता अ० २ ॥

अर्जुन का व्यामोह भंग कर
गीता का उपदेश दे रहे श्रीकृष्ण

सार्वदेशिक सभा का शिष्टमंडल श्री ला० रामगोपाल शालवाले के नेतृत्व में प्रधानमंत्री से मिला

दिल्ली २ सितम्बर।

आर्यसमाज का एक शिष्टमण्डल आज प्रातः सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले के नेतृत्व में प्रधानमन्त्री श्री राजीव गांधी से मिला।

देश की सामाजिक व राजनीतिक परिस्थितियों पर प्रधानमन्त्री से चर्चा की गई। इस अवसर पर एक ज्ञापन पत्र देकर उनसे यह भी अनुरोध किया गया कि सैनिकों के सेवा कार्य में रहते समय कुछ तत्व उनकी सम्पत्ति आदि पर कब्जा कर लेते हैं, इसलिए सैनिकों को इस मामले में वैधानिक संरक्षण दिया जावे और उनसे सम्बन्धित मुकदमों का निपटारा शीघ्र किया जाय।

पंजाब में हिन्दी भाषा के विकास के लिए बात करते समय पंजाबी भाषा की लिपि देवनागरी में करने का भी अनुरोध किया गया है।

श्री शालवाले ने प्रधानमन्त्री जी से आर्य समाज दीवानहाल की स्थापना शताब्दी समारोह का उद्घाटन करने का भी अनुरोध किया। प्रधानमन्त्री जी ने सिद्धान्ततः इस निमन्त्रण को स्वीकार करते हुए इस अवसर पर एक विशेष डाक टिकट जारी करने की सम्भावना पर भी विचार का आश्वासन दिया।

सच्चिदानन्द शास्त्री
सभा-उपमन्त्री

वेदों पर शोध हेतु कक्ष का शिलान्यास

करनाल, २ सितम्बर। जिला करनाल के डिकाडलू गांव में वेदों पर शोध हेतु दो लाख रु० की लागत से एक अध्ययन कक्ष बनाया जाएगा। इस अध्ययन कक्ष का शिलान्यास हरियाणा के आबकारी एवं कार्यालयमन्त्री चौधरी कटारसिंह ने गत दिवस किया।

दो लाख रु० की लागत से बनने वाले इस अध्ययन-कक्ष के

(शेष पृष्ठ ११ पर)

सम्पादक—ओमप्रकाश पुरुषार्थी
प्रबन्ध-सम्पादक—सच्चिदानन्द शास्त्री

प्रत्येक आर्यसमाज मन्दिर एवं आर्य संस्थाओं पर ओ३म् ध्वज लगाये जायें

समस्त आर्य समाजों को निर्देश

सार्वदेशिक सभा में कुछ शिकायतें प्राप्त हुईं, जिनमें बताया गया है कि कई आर्य समाज मन्दिरों में ओ३म् ध्वज लगे हुए नहीं होते हैं। अतः आर्य समाजों को आदेश दिया जाता है कि प्रत्येक समाज मन्दिर में ओ३म् ध्वज लगा होना अनिवार्य समझा जावे।

रामगोपाल शालवाले
प्रधान

स्थानान्तरण :

स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती (वेद वक्ता) दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा से कुछ समय के लिए आगरा जा रहे हैं। पत्र-व्यवहार निम्न पते पर करें —

आर्यसमाज—नया आदर्श नगर
बलकेश्वर, आगरा—४ (उ० प्र०)

पाकिस्तान में अहमदियों पर घोर अत्याचार

इतिहादी सभा को गम्भीर चिन्ता !

जनेवा—१-९-८५, इतिहादी सभा के एक पैनल ने पाकिस्तान में एक माह से चालू एक आदेश के अनुसार मानवीय अधिकारों के विरुद्ध चलने पर गहरी चिन्ता व्यक्त की है ! और कहा है कि इस के परिणाम में एक अल्पसंख्यक मुस्लिम फिर्का सामूहिक तौर पर पाकिस्तान छोड सकता है—इससे पूर्व पैनल ने इतिहादी सभा के एक कमीशन की रिपोर्ट स्वीकृत की जिसमें नसलकशी की एक ऐतिहासिक मिसाल के तौर पर प्रथम महायुद्ध मे तुर्की की सलतन्त में कम से कम दस लाख आरमीनों के कत्ले आम का जिक्र किया गया था—पैनल ने कल तक मुकाबला में १२ वोटो से एक प्रस्ताव पारित किया जिसमे यह आरोप लगाया है कि पाकिस्तान में २८-४ १९८४ से नाफद आरडीनेंस से मनमाने तौर पर गिरफ्तारियां या नजरबन्दी से आजादी के हक-ख्यालात का इजहार जमीर और मजहब की आजादी के हक और मजहबी अकलीयतों को अपने मजहब पर चलने के हक के खिलाफ वर्जी होती है-दो मुस्लिम देशो "मराको और जारडन के प्रतिनिधि वोटिंग के समय वाक आऊट कर गए और अमरीका सहित ६ देश अनुपस्थित थे—प्रस्ताव में वार्निंग दी गयी है कि पाकिस्तान की सूरतए हाल ऐसे हैं जिसके नतीजे में अहमदी फिर्का के लोग सामूहिक रूप से पाकिस्तान से बाहर जा सकते हैं। लन्दन में रहने वाले अहमदिया मुस्लिम फिर्का के एक प्रतिनिधि श्री अयास खान ने कहा कि पाकिस्तान में अगर अहमदी फिर्का का कोई सदस्य अहमदी होने का खुले तौर पर एलान करता है तो उसे आरडीनेंस के आधार पर तीन साल तक कैद और इसके इलावा जुर्माना की सजा दी जा सकती है इन्होने कहा कि अगर पाकिस्तान में तीस-चालीस लाख अहमदी हैं और पाकिस्तान सरकार अपनी हर-दिल अजीजी बढाने के लिए इन्हे कुर्बानी का बकरा बना रही है। पाकिस्तान मे आरडीनेंस के खिलाफ वर्जी करने वालों को सजाएं दी गयी हैं—इनकी जायदाद जब्त कर ली गई है और इनको सरकारी नौकरियों और तालीम के इदारों में इम्तयाज (भेदभाव) बरता जा रहा है।

(प्रताप सोमवार ९-९-८५ के सौजन्य से)

श्री सच्चिदानन्द शास्त्री अस्वस्थ

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के उपमन्त्री तथा सार्वदेशिक पत्र के प्रबन्ध सम्पादक श्री सच्चिदानन्द शास्त्री विगत चार मास से अस्वस्थ चल रहे हैं, कई चिकित्सकों की चिकित्सा के बाद ठीक न होने पर ५ सितम्बर को चिकित्सा कराने हरिद्वार पहुंच रहे हैं।

आशा है श्री शास्त्री जी शीघ्र स्वास्थ्य लाभ प्राप्त कर अपने सम्पादन कार्य को पूरा करेंगे। —सभा-मन्त्री

वाहरे पाठक जी

आर्य जगत के माननीय प० रघुनाथप्रसाद जी पाठक जब से इस संसार को छोड़कर गए हैं तब से देश के कोने-कोने से अनेक विद्वानों, बुद्धिजीवी बन्धुओं और आर्यसमाजों से इस सभा को प्रतिदिन अनेकों शोक प्रस्ताव प्राप्त हो रहे हैं इस सप्ताह में प्राप्त होने वाले पत्रों में आर्यसमाज रेलवे रोड अम्बाला, सम्भल, गोरखपुर, माटुंगा, कलकत्ता, राजकोट, देवली, वाराणसी, आर्य गुरुकुल ऐरवा-कटरा इटावा, बदायूं, डाकपत्थर तथा श्री रामनाथ सहगल टंकारा ट्रस्ट, श्री होरीसिंह बिजनौर, रजौली, श्री पन्नालाल पीयूष, श्री धर्मसिंह कोठारी श्रीमती परोपकारिणी सभा, श्रीमती दयावती गाजियाबाद, दानन्द आर्य राजोरी गार्डन नई दिल्ली, श्री काशीनाथ शास्त्री महाराष्ट्र, रामकुमार गोहाना, विश्व भारती अनुसंधान परिषद वाराणसी इनके अतिरिक्त सार्वदेशिक आर्य वीर दल के संचालक श्री बालदिवाकर जी हंस ने श्री पाठक जी को आर्य वीर दल द्वारा मनाई गयी शोकसभा मे भावभीनि श्रद्धांजलि देते हुए कहा कि सभा भवन खड़े होकर जब मैं श्री पाठक जी को हाथ मे एक झोला लिए सभा कार्यालय में आते देखता तो उनके प्रति श्रद्धा नतमस्तक हो जाता। उन्होने आर्य वीरो को उनके आदर्शों पर चलने के लिए श्री पाठक जी की अनेक जीवन घटनाएं सुनाई जिससे अनुभव होता था कि पाठक जी सदैव आर्य समाज की सेवा के लिए बड़ी से बड़ी कठिनाइयों का सामना करते हुए प्रभु विश्वास पर पग-पग आगे बढ़ते रहे और अन्त तक सार्वदेशिक पत्र का कार्य किया।

सूचना

सभी आर्य बन्धुओं को सूचित किया जाता है कि अपने उत्सवों को सफल बनाने हेतु कृपया इस पते पर सूचित करने का कष्ट करें।

मेरा पता ·

रामचन्द्र शर्मा आर्योपदेशक गीतकार
ग्राम महमूदासलेमपुर, पो०ओ० सैदाबाद
जनपद० बिजनौर (उत्तर प्रदेश) पिन० २४६७०१

गीता और आर्यसमाज

—स्व० पं० गंगाप्रसाद उपाध्याय

प्राचीन साहित्य में श्रीमद्भगवद्गीता का मान विश्व में सबसे अधिक है और लगभग एक शताब्दी से अधिक इसका मान देश तथा विदेश में सबसे अधिक हुआ है। इसमें सबसे बड़ा श्रेय मिसेज-बीसेन्ट को है इन्होंने गीता का अंग्रेजी अनुवाद गुटका के रूप में निकाला था इसकी भाषा सरल व सरस थी अंग्रेजी जगत् में इसका बहुत प्रचार हुआ। थियोसोफिकल सोसायटी ने इस काम को चार चांद लगा दिये।

लोकमान्य तिलक ने गीतारहस्य लिखकर राजनैतिक जगत का ध्यान इस ओर खींचा और महात्मा गांधी ने गीता को नया रूप दे दिया। इस प्रकार शताब्दी में गीता साधुओं और पुरानी चाल के चंगुल से निकल कर एक विस्तृत आकाश में देदीप्यमान हो गई।

ऐसी प्रसिद्ध पुस्तक के विषय में जो संस्कृत साहित्य रूपी समुद्र का एक अमूल्य मोती समझा जाता है। आर्यसमाज जैसी बौद्धिक संस्था के लिये यह प्रश्न हो जाता है कि इसका दृष्टिकोण क्या होना चाहिये।

साहित्य की दृष्टि से यह प्रश्न बड़ा सुस्पष्ट है, काव्य सुन्दर, भाषा मधुर, शैली हृदय ग्राहक पढते जाइये छोड़ने को जी नहीं चाहता, जो विद्या-प्रिय सज्जन किसी विशेष एक मत से सम्बन्ध नहीं रखते और संसार के साहित्योद्यान में स्वच्छन्द विचरना चाहते हैं वह तो गीता पर मुग्ध हुए बिना रह नहीं सकते।

परन्तु आर्य समाज की एक विशेष दृष्टि है। उसने संसार के साहित्य को तीन भागों में विभाजित किया है। एक स्वतः प्रमाण जिससे आप प्रत्यक्ष रूप में जीवन के आध्यात्मिक तत्वों का ग्रहण कर सकते हैं, इस कोटि में वेद माने जाते हैं। और वह भी मन्त्र संहिता में ही अर्थात् ऋक्, यजु० साम०, अथर्व०

दूसरी कोटि के परतः प्रमाण की है—इसमें, उपनिषदें, दर्शन, मनुस्मृति तथा ऋषि दयानन्द के अपने ग्रन्थ हैं जो वेदानुकूल होने से मान्य है।

तीसरी कोटि के समस्त अन्य ग्रन्थ हैं उनमें बहुत से बहुत उत्कृष्ट कुछ साधारण और अनेक त्याज्य हैं। प्रश्न यह है कि भगवान कृष्ण का उपदेश गीता इनमें से किस कोटि में आती है। मेरे विचार से गीता पहली दो कोटियों में से किसी में नही आती, न स्वतः प्रमाण और न परतः प्रमाण। इनसे पृथक् रखकर गीता एक उत्कृष्ट ग्रन्थ है। गीता महाभारत का एक भाग है महाभारत में कई गीतायें हैं भगवद्गीता जिसकी चर्चा की जा रही है।

एक विशाल अति विस्तृत जाति के पिछले ५ सहस्र के मीठे-कड़वे हर प्रकार के अनुभवों की एक राम कहानी है जिनमें स्वच्छ निर्मल प्रचण्ड मार्तण्ड की सर्व व्यापक छाया के अतिरिक्त अमावस्या का घोर अन्धकार भी ओत-प्रोत है।

महाभारत को दश पौर्णमास दृष्टि की प्रतीक समझते हैं जिसकी मैमान्सिक तुलना इस, इसका विषय नहीं है। ऐसी पुस्तक एक अंग अर्थात् गीता भी उसी लक्षण से लक्षित है उन सब विद्या विलासियों के अनेक परिश्रमों को दृष्टि में रखते हुए भी जो गीता के अनेक प्रकार के भाष्यों में गीता की सहस्रमुखी शिक्षाओं को सहस्रप्रकार से वर्णित करने में होते रहे हैं। यह कहना पड़ेगा, कि —

डोर है उलझी हुई इसका सिरा मिलता नहीं॥

शायद इसीलिये महर्षि दयानन्द के ग्रन्थों मे गीता के विषय में एक दो श्लोकों से अधिक नहीं मिलता। जिस प्रकार वह चाणक्य नीति आदि से आवश्यक उद्धरण देते हैं उसी प्रकार गीता के। क्यों कि वह समझते होंगे कि उलझी हुई डोर का सिरा ढूंढने का प्रयत्न करना निरर्थक है। परन्तु बहुत दिनों से आर्य समाज में विचार-स्वातन्त्र्य की कुछ कमी हो रही है। हम वर्त्तमान भारतीय भावनाओं और वैदिक सिद्धान्तों में भेद नहीं कर सकते। पहले हम आर्य थे, अब-हिन्दू आर्य हैं, इसलिये यह प्रश्न खड़ा होता है कि गीता को कौन सा स्थान देवे। अर्थात् जब किसी संदिग्ध विषय का निर्णय करना हो तो गीता के कथनों को कहां तक प्रामाणिक माना जाय जो असदिग्ध बातें हैं वहां तो आप गीता को मान ही सकते हैं और इसी प्रकार सैकड़ों अन्य ग्रन्थों को सीधो सड़क पर हत्थों की आवश्यकता नही होती, जहां कई मार्ग एक दूसरे को काटते हैं वहां समझ में नही आता कि यह उपादेय है या त्याज्य। यदि ऐसी दशा हो, तो गीता आपकी सहायता नहीं दे सकती। जो फल आपके विनोद और प्रमोद का साधन है वहीं आपकी औषधि का काम नहीं दे सकते। गीता सैर करने का बाग है किसी आयुर्वेदज्ञ की वनस्पतिशाला नहीं।

समालोचनात्मक दृष्टि से विचार करें तो गीता का प्रारम्भ रणभेरी से होता है। अर्जुन के मन में शंका उत्पन्न हो जाती है उसके युद्ध का सच्चा चित्र खींचा है।

कुल क्षय कृतं दोषं से कुलधर्माश्च शाश्वता। १-३८ आदि—

युद्धों केयही परिणाम हुआ करते हैं और महाभारत में भी यही विगत पांच सहस्र वर्षों का भारतीय संस्कृति का क्रमशः ह्रास अर्जुन की भविष्य वाणी का ठीक-ठीक द्योतक है श्री कृष्ण ने इसका खण्डन नहीं किया, उत्तर था भी क्या? परन्तु युद्ध तो करना ही था। अतः श्री कृष्ण में भावुकता की अपील की?

अनार्य जुष्टमस्वर्ग्यं, क्लैब्यं मास्मगमः पार्थ -

यह शंका का समाधान न था – अर्जुन सिपाही था उसका काम

डरबन में आर्य महासम्मेलन

नई दिल्ली २६ अगस्त।

जाति भेद की नीति के गढ़ दक्षिण अफ्रीका में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के सानिद्धय में जो संसार के समस्त आर्य समाजों की सार्वभौम संस्था है, दिसम्बर १६८५ में एक विश्व आर्य महासम्मेलन होने जा रहा है। इस महासम्मेलन में देश-विदेश की अनेक संस्थाओं के प्रतिनिधियों के भाग लेने की आशा है। संसार में वैदिक संस्कृति और विश्व मातृवाद के प्रचार एवं प्रसार के लिए भावी कार्यक्रमों पर वहां विचार विमर्श होगा।

आर्य प्रतिनिधि सभा दक्षिण अफ्रीका, जो उस देश की आर्य समाजों की प्रतिनिधि संस्था है, ने इस आर्य महा सम्मेलन का आयोजन किया है। भारत के अतिरिक्त यूरोप, इंग्लैंड, अमेरिका आदि से भी विभिन्न हिन्दू संस्थाओं के प्रतिनिधि इस सम्मेलन में भाग लेने पहुंचेंगे। फीजी से आने वाले प्रतिनिधि मंडल का नेतृत्व लौटोका पूर्व महापौर बैरिस्टर सुरेन्द्रप्रसाद करेंगे। वैज्ञानिक विद्वान स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती डी० एस० सी० इस सम्मेलन की अध्यक्षता करेंगे। श्री ब्रह्मदत्त स्नातक, जो भारत सरकार के सूचना और प्रसारण विभाग के उच्चाधिकारी रह चुके हैं, अगले मास सार्वदेशिक सभा की ओर से डरबन जा रहे हैं। वे आर्य प्रतिनिधि सभा दक्षिण अफ्रीका के पदाधिकारियों को सम्मेलन की कार्य व्यवस्था तथा चर्चा के लिये प्रस्तावित विषयों की रूप रेखा तैयार करने में सहायता करेंगे।

इस सम्मेलन में भाग लेने के लिए जाने वाले व्यक्तियों को भारत सरकार के विदेश मन्त्रालय ने सीमित अवधि के लिए पासपोर्ट पर अनुमति देना स्वीकार कर लिया है।

—सुरेशचन्द्र पाठक
कार्यालय सचिव

युद्ध का अनौचित्य औचित्य के सोचने का नही था। अर्जुन को हम कही नीतिज्ञो के समान इस पर विचार करते नहीं पाते, युद्ध के उत्तरदाता कोई और ही थे।

परन्तु आज युद्ध के पश्चात् यह कठिन कहना है कि युद्ध न होता तो पाण्डवो के अतिरिक्त जगत् की समष्टि रूप से या वैदिक सस्कृति की क्या हानि होती। प्राय युद्ध प्रिय लोगों को हम श्री कृष्ण के "अनार्य जुष्टम्" आदि शब्दो को दोहराते हुए सुनते हैं परन्तु शब्द है युद्ध क्षेत्र के ही योग्य ? नागरिक जीवन में यह मनोवृत्ति जन-सामान्य का अकल्याण ही करती है।

युद्ध की बाते सुनते हैं इनसे वीरता तो नही आती, हा लडाकूपन आ जाता है। अत जो उपदेश रणक्षेत्र के ही योग्य है उनके प्रयोग मे सावधानी की आवश्यकता है।

२—अब श्री कृष्ण की अमरता के विषय मे वह अनमोल वचन सुन, जिनके लिये गीता प्रसिद्ध है ?

नैन छिन्दन्ति—वासासि जीर्णानि०, आदि यह भी रणस्थलों में ही उपयुक्त बैठता है वीर सिपाही को मौत से डरना नही चाहिये, क्योकि जीव मरता नही। तो सर्वसाधारण इस बात को जीवन का नियम बना लें, कि घातयति हन्तिकम्" कौन किसको मारता है तो ससार मे हत्या और हिंसा की सीमा न रहे। जीव के अमर होने पर भी ससार को यह सिखाने की आवश्यकता है कि जीव मरता तो नहीं, परन्तु पीडित तो होता ही है।

अमेरिका वालों से पूछो कि हिरोशिमा मे तुमने क्या किया और अगर वह कहें कि "कि घातयति हन्तिकम्" तो आज जगत् का क्या हाल होगा। सैकडो कसाई प्रतिदिन कहेगे कि कौन किसको मारता है जीव अमर है इन पक्तियो के साथ गीता के उस सदुपदेश की भी सगति मिलानी है।

शु निचैव श्वपाके च पण्डिता] समदर्शिन ॥

दो प्रवृत्तिया भिन्न-भि न हैं—रणक्षेत्र की प्रवृत्ति और सामान्य नागरिक जीवन की प्रवृत्ति दोनो प्रवृत्तियो को नही समझा ज ता तो जगत मे अहितकर प्रवृत्तियो की उत्पत्तियो की उत्पत्ति होगी।

गीता मे जीव-ब्रह्म के विवेक के लिये कम सामग्री है न जायते म्रियते वा कदाचित्' यह ब्रह्म के लिये हैं या जीव के, नित्य अजर अमर अव्ययम दोनो पर घट सकते हैं।

यही कारण है कि अद्वैतवादी शकर, विशिष्ट द्वैतवादी रामानुज, भेदाभेद वादी निम्बार्क तथा अनेक वादो के प्रभेद व अनुयायी दार्शनिको की पहेलियो का सम्मिश्रण कह सकते हैं। या यो कहे कि दपण है जिसमे हर दार्शनिक अपना ही चित्र देखता है यह गुण है या अवगुण सोचने की बात है।

न जायते म्रियते, कहकर गीता ईश्वर के अवतार का पोषक है, यदा-यदा हिधर्मस्य यह पूर्वा पर मिलाया जाय, तो अवतारवाद ही है। विराट रूप वाले श्लोक तो और भी सन्देह मे डाल देते हैं बाल की खाल खीचो जा सकती है। परन्तु गीता के सभी स्थलो को वेदानुकूल सिद्ध नहीं किया जा सकता है पर यह मानना पडेगा—गीता वेदो का मान करती है।

य शास्त्र विधिमुत्सृज्य वर्तते कर्म कारत ।
न स सिद्धिमवाप्नोति न शान्ति न परागतिम् ॥

अ० १६ श्लोक २३ २४ ॥

यहा शास्त्र का अर्थ वेद ही है और वेद के अनुकूल आचरण करने पर बल दिया गया है। आर्य समाजियो के लिये गम्भीर विषय है क्योकि दूसरो के सामने वैदिक धर्म का तात्विक स्वरूप रखने में गीता का कितना आश्रय लिया जाय।

सस्कृत सत्यार्थप्रकाश के नये सस्करण का सार्वदेशिक सभा द्वारा प्रकाशन

जनसख्या नियन्त्रण और कुरान

देश मे एक मन्त्र चलता है—बहुप्रजा निऋति माविवेश। इसका अर्थ यह है कि साधनहीन व्यक्ति के सन्तान अधिक होने पर वह और उसका परिवार दुःख में डूब जाता है। स्वय योगराज कृष्ण के एक ही पुत्र था, चाहे पौराणिक अन्धविश्वास उनके सोलह हजार रानियाँ बताते है। मर्यादा पुरुषोत्तम राम कौशल्या के एक मात्र पुत्र थे और उनके भी आगे चलकर जुडवा दो बच्चे लव और कुश हुए।

हमारे देश में धर्म मत के नाम पर अबाध रूप से सन्तान वृद्धि करना मुसलमानों का अधिकार और कर्तव्य माना जाता रहा है। वे जनसख्या नियन्त्रण को इस युग की आवश्यकता नहीं मानते, और देश के लिए दरिद्र विध्वंसक और धर्मोन्मादी सन्तान उत्पन्न करके राष्ट्र पर बोझ डाल रहे हैं, और इसी बहाने राजनैतिक बहुमत बनाने की चेष्टा में हमारे और अन्य देशो मे भी लगे रहते है। इससे प्रत्येक देश को दारुलहरब बनाने को उनकी चेष्टा रहती है। लेबनान इसका उदाहरण है।

यह देख की बात है कि पाकिस्तान अरब देश और तुर्की जैसे इस्लामी राष्ट्रों मे भारतीय मौलवियों के जनसख्या बढ़ाने के इस फतवे को नकार दिया गया है। अब ताजा समाचार यह है कि मिस्र के काहिरा स्थित अलअजहर विश्वविद्यालय के इस्लामी धर्मशास्त्र के महत्वपूर्ण विद्वानों ने सन्तति निरोध को इस्लाम मुस्लिम धर्मानुकूल बताया है। भारतीय मुसलमानों और मजहब के नाम पर इनका अन्धा समर्थन करने वाले राजनैतिक पार्टियों की आँखें इस फतवे से खुल जानी चाहिए।

—स० स० स्नातक

ऋतु अनुकूल हवन सामग्री

हमने आर्य यज्ञ प्रेमियों के आग्रह पर सस्कार विधि के अनुसार हवन सामग्री का निर्माण [illegible] की ताजी जडी बूटियों से प्रारम्भ कर दिया है जो कि उत्तम [illegible] नाशक, सुगन्धित एव पौष्टिक तत्वों से युक्त है। यह [illegible] हवन सामग्री अत्यन्त अल्प मूल्य पर प्राप्त है। थोक मूल्य ५ प्रति किलो।

जो यज्ञ प्रेमी हवन सामग्री का निर्माण करना चाहें वह सब ताजी कुदरती हिमालय की वनस्पतियाँ हमसे प्राप्त कर सकते हैं, वे चाहें तो भी सकते हैं यह सब सेवा [illegible] है।

विशिष्ट हवन सामग्री १०) प्रति किलो

योगा फार्मेसी, लक्सर रोड

डाकघर गुरुकुल कांगडी २४९४०४, हरिद्वार [उ० प्र०]

यदि आज श्री कृष्ण आ जावें तो ?

लेखक—यशपाल आर्यबन्धु, आर्य निवास चन्द्रनगर, मुरादाबाद

युग पुरुष श्रीकृष्ण ऐसे महामानव थे जिन पर भारत समुचित रूपेण गौरव का अनुभव कर सकता है। वे आदर्श मानव एवं मानवता के आदर्श थे। शेक्सपीयर ने एक स्थान पर लिखा है कि—"कुछ जन्मजात महान होते हैं, कुछ महत्ता प्राप्त करते हैं और कुछ पर महत्ता लाद दी जाती है।" किन्तु वैदिक मान्यता इससे थोड़ी सी हटती हुई है। केवल इन्हीं अर्थों मे कि कोई भी व्यक्ति जन्मजात महान नही होता। क्योंकि जन्म से तो प्रत्येक व्यक्ति शूद्र होता है, संस्कारों से ही वह द्विज बनता है। अत. महत्ता दो प्रकार की ही शेष रह जाति है। एक वह जो स्वयं अर्जित की जाती है और दूसरी वह जो किसी पर लाद दी जाती है। मनुष्य महान कैसे बनता है? इसका उत्तर सुकरात के शब्दों में इस प्रकार है कि—

"मनुष्य ठीक उसी मात्रा में महान बनता है कि जिस मात्रा में वह मानवमात्र के कल्याण के लिये श्रम करता है।" किन्तु महर्षि दयानन्द इससे भी एक कदम आगे जाकर कहते हैं कि मानव मात्र का ही क्यों? प्राणी मात्र का क्यों नहीं? इसी लिए संसार के उपकार करने की बात उन्होंने आर्यसमाज के छठे नियम में लिखी। तात्पर्य यह है कि जो व्यक्ति जितना संसार का उपकार करेगा, वह उतना ही महान होगा। पाश्चात्य लेखक ट्योनबी के अनुसार "विकट परिस्थिति आने पर प्रत्येक व्यक्ति उस परिस्थिति से निकलने के लिये जूझना चाहता है, परन्तु स्वार्थ अथवा भीरुता के कारण जूझ नहीं पाता। उस समय कोई महापुरुष होता है जो सबकी पीड़ा को अपने हृदय में खींच कर परिस्थिति की विषमता से लड़ने के लिये उठ खड़ा होता है। और जब कोई ऐसा महापुरुष आता है तब सबके सिर उसके पैरों पर झुक जाते है।" महामानव श्रीकृष्ण ऐसे ही थे। वे न तो जन्मजात महामानव थे एवं न ही उन पर यह लादी गई थी अपितु यह महत्ता उन्होंने स्वय अर्जित की थी। डा० भवानी लाल भारतीय के शब्दो में—"मनुष्य अपनी विविध प्रवृत्तियों कों उन्नति के सर्वोच्च सोपान पर पहुचा कर किस प्रकार एक साधारण व्यक्ति से महामानव एव युगपुरुष के उच्च पद पर प्रतिष्ठित हो सकता है, इसका श्रेष्ठ उदाहरण कृष्ण का जीवन है। कारागार की विवशतापूर्ण परिस्थितियों में जन्म लेकर भी कोई मनुष्य संसार का महत्तम नेता बन सकता है, यह कृष्ण का चरित्र देखने से स्वतः ही विदित हो जाता है। बंकिम के अनुसार श्रीकृष्ण ने अपनी ज्ञानार्जनी, कार्यकारिणी तथा लोकरजनी तीनों प्रकार की प्रवृत्तियों को विकास की चरम सीमा तक पहुंचा दिया था, तभी उनके लिए यह सम्भव हो सका कि वे अपने समय के महान् राजनीतिज्ञ और समाज व्यवस्थापक के गौरवान्वित पद पर आसीन हो सके।" (श्रीकृष्ण, पृष्ठ २३२)

श्रीकृष्ण ऐसे महामानव थे कि जो युगों के बाद जन्म लिया करते हैं। फिर भी यदि वह कल्पना कर ली जावे कि श्रीकृष्ण आज आ जाये तो वे क्या सोचेंगे? एवं क्या करेंगे? हमारी तुच्छ मति में तो यदि श्रीकृष्ण आज आ जावें तो सबसे पहले वह देखकर अत्यन्त आश्चर्य प्रकट करेंगे कि आज सर्वत्र जिस कृष्ण की जय जयकार हो रही है, क्या वस्तुतः वह मैं ही हूं? फिर वह यही सोचेंगे कि नहीं निश्चय ही वह कृष्ण कोई और होगा जिसकी यह लोग जयजयकार कर रहे हैं।

"क्योंकि मैं तो केवल एक मानव था, विशुद्ध मानव। पर इन्होंने तो मुझ पर ईश्वरत्व आरोपित कर मेरी सहज स्वाभाविक मानवता को [illegible] कर [illegible] तिरोहित कर दिया है।"

और जब राधा का नाम अपने नाम के साथ जुड़ा पावेंगे तो एक बार फिर सोचेंगे कि क्या सचमुच यह मैं ही हूं जिसके नाम के साथ पावेंगे तो एक बार फिर सोचेंगे कि क्या सचमुच यह मैं ही हू जिसके नाम के साथ एक परस्त्री का नाम हठात जोड़ा जा रहा है। अरे! मैंने तो रुक्मणि के साथ विवाह किया था। यह राधा कहां से आ गई? और फिर सोचेंगे कि यदि कहीं आज रुक्मणि आ जाये और यह देखें कि मेरे नाम के साथ राधा नाम की स्त्री का नाम जुड़ा हुआ है तो वह मेरे बारे में क्या सोचेगी? क्या यह वहीं कृष्ण हैं कि जिस स्वप्न में भी पर नारी का कभी चिन्तन तक नहीं किया था और जिसने गृहस्थ् में भी सयम की मर्यादा स्थापित की थी। और जिसने एक पुत्र-रत्न की प्राप्ति के लिए १२ वर्ष तक घोर ब्रह्मचर्य स्वयं भी और मुझे भी पालन का व्रत निभाया था। हाय! आज इसकी १६ हजार रानियां हैं?

अपने नाम के साथ चोर, जार, शिखामणि तथा अन्य अनेक गालियों को लगते हुए सुनकर श्रीकृष्ण कब तक चुप रहेंगे? शिशुपाल की भी सौ गाली सहन की थी फिर चक्र सुदर्शन उठाना ही पड़ा था। तो आज इन गाली देने वाले भक्तों को छोड़ देंगे? कदापि नहीं। कृष्ण दुष्टों को दण्ड देने में विश्वास रखते हैं। और जब उन्हे यह बताया जायेगा कि यह सब तो आपके भक्तजन हैं तो फिर वे सोचने के लिए बाध्य होंगे कि यह मेरे भक्त हैं या शत्रु? मैंने तो सम्पूर्ण जीवन कोई पाप कर्म ही नहीं था, फिर इन भक्तों ने चोर, जार शिखामणि मुझे कैसे कह दिया? यह रास लीला मेरे नाम से कैसे सम्बद्ध हो गई? यह कृष्ण दासी के साथ व्यभिचार मेरे से कैसे जुड़ गया?

श्रीकृष्ण यदि आज आ जावें तो अवश्यमेव सोचेंगे और कहेंगे कि इन्होंने नाहक मुझे भगवान् बना दिया। काश! यदि यह मुझे मानव ही रहने देते तो मेरी सहज स्वाभाविक मानवता तो लुप्त न होती। मैं व्यर्थ को कलंकित तो न होता? शिशुपाल ने मुझे सौ गाली दी थी, दुर्योधन ने भी मरते समय मुझे बहुत गाली दी थी किन्तु ऐसी गाली जैसी यह भक्तजन दे रहे है, किसी ने भी न दी थी। परदादा, भाभी, छि. छिः छि। कृष्ण यह तू क्या सुन रहा है? क्या यही है तू जिसे श्रेष्ठतम व्यक्ति होने के नाते सर्वप्रथम अर्घ्य दिया गया था? अरे! तेरे नाम के साथ यह 'योगीराज' शब्द क्यों लगा है? तब क्या कृष्ण अपने इन मूर्ख भक्तों की करनी पर आंसू नहीं बहायेंगे?

यदि आज श्रीकृष्ण आ जावें तो यह देख कर अत्यन्त दुःखी होंगे कि उस समय तो द्रोपदी की लाज लुटी थी पर अब तो हर द्रोपदी की लाज लुटती दीख रही है। तब तो एक कंस था पर आज तो सभी कंस दिख रहे हैं। तब एक दुर्योधन था पर आज सभी दुर्योधन ही दुर्योधन दिखाई दे रहे हैं। आज न कोई अर्जुन दिखाई दे रहा है न भी और न ही धर्मराज युधिष्ठिर। आज न भीष्म हैं, न द्रोण। और सत्य तो यह है कि आज कोई मानव भी तो कहीं दिखाई नहीं दे रहा। क्या हो गया है मेरे भारत को?

और यदि गोपाल कृष्ण भारत में गोवध होता सुन लेवें तो फिर उनके मन्यु का क्या ठिकाना? एक भी गोहत्यारा न बचे भारत में यदि गोपाल कृष्ण आज आ जावें तो। और यदि गोपाल कृष्ण को यह पता चल जावे कि आज भारत मे दूध, घी आदि बाजार मे बिक रहा है तो उन्हे कितना दुख होगा? और फिर पानी मिला दूध जब पीकर देखेंगे तो सोचेंगे कि गऊ को कुछ हो गया है या ग्वालों की नीयत को?

और यदि वे कहीं राधाकृष्ण के मन्दिर में पहुंच जावें तो फिर

भगवान कृष्ण का दिव्य जीवन

रामवीर शर्मा आचार्य, एम. ए. साहित्य रत्न
घनश्यामपुर, अलीगढ़

राष्ट्र एवं धर्म के रक्षक, गो ब्राह्मण प्रतिपालक दीन अनाथों के सहायक अन्याय एवं अत्याचार के विरोधी योगिराज कृष्ण को आज संसार में कौन नहीं जानता। जिनका यश आज सर्वत्र भूमण्डल में छाया हुआ है। ५ हजार वर्ष व्यतीत हो गये। फिर भी आज उनका जन्म दिवस भारत में ही नहीं अपितु जहां पर आर्य (हिन्दू) धर्मानुयायी रहते हैं वहीं मनाया जा रहा है।

भगवान श्रीकृष्ण अत्याचारियों व अन्यायियों को दण्ड देने वाले थे। अत्याचारी जरासन्ध को जिसने सैकड़ों राजाओं को बन्दी बना लिया था और उन्हें देवी को भेंट करना चाहता था। उन्होंने अपनी बुद्धि कौशल से उस अत्याचारी जरासन्ध का भीमसेन से द्वन्द्वयुद्ध कराकर वध करा दिया था। इसी प्रकार यज्ञ में विघ्न पैदा करने वाले चेदि नरेश शिशुपाल को भी अपने सुदर्शन चक्र से मौत के घाट उतार दिया था।

वे सदा सत्य का पक्ष लेते थे तथा शान्ति के पुजारी थे। उन्होंने कौरवों और पांडवों में समझौता कराने का महान प्रयत्न किया पर दुराग्रही दुर्योधन ने उनकी तनिक भी नहीं मानी। इसी कारण उन्होंने पाण्डवों का साथ दिया और महाभारत के उस विश्व विदित युद्ध में १८ अक्षौहिणी सेना का संहार हुआ जो देश के विनाश का कारण हुआ और हजारों वर्ष विदेशियों की दासता शृंखला में आबद्ध रहे।

वे निर्धनों व असहायों के सहायक थे। उन्होंने अपने निर्धन सहपाठी ब्राह्मण सुदामा की सहायता की उसे निर्धनता से मुक्त किया। कृष्ण का

भ्रातृ प्रेम अपूर्व एवं दर्शनीय है। जब सुदामा जी द्वारिकापुरी पहुंचे तब उन्होंने द्वारपाल के द्वारा सूचना भेजी कि एक सुदामा नाम का व्यक्ति फटे हाल जिसके पैरों में जूते तथा सिर पर टोपी भी नहीं है। आपसे मिलने आया है। उस समय सुदामा का नाम सुनते वे कैसे प्रेम विह्वल हो जाते हैं और किस प्रकार उनसे मिलते हैं? इसका वर्णन कविवर नरोत्तम दास जी के शब्दों में निम्न प्रकार है —

> ऐसे बिहाल बिवाइन सों भये कण्टक जाल गये पग जोये
> हाय सखा दुख पायो महा, तुम आए इतै न कितै दिन खोए।
> देखि सुदामा की दीन दशा करुणा करिके करुणा निधि रोये
> पानी परात को हाथ छुयो नहीं नैननि के जल सों पग धोए॥

नैनों के जल से उन्होंने सुदामा के पैर पखारे और उनका आदर सत्कार किया उनकी सुदामापुरी को आदर्श स्वरूप प्रदान किया तथा उनको वैभव से परिपूर्ण बना दिया।

श्री कृष्ण प्रेम के भूखे थे। जहां प्रेम देखते थे वहीं पर वे भोजनादि करते थे अन्यत्र नहीं जब सन्धि प्रस्ताव लेकर गए और दुर्योधन ने उनकी बात न मानी तो वे वहां से चले आये और आग्रह करने पर भी उन्होंने दुर्योधन के घर भोजन नहीं किया। उन्होंने उस (दुर्योधन) से स्पष्ट शब्दों में कह दिया था —

> सम्प्रीतिभोज्यान्यन्नानि, ह्यापद्भोज्यानि वा पुनः,
> न च सम्प्रीयसे राजन्, न चैवापद्गता वयम्॥

किसी के यहां भोजन तब किया जाता है जब भोजन कराने वाले में प्रेम हो या भोजन करने वाला आपद्ग्रस्त हो। हे दुर्योधन तुम न तो प्रेम करते हो और न मुझ पर कोई आपत्ति आई है। यह कहकर वे वहां से चले आये और विदुर जी के यहां घर पर रूखा सूखा भोजन किया।

श्री कृष्ण राष्ट्र निर्माता के रूप में हमारे सामने उपस्थित होते हैं। उन्होंने छोटे २ राज्यों को समाप्त कर एक विशाल राष्ट्र रचने लिए कार्य किया। उन्होंने अत्याचारी अन्यायी कंस, जरासन्ध, शिशुपाल आदि का संहार कर दिया और देश में शान्ति स्थापित की। महाभारत के युद्ध का उद्देश्य भी एक विशाल राष्ट्र की रचना थी। जिसमें अत्याचारी व अन्यायी शासक न हो और प्रजा सुखी रहे।

अब जबकि देश पर संकट के बादल छाए हुए हैं। बाह्य शत्रु देश को विशिष्ट करने पर तुले हुए हैं और इसे पराधीनतापाश में आबद्ध करना चाहते हैं ऐसी विषम परिस्थिति में भगवान श्री कृष्ण का दिव्य जीवन हम भारतवासियों को प्रेरणाप्रद एवं दुःखों से रक्षा करने वाला सिद्ध हो गया। श्री कृष्ण का आदर्श स्वरूप हमें कर्तव्य पथ पर अग्रसर करेगा अन्याय, अत्याचार, बेईमानी एवं भ्रष्टाचार से दूर रखने में सहायक होगा। इससे हमारा देश समृद्धि के पथपर अग्रसर प्रेरणा और इन्दिरा गांधी द्वारा प्रवर्तित २० सूत्रीय कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए सम्बल प्रदान करेगा जिससे हमारा देश गौरवशाली बनकर संसार में एक विशिष्ट स्थान प्राप्त करेगा।

उनके क्रोध का क्या ठिकाना? प्रथम तो अपने नाम के साथ राधा जुड़ा होने पर, फिर अन्दर अपने पहलू में राधा की मूर्ति खड़ी देख कर और फिर भक्तों को राधे राधे, कृष्णा कृष्णा की रट लगाते देखकर कि मेरा नाम भी बिगाड़ दिया। कृष्ण (पुलिंग) से कृष्णा (स्त्री-लिंग) बना दिया। और फिर क्या एक क्षण को भी वहां वह पायेंगे? हां अलबत्ता आर्यसमाज मन्दिर में जहां नित्य हवन यज्ञ एवं सन्ध्या तथा वेद पाठ होता है अवश्यमेव अपने नित्य कर्मों के सम्पादनार्थ पहुंच जायेंगे। और जब उन्हें पता चलेगा कि आर्यसमाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द ने उन्हें यथार्थ रूप में समझा एवं वर्णित किया है तो दयानन्द ऋषिराज की जय जयकार करने लगेंगे। और अब उन्हें यह पता चलेगा कि उन आर्य श्रेष्ठियों को कि जो मेरा यथार्थ स्वरूप जनता जनार्दन के सम्मुख उपस्थित करते हैं और तब लोग उन्हें नास्तिक आदि कहने लगते हैं तो फिर वे उदास हो जायेंगे कि कैसे नादान लोग हैं वे जो मेरे भक्त कहे जाते हैं? और फिर फटकार लगायेंगे उन्हें कि जो उनके चित्र की पूजा करते हैं और शाबाशी देंगे उन्हें कि जो उनके चरित्र की पूजा करते हैं।

क्या श्रीकृष्ण की भावनाओं को कोई समझ पायेगा? जब पांच हजार साल से भी अधिक समय में नहीं समझे तो अब भला क्या समझेंगे? और जब नहीं समझेंगे तो फिर कृष्ण को क्या पड़ी है, वह क्यों आने लगा? धर्म की हानि होती रहेगी, अधर्म दनदनाता रहेगा, और कृष्ण??

सार्वदेशिक आर्य वीर दल हरियाणा का नौवां प्रांतीय महा सम्मेलन

कैथल में भाद्रपद शुक्ल षष्ठी, अष्टमी, नवमी, सं० २०४२ तदनुसार २०, २१, २२ सितम्बर १९८५ दिन शुक्र, शनि, रविवार को श्रीमती इन्दिरा गांधी कन्या महाविद्यालय कैथल में सोत्साह हो रहा है। सम्मेलन की अध्यक्षता आर्य जाति के निर्भीक प्रहरी, गति शील नेता, हृदय में आर्यत्व की पीड़ा रखने वाले श्री लाला राम गोपाल जी वानप्रस्थ (प्रधान, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली) करेंगे।

सम्मेलन के मुख्य आकर्षण शुक्रवार २०-९-८५ रात्रि कवि सम्मेलन शनिवार २१-९-८५ प्रातःकाल आर्य वीर व्यायाम प्रदर्शन, सायंकाल १००० गणवेशधारी आर्य वीरों की भव्य रैली तथा आर्यसमाजों की विशाल शोभा यात्रा, रात्रि "राष्ट्रीय समस्याएं और आर्यसमाज सम्मेलन" रविवार २२-९-८५ प्रातः "आर्य वीर दल आर्यसमाज" सम्मेलन होंगे।

सम्मेलन में आमन्त्रित विशेष अधिकारी एवं वक्तागण:—

पं० बाल दिवाकर जी हंस (प्रधान सेनापति सार्वदेशिक आर्य वीर दल, नई दिल्ली)।

आचार्य देवव्रत जी (उपप्रधान सेनापति, सार्वदेशिक आर्य वीर दल नई दिल्ली)।

स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती।
स्वामी जीवनानन्द जी सरस्वती।
प्रो० शेरसिंहजी (प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा रोहतक)।
प्रो० राम विचार जी।
आचार्य सत्य प्रिय जी।
डा० राम प्रकाश जी।
श्री वीर राम जी।
प्रि० सर्वदानन्द जी आर्य।
श्री चन्द्र प्रकाश सत्यार्थी।

कवि सम्मेलन के कुछ प्रमुख आमन्त्रित कविगण—

डा० राणा प्रताप गन्नौरी (संयोजक) श्री सियाराम निर्भय, रस्वत मोहन मनीषी, श्री नाज सोनीपती, श्री सत्यपाल बेदार, मुन्नवर साहिब, श्री व्याकुल जी एवं अन्य कविगण।

इस ऐतिहासिक सम्मेलन में सपरिवार, इष्ट मित्रों सहित हजारों की संख्या में भाग लेकर आर्यशक्ति एवं एकता का परिचय दें। दल की तन, मन, धन से सहायता भी करें।

— अजीत कुमार आर्य, मन्त्री

(पृष्ठ १ का शेष)

निर्माण के लिए सरकार एक लाख रुपया अनुदान के रूप में देगी।

आर्यसमाज में आस्था रखने वाले विद्यार्थियों को यहां शिक्षा दी जाएगी। इस केन्द्र में संस्कृत की शास्त्री एवं आचार्य तक की कक्षाओं की भी व्यवस्था की गई है।

शिलान्यास के अवसर पर चोधरी कटारसिंह ने कहा कि हमारी आधुनिक शिक्षा प्रणाली में पुरानी संस्कृति और गौरव का समावेश होना चाहिए। हमें भारत के प्राचीन इतिहास विशेष तौर पर स्वतन्त्रता आन्दोलन की झलक पाठ्यक्रम में अवश्य रखनी चाहिए।

(हिन्दुस्तान ३-९-८५)

बुद्धिमान बच्चे जिन पर "गौरव" है

आर्यसमाज के युवा नेता डा० रामप्रकाश आर्य प्रोफेसर सीहोर की योग्य पुत्री कु० नमिता आर्या को उनके शोध प्रबन्ध "बौद्ध धर्म के सिद्धान्त" एक नीति संहिता पर इतिहास विषय में भोपाल वि०वि० की ओर से पी० एच० डी० की उपाधि प्रदान की गई है—आर्य जगत की ओर से बधाई।

आर्य जगत के विद्वान आचार्य सोमदेव जी शास्त्री को "वैदिक संहिता पाठ और पदपाठों का विश्लेषण एवं मूल्यांकन" पर राजस्थान विश्वविद्यालय जयपुर ने पी० एच० डी० की उपाधि से सम्मानित किया है—"सार्वदेशिक" के पाठकों की ओर से शास्त्री जी को बधाई।

आर्यसमाज हर क्षेत्र में यथाशक्ति जहां वैदिक धर्म का प्रचार कर रहा है वहां बिना स्वार्थ के सेवा कार्यों में सभी संस्थाओं से आगे बढ़ रहा है। आर्यसमाज द्वारा संचालित अनेक संस्थाओं में "स्वामी श्रद्धानन्द सेवाश्रम" के तत्वावधान में दयानन्द फाउन्डेशन द्वारा एक विशाल नेत्र चिकित्सा का शिविर खूंटी रांची में ३०-३-८५ को निःशुल्क रूप में आयोजित किया—चिकित्सा ही खाली मुफ्त नहीं थी, अपितु एक विचित्र बात इस शिविर की यह थी कि शिविर के प्रबन्धकों द्वारा कैम्प की गाड़ियों से रोगियों को उनके घरों से लाना और फी वापिस पहुंचाने का कार्यक्रम भी था, यहां पर आपरेशन करने वाले भी साधारण चिकित्सक न होकर, चण्डीगढ़ के नेत्र विशेषज्ञ डा० ए० डी० ग्रोवर श्री बंसीलाल जी तथा श्री ईश्वर चन्द्र जी द्वारा सम्पन्न हुए इस कैम्प पर लगभग २१ हजार रुपये व्यय हुए—इस कैम्प में रांची के चीफ मैडीकल आफीसर श्री वी० एन० भगत तथा श्रीसिन्हाजी का सहयोग सराहनीय रहा, इस सेवा कैम्प से प्रभावित हो श्री प्रेमप्रकाश आर्य ने डी० ए० वी० स्कूल के डायरेक्टर श्री ग्रोवर को ब्लैंक चैक भेंट किया—रांची क्षेत्र के कमीश्नर श्री जोगिन्द्रसिंह तथा उप डिवलपमैन्ट कमिश्नर श्री सिरोही जी ने आर्य समाज को बड़े उत्साह वर्धक शब्दों में ...

पंजि० नं० डी० (सी०) १७८ सार्वदेशिक साप्ताहिक (८-९-१९८५) बिना टिकट भेजने का लाइसेंस नं० U ९५
R. N. 626/57 Licensed to post withoutprepayment, License No. 93 Post in D.P.S.O. on 5-9-85

निम्नलिखित आर्यसमाजों द्वारा "वेद सप्ताह" तथा योगीराज श्री कृष्ण जन्माष्टमी का भव्य आयोजन

तिथि ३०-८-८५ से ७-९-८५ तक

१—आर्यसमाज बांकीपुर नयाटोला, पटना
२—आर्य समाज रेलवे रोड, अम्बाला शहर
३—आर्य समाज लल्ला पुरा, वाराणसी
४—आर्य समाज बाजार सीताराम, दिल्ली
५—आर्य समाज, उदयपुर
६—आर्य समाज जोर बाग, नई दिल्ली

त्रियोले ओभा बुषिक आर्यसमाज द्वारा श्रावणी पर्व तथा अथर्व वेद पारायण महायज्ञ २५-८-८५ से १-९-८५ तक।

आर्यसमाज कोसीकलां मथुरा का ४७वां उत्सव २४-१०-८५ से २७-१०-८५ तक मनाया जायेगा।

आर्यसमाज हरदोई का स्थापना शताब्दी समारोह १९-१०-८५ से २२-१०-८५ तक मनाया जाएगा।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के तत्वावधान में चलने वाला सिरसा में आर्य सीनियर सैकेण्डरी स्कूल के अध्यापकों तथा प्रबन्धकों का अन्थक परिश्रम से इस वर्ष १९८५ के बोर्ड की तीनों कक्षाओं के परिणाम अत्यन्त उत्साहवर्धक रहे—११वीं कक्षा ८० प्रतिशत, १०वीं ७४ प्रतिशत तथा ८वीं ४० प्रतिशत।

भारत भर में आर्यसमाजें जहां सिद्धान्त रूप से एकताबध हैं वहां प्रत्येक आर्यसमाज अपने-२ नगर, कालोनी में अपने-२ ढंग से जनता में प्रचार तथा सेवा कार्य में संलग्न हैं, जैसे-आर्यसमाज सैजपुर बोघा अहमदाबाद ने गुजराती भाषा में अनेक ट्रैक्ट तथा विज्ञप्तियां आर्य सिद्धान्तों पर प्रकाशित कर जनता को आर्यसमाज की ओर आकर्षित कर रहे हैं।

आर्यसमाज उदयपुर के [illegible] एक ईसाई युवती को उसको दुःखों से छुड़ाने हेतु उसकी प्रार्थना पर उसे पुनः वैदिक धर्म में लाया गया तथा उसका नाम "सरिता" रखा गया।

पारिवारिक उलझनों तथा पारस्परिक वैमनस्य के कारण ६ परिवार मुसलमान मौलवियों के बरगलाने से वह जब मुसलमान बनने को तैयार हो गए तो आर्यसमाज बुलन्दशहर तथा वैदिक सत्संग मंडल सिकन्द्राबाद के उत्साही आर्य वीरों ने तत्काल उन छह बन्धुओं के समूचों परिवार जनों की समस्याओं का समाधान कर उन्हें मुसलमान होने से रोक लिया और आर्यसमाज के सभासद बन गए।

खेल समाचार

पिछले दिनों सिंगापुर में एशिया के १५ देशों के बुजुंग (५४ वर्ष से ५८ वर्ष की आयु के खिलाड़ी पहुंचे—वहां अनेक प्रकार की उनकी खेल प्रतियोगिताएं हुईं, एक खेल ६ किलोमीटर की "तीव्र चलने की प्रतियोगिता" में आर्यसमाज के कार्यकरता तथा आर्य वीर दल के शिक्षक श्री रामनिवास भारद्वाज ने प्रथम स्थान प्राप्त कर स्वर्ण पदक प्राप्त कर आर्यसमाज का नाम ऊंचा किया—वह ही एकमात्र शाकाहारी वीर थे—पदक प्राप्त करने के उपरान्त उपाध्याय जी ने वहां पर सत्यार्थप्रकाश तथा अन्य आर्यसाहित्य वितरित किया इससे पूर्व भी श्री उपाध्यायजी को रोम के मेयर ने विशेष रूप से सम्मानित किया था।

सार्वदेशिक प्रेस, दरियागंज नई दिल्ली में मुद्रित तथा ओम्प्रकाश त्यागी मुद्रक और प्रकाशक के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, महर्षि दयानन्द भवन, नई दिल्ली-२ से प्रकाशित।

ओ३म्

सार्वदेशिक

साप्ताहिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

सृष्टिसम्वत १९७२९४९०८६] वर्ष २० अङ्क ३१]

भाद्रपद कृ० १५ सं० २०४१ रविवार १५ सितम्बर १९८५

दयानन्दाब्द १६१ दूरभाष । २७४७७१ वार्षिक मूल्य १०) एक प्रति २० पैसे

१४ सितम्बर : हिन्दी दिवस के अवसर पर

श्री लाला रामगोपाल जी शालवाले के विचार

भारत के संविधान सृजेताओं ने लम्बी गवेषणा-मनन और गहन चिन्तन के पश्चात् ही यह निर्णय लिया था कि स्वतन्त्र भारत की राष्ट्रभाषा हिन्दी हो। उस समय क्योंकि विदेशी राजतन्त्र ने धरोहर में सरकारी कार्यालयों तथा शिक्षा क्षेत्र अंग्रेजी भाषा दी थी। जिस का एकदम निराकरण कर देना संविधान का निर्माण करने वालों ने उचित नहीं समझा था, किन्तु उन्होंने एक निश्चित अवधि के पश्चात् अंग्रेजी के स्थान पर हिन्दी के प्रचलन की व्यवस्था दी थी। उस समय देश देश के नेताओं ने उस दी गई व्यवस्था को एकमत से स्वीकार कर लिया था और हिन्दी को राष्ट्र भाषा के रूप में स्वीकृत कर लिया था। किन्तु वह निश्चित अवधि शैतान की आंत की तरह निरन्तर बढ़ती जा रही है। आज भी हिन्दी को हम वह उचित स्थान नहीं दे पाये हैं जो संविधान के लागू होने के साथ ही इसे मिल जाना चाहिये था। आज हम देखते हैं विश्व के लगभग सभी देश अपनी भाषा को मान्यता देते चले आ रहे हैं किन्तु अपने देश में इस प्रश्न की महनीयता को निरन्तर टाला जा रहा है यही कारण है कि हिन्दी अपने उचित स्थान पर अवस्थित नहीं हो पा रही है।

किसी भी देश की भाषा जो कि उस देश की राष्ट्रीयता की समग्रता को प्रकट करती है वह उसकी राष्ट्रभाषा होने की गरिमा को प्राप्त करती है। इजराइल जैसे छोटे से देश ने स्वतन्त्र होते ही अपनी मातृभाषा को पुनर्जीवित ही नहीं किया। अपितु उसे राष्ट्र-भाषा की गरिमा प्रदान करके विश्व के अन्य राष्ट्रों को चकित कर दिया। आज वहां का सरकारी कार्यव्यापार, शिक्षा आदि की भाषा हिब्रू है। चीन-जापान और रूस की भी स्थिति यही है किन्तु अपने देश में ऐसा नहीं हो पा रहा है--

क्या भारतीय जन मानस इसके लिये तैयार नहीं हुआ है? क्या हिन्दी भाषा में सभी प्रकार का कार्य व्यापार एवं शिक्षा सम्भव नहीं? क्या हिन्दी सीखने मे कठिनाई आती है क्या हिन्दी-शब्द सामर्थ्य में कोई कमी है? यदि निष्पक्ष होकर विचार किया जाये तो ऐसा कोई भी कारण नहीं है जिससे हिन्दी के लिये जन मानस न बने, हिन्दी में सभी प्रकार की शिक्षा तथा अन्य कार्य व्यापार न हो सके या हिन्दी को सीखना कठिन हो या फिर इसकी शब्द सामर्थ्य में कोई न्यूनता हो। आज विश्व के लगभग सभी देशों के विश्व विद्यालयों में हिन्दी का शिक्षण विकसित हो रहा है।

हिन्दी किसी भी क्षेत्रीय भाषा का विरोध करके विकसित नहीं हो सकती और न ही ऐसा कदम उठाया जाना चाहिये, जिससे क्षेत्रीय भाषाओं के विकास में किसी प्रकार की बाधा उत्पन्न होती हो। क्षेत्रीय भाषाओं की उन्नति से न केवल हिन्दी समृद्ध होगी, अपितु और अधिक उन्नत भी होगी। इस बात को ध्यान में केन्द्रित कर हम चाहेंगे कि इस देश का जन समाज राष्ट्र भाषा हिन्दी के पक्ष में एकमत हो, जिससे कि हम आत्म गौरव अनुभव करते हुए हिन्दी बोलें समझें-पढ़ें और लिखें।

देश को एक सूत्र में पिरोने के लिये हिन्दी ही एकमात्र समर्थ भाषा है जो हिमालय से कन्याकुमारी तक तथा आसाम से कश्मीर तक बोली-समझी और लिखी-पढ़ी जाती है यह मत आज से बहुत पहले सर्वमान्य हो चुका है अतः इस दिशा मे अधिक गवेषणा करना उपयुक्त न होगा। आवश्यकता है राष्ट्रीय चेतना को बलवती बनाने, एक राष्ट्रीयता की भावना को सुदृढ़ करने, यहां की संस्कृति को जीवित रखने, राष्ट्रीय मूल्यवत्ता बनाये रखने के लिये हिन्दी राष्ट्र भाषा को पूर्ण मान्यता देने के साथ क्षेत्रीय भाषाओं की सर्वांगीण उन्नति भी अनिवार्य है। आओ सभी इस दिशा में कार्यरत हों।

लाला रामगोपाल शालवाले आर्य वीर दल महासम्मेलन के अध्यक्ष

पलवल। सार्वदेशिक आर्य वीर दल हरियाणा का नौवां प्रांतीय महासम्मेलन इस वर्ष २०,२१,२२ सितम्बर को कैथल में धूमधाम से मनाया जा रहा है।

लाला रामगोपाल शालवाले प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा,नई दिल्ली इस महासम्मेलन की अध्यक्षता करेंगे। इस सम्मेलन में श्री बालदिवाकर हंस प्रधान संचालक सार्वदेशिक आर्य वीर दल तथा उपप्रधान संचालक श्री डा० देवव्रत भी पधार रहे हैं।

शनिवार २१ सितम्बर को सायंकाल १००० आर्य वीरों की भव्य रैली तथा प्रान्त भर से आने वाले आर्य समाजों के प्रतिनिधियों की अभूतपूर्व शोभा यात्रा विशेष दर्शनीय होगी।

अजीत कुमार आर्य
मन्त्री आर्य वीरदल हरियाणा

सम्पादक—ओमप्रकाश पुरुषार्थी

प्रबन्ध-सम्पादक—सच्चिदानन्द शास्त्री

राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रबल समर्थक महापुरुष और उनके विचार

१—संस्कृत की प्राकृत उत्तराधिकारिणी हिन्दी ही राष्ट्रभाषा होने योग्य है।
—म० दयानन्द

२—चाहे कोई माने या न माने भारत की राष्ट्र भाषा हिन्दी ही हो सकती है।
—म० गान्धी

३—मेरे लिए हिन्दी का प्रश्न स्वराज्य के समान प्रश्न है।
—राजर्षि टण्डन

४—हमें उस भाषा को स्वीकार करना चाहिए जो देश के सबसे बड़े भूभाग में बोली जाती है और जिसे स्वीकार करने की सिफारिश म० गान्धी ने की है।
— टैगोर

५—भारत के विभिन्न प्रदेशों के बीच हिन्दी प्रचार द्वारा एकता स्थापित करने वाले सच्चे भारत बन्धु हैं।
—अरविन्द घोष

६—मेरा जीवन उसी दिन सफल होगा जिस दिन सारे भारत वासियों के साथ हिन्दी में वार्तालाप करूंगा।
—जस्टिस शारदाचरण मित्र

७—भारतीय सभ्यता की उत्पत्ति स्थान तथा सिन्धु गंगा और यमुना के तीरवर्ती देश आर्यावर्त्त के श्रेष्ठ अंश देश की भाषा हिन्दी है हिन्दी प्रचार का प्रथम मुख्य कारण यही है कि वह भारत के हृदय देश की भाषा है।
—डा० सुनीति कुमार चाटुर्ज्या

८—वह दिन दूर नहीं, जब भारत स्वाधीन होगा और उसकी राष्ट्र भाषा हिन्दी होगी।
—सुभाषचन्द्र बोस

९—देशी भाषाओं में हिन्दी ही एक ऐसी भाषा है जो बहुत जल्दी सीखी जा सकती है जिसका नियमित रूप से पढ़ना बहुत ही सहज है।
—डा० ग्रुबे

१०-हिन्दी के पौधे को हिन्दू और मुसलमान दोनों ने सींचकर बड़ा किया।
—बहुरावलि

११-हे भव्यभारत ही हमारी मातृ भूमि हरी भरी है हिन्दी हमारी राष्ट्र-भाषा तथा लिपि देवनागरी है।
—मैथिलीशरण गुप्त

१२-हिन्दी प्रचार के लिए हमें सरकारों का भरोसा छोड़ देना चाहिए और हम अपने संस्थाओं द्वारा जन जन तक यह आवाज पहुंचायें कि राष्ट्र-भाषा हिन्दी का ही प्रयोग व्यवहार में करें।
—किशोरी दास वाजपेयी

१३-न जाने कितने कमीशन बैठे, न जाने कितनी कमेटियां बनी और हमें यह कहते हुए वेदना होती है कि हिन्दी आज भी अपने देश में पराई बनी बैठी है। हमें सबसे अधिक दुःख तब होता है कि विदेश से आया सम्मानित व्यक्ति राजकी स्वागत में अपनी वार्त्ता अपनी भाषा में कहता है और हमारे अधिकांश राजपुरुष बड़े गर्व के साथ अंग्रेजी का व्यवहार करते हैं।
—यशपाल जैन

आवश्यकता है ?

आर्य उपप्रतिनिधि सभा गाजियाबाद को ग्रामीण प्रञ्चल में प्रचार कार्य करने हेतु एक भजन मण्डली की स्थाई रूप से आवश्यकता है। सच्चरित्र, कर्मठ भजनोपदेशकों को योग्यता अनुसार आकर्षक वेतन मान दिया जायेगा। साथ ही सरकारी कर्मचारियों को उपलब्ध छुट्टियों की सुविधा भी प्राप्त होगी। इच्छुक व्यक्ति आर्यसमाज हापुड़ के पते पर सम्पर्क करें।

डा० विजयभूषण आर्य मन्त्री
आर्य उपप्रतिनिधि सभा
गाजियाबाद जनपद
कार्यालय—आर्यसमाज हापुड़

हिन्दी को अपनाओ रे

भाषा नहीं भावना हिन्दी हिन्दी को अपनाओ रे।

हिन्दी भाषा नहीं पराई गैर मुल्क से नहीं न आई।
इस मिट्टी की है उपजायी इसको अपनी समझो भाई।
बहुत बिछाए शूल पन्थ में अब तो फूल बिछाओ रे?
भाषा नहीं भावना हिन्दी०—

हिन्दी मानो मां दुखियारी कोटि २ की यह महतारी।
हिन्दी वाणि भी बेचारी पग-पग हारी-विपदा भारी।
बहुत सताई गई आज तक अब तो इसे बचाओ रे।
भाषा नहीं भावना हिन्दी···

तुलसी, सूर, वृन्द की बानी खुसरो जायस और रसखानी,
दयानन्द की बानी मानो भारतेन्दु दिनकर का पानी।
निर्मल इसके यश की गाथा गाओ और सुनाओ रे।
भाषा नहीं भावना हिन्दी···

ध्वस्त यही दीवार करेगी बिछुड़ा इक परिवार करेगी।
सबको ही यह प्यार करेगी नव पीढ़ी तैयार करेगी।
जो न जाने इसकी क्षमता उनको यह समझाओ रे॥
भाषा नहीं भावना हिन्दी हिन्दी को अपनाओ रे।

हिन्दी-गुण-गायन

जिस भाषा के जाति नहीं शोभा पाती है।
और देश की मर्यादा भी घट जाती है॥

इस पर भी कर सको न यदि हिन्दी का आदर।
रहना चाहे बने सदा पोक्महृत सादर॥

तो करते हो नष्ट क्यों देव नियम को अवहकर-
मेंटो हिन्दू हिन्द भी दोऊ हड़ताल लगाकर॥

हिन्दी ऐसी स्वच्छ शुद्ध सुस्पष्ट सरलतर—
जिसके सम नहीं कोई भाषा भूतल पर॥

पढ़ने में अतिसरल सुकोमल सुललित मृदुतम।
मुख धर्षप्रद कबहु न होती है जिससे भ्रम॥

विधि अतिशय निजकर कृपा दिया तुमहिं यह रतन।
किन्तु न राखत यतन है यहि बन्धुवर कर यतन॥

है अति सुन्दर देव नागरी इसका अक्षर।
जिनमें हैं वेदादि ग्रन्थ सो लिखित निरन्तर॥

संस्कृत भाषा सर्वमान्य इस जग में भी है।
पोषक अरु उत्पत्ति द्वार हिन्दी की जो है॥

वर्णमाला में आकाश के यही सुधाकर एक है।
तिससे करना इसी को उचित राज्य अभिषेक है॥

यह सुधाकरी लिपि सुनागरी कहलाती है।
यह भी थोड़ा श्रम करने से आ जाती है॥

है इससे ही भरे हमारे ग्रन्थ पुरातन।
इसकी सुस्पष्टता सरलता ख्यापित जन-जन॥

लिपि को भी नहीं होवगी देने में राष्ट्रीय पद।
किसी भांति भागरी हित कथित देश जन कुछ विपद॥

—श्री माधव शुक्ल

सम्पादकीय

राष्ट्रभाषा के जन्मदाता स्वामी दयानन्द सरस्वती

आर्य समाज के प्रवर्तक महर्षि दयानन्द संस्कृत के उद्भट विद्वान थे उनके सारे भाषण और शास्त्रार्थ संस्कृत में ही होते थे, उनके लेखन तथा वार्तालाप की भाषा भी संस्कृत थी। उनका मत था कि संस्कृत के बिना भारत रसातल को चला जायेगा। अतः वह निष्ठा के साथ उससे जुड़े हुए थे।

महर्षि दयानन्द भारतीय राष्ट्रवाद के प्रबल पक्षधर तथा उन्नायक थे। भारतीय जीवन और राष्ट्रवाद दोनों के विषय में उनका चिन्तन पूर्णरूपेण वैदिक था। उनका समय भी कुछ ऐसा ही था कि देश में संस्कृत के प्रति निष्ठा विद्यमान थी। किसी पश्चातकाल में जो संस्कृत प्रान्तीय लिपियों में लिखी जाने लगी थी उसे देवनागरी लिपि में लिखा जाना स्वीकार कर लिया गया था। सम्पूर्ण देश में संस्कृत के प्रति आदर का भाव समान था। परन्तु न्यूनता इतनी थी कि संस्कृत विद्वानों की भाषा थी, जन साधारण के लिए दुरूह थी।

अतः तत्कालीन ब्रह्मसमाज के नेता बाबू केशवचन्द्र सेन ने स्वामी जी का ध्यान इस ओर आकृष्ट किया कि आप विद्वान हैं जन साधारण के हितार्थ जो बातें आप कह रहें, पण्डितों के अतिरिक्त इसे कोई नहीं, समझ सकता है आप जनसाधारण की बोल चाल की भाषा में अपनी बात कहें। स्वामी जी ने उदारता व निरभिमान होकर केशव बाबू की बात को स्वीकार किया और सार्वजनिक सम्बोधन के लिए आर्य भाषा को अपनाने हेतु कृत सकल्प हो गए। उनकी संस्कृत निष्ठा हिन्दी सुबोध तथा सर्वसुलभ थी। स्वामी दयानन्द सरस्वती के लेखक बाबा छज्जू सिंह के अनुसार वे उस समय कलकत्ता में थे जब उक्त घटना घटी तो स्वामी जी ने संस्कृत में भाषण त्याग कर आर्य भाषा हिन्दी को अपना लिया। यह बात उनके ध्यान आ गई-एक ओर उनके संस्कृत सम्भाषण का ठीक-२ अनुवाद नहीं हो पाता तथा दूसरे संस्कृत भाषण आम जनता के लिए बुद्धिगम्य नहीं हो पाता। अतः भविष्य में आर्य भाषा में भाषण देने लगे। इस प्रकार वे भारत में हिन्दी में सार्वजनिक सम्बोधन करने वाले सर्व-प्रथम व्यक्ति थे। एक बात विशेष यह थी कि केशव बाबू संस्कृत नहीं जानते थे और स्वामी जी महाराज अंग्रेजी नहीं जानते थे, एक बंगाली थे तो दूसरे गुजराती थे। परन्तु दोनों शुद्ध हिन्दी में चर्चा करने में समर्थ थे। उत्तर भारत के प्रवासों में दोनों को हिन्दी का अच्छा ज्ञान हो गया। पंजाब प्रारम्भ से ही आर्य समाज का गढ़ रहा अतः स्वामी जी को आर्य भाषा अपनाने का वहां उल्लेखनीय प्रभाव पड़ा। उस समय आर्य समाजी वहां उर्दू से लोहा ले रहे थे।

लाला द्वारकादास एम. ए. १८८२ में भाषा प्रचारिणी सभा लाहौर की ओर से एक पम्फलेट प्रकाशित किया था जिसका शीर्षक था "हिन्दी विरुद्ध उर्दू" इसमें लाला जी ने देवनागरी में लिखित हिन्दी का प्रबल समर्थन कर हिन्दी को स्वरूप उजागर किया था कि वे पंजाब में केवल दस प्रतिशत लोग ही उर्दू बोलते थे। वे गुरुमुखी के भी विरोधी थे उनका कहना था कि गुरुमुखी साहित्य विहीन है तथा उसकी लिपि अशुद्ध है। हिन्दी साहित्य और देवनागरी लिपि की प्रशंसा के लिए उन्होंने बंगाली भारत मित्र राजेन्द्र मित्रा की बड़ी सराहना की थी। ला० द्वारकादास आर्य समाज अम्बाला के अध्यक्ष थे। उनकी दलीलों ने पंजाब में हिन्दी पंजाबी की समस्या को समाधान ही दिया दे दी और यह समस्या आज भी अनसुलझी रहकर पंजाब को सुलगा रही है।

हिन्दी उर्दू की समस्या का शीघ्र ही समस्त हिन्दी भाषी उत्तर भारत में विस्तार हो गया, बिहार में तो बंगाली अधिकारियों ने भी उर्दू के बदले हिन्दी को अपना समर्थन दिया। संस्कृत निष्ठ हिन्दी उनके लिए अधिक सरल थी। संस्कृत की सारी पुस्तकें इन दिनों देवनागरी में प्रकाशित होती थीं और अधिकांश बंगाली संस्कृत जानते थे सहज ही अरब लिपि की उर्दू के मुकाबले देवनागरी में लिखित उन्हें सुबोध प्रतीत थी। बंगाली विद्वान श्री भूदेव मुखोपाध्याय तथा इलाहबाद हाईकोर्ट के जज श्री प्रमोद चरण मित्रा ने क्रमशः बिहार और उत्तरप्रदेश में हिन्दी प्रचार हेतु महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

मुसलमानों ने भारत-विजय के वर्ष में फारसी और उर्दू को थोप दिया था इसी सिलसिले में अंग्रेजों ने अंग्रेजी को सब भारतीयों के सिर थोप दी। भारत की स्वतन्त्रता के बाद हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाना चाहिए। यही विचार हुआ परन्तु फिर भी प्रादेशिक भाषाओं का प्रश्न उभरा और भाषाधार प्रान्तों की रचना हो गई। जिससे प्रान्तों में प्रान्तीय भाषा प्रभुसत्ता पा गई। हिन्दी के बजाय अंग्रेजी का समर्थन भी वहां पर्याप्त हुआ। सरकारी काम काज अधिकतर अंग्रेजी में हो रहे हैं। शिक्षा और समाचार पत्रों के माध्यम से अंग्रेजी दिन-दूनी रात चौगुनी फली फूली है और एक प्रकार से उसकी अनिवार्यता बढ़ती चली जा रही है। अन्य भाषाओं के प्रति तो नहीं, परन्तु हिन्दी के प्रति ममता और न्यूनता का भाव भी निर्मित हो रहा है। *ऐसी परिस्थितियों में सभी राजनैतिक दलों ने भी राष्ट्रभाषा और हिन्दी के प्रश्न को ताक पर रख दिया है।*

भाषा का प्रश्न उठा-कि वोट घटे। यह हौवा उन पर हावी हो गया इसी बीच अंग्रेजी भाषा के पैर भी जम गए। अतः सहज ही भाषा से हटकर प्रश्न जब सामान्य भारतीय लिपि का पेश हो रहा है तो कई भारतीय विद्वान एतदर्थ रोमन लिपि के समर्थक बन रहे हैं। इसका पर्याप्त प्रभाव भारतीय सेनाओं में अंग्रेजी भाषा से है। क्या वर्तमान पीढ़ी इस प्रश्न को सुलझाकर अगली पीढ़ी के लिए मार्ग प्रशस्त करेगी। क्या तब तक यह समस्या सरल होने के बजाय अधिकाधिक कठिन हो जायेगी। भारत में दृष्टिकोण की विशालता का स्थान संकुचित बना लिया गया है।

दयानन्द मठ चम्बा में आर्य वीर दल प्रशिक्षण शिविर

सभा प्रधान ला० रामगोपाल शालवाले दीक्षान्त भाषण देंगे

चम्बा। हिमाचल प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान मान्य स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती के संरक्षण में हिमाचल प्रदेश आर्यवीर दल प्रशिक्षण शिविर आगामी २२ से २६ सितम्बर १९८५ तक दयानन्द मठ चम्बा में आमन्त्रित किया गया है। हिमाचल की आर्य समाजों को चाहिए की वह अपने यहां से युवकों को प्रशिक्षणार्थ भारी संख्या में भेजें। शिविर में सार्वदेशिक आर्यवीर दल के प्रधान संचालक श्री पं० बालदिवाकर हंस एवं उपप्रधान संचालक डा० देवव्रत व्यायामाचार्य पूरा समय देकर प्रशिक्षण कार्य सम्पन्न करायेंगे।

शिविर के दीक्षान्त समारोह में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान, माननीय लाला रामगोपाल शालवाले (वानप्रस्थ) ने दीक्षान्त भाषण करना स्वीकार कर लिया है। इन्हीं अन्तिम दिनों में दयानन्द मठ चम्बा का वार्षिकोत्सव भी सम्पन्न होगा। स्वागत समिति बनकर अर्थ संग्रह में जुट गयी है। उत्सव सोल्लास मनाया जावेगा।

मन्त्री-आर्यवीर दल दयानन्द मठ चम्बा (हि. प्र.)

शिक्षा का माध्यम और हिन्दी

—डा० विजयेन्द्र स्नातक

शिक्षा के माध्यम का निर्णय करने तथा शिक्षा पद्धति में आवश्यक परिवर्तन करने के निमित्त विगत तेतीस वर्षों में पांच आयोग बन चुके हैं। और प्रत्येक आयोग ने अपना प्रतिवेदन शासन को दिया है। सन १९४९ में डा० सर्वपल्ली राधाकृष्णन की अध्यक्षता में विश्व विद्यालय आयोग के नाम से नियुक्त हुआ। उसे राधाकृष्णन के आयोग से भी व्यवहृत किया जाता है। इस आयोग के सदस्यों ने उच्च शिक्षा के माध्यम के रूप में मातृभाषा की सम्भावना पर विचार किया और यह संस्तुति की कि उच्च शिक्षा का माध्यम मातृभाषा हो। किन्तु कुछ समय तक अंग्रेजी को भी काम में लाया जाय सिद्धान्त रूप में मातृभाषा को स्वीकृति मिली। व्यवहार में उसे स्थान नहीं मिला। एक उच्च स्तरीय समिति गठित की गई जो संघीय राजभाषा के माध्यम पर विचार करने के उद्देश्य से ही बनाई गई थी। डा० ताराचन्द इसके अध्यक्ष थे वे उस समय शिक्षा सचिव के पद पर कार्य कर रहे थे। इस समिति ने यह मत प्रकट किया कि मातृभाषा के अतिरिक्त संघीय भाषा (हिन्दी) को उच्च शैक्षिक स्तर पर अनिवार्य कर दिया जाय तथा कालान्तर में अंग्रेजी को हटाकर संघीय भाषा हिन्दी को अनिवार्य कर दिया जाय।

सन १९५२ में "माध्यम शिक्षा आयोग" बना जिसके अध्यक्ष डा० लक्ष्मण स्वामी मुदलियर थे। इस आयोग ने माध्यमिक कक्षाओं में मातृभाषा या क्षेत्रीय भाषा को सम्पूर्ण माध्यमिक शिक्षा का माध्यम बनाने की संस्तुति की। हिन्दी या संघीय भाषा के सम्बन्ध में इस आयोग ने कोई विचार व्यक्त नहीं किया। हां अंग्रेजी को पढ़ाने की सिफारिश की। सन १९५६ में केन्द्रीय शिक्षा परामर्शदात्री परिषद ने त्रिभाषा सूत्र का आविष्कार किया और मातृभाषा, हिन्दी तथा अंग्रेजी इन तीन भाषाओं की पढ़ाई पर बल दिया। त्रिभाषा सूत्र का फार्मूला पंडित नेहरू को प्रिय था और भाषा विषयक विवाद को एक सीमा तक सुलझाने वाला था। अतः सन १९६१ में विभिन्न राज्यों के मुख्यमन्त्री सम्मेलन में स्वीकार कर लिया गया त्रिभाषा सूत्र में यद्यपि कोई उलझन नहीं थी किन्तु हिन्दी को एक सूत्र में स्थान प्राप्त था अतः कुछ हिन्दी विरोधी स्वर गूंजे और उन्होंने इस फार्मूले पर पुनर्विचार पर इच्छा प्रकट की। फलतः सन १९६४ में डा० दौलतसिंह कोठारी की अध्यक्षता में एक आयोग गठित किया गया जिसने दो वर्ष में अपना प्रतिवेदन सन १९६६ में प्रस्तुत किया कतिपय सैद्धान्तिक बातों के साथ भाषा के प्रश्न को इस आयोग ने कुछ अधिक स्पष्ट करने का प्रयास किया। तीन भाषा को इस आयोग ने पुराने त्रिभाषा सूत्र से न जोड़कर नया त्रिभाषा सूत्र बनाया पहली भाषा मातृ-भाषा या क्षेत्रीय भाषा, दूसरी केन्द्र की राजभाषा (हिन्दी) या सह राजभाषा (अंग्रेजी) तीसरी एक आधुनिक भारतीय भाषा या कोई विदेशी भाषा। इस त्रिभाषा सूत्र में हिन्दी और अंग्रेजी एक ही साथ विकल्प में रखी गई, जिसका कुफल यह हुआ कि हिन्दी को अनेक राज्यों में छोड़ दिया गया। कोठारी आयोग तक आते आते हिन्दी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं को माध्यम के रूप में स्वीकृति प्राप्त हो गई और हिन्दी को स्थान जो उसे संविधान में सहज ही प्राप्त था, शिक्षक और विद्यार्थी दोनों की दृष्टि में गौण होता गया। इस स्थानापत्ति में सबसे अधिक योग दिया संघीय लोक सेवा आयोग की परीक्षाओं के अंग्रेजी माध्यम ने। इधर पिछले तीन वर्षों से क्षेत्रीय भाषाओं को प्रतियोगी परीक्षाओं में किंचित स्थान प्राप्त होने लगा है, हिन्दी माध्यम भी कुछ प्रश्न पत्रों में स्वीकृत हुआ है।

शिक्षा के माध्यम में परिवर्तन के लिए उपर्युक्त आयोग तथा विचार समितियों द्वारा जो सुझाव आए उनके दो परिणाम हुए। पहला मुख्य परिणाम तो यह हुआ कि कई राज्यों में क्षेत्रीय भाषाओं को माध्यम के रूप में स्वीकार किया गया और अंग्रेजी का बोझ विद्यार्थियों के कन्धों से दूर हुआ। दूसरी ओर तमिलनाडु और बंगाल में हिन्दी को तो सर्वथा तिरस्कृत कर ही दिया गया, साथ ही अपनी क्षेत्रीय भाषा तमिल और बंगला को भी माध्यम के रूप में प्रतिष्ठित नहीं किया अंग्रेजी का मिथ्यामोह या व्यामोह उन्हें आज भी खटका रहा है और इन राज्यों में अंग्रेजी की परिवरिश पूरे समारोह के साथ की जा रही है। यदि त्रिभाषा फार्मूला प्रारम्भ में ही स्पष्ट करके अनिवार्य रूप से प्रचलित कर दिया जाता तो हिन्दी की स्थिति मजबूत हो जाती। त्रिभाषा फार्मूले की त्रुटि एक ही थी। उसमें संस्कृत की सर्वथा उपेक्षा भारतीय नागरिक के लिए किसी प्रकार भी क्षम्य नहीं है। संस्कृत मूल भाषा है जो हिन्दी का ही शब्द भंडार नहीं भरती अन्य भारतीय भाषाओं को भी शब्द विचार और सांस्कृतिक निधि प्रदान करती है।

हिन्दी को संविधान में राजभाषा का पद मिलने पर जिन राज्यों ने उच्चस्तरीय शिक्षा के लिए माध्यम के रूप में स्वीकार किया उनमें बिहार उत्तर प्रदेश, राजस्थान, मध्यप्रदेश और गुजरात का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। गुजरात का सरदार पटेल विश्वविद्यालय (वल्लभ विद्यानगर) सबसे पहला विश्व विद्यालय था। खेद है कि कालान्तर में इस विश्वविद्यालय को अपनी शिक्षा नीति में परिवर्तन करना पड़ा और हिन्दी के स्थान पर गुजराती तथा अंग्रेजी को माध्यम का स्थान दे दिया गया। यह परिवर्तन जिन कारणों से हुआ वह हमारी सरकार की भाषा विषयक अदूरदर्शी नीति का फल है। लोक सेवा आयोग की प्रादेशिक तथा संघीय परीक्षाओं का माध्यम अंग्रेजी बने रहने से हिन्दी माध्यम स्वीकार करने वाले विद्यार्थियों को कष्ट हुआ और प्रतियोगी परीक्षाओं में उनकी विफलता ने उन्हें आक्रोश और अवसाद से भर दिया। केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की परीक्षाओं में जिन्होंने हिन्दी माध्यम लिया था उन्हें भी इसी प्रकार का सामना करना पड़ा। उत्तर प्रदेश के विश्वविद्यालयों के छात्र जहां हिन्दी माध्यम से उच्च स्तरीय शिक्षण होता है, आज भी प्रतियोगी परीक्षाओं अंग्रेजी के पचड़े से परेशान हैं। विषय का परिपक्व ज्ञान होने पर भी वे दुरूह अभिव्यक्ति (अंग्रेजी) के माध्यम के कारण सफल नहीं हो पा रहे हैं। फलतः मेधावी और होनहार छात्र अंग्रेजी माध्यम की ओर पुनः वापस जा रहे हैं। गली-गली में इंगलिश मीडियम की तख्ती लटकाए कान्वेन्ट स्कूल इसी कारण खुलते जा रहे हैं। आज हम यह भूल गए हैं कि लोकमान्य तिलक महात्मा गांधी, राजेन्द्रप्रसाद, मदनमोहन मालवीय, गोपाल कृष्ण गोखले, लाला लाजपत राय, सम्पूर्णानन्द सरदार पटेल, लाल बहादुर शास्त्री, जगजीवन राम, मोरार जी देसाई, कमलापति त्रिपाठी आदि नेताओं में से एक भी कानवेन्ट स्कूलों की उपज नहीं है। कान्वेन्ट स्कूलों की शिक्षा पद्धति पर मैं यहां टिप्पणी नहीं करना चाहता क्योंकि वह पद्धति अभारतीय एवं जन तान्त्रिक ढांचे के सर्वथा विपरीत है वह वर्गभेद की नींव डालने वाली आर्थिक शोषण और आर्थिक वैषम्य पर आधारित दास मनोवृत्ति की देन है।

हिन्दी भाषा का समाजवादी दृष्टिकोण

—विद्या भास्कर सच्चिदानन्द शास्त्री, एम० ए०

भारत को प्राप्त हुई स्वाधीनता के इतने वर्ष व्यतीत हो जाने पर २६ जनवरी सन् १९६५ ई० को भारत की राष्ट्रभाषा हिन्दी घोषित की गई है। चिरकाल से यह विषय विवादमय था। बड़ी उलझनों के बाद इस भाषा समस्या का समाधान हिन्दी के भाषाविदों ने राष्ट्रीय सरकार से निश्चय करा पाया है कि इस समूचे देश की राष्ट्रभाषा बहुजन हिताय हिन्दीहो। साथ-२ द्वितीय भाषा अंग्रेजी भी रहेगी। प्रान्तीय भाषाएं भी अपने-२ क्षेत्र में मुख्य भाषा के रूप में कार्य करेंगी। जैसे बंगाल में बंगला तथा दक्षिण प्रदेश में तामिल तेलगू आदि भाषाएं हैं। पर प्रश्न यह है कि क्या इससे समाधान भाषा समस्या का हो सकेगा ? क्या हिन्दी अपनी समस्या का हल संस्कृत के द्वारा ही करेगी या अन्य प्रदेशीय शब्द भंडारों को भी लेकर शब्द शक्ति का भंडार भरेगी।

हमारे देश का बहुजन समाज प्राचीनता व रूढ़िवादिता तथा परम्पराओं का उपासक है, जन-जन की छाया भाषा पर भी पड़ती है। भाषा बड़े ही स्थान पथत्नों के आधार पर बनाई जाती है और गढ़ी भी जाती है। हिमालय के लुढ़कते पत्थरों की तरह शब्द जैसे चाहें इस प्रकार बनने नहीं दिए जा सकते। साथ ही इसका निश्चय न तो हजारों वर्ष पूर्व के व्यक्ति ही कर सकते हैं और न उनके बनाए नियम ही ऐसा करने में समर्थ हैं। आज का भाषा वैज्ञानिक व आज के नियम ही इसका यथार्थ निर्णय कर सकते हैं।

हजारों वर्ष पूर्व पाणिन से पूर्व भी अनेक व्याकरणों ने भाषा का शब्द भंडार भरा। परन्तु क्या उसके बाद पुन शब्द रचना नहीं हुई।

पाणिनि, कात्यायन, पतञ्जलि ने जो लिखा है और उसके पूर्व के आचार्यों ने जो भंडार भरा है वह सब अपने समय की आवश्यकतानुसार बनाया है। ऐन्द्र तथा पाणिनि का अपना व्याकरण अन्तिम नहीं है। और न उणादि कोष ही शब्द सीमा को सूचित कर सकता है।

उसके बाद भी अन्य अनेक क्रियाएं भी प्रयोग में लाई गई हैं। नए शब्दों का निर्माण करना पड़ा है। उसी प्रकार शब्द भंडार भरने वालों को। भारत के एक छोर से दूसरे छोर तक परिभ्रमण कर व्यावहारिक शब्दों का पता चलाकर नव निर्माण करना होगा।

प्राचीन व्याकरण आज का भाग्यविधाता कैसे हो सकता है। पाणिनि का सूत्र (अदर्शन लोप.) कात्यायन के समय में ही विवाद का विषय बन गया। इसी कारण अन्य वार्त्तिकों का निर्माण भी करना पड़ा। कात्यायन की काट-छांट पतञ्जलि ने कर डाली और इस प्रकार नये महाभाष्य की रचना करनी पड़ी। इस प्रकार भारतीय वाङ्मय का विकास स्थिर रहा नहीं, विकासवाद का नमूना यहीं पर तो देखने को मिलता है। क्या बुद्धिवादी कभी पीछे मुड़कर देखेगा, कि पहले शब्द क्या था और अब क्या रहेगा। अन्तर्राष्ट्रीय ठीक होगा या अन्तराष्ट्रीय ठीक रहेगा। ढूलोपे पूर्वस्य दीर्घोण:) सूत्र अपने व्याकरण में फिट है। पर हिन्दी भाषा वैज्ञानिक आज उसका प्रयोग नहीं करता है। भाषा के प्रयोग में आज अन्तर्देशीय और बहिर्देशीय शब्दों का व्यावहारिक प्रयोग देखने को मिलता है। जब आज बाहर के शब्दों का हिन्दी भाषा में प्रयोग देखते हैं। तो अन्तप्रांतीय भाषाओं का भी राष्ट्रभाषा हिन्दी में निश्चय ही आगमन होगा। पद के पद आए हैं और आयेंगे। इस देश की भाषा का निर्णय रूढ़िवादिता पर न करके स्थानीय उप बोलियों के आधार पर भी करना पड़ेगा। भाषा निर्माण केवल गंगा, यमुना के मध्य न होकर सतलज-रावी तथा पूर्व देश ब्रह्मपुत्र नदी के पार से भी होगा। कन्नड़, मलयालय तेलंगू तथा मध्य देश के कोल, भील, कोंकण के शब्दों का चयन कर शब्द रखने होंगे। ब्रज अवधी, कन्नौजी, मैथिली शब्दों के साथ राजस्थानी, बैसवाड़ी के शब्द आपस में मिलकर हिन्दी को आज भी परिपुष्ट कर ही रहे हैं। पाणिनि का व्याकरण भी यह कहता है (विकल्पन्थात्)अर्थात् विकल्प किए जाने का स्थान रखा है।

कहा यह जाता है कि हिन्दी संस्कृत की दुहिता है। ठीक है और रहेगी किन्तु संस्कृत के साथ प्राकृत को भी नाटकों में स्थान दिया ही गया है।

आज की हिन्दी भारतेन्दु की हिन्दी एक शताब्दी के कुछ ऊपर की ही है। मगध के लोग तो अपनी मगही को भी भूल गए हैं। जिसकी कि अपनी विस्तृत लिपि तथा साहित्य है। भाषा में आज संस्कृत से सिद्ध करना उपयुक्त नहीं। इससे हिन्दी की व्यापकता को छोटे दायरे में बांधना है। हिन्दी पर वैयाकरणों के अनुशासन का लागू करना हिन्दी के प्रवाह को रोकना है। भाषा का तो प्रवाहमय बनाने में कल्याण है। एक बार पं० नेहरू जी से किसी ने अंग्रेजी की वकालत करते हुए कहा कि हिन्दी खिचड़ी भाषा है। व्यवहार में अर्थात् विज्ञान में व कानून आदि में इसके शब्द उपयुक्त नहीं रहेंगे। पंडित जी ने कहा कि जिस प्रकार अंग्रेजी के शब्द प्रारम्भ में हमें भले ही नए व अटपटे प्रतीत होते थे, किन्तु बाद में हमारी काम काजी भाषा के अंग बन गए। इसी प्रकार हिन्दी के ये शब्द भी धीरे-२ व्यावहारिक बन जायेंगे। बहुत से अंग्रेजी के शब्द भी बोलचाल की भाषा मे आ गए हैं।

शब्दों के अनुशासन के लिए व्याकरण अवश्य चाहिए। किन्तु हिन्दी के लिए हिन्दी का व्याकरण ही चाहिए। संस्कृत से से सहयोग लिया जा सकता है। भाषा वैज्ञानिक दृष्टिकोण से भाषा व्याकरण की अनुगामिनी नहीं है अपितु व्याकरण भाषा का अनुकरण करता है। पाणिनि ने इस तथ्य को जाना और प्रत्येक ज्ञानपदीय शब्द को सिद्ध करने के लिए सूत्रों की रचना की आवश्यकतानुसार विकल्प भी रखे।

हर शब्द का अपना इतिहास है। उनके साथ कोई विशेष घटना भी जुड़ी रहती है। हमें अपने मेरे को दुरुस्त रखना है। जिससे हमें शब्दों को अपने में विलीन कर सकें। भाषा को सरल बनाना आवश्यक है। कोट, बटन, कमीज, कुर्सी, पुर्तगीज शब्द हैं जो प्रयोग में आते हैं किन्तु ऐसे कितने लोग हैं जो इस भेद को जानते हैं। फिर उनके साथ इतिहास भी जुड़ा हुआ है।

प्राचीन भारत का मोह आवश्यक है। पर आजकी भाषा समस्या का समुचित समाधान करना भाषा की सेवा करने वालों के समक्ष एक महान दायित्व है। उन्हे एक ऐसी भाषा का निर्माण करना है जो आज के समाज को एक अमन समाजवादी दृष्टि दे सकें। वर्गवाद को जन्म देकर ४५ करोड़ जनं की वाणी हिन्दी का बनना कठिन है यदि भाषाविद इस उदारता के साथ चलने का प्रयास करेंगे, तो आज का वर्ग विद्वेश समाप्त होकर सारा राष्ट्र भाषा की दृष्टि से एक सच्चे समाजवाद की शृंखला में आबद्ध हो जायेगा। अतः विकल्प का स्थान भाषा में सदा रहा है आज भी है और भविष्य में भी निश्चय रहेगा।

सूचना

सभी आर्य बन्धुओं को सूचित किया जाता है कि अपने उत्सवों को सफल बनाने हेतु कृपया इस पते पर सूचित करने का कष्ट करें।

मेरा पता :

रामचन्द्र शर्मा आर्योपदेशक गीतकार

स्थान सहमूवासलेमपुर, पो०ओ० सैदाबाद

जनपद० बिजनौर (उत्तर प्रदेश) पिन० २४६७०१

राष्ट्र भाषा सम्मेलन (कलकत्ता)

स्वागत समिति के सभापति श्री सुभाषचन्द्र बोसका भाषण

२९ दिसम्बर, १९२८

—ज्यो० राधेश्याम द्विवेदी के सौजन्य से

हिन्दी भाषा प्रेमियों,

बड़ी खुशी के साथ इस नगर में हम लोग आपका स्वागत करते हैं। जो सज्जन कलकत्ते से वाकिफ हैं उनको यह बतलाने की जरूरत नहीं है कि कलकत्ते में १ लाख हिन्दी भाषा-भाषी रहते हैं। शायद हिन्दुस्तान के किसी भी प्रान्त में जो प्रान्त हिन्दी वालों के घर हैं उनमें भी, कहीं इतने हिन्दुस्तानी जबान बोलने वाले नहीं पाये जाते। साहित्य की दृष्टि से भी कलकत्ते का स्थान हिन्दी के इतिहास में बहुत ऊंचा है। मैं हिन्दी भाषा का पण्डित नहीं हूं। बड़े खेद के साथ मुझे यह बात भी स्वीकार करनी पड़ती है कि मैं शुद्ध हिन्दी बोल भी नहीं सकता। इसलिये आप मुझसे यह उम्मीद नहीं कर सकते कि मैं हिन्दी साहित्य के प्रारम्भिक इतिहास के विषय में कुछ कहूं। अपने मित्रों से मैंने सुना है आजकल की हिन्दी गद्य का जन्म कलकत्ता में ही हुआ है। लल्लूजी लाल ने अपना प्रेम सागर इसी नगर में बैठकर बनाया और सदल मिश्र ने चन्द्रावली रचना यहां पर की और वे दोनों सज्जन हिन्दी गद्य के आचार्य माने जाते हैं। हिन्दी का सबसे पहिला अखबार 'बिहार-बन्धु' यहीं से निकला। इसलिए हिन्दी सम्पादन कला के इतिहास में कलकत्ते का स्थान बहुत ऊंचा है। सबसे पहिले कलकत्ता विश्वविद्यालय ने ही हिन्दी को एम०ए० में स्थान दिया। आजकल भी हिन्दी के लिए जो काम कलकत्ते में हो रहा है वह महत्वपूर्ण है। इसलिए जितनी मातृभाषा हिन्दी है, कलकत्ता उनके लिए घर जैसा ही है। कम से कम वे तो हमारी स्वागत की त्रुटिएं या अभाव के लिए हमें क्षमा कर ही देंगे।

सबसे पहले एक गलत फहमी दूर कर देना चाहता हूं। कितने सज्जनों का ख्याल है कि बंगाली या तो हिन्दी के विरोधी होते हैं या उसके प्रति उपेक्षा करते हैं, बे पढ़े लोगों में ही नहीं बल्कि सुशिक्षित सज्जनों के मन में भी इस प्रकार की आशंका पायी जाती है। यह बात भ्रमपूर्ण है और इसका खण्डन करना मैं अपना कर्त्तव्य समझता हूं। मैं व्यर्थ अभिमान करना नहीं चाहता पर इतना तो अवश्य कहूंगा कि हिन्दी साहित्य के लिए जितना कार्य बंगालियों ने किया है उतना हिन्दी-भाषी प्रान्तों को छोड़कर और किसी प्रान्त के निवासियों ने शायद ही किया हो। यहां मैं हिन्दी प्रचार की बात नहीं कहता। उसके लिये स्वामी दयानन्द ने जो कुछ किया और महात्मा गांधी जो कुछ कर रहेहैं उसके लिये हम सब उनके कृतज्ञ हैं, पर हिन्दी साहित्य की दृष्टि से कहता हूं। बिहार में हिन्दी भाषा और देवनागरी लिपि के प्रचार के लिये स्वर्गीय श्री भूदेव मुकर्जी ने जो महान् उद्योग किया था क्या उसे हिन्दी भाषा-भाषी भूल सकते हैं। और पंजाब में स्वर्गीय श्री नवीनचन्द्र राय ने हिन्दी के लिए जो प्रयास किया क्या वह कभी भुलाया जा सकता है। मैंने सुना है कि यह काम बंगालियों ने १८८० के लगभग ऐसे समय में किया था जब कि बिहार और पंजाब के हिन्दी भाषा-भाषी या तो हिन्दी के महत्व को समझते ही न थे और कितने ही तो विरोधी भी थे। ये लोग उत्तरी भारत में हिन्दी आन्दोलन के पथ-प्रदर्शक कहे जा सकते हैं। संयुक्त प्रान्त में इण्डियन प्रेस के स्वामी स्वर्गीय श्री चिन्तामणि घोष ने प्रथम सर्वश्रेष्ठ मासिक पत्रिका 'सरस्वती' द्वारा और पचासों हिन्दी ग्रन्थों को छापकर हिन्दी साहित्य की जो सेवा की है उतनी सेवा हिन्दी भाषा-भाषी किसी प्रकाशक ने शायद ही की होगी। जस्टिस शारदाचरण मित्र ने एक लिपि विस्तार परिषद् को जन्म देकर और "देवनागर" पत्र निकालकर हिन्दी के लिए प्रशंसनीय कार्य कियाथा। 'हितवार्ता' के स्वामी एक बंगाली सज्जन ही थे। और हिन्दी बंगवासी अब भी इसी प्रान्त के एक निवासी द्वारा निकाला जा रहा है। आज कल भी हम लोग थोड़ी बहुत सेवा हिन्दी साहित्य की कर रहे हैं कौन ऐसा कृतघ्न होगा जो श्री अमृतलाल जी चक्रवर्ती की जो ४५-४६ वर्ष से हिन्दी पत्र सम्पादन का कार्य कर रहे हैं, हिन्दी सेवा को भूल जावे। कविवर श्री रविन्द्रनाथ ने कबीर की एक सौ कविताओं का अंग्रेजी में अनुवाद करके और उनके शान्ति निकेतन के श्री क्षितिमोहन सेन ने सन्त कवियों के विषय में अनुसंधान करके हिन्दी की सेवा ही की है। लगभग १५ वर्ष से श्री नगेन्द्रनाथ जी बसु अपने हिन्दी विश्वकोष द्वारा हिन्दी की सेवा और पुष्टि कर रहे हैं, और श्री रामानन्द जी चटर्जी विशाल भारत द्वारा हिन्दी की सेवा कर रहे हैं। हमारी भाषाओं के जिन पचासों ग्रन्थों का अनुवाद हिन्दी में हुआ है और उनसे हिन्दी भाषा-भाषियों के ज्ञान में जो वृद्धि हुई है उसकी बात मैं यहां नहीं कहूंगा। मैं शेखी नहीं मारता, व्यर्थ अभिमान नहीं करता, पर मैं नम्रता पूर्वक आपसे पूछना चाहता हूं कि क्या यह सब जानते हुए भी कोई यह कहने का साहस कर सकता है कि हम लोग हिन्दी के विरोधी हैं। मैं इस बात को मानता हूं कि बंगाली अपनी मातृभाषा से अत्यन्त प्रेम करते हैं और यह कोई अपराध नहीं है। शायद हममें कुछ ऐसे आदमी भी हैं जिन्हें इस बात का डर है कि हिन्दी वाले हमारी मातृभाषा बंगला को छुड़ाकर उसके स्थान में हिन्दी रखवाना चाहते हैं। यह भी निराधार भ्रम है। हिन्दी प्रचार का उद्देश्य केवल यही है कि आजकल जो काम अंग्रेजी से लिया जाता है वह आगे चलकर हिन्दी से लिया जावे। अपनी माता से भी अधिक प्यारी मातृभाषा बंगला को तो हम कदापि नहीं छोड़ सकते। भारत के भिन्न-भिन्न प्रान्तों के भाइयों से बातचीत करने के लिए हिन्दी या हिन्दुस्तानी तो हमको सीखनी चाहिये। और स्वाधीन भारत के नवयुवकों को हिन्दी के अतिरिक्त जर्मन, फ्रेंच आदि यूरोपीय भाषाओं में से भी एक दो सीखनी पड़ेगी नहीं तो अन्तर्राष्ट्रीय मामलों में दूसरी जातियों का मुकाबला नहीं कर सकेंगे। लिपि का झगड़ा मैं नहीं उठाना चाहता। महात्मा जी की बात से मैं सहमत हूं कि हिन्दी और उर्दू लिपियों का जानना जरूरी है। आगे चलकर जो लिपि अधिक उपयुक्त होगी वही उच्च स्थान पावेगी। उसके लिए अभी से झगड़ा करना व्यर्थ है। सरल हिन्दी और सरल उर्दू दोनों एक ही हैं। वैसे ही हम लोगों में लड़ाई झगड़े के लिए अनेक कारण मौजूद हैं नये कारण बनाने की जरूरत नहीं।

महात्मा जी से और आप लोगों से मैं प्रार्थना करूंगा कि जैसा प्रबन्ध आपने, हिन्दी प्रचारका, मदरास में किया है वैसा बंगाल और और आसाम मे भी करें। स्थायी कार्यालय खोलकर, आप लोग बंगाली छात्रों तथा कार्य कर्त्ताओं को हिन्दी पढ़ाने का इन्तजाम कीजिए। इस कलकत्ते में कितने ही बंगाली छात्र हिन्दी पढ़ने के लिए तैयार हो जावेंगे। पढ़ाने वाले चाहिए। बंगाल धनवान प्रान्त नहीं है और न यहां के छात्रों के पास इतना पैसा है कि वे शिक्षक रखकर हिन्दी पढ़ सकें। यह कार्य तो अभी आप लोगों को ही करना होगा। अगर कलकत्ते के धनी-मानी हिन्दी भाषा-भाषी सज्जन इधर ध्यान दें तो कलकत्ते में ही नहीं बंगाल तथा आसाम में हिन्दी का प्रचार कार्य होना कोई कठिन नहीं है। आप बंगाली छात्रों को छात्रवृत्ति देकर हिन्दी प्रचारक बना सकते हैं। बोल-चाल की भी भाषा चार महीने में पढ़ाकर और परीक्षा लेकर आप लोग हिन्दी का कोई प्रमाण पत्र दे सकते हैं। मेरे जैसे आदमी को भी, जिसे समय बहुत कम मिलता है आप हिन्दी पढ़ाइए और परीक्षा लीजिए। हमें लोग जो मजदूर आन्दोलनों में काम करते हैं हिन्दुस्तानी भाषा

१४ सितम्बरः हिन्दी दिवस कुछ पुराने संस्मरण

—डा० भवानी लाल भारतीय, अध्यक्ष दयानन्द चेयर, पंजाब विश्व विद्यालय चण्डीगढ़

हिन्दी को राष्ट्र भाषा के रूप में स्वीकार करने तथा उसे अखिल भारतीय अभिव्यक्ति के सबल माध्यम के रूप में प्रयुक्त करने का विचार सर्व प्रथम उन महापुरुषों के मस्तिक में आया था। जो स्वयं हिन्दी भाषी नहीं थे। आर्यसमाज के संस्थापक स्वामी दयानन्द सरस्वती, जिनकी मातृ-भाषा गुजराती थी, हिन्दी को राष्ट्रभाषा के रूप में देखने वाले प्रथम युग द्रष्टा पुरुष थे। बंगाल में पुर्नजागरण के ज्योतिर्धर राजाराम मोहनराय तथा केशवचन्द सेन जैसे व्यक्तियों को भी यह आभास हो गया था कि देर सबेर हिन्दी ही इस देश की राष्ट्रभाषा बनेगी। बंगाल के न्यायमूर्ति शारदा चरण मित्र ने तो "देवनागर"नामक मासिक पत्र निकाल कर समस्त भारतीय भाषाओं को नागरीलिपि में प्रकाशित करने का एक महान प्रयत्न किया था। कहना नहीं होगा कि भारतेन्दु कालीन हिन्दी साहित्य में जो राष्ट्रीय जागरण का एक नवीन स्वर सुनाई देता था। वही इस बात का साक्षी है कि हिन्दी के माध्यम से ही समस्त देश में नवीन राजनीतिक तथा सामाजिक चेतना लाने के लिए हिन्दी का लेखक एवं साहित्यकार कृत संकल्प हो चुका था।

१८९३ ई० में नागरी प्रचारिणी सभा की स्थापना हुई जिसमें हिन्दी साहित्य के सर्वतोमुखी उत्थान का कार्यक्रम बनाया। इसी सभा के तत्वावधान में जब १९१० में हिन्दी साहित्य सम्मेलन की स्थापना हुई तो यह स्पष्ट हो गया कि अब सम्मेलन के ही माध्यम से राष्ट्रभाषा का व्यापक अभियान चलाया जाएगा। सम्मेलन के प्रारम्भिक कार्यकर्त्ताओं में महामना मालवीय जी एवं पुरुषोत्तमदास टण्डन के नाम उल्लेखनीय हैं। हिन्दी साहित्य सम्मेलन धीरे-धीरे शक्ति ग्रहण कर रहा था। परन्तु जब महात्मा गांधी ने सम्मेलन का अध्यक्ष बनना स्वीकार किया तो राष्ट्र भाषा आन्दोलन में नवीन गति एवं नवीन स्फूर्ति आई। दक्षिण अफ्रीका में मानवीय अधिकारों की बाजी लगा देने वाले गांधी ने भारत में आकर यह अनुभव किया कि इस देश का स्वाधीनता आन्दोलन तब तक गूंगा ही रहेगा, जब तक कि राष्ट्र को उसकी वाणी और उसकी भाषा नहीं मिलेगी। १९१९ में अमृतर कांग्रेस के स्वागताध्यक्ष के पद से स्वामी श्रद्धानन्द ने स्वागत भाषण दिया वह इस राष्ट्रीय सस्था की वेदी से दिया गया प्रथम हिन्दी भाषण था।

महात्मा गांधी ने सम्मेलन का अध्यक्ष पद दो बार स्वीकार किया। ये दोनों सम्मेलन इन्दौर में ही स्वीकार हुए थे।

सम्मेलन की अध्यक्षता स्वीकार करने में महात्मा जी का प्रयोजन स्पष्ट था। वे एक ओर तो कांग्रेस के माध्यम से देश की सामान्य जनता की आशाओं और आकांक्षाओं को अभिव्यक्ति देना चाहते थे तो दूसरी ओर उनका प्रयत्न यह भी था कि हिन्दी साहित्य सम्मेलन के माध्मम से राष्ट्रभाषा हिन्दी के आन्दोलन को तीव्र किया जाय। गांधी जी की प्रेरणा से ही अहिन्दी भाषी प्रांतों में हिन्दी प्रचार का व्यापक कार्यक्रम बनाया गया। दक्षिणी भारत में हिन्दी प्रचार सभा की स्थापना हुई और गांधी जी ने अपने सबसे छोटे पुत्र देवदासगांधी को दक्षिण भारत विशेषतः तमिल नाडु में हिन्दी प्रचारक बनाकर भेजा। यह बात भी स्मरणीय है कि चक्रवर्ती रामगोपालाचारी की पुत्री कु० लक्ष्मी से देवदास जी का जो प्रणय बन्धन हुआ उसके पीछे भी दोनों के हृदय में विद्यमान हिन्दी प्रेम तथा राष्ट्र भाषा के सम्मिलित रूप से कार्य करने की लालसा ही थी। गांधी जी के निर्देश पर ही कांग्रेस ने भी अपनी समस्त कार्यवाही हिन्दी हिन्दुस्तानी में चलाने का संकल्प बहुत पहले ही ले लिया था। यह दूसरी बात है कि इस प्रस्ताव का क्रियान्वयन कभी भी पूरी निष्ठा के साथ नहीं किया। सन् १९३७ में जब अनेक प्रान्तों में कांग्रेस की सरकारें स्थापित हुईं तो हिन्दी प्रचार के महत्वाकांक्षी कार्यक्रम बनाये गये। बाद में हिन्दी के विरोध का झण्डा उठाने वाले तत्कालीन मद्रास राज्य के मुख्य मन्त्री चक्रवर्ती राजगोपालाचार्य भी उस युग में हिन्दी के कट्टर समर्थक थे। उन्होंने अपने प्रांत के विद्यालयों में चलने वाली हिन्दी पाठशालाओं की भूमिका स्वयं हिन्दी में लिखी थी।

महात्मागांधी के तेजस्वी एवं प्रवर व्यक्तित्व से ही प्रेरणा लेकर अनेक राष्ट्रनेता राष्ट्रभाषा के अभ्युत्थान के कार्यक्रम में जुट गये। डा० राजेन्द्र प्रसाद, सेठ जमना लाल बजाज, आचार्य विनोबा, काका कालेलकर, सम्पूर्णानन्द, सेठ गोविन्द दास जैसे गांधीवाद में अनन्य-निष्ठा रखने वाले कांग्रेस कर्मों तथा कार्यकर्त्ता राष्ट्रभाषा के कार्य को स्वतन्त्रता प्राप्ति के कार्य जितना ही महत्व देते थे। वर्धा में राष्ट्रभाषा का प्रचार समिति का पृथक गठन किया गया और उसी के माध्यम से अहिन्दी भाषी आन्दोलनों की व्यापकता एवं लोकप्रियता का अनुमान इसी बात से लगाया जा सकता है। कि स्व० बाबू राव विष्णु पराडकर जैसे पत्रकार डा० अमरनाथ झा सदृश विद्वान तथा शिक्षा शास्त्री राहुल सांकृत्यायन जैसे पुरातत्वविद् एवं साहित्यकार तथा गोस्वामी गणेशदत्त जैसे धार्मिक नेता भी हिन्दी के कार्य हेतु सम्मेलन के मंच पर आये।

राष्ट्रभाषा आन्दोलनको एक प्रबल धक्का तब लगा जब महात्मा गांधी ने सम्मेलन से अपना त्यागपत्र दे दिया। इसका कारण बताते हुए उन्होंने कहा कि उनकी धारणा के अनुसार राष्ट्रभाषा के लिये हिन्दी की अपेक्षा हिन्दुस्तानी का प्रयोग होना चाहिये। वे यह भी चाहते थे कि इस हिन्दुस्तानी भाषा को देशवासी नागरी तथा फारसी दोनों लिपियों में लिखें। सम्मेलन के लिए अपनी निर्धारित नीति हटकर महात्मा जी का मार्ग स्वीकार करना था। फलतः हिन्दी साहित्य सम्मेलन के उदयपुर अधिवेशन में टण्डन जी के आग्रह पर महात्मा जी का त्याग पत्र खिन्न भाव से स्वीकार कर लिया गया। महात्मा जी के सम्मेलन से अलग होते ही अनेक राष्ट्रीय नेता भी राष्ट्रभाषा आन्दोलन से पृथक होने की स्थिति में आ गये अब महात्माजी ने हिन्दुस्तानी प्रचार सभा के माध्यम से फारसी शब्द-बहुल हिन्दुस्तानी का समर्थन आरम्भ किया। डा० जाकिर हुसैन पं० सुन्दरलाल आदि उनके साथ रहे।

परन्तु देश विभाजन के साथ ही हिन्दी हिन्दुस्तानी का विवाद स्वतः शान्त हो गया। अब जब देश का संविधान का निर्माण होने लगा तो राज्यभाषा सम्पर्क भाषा तथा राष्ट्रभाषा के सम्बन्ध में गम्भीरता से विचार किया गया। यह तो स्पष्ट ही था कि स्वतन्त्र देश में अंग्रेजी जैसी किसी विदेशी भाषा को ही स्वीकार करना हो

की जरूरत को हर रोज महसूस करते हैं। बिना हिन्दुस्तानी भाषा जाने हम उत्तरी भारत के मजदूरों के दिल तक नहीं पहुंच सकते। अगर आप लोग हम सबके लिए हिन्दी पढ़ाने का इन्तजाम कर देंगे तो यह मैं आपको विश्वास दिलाता हूं कि हम लोग आपके योग्य शिष्य होने का भरपूर प्रयत्न करेंगे। अन्त में बंगाल के निवासियों से और खास तौर से यहां के नवयुवकों से मेरा अनुरोध है कि वे हिन्दी पढ़ें जो लोग अपने पास से शिक्षक रखकर पढ़ सकते हैं वे वैसा करें। आगे चलकर हिन्दी प्रचार का भार उन्हीं पर पड़ेगा, यद्यपि प्रारम्भ में हिन्दी प्रान्तों से सहायता लेना अनिवार्य है। दस-बीस हजार या लाख दो लाख आदमियों के हिन्दी पढ़ लेने का महत्व केवल पढ़ने वालों की संख्या पर निर्भर नहीं है। यह कार्य बड़ा दूरदर्शितापूर्ण है और इसका परिणाम बहुत दूर आगे चलकर निकलेगा। प्रान्तीय ईर्ष्या द्वेष को दूर करने में जितनी सहायता इस हिन्दी प्रचार से मिलेगी उतनी दूसरी किसी चीज से नहीं मिल सकती।

हिन्दुओं के देश में हिन्दुओं का भविष्य क्या है ?

—श्री वीरेन्द्र जी

धर्म निरपेक्षता के नाम पर कुछ लोग अपने आपको या दूसरों को धोखा में रखना चाहें तो उन्हें कोई रोक नहीं सकता। किन्तु तथ्यों पर चाहे कितना पर्दा डालने का प्रयास किया जाए इस सत्य से इन्कार नहीं हो सकता कि भारत देश हिन्दुओं का ही देश है। इसीलिए १९४७ से पूर्व इसका नाम हिन्दुस्तान था। अगर इस देश का मुसलमान भी किसी दूसरे देशमें चला जाता था तो उसे भी हिन्दू ही कहा जाता था।

"अंग्रेज ने फूट डालो और शासन करो" के सिद्धान्त पर अमल करते हुए पहले मुसलमानों को हिन्दुओं से अलग किया, फिर सिखों और हिन्दुओं में फूट डालने का प्रयास किया। ईसाइयों को हिन्दुओं से अलग करने के लिए किसी प्रयास की जरूरत न थी, क्योंकि ईसाई थे ही हिन्दुओं से अलग। इस्लाम और ईसाइयत दोनों बाहर से आए थे। दोनों इस देश में पांव जमा सके थे। क्योंकि उनकी पीठ पर सत्ता की शक्ति थी।

१९४७ में हालात कुछ बदल गए। हिन्दुस्तान की जगह भारत ने ले ली। जो इस देश का प्राचीन नाम था। कुछ लोग इसे आर्यवर्त भी कहते थे। हमारा देश बहुत प्राचीन है शायद दुनिया में सबसे पुराना। इसका एक प्रमाण यह भी है कि इसके धर्म ग्रन्थ वेद विश्व पुस्तकालय में सबसे प्राचीन धर्म ग्रन्थ हैं। कुरान ५ सौ वर्ष का है, बाइबल को भी अभी दो हजार वर्ष नहीं हुए। वेद के बारे में कोई पांच हजार वर्ष कहता है तो कोई दस हजार वर्ष। कई पश्चिमी इतिहासकार वेदों को दस और पन्द्रह हजार वर्ष पुराना कहते हैं, लोकमान्य तिलक ने वेदों की आयु २२ हजार वर्ष बताई है।

आयु चाहे कितनी हो इससे तो इन्कार नहीं हो सकता कि वेद विश्व में सबसे पुराने धर्म ग्रन्थ हैं। चूंकि इनका जन्म भारत में हुआ था इसलिए हमारा भारत भी विश्व में सबसे पुराना देश है। इसीलिए हम कहते हैं कि इसकी संस्कृति सबसे पुरानी संस्कृति है। मिस्र, रोम और यूनान जैसे देश भी यह दावा करते हैं कि उनकी संस्कृति भी सबसे पुरानी है। इसमें सन्देह नहीं कि वह भी बहुत पुरानी है किन्तु इतनी नहीं जितनी हमारी वैदिक संस्कृति। इसीलिए तो डा० इकबाल ने कहा था:—

> कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी।
> सदियों रहा है दुश्मन दौरे जमां हमारा॥
> ईरान मिस्रो, रोमा सब मिट गए जहां से।
> बाकी मगर है अब तक नामोनिशां हमारा॥

इकबाल एक मुसलमान थे और कट्टर मुसलमान। पाकिस्तान बनवाने में उनका बड़ा हाथ था। किन्तु वह भी देश की महानता से इन्कार न कर सकते थे। इस्लाम को इस देश में आए अभी लगभग १२०० वर्ष ही हुए हैं। सबसे पहली लड़ाई एक अरब मुहम्मद बिन कासिम ने ७१२में की थी। उसका हमला सिंध पर हुआथा। जहां उस समय एक हिन्दू का राज था। उस समय तक यह देश कई भागों बंट चुका था। छोटे छोटे सूबे बने हुए थे। हर सूबा का एक सूबेदार था। इसका यह परिणाम हुआ कि बाहर से आए हमलावरों के लिए अपने पांव जमाना आसान हो गए। कोई अरब से आ गया कोई अफगानिस्तान से आ गया। कोई टर्की से आ गया तो कोई यूनान से आ गया। हमारा यह देश सोने की खान समझा जाता था। जो आता इसे लूट कर ले जाता। किसी ने स्थाई रूप से अपने पांव नहीं जमाए। जब मुस्लिम शासक कमजोर हो गए तो फांसीसी, डच और अंग्रेज आने शुरु हो गए। अन्ततः अंग्रेजों ने सारे देश पर कब्जा कर लिया।

अंग्रेज यहां कोई अढ़ाई सौ वर्ष रहे। उन्होंने भी इस देश पर बहुत अत्याचार किये थे। हमें खूब लूटा। किन्तु अंग्रेजी में कहते हैं कि GIVE THE DEVIL HIS DUE. यानि शैतान भी अगर कोई अच्छा काम करे तो उसे उसका श्रेय मिलना चाहिए। अंग्रेज ने हमारे साथ जो भी दुर्व्यवहार किया उसके बावजूद हम इन्कार नहीं कर सकते कि उन्होंने इस देश को वह एकता दी जो इससे पूर्व इतिहास में इसे कभी न मिली थी। इतना बड़ा भारत संसार के सामने पहले कभी नहीं आया था। अंग्रेज जाता जाता एक शरारत कर गया। उसने पाकिस्तान के क्षेत्र को भारत से अलग कर दिया। एक लिहाज से उसने अच्छा ही किया। आज देश में ज्यादा एकता है, अखण्डता है, देश-प्रेम की भावना पहले से अधिक है। कुछ ताकतें इसके फिर टुकड़े करने का प्रयास कर रही हैं किन्तु वह सफल नहीं हुई न होंगी।

सवाल पैदा होगा कि अगर अंग्रेज के आने से पहले यह देश इतने टुकड़ों में बंटा हुआ था तो फिर यह एक कैसे हो गया? आज भी यह अपनी एकता कायम रखने के लिए इतना प्रयास क्यों कर रहा है। जब इस्लाम इस देश में आया था तो इसकी चर्चा करते हुए इकबाल ने कहा था—

> ए आबे रूदे गंगा वह दिन है याद तुझको।
> उतरा तेरे किनारे जब कारवां हमारा॥

गंगा और जमुना की महानता इकबाल जैसे कट्टर मुसलमान को भी प्रभावित करती रही है। यही इस देश की महानता का मर्म है। अब इस पर कई तरफ से हमले हो रहे हैं। इसीलिए यह प्रश्न उठ रहा है कि हिन्दुओं का भविष्य क्या है।

(वीर अर्जुन ९-८-८५ से साभार)

पड़ता। जब विधान निर्मात्री सभा के समक्ष समस्त देश का सामान्य काम काज चलाने के लिए एक सम्पर्क भाषा तथा भारतीय संघ की राजभाषा का प्रश्न आया तो विभिन्न विचारों के नेताओं का आन्दोलन एवं उद्वेलित होना भी स्वाभाविक ही था।

ऐसी परिस्थिति में स्व० कन्हैयालाल मुन्शी तथा डा० गोपाल स्वामी आयगार ने मिलकर एक सूत्र प्रस्तुत किया जिसे संविधान सभा ने एक मत से स्वीकार कर लिया। इस फार्मूले के अनुसार नागरी लिपि में लिखी जाने वाली हिन्दी को भारतीय गणराज्य की राजभाषा घोषित किया गया था, परन्तु यह भी प्रावधान रखा गया कि जब तक समस्त राजकर्मचारी हिन्दी लिखने का ठीक-ठीक अभ्यास न कर लें, तब तक राजकाज चलाने की सुविधा की दृष्टि से आने वाले पन्द्रह वर्षों तक अंग्रेजी भी सहराजभाषा के रूप में चलती रहेगी। आज कई लोग संविधान सभा के एकमत होकर हिन्दी को सम्पर्क भाषा स्वीकार करने का गलत अर्थ लगाकर उसकी यह व्याख्या कर रहे हैं कि उस समय हिन्दी और अंग्रेजी के पृथक-पृथक समर्थन में संविधान सभा के सदस्यों का मतदान हुआ था और हिन्दी एक अधिक मत (वोट) से जीत गयी और उसे यह मत संविधान निर्मात्री सभा के अध्यक्ष डा० राजेन्द्रप्रसाद का मिला था। यह कथन सर्वथा गलत तथा भ्रामक है। संविधान सभा के अनेक सदस्य आज भी जीवित हैं। और वे इस बात की साक्षी दे सकते हैं कि उस समय हिन्दी को एक मत अर्थात् सर्वसम्मति से ही राजभाषा स्वीकार किया गया था। यह तो इतिहास का एक दुखद अध्याय ही है कि ३८ वर्ष की अवधि के समाप्त हो जाने पर भी राजभाषा के रूप में हिन्दी को पूर्ण प्रतिष्ठा प्राप्त नहीं हुई और वह यथा पूर्व उपेक्षा की शिकार हो रही है। १४ सितम्बर का हिन्दी दिवस हमें आत्म विश्लेषण की प्रेरणा देता है तथा हमें यह संकल्प करने के लिए कहता है कि हम राष्ट्रभाषा के प्रति अपने दायित्व को समझें तथा हिन्दी को उसका यथोचित स्थान प्राप्त कराने का संकल्प कर लें।

देवरस कहते हैं आर. एस. एस. भाजपा पर प्रभाव नहीं डालता

—श्री धर्मपाल पांडेय

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ कदापि राजनैतिक संगठन नहीं है। स्वयं सेवक जिस भी राजनीतिक दल को चाहे उसका समर्थन कर सकते हैं। हो सकता है कुछ स्वयं सेवकों ने कांग्रेस का समर्थन किया हो। हम उनसे नही पूछते कि आप किस राजनीतिक दल के साथ हैं। अगर लोगों की यह धारणा है कि आर. एस.एस. ने कांग्रेस का साथ दिया तो इसका एक कारण पत्रकार भी हैं जो इस बारे में लिखते रहते हैं कि चुनाव में अमुक दल क्यों हारा। हो सकता है कुछ पत्रकारों ने सोचा हो कि गत चुनाव में भाजपा इसलिए हारी कि स्वयं सेवकों ने कांग्रेस का साथ दिया।

नागपुर के बड़ कस चौक के पास महल क्षेत्र में तीन मंजिला भवन है जिसका रखरखाव ठीक नहीं। इसी में राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ का मुख्य कार्यालय है। इसके बाहर कोई बोर्ड या नाम की तख्ती नहीं लगी। अगर कोई स्थानीय व्यक्ति आपके साथ न हो तो आप तक पहुंच भी नहीं पायेंगे। गेट के अन्दर घुसते ही सामने गैरज है जिसमें कार्यकर्त्ताओं के स्कूटर और एकाध कार रखी है। गैरज के दायीं ओर रसोई घर है। उसमें झांकें तो किसी सराय का रसोईघर लगेगा।

गेट के पास खादी का धोती कुर्ता पहने एक देहाती सा कार्यकर्त्ता बैठा है। आप पूछते हैं कि क्या करोड़ों स्वयंसेवको वाले संघ का, जो सदा वादविवाद का विषय बना रहता है, यही मुख्य कार्यालय है तो वह पीछे की ओर इशारा करके सिर हिला देता है।

मैं नागपुर गया तो सोचा कि संघ के मुख्य कार्यालय को देखें, कि वहां कैसे लोग हैं। भवन के मुख्य हाल की ओर जाने वाले बरामदे में उन्हें एक वयोवृद्ध प्रचारक श्री गोखले मिले जो तख्त पर बैठे डाक देख रहे थे। मैंने उनसे बातचीत की और वे मुझे हाल के एक कोने में बने छोटे से संग्रहालय मे ले गए बहां कांच लगी अलमारियों में वे तख्तियां और मूर्तियां रखी हैं जो सरसंघ चालक श्री बाऊराव देवरस को जनता ने अपने "स्नेह" के प्रतीक के रूप में भेंट की थी। उनकी बात करते हुए श्री गोखले की आवाज गर्व में डूब जाती है और वे बड़ी श्रद्धा से सारा वृतान्त सुनाते हैं कि कहां के लोगों ने देवरस जी को क्या भेंट किया।

एक कोने की अलमारी में संघ के संस्थापक डा० हेडगेवार की हस्तलिखित चिट्ठियां और डाक्टरी की एक पाठ्य-पुस्तक रखी है जो वे कलकत्ता में डाक्टरी की पढ़ाई के दौरान पढ़ा करते थे। श्री गोखले बड़ी श्रद्धा से बयान करते हैं कि कैसे स्वर्गीय डा० साहिब की चिट्ठियां इकट्ठी की गयी और अब आने वाली नस्लों के लिए सम्भाल कर रखी गई हैं।

उनसे संघ की सदस्यता के बारे में पूछना बेकार था। सभी जानते हैं कि सदस्यों की सूची नही रखी जाती। श्री गोखले ने कहा—सभी स्वयंसेवक हैं और शाखाओं के प्रभारी ही जानते हैं कि उनकी कितनी संख्या है।

उनसे पूछा कि क्या सरसंघ चालक से भेंट सम्भव है तो बोले "क्यों नहीं लेकिन अभी वे विश्राम कर रहे हैं, दोपहर बाद आइए। मैंने तीन बजे लौटने का फैसला किया।

तीन बजे पहुंचे तो रसोई घर में चल रही थी। सरसंघ चालक और कई अन्य व्यक्ति पालती मारे चटाइयों पर बैठे चाय पी रहे थे। मैं भी उनमें शामिल हो गया। चाय के बाद सरसंघ चालक से बहुत-से प्रश्न पूछे गए। पेश हैं इस भेंट वार्ता के कुछ अंश—

प्रश्न—राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ और भारतीय जनता पार्टी के परस्पर सम्बन्ध कैसे हैं?

उत्तर—कैसा सम्बन्ध? राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ और भारतीय जनता पार्टी के बीच कोई प्रत्यक्ष सम्बन्ध नही है। यह ठीक है कि भाजपा के कुछ सदस्य संघ के स्वयं सेवक भी हैं लेकिन संघ भाजपा पर कोई प्रभाव नहीं डालता और न उस पर कोई नियन्त्रण रखता है, जैसा कि कुछ लोग समझते हैं। आप जानते ही हैं कि पुरानी जनता पार्टी दोहरी सदस्यता के प्रश्न को लेकर ही टूटी थी जब मधु लिमये फर्नांडीज और उनके साथियों ने यह विवाद उठाया था। जिन लोगों को दोहरी सदस्यता का आरोप बुरा लगा उन्होंने जनता पार्टी टूटने के बाद भारतीय जनता पार्टी का गठन किया। हमारे मन में भाजपा के प्रति स्नेह की भावना अवश्य है लेकिन हम उसके कार्यकलाप में कोई बाधा नहीं डालते। वह स्वतन्त्र रूप से काम करती है।

प्रश्न—लोग कहते हैं कि १९८० के चुनाव में संघ ने कांग्रेस (आई) का साथ दिया। इस बारे में आपका क्या कहना है।

उत्तर—यह बिलकुल गलत धारणा है। संघ राजनीतिक संगठन नहीं है। स्वयंसेवक जिस भी राजनीतिक दल को चाहें उसका समर्थन कर सकते हैं। हो सकता है कि कुछ स्वयं सेवकों ने कांग्रेस का समर्थन किया हो। हम कभी उनसे नहीं पूछते कि आप किस राजनीतिक दल के साथ हैं।

प्रश्न—लेकिन ऐसी धारणा तो है, आपका क्या विचार है?

उत्तर—है, लेकिन इसका कारण शायद आप पत्रकार लोग हैं जो इस बारे में लिखते रहते हैं कि चुनाव में अमुक राजनीतिक दल क्यों हारा या जीता। हो सकता है कि कुछ पत्रकारों ने सोचा हो कि भाजपा इसलिए हारी कि स्वयसेवको ने कांग्रेस का साथ दिया।

प्रश्न लेकिन भाजपा तो बहुत बुरी तरह हारी, है न?

उत्तर—जी हां, हारी तो सही। श्रीमती गांधी की हत्या का एक स्वाभाविक परिणाम यह था कि लोगों के मन में कांग्रेस के लिए सहानुभूति का तूफान उमड़ आया था। चुनाव में हार या जीत इस बात पर निर्भर है कि पार्टी की कैसी छवि है।

प्रश्न—आज देश में भ्रष्टाचार बड़े पैमाने पर व्याप्त है। आपके विचार में इसे कैसे रोका जा सकता है।

उत्तर—इस बारे में तो दो राय नहीं हैं कि देश में भ्रष्टाचार बड़े पैमाने पर व्याप्त है। अगर ऐसा ही चला तो देश का भविष्य अन्धकारमय है। लेकिन महत्व तो मानवों के स्वभाव का है। पद्धति कोई भी हो कितनी ही अच्छी क्यों न हो जब तक उसे चलाने वाले ईमानदार नहीं होंगे और देश के प्रति निष्ठा उनके मन में नहीं होगी, सफलता नहीं मिलेगी।

भ्रष्टाचार रोकने का एक ही तरीका है और वह यह कि जो लोग राजनीति में हैं, वे ईमानदारी का उदाहरण बनें। कानूनों से भ्रष्टाचार नहीं रुक सकता। दुर्भाग्य की बात यह है कि जो सत्तारूढ़ है वे भ्रष्टाचारियों को प्रश्रय दे रहे हैं। यही कारण है कि भ्रष्टाचार इतना अधिक फैल रहा है।

प्रश्न—हमारे युवा प्रधानमन्त्री और उनकी कार्य शैली के बारे में आपकी क्या राय है?

उत्तर—चुनाव के दिनों के राजीव आज के राजीव से भिन्न थे। वे आनन्दपुर साहिब प्रस्ताव और वैसी अन्य बातें कहा करते थे लेकिन प्रधानमन्त्री की गद्दी पर बैठ कर उनकी कार्य शैली बदल गई है। यह तो पंजाब समस्या पर उनकी कार्यवाही से स्पष्ट हो गया है।

(क्रमशः)

(२९-८-८५ वीर प्रताप से साभार)

१००० सिख नवयुवक लापता

एक अनुमान के अनुसार पंजाब के कोई एक हजार नवयुवक सिख लापता हैं। यह एक हजार इन दो हजार नवयुवकों में से हैं जिन्हें पुलिस से ब्ल्यू स्टार आप्रेशन के बाद संदिग्ध सरगर्मियों के के लिए गिरफ्तार किया था और बाद में श्री राजीव गांधी ने सन्त हरचन्द सिंह लोंगोवाल से समझौता करने के बाद रिहा करना शुरु किया। शायद कुछ को इससे पहले भी रिहा किया गया ताकि राज्य में अच्छा वातावरण बन जाए और सबसे अधिक इस बात के लिए कि अकालियों पर यह प्रकट कर दिया जावे कि कांग्रेस सरकार पुरानी बातों को भूलकर एक नया दौर शुरु करना चाहती है। जब अभी समझौता नहीं हुआ था तो सब अकाली और इनके कई गैर अकाली समर्थक और विशेषत: ये हमारे बुद्धिजीवी सरकार की जान खाये जा रहे थे कि इन सब "निर्दोष" नवयुवकों को रिहा किया जाये। ये आतंकवादी केवल इसलिये बने क्योंकि ब्ल्यू स्टार आप्रेशन ने इनकी धार्मिक भावनाओं को चोट पहुंचाई थी वर्ना दिल से आज भी ये भारत के वफादार है। मजा यह कि पुलिस और सी० आई० डी० इन लोगों की इस विशाल पैमाने पर रिहाईके विरुद्ध थी लेकिन इनकी सिफारिशों को दृष्टि से ओझल करते हुए इन्हें छोड़ दिया गया। सन्त जी भी इनकी रिहाई पर बड़ा जोर दे रहे थे। सन्तजी को तो इनकी हिमायत का मूल्य देना पड़ा।

आश्चर्य तो इस बात का है कि जब हमारे अधिकारी झुकते हैं तो फिर यह नहीं देखते कि शासन व्यवस्था पर इसका क्या प्रभाव होगा। सन्त लोंगोवाल का तो इन लोगों की रिहाई पर जोर देना विचारणीय था लेकिन सरकार को भी देखना चाहिए कि इसका परिणाम क्या होगा। पुलिस इसकी नाकारा है, सरकार अयोग्य है और अनाड़ियों की तरह व्यवहार में विश्वास रखती है। अधिकारी जबानी खर्च में विश्वास रखते हैं। इन सबकी हानि गरीब नागरिकों को भुगतनी पड़ गई है। आतंकवादियों ने इस समय यह समझ लिया है कि सरकार इनके विरुद्ध कोई कार्यवाही नहीं करेगी। वह तो इन्हें सन्तुष्ट करने के लिए तड़प रही है। अधिक से अधिक गृहमन्त्री गला फाड़ कर कह देंगे कि पुलिस को हिदायतें कर दी गई हैं कि आतंकवाद को सख्ती से कुचल दे। इस हिदायत का प्रभाव यह हुआ है कि सरहाली में स्टेनगनों से सन्नद्ध दो नवयुवक आते हैं। एक दुकान में घुस जाते हैं और दो मनुष्यों को सबके सामने गोलियों से भून जाते हैं और खरामा खरामा बाजार से निकल जाते हैं। जनता सब कुछ देख रही थी। वह क्या करती? पुलिस वाले वहां उपस्थित थे किन्तु उन्होने दूसरी ओर देखना शुरु कर दिया। यह है वास्तव में परिणाम राजीव लोंगोवाल समझौते का। कोई मसले की गहराई में आएगा तो इसे मेरे इन शब्दों की सच्चाई का अनुमान होगा।

—नरेन्द्र

(५-९-८५ दैनिक वीर अर्जुन से साभार)

अमेरिका में भारतीय स्वतन्त्रता दिवस

न्यूयार्क अमेरिका में रहने वाले प्रवासी भारतीयों ने भारत का स्वतन्त्रता दिवस आर्य समाज के महान् नेता श्री धर्मकीत जिज्ञासु के नेतृत्व में बड़े ही उत्साह वर्धक वातावरण में मनाया। इस उपलक्ष में वहां एक विशाल शोभा यात्रा का भी आयोजन किया गया। इस शोभा यात्रा में सुसज्जित ट्रकें (जिन्हें वहां 'फ्लोट्स' कहते हैं जो बड़ी ही आकर्षित होती हैं।) सम्मिलित थीं। उनमें बैठे हुए ओ३म् ध्वज लिए वहां के आर्य नर-नारी बड़ी श्रद्धा से गाना गा रहे थे। विशेष रूप से दो गीतों को सुनकर सड़कों के किनारे खड़े दर्शक आनन्द से झूम उठे। वे थे गीत—

१—दयानन्द के वीर सैनिक बनेंगे—दयानन्द का कार्य पूरा करेंगे।।
२—वेदों का डंका आलम में—बजवा दिया ऋषि दयानन्द ने।।

इस प्रकार की शोभा यात्रा अमेरिका वासियों ने पहली बार देखी। दूसरे दिन वहां के स्थानीय पत्रों ने इस शोभा यात्रा की भूरि-भूरि प्रशंसा की। वहां के आर्य बन्धु अक्टूबर ८५ में ही न्यूयार्क में विशाल आर्य समाज मन्दिर की स्थापना के लिये तैयार और प्रयत्नशील है जिस पर अनुमानित १०,००० डालर व्यय होंगे।

आशा है यह शुभ समाचार समस्त देशवासियों, आर्य बन्धुओं को आर्यसमाज के प्रचार एवं प्रसार के लिए प्रेरणादायक सिद्ध होगा।

— सभामन्त्री

स्वामी दयानन्द पर लिखी किताबों पर पाबन्दी की मांग

लखनऊ ५ सितम्बर (जनसत्ता) लोकदल सदस्यों ने बुद्धवार को उत्तर प्रदेश विधान सभा में मांग की कि स्वामी दयानन्द पर लिखी मेरठ के एक कालेज के लेक्चरार की किताबों पर पाबन्दी लगाई जाये। उनका कहना था कि इन किताबों में स्वामी दयानन्द की बदनामी की गई है।

लोक दल के सदस्य बेनीप्रसाद वर्मा ने ये किताबें अध्यक्ष को सौंपी अध्यक्ष ने ये जरूरी कार्रवाई के लिए मुख्यमन्त्री को सौंप दीं। श्री वर्मा ने कहा कि इन किताबों में स्वामी दयानन्द के लिए अपमानजनक भाषा का प्रयोग किया गया है।

(६-९-८९ जनसत्ता से साभार)

ईसाई युवती मौनिका ने वैदिकधर्म स्वीकारा

ग्वालियर २१ अगस्त। विगत दिवस स्थानीय आर्यसमाज मन्दिर चित्रगुप्तगंज में २४ वर्षीय ईसाई युवती कु० मौनिका माईकल, भोपाल ने स्वेच्छा से "वैदिक धर्म" में प्रवेश किया। शुद्धि संस्कार आर्य समाज के पुरोहित श्री मंगलदेव शास्त्री ने कराया। शुद्धि के बाद मौनिका का नाम "मेनका" रखा गया और श्री राकेश सक्सेना के साथ उसका विवाह संस्कार भी सम्पन्न हुआ। संस्था के मन्त्री किशोरीलाल गौतम के सद्प्रयत्नों से यह शुद्धि संस्कार हुआ। इस अवसर पर संस्था की प्रधान श्रीमती वरतरिया एवं अन्य उपस्थित सदस्यों ने वर-वधू को आशीर्वाद दिया।

—किशोरीलाल गौतम, मन्त्री

आर्य सत्याग्रह हैदराबाद के एक वीर सेनानी

श्री बलबीरसिंह (७५ वर्ष) सभा कार्यालय में गत सप्ताह पधारे। वे आर्यसमाज किशनगंज दिल्ली के सदा से सक्रिय कार्यकर्ता रहे हैं। उन्होंने बताया कि वे १९३९ में महाशय कृष्णजी के जत्थे में जिसमें ४ सौ आदमी थे, हैदराबाद सत्याग्रह में गए थे। उन्हें वहां ४॥ वर्ष सपरिश्रम कारावास की सजा हुई। २॥ मास के पश्चात् समझौता होने पर छोड़ दिये गये थे। वहां से लौटने पर फिर देहली क्लाथ मिल्स में ला० श्रीराम जी के कहने पर पुनः काम पर ले लिए गए थे। अब रिटायर्ड हैं और नागलोई समाज में हरिजन बस्ती सत्याग्रह में आर्टों में समाज का प्रचार कर रहे हैं। सबके साथ मिल से गये दसों व्यक्ति मर चुके हैं। केवल चौ० धर्मसिंह उनके जेल के साथियों में से हैं जो मिल में अब भी कम्पाउन्डर हैं। जेल में दी गयी यातनाओं का सजीव विवरण वे सुनाते रहे। ऐसे लोग आर्यसमाज की शक्ति हैं।

उत्तर प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा के भू० पू० भजनीक धर्मराज सिंह तथा एक अन्य स्कूटर ड्राइवर भी सभा में बड़ी विपन्न अवस्था में हैदराबाद सत्याग्रह के विवरण पिछले दिनों सुना रहे थे।

केन्द्रीय एवं राज्य सरकारों द्वारा इन सबको स्वाधीनता सेनानी सम्मान देने के लिए सभा के प्रधान ला० रामगोपाल जी शालवाले पूरा प्रयत्न करने में लगे हुए हैं।

—ब्रह्मदत्त स्नातक

सूचना

सार्वदेशिक पत्र के प्रेमियों को सार्वदेशिक श्रावणी विशेषांक समय पर पढ़ने को मिल गया होगा। मेरा आर्य समाजों के अधिकारियों से निवेदन है कि वह अपने उत्सवों आदि पर प्रचार हेतु "श्रावणी विशेषांक" मंगाना चाहें तो शीघ्र ही पत्र व्यवहार करें तथा जितनी कापी मंगाना चाहें २) रुपये प्रति कापी के हिसाब से मनिआर्डर भेजने की कृपा करें। जिससे कि आपको शीघ्र श्रावणी विशेषांक भेजा जा सके।

सच्चिदानन्द शास्त्री
उपमन्त्री
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
महर्षि दयानन्द भवन नई दिल्ली-२

पंजि० सं० डी० (सी०) १७८ सार्वदेशिक साप्ताहिक (१५-९-१९८५) बिना टिकट भेजने का लाइसेंस नं० U 85
R. N 626/57 Licensed to post without prepayment, License No. 93 Post in D.P.S.O. on 17-9-85

सम्पादक के नाम पत्र

हिन्दी विरोधी नीति

महोदय,

सेवा में निवेदन है कि आपने राष्ट्र भाषा हिन्दी के प्रति जो नीति अपनाई है वह सर्वथा दूरदर्शिता के विपरीत है।

(१) यह सभा इस विषय पर आपका विशेष ध्यानाकर्षित कराना चाहती है कि आसफ तथा निजाम जैसे मुस्लिम शासन काल में भी किसी ने हिन्दी का विरोध नहीं किया है। अपितु हिन्दी को ही बढ़ावा दिया है।

(२) आपके कुशल नेतृत्व में इस प्रकार की नीति को सरकार द्वारा अपनाना जहां राष्ट्र के संविधान का अपमान अनुभव किया जा रहा है वहीं आपके कुशल नेतृत्व की प्रतिष्ठा पर आघात भी प्रतीत किया जा रहा है। हिन्दी तथा तेलुगु वास्तव में इन दोनों का निकटतम सम्बन्ध है। हिन्दी तथा तेलुगु भारत तथा प्रान्त की सहयोगी भाषा ही नहीं अपितु एकता का भी द्योतक है।

(३) इस देश की उज्ज्वल परम्पराओं को यदि विकसित देखना चाहते हैं तो येन केन प्रकारेण हिन्दी को सहयोगी भाषा के रूप में प्रयोग करना ही होगा। जहां संविधान को गौरव मिलेगा वहीं तेलुगु प्रान्त का रहन सहन, व्यवहार शिष्टाचार, मर्यादा तथा शिक्षा दीक्षा से भी ओत प्रोत बना रहेगा। इसी में भलाई है।

(४) प्रान्त अथवा राष्ट्र को संकीर्ण दृष्टि से नहीं देखना चाहिए। प्रान्तों का निर्माण मानवों के कल्याणार्थ किया गया है।

(५) संकुचित विचारधारा से जहां नागरिकों के हृदय में वेदना होती है वहीं राष्ट्र के कर्णधारों को स्वयं बेचैनी का विषय भी उपस्थित करती है। आपको आवश्यक है कि आप नागरिकों के मनोभाव एवं हितों पर दृष्टि रख कर ही कोई नीति अपनाएं तो सरकार और नागरिकों के मध्य परस्पर की भावना जागृत नहीं होगी। विद्रोह होने पर कल्याण नहीं होता है।

(६) सरकार की शिक्षा नीति ऐसी होनी चाहिये जिसमें किसी भी भारत व प्रान्तवासी को विरोध न हो। साधारण मनुष्यों की अपेक्षा ऋषि मुनियों तथा राष्ट्र को आजादी की लड़ाई में अपने प्राणों की आहुति देकर स्वाधीनता की बलिवेदी पर जो निछावर हो चुके हैं। उनकी मर्यादा का आप अवश्य पालन करेंगे।

(७) प्रस्ताव—आर्य प्रतिनिधि सभा आन्ध्र प्रदेश सरकार की इस भाषा नीति का घोर विरोध करती है साथ ही सरकार से यह मांग करती है कि पूर्ववत जो पाठ्यक्रम चल रहा है उसके अनुसार ही शिक्षा पद्धति को स्थान देंगे। सभी राष्ट्र व प्रान्त का हित तथा ध्यान सदा रखना चाहिए। परमात्मा राज्य के कर्णधारों को सद्बुद्धि दे जिससे प्रान्त की भलाई बनी रहे।

—माणिकराव शास्त्री
सभा मन्त्री

शोक समाचार

—आर्य समाज के प्रमुख कार्यकर्ता श्री रामचन्द्र आर्य के पुत्र चि० रघुवीर की आकस्मिक और सन्देहास्पद अवस्था में मृत्यु पर १४-७-८५ को विशाल शोक सभा का गायत्री आश्रम सिकन्दराबाद में आयोजन किया गया।

सार्वदेशिक प्रेस, दरियागंज नई दिल्ली में मुद्रित तथा श्री ओमप्रकाश त्यागी मुद्रक और प्रकाशक के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा,
महर्षि दयानन्द भवन, नई दिल्ली-१ से प्रकाशित।

नई शिक्षा नीति

(पृष्ठ १ का शेष)

तथा निजी नौकरियों के लिए सभी विषयों की परीक्षा का माध्यम भारतीय भाषाएं ही रखी जायें। इससे जन सामान्य की ज्ञान-विज्ञान के प्रति रुचि बढ़ेगी और सर्वांगीण उन्नति में सबका समान योगदान रहेगा। रूस, चीन, जापान इत्यादि स्वतन्त्र देशों में सारी शिक्षा और सब पदों पर कार्य अपनी भाषा में ही होता है।

●—पब्लिक स्कूल देश में अलगाववाद की प्रवृत्ति उत्पन्न करते हैं। एक लोकतांत्रिक देश में यह सर्वथा अनुचित है कि एक बच्चे के विद्यालय की छतें वर्षों से चू रही हों उसे बैठने को फटी हुई टाट पट्टी मिले, उसे पढ़ाने वाला अध्यापक न हो और दूसरी ओर महलों जैसे सुसज्जित विद्यालय हों और ऊंचे-ऊंचे शुल्क लेकर उन्हें केवल पाठ्यक्रम के लिए ही नहीं अपितु अन्य क्रीड़ाओं और रुचि के कार्यों के लिए भी शिक्षक उपलब्ध कराये जायें। अतः या तो ऐसे पब्लिक स्कूलों पर प्रतिबन्ध लगायाजाय या सरकार धनी व्यक्तियों से धन लेकर सरकारी विद्यालयों में उनका उपयोग कर उन्हें आदर्श स्थिति में पहुंचाए। जिससे सभी छात्र-छात्राओं को समान अधिकार और अवसर मिल सके। परन्तु आदर्श स्थिति का अर्थ अंग्रेजी माध्यम और टाई लगाना कदापि नहीं होना चाहिये।

परीक्षा प्रणाली में भी सुधार की आवश्यकता है। प्रत्येक छात्र के स्तर के अनुसार उसके सर्वांगीण विकास को देखते हुए परीक्षा पद्धति विकसित की जानी चाहिये और ऐसे उपाय किये जाने चाहिये जिससे परीक्षा में नकल की प्रवृति स्वयं समाप्त हो।

राष्ट्रीय एकता के सूत्र में बांधने के लिए सभी छात्रों को वेद के संलग्न मन्त्रों का नियमित रूप से पाठ कराया जाय क्योंकि ये मन्त्र देशभक्ति संगठन एवं राष्ट्रीयता के द्योतक हैं। वेद किसी देश विशेष या सम्प्रदाय के न होकर मानव मात्र के लिए हैं। स्व॰ श्रीमती इन्दिरागांधी ने संयुक्त राष्ट्रसंघ एवं विदेशों में कई बार इन मन्त्रों का पाठ स्वयं भी किया था।

राष्ट्रीय प्रार्थना

ओ३म् आ ब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायताम्। आ राष्ट्रे राजन्यः शूर इषव्योऽतिव्याधी महारथो जायताम्। दोग्ध्री धेनुर्वोढानड्वानाशुः सप्तिः पुरन्धिर्योषा जिष्णू रथेष्ठा सभेयो युवास्य यजमानस्य वीरो जायताम्। निकामे निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो न ओषधयः पच्यन्तां योगक्षेमो नः कल्पताम्॥

(यजु॰ अ॰ २ मन्त्री २२)

"ब्रह्मन्! स्वराष्ट्र में हों, द्विज ब्रह्मतेजधारी।
क्षत्री महारथी हों, अरि-दल-विनाशकारी॥
होवें दुधारु गौवें, वृष अश्व आशुवाही।
आधार राष्ट्र की हो, नारी सुभग सदा ही॥
बलवान् सभ्य योधा, यजमान-पुत्र होवें।
इच्छानुसार वर्षे, पर्जन्य ताप धोवें॥
फल-फूल से लदी हों, औषध अमोघ सारी।
हो योग-क्षेमकारी, स्वाधीनता हमारी।"

※ ऋग्वेद का अन्तिम सूक्त ※

स समिद्युवसे वृषन्नग्ने विश्वान्यर्य आ।
इडस्पदे समिध्यसे स नो वसून्या भर॥१॥

हे प्रभो तुम शक्तिशाली हो बनाते सृष्टि को।
वेद सब गाते तुम्हें हैं कीजिये धन वृष्टि को॥१॥

संगच्छध्वं संवदध्वं स वो मनांसि जानताम्।
देवा भागं यथा पूर्वे सं जानाना उपासते॥२॥

प्रेम से मिलकर चलो बोलो सभी ज्ञानी बनो।
पूर्वजों की भाति तुम कर्त्तव्य के मानी बनो॥२॥

समानो मन्त्रः समितिः समानो, समानं मनः सह चित्तमेषाम्।
समानं मन्त्रमभि मंत्रये वो समानेन वः हविषा जुहोमि॥३॥

हों विचार समान सबके चित्त मन सब एक हों।
ज्ञान देता हू बराबर भोग्य पा सब नेक हों॥३॥

समानी व आकूतिः समाना हृदयानि वः।
समानमस्तु वो मनो यथा वः सुसहासति॥४॥

हों सभी के दिल तथा सकल्प अविरोधी सदा।
मन भरे हों प्रेम से जिससे बढ़ें सुख सम्पदा॥४॥

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःखभाग् भवेत्॥५॥

सबका भला करो भगवान् सब पर दया करो भगवान्।
सब पर कृपा करो भगवान्, सबका सब विधि हो कल्याण॥
हे ईश सब सुखी हों कोई न हो दुःखारी।
सब हों नीरोग भगवन् धनधान्य के भण्डारी॥
सब भद्र भाव देखें, सन्मार्ग के पथिक हों।
दुखिया न कोई होवे सृष्टि मे प्राणधारी॥

ओम् भूर्भुवः स्वः। तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्॥

हे प्राण स्वरूप दुःखहर्ता, सर्वव्यापक आनन्द के देने वाले प्रभो! आप सर्वज्ञ और सकल जगत् के उत्पादक हैं। हम आपके उस पूजनीय पापनाशक स्वरूप तेज का ध्यान करते हैं। जो हमारी बुद्धियों को प्रकाशित करता है। हे पिता! आप से हमारी बुद्धि कदापि विमुख न हो। आप हमारी बुद्धियों में सदैव प्रकाशित रहें और हमारी बुद्धियों को सत्कर्मों में प्रेरित करें, ऐसी प्रार्थना है।

ओ३म् विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परा सुव।
यद् भद्रन्तन्न आ सुव॥

यजु॰ अ॰ ३०। मं॰ ३॥

अर्थ हे (सवितः) सकल जगत् के उत्पत्तिकर्त्ता, समग्र ऐश्वर्ययुक्त (देव) शुद्धस्वरूप, सब सुखों के दाता परमेश्वर! आप कृपा करके (नः) हमारे (विश्वानि) सम्पूर्ण (दुरितानि) दुर्गुण, दुर्व्यसन और दुःखों को (परा, सुव) दूर कर दीजिये (यत्) जो (भद्रम्) कल्याणकारक गुण, कर्म, स्वभाव और पदार्थ हैं, (तत्) वह सब हमको (आ, सुव) प्राप्त कीजिए=कराइये॥

अग्ने नय सुपथा रायेऽअस्मान् विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्।
युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठान्ते नम उक्तिं विधेम॥

य॰ अ॰ ४०। मं॰ १६॥

अर्थ—हे (अग्ने) स्वप्रकाश ज्ञानस्वरूप सब जगत् के प्रकाश करने हारे (देव) सकल सुखदाता परमेश्वर! आप जिससे (विद्वान) सम्पूर्ण विद्यायुक्त हैं, कृपा करके (अस्मान्) हम लोगों को (राये) विज्ञान वा राज्यादि ऐश्वर्य की प्राप्ति के लिए (सुपथा) अच्छे धर्मयुक्त आप्त लोगों के मार्ग से (विश्वानि) सम्पूर्ण (वयुनानि) प्रज्ञान और उत्तम कर्म (नय) प्राप्त कराइये, और (अस्मत्) हम से (जुहुराणम्) कुटिलतायुक्त (एनः) पापरूप कर्म को (युयोधि) दूर कीजिये, इस कारण हम लोग (ते) आपकी (भूयिष्ठाम्) बहुत प्रकार की स्तुति (नमउक्तिम्) नम्रतापूर्वक प्रशंसा (विधेम) सदा किया करें और सर्वदा आनन्द में रहें॥

शान्ति पाठ

ओ३म् द्यौः शान्तिरन्तरिक्षँ शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्वँ शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि॥

ओ३म् शान्ति शान्ति. शान्ति॥

आशा है कि आप इन सुझावों पर ध्यान देकर नई शिक्षा प्रणाली में इन सुझावों को सम्मिलित कर कृतार्थ करेंगे।

भवदीय
रामगोपाल शालवाले
सभा-प्रधान

सम्पादकीय

ये न्याय का गला घोटने वाले

समस्त देश में इन दिनों पंजाब में हो रहे विधान सभा और लोकसभा के चुनावों के बारे में चर्चा चल रही है, और जब तक यह पंक्तियां पाठकों के सम्मुख पहुंचेंगी तब तक चुनाव की स्थिति बहुत कुछ धूमिलता से बाहर आ चुकी होगी। इस चुनाव का महत्व इस दृष्टि से अर्थपूर्ण है कि प्रधानमन्त्री राजीव गांधी द्वारा सन्त हरचन्द सिंह लौंगोवाल से किये गये समझौते के फलस्वरूप राष्ट्र के जीवन में नई परम्पराओं ने जन्म ले लिया है। राष्ट्र का प्रधानमन्त्री अथवा सरकार किसी सम्प्रदायविशेष के संगठन से जो समझौता करे, उसमें उस सम्प्रदाय विशेष के व्यापक हितों को ही मुख्य स्थान दिया जाता है और राष्ट्रीय पक्ष गौण हो जाता है। हम यह मानते हैं कि परिस्थितिविशेष में इस प्रकार के कदम उठाना तब आवश्यक हो सकता है, जब कि देश का एक वर्ग विशेष और उसको पीठ थपथपाने वाले देश के शत्रु राष्ट्रीय विद्वेष को आग को बराबर हवा देने में लगे रहें। साम्राज्यवादी शक्तियां परिस्थितिवश अपने अधीनस्थदेश से डंडा बोरिया बांधकर जाते समय ऐसी ही परिस्थितियां खड़ी कर जाती हैं। भारत की पूर्वी सीमा पर स्थित वर्मा देश (जो कि १९३२ तक भारत के ही गवर्नर जनरल के अधीन शासित होता था) वहां से अंग्रेजी शासन से मुक्ति पाने के बाद करेन लोगों ने वहां की राष्ट्रीय सरकार के विरुद्ध वर्षों तक विद्रोह, हिंसा, लूट-पाट जारी रखी थी। पूर्ववर्ती अंग्रेज शासकों ने उनको अपने शासन में विशेष स्थान दे रखे थे। उनको धर्म बदल कर ईसाई कर दिया गया था और उनकी राष्ट्रीयता अलग बना दी गई गयी थी। संक्षेप में स्वाधीनता के बाद वर्मा की सरकार ने करेन लोगों को स्वातन्त्र शासन के कुछ अधिकार देकर देश में शान्ति स्थापित की थी।

हमारे देश में भी पग-पग पर ऐसी अलगाववादी शक्तियां स्वाधीनता के पूर्व और स्वतन्त्र होने के बाद भी बराबर सिर उठाती रही हैं। ऐसी दशा में राष्ट्रवादी शक्तियों को एकजुट होकर अलगाववादी शक्तियों के इरादों को असफल करने का पूरा प्रयत्न करना चाहिये। हमारे देश का यह दुर्भाग्य है कि प्रेस को आजादी और विचारों के प्रकाशन की पूर्ण स्वतन्त्रता दिये जाने की भावना को अनावश्यक रूप से गलत तूल दिया जा रहा है। इसका सबसे बड़ा उदाहरण स्व० प्रधानमन्त्री इन्दिरा गांधी की सम्प्रदायवादियों द्वारा धोखे से हत्या कर देने पर जो जन-आक्रोश देश में फैला, उसका राजनैतिक लाभ उठाने की कुत्सित कोशिशें देश में शुरू हो गयीं। इसी प्रसंग में यह कहना आवश्यक है कि राजनैतिक आधार पर इन वर्गों ने देश की सरकार के सर्वोच्च प्रतीक प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी की हत्या पर भर्त्सना करने की बजाय कुछ उल्टे ही काम किये। इसके कारण शोकसागर में डूबे जन समुदाय द्वारा स्वभावतः अपनी रक्षा के प्रयत्नों में कुछ निरपराधों को जन-आक्रोश का सामना करना पड़ा हो, परन्तु इसके लिए व्यक्ति विशेष या पार्टी अथवा समुदाय को दोषी ठहराना एक बहुत बड़ी दुरभिसन्धि कही जानी चाहिये।

श्रीमती इन्दिरागांधी की हत्या के बाद जो अस्थिरता देश में आ जाने के खतरे उठ खड़े थे, उन क्षणों में जन-आक्रोश के कारणों और परिस्थितियों की जांच करने के लिए यदि कोई जांच आयोग बैठा दिया जाता, तो उसके राष्ट्रद्रोहियों और अलगाववादियों का चेहरा बेनकाब हो जाता। दुर्भाग्यवश ऐसा न हो सका और अलगाववादी तत्वों ने कुछ लोगों को आगे खड़ा करके नागरिक अधिकारों की रक्षा का नारा बुलन्द कर भूतपूर्व जस्टिस, वी० एम० तारकुन्डे जैसे लोगों को आगे खड़ा करके उनसे हाल ही में रिपोर्ट प्रकाशित कराई।

इस रिपोर्ट में नागरिक अधिकारों का अपने आपको रक्षक कहने वाली इन समितियों और उनके कार्यकर्त्ताओं ने १२दिन के भीतर सर्वथा एकपक्षीय और एकांगी एक रिपोर्ट प्रकाशित करदी, जिसमें कि बहुसंख्यक हिन्दुओं और कांग्रेस पार्टी के कतिपय लोगों का नाम लेकर सिखों के एक समुदाय में उन व्यक्तियों और संस्थाओं के खिलाफ प्रतिहिंसा खड़ी कर दी। ये प्रतिगामी नेता सिखों की आतंकवादी कार्रवाईयों का विरोध करने और उनको प्रकाश में लाने का साहस कभी नहीं जुटा कर सके और इसके विपरीत सरकार, सेना और स्व० प्रधानमन्त्री को इसके लिए उत्तरदायी ठहराया। दिन को बराबर रात कहकर रटने वाले इन स्वयंभू नेताओं ने समाचार पत्रों एवं संचार साधनों के द्वारा जो विषाक्त वातावरण देश में फैलाया, उसके कारण ही पंजाब, दिल्ली, उत्तर प्रदेश और हरियाणा आदि में हिंसा शुरू। इन प्रतिगामियों ने बस से उतार कर मारे जाने हिन्दुओं की हत्या, ट्रांजिस्टर बमकांड में मरने वालों और लूट-पाट के कांडों की निन्दा कभी नहीं की। स्वयं जस्टिस तारकुन्डे ने प्रेस कांफ्रेंस में इस बात को स्वीकार किया है कि उनकी रिपोर्ट के अनुसार अभियुक्त कहे गये व्यक्तियों और संस्थाओं से गवाही लेने का कोई प्रयत्न उनकी कमेटी ने नहीं किया वे स्वयं पंजाबी बोली नहीं जानते हैं। इसी प्रकार पिछले चार वर्षों में आतंकवादी सिखों द्वारा मारे और लूटे गये लोगों की सहानुभूति में एक भी आँसू की बूंद उनकी आंखों में नहीं आई। सबसे ताजे समाके अनुसार राजीव-लोंगोवाल समझौते के बाद भी अकाली दल ने अपने घोषणा पत्र में न तो आतंकवादियों की निन्दा की है और न उनके पीड़ितों के लिए कोई सहानुभूति। उलटे आतंकवादियों को सम्मान, सहायता पेंशन दी जाने की घोषणा की है। जस्टिस तारकुन्डे के साथी अपनी न्यायप्रियता का कितना ही ढिंढोरा क्यों न पीटें, परन्तु उनके वक्तव्य और व्यवहार से सर्वसाधारण को सुरक्षा और भरोसा नहीं मिलेगा। मनु का यह कहना कितना सत्य है—अब्रुवन् विब्रुवन् वापि नरो भवति किल्बिषी। के अनुसार ऐसे व्यक्ति पाप के भागी हैं, और हमारी सम्मति में ऐसे संकीर्ण व्यक्तियों और संस्थाओं का सामाजिक बहिष्कार किया जाना चाहिए।

—ब्रह्मदत्त स्नातक
अवै० प्रेस एवं जन सम्पर्क सलाहकार

चीन के मुसलमानों पर उपकार

चीन सरकार ने घोषणा की है कि वहां अब मुर्दे दफनाये नहीं दिए जायेंगे बल्कि उन्हें जलाना होगा। चीन सरकार ने यह निर्णय इसलिए किया कि वहां बढ़ रही आबादी और फैलते रहे कबरिस्तानों के कारण उपजाऊ बनाएगी। चीन में गैर मुस्लिम लोग तो खुशी से इस हुकम को अपनायेंगे, मगर बेचारे मुसलमानों को तो बड़ी परेशानी महसूस होगी, क्योंकि उनके विचार से मुसलमान मुर्दों को तो कयामत तक कब्रों में रखा जाना चाहिए। एक मुसलमान शायर ने मजाक के तौर पर खुदा से गिला (शिकायत) की कि या रब, तेरी यह कयामत कब आएगी ? कब तक कबर में पड़े-२ हड्डियां सड़ती और घुलती रहेंगी ? और जब वह कयामत आएगी तो करोड़ों की तादाद में सड़ी हुई हड्डियां चले उठेंगे, तो खुदा को भी इनको सम्भालना क्या मुश्किल न हो जायगा, और यह यहां जाएंगे समझी डालेंगे ? चीन सरकार ने अपने मुसलमान मुर्दों पर बड़ा उपकार किया है कि इन्हें कब्रों में पड़े रहने व कीड़े मकोड़ों से बचा लिया। चीन ने चाहे यह कदम देर से उठाया है लेकिन देर आयद दुरुस्त आयद। देखें इसका अनुकरण या प्रतिक्रिया और मुल्कों में क्या होती है। समय आ रहा है कि ऐसी जहालत की बातें बहुत देर नहीं चल सकती। हर जगह चालाक खुदगर्ज सियासी टाईप के लोग मजहब के नाम पर लोगों को बहकाते रहते हैं और सुधार के रास्ते के रोड़े बना रहे हैं। इनका हुक्का-पानी कैसे चलेगा ?

(आर्य जगत से साभार)

हिन्दी सेवी-आचार्य क्षेमचन्द्र सुमन

—शिवकुमार गोयल

हिन्दी के अनन्य साधक आचार्य क्षेमचन्द्र सुमन इन दिनों दिवंगत हिन्दी सेवियों की स्मृति को चिर स्थायी बनाने के महत्वपूर्ण कार्य में संलग्न हैं। दस खण्डों में प्रकाश्य दिवंगत हिन्दी सेवी ग्रन्थ के दो खण्ड प्रकाशित हो चुके हैं। इस ग्रन्थ में देश विदेश के हजारों हिन्दी सेवी लेखकों, कवियों, पत्रकारों, हिन्दी प्रचारकों के प्रामाणिक परिचय प्रकाशित किए जा रहे हैं।

श्री सुमन जी मूलतः आर्य समाजी तथा कांग्रेसी हैं। आर्य समाज से ही उन्हें हिन्दी सेवा के संस्कार मिले। गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर में प्रसिद्ध विद्वान प० नरदेव शास्त्री वेदतीर्थ के श्रीचरणों में अध्ययन के दौरान उन्होंने वैदिक धर्म व भारतीय संस्कृति की सेवा का संकल्प लिया जिसमें वे ७० वर्ष की आयु में अभी तक लगे हुए हैं।

सुमन जी को हिन्दी साहित्य व संस्कृति की सेवा के लिए राष्ट्रपति ने गतवर्ष ही 'पद्मश्री" से सम्मानित किया। उन्हें 'पत्रकार शिरोमणि' 'साहित्य मार्तण्ड' 'साहित्य वाचस्पति' आदि की उपाधियों से विभूषित किया जा चुका है। स्वाधीनता सेनानी के रूप में उन्हे प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी ने ताम्रपत्र भेंट किया था।

सुमन जी आर्यसमाज में सक्रिय योगदान करते रहे हैं। मारीशस में १९७३ में आयोजित १२वें आर्य महा सम्मेलन में हुए कवि सम्मेलन के वे अध्यक्ष थे। ३५ वर्षों तक उन्होंने गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर की अन्तरंग समिति में विभिन्न पदों पर रहकर शिक्षा सेवा में योगदान किया।

स्वाधीनता सेनानी

सुमन जी ने स्वाधीनता आन्दोलन में भी सक्रिय भाग लिया था। सन् १९४२ में भारत छोड़ो आन्दोलन में वह लाहौर में गिरफ्तार किए गये। वह देश की स्वाधीनता के लिए फीरोजपुर जेल में पूरे दो वर्ष तक यातनाएं सहन करते रहे। पंजाब सरकार द्वारा पंजाब से निष्कासित कर दिए जाने पर वह अपने ग्राम बबूगढ़ (मेरठ) आ गए। सुमन जी को सक्रिय नेता समझकर उत्तर प्रदेश सरकार बाबूगढ़ में नजरबन्द कर दिया। लगभग दस माह तक वे अपने गांव में नजरबन्द रहे।

सुमन जी ने फीरोजपुर जेल में "कारा' नामक एक रोचक खण्ड काव्य की रचना की थी। इस सुन्दर खण्ड काव्य में सन १९४२ के राष्ट्रीय आन्दोलन का सरस वर्णन सुमन जी ने अनोखे ढंग से किया है। 'कारा' में सुमन जी ने देश के युवकों का यों आह्वान किया है—

हम बढ़े हमारे जीवन में, बरबस तूफान अधीर उठे।
सदियों से सोते भारत के, तरकस का सोया तीर उठे॥
युग-युग से परवशता गिचरे, जग बन्दी भारत वीर उठे।
है जब सभा जिसमें पावन, वह वीरों का शमशीर उठे।
हम जलती आहों से रिपु के प्राणों को जलता छोड़ चलें।
"जयहिन्द" हमारा नारा है, हम लक्ष्य दिल्ली की ओर चलें॥

सुमन जी ने जहां अपनी ओजस्वी लेखनी के माध्यम से स्वाधीनता संग्राम में योग दिया वहां उनकी ओजस्वी वाणी ने भी देश की तरुणाई को जागृत करके स्वाधीनता के अमर यज्ञ में अपने को सहर्ष समर्पित करने का आह्वान भी किया। नजरबन्द रहते समय उन्होंने "कारा" के अतिरिक्त "बन्दी के गान" नाम के काव्य संकलन की रचना भी की थी। आजाद हिन्द के लेखक इतिहास के रूप में उनके "हमारा संघर्ष, "नेताजी सुभाष" आजादी की कहानी" आदि राष्ट्रीय भावनाओं से ओत प्रोत ग्रन्थ उल्लेखनीय हैं।

सुमन जी एक यशस्वी साहित्यकार के साथ-साथ निर्भीक व सफल पत्रकार भी रहे हैं। उन्होंने जहां 'मनस्वी' 'शिक्षा सुधा' एवं लाहौर के दैनिक 'भूमि' 'मिलाप' के सम्पादकीय मे ओजस्वी व राष्ट्रीय भावनाओं के ओत प्रोत होते थे।

सुमन जी ने लगभग चार दर्जन पुस्तकें लिखकर व सम्पादित करके हिन्दी साहित्य की अभिवृद्धि में अपूर्व योग दिया है। "आधुनिक हिन्दी कवयित्रियों के प्रेमगीत" हिन्दी के सर्वश्रेष्ठ प्रगीत, 'हिन्दी के लोकप्रिय कवि', 'अभिव्यञ्जना', हिन्दी साहित्य नये प्रयोग 'साहित्य सोपान' 'सुमन सौरभ', 'आधुनिक हिन्दी साहित्य' "हिन्दी साहित्य और प्रगति" आदि लोकप्रिय ग्रन्थों की रचना करके उन्होंने हिन्दी साहित्य की भारी सेवा की।

वे ७० वर्ष की आयु में साहित्य की सेवा में निरन्तर रत हैं। इसी प्रकार शतायु होकर वे हिन्दी सेवा में लगे रहें, यही कामना है।

लंदन में पहली बार १०८ कुंडी यज्ञ और ३०० युवकों द्वारा यज्ञोपवीत धारण

लंदन ११ सितम्बर पोर्टर्स बार, साकेट रोड पर माधव आश्रम, हनुमान ट्रस्ट, विजय मंडल के तत्वावधान में लंदन के इतिहास में गायत्री परिवार यू०के० के सौजन्य से पहली बार एक सौ आठ कुंडी यज्ञ एवं सामूहिक यज्ञोपवीत का द्विदिवसीय कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस महत्वपूर्ण महोत्सव की अध्यक्षता विदेशों में भारतीय वाङ्मय के सांस्कृतिक दूत स्वामी प्रज्ञानन्द ने की।

यह चमत्कार ही कहा जाएगा कि जहां भारत की युवापीढ़ी पश्चिमी सभ्यता की अन्धी नकल में अपनी संस्कृति को भुलाती सी जा रही है, वहां लंदन जैसे पाश्चात्य नगर मे एक विशाल युवा जन-समुदाय ने स्वामी जी के मार्ग दर्शन मे सामूहिक यज्ञोपवीत धारण कर भारतीय संस्कृति एवं धर्म के प्रति अपनी निष्ठा प्रदर्शित की।

प्रज्ञा कुटीर लंदन के श्री केतन मेहता ने बताया ने कि स्वामी प्रज्ञानन्द ने युवा पीढ़ी को तथाकथित भगवानो से आगाह करते हुए भगवान नियोजन की आवश्यकता पर बल देते हुए भारत में उत्पन्न आधुनिक भगवानो की अप्राकृतिक फसल को आड़े हाथों लिया। उन्होंने इन तथाकथित भगवानों की कुत्तो से तुलना करते हुए आगाह किया कि कुत्ता पैर मे काटता है और ये स्वयभू भगवान भक्तो की जेब काट रहे हैं। उन्होने व्यंग्य करते हुए कहा कि अब वह समय आ गया है जब 'बी अवेयर आफ डाग' की जगह 'बी अवेयर आफ गाड्स' सूचनापटो पर लिखवा कर टागना पडेगा।

३१ अगस्त व १ सितम्बर को आयोजित इस द्विदिवसीय कार्य-क्रम में विश्व शांति निशस्त्रीकरण, विश्वबन्धुत्व के अनेक ज्वलन्त सदर्भो की व्याख्या-इस कार्यक्रम की सार्थकता रही। इस अवसर पर वयोवृद्ध विद्वान् डा० सत्यप्रकाश सरस्वती ने भी अपने विचार व्यक्त किये और गायत्री मन्त्र का एक परिवर्तनकारी कारक स्वीकार किया। स्वामी प्रज्ञानन्द जो ने यज्ञ को वैज्ञानिक प्रासंगिकता की व्याख्या करते हुए बताया कि "यज्ञ का अर्थ केवल सुगन्धित पदार्थों को अग्नि में डालना नहीं वरन अपनी क्षमताओ को लोकमंगल में लगाना है। दुनिया का प्रत्येक श्रेष्ठ कार्य यज्ञ संज्ञा से अभिहित किया जा सकता है।

वेदमूर्ति तपनिष्ठ प० श्रीराम शर्मा आचार्य की सक्ष्म उपस्थिति मे सम्पन्न, यज्ञोपवीत के इस अद्भुत आयोजन मे लगभग तीन सौ युवक-युवतियो ने यज्ञोपवीत धारण किया एवं दीक्षा ली।

(१२-९-८५ दैनिक पंजाब केसरी से साभार)

सूचना

सभी आर्य बन्धुओ को सूचित किया जाता है कि अपने उत्सवों को सफल बनाने हेतु कृपया इस पते पर सूचित करने का कष्ट करें।

मेरा पता
सत्यव्रत शर्मा आर्योपदेशक भीलवाड़
ग्राम लहमूपालसीमपुर, पो०ओ० सैदाबाद
जनपद० बिजनौर (उत्तर प्रदेश) पिन० २४६७०१

क्या महर्षि का स्वप्न साकार हो रहा है ?

ब्र० राजकुमार आर्य (गुरुकुल आर्य सेना)

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती के जीवन काल में भारत न केवल राजनैतिक दासता में जकड़ा हुआ था, अपितु देश की संस्कृति और सुरक्षा के प्रति सहज रूप से संवेदनशील हिन्दु समाज विशृंखलित एवं अन्धाश्रद्धा अवस्था में था। रूढ़िवादिता को ही धर्म समझ कर जहां धर्म के सामाजिक तथा राष्ट्रीय पहलू को भूल-सा गया था, वहां निजी जीवन में वह रूढ़िवादी जड़ता और पाखण्ड से ग्रस्त हो चुका था।

ऐसी दशा में विदेशियों और विधर्मियों की बन आयी थी। जहां पर एक ओर भारत में कभी आये मुट्ठी भर मुसलमान बलात् धर्म परिवर्तन के द्वारा अपनी संख्या बढ़ाते चले जा रहे थे, वहीं दूसरी ओर विदेशी मिशनरी अंग्रेजों के प्रभाव की जड़ें गहरी करते जा रहे थे। भारत में ईसाइयों की संख्या सतत बढ़ती जा रही थी। बलात् धर्म परिवर्तन में ईसा के ये चेले भी किसी प्रकार कम न थे, इस प्रकार मुहम्मद तथा ईसा के अनुयायी समाज को खाते चले रहे थे।

और हिन्दू समाज अपनी आत्मघाती जड़ता एवं रूढ़िवादिता से ग्रस्त था। अपने कुल और पवित्रता को बनायें रखने के दम्भ में अपने ही भाई-बहनों, बेटे बेटियों को अपने से बाहार धक्का दे रहा था। एक सीता के अपहरण पर रावण की स्वर्णमयी लंका और साम्राज्य को ध्वस्त कर डालने वाला पुरुषार्थ असहाय दीन की भांति सैकड़ों, हजारों बहिन-बेटियों का अपहरण और अपमान सह रहा था।

ऐसे समय में ऋषिवर मानों भारत की घुटती हुई राष्ट्रीय आत्मा का मूर्तिमान रूप थे। उनके व्यक्तित्व में जैसे समग्र आर्य चेतना आविर्भूत हुई। उन्होंने हिन्दुओं को उनका भूला हुआ धर्म बताया। उन्होंने मरते हुये हिन्दु समाज की आत्मा को अमरता का उद्बोधन मन्त्र दिया और वेद वाणी को पुनः हमारे हृदय में प्रतिष्ठित कर हमें ईश्वरीय ज्ञान के उस अनन्त सागर में जोड़ दिया जिसके सम्मुख आधुनिक विज्ञान की समस्त प्रभा सूर्य के समक्ष दीपक के प्रकाश से अधिक नहीं है। और सबसे बढ़कर उन्होंने हमें स्वराज्य का मन्त्र दिया।

स्वामी जी की इहलीला समाप्त हुई और उनकी चिता की अग्नि प्रत्येक आर्य के हृदय में धधक उठी। आर्यसमाज एक संगठन नहीं, अपितु एक आन्दोलन बन गया। विधर्मियों के हौंसले परस्त हो गये। मुसलमान तथा ईसाई बने लाखों हिन्दु यज्ञाग्नि से शुद्ध होकर, शिखा तथा यज्ञोपवीत धारण कर पुनः अपने पूर्वजों के धर्म में लौटे। आर्य संस्कारों से दीक्षित शिक्षा प्रदान के लिये कितने पाठशाला, महाविद्यालय और गुरुकुल खुले! स्त्री शिक्षा और दलितोद्धार का कार्य समाज ने बीड़ा उठाया। सम्पूर्ण भारत में आर्यसमाज की लहर फैल गई।

अंग्रेज सरकार थर्रा उठी। भारत की स्वतन्त्रता के लिये कितने आर्य वीर फांसी के फन्दे पर हंसते झूल गये। प्रत्येक की कहानी ईसा के बलिदान जैसी ओजमयी है। पंजाब का इतिहास साक्षी है, यदि गांधी जी को आर्यसमाज द्वारा तैयार की हुई मानस भूमि न मिली होती तो हमारे स्वाधीनता संघर्ष का इतिहास न जाने क्या होता?

यह कहानी हमें १९४७ तक ले आती है पर उसके बाद तो जैसे आर्यसमाज को सांप सूंघ गया। हमें ऋषि का स्वप्न द्रुतगति से पूरा करने के लिए जिस क्षेत्र और अवसर की आवश्यकता थी और जो केवल एक राष्ट्रीय सरकार ही दे सकती थी, एक स्वाधीन समाज ही दे सकता था, एक मुक्त भारतीय संस्कृति ही दे सकती थी, वह हमने अपने मस्तिष्क, साहस और योग्यता से निरन्तर संघर्ष करके आखिर प्राप्त कर लिया और इसे प्राप्त किये आज १८ वर्ष होने जा रहे हैं। क्या भारत में आर्य संस्कारों पर आधारित सामाजिक व्यवस्था स्थापित हो सकी? क्या आर्यसमाज के प्रभाव से वेद पाठी विद्वानों की आज देश में संख्या बढ़ रही है?

१९४७ में ईसाई अंग्रेजों का राज्य चले जाने और मुसलमानों द्वारा अपने लिये पाकिस्तान बनवा लेने के बाद ईसाइयत और इस्लाम जहां अपने लिये दम घोटू वातावरण महसूस करने लगे थे उस भारत में ही इसी १८ वर्ष की अवधि में इन्होंने अपनी कितनी ही शिक्षण संस्थाएं बढ़ा ली हैं, पादरियों और मुल्लाओं की संख्या में कितनी वृद्धि कर ली गई। अंग्रेजी ही नहीं, उर्दू के मुकाबले में भी हिन्दी आज अपने ही घर में दीन-हीन और बेगानी बनी क्या मुंह छिपाये नहीं फिर रही? मैकाले को परास्त करने के लिए ही आर्यसमाज ने सारे उत्तर भारत में दयानन्द के नाम पर शिक्षण संस्थाओं का जाल खड़ा कर दिया था। परन्तु क्या आज आर्यसमाज के विद्यालय भी मैकाले की सन्तान बढ़ाने में नहीं लगी है? मैकाले अपने कुचक्र में आज सफल दिखाई देता है क्योंकि आर्यसमाज अपना दायित्व भूल गया है।

आज का आर्यसमाज का आलम आर्यसमाज मन्दिरों की चार दीवारी में अन्दर आयोजित साप्ताहिक सत्संगों तक सीमित होकर रह गया है जिनमें रविवार को मात्र कुछ वृद्ध आर्यसमाजी ही दिखाई पड़ते हैं। शेष वेद पाठ, सन्ध्या और अग्निहोत्र के मन्त्रों का उद्घोष करने के बाद आपस में चख-चख, तू-तू, मैं-मैं करते हुए घरों को लौट जाते हैं। हमें यह ध्यान भी नहीं आता कि वैसा आचरण करते हुए हम भी लालच के वशीभूत हुए रसोइये जगन्नाथ के ही समान ऋषि के महान स्वप्न और संकल्प को विष दे रहे हैं।

बात बड़ी कठोर है। जो निष्ठावान् आर्यसमाजी आज भी किसी न किसी न रूप में क्रियाशील हैं वे हमें इस कटु सत्य के लिये क्षमा करेंगे। किन्तु समाज की उन्नति के लिए ही स्वामी जी ने जीवन में कटु से कटु सत्य कहा, परन्तु अत्यन्त मृदु भाव से हमारा भी निवेदन उसी भाव से है। पद और सम्पत्ति आर्यसमाज नहीं है, यह तो आर्यसमाज का कार्य करने के लिये साधनमात्र है। आर्य समाज जब बना था तब कोई सम्पत्ति नहीं थी। आर्यसमाज चलेगा तो सम्पूर्ण राष्ट्र की सम्पत्ति भी इसके चरणों में होगी।

परन्तु इसके लिये सरदार भगतसिंह, पं० राम प्रसाद बिस्मिल, केसरसिंह, मदनलाल धींगरा, ठाकुर रोशनसिंह जैसे आर्य वीर उत्पन्न करने वाले आर्य नेता चाहिएं। पद और सम्पत्ति में उलझे रहने वाले आर्य नेता नहीं।

हमारा उद्देश्य निराशा नहीं बल्कि आर्यसमाजियों में शिथिलता को समाप्त कर पुनः शक्ति संचय और उत्साह उत्पन्न करना है।

देवरस कहते हैं आर.एस.एस. भाजपा पर प्रभाव नहीं डालता

—श्री धर्मपाल पांडेय

(गतांक से आगे)

प्रश्न—तो हम पजाब पर आते हैं। अकालियों के साथ जो समझौता हुआ है उसके बारे में आपकी क्या राय है ?

उत्तर—जब यह समझौता हुआ था तो मैंने एक बयान दिया था जिसमे मैंने इसका स्वागत किया था। यह समझौता तो श्रीमती गाधी के कार्यकाल मे भी हो सकता था लेकिन उनके पुत्र ने अधिक साहस का परिचय दिया है। पजाब समझौते की सफलता इस बात पर निर्भर करेगी कि उस पर अमल कैसे होता है और सभी पार्टियां इसको लागू करने मे सहयोग देती हैं या नही।

प्रश्न—आप कहते हैं कि सघ एक स्वयसेवी और सास्कृतिक सस्था है जिसका राजनीति से कुछ लेना देना नहीं है लेकिन जब टैक्स देने का सवाल आया तो आपने दावा किया कि यह राजनीतिक सगठन है। यह कैसे ?

उत्तर—यद्यपि सघ सास्कृतिक सगठनहै जिसका उद्देश्य राष्ट्रीय चरित्र को ऊपर उठाना है। लेकिन स्वयसेवक व्यक्तियों के रूप में काम करते हैं तो उस का राजनीति पर प्रभाव तो पड़ता ही है। हमारा राजनीतिक उद्देश्य कोई नही और न हम चुनाव लड़ते हैं और हम राजनीतिक मुद्दों को लेकर आदोलन छेड़ते हैं।

आपने टैक्स के मामले की बात की। उसकी सच्ची कहानी यह है कि धार्मिक तथा धर्मार्थ ट्रस्ट अधिनियम हम पर लागू नहीं होना चाहिए क्योंकि हमारे कार्यकलाप का प्रभाव राजनीतिक है। हमारा कहना था कि हमारा मामला पुणे के केसरी जैसा है जिसकी बात न्यायालय ने मान ली थी। हमने आयकर अधिकरण के सामने जो दलील दी उसे श्री सत्यनारायण जैसे लोगों ने तोड मरोड़कर पेश किया और वह भी राजनीतिक उद्देश्यों के लिए। जैसा कि मैंने कहा सघ सत्ता नहीं चाहता जो कि सभी राजनीतिक दलो का मुख्य उद्देश्य है।

प्रश्न—पजाब समझौते की बात फिर करें? उसके सफलतापूर्वक लागू करने में क्या रुकावटे हैं ?

उत्तर—यह इस बात पर निर्भर करेगा कि सिखो के प्रतिनिधि इसे कैसे स्वीकार करते हैं। आम सिखों ने इसका स्वागत किया है क्योंकि उन्हें तनाव और बेचैनी से राहत मिली है। हो सकता है राजस्थान और हरियाणा को नदियों के पानी का पूरा भाग न दिया जाये। श्रीमती गाधी ने अपने पचात फैसले में चण्डीगढ पजाब को और अबोहर और फाजिल्का हरियाणा को दिया था लेकिन इन दोनो के बीच एक टुकड़ा है जहा के लोगों ने १९७१ की जनगणना मे कहा था कि वे पजाबी भाषी हैं। हो सकता है कि उस पर झगड़ा हो। मैं चाहता हू कि हिन्दू और सिख भाइयों के समान रहें और छोटी-छोटी बातो को अपने मन की शांति भग न करने दे।

प्रश्न क्या श्री वत्सराज अशोक के समान आपका भी विश्वास है कि एक ऐसा दल होना चाहिये जो हिन्दुओं के हितो की रक्षा करे।

उत्तर—अधिकतर दलों मे हिन्दुओ की बहुलता है। उनका कर्त्तव्य है कि हिन्दू हितो की रक्षा करें। अगर सभी राजनीतिक दल बहुसख्यकों के हितों की रक्षा का दावा करें तो बुरा क्या ?

लेकिन कठिनाई यह है कि हिन्दुओ को ही समझाना पड़ता है कि अगर कोई दल हिन्दुओ के हितों की रक्षा करता है तो यह धर्म निरपेक्षता का भग नहीं है। हिन्दू धर्म धर्म नहीं एक जीवन शैली है जिसमे सर्व धर्म सम्भाव की भावना व्याप्त है।

दुर्भाग्य यह है कि हमने धर्म निरपेक्षता के बारे मे अग्रेजों की परिभाषा स्वीकार कर ली है। सत्तारूढ़ दल सोचता है कि अगर कोई केवल पूर्ण रूपेण हिन्दू है तो वह धर्म निरपेक्ष नहीं है। काश कि कोई ऐसा दल बने जो हिन्दू हितों को राष्ट्र हित मानकर उनकी रक्षा करे। (न्यू० पी०)

(२९-८-८५ दैनिक जागरण से साभार)

वेदार्थ कल्पद्रुम के विषय में सम्मति

पौराणिक जगत् के विख्यात दार्शनिक विद्वानों की सहायता से श्री स्वामी करपात्री जी ने महर्षि दयानन्द जी द्वारा विरचित ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका के खण्डनार्थ, "वेदार्थ पारिजात" नामक ग्रन्थ लिखा। इस वेदार्थ पारिजात की समालोचना के लिए आर्य विद्वर श्री विशुद्धानन्द मिश्र शास्त्री व्याकरणाचार्य ने "वेदार्थ-कल्पद्रुम" नाम का ग्रन्थ रचा है।

ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका में ऋषि दयानन्द द्वारा प्रतिपादित सिद्धान्तो की धज्जियां उड़ाने की अनुचित चेष्टा करपात्री जी ने वेदार्थ पारिजात मे बड़े दर्प से की है। आर्य विद्वर श्री ने अनायास ही करपात्री जी की प्रत्येक युक्ति के टुकड़े-टुकड़े बखेर कर उनके दर्प को ठण्डा करके—ऋषि दयानन्द की स्थापना वेदशास्त्रानुमोदित है यह स्पष्ट सिद्ध कर दिया है।

प्राय व्याकरण के विद्वान् जटिल और नीरस सस्कृत लिखते हैं। किन्तु आचार्यवर विशुद्धानन्द जी ने वेदार्थ कल्पद्रुम में ऐसी ललित और खण्डन करते हुए भी ऐसी मीठी भाषा लिखी है कि एक सहृदय व्यक्ति उस शैली पर मुग्ध हो जाता है।

कहा तो रागद्वेष विनिर्मुक्त सन्यासाश्रमी श्री करपात्री जी, जिन्होने ऋषि दयानन्द की आलोचना मे अशोभन शब्दमय पाषाण फेंके हैं और कहा आर्य मर्यादाव्रती आचार्य विशुद्धानन्द जी की गौरवशालिनी शैली जिसमे कहीं भी स्तरहीन शब्दो को नहीं आने दिया।

इस ग्रन्थ की रचना करते हुए आचार्य विशुद्धानन्द जी ने केवल शास्त्रीय विषय विवेचन मे ही नैपुण्य को नहीं प्रकट किया, अपितु आज भी सस्कृत गद्य लिखने मे बाण और दण्डी की टक्कर के विद्वान् विद्यमान हैं, यह भी सिद्ध कर दिया है।

ग्रन्थ के प्रारम्भ मे विभिन्न छन्दों में बड़ी ही मनोहारिणी पद्य रचना आचार्यवर ने प्रस्तुत की है, इससे पद्य रचना में में भी उनकी पैठ का पता चलता है।

किं बहुना इस ग्रन्थ को पढ़कर प्रफुल्लचित्त से स्वानुजतुल्य प्रबुद्धप्रवर आचार्य विशुद्धानन्द जी को स्नेहरससिक्त शुभ कामनाएं अर्पित करता हू।

अन्यच्च

सौभाग्यवती विद्याविभूषिता, बच्चों के हृदय और मस्तिष्क में अपने दूध के साथ ही देववाणी में भाषण के बीज बोने वाली, वेदार्थ कल्पद्रुम की भाषानुवादिका विदुषी बहन आचार्या निर्मला को भी सस्नेह साधुवाद देता हू। ज्येष्ठ भ्राता तुल्य

—शिवकुमार शास्त्री काव्य-व्याकरणतीर्थ

आतंकवादी सर्बजीत के रहस्योद्घाटन

पिछले दिनों अमृतसर में अखिल भारतीय छात्र संघ का जम्मू स्थित सक्रिय कार्यकर्ता सर्बजीत सिंह गिरफ्तार कर लिया गया और उससे पूछ पड़ताल करने पर भारत सरकार को इस बात की पुष्टि हो गई है कि पाकिस्तान सिख आतंकवादियों को अपने यहां ट्रेनिंग देकर भारत में अफरातफरी फैलाने का कृत संकल्प है।

स्वयं सर्बजीतसिंह, जिसे पकड़वाने के लिए १० हजार रुपये का पुरस्कार रखा गया था, पांच माह तक पाकिस्तान में रहा तथा उस अवधि में उसका कुछ टाप आतंकवादियों के साथ निरन्तर सम्पर्क बना रहा। इनमें अतिन्दरपाल सिंह भी शामिल है जिसकी श्रीमती इन्दिरा गांधी की हत्या के कथित षड़यन्त्र में तलाश है।

सर्बजीतसिंह जो कि आतंकवादियों का एक प्रमुख योजना कार तथा उनकी भर्ती करने वाला बताया गया है, ने अपने पाकिस्तान से सम्बन्ध के बारे में रहस्योद्घाटन किये हैं। उसने बताया है कि जब वह आतंकवादी दल में शामिल हुआ तो उसे सर्वप्रथम लाहौर ले जाया गया। उसके बाद पाकिस्तान के कई ट्रेनिंग कैम्पों में ट्रेनिंग दी गई। उसने उन पाकिस्तानी अधिकारियों के नाम भी लिए हैं जिन्होंने उसे ट्रेनिंग दी थी। इसके अलावा उसने पुलिस को वास्तविक कन्ट्रोल लाईन पार करने के बारे में विस्तृत जानकारी भी दी है।

पूछ-पड़ताल के मध्य सर्बजीत के व्यक्तिगत जीवन बारे भी जानकारी मिली है कि गुरदासपुर के एक सुनार का एक लड़का कैसे आतंकवादी बना। वह १ मार्च १९५८ को अमृतसर जिले के पुतली घर गांव में पैदा हुआ था। वह अपने तीन भाइयों में सबसे बड़ा है। पढ़ने में वह तेज था, तथा उसने पंजाबी में मेरिट के साथ एम॰ए॰ की। लेकिन जब वह अखिल भारतीय सिख छात्र संघ की जम्मू शाखा का सदस्य बना तो उसकी शिक्षा समाप्त हो गई। ब्लू स्टार आपरेशन के बाद वह भूमिगत हो गया। फिर वह पाकिस्तान खिसक गया, जहां उसका भरपूर स्वागत हुआ।

मलिक ने मेरी भेंट अतिन्दर सिंह से कराई। वहां उसके अलावा मुझे अखिल भारतीय सिख छात्र संघ की फिरोजपुर शाखा का प्रधान गुरजीतसिंह मिला। उसी बंगले में कर्नल आसिफ ने आकर मुझ से बातचीत की। मैंने उसे कहा कि हम पाकिस्तान में राजनीतिक शरण चाहते हैं। उसने कहा कि उसकी सरकार हमारे समर्थन के बारे में विचार कर रही है, लेकिन उसने हमें हथियार दिलाने का आश्वासन दिया।

जिन्दी क्षत्राड़े में उसकी गिरफ्तारी के बाद पुलिस व अन्य कई एजेंसियों द्वारा उससे जबरदस्त पूछताछ की गई। पूछताछ के मध्य उसने जो जानकारी दी है और उसकी जिस जानकारी के बारे में जिन को पता चला है कि वह निम्न प्रकार है।

१९७८ में मैंने आनन्दपुर साहब गुरुद्वारे में अमृत छका और उसके बाद मैं जालंधर से जम्मू चला गया तथा अवतार सिंह की सहायता से अखिल भारतीय सिख छात्र संघ का गठन शुरू कर दिया। १९७८ से १९८१ तक [illegible] और मैं अध्यक्ष रहे। जम्मू में ट्रेनिंग कैम्प लगे जिनमें हथियार चलाने का प्रशिक्षण दिया गया। एक कैम्प में गोली लग जाने से एक वालंटियर की मृत्यु हो गई।

जम्मू में कई बार अपनी गिरफ्तारी दी। भिंडरांवाले की गिरफ्तारी के बाद भी गिरफ्तारी दी। गुट निरपेक्ष सम्मेलन के अवसर पर मुझे जम्मू द्वारा अखबारों के दफ्तरों में प्रेस विज्ञप्ति देने का काम सौंपा गया। उसने आगे बताया कि उसे नहीं पता कि वह प्रेस विज्ञप्ति किस बारे में थी। दिल्ली में मैं [illegible] सिंह और अमृतसर के सर्बजीतसिंह दोनों से मिला तथा प्रेस विज्ञप्ति की कापियां बांटी। [illegible] सिंह ने बाद में बताया कि [illegible] बाजार में हुए बम कांड का वह जिम्मेदार था।

सर्बजीत ने किसी हिंसक गतिविधि में अपनी सम्बद्धता से इन्कार किया। १९८१ में उसे अवतारसिंह द्वारा कई बार अमृतसर हथियार ले जाने को कहा गया। जून १९८४ में दो सिख युवकों ने उसके समक्ष स्वीकार किया किया कि उन्होंने रेल लाईन उड़ाई है। जून १९८४ में ही उसने अपनी सारी गतिविधियां बन्द कर दी तथा वह भूमिगत हो गया।

सर्बजीत ने अपने बयान में आगे कहा—सितम्बर में मैं श्रीनगर गया तथा वहां गुरुद्वारों में रहा। गत नवम्बर के अन्तिम सप्ताह में मैं जम्मू रघुनाथ बाजार के सिंग सभा गुरुद्वारे में था। वहां दो क्लीन शेव युवक मेरे सम्पर्क में आए उन्होंने नियन्त्रण रेखा पार कराने में मुझे सहयोग देने का आश्वासन दिया। १६ दिसम्बर १९८४ को मैं उन युवकों की सहायता से खरोड़े गांव के पास से पाकिस्तानी चेक पोस्ट द्वारा नियन्त्रण रेखा पार कर पाकिस्तान में प्रविष्ट हो गया। मैंने एक रेंजर पोस्ट में जाकर मिलिट्री के खुफिया विभाग को सूचित किया। अढ़ाई घंटे बाद एक जीप आकर मुझे सियालकोट के एक सैनिक गैसट हाउस में ले गई।

२१ दिसम्बर को मुझे मलिक नामक एक व्यक्ति मिला। मुझे एक अन्य मकान में ले जाया गया। मलिक ने मेरे बारे में विवरण नोट किया। दो-तीन दिन मुझ से पूछ पड़ताल की गई। मेरे ख्याल में मलिक पाकिस्तान सेना में कर्नल हैं। ३५ वर्षीय उस हट्टे-कट्टे अधिकारी ने कमीज सलवार पहन रखी थी।

'मैं एक आलीशान बगले में ले जाया गया। वहां मेरी अच्छी खातिरदारी हुई। मैंने अनुभव किया कि उस बगले में कुछ और सिख युवक रह रहे हैं। मेरे कमरे का दरवाजा बन्द रखा जाता था तथा मुझे बाहर निकलने की इजाजत नहीं थी। एक दिन दो सिख मुझे मिलाए गए। एक ने बताया कि उसका नाम फकीरसिंह है, दूसरे ने अपना नाम नहीं बताया।

मलिक ने मेरी भेंट अतिन्दरसिंह से कराई। वहां उसके अलावा मुझे अखिल भारतीय सिख छात्र संघ को फिरोजपुर शाखा का प्रधान गुरजीतसिंह मिला। उसी बंगले में कर्नल आसिफ ने आकर मुझसे बातचीत की। मैंने उसे कहा कि हम पाकिस्तान राजनीतिक शरण चाहते हैं। उसने कहा कि उसकी सरकार हमारे समर्थन बारे में विचार कर रही है। लेकिन उसने हमें हथियार दिलाने का आश्वासन दिया।

१७ फरवरी को हमें लाहौर के बाहर एक अन्य बंगले में ले जाया गया। आसिफ अतेन्द्रपालसिंह तथा गुरमीतसिंह को जेल ले गया, जहां वे अन्य बहुत से सिख नौजवानों से मिले। इन सिख नौजवानों में बलदेवसिंह तथा अनायबसिंह भी थे। मार्च महीने में पंजाब में राजनीतिक स्थिति बड़ी तेजी से बदलने लगी। अतेन्द्रपालसिंह तथा गुरजीत सिंह के विचारों में बड़ी भिन्नता थी। इन सबके बावजूद हम इकट्ठे बैठे तथा अपनी राजनीति पर विचार-विमर्श किया।

बैठक में यह निर्णय किया गया कि मैं बलदेवसिंह के साथ भारत जाऊंगा। पाकिस्तानियों को भी यह विचार पसन्द आया। अप्रैल मास में हमें पाकिस्तानियों से प्रशिक्षण मिलने लगा हमें रिवाल्वर, स्टेनगन तथा स्वचालित हथियार चलाना सिखाया गया। हमें रासायनिक पदार्थों के बनाने की भी जानकारी दी गई।

पाक में प्रवास के दौरान आसिफ तथा मलिक ने सिख नौजवानों को खूब भड़काया। हमसे बार-बार यह कहा गया कि भारत सरकार सिखों को कुचल रही है। हमसे पंजाब में सुरक्षित मकान तथा अड्डों

समग्र विश्व की प्राचीनतम संस्कृति

—आचार्य डा० सुरेन्द्र देव, ओनाव (मैनपुरी)

'संस्कृति' शब्द 'सम्' उपसर्ग पूर्वक 'कृ' धातु से 'क्तिन' प्रत्यय करने से निष्पन्न होता है। अर्थ है—शुद्ध करना अथवा पवित्र करना—अर्थात् मानव दुर्गुण, दुर्व्यसन, पाप तथा पाप सम्बन्धी भावनाओं को हृदय से निकालकर सुगुणों तथा सुकार्यों में लगाने का एकमात्र साधन 'संस्कृति' ही है।

सम्पूर्ण विश्व में सबसे अधिक प्राचीन संस्कृति वैदिक संस्कृति है। आधुनिक भारतीय-संस्कृति भी इसी प्राचीनतम वैदिक-संस्कृति के बहुमुखी, व्यापक तथा शाश्वत प्रभाव को लेकर जीवित है। इस प्राचीनतम वैदिक संस्कृति के बारे में वेद स्वयं ही कहता है—

"सा प्रथमा संस्कृति विश्ववारा"

अर्थात समस्तविश्व के द्वारा वरणीय [स्वीकरणीय] एवं प्रमुख संस्कृति 'वैदिक-संस्कृति' ही है। इसके द्वारा मानव उन्नति की चरम सीमा तक पहुँचने का अधिकारी बनता है। विश्व के सभी देश तथा समाज इसी संस्कृति के साथ अति घनिष्ट सम्बन्ध रखा करते थे। तत्कालीन आर्य लोगों को अपनी संस्कृति पर गर्व था। वे अपना जीवन उसी संस्कृति के, अनुरूप आचरणों व्यतीत किया करते थे। उनकी संस्कृति की प्रमुख भावना यही थी कि—

"सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वेसन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चिद्दुःख भाग् भवेत्॥"

अर्थात् विश्व के सम्पूर्ण प्राणी सुखी हों, नीरोग रहें तथा सभी कल्याण को ही देखें, कोई भी व्यक्ति दुःख का भागी न बनें।

इस प्राचीनतम वैदिक-संस्कृति के मूलरूप में विद्यमान चार पुरुषार्थ हैं। यही मानव-जीवन के प्रमुख आधार हैं। (१) धर्म (२) अर्थ (३) काम और (४) मोक्ष। दुःखों से छुटकारा प्राप्त करने अथवा दुःखों का अत्यन्ताभाव हो जाने का नाम ही 'मोक्ष' है। इसका सम्बन्ध परलोक से है। शेष तीनों पुरुषार्थ इस लोक से सम्बन्धित हैं। इन तीनों के द्वारा मानव इस लोक में अभ्युदय अथवा उन्नति को प्राप्त किया करता था तथा चतुर्थ पुरुषार्थ के फलस्वरूप मोक्ष को प्राप्त कर लिया करता था जो जीवन का अन्तिम लक्ष्य था। जैसा कि वैशेषिक दर्शन में निम्नलिखित सूत्र में कहा भी गया है—

"यतोऽभ्युदयनिःश्रेयस सिद्धिः स धर्मः"

अर्थात जिसके द्वारा इस लोक में अभ्युदय तथा परलोक में निःश्रेयस अथवा मोक्ष की प्राप्ति हो उसी का नाम है 'धर्म'। चारों पुरुषार्थों में इस धर्म का स्थान सर्वोपरि है। यह मूल आधार है शेष तीनों पुरुषार्थों का। धर्म का आचरण करने वाले व्यक्ति का जीवन पूर्ण धार्मिक हो जाया करता है अतएव वह अर्थ का अर्जन तथा काम का [illegible] भी धर्मानुकूल शास्त्रीय नियमों के अनुसार ही किया करता है। अन्त में इसी धर्म के आचरण पर अवलम्बित रहते हुए वह जीवन के सर्वोच्च चतुर्थ पुरुषार्थ की प्राप्ति कर लिया करता है।

प्राचीन वैदिक युग में तत्कालीन वैदिक संस्कृति चरमोत्कर्ष पर थी। अतएव मानव अपने जीवन को उत्साह के साथ स्वस्थ वातावरण में व्यतीत किया करता था।

वैदिक संस्कृति का प्रमुख आधार 'अध्यात्मवाद' है। यह अध्यात्मवाद मानव को सांसारिक भोगवाद से दूर कर ब्रह्म विषयक ज्ञान की ओर उन्मुख किया करता है।" निम्नलिखित मन्त्र में सर्वव्यापक भगवान की सत्ता में विश्वास रखते हुए त्यागभाव के साथ सांसारिक पदार्थों के उपभोग हेतु कथन किया गया है।

"ईशावास्यमिदं सर्वं यत्किञ्च जगत्यां जगत्।
तेन त्यक्तेन भुञ्जीथाः मा गृधः कस्यस्विद्धनम्॥"

यजु० ४०। १॥

परमात्मा ने प्रत्येक वस्तु, पदार्थ आदि उत्पन्न किए और तत्पश्चात् उन सभी में वह स्वयं भी व्याप्त हो गया। अतः भगवान की स्थिति को निरन्तर अपने साथ समझते हुए अनासक्त भाव से सांसारिक पदार्थों, द्रव्यों तथा सांसारिक विषयों का उपभोग करना चाहिए। वास्तविकता यह है कि ये भोग्य पदार्थ किसी के भी नहीं हैं। आत्मा जब शरीर का त्याग करता है तब इनमें से एक भी साथ नहीं जाता। अतः प्रत्येक भोग्य पदार्थ को भगवान का दिया हुआ और उसी का समझना चाहिए। उपर्युक्त मन्त्र द्वारा हमें वैदिक संस्कृति के आधारभूत 'त्याग की भावना' का ज्ञान भी प्राप्त हो जाया करता है।

वैदिक युग में आर्यों का विश्वास था कि सब पर [illegible] सत्ता में विश्वास रखने वाला व्यक्ति पाप अथवा अनाचरण करने से बचता रहा करता है। इस प्रकार वह अपने जीवन को पवित्र एवं शुद्ध तथा [illegible] बनाने में सफल हो जाया करता है।

इस प्राचीनतम संस्कृति का तृतीय आधार है 'फल की इच्छा न करते हुए कर्मों को करना। मानव इस लोक में शुभकर्मों को करता हुआ ही सौ वर्षों तक जीवित रहने की अभिलाषा करें अर्थात नित्य, नैमित्तिक और शुभ एवं प्रधान कर्मों का त्याग कभी न करें। किन्तु इन सभी कर्मों को निष्काम भाव [अर्थात् फल-प्राप्ति की कामना न करते हुए कर्मों का किया जाना] के साथ किया जाना परमावश्यक है। उक्त भावना के साथ कर्मों को करता हुआ होने पर भी उनमें लिप्त नहीं हुआ करता है। इसी से सम्बन्धित निम्नलिखित मन्त्र है—

"कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतं समाः।
एवं त्वयि नान्यथेतोऽस्ति न कर्म लिप्यते नरे॥"

यजु० ४०। २॥

इसी भाव का बोधक निम्नलिखित गीता का श्लोक भी है:—

"कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।
मा कर्मफल हेतुर्भूः मा ते सङ्गोऽस्त्वकर्मणि॥"

गीता २। ४७॥

कर्मयोग के अतिरिक्त जीवन की सफलता का कोई अन्य मार्ग भी नहीं है। [illegible] पाप एवं [illegible] है। [illegible] [illegible] करती है। [illegible] [illegible] है। अतः कर्म ही जीवन है।

को व्यवस्था करने के लिए भी कहा गया।

लाहौर में अकाल फैडरेशन का अमरीक सिंह हमसे मिला ऐसा। ऐसा प्रतीत होता था कि वहां लगभग ५०० सिख नौजवान हैं, लेकिन मुझे यह पता नहीं था कि क्या सभी सिखों को प्रशिक्षण दिया जा रहा है। कोट लखपत जेल में १०० से १५० नौजवान थे। शेष को सुरक्षित घरों में रखा जा रहा है।

१२ और १३ अप्रैल की रात को मैं तथा बलदेवसिंह पाकिस्तानी तस्करों की मदद से वास्तविक नियन्त्रण रेखा पार कर गए। मैं भारतीय या पाकिस्तानी चौकी का नाम नहीं जानता था लेकिन हम ८ से दस घण्टे तक चले। लेकिन मैंने महसूस कि हम फाजिल्का के कहीं नजदीक हैं। आसिफ ने जाने से पहले हमें एक ४५५ का रिवाल्वर, तीस गोलियां तथा प्रत्येक को दो-दो हजार रुपये दिये। जब मैं अमृतसर पहुंचा तो मैंने हथियार बलदेवसिंह को दे दिए। मैंने स्वर्ण मन्दिर में रहना शुरु कर दिया। अप्रैल २८ २९ को बलदेव सिंह अन्यों के साथ वापिस आ गया। उसके साथ हरमिन्दरसिंह काहलों तथा डा० भगवानसिंह भी थे।

मैंने बाबा जोगेन्द्रसिंह से मिलने की इच्छा व्यक्त की और मई पहले सप्ताह में काहलों तथा डा० भगवानसिंह बाबा जोगेन्द्रसिंह से मिलने के लिये रोड़े गांव गये। बातचीत बहुत उत्साह जनक नहीं थी। हमने छिपने के लिये जगह मांगी, लेकिन उन्होंने इन्कार कर दिया। अन्त में निराश हो गया। मैं आत्मसमर्पण की योजना बना ही रहा था कि अमृतसर पुलिस ने मुझे गिरफ्तार कर लिया।

([illegible] प्रताप से साभार)

सर्वोच्च पुरस्कार प्राप्त 'वेदार्थ पारिजातम्' पुस्तक का वर्ग विरोधी तथा समाज विद्वंषी चरित्र

डा० सुधुम्नाचार्य, व्याकरणाचार्य एम. ए. स्वर्ण पदक

श्री स्वामी हरिहरानन्द करपात्री जी द्वारा लिखित महाग्रन्थ "वेदार्थ पारिजातम" के लिये उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा एक लाख रुपये का पुरस्कार प्रदान किया गया है। इस ग्रन्थ में प्राचीन भारतीय सिद्धान्तों का विशुद्धता के साथ प्रतिपादन किया गया है। यह प्रतिपादन पूर्व-लिखित "वेदों का स्वरूप और प्रामाण्य" आदि पुस्तकों द्वारा भी किया जा चुका है।

पर इस ग्रन्थ की मुख्य विशेषता यह है कि इसमें हजारों पृष्ठों का उपयोग करके बाल-विवाह, बहुपत्नी-विवाह, सती-प्रथा, जाति-प्रथा, ऊंच नीच, छुआछूत आदि का जमकर समर्थन किया गया है तथा विधवा विवाह आदि का पूरी शक्ति से विरोध किया गया है। इस प्रकार यह पुस्तक समाज-सुधारकों द्वारा इन कुप्रथाओं के विरोध में किये गये तमाम प्रयत्नों की ओर अंगुठा दिखाती है।

इस पुस्तक पर उ० प्र० सरकार ने एक लाख रुपये का पुरस्कार दिया है। अतः सहज ही वह भी इसका परोक्ष समर्थन करती प्रतीत होती है। सरकार का यह रवैया अचरज भरा है। प्रसिद्ध उपन्यासकार फणीश्वर नाथ 'रेणु' कहा करते थे कि जब हम संघर्ष तथा क्रान्ति की बातें पुस्तकों में लिखते हैं तो सरकार हमें पुरस्कार देती है। पर जब हम क्रान्ति करते हैं तो वह हमें जेलों में डाल देती है। यहां भी इसी प्रकार इन कुरीतियों के समर्थन में लिखने पर पुरस्कार प्राप्त होता है। पर इनका समाज में प्रचार करने पर जेल के अलावा जगह न मिलेगी।

इस प्रकार तमाम कुरीतियों का सैकड़ों तर्क, प्रमाण से सिद्ध करने वाली इस पुस्तक की पुरस्कार पाने योग्य मुख्य विशेषता इस का संस्कृत में लिखा जाना है। इसमें जरा भी सन्देह नहीं कि यदि इसे अन्य भाषाओं में लिखकर तथा छोटे-२ भागों में विभक्त कर समाज में प्रचारित किया जाय तो यह सम्मान नहीं प्राप्त कर सकेगी तथा सरकार भी इसे पुरस्कार योग्य नहीं मानेगी। पर यह ग्रन्थ चूंकि संस्कृत में है, अतः इसे प्रायः लोग समझते नहीं। केवल इसका विशाल आकार तथा मान्यता प्राप्त व्यक्ति द्वारा लिखित जानकर इसका सम्मान करते हैं। जो लोग इसे समझते हैं, वे प्रायः इस विषय में कुछ बोलना नहीं चाहते। अतः यह अनायास ही सम्मानित हो रहा है।

यह अतीव दुःख है कि धर्म की उच्चतम सीमा को जानने वाले व्यक्ति ने इस पुस्तक में ऐसे समाज की परिकल्पना की है जो समाज को गहरे गर्त में डालने वाला है। जिस भयंकर जाति प्रथा आदि के विनाशकारी परिणाम हम पिछली शताब्दियों में देख चुके हैं, उसी ओर देखने वाली है यह पुस्तक—क्योंकि इसमें सभी कुरीतियों का हर तर्क, प्रमाण के साथ समर्थन।

यह सच है कि हमारे देश में प्रमुख रूप से मध्ययुग में शक्ति सम्पन्न लोगों के यहां इस प्रकार की कुरीतियां उत्पन्न हुईं। सामन्ती शक्ति को विकसित करने के लिये प्रमुख रूप से निम्न तथा निर्बल वर्ग के विध्वंसकारी प्रथाएं उन लोगों को आवश्यक प्रतीत हुईं। 'शक्ति के चारों ओर सब कुछ घूमता है' इस उक्ति को चरितार्थ करते हुए उस समय के धर्माचार्यों ने इन प्रथाओं को धार्मिक रूप दिया। यह इतिहास का दुर्भाग्य है कि इन धर्मध्वजी लोगों ने धर्म का उपयोग उन्हीं कुप्रथाओं का संरक्षण तथा प्रचार देने में किया। क्योंकि इससे उन्हें शक्ति सम्पन्न लोगों से हर तरह की सुविधा प्राप्त होती थी।

फिल्म क्लर्क का राम गान्धी की तस्वीर के आगे गीता पढ़ता है जिससे पाकिस्तानी नाराज हैं

इस्लामाबाद, १२ सितम्बर, लोकप्रिय अभिनेता मुहम्मद अली को पाकिस्तानी फिल्मों का दिलीप कुमार कहा जाता है। अब वह भारतीय फिल्मों में काम कर रहे हैं। लेकिन शायद उन्हें इसको भारी कीमत अदा करनी पड़ेगी।

मुहम्मद अली ने राष्ट्रपति जिया उल हक से इजाजत मांगी। उन्होंने हां तो कर दी, लेकिन साथ ही कह दिया कि जिन भारतीय फिल्मों में आप काम करोगे, उन्हें पाकिस्तान में दिखाने की इजाजत नहीं दी जाएगी।

निर्माता-निर्देशक-अभिनेता मनोज कुमार की फिल्म 'क्लर्क' के एक हिस्से में काम करने के बाद मुहम्मद अली और उनकी पत्नी जेबा पाकिस्तान लौट आए हैं। वहां उनके विरोधियों ने धर्म की दुहाई देकर उनके खिलाफ एक अच्छा-खासा जिहाद छोड़ दिया है।

एक दृश्य में फिल्म 'क्लर्क' के राम नामक पात्र के रूप में मुहम्मद अली तिरंगों से सजे कमरे में महात्मा गांधी की तस्वीर के सामने भगवद्गीता के श्लोक पढ़ता है। इस बात के लिए पाकिस्तान के उर्दू अखबारों ने अभिनेता को आड़े हाथों लिया है। मुहम्मद अली और उनकी पत्नी को 'गद्दार' और 'काफिर' कहा जा रहा है। पाकिस्तान की कुछ फिल्मी हस्तियों ने पति-पत्नी ने कहा है कि वह मनोज कुमार से नाता तोड़ लें।

मुहम्मद अली ने कहा : मनोज कुमार पाकिस्तान-विरोधी नहीं हैं। और फिर सारा पाकिस्तान वीडियो पर हिन्दुस्तानी फिल्में देखता है, मैंने हिन्दुस्तानी फिल्म में काम करके क्या कुसूर किया है?

मुहम्मद अली ने कहा : मेरा राजनीति से कोई वास्ता नहीं है। दरअसल मनोज कुमार ने फिल्म का मुहूर्त अपने धार्मिक विश्वास के मुताबिक किया था। मैंने अगर गीता के श्लोक पढ़े हैं, तो मनोज भी जिन्ना की तस्वीर के आगे कुरान की आयतें पढ़ लेगा। इसमें बुराई क्या है?

मुहम्मद अली ने अपने पाकिस्तानी निर्देशकों से कहा कि हिन्दू नामों में उन्हें कोई एतराज क्यों है? आखिर पाकिस्तान के दो मशहूर एक्टरों के नाम भी तो हिन्दू नाम हैं—सन्तोष कुमार और रतन कुमार। और फिर मैंने और अन्य अभिनेताओं ने कई पाकिस्तानी फिल्मों में हिन्दू पात्रों की भूमिकाएं निभाई हैं।

"मैं हिन्दी फीचर फिल्म में मुफ्त काम कर रहा हूं। दोनों देशों को एक-दूसरे के ज्यादा नजदीक लाने के लिए।"

इन्हीं धर्माचार्यों के प्रमाणों तथा तर्कों का उपयोग इस "वेदार्थ-पारिजातम" नामक ग्रन्थ में किया गया है। यह जानना दिलचस्प है कि इस पुस्तक में मध्यकालीन स्मृतियों, पुराणों, भागवत आदि के प्रमाण ही मुख्य रूप से दिए गए हैं। महाभारत से पूर्व ये कुप्रथाएं सामान्यतः नहीं थी, अथवा बहुत कम थीं।

अतः इस पुस्तक में उससे पूर्व के ग्रन्थों के प्रमाण भी बहुत कम हैं। इस सन्दर्भ में भारतरत्न डा० पाण्डुरंग वामन काणे की "धर्म-शास्त्र का इतिहास" एक आदर्श तथा अति प्रशंसनीय पुस्तक है।

क्योंकि उसमें प्रतीव निष्पक्षता के साथ प्राचीन ग्रन्थों मे समर्थन तथा विरोध मे जो भी कुछ कहा गया है, उसे उपस्थित कर दिया गया है। पर इस 'वेदार्थपारिजातम्' मे तो सभी कुरीतियो के समर्थन मे ही प्रमाण दिये हैं। विरोध में प्राप्त प्रमाण या तो दिये नहीं, या उन्हें तुच्छ बताया है।

यह प्रतीत दु खद है कि जिन गम्भीर कुरीतियों के कारण यह यह देश शताब्दियों तक पराधीन रहा तथा विदेशी आक्रमणो को सहता रहा उन्हीं परिस्थितियों को लाने का गर्हित षडयन्त्र इस पुस्तक मे किया गया है। यह पुस्तक समाज के सभी वर्गों में फूट डालने वाली है, निम्न वर्ग के लोगों को नीचा दिखाने वाली है, महिलाओ का घोर अपमान करने वाली है। यह उसी मानसिकता से आक्रान्त है जिसमे महिला को "चीज" समझा जाता था तथा निम्न वर्ग पर तरह तरह के अत्याचार किये जाते थे। यह समाज को निरन्तर पतन की ओर ले जाने वाली है, अत इसकी निन्दा की जानी चाहिये।

इस पुस्तक मे अनीति तथा अन्याय के समर्थन मे जो भी तर्क दिये गए हैं उनमे से कुछ इस प्रकार हैं—

विधवा विवाह नही होना चाहिये। क्योंकि यदि हम विधवा-विवाह को नही रोकेंगे तो विधवाए काम से आक्रान्त होकर विवाह के लोभ मे सन्तान की हत्या पर ही उतारू हो जायेंगी। इस प्रकार भ्रूणहत्या बालहत्या बढ़ जावेगी।" (वेदार्थपारिजात पृ० १७११)

यह विलक्षण तर्क विधवा विवाह के विरोध करने का है। क्या इस पुस्तक के लेखक विधवा विवाह होने पर बालह या का उदाहरण ढू ढ सकें हैं। दूसरे—रोकने पर यह लोभ बढ़ेगा या न रोकने पर? तीसरी मुख्य बात यह है कि ये सभी आशकाए तथा प्रतिबन्ध केवल महिलाओ के लिये हैं पुरुषो के लिये नही। विधुर के विवाह को अनुमति मे न तो वे काम से आक्रान्त होते हैं, न ही उनसे बालहत्या की आशका उपस्थित होती है। इस प्रकार सभी समस्याओ से मुक्त हैं ये पुरुष लोग!! क्योकि वे आगे लिखते हैं—

पर पत्नी के मर जाने पर पुरुष को पुनर्विवाह करने मे कोई बाधा नही है। क्योकि पुरुष को अग्निहोत्रादि कर्म का विधान है, जो कि पत्नी के बिना सम्भव नही है। अत पुरुष पुनर्विवाह कर सकता है।

यह विलक्षण तर्क पुरुष के पुनर्विवाह के समर्थन मे है। यहा आश्चर्य है कि पत्नी के बिना पुरुष का अग्निहोत्र भी सम्पन्न नही हो पाता। फिर भी उसे अग्निहोत्र का अधिकार नहीं है। क्योकि वे आगे लिखते हैं—

पति के मर जाने पर स्त्री को अग्निहोत्रादि नहीं करना है। क्योकि उस स्त्री को 'पति के साथ मर जाने' या ब्रह्मचर्य पालन का ही विधान किया गया है।"

यह मध्ययुग मे सती प्रथा के समर्थकों द्वारा [प्रोत्साहित विकृत] चिन्तन का परिणाम है। वेदो मे बार-बार पत्नी को अग्निहोत्र के अधिकार दिये जाने के बावजूद तथा सती प्रथा का कहीं वर्णन न होने पर भी इसे मान्यता दी गई।

अन्याय की इस शृखला मे पुरुष को आगे भी अधिकार दिए गए हैं। उस समय राजा लोग कई पत्निया रखते थे। अत धर्माचार्यों को उनके समर्थन में वचन बनाना ही था। क्योंकि वे शक्तिसम्पन्न जो ठहरे। अत इस पुस्तक में कहा है कि—

"एक पुरुष के कई पत्निया हो सकती हैं, पर एक स्त्री के कई पति नहीं हो सकते। क्योंकि एक प्राचीन प्रमाण के आधार पर तर्क यह है कि एक यज्ञ के खू टे मे कई रस्सिया बाधी जा सकती हैं, पर एक ही रस्सी कई खू टे मे नहीं बाधी जाती।" पृ० १४२१ आदि अनेक स्थानों पर।

इस प्रकार इस विलक्षण चिन्तन के अनुसार पुरुष खू टा तथा स्त्री रस्सी है। खू टे के सभी कार्य पुरुष में तथा रस्सी के सभी कार्य स्त्री मे लागू होंगे। इसी प्रकार कन्याओं के वेदाध्ययन पर गजब तर्क देते हुए यह लिखा है कि—

"कन्याओं को वेदाध्ययन का अधिकार नहीं है। क्योकि यदि यह अधिकार मानेंगे तो घोड़े, बैल आदि के प्रति भी यह अधिकार मानना होगा।" (पृ० १४८७)

इससे स्पष्ट सिद्ध है कि पुस्तक के लेखक की दृष्टि मे कन्याएं घोड़े, बैल आदि पशु जाति की ही हैं। तभी उनसे तुलना सम्भव है। अन्यत्र पुन अपने विकृत तर्क का उपयोग करते हुए उन्होंने यह लिखा है कि—

"ईश्वर से निर्मित वेद पर सबका समान अधिकार नहीं है। क्योंकि यदि ऐसा मानेंगे तो ईश्वर से निर्मित कन्या पर भी सबका समान अधिकार क्यों न माना जावे।" पृ० १६४१

वैसा पूछना चाहिए कि यदि ईश्वर से निर्मित वस्तु पर सबका अधिकार नही तो हवा पानी पर सबको अधिकार क्यो माना जावे। उसके लिये भी परमिट जारी होना चाहिये।

इतना ही नहीं इस ग्रन्थ मे आधुनिक वैज्ञानिकों की प्रत्यक्ष सुस्पष्ट मान्यताओं को तोडते हुए उन्हीं मध्ययुगीन स्थापनाओ को मान्यता दी है। जैसे—

'यह पृथ्वी घूमती नहीं है। क्योंकि यदि यह घूमती तो झण्डे का मु ह सदा पश्चिम की ओर होता तथा पृथ्वी में सदा आधी चला करती। पृ० १२१५)

ये सभी पुराने ज्योतिषियों के तर्क है इनमें कुछ भी नया नहीं है। इनका आज के वैज्ञानिक उपायो से भली प्रकार खण्डन भी किया जा चुका है।

ये कुछ प्रतिलक्षण मे तर्क दिये गए हैं जिनके आधार पर हजारों पृष्ठों मे इन कुरीतियों का समर्थन किया गया है। इस प्रकार की समाज को पीछे धकेलने वाली शक्तियों का पूरी ताकत से विरोध किया जाना चाहिए।

आर्यसमाजों की गतिविधियां

चीन के संस्कृत विद्वानों को रत्न स्वामी पुरस्कार से सम्मानित किया

पेइचिंग में मंगलवार को भारतीय दर्शन के दो चीनी विद्वानों को प्रथम हान सुचीन विन्सेंट रत्नस्वामी भारत चीन मैत्री पुरस्कार प्रदान किए गए।

चीन दर्शन की जानी मानी भारतीय विशेषज्ञ श्रीमती हान सुचीन और उनके पति रत्नस्वामी ने जियाग जांयक्षिन और वांग बाक को सम्मानित किया। ये दोनों पुरस्कार विजेता चीन के सुप्रसिद्ध संस्कृत विद्वान प्रोफेसर जी क्षनलिन के शिष्य थे प्रोफेसर ने चीनी भाषा में रामायण का अनुवाद किया जियाग ने मनुस्मृति का भाषा में अनुवाद किया है और कमल सूत्र की संस्कृत पांडुलिपि तैयार की हैं। वांग बांक ने पश्चिमी देशों की यात्रा करने वाले सुप्रसिद्ध भिक्षुओं के संस्मरण एकत्र किए हैं। समारोह मे भारतीय राजदूत श्री के. पी. एस मेनन भी उपस्थित थे। (११-९-८५ नवभारत टाइम्स से साभार)

'वेद सप्ताह' 'हैदराबाद बलिदान दिवस' 'रक्षा बन्धन' श्रीकृष्ण जन्मोत्सव" चारों महान पर्वों के कार्यक्रम सम्पन्न हुए।

आर्य समाज के संगठन एक रूपता तथा अनुशासन के दिग्दर्शन

भारत की समस्त आर्य समाजों तथा सम्बन्धित स्कूलों संस्थाओं गुरुकुलों में १०-८-८५ से ८-९-८५ तक उपरोक्त पर्वों के उपलक्ष में विधिवत "यज्ञ" 'सम्मेलन', 'कथा' 'संगीत' प्रभात फेरियों और ऋषिलगर आयोजन किए गए समापन समारोह के अवसर पर प्रत्येक आर्य समाज में विद्वानों का आदर सत्कार किया गया। इस सम्बन्ध मे निम्नलिखित कुछ आर्य समाजों के नाम दिए जा रहे हैं —आर्य समाज हुवडा-उदयपुर आर्य परिवार-आगरा, आर्यसमाज बीसलपुर गयानगर-सोनाका अशोना-पो बाढ़(पटना), गुरुकुल देवरिया, आर्यसमाज अजमेर आर्य समाज अजय ट गिरदवाह हिसुआ वेद-संस्थान दिल्ली आर्यसमाज मांडर गोठ (म प्र) बहराइच फैशगाबाद बदायू, खुरजा इटावा, लश्कर, लक्ष्मीपुर दिल्ली, मोतीनगर, लोधीरोड करोलबाग, हनुमान रोड़, दीवान हाल, ग्रेटर कैलाश, अमर कालोनी राजेन्द्रनगर, गुरुविरजानन्द स्मारक करतारपुर, प्रान्तीय आर्य महिला सभा दिल्ली बिड़ला आर्य गर्ल्स सी सै-स्कूल दिल्ली जौनपुर इत्यादि।

धर्म प्रचार के लिए ६० पैसे में १० पुस्तकें

प्रचार के लिए भेजी जाती हैं। धर्म शिक्षा, वैदिक सन्ध्या, हवन-मन्त्र, पूजा किसकी, सत्यपथ, प्रभु भक्ति, ईश्वर प्रार्थना, आर्यसमाज क्या है, दयानन्द की अमर कहानी, जितने चाहें सैट मगावें।

हवन सामग्री ३.५० प्रति किलो, मुक्ति का मार्ग ४० पैसे, उपासना का मार्ग, ६० पैसे, भगवान कृष्ण ४० पैसे सूची मंगावें।

वेद प्रचारक मण्डल दिल्ली-५

श्री देवव्रत धर्मेन्दु का स्वर्गवास

दिल्ली, १८-९-८५

आर्य बन्धुओं को यह जानकर दुःख होगा कि श्री देवव्रत जी धर्मेन्दु आर्योपदेशक का दिनांक १६-९-८५ को पंत हस्पताल में सायं ७ बजे स्वर्गवास हो गया। उन्होंने सारा जीवन शिक्षा संस्थाओं और आर्य युवकों को वैदिक धर्म के सिद्धांतों से प्रभावित करने मे लगा दिया आप सार्वदेशिक सभा द्वारा संचालित सत्यार्थ प्रकाश की परीक्षाओं के वर्षों संचालक रहे। आर्य युवक परिषद, आर्य वीर दल आदि के युवकों को सदैव प्रोत्साहन देना आपका स्वभाव था।

१७ सितम्बर को लगभग १२ बजे आर्य बालगृह पटौदी हाउस से उनकी शवयात्रा प्रारम्भ हुई जिसमे सार्वदेशिक सभा के प्रधान लाला रामगोपाल शालवाले, ओम्प्रकाश त्यागी आदि अनेक गणमान्य आर्य नेता सम्मलित हुए। सार्वदेशिक प्रेस शोक प्रस्ताव के बाद बन्द कर दिया गया। सारे कर्मचारी शवयात्रा में सम्मिलित हुए। —कार्यालयाध्यक्ष

कैथल में कवि सम्मेलन

पलवल। आर्य वीर दल हरियाणा का प्रान्तीय महासम्मेलन २२ सितंबर शुक्रवार से कैथल में हो रहा है। २२ सितम्बर रात्रि ९.०० बजे कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया है जिसमें निम्नलिखित आर्य कविगण पधार रहे हैं:- प्रो० उत्तमचन्द शरर (संचालक), डा० राणा प्रताप गन्नौरी (संयोजक), श्री सियाराम निर्भय (आरा), श्री सत्यपाल वेदार (दिल्ली) श्री शीशाराम दीवान, श्री मुनव्वर साहिब, श्री व्याकुल जी एवं अन्य कई कविगण।

—अजीत कुमार आर्य, मन्त्री-हरियाणा

डा० सत्यव्रत जी शास्त्री का सम्मान

११-९-८५ को डा० प्रहलाद कुमार की ४० वीं जयन्ती पर दिल्ली विश्व विद्यालय संस्कृत विभाग के आचार्य तथा भारत के राष्ट्रपति द्वारा सम्मानित डा० सत्यव्रत जी शास्त्री का 'डा० प्रहलाद कुमार स्मारक समिति द्वारा महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय के संस्कृत विभागाध्यक्ष प्रो० डा. जयदेव की विद्यालंकार की अध्यक्षता में विशेष अभिनन्दन किया गया तत्पश्चात डा. सत्यव्रत जी ने एम. ए. संस्कृत में वेद विकल्प लेकर अध्ययन करने वाले छात्रों को वृत्ति वितरण किया डा० सत्यदेव चौधरी ने समीका धन्यवाद किया।

पंजि० नं० डी० (सी०) १७८ सार्वदेशिक साप्ताहिक (२९-९-१९८५) बिना टिकट भेजने का लाइसेंस नं० U ९३
R. N. 626/57 Licensed to post withoutprepayment, License No. 93 Post in D.P.S.O. on 20-9-85

सुल्तानपुर (अमेठी उ० प्र०) में सार्वदेशिक आर्यवीर दल प्रशिक्षण शिविर

तीन सौ युवक प्रशिक्षण में भाग लेंगे

वाराणसी। पूर्वी उत्तर प्रदेशाञ्चल के आर्य बन्धुओं को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि आगामी २८ अक्टूबर से ३ नवम्बर १९८५ तक सार्वदेशिक आर्य वीर दल प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया है। अनेक शिक्षण संस्थाओं के आचार्यों ने युवकों के साथ स्वयं भी ट्रेनिंग लेने का महत्व पूर्ण निर्णय लिया है।

शिविर में भाग लेने वाले सभी युवक गणवेश लेकर आवें और एक कापी और बालपैन ऋतु अनुकूल बिस्तर साथ लावें। स्मरण रहे श्री देवव्रत सिंह अधिष्ठाता आर्य वीर दल उत्तरप्रदेश का भी इस शिविर में सर्वात्मना योगदान रहेगा।

उद्घाटन के लिए उत्तर प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा के युवा मन्त्री श्री जगमोहन त्रिपाठी से प्रार्थना की गई है। दीक्षान्त भाषण सार्वदेशिक आर्य वीर दल के प्रधान संचालक श्री पं० बालदिवाकर हंस करेंगे।

पूर्वी क्षेत्र की सभी आर्य समाजों से अनुरोध है कि संरक्षक पं० रामकिशोर त्रिपाठी और संयोजक प्रधानवीर बाबूराम, आर्य समाज सुल्तानपुर (अमेठी) उ० प्र० से सम्पर्क करें और अधिक से अधिक युवकों को शिविर में प्रशिक्षणार्थ भेजें।

—अवधविहारी खन्ना
संचालक पूर्वी उत्तर प्रदेश

वार्षिक अधिवेशन

सार्वदेशिक प्रकाशन लिमिटिड कम्पनी के भागीदारों का वार्षिक अधिवेशन शनिवार २८ सितम्बर १९८५ को मध्याह्न २ बजे से पटौदी हाउस दरियागंज नई दिल्ली २ में सम्पन्न होगा।

सभी भागीदारों की समय पर उपस्थिति प्रार्थनीय है।

—मैनेजर सार्वदेशिक प्रकाशन लिमिटिड कम्पनी

साम-गान के सस्वर गायक स्वामी [illegible] सरस्वती का स्वर्गवास

अनन्त श्री विभूषित पूज्यपाद स्वामी [illegible] सरस्वती का सात सितम्बर को स्वर्गवास हो गया। वेद मन्दिर कोहो चित्रकूट से उनके शिष्य उन्हें नेहरू हास्पिटल लेकर पहुंचे किन्तु उन्हें बचा न सके।

स्वामी जी सामगान सस्वर करते थे उन्होंने अनेक विषयों में पी. एच. डी. करके दुर्लभ योग्यताएं प्राप्त की थी। बाल शिक्षा के भी वे आचार्य थे। उनका बचपन और यौवन आर्यवीर दल के रचनात्मक कार्यक्रमों का प्रावधान बनाने में व्यस्त रहा।

स्वामी जी ने आबू पर्वत पर महर्षि दयानन्द के उन स्थान को खोजने का सफल प्रयास किया जहां महर्षि दयानन्द सरस्वती ने दो बार ठहर कर महत्वपूर्ण ग्रन्थ लिखे थे। आपने वहां गुरुवर विरजानन्द, महर्षि दयानन्द के साथ साथ कुछ शिला लेख भी तैयार कराये थे आपने उस स्थान को वेद धाम की संज्ञा देकर वहां ब्रह्मचारी कपिलदेव को, जो अब स्वामी धर्मानन्द सरस्वती के नाम से विख्यात है समर्पित कर दिया। वे लगातार उस क्षेत्र में आठ वर्ष घूमते रहे।

स्वामी धर्मानन्द सरस्वती ने आबूपर्वत पर विशाल आर्य समाज मन्दिर बनवा दिया और अब वेद धाम में विशाल कूप एवं वैदिक छात्रावास आदि का योजनाबद्ध विकास करने को कृत-संकल्प है। स्वामी [illegible]नन्द जी ब्रह्मचारी जी को बहुत स्नेह करते थे और सदैव उनकी सराहना किया करते थे। अब कुछ दिनों से स्वामी जी चित्रकूट अयोध्या में रहकर वेद प्रचार कर रहे थे। वहां उन्होंने एक आश्रम की भी स्थापना कर दी है।

सार्वदेशिक प्रेस, दरियागंज नई दिल्ली में मुद्रित तथा ओ३म्‌कार स्वामी मुद्रक और प्रकाशक के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

ओ३म्

सार्वदेशिक

साप्ताहिक

सृष्टि संवत् १९७२९४९०८६ | सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र | दयानन्दाब्द १६१ दूरभाष : ३७४७७१
(वर्ष २० अंक ४२) | आश्विन कृ० ७ वि० २०४२ रविवार ६ अक्तूबर १९८५ | वार्षिक मूल्य १०) एक प्रति २० पैसे

पंजाब के मुख्यमन्त्री श्री सुरजीतसिंह बरनाला को प्रारम्भिक परेशानियां

श्री सुरजीतसिंह बरनाला को न केवल अपना मन्त्री मण्डल बनाने में ही कठिनाई होगी बल्कि बाद में आपको अपने साथियों की ओर से कई प्रकार की उत्पन्न की हुई कठिनाइयों का सामना करने के लिये तैयार होना होगा। इसलिये आज अकाली यह समझ रहे हैं कि वे विजयी के रूप में पंजाब के शासक बने हैं और इसलिये स्वाभाविक है कि इनमें से कुछ यह समझ लें कि अब इनके लिये कोई कानून या जाब्ता नहीं। मुझे पूरी आशा है कि श्री बरनाला इस बात को ध्यान में रखेंगे कि प्रत्येक जिम्मेदार सरकार पर कुछ प्रतिबन्ध होते हैं। यह इनके अधिकारों या प्रभुत्व पर कोई प्रतिबन्ध नहीं कहा जा सकता बल्कि इस जिम्मेदारी का एक अंश है जो प्रत्येक सरकार पर लागू होता है। चुनाव के मध्य कई वायदे किये जाते हैं। लोगों को प्रसन्न रखने के लिए घोषणाएं भी की जाती हैं। किसी किसी समय कायदा कानून और जाब्ता की अनभिज्ञता के कारण कई ऐसी बातें भी कह दी जाती हैं जिनको बाद में व्यावहारिक रूप देने में कठिनाई उत्पन्न हो जाती है। आज साधारण विचार यह है कि बरनाला मन्त्री मण्डल शासनारूढ़ होने के बाद उन सब लोगों को रिहा कर देगा जिन पर आज मुकदमे चल रहे हैं या उन्हें सजायें हो चुकी हैं। यह भी कहा जा रहा है कि जिन सैनिकों पर विद्रोह करने या अनुशासन भंग करने के आरोप हैं उनके विरुद्ध भी सब आरोप वापिस लेकर उन्हें माफ कर दिया जायेगा। बेशक कुछ को अगर पंजाब सरकार चाहे तो रिहा कर सकती है और कुछ स्थिति में केन्द्र को केवल कह ही सकती है तो भी बरनाला को भी यह बात ध्यान में रखनी होगी कि इस इकट्ठी रिहाई का परिणाम क्या होगा। जिन व्यक्तियों पर हिंसा के मुकदमे चल रहे हैं उन्हें माफ करने से पहले श्री बरनाला और उनके जिम्मेदार साथियों को दस बार यह सोचना होगा कि वे जो कुछ कर रहे हैं वह कहां तक मुनासिब और कहां तक उपयुक्त है। निश्चित रूप में प्रत्येक सरकार के हाथ में संगीन से संगीन अपराध को माफ करने का अधिकार होता है किन्तु इस अधिकार का प्रयोग करने से पहले इसे आसपास की परिस्थितियों और इसके कार्य की दिशाओं पर भी ध्यान करना होता है।

मैं समझता हूं कि पिछले तीन चार वर्षों में पंजाब में जो कुछ होता रहा है इससे कुछ लोगों के दिमाग में गैर जिम्मेदारी और मनमानी करने की भावना भी बैठ गई होगी। ऐसे तत्वों को सन्मार्ग पर लाना कोई आसान कार्य नहीं और एक अनुभवी शासक के रूप में श्री बरनाला ने यह सोच लिया होगा कि ऐसे तत्वों से कैसे पेश आना है।

—के० नरेन्द्र

सभा प्रधान व सभा मन्त्री का सहारनपुर का दौरा

सहारनपुर के दंगा ग्रस्त क्षेत्रों का दौरा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले तथा मन्त्री श्री ओमप्रकाश त्यागी ने गत दिनों किया और वस्तु स्थित की जानकारी ली इस अवसर पर लिये गये चित्र में श्री रामगोपाल शालवाले श्री ओमप्रकाश त्यागी व श्री सच्चिदानन्द शास्त्री सहारनपुर के राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के प्रमुख कार्यकर्ता श्री लालकृष्ण गांधी, लालापार आर्यसमाज के प्र०बी०बी० गौतम तथा विद्यासागर शर्मा आदि नेतागण दिखाई दे रहे हैं।

सम्पादक—ओमप्रकाश पुरुषार्थी

प्रबन्ध-सम्पादक—सच्चिदानन्द शास्त्री

भारतीय कानून अथवा इस्लामी कानून ?

श्री वीरेन्द्र जी प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब

भारत एक धर्म निरपेक्ष देश है जिसका अभिप्राय है कि प्रत्येक धर्म और जाति के लोगों को एक जैसे अधिकार प्राप्त हैं। ऐसा तभी सम्भव है यदि सबके लिए एक जैसा कानून हो। यही कारण है कि स्वाधीनता के पश्चात् जब हमारा नया सविधान बनाया गया था तो उसकी प्रस्तावना में लिखा गया था ?

"हम भारत के लोग भारत को एक सम्पूर्ण प्रभुत्व सम्पन्न समाजवादी पन्थ निरपेक्ष लोकतन्त्रात्मक गणराज्य बनाने के लिए तथा उसके समस्त नागरिकों को सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक न्याय विचार अभिव्यक्ति विश्वास धर्म और उपासना की स्वतन्त्रता तथा हर तरह की सुविधा तथा समानता का अवसर उपलब्ध करने के लिए उन सबमे व्यक्ति की गरिमा तथा राष्ट्र की एकता व अखण्डता को सुनिश्चित करने वाली बन्धुता बढाने के लिए दृढ सकल्प होकर अपनी इस सविधान सभा में आज तारीख २० नवम्बर १९४९ को इस सभा के द्वारा इस सविधान को अगीकृत अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं।"

जो कुछ हमारे सविधान की इस प्रस्तावना मे लिखा गया था उसमे धर्म के आधार पर किसी प्रकार के भेदभाव के लिए कोई स्थान नही है। नया सविधान बनाते समय जो सिद्धान्त बनाए गए थे उन्हे कार्य रूप देने के लिए समूचे देश में एक ही तरह का कानून चल सकता है—दो तरह का नही। अंग्रेज के समय हिन्दू पानी और मुस्लिम पानी हुआ करता था क्योकि अंग्रेज फूट डालो और राज करो के सिद्धान्त पर काम करता था। किन्तु जब अंग्रेज की दासता समाप्त हो गई तो उसके साथ उनके द्वारा चलाई हुई सब परम्पराए भी समाप्त होगई। भारत केवल स्वतन्त्र ही नही हुआ। उसने अपनी एकता और अखण्डता को सुदृढ करने का सकल्प कर लिया। इसके लिए सारे देश का एक ही कानून बनाया गया जो सब लोगो पर एक ही तरह से लागू होता था। बल्कि हमारे सविधान की धारा ४४ मे मे यह भी लिखा है कि सरकार का यह भी कर्त्तव्य होगा कि वह सारे देश के लिए एक समान कानून बनाए।

किन्तु हमारी एक मुश्किल रही है हमारे देश मे कई धर्म हैं और उनमें दो ऐसे हैं जिनकी जड देश से बाहर हैं। अर्थात् इस्लाम और ईसाइयत। इनके आधार दो ऐसे ग्रन्थ हैं जो हमारे देश से बाहर लिखे गए और जिनका न हमारे इतिहास से कोई सम्बन्ध है न हमारी सस्कृति से। मेरा अभिप्राय कुरान और बाईबल से है। इनमे बहुत कुछ वह भी लिखा गया है जिसका हमारी सस्कृति से दूर का भी सम्बन्ध नही है। उदाहरण के रूप में कुरान एक व्यक्ति को चार तक पत्निया रखने की अनुमति देता है। हमारे धर्म और हमारी सस्कृति मे तो दूसरी पत्नी की भी अनुमति नही है। तलाक का रिवाज आज से दस पन्द्रह वर्ष पहले भी कोई नहीं जानता था। अब वह आम हो गया है। स्वतन्त्रता के बाद जब हमारे नेताओं के समक्ष यह प्रश्न आया कि अब किस तरह के कानून बनाए जाए तो हमारे नेताओं में ही इस पर प्रबल मतभेद पैदा हो गया। देश की बागडोर पण्डित जवाहरलाल नेहरू के हाथ मे थी। उन पर पश्चिम का अधिक प्रभाव था। अपने जीवन का अधिकांश समय उन्होंने इगलैंड में गुजारा था। इसलिए उनके विचार भी अंग्रेजो जैसे थे। जब उन्होंने हिन्दू कोड बिल बनाने का निर्णय किया और उसमें हिन्दू नारी को तलाक का अधिकार दिया गया तो तत्कालीन राष्ट्रपति डा० राजेन्द्रप्रसाद ने उसका विरोध किया। उनमे और पण्डित जवाहरलाल के मध्य इस प्रश्न पर इतना अधिक मतभेद था कि एक समय ऐसा आया जब डा० राजेन्द्रप्रसाद अपने पद से त्यागपत्र देने को तैयार हो गए।

अभिप्राय यह कि शुरू मे ही हमारे नेताओं मे यह मतभेद रहा है कि सारी जनता के लिए एक जैसा कानून क्या हो। यह मतभेद इसलिए भी रहा है कि धर्म के आधार पर जो अल्पसख्यक हैं वे अपने लिए एक अलग कानून मांगते रहे हैं हिन्दू इस देश में बहुमत मे हैं। यद्यपि अब वे जम्मू-काश्मीर पजाब और नागालैंड में अल्पमत मे हैं। पंजाब में वह अल्पमत मे नहीं थे लेकिन राजनीतिक आधार पर वे बहुमत से अल्पमत मे परिवर्तित कर दिए गए। किन्तु समूचे देश मे जो अल्पसख्यक हैं अर्थात् ईसाई, मुसलमान सिख और जैनी ये हिन्दुओ से अलग नही हैं। उनके कुछ रीति रिवाज हिन्दुओ मे अलग अवश्य हैं लेकिन आधारभूत रूप से ये सब एक ही हैं। इस लिए इन सबके लिए एक ही कानून बन सकता है।

मुश्किल पैदा होती है तो ईसाइयो और मुसलमानो के बारे मे विशेष रूप से मुसलमानो के बारे मे वे कुरान के अनुसार चलते हैं। कुरान शरीफ विश्व को अरब देश की देन है यह पन्द्रह सौ वर्ष पूर्व लिखा गया था। उस समय वहा स्थिति क्या होगी इसका अनुमान हम इससे लगा सकते हैं कि जब चार पत्नियो की अनुमति की सफाई दी जाती है तो कहा जाता है कि हजरत मुहम्मद से पहले अरब मे हालत इतनी बुरी थी कि उसमे सुधार लाने के लिए चार पत्नियों की सीमा निर्धारित करनी पडी यह हजरत मुहम्मद की अरबो पर बहुत बडी कृपा समझी जाती है।

इससे हम समझ सकते हैं कि आज हमारे देश में यदि भारतीय कानून और इस्लामी कानून की बहस शुरू हो गई है तो उसकी गहराई में कौन सी भावना काम कर रही है। जो लोग समझते हैं कि हजरत मुहम्मद ने चार पत्नियों की अनुमति देकर अरब लोगों पर बहुत बडा एहसान किया था वे यह भूल जाते हैं कि वे पन्द्रह सौ वर्ष पहले की बात करते हैं और अरब देश की बात करते हैं। हम बीसवी शताब्दी में से गुजर रहे हैं और अब २१वीं में प्रवेश करने की तैयारी कर रहे हैं। ऐसे समय मे जब इस्लामी कानून और भारतीय कानून की बहस शुरू की जाती है तो वह अर्थहीन प्रतीत होती है। इसकी तह में कौन सी विचारधारा है, इसके बारे में आगामी लेख में निवेदन करूगा। (२७-९-८५ वीर प्रताप से साभार)

सम्पादकीय

सामूहिक धर्म परिवर्तन का राजनीतिक पहलू

वर्तमान समय में भारत में विदेशी धन की सहायता से शिक्षा व सेवा की आड़ में यहां निर्धन जनता का लोभ लालच व धन के बल पर सामूहिक धर्म परिवर्तन हो रहा है। इसका एक पहलू तो स्पष्ट ही है कि इससे भारत के धार्मिक वर्गों का सन्तुलन प्रभावित होगा अर्थात् भारत का वर्तमान धार्मिक व सांस्कृतिक ढांचा प्रभावित होगा परन्तु धर्म निरपेक्ष सरकार के लिये क्या यह विशेष चिन्ता का विषय नहीं है यह पहलू केवल धार्मिक वर्गों के नेताओं अथवा मठाधीशों का ही सिर दर्द है।

अब प्रश्न यह है कि क्या वर्तमान सामूहिक धर्मपरिवर्तनों का कोई राजनीतिक पहलू भी है जो कि देश के राजनीतिक ढांचे को प्रभावित कर सके। इस प्रश्न का संक्षेप में उत्तर यही है कि जो व्यक्ति संसार के इतिहास से लेशमात्र भी परिचित हैं वह बड़ी सरलता से समझ सकते हैं कि ये सामूहिक धर्मपरिवर्तन अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति का एक अंग है और राजनीतिक दृष्टि से एक विशेष राजनीतिक उद्देश्य की पूर्ति के लिये किया जा रहा है। इस सर्वविदित तथ्य को जो व्यक्ति नहीं समझता है उसे राजनीति अथवा सरकार में रहने का कोई अधिकार नहीं है।

धर्म वास्तव में मन,मस्तिष्क से सम्बन्धित कर्त्तव्यों का नाम है जो व्यक्ति की शारीरिक, मानसिक, आत्मिक व सामाजिक उन्नति कर उसे इस लोक और परलोक में सुख, शान्ति व परमानन्द प्राप्त कराता है। प्रत्येक व्यक्ति को अपना धर्म चुनने का अधिकार है और होना चाहिये। जिस देश में व्यक्ति को अपना धर्म चुनने का अधिकार नहीं है वह देश सभ्य देशों की कोटि में न होकर जंगली देशों की कोटि में होते हैं जैसे संसार के सम्पूर्ण मुस्लिम देशों और मुख्यतः अरब देशों में व्यक्ति को इस्लाम धर्म के अतिरिक्त अन्य धर्म स्वीकार करने का अधिकार नहीं। अन्य धर्मावलम्बियों को वहां दूसरे दर्जे का नागरिक माना जाता है।

संसार में जब तक वैदिक धर्म या इससे सम्बन्धित धर्म प्रभावी रहे तब तक व्यक्ति को अपना धर्म चुनने की पूर्ण स्वतन्त्रता थी अर्थात् विचार स्वातन्त्र्य था परन्तु जब से संसार में सैमेटिक धर्मों अर्थात् ईसाई व इस्लाम धर्म का उदय हुआ तब से धर्म एक स्वतन्त्र वस्तु न रह कर राजनीति का एक प्रधान अंग बन गया था यों कहिये कि इन धर्मों ने राजनीति अथवा शासन को अपने प्रचार का एक प्रमुख साधन बना लिया।

इतिहास इस बात का साक्षी है कि इस्लाम व ईसाई धर्मों ने संसार में किस प्रकार तलवार तथा लोभ लालच के बल पर अपने धर्म का प्रचार किया। इनकी तलवारों तथा छलकपट से भरे उपायों से इतिहास के पन्ने खून से रंगे पड़े हैं और धर्म नाम की वस्तु को कलंकित कर दिया है। इन्हीं धर्मों के काले कारनामों से संसार के महान क्रान्तिकारी कार्लमार्क्स के हृदय में धर्म से घृणा हो गई और उसने धर्म को अफीम की संज्ञा दे दी कि जिसे खाकर मनुष्य समाज पागल हो जाता है।

इन्हीं सैमिटिक धर्म अर्थात् ईसाई तथा इस्लाम धर्म के अनुयायियों द्वारा भारत में विदेशी धन के बल पर गरीब हिन्दुओं का सामूहिक धर्म परिवर्तन किया जा रहा है। इनको धन भेजने वाले अमरीका अरब देश इन्हीं धर्मों के अनुयायी हैं। इन धर्म परिवर्तनों के पीछे राजनीतिक उद्देश्य न होना आश्चर्य की वस्तु ही हो सकती है। अपितु यह कहा जा सकता है कि इन धर्म परिवर्तनों के पीछे राजनीति ही है और राजनीति का न होना सर्वथा असम्भव है। यदि इस बातको देशभक्त जनता व सरकार न समझे तो इसे देशका दुर्भाग्य ही कहा जा सकता है इसके अतिरिक्त मूर्ख से मूर्ख व्यक्ति भी समझ सकता है कि अमरीका अरब देश अपनी अपार धनराशि भारत में शिक्षा व सेवा के नाम पर भेज रहे हैं तो ऐसा कौन-सा कारण है कि इन देशों के हृदयों में भारत के लिये अचानक इतना प्रेम उमड़ आया कि वे पानी की तरह यहां अपना धन बहा रहे हैं।

आवश्यकता—अंग्रेजी सामवेद की

सार्वदेशिक सभा को तुरन्त स्व० आचार्य धर्मदेव विद्यावाचस्पति, विद्या मार्त्तण्ड कृत सामवेद के अंग्रेजी भाष्य की आवश्यकता है। जिन सज्जनों के पास यदि कोई प्रति उपलब्ध हो तो उसे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा रामलीला मैदान, नई दिल्ली के पास भेज दें। उसकी कीमत सभा भुगतान कर देगी अन्यथा नया संस्करण छपने पर उसकी एक प्रति दे दी जायेगी।

ओम्प्रकाश त्यागी
मन्त्री-सार्वदेशिक सभा, दिल्ली

ईसाई व इस्लाम आदि सैमिटिक धर्मों के इतिहास से अपरिचित लोगों के विचारार्थ इन सामूहिक धर्म परिवर्तनों के कुछ राजनीतिक पहलू दिये जा रहे हैं जो इस प्रकार हैं—

१—विदेशी ईसाई मिशनों द्वारा भारत के पर्वतीय क्षेत्रों में किये जा रहे सामूहिक धर्मपरिवर्तनों के पीछे क्या राजनीति छिपी है वह इस राजनीतिक षड़यन्त्र के आविष्कारक श्री विलियम फ्रेंक ग्राहम के शब्दों में बतलाना ठीक होगा जो कि उन्होंने फरवरी सन् १९५१ में अमरीका के ब्राडकास्टिंग स्टेशन से निर्णय की घड़ी नामक प्रोग्राम पर बोलते हुये कहा था कि—अमेरिका के लोगो यदि आप संसार में कम्युनिज्म का सामना करना चाहते हो तो तुम्हें इसका मुकाबला सबसे पहिले भारत में करना होगा क्योंकि अमरीकी और रूसी ब्लाक के मध्य भारत के हाथ में ही सन्तुलन शक्ति है। इसके लिये भारत में पादरियों की एक सेना भेजनी होगी जिसका नारा होना चाहिये कि भारत में बूढ़ा हिन्दू धर्म समाप्त हो और उसकी लाश पर ईसाई धर्म का झण्डा लहरे। ताकि अपने चर्चों के द्वारा अमरीका भारत के राजनीतिक ढांचे पर अपना नियन्त्रण कर सके।

ऊपर लिखित योजना के द्वारा भारत में विदेशी ईसाई मिशनरी और अपार धनराशि आई और देखते-२ भारत के समस्त पर्वतीय क्षेत्रों में फैल गये। नागालैण्ड, मिजोरम, मेघालय, छोटा नागपुर, केरल आदि क्षेत्रों पर उनका अधिकार हो चुका है। नागालैण्ड मिजोरम में चल रहे विद्रोह भी उसी योजना के अंग हैं।

अमरीकी षड़यन्त्र से प्रभावित होकर अरब देशों ने भी एक षड़यन्त्र की रचना सन् १९७१ में पान इस्लामिक लीग के रूप में की जिसका लक्ष्य मरक्को से लगाकर इन्डोनेशिया के समस्त देशों को इस्लाम धर्म के झण्डे के नीचे लाना है। उसी योजनानुसार इस्लामिक कल्चरल सेन्टर लन्दन ने अपने डायरेक्टर श्री बदवई को भारत में गुप्त रूप से सर्वे करने भेजा। उसकी रिपोर्ट कुवैत देश से प्रकाशित अरब टाइम्स समाचार पत्र में प्रकाशित हुई जिसमें स्पष्ट रूप से कहा गया है कि सेन्टर के लिये भारत में अपनी योजना की पूर्ति के निमित्त ऐसा सुनहरी अवसर कभी प्राप्त नहीं होगा। इस समय यदि प्रयत्न किया जाय तो भारत के समस्त हरिजनों को मुसलमान बना कर यहां मुसलमानों की संख्या तुरन्त बीस करोड़ बनाई जा सकती है। इसी योजना के अन्तर्गत भारत में हरिजनों का सामूहिक धर्म परिवर्तन किया जा रहा है।

अथर्ववेद में मातृभूमि-भक्ति

—डा० मानसिंह

भूमि के लिये "पृथिवि" अथवा "भूमि" शब्द सर्वाधिक प्रयुक्त है। विस्तीर्ण स्थल होने से भूमि "पृथिवी" है तथा भूमा होने से "भूमि" वैदिक संहिताओं में पृथिवी वर्णन के प्रसंग में प्रायः प्रथनार्थक 'प्रथ्' धातु का प्रयोग किया गया है कि इन्द्र ने पृथिवी को फैलाया। (पप्रथत्) वहां इस व्युत्पत्ति का संकेत किया गया है। प्रथित या विस्तृत होने के कारण प्रथ धातु से "पृथिवी" शब्द को व्युत्पन्न मानने की प्रवृत्ति "तैत्तिरीय-संहिता" में भी पाई जाती है—"साऽप्रथत् सा पृथिव्यभवत् तत्पृथिव्यै पृथिवित्वम्" (१।१।२।१) यही स्थिति तैत्तिरीय ब्राह्मण में भी है—"यदप्रथत् तत्पृथिवै पृथिवित्वम्" (१।१।३।४) निरुक्तकार यास्क ने भी इसे प्रथ धातु ही व्युत्पन्न माना है—"प्रथनात्पृथिवीत्याहुः"। १।१४॥

पृथिवी का वर्णन प्रायः द्यौ के साथ सम्मिलित रूप में ही हुआ है। अकेले इसकी स्तुति 'ऋग्वेद' के पंचम मण्डल के तीन मन्त्रों से युक्त चौरासीवें सूक्त में (५।८४) तथा अथर्ववेद के बारहवें काण्ड के तिरसठ मन्त्रों से युक्त लम्बे एवं सुन्दर प्रथम सूक्त में हुई है। ऋग्वेद के अनुसार पृथिवी पर्वतों का भार वाहन करती है, क्षमाशील भूमि वनस्पतियों को धारण करती है। यह वर्षा के जल को फैलाकर मिट्टी को उर्वरा बनाती है। यह मही अर्थात् महती, दृढ़ एवं अर्जुनी अर्थात् प्रदीप्ता है।

भूमि की सर्वाधिक पूर्ण, महिमा मण्डित तथा भाव प्रवण स्तुति 'अथर्ववेद' के बारहवें काण्ड के प्रथम "भूमि" सूक्त में उपलब्ध होती है। अथर्वा ऋषि ने मातृरूपिणी वसुन्धरा की समग्र पार्थिव पदार्थों की जननी तथा समस्त प्राणियों एवं वस्तुओं की पोषिका के रूप में स्तुति की है और उससे प्रजा को समस्त दोषों-क्लेशों तथा अनर्थों से बचाने और सुख समृद्धि प्रदान करने के लिये प्रार्थना की गई है। राष्ट्र पर आपत्ति आने पर इस सूक्त का विनियोग विहित है। ऋषि की दृष्टि पृथिवि के सभी रूपों उसकी मिट्टी, पर्वतों वनों, नदियों, ऊंचे-नीचे तथा समतल, प्रदेशों कृषि सम्पत्ति, पशु-पक्षियों, वृक्षों एवं औषधियों, ऋतुओं, यज्ञवेदियों एवं यूपों, सभा समितियों और नाना भाषाओं को बोलने वाले तथा अनेक धर्मों से (सम्बन्धित) सम्बद्ध मनुष्यों पर गई है। तदनुसार सत्य, बृहत उग्र, ऋत, दीक्षा, तप, ब्रह्म तथा यज्ञ पृथिवि को धारण करते हैं। वह भूत तथा भव्य की पत्नी अर्थात् पालन करने वाली है—

"सत्यं बृहदृतमुग्रं दीक्षा तपो ब्रह्म यज्ञ पृथिवी धारयन्ति।
सानो भूतस्य भव्यस्य पत्न्युरुं लोकं पृथिवी नः कृणोतु ॥१२॥

इन्द्र भूमि के ऋषभ हैं, अर्थात् वे भूमि पर वृष्टिरूपी रेत सिंचन करते हैं। निद्रा रहित देव सदैव अप्रमाद पूर्वक उसकी रक्षा करते हैं। पृथिवी सृष्टि के आदि में समुद्र में जल रूप में विद्यमान थी, जिसका अनुसरण मनीषियों ने अपनी माया अर्थात् गूढ़ शक्तियों से किया। उसका हृदय परम व्योम में सत्य से आवृत अमृत है। अश्विना ने इसे मापा है। विष्णु ने इस पर विक्रमण किया है। और शचीपति इन्द्र ने इसे अपने लिये शत्रुओं से रहित किया है। यह इन्द्र द्वारा रक्षित है, जो प्रमाद रहित इसकी रक्षा करते हैं। पृथिवी के दुर्ग देवों द्वारा निर्मित हैं। प्रजापति विश्वकर्मा ने पृथिवी को प्रत्येक दिशा में रम्य बनाया है। जलयुक्त लोक में प्रविष्ट पृथिवी का विश्वकर्मा ने हवि से अनुगमन किया और तत्फलस्वरूप गुहा में निहित वह समग्र भोगों की आश्रय स्थली आविर्भूत हुई। ऋत से प्रथमोत्पन्न प्रजापति इसकी न्यूनता की पूर्ति करते हैं। माता भूमि द्यौ से सौमनस्य रखने वाली तथा श्री एवं भूति प्रदान करने वाली है।

मातृभूमि का भौतिक रूप भी 'अथर्ववेद' के इस सूक्त में खूब उभरा है। वह मानवों से अनाधित अनेक उद्वतों अर्थात् ऊंचाइयों, पर्वतों अर्थात् निम्न प्रदेशों तथा समस्थलों से युक्त है। समुद्र, स्यन्दनशील नदियां एवं जल इसी पर हैं। अन्न और कृषि भी इसी से सम्बद्ध है। इसी पर दिन-रात प्रमाद रहित सब ओर विचरण करने वाले तथा अप्रमाद जल प्रवाहित होते रहते हैं यह माया शक्ति से युक्त है। पर्वत अरण्य आदि भी इसी के हैं। भूमि बभ्रु (अर्थात् भूरे रंग वाली), कृष्णवर्णी, रोहिणी अर्थात् रक्तवर्णी विश्वरूपा है। मरणधर्मा मानव भूमि पर ही जन्म लेते हैं और इसी पर विचरण करते हैं। दो पैरों तथा चार पैरों वाले प्राणियों का यही धारण पोषण करती है। ये पंच मानव इसी के हैं, जिन मर्त्यों के लिये उदित होता हुआ सूर्य अपनी रश्मियों से अमृत ज्योति को सब ओर प्रसारित करता है। पृथिवी शिला, पत्थर तथा धूलि से सम्बद्ध है। यह ऊर्जा, पुष्टि, अन्न भाग एवं घृत धारण करती है। इसी पर धान, जौ आदि अन्न उत्पन्न होते हैं। मनुष्यों के गमन से युक्त नाना मार्ग इसी के हैं। इसी पर रथ तथा गाड़ियों के जाने के मार्ग हैं, इसी पर भद्र तथा पापी दोनों ही संचरण करते हैं।

भूमि सभी की आश्रय स्थली है। यही अनेक विध श्वसन एवं प्राणन क्रिया करने वाले प्राणि वर्ग को धारण करती है यही गायों अश्वों तथा पशुओं की विशिष्ट आवास स्थली है। यही जगत की निवेशनी वैश्वानर अग्नि की धारयित्री और धनों की धापयनी है। इसी पर वृक्ष तथा वनस्पतियां दृढ़तया स्थिर रहती हैं। भूमि से प्रार्थना की गई है कि हम ऊपर उठते हुए, बैठते हुए, खड़े होते हुये, तथा चलते हुये अपने दायें तथा बायें पैरों से व्यथित न हों, शयन करते हुये जब हम भूमि के ऊपर लेटें तो सबको शय्या प्रदान करने वाली भूमि हमारी हिंसा न करे।

"उदीराणा उतासीनास्तिष्ठन्तः प्रक्रामन्तः।
पद्भ्यां दक्षिणसव्याभ्यां मा व्यथिष्महि भूम्याम् ॥२८॥"
"यच्छयानः पर्यावर्ते दक्षिणं सव्यमभि भूमे पार्श्वम्।
उत्तानास्त्वा प्रतीचीं यत् पृष्टीभिरधि शेमहि।
मा हिंसीस्तत्र नो भूमे सर्वस्य प्रतिशीवरि ॥३४॥"

हम विचरण करने वालों के लिये दिशा-प्रदिशायें सुखकारी हों और भुवन में आश्रय लेते हुये हम गिरे नहीं—

"यास्ते प्राचीः प्रदिशो या उदीचीर्यास्ते भूमे अधराद याश्च पश्चात्।
स्योनास्ता मह्यं चरते भवन्तु मा निपप्तं भुवने शिश्रियाणः ॥३१॥"

पृथिवी पर सर्वत्र हमारी निर्बाध गति हो। वह हमें पश्चिम तथा पूर्व उत्तर तथा दक्षिण सभी दिशाओं से न हटाये। वह हमारे लिये कल्याण रूपिणी हो, परिपन्थी हमें प्राप्त न करे और आयुध हमसे अलग रहें।

(क्रमशः)

आर्यसमाज दक्षिण केलीफोर्निया का प्रथम वार्षिकोत्सव लांस एंजिल्स में सफलता पूर्वक सम्पन्न

लांस एंजिल्स पश्चिमी अमेरिका में आर्य समाज कैलीफोर्निया का प्रथम वार्षिक उत्सव बड़े धूम-धाम से सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर कई कार्य कर्ताओं ने घर-घर जाकर यज्ञ की महिमा का प्रचार किया। इस कार्य में भारत से श्रीमती सुमित्रा अमीन तथा श्रीमती राम चमेली ने काफी प्रभावशाली कार्य किया। श्रीमती कमला शर्मा तथा श्रीमती सुमित्रा अमीन को अमेरिका में आर्य समाज के प्रचार कार्य के उपलक्ष में सम्मानित किया गया। आर्य समाज के प्रधान पं० बालकृष्ण शर्मा, मन्त्री श्री मदनलाल गुप्ता ने आर्य समाज के उत्सव पर भारी जनसमूह को वेद व वैदिक सिद्धान्तों के बारे में प्रेरणा की। इस अवसर पर अनेक विद्वानों के भाषण भी हुए। आर्य समाज का हाल कई बार दयानन्द के जयकारों से गूंज उठा। विदित हो कि गत वर्ष सार्वदेशिक सभा के महामन्त्री श्री ओमप्रकाश त्यागी ने इस क्षेत्र का व्यापक दौरा किया था और आर्यसमाज की यहां स्थापना की थी।

निर्भयता का वर दो

—सुरेशचन्द्र वेदालंकार (गोरखपुर)

अथर्ववेद के २।१५।१ से २।१५।६ तक के मन्त्रों में प्राण की निर्भयता का प्रतिपादन किया गया है। मन्त्र है—

यथा द्यौश्च पृथिवी च, न बिभीतो न रिष्यत ।
एवा मे प्राण मा बिभेः ॥अथर्व. २ । १५ । १

ऐ मेरे प्राण ! तू किसी से डर मत। देख ! यह धरती क्या किसी से डरती है ? यह आकाश क्या किसी से डरता है ? क्या ये किसी से हिंसित होते हैं ? नहीं। तू भी मत डर कोई तेरा बाल बांका नहीं कर सकेगा।

यथा अहश्च रात्रिश्च न बिभीतो न रिष्यत ।
एवा मे प्राण मा बिभेः ॥अथर्व २।१५।२

ऐ मेरे प्राण ! तू किसी से डर मत। देख ! यह दिन क्या किसी से डरता है ? यह रात्रि क्या किसी से डरती है ? यह दोनों क्या किसी से क्षीण होते हैं ? इसी प्रकार तू भी मत डर तेरा कोई बाल बांका भी न कर सकेगा।

यथा सूर्यश्च चन्द्रश्च न बिभीतो न रिष्यतः ।
एवा मे प्राण मा बिभेः ॥अथर्व २।१५।३

ऐ मेरे प्राण ! तू किसी से डर मत ! देख ! यह सूर्य क्या किसी से डरता है ? यह चन्द्रमा क्या किसी से डरता है ? क्या इनकी कोई इससे हानि होती है ? नहीं ! अतः तू भी मत डर, तेरा कोई बाल बांका भी न कर सकेगा।

यथा ब्रह्म च क्षत्रं च न बिभीतो न रिष्यतः ।
एवा मे प्राण मा बिभेः ॥ अथर्व २।१५।४

ऐ मेरे प्राण ! तू किसी से डर मत ! देख ! यह ब्रह्म क्या किसी से डरता है ? यह क्षत्र क्या किसी से डरता है ? क्या ये कभी नष्ट भ्रष्ट होते हैं ? नहीं। अतः तू भी मत डर तेरा कोई बालबांका भी न कर सकेगा।

यथा सत्यं चानृतं च न बिभीतो न रिष्यत. ।
एवा मे प्राण मा बिभेः ॥ २ । १५ । ५

ऐ मेरे प्राण ! तू किसी से डर मत ! देख ! यह सत्य क्या किसी से डरता है ? क्या ये कभी विनिष्ट होते हैं ? इसलिए हे मेरे प्राण ! तू भी मत डर तेरा कोई बालबांका भी न कर सकेगा।

यथा भूतं च भव्यं च न बिभीतो न रिष्यत ।
एवा मे प्राण मा बिभेः ॥ २ । १५ । ६

ऐ मेरे प्राण ! तू किसी से डर मत। देख ! यह भूत क्या किसी से डरता है ? यह भविष्य क्या किसी से डरता है ? डरते नहीं, इसलिए नष्ट भी नहीं होते। इसी प्रकार ऐ मेरे प्राण ! तू भी मत डर। तेरा कोई बाल-बांका नहीं कर सकेगा।

यह बड़ा ही प्रेरणात्मक सूक्त है। इसमें बतलाया गया है कि भय शक्ति क्षीणता लाता है। जैसे सूर्य और चन्द्र पृथिवी और द्युलोक, भूत और भविष्य, दिन और रात, ब्रह्म और क्षत्र तथा सत्य और अनृत आदि शक्तिशाली वस्तुएं स्थिर और बलवती हैं, क्योंकि वे डरती नहीं, इसलिए वेद कहता है कि सत्य की रक्षा करने और धर्म का पालन करने के लिए हमें कभी डरना न चाहिए।

मनुष्य के जीवन में कठिन समस्यायें और बाधाएं आकर उसके कार्य को अव्यवस्थित बनाने की ओर बढ़ रही हों, उस समय भी निडरता के साथ उनका सामना करना, प्रसन्न रहना और आशावादी दृष्टिकोण रखना, मनुष्य के जीवन की सफलता, शक्ति और सन्तोष का कारण है। भय निराशा का जनक है। मनुष्य में आगे बढ़ने की महत्वाकांक्षा स्वाभाविक है। जिस हृदय में महत्वाकांक्षा उत्पन्न नहीं होती और वह प्रार्थना और पुकार नहीं उठती "प्रथमं मो रथं कृधि" कि हे प्रभो ! मेरे जीवन रथ को आगे कर दो !' वह जीवन शून्य है। जीवन के निर्माण के लिए प्रतिकूल परिस्थितियों से लड़ते हुए, जीवन की दौड़ में आगे बढ़ने के लिए हमें अनथक परिश्रम, पुरुषार्थ और निर्भयता का मार्ग पकड़ना होगा। संसार ने हम नहीं मांगे हैं जिनकी हम आशा करते हैं। यदि हम किसी वस्तु की आशा न करें तो हमें कुछ भी नहीं मिलेगा। इसलिए अपने प्राण से, अपने मन से, भय को निकालकर बाहर करो और अपने सौभाग्य सूर्य की ओर मुंह करके खड़े रहो। विजय और सुख प्रत्येक मानव के स्वाभी स्वत्व हैं।

निर्भयता मनुष्य में शक्ति का संचार करती है इसके बिना दुनिया में किसी भी सफलता की प्राप्ति सम्भव नहीं यहां तक की सद्गुणों की प्राप्ति भी असम्भव है। सद्गुण का वास सत्कर्म में होता है। सत्कर्म शक्ति के बिना नहीं किया जा सकता। शक्ति बिना निर्भयता के नहीं आ सकती। जिसके प्राणों में निर्भयता आ गई, संसार की कोई भी विपत्ति उसका मार्ग नहीं रोक सकती। प्राण की निर्भीकता का उदाहरण स्वामी श्रद्धानन्द में दिखाई देता है।

एक दिन वृक्षों की छाया में स्वामी श्रद्धानन्द अपने शिष्यों को शिक्षा दे रहे थे। कांगड़ी का वह निर्जन प्रदेश था, जिसमें शेर और चीते ही मनुष्य के साथी हो सकते थे। एक दिन पढ़ाते समय हिंसा का पुत्र सिंह वहां आ पहुंचा। वह उन पर झपटना चाहता था। महात्मा मुंशीराम ने अपने गुरुकुल के ब्रह्मचारियों की रक्षा के लिए अपने जीवन की जरा भी परवाह किए बिना अपनी पगड़ी में पत्थर बांधा और शेर की ओर घुमाते हुए लपके। इस अजीब कद्दावारी व्यक्ति को अपनी ओर आता हुआ देखकर जंगल का शासक शेर वहां से चम्पत हो गया। यह है प्राणों की निर्भीकता का उदाहरण।

निर्भय मनुष्य के लिए शेर क्या चीज है, सूर्य का भी मुकाबला कर सकता है। निडर मनुष्य ही लोगों के दिल दिमाग और मनुष्यत्व पर शासन कर सकता है। सिकन्दर निर्भयता की मूर्ति था। उसने यूरोपियन सभ्यता को नष्ट करने वाले शत्रुओं की धज्जियां उड़ा दीं। नैपोलियन ने २५ वर्ष की आयु में इटली पर अपना झंडा लहराया। रोमुलस ने २० वर्ष की आयु में ही रोम की नींव डाली। न्यूटन ने २१ साल का होने से पहले ही अपने महानतम आविष्कार कर डाले। लूथर ने निर्भयता के बल पर २१ वर्ष की आयु में धर्म सुधारक का पद पाया। अभिमन्यु ने १६ वर्ष की आयु में शत्रुओं के ऐसे छक्के छुड़ाए कि वह अपने युग का परम पराक्रमी योद्धा बन गया। भरत ने शेर के बच्चों से लड़ते लड़ते वह पराक्रम दिखलाया कि उसी के नाम पर हमारे देश का नाम भारत वर्ष पड़ गया। लवकुश ने अपने निडर स्वभाव के कारण ही अपने पिता राम जैसे शक्तिशाली व्यक्ति को पराजित किया।

याद रखने की बात है कि भ्रम बड़ी भयानक वस्तु है। मेरे पड़ौस में एक महिला रहती है। उसके पिता की टी. बी. रोग से मृत्यु हो गई। एक दिन किसी ने उसके सामने कहा कि जिसके पिता को टी. बी. हो या जिसकी माता को टी. बी. हो उसे अवश्य टी. बी. हो जाएगी। आप शायद विश्वास न भी करें पर उस लड़की को टी. बी. न रहते हुए भी टी. बी. हो गई। उसका वजन कम होने लगा। पाचनक्रम बिगड़ गया। चेहरे का रंग बिगड़ गया और अभी कुछ मास पूर्व उसे भी बिना टी. बी. के, केवल टी. बी. के भय मात्र से मृत्यु का शिकार होना पड़ा। इससे ज्ञात होता है कि मनुष्य का सबसे बड़ा शत्रु भय है। इसके कीटाणुओं को अपने हृदय से निकाल कर बाहर करो।

सुभाषचन्द्र बोस का उदाहरण हमारे सामने है। उन्होंने जब देखा कि उनके सब साथी उनका साथ छोड़ गए हैं तो भी उन्होंने साहस न छोड़ा। वे देश छोड़कर विदेश भाग गए। उनके मन में एक स्वप्न था, एक संकल्प था देश की स्वतन्त्रता का। उस समय कोई भी सुभाष के स्वप्न को कोरा स्वप्न कहकर हंसी उड़ा सकता था। पर उनके हृदय में देश प्रेम की ऐसी आग थी जिसकी ज्वाला में तपकर, उनका 'आजाद हिन्द फौज' का स्वप्न साकार हुआ। मरते दम तक उन्होंने शत्रुओं से लोहा लिया और साहस के साथ कर्तव्य निभाया।

यदि आप अपनी महत्वाकांक्षा को पूरा नहीं कर पाते, निराशाओं और विपत्तियों से डरकर अपना साहस खो बैठते हैं तो इसमें दोष आपके विधाता का नहीं है, इस संसार का भी नहीं, दोष किसी का है तो सिर्फ आपका ही है। अतः अपने जीवन में, अपने प्राण में निर्भयता का संचार करो। 'योगी' कवि के शब्दों में हम कहेंगे :—

ओ मानव ! मत घबरा झुंझला,
तू जूझ युद्ध में प्राण लिए,
प्राणों में अविचल दृढ़ निश्चय,
अधरों पर मधु मुस्कान लिए ।

वेद और दयानन्द

—पं० उमाकान्त उपाध्याय, कलकत्ता

भारतीय परम्परा में, ऋषि मुनियों की मान्यता में वेद स्वतः प्रमाण है। भविष्य पुराण में साफ लिखा है—

श्रुत्या सह विरोधे तु, बाध्यते विषयं विना ॥

इसी प्रकार जाबाल का वचन है—

श्रुतिस्मृति विरोधे तु श्रुतिरेव गरीयसी ॥

परन्तु स्वामी दयानन्द जी ने इन वाग्जिल के संघर्षों से ऊपर उठाकर वेद को एक नये आसन पर स्थापित कर दिया। स्वामी दयानन्द जी का सर्वविदित उद्घोष है—

वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है, वेदों का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।

(आर्य समाज का तृतीय नियम)

वेद प्रचार में दो प्रकार की बाधायें आती हैं। बाधा की प्रथम दिशा विकासवाद, पश्चिम का भौतिकवाद तथा कथित-मानिक विज्ञानवाद है।

बाधा की दूसरी दिशा पौराणिकवाद, पौराणिक कर्मकाण्ड, वेदों में इतिहास इत्यादि हैं।

जहां तक विकासवाद का प्रश्न है, इस विचारधारा के लोग मानव सभ्यता में, सांस्कृतिक उत्थान में; ज्ञान-विज्ञान में विकास को स्वीकार करते हैं। वे वेदों को ज्ञान-विज्ञानमय सोच भी नहीं सकते। वेद मानव-इतिहास के सर्वप्रथम ग्रन्थ हैं। विकासवाद के अनुसार उस समय का मनुष्य बन्दर और वन-मानुषों के अधिक समीप था, वह ज्ञान विज्ञान की बात कर भी कैसे सकता था। इसलिए इनकी मान्यता में वेदोंमें ज्ञान विज्ञान इसलिए नहीं हो सकता क्योंकि उस समय का मनुष्य अविकसित अनुभवहीन मूर्ख, विद्या बुद्धि से रहित बन्दरों जैसा ही था। इस मान्यता की छलक और तो और वेदों पर कार्य करने वाले कई पश्चिमी-विद्वानों पर भी पड़ी है उनका हृदय वेदों की महिमा स्वीकार करने को तैयार नहीं होता। श्री ग्रिफिथ ने वेदों के सम्बन्ध में एक बात लिखी है—

कि प्रो० मैक्समूलर के अनुसार वेदों का ऐतिहासिक महत्व बहुत अधिक है, फिर भी वेदों के अस्थानिक सूक्त बचपने, अर्थहीनता, नीरसता और विचारों की तुच्छता से भरे पड़े हैं। यदि कहीं कोई आत्मा की पुकार या आध्यात्मिकता या ईश्वरीय ज्ञान की बात झलकती है तो वह अत्यन्त अपवाद है।

जिन वेदों में स्वामी दयानन्द जी महाराज को ज्ञान-विज्ञान भक्ति भावना जप और पाठ में भी पुण्य दिखाई पड़ता है, जो वेद इन वेद भक्तों के लिए भक्ति भाव से भरे, आत्मा के आनन्द और उल्लास से सराबोर दिखाई पड़ता है, उसी में मैक्समूलर और ग्रिफिथ जैसे विश्वविख्यात विद्वानों को बचपना मूर्खता और तुच्छता दिखाई पड़ती है तो इसके पीछे उनकी ईसाई मान्यताओं के साथ ही विकासवाद की मान्यताएं भी उत्तरदायी हैं; जिनके परिप्रेक्ष्य में वेदों में उच्च ज्ञान, उच्चज्ञान, उच्चविचार इसलिए नहीं हो सकते क्योंकि वे मानव इतिहास के प्रथम ग्रन्थ हैं।

वेदों के विरोध की दूसरी दिशा वेदभक्तों की है वे वेद भक्त हैं, किन्तु इनकी वेदभक्ति का कारण रूढ़िवादिता है। वे वेदमन्त्रों को केवल कर्मकाण्ड के लिए मानते हैं। पौराणिक भाष्यकार, सायण, उव्वट, महीधर आदि ने इसी आधार पर वेदभाष्य किये। इस कारण हमारे देश के विद्वान या विदेश के विद्वान बहुत दूर तक वेदों को इन्हीं कर्मकाण्डपरक भाष्यों के माध्यम से समझ सके। परिणाम यह हुआ कि विदेशी विद्वानों की आस्था तो वेदों पर से उठ जाना सहज ही हो गयी काशी के सुप्रसिद्ध विद्वान काशी के पण्डित समाज के तात्कालिक प्रधान श्री पण्डित गोपाल दत्त शास्त्री दर्शन केसरी ने दो उदाहरण इस अनास्था के सम्बन्ध में दिए हैं—

आज हम केवल यज्ञभावपरक अर्थ करने वाले सायणाचार्यादि भाष्यकारों के भाष्य पढ़ने वालों को वेद के प्रति कितनी अनास्था हो जाती है इसके दो उदाहरण मुझे ज्ञात हैं। स्वर्गीय बाबू शिवप्रसाद जी गुप्त ने (काशी) वेद पर बड़ी श्रद्धा के साथ सायण भाष्य का किसी विद्वान से आदि से अन्त तक पाठ कराया और स्वयं भी वहां नित्य नियमतः बैठकर सुनते रहे। उसी अवसर पर एक रोज मैं वहां गया तो उन्होंने हाथ जोड़कर हंसते हुए मुझे कहा कि शास्त्री जी महाराज पहले ही अच्छा था कि मैंने वेद का अर्थ नहीं सुना था। जबसे मैंने सायणाचार्य का वेदार्थ सुना है तबसे तो मेरी वेद पर अनास्था हो गयी है।

दूसरा उदाहरण हमारे स्व० गुरु महामहोपाध्याय पूज्यपाद पं० वामाचरण तर्क चूडामणि जी महाराज हैं उन्होंने एक बार दर्शन पढ़ाते समय प्रसंगवश कह दिया था कि वेद के संहिता भाष्य में क्या रखा है? इन्द्र की स्तुति और वरुण की स्तुति ही तो भरी पड़ी है। हां सार तो उपनिषद की श्रुतियों में है जिस पर वेदव्यास जी ने विचार दिया है। ऐसा आपने सायणाचार्य और महीधराचार्य के भाष्य के अध्ययन का यही तो फल निकलता है। इसी कारण मैंने कहा है कि सायणाचार्य ने जहां वेदार्थ करके जगत् का उपकार किया है वहां ही उन्होंने केवल यज्ञपरक भाव अर्थ करके बड़ा भारी अपकार किया है।

वेद केवल कर्मकाण्ड के ग्रन्थ बन गये तो सुधी विद्वानों की श्रद्धा और आस्था इन पर से उठ गई। विद्वान लोग व्याकरण और न्याय, साहित्य और स्मृतियां इत्यादि पढ़ने पढ़ाने लगे और वेदों का पढ़ना पढ़ाना लुप्त सा हो गया। इस सम्बन्ध में बंगाल के प्रसिद्ध मनीषि विद्वान महर्षि देवेन्द्रनाथ ठाकुर ने अपने आत्म चरित्र में लिखा है:

वेद बंगाल से सर्वथा लुप्त हो चुके थे। न्याय और स्मृति शास्त्र सब पाठशालाओं में पढ़ाए जाते थे और इन शास्त्रों में निपुण अनेक पण्डित बंगाल में थे किन्तु वेदों की सर्वथा उपेक्षा की जाती थी। देश से ब्राह्मणों का वेदों के पढ़ने पढ़ाने का कार्य सर्वथा नष्ट हो चुका था। केवल नाम मात्र के ब्राह्मण रह गए थे, जो वैदिक ज्ञान से सर्वथा शून्य थे। वे केवल यज्ञोपवीतं धारी थे। एक दो विद्वान ब्राह्मणों को छोड़कर उनको वैदिक संध्या वन्दन के मन्त्रों का अर्थ भी नहीं आता था। (महर्षि दे० नाथ ठाकुर का आत्म चरित पृ० ४१)

जो बात महर्षि देवेन्द्रनाथ ठाकुर ने बंगाल के बारे में कही है वही बात सारे देश के लिए सत्य है। बंगाल में अनेक काशिपुर संस्कृत विद्या का केन्द्र था उसी तरह काशी अथवा अन्य स्थलों पर संस्कृत के अध्ययन अध्यापन की अच्छी परम्परा चल रही थी समर्पित जीवन विद्वान १५-२० वर्ष लगाकर संस्कृत पढ़ते थे किन्तु वेद कहीं पढ़े नहीं जाते थे।

इस ऐतिहासिक पृष्ठ भूमि में स्वामी दयानन्द जी महाराज की घोषणा, वेद सब सत्य विद्याओं की पुस्तक है। वेदों का पढ़ना पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है, कितनी अर्थ पूर्ण और क्रान्तिकारी है।

वेद परमेश्वर के ज्ञान हैं और मनुष्य मात्र के लिए हैं। चाहे कोई भारत वर्ष का हो या कोई भारत वर्ष से बाहर का हिन्दू या मुसलमान, ईसाई हो या नास्तिक शूद्र हो या अछूत, वेद सबके कल्याण के लिए है, मनुष्यमात्र के लिए है। स्वामी दयानन्द की क्रान्तिकारी मान्यता का महत्व तब समझ में आता है जब हम यह देखते हैं कि पौराणिक विद्वानों ने स्त्री शूद्रों के लिए वेदों के अध्ययन का निषेध कर दिया था। पौराणिक कहते थे—स्त्री शूद्रो नाधीयाताम् इति श्रुते" स्वामी दयानन्द ने ऐसी मान्यताओं पर बड़ी कठोर भर्त्सना भेजी और कहा कि तुम कूए में पड़ो तुम्हारी श्रुति कपोल कल्पित है।

स्वामी दयानन्द से पूर्व मध्यकाल के आचार्यों ने स्त्री शूद्रों का वेदाध्ययन निषेध किया। स्वामी शंकराचार्य ने वेदान्त दर्शन के भाष्य में साफ लिखा है—न शूद्राय मतिम्दद्यात्' शूद्र को वेद नहीं पढ़ना चाहिए और यदि वेचारा सुन ही ले तो उसके कान में लाख और शीशा पिघला देना चाहिए। शूद्र श्मशान के समान है—

एतद् श्मशानं यद् शूद्रः तस्मात् शूद्र समीपे नाध्येतव्यम् इति।

स्वामी शंकराचार्य ने स्त्रियों के सम्बन्ध में बृहदारण्यक उपनिषद का भाष्य करते हुए लिखा है—

दुहितुः पाण्डित्यं गृहतन्त्र विषयमेव वेदेऽनधिकारात्" अर्थात् कन्याओं को पढ़ाने की बात को गृह विषयक ही समझना चाहिए क्योंकि उन्हें वेद पढ़ने का अधिकार नहीं है। अधिकार अनाधिकार के सम्बन्ध में यही धारणा श्री रामानुजाचार्य, श्री माधवाचार्य, श्री वल्लभाचार्य इत्यादि मध्यकालिक सभी आचार्यों की रही है। यह तो स्वामी दयानन्द जी महाराज की अपार विद्या उदारता और तप का फल है जो आज वेद सर्वत्र पढ़े पढ़ाये जा रहे हैं।

स्वामी दयानन्द ने वेदों का भाष्य किया और साधारण जनता से वेदों का सीधा परिचय हो इस दृष्टि से वेदों का हिन्दी में भी भाष्य किया। स्वामी दयानन्द ने अपने वेद भाष्य का आधार यौगिकवाद बनाया। नैरुक्तिक प्रक्रिया के आधार पर वेदों का भाष्य किया। वेद नित्य हैं अतः इनमें अनित्य मानव इतिहास की कल्पना असंगत है। साधारण रूप में यह सरलता से समझा जा सकता है कि वेद सृष्टि के आदि में मिले तो उसमें किसी राजा महाराजा या महर्षि मुनि का इतिहास कैसे हो सकता है? यह सर्वसम्मत पक्ष है कि ब्राह्मण ग्रन्थों में इतिहास है किन्तु इससे यह कह देना कि वेद में भी इतिहास है, नितांत भ्रममूलक है। वेद में व्यक्तियों के नाम का प्रयोग मिलता है। किन्तु वह उन व्यक्तियों के नाम से बहुत पूर्व सृष्टि की आदि से प्रयोग होता आ रहा है। अतः वेदों में इतिहास का भ्रम नहीं करना चाहिए। मनु महाराज ने लौकिक संज्ञाओं के बारे में बहुत साफ लिखा है—

'वेद शब्देभ्य एव आदौ पृथक संस्थाश्च निर्ममे"

मानव जीवन की दिव्यता

—श्री रामवीर शर्मा आचार्य, एम. ए.

मानव जीवन अतीव पवित्र एवं श्रेष्ठ है। इस मानव जीवन को पाकर मनुष्य देवपद भी प्राप्त कर सकता है और राक्षस पद भी। यह कर्म योनी के अन्तर्गत है। इसमें मनुष्य जैसा कर्म करता है तदनुकूल वह फल और उसी के अनुसार वह जन्म पाता है।

मानव जीवन की महिमा अनन्त है। यह लोक और परलोक की एक कड़ी है। चाहे तो कोई व्यक्ति इसे बिगाड सकता है और चाहे तो सुन्दर और पवित्र बना सकता है। मानव धर्म शास्त्र में लिखा है—

भूतानां प्राणिनः श्रेष्ठाः, प्राणिषु बुद्धि जीविनः।
बुद्धिमत्सु नराः श्रेष्ठाः, नरेषु ब्राह्मणाः स्मृताः॥
ब्राह्मणेषु च विद्वांसः, विद्वत्सु कृतबुद्धयः।
कृतबुद्धिषु कर्तारः कर्तृषु ब्रह्मवेदिनः॥

सभी पदार्थों में प्राणी श्रेष्ठ होते हैं प्राणिधारी अर्थात् पशु-पक्षी, कीट पतंगों में बुद्धिजीवि श्रेष्ठ होते हैं। बुद्धिजीवियो में मनुष्य, मनुष्यों में भी ब्राह्मण, ब्राह्मणों में विद्वान्, विद्वानों में प्रतिभाशाली, उनमें भी कर्त्तव्यपरायण तथा उनमें भी ब्रह्मवेत्ता सर्वश्रेष्ठ माने जाते हैं।

इस उपर्युक्त कथन से यहां सिद्ध होता है कि मानव जीवन अतीव श्रेष्ठ है। इसे सफल बनाने का प्रयत्न करना प्रत्येक मानव का कर्त्तव्य है। यह जीवन बड़े शुभ कर्मों से प्राप्त होता है। असंख्य योनियों को पार करने के बाद यह योनि प्राप्त होती है और इसे भी व्यर्थ गवा दिया तो हमें पुनः पशु या कीड़े आदि का नारकीय जीवन बिताना पड़ेगा। एक कवि ने लिखा है:—

नर तन के चोले का पाना बच्चों का कोई खेल नहीं।
जन्म-जन्म के शुभ कर्मों का होता जब तक मेल नहीं॥
नर तन पाने के लिए उत्तम कर्म कमाया कर।
प्रेमी भर प्रेम मे ईश्वर के गुण गाया कर॥

व्यक्ति अपने ही कर्मों से ही राक्षस और देवता बन जाता है। यदि वह अच्छे कर्म करता है तो वह देवता बन जाता है और अत्याचार अन्याय, बेईमानी तथा दुराचार आदि कर्म करता है, तो वही व्यक्ति राक्षस पद को प्राप्त कर लेता है। राक्षस या देव कोई भिन्न प्रकार के प्राणी नही होते, मनुष्य ही होते हैं जो कर्मों के आधार पर बन जाते हैं।

इसलिए मनुष्य जीवन को सफल बनाने का सभी को प्रयत्न करना चाहिये। भोजन करना, सोना, डरना, ईर्ष्या द्वेष रखना ये सभी बाते तो मनुष्य और पशु-पक्षियों से समानरूप से पाई जाती हैं। और कोई-कोई गुण तो मनुष्यों से भी अधिक पाया जाता हैं फिर भी, मनुष्य में एक विशेषता पाई जाती है वह है धर्म। धर्माचरण करना केवल मनुष्यो में पाया जाता है। अन्य प्राणियो मे नही। इस धर्म के बिना मनुष्य पशु के ही तुल्य है।

धर्म का अर्थ तिलक छापे लगाना अथवा एकादशी व पूर्णिमा आदि को व्रत रखना नहीं है। धर्म का अर्थ कर्त्तव्य पालन है। उन कर्मों का आचरण करना जिससे मानव मात्र का कल्याण हो वे सभी, कर्म धर्म के अन्तर्गत आते हैं। शास्त्रकारों ने धर्म की परिभाषा देते हुए कहा है:—

"यतोऽभ्युदय निःश्रेयस सिद्धिः स धर्म.।"

अर्थात् जिस कर्म से मानवमात्र की उन्नीत एव कल्याण हो वही धर्म है। अन्य उपनिषदकारों तथा स्मृति कारों ने भी इसी बात का समर्थन किया है। मनुस्मृति में महाराज मनु ने कहा है:—

'श्रुति स्मृति सदाचारः, स्वस्य च प्रियमात्मनः।
एतच्चतुर्विधं प्राहु', साक्षाद्धर्मस्य लक्षणम्॥

शास्त्रों, स्मृतियों एवं सत्पुरुषों द्वारा निर्दिष्ट आचरण तथा आत्मा के अनुकूल ही धर्म है। अर्थात् जिन कार्यों को करने का शास्त्रों और स्मृतियों मे विधान है, जिन कार्यों को सज्जन लोग करते आये हैं तथा जो बातें अपने आपको अच्छी मालूम पड़ती हैं वे सभी बातें धर्म कहलाती हैं।

इस धर्म का आचरण करने से ही मनुष्य पशुओं से श्रेष्ठ माना जाता है क्योंकि और सब बातें तो मनुष्यो और पशु पक्षियों में समान ही है पर धर्म ही इस जन्म को तथा दूसरे जन्म को सुधारने वाला है। जिन व्यक्तियों ने धर्माचरण किया है वे ही ससार में महान् बने हैं। और उनका ही यश आज तक अमर है। उनकी कृतियां उनके यश को चिरस्थायी बनाए हुए हैं। मर्यादा पुरुषोत्तम राम, योगीराज कृष्ण, धर्मराज युधिष्ठिर, स्वामी शकराचार्य, महर्षि दयानन्द सरस्वती आदि को कौन नही जानता जिन्होने अपना सारा जीवन ससार की भलाई करने मे बिताया अपने प्राणो की चिन्ता न करके धर्म का ही पालन करते रहे।

अत इस दिव्य मानव जीवन को सफल बनाने के लिये सदा उत्तम कर्म (धर्म) करने चाहिये जिससे यह दिव्य मानव शरीर हमें बार-बार प्राप्त होता रहे और अन्त में उस परमपिता को भी प्राप्त कर ले जो इस मानव जीवन का अन्तिम लक्ष्य है।

पंचपुरी गढ़वाल में आर्य समाज मन्दिर के निर्माण के लिए देशभर की आर्य समाजों और दानी सज्जनों से

अपील

श्री शान्तिप्रकाश प्रेम गढ़वाल के सुप्रसिद्ध आर्य समाजी नेता हैं। उन्होने जीवन पर्यन्त वैदिक धर्म की बड़ी मूल्यवान सेवायें की हैं। श्री शान्तिप्रकाश जी ने देश की आर्य समाजों और दानी सज्जनों से, अपील की है कि पंचपुरी मे आर्य समाज मन्दिर एवं दयानन्द पुस्तकालय के लिए दान देकर अपने कर्त्तव्य का पालन करें। मेरी देश भर के आर्य समाजों और दानी सज्जनो से निवेदन है कि वे अधिक से अधिक धन भेजकर उनकी सहायता करें। जो सज्जन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के पते पर धन भेजना चाहे, वह धन सभा में भेज दें यहां से सीधा पचपुरी भेज दिया जायेगा। गढवाल क्षेत्र में यह आर्यसमाज पचपुरी और दयानन्द विद्यालय वैदिक धर्म प्रचार का महत्वपूर्ण केन्द्र है। आर्य समाज मन्दिर काफी पुराना हो चुका है, अत. उसके पुन. निर्माण के लिए जनता के सहयोग की आवश्यकता है।

रामगोपाल शालवाले
सभा प्रधान

महर्षि दयानन्द सरस्वती और नारी-मुक्ति (२)

—आचार्य देवेन्द्र दत्त द्विवेदी

भारत में भी सती दाह जैसी घिनौनी घटनाओं के पीछे भी आक्रामक ईरानी, रोमन जातियों का प्रभाव है। नारियों के साथ सम्बन्धी सिद्धान्त, जिनका प्रतिपादन 'मिताक्षरा' आदि ने किया, उसका आधार भारतीय संस्कृति पर विजातीय प्रभाव है।

हमारे सिख बन्धु भी यह कहते नहीं थकते कि उनके तीसरे गुरु अमरदास ने सती दाह का विरोध किया था। यथा—

सतियां एहुना आखिए जे मढ़िया लाग जलन।
सतियां सेई नानका जे बसने मोहि रहन॥

—ग्रन्थ साहब, महला ३

लेकिन, व्यवहार में क्या हुआ। खालसा राज की कहानी है —

२७ जून १८३९ को रणजीतसिंह की चिता पर ४ रानियां एवं सात दासियां ५ नवम्बर १८४० को रणजीतसिंह के बड़े पुत्र खड़गसिंह की चिता पर २ रानियां और ११ दासियां ९ नवम्बर १८४० को रणजीतसिंह का नौनिहालसिंह की चिता पर २ रानियां।

खालसा राज के प्रधान मन्त्री ध्यानसिंह डोगरा की चिता पर २ रानियां और ४ दासियां।

२१ सितम्बर १८४५ को रणजीतसिंह की सबसे छोटी रानी जिन्दा के भाई जवाहरसिंह की चिता पर ४ पत्नियां जिन्दा जला दी गयीं। कुल ५ वर्ष २ महीने २७ दिनों के अन्दर ३६ नारियां खालसा राजकी सरकारी व्यवस्था के अन्दर जिन्दा जलायी गयीं। स्मरणीय है कि यह वही समय है जबकि राजा राममोहनराय ने सती दाह के विरुद्ध आन्दोलन किया था।

इसलामी दुनिया में भी खलीफाओं के जमाने में अनेक स्त्रियों को इस लिए जलाया कि वे वैज्ञानिक थीं और इसलाम के सिद्धान्तों में विश्वास नहीं रखती थीं। मिस्र की हाइपेशिया का जलाया जाना इसका प्रमाण है। उस महिला का एकमात्र कसूर यह था कि वह रेखागणित को कुरान से अधिक तर्क-युक्त मानती थी। इसलाम पुरुषों को एक साथ अनेक पत्नियां रखने का आदेश देता है। इस प्रकार उसने स्त्रियों को पुरुषों की पाशविक वासनाओं की पूर्ति का साधन बना दिया। पैगम्बर के अनुसार स्त्रियां पुरुषों की खेतियां हैं वे उनसे जैसा चाहें वैसा सुलूक करने के हकदार हैं।

उपर्युक्त वर्णनों में ऐसा प्रतीत होता है कि मध्य युग में सारी दुनिया में स्त्रियों पर घोरतम अत्याचार हुए। प्रश्न उठता है कि क्यों?

उन संस्कृतियों में स्त्रियों को पुरुषों के समान चेतना युक्त माना ही नहीं गया था। विवाह काल में नारियों के प्रति वैदिक उपदेश इस बात के लिए इंगित करते हैं कि भारतीय संस्कृति अपने मूल रूप में नारियों को कितना सम्मान देती है —

साम्राज्ञ्येधि श्वशुरेषु साम्राज्ञ्युत देवृषु।
ननान्दुः साम्राज्ञ्येधि साम्राज्ञ्युत श्वश्र्वाः।

—अथर्व० १४।१।४४

श्वसुरों के लिए साम्राज्ञी बनो, देवरों के लिए साम्राज्ञी बनो, ननदों के लिए साम्राज्ञी बनो, बनो और साम्राज्ञी बनो सासों के लिए।

वर जब कन्या का पकड़ कर विवाह मण्डप में कुण्ड के पास आता है तो वह मण्डप में बैठ लोगों की ओर मुंह करके दोनों कहते हैं —

समञ्जन्तु विश्वे देवा समापो हृदयानि नौ।
सं मातरिश्वा सं धाता समु देष्ट्री दधातु नौ॥

ऋ० १०।८५।४७

यज्ञशाला में बैठे विद्वानो, निश्चय जानो कि हमारे हृदय जल की तरह मिल गये, हमारे हृदय हवा की तरह मिल गये, हमें इस प्रकार सम्पृक्त कर दे जानो।

लाजाहुति—सप्तपदी आदि सारी क्रियायें स्त्री पुरुष के अविभाज्य सम्बन्ध की ओर इंगित करती हैं। यज्ञों में पत्नी का पति के दक्षिण पार्श्व में बैठना इस बात का सबूत है कि वह पुरुष के कार्यों में एक साझीदार या Detter boif है। इन सब बातों के होते हुए भी लोपा मुद्रा विश्ववारा गार्गी आदि की सन्तति पैरों की जूतियां बना दी गयी। क्यों,

इसके उत्तर में फिर कहना पड़ता है विदेशी आक्रमणों के प्रभाव में संस्कृत-का गतमस्तक समाज इतना कुण्ठाग्रस्त हो गया कि उसने अपनी वास्तविक परम्परा को भुलाकर नकली शास्त्रों का हवाला देकर करने लगा।

"स्त्री-शूद्रौ नाधीयाताम् इति श्रुतेः।" पुरुषों की भांति उसने का वैदिक अधिकार प्राप्त है। उन्हें अज्ञान के घोर अन्धकारमय अन्धे कूप में बन्द करने लगा। इसी स्थिति में महर्षि दयानन्द सरस्वती का अवतरण होता है। यों तो अनेक सुधारवादी आये और उन लोगों ने स्त्रियों के निमित्त अनेक सुधारवादी परामर्श भी दिये। पर किसी ने वह नहीं किया जो महर्षि ने किया। महर्षि ने देश की जड़ दुनिया को तूफान-सा झकझोर दिया और बतलाया 'देख यह तेरी वास्तविक परम्परा है। नकली शास्त्रों का सहारा लेना बन्द करो, विवेक से काम लो और स्त्रियों के बराबरी के हक को स्वीकार करो।" हजारों वर्षों से नारियों पर हुये अवैधानिक क्रूर-अत्याचारों का वास्तविक अन्त यहां उपस्थित होता है। महर्षि ने वैचारिक परिवर्तन को सच्चा सुधार समझा यही है, उनकी विशिष्टता।

एशिया के सारे देशों में चाहे वहां कोई भी धार्मिक विश्वास क्यों न हो, किसी न किसी रूप में शास्त्र प्रमाण यथावत अपेक्षित समझा जाता है। एशियाई देशों में कोई भी सुधार तब तक स्थायित्व नहीं होता जब तक वह शास्त्र प्रमाण से सम्पुष्ट न हो। ईसाईयत या इसलाम की इमारतें प्राचीन बौद्ध एवं जैन परम्परा पर आधृत हैं। मुहम्मद साहब के चाचा तथाकथित "शहीलिया काल" के अरबी कवि जन जैन थे। ईसा को जन शिक्षा देने वाला जान लिविरियो (सन्यासी का इसाई रूपान्तर) सम्प्रदाय का था जिसमें ये राष्ट्रदूतों (पाली के स्थविर भुनियों) से प्रभावित था। यही कारण है कि इनकी दुनिया में भी शास्त्र-प्रमाण का वर्चस्व कायम रहा। इसलाम तथा ईसाइयत की दुनिया में वास्तविक सुधारवादी आन्दोलन इसलिए असफल रहे कि कुरान और बायबिल में इसके लिए कोई गुंजाइश नहीं थी। यही कारण है कि ईसाइयत की दुनिया में सुधारवादी आन्दोलनों की लाश कम्युनिस्टवाद का खड़ा हो गया। इसलाम की लाश पर भी यही खड़ा होगा, और होता जा रहा है इसके विपरीत वेदों में वास्तविक सुधार की भावना के विपरीत कुछ है ही नहीं। वेद-प्रमाण वास्तविक वास्तविक सुधार के पक्ष में होगा। महर्षि ने इस तथ्य को समझा। राममोहन राय का सुधारवाद आन्दोलन इसलिए अधिक प्रभावी नहीं बन सका कि उसका समुचित संयोजन वह शास्त्र प्रमाण से नहीं कर सके। महर्षि ने उनकी इस कमी को दूर कर दिया और सुधारवादी आन्दोलनों को शक्तिशाली बना दिया। नारी मुक्ति सम्बन्धी प्रयासों में भी महर्षि की यही भूमिका है।

भूपाल में यज्ञ द्वारा जलवायु की शुद्धि

महर्षि जी ने लिखा है कि हमारे देश में बड़े बड़े यज्ञ हुआ करते थे तो राष्ट्र में अकाल व महामारियां नहीं पड़ा करती थीं। अतः यज्ञ द्वारा जलवायु की शुद्धि होती व प्राणि निरोग होते थे।

भूपाल में वायु दूषित हुई हजारों व्यक्ति पशु मरे, आज भी उसका कुप्रभाव बना हुआ है जिसे दूर करने हेतु २८-१०-८१ सायं से ३-११-८१ प्रातः तक वैदिक यति मण्डल के तत्वावधान में गायत्री बृहद् यज्ञ करने का निश्चय किया गया है।

जिन्हें यज्ञ व गायत्री में निष्ठा हो और जन-कल्याण की भावना हो, वह पत्र व्यवहार करके स्वीकृति लेकर सम्मिलित हो सकते हैं।

व्रती बनने वालों के लिए निम्न नियमों का पालना अनिवार्य होगा।

(१) किसी व्यसन का-मांस, अण्डे, मादक द्रव्य, तम्बाकू किसी रूप में सेवन न करते हों या हमेशा के लिए त्यागें।
(२) यज्ञोपवीत धोती कुर्ता पहनना आवश्यक होगा।
(३) यम-नियमों का पालन विशेषतः ब्रह्मचर्य पालन जरूरी।
(४) रजोदर्शन की स्थिति में मातृशक्ति भाग न लें।
(५) आहार सात्विक, व्यवहार सत्य का रहना चाहिए।
(६) समय परिवर्तन का अधिकार अधिकारियों को रहेगा।
(७) यज्ञ सम्बन्धी ब्रह्मा जी का आदेश पालना होगा।
(८) अपने साथ बिस्तरा, जरूरी वस्त्र, थाली कटोरा गिलास लावें।
(९) अपनी चीजों को सम्भाल मालिकों को स्वयं करनी होगी।

यज्ञ समय प्रातः ६॥ से ८॥ सायं ३॥ से ५॥ यज्ञ २८-१०-८१ सायं आरम्भ होगा। ३-११-८१ प्रातः पूर्णाहुति होगी।

दयानन्द, कार्यकर्ता प्रधान वैदिक यति मण्डल
संचालक तपोवन आश्रम, देहरादून-२४८००८

धर्म प्रचार के लिए ६० पैसे में १० पुस्तकें

प्रचार के लिए भेजी जाती हैं। धर्म शिक्षा, वैदिक सन्ध्या, हवन-मन्त्र, पूजा किसकी, सत्यपथ, प्रभु भक्ति, ईश्वर प्रार्थना, आर्यसमाज क्या है, दयानन्द की अमर कहानी, जितने चाहें सैट मंगावें।

हवन सामग्री ३.५० प्रति किलो, मुक्ति का मार्ग ४० पैसे, उपासना का मार्ग, ६० पैसे, भगवान कृष्ण ४० पैसे सूची मंगावें।

वेद प्रचारक मण्डल दिल्ली-५

आर्य समाजों के निर्वाचन

नाम आर्य समाज	प्रधान	मन्त्री	कोषाध्यक्ष
मु. पो.-बाढ़ (पटना)	शिवनन्द प्रसाद	डा० केदार नाथ	शैलेन्द्र कुमार
हिलसा (नालन्दा)	मदन साहू आर्य	देवेन्द्र कुमार	हरदेव प्रसाद
शिवदेवा	वेदपाल दीक्षित	हरि प्रसाद गुप्त	रूपचन्द्र गोयल
नैनीताल	गुरुदेव विद्यालंकार	केदार सिंह	धनीराम
जमशेदपुर	राजपाल	डा. ओम्प्रकाश आर्य	रामकिशोर
जिला आर्य प्रतिनिधि सभा चौरीचौरा	हिंगराज	राजमंगल	रमेश प्रसाद
राजामण्डी आ.स.आगरा	दयानन्द आर्य	उमेशचन्द्र	श्याम सिंह
जिला उप प्रतिनिधि सभा बुलन्दशहर	शिवनन्दनदास आर्य	आचार्य धर्मेन्द्र	देवपाल
बाकोरिया का आ.स	डा. गोविन्द स्वरूप	श्याम सोसला	किशोर सिंह
नवीन आर्य समाज कृष्णनगर दिल्ली	बेतराम	दीना नाथ	सत्यप्रकाश
सदर बाजार	परमानन्द आर्य	ओमप्रकाश आर्य	डा. प्रेमचन्द्र
उदयपुर	श्रीमती मालती	ज्ञान प्रकाश	अर्जुन सिंह
पूर्णिया-बिहार	नित्यानन्द आर्य	निराला प्रसाद	मोती लाल
महाराज गंज	बिहारी लाल	चन्द्र शेखर	चन्द्रगुप्त
करनैल गंज गोण्डा	डा० धनेश सिंह	गिरीलाल	सत्यनारायण
बहुयोई	लव कुमार आर्य	रमेशचन्द्र	लालचन्द्र
कपूरथला	दरबारी लाल	योगेन्द्रपाल	ओमप्रकाश
महिला समाज मोहनगंज दिल्ली	सुनीति	प्रेमकुमारी	कमलेश
पोरबन्दर (सौराष्ट्र)	जुगलकिशोर	रमणभाई	रतनसी भाई
मंसूरी	चरणदास	परमात्मा शरण	प्रीतिपाल
तुलारामआर्य जिला. दुर्ग	धर्मपाल सिंह	रमेशचन्द्र	गुलाब चन्द्र

अनमोल वचन

दुश्मन की गोलियों का हम सामना करेंगे।
आजाद ही रहे हैं—आज़ाद ही रहेंगे॥　　—चन्द्रशेखर आजाद

वर्तमान में आत्म-रक्षा के लिए—राष्ट्र के उद्धार के लिए जो शक्ति हमें चाहिये—वह जंगलों या एकान्त गुफाओं में तपस्या से नहीं मिलेगी। वह प्राप्त होगी निष्काम कर्मयोग के द्वारा संग्रामरत रहने पर। अत्याचार को मिटाने का जो व्यक्ति प्रयत्न नहीं करता—वह अपने मनुष्यत्व का अपमान करता है।　　—नेताजी सुभाषचन्द्र बोस

अंग्रेजी शिक्षा पाया हुआ कोई भी हिन्दू अपने धर्म में श्रद्धा नहीं रख सकेगा। मेरा यह दृढ़ विश्वास है कि अगर हम लोगों की शिक्षा योजना पूर्णतया क्रियान्वित हो गई—तो आज सैंतीस वर्षों बाद बंगाल के उच्च वर्ग में भी कोई मूर्तिपूजक नहीं रह जायेगा।　　—लार्ड मैकाले

ओ३म्:—न चितसन्न पते जनो न रेपन्मनो यो अस्यघोरमाविवासात।
यज्ञैर्य इन्द्रे दधते दुवांसि क्षयत्स राय ऋतपा ऋतेजा॥　　—ऋग्वेद ७।२०।६

जो सत्य में उत्पन्न सत्य का पालक यज्ञादि कर्म सम्पृक्त श्रद्धार्चनों को प्रभु समर्पित करता है—यद्यपि वह यदा-कदा प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से हानि भी उठाता है—परन्तु अन्ततः वह अहिंस मनः-पक्ष मन्तव्यों द्वारा उद्भूत क्लेशों को सहकर भी धन-धान्य सम्पदाओं का राष्ट्र में सदैव सृजन करता है।

गीता का सन्देश सारे विश्व के लिए है। किसी भी देश जाति या समाज में कोई भी ऐसा व्यक्ति नहीं है जिसके लिए गीता में कोई लाभप्रद सन्देश न हो। सकल वेद-शास्त्र पारंगत पण्डित से लेकर निपट,निरक्षर, मूर्ख तक चक्रवर्ती सम्राट से लेकर घास-फूंस की झोंपड़ी में रहकर दिन काटने वाले अकिंचन तक तथा इस मायामय संसार से पूर्णतः विरक्त रहने वाले ज्ञानी पुरुषों से लेकर इसी में आमूल-चूल अनुरक्त कामुकों तक बालक वृद्ध, स्त्री-पुरुष सभी के लिए गीता में अमूल्य सन्देश भरे पड़े हैं।　　—गोस्वामी गणेशदत्त जी

स्त्री क्या है? साक्षात त्यागमूर्ति है। जब कोई स्त्री किसी काम में जी-जान से लग जाती है तो वह पहाड़ को भी हिला देती है।　　—महात्मा गांधी

अस्पृश्यता का कोई शास्त्रीय आधार नहीं है। परमेश्वर के घर का दरवाजा किसी के लिए बन्द नहीं है और यदि वह बन्द हो जाये तो वह परमेश्वर नहीं।　　—लोकमान्य तिलक

राजनीति "स्वार्थ" का साधन नहीं—सेवा का माध्यम है। वह स्वयं में साध्य नहीं—साध्य है लोक-कल्याण, जो राजनीति हमें मंजिल तक नहीं पहुँचा सकती—वह त्याज्य है।　　—स्व० पं० दीनदयाल उपाध्याय

आर्य समाज हजूरी बाग (श्रीनगर) के उद्घाटन समारोह पर सार्वदेशिक सभा के मन्त्री श्री ओम्प्रकाश त्यागी द्वारा दिया गया भाषण

(२० सितम्बर, १९८५)

श्रीमती बहन शाह जी, बहनो तथा भाईयो।

लार्ड मैकाले ने भारतवर्ष को गुलाम बनाने के लिए अपनी शिक्षा नीति ब्रिटिश सरकार द्वारा भारत में लागू की तो उसके परिणाम स्वरूप भारत के विद्यार्थी देखने मात्र में भारतीय रहे उनका धर्म, संस्कृति समाप्त हो गए। पाश्चात्य संस्कृति, सभ्यता, अंग्रेजी भाषा दिल व दिमाग में छा गए थे। महर्षि दयानन्द सरस्वती के द्वारा स्थापित आर्य समाज ने उसका विरोध करना अपना कर्तव्य समझा। स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज गुरुकुलीय शिक्षा पद्धति की स्थापना की तो महात्मा हंसराज जी ने डी० ए० वी० स्कूल व कालेजों की स्थापना की। इन दोनों पद्धतियों में शिक्षा के मूल विषय साथ धर्म, भाषा व संस्कृति तथा राष्ट्रभक्ति आदि को भी संरक्षण दिया गया। परिणाम स्वरूप दोनों संस्थाओं ने राष्ट्रभक्त व अच्छे विद्वान देश को दिए।

इसी शिक्षा पद्धति के आधार पर हजूरी बाग श्रीनगर में शिक्षा संस्था की स्थापना हुई थी। यहां पर लड़कियों के शिक्षा का विशेष प्रबन्ध किया गया है। मैं श्रीमती शाह को यह स्पष्ट कर देना चाहता हूं कि आर्य समाज लड़के व लड़कियों में लड़कों को महत्व देता है, क्योंकि लड़की ही राष्ट्र की निर्माता सिद्ध होती है। मुझे यह जानकर हर्ष हुआ कि यह शिक्षा संस्था समूचे काश्मीर व जम्मू में अपना स्थान रखती है। इसमें हिन्दू, मुसलमान, ईसाई व सिख सभी धर्मों के बच्चे पढ़ते हैं और सभी लोग इस संस्था को अपनी संस्था कह सकते हैं। मुझे अत्यन्त खेद और दुःख है कि पंजाब के दंगों के समय यहां कुछ उग्रवादी तत्वों ने इसमें आग लगा दी। मैं तथा सार्वदेशिक सभा के मान्य प्रधान श्री लाला रामगोपाल शालवाले उस समय यहां आये थे। हमने इसका निरीक्षण किया था और इस सम्बन्ध में हम जम्मू काश्मीर के तत्कालीन मुख्यमन्त्री डा० फारूक अब्दुल्ला से मिले थे। उनके साथ जो बातचीत हुई, वह बहुत ही दुर्भाग्यपूर्ण है। उसकी रिपोर्ट हमने तत्कालीन प्रधान मन्त्री स्व० श्रीमती इन्दिरा गांधी को भी दे दी थी।
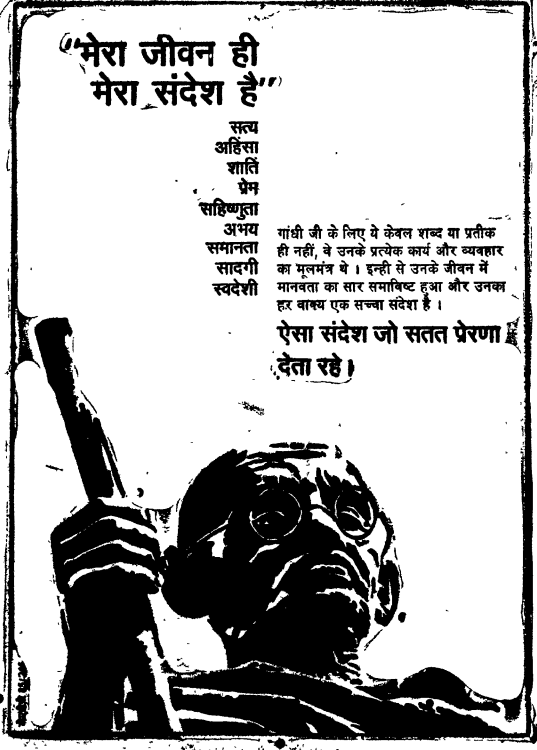
श्रीनगर आर्य समाज के अधिकारियों एवं स्कूल के अधिकारियों ने बड़ी लगन व श्रद्धा के साथ समूचे स्कूल और आर्य समाज मन्दिर को बनाकर खड़ा कर दिया है। देश के लोगों को विश्वास नहीं था कि इतनी जल्दी ऐसा कर सकें। इसके लिए मैं इन सबको हार्दिक धन्यवाद व बधाई देता हूं। इस निर्माण कार्य के के लिए डी. ए. वी. कालेज मैनेजिंग कमेटी के प्रधान प्रो० वेद व्यास जी तथा महामन्त्री श्री दरबारीलाल जी जो यहां पर पधारे हुए हैं, इन्होंने दो लाख रुपये की सहायता दी है, सार्वदेशिक सभा इन्हें विशेष रूप से धन्यवाद देती है।

एसेम्बली के विशेष कार्य से मुख्यमन्त्री श्री जी० एम० शाह यहां नहीं पधार सके, किन्तु उनकी धर्मपत्नी श्रीमती शाह यहां उपस्थित हैं। उनकी ओर से यहां उद्घाटन समारोह सम्पन्न हो रहा है। मैं आशा करता हूं कि स्कूल में जो कमियां रह गई हैं, वह माननीय मुख्यमन्त्री जी के सहयोग से उन्हें दूर करा देंगी।

पुनः सार्वदेशिक सभा की ओर से मैं आप सबको बधाई और धन्यवाद देता हूं।

शुद्धि समाचार

(१) आर्य समाज ग्रेटर कैलाश नई दिल्ली में २१।८-८५ को "कु: के के—मेरी मर्जी" की इच्छा अनुसार वैदिक धर्म में प्रवेश कराया और उसका नाम "कविता" रखा गया तत्पश्चात् आर्य युवक श्री गिरीश सोबती से वैदिक रीति से विवाह सम्पन्न हुआ।

(२) आर्यसमाज पश्चिमी चम्पारन बिहार के कार्यकर्ताओं के प्रयास से दो युवकों तथा एक युवती को वैदिक धर्म में लाया गया और उनका नाम सत्य प्रकाश, कुसुम प्रकाश और शान्ति देवी रखा गया।

रजि० नं० डी० (सी०) १७८ सार्वदेशिक साप्ताहिक (१-१०-१९८५) बिना टिकट भेजने का आदेश नं० U ११
R. N. 626/57 Licensed to post without prepayment, License No. 93 Post in D.P.S.O. on 4-10-85

श्री सच्चिदानन्द शास्त्री जी के स्वास्थ्य में सुधार :—

श्री शास्त्री जी से प्राप्त २४-९-८५ के पत्र से ज्ञात हुआ है कि उनके स्वास्थ्य में अब काफी सुधार है। वह अब कुछ खाने-पीने भी लगे हैं। आशा है वह शीघ्र ही स्वस्थ होकर हरिद्वार गुरुकुल कांगड़ी से सभा में आ जायेंगे। उनका पता मार्फत डा० हरीप्रकाश जी के है। ईश्वर उनको शीघ्र स्वस्थ करें।

—ब्रह्मदत्त स्नातक

आर्य समाज दारुस्सलाम का चुनाव

वर्ष १९८५-८६ के लिए आर्य समाज दारुस्सलाम (तंजानिया) के साधारण अधिवेशन में चुनाव निम्न प्रकार सम्पन्न हुआ—

प्रधान—श्री बी० एन० शर्मा
उप प्रधान—श्री पी० एस० गोरीया
मन्त्री—श्री पी० एन० सैनी
उप मन्त्री—श्री धीरुभाई छुव शर्मा
कोषाध्यक्ष—श्री अरुण के० पुरी
लायब्रेरियन—हरशाद बासम बाला
अन्तरंग सदस्य:—श्री जयन्ती लाल मिथिया, श्री डी० [illegible],
श्री मनुभाई मिस्त्री, श्री डी० एस० पंडित

—ओमप्रकाश त्यागी
मन्त्री, सार्वदेशिक सभा

[illegible] —आर्यसमाज हरिया[illegible] [illegible] आर्यसमाज में ७-१०-८५ से ११-१०-८५ तक वेद [illegible] [illegible] [illegible]वर को स्वर्ण जयन्ती समारोह मनाया जा रहा है। जिसमें [illegible] आर्यसमाज के विद्वान व कर्मठ कार्यकर्ता पधार रहे हैं।

मन्त्री आ० स० हरियागंज

शोक समाचार

आर्य उपप्रतिनिधि सभा यू० के० (इंग्लैण्ड) के उपप्रधान श्री कपिल देव प्रिजा जी का निधन सुन कर सार्वदेशिक सभा ने गहरा दुःख प्रकट किया और परमपिता परमात्मा से प्रार्थना की कि ईश्वर दिवंगत आत्मा को सद्गति तथा परिवारजनों को दुःख सहन करने की शक्ति प्रदान करें।

—सम्पादक

सार्वदेशिक प्रेस, दरियागंज नई दिल्ली में मुद्रित तथा ओम्प्रकाश त्यागी मुद्रक और प्रकाशक के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, महर्षि दयानन्द भवन, नई दिल्ली-१ से प्रकाशित।

ओ३म्
सार्वदेशिक
साप्ताहिक

सृष्टिसम्वत् १९७२९४९०८६] [वर्ष २० अंक ४१]
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र
आश्विन कृ० १४ सं० २०४२ रविवार १३ अक्तूबर १९८५
दयानन्दाब्द १६१ दूरभाष । २७४७७१
वार्षिक मूल्य १०) एक प्रति २० पैसे

अनुसूचित व जनजातियों को धर्म परिवर्तन करने पर सरकारी सुविधाएं बन्द

सर्वोच्च न्यायालय का फैसला

सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले द्वारा भारत सरकार से की गई मांग की सम्पुष्टि।

पिछले दिनों बुलढाना महाराष्ट्र के भीलों को मुस्लिम बनाकर उनके लिए अनुसूचित वर्गों को मिलने वाली सुविधाओं को बन्द कराने के लिए सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले ने भारत के गृहमन्त्री और महाराष्ट्र के मुख्यमन्त्री को पत्र लिखे थे। (सार्वदेशिक साप्ताहिक २९-९-८५ के अंक के मुख पृष्ठ पर देखें।)

हर्ष की बात है कि इसी परिप्रेक्ष्य में सर्वोच्च न्यायालय ने भी पूर्व पत्र में उठाई गई आपत्तियों को स्वीकार कर लिया है। इसके अनुसार भविष्य में अनुसूचित जातियों को दी जाने वाली सुविधाओं के हकदार केवल हिन्दू और सिख ही हो सकते हैं। आर्यसमाज इस निर्णय पर प्रसन्न है। कृपया इस सम्बन्ध में सम्पादकीय पढ़ें।

हिन्दू सिख ही अनुसूचित जाति सुविधा के हकदार

सुप्रीम कोर्ट द्वारा संवैधानिक व्यवस्था बरकरार

नई दिल्ली २ अक्तूबर। उच्चतम न्यायालय ने अनुसूचित जाति के लोगों से सम्बन्धित संविधान (अनुसूचित जाति) आदेश १९५० के तीसरे पैरे की संवैधानिकता को बरकरार रखा है।

इस पैरे में कहा गया है कि हिन्दू और सिख धर्मों के लोगों के अलावा किसी अन्य धर्म के लोगों को अनुसूचित जाति का सदस्य नहीं माना जाएगा।

पूने के चर्मकार सुसाई नामक व्यक्ति ने याचिका दायर की थी कि मई १९८२ में अहमदाबाद खादी एवं ग्राम उद्योग बोर्ड के अधिकारियों ने कुछ स्थानों का सर्वेक्षण किया था जहाँ चर्मकार काम करते थे। बोर्ड ने १७ जुलाई १९८२ को कई चर्मकारों को बोर्ड के [illegible] के लिए मुफ्त में जगह दी। प्रार्थी ने आरोप लगाया था कि उसे [illegible] के लिए मुफ्त जगह नहीं दी गई, क्योंकि उसे कहा गया कि हिन्दू से ईसाई बने लोगों के लिए इस योजना में प्रावधान नहीं है।

प्रार्थी पहले हिन्दू आदि द्रविड़ जाति का चर्मकार था तथा उसने बाद में ईसाई धर्म कबूल किया था।

प्रार्थी सुसाई ने याचिका में कहा था कि धर्म परिवर्तन के बाद भी वह अनुसूचित जाति का सदस्य है और हिन्दू तथा सिख धर्म के अनुसूचित जाति के लोगों को मिलने वाली सुविधाओं और लाभों का हकदार है।

प्रार्थी ने उक्त आदेश को चुनौती दी थी कि यह संविधान की धारा १४, १५ और २५ का उल्लंघन करता है।

मुख्य न्यायाधीश पी०एन० भगवती, न्यायाधीश आर०एस० पाठक और न्यायाधीश ए० एन० सेन ने याचिका को खारिज करते हुए टिप्पणी की कि यह कहना सम्भव नहीं है कि राष्ट्रपति ने संविधान (अनुसूचित जाति आदेश १९५०) पर फैसला देते समय पक्षपात किया।

(दैनिक पंजाब केसरी २-१०-८५)

अनुसूचित जातियों एवं जन जातियों के लिए आरक्षण और सुविधाएं : आर्यसमाज का पक्ष

अनुसूचित जातियों एवं जन-जातियों के लिए आरक्षण और सुविधाओं के प्रश्न को उठाकर पूरे देश में हलचल मची हैं। राजनैतिक दल जिनमें कि शासक और विरोधी दल दोनों शामिल हैं दोनों ने इन विशेष वर्गों के आरक्षण और सुविधाओं के प्रश्न को इतना तूल दे दिया है कि जो लोग अपपददलित नही भी हैं वे भी इसका पूरा लाभ अनुसूचित होने के नाते उठा रहे हैं।

वस्तुतः यह संविधान की मूल भावना के विपरीत जाताहै जिसमें एक वर्ग विहीन और शोषण से रहित समाज की स्थापना को मान्यता दी गई हैं। यह ठीक है कि जन्मना जाति प्रथा ने इस उद्देश्य को पूरा करने में बडी भारी बाधाएं खडी कर रखी हैं परन्तु इसके साथ ही इन वर्गों के उच्चे उठे लोगो को आरक्षण और सुविधाओं के द्वारा सामान्य स्तर भी कहीं ऊंचे उठा देना कदापि न्याय सगत नहीं है।

आर्यसमाज अपने जन्म काल से ही मनुष्यो के किसी भी वर्ग को सामाजिक दृष्टि से हेय-पददलित नही मानता। विगत शताब्दी में महर्षि दयानन्द सरस्वती प्रथम महापुरुष थे जिन्होने वेदों के आधार पर मात्र मानव की समता का प्रतिपादन किया था। महर्षि की इस वैदिक मान्यता को अमली जामा पहनाने के लिए न केवल निम्न समझे जाने वाले वर्गों मे न केवल शिक्षा का प्रसार किया अपितु ऊंच-नीच की भावना को सहभोज और अन्तरजातीय विवाहो के द्वारा समूल नष्ट करने का पूरा प्रयत्न किया। इसके फलस्वरूप हिन्दू समाज के जाति प्रथा के ढांचे मे बहुत बड़ी दरार आयी, वेद पढ़ने का अधिकार सबको देने के फलस्वरूप अनुसूचित कहे जाने वाले वर्गों एवं ब्राह्मणेत्तर अन्य द्विजों में अनेक पण्डित और विद्वान बन गये वे आज भी सम्मान पा रहे हैं, जिन दिनों राजनैतिक दल राजनीतिक अधिकारों के लिए गुहार मचा रहे थे। आर्यसमाज का यह सुनिश्चित मत था और है कि समान न्याय और अधिकार दिलाना राजनैतिक स्वाधीनता और सुदृढ़ता की कुञ्जी है, यदि आर्य समाज की इस विचार धारा को हिन्दू समाज ने अपना लिया होता तो देश का विभाजन और साम्प्रदायिक कटुता सदा के लिए समाप्त हो जाती।

वस्तुतः कटु नीतिज्ञ अंग्रेजों ने हिन्दू समाज को विखण्डित करने की दृष्टि से आर्यसमाज के जाति भेद विरोधी आन्दोलन को गहरा धक्का पहुंचाया, सबसे प्रथम १९१६ में कांग्रेस ने साम्प्रदायिक प्रतिनिधित्व स्वीकार करके मुसलमानों को भारतीय समाज से अलग कर दिया-यह अंग्रेज सरकार की कूटनीति की अभूतपूर्व सफलता थी। उसके बाद १९३० में गांधी जी ने हरिजनों को कुछ संशोधनों के साथ अंग्रेज सरकार के अनुसूचित वर्गों को अलग करने के प्रस्ताव को पूना पैक्ट के अन्तर्गत पृथक वर्ग मान लिया। उस काल में अनुसूचित वर्गों के नेता डा० भीमराव अम्बेडकर थे। इसके बाद क्रमशः इन अनुसूचित वर्गों को संरक्षण एवं आरक्षण तथा सुविधाएं देने की होड़ लग गई।

एक-एक करके राष्ट्रीय कहे जाने वाले दल इन मांगों का स्वार्थ से प्रेरित होकर देश के हितों के विरुद्ध अपना समर्थन देने लगे, और आज यह प्रश्न राष्ट्र के सामने सुरसा की तरह मुंह बाए खड़ा है। अनुसूचित वर्गों के नेता स्व० अम्बेडकर ने किस आत्मविनाशी नीति के खतरों को बाद में समझ लिया था और उन्होंने इन वर्गों के लिए विशेष सुविधाएं एवं आरक्षण हटा देने की मांग की थी। २९ सितम्बर को बम्बई में उनकी पत्नी डा० सविता अम्बेडकर ने अनुसूचित जातियों के लिए आरक्षण के विषय में बोलते हुए स्वीकार किया कि उनके पति ने आरक्षण को लगातार बनाये रखने का कभी समर्थन नहीं किया था। (रिपोर्ट देखें टाइम्स आफ इण्डिया में)

अब हम मूल प्रश्न पर आते हैं कि अनुसूचित जातियों के लिए मिल रही सुविधाओं का लाभ मुसलमान और ईसाई अपने अनुयायियो की संख्या को बढ़ाने के लिए प्रयोग कर रहे हैं। ईसाइयों के सम्बन्ध मे यह अक्सर देखा जाता था कि वे धर्म बढाने के समय हिन्दू का नाम पूरी तरह न बदल कर शुरु में थोड़ा सा ईसाई नाम रख देते थे। कांग्रेस के भूतपूर्व अध्यक्ष स्व० डब्लू सी बनर्जी और आर० सी० दत्त जैसे साहित्यक उन्ही लोगो में थे। धीरे-धीरे इन धर्म बदलने वाले ईसाइयो अपने पुराने हिन्दू नामों के आधार पर अनुसूचित वर्गों को मिलने वाली सुविधाओं का लाभ उठाना चालू कर दिया।

हाल ही मे एक ईसाई सुसाई ने संवैधानिक आधार पर अनुसूचित जातियो को मिलने वाली सुविधाएं एव आरक्षण ईसाई धर्मान्तितरित लोगों के लिए दिये जाने की मांग की। प्रसन्नता की बात कि उच्चतम न्यायालय ने सम्बन्धित १९५० के आदेश के तीसरे पहरे की संवैधानिकता को बरकरार रखा है। इस रास्ते को अपनाते हुए मध्यप्रदेश और महाराष्ट्र पर्वतीय क्षेत्रों में विदेशी धन के बल पर भीलो व अन्य आदिवासियों को मुसलमान बनाया जारहा है। और वे लोग इन संरक्षण व सुविधाओं का लाभ उठा रहे हैं। हिन्दू समाज सजक प्रहरी के रूप सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले ने पिछले दिनों सरकार को एक बड़ा ऐतिहासिक पत्र लिखा था प्रसन्नता की बात है सर्वोच्च न्यायालय ने उसकी पुष्टि कर दी है।

—ब्रह्मदत्त स्नातक

आन्ध्रप्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री रामचन्द्र राव कल्याणी चुने गए

आर्य प्रतिनिधि सभा आन्ध्र प्रदेश का विनायक हाल में वार्षिक अधिवेशन सम्पन्न हुआ जिसकी अध्यक्षता सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री लाला रामगोपाल शालवाले जी ने की निर्वाचन निम्न प्रकार रहा प्रधान श्री रामचन्द्र राव कल्याणी जी, मन्त्री माणिकराव शास्त्री जी, कोषाध्यक्ष श्री बी० किशनलाल जी।

नेपाल में प्रचारक की नियुक्ति

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने श्री प्रेमनारायण प्रसाद उपाध्याय को नेपाल देश में अपना प्रचारक नियुक्त किया है। उन्होंने १ अगस्त ८१ से अपना कार्य आरम्भ कर दिया है। नेपाल में उनका वर्तमान पता द्वारा श्री विश्वनाथ प्रसाद आर्य, मीठा बासा, मीना बाजार, बीरगंज, नारायणी अंचल, नेपाल है। उत्तर प्रदेश एवं बिहार राज्य के सीमावर्ती स्थानों से नेपाल स्थित आर्य समाजों में उपदेशक जाते रहते हैं। उनसे निवेदन है कि वे श्री उपाध्याय जी से सम्पर्क रखें। इन दोनों प्रान्तों की आर्य प्रतिनिधि सभाओं से भी नेपाल प्रचार के कार्य में आर्थिक सहयोग अपेक्षित है। नेपाल देश में आर्यसमाज के प्रचार की विशेष आवश्यकता है और वर्तमान परिस्थितियां इसके अनुकूल है। इस बात को ध्यान में रखते हुए प्रचार कार्य में संगठित प्रयास करने का निश्चय सार्वदेशिक सभा ने किया है। हमारा यह प्रयास है कि शीघ्र ही नेपाल देश में एक आर्य सम्मेलन आयोजित किया जाय। इस सन्दर्भ में आपके सुझावों को भी हम आमन्त्रित करते हैं।

डा० आनन्दप्रकाश
संयोजक: देशान्तर प्रचार

संस्कृत से कौन डर रहा है ?

—[illegible]

एक अकेली हिन्दुस्तानी भाषा, जिसने पूरे हिन्दुस्तान की भाषाओं को कहीं वाक्य रचना के जरिए, तो कहीं शब्द भण्डार के द्वारा प्रभावित और समृद्ध किया है। वह संस्कृत कई गैर-जरूरी खींचा-तानियों का शिकार हो रही है। सबसे बड़ी खींचातानी खुद संस्कृत वाले किए जा रहे हैं। इन लोगों ने तय कर रखा है कि संस्कृत को अजायब-घर की चीज बनाए रखना है। उसे पढ़ाने का सदियों पुराना तरीका अपनाए रखना है और नूतनता से मुंह फेरे रखना है। अगर संस्कृत पढ़ ली है तो यह जरूरी हो चुका कि खुद को नई दुनिया से नहीं जोड़ें। पुराने ग्रन्थों को घोट-घोट कर याद किये चलना है। अपना शास्त्र ज्ञान बघारते रहना है। अपना व्यक्तित्व ऐसे बनाए रखे चलना है कि उससे संस्कृत दरिद्र लगे, सत्ता केन्द्रों की चापलूसी बने और उसके प्रचार-प्रसार के लिए मिमियाते रहना पड़े। क्या ऐसा जरूरी है ?

जिन लोगों ने संस्कृत नहीं पढ़ी, उसे जानने-समझने की कोई कोशिश नहीं की, वे एक और किस्म की खींचातानी संस्कृत के साथ कर देते हैं। उनके हिसाब से संस्कृत पढ़ना बेवकूफी है और उसके बारे में सोचना भी अपने से ज्यादती करना है। उनकी दृष्टि में संस्कृत पढ़ा आदमी दकियानुस है। मुंह लगा पुरोहित है, भांड है। वह हमारा हाथ देखें और बता दे कि हम विदेश कब जायेंगे या मर्सिडीज कब खरीदेंगे। अगर वह इतना भी नहीं बता सकता, तो हमारा वक्त बर्बाद न करे।

संस्कृत के साथ तीसरी ज्यादती अपने देश की अपनी सरकार कर रही है। वह संस्कृत वालों की पीठ थपथपाती नहीं थकती। वह संस्कृत के लिये पैसा देती है उन पाठशालाओं को जो आधुनिक समाज में खुद को अजूबा समझ मन मसोस कर रह जाने वाले 'विद्वान' पैदा कर रही है, उन प्रकाशकों को जो संस्कृत के नाम पर धर्मग्रन्थ कही जाने वाली किताबें छापे चले जा रहे हैं और बनारस वगैरहा के उन पण्डितों को, जो लठैतों का सहारा लेकर अपनी धाक जमाये बैठे हैं। पर संस्कृत के प्रति सरकारी रवैये की पोल तो तभी खुल जाती है, जब वह संस्कृत के विद्वानों का सम्मान करती है तो साथ ही अरबी और फारसी के विद्वानों का सम्मान करना नहीं भूलती।

हम नहीं कहते कि संस्कृत को सरकारी कामकाज की भाषा बनाओ। हम यह भी नहीं कहते कि संस्कृत का दिन-रात गुणानुवाद करो। पर इतना कहने में कोई हर्ज नहीं कि खुद को प्रगतिशील दिखाने के लिये संस्कृत का मजाक उड़ाना जरूरी नहीं। जरूरी है कि संस्कृत के बारे में आधुनिक दृष्टिकोण विकसित करें और पूरे देश की भावी योजना की रूपरेखा में उसकी जगह उसी स्वाभाविकता से सोचें और तय करें, जिस स्वाभाविकता से बाकी भाषाओं के बारे में सोचते और तय करते हैं। भाषा को भाषा मानकर इसके बारे में विचार किया जाए। संस्कृत की पढ़ाई को पुण्य कार्य भला क्यों माना जाए ?

संस्कृत के बारे में यह पूर्वाग्रह कि वह मातृभाषा है सबसे पहले छोड़ना पड़ेगा। अंग्रेज लोग संस्कृत को मरा हुआ कर के पूरे हिन्दुस्तान को उसके पूरे प्राचीन साहित्य से काटकर अलग रख देना चाहते थे। पर 'मातृभाषा' के मायने क्या होते हैं ?

क्या वह भाषा जिसमें संसार का समृद्धतम साहित्य न केवल लिखा गया हो, बल्कि बाकायदा जिसका गम्भीर अध्ययन जारी रहा हो, वह भाषा 'मृत' किस तरह कही जा सकती है ? आखिर किस हिसाब से हम उस भाषा को मर चुकी भाषा मान लें, जो आज भी न केवल अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भाषा विज्ञान की गुत्थियां सुलझाती हो, अपितु अपने वतन में भी अभिव्यक्ति के गूंगेपन को तोड़ने में शब्दों का अक्षय भण्डार हमारे सामने खोल देती हो ?

यह साफ हो जाना चाहिए कि हम संस्कृत के स्वर्ण-युग की फिल्मी कल्पना में नहीं उड़ रहे। हकीकत का कड़वा बयान कर रहे हैं। इसलिए दूसरा पूर्वाग्रह अपने दिमाग से यह निकाल देना चाहिए कि संस्कृत क्लासिकल भाषा है। यह ठीक है कि आज और पिछले लगभग तीन हजार सालों से वह बोलचाल की भाषा नहीं है। यह भी ठीक है कि अब संस्कृत बोलचाल की भाषा नहीं बन सकती। संसद के कानून से या आतंकवादियों की पिस्तोल से या चापलूसों के षड़यन्त्र से या भाषा-प्रेमियों की भावुक स्वेच्छाओं से किसी भाषा को बोलचाल की भाषा नहीं बनाया जा सकता। पर इसका अर्थ यह भी नहीं है कि कोई भाषा अगर बोलचाल की नहीं है, या नहीं बन सकती है, तो उसे क्लासिकल भाषा मान लिया जाए। तो क्या मानें संस्कृत को ?

सीधा-सादा जवाब है कि उसे देश की वर्तमान राष्ट्रीय भाषाओं में एक माना जाये, पर एक ऐसी वर्तमान राष्ट्रीय भाषा जो किसी प्रदेश की नहीं, सारे भारत की है, जो बोलचाल की नहीं, पर हमारे परिवेश की भाषा है, जो आम प्रयोग की नहीं, पर हर हिन्दुस्तानी की भाषा है। वह न तो पुरानी फारसी जैसी है, न पुरानी ग्रीक जैसी और न पुरानी लैटिन जैसी। वह हमारी प्राचीन क्लासिकल भाषा रही है।

तीसरा पूर्वाग्रह यह छोड़ना पड़ेगा कि संस्कृत साम्प्रदायिकता का प्रतीक है। अगर संस्कृत में वेद है और उपनिषद् है, इतिहास और दर्शन है, तो इसे साम्प्रदायिकता की पोषक भाषा क्यों माना जाय ? अगर उसके अभिलेखों से और ताम्रपत्रों में भारत का पूरा इतिहास लिखा और खूब पढ़ा है, तो क्यों इसे मुसलमानों या ईसाइयों या हिन्दुओं के सन्दर्भ में रख कर सोचा जाता है ? अगर केरल के भास ने उज्जैयनी के कालिदास ने, बंगाल के जयदेव ने, कश्मीर के भीमह ने विदर्भ के दण्डी ने पेशावर के पाणिनी ने, नेपाल के सोमदेव ने, बिना किसी जोर जबरदस्ती के भय या प्रलोभन के संस्कृत को अपनी अभिव्यक्ति का माध्यम बनाया तो क्या कारण है कि आज की सरकार उसे कभी उर्दू के, कभी मराठी के, कभी पंजाबी के या कभी तमिल के विरुद्ध खड़ा कर देती है ? अगर बौद्ध, जैन, और शाक्य, वैष्णव शैव और चार्वाक्, सभी ने संस्कृत में खुद को प्रस्तुत कर जन-जन के बीच पहुंचाया तो क्यों आज संस्कृत को सम्प्रदायों के तबेलों में स्वीकृति-अस्वीकृति के लिये भेजा जाता है।

भारत का गणितज्ञ 'लीलावती' के बिना अधूरा है। यहां का नक्षत्र विज्ञानी 'आर्यभटीयम' को कैसे छोड़ सकता है। रंगकर्मी का भरत के नाट्यशास्त्र के बिना गुजारा ही नहीं है। वकील को मनु और याज्ञवल्क्य पढ़ना ही पड़ेगा। 'पंचतन्त्र' या 'मुद्राराक्षस' या 'अर्थशास्त्र' नहीं पढ़ा तो राजनीति अधूरी ही रहने वाली है। कैंसर का

(शेष पृष्ठ ९ पर)

भारत का गणितज्ञ 'लीलावती' के बिना अधूरा है। यहां का नक्षत्र विज्ञानी 'आर्यभटीयम्' को कैसे छोड़ सकता है। रंगकर्मी का भरत के नाट्यशास्त्र के बिना गुजारा ही नहीं है। वकील को मनु और याज्ञवल्क्य पढ़ना ही पड़ेगा। 'पंचतन्त्र' या 'मुद्राराक्षस' या 'अर्थशास्त्र'' नहीं पढ़ा तो राजनीति अधूरी रहने ही वाली है। कैंसर का हिन्दुस्तानी इलाज खोजना है तो चरक को किस कोने में फेंक पायेंगे। पश्चिम की रेतीली आंधी से खुद को बचाना है तो कपिल, कणाद, गोतम और शंकर को समझना ही होगा। भाषा विज्ञान अगर तरीके से पढ़ना है तो पाणिनी और कात्यायन पतंजलि और भर्तृहरि को पढ़ने के लिए रात को दिया जलाना ही पड़ेगा और अगर यह सब करना दकियानूसीपन है तो दकियानूस बनना ही पड़ेगा।

अथर्ववेद में मातृभूमि-भक्ति

—डा० मानसिंह

(गतांक से आगे)

"मा नः पश्चान्मा पुरस्तान्नुदिष्ठा मोत्तरादधरादुत । स्वस्ति भूमे नो भव मा विदन् परिपन्थिनो वरीयो यावया वधम ॥३२॥"

भूमि पर विविध शब्द करते हुये तथा शोर मचाते हुये मर्त्य नाचते गाते हैं, युद्ध करते हैं। प्राचीन लोगों ने भी इसी पर युद्ध किये हैं। इसी पर आक्रन्दन होता है और दुन्दुभि बजती है। ऐसी भूमि से शत्रुओं को भगाने तथा शत्रु हीन होने की प्रार्थना की गई है। पृथिवी प्रत्येक जीव जन्तु की निवास स्थली है। तीक्ष्ण दंश वाले, हेमन्त में निश्चेष्ट, भ्रमणशील तथा निभृत स्थान में शयन करने वाले सर्प एवं बिच्छू आदि विविध कीड़े, वर्षाकाल में प्रसन्न सर्पणशील जीव जन्तु इसी का आश्रय लेते हैं। भूमि से ऐसे जीव जन्तुओं का अलग रखने का निवेदन किया गया है। इसी पर दो पैरों वाले हंस, सुपर्ण आदि पक्षी निवास करते हैं। विचरणशील आरण्य तथा नरभक्षी सिंह व्याघ्र आदि विभिन्न हिंसक पशु भी इसी पर रहते हैं। भूमि से इन्हें तथा उल, वृक, दुच्छुना, ऋक्षीका तथा राक्षसों को दूर हटाने की प्रार्थना की गई है। देवों ने पूर्व काल में पृथिवी पर मनुष्यों को सर्वत्र वैसे ही स्वीकीर्ण किया जैसे कि अश्व धूलि को विकीर्ण करता है यह माता-पिता की उदारता है कि वह मलिन भारी वस्तुओं भद्र तथा पापी को समभाव से धारण करती है उनकी मृत्यु को सहन करती है—

"मल्वं बिभ्रती गुरुभृद् भद्रपापस्य निधनं तितिक्षुः ॥(४८) बराह, सूकर तथा वन्य पशुओं से वह समानस्य रखती है। भूमि ही अपने विविध वाणियों तथा भाषाओं तथा नाना धर्मों वाले मनुष्यों को अनेक स्थानों पर धारण करती है।

"जनं बिभ्रती बहुधा विवाचसं नाना धर्माणं पृथिवी यथौकसम्।" (४५) उसके उत्संगों से रोगरहित, यक्ष्मा विहीन तथा प्रसूत होने की कामना की गई है—

"उपस्थास्ते अनमीवा अयक्ष्मा सन्तु पृथिवी प्रसूताः।" (६२)

पृथिवी विविध यज्ञ भागों की स्थली भी रही है। यज्ञ कर्त्ता भूमि ही वेदी का परिग्रह करते हैं। विश्व के सृष्टा देवों ने इसी पर यज्ञ का विस्तार किया, इसी पर आहुति से पूर्व ऊंचे तथा दीप्तिमान् यूप गाड़े जाते हैं। लोग इसी पर देवों के लिये अलंकृत यज्ञ का सम्पादन कर हव्य प्रदान करते हैं। इसी पर सदस तथा हविर्धान का निर्माण किया जाता है, इसी पर यूप की स्थापना की जाती है। इसी पर ऋत्विक ऋचाओं सामों तथा यजुषों से अर्चना करते हैं। इसी पर इन्द्र के पानार्थ सोम तैयार करते हैं।

भूमि वसुन्धरा है। विश्वम्भरा पृथिवी वसुधानी है। हिरण्यवक्षा है। सम्पूर्ण धनों से युक्त है। द्रविण की सहस्रों धाराओं का दोहन करने वाली है, वसुधा है। धात्री है। ऐसी भूमि से द्रविण तथा श्री के आधान की प्रार्थना की गई है।

गन्धवत्व पृथिवी का दार्शनिक लक्षण है। 'अथर्ववेद' में इसका स्फुट संकेत है। पृथिवी की गन्ध को औषधियां तथा जल धारण करते हैं। गन्धर्वों तथा अप्सराओं ने इसे ही धारण किया, यही पुष्कर में प्रविष्ट हुई, सूर्या के विवाह पुराकाल में मरणधर्म रहित देवों ने इसे ही धारण किया, गन्ध पुरुषों तथा स्त्रियों में है। ऐसी भूमि से प्रार्थना की गई है कि वह हमें सुरक्षित करे और हमसे द्वेष न करें।

'अथर्ववेद' में भूमि का मातृत्व अत्यन्त विशदतया अभिव्यक्त है। भूरिधारा पृथिवी से पयोदोहन की तथा ध्रुवा धेनु की भांति अविचल की सहस्रों धाराओं के दोहन की प्रार्थना की गई है। —"भूमे मातर्नि धेहि मा भद्रया सुप्रतिष्ठितम्" (हे माता भूमि ! भद्रतापूर्वक मुझे सुप्रतिष्ठित करो, (६३) में स्पष्टतः भूमि को माता के रूप में घोषित किया गया है। ऋषि निवेदन करता है। कि पुत्र हेतु माता की भांति भूमि पय का विसर्जन करे—

"सा नो भूमिर्वि सृजतां माता पुत्राय मे पयः" ॥१०॥

एक स्थान पर तो वह भूमि के प्रति भक्तिभाव विभोर होकर कह उठता है कि भूमि मेरी माता है और मैं पृथिवी का पुत्र हूं— माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः" (१२) भूमि के प्रति मातृभावना "ऋग्वेद" से ही चली आ रही है। वहां भी भूमि की कल्पना माता के रूप में की गई है—

"उप सर्प मातरं भूमिम्" (माता भूमि के पास जाओ) माता पुत्रं यथा सिचाऽभ्येनं भूम ऊर्णुहि" (माता जैसे पुत्र को प्राप्त करती है वैसे ही हे भूमि ! इसे आच्छादित करो)। भूमि को सुशेवा अर्थात् दयालु माता घोषित किया गया है। (ऋ० १०-१८-१०) इसे मानव की पृथिवि के प्रति गहन ममता एवं श्रद्धाभाव सुस्पष्ट है। शान्त सुरभित, सुखकारी, अमृत से परिपूर्ण स्तनों वाली, पयस्वती तथा महती कामदुघा भूमि से दुग्ध सहित अनुग्रह भाव की कामना की गई है—

"शान्तिवा सुरभिः स्योना कीलालोध्नी पयस्वती ।
भूमिरधि ब्रवीतु मे पृथिवी पयसा सह ॥५९॥

भूमि का यशोगान वीरता की भावना से अनुप्राणित है। मातृभूमि का उपासक निश्चय करता है कि मैं क्रोध करने वाले शत्रुओं को मार गिराऊं।

"अवान्यान हन्मि दोधतः" (५८)

वह अपने आपको सर्वतः विजयशील, सर्वजयी तथा प्रत्येक दिशा को वश में करने वाला उद्घोषित करता है।

"अभिषाऽस्मि विश्वाषाडाशामाशां विषासहिः (५४)

किन्तु यह ध्यातव्य है कि "अथर्ववेद" की मातृभूमि भक्ति किसी देश विशेष की भूमि मात्र तक सीमित न होकर सम्पूर्ण भूमि के प्रति है। अतः इसमें संकीर्णता की गन्ध प्राप्त करना अनुचित होगा। ऋषि कामना करता है। कि हम भूमि स्थित ग्रामों, अरण्यों, सभाओं संग्रामों एवं समितियों में पृथिवी माता की प्रशंसा करें—

ये ग्रामा यदरण्यं याः सभा अधिभूम्याम् ।
ये सङ्ग्रामाः समितयस्तेषु चारु वदेम ते ॥५६॥

दीर्घ आयु प्राप्त कर हम प्रतिबोधक युक्त हों उसके लिये बलि हरण करने वाले हों—

"दीर्घ न आयुः प्रतिबुध्यमाना वयं तुभ्यं बलिहृतः स्याम ॥६२॥

इस प्रकार "अथर्ववेद में माता भूमि के प्रति अगाध श्रद्धा एवं पुष्कल भक्तिभाव की अभिव्यक्ति हुई है। भूमि के यशोगान में अतीव भव्य, विलक्षण एवं भावप्रवण काव्य के दर्शन होते हैं।

मुस्लिम औरतों के लिए मसीहे की तरह उभरा है
--आरिफ मुहम्मद खां

--अश्विनी

एक लम्बे अर्से से कई मुसलमान तलाकशुदा औरतें सर्वोच्च न्यायालय में तलाक के बाद अपने पतियों से गुजारे के लिए खर्चा देने के सम्बन्ध में केस लड़ रही थीं। पिछली मई में शाहबानो नाम की एक तलाकशुदा औरत के मामले में सर्वोच्च न्यायालय ने फैसला दिया कि तलाक के बाद उसका पति उसे गुजारे के लिए खर्चा दे। इस निर्णय के बाद पूरे मुस्लिम सम्प्रदाय में भारत के अन्दर बावेला मचा। लोक सभा में मुस्लिम लीग के श्री बनातवाला ने निजी विधेयक भी पेश किया। हैरत की बात तो यह थी कि जिस समय श्री बनातवाला ने लोक सभा में उपरोक्त विधेयक पेश किया तो इसका विरोध करने की हिम्मत कांग्रेस या विपक्ष के किसी भी नेता को नहीं हुई। इससे भी बढ़कर विपक्ष के एक सांसदों ने समर्थन किया। शायद उन्हें डर था कि अगर वह इस विधेयक का विरोध करते तो उन्हें मुसलमान वोट प्राप्त न होते ?

लेकिन जब केन्द्रीय गृह और उद्योग मन्त्री श्री आरिफ मोहम्मद खान अपना भाषण देने उठे तो उन्होंने उपरोक्त बिल की धज्जियां उड़ा दीं और खुलकर इसका विरोध किया। ३१ वर्षीय नीली आंखों और आकर्षक व्यक्तित्व के मालिक श्री आरिफ खान एक सुलझे हुए बेबाक और साहसी राजनीतिज्ञ हैं। शायद यही कारण है कि इतनी छोटी उम्र में वह राजनीति में सफलता की बुलन्दियों को छू रहे हैं। खान साहिब इससे पहले भी अपनी बेबाकी का सबूत दे चुके हैं, जब जनता राज के दौरान लखनऊ में भड़के मुसलमानों के दंगों के दौरान उन्होंने प्रदेश की जनता सरकार में अपने मन्त्री पद से त्याग पत्र दे दिया था और कांग्रेस पार्टी में शामिल हो गए थे। उस समय खान साहिब ने जनता पार्टी की प्रदेश सरकार से त्याग पत्र देकर और अपने राजनीतिक भविष्य की भी परवाह न करते हुए जो कदम उठाया था, वह सचमुच बेहद साहसपूर्ण था। अब जहां शाहबानो के केस पर उच्चतम न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश श्री चन्द्रचूड़ के फैसले का इण्डियन यूनियन मुस्लिम लीग के श्री इब्राहीम सुलेमान सेठ तथा श्री जी० एम० बनातवाला के अलावा जनता पार्टी के जनरल सैकेटरी सईद शहाबुद्दीन, बेगम आबिदा अहमद और राज्य सभा की डिप्टी स्पीकर डा० नजमा हैपतुल्ला ने विरोध किया। उपरोक्त फैसले को मुस्लिम ला में दखलन्दाजी करार दिया गया। वहां श्री आरिफ खां ने खुलकर अपना भाषण लोक सभा में दिया और अपने मुसलमान साथी सांसदों द्वारा संसद में पेश किए गए निजी विधेयक की धज्जियां उड़ा कर रख दीं।

जिस समय श्री आरिफ खां का लोक सभा में भाषण चल रहा था, सारी गैलरी खचाखच भरी हुईथी। उस दिन लोकसभामें, श्री खां का भाषण सुनने सबसे ज्यादा मुस्लिम महिला आई हुईथीं। इनमें देश की मशहूर सौन्दर्य विशेषज्ञ शहनाज हुसैन भी थी। भाषण के दौरान इंका के मुस्लिम सांसदों को भी श्री आरिफ की बातें बेहद बुरी लग रही थीं। एक बार तो यह नौबत आई कि उनका भाषण लम्बा होते देख कर उस समय अध्यक्ष की कुर्सी पर बैठे सांसद जैनुल बशर ने कहा कि अब श्री खां को अपना भाषण खत्म करना चाहिए। अध्यक्ष महोदय की इस बात का समर्थन मुस्लिम लीग के श्री इब्राहीम सुलेमान सेठ और केन्द्रीय मन्त्री जियाउर्रहमान अन्सारी ने भी किया लेकिन बाकी सदस्यों की अपील और प्रतिरोध करने पर अध्यक्ष को आरिफ साहिब को बोलने के लिए समय देना पड़ा। भाषण के दौरान कई बार श्री बनातवाल और श्री सेठ ने खां पर तीखी तीखी टिप्पणियां भी कीं लेकिन उतनी ही तेजी से श्री आरिफ ने उन टिप्पणियों का जवाब भी दिया।

अपने भाषण के दौरान जब श्री आरिफ ने पाकिस्तान के एक मुस्लिम कमीशन का जिक्र किया तो उसके एक सदस्य का नाम आने पर श्री सुलेमान सेठ ने कहा कि वह उसके सदस्य ही नहीं थे। आरिफ साहिब ने कहा कमीशन की रिपोर्ट में तो लिखा है कि वह इसके सदस्य थे लेकिन श्री सेठ के दुबारा विरोध करने पर श्री खां को यह कहना पड़ा कि "हो सकता है कि आपकी बात ज्यादा सही हो, क्योंकि पाकिस्तान की कोई भी जानकारी आपके पास सीधी आती है, हमें कहां मिलेगी ?" इस जवाब पर श्री सुलेमान सेठ को चुप रह जाना पड़ा।

उस दिन लोक सभा में एक दिलचस्प बात यह भी देखने को मिली कि तेलगू देशम और मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी के सदस्य विपक्ष में रहते हुए भी आरिफ खां की बात का समर्थन कर रहे थे और मेजें थपथपा कर श्री खां का हौंसला बढ़ा रहे थे। भाषण के बाद कई सदस्यों और मन्त्रियों ने श्री आरिफ खां को घेर कर उनके इस साहसपूर्ण भाषण के लिए उन्हें मुबारकबाद दी। अपने भाषण की वजह से श्री आरिफ मुहम्मद खां मुस्लिम औरतों में अत्यन्त लोकप्रिय हो गए हैं। सैकड़ों वर्षों से दबी चली आ रही मुस्लिम औरतों के लिए सचमुच श्री आरिफ एक मसीहा के रूप में उभरे हैं। आज कल श्री खां को न केवल भारत बल्कि विश्व के अन्य कई मुस्लिम देशों से वहां की औरतों के ढेरों मुबारकबाद के खत आ रहे हैं। दिल्ली और भारत के किसी भी कोने में आजकल श्री खां जाते हैं, तो वहां उन्हें सैकड़ों मुस्लिम औरतें मिलने, उन्हें बधाई देने और उनका हौंसला बढ़ाने के लिए पहुंचती हैं। कई मुस्लिम महिलाओं को इस बात पर गहरी आपत्ति है कि महिला होकर भी इंका सांसद बेगम आबिदा अहमद ने निजी विधेयक का समर्थन और उच्चतम न्यायालय के फैसले का विरोध किया है, जबकि मुस्लिम महिलाओं को कम से कम एक मुस्लिम औरत होने के नाते बेगम आबिदा जी को भी मुस्लिम पुरुषों के मतों का डर हो ?

बरहाल केन्द्रीय राज्यमन्त्री श्री आरिफ मोहम्मद खां का लोक सभा में दिया गया भाषण इस समय पूरे मुस्लिम समाज में एक विवाद का कारण बन चुका है। अगर भारी संख्यामें मुस्लिम औरतों का समर्थन इस समय श्री आरिफ के साथ है तो मुस्लिम पुरुष श्री खां के विरोधी बन गए हैं। अपने इस लेख की अगली तीन किस्तों में मैं आरिफ मोहम्मद खां द्वारा लोकसभा में दिए गए उनके भाषण को विस्तृत रूप से देने जा रहा हूं। (दैनिक पंजाब केसरी २१-९-८५)

प्रगति का मूलाधार प्रभावशाली व्यक्तित्व

मन की चार शक्तियां

यत्प्रज्ञानमुत चेतो धृतिश्च यज्ज्योतिरन्तर मृतं प्रजासु ॥यजु० ३४

प्रस्तुत मन्त्र में मन की चार प्रेरक तथा अद्भुत शक्तियों का वर्णन है। १—प्रज्ञान, २—चेत, ३— धृति और ४ अन्तंज्योति।

१ - संसार में जितनी भी जानने योग्य बातें हैं, वे सब मन के एक कोने में समा सकती है। मन की ऐसी विलक्षण शक्ति है। सभी मनुष्यों के मन में यह शक्ति बीज रूप में विद्यमान है। इसी कारण मन को प्रस्तुत मन्त्र में प्रज्ञान कहा है।

२—चेत उस अतुल ज्ञान राशि को अपने अन्दर भरने वाली चैतन्य शक्ति न हो तो यह शरीर पूर्ण रूप से मिट्टी ही होता, जिस पुरुष या जाति में यह चेतना शक्ति अधिक पाई जाती है वह व्यक्ति तथा जाति ही जीवित माने जाते हैं। चेतन शक्ति रहित जीवन तो नाली के कीट के समान है, जो अपनी रक्षार्थ क्षणिक प्रतिक्रिया भी नहीं कर सकता है। उद्योग, अध्ययन व्यवसाय, उत्साह, उमंग एवं जीवन-जोश इसी शक्ति के पुत्र-प्रपुत्र सब नाते पोते हैं। भारतीयों की चेतना शक्ति जब ठण्डी पड़ गई थी, उसमें समाज, राष्ट्र धर्म और संस्कृतिक गौरव गरिमा,निष्प्राण हो रही थी तो उस,मरणावस्था में महर्षि दयानन्द सरस्वती ने नव जागरण का अमर सन्देश देकर वैदिक संस्कृति, सभ्यता, धर्म इतिहास और दर्शन, विज्ञान का दिग्दर्शन कराया और समाज तथा राष्ट्र को संगठित होकर युग धर्मानुसार आगे बढ़ने की प्रेरणा दी। धृति-मन की यह तीसरी शक्ति पूर्व होकर युग धर्मानुसार आगे बढ़ने की प्रेरणा दी। धृति-मन की यह तीसरी शक्ति पूर्व दोनों शक्तियों से प्रबल है, क्योंकि सब कुछ साधन रहने पर भी यदि धैर्य नहीं है, विरोध का सामना करने और डटे रहे की सामर्थ्य नहीं तो सारे के सारा खेल व्यर्थ है। द्वितीय विश्व महायुद्ध में अंग्रेजों की विजय इसी कारण हुई कि उनके समुदाय सर्व साधारण बाल वृद्ध,धनी, गरीब, शिक्षित अशिक्षित सभी राष्ट्रहित में मिल-जुलकर लग पड़े और दृढ़ता के साथ डटे रहे, हटे नहीं। मनसा, वाचा कर्मणा राष्ट्र हित पर न्योछावर कर दिये। उनकी शूरता वीरता और धैर्य पर प्रभु प्रसन्न हों उन्हें पुरस्कार में विजय प्रदान की।

३—अन्तंज्योति यह मन की सर्वोत्तम शक्ति है। प्रज्ञान, निष्फल चेतना, निरर्थक, धृति व्यर्थ है यदि मन में अन्तंज्योति नहीं जगी। अन्तंज्योति के बिना मानव जीवन ही निष्फल है। कल्पना कीजिए एक व्यक्ति किसी मित्र के मकान पर गया, देखा कि घर सूना पड़ा है। एक कमरे में रत्न जड़ित पात्र हैं,[दूसरी तरफ पात्र में ताजे-ताजे स्वादिष्ट फल हैं, देखकर मन ललचाया दो एक उठालें, आगे बढ़ा पर हाथ नहीं उठा, ठमका और खड़ा हो गया, क्यों इसलिए कि किसी ने रोका। कौन मना करने वाला आ गया। सोचें तो पता चलेगा कि यह हृदय की आवाज थी। अन्तःकरण है,अंग्रेजी में Canscience कहते हैं। वेद मन्त्रों में इसे दैवी प्रेरणा या अन्तर्ज्योति नाम है। जो व्यक्ति ने उस अन्तर्ज्योति की अवहेलना की अनसुनी की वह सब कुछ होता हुआ भी असुर राक्षस है। कंस और रावण इसके ज्वलन्त उदाहरण है। अतः सभी प्रज्ञावान् बनें चैतन्यता धारण करें, कर्मवीर साहसी और धैर्य धनी बनें। दैवी अन्तर्ज्योति को सदा जगाते हैं, इसी में मानवता, समाज और राष्ट्र एवं संसार का हित है। ध्यान रहे। मनुष्य सामाजिक प्राणी है, और व्यक्ति से ही समाज का निर्माण होता है। अतः समाज के हित के लिए जिन मर्यादाओं की स्थापना की गई है, वे प्राचीन तथा शुद्ध अनुभूत होने से भव्य और मान्य हैं।

उनका परीक्षण अनेक बार हो चुका है। अतः उनका पालन करना अन्तर्ज्योति जगाने के लिए परमावश्यक है। ऋग्वेद में उनका वर्णन है। नीचे लिखे मन्त्र का हिन्दी अनुवाद इस प्रकार है अहिंसा, चोरी, व्यभिचार, मद्यपान, जुआ, असत्य भाषण और कुसंग। इनमें से जो एक मर्यादा का भी उल्लंघन करता है, अर्थात् दुराचरण में फंसता है, वह पापी कहलाता है। इनके उल्लंघन का अभिशाप अत्यन्त भीषण और भयंकर है। जो व्यक्ति इनमें किञ्चिन्त मात्र भी लिप्त हो जाता है, उसका जीवन ही नर्कवत हो जाता है।

उत्थान के इच्छुक नव जवानों और भद्र पुरुषो, यदि आप प्रगति पथ पर आगे बढ़ने चाहते तो उपर्युक्त दुर्गुणों को त्याग कर, अपनी भावी पीढ़ी का पर्थ-प्रदर्शक बनें, शिव संकल्प का व्रती बनें। मस्तिष्क की शक्ति से ही मानव गिरता और उठता है। खड़ा होते और चलते हैं। विचार की तीव्र शक्ति से ही सब काम होते हैं। जो जो अपने विचारों के श्रोत को नियन्त्रित कर सकता है, वह अपने मनोवर्ग पर भी शासन कर सकता है। ऐसा व्यक्ति अपने संकल्प से वृद्धावस्था को यौवन में बदल सकता है। मन में सदा सद्विचार को स्थान देने से मनुष्य अपनी विपुलात्म शक्ति को प्रत्यक्ष कर सकता है। श्रेष्ठ संकल्प से शरीर के समस्त जीवन को कोष्ठक दृढ़ एवं शक्तिमान होते हैं, धारणा शक्ति सजीव होती है। यदि दृढ़ निश्चय सकल्प के साथ उच्चाभिलाषा का सुयोग हो जाये तो जीवन में दिव्य शक्ति का विकास होता है। क्योंकि मनुष्य में अनन्त सम्भावनाएं और शक्तियां छिपी हैं। उच्चभिलाषा इन प्रच्छन्न मानवीय शक्तियों के द्वार खोल देती है। इसी के पख मनुष्य आकाश में उड़ता है, समुद्रों की छाती चीर कर पृथ्वी के ओर-छोर को एक कर देता है। पहाड़ों के सिर पर पदाघात करता है। कोई भय, कोई कठिनाई और न सकट उसका दम तोड़ सकते हैं। उच्चभिलाषा मानो मानव की दिव्य-ईश्वर शक्तियों की भौतिक जगत् पर विजय की घोषणा है। इसीलिए इसके बिना कोई भी श्रेष्ठ कार्य सम्भव नहीं। एक-एक देश ने अपनी स्वतन्त्रता के लिए लक्ष लक्ष प्राणों की आहुति दी है। घर से उपेक्षित, समाज से तिरस्कृत होकर भी हजारों ने सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध निरन्तर युद्ध किया है। आज भी कर रहे हैं। जहां कोई देखने सुनने वाला नहीं उन स्थानों पर भी यश मान से दूर रहकर कर्त्तव्य की वेदी पर अगनित मानवों ने प्राणोंत्सर्ग किये हैं। दीन हिनों की सेवा, दरिद्रों के उपकार, रोगियों की परिचर्या और दलितों के सुख सर्वंद्धन में सहस्त्रों ने अपना जीवन लगा दिया और लगा रहे हैं। क्या ये सब कार्य आत्मा की सच्ची प्रेरणा और सच्ची महत्वाकाक्षा के बिना सम्भव है? इस सब दैवी शक्तियों का मूलाधार वैदिक अध्यात्म विज्ञान है। इसकी सात्विक साधना से मानव प्रभावशाली व्यक्तित्व प्राप्तकर सकता है।

वैदिक दर्शन शाश्वत् सत्य हैं जिसका आधार विज्ञान और तर्क है विज्ञान तथा तर्क आधुनिक प्रगति का मूलाधार है—

जिसका व्यावहारिक दृष्टिकोण महर्षि दयानन्द की देन है।

- मोहनलाल मोहित

नया औरंगजेब या पाकिस्तानी हिटलर

मोहम्मद साहब ने अपने समय के समाज की बुराइयां दूर करने के लिए इस्लाम के उद्देश्य अपने अनुयायियों को पेश किये लेकिन इन्हें क्या मालूम था कि इनके नाम लेवा इस्लाम की दुर्दशा करके रख देंगे। भारत में इस्लामी शासन नहीं तो भी भारत के मुसलमानों के तथाकथित ठेकेदार किसी किसी समय ऐसी हरकत कर जाते हैं कि इनको देख कर शर्म आती है लेकिन पाकिस्तान तो भारत के इन जनूनी मुसलमानों को भी मात देने पर तुला दिखता है। मजा यह है कि इस जनून का रिकार्ड स्थापित करने के लिए मैदान में उतरे हैं हाजी जनरल मोहम्मद जिया उलहक साहब जो पाकिस्तान के सैनिक डिक्टेटर, मार्शल ला एडमिनिस्ट्रेटर और सिविल लवर हैं। इनका व्यवहार देखकर यह प्रश्न उठता है कि आपको वर्तमान काल का औरंगजेब कहा जाये या यह समझा जाये कि आप में नाजी जर्मन के बदनाम डिक्टेटर एडोल्फ हिटलर की आत्मा प्रवेश कर गई है। आप इसी प्रकार निन्दा जनक कार्यों पर उतर आये हैं। हिटलर ने घोषित रूप में कहा था कि वह यहूदी नस्ल और यहूदी धर्म को संसार से नष्ट करके रख देगा। वह यह ही ईसाइयत की सबसे बड़ी सेवा समझता था। अब पाकिस्तान के जनरल जिया उलहक इस्लाम की सेवा का दावा करते हुए यह कसम खाकर कहते हैं कि वह कादियानी कैंसर को समाप्त करने के लिए अपना प्रयास प्रत्येक स्थिति में जारी रखेंगे। आपके इन शब्दों से पाकिस्तान के उद्देश्यों का कादियानियों को इस्लाम का वास्तविक रूप दृष्टि में आ गया होगा। हजरत मोहम्मद ने संसार को सहन शीलता और शालीनता का पाठ पढ़ाया लेकिन इनके अनुयायी यह समझते हैं कि इस्लाम का असली तात्पर्य यह है कि जो इनकी तरह लकीर का फकीर न हो वह काफिर है और काफिर का सिर तन से अलग करना पुण्य का कार्य है। कहा जाता है कि पिछले महीने लन्दन में "खत्म नबूवत" नाम की एक कान्फ्रेंस हुई थी। जनरल साहब ने इसे यह सन्देश भेजा था। एक मौलवी साहब जो इस कान्फ्रेंस में पाकिस्तान का प्रतिनिधित्व किया पाकिस्तानी समाचार पत्र "जंग", के सम्पादक से एक भेंट के मध्य कहा कि "एक इस्लामी राज्य में कादयानी कत्ल करने योग्य हैं।" क्या खूब! मौलाना के शब्दों से पता चल जाता है कि वर्तमान युग में पाकिस्तानी मुल्ला कितने उच्च विचार वाले सहनशील होते हैं। आपके इन शब्दों को पढ़ कर कौन इस्लाम पर मोहित न होगा जो यह कहता है कि कोई ऐसा व्यक्ति इस कारण से भी मौत की सजा पाने योग्य है कि किसी बात में वह मुल्ला से सहमति प्रकट नहीं करता। इससे आगे एक और मौलाना साहब ने कहा कि "प्रत्येक कादियानी जन्म से ही काफिर होता है लेकिन जो कादियानी धर्म स्वीकार करता है वह मुरतद कहलाता है और इसे भी मृत्यु की सजा मिलनी चाहिए।" आपने यह भी मांग की कि "कादयानियों पर जजिया लागू किया जाये" मालूम हो कि जजिया किसी इस्लामी शासन में गैर मुस्लिमों पर ठूंसा जा सकता है।

लन्दन की एक खबर है कि मानवीय अधिकारों के अन्तर्राष्ट्रीय कमीशन ने जनरल जिया उलहक के इस दृष्टिकोण का गहरा नोटिस लिया है और इसे इस बात पर सख्त चिन्ता है कि पाकिस्तान में कादियानियों का जीवन दूभर करने का निरन्तर प्रयास हो रहा है। इसके एक प्रवक्ता ने कहा है कि वह पाकिस्तान सरकार के इस दावे को चैलेंज करता है कि पाकिस्तान में धार्मिक सहनशीलता है और कि वहां गैर मुस्लिमों से कोई भेदभाव नहीं बरता जाता इस प्रवक्ता ने कहा है कि पिछले वर्ष जनरल जिया ने एक कानून बनाया था जिसके अनुसार अहमदियों पर अपने विश्वास के अनुसार अपने धर्म के प्रचार और विश्वास करने पर प्रतिबन्ध लगा दिया गया था। आज इन लोगों को अपने धर्म पर विश्वास करने की अधिक से अधिक सजा मिल रही है। सरकारी कन्ट्रोल के रेडियो, टेलिविजन और समाचार पत्र अहमदियों के विरुद्ध अपनी जनता की भावनाओं को इस प्रकार भड़काया है कि अहमदियों का जीवन खतरे में पड़ गया है। प्रमुख अहमदियों की हत्या कर दी गई है। और आज भी इनकी हत्या हो रही है। अब पाकिस्तान के प्रमुख ने यह घोषणा कर दी है कि वह अपने नागरिकों के एक भाग को नष्ट कर देगा। इस ग्रुप ने एक वक्तव्य में कहा है कि पिछले सोलह महीने से पाकिस्तान इस संस्थान और शेष संसार को चैलेंज करता आया है। ऐसी स्थिति में मानवीय अधिकार के कमीशन को यह चैलेंज स्वीकार करना पड़ रहा है। हम सब लोगों को जो मानवीय अधिकारों में विश्वास करते हैं यह जरूरी है कि अहमदियों को जो भयानक खतरा सामने है इसका मुकाबला करें। हमारी असफलता से कहीं अधिक विनाशकारी परिणाम प्रकट हो सकते हैं।

जो लोग पाकिस्तान की परिस्थितियों का ध्यान से अध्ययन कर रहे हैं इनका विचार है कि जनरल जिया उलहक एक ऐसे मोड़ पर पहुंच गए हैं जहां आपको अपना आठ वर्ष पुराना मार्शल ला हटाना ही पड़ेगा। जो संकेत पाकिस्तान में हो रहे हैं इनसे यह पता लगता है कि यह काम आसान न होगा।

मानवीय अधिकार के कमीशन ने जो विचार प्रकट किये हैं वे यह ही बताते हैं कि पाकिस्तान में इस्लाम कितना भयंकर रूप धारण कर रहा है। जब पाकिस्तानी मुसलमान जनता जो अहमदियों से ऐसा व्यवहार करे वे गैर जनता जो हिन्दुओं से कैसे पेश आयेंगे। इसका अनुमान पाठक अच्छी अच्छी प्रकार से लगा सकते हैं।

—नरेन्द्र

वतन संभालें !

भारत अपना वतन संभालें,
क्यों ? सोते हो पांव पसार !

(१)

भिन्न-भिन्न भावों को लेकर, थोप रहे हैं निज प्रस्ताव ।
साम्यवाद का लक्ष्य उसी में, भारत भिन्न रहने का भाव ।।
अन्य पास पड़ोसी दुश्मन, चाहते, विग्रह करने उत्साह ।
फूट देख सब ही मन करते, उग्रवादी भी यही चाह ।।
होवा कभी न खण्ड भारत का, करते हैं वो भ्रस्त विचार ।
भारत अपना वतन संभालो, क्यों ? सोते हो पांव पसार ।।

(२)

कुत्त्स नीति अपनाये उसी की, जो खण्डहर करने को देश ।
वही अंगूर लोमड़ी वाले, मिले न पाते सह कलेश ।।
जन-जन में आ जाये जागृत, भारत-माता रही जगाय ।
जोश उठें सब खून मातृ का, रग-रग में लाली चमकाय ।।
चलें एक हो रण भूमी में, दुश्मन आवे ले तलवार ।
भारत अपना वतन संभालें, क्यों ? सोते हो पांव पसार ।।

(३)

अशोभन मैं कर देना प्रसव, घर में घर का होना नाश ।
पास पड़ोसी हसे ताली दे, छोड़ो झूठी करते आश ।।
अरे ! वतन के रहने वालो, अपना भारत जानो देश ।
पहरेदार बनों सब इसके, नहीं आवे वो इस पर क्लेश ।।
घर के पुत्र घर ही को काटे, ये कैसा ? है भ्रस्त व्यवहार ।
भारत अपना वतन संभाले, क्यों ? सोते हैं पांव पसार ।।

(४)

स्वतन्त्र सिख राज्य को चाहें, जिसमें हिन्दुओं की हो हाव ।
अकाली दल है खड़े उसी पर, आनन्द साहब काले प्रभाव ।।
पराधीन हो हिन्दू रहते, फिर होगा उनका अपमान ।
स ब बराबर रहता उनका, देते आये अपनी जान ।।
चारों ओर देख कर सोचें, रखो बराबर सब से प्यार ।
भारत अपना वतन संभालो, क्यों ? सोते हो पांव पसार ।।

(५)

भिन्न-भिन्न होवा भाव सभी का, नव-नीति चलेगी ओर ।
बना रहेगा भारत अन्दर, दिन हुना विग्रहों का घोर ।।
गुरु नानक गुरु देव सभी के, याद करो उनका दरबार ।
सम दृष्टि रखते थे सब पर, देते सबका कष्ट निवार ।।
उन अनुयायों में कहीं न होता, ऐसा अनुचित भ्रस्त व्यवहार ।
भारत अपना वतन संभालो, क्यों ? सोते हो पांव पसार ।।

(६)

धर्मविरोधी अपने घर में, नित्य विघ्न डालना चाहते ।
गौरव देते निज शक्ति का है, मन्दबुद्धी रहे उकसाते ।।
पूर्व का इतिहास पुकारे, भारत का रखते अरमान ।
वतन हितार्थ रण में जाते, देते आये अपना प्राण ।।
अवसर में पड़ पछताते, अहर्निशि नित्य चनसार ।
भारत अपना वतन संभालो, क्यों ? सोते हो पांव पसार ।।

कवि कस्तूरचन्द 'घनसार'
कवि कुटीर पीपाड़ शहर (राज)

नया- प्रकाशन

१—वीर वैरागी (भाई परमानन्द)	८)
२—[illegible] (भगवती जागरण) (श्री स्वानन्द)	१०) सै०
३—[illegible] प्रदीप (श्री रघुनाथ प्रसाद पाठक)	२)

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
महर्षि दयानन्द भवन, रामलीला मैदान, नई दिल्ली-२

संस्कृत से कौन डर रहा है ?

(पृष्ठ ४ का शेष)

हिन्दुस्तानी इलाज खोजना है तो चरक को किस कोने में फेंक पायेंगे। पश्चिम की रेतीली आंधी से खुद को बचाना है, तो कपिल, कणाद, गौतम और शंकर को समझना ही होगा। भाषा विज्ञान अगर तरीके से पढ़ना है तो पाणिनी और कात्यायन, पतंजलि और भर्तृहरि को पढ़ने के लिए रात को दिया जलाना ही पड़ेगा। और अगर यह सब करना दकीयानूसीपन है तो दकियानूस बनना ही पड़ेगा।

अब इसे भारत की विडम्बना कह लें या इस मिट्टी की मजबूरी कि इस देश की इमारत और आने वाली सदियों की मंजिलें इसी 'दकियानूसी' की नींव पर ही मजबूती से खड़ी रह पाएंगी अन्यथा भरभरा कर गिर पड़ेंगी। आखिर अपनी औकात और अपनी नस्ल से शरमाने का मतलब ही क्या है ?

तो क्या किया जाए संस्कृत का अगर इसे एक पोटली में बांधकर उसे समुद्र में फेंक कर खुद को भारत वर्ष बनाए रखा जा सकता तो नवप्रगतिशीलों के साथ हमें भी बड़ा आराम मिलता। पर इसको गले पड़ी घंटी मानेंगे तो इसे बजाने में कष्ट ही होगा। इसलिए संस्कृत के बारे में सोचना ही पड़ेगा। अगर भारत को १९४७ से या १८५७ से शुरु हुआ मानने की खुशफहमी पाल ली जाती है तो शायद सारी समस्या एक ही बार में हल हो जातीं। लेकिन भारत की जड़ें कहीं गहरी हैं।

इलाज बेशक यह नहीं है कि सरकार सारे भारत में संस्कृत का पढ़ना अनिवार्य कर दे। पर इलाज यह भी नहीं कि संस्कृत को दूसरी भारतीय भाषाओं के विकल्प में पढ़ने की परिस्थितियां पैदा कर दी जाएं। महाराष्ट्र वासी भारतीय शायद पंजाबी नहीं पढ़ना चाहें। बंग वासी भारतीय शायद तमिल न पढ़ना चाहें, पर यह नितान्त सम्भव है कि इनमें हर कोई अपनी भाषा छोड़े बिना संस्कृत पढ़ना चाहे। इसलिए सरकारी स्तर पर यह अकलमन्द कदम उठाना जरूरी है कि हर हिन्दुस्तानी संस्कृत पढ़ सके।

पर हिन्दुस्तानी संस्कृत पढ़ने को लालायित भी हों तो उसे लगे कि संस्कृत नहीं पढ़ी तो अपना विषय अधूरा रहने ही वाला है—इस तरह की मनोवृति सरकार नहीं बना सकती। संस्कृत के अध्यापक-प्राध्यापकों के कमजोर कन्धों पर यह जिम्मा डालकर देश लम्बी नहीं तान सकता। यह काम पूरे देश के प्रबुद्ध वर्ग का है कि वह पहले स्वयं इस जरूरत को समझे कि—किसी भी क्षेत्र में भारत को एक लम्बी परम्परा वाला मौलिक देश मानकर काम करना है तो संस्कृत का पढ़ा जाना जरूरी है। मेरे ही पितामहों ने सदियों से विज्ञान-दर्शन आदि के क्षेत्र में जो कार्य किया है, उसी के काम को आज के साथ जोड़कर आगे बढ़ना है—इस बारे में अगर देश का प्रबुद्ध वर्ग स्पष्ट है तो फिर वह बैठें और योजना बनाए कि देश को इस चेतना से कैसे जोड़ना है।

इसी चेतना के जुड़ाव में संस्कृत की सार्थकता छिपी है। अक्सर शिकायत की जाती है कि संस्कृत को सरल ढंग से पढ़ाने की विधियों का विकास नहीं हो रहा। कैसे होगा ? यह काम संस्कृतज्ञों का नहीं भाषाविदों का है। पर जब देश में संस्कृत चेतना ही अभी तक नहीं उपजी है तो कहां से भाषाविद सरल विधियां बना पाएंगे।

अतः सरकार को संस्कृत पढ़ने के लायक परिस्थितियां देनी होगी। संस्कृत को सरकारी पैसे की नहीं, उसे प्रबुद्ध चेतना की तलाश है। पर लगता है कि देश अभी इतना आधुनिक नहीं हो पाया कि वह संस्कृत के बारे में वस्तुनिष्ठ होकर सोच सके।

आर्यसमाजों की गतिविधियां

आर्य समाजों के निर्वाचन

आर्यसमाज हिसुआ नवादा श्री कामेश्वर प्रसाद प्रधान, श्री सीताराम आर्य मन्त्री, श्री बाबूलाल आर्य कोषाध्यक्ष।

आर्यसमाज मोरसी श्री मंगलाल प्रधान, श्री रमेश वर्मा मन्त्री, श्री गणेशराम आर्य कोषाध्यक्ष।

आर्यसमाज बापर नगर श्री शान्ति स्वरूप जोशी प्रधान, श्री चन्द्रनाथ साहुवा मन्त्री, श्री रामनाथ चौपड़ा कोषाध्यक्ष।

स्थान नाम	प्रधान	मन्त्री	कोषाध्यक्ष
गीमगंज मण्डी कोटा जंक्शन	रघुनाथ	लक्ष्मीकान्त	विश्वम्भरनाथ
आ. स. ग्रीन पार्क दिल्ली	ला० इन्द्रनारायण	हीरालाल	विक्रम
जबलपुर	आचार्य रामलाल	डी-डी शुक्ला डी-के श्रीवास्तव	
डिफेंस कॉलोनी दिल्ली	ठाकुर दास	गोपाल आर्य	देवराज
अम्बाला छावनी (पं.)	जयप्रकाश	वेदमित्र हापुड़वाले	वेदप्रकाश
विनयनगर नई दिल्ली	डा० विजय कुमार	धर्मदेव	गुलशनराय
रामगढ़ी (कोट) (राज.)	रामकृष्ण आर्य	हनुमान प्रसाद	मोनराज
लोधीरोड(जोरबाग,दिल्ली	एस-एस वर्मा	विनय	योगेन्द्र

हरिजन ईसाई होने से बचे

आर्यसमाज श्योरपुर कलां मुरैना म० प्र० के प्रभाव में आकर श्री प्रीतमसिंह जी ग्रोइया कस्बा ग्रोस जिला० मुरैना म० प्र० के दो सौ हरिजन ईसाई होने से बचे इस क्षेत्र में आर्य समाज का प्रचार १९६९ से अभी तक समुचय प्रणव साधना आश्रम व आर्यसमाज श्योरपुर से स्वामी परमानन्द सरस्वती द्वारा होता आया है।

—स्वामी परमानन्द, श्योरपुर कलां

आर्यसमाज रजौली (नवादा) का वेद प्रचार

आर्यसमाज रजौली द्वारा निम्न स्थानों पर वेद प्रचार के कार्यक्रम निम्न तिथियों में।

ग्राम अमावों में दिनांक १७-९-८१
ग्राम सिरदला में दिनांक १८-९-८१
ग्राम दिबौर में दिनांक १९-९-८१
ग्राम रजौली में दिनांक २१-९-८१

आर्यसमाज रजौली के सहयोग से सम्पन्न हुए।

—युवराज प्रधान

युवकों के प्रेरणा स्त्रोत नहीं रहे

आर्य जगत के स्तम्भ सुप्रसिद्ध श्योवृद्ध आर्य नेता परोपकारिणी सभा समिति दिल्ली के प्रधान पं० देवव्रत धर्मेन्दु जी के आकस्मिक निधन पर आर्य समाज दीवान हाल द्वारा आयोजित निधन शोक सभा में पं० जी के प्रति समिति के महामन्त्री श्री कमल किशोर आर्य ने श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि श्री धर्मेन्दु जी ने जहां धार्मिक, सामाजिक, व राजनीतिक क्षेत्र में अपना योगदान दिया वहां विशेष कर युवकों के प्रेरणा स्त्रोत बन कर आर्य युवक परिषद (रजिस्टर) दिल्ली के माध्यम से संस्थापक प्रधान के रूप में २५ वर्षों तक भावी युवा पीढ़ी को एकत्रित कर जीवन पर्यन्त देश भक्ति की प्रेरणा देते रहे। श्री आर्य ने कहा कि देश ने आज एक महान विभूति खो दी है। वर्तमान समय में जिसकी क्षति पूर्ति असम्भव है। पं० जी के प्रति हमारी सच्ची श्रद्धांजलि यही होगी कि हम उनके अधूरे कार्यों को क्रियान्वित करने में संलग्न रहें और उनके दिखाये सन्मार्ग पर चलें।

सभा में अनेकों आर्य विद्वानों व वरिष्ठ नेताओं ने एवं सामाजिक संस्थाओं के प्रतिनिधियों ने अपनी भाव भीनी श्रद्धांजलि पं० जी के प्रति अर्पित की। श्री सूर्यदेव जी, श्री रामचन्द्र रिवारीका, श्री प्रोफेसर ओम्प्रकाश गुप्ता, श्री अजित कुमार आर्य, श्री महेन्द्र कुमार शास्त्री, श्री वीरेन्द्र प्रकाश चौधरी, श्री गोविन्दराम चौधरी, श्री रामलाल मलिक, श्री ओम्प्रकाश त्यागी, श्री लाला इन्द्र नारायण जी, आदि आर्य नेता भी सभा में उपस्थित थे।

—चन्द्रप्रकाश आर्य

उत्सव

आर्यसमाज शक्तिनगर जि० मिर्जापुर (उ० प्र०) का वेद प्रचार सप्ताह सम्पन्न हुआ इसमें श्री जगदीश्वरानन्द जी द्वारा कथा का आयोजन किया गया।
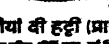
—मन्त्री

नई सरकार - प्रथम निर्णय

यह भी गलत !

हम यह नहीं कहते कि पंजाब के मुख्यमन्त्री श्री सुरजीतसिंह बरनाला ने पंजाब में राष्ट्रीय सुरक्षा अधिनियम के अन्तर्गत गिरफ्तार २२४ उग्रवादियों को क्यों रिहा कर दिया बल्कि हम केवल इतना ही पूछना चाहते हैं कि क्या सोचकर उन्होंने यह पग उठाया ?

क्या वह नहीं जानते कि ऐसा करने से पंजाब में एक बार फिर घृणा की आग भड़काई जा सकती है। क्या वह नहीं जानते कि उनका यह पग पंजाब के उनकी नई-नई बनी सरकार को ले डूबेगा?

शायद वह यह सब जानते हैं।

यदि उन्होंने यह पग अन्जाने में उठाया है तो उनकी राजनीतिक सूझ बूझ साठ तो क्या सत्तर वर्ष की आयु को पार कर गई है। भले ही उन्होंने यह कहा हो कि आज साठ वर्ष का होने पर भी वह अपने आपको तरोताजा और जवान महसूस करते हैं।

श्री बरनाला ने पंजाब में राष्ट्रीय सुरक्षा अधिनियम के अन्तर्गत २२४ उग्रवादियों को रिहा कर देने का तर्क यह दिया है कि इन लोगों को समझा बुझा कर राष्ट्र की मुख्य धारा के साथ जोड़ने का प्रयास किया जाएगा परन्तु वह शायद यह नहीं जानते कि कई गन्दे नाले ऐसे भी होते हैं कि यदि उनका रुख मुख्य धारा की ओर मोड़ भी दिया जाए तो मुख्य धारा में मिल जाने के बाद भी गन्दगी से भरी इसकी अपनी धारा अलग से बहती दिखाई देती है और कई परिस्थितियों में वह मुख्य धारा को भी जहरीली बना देती है।

जिन २२४ उग्रवादियों को श्री बरनाला ने मुख्यमन्त्री पद सम्भालने के चौबीस घण्टे के अन्दर ही अन्दर रिहा कर दिया उनमें कई ऐसे भी हैं जिनके अपने गिरोह थे। धर्म की आड़ लेकर उन्होंने अपने अर्ध सैनिक दस्ते से बना रखे थे इन पर नाजायज हथियार और कई हत्याओं में लिप्त होने का आरोप था। लूटपाट और अराजकता फैलाने का भी इन पर आरोप था। कई अपराधों में इनका हाथ होने का सन्देह था।

और इन अपराधियों को श्री बरनाला ने रिहा कर दिया। इन लोगों को रिहा करके उन्होंने इस पर मोहर लगा दी कि पंजाब में हर किसी को सब कुछ करने की अनुमति है।

हम श्री बरनाला के विचारों के साथ सहमत नहीं हो सकते। इन लोगों को रिहा करने के बाद उन्हें समझा-बुझा कर राष्ट्र की मुख्य धारा के साथ जोड़ना तो एक ओर वह लोग श्री बरनाला की इस दरियादिली के एहसानमन्द भी न होंगे। इनमें से अक्सर फिर से वही हथियार और बन्दूकें सम्भाल लेंगे जो इनसे छीन ली गई थीं और वह उनका प्रयोग पहले की तरह ही खुले आम करते रहेंगे।

शायद श्री बरनाला भूल गए हैं कि इन लोगों को भारत या पंजाब बल्कि यहां तक कि पन्थ के साथ भी कोई रुचि नहीं है। इनके तार पाकिस्तान के साथ जुड़े हुए हैं। पाकिस्तान इन्हें जैसा कहेगा वैसा ही यह लोग करेंगे। श्री बरनाला के कहने या उन्हें समझाने बुझाने का इन पर कोई प्रभाव न होगा।

कई उग्रवादि भारत छोड़कर विदेशों में जा बसे हैं और वहां से वह भारत विरोधी प्रचार कर रहे हैं। श्री बरनाला उन्हें भी वापस भारत लाना चाहते हैं। यदि उन्होंने ऐसा किया तो यह उनकी दूसरी और अन्तिम भूल होगी। क्योंकि इसके बाद यह लोग श्री बरनाला को कुछ और करने का अवसर ही न देंगे।

बेहतर होता यदि श्री बरनाला इन लोगों के विरुद्ध कानूनी कार्यवाही करवाते यदि न्यायालय इन्हें दोषी मानता तो इन्हें देश के कानून के अनुसार दण्ड भुगतने देते। यदि वह निर्दोष प्रमाणित होते तो उन्हें ससम्मान रिहा कर देते।

—प्रकाश

(दैनिक हिन्दी मिलाप ६-१०-८५)

आर्य वीर दल की आवश्यकता क्यों ?

श्री रामाज्ञा वैरागी

आर्य वीर दल का एक निश्चित एवं निर्धारित पथ रहा है और यह संगठन अपने निरूपित उद्देश्य के साथ अपने पथ पर अग्रसर होता रहा। आर्य वीर दल ने आर्य समाज के बाहर के क्षेत्रों के युवकों का आकर्षक कार्यक्रम ही नहीं वरन् क्रांतिकारी विचार धाराओं से अपनी ओर आकर्षित कर आर्य-धर्म की ओर प्रभावित किया। इस प्रकार हमारे आर्य-युवक छात्र धर्म की गौरवमयी विचारधारा में दीक्षित हुए। आर्य वीर दल ने नवयुवक हृदयों में विनम्र सेवाभावना के साथ ही क्रांतिकारी भावनाओं को प्रतिष्ठित कर पूर्ण आर्य बनाने का प्रयास किया। इस प्रयास को सफलता के सोपान मिले।

राष्ट्र की राजनीतिक सामाजिक तथा सांस्कृतिक निर्माण की दिशाओं में आर्य वीर दल ने वैदिक संस्कृति को आधार बना कर कार्य करना शुरू किया। कई अभूत पूर्व सफलतायें उसके समीप आयीं। भारत के कई प्रदेशों में ऐसे बड़े मेले आयोजित किये जाते थे, जहां चरित्र हीनता के अभिशाप की मैली चित्रावली देखी जा सकती थी, जो आर्य जाति के वंशज की अवनति का उदाहरण बन चुकी थी। जहां गन्दी गालियां बकी जाती गन्दे अभिनय और नाटक प्रदर्शित किये जाते। इन अश्लील प्रदर्शनों द्वारा हमारे संस्कारों पर आक्रमण किया जाता। आर्य वीर दल ने इस ओर विशेष अभिरुचि के साथ कार्य करना शुरू किया। राष्ट्र के प्रबुद्ध लोगों ने आर्य वीर दल की इस भूमिका को सादर समर्थन दिया, और प्रशंसा की।

आर्य वीर दल की सांस्कृतिक गतिविधि से प्रभावित कितने ही नवयुवकों के चरित्र का निर्माण आर्य वीर दल की गौरवमयी उपलब्धि सिद्ध हुई। ऐसे नवयुवकों की लम्बी सूची है, जो चरित्र हीनता के कारण अपने जीवन को विनाश के कगार तक पहुंचा चुके थे। आर्य वीर दल के प्रयास से वे नवयुवक जीवन की सही दिशा की ओर उन्मुख हुए। युवकों में चारित्रिक एवं ब्रह्मचर्य की भावना का प्रसार हमारे सांस्कृतिक संगठन आर्य वीर दल का निश्चित उद्देश्य और स्पष्ट लक्ष्य रहा है। आर्य वीर दल के साथ यह विशेषता आज भी है कि वह अपने लक्ष्य और उद्देश्य से विमुख नहीं हुआ है। यह स्वीकार किया जाय कि जीवन के इस विशिष्ट क्षेत्र में जो कल्पनातीत सफलता आर्य वीर दल को प्राप्त हुई, वह सफलता किसी अन्य संस्था या संगठन को प्राप्त न हो सकी।

आर्य वीर दल आज भी अपने स्थान पर सेवा रत ही नहीं, कार्य रत भी है। आर्य वीर दल की शाखाओं में ७५ प्रतिशत आर्य युवक सहर्ष सम्मिलित होकर वैदिक धर्म की जयकार करते हुए आर्य कुल की परम्पराओं से प्रभावित होकर आर्य बन जाने में गौरव का अनुभव करते हैं। भारतीय संस्कृति की रक्षा में आर्य वीर दल की इस ऐतिहासिक भूमिका और योगदान को अस्वीकार नहीं किया जा सकता। यही कारण है कि आर्य वीर दल ने देश के सांस्कृतिक संगठनों में अपनी विशिष्ठ भूमिका का निर्वाह किया है और अपनी अलग पहचान बना ली है। पाठक गण आर्य वीर दल के सम्बन्ध में विशेष जानकारी हेतु "आर्य वीर दल एक परिचय" पुस्तक छप गयी है पढ़ें।

डा. आनन्द सुमन (पूर्व नवाब छतारी) ने तिजारा में वेदों का डंका बजा दिया

आर्य समाज तिजारा द्वारा आयोजित वेद सप्ताह में डा. आनन्द सुमन (पूर्व नवाब छतारी) ने यहां दैनिक हवन पर प्रवचन एवं पारिवारिक सत्संग विभिन्न विद्यालयों में राष्ट्रीयता आध्यात्मिकता के प्रवचन एवं शाम को वेद कथा के मन्त्रों के प्रसंगों में सत्य दर्शन की ओजस्विनी प्रवाहित कर दी। दहेज, भ्रष्टाचार; मिलावट छूत छात व शराब खोरी आतंकवाद आदि विषमताओं पर अपनी ओजस्वी वाणी से करारे प्रहार किये।

स्थानीय जैन समाज डा. सुमन के त्याग एवं विद्वता से अति प्रभावित हुई। जैन मतावलम्बियों ने यहां प्रथमबार आनन्द सुमनको श्री देहरा जैन मन्दिर पर आमन्त्रित करके वेद कथा प्रवचन कराये। —[illegible] आर्य, मन्त्री

शोक समाचार

आर्यसमाज मजाधर पुर जि० बस्ती की भू० पू० प्रधाना श्रीमती चन्द्रप्रभा देवी, पत्नी स्व० श्री पं० जगदेव प्रसाद जी शर्मा का ३० सितम्बर १९८१ को ८० वर्ष की अवस्था में स्वर्गवास हो गया। आप सार्वदेशिक सभा के कार्यकर्ता श्री दिनेश त्रिपाठी एम. ए. की सास थीं। आपका पूरा परिवार आर्यसमाज के लिए [illegible] था। सभा कार्यालय इस दुखद घटना पर संवेदना प्रकट करता और परिवार के जनों को धैर्य के लिए प्रभु से प्रार्थना करता है।

—सम्पादक

स्वर्ण जयन्ती महोत्सव

आर्यसमाज हरियागंज में दिनांक ७-१०-८१ से ११-१०-८१ तक [illegible] में श्री पं० शिवाकान्त उपाध्याय द्वारा वेद कथा का प्रारम्भ हुआ।

—मन्त्री, आ० स०

[illegible] नगर (हिसार) हरियाणा में एक आचार्य अथवा [illegible] तृतीय अध्यापक की आवश्यकता है जो गुरुकुल कांगड़ी विश्व विद्यालय पाठ्यक्रमानुसार नवमी तथा दशमी को अधिकार के साथ संस्कृत [illegible] तथा संस्कृत व्याकरण पढ़ा सके। एक ऐसे गणित अध्यापक की भी आवश्यकता है जो नवमी-दशमी कक्षाओं को उत्तर प्रदेश पाठ्यक्रमानुसार गणित पढ़ाने में दक्ष हों। आर्थी महानुभाव निम्न पते पर पत्र व्यवहार करें अथवा मिलें गुरुकुल हिसार शहर के पास किसी मीटर की दूरी पर [illegible] रोड के निकट तथा [illegible] (नहर) के किनारे स्थित है।

आचार्य गुरुकुल आर्य नगर
पो० आर्य नगर जिला हिसार-१२५००१

विशेष सूचना

आर्य समाज के वार्षिकोत्सव वेद सप्ताह पारिवारिक सत्संगों को संगीत द्वारा रुचिकर तथा सफल बनाने हेतु आर्य जगत के प्रसिद्ध संगीतज्ञ श्री पं०मुरारी लाल बेचैन जी की भजन मण्डली को बुलाकर अपने उत्सवों को सफल बनाये। पता निम्न प्रकार—

—मुरारीलाल बेचैन आर्य भजनोपदेशक
द्वारा आर्यसमाज मन्दिर, फरीदाबाद शहर (हरि०)

देश की १८ हजार फुट ऊंची चोटी पर विदेशियों की गतिविधियां

बड़ी महगी साबित होगी यह लापरवाही

वि व के सबसे ठण्ड स्थान तथा सबसे बड और ऊचे ग्लेशियर साईचिन ग्लेशियर मे भारत और पाकिस्तान के बीच एक अघोषित युद्ध हो रहा है। उत्तरी कमाण्ड के ले० जनरल छिब्बर के अनुसार इस युद्ध मे पिछले एक वष मे १००० पाकिस्तानी सैनिक मारे जा चुके हैं और हजारो घायल हो चुके हैं। भारत के ३ सनिक मरे हैं मगर २७ सैनिक एक हिम धाव (एवलाशे) मे दबकर मर चुके हैं।

१८ हजार फुट की ऊचाई पर स्थित साईचिन ग्लेशियर पर अचानक प किस्तान अरनः हक जताने और उस पर अपना अधिकार जमाने के लिये इतना व्यग्र क्यो हो गया है मई १९८४ मे जब पहली बार पाकिस्तानी सेना ने इस ग्लेशियर पर अकारण हमला किया था तब पाकिस्तानी विदेश म त्री ने स्वीकार किया था कि पाकिस्तानी सनिको ने जब १९८१ मे पहली बार इस क्षत्र मे अनधिकृत रूप से प्रवेश किया था तब भारत ने उसका विरोध किया था मगर पाकिस्तान ने इस विरोध और ग्लेशियर पर भारत के दावे को नामजूर कर दिया था।

अभी हाल मे पाकिस्तान के विदेश म त्री ने स्वीकार किया था कि इस क्षत्र मे कई बार भारतीय और पाकिस्तानी सनिकों के बीच मुठभेड हो चुकी है उनकी यह स्वीकारोक्ति उनके एक अन्य कथन को जिसे जनरल जिया भी कई बार दोहरा चुके हैं कि भारत पर पाकिस्तान कभी आक्रमण नही करेगा झूठा सिद्ध करता है।

पाकिस्तान द्वारा साइचिन को अपने अधिकार मे लेने की साजिश मे चीन और अमरीका भी शामिल है। तीनो देश इस ग्लेशियर को जिसका विश्व के किसी भी मानचित्र पर कही कोई अस्तित्व नहीं है अपने अपने लिये सामरिक महत्व का मानते है।

चीन के जो कोदारी से काठमाडू तक एक सड़क का निर्माण कर चुका है और कोदारी से भारत नेपाल सीमा पर स्थित सुरसद तक एक और सडक बनाने मे लगा है लिये साईचिन ग्लेशियर का महत्व यह है

(शेष पृष्ठ २ पर)

सम्पादक — ओम्प्रकाश पुरुषार्थी

प्रबन्ध सम्पादक—सच्चिदानन्द शास्त्री वर्ष २०] [अंक ४४ सृष्टिसम्वत् १९७२९४९०८६] २० अक्तूबर १९८५ रविवार
दूरभाष—२७४७७१ दयानन्दाब्द १६१ आश्विन सु० ७ सं० २०४२ वार्षिक मूल्य २०) एक प्रति ५० पैसे

केन्द्र सरकार ऐसे सिखों की रिहाई मंजूर नहीं करेगी जिन पर राज्य से युद्ध छेड़ने के आरोप हैं—राजीव

लन्दन, ९ अक्तूबर। यहां 'गार्जियन' अखबार में छपे एक इन्टरव्यू में प्रधान मन्त्री राजीव गांधी ने यह बात कही है।

उनसे पूछा गया कि पंजाब समझौते के तहत सिख कैदियों की रिहाई पर केन्द्र सरकार का कितना नियन्त्रण होगा। श्री गांधी ने कहा कुछ लोग ऐसे हैं जिन पर राज्य से युद्ध छेड़ने के आरोप हैं। इन्होंने सेना पर गोली चलाई। हम ऐसे लोगों के मामले में कोई समझौता नहीं करेंगे। दूसरे कैदी पंजाब सरकार के अधिकार क्षेत्र में आते हैं। इनके बारे में राज्य सरकार को ही फैसला करना है।

क्या इन लोगों में वे भी शामिल होंगे जिन पर राजनीतिक हत्याओं के आरोप हैं? प्रधानमन्त्री ने कहा 'हमें कोई आपत्ति नहीं।'

यह इंटरव्यू नई दिल्ली में प्रधानमन्त्री राजीव गांधी के दफ्तर में लिया गया। इसके कुछ देर बाद ही प्रधानमन्त्री पंजाब के मुख्य-मन्त्री सुरजीत सिंह बरनाला से मिले।

असम की बाबत राजीव गांधी ने कहा कि सरकार वहां जल्दी से जल्दी चुनाव कराना चाहती है। उन्होंने कहा पंजाब की तरह असम के चुनाव भी विदेशी प्रेस के लिये खुले होंगे।

प्रधान मन्त्री ने कहा कि पाकिस्तान या तो एटम बम बना चुका है या इसके करीब है।

परमाणु शस्त्र परिसीमन संधि पर भारत ने दस्तखत करने से क्यों इंकार कर दिया। इस पर श्री गांधी ने कहा यह सन्धि पक्षपातपूर्ण है। एटमी ताकतों के लिए इसमें अलग नियम हैं। और गैर एटमी ताकतों के लिए अलग।

क्या भारत के दस्तख न करने की वजह यह है कि वह पाकिस्तान के एटम बम लेने के बाद ऐसा ही करने का विकल्प अपने पास रखना चाहता है? प्रधानमन्त्री ने कहा कि यह विकल्प हमारे पास १९४७ से ही है जब हमने एटमी परीक्षण किया था। उन्होंने कहा हम एटम बम नहीं बनाना चाहते।

क्या उनकी ब्रिटेन यात्रा से भारत-ब्रिटेन सम्बन्ध और अच्छे होंगे। और क्या वे मानते हैं कि ब्रिटिश सरकार सिख आतंकवाद के खिलाफ पूरी मदद कर रही है? श्री गांधी का कहना था हम सिख आतंकवादियो स निपटने के मामले में अभी भी खुश नही हैं। हम सोचते हैं कि ब्रिटेन ज्यादा कुछ कर सकता है। कुछ गतिविधियों और व्यक्तियों की बाबत उन्हें हमें सूचित करते रहना चाहिए।

सिख अलगाववादियों को ब्रिटिश सरकार ने जो प्रदर्शन की इजाजत दी है उस पर श्री गांधी ने कहा 'यह उनकी (ब्रिटेन) समस्या है।'

ब्रिटेन से २१ वेस्टलैण्ड हेलीकाप्टरों की खरीद की बाबत श्री गांधी ने कहा इस मामले की ज्यादातर मुश्किलें हल हो गई हैं। क्या [illegible] है? इस पर श्री गांधी ने कहा देखते हैं। ६.५ करोड़ पाउंड की इस खरीद के मामले पर तमाम आशकाएं जाहिर की गई हैं।

विदेशियों की गतिविधियां

(पृष्ठ १ का शेष)

कि उसके पाकिस्तान के अधिकार में आने के बाद, वह वहां अपना एक अड्डा बना सकेगा, और इस अड्डे की वजह से भारत चीन-सीमा विवाद में भारत की स्थिति बहुत कमजोर हो जायेगी।

अमेरीका की साईचिन में रुचि एक दूसरे कारण से है। यदि यह पाकिस्तानी के अधिकार में आ जाता है, तो वह पाकिस्तान के माध्यम से रूस और अफगानिस्तान पर और ज्यादा दबाव डालने की स्थिति में हो जायेगा। तब वह और चीन दोनों अस्काई-चिन के रास्ते आजाद कश्मीर में आसानी से आ-जाकर कश्मीर की सीमा पर और ज्यादा गड़बड़ियां कर सकेंगे।

पाकिस्तान ने साईचिन पर आक्रमण करने के लिये जो समय चुना था, उसे भी भारत को ध्यान में रखना होगा। यह आक्रमण तब हुआ था, जब भारतीय सेना 'ब्लू स्टार आपरेशन' में भाग लेकर हरमन्दिर साहब में छिपे आतंकवादियों को बाहर निकालने में व्यस्त थी। पाकिस्तान का इरादा स्पष्ट था। यदि कश्मीर सीमा में भारतीय सेना की स्थिति कमजोर हो तो कश्मीर पर आक्रमण करके उसे हथिया लिया जाय।

पाकिस्तान इस बात का भी अनुचित लाभ उठा रहा है कि अभी तक यह ग्लेशियर भारत, पाकिस्तान या विश्व के किसी भी मानचित्र पर अंकित नहीं है। भारत सरकार ने पिछले वर्ष अगस्त में इस ग्लेशियर का जो मानचित्र प्रकाशित और प्रसारित किया था, वह गलत तो था ही, उस मानचित्र से भी बिलकुल अलग था, जिसका वर्णन भूतपूर्व विदेश-मन्त्री सरदार स्वर्णसिंह ने अपने काल में किया था। जरूरत इस बात की है कि पाकिस्तान के सब एतराजों की उपेक्षा करके सेनाध्यक्ष जनरल वैद्य की सलाह मानकर इस भाग का न्यायसगत आधार पर सिमांक किया जाय, ताकि यह विवाद स्थायी रूप से हल हो सके।

साईचिन ग्लेशियर की समस्या मूलतः एक राजनीतिक समस्या है उसका हल राजनीतिज्ञ ही ढूंढ सकते हैं। डा० अम्बेडकर ने एक बार कहा था, "मानचित्र अंकित करने का काम सर्वेयर का है, मगर मानचित्रों की सीमाएं निर्धारित करने का काम राजनीतिज्ञों का है।

साईचिन ग्लेशियार के मामले में भारत जरासी असावधानी दिखायी तो यह आगे चलकर भारत के लिए एक बहुत बड़ा सरदर्द साबित हो सकता है और यह खतरा काल्पनिक नहीं है, वास्तविक है। इस क्षेत्र की रक्षा के लिए भारत को आखिर दम तक, और [illegible] बात की पर्वाह न करके कि उसकी परिणति भारत पाक-युद्ध में हो जायेगी, लड़ने को तैयार रहना होगा।

—सदाजीवितलाल चन्द्रलाल

सम्पादकीय

भारत की शिक्षा-प्रणाली दोषपूर्ण हैं।

देश का विभाजन धार्मिक आधार पर हुआ। मुसलमानों ने अपने वर्ग को भारत में अलग वर्ग माना और उन्होंने अपने लिये अलग स्थान की मांग की। कांग्रेस पार्टी ने मुसलमानों को अलग वर्ग नहीं माना, परन्तु बाद में भारत में दो वर्ग स्वीकार किये, और इसी आधार पर देश का विभाजन हुआ। यही कारण था कि देश का विभाजन दुर्भाग्यवश धार्मिक आधार पर हुआ और समूचे भारत में जहां मुसलमानों के ६० प्रतिशत या इससे अधिक लोगों ने अलग प्रान्त की मांग की उसे ब्रिटिश सरकार ने स्वीकार किया।

भारत-विभाजन के पश्चात् मुस्लिम लीग के प्रेसीडेण्ट मि० जिन्हा ने पूज्य महात्मा गान्धी जी को कहा कि दो देशों के हिन्दू और मुसलमानों को आराम से इधर से उधर जानें की बात मानली जाय परन्तु महात्मा गांधी जी ने उसकी बात नहीं मानी। श्री जिन्हा जो बात जो चाहते थे, वही हुआ, परन्तु बड़ी मारकाट के बाद हुआ लाखों व्यक्ति दोनों तरफ मारेगये, बहिनों का अपमान हुआ और अरबों की सम्पत्ति लूट ली गई।

भारत-विभाजन के पश्चात् मुसलमानों ने अपने देश 'पाकिस्तान' को इस्लामिक देश बना दिया, और हिन्दुओं के अधिकारों को समाप्त कर दिया। भारत भी अपने देश को 'हिन्दू राष्ट्र' घोषित कर सकती थी, परन्तु दुर्भाग्यवश इसनें ऐसा नहीं किया। इसके नेताओं ने अपने देश को "सैक्यूलर" घोषित किया, और यहां के सभी निवासियों को सभी क्षेत्रों में अधिकार और पूजा की छूट दी।

भारत का सैक्यूलर होना लोगों को अच्छा लगा। भारत के सभी लोगों के अधिकार व कर्त्तव्य एक होंगे। इसका किसी नें भी विरोध नहीं किया। सभी के लिये एक समान कानून बनाये जायेंगे। परन्तु जनता को उस दिन अजीब सा लगा कि जब सरकार नें केरल आदि देश में 'मुस्लिम लीग' पर प्रतिबन्ध न लगाकर उसके साथ मिलकर वहां सरकार बनाई। यह सयस्या लोगों के मस्तिष्क में नहीं आई।

भारत ने सैक्यूलर वाद के विरुद्ध देश में हिन्दुओं के लियें अनेकों कानून 'हिन्दू कोड बिल" बनाये तब जनता सतर्क हो गई, और उसको यह लगा कि 'सैक्यूलर' नाम दिखाने के लिये है। परन्तु कांग्रेस सरकार की नीति पुरानी ही है। जनता ने जगह-२ मीटिंग की, और सरकार का ध्यान आकर्षित किया कि उसे देश के लिए एक कानून बनाना चाहिये दो नहीं। परन्तु जवाहर लाल जी ने अपने मन की बात की और कानून बनते चले गये। अब कानून मुसलमान और काश्मीर को देखकर बनते हैं।

देश को सबसे बड़ा आश्चर्य उस दिन हुआ जबकि देश में शिक्षा प्रणाली चालू हुई। चाहिये तो यह था कि लार्ड मैकाले की पढ़ाई समाप्त कर नई शिक्षा पद्धति चालू की जाय, परन्तु लार्ड मैकाले को स्वीकार किया गया, और कानून बनते गये।

कानून का सबसे बड़ा दोष उस दिन हुआ जब कि भारत में अल्पसंख्यक और बहुसंख्यक वर्ग मानकर दो कानून बनाये गये। अल्पसंख्यक वर्ग में मुसलमान और ईसाई थे, और देश की ८० प्रतिशत आर्य (हिन्दू) जनता बहुसंख्यक वर्ग में गई। अल्पसंख्यक वर्ग के लिये सरकार ने अपने स्कूलों को चलाने, शिक्षक नियुक्त करने या निकालने, शिक्षा में धार्मिक शिक्षा देने की छूट दी और बहुसंख्यक वर्ग को यह अधिकार नहीं दिया गया।

कानून का कुपरिणाम यह हुआ कि बहुसंख्यक वर्ग हिन्दू शिक्षा की दृष्टि से भले आगे हो, परन्तु उसके विद्यार्थी सदाचार, भारतीय संस्कृति तथा देश-भक्ति से शून्य हो गये। जब कि अल्पसंख्यक वर्ग के स्कूलों में घोर साम्प्रदायिक बच्चे बनने लगे हैं।

भारत में आर्यसमाज शिक्षा के क्षेत्र में बहुत आगे है, परन्तु बहुसंख्यक वर्ग में यह भी आ गया। सरकार की नीति का ध्यान कर आर्य समाज के अनेकों लोगों ने अपने को अल्पसंख्यक वर्ग बनाने का प्रयत्न किया, परन्तु सार्वदेशिक सभा ने उनकी इस नीति को नहीं माना। परिणाम यह हुआ कि आर्यसमाज को जानने वालों का स्थान आर्य स्कूलों में नहीं रहा, उनके अलावा और लोग आ गये। कहने का तात्पर्य यह हुआ कि आर्यसमाज का प्रयास बेकार सिद्ध हुआ।

सैक्यूलर स्टेट होने के नाते सरकार को एक ही कानून बनाना चाहिये था। शिक्षा के लिये अल्पसंख्यक वर्ग और बहुसंख्यक वर्ग क्या सैक्यूलर की देन है। समस्त यूरूप तथा अमरीका में एक ही कानून है, परन्तु अपने देश को सैक्यूलर घोषित करने वाले स्वयं आचरण में साम्प्रदायिक हैं। जब सरकार ही अपने आचरण में साम्प्रदायिक है तो फिर देश के विद्यार्थी उसकी बात क्यों माने। नवयुवकों में ही साम्प्रदायिकता, हिंसा, अलगाववाद के नारे हैं। फिर सरकार इनसे कैसे पीछा छुड़ावेगी। जो हमने कार्य किया है उसका परिणाम हमें भुगतना ही पड़ेगा।

जब ८० प्रतिशत जनता के बच्चे अपने मनमाने ढंग से पढ़ रहे हैं और अल्पसंख्यक वर्ग के बच्चे घोर साम्प्रदयिक बन रहे हैं, तब सरकार स्वयं सोचें कि वह देश एकता और सुरक्षा कैसे लावेगी। उसकी अपीलों का कोई अर्थ नहीं हैं। सरकार को यह बात समझ लेनी चाहिये कि उसकी भूल के कारण भारत के प्रान्त में अशांति हैं।

भारत की शिक्षा दोषपूर्ण है। इसे सैक्यूलर के अनुकूल होना चाहिये। ऐसे होने पर ही देश एकता, सुरक्षा तथा सरकार की नीति का पालन करेगा अन्यथा कुछ नहीं होगा। सरकार की उक्त दोषपूर्ण नीति का कुपरिणाम यह हुआ कि:—

१—देश को ८० प्रति जनता के बच्चे ऊटपटांग बन रहे हैं।

२—मुसलमान ईसाई के बच्चे घोर साम्प्रदयिक बन रहे हैं।

३—प्रधान मन्त्री की घोषणा देश की एकता व सुरक्षा कैसे चलेगी।

४—समूचा देश अलगाव के चक्कर में हैं और नवयुवक ही हिंसक बन रहे हैं।

—ओम्प्रकाश त्यागी

सामयिक चर्चा–

हाडौती अंचल का एक अनूठा मन्दिर !

कोटा। ऐतिहासिक धरोहर एवं पुरासंपदा से भरपूर हाडौती अंचल में एक ऐसा अनूठा मन्दिर है जहां न तो भगवान की मूर्ति है और न ही कोई देवी-देवता। फिर भी इस मन्दिर में शंखनाद एवं झालरों की स्वर लहरियों के साथ दोनों वक्त आरती होती है।

कोटा जिले के मांगरोल कस्बे में बाणगंगा नदी के तट पर स्थापित अपनी किस्म के इस बेजोड़ मन्दिर में घोड़े पर सवार एक अप्रितम योद्धा की मूर्ति है।

भारत के प्रथम स्वाधीनता संग्राम से भी पूर्व १८२१ में ब्रिटिश शासन के विरुद्ध युद्ध करते हुए पृथ्वीसिंह नामक यह हाडा वीर दो अंग्रेज सेनापतियों को मौत के घाट उतारने के बाद शहीद हुआ था। 'बापजी' नाम से प्रसिद्ध इस योद्धा की याद में ब्रिटिश शासन के दौरान ही मन्दिर का निर्माण हुआ था तथा देवता के रूप में उनकी मूर्ति स्थापित की गई।

कोटा राज्य का इतिहास में डा॰ मथुरालाल शर्मा ने अंग्रेजों की फौज से युद्ध छेड़ने की घटना को हल्दीघाटी के समान बताया है। इतिहास के अनुसार कोटा के तत्कालीन नरेश किशोरसिंह द्वारा अंग्रेजों का विरोध करने के समर्थन में उनके भाई पृथ्वीसिंह ने युद्ध का डंका बजा दिया।

परिणामस्वरूप मांगरोल कस्बे में बाणगंगा के किनारे चार अंग्रेज सेनानायकों के नेतृत्वमें एक सौ से भी अधिक तोपों से सज्जित नीमच छावनी से भेजी गई।

ब्रिटिश सेना किशोरसिंह की घुड़सवार और पैदल सेना से भिड़ गई।

अंग्रेज इतिहासकार कर्नल टाड इस युद्ध के गवाह हैं जहां मुट्ठी-भर हाडा वीरों ने पृथ्वीसिंह के नेतृत्व में दो अंग्रेज सेना नायकों लेफ्टिनेंट क्लार्क तथा लेरींड को मौत के घाट उतार दिया था। सैकड़ों घाव लगने के कारण पृथ्वीसिंह को भी चिकित्सा के बावजूद नहीं बचाया जा सका।

बाद में ब्रिटिश शासन के दौरान ही शहीद पृथ्वीसिंह के एक विशाल मन्दिर का निर्माण किया गया। वहीं अंग्रेज सेनानायक क्लार्क और रोड की स्मृति में भी स्मारक बनाए गए।

इतिहास के अनुसार पृथ्वीसिंह की शहादत के बाद कोटा नरेश किशोरसिंह अपनी पराजय को सम्मुख देखकर वापस लौट गए तथा मेवाड़ में शरण ली। बाद में अनेक समझौतों के तहत उन्हें वापस कोटा बुलाया जा सका।

लेकिन शहीद हुए उनके भाई बापजी के नाम से मन्दिर में एक देवता के रूप में प्रतिष्ठित हो गए और उनकी पूजा का शुभारम्भ हो गया।

स्वतन्त्रता के प्राप्ति के बाद बापजी के मन्दिर की व्यवस्था व पूजा का कार्य राजस्थान सरकार के देवस्थान विभाग के अधीन हो गया। (८-१०-८५ हिन्दुस्तान)

ब्राह्मण होकर हरिजन कन्या से विवाह किया था ?

केवल मात्र यही अपराध था !

बिहार सरकार का कर्मचारी खिलानन्द झा जो पिछले नवम्बर से ही अपने अस्तित्व के लिये राज्य सरकार से लड़ाई लड़ रहा है। प्रधान मन्त्री श्री राजीव के द्वार पर न्याय पाने के लिये आया हुआ है। उन्होंने प्रधान मंन्त्री को एक ज्ञापन भी दिया है जिसमें कहा है कि यदि मुझे आश्वासन नहीं मिला तो बिहार भवन पर पत्नी व बच्चों के साथ आमरण-अनशन प्रारम्भ कर दूंगा।

श्री झा दरभंगा उपमण्डलीय कार्यालय में चपरासी के रूप में कार्य करते थे। उन्हें वहां परेशान करके बाहर किया कि उन्होंने एक हरिजन कन्या से विवाह किया था। १९७० ई॰ में। अन्ततः उन्हें तंग करने पर नौकरी छोड़नी पड़ी। वह तंग आकर हर आफिसर के द्वार पर ठोकरें खाते रहे, तथा जून मास में न्याय की मांग करने दिल्ली आये। यहां उन्होंने २१ जून से बिहार-भवन के सामने आमरण शुरु कर दिया। लेकिन मुख्य मन्त्री बिन्देश्वरी दुबे के इस आश्वासन पर उन्हें सेवा में वापस ले लिया जायेगा। उन्होंने २४ जून को अपना अनशन तोड़ दिया। पटना वापस आने पर सप्ताह भर बाद मुख्य मन्त्री के प्रधान सचिव ने उन्हें दरभंगा जाकर अपनी ड्यूटी पर पुनः कार्य करने को कहा—वहां पहुंचने पर उन्हें आयुक्त ने कहा कि इस तरह का उन्हें कोई निर्देश नहीं मिला है श्री झा फिर पटना लौट गये और दो माह तक मुख्य मन्त्री से मिलने का प्रयास करते रहे। लेकिन वह मिलने में सफल नहीं हुए।

श्री झा अपने परिवार के साथ १२ सितम्बर को यहां आये हैं और बहुत ही दयनीय स्थिति में मन्दिर-मार्ग स्थित हिन्द सौध के बरामदे में समय काट रहे हैं उन्हें अपने भविष्य की चिन्ता नहीं है किन्तु इस देश के लोग यह जान लें कि अन्तर्जातीय विवाह करने वालों के लिये संस्थायें और सरकार क्या करती है केवल मेरा कसूर यही है कि मैंने ब्राह्मण होकर एक हरिजन कन्या से विवाह किया था।

पुराना कोर्ट अभी भी हरिजनों को महादेव के मन्दिर में कांवर का जल नहीं चढ़ाने दिया

मध्य प्रदेश के मुरैना जिले की अम्बाह तहसील के ग्राम महुआ में महादेव के मन्दिर मे सवर्णों ने हरिजनों को कांवर का जल नहीं चढ़ाने दिया और जल चढ़ाने पर उन्हें मारा-पीटा तथा न्यायिक जांच की मांग की।

अखिल भारतीय अनुसूचित जाति संघ परिषद् के अध्यक्ष हीरालाल पिप्पल ने बताया कि २६ अगस्त ग्राम महुआ के महादेव मन्दिर में अपनी धार्मिक भावना के अनुरूप लगभग दो सौ किलो मीटर पैदल चलकर सोरों घाट से अनेक हरिजन गंगाजल भरकर लाये थे लेकिन कुछ सवर्णों ने हरिजनों को मन्दिर में जल चढ़ाने से रोका। इसकी सूचना जिला प्रशासन को दी गई। जिला प्रशासन ने उन्हें थाने में रोक लिया। साथ ही कहा कि महादेव मन्दिर के अलावा किसी अन्य मन्दिर में जल चढा लेवे। कुछ व्यक्तियों को तंग किया गया और अन्य मन्दिर में जल चढ़ाने को बाध्य किया। साथ ही रामेश्वर, भागीरथ, श्रीचन्द्र को मारा-पीटा थाने में बन्द किया।

यह भी बताया गया कि थाने में ही भीड़ ने उन हरिजनों पर हमला भी किया गया, दो लोग घायल भी हो गये।

आज बढ़ते हुए समय में जबकि धर्मपरिवर्तन का नारा एक साधारण सी बात बन चुकी है। छुआछूत करने वाले, अपराध करते हैं और सुधारवादी संस्थाओं को यह पाप भुगतने पड़ते हैं।

सरकार को ऐसी स्थिति में सख्त कदम उठाने चाहिए।

रजनीशवाद की समाप्ति

-विजय

(गतांक से आगे)

लाहन के स्वामी प्रेम विशाल ने अपने पत्र में हमें लिखा था कि यदि जर्मनी की पत्रिका के फोटो आप प्रकाशित करने का कष्ट करते तो अवश्य ही अश्लीलता के बारे में कुछ बात की जा सकती। इस बारे में हमें उनसे केवल इतना ही कहना है कि ये नगे चित्र, जो आचार्य रजनीश के आश्रम की अश्लीलता का जीता-जागता प्रमाण है, हम तो अपने समाचार पत्रों में नहीं छाप सकेंगे अलबत्ता ये चित्र 'इलस्ट्रेटिड वीकली' के २१ सितम्बर और अंग्रेजी समाचार पत्र 'सनडे आब्जर्वर' के ४ अगस्त १९८५ के अंकों में छपे हैं, वह ये दोनों अखबार मंगवाकर आचार्य रजनीश के कारनामे पढ़ भी सकते हैं और उनके आश्रम में फैली हुई अश्लीलता के चित्र उनमें देख भी सकते हैं।

प्रीतीश नन्दी की जो रिपोर्ट 'इलस्ट्रेटिड वीकली' में रजनीशपुरम् के बारे में छपी है, उसमें बड़े ही दिलचस्प और विस्मयजनक रहस्यों पर से पर्दा उठाया गया है। इस रिपोर्ट में कहा गयाहै कि—

'रजनीश फाऊंडेशन के पास १९८३ में ३१,८१५,३५० डालर की पूंजी थी और ३०८२६,११४ रुपये की सम्पत्ति थी और इन सबका संचालन मां आनन्द शीला करती थीं जो अब रजनीश के अन्य प्रमुख साथियों के साथ विद्रोह करके चली गई हैं।

आचार्य रजनीश ने 'लास एंजेल्स टाइम्स सर्विस' को बताया है कि ऐसा मालूम पड़ता है कि ये लोग (उनके विद्रोही साथी) मुझे मार ही डालते क्योंकि मेरा मौन उनके लिये लाभकारी था और मेरी अनुपस्थिति उनके लिये और भी लाभकारी होती।"

रजनीशपुरम् में प्रवेश भी अपने आप में एक बहुत बड़ी समस्या है, इसकी चर्चा इस रिपोर्ट में इस प्रकार की गई है :—

"अगर आप ध्यान से देखें तो यह बात स्पष्ट हो जायेगी कि जंकशन बाक्सों में लगे क्लोज्ड सर्कट टेलीविजन-कैमरे रजनीशपुरम में आने वाले लोगों की गतिविधियों पर पूरी तरह नजर रखते हैं। कुछ लोगों का कहना है कि इन कैमरों की सहायता से इस बात पर भी नजर रखी जाती है कि कहीं आश्रमसे कोई भाग तो नहीं रहा है।

"महान् गुरु' इस तरह हरेक पर नजर रखते हैं।

आश्रम को जाने वाले रास्ते पर जगह-जगह पिल बाक्स बने हुए हैं जहां सैक्सी संन्यासिनें एक से एक उत्तेजक पोशाकें पहने खड़ी होती हैं।"

प्रीतीश नन्दी ने अपनी इस रिपोर्ट में यह भी लिखा है कि :—

"मैंने अपनी कार आश्रम की कांटेदार तारों से थोड़ा बचा कर खड़ी कर दी तभी एक सीटी की आवाज मुझे सुनाई दी। रजनीश के सशस्त्र सिपाही वहां आ गये और मुझे अपनी कार अन्दर ले चलने को कहा। स्वागत कक्ष पर पहुंचने तक उन्होंने अकेला मुझे नहीं छोड़ा।

उनकी उलझन मुझे मालूम थी। ये सब वे इसलिए कर रहे थे क्योंकि उनके आस-पासके लोग उनसे बेहद नफरत करते हैं।

उनका यह व्यवहार यहां किसी भी नये आने वाले को चौंका देने वाला था। मैंने जब अपनी राय इस बारे में उनके सामने जाहिर की तो आस-पास के लोगों के बारे में उन्होंने कहा कि 'आप नहीं जानते कि ये सिरफिरे लोग किस किस्म के हैं। ये कुछ भी कर सकते हैं। यहां बम धमाके भी हुए हैं। हत्याओं की कोशिशें भी हुई हैं, धांधली भी हुई है और चोरियां भी हुई हैं। ऐसे लोगों पर हम कैसे विश्वास कर सकते हैं ?"

प्रीतीश नन्दी का कहना है कि रजनीश उन्हें भारतीय नहीं बल्कि किसी भी अमरीकन से अधिक मालूम हुए। जिन महापुरुषों का नाम हम भारतवासी और संसार के अन्य लोग बड़ी श्रद्धा के साथ लेते हैं और जिन नेताओं को इस देश और संसार के लोग हमेशा आदर की दृष्टि से देखते रहे हैं, उनके बारे में जो अनाप, शनाप बातें आचार्य रजनीश ने कही हैं, उनके कुछ नमूने इस प्रकार हैं—

"बुध और ईसा मसीह हिटलर और मुसोलिनी से भी बड़े अपराधी हैं। हिटलर ने केवल दस लाख यहूदियों की हत्या की थी। गरीबी में जिन्दा रहना जर्मनी के सुन्दर और वैज्ञानिक विधि से चलने वाले गैस चैम्बरों में मर जाने से अधिक कष्टकारी है। वहां तो एक सैकेंड के अन्दर ही आदमी धुआं हो जाता है।

⚜ ⚜ ⚜

महात्मा गांधी तक को ७० वर्ष की उम्र में भी स्वप्न दोष होता था। तुम्हें मालूम है कि अन्त में निर्वसन औरतों के साथ सोना उन्होंने शुरु कर दिया था ? परन्तु गांधीवादी इसके बारे में कुछ नहीं कहते। यह चालीस वर्ष के ब्रह्मचर्य की असफलता है। मगर यह सोचने की कोशिश कोई नहीं करता कि ब्रह्मचर्य मेडीकल तौर पर सम्भव भी है या नहीं।

⚜ ⚜ ⚜

टेरेसा (मदर) जैसे लोग यतीमों को इकट्ठा करते रहते हैं। वह कर क्या रही हैं ? दुनिया में और गरीबी पैदा कर रही हैं। वह गर्भपात के विरुद्ध हैं, वह बर्थ कन्ट्रोल के विरुद्ध हैं, वह गोलियों के विरुद्ध हैं। यह पाप है। सचमुच अगर ये सब चीजें खत्म हो गईं तो यतीम खत्म हो जायेंगे और फिर मदर टेरेसा को नोबल पुरस्कार कौन देगा ?

⚜ ⚜ ⚜

महात्मा गांधी और उन जैसे लोग दुनिया में हिंसा के लिए जिम्मेदार हैं। गांधी आश्रम में कोई भी आदमी औरत से प्यार नहीं कर सकता था। इतना जबरदस्त अनुशासन वहां पर था कि कोई औरत चोरी छिपे भी किसी मर्द से मिल नहीं सकती थी लेकिन उनके सैक्रेटरी प्यारेलाल उनके अनुशासन का पालन कर नहीं सके। यह अनुशासन सचमुच चीज ही बड़ी वाहियात है।

⚜ ⚜ ⚜

राजीव गांधी अगर तुम्हें मिलें तो उन्हें बता देना कि भारत की गरीबी और लोगों के वहां मरने की जिम्मेदारी उनकी होगी। मानवता के बारे में कोई ज्ञान उन्हें नहीं है। तुम जाओ और उन्हें बता दो कि वह फिर से पायलट का ही काम शुरु कर दें..."।

प्रीतीश नन्दी से बात-चीत के दौरान समलैंगिकता के बारे में जो विचार आचार्य रजनीश ने व्यक्त किए, वे भी अपने आप में विस्मयकारी ही हैं। उन्होंने कहा—

"समलैंगिकता प्राकृतिक नहीं है। यह तो संसार को धर्म की देन है। इसकी शुरुआत मठों में हुई जहां केवल मर्द रहते थे और औरतें जा ही नहीं सकती थीं। उन ननरीज से शुरु हुई जहां केवल औरतें रहती थीं और मर्द वहां जा ही नहीं सकते थे। आदमी स्वभाव से बड़ा चतुर है। काम चलाने का कोई न कोई रास्ता वह निकला ही लेता है। सारे पादरी समलैंगिकता में ग्रस्त रहे हैं। शारीरिक नियमों को उपदेश से बदला नहीं जा सकता। आदमी का जिस्म किसी बाइबल की बात नहीं सुनता।"

विवाह के बारे में आचार्य रजनीश क्या सोचते हैं, सैक्स के बारे में उनकी धारणाएं क्या हैं, साधना और भक्ति उनकी दृष्टि में क्या है। इस सबकी कहानी उनकी ही जुबानी हम अगले अंक में प्रस्तुत करेंगे।

(क्रमशः)

गुरुकुल-कांगड़ी-विश्वविद्यालय का श्रद्धानन्द-चिकित्सालय और डा० हरिप्रकाश

—ले० सच्चिदानन्द शास्त्री

पञ्च महापुरियों के बीच बसा जैसे हरिद्वार नगरी अपना विशेष स्थान रखती है उसी प्रकार गुरुकुल-कांगड़ी आर्य संस्थाओं, गुरुकुल महाविद्यालय, ज्वालापुर, वानप्रस्थाश्रम, योगीफार्मेसी, कन्या गुरुकुल कनखल, आर्य महिला कालिज कनखल के मध्य गुरुकुल शोभायमान है। विगत का इतिहास आंखों के सामने है, कभी उत्थान, कभी पतन के क्षण भी आते हैं। गुरुकुल-कांगड़ी का विगत दशक भी इसी घड़ी की एक कहानी है। इस घड़ी से एक क्षण भी आया और वह था—श्रद्धानन्द चिकित्सालय का उद्घाटन-समारोह हेतु श्री ला० रामगोपाल जी शालवाले, प्रधान सार्वदेशिक सभा से आग्रह किया जा रहा था, मैं उनके साथ में आश्चर्यचकित था, गुरुकुल इतने लम्बे संघर्षों में चल रहा है फिर चिकित्सालय कैसा? फिर मालूम हुआ चमत्कार क्या है?

वह व्यक्तित्व है श्री डा० हरिप्रकाश जिसने उत्थान और पतन के क्षणों में भी विचलित होना नहीं सीखा, उस व्यक्ति का चमत्कार? क्या चमत्कार—

निश्चय किया कि स्वामी श्रद्धानन्द-धर्मार्थ चिकित्सालय को विशाल रूप दिया जाय। बस फिर क्या था—घर-घर, गली-गली, नगर-नगर और स्वयं तथा अपने छोटे-बड़े साथियों के सामने झोली फैलाई। झोली में श्रद्धानन्द-चिकित्सालय, दाने-दाने की भीख, त्यागी श्रद्धानन्द ने गुरुकुल की बुनियाद पर महान वृक्ष लगाया, पर डा० हरिप्रकाश ने श्रद्धानन्द के अमर नाम ८-१० लाख रुपयों की राशि एकत्रित और पंचपुरी में दुखी-दरिद्र नारायण की सेवा हेतु चिकित्सालय का विशाल भवन बना कर खड़ा कर दिया। लोग चर्चा ही करते रहे कि हरिप्रकाश ने लाखों रुपया खा लिया, पर आंख वालों ने देखा—लाखों का करिश्मा, मन और मस्तिष्क खुल गये, ज्ञान के चक्षु खुले और बाबू सोमनाथ जी मरवाह एडवोकेट सुप्रीमकोर्ट ने कहा—जो काम डा० हरिप्रकाश ने कर दिया, वह किसी के वस की बात नहीं थी, यह बहुत बड़ा काम किया है।

जब यह विशाल भवन बन गया, तब इसके उद्घाटन हेतु किसी व्यक्तित्व की आवश्यकता प्रतीत हुई। कोई नेता,मन्त्री ढूंढ़कर लाया जाय। डा० हरिप्रकाश ने कहा—कोई मन्त्री, मिनिस्टर नहीं चाहिये, इसका उद्घाटन स्वामी श्रद्धानन्द जैसा फक्कड़, त्यागी, आर्यसमाज का नेता ही करेगा, दृष्टिपात किया गया, नजर पड़ी तो डा० हरिप्रकाश ने दिल्ली में लाला रामगोपाल जी शालवाले से इस चिकित्सालय के उद्घाटन हेतु प्रार्थना की, अनुनय-विनय के पश्चात् स्वीकृति मिल गई और वह शुभ दिन आया पंचपुरी के विशेष गणमान्य व्यक्तियों, गुरुकुल के कुलवासियों के मध्य श्री प्रधान सार्वदेशिक सभा ने इसका भव्य उद्घाटन किया। मैं उस दिन भी श्री लाला जी के साथ था जब इस चमत्कार को जनता जनार्दन के हाथों में सेवार्थ सौंपा गया।

एलोपैथिक, आयुर्वेदिक, आप्रेशन-विभाग, रक्त, पेशाब, व टट्टी, ऐक्सरे आदि की जांच और पचास बिस्तरों का शय्या-कक्ष अपना विशेष महत्व रखता है।

श्रीडा मेहरा, श्री डा०वड़ेरा, मिस मेहरा आदि हां डा०रावत को भूल ही गया। अपने दल-बल के साथ सन्नद्ध है जनता की सेवा में!

अब तक कठिन से कठिन आपरेशन, भयंकर मर्ज के मरीजों की सेवा की जा चुकी है।

मैं जब ४ मास के ज्वर से पीड़ित था तब श्री ला० रामगोपाल जी प्रधान सभा ने आदेश किया कि तुम जाओ गुरुकुल में चिकित्सा कराओ, मैं गाड़ी मे सवार होकर ५ सितम्बर को हरिद्वार डा० हरिप्रकाश के हाथों में आया और उन्होंने डा० मेहरा को सौंप दिया। बस फिर क्या था? होने लगी लेफ्ट राइट। रक्त, पेशाब, ऐक्सरा, नम्बर वार देखा गया, और टाइफाइड पाया। पन्द्रह दिन तक मेरा बुरा हाल खाना-पीना बन्द, चलना-फिरना बन्द, हल्की आवाज में बोलना। दूध, चाय, रोटी, सब छूटा, पर डा० मेहरा ने हिम्मत नहीं हारी। एक छोटी-१ गोलियां दी, बस फिर क्या था? मर्ज व मरीज दोनों पर काबू कर २०-२२ दिनों के बाद मैं १२ आनें अपने को स्वस्थ अनुभव करता हूं, डा० मेहरा ने सब कुछ खाने को कह दिया है। हां, मैं अपनी कथा लेकर बैठ गया? सुनो—

एक दिन रात में तीन डिलीवरी केस आ गये, मिस मेहरा को आपरेशन करके बच्चा पैदा करना था, पर रक्त की व्यवस्था न होने से वह घबड़ा रही थी, तभी डा० हरि प्रकाश जी आ गये। वह बोले, रक्त लेने पर भी तो लिखाओगी कि मरने की जिम्मेवारी अपने ऊपर है, फिर अब क्या, इस समय भी भाग्य भरोसे, आपरेशन करो। मिस मेहरा ने सफल आपरेशन किया, लड़का हुआ। जच्चा-बच्चा दोनों स्वस्थ, प्रातः मिस मेहरा भी प्रसन्न थी।

ऐसे चिकित्सालय में मैं भेजा गया, जहां चिकित्सा कराने हजारों, लाखों लोगों को परित्राण मिला है, वहीं पर मुझे भी रोग से केवल मुक्ति नहीं, महान् कार्य को करने की दिशा में संघर्षों से जूझकर महान् कार्य करने के लिये महान् प्रेरणा मिली डा० हरिप्रकाश जी से। जिसका परिणाम है श्रद्धानन्द धर्मार्थ चिकित्सालय। जन-जन के मुख से शुभकामनाओं से भरे शब्द ही सुने जाते हैं।

मैंने डा० हरि प्रकाश जी से पूछा कि मुझे अस्पताल के वार्ड में क्यों न रखकर घर पर क्यों रखा? बोले अभी तेरे लायक बिस्तर नहीं बना है मुझे जिस जनता ने इतना प्यार दिया कि इस विशाल भवन को बनाया है, वह जनता एक सौ बिस्तरों वाला भवन-सामान बनाने हेतु मेरी झोली भर देंगे। उसमें से एक बिस्तर तेरा भी हो जायेगा। मैंने कहा, क्या मुझे फिर बीमार करना चाहते हो, वे बोले नहीं, तब बिस्तरों की कमी नहीं होगी। विशाल स्थान पर शय्याओं की कमी नहीं होगी। श्रद्धानन्द का सेवा कार्य महान् रूप में कार्य करेगा। तो आइये, दानी-महानुभाव अपने हाथ खोल दो।

शत हस्त समाहर, सौ हाथों से कमाओ, हजार हाथों से पुण्यार्थ दान करो।

आरिफ मोहम्मद खान का विवादपूर्ण भाषण

(गतांक से आगे)

लोकसभा के मई माह के सत्र में निजी विधेयक पर बहस के दौरान केन्द्रीय राज्य मन्त्री आरिफ मोहम्मद खां ने इस विधेयक की धज्जियां उड़ाई हैं। तलाक के सम्बन्ध में कुरान में क्या व्यवस्था है? इस सम्बन्ध में आरिफ खां ने अपना जोरदार पक्ष रखा है एवं कहा है कि उच्चतम न्यायालय का यह फैसला शरीअत के खिलाफ नहीं है। श्री आरिफ खां के इस ऐतिहासिक भाषण के अंश जो कि देश के अन्य भी कई पत्र-पत्रिकाओं में छपे हैं। मैं नीचे पेश करने जा रहा हूं।

"सदियों से हम इस मुल्क में एक साथ रह रहे हैं यहां विभिन्न धर्मों के मानने वाले हैं और हम जिस मजहब को मानने वाले हैं, हमारे मजहब की जो असल तस्वीर है, हमारे मजहब की जो असल तालीम है, हमारे मजहब का जो असली पैगाम है, उसके बारे में आज तक हम अपने बिरादराने वतन को परिचित नहीं करा पाये हैं, हमारे अन्दर कोई कमी रही है, हम अपने फर्ज से कहीं पीछे रह गये हैं, जो आज तक हम यह नहीं बता सके हैं कि इस्लाम की तस्वीर क्या है, इस्लाम का सन्देश क्या है?

आज सर्वोच्च न्यायालय के एक फैसले को लेकर काफी शोर-शराबा मचाया जा रहा है, तलाक के बाद अपनी गुजर-बसर के लिए एक औरत ने सी०आर०पी०सी० के तहत याचिका दायर की और सर्वोच्च न्यायालय ने उसके हक मे फैसला दे दिया, यहां सोचने की बात सिर्फ इतनी है कि क्या सर्वोच्च न्यायालय के फैसले से शरीयत का कानून प्रभावित होता है? लेकिन बुनियादी सवाल यह है कि क्या सी०आर०पी०सी० की दफा १२५ और १२७ से इस्लामी कानून की रूह और इस्लामी कानून का मकसद मुतास्सिर (प्रभावित) होता है।

पहली बात तो यह है कि सी०आर०पी०सी० का प्रावधान क्या है? वह यह है कि मुतल्लिका औरत को—ऐसी औरत, जिसको तलाक दे दिया गया है, लेकिन उसके पास सलाहियत (क्षमता) नहीं है—उसके साबिक शौहर (भूतपूर्व पति) से गुजारे का एक एलाउंस (भत्ता) दिलाया जाये, किस शौहर से? जिस शौहर में यह इस्तताअत है, जिसमें यह क्षमता है जिनके पास जराए है, साधन है, सी०आर०पी०सी० का यह प्रावधान बगैर किसी इम्तयाज के हर उस मर्द और औरत पर लागू नहीं हैं, जिनकी आपस में अलहदगी हो गयी हो, बल्कि यह प्रावधान सिर्फ उन औरतों के लिए है, जिनके पास अपनी गुजर बसर करने के लिए जराए और सलाहियत नहीं हैं, जिन्हें नादार कहा जा सकता है।

अब सवाल उठता है कि क्या मुतल्लिका औरत (जिसको कि तलाक दिया गया है) से साबिक शौहर पर कानून-ए-शरीअत कोई जिम्मेदारी आयद करता है? यह बुनियादी सवाल है, जिसको न्यायिक दृष्टिकोण से देखने की जरूरत है, जिस औरत के पास गुजर-बसर के जराए न हों और इसकी सलाहियत भी न हो। अगर उसको देश के किसी अन्य धर्म निरपेक्ष कानून के तहत गुजर-बसर देने के लिए शौहर को मजबूर किया जाये, तो क्या इससे इस्लामी कानून मुतास्सिर होगा? मैं समझता हूं कि इन दोनों बातों पर विचार करने की जरूरत है तलाक के मामले में कुरान से हिदायत की रोशनी हासिल की जाये? कुरान के इंडेक्स के अनुसार सूरा दो में आयतों की गिनती करते जाइए—२२८,२२९,२३०,२३१,२३६,२३७,२४१ और २२० भी हैं—तकरीबन तलाक के मुतल्लिक सूरा बकर में नौ आयतें हैं इसके बाद सूरा ६५ है, जिसमें एक से लेकर सात की आयतें हैं इसके बाद सूरा-ए-निसां में आयत-४ है, सूरा-ए-अहजाब में जिक्र है, सूरा-३० में ३३वीं आयत है।

तलाक, मेहर और औरत के गुजारे के मामले को अलग-अलग करके नहीं देखा जा सकता, इस बात को ध्यान में रखना ही होगा कि मुतल्लिका औरत के प्रति शौहर पर क्या फरायज (कर्त्तव्य) आयद होते हैं सर्वोच्च न्यायालय के फैसले में एक लाइन है, जिससे यह तासुर बना, जैसे औरत की हैसियत को इस्लाम में गिरा कर दिखाया गया है, लेकिन तथ्य यह है कि इस्लाम ने औरत को बराबरी का दर्जा दिया है, औरत पर होने वाले जुल्म और ज्यादती को खत्म किया है।

इस्लाम के उदय से पहले अरब में क्या स्थिति थी? बेटी होने पर उसको जमीन में दफना दिया जाता था, औरतों को कोई हकूक नहीं थे, लेकिन इस्लाम ने उसके खिलाफ जिहाद किया और समाज में औरत को इज्जत का मुकाम मिला, रसूल ने इस हद तक कहा कि हदीस शरीफ का मफहूम है कि जिस शख्स के यहां बेटी होगी और उसको वह सही ढंग से पालेगा, सही ढंग से परवरिश करेगा, उनको तालीम देगा, तरबियत देगा, उनकी फन (हस्तकला) सिखायेगा तो दोजख (नरक) और उस शख्स के बीच में मैं होऊंगा, यानि दोजख की आग एक तरह से उसके लिए हराम होगी मैं यह सब इसलिए कह रहा हूं कि अगर हमने बुनियादी तौर से यह बात मान ली कि इस्लाम औरतों के हुकूक को तस्लीम नहीं करता है, तो फिर हमें दूसरी बात भी माननी पड़ेगी कि फिर शरीअत की उन सब चीजों को खत्म कर दिया जाये, जो औरतों को हुकूक देने के बारे में हैं इसलिए बुनियादी बात यह है कि इस्लाम किस नजरिये से औरत को देखता है, औरत का दर्जा उसने कैसे उठाया है। जहां लड़कियों के होने पर शर्म महसूस करते थे, उसके बजाय लड़की पैदा होने पर फख्र का एहसास कराया, घर के अन्दर लड़की पैदा होगी, तो यह मसफिरत (मोक्ष) का बाइस (कारण) बनेगी देखना पड़ेगा कि एहतराम का यह दर्जा सिर्फ परवरिश तक है या शादी होने के बाद अजदवाजी जिन्दगी में भी है।

इस्लामी कानून के मुताबिक महर जरूरी है कुछ लोग इसकी गलत व्याख्या करते हैं और तर्क देते हैं कि अगर कस्टमरी या परसनल ला के तहत मुतल्लिका औरत को कोई रकम अदा की जा चुकी है, तो फिर उसे गुजारा मांगने का हक नहीं होता और उसे क्या रकम दी गयी है इसको अदालत में चलेंगे। का अनुमति नहीं दी जानी चाहिए। मुझे खुशी है कि सेन्टर ने 'वन टाइम ट्रांजक्शन' (एक मुश्त भुगतान) की बात यहां मान ली है, सुप्रीम कोर्ट में तो वे उस पर भी तैयार नहीं थे, मुझे इस पर कोई आपत्ति नहीं, अगर 'वन टाइम ट्रांजक्शन' ऐसा है कि वह औरत अपनी रूह और अपने जिस्म को एक यकजा रख सके और उसके सिर पर छत रहे, दो वक्त की रोटी उसको मिल सके, तो वह औरत अदालत में जाने के हक से खुद-ब-खुद महरूम हो जायेगी, क्योंकि सी०आर०पी०सी० के तहत गुजारा मांगने के लिये अदालत में वही औरत जा सकती है, जिसके पास अपने गुजारे के जराए न हों। (क्रमश)

—आर्यवनी

योग और व्यक्तित्व के रोग

लेखक—डा० हरगोपालसिंह, मनश्चिकित्सक
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

भारतीय संस्कृति और जीवन में योग की भूमिका सदैव प्रमुख रही है। वैदिक काल से प्रारम्भ होकर उपनिषदों, महाभारत तथा विभिन्न दार्शनिक परम्पराओं में योगकी स्पष्ट छाप है। वेदों के समय में जन-सामान्य भी यौगिक पद्धतियों से जीवन बिताते थे। उस समय समस्त जीवन योगमय था। किन्तु कालान्तर में धीरे धीरे योग ऋषि, मुनियों और योगियों के अभ्यास का विषय रह गया और जन-सामान्य की पहुँच के बाहर हो गया। पिछले ३० वर्षों में योग के वैज्ञानिक अध्ययन भारत में ही नहीं विश्व के अत्यधिक प्रगतिशील देशों जैसे अमरीका, इंग्लैंड, फ्रांस, जर्मनी आदि में आधुनिकतम यन्त्रों की सहायता से हुये हैं। इन अध्ययनों में करीब दस हजार वर्ष पुराना भारतीय योग आधुनिकतम विज्ञान की कसौटी पर खरा उतरा है। फलतः प्रगतिशील देशों के जीवन में योग का प्रयोग बढ़ रहा। क्योंकि योग का आधार कोई विशिष्ट धर्म न होकर सत्य सनातन विज्ञान है जो काल स्थान की सीमा से बंधा नहीं है। चाहे ईसाई, मुस्लिम, हिन्दू, पारसी, धर्मविश्वासी हों या रूस व चीन के कम्युनिस्ट हों योग की वैज्ञानिकता सबके लिए समान प्रभावकारी है। पिछले कुछ वर्षों में भारत का जन-सामान्य योग के प्रति इतना सजग हुआ है कि स्कूल कालेजों के पाठ्यक्रमों में योगाभ्यास को नियमित स्थान दिया गया है।

योग के बहुत से प्रकार हैं जिनके आधार तथा लक्ष्य भिन्न हैं, हठयोग का आधार सूक्ष्म शारीरिक क्रियायें हैं। ज्ञानयोग बुद्धि के आधार पर, मन्त्र, तन्त्र और लय योग मनोब्रह्माण्डीय आधार पर और राजयोग मनोभौतिकी आधार पर कार्य करते हैं। इसी प्रकार हठयोग का तात्कालिक लक्ष्य शारीरिक स्वास्थ्य और सिद्धियां प्राप्त करना, ज्ञान, भक्ति और कर्म योगों का भौतिक उपलब्धि और मोक्ष प्राप्त करना, और मन्त्र, तन्त्र, लय योगों का लक्ष्य सिद्धियां और मोक्ष प्राप्त करना है। किन्तु इन सबमें महर्षि पतंजलि का राजयोग सार्वभौम और सर्वोत्तम है जिसका आधार मनुष्य का समस्त व्यक्तित्व है तथा जिसमें सभी योगों के आवश्यक गुण विद्यमान हैं। राजयोग का ध्येय विभिन्न सांसारिक उपलब्धियों से लेकर मोक्ष प्राप्ति तक है। जिसके अन्तर्गत स्वास्थ्य प्राप्ति और समस्त व्यक्तित्व विकास करना प्रमुख है। आजकल योग का सामान्य अर्थ इसी योग से होता है।

आधुनिक मानव को स्वास्थ्य प्राप्ति के जो साधन उपलब्ध हैं उनमें एलोपैथी, आयुर्वेद, यूनानी, होम्योपैथी और योग प्रमुख हैं। मनुष्य व्यक्तित्व के बारे में योग की आधारभूत कल्पना इन सबसे भिन्न है। योग के अनुसार मनुष्य व्यक्तित्व के पांच कोश हैं यथा अन्नमय कोश, प्राणमय कोश, मनोमय कोश, विज्ञानमय कोश और आनन्दमय कोश। सबसे ऊपरी आवरण अन्नमय कोश है जो अन्न से बने स्थूल शरीर के रूप में है। इस पर सभी भौतिक तत्वों का प्रभाव पड़ता है। इस ऊपरी दृष्टिगत शरीर के अन्दर दूसरा आवरण प्राणमय कोश का है जो पांच प्रकार की वायु सहित समस्त शरीर में व्याप्त रहता है। इसके बाद तीसरा आवरण मनोमय कोश का है। यह मानसिक आवरण है जो इन्द्रियों और इच्छा शक्ति के द्वारा फैला है। चौथा आवरण विज्ञानमय कोश का है जो बुद्धि सहित अब तक प्राप्त समस्त ज्ञान विज्ञान से युक्त अहंकार होता है। सबसे आन्तरिक आवरण आनन्दमय कोश का है जिसके अन्दर चैतन्य आत्मा निवास करती है। इस तरह मनुष्य व्यक्तित्व इन पांच कोशों से बनी समग्रता है और इनके क्रियात्मक समग्र से व्यक्तित्व व्यवहार करता है। इन कोशों को व्यक्तित्व के पांच बड़े अंग या पक्ष भी कहा जा सकता है। केवल अन्नमय कोश शरीर स्थूल है और बाकी प्राणमय, मनोमय और विज्ञानमय कोश सूक्ष्म हैं जिन्हें सीधे नहीं देखा जा सकता। यह कोश एक दूसरे से स्वतन्त्र नहीं हैं बल्कि मिले हुये हैं अतः दूसरे पर प्रभाव भी डालते हैं।

योग के अलावा अन्य सभी चिकित्सा पद्धतियां मनुष्य व्यक्तित्व को स्थूल शरीर के रूप में ही मानती हैं अतः व्यक्तित्व का सूक्ष्म क्रियात्मक भाग इनसे उपेक्षित रह जाता है। इस प्रकार मानव व्यक्तित्व की व्याख्या में योग इन सबसे अधिक विस्तृत और सूक्ष्म गहराई तक गया है जब कि अन्य सभी चिकित्सा पद्धतियों की व्याख्या मुख्यतया शारीरिक कोश तक ही सीमित है क्योंकि वे काय-प्रधान चिकित्सायें हैं। यह स्पष्ट है कि व्यक्तित्व व्याख्या में योग अन्य सबसे अधिक पूर्ण है।

योगानुसार स्वस्थ व्यक्तित्व में समस्त कोश दोष रहित होते हैं और इनमें आपसी सामंजस्य होता है किन्तु अस्वस्थ अवस्था में जैसे एक मशीन के विभिन्न अंग दोष-युक्त हो जाते हैं और मशीन का कार्य बिगड़ जाता है वैसे ही व्यक्तित्व के इन विभिन्न कोशों में दोष पैदा हो जाते हैं और व्यक्ति रोग ग्रस्त हो जाता है। दोष अन्नमय, प्राणमय, मनोमय और विज्ञानमय कोशों में ही पैदा होते हैं और आनन्दमय कोश में नहीं होते। अतः अन्नमय कोश की खराबी से शारीरिक रोग, प्राणमय कोश की खराबी से वायु रोग, मनोमय कोश की खराबी से मानसिक रोग और विज्ञानमय कोश की खराबी से बुद्धि-भ्रंश और मतिभ्रम ऐसे रोग पैदा हो जाते हैं। यदि लम्बे समय तक कोई भी एक कोश रोग ग्रस्त रहता है तो उसका प्रभाव अन्य कोशों पर भी पड़ता है और उनमें भी रोग पैदा हो जाते हैं। उदाहरण के लिए बहुत लम्बे समय तक उदर रोग रहने से मन में चिन्ता आदि पैदा हो जाती है, वायु रोग हो जाते हैं इत्यादि। इसी प्रकार प्राणमय कोश में जब साइटिका आदि रोग बहुत लम्बे समय तक रहता है तो शरीर स्वस्थ रूप से अंग फिर नहीं सकता, मन और बुद्धि भी ठीक प्रकार कार्य नहीं कर पाते इत्यादि। कोई भी मनोरोग कालान्तर में समस्त व्यक्तित्व को प्रभावित करता है यह तो आधुनिक मनोविज्ञान भी मानता है। योग के अलावा अन्य समस्त चिकित्सा पद्धतियां इन विभिन्न कोशों के रोगों को केवल शारीरिक रोगों के अन्तर्गत ही मानते हैं इसीलिये वे काय प्रधान चिकित्सा पद्धतियां कहलाती हैं।

आर्य वीर दल हरियाणा का नौवां प्रान्तीय महासम्मेलन कैथल में सफलतापूर्वक सम्पन्न

पलवल। सार्वदेशिक आर्य वीर दल हरियाणा का नौवां प्रान्तीय महासम्मेलन कैथल में सफलतापूर्वक श्रद्धानन्द नगर कैथल में स्वामी ओमानन्द जी महाराज की अध्यक्षता में बड़े उत्साह एवं सफलतापूर्वक सम्पन्न हो गया।

सम्मेलन का प्रारम्भ शुक्रवार २० सितम्बर को सायं यज्ञ एवं सामूहिक सन्ध्या के साथ स्वामी जीवनानन्द जी सरस्वती एवं स्त्री आर्य समाज कैथल के सहयोग से हुआ।

सार्वदेशिक आर्य वीर दल के प्रधान संचालक श्री पं० बालदिवाकर हंस का रात्रि को बड़ा ही ओजस्वी भाषण हुआ तत्पश्चात श्री अमरसिंह जी की अध्यक्षता में एक कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया जिसका संचालन प्रो० उत्तमचन्द जी शरर ने किया। सम्मेलन में सर्वश्री सियाराम निर्भय (बिहार), डा० राधाप्रताप बन्नौरी, जफर साहिब, हरीशचन्द्र साज सोनीपती, श्रीमती श्यामा त्यागी, बेताब जलीपुरी, सत्यपाल बेदार, वर्क साहिब, शाहिद साहिब, ओंकार नीरव एवं व्याकुल जी ने आर्य वीरों को प्रेरणा देते हुए सरस कविता पाठ किया जिसे हजारों श्रोताओं ने मुक्तकंठ से सराहा। पलवल के युवा कवि गिरिराज शर्मा की कविता हरियाणा के शूरवीर पुरस्कृत हुई।

शनिवार प्रातः सैंकड़ों आर्य वीरों की सामूहिक शाखा लगाई गई जिसमें पूरे हरियाणा का प्रतिनिधित्व रहा। डा० देवव्रत जी आचार्य उपप्रधान संचालक ने शाखा का संचालन एवं प्रशिक्षण कार्य किया। पं० शिव कुमार जी शास्त्री ने प्रेरणादायक प्रवचन दिया।

आर्य वीरों द्वारा प्रदर्शित व्यायाम प्रदर्शन ने तो मानो समा बांध दिया। ब्रह्मचारियों द्वारा दो-दो कारों को रोकना, जंजीर तोड़ना, छरिया मोड़ना, मलखम्भ के व्यायाम, आसन आदि को उपस्थित विशाल जनसमूह ने तालियों की गड़गड़ाहट से थपकी दी।

इसी के साथ आर्य वीर दल हरियाणा ने श्री राधा रामसिंह जी मण्डल-प्रधान श्री सत्यपाल आर्य पलवल, श्री जगदीश मित्र आर्य रोहतक को उनके आजीवन दल की सेवा करते रहने के लिए वस्त्र, श्रीफल एवं नकद धन राशि देकर सम्मानित किया गया।

सायं ३ बजे हजारों आर्य वीरों एवं विभिन्न स्थानों से पधारे आर्य प्रतिनिधियों की विशाल शोभायात्रा ओ३म् ध्वजों एवं बैनरों के साथ बैण्ड बाजों से सुसज्जित होकर नगर के मुख्य मार्गों से निकली। इन्द्र भगवान ने वर्षा करके परीक्षा भी ली किन्तु जुलूस आगे बढ़ता ही रहा। जुलूस में स्कूटरों, घुड़सवारों के साथ जीप में स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती, पं० बाल दिवाकर हंस एवं (प्रधान संचालक सार्वदेशिक आर्य वीर दल) डा० देवव्रत व्यायामाचार्य (उपप्रधान संचालक सार्वदेशिक आर्य वीर दल), प्रो० उत्तमचन्द शरर (संचालक आर्य वीर दल हरियाणा) विराजमान थे। आर्य वीरांगनाएं एवं स्त्री समाज मधुर गीत गा रही थी। यज्ञ की झांकी मनमोहक थी। मार्ग में नगरवासियों ने पुष्प वर्षा की तथा जलपान करवाया। कैथल के इतिहास में इतनी विशाल रैली आज तक कभी नहीं निकली थी।

"राष्ट्रीय समस्याएं और आर्य समाज" सम्मेलन में पं० शिव कुमार जी शास्त्री भूतपूर्व संसदसदस्य ने जात-पात एवं छुआछात त्याग के बारे, डा० रामप्रकाश जी ने आर्य समाज को साहित्यिक रूप से समृद्ध बनाने, श्री जौहराम जी ने सिनेमा तथा दूरदर्शन के माध्यम से अश्लील प्रदर्शन पर रोक लगाने, तथा चौ० शिवराम वर्मा भूतपूर्व मन्त्री हरियाणा सरकार ने सुझाव दिया कि भारत "धर्मनिरपेक्ष" नहीं "मत निरपेक्ष" होना चाहिए।

"आर्य वीर दल और आर्य समाज" सम्मेलन में प्रो० राम विचार तथा प्रो० राम कुमार जी ने स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती की अध्यक्षता में आर्य वीर दल को आर्य समाज का भावी भविष्य तथा रीढ़ की हड्डी बताया। आर्य समाजों को आर्य वीर दल की स्थापना करने की प्रेरणा भी की गई।

—सम्पादक

दक्षिण अफ्रीका में अन्तर्राष्ट्रीय वेद सम्मेलन

दिल्ली १० अक्टूबर ८५

डर्बन (दक्षिण अफ्रीका) में अन्तर्राष्ट्रीय वैदिक कान्फ्रेंस और विश्व आर्य सम्मेलन में भाग लेने और वहां कार्यक्रमों को आयोजित करने के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से पंडित ब्रह्मदत्त स्नातक (६७ वर्ष) शीघ्र ही इस मास में भारत से रवाना हो रहे हैं। वे वहां दक्षिण अफ्रीका की आर्य प्रतिनिधि सभा के आमन्त्रण पर सार्वदेशिक सभा के तत्वावधान में इस कार्यक्रम को सम्पन्न कराने के लिए वहां जा रहे हैं।

श्री स्नातक वैदिक साहित्य के विद्वान एवं सुप्रसिद्ध पत्रकार हैं। भारतीय सूचना सेवा से रिटायर्ड होने के बाद वे इस सभा में सम्प्रति ऋग्वेद के अंग्रेजी अनुवाद के सम्पादन कार्य और प्रकाशन में लगे हुए। जिसके दो खण्ड तैयार हो चुके हैं। इससे पूर्व भी स्नातक मलेयेशिया, सिंगापुर, फीजी द्वीप समूह बैंकाक और टोकियो में भारतीय संस्कृति एवं वैदिक धर्म के प्रसार के प्रसार के लिए गये थे। वे तीन मास के लिए इस सम्मेलन में कार्य करेंगे। आर्य प्रतिनिधि सभा दक्षिण अफ्रीका की हीरक जयन्ती के विभिन्न कार्यक्रम इस वर्ष शिवरात्रि से देश के विभिन्न स्थानों में बराबर चल रहे हैं।

इसके अतिरिक्त वर्तमान कुली प्रथा के अन्तर्गत दक्षिण अफ्रीका में गये भारतवासियों को १२५ वर्ष पूरे हो रहे हैं। इसका भी समारोह वहां इस विशेष उत्साह से मनाया जा रहा है। डर्बन नगर की स्थापना के १५० साल पूरे होने पर प्रदर्शनीय तथा अनेक कार्यक्रम वहां पर इन दिनों आयोजित होंगे। अन्तर्राष्ट्रीय वैदिक सम्मेलन (१४-१७ दिसम्बर ८५) में देश विदेश के प्रतिनिधियों की भारी संख्या में पहुंचने के समाचार मिल रहे हैं। इस सम्बन्ध में डर्बनके कार्यकर्ताओं ने सभा को सूचित किया है कि सम्मेलन के कार्यक्रमों में किसी प्रकार का दंगा-फिसाद या अशान्ति होने की सम्भावना तनिक भी नहीं है।

इस सम्मेलन की अध्यक्षता प्रसिद्ध वैज्ञानिक स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती करेंगे। वे वहां शीघ्र ही पहुंच रहे हैं। सभा के मन्त्री श्री ओम्प्रकाश जी त्यागी बाद में वहां भाग लेने पहुंचेंगे।

— सम्पादक

आर्य प्रतिनिधि सभा आन्ध्र प्रदेश का निर्वाचन

हैदराबाद, ७ अक्तूबर १९८५

आर्य प्रतिनिधि सभा आन्ध्र प्रदेश के समाचार विज्ञप्ति द्वारा यह दर्शाया गया है कि इस सभा की साधारण सभा का आयोजन दिनांक ६-१०-८५ को ठीक २ बजे श्री रामचन्द्रराव जी कल्याणी प्रधान सभा की अध्यक्षता में किया गया था। जिसमें इस सभा के क्षेत्रान्तर्गत समाजों के प्रतिनिधि उपस्थित थे। इस सभा के आमन्त्रण पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री लाला रामगोपाल जी वानप्रस्थी विशिष्ठ पर्यवेक्षक के रूप में उपस्थित थे। सर्व प्रथम लाला जी का स्वागत किया गया और कार्यवाही प्रारम्भ हुई। मान्यनीय अध्यक्ष महोदय ने सभा द्वारा विगत तीन वर्ष से किये गये कार्यकलापों पर प्रकाश डाला तदनन्तर श्री रामचन्द्रराव जी कल्याणी भूतपूर्व प्रधान सभा को सर्वसम्मति से पुनः प्रधान पद के लिए निर्वाचन किये जाने की हर्ष ध्वनी के साथ घोषणा की गयी तथा अन्य पदाधिकारियों के चयन करने का अधिकार भी उन्हें दिया गया। इसी कार्यविधि में निम्नलिखित मनोनीत अधिकारियों की सूची सब के समक्ष प्रस्तुत की गयी। उस सूची का सभी ने सहर्ष समर्थन किया। अन्त में श्री लाला जी ने आये हुये प्रतिनिधियों को सामयिक एवं प्रेरणादायक सन्देश दिया तथा मन्त्री सभा द्वारा धन्यवाद ज्ञापन के अनन्तर शान्तिपाठ के साथ सभा का समापन हुआ।

आर्य प्रतिनिधि सभा आन्ध्रप्रदेश के नव निर्वाचित अधिकारी

प्रधान— श्री रामचन्द्रराव जी कल्याणी
उपप्रधान— श्री .।० गोविन्दराव जी गोजे बोधन
उपप्रधान— श्री पुरुषोत्तम रेड्डी जी मादन्नापेठ
उपप्रधान— श्री के० करुणाकर जी, सूर्यनगर
मन्त्री— श्री माणिकराव जी शास्त्री, बेगम बाजार
उपमन्त्री— [नागमलप्पा जी गोषामहल
उपमन्त्री— श्री लक्ष्मणसिंह जी प्र वपेठ]
उपमन्त्री— श्री के० ह्वो० रेड्डी जी, अड्वर्ला
कोषाध्यक्ष— श्री राजा बी० किशनलाल जी
पुस्तकाध्यक्ष— श्री पं० कुमारम शास्त्री

इनके अतिरिक्त २० अन्तरंग सदस्य भी मनोनीत किए गए।

आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० के पदाधिकारियों का निर्वाचन दिनांक २८-७-१९८५ को हुआ

प्रधान— श्री इन्द्रराज जी, मेरठ
उपप्रधान— श्री देवीदास आर्य, कानपुर
" " श्री प्रेमचन्द्र शर्मा, हाथरस
" " श्रीमती सन्तोष कपूर (एम०एल०सी०) मिर्जापुर
" " श्री सच्चिदानन्द शास्त्री, दिल्ली
" " श्री धर्मेन्द्रसिंह, मेरठ
मन्त्री— श्री मनमोहन तिवारी, लखनऊ
उपमन्त्री— श्री जयनारायण अरुण, बिजनौर
" " श्री देवपाल आर्य, मुजफ्फरनगर
" " श्री बांकेलाल कन्सल, नैनीताल।
डा० विनयप्रताप, गोरखपुर
" " श्री जितेन्द्र जलाली, अलीगढ़
कोषाध्यक्ष— श्री कृष्ण बलदेव महाना, लखनऊ
सहा०कोषाध्यक्ष—श्री वीरेन्द्र आर्य, अमरोहा
सहा०पुस्तकाध्यक्ष—श्री सुरेन्द्र स्नातक, आर्यसमाज बुलन्दा

बिटिया आज दुखिया

बिटिया आज दुखिया
दहेज इसका झोल
गोल बिस्तर करने पड़ते
बजते ही ढोल

ओढ़ते ही आंचल हो जाती व्याकुल।
पीहर की आजादी हवा होती बिल्कुल।।
आंसुओं की सरिता में बह जाते किलोल ।।१।।

जाती है पराये घर पराधीन सी।
सेवा खूब करती लता छिन्न सी।
झूलती है फिर भी निराशा के हिंडोल ।।२।।

सासरे में रहती बनी दीन सी।
हिमायती बिना यह रहती हीन सी।
'कम दहेज लाई' यह सहने पड़ते बोल ।।३।।

सास-ससुर पति जी और ननदी।
चाहते दहेज में भारी नकदी।
लालची समाज का यह कैसा माहौल ।।४।।

पैसे बिन बेटी की जवानी कुढ़ती।
कुढ़न में मां बाप की नींद उड़ती।
बीमार पड़ जाते, मरने का बनता डोल ।।५।।

कोई नहीं सुनता है करुण को पुकार।
अबला, गउओं पे नित चल रही कटार।
देश वासी सुनलो दुहाई कान खोल ।।६।।

—कन्हैया कल्याण बी०ए० प्रभाकर (तिजारा)

आर्य प्रतिनिधि सभा बिहार का चुनाव रोक कर अन्तरंग सभा भंग और तदर्थ समिति का गठन

सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री रामगोपाल जी शालवाले की घोषणा

दिनांक १३-१०-८५ को आर्य प्रतिनिधि सभा बिहार के वार्षिक निर्वाचन से पूर्व प्रदेश के दूरस्थ अंचलों से पधारे हुए प्रतिनिधियों में अनेक प्रकार के मतभेद तथा असन्तोष के कारण सर्वसम्मत निर्वाचन होना कठिन है।

आर्य पुरुषों का आपसी सद्भाव बना रहे, इसलिए मैं सार्वदेशिक सभा की नियमावली की धारा १० ग द्वारा प्रदत्त अधिकार का प्रयोग करके आर्य प्रतिनिधि सभा बिहार की अन्तरंग सभा को भंग करता हूं।

सभा का कार्य सुचारु रूप से चलाने हेतु नई तदर्थ समति का गठन करता हूं जो आजकी परिस्थिति को देखकर अनिवार्य था। इस तदर्थ समिति के प्रधान डा० अखिलेश शरण और मन्त्री श्री जमुना प्रसाद तथा कोषाध्यक्ष श्री रामचन्द्र जी होंगे। अन्य सदस्यों की घोषणा विचार विनिमय के पश्चात् की जायेगी।

यह तदर्थ समिति विवादित समाजों की निष्पक्ष जांच करके अपनी रिपोर्ट तैयार करेगी। उसी को आधार मानकर आगामी निर्वाचन करा दिया जायेगा।

तदर्थ समिति के सदस्य

डा० अखिलेश शरण (प्रधान), श्री जमुना प्रसाद (मन्त्री), श्री रामचन्द्र जी (कोषाध्यक्ष), डा० डी० राम जी, पं० वासुदेव शर्मा (उप प्रधान), श्री इन्द्रदेव नारायणसिंह सदस्य, श्री रामाज्ञा वैरागी, श्री विद्याभूषण प्रसाद आर्य, श्री ओमप्रकाश खगड़िया, श्री राजेन्द्र प्रसाद पटना, आचार्य रामानन्द शास्त्री, श्री जगन्नाथ प्रसाद छपरा, पं० उमाकान्त जी, श्री प्रेमनाथ ग्रोवर, डा० अवधेश जी, प्रो० राजेन्द्र प्रसाद दानापुर, श्री सर्वेन्द्र शास्त्री, श्री केदारनाथ ब्रह्मचारी, श्रीमती डा० सम्पत्ति आर्या डी० लिट्, श्री प्रेमानन्द जी गोधरी जमालपुर, श्री वैद्यनाथ प्रसाद आर्य (पटना सिटी), श्री रामप्रसाद (गढ़वा), श्री भूपनारायण जी (हजारी बाग), श्री राजेन्द्र जी बेतिया, श्री रमेन्द्रकुमार गुप्ता (दानापुर), श्री गोरीशंकर प्रसाद, श्री जगदम्बा प्रसाद, श्री गंगा प्रसाद खाजपुर, श्री श्यामनन्दन शास्त्री, श्री कुलदीप राय कपूर।

—मन्त्री, तदर्थ समिति

एक निष्ठावान् आर्य उठ गया!

श्री पं० देवव्रत जी धर्मेन्दु के निधन का समाचार सुन कर हृदय पर वज्रपात हुआ और मुंह से फूट निकल गया 'एक निष्ठावान आर्य उठ गया।' 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' का नाद बजाने वाले आर्य समाज में निष्ठावान आर्यों की आज कमी हो रही है, पुरानी पीढ़ी समाप्त सी हो रही है और नई पैदा नहीं हो रही।

उन्हें जवानी और बुढ़ापा आर्य समाज की सेवा में लगाते हुए मैंने देखा और काम करने की प्रेरणा भी ली। 'आर्य युवक परिषद' में निष्ठावान युवकों को संगठित कर 'सत्यार्थ प्रकाश' की परीक्षाओं द्वारा जिस सफलता से श्री धर्मेन्दु जी ने महर्षि के अमर ग्रन्थ का प्रचार किया, बड़ी-बड़ी सभाएं एवं संस्थाएं भी न कर सकीं। वे बड़ी विह्वलता से कहते थे। 'आर्य समाज में निष्ठावान लोग नहीं आ रहे, यह मेरी आत्मा पर बोझ है।

उनके इस अन्तिम वाक्य का क्रियात्मक रूप यदि हम कर सके, तो यह उन्हें सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

प्रिंसिपल ओम्प्रकाश,
नई दिल्ली

दयानन्द मठ चम्बा का वार्षिकोत्सव

आर्य वीरांगना, आर्य वीर दल, प्रशिक्षण शिविर सहित सम्पन्न

दयानन्द चम्बा का वार्षिकोत्सव यजुर्वेद परायण महायज्ञ एवं आर्य-वीरांगनाओं एवं आर्य वीरों के प्रशिक्षण शिविरों के साथ अत्यन्त उत्साह और उमंग भरे वातावरण में सानन्द सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर पूज्यपाद स्वामी सर्वानन्द जी सरस्वती, आदरणीय ओमानन्द जी सरस्वती एवं अन्यान्य साधु सन्त के साथों साथ सार्वदेशिक आर्य वीर दल के प्रधान संचालक श्री पं० बाल दिवाकर जी हंस, प्रसिद्ध भजनोपदेशक कुंवर जोरावरसिंह, बहन प्रभावती देवी आर्या एवं सत्यपालजी पथिक आदि अनेक काव्य गायकों से सभा मण्डप सदैव सुशोभित रहता था।

शिविर समापन समारोह की अध्यक्षता आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान माननीय श्री वीरेन्द्र जी सम्पादक वीर प्रताप ने की तथा हिमाचल सरकार के शिक्षा मन्त्री श्री सागरलाल जी महोदय ने मुख्य अतिथि का उत्तरदायित्व सम्भालते हुए महर्षि दयानन्द के प्रति हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित की और दयानन्द मठ चम्बा की सेवा-भावना और कार्यों की मुक्त कण्ठ से प्रशंसा करते हुए हिमाचल सरकार का सर्व प्रकारेण सहयोग उपलब्ध कराने का वचन दिया। आर्य वीरों एवं आर्य वीरांगनाओं के व्यायाम प्रदर्शन से चम्बा की जनता बड़ी प्रभावित हुई और इससे दयानन्द मठ का नया कीर्तिमान स्थापित हुआ। इस अवसर पर स्वामी सर्वानन्द जी सरस्वती ने दस सहस्र रुपया और स्वामी ओमानन्द जी ने पांच सहस्र रुपये की पुस्तकें तथा श्री कृष्णलाल आर्य सुन्दर नगर ने पांच सहस्र रुपये एवं श्री पं० बालदिवाकर जी हंस ने अपने सर्वस्व दानी पूज्य पिता पं० अमरनाथ शास्त्री की स्मृति में ११००) रुपये दान देने की घोषणा की, इसके अतिरिक्त भी फुटकर दान यज्ञशाला निर्माणार्थ दयानन्द मठ को प्राप्त हुआ। इस अवसर पर मठ की ओर से ऋषि लंगर (निःशुल्क भोजन) का भी आयोजन रहा जिसका जन-सामान्य ने स्वागत किया पंजाब प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री वीरेन्द्र जी ने स्वामी सुमेधानन्द के कार्यों का विशद गुणगान करते हुए आश्वासन दिया कि पंजाब सभा स्वामी जी की सभी योजनाओं को मूर्तरूप देने में सदैव आर्थिक और मानसिक सर्व प्रकारेण सहयोग करेगी। इसका जनसमूह ने करतल ध्वनि से स्वागत किया।

—आचार्य महावीर
दयानन्द मठ चम्बा

आर्य समाज कासगंज शताब्दी समारोह सम्पन्न

दिनांक ५, ६, ७, ८ मे आर्य समाज कासगंज का शताब्दी समारोह मनाया गया वर्षा के रहते हुए भी हजारों लोगों ने भाग लिया। ६-१० ८५ की रात्रि को राष्ट्र रक्षा सम्मेलन हुआ, जिसकी अध्यक्षता सभा मन्त्री श्री ओम्प्रकाश त्यागी जी ने की त्यागी जी ने अपने भाषण में देश में चल रहे ईसाईकरण व इस्लामीकरण पर प्रकाश डाला। जनता को बतलाया कि वैदिक धर्म संसार में श्रेष्ठ है। परन्तु आर्य (हिन्दू) बीच में गरीबी जन्मजात संस्थाओं एवं छूआ छूत और शादियों दहेज की कुप्रथाओं से विदेशी लाभ उठाकर भारत में ईसाई राज्य बनना चाहते हैं। ऐसी स्थिति में हिन्दुओं को समुद्र में डूबना पड़ेगा और रास्ता नहीं है। ऐसी स्थिति में हम अपनी कमजोरियों को दूर कर शुद्धि के लिये नारा लगावें तभी कोई आगे बात बन सकती है।

—सम्पादक

आर्य परिवार द्वारा समाज सेवी पुरुष्कृत

आर्य परिवार की मासिक बैठक दिनांक २९-९-८५ को श्री इन्द्रमोहन मेहता जी की अध्यक्षा में आगरा में सम्पन्न हुई जिसमें आगरा के चार समाज सेवी कार्यकर्त्ता १. श्री राम वानप्रस्थी २. श्री ओम्प्रकाश आर्य ३. श्री ईश्वरदास वैद्य ४ श्री हरेन्द्रराम एडवोकेट आदि को उनकी समाज सेवाओं के लिए पुरुष्कृत किया।

—दयानन्द आर्य मन्त्री

R. N. 626/57 Licensed to post withoutprepayment, License No. 93 Post in D.P.S.O. on 17-10-85

शुद्धि समाचार

कलकत्ता, २ अक्टूबर। आर्य समाज बड़ा बाजार द्वारा आज सार्य एक समारोह में शेख शमीमुद्दीन, पुत्र शेख लतीफुद्दीन साकाजीपो चार (पूर्व) पो० व थाना चन्दन नगर, जि० हुगली (बंगाल) के आवेदन पर उनकी शुद्धि की पं० ईश्वरदत्त वैद्य के पौरोहित्य में की गयी जिसमें समाज के मन्त्री श्री खुशहालचन्द आर्य तथा समाज के विशिष्ट सहयोगियों सहित आम जनता के लोग भी उपस्थित हुए। शुद्धि के उपरान्त उनका नया नाम अमरजीत स्वीकृत हुआ।

समारोह में उपस्थित सभी ने पुष्प वर्षा कर श्री अमरजीत को समाज में अंगीकार किया तथा समाज के प्रधान श्री चाँदरतन दम्माणी ने आशीर्वाद देते हुए जीवन में उनकी सफलता की कामना की।

—खुशहालचन्द आर्य, मन्त्री

१८ नट परिवारों का पुनः वैदिक धर्म में प्रवेश

आर्यसमाज मुगलसराय के मन्त्री श्री आशीष कुमार गोस्वामी ने सूचित किया है कि स्थानीय समाज की ओर से १ ९-८५ को एक विशेष यज्ञ का आयोजन कर इसमें प्रीतिभोज का प्रबन्ध किया और गांवों में रहने वाले नट-बन्धुओं को विशेष निमन्त्रण दिया गया। फलस्वरूप ५०० नटों ने इस समारोह में भाग लिया, उस दृश्य तथा वातावरण को देखकर १८ मुस्लिम हुए नटों ने पुनः वैदिक धर्म में आने का प्रस्ताव किया जिसे तत्काल अपने साथ ले लिया, भारत माता की जय, आर्यसमाज अमर रहे, महर्षि दयानन्द की जय के नारों से मानों सारा मुगलसराय जय जयकार कर रहा हो।

नगर आ

से श्रीमती फ...

धर्म में प्रवेश किया। शुद्धि-संस्कार के उपरान्त उसका नाम किरन देवी रखा गया और तत्काल समाज में ही आर्य युवक दशराज सिंह आर्य से विवाह संस्कार सम्पन्न हुआ। उपस्थित आर्य नर-नारियों ने आशीर्वाद के साथ वर-वधू को वस्त्र भी प्रदान किए।

जैन सोशल वैलफेयर एसोशियेशन ग्रीन पार्क दिल्ली द्वारा आयोजित स्वास्थ्य कैम्प सम्पन्न

जिसमें बीस डाक्टरों ने अपनी सेवायें प्रदान की दिनांक ९-१०-८५ को कैम्प का आयोजन किया गया जिसकी अध्यक्षता श्री ओम्प्रकाश त्यागी जी ने की जिसका उद्घाटन श्री के० पी० जोहर जी ने किया श्री जोहर साहब ने अपने भाषण में स्वास्थ्य कैम्प लगाने के लिए बल दिया श्री ओम्प्रकाश जी त्यागी ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कैम्प को लगाने वाले लोगों को धन्यवाद दिया अपने स्वार्थ से ऊंचे उठकर जो डाक्टर जनता की भलाई में लगे हैं वे भी धन्यवाद के पात्र हैं। लोगों को चाहिए इन डाक्टरों के अलावा आयुर्वेदाचार्य एवं होम्योपैथिक के डाक्टरों की सहायता लेनी चाहिए।

—सम्पादक

सार्वदेशिक प्रेस, दरियागंज नई दिल्ली में मुद्रित तथा ओम्प्रकाश पुरुषार्थी मुद्रक और प्रकाशक के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन, नई दिल्ली-२ से प्रकाशित।

सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली का मुख पत्र

हैदराबाद आर्य सत्याग्रह के सत्याग्रही स्वतन्त्रता सेनानी घोषित

सार्वदेशिक सभा की वर्षों पर्यन्त से की जा रही मांग स्वीकार

सम्पूर्ण आर्य जगत् में प्रसन्नता की लहर

भारत सरकार को धन्यवाद !

दिल्ली १८ अक्तूबर।

सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले ने एक वक्तव्य में बताया कि भारत सरकार के गृहमन्त्रालय ने बड़ी सदभावना पूर्वक १९३८ ३९ में हैदराबाद निजाम के विरुद्ध जो आर्य सत्याग्रह सार्वदेशिक सभा के अन्तर्गत चलाया गया था उन सत्याग्रहियो को स्वतन्त्रता सेनानी मान लिया है। भारत सरकार के इस निणय से सम्पूण आर्य जगत मे प्रसन्नता की लहर दौड गई है।

श्री शालवाले ने बताया कि सार्वदेशिक सभा हैदराबाद सत्याग्रह के सत्याग्रहियों को स्वतन्त्रता सेनानी घोषित करने और उन्हे तत्सम्बन्धी पेंशन सुविधा देने के लिए विगत कई वर्षों से सरकार से माग करती आ रही थी। पिछले दो वर्ष से यह विषय केन्द्रीय मन्त्रिमण्डल के निणय के लिए पड़ा हुआ था।

इस चिर प्रतिक्षित निर्णय का जोरदार स्वागत करते हुए सार्वदेशिक सभा की ओर से भारत सरकार का धन्यवाद प्रकट किया गया है।

इस निर्णय के अनुसार अगस्त १९८० से इसे पेंशन योजना मे सम्मिलित किया गया है और जून, १९८५ से सत्याग्रहियों अथवा उनकी विधवाओं को ५००) मासिक देनें की घोषणा की गई है।

भारत सरकार के आदेश पत्र की प्रतिलिपि अगले अंक में मूलरूप मे प्रकाशित की जायेगी।

ओम्प्रकाश त्यागी
सभा मन्त्री

सम्पादक — ओम्प्रकाश पुरुषार्थी

[illegible] वर्ष २०] [अंक ४२ [illegible] २७ अक्तूबर १९८५ रविवार
[illegible] वार्षिक मूल्य [illegible]) एक प्रति [illegible] पैसे

आरिफ मोहम्मद खान का विवादपूर्ण भाषण

(गतांक से आगे)

अगर किसी औरत को महर की बड़ी रकम मिल चुकी है, मान लीजिये कि उसे पांच लाख रुपया महर का मिला हो और पांच लाख रुपये से काफी आमदनी आजाना होती है, तो वह औरत नादार कहां से हो गयी ? तो सी॰आर॰पी॰सी॰ के तहत ऐसी औरत को गुजारा मांगने का हक होगा ही नहीं, क्योंकि यह प्रावधान तो सिर्फ उन औरतों के लिए है, जिनके पास कोई जरिया नहीं है और कोई जराए न होने में यह भी शामिल किया जा सकता है कि उसके मां-बाप न हो, उसके शायद कोई भाई भी न हो और अगर हो, तो उसका गुजारा चलाने के लिए तैयार न हो। महर क्या है? दरअसल, महर का ताल्लुक तलाक से है ही नहीं यह गलत बात है कि व्यवहार में उसकी दो किस्से बन गयी कि यह 'प्राम्प्ट डावर' है, यह 'डेफर्ड डावर' है महर का ताल्लुक सिर्फ शादी से है, इस्लामी रूह के मुताबिक तसव्वुर यह है कि महर वह रकम या सम्पत्ति है, जिसे विवाह के प्रतिफल के रूप में पति से प्राप्त करने की पत्नी अधिकारी है, तलाक से इसका कोई ताल्लुक नहीं है।

इस तरह महर तय तो हो गया, पर यह पक्का (कंफर्म) कब होता है, इसके बारे में कहा गया है कि महर विवाह की ससिद्धि (सहवास) के बाद खिलवत सहाहा (यूष अलगाव) के द्वारा पक्का होता है, तीसरी स्थिति में पति या पुत्रों की मृत्यु होने पर वह महर की अधिकारी होती है।

ये तीन शर्ते हैं, जिसमें महर वाजिब तौर से पक्का हो जाता है कि इस मेहर का भुगतान होना ही है इन साइक्लोपीडिया आफ इस्लाम में कहा गया है कि महर केवल पत्नी की सम्पत्ति है इसके पीछे तसव्वर, यह है कि वह अपना घर छोड कर दूसरे घर में आती है इसलिए उसके पास इतनी जगह होनी चाहिए, उसके अख्तियार में इतना पैसा होना चाहिए, जिससे वह अपने पति व सास-सुसर पर वगैर निर्भर रहे अपनी जरूरत पूरी कर सके यह इस्लामी तसव्वुर है।

अगर निकाहनामा में महर की रकम का जिक्र नहीं भी किया गया है, तो भी वह औरत शोहर की सामाजिक व आर्थिक हैसियत के हिसाब से महर की रकम की हकदार होगी।

इस तरह महर वधू को दिया जाने वाला उपहार है और तलाक से उसका कोई ताल्लुक नहीं है महर का ताल्लुक सिर्फ शादी से है, यदि उसको तलाक के साथ मिलायेंगे तो फिर हम इन्साफ नहीं करेंगे।

इस तरह कुरान शरीफ यह स्पष्ट करता है कि इस्लामी कानून में महर का मतलब और तसव्वुर क्या है, उसके बाद उसमें तलाक का क्या प्रावधान है, यह देखें कुरान की आयत २२८ में अब्दुल्ला युसूफ अली के तरजुमे (अनुवाद) के अनुसार मुतल्लिका औरतें तीन मासिक धर्मों की अवधि तक इन्तजार करेगी, अगर अल्लाह में उसका यकीन है, तो यह विधिसंगत नहीं होगा कि अल्लाह ने उनकी कोख में जो सृष्टि की है उसे वे न छिपाये इस अवधि के आखिरी दिन उनके पतियों को उन्हें वापस पाने का हक होगा, अगर वे फिर मेल-मिलाप से रहने का इच्छुक है।

सूरा-ए-तलाक की पहली आयत में कहा गया है, जब तुम औरत को तलाक देते हो, तो उन्हें उनकी इद्दत के शुरू से तलाक दो और इस अवधि का ठीक-ठाक हिसाब रखो और अल्लाह से डरो और उन्हें अपने घर से न निकालो, न ही वे खुद घर छोड़कर जायेगी, हो सकता है कि अल्लाह तुम्हारे बीच मिलाप की कोई राह निकाल दें।

यानि कहा यह जा रहा है कि जब तुम्हें तलाक देनी हो, तो तलाक देने के लिए तोहर की जो अवधि है, उससे शुरुआत होती है इस अवधि में मर्द और औरत एक-दूसरे से न दूर हों, बल्कि उन्हें नजदीक आने की सबील हो। इस अवधि के बाद अगर व इस नतीजे पर पहुंच गये हों कि साथ रह ही नहीं सकते और अल्लाह ने जो हद कायम की है, उनको कायम नहीं रख सकते, तो इस तरह से तलाक हो—तीन महीने के बीच कुल तीन बार···मगर तीसरे महीने में आखिरी यानि तीसरी बार जब तलाक दिया जायेगा, तब तलाक प्रभावी होगा। आज जो तरीका आमतौर से तलाक देने का है और जो तरीका उन साहब ने इस्तेमाल किया, जिनकी बीबी सर्वोच्च न्यायालय में फैसला लेने के लिए गयी, उस तरीके का कुरान में कोई तसव्वुर ही नहीं है।

पाकिस्तान में पहला जा कमीशन बना तो उसके सामने सवाल आया कि तलाक देने का यह आज का तरीका सही है या नहीं? आजकल जो तरीका प्रचलित है कि एक ही बार तलाक-तलाक-तलाक कह दो, इसके बारे में कहा गया है कि जब शोहर अपनी बीबी को एक ही नशिस्त में तीन बार तलाक दे 'उमर इब्ने खताब' की खिलाफत के पहले उसे एक तलाक शुमार किया जाता था तलाक तीन बार देने के बाद प्रभावी होता है उस वक्त यह तरीका प्रचलित था और बाद में इस पर इज्मा हो गया। बावजूद इसके उमर इब्ने खताब ने इस तलाक को तलाके बाइन करार दिया, गोया मर्द के लफ्ज के मुताबिक तीन तलाकें हैं।

कुरान और सुन्नत से अलग भी कितने ही ऐसे शरीय (कानून) हैं, जिनकी सीधी बुनियाद कुरान और सुन्नत नहीं है, जैसे तलाक देने का यही तरीका कि एक नशिस्त में तीन बार तलाक कह दिया जाये, तो वह तलाक प्रभावी हो गया, इसका तसव्वुर कुरान नहीं करता, पैगम्बर के जमाने में और अबू बकर सिद्दीक के जमाने में यह तरीका व्यवहार में नहीं था पर यह सितम जरीफी है किस्मत की कि उमर इब्ने खत्ताब ने इसको इजाजत दे दी। इसकी भी खास वजह थी। उस जमाने में लोगों को मालूम था कि तीन बार तलाक कहने पर भी उसे एक ही गिना जाता है, इसलिए लोग यह कहने लगे कि एक नशिस्त से तीन बार तलाक कह दिया, इससे बीबी को डरा दिया और उसके हकूक अपने नाम मुतकिल करा लिये, चूंकि यह मालूम था कि इस तलाक को एक ही शुमार किया जाना है, लिहाजा तीन महीने के अन्दर बीबी से दोबारा ताल्लुक कायम कर लिये।

हजरत उमर इब्ने खत्ताब ने औरत के हकूक की हिफाजत के लिए तलाक के इस तरीके की इजाजत दी थी, उन्होंने तलाक देने वालों को कोड़े भी लगवाये, यह डर पैदा करने के लिए कि तलाक को धमकी के तौर पर इस्तेमाल न किया जाये, लेकिन यह नई व्यवस्था जो औरत के हकूक बचाने के लिए लाई गई थी, किस्मत की सितम जरीफी कि मर्द ने उसको अपने हक के लिये इस्तेमाल करना शुरु कर दिया यकीनन यह ऐसा तरीका है, जिसका प्रावधान कुरान में नहीं है, लेकिन कभी मैंने इस्लाम और शरीयत के किसी महाफिज को यह कहते नहीं सुना कि इस तरीके का जिक्र कुरान में नहीं है, इसलिये इसका इस्तेमाल बन्द हो जाना चाहिए। (क्रमशः)

— अश्विनी

दकीय

विस्तारवादी रावण पर राष्ट्रवादी राम की विजय

भारतीय राजनीति में रावण की विस्तारवादी नीति को देखकर वशिष्ठ आदि ऋषि मन्त्रियों ने विचार किया कि रावण की विस्तारवादी शक्ति को कैसे रोका जाय। महाराज दशरथ इन्द्रियों के दास बन चुके हैं और आराम का जीवन व्यतीत कर रहे हैं। इससे राष्ट्र रसातल को जा रहा था मन्त्रियों के परामर्शानुसार यह निश्चय किया गया। कि राम और लक्ष्मण को आगे लाकर अन्याय को अवरुद्ध कर न्याय पथ का संचालन किया जाय राम आदि भाइयों को वेद-वेदांग का विद्वान् बनाने के साथ-साथ उन्हें क्षात्र धर्म की शिक्षा व दीक्षा भी दी गई थी।

धर्म की अधर्म पर विजय हेतु ही विश्वामित्र ने दशरथ महाराज से यज्ञ रक्षा का बहाना लेकर ताड़का का वध कराया गया महाराज विश्वामित्र स्वयं रक्षा करने में समर्थ थे। पर राज्य शक्ति का शासन से सम्बन्ध था यह दुबल न हो जाय। इससे राजपुत्रों द्वारा ही यज्ञ रक्षा का कार्य लिया। महाराज दशरथ ने बड़ी अनुनय विनय की, कि महाराज मेरे पुत्र बड़े सुकुमार है सेनापतियों के साथ बड़ी समर्थ सेना भेज दूं, मैं स्वयं अन्याय के दमन हेतु सेना लेकर प्रस्थान करूं। पर सभी मन्त्री राज्य को दुर्बल नीति से परेशान थे।

महारानियों में भी कैकेयी को छोड़कर दोनों रानियां भी माया मोह से ग्रसित थी। इसी से राज्य को शिथिलता से निकालने और शक्ति सम्पन्न बनाने के लिये वशिष्ठ आदि ऋषियों ने कैकेयी को दो बातें समझायीं। आज राष्ट्र हित में यह कार्य करना है। कैकेयी ने पुराने दो वचन स्मरण किये। लेकिन उनका प्रयोग कब किया जाय। मन्त्रियों की मन्त्रणा ने समय को आंका और महारानी कैकेयी से समयानुकूल बात कहलायी। बात तब की गई, जब महाराज दशरथ ने राम को राज्याभिषेक का निर्णय लिया। यही अवसर था कैकेयी की शक्ति परीक्षा का विवेक के वैभव का यही समय था राष्ट्र के बचाने की परीक्षा का। महारानी कैकेयी के मध्य दूती का काम डाला गया। मन्थरा के हाथों में। कुटिल नीति ने काम किया और कैकेयी का कोप रंग लाया। महाराज ने कैकेयी से कोप का कारण पूछा कैकेयी ने कहा दिल करके प्रिय राम के प्रति जो कैकेयी को पुत्र से भी अधिक प्रिय थे। राष्ट्र के हितार्थ महाराज से कहा—बोलो मैं कुछ मांगती हूं—दोगे? दशरथ को क्या मालूम था कि वज्राघात होने वाला है। सहमकर पूछा—बोलो क्या मांगती हो—महारानी ने धैर्य बांधकर साहस से कहा कि दो वचन मांगती हूं—एक से राम को वनवास दूसरे से भरत को राजगद्दी आश्चर्य जनक प्रश्न सुनकर सहमकर दोनों वचन स्वीकार तो किये। पर दशरथ मूर्छित होकर गिर पड़े। राम ने माता के वचन सुने उन पर पिता का आदेश शिरोधार्य कर प्रस्थान किया—वनवास की ओर?

राजा मूर्छित, राज्याधिकारी ने वन गमन कर दिया। शासन का क्या बनेगा। इतने विशाल अवध को शासन में महाराज को बचाने के लिये मन्त्रियों ने दशरथ का मरना ही श्रेयस्कर माना और किसी भी चिकित्सक तक को नहीं बुलाया। राम के साथ लक्ष्मण जी सेवार्थ चले गये और भगवती सीता भी।

राजगद्दी वाले आसा भरत-मामा के घर कश्मीर में वास? वशिष्ठादि मन्त्रियों ने सुमन्त्र को भेजा भरत के लाने हेतु। पर एक शर्त रखी कि कश्मीर में इस बात की चर्चा तक न की जाय, कि महाराज दशरथ राम वन गमन की बात पर स्वर्गवासी हो गये हैं। कश्मीर में ही क्यों अयोध्या आगमन तक भरत को भी इस मृत्यु के समाचार की कान में भनक भी न पड़ने पाये। सुमन्त्र ने भरत को लाने में योजनानुसार पालन किया। भरत के अयोध्या आने पर नगरी सूनी सो दीखी और पूछा पर-सुमन्त्र मौन ही रहे। भरत के घर आने पर माता कैकेयी ने सारी कथा कह सुनाई। भरत मां पर बहुत बिगड़े, पर मां का धैर्य अपार था वह विचलित नहीं हुई। भरत राम से मिलने चले यहां एक आश्चर्य था।

मृत्यु होने पर भारत सरकार क्रिया-कर्म करने के लिये पैरोल पर कैदी को भी कुछ समय के लिये छोड़ देती है। पर मन्त्रियों की मन्त्रणा में कैसा व्यामोह? राम को पैरोल पर भी अनुमति नहीं दी गई। भरत राम से मिले, कैसा विलक्षण मनोहारी दृश्य? शासन का फुटबाल की तरह हाल! भरत-राम को राजगद्दी देने के लिये कटिबद्ध इधर राम पिता की आज्ञा पालन पर दृढ़ प्रतिज्ञ।

अन्त में निश्चय हुआ खड़ाऊ शासन करेगी राम की और भरत निमित्त मात्र शासन करेंगे और राम के वापस होने पर राम ही राजा होंगे यही हुआ भी?

भगवान राम वनवास की यात्रा में आगे बढ़े तो राम को ऋषियों ने वह स्थल दिखाये, जहां ऋषियों को राक्षसों द्वारा मारकर उनकी हड्डियों के ढेर के ढेर लगे थे यह अत्याचार करने का संकेत था जिससे राम को विश्वास हो जाय, कि वास्तव में आतंक अपने चरम सीमा पर है। पद यात्रा करते हुए राम चाहते तो अयोध्या से बड़ी सेना मंगा सकते थे पर इससे रावणादि को चौंकाने व सावधान करने का अवसर मिल सकता था। इस प्रकार विस्तारवादी नीति का कांटा काटने का यही उपाय था कि बढ़ते हुए उग्रवाद को धैर्य व शान्ति के साथ दफनाया जाय। इसी नीति का अनुसरण ऋषियों द्वारा भगवान राम से कराया गया।

सामाजिक चर्चा—

देवभाषा संस्कृत विश्व की अमूल्य निधि

प्रयाग। देवभाषा संस्कृत भारत की ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण विश्व की अमूल्य निधि है। इसकी अक्षय सम्पदा समस्त वसुधातल के मानवों का परित्राण करने वाली है। यह ज्ञान-विज्ञान, अध्यात्म के साधन के साथ-साथ स्वयं भी साध्य है और यह भारत को एक राज्य से दूसरे राज्य को जोड़ने वाली है। देवभाषा संस्कृत आज भी पिंघल पिंघल कर अपना शब्द भण्डार सभी प्रान्तीय भाषाओं को प्रदान करती है और यह यदि अपने शब्दों को उन भाषाओं से वापस ले ले तो उनके पास ५ प्रतिशत भी शब्द शेष नहीं रह जाएगा।

उपर्युक्त उद्गार डा० राजेन्द्र मिश्र ने जिज्ञासु सरलतम संस्कृत प्रचार समिति, उत्तर प्रदेश द्वारा आर्य समाज मन्दिर चौक, प्रयाग में आयोजित संस्कृत-दिवस समारोह का उद्घाटन करते हुए व्यक्त किया। आपने कहा कि दुर्भाग्य की बात है कि आज संस्कृत पर राजनैतिक दृष्टि से विचार किया जाता है और इसे मातृभाषा की संज्ञा देने में अपनी विद्वत्ता समझा जाता है, जबकि ऐसे विचार करने वाले लोग संस्कृत से सर्वथा शून्य तथा अनभिज्ञ हैं। अनेक विदेशी विद्वान मैक्समूलर, ह्विटनी, मोनियर विलियम आदि ने अपना सारा जीवन संस्कृत भाषा के प्रचार प्रसार में ही समर्पित कर कर दिया था।

इलाहबाद उच्च न्यायालय के माननीय न्यायमूर्ति श्री बनवारी लाल यादव ने कहा कि अतीत काल में संस्कृत भाषा का विराट् साम्राज्य रहा है और राजभाषा के रूप में समस्त निर्णय संस्कृत में दिये जाते थे। आपने कहा कि १७६४ ई० में इस भाषा में अन्तिम निर्णय दिया गया था और पराधीनता के पश्चात् संस्कृत भाषा का विकास तथा हमारी न्याय व्यवस्था दब गई थी। आपने कहा कि मैंने इलाहाबाद उच्च न्यायालय से जो संस्कृत में निर्णय दिया है उससे मुझे अनेक स्थानों से बधाई के पत्र मिले हैं। संस्कृत भाषा को व्यवहारिक बनाने की दिशा में मेरा यह प्रयोग है और भविष्य में अनेक निर्णय संस्कृत भाषा में दूंगा। उन्होंने संस्कृत को व्यवहारिक बनाने की दिशा में अनेक सुझाव दिये।

राज्य शिक्षा संस्थान के श्री राजेन्द्र प्रसाद शर्मा ने कहा कि भारतीयता के गौरव का समस्त वाङ्मय संस्कृत भाषा में ही है। पवित्रतम, अपौरुषेय वेदवाणी का आधार भी संस्कृत भाषा ही है। संस्कृत भाषा की अनभिज्ञता से हम प्राचीन भारत की अमूल्य थाती वेद-वेदांगों के मूल्यांकन से परांगमुख हो गये हैं जो हमारी अधोगति का मूल कारण है। संस्कृत भाषा के प्रचार प्रसार द्वारा ही हम अपने पूर्वजों के ऋणों से मुक्त हो सकते हैं। आपने कहा कि आज हम चारित्रिक दृष्टि से पतनोन्मुख हैं और भारत के प्राचीन मनीषियों की शरण में जाकर ही आध्यात्मिक, परोपकारी चरित्र और जीवन के शाश्वत मूल्यों की हम फिर से प्रस्थापना कर पायेंगे और यह संस्कृत के द्वारा ही सम्भव होगा।

प्रख्यात भाषाविद् डा० बाबू राम सक्सेना, भूतपूर्व कुलपति इलाहाबाद विश्वविद्यालय ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि संस्कृत प्राचीनतम भाषा है और इसका सम्बन्ध लैटिन, ग्रीक आदि से है। संस्कृत की गरिमा ऐसी है जिससे प्रत्येक भारतवासी अपना मस्तक ऊंचा करके खड़ा हो सकता है। आपने कहा कि पहली बार सर विलियम जोन्स ने यूरोप में संस्कृत भाषा के महत्व को बताया था जिससे पाश्चात्य विद्वान चकित रह गये। यह भाषा अनुशासित है। इसके अध्ययन से ही हम राष्ट्र में जन-जीवन में अनुशासन बनाए रख सकेंगे। संस्कृत की महत्ता का दिग्दर्शन कराते हुए आपने कहा कि संस्कृत जान लेने पर प्राकृत और पाली आदि का भी थोड़े से ही परिश्रम से ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं। मुझे प्रसन्नता है कि यह समिति सर्वसाधारण को संस्कृत से भिज्ञ बनाने के लिए अष्टाध्यायी के माध्यम से त्रैमासिक शिविरों का आयोजन करती है। मैं इसकी सफलता की कामना करता हूं।

समारोह में शिविर की छात्राओं ने अष्टाध्यायी सूत्रों की अन्त्याक्षरी, स्वागत गीत आदि का मोहक कार्यक्रम प्रस्तुत किया। प्रारम्भ में मन्त्री राधेमोहन ने समागत अतिथियों का स्वागत किया तथा अन्त में प्रधान श्री विश्वम्भर नाथ अग्रवाल ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

—सुरेश चन्द्र शास्त्री, प्रचार मन्त्री
जिज्ञासु सरलतम संस्कृत प्रचार समिति (उ॰प्र॰) प्रयाग

संस्कृत अब कंप्यूटर युग में

भारत की प्राचीन भाषा संस्कृत ने कंप्यूटर युग में प्रवेश कर लिया है।

संस्कृत के विद्वानों और कंप्यूटर विशेषज्ञों ने पेंसिलवेनिया में आयोजित छठे विश्व संस्कृत सम्मेलन में बताया कि उन्होंने संस्कृत में शब्द-शोधन कार्यक्रम तैयार कर लिए हैं जिसके फलस्वरूप अनुसंधानकर्ता अब संस्कृत में कम्प्यूटर छापे तैयार कर सकते हैं।

अनेक कम्प्यूटर कार्यक्रमों के प्रयोग से अनुसंधानकर्ता रोमन या देवनागरी लिपि में कम्प्यूटर प्रिंट बना व छाप सकते हैं।

कम्प्यूटर पर बहस के अलावा वैदिक विषयों से लेकर प्राचीन भारत में हिन्दू व बौद्ध धर्मों पर विचार किया गया। सम्मेलन में संस्कृत में बनी पहली फिल्म दिखाई गई। भारत सरकार द्वारा दी गई यह फिल्म ७वीं शताब्दी के भारतीय दार्शनिक शंकराचार्य पर बनाई गई है।

सम्मेलन में १७ राष्ट्रों के ३०० विद्वानों ने भाग लिया। सम्मेलन के संयोजकों ने बताया कि इतनी बड़ी उपस्थिति का कारण शायद यह है कि अब विश्व में हजारों लोग संस्कृत बोलते हैं।

सम्मेलन के एक प्रतिनिधि विस्कांसिन के संस्कृत विद्वान व अनुवादक हेनरी हाइफेतज ने बताया, "संस्कृत के ज्ञान के बगैर भारतीय दर्शन का मूल ज्ञान प्राप्त नहीं किया जा सकता। हाल के वर्षों में संस्कृत अध्ययन में भारी वृद्धि हुई है और भारतीय इतिहास के विद्वतापूर्ण अध्ययन में भी वृद्धि हुई है।"

पेंसिलवेनिया विश्वविद्यालय में आधुनिक भारतीय साहित्य के आचार्य व संस्कृत विद्वान पीटर गीफके ने बताया कि समूचे इतिहास में लगनशील भारतीय विद्वानों ने अनेक अमूल्य संस्कृत ग्रन्थों को अक्षुण्ण रखने में योग दिया।

उन्होंने कहा—"कई भारतीय पीढ़ियों ने पाण्डुलिपियों की प्रतिकृतियां बनाईं ताकि भाषा जीवित रह सके "पाण्डुलिपियां ऐसे कागजों में थी जो कालान्तर में नष्ट हो गए पर उनकी प्रतिकृतियां जीवित रह गईं।

गीफके के अनुसार अमरीका में वहां संस्कृत के सर्वाधिक ग्रन्थ पुस्तकालय में सुरक्षित हैं जो संस्कृत के आदिकाल के हैं।

गीफक ने आगे कहा, "संस्कृत की प्राचीन भाषा होते हुए भी इतनी लोकप्रियता का एक कारण यह है कि इसे सीखना बहुत कठिन है। इसे भली-भांति सीखने में १२ वर्ष लग जाते हैं। लेकिन यह अध्ययन के रोचक विषयों के एक बड़े संसार का द्वार खोल देती है।

(हिन्दुस्तान २७-९-८४)

विजय दशमी की प्राचीनता

पं० अनिलप्रकाश मिश्र, वेस्ट पटेलनगर, नई दिल्ली

विजय दशमी हिन्दुओं का एक पवित्र त्योहार है। जिसका सम्बन्ध चाहे विजय यात्रा से, राम की रावण पर विजय से, विराट नगर में अर्जुन की कौरवों पर विजय से, आदि से रहा हो। कारण कोई भी हो पर इतना अवश्य है कि उपरोक्त यह सभी "विजय" शब्द की सार्थकता तो अवश्य प्रकट करते हैं।

मेरा अपना विचार है, कि भारत में पूरी जनता तो नहीं पर अधिकांश जनता इस बात से अवश्य सहमत है कि शुक्ल पक्ष की दशमी के दिन राम ने रावण का वध करके विजय प्राप्त की जिसके कारण हम विजय दशमी मनाते हैं।

इस प्रकार सत्य की असत्यता पर, विजय का सम्पूर्ण वर्णन बाल्मीकि रामायण में हमें दृष्टिगोचर होता है। अतः हम सब मिलकर जरा इसकी प्राचीनता पर विचार तो करें कहीं वास्तविकता से दूर हटते तो नहीं जा रहे हैं। इस प्रकार बाल्मीकीय रामायण को आधार मानते हुए राम के राज्याभिषेक से इस पर्व की सत्यता पर विचार करते हैं—

चैत्र. श्री मानायं मास पुष्प्यः पुष्पित काननः।
यौवराज्याय रामस्य सर्व मेवोपकल्पताम्॥
अ०का० श्लोक० २५॥

अर्थात् पुष्पो से खिले हुए वनों वाला चैत्र मास शोभा से युक्त है, राम के यौवराज्य (राज्याभिषेक) के लिए सभी प्रकार की सामग्री इकट्ठी की जाए। इससे स्पष्ट हैं कि राम का राज्याभिषेक चैत्र मास में होना निश्चित हुआ था, परन्तु शोक है कि माता कैकेयी के वराभिनय के कारण राम को चौदह वर्ष का वनवास और भरत को राजगद्दी। इस प्रकार न चाहते हुए भी राजा दशरथ को राम के लिए चौदह वर्ष का वनवास और भरत को राज्यगद्दी देने के लिए विवश होना पड़ा। राम ने अपने पिता व माता कैकेयी की आज्ञा शिरोधार्य करके एक रात भी अयोध्या में रुकना उचित न समझा और उसी दिन वन को चल पड़े।

इधर आदर्श भरत अपने मातुल गृह से आकर जब अयोध्या में मन्त्रियों द्वारा राम को चौदह वर्ष का वनवास, पिता की पुत्र वियोग से मृत्यु और स्वयं को राज्य लक्ष्मी, इस प्रकार के अशुभ समाचारों को सुनकर भरत मूर्छित हो पृथ्वी पर गिर पड़ते हैं। पुनः माता कैकेई को धिक्कारते हुए भरत अपने भ्रातृ प्रेम से पुरुषोत्तम राम को मिलने के लिए चल पड़ें। जब वन में चलते राम के निकट पहुंचकर राम, लक्ष्मण और सीता को वल्कल वस्त्रों से सुशोभित देखा और शरीर को मिट्टी से सना हुआ देखा, तो इन सारे कष्टों को भरत सहन न कर सके, उनका हृदय विदीर्ण होने लगा जैसे ही भरत राम के चरणों में प्रणाम करने के लिए झुके वैसे ही मारे दुख के मूर्छित हो जाते हैं। राम, भरत को अपने हाथों उठाकर हृदय से लगा लेते हैं। भरत को इस प्रकार से दुःखी देखकर स्वयं बड़े दुखी होते हैं। जब भरत की मूर्छा टूटती है तो भरत अपने बड़े भाई राम से निवेदन करते हैं कि आप अयोध्या वापस लौट चलो परन्तु राम अपने पिता की आज्ञा को शिरोधार्य कर चुके हैं अतः अपने पिता की आज्ञा की अवहेलना करके अयोध्या जाना किसी प्रकार भी ठीक नहीं समझते। इधर भरत भी अपने बड़े भाई के होते राज्य ग्रहण नहीं करना चाहते, अतः भरत भी अपनी प्रतीज्ञा पर दृढ़ हैं, ऐसी विषम समस्या में क्या भरत राजलक्ष्मी का उपभोग करता है नहीं तो फिर भरत राम की चरण पादुकाएं प्रतिनिधि के रूप में लेकर आकर राजसिंहासन पर रखकर और स्वयं वानप्रस्थी का रूप धारण कर राम के वनवास की अवधि के बीतने तक वापस आने की प्रतीक्षा में समय व्यतीत करने लगे।

महाकवि तुलसी के शब्दों में—

प्रभुकर कृपा पावरी दीन्हीं, सादर भरत शीश धरि लीन्हीं॥
नन्दि गांव करि पर्ण कुटीरा, कीन्ह निवास धरमपुर धीरा॥

परन्तु याद रहे कि भरत ने राम की पादुकाएं ग्रहण करने के पूर्व राम से अपने वचनों की स्वीकृति ले ली थी—जो निम्न श्लोक से स्पष्ट है कि—

चतुर्दश ही सम्पूर्णे वर्षेऽहनि रघुत्तम॥
न द्रक्ष्यामि यदि त्वां तु प्रवेक्ष्यामिहुता शनम्॥

कि हे राम चौदह वर्ष पूर्ण होने के दिन यदि मैं आपको न देख सका, तो अग्नि में आहुत हो जाऊंगा।

इस उपरोक्त प्रतीज्ञा को राम ने स्वीकार किया तभी भरत वहां से अयोध्या आकर चौदह वर्ष का समय नगर के बाहर आश्रम में काटना प्रारम्भ किया।

इससे स्पष्ट है कि राम चौदह वर्ष के पूर्ण होने पर, भरत को यदि मैं न मिल सकूंगा तो भरत अग्नि में जल जाएगा ऐसी स्वीकृति से वनवास की अवधि के समाप्त होने के दिन अयोध्या वापस आ गए होंगे।

आज्ञाकारी राम, सीता और लक्ष्मण के साथ अपनी वनवास अवधि को पूरा करने में अनेक कष्ट उठाए। उसी अवधि में गोदावरी के तट पर पचवटी में एक कुटी बनाकर रहने लगे। इसी बीच शूर्पणखा का आगमन हुआ, जो लक्ष्मण से शादी करना चाहती थी, उसी के शब्दों में महाकवि तुलसीदास का कथन है कि—

तुम सम पुरुष न मो सम नारी। यह संयोग विधि रचा सवांरी॥

इस पर लक्ष्मण ने कहा कि मैं तो राम का दास हूं मेरी भार्या बनकर तुम क्यों पराधीन बनना चाहती हो परिणामतः शूर्पणखा ने जब अपना भयंकर मायावी रूप दिखाया तो लक्ष्मण ने राम से आज्ञा लेकर शूर्पणखा को अपमानित किया जिसका कारण, राम लक्ष्मण का खर और दूषण से युद्ध हुआ और राम विजयी हुए। इस विजय से दण्डकारण्य में ऋषि-मुनि बड़े प्रसन्न हुए और निर्भय होकर धर्म का आचरण करने लगे। महाकवि तुलसी दास ने कहा भी है—

जब रघुनाथ समर रिपु जीते, सुर नर मुनि सबके दुःख बीते।

परन्तु इसका भयंकर परिणाम यह हुआ कि अकम्पन नामक राक्षस ने खरदूषण की मृत्यु का समाचार रावण को दिया और यह भी वर्णन किया कि राम की पत्नी सीता रूप का भण्डार है और राम बिना सीता जीवित नहीं रह सकता।

सीतया रहितः रामः न चैव हि भविष्यति॥

ऐसा जानकर रावण ने सीता के हरण करने का विचार बनाकर घर से चल पड़ा। साथ में विमान, अस्त्र शस्त्रादि को साथ लेकर सीता हरण करने के लिए वन में आ छिपा, जब राम लक्ष्मण को हिंसक जीवों के आखेट और कन्द मूल आदि लेने के लिए बाहर गए हुए जानकर रावण ने सीता को बलपूर्वक अपने विमान में बिठाकर लंका ले आया। बाल्मीकि रामायण से स्पष्ट है कि सीता हरण का समय वनवास के तेरहवें वर्ष की समाप्ति पर हेमन्त ऋतु के अन्त में और बसन्त ऋतु के प्रारम्भ में हुआ। जब रावण सीता को लंका में ले आया तो वह सीता को स्वेच्छा से अपनी पत्नी बनाना चाहता था परन्तु पतिव्रता सीता इस घृणित कर्म को कभी स्वप्न में भी न सोच सकती थी। अतः रावण ने सीता के लिए बारह माह का समय दिया कि यदि बारह माह में तुम मुझे अपना पति स्वीकार न करोगी तो मेरे बावर्ची प्रातः काल के अल्पाहार के लिए तुम्हारे टुकड़े-टुकड़े कर डालेंगे। (शेष पृष्ठ ८ पर)

राम परब्रह्म अथवा आदर्श

श्रीमती भारती वाजपेई, हरदोई (उ० प्र०)

श्री रामचन्द्र जी को काफी जनता परब्रह्म के रूप में मानती है और उनके परब्रह्मत्व का समर्थन भी करती है परन्तु हम यहां यह कहना चाहेंगे कि परब्रह्म के जो लक्षण हैं वह एक भी राम में हमें नहीं मिलते हैं। परमात्मा निर्गुण, निराकार, निर्विकार, निरवयव, सर्वज्ञ, सर्वव्यापी, सर्वात्मा, और सर्व शक्तिमान लक्षणों से युक्त है परन्तु वह कोई भी लक्षण राम में घटित नहीं होते।

१—निर्गुण—श्री रामचन्द्रजी को हम यदि निर्गुण मान ले तो बाल्मीकि जी ने एक महाकाव्य की रचना कैसे कर डाली जिसको अपने काव्य नायक के रूप में सम्पूर्ण चरित्र का वर्णन कर दिया जो कि हो ही नहीं सकता क्योंकि निर्गुण का गुण वर्णनात्मक काव्य है इस प्रकार यह सिद्ध है कि राम निर्गुण नहीं थे।

२—निर्विकार—नि का अर्थ है बिना और विकार का अर्थ है परिवर्तन अर्थात जिसमें कोई परिवर्तन न आए, सुख और दुःख में एकसा रहे परन्तु राम में यह गुण भी घटित नहीं होता प्रसंग आता है कि सीता हरण हुआ तो राम ने काफी विलाप किया वन, पर्वतों आदि सभी जगह विलाप करते हुए पेड़ पौधों आदि से सीता के सम्बन्ध में पूछते रहे और विलाप करते हुए लक्ष्मण से बोले अब हम सीता के बिना अयोध्या किस प्रकार जाएं मैं कौशल्या, सुमित्रा और भाई भरत क्या कहूंगे राजा जनक और जानकी की माता के हम किस प्रकार दर्शन करेंगे।

३—निरवयव—जो निराकार अर्थात जिसका कोई आकार न हो, बिना अवयव का हो परन्तु यदि राम को निरवयव मान लें तो शायद रामायण महाकाव्य का नायक मात्र कोरी कल्पना है, दशरथ के पुत्र, पिता की आज्ञा शिरोधार्य करना, वन गमन, दण्डकारण्य में वास, धनुष बाण धारण करना, राक्षसों का वध सब कल्पना पर आधारित एक काल्पनिक महाकाव्य के रूप में हम रामायण देखेंगे परन्तु वास्तव में ऐसा नहीं है।

४—सर्वज्ञ—हम राम को सर्वज्ञ मान लें तो सीता हरण के पश्चात दर, दर भटकना क्या राम का केवल मात्र एक ढोंग था इसके लिए सुग्रीव से मित्रता, और बाली के वध की कोई आवश्यकता ही नहीं थी, वह स्वयं ध्यानावस्थित होकर सीता का पता लगा सकते थे। हनुमान का लंका जाना और सीता का पता लगा कर राम को बताना यह सभी कार्य व्यर्थ होते।

५—सर्व व्यापी—श्री राम यदि सर्वव्यापी थे तो राजा दशरथ का पुत्र शोक में प्राण त्यागना एक भारी आश्चर्यजनक घटना थी क्योंकि सर्वव्यापी होने से अयोध्या, दण्ड कारण्य, लंका आदि सभी जगह मौजूद थे परन्तु ऐसा नहीं था। उन्हें यह भी नहीं ज्ञात था कि मेरे वनगमन करने से पिताजी ने मेरे वियोग से प्राण त्याग दिए हैं। यह घटना तो जब भरत राम से मिलते हैं तो बताते हैं कि पिता की मृत्यु हो गई। अतः स्पष्ट है कि राम सर्वव्यापी नहीं थे।

६—सर्वात्मा—यदि हम राम को सर्वात्मा मान लेते हैं तो वे रावण में, विभीषण में, राजा दशरथ में, सुग्रीव में, बाली में, सभी की आत्मा रूप में भरे हुए थे तो फिर सीता जी रावण के पास रही या राम के पास वह तो एक ही बात। यदि ऐसा था तो सीता को रावण के बन्धन से छुड़ाने की क्या आवश्यकता थी जिसके लिए इतनी भारी सेना की व्यवस्था कर युद्ध किया गया।

७—सर्वशक्तिमान—श्री रामचन्द्र जी यदि सर्वशक्तिमान थे तो उन्हें सुग्रीव को मित्र बनाकर सम्पूर्ण वानर सेना की सहायता की क्या आवश्यकता पड़ गई, वह स्वयं ही रावण का वध करके सीता को ला सकते थे, परन्तु ऐसा नहीं हुआ।

अतः हम उपरोक्त कथन से यही तथ्य निकाल सकते हैं कि राम परब्रह्म परमेश्वर नहीं थे। राम ने स्वयं कहा है कि :—

"आत्मानं मानुषं मन्ये रामं दशरथात्मजम्"

कि मैं अपने आपको मनुष्य मानता हूं अतः राम स्वयं अपने को परब्रह्म नहीं मानते थे।

"आदर्श पुरुष राम"

राम परमेश्वर न होकर एक आदर्श पुरुष के रूप में हमारे सामने आए या कहें कि राम सार्थक व्यक्तित्व के रूप में प्रेरणादायक जीवन के हर परिवर्तन के पहलू में हमारे सामने आए, राम का जीवन संघर्षमय, और कठिन यातनाओं से गुजरता रहा, परन्तु इस संघर्ष रत जीवन में सत्यता चारित्रिकता, एवं नीति संगत अपना सारा जीवन व्यतीत किया जो कि आज भी हम उनके जीवन संघर्ष से कुछ सीखते हैं और दूसरों को उदाहरण स्वरूप बताते आए हैं। राम का प्रेरणा दायक आदर्श जीवन है यदि कोई इतना संघर्ष और कष्टमय जीवन बिता कर अपने को दूसरों के लिए प्रेरणादायक बना सके तो आश्चर्य अवश्य है।

राम जैसे आदर्श पुरुष का सार्थक जीवन यों ही नहीं बन गया उसके लिए महर्षियों का योजनाबद्ध प्रयास भी जुड़ा है, यह प्रयास महाराजा दशरथ के अश्वमेध यज्ञ से प्रारम्भ होता है पश्चात ऋष्यश्रृंग की अध्यक्षता में पुत्र कामेष्टि यज्ञ का उपक्रम किया गया। फलतः राम, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न जैसे दिव्य पुत्रों का जन्म हुआ। गुरुकुलीय शिक्षा महर्षि वशिष्ठ और विश्वामित्र के आश्रम में हुई, बाल्मीकीय रामायण से स्पष्ट है कि :—

"वेद वेदांगतत्त्वज्ञो धनुर्वेदे च निष्ठितः। (बालकाण्ड)

अर्थात श्री रामचन्द्र जी वेद वेदांग और धनुर्वेद के ज्ञाता हैं परन्तु इतना ज्ञान प्राप्त करने के बाद श्री राम, लक्ष्मण की गुरु भक्ति के प्रति कितना लगाव है जिसकी हम आज की शिक्षा से तुलना नहीं कर सकते। महाकवि तुलसीदास के द्वारा व्यक्त किया गया है कि :—

मुनिवर शयन कीन्ह जब जाई, लगे चरन चापन दोउ भाई।
बार बार मुनि अज्ञा दीन्हीं, रघुबर जाई शयन तब कीन्हीं॥

इसी प्रकार राम का ब्रह्मचर्य काल, एक पत्नी व्रत, ईश्वर में अनन्य निष्ठा, दैनिक सन्ध्या एवं अग्नि होम, माता पिता के प्रति भक्ति; भाइयों के प्रति स्नेह आदि कितने ही प्रसंग ऐसे हैं, जो हमें आज भी प्रेरणा देते हैं और देते रहेंगे। जब राम का राज्याभिषेक होने को ही था तो वह स्वयं में विचार मग्न हैं :—

जनमें एक संग सब भाई, भोजन शयन केलि लरिकाई।
करन बेध उपबीत बिआहा, संग संग सब भए उछाहा॥
बिमल बंस यहु अनुचित एकू, बन्धु बिहाइ बड़ेहि अभिषेकू॥

परन्तु दैव वियोग से राम को वनवास और भरत को राज्य, फिर भी राम प्रसन्न चित्त होकर कह रहे हैं कि :—

भरत प्रान प्रिय पावहिं राजू, बिधि सब बिधि मोहि सन मुख आजू।

उपरोक्त प्रसंग से स्पष्ट है कि श्री राम का अपने भाइयों से कितना अनुपम प्रेम था यदि हम ऐसी ही प्रेरणा लेकर जीवन बिताए तो आज कितनी सुख और शान्ति मिल सकती है।

देखिए निम्न कथन में कितनी सार्थकता है, राम कहते हैं कि अब मुझे युद्ध से क्या प्रयोजन जब प्यारा भाई लक्ष्मण रण भूमि में सो चुका है, युद्ध का अब कोई प्रश्न ही नहीं। तुलसी दास के शब्दों में :—

जो जनतेउं बन बन्धु बिछोहू, पिता बचन मनतेउं नहिं ओहू।
सुत बित नारि भवन परिवारा, होहिं जाहिं जग बारहिं बारा॥
अस बिचारि जियं जागहु ताता, मिलइ न जगत सहोदर भ्राता॥

अतः ऐसा भ्रातृ स्नेह हमें कहीं दूसरी जगह देखने को नहीं मिलता है यही तो है राम का प्रेरणा दायक जीवन। इस प्रकार हम आदर्श राम को कैसे भूल सकते हैं। जब तक राम का आदर्श हमारे सामने रहेगा। जिसे लोग अपने जीवन को संघर्षमय झेलते हुए राम के प्रेरणामय जीवन स्रोत से जो जितना चाहें वह उतना ग्रहण कर लेगा।

इस प्रकार राम के प्रेरणादायक जीवन के यही नहीं, अनेकों प्रसंग ऐसे हैं जो राम के आदर्श को ऊंचा उठाते हैं। इसलिए हम राम को परमेश्वर न मान कर पुरुषोत्तम श्री राम के नाम से जानते हैं।

मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम

—आचार्य रामकिशोर शर्मा
श्री राधाकृष्ण संस्कृत महाविद्यालय, खुर्जा

सृष्टि के प्रारम्भ से ही इस पवित्र देश में समय-समय पर धर्म-संस्थापना हेतु लोक कल्याणार्थ महापुरुषों का प्राविर्भाव होता रहा है। उन सभी को उनके विशिष्ट गुणों के द्वारा भारतीय संस्कृति के ग्रन्थरत्नों में महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। इसी गौरवमयी परम्परा में त्रेता युग में अयोध्या के महाराजा श्री दशरथ जी की बड़ी महारानी श्री कौशल्या की परमपवित्र कुक्षि से चैत्र शुक्ल पक्ष की नवमी तिथि में मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम का प्राविर्भाव हुआ था। मर्यादा पुरुषोत्तम विशेषण से अब तक की समयावधि में केवल भगवान श्री राम ही विभूषित हुये हैं। अपने मर्यादित पवित्र चरित्र द्वारा श्री राम जी न केवल भारत, अपितु विश्व के प्रायः समस्त देशों में अभिनन्दनीय तथा अनुकरणीय है। राष्ट्रकवि श्री मैथिलीशरण जी गुप्त की—राम तुम्हारा चरित्र स्वयं ही काव्य है। कोई कवि बन जाय सहज सम्भाव्य है। ये पंक्तियां श्री राम के चरित्र की महत्ता का परिचय दे रही है। आइये श्री राम के इस विशिष्ट विशेषण पर विचार करें।

मर्यादा का अर्थ सीमा है। किसी भी जनपद, प्रदेश अथवा देश के क्षेत्रफल की अन्तिम रेखा उस जनपद, प्रदेश अथवा देश की सीमा कही जाती है। इसी प्रकार वेद और शास्त्रों में जिसके लिये जिन-२ कर्तव्यों का उल्लेख किया है, उन-उनके लिये निर्दिष्ट सम्पूर्ण कर्तव्य ही मर्यादा है। संसार सृजनारम्भ में ही ईश्वर प्रदत्त वेद तथा तदनुप्राणित शास्त्रों में सभी वर्णों के तथा सर्वसाधारण के जीवन से सम्बन्धित माता-पिता, भाई-बहन, पत्नी एवं प्रजा आदि के साथ कर्तव्य कर्मों का विशद वर्णन है। वेदादि प्रणीत मर्यादाओं के पूर्ण-पालन से पुरुषोत्तमत्व की प्राप्ति सामान्य मानवों के लिये ही नहीं, अपितु महापुरुषों के लिये भी दुर्लभ है। इसलिए ही यह विशेषता अब तक किसी अन्य महानुभाव को विभूषित नहीं कर सकी। मर्यादा पालक का प्रत्येक व्यवहार आदर्श बन जाता है। उसी का आचार्यजन प्रवचन तथा सामान्यजन अनुकरण करते हैं। रामादिवत प्रवर्तितव्यम् अर्थात् राम के समान व्यवहार करना चाहिये, यह काव्य शास्त्र की सूक्ति उक्त तथ्य में प्रमाण है। सचमुच श्री राम समग्रमानव समाज के लिये आदर्श हैं। उन्हें हम किसी रूप में देखें सर्वथा अनुपम हैं।

पुत्र रूप में श्रीराम

माता-पिता के प्रति पुत्र के कर्तव्य का उपदेश करती हुई भगवती श्रुति कहती है "अनुव्रतः पितुः पुत्रो मात्रा भवतु समनाः।

अथर्ववेद ३।३०।२

अर्थः—पुत्र पिता के व्रत (नियम) के अनुकूल व्रत वाला हो, उस का मन माता के मन के साथ मिला हो, अर्थात् ममतामय हो। श्री राम ने अपने समस्त जीवन में इस वैदिक उपदेश के अनुसार आचरण किया। अपने माता-पिता को प्रसन्न रखने के लिये समस्त भौतिक भोगों का एक साथ त्याग करते समय उनके मुख पर मालिन्य की रेखा भी नहीं उभरी। आहूतस्याभिषेकाय विसृष्टस्य वनाय च। न मया लक्षितस्तस्य स्वल्पोऽप्याकार विभ्रमः॥ तथा न मन्ये दीनवासदुःखतः इत्यादि शास्त्रवचन प्रमाणस्वरूप प्रस्तुत है। वनवास के आदेश के अवसर पर श्री राम का यह वचन सचमुच उनकी पितृभक्ति का ज्वलन्त प्रमाण है। अहं हि वचनाद्राज्ञः पतेयमपि पावके। भक्षयेयं विषं तीक्ष्णं मज्जेयमपि चार्णवे। नास्ति शक्तिः पितुर्वाक्यं समतिक्रमितुं मम। वाल्मीकि रा० अर्थः—मैं निश्चय ही राजा (पिता) के वचन से अग्नि में कूद जाऊंगा, तीक्ष्ण विष खालूंगा तथा समुद्र में डूब जाऊंगा। पिताजी के वाक्य के अतिक्रमण की मुझ में शक्ति नहीं है। अर्थात् मैं कथमपि उनके वाक्य का उल्लंघन नहीं कर सकता। पितरि प्रीतिमापन्ने प्रयन्ते सर्व देवताः। अर्थः—पिता के प्रसन्न हो जाने पर सभी देवता प्रसन्न हो जाते हैं। इस सूक्ति का वे सदा स्मरण रखते थे सुनुजननी सोई सुत बड़भागी। जो पितु-मातु वचन अनुरागी॥ तनय मातु पितु तोषनिहारा। दुर्लभ जननि सकल संसारा। श्री राम के इन वचनों में माता पिता के प्रति उन की अनुपम भक्ति अभिव्यक्त है। पिता-माता की प्रसन्नता से लाभ की चर्चा करते हुए वे कहते हैं।

धन्यजन्म जगतीतल तासू। पितहि प्रमोद चरित सुनि जासू।
चारिपदारथ करतल ताके। प्रिय पितु मातु प्राण सम जाके॥

शिष्य रूप में श्री राम

आचार्य देवो भव, इस शास्त्र वचन के अनुसार श्री राम जी ने आजीवन अपने गुरुजनों का असामान्य सम्मान किया। श्री राम के प्रातः प्रथम कर्तव्य का निर्देश करते हुये श्री तुलसीदास जी ने लिखा प्रातःकाल उठकर रघुनाथा। मात पिता गुरु नावहिंमाथा। जनक जी के साथ नगर शोभादर्शनार्थ जाते समय—मुनिपद कमल बांदे दोऊ भ्राता। रात्रि में सोने जाने से पूर्व, करिमुनि चरन सरोज प्रनामा। वन में भरतागमन पर, गुरुहि देखि सानुज अनुरागे दण्ड प्रनाम करन प्रभु लागे। लंका से लौटने पर, पुनि रघुपति सब सखा बुलाये। गुरु पद लागहु सकल सिखाये। गुरु वशिष्ठ कुल पूज्य हमारे। इनकी कृपा दनुजरण मारे। इत्यादि वचन श्री राम की गुरु वशिष्ठ तथा विश्वामित्र में अगाध श्रद्धा के परिचायक हैं। उत्तर रामचरित में श्री अष्टावक्र जी से भगवान् वशिष्ठ ने कोई आदेश नहीं दिया है, यह पूछने पर उनके द्वारा सुनाये सन्देश—जामातृ यज्ञेन वयं निरुद्धास्त्वम् बाल एवासि नवश्चराज्यम्। युक्तः प्रजानामनुरञ्जने स्यास्तस्माध्यशो यत् परमं धनन्व.। के उत्तर में जैसी आज्ञा कहकर स्वीकार करते हैं। अनर्घराघव में लंका से आकर श्री राम का अपने गुरु जी को देखते ही शीघ्रता से पास जाकर चरण स्पर्श पूर्वक रघुवंश क्रियाचार्यं पुराणब्रह्मवादिनम्। ब्राह्मणे ब्रह्मजन्मानमेष रामोऽभिवादये। यह कहकर प्रणाम करना उनकी गुरु भक्ति का पुष्ट प्रमाण है।

भ्रातृ रूप में श्रीराम

मा भ्राताभ्रातरं द्विक्षन्। अथर्ववेद ३।३०।३ अर्थः—भाई-भाई से द्वेष न करे श्री राम ने इस वैदिक आदेश का निष्ठापूर्वक पालन किया। जब उन्हें विदित हुआ कि राज्य भरत को दिया जायेगा तो प्रसन्न होकर उन्होंने कहा—भरतु प्रानप्रिय पावहिं राजू। विधिसब-विधि मोहि सन्मुख आजू श्री लक्ष्मण जी को सेनासहित भरत आ रहे हैं, यह सुनकर सन्देह हुआ तब उन्हें समझाते हुए श्री राम ने कहा—सुनहु लखन भला भरत सरीसा। विधि प्रपंच में सुना न दीसा। यह कथन उनके भ्रातृ विश्वास का अनुपम निदर्शन है। छोटे भाईयों के प्रति श्री राम ने अपना मन्तव्य लक्ष्मण जी के समक्ष इस प्रकार प्रस्तुत किया यद्विना भरतन्त्वाञ्चा शत्रुघ्नं वा पिमानद। भवेन्मम सुखं किंचिद् भस्म तत्कुरुतात् शिखी। अर्थः—हे भाई लक्ष्मण? तुम्हें भरत शत्रुघ्न को छोड़कर यदि मैं किसी सुख की कामना करू तो अग्निदेव उसे भस्म कर दें। अर्थात् मैं तुम्हें छोड़कर किसी सुख की कल्पना भी नहीं कर सकता। श्री लक्ष्मण के शक्ति प्रहार से मूर्च्छित हो जाने पर श्री राम ने बड़े स्पष्ट शब्दों में सबके समक्ष घोषणा की "परित्यक्ष्याम्यहं प्राणान् वानराणां तु पश्यताम् यदि पञ्चत्वमापन्नः सुमित्रानन्दवर्धनः वाम रा० अर्थ—यदि सुमित्रा नन्दन लक्ष्मण की मृत्यु हो गयी तो मैं सभी वानरो के देखते हुए ही प्राणों का त्याग कर दूंगा। यथैव मां वनं यान्तमनुयातो महाद्युतिः। अहमप्यनुयास्यामि तथैवेनं यमक्षयम् वा० रा० अर्थ—जिस प्रकार महाद्युति लक्ष्मण ने वन जाते हुए मेरा अनुगमन किया था उसी प्रकार मैं भी

यमसदन में इनका अनुगमन करूंगा। राज्य प्राप्ति के पश्चात् सभी भाई उनकी सेवा करते थे श्री राम उन्हें सुन्दर उपदेश देते थे ;और साथ-साथ भोजन करते थे-इसी भाव को तुलसीदास जी के शब्दों में देखिये—सेवहि सानुकूल सब भाई। रामचरन रति अति अधिकाई। राम करहि भ्रातनह पर प्रीती, नाना भांति सिखावहि नीती। अनुजन्ह संजुत भोजन करहीं ॥

पति रूप में श्री राम

विवाह प्रकरण के—"समुञ्जत विश्वेदेवा समापो हृदयानि नौ" अर्थ:—सभी देव अच्छी प्रकार समझ लें कि आज से हम दोनों का हृदय दो स्थानों के पानी की भांति मिल गया है। प्रत्येक अवस्था में हम दोनों साथ रहेंगे। इस मन्त्रानुसार श्री राम नगर हो अथवा वन सर्वत्र पत्नी के साथ रहे। वन जाते समय समझाने पर भी जब सीता जी—मोरे सबहि एक तुम स्वामी, दीन बन्धु उर अन्तर्यामी। मन-क्रम-वचन चरन रत होई, कृपा सिन्धु परिहरि कि सोई। कह कर व्याकुल हुई तब उन्हें सान्त्वना देते हुए श्री राम ने कहा "न देवि तव दुःखेन स्वर्गमप्यभिरोचयते, न मेऽस्ति भयं किंचित् स्वयं-भोरिव सर्वदा। अर्थ—हे देवि ? तुम्हें दुःखी करके स्वर्ग भी मुझे अच्छा नहीं लगता है स्वयं भू के समान मेरे लिए सर्वत्र थोड़ा भी भय नहीं है। वन में सीता जी की प्रसन्नता के लिए वे सदा सन्नद्ध रहते थे। पश्य लक्ष्मण वैदेह्याः स्पृहामुल्लसितामिमाम् रूप श्रेष्ठतया ह्येव मृगोऽद्य न भविष्यति। अर्थ—हे लक्ष्मण सीता की इस मृग में बढ़ी हुई स्पृहा को देखो रूप की श्रेष्ठता के कारण यह मृग जीवित न रहेगा। सीता जी की स्पृहा के कारण श्री राम मृग मारने चले गये। सीता हरण के पश्चात् हा सीते कहकर असीम वेदना से व्याकुल हो जाते हैं। इस प्रसंग में निम्न चौपाई दृष्टव्य हैं—

"आश्रम देखि जानकी हीना, भये विकल जस प्राकृत दीना। लछिमन समुझाये बहु भांति, पूछत चले लता अरु पाती।" सीता जी को प्राप्त करके ही उनकी विकलता का अवसान हुआ। परिस्थिति वश सीता जी का परित्याग करने पर भी उनका विस्मरण न कर सके। अश्वमेध यज्ञ में अपनी सहधर्मिणी सीता की स्वर्णमयी प्रतिमा ही बनायी। सीता के प्रति उनके सत्य स्नेह के दर्शन पदः पदः पर होते हैं। श्री राम का एक पत्नीव्रत अत्यद्भुत था वे परस्त्री को मां मानते थे इसलिए यदि और भी कोई उनके रूप का अनुकरण करता था उसे परस्त्री मां के समान प्रतीत होती थी। इस विषय में स्वयं रावण का यह कथन—जब जब राम रूप में धारी परतिय दीखि परत महतारी। प्रमाण है।

राजा रूप श्री राम

"ब्रह्मचर्येण तपसा राजा राष्ट्रं विरक्षति"। अथर्व० ११।५।१७ ब्रह्मचर्य तथा तपस्या से राजा राष्ट्र की रक्षा करता है अर्थात् ब्रह्मचर्य और तप के बिना कोई भी राजा राष्ट्र के संरक्षण में सफल नहीं हो सकता है। श्री राम उक्त दोनों गुणों के भण्डार थे। उन्होंने ब्रह्मचर्य आश्रम में तो ब्रह्मचर्य का पालन किया ही वनवास में भी पूर्ण ब्रह्मचर्य से रहे। वे परम तपस्वी थे। तभी उन्हें राज्य छोड़ते समय वन की विभीषिका भयभीत न कर सकी और न राज्य का मोह ही उन्हें राजिव लोचन राम चले तजि बाप को राज बटाऊ की नाईं। वन चले गये। वन में तपस्वियों की भांति निवास कर अद्भुत शक्ति का संचय किया, जिससे शत्रुओं पर विजय प्राप्त की श्री राम अपनी प्रजा से अत्यन्त स्नेह करते थे। गुरु वशिष्ठ का प्रजापालन सम्बन्धी आदेश पाकर उन्होंने बिना संकोच यह उत्तर दिया "स्नेहं दयां च सौख्यं च यदि वा जानकी मपि। आराधनाय लोकस्य मुञ्चतो नास्ति मे व्यथा—उत्तर रा० अर्थ—स्नेह, दया, सुख और जानकी को भी प्रजा को प्रसन्न करने के लिए छोड़ने में मुझे कोई व्यथा नहीं होगी। रामराज्य की झांकी निम्न लिखित चौपाइयों में देखिये—

राम राज्य कर सुख सम्पदा, बरनि न जाय फनीस सारदा।
सब उदार सब पर उपकारी, ते मन बचन क्रम पति हितकारी ॥

भौतिक सम्पत्ति चरम सीमा पर थी कोई दुःखी नहीं था इस विषय में "दैहिक दैविक भौतिक तापा, राम राज नहिं काहू व्यापा।" यह वचन प्रमाण है। सभी को सब सुख सुलभ थे। इसलिये आज भी अच्छे राज्य की उपमा राम राज्य से दी जाती है इसी प्रकार सभी क्षेत्र में श्री राम ने मर्यादाओं का पालन कर पुरुषोत्तमत्व का मार्ग प्रशस्त किया। हम सब उनका अनुकरण कर अपना और राष्ट्र का कल्याण करें।

आर्यो जागो

जागो आर्य जाति अब जाग।
बहुत समय सोया प्रमाद में सत्वर निद्रा त्याग ॥ जाग ॥
एक समय था सकल विश्व में था तेरा अधिकार।
तुम से ही शिक्षा पाता था यह समस्त संसार।
क्रूर कुचाली बचा सके थे निज को यहां से भाग ॥ जाग ॥
तेरे ही सुत चन्द्र से सब आक्रान्ता हारे।
तेरे ही विक्रम महान थे बड़े-बड़े रिपु मारे।
शीश तुम्हारे वीर जनों ने बांधी अनुपम पाग ॥ जाग ॥
वैदेशिक षड़यन्त्रों में फंस अपना हुआ विनाश।
अपने बन्धु विधर्मी बने हुये आस्तीन के नाग ॥ जाग ॥
अपना गत गौरव पाने का कर लो पुनः उपाय।
नष्ट हो रहे शीघ्र बचालो धर्म, वेद अरु गाय।
अपने पूज्य पूर्वजों की विधि शुभ उद्यम में लाग ॥ जाग ॥

—आचार्य रामकिशोर शर्मा

विजय दशमी

(पृष्ठ ५ का शेष)

इससे स्पष्ट है कि राम और रावण का युद्ध अमावस्या को ही हुआ और उसी दिन रावण मारा गया। इसके पश्चात् राम ने रावण का अन्तिम संस्कार करा कर विभीषण को राजतिलक कर अयोध्या आने की तैयारी की। विभीषण के काफी अनुनय विनय करने पर राम न रुके और कहा कि मुझे शीघ्र पीछे लौटना है, मैं भरत से प्रतीज्ञा कर चुका हूं, अतः हमें भरत से मिलना है। ऐसा सुनकर विभीषण पुष्पक विमान को लाकर बोले, महाराज यह शीघ्र गति वाला विमान है, आपकी जैसी आज्ञा हो, अतः राम उचित परामर्श देते हुए उस पुष्पक विमान से वापस अयोध्या पहुंचे।

इस प्रकार बाल्मीकि रामायण से स्वतः सिद्ध है कि रावण की मृत्यु अमावस्या को हुई और राम ने चैत्र मास में अयोध्या को छोड़कर वनवास की अवधि समाप्त कर चैत्र मास में ही अयोध्या वापस आए।

आर्यसमाजों की गतिविधियां

मुस्लिम युवती की शुद्धि एवं विवाह

लखनऊ। वैदिक प्रवक्ता एव भूतपूर्व नवाब छतारी डा० आनन्द सुमन के नेतृत्व में मुस्लिम युवती शबीना खातून को शुद्ध कर उसका उसका नाम सावित्री रखा गया एव स्थानीय युवक अजयकुमार के साथ उसका विवाह सम्पन्न करा दिया गया।

— मन्त्री युवा क्रान्ति परिषद्

आर्यसमाज, दरियागञ्ज नई दिल्ली का स्वर्ण जयन्ती समारोह सम्पन्न

दिनांक ७ अक्तूबर से प्रतिदिन सायं वेदकथा एवं सुमधुर भजनों) से दिनांक ११-१०-८५ तक जन मानस को आन्दोलित करता हुआ, समाज का स्वर्ण जयन्ती समारोह १२ व १३ अक्तूबर ८५ में सोल्लास सम्पन्न हुआ। दिनांक १२ अक्तूबर ८५ की प्रातः वेला में सार्वदेशिक सभा के महामन्त्री श्री ओम्प्रकाश त्यागी ने "ओ३म्-ध्वजोत्तोलन किया जिसके साथ-साथ उत्सव की कार्यवाही प्रारम्भ हुई। आर्य-महासम्मेलन, आर्य महिलासम्मेलन एवं वेद विषयक गोष्ठी के प्रवचनों एवं व्याख्यानों में आर्य जगत् के गणमान्य विद्वानों ने अपनी विचार धारा से हजारों की सख्या में उपस्थित नर-नारियों को ऋषि दयानन्द के शाश्वत मूल्यों से अवगत कराया, जिसकी जन-मानस से मुक्त कण्ठ से प्रशंसा की। इसके साथ-साथ दोनों दिन ऋषि लंगर का भी आनन्द उपस्थित नर-नारियों ने उठाया। धन्यवाद के पात्र है श्री बी०बी०सिंगल आर्यसमाज के प्रधान जो अपने स्वास्थ्य की चिन्ता न करते हुए अहर्निश व्यवस्था में लगे रहे। और समाज के उत्सव को चतुर्दिक सफलता प्राप्त हुई। स्मारिका का प्रकाशन इसका अभिन्न अंग रहा। मनीषी विद्वानों में श्री पं० शिवाकान्त जी उपाध्याय, आचार्य सत्यप्रिय जी, डा० रघुनन्दनसिंह जी, श्री प्रेमचन्द जी श्रीधर, आचार्य विक्रम जी, महात्मा देवेश भिक्षु जी, श्रीमती सरला मेहता जी आदि के प्रवचन तथा श्री गुलाबसिंह जी राघव के सम-सामयिक राष्ट्रीय गीतों एवं वैदिक मान्यताओं का उपस्थित जन समूह ने हार्दिक स्वागत किया। —दिनेश त्रिपाठी

कन्याओं को वेदाचार्य बनाने के लिये कन्या वेद गुरुकुलम् बरेली में कन्याओं को प्रविष्ट कराइए

यहां कन्याओं को आरम्भ से वेद पढ़ाया जायेगा बनारस संस्कृत यूनीवर्सिटी की प्रथमा, मध्यमा, शास्त्री, वेदाचार्य परीक्षाएं दिलाई जायेंगी। इन परीक्षाओं के द्वारा कन्याएं हाईस्कूल इन्टर बी०ए० एम०ए० परीक्षायें भी कर सकती हैं।

आजकल के कन्यागुरुकुलों में लड़कियों को साहित्याचार्य व्याकरणाचार्य कराया जाता है। एक भी कन्यागुरुकुल ऐसा नहीं जहां कन्याओं को वेदाचार्य कराया जाता हो। आश्रय तथा भोजन व्यवस्था गुरुकुल में रहेगी। स्वतन्त्र स्थानीय कन्याएं भी पढ़ने आ सकती हैं। कन्या की आयु कम से कम दस बारह वर्ष और पांचवीं श्रेणी उत्तीर्ण हो। प्रथमा, मध्यमा, शास्त्री, वेदाचार्य कक्षाओं में भी प्रवेश हो सकता है यदि किसी ने पूर्व परीक्षाएं पास की हुई हों।

निवेदक :

वेदाचार्य	वेदाचार्या	वेदाचार्या
आचार्य विश्वश्रवाः व्यास	सावित्रीदेवी शर्मा	श्रीमती देवी शास्त्री
एम० ए०	एम०ए०	एम०ए०
संचालक	आचार्या	मुख्याधिष्ठात्री

वेदमन्दिर १०१ बाजार, मोतीलाल बरेली (उ०प्र०)

गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर के आचार्य श्री हरिगोपाल शास्त्री पी०एच०डी० की उपाधि से सम्मानित

हरिद्वार। गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर के आचार्य श्री हरिगोपाल शास्त्री को उनके शोध प्रबन्ध "अमरचन्द्रसूरि कृत बाल-भारतम्" के आलोचनात्मक अध्ययन पर मेरठ विश्व विद्यालय मेरठ ने संस्कृत में पी०एच०डी० उपाधि ससम्मान प्रदान की है। इस प्रबन्ध में पहली बार एक जैन आचार्य के व्यक्तित्व और कृतित्व का शोध के स्तर पर विवेचन किया गया है। अभी तक साहित्य शास्त्री उनके कवि शिक्षा निरूपक ग्रन्थ कल्पतावृत्ति से ही परिचित थे। १३वीं शती और उसके बाद के हिन्दी संस्कृत आचार्यों ने कवि शिक्षा विषयक ग्रन्थ लिखते हुए इस कृति को स्रोतग्रन्थ के रूप में ग्रहण किया है। महाभारत को केन्द्र बिन्दु मानकर लिखे गये इनके महा-काव्य "बालभारतम्" का साहित्यिक, दार्शनिक और सामाजिक, सांस्कृतिक अनुशीलन कर पहली बार विद्वान् लेखक ने तत्कालीन इतिहास और सामाजिक स्थिति पर प्रकाश डाला है। १२वीं और तेरहवीं शताब्दी के इतिहास खण्ड पर स्रोत रूप में इस शोध प्रबन्ध से नई जानकारी मिलेगी।

इस महत्वपूर्ण शोध प्रबन्ध का निर्देशन मेरठ कालेज मेरठ के संस्कृत विभागाध्यक्ष डा० कर्णसिंह जी ने किया है।

आर्य समाजों के होने वाले उत्सव

—आर्य कन्या इन्टर कालेज कानपुर का 'रजत जयन्ती समारोह' दिनांक ७ नवम्बर से १० नवम्बर तक कालेज के प्रांगण में धूम-धाम से मनाया जाएगा।

—श्रीमती परोपकारिणी सभा अजमेर द्वारा 'भव्य ऋषि मेला' १६ से १८ नवम्बर तक मनाया जाएगा। श्रीकरण शारदा मन्त्री, इस उत्सव में भाग लेने के लिए सभी सज्जनों को निमन्त्रण देते हुए सूचित करते हैं कि निवास तथा भोजन की निःशुल्क व्यवस्था ऋषि उद्यान में होगी।

—गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ दिल्ली के माननीय प्रधान श्री शक्तिवेश जी सूचित करते हैं कि गुरुकुल के विशाल मैदान में २७-१०-८५ को "विशाल कुश्ती दगल" का आयोजन किया गया है। इसमें प्रथम पुरस्कार २१०० रु०, द्वितीय ११०० रु० और तृतीय ५००) रु० तथा कुश्ती गुरुओं को भी सम्मानित किया जायेगा।

—श्री इन्द्रराज जी मन्त्री आर्यसमाज मेरठ सूचित करते हैं कि २१-१०-८५ को सायं ७ बजे "महर्षि बाल्मीकि जयन्ति" समारोह शर्मा स्मारक मैदान मेरठ शहर में मनाई जाएगी।

विविध समाचार

आर्य समाज सान्ताक्रुज बम्बई का ४१ वां स्थापना दिवस २-१०-८५ को बड़े उत्साहवर्धक वातावरण में मनाया गया। इस अवसर पर "आर्य ध्यान योग केन्द्र" का उद्घाटन स्वामी सत्यपति जी के करकमलों द्वारा हुआ। समाज के महामन्त्री कैप्टिन देवरत्न जी ने जब श्री राजेन्द्र बाहरी जी तथा श्री केवल कृष्ण जी मेहरा का परिचय देते हुए उनके द्वारा २०,००० रु० की वातानुकूलित मशीन और ऊनी कालीन समाज को भेंट करने की घोषणा की तो उपस्थित जन समूह का "आर्यसमाज अमर रहे" "महर्षि दयानन्द की जय हो" के नारों से हृदय गदगद हो गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि श्री चन्द्रमोहन जी आर्य का जब उनके पूर्वजों के बलिदान सहित परिचय दिया गया तो जनता की आंखों में आंसू आ गए। तत्पश्चात् महाराष्ट्र राज्य के विधि न्याय एवं तान्त्रिक प्रशिक्षण राज्य मन्त्री (जो कि गुरुकुल कांगड़ी के स्नातक हैं) श्री रामचन्द्र राव पाटिल का बम्बई की समस्त आर्य समाजों, आर्य संस्थाओं तथा प्रसिद्ध मुख्य व्यक्तियों द्वारा पुष्प मालाओं द्वारा स्वागत किया गया। अपने स्वागत में उत्तर के मन्त्री महोदय ने यह कहकर कि मैं जो कुछ हूं आर्यसमाज की देन हूं और आर्य समाज का प्रत्येक कार्य मेरा अपना कार्य है उपस्थित जन समूह को आर्य समाज के कार्य की प्रेरणा मिली। प्रीति भोज में सभी बड़े और छोटों ने एक ही पंक्ति में बैठकर भोजन किया।

आर्य समाज के प्रचार का प्रभाव

आर्य समाज के अधिकारी कितने सतर्क रहते हैं इस बात को जानना चाहते हो तो सुनो—उत्तर प्रदेश में सिकन्दराबाद जिला बुलन्दशहर में एक पोस्टर निकाला गया जिसमे खुलेआम लिखा गया था कि हम लोग (अनेकों परिवार) दिल्ली में अगले रविवार जामामस्जिद के इमाम साहब से इस्लाम धर्म ग्रहण करेंगे। वहां की जनता ने पढ़ा—अनपढ़ा कर दिया। परन्तु देश के प्रहरी, भारत मां के लाल आर्य युवकों ने इसे पढ़ने पर हिम्मत बांधी। पता लगाया और आर्य समाज के प्रधान श्री शिवनन्दन दास, मन्त्री-श्री धर्मेन्द्र शास्त्री तथा प० गौतम और होतीलाल शर्मा ने उस कालोनी में जाकर घर-घर एक-एक व्यक्ति को मिलकर समझाया, वैदिक धर्म की विशेषताएं समझाईं और उनका असन्तुष्टि के कारण का निवारण कर अपने धर्म में टिके रहने का आश्वासन ही नही अपितु पहले लगे पोस्टर के विपरीत पोस्टर लगवाए। सारा वातावरण आर्य समाज अमर रहे से गूंज उठा। तत्पश्चात ६ हरिजन परिवारों ने भी अपना मुसलमान बनने का इरादा छोड़ वैदिक धर्म में रहने का संकल्प किया।

—श्री लालमियां उम्र ३० वर्ष गोविन्दनगर निवासी ने समाज के प्रचार से प्रभावित होकर अपनी इच्छा से वैदिक धर्म में प्रवेश किया उनका नाम लालसिंह रखा गया।

—सार्वदेशिक आर्य वीरदल हरियाणा के मन्त्री सूचित करते हैं कि २७-१०-८५ को आर्य माध्यमिक पाठशाला न्यू कालोनी पलवल में निम्न विषयों पर भाषण प्रतियोगिता होगी युवा वर्ग में युवकों की भूमिका, स्वाधीनता आन्दोलन में आर्य समाज की भूमिका, दहेज की बुराई कानून से अथवा सामाजिक परिवर्तन से—आदि विषय होंगे।

—श्री महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट टंकारा के महामन्त्री श्री रामनाथ जी सहगल सूचित करते हैं कि अबसे हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज की पौत्री (स्व० श्री इन्द्र जी विद्यावाचस्पति की पुत्री) श्रीमती पुष्पा विद्यालंकृत तथा उनके पूज्य पति एवं गुरुकुल विश्वविद्यालय कांगड़ी के पूर्व मुख्याधिष्ठाता माननीय श्री धर्मवीर जी विद्यालंकार ने टंकारा में अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक विद्यालय के आचार्य पद का कार्यभार संभाला है संस्था में नवजीवन आ गया है। आर्य जनता आपका अभिवादन करती है।

—श्री वेदपाल जी तथा उनका पुत्र राजू वैज्ञानिक विदेशों में धर्म प्रचार के उपरान्त भारत में लौट आए हैं—न्यूयार्क आर्य समाज के मन्त्री माननीय श्री धर्मवीर जी जिज्ञासु ने अपने पत्र में वहां पर इन दोनों विद्वानों के कार्य-प्रचार की बड़ी प्रशंसा की है—

—आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा दिल्ली के मन्त्री श्री रामनाथ जी सहगल एक परिपत्र में सूचित करते हैं कि डी० ए० वी० शिक्षण संस्थाओं की ओर से संचालित सैंकड़ों स्कूलों के होते हुए तथा उनमें धर्म शिक्षा का पाठ्यक्रम निर्धारित होते हुए भी वांछित फलों की उपलब्धि नहीं हो रही इसका कारण उनके विचार में योग्य धर्म शिक्षकों का अभाव है अतः इस अभाव को दूर करने के लिए "डी. ए. वी. नैतिक शिक्षा संस्थान" की स्थापना का निश्चय किया है। इस सम्बन्ध में इच्छुक युवकों की जानकारी के लिए आरम्भिक सूचना निम्न प्रकार है। प्रवेशतिथि की घोषणा बाद में होगी। फिलहाल प्रवेशार्थी अपने नाम का पंजीकरण कराने के लिए सादे कागज पर अपना पूर्ण विवरण कार्यालय चित्रगुप्त रोड़ नई दिल्ली के पते पर भेजे। यह कार्य पूज्य स्वामी सत्यप्रकाश जी एवं प्रो० रत्नसिंह जी के संरक्षण में चलेगा। पाठ्यक्रम निर्धारित कर लिया गया है।

प्रवेशार्थी के लिये नियम

(१) प्रवेशार्थी की आयु २० वर्ष अथवा उससे अधिक आयु के सदाचारी दुर्व्यसन रहित होने चाहिए।

(२) योग्यता—किसी विश्वविद्यालय से संस्कृत हिन्दी व अंग्रेजी विषयों सहित स्नातक (ग्रेजुएट) अथवा अंग्रेजी भाषा में दक्षता प्राप्त किसी गुरुकुल का स्नातक या शास्त्री एम. ए. तथा आचार्य को वरीयता।

(३) अध्ययन काल केवल एक वर्ष होगा।

(४) छात्रावास में रहना अनिवार्य होगा।

(५) भोजन केवल निर्धन तथा मेधावी छात्रों को निशुल्क होगा।

(६) शिक्षा-आवास-पानी-बिजली इत्यादि की सुविधाएं सबके लिए निःशुल्क होंगी।

शोक समाचार

"सत्यार्थ प्रकाश के पढ़ने की रुचि युवकों तथा विद्यार्थियों में परीक्षा के माध्यम से लाने वाले विद्वान अध्यापक प्रचारक-व्यवस्थापक तथा दानी श्री देवव्रत जी धर्मेन्दु के निधन के उपरान्त अभी तक निम्न २ संस्थाओं से व्यक्तियों से तथा युवक समाजों और आर्यवीर दल के अधिकारियों से शोक प्रस्ताव सभा में प्राप्त हो रहे हैं इस सप्ताह में प्राप्त होने वाले पत्रों में दिल्ली की १६ समाजों, उत्तरप्रदेश की १४ समाजों, भोपाल-बम्बई आर्यवीर दल तथा रोहतक हरियाणा सभा हैं—

—आर्य समाज बिहार (चम्पारण) के प्रमुख समाजसेवी श्री विजय शर्मा के निधन पर शोक सभा का भरतप्रसाद चौधरी की अध्यक्षता में आयोजन।

—आर्य समाज जालौर के पुरोहित की अध्यक्षता में आर्यसमाज भजनगंज अजमेर के प्रधान पूरनचन्द शर्मा की मृत्यु पर शोक सभा सम्पन्न। प्रभु दिवंगत आत्मा को शान्ति दे।

आर्य वीर दल ही क्यों ?

सार्वदेशिक सभा ने आर्य वीर दल संगठन का प्रत्येक आर्य समाज तक विस्तार करने और इसे शक्तिशाली बनाने का आह्वान किया है। देखने में आ रहा है कि पिछले दो तीन वर्षों में आर्य वीर दल के कार्य में विशेष प्रगति हुई है। अनेक स्थानों पर शिविर लगे और दल के प्रति युवकों का आकर्षण बढ़ा। कुछ आर्य प्रतिनिधि सभाएं भी दल के कार्य को प्रोत्साहित कर रही हैं। आर्य वीर दल के प्रधान संचालक माननीय बाल दिवाकर हंस जी के नेतृत्व कौशल का ही यह परिणाम है कि आर्य वीर दल का कार्य निरन्तर प्रगति करता जा रहा है। आर्य समाज से सम्बन्धित युवा वर्ग ने अनेक अन्य नामों से संगठन बना रखे हैं। कुछ संगठन ऐसे भी हैं जो अपने नाम में आर्य शब्द का तो प्रयोग नहीं करते पर उनके कार्यक्रम आर्य समाज के अनुकूल हैं। ऐसे कार्यक्रम बहुधा समाजवादी और क्रान्तिकारी शब्दों द्वारा परिमाणित किये गये हैं। मैं समझता हूं कि वह सभी आर्य युवक संगठन अपनी-अपनी दृष्टि से आर्य समाज के कार्यक्रमों को लागू कर रहे हैं। परन्तु मैं यह स्पष्ट कर देना चाहता हूं कि आर्य वीर दल की अपनी विशेषता है, इसका कोई विकल्प नहीं है। दल की उत्पत्ति ही आर्य समाज की रक्षा के लिये हुई। शारीरिक, बौद्धिक एवं आत्मिक विकास का पूरा कार्यक्रम केवल मात्र दल के पास ही है। विदेशों मे भी जहां-जहां पर आर्य समाज पहुंचा है, उनमें से अधिकांश स्थानों पर आर्य वीर दल की भी स्थापना हो चुकी है। अतः आर्य प्रतिनिधि सभाओं तथा अन्य आर्य संस्थाओं एवं आर्यसमाजों को आर्य वीर दल नाम से ही युवकों का संगठन बनाना चाहिये।

ज्ञातव्य है कि सार्वदेशिक सभा द्वारा सार्वदेशिक आर्य वीर दल के प्रधान संचालक की नियुक्ति की जाती है, जो प्रान्तीय संचालकों की नियुक्ति करता है। यह समस्त प्रांतीय संचालक, सार्वदेशिक आर्य वीर दल समिति के सदस्य होते हैं। आर्य प्रतिनिधि सभा अपने प्रान्त में आर्य वीर दल अधिष्ठाता की नियुक्ति करती हैं, जो प्रांतीय आर्य वीर दल समिति का प्रधान होता है। आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री एवं कोषाध्यक्ष, प्रान्तीय आर्य वीर दल समिति के पदेन सदस्य होते हैं। प्रान्त में आर्य वीर दल के कार्य को संचालित करने का उत्तरदायित्व संयुक्त रूप से अधिष्ठाता और संचालक का होता है। इसी प्रकार (जिला) और नगर स्तर पर भी आर्य वीर दल समितियों का गठन होता है, जिसमें आर्य समाज के अधिकारियों का प्रतिनिधित्व रहता है। इस प्रकार यह देखा जा सकता है कि आर्य वीर दल एक मात्र मान्यता प्राप्त युवा संगठन है। और इसकी समितियों में प्रत्येक स्तर पर आर्य समाज का प्रतिनिधित्व ही नहीं, इसका नियन्त्रण भी है।

आर्य वीर दल की शक्ति पर ही आर्य समाज का भविष्य निर्भर करता है। युवा शक्ति की क्षमता का सही उपयोग करने पर ही भावी पीढ़ी का निर्माण होगा। इसके लिये यह आवश्यक है कि उनकी आकांक्षाओं का उचित मूल्यांकन किया जाये। दल की ओर से जो सामाजिक उत्थान के कार्यक्रम भी निर्धारित किये जायें वे मुख्य रूप से जाति भेद समाप्ति, अस्पृश्यता निवारण, प्रौढ़ शिक्षा, दहेज-उन्मूलन, नैतिक उत्थान तथा बेकारी व दरिद्रता उन्मूलन से सम्बन्धित होने चाहियें। पर उनकी विशेषता यह होगी कि उनमें मानव जीवन के श्रेष्ठ कर्तव्यों ब्रह्मयज्ञ व देवयज्ञ, वैदिक आदर्श पितृ-ऋण, देव ऋण तथा ऋषि-ऋण से उऋणता तथा आर्य साहित्य का भी परिचय दिया जायेगा।

—डा० आनन्द प्रकाश
उपमन्त्री सार्वदेशिक सभा

लाला सोहनलाल मेहरा का दुःखद देहावसान

अमृतसर १५ अक्तूबर को लाला सोहनलाल मेहरा का देहावसान हो गया। वे ५ दिन पूर्व अस्पताल में दाखिल किए गए अनेक उपचार करने पर भी लाला सोहनलाल जी को बचाया नहीं जा सका।

लाला सोहनलाल जी प्रसिद्ध व्यापारी और धार्मिक प्रवृत्ति के महानुभाव थे। जब देश के अन्दर इस्लामीकरण की लहर चल रही थी उस समय सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले ने उनको पत्र लिखकर धन संग्रह के लिए अपील की थी। लाला सोहनलाल जी ने अपने दोनों पुत्रों श्री नारायणदास मेहरा एवं श्री मोहनलाल मेहरा को आदेश दिया कि अपने व्यापारियों से धन संग्रह करके सार्वदेशिक सभा को भिजवाया जाय।

जब सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले व मन्त्री श्री ओम्प्रकाश त्यागी अमृतसर पहुंचे तो लाला सोहनलाल जी ने ५० हजार के चैक सार्वदेशिक सभा के अधिकारियों को दे दिए।

श्री सोहनलाल जी धार्मिक भावना से ओत-प्रोत तथा एक सामाजिक कार्यकर्ता थे। वह अपने पीछे दो पुत्र और एक पुत्री छोड़ गए हैं। उनकी धर्मपत्नी श्रीमती सत्यवती जी भी धार्मिक वृत्ति की महिला हैं।

१८ अक्तूबर १९८२ को आर्यसमाज मन्दिर लारेन्स रोड अमृतसर में एक विराट शोक सभा हुई जिसमें यज्ञ के अनन्तर भारी संख्या में अमृतसर के व्यापारियों, एवं गणमान्य महानुभावों ने श्रद्धांजलि अर्पित की। इस अवसर पर सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले ने भी दिवंगत आत्मा के प्रति भाव भीनी श्रद्धांजलि अर्पित की। नगर के प्रमुख जनों में श्री भोलानाथ दिलावरी मास्टर रामरखामल व प्रो० नन्दकिशोर जी ने भी दिवंगत आत्मा के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित की।

—प्रचार विभाग

R. N. 626/57 Licensed to post without prepayment, License No. 93 Post-in D.P.S.O. on 25-10-85

प्रचार सम्पन्न

—आर्य उपप्रतिनिधि सभा, जिला बुलन्दशहर, खुर्जा ने श्री धर्मेन्द्र शास्त्री की देख-रेख मे एक अक्तूबर से दस अक्तूबर तक निम्नलिखित ग्रामो मे वेद प्रचार किया। जिसका जनता पर काफी अच्छा प्रभाव रहा और भविष्य के लिए ग्रामीण जनता ने तन, मन, धन से सहयोग देने का आश्वासन दिया।

ग्राम मोहम्मदपुर, नेकपुर, जहांगीरपुर,
कपना और रोही।

—कैन्टूनमैन्ट आर्यसमाज लखनऊ ने यहां वेद प्रचार यज्ञ इत्यादि माननीय आचार्य धर्मसिंह जी तथा प० रामचरित्र जी आदि द्वारा सम्पन्न कराया वहां आर्य समाज की ओर से पूर्वी क्षेत्र में बाढ पीड़ित भाईयों को डबल रोटी, चाय, माचिस इत्यादि अन्य अति आवश्यक वस्तुएं तथा वस्त्रों से सहायता की।

—जिला आर्य उपप्रतिनिधि सभा जौनपुर ने प०क्षेमचन्द्र जी, श्री [illegible] नाथ शास्त्री तथा आर्य युवक [illegible] द्वारा नगर में २-१०-८५ को विचार [illegible] तथा प्रचार का आयोजन किया।

—आर्यसमाज समस्तीपुर रेलवे कालोनी में पं० सुरेश चन्द्र जी [illegible] द्वारा [illegible] ९-९-८५ से १५-९-८५ [illegible] से हुई।

—आर्यसमाज मन्दिर कृष्ण नगर दिल्ली की ओर से वेद सप्ताह का समापन समारोह आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के युवा प्रधान श्री सूर्य देव जी की अध्यक्षता मे हुआ। इस सप्ताह में यहां शिवकुमार जी शास्त्री, आचार्य नरेन्द्र, प० अशोक विद्यालंकार ने अपने-अपने विचार रखे यहां सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले का कालोनी के निवासियों की ओर से भव्य स्वागत किया गया।

[illegible] कविताए और निबन्ध पढे गए। इसमे स्वामी [illegible] प० नायक चन्द्र, श्री सुदेव जी और श्री [illegible] जी ने भाग लिया।

—आर्य समाज [illegible] रामपुर के तत्वावधान में समीप के ग्रामों में वेद प्रचार तथा यज्ञ का आयोजन बड़ी सफलता से किया [illegible] का भी प्रबन्ध किया गया।

दयानन्द मठ चम्बा में पुरोहित प्रशिक्षण शिविर श्री [illegible] शास्त्री विद्यावाचस्पति द्वारा सम्पन्न

चम्बा। दयानन्द मठ चम्बा के वार्षिकोत्सव के शुभवसर पर श्री पं० [illegible] विद्यावाचस्पति के आचार्यत्व में पुरोहित शिक्षा प्रशिक्षण शिविर सानन्द सम्पन्न हुआ। शिविर में महाराष्ट्र और हरियाणा, हिमाचल के छात्रों ने भाग लिया। उपाधि वितरण-समारोह श्री स्वामी सर्वानन्द जी की अध्यक्षता में तथा श्री वीरेन्द्र जी प्रधान पंजाब आर्य प्रतिनिधि सभा, श्री बालदिवाकर हंस प्रचार संचालक सार्वदेशिक आर्य वीर दल तपोनिष्ठ, स्वामी ओमानन्द सरस्वती, कु० [illegible] प्रभावती देवी के सानिध्य में सम्पन्न हुआ। —समाचारदाता

सार्वदेशिक प्रेस, [illegible] नई दिल्ली में मुद्रित [illegible] सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा [illegible] दयानन्द भवन, नई दिल्ली-१ से प्रकाशित।

ओ३म्

सार्वदेशिक

साप्ताहिक

सृष्टिसम्वत् १९७२९४९०… सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र | दयानन्दाब्द १६१ दूरभाष २७४७७१
वर्ष २० अङ्क … कार्तिक कृ० ४ सं० २०४२ रविवार ३ नवम्बर १९८५ | वार्षिक मूल्य २०) एक प्रति ५० पैसे

इस्लामीकरण की लहर का करारा जवाब

नव मुस्लिम राजपूतों की शुद्धि

अपने पूर्वजों की बिरादरी में लौटे राजपूतों का स्वागत

राष्ट्र धर्म की रक्षा करो : श्री शालवाले का आह्वान

हाथरस तहसील से २० किलोमीटर दूर मलहैपुर गाव में २१ अक्टूबर को भिन्न-भिन्न क्षेत्रो के नव मुस्लिम राजपूतों के सामूहिक शुद्धि संस्कार के अवसर पर सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री राम गोपाल शालवाले ने वैदिक धर्म को राष्ट्रधर्म की संज्ञा देते हुए कहा कि क्षेत्र के सभी राजपूत भाई राणा प्रताप और नैपाल नरेश के वशज हैं। अत: देश भर की हिन्दू बिरादरी की ओर से मैं आप लोगों का स्वागत करता हू।

इस पुनीत अवसर पर हर्ष और उल्लास के वातावरण मे आबाल वृद्ध राजपूत भाइयो को यज्ञोपवीत पहनाए गए।

श्री शालवाले ने अपने भाषण को जारी रखते हुए कहा कि छत्रपति शिवाजी महाराज को यज्ञोपवीत के तीन धागो को प्राप्त करने के लिए काशी के पण्डितो को ७ करोड रुपया दक्षिणा मे देना पड़ा था किन्तु आज महर्षि दयानन्द की कृपा से वैदिक धर्म के दरवाजे खोल दिए हैं और बिना दक्षिणा के प० धर्मेन्द्र जी शास्त्री ने आप लोगो को यज्ञोपवीत देकर वैदिक धर्म मे दीक्षित किया है।

उन्होने कहा कि आर्य समाज विदेशो से आ रहे पेट्रो डालर का करारा जवाब देने की क्षमता रखता है। राजपूत भाइयो से उन्होंने कहा कि आप प्रतिज्ञा करो कि इस्लामी करण की विदेशी लहर का जवाब देकर आप भारत माता के राष्ट्रधर्म की रक्षा करोगे। इस अवसर पर लगभग ८० परिवारो के नव मुस्लिम राजपूतों के मुखियों ने शुद्ध होकर वैदिक धर्म मे प्रवेश किया।

इस अवसर पर दूर-दूर से आर्य समाज तथा हिन्दू जाति के हितैषी भारी सख्या मे उपस्थित थे। सबने अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द द्वारा चलाए गए शुद्धि आन्दोलन को जारी रखने का व्रत लिया।

धर्म रक्षा महा अभियान का सुदर्शन चक्र

७० मूले जाटों की शुद्धि

समालखा। दिनांक १६ १० ८५ को ग्राम बसौदी जिला सोनीपत हरियाणा में सामूहिक यज्ञ के अवसर पर वहां के मूले जाटों ने स्वेच्छा से आर्यसमाज मन्दिर में वैदिक धर्म ग्रहण किया ग्राम बसौदी के ७० मूले जाटों ने इस्लाम मत त्याग कर श्री सेवानन्द सरस्वती की अध्यक्षता में पुन वैदिक धर्म स्वीकार किया। आर्यसमाज सेवा भारती तथा अखिल भारतीय शुद्धि सभा एव शुद्धि सरक्षणीय समिति द्वारा उक्त कार्य सम्पन्न हुआ तथा उनको रोटी और बेटी का परस्पर सम्बन्ध स्थापित किया गया। साथ ही साथ उन्हे अपने मध्य सामाजिक मर्यादा दिखाई गई इस अवसर एक प्रतिभोज का भी आयोजन किया गया तथा इसके पश्चात् उन्हें वैदिक साहित्य भी दिया गया इस सम्बन्ध में सबसे बडा सहयोग मास्टर सुखबीरसिंह, श्री … श्री दीपचन्द शर्मा एव श्री …लाल आदि का रहा।

आर्यसमाज बडा बाजार कलकत्ता में शुद्धि समारोह

भारत से बाहर आर्यसमाज

हमारी नेपाल की चिट्ठी

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से विदेश प्रचार को ध्यान रखते हुए नेपाल में आर्य समाज के प्रसार हेतु श्री प्रेमनारायण उपाध्यायजी को प्रचारक नियुक्त कियाहै। उनके बारेमें पत्र अविकल रूप से प्रकाशित किया जा रहा है।

सेवा में

श्रीयुत रामगोपाल वानप्रस्थ जी
प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा,
महर्षि दयानन्द भवन नई दिल्ली

नमस्ते,

श्रीमन् आपने प्रेम नारायण उपाध्याय जी को नेपाल प्रचार के लिए प्रचारक नियुक्त कर बहुत उपकार किया है। जिसके लिए मैंने अनुसंशा भी की थी।

इन्होंने अपना कार्य प्रारम्भ कर दिया है। अभी वे थोड़ा अस्वस्थ हो गये हैं तो भी मुझसे मिलकर कार्यक्रमों के विषयमें विचार-विमर्श करते हैं। अभी मैंने चम्पारण जिला आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में नेपाल की चार-पांच आर्यसमाजों में चार आदमियों की टोली द्वारा वेद प्रचार सप्ताह के कार्यक्रम को सम्पन्न कराया एवं इसमें श्री पं० प्रेमनारायण उपाध्याय का भी पूर्ण सहयोग रहा। बीरगंज आर्य समाज का साप्ताहिक सत्संग निरन्तर चल रहा है। झूलन मेला के अवसर पर भी वैदिक प्रचार सम्पन्न हुआ था। श्री उपाध्याय जी श्री ठाकुर वीरेन्द्र जी गाजीपुर व रामचन्द्र नैपाली के नेतृत्व में उपरोक्त कार्यक्रम सम्पन्न हुए।

अभी भी उपाध्याय जी के साथ एक भजनीक की आवश्यकता बहुत अनुभव की जा रही है। उसकी व्यवस्था करनी होगी बीरगंज में आगामी दिसम्बर मास में नैपाली आर्यसमाजों का एक सम्मेलन आयोजित करने का विचार हो रहा है जिसमें आपकी उपस्थिति आवश्यक होगी। नैपाली "आर्य प्रतिनिधि सभा" का पुनर्गठन करना होगा। इसके आयोजन के विषय में उचित समय का विचार हो रहा है, आपका सुझाव भी जरूरी है। अस्तु।

'बिहार आर्य प्रतिनिधि सभा" का वार्षिक निर्वाचन का दृश्य पटना में देखकर मन खिन्न हो गया था। आपने कार्यवाह समिति बनाकर ठीक ही किया अन्यथा वहां स्थिति खराब हो जाती। मैंने बहुत पहले सभा के सामने प्रस्ताव रखा था कि "प्रतिनिधि सभा" का निर्वाचन उत्तर प्रदेश के समान बिहार राज्य में विभिन्न स्थानों पर हो। मैंने चम्पारण जिला सभा की ओर से निमन्त्रण भी दिया था कि बेतिया में यह व्यवस्था हम लोग कर लेंगे। किन्तु पटना के महन्त प्रवृति के अधिकारियों को यह अच्छा नहीं लगा तथा बेतिया से यह कार्यक्रम स्थगित कराकर पटना में यह रखा गया।

इस प्रकार ही यदि पटना में अहम से भरे अधिकारियों की प्रेरणा पर वहीं चुनाव होते रहे तो उनमें असभ्य प्रवृतियां और बढ़ेंगी। इन उपरोक्त बुराईयों पर अंकुश हेतु यदि विभिन्न स्थानों पर चुनाव कराये जायें तथा वातावरण की शुद्ध रखा जावे तो आर्य समाज के उद्देश्यों की पूर्ति में प्रतिनिधि सभा अधिक कल्याणकारी भूमिका अदा कर सकेगी। तथा इस विषय में यदि आवश्यक समझा जाये तो आप सार्वदेशिक सभा की ओर से आदेश भी पारित करावे ताकि बिहार राज्य प्रतिनिधि सभा का सुधार हो जाये।

मैं अपना सुझाव डा० अखिलेश शरण जी के पास भी भेज रहा हूं। आशा है आप सभी महानुभावों के इस विषय में विचार एवं सहयोग इस रोग को शीघ्र दूर करवायेंगे ऐसी आशा है।

चम्पारण जिला के आर्य लोगों की ओर से व मेरी ओर से आप की आपके दीर्घ स्वस्थ जीवन के लिए ईश्वर से प्रार्थना है कि आप हम सबके मार्ग दर्शक स्वस्थ होकर बने रहे।

नेपाल के भीतर वैदिक प्रचार की वृद्धि होती रहे, आपकी मंगल कामनाएं एवं सहयोग सदैव अपेक्षित है। आशा है आगामी सम्भावित सम्मेलन जो नेपाल में होगा, दर्शन अवश्य देंगे। विशेष मार्गदर्शन देते रहेंगे।

भवदीय
बी० के० शास्त्री
मन्त्री आर्य समाज
[illegible] जि० पूर्वी चम्पारण

स्वर्गीया माता सरस्वती देवी का शान्ति यज्ञ सम्पन्न

सार्वदेशिक सभा के महामन्त्री श्री ओम्प्रकाश त्यागी द्वारा हार्दिक श्रद्धांजलि

दस सहस्र रुपए की—सरस्वती देवी स्थिर-निधि सार्वदेशिक सभा में स्थापित

गाजियाबाद १४ अक्तूबर।

आर्य समाज मन्दिर नगर गाजियाबाद में स्वनाम धन्य श्री पं० जनार्दन शर्मा की धर्मपत्नि स्व० श्रीमती सरस्वती देवी आर्या का (चौथा) शान्ति यज्ञ भारी जन समूह एवं स्त्रियों की उपस्थिति में सम्पन्न हुआ। विशिष्ट वक्ताओं में सर्वश्री ओम्प्रकाश त्यागी महामन्त्री सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, श्री बालदिवाकर जी हंस प्रधान संचालक-सार्वदेशिक आर्य वीर दल, श्री मद्दयानन्द सन्यास आश्रम के आचार्य श्री स्वामी प्रेम जी सरस्वती, प्रो० रतनसिंह जी धर्माध्यक्ष दयानन्द विद्यालय विभाग प्रादेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा तथा अनेक दैनिक पत्रों के सम्पादकगण एवं आर्य नेताओं ने माता जी के कर्मकौशल की भूरि-भूरि प्रशंसा करते हुए उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की। प्रारम्भ में शान्ति यज्ञानुष्ठान श्री पं० ओमप्रकाश शास्त्री द्वारा विधिविधान से सम्पन्न कराया गया। दोनों पुत्रों क्रमशः श्री अमरनाथ जी एवं पं० विचित्र शर्मा अपनी देवियों सहित यजमान की भूमिका का सम्यक निर्वाह किया। इस अवसर पर सभी आर्यसमाजों को लगभग ११०० (एक हजार एक सौ रुपये का दान दिया और दस सहस्र रुपए की एक स्थिर निधि अपनी पूज्या माता सरस्वती देवी के नाम से सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा में स्थापित करने की घोषणा की जिसका ब्याज दयानन्द सन्यास आश्रम गाजियाबाद में स्थापित उपदेशक विद्यालय के छात्रों को छात्रवृत्ति के रूप में दिया जाता रहेगा।

—करुणाकर शास्त्री
गाजियाबाद

सम्पादकीय

भारत की शिक्षा-प्रणाली दोषपूर्ण है। (२)

भारत में शिक्षा संस्थायें भली प्रकार चल रही हैं, परन्तु इनमें से निकलने वाले विद्यार्थी कुछ साम्प्रदायिक हैं जो अपने वर्ग और भारत में उसके शासन की बात सोच रहे हैं। दूसरे वे बच्चे हैं जो विद्वता की दृष्टि से अच्छे हैं, परन्तु उनमें सदाचार संस्कार, देश-भक्ति बहुत कम हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि भारत के विद्यार्थी बड़ी संख्या में निकल रहे हैं। सभी में विद्या है, परन्तु संस्कारों का अभाव है और देश-भक्ति शून्य है। इसी कारण देश के विद्यार्थी स्वार्थ पूर्ण कार्यों में संलग्न है और देश के लिये समस्या बने हैं।

भारत के विद्यार्थियों के बल पर आज समूचे देश में प्रान्तवाद भाषावाद तथा स्वतन्त्र नारा का तांता गूंजा हुआ है। पंजाब में विद्यार्थियों ने ही वहां के ढांचे को बिगाड़ा है, नागालैण्ड, मिजोरम, मेघालय में भी यही अवस्था है और दक्षिण भारत भी ज्वालामुखी बना हुआ है और प्रत्येक प्रान्त की स्थिति व नारे भिन्न हैं। भारत इन प्रान्तों पर कैसे विश्वास करेगा कहने का तात्पर्य यह है कि समूचा देश एक विचित्र अवस्था में है और सरकार चिन्तित है। रास्ता दिखाई नहीं दे रहा है।

संसार के समस्त विद्वान् लोग इस बात को मानते हैं कि संसार प्रत्येक देश की शक्ति उसका नवयुवक तथा नवयुवतियां होती हैं, यदि नवयुवक नवयुवतियां ठीक प्रकार से बन जायें तो ठीक है अन्यथा भगवान के भरोसे पर देश को छोड़ा जा सकता है। भारत की स्थिति इसी प्रकार की है।

भारत सरकार को देश की दृष्टि से यह निर्णय करना होगा कि देश को कैसे नवयुवक नवयुवतियां चाहियें। ऐसा होने पर ही वह देश की शिक्षा-पद्धति चालू कर सकती है। संसार के विद्वान मानते हैं कि देश को सुचारू रूप से चलाने के लिये सदाचारी, संस्कारी, देश-भक्त तथा विद्वान नवयुवक नवयुवतियां चाहियें। इसकी घोषणा सरकार को तुरन्त करनी होगी, ताकि शिक्षा में लगे लोग अपने ध्येय को पहिचानें। इस प्रकार के विद्यार्थियों को ही शिक्षा संस्थायें अपने यहां तैयार करें।

भारत में अल्प वर्ग और बहुसंख्य वर्ग न होकर एक ही कानून सभी संस्थाओं के लिये हो। सभी को लिख दिया जाय कि इस प्रकार के नवयुवक नवयुवतियां तैयार करने होंगे। सभी को बोल दिया जाय कि जो पुस्तकें निर्धारित हैं वही पढ़ाई जाय। विद्वता के साथ में छूट हो सदाचार, संस्कार तथा देश-भक्ति की पुस्तकें सरकार बनावे, और प्रत्येक संस्था पर उन्हें लागू करें।

सदाचार में विद्यार्थी ईमानदार हों, संस्कार में विद्यार्थी संस्कार और भावनाओं से पूर्ण हों, और देश-भक्ति में विद्यार्थी देश का पूर्ण भक्त बने, परन्तु सरकार को घोषणा करनी होगी। स्कूलों में धर्म के नाम पर साम्प्रदायिकता उत्पन्न नहीं होने देगी। साम्प्रदायिकता ने देश का विभाजन कराया और वर्तमान समय में झगड़े चल रहे हैं। इसलिये इसे स्वीकार नहीं किया जायेगा। हां संस्कारों के नाम पर सरकार ऐसी पुस्तकें बनावें जिनमें संस्कारों के अतिरिक्त ऐसे धार्मिक नियम नैतिकता के नाम पर पढ़ाये जांय जिससे किसी का विरोध न हो।

विद्वता के क्षेत्र में सरकार को कानून बनाना चाहिये कि ऊंची शिक्षा लेने वाले और अपनी रोजी चलाने वाली शिक्षा हो। मैट्रिक तक सभी विद्यार्थी पढ़ें, परन्तु उसके बाद विशेष श्रेणी के बच्चे आगे जायें, और उससे कम के बच्चे अपने धन्धे की पढ़ाई करें। धन्धे की पढ़ाई करने के पश्चात् बच्चे जब निकलें तो सरकार उन्हें खड़ा करने का खर्चा दें।

देश-भक्ति के नाम पर सरकार देश का सही ढांचा उनके सम्मुख रखे। देश की आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक स्थिति पहले क्या थी, और आगे क्या होगी। देश के पहाड़ नदी, नाले आदि का वर्णन हो। कहने का तात्पर्य यह है कि बच्चे देश-भक्ति से पूर्ण बन जाये।

देश-भक्ति से पूर्ण बन जाने पर विद्यार्थियों को संसार का भी ज्ञान हो। अपने देश को सही बनाकर हम दूसरे देशों की उन्नति में सहायक हों। उनसे शिक्षा लें और जहां आवश्यकता पड़े अपने देश से दें। इसके पीछे—'वसुधैव कुटम्बकम' का नारा है।

जब हमारी शिक्षा-संस्थाएं अपने यहां से सदाचारी, सांस्कारिक देश-भक्त तथा विद्वान 'नवयुवक-नवयुवतियां' तैयार होंगी, तो फिर हमारी सरकार हिम्मत के साथ कहेगी कि हमारा देश एक है और सुरक्षित है। देश के बिखराव करने वाले नारे नहीं होंगे। फिर देश की शक्ति आगे बढ़ने लगेगी, और नवयुवकों-नवयुवतियों को ठीक करने पर नहीं लगेगी।

सरकार अपनी घोषणा के अनुसार शिक्षा-संस्थाओं का निरीक्षण कराये, और गलत चलने वाली संस्थाओं को ठीक करें, और साम्प्रदायिकता पैदा करने वाली संस्थाओं को बन्द करावें। ऐसा होने पर देश अपनी प्राचीन परम्परा पर पहुंच जायेगा।

लोग हृदय से शिक्षा-संस्थाओं का आदर करेंगे, और उनका सहयोग करेंगे। सरकार भी इन्हें अपनी समस्त योजना का आधार मानेगी, और इनके संचालनार्थ सरकार अपने धन की शक्ति लगावेगी। यहीं से उसे देश के नवयुवक-नवयुतियां, शिक्षा-संस्थायें फिर हमारे देश की मूलाधार होंगी। प्रत्येक नागरिक इन पर गर्व करेगा। इनकी सफलता में वह अपनी सफलता मानेगा।

आशा है सरकार मेरे इस सुझाव पर ध्यान देकर अनुगृहीत करेगी।

—ओम्प्रकाश त्यागी
सम्पादक

आर्य सत्याग्रह हैदराबाद के बारे में सूचना

१९३८ ई० में हैदराबाद आर्य सत्याग्रह में भाग लेने वालों के लिए भारत सरकार के गृह मन्त्रालय ने स्वाधीनता से नानी सम्मान दिए जाने की स्वीकृति दे दी है। पूरी योग्यता के स्पष्टीकरण के लिए यह सभा प्रयत्न कर रही है। इस योग्यता के अन्तर्गत पेन्शन के अतिरिक्त अन्य भी अनेक प्रकार की सुविधाएं केन्द्र और राज्य सरकार द्वारा समय-समय पर घोषित हो चुकी हैं। आवेदन कर्त्ताओं को उसका पूरा विवरण मिल सकेगा। गृह मन्त्रालय के आदेश से यह लगता है कि केन्द्र के अलावा राज्य सरकारें भी ऐसे लोगों को पेंशन तथा सुविधाएं देंगी। इसका पता वहां से करना चाहिए। भारत सरकार के गृह मन्त्रालय के अन्तर्गत स्वाधीनता सेनानी सम्मान प्रभाग के निदेशक को लोकनारायण भवन, सुजान-सिंह पार्क के निकट, नई दिल्ली के पते पर आवेदन पत्र भेजना चाहिए।

इस सम्बन्ध में की गई कार्यवाई और उसके परिणामों से इस सभा को कृपया अवगत कराते रहें। जिससे उचित परामर्श दिया जा सके। कारावास और दण्ड के आदेश की प्रतिलिपि और जेल में रहने का प्रमाण पत्र (उसकी सत्यापित प्रतिलिपि) आवेदन करते समय सरकार को अवश्य भेजी जावे। सम्बन्धित आवेदन फार्म सम्बन्धित कार्यालयों से प्राप्त करके भेजें।

—ब्रह्मदत्त स्नातक
अवै० प्रेस एवं जनसम्पर्क सलाहकार

पोप की भारत यात्रा पर भू० पू० प्रधानमन्त्री चौधरी चरणसिंह की प्रतिक्रिया

ईसाइयों के महान् गुरु पोपपाल कुछ दिनों में भारत आ रहे हैं। साधारण परिस्थितियों में भारत की गैर ईसाई जनता प्रत्येक दूसरे धर्म के नेताओं का स्वागत करती रही है किन्तु दुर्भाग्य यह कि हमारा परीक्षण इन गैर हिन्दू नेताओं का कुछ अच्छा नहीं। जो भी आया किसी गर्ज से आया और गर्ज यह कि किसी ने अपने धन का लालच देकर इस देश की गरीब जनता का धर्म खरीदने का प्रयास किया तो किसी ने तलवार से हिन्दुओं को पतित किया। किसी में यह हिम्मत न हुई कि दलील से किसी हिन्दू को कायल करे कि वह अपना विश्वास छोड़ कर किसी दूसरे का स्वीकार करे। केवल इसके कि हिन्दुत्व वैदिक सिद्धान्तों पर आधारित है जिसे आज तक संसार का बुद्धिमान से बुद्धिमान व्यक्ति भी गलत सिद्ध नहीं कर सका। थोड़े शब्दों में कहना हो तो कहा जाएगा हिन्दू धर्म ऊलिक लैला की कहानियाँ या हलाकू या चंगेज खां के अत्याचारों पर आधारित नहीं। यह ही कारण है कि दूसरे हमारी रूढ़िवादी कमजोरियों का लाभ उठाते हुए हमारे भाइयों को गुमराह करते रहे हैं। जो कुछ भी हो इससे इन्कार किया जा सकेगा कि हमने भी अपने समाज में ऐसी परिस्थितियां उत्पन्न कर दी हैं कि आज भी जब कि सारी पिछड़ी दुनिया में जागृति प्रकट हो रही है हमारे यहां आज भी छूत-अछूत की समस्या विद्यमान है। एक बात हमें नहीं भूलनी चाहिए कि जब तक हमारे समाज में से यह लानत नहीं जाती तब तक गैर हमारी इस कमजोरी का लाभ उठाते रहेंगे और हमारी ओर से किसी प्रकार का वावेला किसी पर प्रभाव न कर सकेगा। जिन्होंने हिन्दुओं को नीचा दिखाने का पूरा निश्चय कर रखा है उन्होंने हमारी कमजोरियों का लाभ उठाना ही है।

हजरत पोप के आगमन पर कई प्रश्न खड़े हो रहे हैं। सबसे बड़ा यह कि वह किस लिए आ रहे हैं? क्या आपका दौरा केवल ईसाइयत को संसार के लोगों में लोकप्रिय बनाने के लिए है या अधिक से अधिक लोगों को अपना धर्म त्यागने के लिए तैयार करने को है। अगर तो यह और यह केवल ईसाइयत के प्रचार करने के लिए होता तो कोई भारतीय इस पर आपत्ति न करता क्योंकि हिन्दुत्व को एशिया के किसी धर्म से कोई खतरा नहीं हो सकता। किन्तु इस बात से इन्कार करना कठिन है कि हजरत पोप केवल ईसाइयत की विशेषताएं अपने अनुयायियों को वर्णन करने आ रहे हैं। वह तो इन शक्तियों के हाथ मजबूत करने आ रहे हैं जो इस देश के हिन्दुओं को पतित करने में सरगर्म हैं। आज से कई वर्ष पहले कि जब इस वर्तमान पोप के पहले पोप भारत आये तो इन्हें बताया गया कि इतने हिन्दुओं को पतित करके ईसाइयत में सम्मिलित किया गया। क्या अजीब जो इनको भी बताया जाये कि इतने वर्षों में भारत में इतने लोगों को ईसाई बनाया गया है। और इस काम में भारतीय और विदेशी ईसाई पादरियों ने यह योगदान दिया है।

ईसाई देशी और विदेशी पादरियों की सरगर्मियों पर भूतपूर्व प्रधानमन्त्री चौ० चरणसिंह ने एक वक्तव्य जारी किया है जिसे पूरे ध्यान से पढ़ने की आवश्यकता है। अपने वक्तव्य में दूसरी बातों के अलावा आपने यह भी कहा है कि इन पादरियों का प्रमुख काम हमारे लोगों की गरीबी और निरक्षरता का लाभ उठाते हुए इनको अपने धर्म से छीनना है। इस समय शैक्षणिक और दूसरे सांस्कृतिक ढंगों को प्रयोग करके लोगों के विश्वास से हटाया जा रहा है। आगे चलकर आपने कहा है कि आपको इस बात से अत्यन्त चिंता हो रही है कि देश में गैर भारतीय ईसाई पादरियों की संख्या में भारी मात्रा में बढ़ोत्तरी हो रही है विशेषतः ग्रामीण क्षेत्रों में और सीमावर्ती क्षेत्रों में। आपने यह भी बताया कि जब अंग्रेज भारत से चले गये तो पाकिस्तान और ब्रह्मा की सरकारों ने अपने यहां से चले जाने को कह दिया। और इसी प्रकार चीन में भी जब कम्युनिस्टों ने मार्शल चांग काई शेक से शासन हस्तगत किया तो उन्होंने इन ईसाई पादरियों का बिस्तर बोरिया गोल कर दिया। सचाई यह है कि आज संसार की कोई सरकार पादरियों को इस बात की आज्ञा नहीं दे रही कि वे इनके निवासियों का धर्म परिवर्तन करें किन्तु हमारा तो बाबा आदम ही निराला है। हमारे सीने बड़े चौड़े हैं। सन् १९४७ में जब अंग्रेजों ने पण्डित जवाहरलाल के हाथ में राज सौंपा, इनके लिये हमारी राष्ट्रीय धरोहर का कोई महत्व न था। हमारे राष्ट्रीय सिद्धान्तों की इनके लिए कोई विशेषता न थी। और तो और इस देश का नाम भारत या हिन्दुस्तान भी इनके कानों में अखरता था, जब तक इसके साथ इण्डिया नत्थी न किया गया। इसलिए यहां से इन विदेशी पादरियों को न निकाला गया हालांकि इण्डियन क्रिश्चियन एसोसियेशन ने नियमानुसार प्रस्ताव पास करके भारत सरकार से आवेदन किया था कि इन विदेशी पादरियों को यहां से चलता किया जाए। इतना होता तब भी था, पण्डित जवाहरलाल नेहरू ने तो एक ईसाई पादरी डा० एल्विन को कबाइली मामलों का भारत सरकार का सलाहकार नियुक्त कर दिया। इनके अधिकार में आसाम और नेफा की सीमायें कर दी गईं। डाक्टर एल्विन ने इन क्षेत्रों में, ईसाईयत फैलाने का जो प्रयास किया था इन सबके परिणाम हमारे सम्मुख हैं। पण्डित नेहरू के दिनों से हमारे पूर्वी सीमावर्ती क्षेत्रों में ईसाइयों को घूमने-फिरने की खुली छूट है और हमें आश्चर्य न होना चाहिए कि यदि कुछ दिन बाद ही न केवल पूर्ण स्वतन्त्रता की मांग कर दें बल्कि तलवार के जोर से इसे प्राप्त करने का प्रयास भी करें। इस बात पर भी किसी को आश्चर्य न होना चाहिए यदि यह भी सिद्ध हो जाए कि इन विदेशी पादरियों में से कुछ जासूसी में संलग्न हैं। अभी ही इन्होंने केरल प्रान्त में हमारे राष्ट्रीय गीत की भाषा पर ऐतराज कर दिया है।

अपने वक्तव्य को जारी रखते हुए चौधरी साहब ने कहा है कि "गांधीजी की हत्या के तीन महीने बाद तमिलनाडु के हमारे अनन्त शायम अयंगर जो कि संस्कृत के उच्च कोटि के विद्वान थे ने कांस्टीच्यूट असेम्बली में एक प्रस्ताव पेश किया था कि किसी ऐसी संस्था को जो साम्प्रदायिक है या जिसके द्वार किसी ऐसी संस्था की जो साम्प्रदायिक है या जिसके द्वार किसी खास सम्प्रदाय जाति के लोगों तक ही सीमित हैं उन्हें राजनैतिक मैदान में आने की आज्ञा न हो। इस प्रस्ताव का स्वयं पण्डित जवाहर लाल नेहरू ने अनुमोदन किया था और बाद में इसी असेम्बली में स्वीकार भी कराया था। लेकिन जैसा दूसरे मामलों में हुआ इसमें भी पण्डित जवाहरलाल नेहरू इतनी हिम्मत न कर सके कि इसे व्यवहारिक रूप दें। इसके विपरीत शासक पार्टी ने वह पग उठाया है जिससे देश को खण्डित करने वाली शक्तियों का प्रोत्साहन हुए बजाय इसका साहस तोड़ा जाए।"

कौन न मानेगा कि चौधरी साहब ने जो कुछ कहा है उसका एक एक अक्षर सत्य है। हमारी कांग्रेस पार्टी ने आज तक यह समझा ही नहीं कि वह जिन शक्तियों का प्रोत्साहन कर रही है। इनके इरादे

(शेष पृष्ठ १० पर)

रजनीशवाद की समाप्ति

–विजय

(गतांक से आगे)

पिछले लेख में आचार्य रजनीश के वे विचार पाठकों के सामने रखे थे, जो वह भारतीय और विश्व के महापुरुषों और माननीय नेताओं के बारे में रखते हैं और यह भी बताया था कि किस तरह समलैंगिकता के अभिशाप को धर्म की देन वह मानते हैं।

जो लोग यह समझते हैं कि आचार्य रजनीश भगवान से मिलकर स्वयं भगवान हो गये हैं, उनकी जानकारी के लिए प्रीतीश नन्दी से उनकी बातचीत के कुछ अंश 'इलस्ट्रेटिड वीकली' से यहां प्रस्तुत है। आचार्य रजनीश कहते हैं—

मैं कभी ब्रह्मचारी नहीं रहा। जो लोग मेरे बारे में ऐसा समझते हैं, वे मूर्ख हैं। मैं हमेशा औरतों को प्यार करता रहा हूं। शायद इतनी औरतों से प्यार मैंने किया है, जितना और किसी ने नहीं किया होगा। आप मेरी दाढ़ी देखिये। यह इतनी जल्दी इसलिए सफेद हो गई है, क्योंकि केवल १० वर्षों में ही २०० वर्षों के जीवन का आनन्द मैंने ले लिया है। परन्तु समलैंगिकता से मैं सदा दूर रहा हूं।"

सैक्स के सम्बन्ध में आचार्य रजनीश फरमाते हैं:—

"सैक्स के बारे में परीक्षाओं वाली कोई बात है ही नहीं। सैक्स पूर्णतः शारीरिक है। उदाहरण के रूप में कोई जंगली जानवर जंगल में समलैंगिक नहीं होता। लेकिन अगर चिड़ियाघर में तमाम नर जानवर हों और कोई मादा वहां न हो, तो जानवर समलैंगिकता का शिकार हो जाते हैं। तुम्हारी दुनिया भी एक चिड़ियाघर है, खुला जंगल नहीं, खुले जंगल में कोई जानवर समलैंगिकता नहीं करता। तमाम धर्म ब्रह्मचर्य का शोर तो मचाते हैं, मगर यह कोई नहीं सोचता कि ब्रह्मचर्य सम्भव भी है या नहीं।"

भगवान के अस्तित्व को आचार्य रजनीश कहां तक और कितना मानते हैं, इस बारे में भी हम उनके विचार यहां प्रस्तुत करना चाहते हैं। मदर टेरेसा की चर्चा करते हुए प्रीतीश नन्दी से आचार्य रजनीश ने कहा:—

'मैंने उनकी भर्त्सना की। उन्होंने मुझे एक पत्र लिखा। अपने पत्र में उन्होंने लिखा कि मैं परमात्मा से प्रार्थना करती हूं कि वह तुम्हें क्षमा कर दे। अब यह वाक्य ही बिल्कुल अच्छा नजर आता है मगर मुझे नहीं। यह बात बिल्कुल वाहियात है। मैंने उन्हें उत्तर दिया -पहली बात यह लिखी कि मैं किसी भगवान को मानता ही नहीं, अतः आप उस भगवान से प्रार्थना करने वाली कौन होती है, जो है ही नहीं? कम से कम आपने मुझसे पूछा तो होता। दूसरी बात मैंने यह लिखी कि आप मेरी तरफ से प्रार्थना करने वाली कौन होती हैं। मैंने आपको यह अधिकार कभी नहीं दिया। मैंने कोई पाप नहीं किया कि परमात्मा मुझे माफ करे। अगर उसे मेरी जरूरत है तो वह मुझसे माफी मांगेगा।"

परमात्मा के अस्तित्व को नकारते हुए आचार्य रजनीश ने प्रीतीश नन्दी को यह भी बताया कि मदर टेरेसा को मैंने यह भी लिखा कि—

"अगर परमात्मा ने ही हमें पैदा किया है और वह सर्वान्तर्यामी और सर्वव्यापी है, वह भूत, वर्तमान और भविष्य के बारे में सब कुछ जानता है तो उसे यह भी पता होगा कि दुनिया में हिरोशिमा और नागासाकी भी हैं, यह सब कुछ जानते हुए भी दुनिया उसने पैदा की। वह यह भी जानता है कि परमाणु युद्ध होगा और हथियारों के भंडार जमा होंगे। जिस दिन यह दुनिया उसने बनाई, उस दिन उसे यह भी मालूम होगा कि परमाणु युद्ध इस दुनिया में होगा और लाखों लोग उसमें मारे जायेंगे और लाखों लोगों को असहनीय कष्ट उठाने पड़ेंगे। क्या यही तुम्हारा परमात्मा है। मैंने मदर टेरेसा को लिखा कि तुम इन सब बातों का जवाब दो, वरना मैं तुम पर अदालत में मुकद्दमा चला दूंगा कि तुमने मेरी बगैर अनुमति के मेरी तरफ से परमात्मा से माफी मांगने का दुःसाहस कैसे किया?" मदर टैरेसा से अपनी नाराजगी पोप पर निकालने में भी आचार्य रजनीश नहीं चूके और प्रीतीश नन्दी से उन्होंने कहा—

"इस पोप से पहले वाले पोप समलैंगिकता के शिकार थे। यह सारे इटली को मालूम है। पोप बनने से पहले वह एक पादरी थे और सारे मिलान को यह बात मालूम है, क्योंकि अक्सर वह एक समलैंगिक लड़के के साथ घूमा करते थे।"

आचार्य रजनीश का कहना है कि वह चुम्बन के विरुद्ध हैं, अतः जब उनसे पूछा गया कि आप चुम्बन को आखिर रोक कैसे सकते हैं; तो आचार्य रजनीश ने फरमाया कि:—

"रोक सकते हैं। कई ऐसे तरीके हैं, जिनसे यह कमी पूरी हो सकती है। औरत का तो सारा शरीर ही कामुकता से भरपूर होता है। उसके किसी भी अंग से आप खेल सकते हैं। यह तो एक विचित्र वाद्य यन्त्र है। वात्स्यायन को यह बात ५००० वर्ष पहले मालूम हो गई थी, जब उसने अपना कामसूत्र लिखा था। वैसे कई कबीले-एस्कीमो आदि ऐसे भी हैं, जो चुम्बन नहीं लेते आपस में एक-दूसरे की नाक से नाक रगड़ते हैं।"

जब आचार्य रजनीश को पूछा गया कि यह अफवाह कहां तक सही है कि आप अमरीका छोड़कर आस्ट्रेलिया जा रहे हैं, तो उन्होंने कहा:—

"यह बात तो अमरीका वालों के सोचने की है। वैसे किसी भी संख्या में औरतों से शादी मैं कर लूं, अमरीका वाले अमरीका से मुझे निकाल नहीं सकते। अगर वह समझदार हैं और अमरीका से मुझे निकालना ही चाहते हैं, तो उन्हें चाहिए कि वे ग्रीन कार्ड मुझे दे दें।"

आचार्य रजनीश के जासूसों के अड्डे जैसे आश्रम की चर्चा करते हुए प्रीतीश नन्दी लिखते हैं:—

"सारे आश्रम के चारों तरफ तारें लगी हुई हैं, जिनमें करंट हर समय दौड़ता रहता है। आदमी ने जरा भी हाथ लगाया नहीं और वह मरा नहीं। गहराई से अगर आप देखें तो हर समय हर तरफ से निगरानी आपकी होती रहती है, महान् गुरु की नजरों से कहीं कोई बच नहीं सकता।"

जो कुछ 'संडे आबजर्वर' में मार्क क्रिस्टेंसन ने रजनीशपुरम् के बारे में लिखा है, उसकी चर्चा हम अगले अङ्क करेंगे। (क्रमशः)

प्रश्नः महिलाओं पर अत्याचार का

—श्री युवराज

महिलाओं पर अधिकतर अत्याचार सामाजिक व्यवस्था का व्यवस्थित रूप न होने से और कुछ अत्याचार स्वयं महिलाओं द्वारा ही दहेज प्रथा को बढ़ावा देने के कारण होते हैं। कुछ स्वयं के प्रतिकूल आचरण के कारण तो कुछ दाम्पत्य जीवन में वर-वधू मेल-मिलाप न होने के कारण होते हैं। जो इस आधुनिक युग व आज की परिस्थिति के अनुकूल नहीं है।

वैसे महिलाओं पर निरन्तर बढ़ते अत्याचार को देखते हुए सरकार ने इन अत्याचारों को कम करने के लिए कई सराहनीय प्रयास किए हैं किन्तु जब तक स्वयं महिलाएं व सामाजिक कार्यकर्ता आगे आकर ऐसे कार्यों को सुलझाने में सहयोग न करें, तब तक ऐसे अव्यावहारिक अत्याचार-समाज-राष्ट्र में होते ही रहेंगे और स्थिति ज्यों की त्यों बनी रहेगी।

भारतीय महिलाओं की गौरवमयी कीर्ति से प्राचीन भारत के इतिहास के पृष्ठ भरे पड़े हैं और इस युग में भी कुछ अज्ञानी महिलाओं को छोड़ कर महिलाओं ने कई सराहनीय कार्य कर प्रत्येक क्षेत्र में पुरुष के साथ कदम से कदम मिला कर साथ दिया है।

महिलाएं आधुनिक समाज में अपने वर्ग की स्थिति का यथार्थ प्रतिबिम्ब हैं। आज नारी राजनैतिक, राष्ट्रीय क्या, अन्तर्राष्ट्रीय, साहित्य, विज्ञान आदि के क्षेत्रों में विराजमान दिखेंगी।

प्राचीन समय में गार्गी जैसी अनेक विद्वान महिलाएं हुई हैं लेकिन पुरुष के स्वार्थ ने शनैः-शनैः नारी को अपनी सम्पत्ति बना लिया। इसके भी कई कारण हैं। जैसे कि विदेशियों के आक्रमण आदि। नारी स्वभाव से ही पुरुष से शारीरिक तुलना में कुछ कमजोर रही है। इस कमजोरी का लाभ उठा कर पुरुष ने नारी को अपना गुलाम बना कर उसे घर की चार दीवारी के अन्दर बंद कर दिया। महिलाओं की इस दयनीय स्थिति का कारण मध्य युगीय मुगलकालीन शासन है। इस्लाम में नारी को पुरुष की सम्पत्ति ही माना गया है। जब वे भारत में शासक बनकर आए तो उन्होंने यहां भी अपनी संस्कृति का प्रचार साम, दाम, दण्ड भेदों की नीतियां द्वारा किया तथा भारतीय समाज पर अनैतिक घोर अत्याचार किए। बाल-विवाह, सती-प्रथा तथा पर्दा-प्रथा आदि कुरीतियां मुगलों की ही देन थीं या हैं। इतिहास इसका प्रत्यक्षदर्शी उदाहरण है कि मुगल शासक किसी भारतीय नारी की सुन्दरता और रूप की प्रशंसा सुन लेता था, तो वह सैन्य शक्ति के द्वारा उस राज्य पर अधिकार कर लेता था। परिणाम-स्वरूप महिला को अपने पति के साथ ही सती होना पड़ता था। इस प्रकार मध्य युग में महिलाओं की स्थिति अत्यन्त दयनीय व शोचनीय हो गई थी। इस युग में महिलाओं के प्रति हो रहे अत्याचारों में तात्या, झांसी की रानी आदि ने अपनी आवाज बुलन्द की तथा महिलाओं के हितों की रक्षा की।

देश के आधुनिक युग में प्रवेश के साथ ही राष्ट्रीयता की भावना जागृत हुई तथा महिलाओं की दयनीय स्थिति में कुछ सीमा तक परिवर्तन भी हुआ। हमारे राष्ट्र निर्माताओं और समाज-सुधारकों का मनोविचार स्त्रियों की दयनीय अवस्था तथा समाज में व्याप्त कुरीतियों की तरफ आकृष्ट हुआ। राजा राममोहनराय, बालगंगाधर तिलक, मदनमोहन मालवीय, महात्मा गांधी आदि महापुरुषों ने अपने अथक प्रयासों से समाज में व्याप्त कुरीतियों को समाप्त करने में अत्यधिक सहयोग प्रदान कर महिलाओं को शिक्षित करने के साथ-साथ प्रायः सभी क्षेत्रों में प्राथमिकता देकर पुरुषों के साथ कदम-से-कदम मिला कर चलने में समर्थ करवाया। इसी का परिणाम है कि आज महिलाएं पुरुष की सम्पत्ति या घर की चार-दीवार की शोभा न रहकर अपने कर्तव्य एवं अधिकारों के प्रति पूर्णरूपेण सचेत हैं।

यहां प्रस्तुत हैं कुछ महापुरुषों की भावाभिव्यक्तियां 'गेट' ने नारी के सन्दर्भ में कहा है। "नारी एक ईश्वरीय उपहार है, जिसे खो जाने पर ईश्वर से मनुष्य को उसकी क्षतिपूर्ति के लिए दया करें।" शेक्सपियर ने इस सम्बन्ध में कहा है, "सौन्दर्य से नारी अभिमानिनी बनती है, उत्तम गुणों से उसकी प्रशंसा होती है और लज्जाशील गुण देवी बना जाती है।" सुदर्शन ने अपने विचार व्यक्त करते हुए नारी पर यह कहा है; "नारी सब कुछ कर सकती है, लेकिन अपनी इच्छा के विरुद्ध प्रेम नहीं कर सकती।" क. मा. मुंशी ने अपने विचार कुछ इस प्रकार व्यक्त किए हैं:—स्त्री जाति में हर उम्र में मातृत्व का अंश रहता है और यही अंश उनमें सहिष्णुता, क्षमा और स्नेह को प्रेरित करता है, दुःख को कम करने की शक्ति आती है और इसी से उनका विनय इतना सरल हो जाता है।" गांधी जी ने महिलाओं के सन्दर्भ में कहा, स्त्रियों को अबला कहना उनका अपमान है। ऐसा कह कर पुरुष स्त्रियों के प्रति अन्याय ही करते हैं," प्रसाद ने इसी सन्दर्भ में अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा है, "नारी-जिसका इंधन है प्रेम श्रद्धा और सहयोग के ईंधन के बिना जाति कदम भी नहीं चलती और 'अरस्तु' ने इसी सन्दर्भ में यहां तक कह दिया कि स्त्री की उन्नति या अवनति भावे राष्ट्र की उन्नति या अवनति है।"

सैद्धान्तिक रूप में हम चाहे कुछ कहें या लिखें, किन्तु महिलाओं की परिस्थिति समस्या पूर्ण रूप में हल नहीं हो पाई है। आज भी अन्धविश्वासी अशिक्षा अस्वच्छता जैसे असामाजिक दोष अब तक अपने में घर किये बैठे हैं। आज भी उनकी शिक्षा व्यवस्था उनके प्रतिकूल अवस्था में है। आज महिला शिक्षा ग्रहण कर गृह लक्ष्मी बनने के स्थान पर गृह राक्षसी बन बैठती है। एक वक्त ऐसा भी था कि अपनी आर्थिक आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु अपने प्रिय व मां-बाप पर आश्रित रहना पड़ता था और किसी कारणवश कहीं विधवा हो गई तो समाज में उसके लिए कहीं कोई स्थान नहीं होता था, और उसे गृह कलंक समझ कर उसका मुख देखना भी लोग अपशकुन समझते थे। आज भी कुछ समाजों वर्गों में पर्दा प्रथा आवश्यक है, किन्तु कहने का तात्पर्य यह भी नहीं कि स्त्री पर्दा-प्रथा को छोड़कर अपने अंग-प्रत्यंग को बाजारों में अर्धनग्न रख कर तफरीह करें। आज भी पुरुषों पर कहीं कोई प्रतिबन्ध नहीं है वहीं महिलाओं पर कड़ा सामाजिक प्रतिबन्ध रखना हमारे समाज का एकांगी न्याय स्वतन्त्र मानवीय अधिकार के प्रतिकूल है; और इसी कारण आज हमारा सामाजिक अंग निरन्तर अन्दर ही अन्दर कमजोर होता जा रहा है। हमें आज आवश्यकता है अपनी बुद्धि को, समाज में व्याप्त बुराइयों को, मानवीय अधिकारों का, ध्यान में रखते हुए हर पहलुओं पर विचार विनिमय किया जा कर एक अच्छी सामाजिक एकता व व्यवस्था का परिचय दिया जाकर हम सभी को अपने सहयोग प्रदान किया जाना आवश्यक है।

आज सबसे बड़ी आवश्यकता इस बात की है कि उनके लिए उचित साहित्य तैयार किया जाए, जिसका स्त्री-समाज में पूर्ण प्रचार एवं प्रसार हो; जिससे कि उनके मानसपटल पर कुछ उचित प्रभाव पड़े। आजकल का साहित्य अवश्य ही एक न एक दिन इन्हें ले डूबेगा क्योंकि आजकल की महिलाएं, नवयुवतियां प्रेम भरे उपन्यासों, कहानियों और कुछ पत्रिकाओं को पढ़ कर अपने भावी जीवन की रूपरेखा तैयार कर लेती हैं, या तो करने की सोचती हैं। उदाहरणार्थ 'क' कहानी 'ख' नायिका ने प्रेम किया था; तो मैं भी ऐसा ही करूंगी आदि-आदि। यह विचार उनके हृदय में कहानी पढ़ते ही समायोजित हो जाते हैं। हजार में से शायद दस महिलाएं (050 प्रतिशत) ऐसी होंगी जोकि रामायण में सीता और अनसूया के जैसे शुभाचरणों की शिक्षा प्राप्त करने की रुचि दिखाती हैं। निःसन्देह हम कह सकते हैं कि भारतीय महिलाओं की कुरीतियां सत्साहित्य व सद्-शिक्षा के माध्यम से ही दूर करना सम्भव हो सकता है और इन्हीं के अनुकूल परिस्थिति बनाने से ही महिलाओं के ही नहीं अपितु पूरे समाज राष्ट्र की अव्यावहारिक कुरीतियों से पीछा छुड़ाया जा सकता है, जिसमें ही सब का कल्याण निहित है।

स्व० पं० देवव्रत जी धर्मेन्दु आर्योपदेशक का सफल जीवन

श्री बाबू राम शर्मा, (प्रबन्धक सार्वदेशिक प्रेस दिल्ली)

श्री पं० धर्मेन्दु जी का जन्म ११ अप्रैल १९०४ को जलालपुर कीकना जिला जेहलम में हुआ था। आपके पिता का नाम श्री मानकचन्द एवं माता का नाम श्रीमती रुक्मिणी देवी था। दुर्भाग्यवश छोटी अवस्था में ही माता पिता का देहान्त हो गया तो इनका लालन-पोषण नानी को ही करना पड़ा। परन्तु वह भी साथ नहीं दे सकीं और आप बिन पतवार की नौका के समान इधर-उधर भटकने लगे।

आपकी प्राथमिक शिक्षा चोटाला फिर संघोई तथा मिशन हाई स्कूल जेहलम में हुई। इसके बाद दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय लाहौर में उच्च शिक्षा प्राप्त की।

सन् १९२० में आपने सर्वप्रथम असहयोग आन्दोलन में भाग लिया। नेहरू ब्रिगेड की स्थापना की। चर्खा कातना, चक्की पीसना व बाण बटना प्रारम्भ किया ताकि जेल में कठिनाई न हो। सन् १९२४ में रेलवे गुड्स आफिस में नौकरी की परन्तु रिश्वत व भ्रष्टाचार देखकर दु:खी होकर नौकरी से त्याग पत्र दे दिया और स्वामी श्रद्धानन्द व महात्मा हंसराज के निर्देशन में आगरा के मलकानों की शुद्धि में योगदान देने लगे। मथुरा शताब्दी समारोह के प्रचार व धन-संग्रह में लगे रहे।

१९२६ में डी० ए० वी० स्कूल ठियोग के हैडमास्टरी पद पर नियुक्त हुए तथा सर मेलकम हेली गवर्नर पंजाब, महाराजा पटियाला आदि ने आपकी शिक्षण विधि की भूरि-भूरि प्रशंसा की। डी० ए० वी० स्कूल पछाद के भी २ वर्ष तक हैडमास्टर रहे।

सन् १९३१ में शिमला केन्द्र से ग्रामों में पैदल घूम-घूमकर वैदिक धर्म का प्रचार किया। विशिष्ठ व्याख्यानों द्वारा जनसाधारण में आर्यत्व की भावना को जगाया। बहुसंख्यक हिन्दुओं को ईसाई बनने से रोकना व आर्य जीवन में वापस लाना, तथा नारी विक्रय निवारण जैसे सफल कार्य करते रहे।

सन् १९३३ में आर्य कन्या पाठशाला चावड़ी बाजार दिल्ली की अध्यापिका श्रीमती जावित्री देवी के साथ विवाह करके अपने गृहस्थ धर्म में प्रवेश किया। श्रीमती जावित्री देवी बड़ी धर्मपरायण, सेवाव्रती, सरल व मधुर स्वभाव वाली महिला हैं। आप पंडित जी के सामाजिक दायित्वों की पूर्ति में सदैव सभी प्रकार से सहायक रही हैं। सन् १९५२ में ही श्री धर्मेन्दु जी डी० ए० वी० हायर सैकेण्डरी स्कूल चित्रगुप्त रोड नई दिल्ली के धर्माध्यक्ष पद पर नियुक्त हुए और १९६४ तक इस दायित्व का सुचारू रूप से निर्वाह करते रहे।

सन् १९३९ में हैदराबाद धर्म युद्ध की सफलता के लिए आर्य सत्याग्रह समिति के मन्त्री बनाये गये। इस कार्य में आप प्रातः ४ बजे से रात्रि १२ बजे तक व्यवस्था में जुटे रहे तथा अथक परिश्रम किया। सत्याग्रह की प्रबन्ध व्यवस्था की सुचारुता के लिए आपको आर्य नेताओं ने साधुवाद दिया और युद्ध मन्त्री की पदवी से सुशोभित किया। पंजाब हिन्दी रक्षा आन्दोलन के अवसर पर भी आपने सक्रिय होकर कार्य किया। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के स्वर्ण जयन्ती समारोह के अवसर पर नवम सार्वदेशिक आर्य महासम्मेलन की सुचारु प्रबन्ध व्यवस्था कर प्रचार मन्त्री के रूप में आपने श्रेय प्राप्त किया।

सन् १९७९ में बड़ी-बड़ी आर्यसमाजों ने वैदिक धर्म के सर्व प्रकारेण तन, मन, धन से सच्चे सेवक, वयोवृद्ध आर्य नेता श्री पं० देवव्रत जी धर्मेन्दु की हीरक जयन्ती भव्य समारोह पूर्वक पूरे वर्ष मनाई तथा ७५-७५ सत्यार्थ प्रकाश कई समाजों ने भेंट किये जो आपने आर्य युवक परिषद् के बड़े-बड़े परीक्षा केन्द्रों को नि:शुल्क वितरित कर दिये। इस अवसर पर लगभग ३५० पृष्ठों का सचित्र चलती फिरती संस्था के नाम से अभिनन्दन ग्रन्थ समारोह समिति की ओर से प्रकाशित किया गया एवं श्री ला० रामगोपाल जी वानप्रस्थ प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली की अध्यक्षता में आर्यसमाज दीवान हाल दिल्ली में उन्हीं के करकमलों द्वारा भेंट किया गया।

आप सारी आयु बच्चों के चरित्र निर्माण, धार्मिक विचार बनाने और उन्हें आर्यसमाज की ओर आकर्षित करने में लगे रहे। निर्धन, दीन हीन बच्चों को फीस छात्र वृत्ति आदि स्वयं व धनीमानी बहन भाईयों से दिलाते रहे। बच्चों की सुषुप्त शक्तियों को जागृत करने के लिए उनकी भिन्न-भिन्न प्रतियोगिताएं कराकर एवं उन्हें पारितोषिक आदि देकर सभी आयु उत्साहित करते रहे। सन् १९४० में आर्य कुमार सभा की रजत जयन्ती के अवसर पर आपको धर्मेन्दु अर्थात् धर्म के चन्द्रमा की उपाधि से सुशोभित किया गया।

लगभग २४ वर्ष पहले आपने दिल्ली में आर्य युवक परिषद् की और उसके माध्यम से सत्यार्थप्रकाश की परीक्षाएं संचालित की जिनमें उत्तीर्ण होकर देश भर के लाखों बच्चे एवं स्त्री पुरुष पारितोषिक प्राप्त करते हैं। यह संस्था अभी तक सुचारु रूप से चल रही है।

सार्वदेशिक प्रकाशन लिमिटेड द्वारा प्रकाशित दैनिक यज्ञ प्रकाश आपकी कृति है जो ३० लाख की संख्या में प्रचारित हो चुकी है और जिसकी देश देशान्तरों से सदैव मांग आती रहती है। इसके अतिरिक्त आपकी वेद सन्देश, वैदिक सूक्ति सुधा, महर्षि दयानन्द वचनामृत, सुनो बच्चों आदि पुस्तकें भी वैदिक साहित्य भण्डार में मूल्यवान वृद्धि है जिनके प्रकाशन का दायित्व एवं अधिकार आपने १२ हजार रुपये की स्थिर निधि कायम करके सार्वदेशिक सभा को सौंपा हुआ है।

आपने और आपकी धर्म पत्नी श्रीमती जावित्री देवी जी ने हजारों रुपये देकर भिन्न-भिन्न आर्य संस्थाओं में स्थिर निधियां स्थापित कर रखी हैं जिनके ब्याज से बालक बालिकाओं को प्रतिवर्ष श्रेणियों में प्रथम आने, धर्म शिक्षा में प्रथम आने तथा विभिन्न प्रतियोगिताओं में विजेताओं को पारितोषिक दिलाने की व्यवस्था कर रखी है। इसके अतिरिक्त आपने अपना गाजियाबाद का सुन्दर भवन सार्वदेशिक सभा नई दिल्ली को पहले ही वसीयत कर रखा है जिसकी आय से सभा आर्य युवक-युवतियों के लिए वैदिक सत्साहित्य प्रकाशित करती रहेगी। आपने आर्य अनाथालय दरियागंज दिल्ली में एक सुन्दर फ्लैट बनवाकर अनाथालय को दान कर दिया है।

आपने निजी पुस्तकालय के २०० धर्म ग्रन्थ आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के पुस्तकालय को दान कर दिये ताकि उपदेशक महानुभाव स्वाध्याय का लाभ उठा सकें।

सर्व-हुत-यज्ञ

इस आदर्श दम्पत्ति ने आडम्बर व दिखावा रहित सादा जीवन व्यतीत करते हुए अपने जीवन भर की परिश्रम एवं धर्मपूर्वक अर्जित चल-अचल सम्पूर्ण राशि चन्द्रवती चौधरी स्मारक ट्रस्ट सूरज पर्वत नई दिल्ली के नाम एक वसीयत कर दी जिसके ब्याज से छात्रावास चन्द्र आर्य विद्या मन्दिर की उच्च शिक्षा प्राप्त करने की इच्छुक कन्याओं को छात्र-वृत्ति देवें एवं उनके विवाहों में कन्या दान में उन

(शेष पृष्ठ ८ पर)

योग और स्वास्थ्य

डा० हरगोपालसिंह, हरिद्वार

मानव व्यक्तित्व पांच कोशों से बना हुआ है। अन्नमय, प्राणमय, मनोमय, विज्ञानमय और आनन्दमय कोश। इनमें से किसी में भी रोग उत्पन्न हो सकते हैं। इन विभिन्न कोशों के रोगों की चिकित्सा के लिये ऐलोपैथी, आयुर्वेद, होम्योपैथी और यूनानी केवल शरीर के माध्यम से ही विभिन्न दवायें देते हैं और अन्य कोशों तक दवाओं का असर पहुंचाकर उनकी प्रक्रियाओं की खराबी ठीक करते हैं। अतः इन पद्धतियों की अन्य कोशों के रोगों के लिये पहुंच परोक्ष है। इतना ही नहीं विभिन्न कोशों की चिकित्सा के लिये इनके पास अनुरूप विशिष्ट भिन्न-२ चिकित्सा भी नहीं हैं, बल्कि केवल अन्नमय कोश पर विशिष्ट प्रभावी चिकित्सा पद्धतियां लागू करता है जिससे समय, धन व कष्ट की बचत होती है और इतर प्रभावों की सम्भावना भी नहीं रहती।

व्यक्तित्व की कोशमय सम्पूर्णता को अपनी पहुंच में करने के लिये अष्टांग योग का विकास हुआ। अष्टांग योग पूर्ण योग है। जिसके आठ अंग इस प्रकार हैं। यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि। यम पांच हैं, नियम भी पांच हैं और आसन वैसे तो प्रत्येक योनि के अनुसार ८४ लाख हैं किन्तु इनमें ८४ आसन मुख्य हैं। यम नियमों के पालन से शरीर का बाह्य व्यवहार ठीक होता है और आसनों के अभ्यास से शरीर के आंतरिक दोष दूर होते हैं और स्वस्थता आती है। अर्थात् यम, नियम और आसनों के अभ्यास से अन्नमय कोश सीधे तौर पर स्वस्थ होता है। प्राणायाम तीन प्रकार के हैं—रेचक, पूरक और कुम्भक जिनके अभ्यास से प्राणमय कोश स्वच्छ और स्वस्थ होता है। प्रत्याहार में साधक मन को समस्त इन्द्रियों के प्रभाव से मुक्त कर लेता है और इन्द्रियों पर विजय प्राप्त कर लेता है। इससे मन की ग्रन्थियां भी सुलझ जाती हैं और इस प्रकार मनोमय कोश स्वस्थ हो जाता है। विज्ञानमय कोश में चित्त के बुद्धि द्वारा प्राप्त अब तक के समस्त ज्ञान-विज्ञान रहते हैं। इस क्षेत्र के गलत ज्ञान को शुद्ध करने से भ्रम और अज्ञान दूर हो जाते हैं। धारणा व ध्यान के अभ्यास से विज्ञानमय कोश दोष रहित हो जाता है और स्वस्थता प्राप्त होती है। अन्त में समाधि के अभ्यास से इन चारों कोशों में सामञ्जस्य पैदा होता है जिससे शांत, स्थिर व स्वस्थ आनन्द के क्षेत्र को व्यक्तित्व प्राप्त करता है। इस प्रकार योगाभ्यास द्वारा सम्पूर्ण मनुष्य को स्वास्थ्य लाभ होता है। सर्वोत्तम विशेषता योग प्रक्रिया की यह है कि इसमें दवाओं का प्रयोग नहीं होता और शरीर कोश को भी बिना दवा आदि के ही ठीक करते हैं।

जैसा हमने अभी कहा पुराने रोगों में व्यक्तित्व के समस्त कोश रोग ग्रस्त हो जाते हैं और उनकी चिकित्सा करना मुश्किल होता है तब समस्त कोशों की चिकित्सा में समर्थ योग द्वारा चिकित्सा करना अधिक लाभदायक है। ऐसी स्थिति में रोगी के सामने समस्या कुशल योग चिकित्सक प्राप्त करने की होती है क्योंकि आज की स्थिति में अधिकांश जनता के साथ कुछ योगी भी योगाभ्यास का अर्थ केवल विभिन्न आसनों और कुछ प्राणायाम क्रियाओं से ही समझते हैं और उन्हीं आसनों के प्रदर्शन करते हैं। सम्पूर्ण योग का ज्ञाता ही केवल चिकित्सा कर सकता है। इसमें भी दीर्घ अनुभव अत्यन्त आवश्यक है क्योंकि पतंजलि योग के आठ अंगों की अलग-अलग सैकड़ों प्रक्रियायें हैं उनमें से कौनसी, किसको, कब और कितनी दी जाय यह दीर्घ अनुभव से ही आता है। इसके अलावा भारतीय मनोविज्ञान जो कि मनोमय कोश और विज्ञानमय कोश के अन्तर्गत आता है उस ओर भी योग वालों का ध्यान अभी नहीं गया है। और पुराना भूला हुआ योग अब फिर प्रचलित हुआ है। अतः स्वाभाविक है कि इसके पूर्ण विकास में समय लगेगा। फिर भी आज की स्थिति में योग कतिपय रोग निवारण और पूर्ण स्वस्थ व्यक्तित्व बनाये रखने में समर्थ है।

व्यक्तित्व को स्वस्थ रखने के लिये निरोगी मनुष्य को नित्य प्रातः शौचादि से निवृत्त होकर खाली पेट कम से कम २० मिनट योगाभ्यास अवश्य करना चाहिये जिसमें अपने उपयुक्त कुछ आसन, प्राणायाम और ध्यान करना ही पर्याप्त है। अपने व्यक्तित्व की विशिष्टता के अनुरूप कौन से आसन व प्राणायाम किये जायें यह किसी कुशल योगी से मालूम करके सीख लेना चाहिये। बिना शिक्षक के अपनी स्वेच्छा से योगाभ्यास कदापि नहीं करना चाहिये। इसके लिये स्थान स्वच्छ और एकान्त होना ठीक रहता है। प्रारम्भ में हलके आसन करने चाहिये और निर्दिष्ट समय का पालन करना चाहिये। योगाभ्यास करने वालों को हल्का व पौष्टिक भोजन लेने तथा विचारों को स्वच्छ रखने से अधिक सहायता मिलती है।

महिलाओं को मासिक धर्म के दिनों में तथा गर्भावस्था में वर्जित आसन नहीं करने चाहिये। प्रसव के तीन महीने बाद जब बदन में शक्ति आ जाय तब आसन प्रारम्भ करने चाहिये। लेकिन गर्भावस्था में ध्यान योग कर सकते हैं जिसमें सुन्दर, स्वस्थ और गुणी बच्चे का ध्यान करना आवश्यक है जिससे वैसी ही सन्तान पैदा हो। मानसिक रोगियों के अलावा ध्यान योग का अभ्यास अपने स्वास्थ्य के अनुरूप सभी प्रौढ़ व्यक्ति कर सकते हैं। शव आसन शीघ्र थकान मिटाने और शान्ति देने वाला है अतः सभी को अवश्य करना चाहिये। इस तरह आज के औद्योगिक व्यस्त जीवन में योग द्वारा शीघ्र और स्थाई स्वास्थ्य लाभ होता है।

श्री धर्मेन्दु जी

(पृष्ठ ७ का शेष)

की आवश्यकता की वस्तुएं देने की सदा के लिए सुव्यवस्था कर दी है।

श्रीमती सावित्री देवी (धर्मपत्नी श्री धर्मेन्दु जी) जी ने अपने सारे स्वर्ण आभूषण बेचकर उसकी सारी आय चन्द्र आर्य गृह सूरज पर्वत नई दिल्ली के नवनिर्मित भवन के निर्माण हेतु स्वेच्छया दान दे दी है।

ऐसे सर्वस्व दानी महापुरुष का १६ सितम्बर १९८१ को सायं ७ बजे देहावसान हो गया जो आर्य जगत की अपूरणीय क्षति है।

अन्तिम इच्छा

उनके मानस उत्तराधिकारी आर्य छात्र-छात्राएं, युवक एवं कुमार हैं जिनके साथ उनका बड़ा ममत्व है और उनके निर्माण और उन्नति पर ही एक प्रकार से उनका जीवन अर्पित था। आर्यसमाज को सुशिक्षित, अनुशासित, हृदय और मस्तिष्क के गुणों से विभूषित नई पीढ़ी मिलती रहे यही उनकी इच्छा थी।

डा० फारूख की भिंडरावाले से सांठगांठ

श्री शालवाले का वक्तव्य

हैदराबाद, ७ अक्तूबर, १९८५

आर्य प्रतिनिधि सभा आंध्र प्रदेश ने अपने प्रेस नोट में यह दर्शाया है कि श्री लाला रामगोपाल वानप्रस्थी प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने विनायकराव भवन में प्रान्तों से आये हुये प्रतिनिधियों को साधारण सभा के अवसर पर सम्बोधन करते हुए कहा कि आर्य समाजियों को पारस्परिक भेद-भाव समाप्त कर राष्ट्र के प्रहरी बन कर रचनात्मक कार्यों में प्रवृत्त हो जाना चाहिए निकट भविष्य में भारत को एक महान खतरे का सामना करना पड़ेगा। इसके लिए सभी भारतवासियों को सचेत किया। आर्यसमाज ही एक ऐसी संस्था है जो भारत की नैया को भयानक भंवर से उभार सकती है। आज सभी विदेशी ताकतें धन के माया जाल में हिन्दुओं को फंसाकर अपने अपने धर्म में लाना चाहते हैं। इस प्रकार अपनी संख्या बढ़ाने में दिन रात एक कर रखी हैं। हमने युद्ध स्तर पर इन से संघर्ष किया है तथा बिछुड़े बन्धुओं को फिर अपने धर्म में लाया है।

डा० फारुख अब्दुल्ला ने भीतर ही भीतर भिंडरावाला से सांठ-गांठ की थी, तथा खालिस्तान के समर्थन में जब कश्मीर में षड़यन्त्र रचा जा रहा था तब हमने न केवल उसका पर्दा-फास किया वरन् डा० फारुख को सत्ता से च्युत होना पड़ा। इस प्रकार भारत को महान खतरे से बचाया गया।

उन्होंने आगे कहा कि आ० रजनीश के कट्टर समर्थक ही आज उनके साहित्य की होली जला रहे हैं। इस प्रकार उनके समर्थक ही आज उनके विरोधी बनते जा रहे हैं। प्रभात कालीन तारों की तरह उनकी आभा-प्रभा मिटती जा रही है। लाला जी ने अपने वक्तव्य में कहा कि ऐसी अनेक संस्थाएं भारत में विद्यमान हैं, जो धर्म के नाम पर, समाज के नाम, जाति के नाम पर और भाषा के नाम पर इस राष्ट्र को क्षीण बनाना चाहती हैं।

सार्वदेशिक सभा ने समय-समय पर भारत के शीर्षस्थ राजनैतिक नेताओं से सम्पर्क कर उन्हें भारत में चल रहे षड़यन्त्रों से अवगत कराया है तथा उन्हें इस विषय में सावधान भी किया है।

स्व०श्रीमती इन्दिरा गांधी परोक्ष रूप से सार्वदेशिक सभा द्वारा प्रस्तुत की गयी समस्याओं पर गम्भीरतासे विचार करती थी। उन्हीं के शुभ प्रयासों का फल है कि रामनाथपुरम् के १००० बने मुसलमान फिर से हिन्दू धर्म में प्रवेश करा लिये गये।

वर्णाश्रम पत्रक के समाचार पत्र की आलोचना करते हुये लाला जी ने कहा कि इस पत्र ने व्यक्तिगत रूप से मेरे प्रति निराधार दुस्-प्रचार किया है। और साधारण लोगों में मेरे प्रति भ्रम पैदा कराया है कि हैदराबाद के गणेश विसर्जन के समारोह पर समुपस्थित होकर उन्होंने गणेश के प्रतिमा की विधिवत् पूजा की है। भ्रम का निराकरण करते हुये उन्होंने कहा कि माननीय मुख्यमन्त्री श्री टी० अन्जैया जी ने अन्य नेताओं की तरह मुझे भी विशेष रूप से आमन्त्रित किया था। मैं उसे स्वीकार कर केवल दर्शक के नाते उसमें सम्मिलित रहा। बड़े खेद की बात है कि उक्त सम्पादक जी ने मेरे विषय में मनघड़न्त प्रचार कर लोगों को गुमराह किया है।

उन्होंने प्रखर शब्दों में प्रतिवाद करते हुए कहा कि मुझ जैसे दयानन्द के भक्त से इस प्रकार की पूजा व अर्चना हो सकेगी? इस प्रकार उनके विषय में और एक भ्रमक प्रचार किया जा रहा है कि उनका तेलुगू जन सभा से गहरा सम्बन्ध है। इस विषय में उन्होंने स्पष्टीकरण करते हुये कहा कि उनका तेलुगू जन सभा से किसी प्रकार का सम्बन्ध नहीं है।

आप परस्पर सेवा भाव से आर्य समाज के लिए अपने जीवन को निस्वार्थ परत्व से समर्पित करें। इस प्रकार वैदिक धर्म संस्कृति एवं राष्ट्र की सुरक्षा के लिए तत्पर रहें।

—माणिक राव शास्त्री

विदेश के समाचार

अन्तर्राष्ट्रीय वैदिक सम्मेलन दक्षिण अफरीका

अन्तर्राष्ट्रीय वैदिक सम्मेलन के संयोजक पंडित नरदेव वेदालंकार का १५ अक्तूबर का पत्र सभा कार्यालय में प्राप्त हुआ है। पत्र के मुख्य अंश इस प्रकार हैः—

१—इस सम्मेलन और आर्य प्रतिनिधि सभा दक्षिण अफ्रीका की हीरक जयन्ती के निदेशक श्री ब्रह्मदत्त स्नातक डर्बन के लिए रवाना हो चुके होंगे और टिकट की व्यवस्था मोरिशस से हो चुकी है। किन्हीं बाधाओं के कारण टिकट यहां नहीं आया और आते ही पंडित स्नातक दक्षिण अफ्रीका के लिए रवाना होवेंगे।

२—दिल्ली से डर्बन का वापसी हवाई किराया उन्होंने लगभग उन्नीस हजार रुपए लिखा है परन्तु उन्होंने सिफारिश की है कि दिल्ली व बम्बई से आने वाले यात्रियों को स्थानीय एजेन्ट से किराए का पता लगा लेना चाहिए। मोरिशस और नैरोबी होकर आना सुविधाजनक होगा।

३—जो आर्य बन्धु जाना चाहते हैं उनको पिछली सूचना के अनुसार वीसा फार्म भरकर तुरन्त आर्य प्रतिनिधि सभा, दक्षिण अफ्रीका स्वामी दयानन्द बिल्डिंग आर्य हाल, २१ कान्लिस स्ट्रीट, पोस्ट बोक्स १७७० डर्बन ४००१ दक्षिण अफ्रीका के पते पर तुरन्त भेज देना चाहिए। वीजा फार्म की प्रति सार्वदेशिक सभा से मिल सकती है। क्योंकि इस काम में बहुत विलम्ब होता है और सम्मेलन की तिथियों (१५, १७ दिसम्बर) निकट आ चुकी हैं। इस काम में विलम्ब नहीं होना चाहिए। यदि भारत-सरकार ने पासपोर्ट पर पृष्ठांकन नहीं किया अथवा टिकट नहीं मिला या टिकट नहीं खरीदा तब भी उपर की कार्यवाही करने में कोई आर्थिक हानि नहीं होगी।

४—सबसे प्रथम भारत सरकार का पासपोर्ट (पचास रुपये) बना होना आवश्यक है। उस पर पृष्ठांकन के लिए अलग से दस रुपये निर्धारित फार्म पर जमा करने होंगे। सार्वदेशिक सभा अधिक से अधिक व्यक्तियों के पृष्ठांकन पाने के लिए पूरी कोशिश कर रही है।

५—भारत से जाने वालों में जो विद्वान भजनीक और योगा प्रदर्शन करने वाले होंगे, इनको अपना कार्यक्रम रखने के लिए आर्य प्रतिनिधि सभा दक्षिण अफ्रीका को लिखना चाहिए।

— ब्रह्मदत्त स्नातक
अवै० प्रेस एवं जन सम्पर्क सलाहकार

पोप की भारत यात्रा

(पृष्ठ ४ का शेष)

कितने अपवित्र हैं। दुर्भाग्य से हमारे शासकों के दिमाग पर सेक्यूलरिज्म के गलत अर्थ का भूत सवार है और धर्म निरपेक्षता का अर्थ वे यह समझ रहे हैं कि विघ्न उत्पन्न करने वाली शक्तियों को भी पूरी छूट दी जाये। इनसे कोई पूछे कि जब शेष संसार के देशों ने से इन विदेशी पादरियों को अपने क्षेत्रों में प्रवेश होने से रोक दिया है तो भारत की सरकार को इन विदेशी पादरियों में क्या विशेषता दिखाई दे रही है कि वह इनको और इनके भारतीय एजेंटों को केवल गरीब लोगों के ईमान खरीदने से रोक नहीं रही। ये विदेशी पादरी न केवल गरीब लोगों का धर्म ही खरीदते हैं बल्कि इन्हें देश-द्रोही भी बना देते हैं। देश की पूर्वी सीमा के लोगों का व्यवहार इस बात को सिद्ध कर रहा है।

—नरेन्द्र

विविध समाचार

आर्य समाज उज्जैन का चुनाव

उज्जैन। आर्य समाज, चन्द्रशेखर आजाद मार्ग उज्जैन की साधारण सभा दिनांक ६-१०-८५ को श्री नन्दलाल जी आर्य की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई जिसमें आगामी वर्ष के लिये निम्नानुसार पदाधिकारी चुने गए।

अध्यक्ष—श्री जगन्नाथ जी उपलाना, उपाध्यक्ष—गंगाप्रसाद जी माथुर, मन्त्री—नन्द लाल जी आर्य, उपमन्त्री—घनश्याम जी आर्य, कोषाध्यक्ष—शंकरलाल जी सोनी चुने गये। श्री सिद्धनाथ जी उपाध्याय, आनन्द जी आर्य, रामप्रसाद जी मालाकार, श्रीमती सुशीला देवी, श्री रवीन्द्र जी पोद्दार एवं श्रीमती शकुन्तला आर्य अन्तरंग सभा सदस्य निर्वाचित हुये।

आर्य समाजों के वार्षिकोत्सव

भारत भर में हजारों समाजें विशेष प्रचार-प्रसार के साथ-साथ अपनी-अपनी आर्यसमाज का वार्षिकोत्सव मनाना नहीं चूकती, वर्ष के १२ महीनों में लगातार किसी न किसी प्रान्त की स्थानीय समाज का उत्सव मनाया जाता है, अब प्रस्तुत हैं आगामी महीनों में होने वाले उत्सव, जिनमें—उपदेशक, संगीतज्ञ, धार्मिक नेता और राष्ट्रीय नेताओं की सम्भावना है।

१—आर्यसमाज शाहजहांपुर, १७-१०-८५ से २०-१०-८५ तक आर्य महिला डिग्री कालेज सदर बाजार में।

—आर्य समाज पचपुरी गढ़वाल के मन्त्री श्री वासुदेव जी सूचित करते हैं कि यहां की आर्य समाज द्वारा विद्यालयों तथा ग्राम सभाओं में यज्ञ तथा प्रवचनों का प्रबन्ध किया। इसमें श्री बच्चीराम, शान्ति प्रकाश और बुद्धिसिंह जी ने पूरा २ योगदान दिया।

आर्य समाजों की गतिविधियां

धन्य-धन्य है आर्य समाज

यह कितने गौरव की बात है कि आर्य समाज अपने जीवन काल से जहा वैदिक धर्म के प्रचार मे सलग्न है वहा अपने सगठन की ओर भी सदैव तत्पर रहता है। सगठन के नियमानुसार प्रतिवर्ष निर्धारित समय पर आगामी वर्ष के लिये निर्वाचन होना अनिवार्य हैं और यह हर्ष की बात है कि आर्य समाजो में इसका पूर्ववत प्रचलन है। कुछ समाजो के निर्वाचन जो अभी हुए हैं निम्न प्रकार से हैं।

निर्वाचन

नाम आर्य समाज	प्रधान	मन्त्री	कोषाध्यक्ष
वनवास वेदप्रचार समिति-देहरादून	ठाकुर सिंह	उम्मेदसिंह आर्य	मनोहरलाल
आर्यसमाज देवरिया	राजदेव सिंह	हरिशकर सिंह	महेन्द्र सिंह
पूर्णिया बिहार	मुन्शीलाल	विष्णुदेव आर्य	मुन्शीलाल
बम्बई-पटेल मार्ग	गणपत राव आर्य	राजेन्द्रनाथ	करसनदास
आर्य समाज खण्डवा(म०प्र०)	रामचन्द्र आर्य	कैलाश	नारायण

आर्य महिला जगत

जैसे आर्य समाज सक्रिय रूप से प्रचार में लगा है वैसे ही देशभर मे स्त्री आर्य समाज महिला आर्य समाज तथा अनेक अन्य नामो से हमारी आर्य बहने वैदिक धर्म के प्रचार में सलग्न हैं आर्य स्त्री समाजो से जब प्रार्थना की गई कि वह भी अपने अपने क्षेत्रो मे जो कार्य जनहितार्थ कर रही हैं उसकी सूचना "सार्वदेशिक" मे प्रकाशनार्थ भेजें उसी सम्बन्ध मे सबसे प्रथम प्रान्तीय आर्य महिला सभा दिल्ली की महामन्त्रिणी बहन प्रकाश आर्या ने सूचित किया है कि ९-९-८५ को दिल्ली की समस्त आर्य महिलाओ की एक विशाल सभा दयानन्द वाटिका सब्जीमण्डी में बहिन ईश्वर देवी की अध्यक्षता में मनाई ध्वजारोहण माता वीरावाली जी ने किया सारे दिन के कार्यक्रम में यज्ञ, गीत प्रतियोगिता मन्त्रोच्चारण प्रतियोगिता, खेल प्रतियोगिता इत्यादि का कार्यक्रम अति रोचक रहा। प्रतियोगिताए वेदप्रिय बहिन सुशीला आनन्द की अध्यक्षता मे हुई। निर्णायक विदुषी बहिनें थी श्रीमती उषा शास्त्री-सत्यवती शर्मा, प्रकाशवती शास्त्री और श्रीमती शकुन्तला जी दीक्षित इस समूची प्रतियोगिता मे डा० चन्द्रप्रभा ने प्रथम स्थान पाया। सभा प्रधाना श्रीमती सरला मेहता ने सभी का धन्यवाद करते हुए बहिन ईश्वर देवी जी कार्वैदिक साहित्य भेंट कर अभिनन्दन किया।
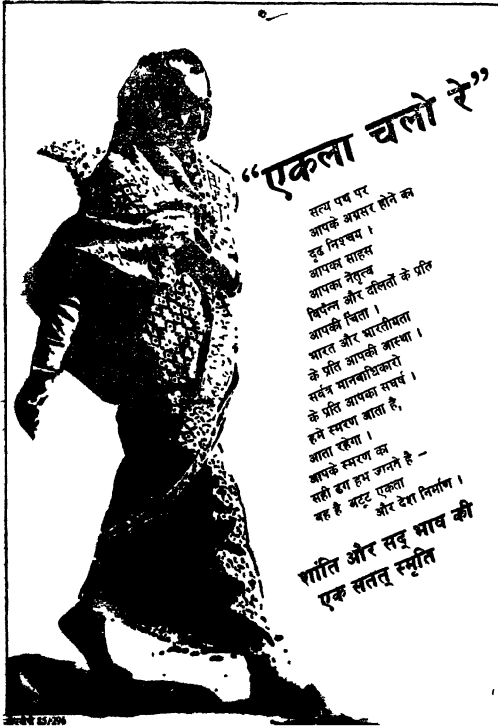
धरती की बेटी धरती में समाई

स्वर्गीया प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गाधी की अस्थियां ५ नवम्बर ८४को शातिवन मे एकत्रित की गयी। ये अस्थिकलश वायुयान और विशेष रेलगाडियो द्वारा विभिन्न राज्यों एव केन्द्रशासित प्रदेशो की राजधानियो मे ले जाये गए ताकि देश के विभिन्न भागो के लोग श्रीमती इन्दिरा गाधी को अपनी श्रद्धाजलि अर्पित कर सकें। एक अस्थिकलश तीनमूर्ति भवन में भी लोगो के दर्शनार्थ रखा गया था।

अस्थिकलश ५ नवम्बर, १९८४ बगलौर, गोवा, दादर और नगर हवेली, पूर्णे कलकत्ता, गगटोक, गोहाटी, शिलाग, जम्मू, श्रीनगर, चण्डीगढ और जयपुर पहुँचाये गये।

६ नवम्बर १९८४ तक मद्रास, पाडिचेरी, हैदराबाद, त्रिवेन्द्रम, लक्ष्यद्वीप, बम्बई, भुवनेश्वर, पटना, पोर्ट ब्लेयर, ईटानगर, ऐजवाल, मणिपुर, कोहिमा, अगरतल्ला शिमला, भोपाल अहमदाबाद और लखनऊ पहुँचाये गये।

अस्थिकलश १० नवम्बर, १९८४ तक देश के सभी भागो से वापस लाये गये। ११ नवम्बर, १९८४ को इन अवशेषो को हिमाच्छादित पर्वतो पर उनके सुपुत्र श्री राजीव गाधी द्वारा वायुयान से बिखराया गया इस प्रकार धरती की बेटी धरती की गोद मे समा गई।

पंजि० सं० डी० (सी०) १७८ | सार्वदेशिक साप्ताहिक | बिना टिकट भेजने का लाइसेंस नं० U ६१
R. N 626/57 | Licensed to post without prepay | 31-10-85

अमृत कण

—सोमदत्त शर्मा, मेरठ

उसे सदा प्रसन्नतापूर्वक स्वीकार करो जो तुम्हें भगवान की तरफ से दिया जाता है।

एक मुस्कराहट का कठिनाइयों पर वही असर होता है, जो कि सूर्य का बादलों पर—वह उन्हें छिन्न भिन्न कर देती है।

निरन्तर सुख का जो स्रोत है वह अन्तरात्मा मे है।

कामना को तृप्त कर लेने की अपेक्षा कामना पर विजय पा लेना कहीं अधिक सुखदायक होता है।

सच्चे साहस मे न तो अधीरता होती है न जल्दबाजी।

बुरा लगने या निरादर होने से ऊपर उठ जाना मनुष्य को सच्चे अर्थों मे महान बना देता है।

सदा सत्य बात ही बोलना उच्च कोटि का मनुष्य होने की सर्वोत्कृष्ट पहचान है।

प्रत्येक नया प्रभात एक नयी उन्नति की सम्भावना को लाने वाला होता है।

मनुष्य उसी के समान होता जाता है जिससे कि वह प्रेम करता है।

आर्यसमाज का वार्षिकोत्सव

आर्य समाज लाजपत नगर नई दिल्ली का वार्षिकोत्सव श्रद्धेय श्री रामगोपाल जी शालवाले की अध्यक्षता मे दिनांक ३ ११ ८५, रविवार प्रात १० से १ बजे तक विशाल राष्ट्र रक्षा सम्मेलन के रूप मे मनाया जायेगा। —सुरेन्द्र मन्त्री आर्यसमाज

सार्वदेशिक प्रेस, दरियागंज नई दिल्ली में मुद्रित तथा ... के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ...

सृष्टिसम्वत् १९७२९४९०८६]
वर्ष २० अङ्क ४७]

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र
[कार्तिक कृ० ११ स० २०४२ रविवार १० नवम्बर १९८५

दयानन्दाब्द १६१ दूरभाष २७४७७१
वार्षिक मूल्य २०) एक प्रति ५० पैसे

धर्मरक्षा महाभियान : शुद्धि का सुदर्शनचक्र

उड़ीसा के कुमुण्डे ग्राम में ५०० ईसाई परिवारों का सामूहिक रूप से वैदिक धर्म में प्रवेश

"उड़ीसा के पिछले क्षेत्रों में ईसाई मिशनरियों ने विदेशी धन के बल पर धर्मान्तरण की जो लहर चला रखी है, इसका प्रतिकार सार्वदेशिक सभा की ओर से किया जा रहा है, गत वर्ष भी पिछड़ी जाति के हजारों व्यक्तियो को वैदिक धर्म मे प्रविष्ट कराया गया था। इस वर्ष पुन लगभग १५०० लोग वैदिक धर्म में प्रविष्ट हुए। इस सम्बन्ध मे सार्वदेशिक सभा के माननीय प्रधान जी का प्रेस वक्तव्य निम्न प्रकार है।'

सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले ने एक प्रेस विज्ञप्ति मे बताया है कि गत् २५ अक्तूबर १९८५ को उड़ीसा के बालगीर जिले के कुमुण्डे ग्राम में लगभग ५०० ईसाई परिवारों के १५०० से अधिक लोगों को वैदिक धर्म मे प्रविष्ट कराया गया है।

उन्होंने बताया कि यह आयोजन गत वर्ष सार्वदेशिक सभा द्वारा निर्मित ग्राम कुमुण्डे की विशाल यज्ञशाला में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर सार्वदेशिक सभा के उपमन्त्री श्री पृथ्वीराज जी शास्त्री को वहां भेजा गया था। उनके साथ उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री स्वामी धर्मानन्द सरस्वती, मन्त्री श्री विशिकेशन शास्त्री तथा गुरुकुल आमसेना के आचार्य श्री अखिलेश ने प्रात ८ बजे से शुद्धि सस्कार प्रारम्भ कराया। वर्षों से अपने को अस्पृश्य मानने वाले उक्त परिवारों के सदस्यों ने उल्लास पूर्वक हाथो मे यज्ञोपवीत लेकर मुख से गायत्री मन्त्र का उच्चारण करते हुए यज्ञ कुण्ड मे आहुतिया दी।

श्री शालवाले ने बताया कि उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा ने गत वर्ष भी सार्वदेशिक सभा के सहयोग से दो बार शुद्धि समारोह का शानदार आयोजन किया था। पहले की भाति इस अवसर पर भी सार्वदेशिक सभा की ओर से शुद्ध होने वाले लोगो को नए वस्त्र वितरित किये गये और सामूहिक भोज का शानदार आयोजन किया गया।

वेदामृत

ओ३म् अग्नि नरो दीधितिभिररण्योर्हस्त च्युती
जनयन्त प्रशस्तम्। दूरेदृशं गृहपतिमथर्युम्।

१।१।७॥ ऋग्वेद

भावार्थ—हे विद्वान मनो! जैसे घिसी हुई अरणियो से अग्नि उत्पन्न होती है। वैसे ही सब मूर्तिमान द्रव्य वा वायु समूहों को घिसने से जो [illegible] विद्युत उत्पन्न होती है। वह दूर देशों में समाचारादि पहुँचाने के रूप मे व्यवहारों को सिद्ध कर सकती है। इस विद्युत विद्या से गृहस्थों का बड़ा उपकार होता है।

६४ ईसाई परिवारो ने शुद्ध होकर वैदिक धर्म में प्रवेश किया

दिनाक २१-१० ८५ को सोमवार ग्राम बाइसी जि० निजामाबाद मे गोशाला मे यज्ञ का आयोजन किया गया जिसकी अध्यक्षता श्री एम० गगाराम जी ने की। इस अवसर पर ६४ ईसाई परिवारों ने ईसाई मत को त्याग कर वैदिक धर्म मे प्रवेश किया। ये कार्य श्री लोकमणहारी जी पुरोहित द्वारा सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर ध्वजारोहण श्री ओमदास राजू द्वारा किया गया। इस शुद्धि के कार्य मे सहयोग डा०श्री मधुकरराव श्री प्रि० वेंकटेश्वरराव श्री चिलुका मुलय्या और श्री प्रणवकुमार जी आदि का रहा।

इस शुद्धि का आयोजन आर्य कुमार सभा और आर्य समाज के सब अधिकारियो ने मिलकर किया। इस अवसर पर सामूहिक भोज का आयोजन किया शुद्ध परिवारो को वस्त्र एव वैदिक साहित्य भेंट किया गया।

—प्रचार विभाग
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली

सम्पादक—ओमप्रकाश पुरुषार्थी

प्रबन्ध-सम्पादक—सच्चिदानन्द शास्त्री

देव और उनकी पूजा

—भोगेराम आर्य, अहमदनगर

देव दो प्रकार के होते हैं, एक जड देव और दूसरे चेतन देव। जड देवताओं की सख्या मोटे तौर से ३३ कही जाती है जो इस प्रकार है—आठ वसु-अग्नि, पृथिवी, वायु, अन्तरिक्ष, आदित्य, द्यौ, चन्द्रमा और नक्षत्र, ये सबका निवास स्थान होने से वसु कहलाते हैं। ग्यारह रुद्र प्राण अपान, व्यान, समान, उदान, नाग, कूर्म, कृकल, देवदत्त, धनजय और जीवात्मा, मरण समय जब ये शरीर से निकलते हैं तो उसके सम्बन्धी लोग रोते हैं इसलिए इनका नाम रुद्र है। बारह आदित्य-चैत्र, वैशाख, ज्येष्ठ आषाढ श्रावण, भाद्रपद, आश्विन, कार्तिक मार्गशीर्ष पौष माघ और फाल्गुन, ये सब की आयु को ग्रहण करते चले जाते हैं, इसी से इनका नाम आदित्य है। एक इन्द्र (बिजली) और एक प्रजापति (यज्ञ)। इन ३३ देवो के अतिरिक्त एक देव है पशु (यज्ञ पशु) जिससे प्रजा पालन होता है। तीन देव स्थान, नाम और जन्म को कहते हैं। दो देव अन्न और प्राण हैं और एक देव है अध्यर्ध देव (सूत्रात्मा वायु)। ये कुल मिला के ४० (चालीस) देव हैं किन्तु इन देवताओ मे कोई भी उपासना के योग्य नही है। ये सब केवल व्यवहार मात्र की सिद्धि के लिए हैं। जो हमे कुछ देता है या जिनसे हमको कुछ प्राप्त होता है, वह देव कहलाते हैं, चाहे जड देव हो या चेतन देव। इसमें सशय नही। और ४१ वां देव है सच्चिदानन्द स्वरूप परमात्मा, जो सभी देवो का देव होने से महादेव कहलाता है और वही एक मात्र चेतन देव उपासना के योग्य हैं। जो परमेश्वर को छोडकर किसी दूसरे जड या चेतन देव की उपासना करता है वह मूर्ख है, अल्पज्ञ है, अज्ञानी है और अधर्म है। इसमें कुछ भी शक नहीं।

(ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका से उधृत)

देव पूजा और मूर्त्तिपूजा जो वेदोक्त और वेदानुकूल है जिसे सच्ची यथार्थ पूजा कहते हैं वह इस प्रकार है—प्रथम माता मूर्त्तिमती पूजनीय देवता अर्थात सन्तानो को तन मन और धन से सेवा करके माता को प्रसन्न रखना और किसी प्रकार का दुख व ताडना नही करना। दूसरा पिता सत्कर्त्तव्य देव उसकी भी माता के समान सेवा करना और हर प्रकार से सुखी रखना। तीसरा आचार्य जो सब विद्याओं का देने वाला है उसकी भी तन मन व धन से सेवा करनी। चौथा अतिथि जो विद्वान, धार्मिक निष्कपटी, सब की उन्नति चाहने वाला, जगत मे भ्रमण करता हुआ सत्य उपदेश से सबको सुखी करता है उसकी निस्वार्थ सेवा करें। पाचवा स्त्री के लिए पति और पुरुष क लिए पत्नी पूजनीय है। इन पाच मूर्तिमान देवों के सग से मनुष्य देह की उत्पत्ति पालन, सत्य शिक्षा विद्या और सत्य उपदेश की प्राप्ति होती है। ये ही परमेश्वर को प्राप्त होने की सीढ़िया हैं। इन की सेवा न करके जो इतर पाषणादि मूर्ति पूजते हैं वे अतीव पामर, नरकगामी हैं। पाषणादि मूर्तियो सर्वथा छोडने योग्य हैं और जीते मातादि देवों की सेवा करना कल्याणकारी है।

(सत्यार्थ प्रकाश एकादश समुल्लास)

यह देव और उनकी पूजा के विषय में योगेश्वर दयानन्द सरस्वती के ग्रन्थो से उधृत किया,जो सत्य है। सभी जड और चेतन देव अपने अपने स्थान पर पूजा सेवा और रक्षा के अधिकारी (काबिल) हैं। इस में शक नहीं। इस विषय पर मैं अगले लेख मे विस्तारपूर्वक थोडा प्रकाश डालने का यत्न करूगा।

वेद ज्ञान की खान है

मद्रास, २६ जुलाई। प्रसिद्ध वैज्ञानिक राजारमन्ना ने सभी धर्म, जाति और समुदाय के लोगों से आग्रह किया है कि वे वेदों का अध्ययन करें। क्योंकि वेद ज्ञान की खान है।

यहां कपोलो शास्त्रीरियार जन्म शताब्दी स्मारक में व्याख्यान देते हुए उन्होंने कहा कि यह दुर्भाग्य है कि पुराने विद्वान वेदों का ज्ञान स्वय तक सीमित रखते हैं और युवा पीढी कुछ भी नहीं जान पाती।

उन्होंने सलाह दी कि टेलीविजन पर लोगों की जानकारी के लिए वेदों पर पहले कार्यक्रम चलाया जाए ताकि मानव जाति के पुरातन ग्रन्थों का ज्ञान उसे मिल सके।

उन्होने कहा कि अग्रेजी साहित्य पर किताबें लिखने से अच्छा वेदों पर शोध कार्य करना होगा। (हिन्दुस्तान २२-१९५)

संस्कार-विधि पर शोध कार्य

पजाब विश्वविद्यालय चण्डीगढ़ में वैदिक शोध-सस्थान के अध्यक्ष आर्य समाज इतिहास लेखक डा० श्री भवानी लाल जी भारतीय के सान्निध्य में श्री धर्म देव शर्मा ,शास्त्री ने "गृह्यसूत्रों के सन्दर्भ में दयानन्दीय सस्कार विधि का एक अध्ययन" नामक शोध प्रबन्ध लिखकर प्रस्तुत किया जिसको डा० धर्म देव शर्मा शास्त्री पजाब विश्वविद्यालय ने स्वीकृत कर १ सितम्बर १९८५ के दिन पी० एच० डी० की उपाधि प्रदान की है।

श्री धर्मदेव शर्मा

इस शोध प्रबन्ध में महर्षि दयानन्द सरस्वती कृत 'सस्कार-विधि' के वर्णित सोलह सस्कारो मे कितना भाग गृह्य सूत्रो के साथ-साथ अन्य ग्रन्थों से लिया है इसको स्पष्ट करके, मन्त्र श्लोको की सख्या को सीमा मे बांधकर, ग्रन्थ लेखन का उद्देश्य, सस्कारों का अर्थ, समय शारीरिक, मानसिक और सामाजिक महत्ता प्रदर्शित करके प्राय समस्त विधियो का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया है।

शोध-ग्रन्थ अपने में अनेक नूतन विशेषताए सग्रहीत किए हुए है। प्रकाशित होने पर सम्भवत यह जन मन का सुन्दर ढग से प्रेरणा स्रोत सिद्ध हो सकता है। इस छोटी-सी अवस्था वाले हरियाणा के फरीदाबाद मण्डलान्तर्गत राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय में सस्कृताध्यापक पद पर कार्यरत श्री धर्म देव शर्मा शास्त्री का प्रयास सराहनीय है। प्रभु से प्रार्थना है कि इन्हें लम्बी आयु तथा उत्तम स्वास्थ्य प्रदान कर साहित्य लेखन मे रुचि बढ़ावें।—सम्पादक

सम्पादकीय

अद्भुत चमत्कार

१० अक्तूबर। १८८३ ई० को दीपावली के दिन जब कि समस्त हिन्दू भारत रोशनी के त्यौहार को मना रहा था, महर्षि दयानन्द अजमेर मे महान प्रकाश में विलीन हुए थे।

महर्षि दयानन्द के महान् व्यक्तित्व उनकी अगाध विद्वता और विशाल कार्य का ज्यों-ज्यों अध्ययन किया जाता है, त्यो-त्यों उनकी महत्ता लोगों के मानस-चक्षुओ के समक्ष भव्य रूप में समुपस्थित होती जाती है लोगों को यह अनुभूति हुए बिना नहीं रहती कि महर्षि दयानन्द जैसा दिव्यद्रष्टा जगत् गुरु भारत का हितैषी और ससार के प्राणिमात्र को उन्नति के पथ पर डालने का प्रयास करने वाला महाभारत के बाद दूसरा नहीं हुआ, महर्षि अपने जीवन काल मे ही बेजोड बने हुये थे, इस तथ्य की पुष्टि तत्कालीन इतिहास और उन श्रद्धाञ्जलियों से होती है, जो पौराणिको, मुसलमानों, ईसाइयो और थियोसोफी आदि २ के महान पुरुषो एव समाचार पत्रो द्वारा उनके महाप्रयाण पर प्रस्तुत की गई थी।

श्री प० बाल कृष्ण भट्ट ने प्रयाग के हिन्दी प्रदीप' मे लिखा था' आज भारतोन्नति कमलिनी का सूर्य अस्त हो गया। हा ! वेद का खेद मिटाने वाला सद् वैद्य लुप्त हो गया। हा ! दयानन्द सरस्वती आर्यों के सरस्वती जहाज की पतवार बिना दूसरे को सौंपे तुम क्यो अन्तर्ध्यान हो गये। हा ! सच्ची दया के समुद्र, हा ! सच्चे आनन्द के वारिद, अपनी विद्यामयी लहरी और हितोपदेश रूपी धारा से परितृप्त भारत भूमि को आर्द्र कर कहा चले गये। हा ! चार दिन के चतुरानन, इस असभ्यता प्रिय मण्डली मे आपने अपनी विलक्षण चतुराई को क्यों इस प्रकार से सरल भाव को फैलाया।

सरसैयद अहमद खां ने लाहौर के 'कोहेनूर' मे लिखा था—

"निहायत अफसोस की बात है कि स्वामी दयानन्द साहब जो सस्कृत के जो बहुत बडे आलीम और वेद के बहुत मुहक्किक थे। ३० अक्टूबर १८-३ को ७ बजे शाम को अजमेर मे इन्तकाल किया। इलावा इल्म और फजल के निहायत नेक और दरवेशसिफ्त आदमी थे। इनके मौत किद (अनुयायी) इनको देवता मानते थे। और बेशक वह इसी लायक थे वे सिर्फ ज्योति स्वरूप निरकार के सिवा दूसरे की पूजा जायज नही मानते थे। हमसे और स्वामी दयानन्द मरहूम से बहुत मुलाकात थी। हम हमेशा उनका निहायत अदब करते थे क्योंकि ऐसे आलम और उम्दा शख्स थे कि हरएक मजहब वाले को उनका अदब लाजिम था। बहरहाल ऐसे शख्स थे जिनका बदल जोड) इस वक्त हिन्दुस्तान मे नही है और हर एक शख्स को उनकी वफात का गम करना लाजमी है, कि ऐसा बेनजीर शख्स उनके दरमियान से जाता रहा।"

इस सम्मति को समझदार मुसलमानों की सम्मति का एक नमूना समझा जा सकता है।

थियोसोफिस्ट समाचार पत्र ने अपनी भाव भरी श्रद्धाजलि में कहा—

"एक महान आत्मा, भारत से चल बसी प० दयानन्द सरस्वती जिन्होंने भारतवर्ष मे आर्यसमाज की बुनियाद डाली और इसके सबसे बडे मुखिया थे, दुनिया से कूच कर गए। वह निडर और सरगरमी से काम करने वाले रिफार्मर थे जिनकी जबर्दस्त आवाज और पुरजोश वक्तृत्व शक्ति से भारत के हजारो आदमी गत कई वर्षों के अन्दर में प्रमाद और आलस्य के गढ्ढे से निकल कर देशभक्ति के मार्ग पर आ गए थे, आज भारत को वियोग से दुखी करके स्वर्ग को चले गये।

थियोसोफी के सस्थापक कर्नल अल्काट ने लिखा था—

"स्वामी जी महाराज नि सन्देह एक महान पुरुष थे और संस्कृत के बडे विद्वान थे, उनमे ऊचे दर्जे की योग्यता दृढ निश्चय और आत्मिक विश्वास का निवास था। वह मानव समाज के मार्गदर्शक थे। वह अत्यन्त सुडौल दीर्घाकार अत्यन्त मधुर स्वभाव और व्यवहार मे दयालु थे, हमारे दिमाग पर उन्होंने बडा गहरा असर छोडा है।'

महर्षि दयानन्द के महाप्रयाण पर आर्यसमाज के क्षितिज पर निराशा के जो बादल छा गए थे उनका दिग्दर्शन मेरठ के 'आर्य समाचार पत्र' की निम्न पक्तियो से सहज ही हो जाता है—

रो रो बदबख्त आर्यावर्त खूब दिल खोलकर रो ले। आज तेरी फजलियत का सूरज गरूब (अस्त) हो गया जिन जुल्मो तेज हालत ने तुझको इस नौबत पर पहुचाया था उससे ज्यादा जमाना स्याह इस वक्त तेरी नजर के रोबरू मौजूद है। जिस फरजे मुल्क पर तुझ को नाज था वही आज तुझ मे से उठ चला। लखूखा तमन्नाओं (आशाओ) का खून हो गया।"

आर्यसमाज के दीवाने आर्यों और आर्य नेताओं के परम पुरुषार्थ से निराशा के इन बादलो को फटते देर न लगी और उन्होंने महर्षि के छोडे हुये कार्य को सम्हाल लिया उसको आगे बढाने मे बडे से बड त्याग और बलिदान को भी तुच्छ समझा और देश एव जाति के भविष्य को स्याह से सफेद करने का श्रेय को प्राप्त किया। आज आर्य समाज के विस्तार और अपने लाखों, करोडो अनुयायियों को देखकर निश्चय ही महर्षि की आत्मा सन्तोष अनुभव करती होगी। आवश्यकता इस बात की है कि कार्य मे गहराई और के अनुयायियों मे विद्या चरित्र और अनुशासन की दीप्ति धवल प्रकाश के साथ जाज्वल्यमान रहे।

ससार के महान पुरुषों के इतिहास में सच्चा स्थान प्राप्त करने मे बहुत समय लगता है परन्तु भगवान दयानन्द को अपना स्थान बनाने मे बहुत कम समय लगा है यह है उनके जीवन और कार्य की महत्ता का अद्भुत चमत्कार।

मृत्यु शय्या पर पडे स्वामी जी महाराज ने उपस्थित जनों मे जो गुरुदत्त विद्यार्थी भी थे उनसे कहा—सब किवाड खोल दो। तात्पर्य यह था कि जो हमारे वैदिक धर्म से चले गये हैं उनके लिये द्वार खोल दो। हमने दरवाजे बन्द कर रखे थे जाति के द्वार बन्द होने से—मूलधन मे कमी आ रही थी विधर्मी बढ रहे थे अतः कहा—सब दरवाजे खोल दो।

फिर कहा—कि हमारे पीछे खडे हो जाओ। इसका तात्पर्य था वेद मार्ग का अनुसरण करना, जिसके लिये मैंने प्राणों का उत्सर्ग किया है, जिस वेद-मार्ग से इन्सान भटक कर दूर चला गया है उसके पीछे आओ। यह था—अन्तिम सन्देश ऋषि वर का।

दीपावली के प्रकाश को प्रज्वलित कर, स्वय इस असार ससार से विदा ली, और ससार को अमर सन्देश दिया।

तमसो मा ज्योतिर्गमय।

हैदराबाद सत्याग्रह के सत्याग्रही और सार्वदेशिक सभा के अधिकारी—

१९३८-३९ में आर्य समाज ने हैदराबाद में अपने धार्मिक अधिकारों की रक्षा के लिए सत्याग्रह किया था। उस समय किसी को यह पता नहीं था कि १९४७ में हमारा देश स्वतन्त्र हो जाएगा। निजाम हैदराबाद तो उस समय भी अपने आपको हैदराबाद का सर्वेसर्वा समझता था। अंग्रेज भी उनकी पीठ पर था। इसलिए वह जो करना चाहता था कर सकता था और करता भी था। चूंकि वह स्वयं एक कट्टर मुसलमान था, इसलिए यह सहन नहीं कर सकता था कि उनकी रियासत में आर्य समाज का प्रचार हो। इसलिए उसने कई तरह के प्रतिबन्ध लगा दिए। आर्य समाज ने इसे अपने लिए एक चुनौती समझा और वहां सत्याग्रह शुरू कर दिया। निजाम ने भी यह समझा कि यदि उसने उस समय आर्य समाज को न दबाया तो आर्य समाज उसे दबा देगा। इसलिए उसने सत्याग्रह को दबाने के लिए हर सम्भव प्रयास किया। सारे देश के आर्य समाज के जत्थे वहां पहुंचने लगे। पंजाब से भी श्री महात्मा आनन्द स्वामी जी जो उस समय लाला खुशहाल चन्द थे और श्री महाशय कृष्ण जी के नेतृत्व में दो बड़े जत्थे वहां गए थे। श्री महात्मा नारायण स्वामी जी और स्वामी स्वतन्त्रतानन्द जी हैदराबाद में इस सत्याग्रह की देखरेख कर रहे थे। निजाम की सरकार ने सत्याग्रहियों पर लाठियां भी चलाईं और गोलियां भी चलाईं। कई जेल में भी शहीद हो गए और उसे देखते हुए गांधी जी ने कहा था कि ऐसा शान्तिपूर्ण सत्याग्रह मैंने पहले नहीं देखा। उसका एक परिणाम यह भी हुआ कि गांधी जी और कांग्रेस के दूसरे नेताओं को उस सत्याग्रह में दिलचस्पी पैदा हो गई और उन्होंने निजाम पर यह दबाव डालना शुरू किया कि वह आर्य समाज के साथ समझौता कर ले और वह अन्ततः हो गया आर्य समाज की सभी मांगें स्वीकार कर ली गईं और जो लोग जेलों में बन्द थे उन्हें रिहा कर दिया गया।

आज से कुछ वर्ष पूर्व जब भारत सरकार ने यह निर्णय किया कि जिन लोगों ने स्वाधीनता संघर्ष में कोई भाग लिया था उन्हें पेंशन दी जाए। तो आर्य समाज ने यह मांग भी की थी कि हैदराबाद सत्याग्रह के सत्याग्रहियों को भी इस में शामिल किया जाए। उन्होंने जो संघर्ष किया था वह केवल अपने अधिकारों की रक्षा करने के लिए नहीं बल्कि धर्म की रक्षा करने के लिए किया था और चूंकि उस समय निजाम हैदराबाद और अंग्रेज के बीच समझौता हुआ था इसलिए यह लड़ाई एक तरह से धर्म और देश दोनों के लिए समझी गई थी। यही कारण था कि गांधी जी तथा देश के अन्य नेताओं ने उस सत्याग्रह में इतनी दिलचस्पी ली थी। सार्वदेशिक सभा ने बड़ा प्रयत्न किया पर भारत सरकार पहले इस मांग को स्वीकार करने को तैयार नहीं थी अब उसने हमारी मांग मान ली है और हैदराबाद सत्याग्रह में भाग लेने वालों को भी स्वतन्त्रता सेनानियों में शामिल करने का निर्णय किया है। उन्हें भी प्रथम जून १९८५ से उसी तरह १०० रुपए मासिक की पेंशन दी जाएगी जिस तरह कि उन लोगों को दी जाती है जिन्होंने स्वाधीनता संघर्ष में भाग लिया था। यह घटना पच्चीस वर्ष पुरानी है। पता नहीं उस सत्याग्रह में भाग लेने वालों में से अब कितने शेष जीवित हैं। जो हैं उन्हें यह पेंशन मिल जाएगी या उन विधवाओं को मिलेगी, जिनके पतियों ने हैदराबाद सत्याग्रह में भाग लिया था। इसके अतिरिक्त और किसी को नहीं मिलेगी। इसलिए जो अभी इस पेंशन के अधिकारी हैं उन्हें अपनी-अपनी सरकार के मुख्य सचिव को तुरन्त लिख देना चाहिए कि वे इस पेंशन के अधिकारी हैं और उन्हें यह मिलनी चाहिए। इस सम्बन्ध में सार्वदेशिक सभा के माननीय प्रधान जी गृहमन्त्रालय से आगे बातचीत कर रहे हैं, उसका उत्तर मिलने पर विशेष सूचना दी जायेगी।

—वीरेन्द्र

आर्य समाज सावली आदि पंचपुरी गढ़वाल के भवन निर्माण की अपील पर आर्य जनता व आर्य समाज खुलकर सहयोग करें—

मैं विगत वर्ष १९८२ के मई मास में गढ़वाल के प्रसिद्ध आर्य नेता, समाज सुधारक और देशभक्त स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी स्वर्गीय श्री जयानन्द जी भारतीय की जन्म शताब्दी समारोह पर पंचपुरी गढ़वाल गया था। मेरे साथ पं० सच्चिदानन्द जी शास्त्री और लुधियाना के प्रसिद्ध उद्योगपति माननीय श्री सत्यानन्द जी मुंजाल (हीरो साईकिल) वाले भी थे। जनपद गढ़वाल के अन्तराल में स्थित आर्य समाज सावली आदि पंचपुरी को और उसके सेवा कार्यों को समीप से देखा और बहुत प्रभावित हुआ।

इस समाज का जो भवन क्षतिग्रस्त हो गया है, उस पर कन्या पाठशाला, पुस्तकालय-वाचनालय, मेरे द्वारा स्थापित दयानन्द सेवाश्रम संघ और श्री सत्यानन्द जी मुंजाल के दान से धर्मार्थ औषधालय चलाए जा रहे हैं, जिन से जनता की और विशेष कर इस क्षेत्र के पिछड़े हुए लोगों की अच्छी सेवा हो रही है। इन सेवाओं के माध्यम से उन पर्वतीय कन्दराओं में जहां ईसाई मिशनरी अपने जाल बिछाने में सक्रिय रहती है, आर्य समाज का प्रभावशाली प्रचार-प्रसार हो रहा है। इस सम्बन्ध में आर्य समाज के अनुभवी कर्मठ कार्यकर्ता और स्वतन्त्रता सेनानी श्री शान्तिप्रकाश 'प्रेम' और उनके सहयोगियों का अथक प्रयास इस क्षेत्र में सर्वत्र आदर और श्रद्धा से देखे जाते हैं।

मैं उपर्युक्त आर्य समाज मन्दिर के पुनर्निर्माण हेतु उक्त अपील का हार्दिक समर्थन करता हूं और सभी आर्य भाई-बहनों तथा धर्म प्रेमी दानी महानुभावों से इस पुनीत कार्य हेतु उनके यथार्थ सहयोग की कामना करता हूं। धन 'सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन रामलीला मैदान नई दिल्ली-२, अथवा उक्त समाज के पते पर (श्री मंत्री जी आर्य समाज सावली पंचपुरी, पो० बेजरो जि० पौड़ी गढ़वाल) भेजें।

रामगोपाल शालवाले
प्रधान
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
महर्षि दयानन्द भवन रामलीला मैदान
नई दिल्ली-२

पाक में अहमदियां मुसलमानों पर कहर

ताजा खबरों के आधार पर पाक में अहमदियां (कादियानी) मुसलमानों सम्प्रदाय के खिलाफ अभियान और तेज कर दिया गया है। पहले भी कई बार इन पर मुस्लिम लीगी, मुसलमानों ने अत्याचार ही नहीं, बल्कि काफिर घोषित कर इनका कत्ले आम भी किया गया।

इस समय इस अभियान को और अधिक बल इसलिये मिला कि पाकिस्तान के राष्ट्रपति जनरल जियाउल हक ने एक टिप्पणी में कहा—

जो कि लन्दन में पिछले माह हुए सम्मेलन में अपने प्रतिनिधि द्वारा जो सन्देश भिजवाया था। उसमें उन्होंने अहमदिया सम्प्रदाय को मुस्लिम समाज के लिये कैंसर बताया था। साथ ही इसे समाप्त करने को कहा था। प्रतिनिधि ने पाकिस्तान के उर्दू 'दैनिक जंग' से कहा कि इस्लामी देशों में अहमदिया सम्प्रदाय को खत्म कर देना चाहिये।

प्रतिनिधि ने कहा कि कादियानी अहमदिया जाति के लोगों को कहा जाता है जन्म से ही काफिर होते हैं और इनके लिये मौत ही एक मात्र सजा है।

जब ऋषि दयानन्द आए, घनघोर अंधेरा था विजयश्री मिली पर अब प्रकाश में भी अंधकार बढ़ रहा है

— ब्रह्मप्रकाश शास्त्री, विद्यावाचस्पति, दिल्ली

दीपावली का उत्सव आर्य समाज के लिए आत्म निरीक्षण का दिन है हमे इस उत्सव को मनाते समय विचार करना चाहिए, कि कब तक हम पूर्वजों की कमाई खाते रहेंगे। जब ऋषि दयानन्द आए उस समय किसी को यह विश्वास नहीं होता था कि वेद भारत मे विद्यमान हैं। वेदों को तो भस्मासुर पाताल में ले गया है। ऋषि ने जर्मनी से वेद मंगवाकर दक्षिण के वैदिक विद्वानो को बुलाकर जनता के सामने सुनवाए, तब कुछ विश्वास हुआ कि वेदों का ब्राह्मणों ने उस कठिन समय मे कण्ठस्थ करके रक्षा की जब वैदिक साहित्य जलाया जा रहा था ऋषि ने वैदिक नाद बजाया और रावण, उवट, महीधर तथा विदेशी विद्वानों की गलत अर्थ परम्परा को बदलकर अपने वेद भाष्य द्वारा सार्थक कर दिखाया। इसीलिए तो इस युग के योगी और ऋषि अरविन्द ने कहा है कि ऋषि दयानन्द के समान आज तक किसी भी विद्वान ने वेदभाष्य नही किया है, यह थी ऋषि दयानन्द की सबसे बड़ी विजय जिसके कारण सचमुच में दयानन्द ही इस युग के वेदोद्धारक हैं।

मानव जीवन की नीव ब्रह्मचर्य आश्रम पर निर्भर करती है। बाल विवाह की कुत्सित प्रथा से भारतीय समाज जीर्ण शीर्ण हो चुका था। अष्ट वर्षा भवेद गौरी इत्यादि अवैदिक विचार भारतीय समाज को खाये जा रहे थे। ऋषि ने इन विचारो का डटकर विरोध किया, जिसके परिणामस्वरूप श्रद्धानन्द दर्शनानन्द आदि ऋषि के शिष्यों ने गुरुकुलो की स्थापना करके ब्रह्मचर्य आश्रम का पुनरुद्धार किया।

इसी प्रकार बाल विधवाए हाहाकार और चीत्कार कर रही थी। ऋषि दयानन्द के प्रबल आन्दोलन तथा तत्पश्चात आर्य समाज द्वारा विधवा आश्रमों की स्थापना से विधवा विवाह के विरोधी भी प्रबल समर्थक बन गये इसी प्रकार ईसाई और मुसलमान आर्य जाति को भेड़ बकरियो की तरह मूंड रहे थे। अकबर बादशाह ने हिन्दू धर्म से प्रभावित होकर जब बीरबल से हिन्दू बनने की इच्छा प्रकट की तो एक दिन बादशाह के साथ सैर को गए हुए बीरबल ने यमुना तट पर एक गधे की पीठ पर खुरेरा फेरना आरम्भ किया, और अकबर ने पूछा कि बीरबल यह क्या कर रहे हो तो बीरबल ने उत्तर दिया कि जहांपनाह इसकी गाय बना रहा हूँ। उस समय बादशाह ने कहा कि कही गधे से भी गाय बन सकती है। इस पर बीरबल का उत्तर था कि जिस प्रकार गधे से गाय नही बन सकती, उसी प्रकार मुसलमान से हिन्दू भी नहीं बन सकता है। इस प्रकार के दूषित विचार भारत के जन-जन मे व्याप्त हो गए थे। यदि कोई व्यक्ति मुसलमान का छुआ पानी भी पी लेता था, तो उसे तत्कालीन ब्राह्मण समाज के विरोध से कोई भी अपनाने को तैयार नही होता था। ऋषि दयानन्द से डटकर शुद्धि और अछूतोद्धार का डंका बजाया, और देहरादून में एक मुसलमान को शुद्ध करके इस कार्य को क्रियात्मक रूप दिया। ऋषि के पश्चात स्वामी श्रद्धानन्द, प० लेखराम आदि अनेक ऋषि के शिष्यों ने भारत भर में विशेषकर उत्तर भारत में शुद्धि का डंका बजाकर मौलवियो तथा पादरियों के छक्के छुड़ा दिए और आज वह दिन है जबकि सभी शंकराचार्य और सनातन धर्म सभाएं शुद्धि और अछूतोद्धार का प्रबल समर्थन करती। यह ऋषि दयानन्द की विजय नहीं तो किसकी विजय है।

इसी प्रकार ऋषि दयानन्द का आर्य समाज अन्य अनेक दिशाओ मे भी विजय प्राप्त कर चुका है। जैसे वैदिक अभिवादन का शब्द नमस्ते भारत ही नही सम्पूर्ण विश्व में जहां कहीं भी हिन्दू बसते हैं, व्याप्त हो चुका है। भूत-प्रेत का अन्ध विश्वास इतना अधिक व्याप्त था कि गांव के बाहर पीपल आदि के पेड़ों तथा श्मशानों में भूत प्रेतों का वास समझा जाता था। यह विश्वास भी सत्यार्थ प्रकाश तथा आर्य उपदेशकों ने नष्ट प्रायः कर दिया है। इसी प्रकार और भी अनेक उपलब्धियो का ताज ऋषि दयानन्द और आर्य समाज को पहनाया जा सकता है।

ऋषि दयानन्द के समय में अज्ञान अविद्या और पाखण्ड का जबरदस्त बोलबाला था, ऋषि को मतमतान्तरों तथा पाखण्डों से जबरदस्त टक्कर लेनी पड़ी थी और अनन्तकाल तक यह संघर्ष चलता रहा था। परिणाम स्वरूप विरोधी पाखण्डी दल थर्रा गया था। सन १९२४ ई० महर्षि जन्म शताब्दी मथुरा तक आर्य समाज पाखण्डों के उन्मूलन मे प्रगति करता रहा, परन्तु फिर इसे क्या सांप सूंघ गया। शिथिलता आनी आरम्भ हो गई, और यह शिथिलता अब चरम सीमा पर पहुँच चुकी है। स्वतन्त्रता से पूर्व जहां आर्य प्रतिनिधि सभाओ मे उपदेशकों की संख्या पचास साठ तक होती थी, वहा अब पांच छः अंगुलियों पर गिनने लायक भी नही रही है। शास्त्रार्थ बन्द हो चुके हैं। इसीलिए पाखण्ड बढ़ रहा है। नये नये मत-मतान्तर जन्म ले चुके हैं। धर्म के ठेकेदारो और भगवानो की फौज बढ़ती चली जा रही है।

विद्युत् के प्रकाश और आश्चर्य में डालने वाले अद्भुत आविष्कारो से मानव का मस्तिष्क अपनी चरम सीमा पर पहुंचता चला जा रहा है। पुनरपि अन्धविश्वासों का दास बनता चला जा रहा है। अब आप ही बताइए कि क्या यह प्रकाश के युग मे अन्धकार की बाढ़ नही आ रही है? मैंने बड़े-बड़े विद्वानों, डाक्टरो, वकीलो तथा इन्जीनियरों को बुतपरस्ती में पड़े कबरों तक को सिर झुकाते देखा है, समझ में नहीं आता कि उन्होने पढ़ लिखकर भी दिमाग को ताला लगा दिया है। इसी प्रकार झूठे भगवानों की तरह ही देवियों तथा भगवतियो की भी भयंकर बाढ आ गई है। कुछ वर्ष पहले तक वैष्णो देवी की बहुत कम चर्चा थी, परन्तु अब यह देवी भारत व्यापी बन गई है। अनेक झूठी नई नई देवियों का प्रचार बढ़ रहा है जैसे सन्तोषी माता की उत्पत्ति हिन्दुओं की अक्ल का लाभ उठाकर हुई है। यह सब कुछ आर्य नेताओं तथा आर्य जनता के सामने हो रहा है, और हम बुतों की तरह सब कुछ देखते हुए भी इसे नजरन्दाज कर रहे हैं। अब हमारा कार्य केवल जयकारो तथा कभी कभी हवन कर लेने तक ही सीमित होता चला आ रहा है। दिन प्रतिदिन वेद प्रचार घट रहा है। हमारे वार्षिकोत्सव मैदानों से सिमटकर आर्य समाज मन्दिरों तक ही सीमित होते चले जा रहे हैं। याद रखो ऋषि ऋण नहीं उतारा तो सर्वनाश हो जावेगा। अब भी समय है आर्य संस्कृति को केवल आर्य समाज ही बचा सकता है।

प्रसिद्ध वेदोद्धारक स्वामी दयानन्द सरस्वती

प्रो० आर्येन्द्र शर्मा एम. ए.

दीपमालिका आर्य जाति का एक श्रेष्ठतम पर्व है। यह राष्ट्रीय पर्व भारतवर्ष में सर्वत्र बड़े उल्लास और प्रसन्ता के साथ मनाया जाता है। नवीन अन्न का यज्ञ इसी पावन पर्व पर होता है। इसके अनन्तर ही हम नवीन अन्न को अपने उपयोग में लाते हैं।

इस महापर्व पर तीन महाविभूतियों का निर्वाण हुआ था। महावीर स्वामी, स्वामी रामतीर्थ, तथा महर्षि दयानन्द सरस्वती। तीनों ही संसार से विरक्त परन्तु प्रसिद्ध समाज सुधारक थे। इन तीनों ही महापुरुषों में महर्षि दयानन्द की प्रमुख विशेषता यह थी कि वेद पर महर्षि की अडिग आस्था थी। वेद की शिक्षा के बिना मनुष्य का कल्याण हो सकता है, वह यह सोच ही नहीं सकते थे। स्वामी जी की यह मान्यता थी कि जब कोई भी मत मतान्तर न थे और न किसी धर्म ग्रन्थ का अस्तित्व था तब भी संसार में वेद विद्यमान थे। इसलिये वेद सर्वमान्य है।

सर सैयद अहमद खां स्वामी जी का आदर करते थे और उनके वेदार्थ पर तो वह इतना मुग्ध थे कि उन्होंने कुरान शरीफ़ के अर्थ भी स्वामी जी की वेदार्थ शैली पर ही करने पर बल दिया किन्तु वेदों को ईश्वरीय ज्ञान मान कर तदनुसार आचरण करना उन्हें स्वीकार नहीं था। भारत के समस्त विद्वज्जन भी वेद को संसार की प्रथम पुस्तक मानते हैं तथा उसी के ज्ञान से समस्त देशों ने अपने विज्ञान की उन्नति की थी। इसी कारण श्री स्वामी जी ने आर्य समाज के तृतीय नियम में यही संकेत दिया है। "वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है वेद का पढ़ना पढ़ाना और सुनना सुनना सब आर्यों का परमधर्म है।"

महर्षि दयानन्द ने एक सवाल पर यह कहा—"योरोप से हमें कुछ नहीं लेना, योरोप को हमसे लेना है। फलतः बाबू केशवचन्द्र सेन और देवेन्द्रनाथ ठाकुर जैसे ब्रह्मसमाज के नेता रुष्ट हो गये। परन्तु स्वामी जी इससे विचलित नहीं हुये और उन्होंने यह आत्म ज्ञान पैदा किया कि वेद भारत राष्ट्र का प्राण और आत्मा है। उन्होंने इसी वेद से भारत राष्ट्र के जन जन के हाथ में दिया। परन्तु जब उन्होंने देखा कि प्रसिद्ध सायण महीधर और उवट अन्य भाष्यकारों ने वेदार्थ का अनर्थ कर दिया तब उन्होंने चतुर्वेद भाष्य करने का संकल्प किया। भाग्यवश उनका देहावसान शीघ्र हो गया अन्यथा हमको सम्पूर्ण वेदभाष्य विशुद्ध रूप में मिलता, तथापि उन्होंने यजुर्वेद का पूर्ण भाष्य किया और ऋग्वेद का भी किया परन्तु वे उसको पूर्ण रूप से सम्पन्न नहीं कर पाये।

मौर्य काल के बाद पुष्य मित्र के (शुंग काल) समय जिस धर्म का पोषण किया गया उसे इतिहास में ब्राह्मण धर्म कहा गया। महर्षि दयानन्द ने इसे पौराणिक धर्म कहा। बौद्ध जैन इसे ब्राह्मण धर्म कहते थे। इन्हीं बौद्ध और जैनों के समयसे भारतमें मूर्ति पूजा का प्रचलन हुआ। जिससे अनीश्वरता का प्रचार ही बढ़ा। बौद्ध मतानुयायी, परमेश्वर और उसके ज्ञान वेद का ही खण्डन करने लगे। परिणाम स्वरूप भारत में अनाचार की पराकाष्ठा हो गई। ऐसे विकट काल में महर्षि दयानन्द ने संसार में वेदों का प्रचार किया और "कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" का नारा लगाया।

इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिये सर्वप्रथम बम्बई में आर्यसमाज की स्थापना की। किसी किसी की मान्यता है कि इससे पूर्व राजकोट में भी आर्य समाज की स्थापना की गई थी परन्तु वह चली नहीं। आर्य समाज के सम्बन्ध में स्वामी जी की मान्यता थी कि मैं किसी नवीनता का उद्घाटन नहीं कर रहा अपितु ब्रह्मा से लेकर जैमिनि पर्यन्त ऋषि परम्परा का पुनरुद्धार ही कर रहा हूं। आर्य समाज में वेद वेदांगों के अध्ययन की परम्परा भी डाली। इसी लिये वेदांग प्रकाश के रूप में आठ भाग भी निकाले। परन्तु दुःख के साथ लिखना पड़ता है कि उनको पढ़ना तो दूर अधिकांश आर्य समाजों में उनका अस्तित्व भी विद्यमान नहीं है।

गुरु विरजानन्द से जिस आर्ष प्रणाली को उन्होंने पढ़ा था उसी के प्रसार के लिये वेदांग प्रकाश लिखे गये थे परन्तु अनेक गुरुकुलों में भी उनके स्थान स्थान पर अर्वाचीन सिद्धान्त कौमुदी का पठन पाठन होता है जिससे विद्यार्थी को उस प्रसिद्ध आर्ष प्रणाली का बिल्कुल बोध नहीं होता है।

महर्षि दयानन्द का सम्पूर्ण जीवन वेद प्रचार में ही बीता। अनेकों प्रसिद्ध शास्त्रार्थ हुये जिनमें चांदपुर (शाहजांपुर) का शास्त्रार्थ प्रसिद्ध है, जिसमें मौलवी और पादरी दोनों ही स्वामी जी के विरुद्ध लोहा ले रहे थे परन्तु दोनों को ही पराजय का मुख देखना पड़ा।

महर्षि के जीवन के अन्तिम दिन भी उन्होंने अपने प्रसिद्ध तेज से गुरुदत्त विद्यार्थी जैसे पक्के नास्तिक को आस्तिक बना दिया। इस प्रकार महर्षि दयानन्द का जीवन अलौकिक था, उन्होंने सर्वथा मानव कल्याण के लिये ही कार्य किया। अब उनके अनुयायियों का यही कर्तव्य है कि वे उस वेद प्रचार की पावन धारा का लोप न होने दें। इसी में विश्व का कल्याण निहित है।

लौटो हे दयानन्द

बी बीच भंवर में नाव हमारी,
पतवार हाथ से छूट गयी।
गया दयानन्द छोड़ हमें,
उस दिन ही किस्मत फूट गयी॥

धरती बोलो बतलाओ गगन,
दिशायें अब मत रहो मौन।
'ऋषिराज' कैसे उठ गया हाथ,
बताओ बतलायेगा कौन?

तुम भी तो हिमालय सोते रहे,
कुछ पता नहीं किस ओर गया।
कौन बतलायेगा हमको,
कैसे सबको वह छोड़ गया?

रोका न क्यों गगराज उसे,
यह कैसा पर्व मनाते हो?
हम रोते अपनी किस्मत पर,
तुम दीप खुशी के नाते हो॥

कितनी निधियां खो चुका मगर,
अब और निधि न खोने दो।
करो बन्द सीसी बाहर की,
'हे जगन्नाथ' मत रोने दो॥

जो [illegible] [illegible] तो [illegible] की,
पर, तुम भी तो [illegible] [illegible]।
दुख [illegible] [illegible] [illegible],
[illegible] 'पावक' [illegible]॥

लौटो हे दयानन्द एक बार फिर,
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]।
जिस [illegible] की हमने [illegible] [illegible],
उन [illegible] में [illegible] [illegible]॥

—वीरेन्द्र प्रसाद सिंह
गुरुकुल महाविद्यालय, [illegible]

अध्यात्म-सुधा

प्रभु का प्यार पाने के उपाय

स्व० आचार्य डा० विश्वबन्धु

१. अद्वेष-भाव

पहली बात जो महात्मा श्रीकृष्ण के उपदेश के अनुसार प्रभु का प्यार पा सकने के लिए आवश्यक है, वह है अद्वेष का भाव। द्वेष क्या होता है? द्वेष उस मानसिक वृत्ति का नाम है, जिसमे वर्तमान होकर मनुष्य यह चाहता है कि अमुक व्यक्ति को कष्ट पहुचे और हो सके, तो उसका नाश ही हो जाय। वह ऐसा क्यों चाहता है? वह ऐसा चाहता है, क्योंकि उसे उस दूसरे व्यक्ति से डर लगता है। हो सकता है, उसे उस व्यक्ति से कोई हानि पहले हो चुकी हो, जिस कारण उस व्यक्ति की ओर से उसके मन मे बराबर भय का भाव बना रहता है। वह जब जब उस व्यक्ति के बारे मे अपने मन मे सोचता है या उसे बाहर के जगत् मे चलता फिरता देख लेता है, तो वह पहले तो कुछ आतंकित सा हो जाता है और फिर, एकाएक क्रोध की ज्वाला से जल उठता है। तब जैसे भी उससे बन पाता है, वह उसे सताता और तग करता है। यह सत्य है कि ऐसा करते हुए उस दूसरे व्यक्ति को वह उसके अपराध का दण्ड दे लेता है और आगे उसके द्वारा किए जा सकने वाले अपराध का भी एक प्रकार से द्वार बन्द कर लेता है। परन्तु यह और भी सत्य है कि यह द्वेषमयी मानसिक वृत्ति उसे बहुत महगी पडती है। कारण, उसकी अपनी शान्ति का भी नाश हो जाता है। जब तक द्वेष का भूत उसके सिर पर चढा रहता है, न उसे कभी कल ही पडती है और न उसे कभी चैन ही मिलता है। उसके मन मन्दिर मे दिन रात खटखट लगी रहती है। फलत वह न तो ठीक चिन्तन ही कर सकता है और न कोई ठीक कार्य ही।

कभी कभी यह द्वेष-वृत्ति किसी विशेष व्यक्ति के प्रति सीमित रह कर सामान्य स्वरूप को भी धारण कर लेती है। उस अवस्था मे मनुष्य का हृदय नितात पाषाण के समान हो जाता है। वह दूसरों को दुःख देकर अथवा उन्हे दुःखी देखकर अपने भीतर विशेष प्रसन्नता का अनुभव करता है। यह आवश्यक नही है कि इस कोटि की द्वेष-वृत्ति की तह मे भी सदा साक्षात् भय का भाव ही काम कर रहा हो। इसकी उपज उत्तम प्रकार की शिष्ट शिक्षा के अभाव वश भी हो सकती है। यह वृत्ति कैसे ही क्यो न पैदा हुई हो, यह अवश्य होती है आसुरी और राक्षसी ही।

कहते हैं, प्राचीन रोम का नृपति नीरो, जब अपनी मित्र मडली के बीच बैठा हुआ, न जाने, कैसे-कैसे रसोने और स्वादु भोजनो का स्वाद ले रहा होता था, तो उसके और उसके साथियों के सामने खडे किए गए निरपराध दासजनो के देह,उन पर लिपटाई और तेल छिडक कर जलाई गई रुई के वेष्टन के अन्दर निरन्तर कापा और झुलसा करते थे। परन्तु ऐसे अतिकरुण दृश्य को भी देख-देख कर वे नर-पिशाच बराबर हसते और तालिया बजाया करते थे। परा काष्ठा तक पहुची इस नारकीय रौद्रता और उद्यान मे खेल रहे बालकों की निरपराध तितलियों को तग करने की साधारण लगने वाली, परन्तु सोचा जाय तो उक्त वृत्ति के पूर्व रूप की ही सूचना कराने वाली के बीचोंबीच पर्याप्त भारी सख्या मे ऐसे लोग रहा करते हैं, जिन्हें किसी न किसी प्रकार दूसरों को कष्ट देना भाता ही है।

अतएव प्रभु के प्यार को चाहने वाले साधक व्यक्ति की जीवन-साधना का प्रथम सोपान यही बताया गया है कि उसे अपने मन, वचन और आचरण में से द्वेष-भाव अर्थात् हिंसा-वृत्ति को निकाल कर उसके स्थान पर उनके अन्दर, अद्वेष-भाव अर्थात् अहिंसा-वृत्ति को सुप्रतिष्ठित करते रहना चाहिए।

जब वह स्वय तो अद्वेष-वृत्ति मे स्थित हो, द्वेष वृत्ति से युक्त होकर दुष्ट जन उसके ऊपर व्यर्थ या अन्याय-पूर्ण दबाव डाले, तो उस समय का उसका धर्म क्या है? यदि तो वह दबाव उसके निजी कष्ट तक ही सीमित हो, तो उसके प्रति उपेक्षा करना अधिक उपयुक्त होना चाहिए। कारण, ऐसा करने से, हो सकता है, वे दुष्ट जन कुछ सोचने लगे और अपना सुधार कर लें। अत अध्यात्म-साधना का सच्चा साधक दुष्ट जना को कुछ न कहता हुआ, और अपने ऊपर आए कष्ट को शान्ति-पूर्वक झेलता हुआ, उनकी दुष्टता को ही हटा सकने मे निमित्त बनना उचित समझेगा। परन्तु, यदि उस दबाव का प्रहार अधिक व्यापक और लोक-मर्यादा को बिगाडने वाला प्रतीत होता हो, तो उस समय या तो शासन का आश्रय ग्रहण करके विधिवत् दण्ड दिलाना उचित होगा अथवा, देश और काल की परिस्थिति का विचार करते हुए, आवश्यक प्रतीत होने पर, स्वय शासक का स्वरूप धारण करके भगवान् श्रीकृष्ण द्वारा शिशु पाल के प्रति किए गए दण्ड व्यवहार का अनुकरण भी कर लेना ठीक होगा। तात्पर्य यह है कि उसे ही प्रभु का प्यार प्राप्त होता है जो स्वय सब प्रकार की हिंसा-वृत्ति वाले दूसरे लोगो के सुधार के लिए भली-भाती सोच-समझकर निर्धारित किए गये ठीक साधनो का उपयोग करता रहे।

२. मित्र-भाव

दूसरा गुण जो मनुष्य को प्रभु के प्यार का पात्र बनाता है, वह है मित्रता का भाव। मित्र कौन होता है? सच्चा मित्र वही होता है जो जिस व्यक्ति को अपना मित्र कहता और समझता है, उसका सदा हित चिंतन करता हो और उसके विभिन्न कार्यों मे उसकी आवश्यकता के अनुसार यथासम्भव योग देता हो। 'मित्र' शब्द वसे सम्बन्ध का वाचक है। यही स्नेह का भाव कहलाता है। स्नेह-वश मनुष्य क्या कुछ न्योछावर नही कर देता? स्नेह के मधुर, मृदु पाश में बधा हुआ मनुष्य आवश्यकता प्रतीत होने पर, अपनी जान पर भी खेल जाता है। परन्तु उसे कदापि ऐसा नहीं लगता कि मैं अपने से भिन्न किसी अन्य के लिये ही कुछ कर रहा हू।

जो प्रभु का प्यार लाभ करना चाहता है, उसमे ऐसे मित्र भाव का होना आवश्यक है। अन्तर केवल क्षेत्र विस्तार का है। साधारण व्यक्ति अपने कुछ एक अति निकटवर्ती बन्धु-बान्धवो के ही प्रति अपनी स्नेह वृत्ति बनाए रहता है। पर प्रभु का प्यार भक्त अपने प्यारे प्रभु को हर एक प्राणी के रूप मे देखता हुआ सब प्राणियो के प्रति मित्र भाव से युक्त अर्थात् सबका हित सिद्ध करने मे तत्पर रहता है। और इस सर्व-साधन के कार्य मे वह अपने आप प्रवृत्त होता रहता है। उसे इसके लिए कुछ कहने या प्रेरणा करने की आवश्यकता नही होती। वह प्रतिदिन प्रभात के समय जब जागता है तो सबसे पहले उस दिन की अपनी कर्मचर्या का चिंतन कर लेता है। उस अवसर पर वह यही सोचता है कि मैं आज दिन भर में किस-किस तरह से लोक-सेवा के कार्य मे अपने आप को लगाए रखूगा। यही उसका आत्मचिन्तन होता है, यही उसकी सध्या होती है। वस्तुत जो प्रभु का प्यारा होता है, वह जिस-जिस कार्य को भी करता है, उस-उस को ही सब किसी के लिए हितकारी बना देने का यत्न करता रहता है। इसलिए स्वभावत उसके किसी भी कार्य के अन्दर किसी भी प्रकार की चोरी और ठगी का प्रवेश नहीं हो पाता। कारण, जो अमित्र भाव से युक्त होता है, वही चोरी और ठगी किया करता है। जो सबके प्रति मित्र-भाव से युक्त होता है, वह किसी को भी लूटना पसन्द नही करता।

और, सभी प्रकार का कर्म, जो मानव-व्यवहार में होता है, सब के लिए हितकारी हो सकना चाहिए। कोई भी कर्म विशेषत न

(शेष पृष्ठ ६ पर)

महर्षि दयानन्द के बलिदान दिवस पर आर्यो चिंतन करो

श्री सीताराम आर्य हिसार

युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द जी ने आज के दिन अपना बलिदान देते समय कहा था कि आर्य समाज के दरवाजे खोल दो। हे आर्यो क्या आप समझते हैं कि इसका अर्थ क्या था। महर्षि का यह सन्देश था कि धर्म का ढोंग रचाने वाले सभी धर्म विलम्बियों ने आर्य जाति (हिन्दुओं)। के आने के दरवाजे बन्द कर रखे थे कोई आ नहीं सकता परन्तु जा सकता था। चाहे इसानी, पुराणी, कुराणी कोई भी आए। आर्य समाज के दरवाजे सब के लिए खुले रहें। आर्यो जरा सोचो कहीं आपके भी दरवाजे बन्द तो नहीं पड़े आज हम जहां भी जाते हैं शहर हो चाहे देहात, लोग यही कहते हैं कि आर्यों को क्या सांप सूंघ गया। पहले आर्य गांव-गांव, घर-घर, जाकर प्रचार करते थे अब तो आर्यों के दर्शन भी नहीं होते। जिन गांवों में विधिवत आर्य समाजें चलती थी आज वहां आर्य समाज का नाम लेने वाला कोई नहीं रहा। क्या कभी सोचा है कि इसका कारण क्या है आइए जरा कारणों की खोज करें।

१—बहुत सी आर्य समाजों के प्रधान अनार्य बन बैठे हैं जिन में बहुत से वैश्य हैं। मांस, बीड़ी, सिग्रेट, जुआ आदि-आदि। जिस के कारण दूसरे तो घृणा करते हैं, अच्छे आर्य भी आर्य समाज से दूर हो जाते हैं।

२—पहले हर आर्य समाज के पास कई-कई भजन पार्टियां होती थी सभाओं के पास बीस-बीस पार्टियां हुआ करती थीं। वे कन्धे पर पेटी रख कर गांव-गांव, घर-घर जाकर प्रचार करते थे। भजनिक ही आर्य समाज की जान माने जाते थे।

३—आर्य समाज का जो भी पर्व या उत्सव होता था खुले मैदान में होता था। जिससे दूसरे लोगों को शामिल होने का अवसर मिलता था अब आर्य समाज का कोई प्रोग्राम हो बड़े से बड़ा विद्वान आ जाए ये नामधारी आर्य उस विद्वान् की आवाज आर्य समाज की चार दिवारी से बाहर नहीं निकलने देते क्योंकि उनको एक तो यह भय रहता है कि कहीं लोग उनके ही दुराचारी जीवन पर ना बोलने लग जाएं। दूसरे आर्य समाज मन्दिर से बाहर प्रोग्राम करने से कष्ट होता है। स्टेज लगाना, दरिया बिछाना, मज्दुरी लेना आदि आदि यह तो बीछो-बिछाई दरियों पर बैठने वाले जो रहे।

४—आर्य समाज की रीढ़ की हड्डी है 'आर्य वीर दल' जो आर्य समाज की हर विपत्ति में ढाल बन कर हमेशा आगे आया है। और आयेगा भी इस समय बहुत सी समाजों में प्रधान किसी राजनैतिक पार्टी के होने के कारण प्रधान बनते ही आर्य वीर दल की सहायता करने की बजाय उसे समाप्त करने पर तुल जाते हैं। यहां तक कि उसकी शाखाएं भी बन्द करा देते हैं। उसके दिमाग में यही रहता है कि आर्य वीर दल ताकतवर होगा तो हमें कौन पूछेगा।

अब पढ़िए इन चारों समस्याओं का समाधान

समस्या नं० १ का समाधान :—

बहुत ही सरल और आसान है कुछ आर्य समाजें ऐसा करती भी है इसलिए वे आर्य समाजें स्वच्छ और साफ हैं जो आर्य समाज अपने ही नियमों का पालन नहीं करती वह समाज अपने रास्ते से भटक जाती हैं। उन्हीं समाजों की आज दयनीय दशा है। जो आर्य समाज अपने नियम धारा ४ क पर नहीं चलती उनमें ही गलत अधिकारी बनते हैं। धारा ४ क का पालन दृढ़ता से किया जाए तो अन-आर्यों की क्या हिम्मत जो समाज के अधिकारी बन जाएं। यदि आर्य समाज को आर्य समाज रहना है तो एक दिन ऐसा करना ही होगा।

(२) भजनीक आर्य समाज की जान माने जाते थे। अब पहले तो कोई भजनीक बनता ही नहीं, मुट्ठी भर भजनीक है जिसमें से प्रभावशाली हैं वे कहां कहां पहुंच पाएंगे। फिर वे मंहगे भी बहुत पड़ते हैं उन्हें कम से कम तीन हजार रुपये मासिक वेतन एक हजार रुपये मासिक खर्च चाहिए। फिर इस मंहगाई में जिस गृहस्थ में तीन आदमी तीन दिन टिक जाते हैं दुबारा नाम नहीं लेता। इसलिये इस विज्ञान के युग में नया सस्ता उपयोगी साधन अपनाना होगा। मेरा सुझाव है कि भारत के हर जिला में एक-एक गाड़ी प्रचार के लिए छोड़ी जाए। जिसमें लाउडस्पीकर, टेपरिकार्डर हो जिसमें हमारे गिने चुने अच्छे अच्छे भजनीकों के टेप भजन और भाषण पूरा वैदिक साहित्य विशेषकर के सत्यार्थ प्रकाश गाड़ी में भरा हो एक गाड़ी हर रोज तीन-चार गांव में प्रचार करे तभी "कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" के नारे की ओर पहुंच सकेंगे।

(३) अब आर्य समाज अपने मठ और मन्दिर सिर्फ तीन कार्यों के लिये सुरक्षित कर दें। दैनिक सत्संग, साप्ताहिक सत्संग तथा मीटिंग। बाकी अपने सभी पर्व व उत्सव आदि खुले मैदान में मनाए जिससे लोग आर्य समाज को समझ सकें। आर्य समाज को यदि वेद का प्रचार करना है तो चार दिवारी से बाहर निकालना ही होगा।

(४) वैसे तो समस्या नं० १ का समाधान होते ही इस समस्या का समाधान हो जाता है कुछ विशेष भी करना होगा हर आर्य समाज अपने बजट का एक चौथाई आर्य वीरदल पर खर्च करे। आर्य समाज की अन्तरंग सभा में आर्य वीरदल के कम से कम दो सदस्य अवश्य लिए जाएं। सभी आर्य अपने बारह से बीस वर्ष तक के बच्चे आर्य वीरदल आर्य वीरांगना दल में अवश्य भेजें पहले ही हमारे नौजवानों को राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ खींच रहा है। नौ-जवानों के बिना हमारी समाज खोखली रह जायगी।

आज हम आर्य प्रतीज्ञा लें कि सच्चे आर्य (श्रेष्ठ) बनेंगे। यही ऋषिवर को सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

प्रभु का प्यार

(पृष्ठ १ का शेष)

पवित्र या ऊंचा है और न ही अपवित्र या नीचा है हर एक कर्म जो मित्र-भाव से युक्त होकर अर्थात् लोक-सेवा के अभिप्राय से किया जाता है, फिर चाहे वह चाण्डाल-कृत्य ही क्यों न हो, वही यज्ञ के समान पवित्र हो जाता है। वह साक्षात् यज्ञ ही बन जाता है और, हर-एक कर्म दूसरे की जेब खाली कर लेने मात्र के भाव से प्रेरित होकर किया जाय, फिर चाहे वह वेद-पाठ ही क्यों न हो, वही मल-मूत्र के समान अपवित्र, अतएव त्याग करने योग्य हो जाता है। सच है समाज की सुखमयी स्थिति प्रत्येक मानव व्यक्ति की भाव-शुद्धि पर, और उसकी भाव-शुद्धि उसके आत्म-विस्तार पर और उसका आत्म-विस्तार उसके मित्र-भाव की मात्रा पर अवलम्बित रहते हैं।

प्रभु तेरी इच्छा पूर्ण हो

—श्री धर्मवीर विद्यालंकार

प्रसिद्ध है कि महर्षि दयानन्द सरस्वती ने सन् १८८३ की दीपावली की सांध्यवेला में अपने प्राणों का स्वेच्छासे उत्सर्ग। करनेसे पूर्व उपरिलिखित वाक्य बोला था। प्रकाण्ड विद्वान् और परम नास्तिक गुरुदत्त विद्यार्थी, महर्षि के भव्य भाल पर दिव्य ज्योति को अनुभव कर दृढ़ आस्थावान् आस्तिक बन गया था।

संसार का प्रत्येक प्राणी शैशव से मृत्यु पर्यन्त अपने लिए सुख समृद्धि की कामना की पूर्ति में सतत प्रयत्नशील है। साथ ही अपनी मनोकामनाओं की पूर्ति मे परमपिता परमात्मा की कृपा के लिये प्रार्थना करता है।

शैशव में सुन्दर खिलौने, चमकीले वस्त्र और स्वादिष्ट भोजन के लिये अपने माता-पिता से मचलता है। युवावस्था में नये, खर्चीले निरर्थक शौकों के लिये आग्रह करता है। और बड़ा होने पर नौकरी पाने की, मिल जाने पर उसमे निरन्तर उन्नत होने की इच्छा करता है। अथवा व्यापारी बन व्यापार को स्थिर करने, तदुपरान्त उसमें प्रचुर लाभ पाने की कामना करता है। मार्ग में उत्पन्न हुई बाधाओं पर विजय पाने की आकांक्षा करता है। सफलता पर प्रसन्न होता है। असफलता पर भगवान से सफल होने की प्रार्थना करता है। उन्नत हो जाने पर, अन्य इच्छा की पूर्ति मे व्यस्त हो जाता है। और अगर वह आस्तिक और धर्म-प्राण है तो सदा कदम-कदम पर भगवान् का धन्यवाद करता है।

जन्म, शिक्षा, विवाह, सन्तान, पारिवारिक सुख, धन सम्पत्ति, ऐश्वर्य भवन, उनकी साज-सज्जा, सुख-सुविधा के छोटे-बड़े सभी उपकरण, यश, सम्मान, पद, सभी कुछ पा लेने की इच्छा करता है। फिर साथ ही परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करता है—"प्रभु मेरी इच्छा पूर्ण हो।" यज्ञ अनुष्ठान के अनन्तर पुरोहित जब आशीर्वाद देता है—"सफलाः सन्तु यजमानस्य कामा", तब वह हृदय में अपार आनन्द अनुभव करता है।

ऐसा कभी नहीं सुना कि किसी ने कहा हो—"प्रभु, तेरी इच्छा पूर्ण हो।"

देव दयानन्द के प्रभु ने कौनसी अपनी इच्छा को पूर्ण किया है।

दन्त-कथाओं में सुनते हैं कि देवताओं द्वारा मनुष्यों की इछाए पूर्ण की जाती हैं। यहां पर, लोक व्यवहार से सर्वथा विपरीत कार्य, महर्षि दयानन्द कर रहे हैं। अर्थात् प्रभु की इच्छा पूर्ण होने की बात कह रहे हैं। प्रभु की वह इच्छा क्या थी, यह गम्भीरता से विचारणीय है।

सर्व शक्तिमान् परमेश्वर्य शाली, प्रभु ससार के समस्त प्राणियों को अनन्त सुख प्रदान कर रहे हैं। उनकी इच्छाओं को पूर्ण कर रहे हैं। उस प्रभु को महर्षि कह रहे हैं—"प्रभु तेरी इच्छा पूर्ण हो।" कितने गहरे आश्चर्य की बात है।

महर्षि दयानन्द के अन्तिम दिनों की अवस्था का स्मरण करता हूं। वे विगत दो मासो से बीमार हैं। शय्या पर शान्त, धीर गम्भीर मुद्रा मे लेटे हैं। चक्रवर्ती अंग्रेजी राज्य के सर्वोत्तम निरीक्षण में श्रेष्ठतम चिकित्सक—सिविल सर्जन द्वारा हो सतत उपचार हुआ है। चिकित्सा के साथ साथ शरीर पर फोड़े फुन्सियां ऐसे निकल आए हैं, जैसे निरभ्र आकाश में, अमावस्या की रात्रि में, नक्षत्र समूह दिखाई देने लगता है। 'तीव्र' पविष से शरीर एकदम शिथिल हो चुका है। पीड़ा की तीव्रता की तनिक-सी झलक महर्षि के चेहरे पर नहीं है। अर्ध मूर्च्छित सी अवस्था है। चेतना होने पर अथवा निद्रा टूटने पर मात्र वेद-मन्त्रों का उच्चारण और प्रभु के "ओ३म्" नाम का जाप सुनाई देता है। जोधपुर से आबू और आबू से अजमेर के परिवर्तित, स्वास्थ्य वर्धक जलवायु और अन्त में परमभक्त शिष्य डाक्टर…के उपचार का स्वास्थ्य पर कोई प्रभाव परिलक्षित नहीं हुआ है।

महर्षि को अनेकों बार धोखे से विष दिया गया। उन्होंने यौगिक क्रियाओं से अपना उपचार स्वय ही कर लिया। विष को शरीर से बाहर निकाल फेक, शरीर को शुद्ध और स्वस्थ कर लिया। आज दो मास से यौगिक क्रियाओं का तथा भारतीय औषधियों का कुछ भी लाभ नही हो रहा। सिविल सर्जन महोदय की ही एक मात्र चिकित्सा से लाभ तो नही हुआ, रोग बढता गया। यह विशेष चिन्ता का विषय है।

प्रश्न है, उस समय—जब मर्ज बढता जा रहा था—उनका चिकित्सक क्यो बदला न गया जब ला इलाज हो गये, तभी सिविल सर्जन महोदय ने अपना उपचार छोडा। दैनिक जीवन मे हम देखते हैं कि साधारण लोग भी, एक चिकित्सक के उपचार से लाभ न होने पर कितने ही चिकित्सक बदल लेते हैं। फिर महर्षि का चिकित्सक क्यों न बदला गया। राजस्थान के अनेको भक्त महाराजाओ के पास यशस्वी चिकित्सको का अभाव न था। इसके अतिरिक्त अनेको समृद्ध, वैभवशाली सेठ साहूकार भी महर्षि के भक्त थे। उनके परीक्षित वैद्य, विशारदों को महर्षि की चिकित्सा करने का अवसर क्यों न दिया गया। महर्षि की भक्त श्रेणी में अनेकों उच्चकोटि के चिकित्सक थे। उनमें से एक भी महर्षि की चिकित्सा क्यों न कर पाया। वह कौन-सी शक्ति थी, जिसके सामने सभी सामर्थ्यवान्, शक्तिशाली मनुष्य कुछ उपचार न कर पाये और मात्र मूक दर्शक बने रहे।

इतिहास चुप है। उस समय के महापुरुष, राजपुरुष, राजवंशी, श्रेष्ठी, भक्त, धर्मात्मा, मित्र, शत्रु—सभी चुप हैं। तब महर्षि क्या अनुभव करते होगे? उनके अन्तःकरण में उस प्रत्येक व्यक्ति का चित्र उभर आया होगा—जिन वीरों को उन्होंने मातृ-भूमि की रक्षा के लिए तैयार किया था, जिन धर्मात्माओं को सच्चे वैदिक धर्म के प्रतिपादन प्रचार-प्रसार के लिये तैयार किया था, जिन विद्वानो को संसार से अज्ञानान्धकार मिटाने के लिये जगाया था, जिन पतितों/दलितों को उठाकर उनके जीवन मे प्राण फूके थे, जिनको नारी शिक्षा के प्रसार और समाज की अन्ध कुरीतियों को दूर करने का प्रण कराया था, वे सब आज तक असमर्थ रहे हैं, निस्तेज और मूक हैं अब उनके हृदयो मे जागृत देश धर्म संस्कृति पर मर मिटने का दृढ व्रत का लेश भी दिखाई नहीं दे रहा।

ऐसे समय मे महर्षि दयानन्द प्रभु से कह रहे हैं—"प्रभु, मेरी अपनी तो कोई इच्छा नही। शरीर से, मन से प्राण से आत्मा से भरपूर परिश्रम कर एकमात्र आपकी आज्ञाओ का पालन ही किया है। अज्ञानियो को सच्चा ज्ञान दे रहा हू, भटकों को सत्यमार्ग दिखा रहा हू, निर्बलों को सत्य-बल प्रदान कर सबल बना रहा हू, निर्धनों को सच्चे धन का अधिपति बना रहा हूं। प्रभु, तेरी ही तो इच्छा पूरी कर रहा हू। अपने लिये नही, तेरी प्रजा के लिये जी रहा हूं। अभी भी गाय रक्षा के लिये पुकार रही है, अभी वेदों का पूर्ण ज्ञान जन जन में प्रसारित प्रकाशित नही हुआ है, अभी भारत का अधिकांश मानस कुरीतियों रूढ़ियों में छूटा नहीं, भारत स्वतन्त्र नहीं हुआ, माताएं घोर यातनाएं सह रही हैं। ईरानियों और कुरानियों की दुरभिसधियां दिनों दिन बढ़ रही हैं। कितना अधिक काम शेष पड़ा है। फिर भी आप मुझे बुला रहे हैं? ये मेरे भक्त हत-प्रभ एवं मूक क्यों हैं?

"अस्तु, मैं यहां से चलता हूं। मुझसे इतना ही काम आपने इतने समय में कराना था। मैंने भारत वासियों को जगाया है। विश्व के मानव भी अंगड़ाई लेकर उठने लगे हैं। सब जाग चुकेहैं। ये भारत-वासी पथसे बने पड़े हैं। मैं उन्हें और अधिक सन्मार्ग पर लाऊं,

(शेष पृष्ठ ८ पर)

जगमग ज्योति जलाओ

दनुज वृत्तिया फैली भू पर,
अट्टहास करते हैं निशिचर,
मानवता का रुदन चतुर्दिक—
गूंज रहा धरती पर सस्वर,
उठो ! गरजते सिन्धु सदृश तुम,
दनुज वृत्तियो से टकराओ ।
जगमग ज्योति जलाओ ॥

घिरा धरा पर घना अंधेरा,
लगता यहा तिमिर का फेरा,
पड़ा हुआ है देव भूमि पर—
कंस तथा रावण का डेरा,
राम-कृष्ण के वंशज ! जाग्रत—
होकर रण का बिगुल बजाओ ।
जगमग ज्योति जलाओ ॥

ज्ञान प्रकाश धरा पर बिखरे,
सुख समृद्धि सफलता सवरे,
मानवता पथ का अनुगामी—
बन, मानव सब भू पर बिचरे,
शांति तथा समरसता भू पर—
पुन पुरातन सी ले आओ ।
जगमग ज्योति जलाओ ॥

—राधेश्याम 'आर्य' एडवोकेट, सुलतानपुर

प्रभु तेरी इच्छा

(पृष्ठ ७ का शेष)

अब आपकी ऐसी इच्छा नही है ।

तब महर्षि ने भूमि पर गोबर का लेप कराया । उस शुद्ध भूमि पर लेटे मन्त्रो द्वारा प्रभु का आह्वान किया । समय दिन, पक्ष पूछा । सस्वर वेदपाठ किया । फिर धीर, गम्भीर, शान्त स्वर में बोले—"प्रभु, तेरी इच्छा पूर्ण हो ।'

क्या यही प्रभु की इच्छा थी जिसे पूरा करने मे महर्षि ने अपने जीवन का प्रत्येक क्षण बिताया और जिसके अनुसार ही उन्होंने यह ससार छोडा ।

इस घटना ने, इस एक छोटे से वाक्य ने अनेकों प्रश्न उभार दिए हैं । आइए भक्त जन, विद्वज्जन, महा मनीषी ! ! आइए धर्म-प्राण, कर्म-प्राण, अर्थ प्राण, जरा विचारिये और हम श्रद्धालुओं को समझाइए ।

पाठकजी का बहु आयामी व्यक्तित्व

—डा० भवानीलाल भारतीय, चण्डीगढ

पं०रघुनाथप्रसाद पाठक के निधन सेआर्य समाज एक प्रौढ़ लेखक, पत्रकार तथा साहित्यकार की प्रतिभा से वंचित हो गया है । पाठक जी का जन्म १९०१ ई० मे बिजनौर जिले के ग्राम महमूदपुर मे एक कुलीन ब्राह्मण परिवार में हुआ । उनके पिता प० लालमणि शर्मा शर्मा सस्कृत के विद्वान् तथा आर्यसमाज के अनन्य भक्त थे । वे वर्षों तक आर्यसमाज के मन्त्री व प्रधान रहे । पाठक जी की शिक्षा हाई स्कूल तक हुई । उन्होंने १९२४ में विशेष योग्यता के साथ यह परीक्षा उत्तीर्ण की । महात्मा नारायण स्वामी के आदेश एव अनुरोध से पाठक जी दयानन्द जन्म शताब्दी मथुरा के समारोह के तुरन्त पश्चात् ही सार्वदेशिक सभा के कार्यालय मे आ गये और तब से निरन्तर साठ वर्षों तक आर्यसमाज की शिरोमणि सभा का कार्य करते रहे । अनवरत रूप से साठ वर्षों की दीर्घ अवधि तक किसी सार्वजनिक सामाजिक सस्था में कार्य करना अपने आप मे एक चुनौती तो है ही, करने वाले के व्यक्तित्व की क्षमता, धैर्य तथा सामञ्जस्य बुद्धि का भी परिचायक है । निश्चय ही पाठक जी में ये सभी गुण थे इसलिये उन्होंने सार्वदेशिक सभा के अनेक अधिकारियों के साथ समन्वय स्थापित करते हुए दीर्घ काल तक सभा का कार्य किया । जीवन के अन्तिम काल तक वे सभा से जुड़े रहे ।

पाठक जी हिन्दी तथा अ ग्रेजी के प्रौढ लेखक भी थे । उनके द्वारा लिखित ग्रन्थों की सख्या पर्याप्त अधिक है और उन सब पर सक्षेप रूप में भी विचार करना कठिन है । उन्होंने प० गगाप्रसाद उपाध्याय द्वारा लिखित वैदिक कल्चर तथा मैरेज एण्ड मैरिड लाइफ का सफल हिन्दी अनुवाद वैदिक सस्कृत तथा विवाह और विवाहित जीवन शीर्षक से किया । उनके मौलिक ग्रन्थो मे नैतिक जीवन, मातृत्व की ओर, आर्य जीवन और गृहस्थ धर्म, सतति विग्रह आर्य समाज और उसका सन्देश स्वामी दयानन्द का जीवन-चरित्र सत्यार्थप्रकाश दर्पण, आर्य कौन दसनियम व्याख्या आदि हैं । अग्रेजी में उन्होने आर्यसमाज एट ए ग्लान्स, आर्य एण्ड द्रविड, रादीव मेट्स आफ आर्यसमाज, सहिष्णुत एण्ड प्रीसेप्ट्स आफ दयानन्द आदि अनेक ग्रन्थ लिखे । वे एक सफल पत्रकार थे । सार्वदेशिक का सम्पादन तो उन्होंने इस पत्र के जन्मकाल से ही किया ।

जब-जब सार्वदेशिक सभा की बैठक में तथा अन्य कामो से दयानन्द भवन जाने का अवसर मिलता था, पाठक जी की स्नेहमय वार्ता का आनन्द प्राप्त हो जाता था । आर्यसमाज के इतिहास विषयक उनकी अभिज्ञता अद्वितीय थी । वे सार्वदेशिक सभा के इतिहास के जीवित कोश थे । उनके पास आर्य विद्वानों, नेताओ तथा कार्य कर्ताओ के बहुमूल्य रोचक तथा शिक्षाप्रद सस्मरणों का खजाना ही था । यदि वे अपनी आत्मकथा लिखते तो आर्यसमाज के साम्प्रतिक इतिहास का वह एक मूल्यवान दस्तावेज होता । दयानन्द भवन जाने का अवसर तो आगे भी आयेगा, किन्तु पाठक जी की कुर्सी को खाली पाकर मन मे खिन्नता अवश्य होगी ।

आर्य समाजों की गतिविधियां

आर्य धर्मार्थ औषधालय की वर्षगांठ

आर्य धर्मार्थ औषधालय आर्यसमाज सराय रुहेला अपनी पांचवी वर्षगांठ मना रहा है। यहां दमा के रोगी पूरे रूप से ठीक हो जाते हैं। यहां पर हृदय रोग, दमा, पथरी गुप्त रोगों का इलाज फ्री किया जाता है, मलमूत्र, खून परीक्षा का भी प्रबन्ध है।

—डा० जे० के० सिंह

सार्वदेशिक आर्य वीर दल बिहार

प्रान्तीय शिविर आर्य समाज हजारी बाग में दि० १ नवम्बर से १० नवम्बर तक लगाया जा रहा है।

इस शिविर में प्रान्त की सभी आर्यसमाजों के युवक भाग ले रहे हैं। शिविर के उद्घाटन हेतु सार्वदेशिक आर्य वीर दल के प्रधान संचालक पं० बाल दिवाकर जी हंस पहुंच गये हैं। शिविर का संचालन सार्वदेशिक आर्य वीर दल के उपप्रधान संचालक आचार्य देवव्रत जी करेंगे। दिनांक १० नवम्बर को शिविर के समापन के अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री लाला रामगोपाल जी शालवाले पहुंच रहे हैं। इस शिविर का आयोजन श्री भूपनारायण शास्त्री जी के सहयोग से हो रहा है। —सम्पादक

हसनपुर आर्य कन्या गुरुकुल प्रगति पथ पर

प्रवेश सूचना

आर्य कन्या गुरुकुल हसनपुर जि० फरीदाबाद (हरियाणा) की छात्राओं ने विद्या अधिकारी द्वितीय खण्ड (गुरुकुल कांगड़ी) की परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण करके (महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक) के पाठ्यक्रम अनुसार शास्त्री प्रथम खण्ड में प्रवेश करके शिक्षा आरम्भ कर दी गई है। इसके अतिरिक्त विशारद एवं प्रभाकर की छात्राओं का प्रवेश भी आरम्भ कर दिया गया है। विशेष जानकारी के लिये— —आचार्या आर्य कन्या गुरुकुल हसनपुर (जि० फरीदाबाद, हरियाणा) से सम्पर्क स्थापित करें।

विजयानन्द सरस्वती
संचालक, गुरुकुल

शुद्धि संस्कार

भुवनेश्वर, कुछ दिन हुए बालांगीर के श्री सिराज खां द्वारा कुमारी किरण अग्रवाल के अपहरण के विषय को लेकर उड़ीसा में प्रबल हलचल मची हुई थी। गत ता० ६-१०-८५ को भुवनेश्वर आर्य समाज मन्दिर में श्री सिराज खां की शुद्धि संस्कार के पश्चात् उनका विवाह सुश्री किरण के साथ सम्पन्न होकर एक संघर्ष का सुखांत समापन हो गया।

श्री सिराज सुश्री किरण तथा उनके अधिवक्ता और आत्मीय स्वजन कटक उच्च न्यायालय में न्यायमूर्ति श्री राधा चरण पटनायक के समक्ष अपनी सम्मति प्रकट करके भुवनेश्वर आर्य समाज की सहायता से विवाह के निमित्त प्रस्ताव दिया था। माननीय न्यायमूर्ति इसे स्वीकार करते हुये अपने दीर्घ निर्णय में कहा—

"अधिवक्ता ने यह निवेदन किया कि मामला मित्रता पूर्वक सुलझा लिया गया है और इस प्रकार एक विस्फोटक स्थिति का सुखान्त समापन हो गया है। यह भी तय हुआ है कि श्री सिराज और सुश्री किरण आर्य समाज की पद्धति के अनुसार विवाह बन्धन में एक हो जायेंगे।"

भुवनेश्वर आर्य समाज के नव निर्मित महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी स्मारक यज्ञ मंडप में कटक, भुवनेश्वर तथा उड़ीसा के बहुप्रतिष्ठित व्यक्तियों की उपस्थिति में श्री सिराज का शुद्धि संस्कार हुआ। श्री सिराज ने बड़ी प्रसन्नता के साथ 'श्री सूरज कुमार' नाम ग्रहण किया। शुद्धि के अनन्तर श्री सूरज कुमार और कुमारी सुश्री किरण अग्रवाल का विवाह संस्कार सम्पन्न हुआ।

उड़ीसा आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री आर्य विद्वान तथा अधीक्षक अभियन्ता श्री प्रियव्रत दास जी ने दोनों संस्कार का पौरोहित्य कार्य किया। उनकी धर्मपत्नी श्रीमती शान्तोदेवी ने विवाह संस्कार की वैदिक विधियों का विश्लेषण किया तथा नव दम्पत्ति को वैदिक साहित्य भेंट किया।

समारोह में भारतीय अधिवक्ता परिषद के भूतपूर्व अध्यक्ष श्री रणजीत महान्ति तथा उड़ीसा व्यापारिक संघ के अध्यक्ष श्री सुकुमार सेन तथा विशिष्ठ नागरिक उपस्थित थे।

उड़ीसा के सभी समाचार पत्रों ने इस समाचार को प्रमुख रूप से पर प्रकाशित किया है। भुवनेश्वर आर्यसमाज उड़ीसा में धार्मिक प्रचार तथा समाज सेवा का एक विशेष स्थल बन चुका है।

श्री हरिकिशन मलिक की हत्या पर गहरा दुःख

दिल्ली ५ नवम्बर।

श्री हरिकिशनसिंह मलिक अवकाश प्राप्त सत्र न्यायाधीश की उनके निवास स्थान राणा प्रताप बाग में निर्मम हत्या पर हुई शोक सभा मे सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री ला० रामगोपाल शालवाले ने गहरा दुःख प्रकट किया है।

श्री मलिक वृद्ध आर्य समाजी थे। वह विगत ७-८ वर्षों से सार्वदेशिक सभा के सदस्य थे। सार्वदेशिक सभा की ओर से कई बार उन्हें जांच कमीशन का अध्यक्ष भी नियुक्त किया गया था।

श्री शालवाले ने कहा कि श्री मलिक जी सादगी और सोम्यता की मूर्ति थे। उनकी सेवा भावना और लगन उच्चकोटि की थी। वह बहुत ही परिश्रमी थे। सेशन सत्र न्यायाधीश होते हुए उन्होंने अपनी बहुमंजिली कोठी बनवाने मे स्वयं काम किया था। उनके इस आदर्श और श्रमपूर्ण जीवन को देखकर कई आर्य नेताओं को उन पर विशेष श्रद्धा उत्पन्न हुई। तभी से वह आर्यसमाज मे आ गए और जीवन पर्यन्त आर्यसमाज के कार्यों और उसके साहित्य प्रचार मे लगे रहे। अपनी आय का बडा भाग वे धार्मिक कार्यों में व्यय करते थे। वह विधुर एवं नि:सन्तान थे। उन्होंने अपने माता पिता की स्मृति में प्रकाशदेवी प्यारे लाल परोपकारी ट्रस्ट की स्थापना की थी और अपनी कोठी इसी ट्रस्ट को दे दी। वह स्वयं ट्रस्ट के ट्रस्टी थे।

श्री मलिक के निधन से एक न्यायप्रिय, ईमानदार जन एवं आर्य समाज के कर्मठ कार्यकर्ता की कमी सदा खटकती रहेगी।

श्री शालवाले ने सरकार से उनकी हत्या की खुफिया जांच करने का अनुरोध करते हुये कहा कि अपराधियों को कडी से कडी सजा मिलनी चाहिये। अन्त मे शोक सभा में दिवंगत आत्मा की सद्गति के लिये प्रार्थना की गई। शोक प्रस्ताव पारित करने के पश्चात् सभा कार्यालय बन्द कर दिया गया।

प्रचार विभाग
सार्वदेशिक सभा, दिल्ली

विदेश समाचार

विजयदशमी तथा बालदिवस

आर्यसमाज दक्षिण कैलिफोर्निया, अमरीका में विजय दशमी तथा बालदिवस बडी धूम-धाम से मनाया गया, इस शुभावसर पर बच्चों ने विचित्र कपडे पहन कर अपनी कला का प्रदर्शन किया। यह एक प्रकार का फैन्सी ड्रेस शो की भांति था। आर्य समाज के संस्थापक श्री बालकृष्ण शर्मा जी ने चार बच्चो को विशेष पुरस्कार दिया तथा सभी बच्चो को पुरस्कार दिया गया। श्री मदन लाल गुप्ता, मन्त्री ने सभी बच्चों से आर्य समाज के सत्संग मे प्रति सप्ताह आने की प्रार्थना की तथा अपने माता पिता का आदर करने का वचन लिया। सभी बच्चो में बडा उत्साह था।

—सम्पादक

सार्वदेशिक प्रेस, दरियागंज नई दिल्ली में मुद्रित तथा ओम्प्रकाश पुरुषार्थी मुद्रक और प्रकाशक के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

महर्षि ने कहा था

परमेश्वर कल्याण करे।

जो परमात्मा महापराक्रमयुक्त, सबका सुहृत अविरोधी है वह सुखकारक वह सर्वोत्तम वह सुखस्वरूप वह न्यायाधीश वह सुख प्रचारक वह जो सकल ऐश्वर्यवान वह सकल ऐश्वर्यदायक वह सबका अधिष्ठाता विद्याप्रद और जो सबमे व्यापक परमेश्वर है वह हमारा कल्याणकारक हो।

परमेश्वर पिता

जो सबका रक्षक जैसे पिता अपने सन्तानो पर सदा कृपालु होकर उनकी उन्नति चाहता है वैसे ही परमेश्वर सब जीवो की उन्नति चाहता है। इससे उसका नाम पिता है।

सृष्टिसम्वत् १९७२९४९०८६] सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र दयानन्दाब्द १६१ दूरभाष ४ ७१
वर्ष २० अङ्क ४८] कार्तिक शु० ५ सं० २०४२ रविवार १७ नवम्बर १९८५ वार्षिक मूल्य २०) एक प्रति ५० पैसे

पोपपाल के भारत आगमन पर छोटा नागपुर में गरीब हिन्दुओं के धर्म परिवर्तन की घोषणा से जनता में असन्तोष

स्वतंत्र भारत में ईसाईकरण का षड़यन्त्र सहन नहीं होगा

हजारीबाग में सार्वदेशिक सभा के प्रधान की सिंह गर्जना

हजारी बाग (बिहार) १० नवम्बर। आज आर्यवीर दल शिविर का दीक्षान्त समारोह दयानन्द उच्चतर विद्यालय हजारी बाग के प्रांगण मे बड़े उत्साह के साथ सम्पन्न किया गया। हजारी बाग तथा राची के अनेक गणमान्य महानुभाव इस अवसर पर उपस्थित थे। छोटा नागपुर क्षेत्र से उरांव मुंडा जाति के आदिवासी इस समारोह मे भारी संख्या मे शामिल हुए।

आर्य वीरदल शिविर का समापन समारोह सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के अध्यक्ष श्री रामगोपाल शालवाले के सभापतित्व मे बड़े उत्साह के साथ सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर आर्य वीरो को सम्बोधित करते हुए सभा प्रधान ने कहा कि देश धर्म तथा समाज की रक्षा के लिए आर्य वीर दल की स्थापना की गई है।

श्री शालवाले ने छोटानागपुर क्षेत्र मे विदेशी ईसाई मिशनरियो की भारत विरोधी गतिविधियो की चर्चा करते हुए भारत सरकार से माग की कि विदेशी धन के बल पर गरीब जनता का धर्मपरिवर्तन बन्द होना चाहिए। सरकार विदेशी पादरियो की गतिविधियो पर अंकुश लगाए।

श्री शालवाले ने कहा कि इस क्षेत्र मे आने के पश्चात उन्हे यह बताया गया है कि आगामी मास में पोप के भारत आगमन पर छोटा नागपुर के विदेशी पादरी १ लाख हिन्दुओ का धर्मपरिवर्तन करके उन्हे ईसाई बनाकर पोप साहब का स्वागत करेगे।

श्री शालवाले ने कहा यदि यह सत्य है तो देश के लिए इस प्रकार का धर्म परिवर्तन बड़ा घातक होगा। इससे जनता मे कटुता एव साम्प्रदायिक विद्वेष प्रज्वलित होगा।

श्री शालवाले ने भारत सरकार से अपील करते हुए कहा कि गरीब हिन्दुओ पर इस आतंकपूर्ण अन्याय को रोका जाए अन्यथा देश भर मे इसकी व्यापक प्रतिक्रिया होगी।

सच्चिदानन्द शास्त्री
उपमन्त्री सभा

वेदामृतम्

स्वयं अर्जित धन का उपभोग करें

ईशा वास्यमिदं सर्वं,
यत् किं च जगत्यां जगत्।
तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा,
मा गृधः कस्यस्विद् धनम्॥
यजु ४०।१।

हिन्दी अर्थ—इस गतिशील संसार मे जो कुछ भी गतिशील या चरात्मक है वह सब कुछ परमात्मा से व्याप्त है। उस परमात्मा के द्वारा दिए हुए जगत को त्याग-भाव से भोगो। किसी के धन को लालच की भावना से मत चाहो।

सभी सम्प्रदायों पर परिवार नियोजन समानरूप से लागू हो

बागपत ६ नवम्बर। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान लाला रामगोपाल शालवाले ने भारत मे सभी सम्प्रदायो पर समान रूप से परिवार नियोजन लागू किए जाने की माग करते हुए कहा कि यदि ऐसा नही किया जाता है तो आगामी बीस वर्षों मे बहुसंख्यक अल्पसंख्यक हो जायगे और अल्पसंख्यक बहुसंख्यक।

श्री शालवाले यहा से पाच किलोमीटर दूर अग्रवाल मंडी टटीरी आर्य समाज के तीन दिवसीय ४८वें वार्षिक महोत्सव के समापन समारोह मे बोल रहे थे। महोत्सव २ से ४ नवम्बर तक चला।

उन्होने कहा कि राची ईसाई समाज ने पोपपाल द्वितीय के भारत आगमन पर एक लाख हिन्दुओ को ईसाई धर्म मे दीक्षित करने की जो घोषणा की उसे हमने चुनौती के रूप स्वीकार कर उड़ीसा में १५०० ईसाइयो को वैदिक धर्म मे दीक्षित कर इसका कड़ा उत्तर दिया है। इसके साथ ही उन्होंने स्पष्ट किया कि यह धर्म परिवर्तन

(शेष पृष्ठ १२ पर)

राष्ट्रीय शिक्षा का स्वरूप

स्वामी गुरुकुलानन्द सरस्वती (कच्चाहारी) ताड़ीखेत

"मातृमान् पितृमान् आचार्यवान् पुरुषोवेद" के अनुसार माता, पिता और आचार्य से विद्या-शिक्षा-दीक्षा प्राप्त कर मनुष्य समाज-राष्ट्र मे प्रतिष्ठित होता है। बालक ५ वर्ष तक माता से वात्सल्यपूर्ण वातावरण मे सर्वप्रथम विद्या-शिक्षा प्राप्त कर लेता है। साथ-साथ ८ वर्ष की आयु तक पिता का गम्भीर अनुशासन उसे सभ्य-सुसंस्कृत बनाने में सहयोग देता है और फिर आगे आचार्य का मार्गदर्शन होता है।

राष्ट्र की एकता-अखण्डता-सम्पन्नता हेतु शिक्षा-स्वरूप के निमित्त निम्न बिन्दु हैं :—

(१) सम्पूर्ण राष्ट्र मे सभी विद्यालयों मे एक पाठविधि हो।

(२) कक्षा-१ से १० तक—(क) अनिवार्य शिक्षा हो। (ख) राष्ट्रभाषा हिन्दी के साथ को अन्य दो भाषायें पढ़ाई जायें। (ग) सभी निर्धारित विषयो का केवल प्रारम्भिक ज्ञान दिया जाय। विषय का गहन-बोझ न हो। (घ) नैतिक व शारीरिक शिक्षा के अन्तर्गत पाच यमों (अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह) एव पांच नियमों (शौच, सन्तोष, तप, स्वाध्याय और ईश्वर प्रणिधान) के साथ योगासन आदि की शिक्षा दी जाय। और (ङ) जीवनोपयोगी सामान्य तकनीकी शिक्षा दी जाय।

(३) कक्षा-११ से आगे विद्या-शिक्षा के इच्छुक छात्र-छात्राओ को मेडिकल, इन्जीनियरिंग, कृषि, वाणिज्य, कला, तकनीकी शिक्षा, सैनिक शिक्षा आदि मे विकल्पानुसार परीक्षा के द्वारा गुणांक सूची के आधार पर प्रवेश दिया जाय।

(४) समाजवाद लाने हेतु बिना किसी भेद-भाव के समान सुविधा के आधार पर योग्यतानुसार सभी को अवसर मिले

(५) सभी के लिये निःशुल्क शिक्षा-व्यवस्था हो। राष्ट्रीय शिक्षा-कोष की व्यवस्था हो। अमीरी-गरीबी का भेद-भाव, छात्र-छात्राओ मे नही आना चाहिये। पुस्तक, वस्त्रादि का व्यय शिक्षा-कोष से दिया। सभी का एक गणवेश हो। आवासीय विद्यालय मे आहार-व्यवस्था भी निःशुल्क हो। प्रत्येक परिवार के केवल दो सन्तानो की निःशुल्क शिक्षा-व्यवस्था, मनन-चिन्तन का विषय है।

तीन प्रकार के विद्यालयो पर ध्यान देना होगा :—

१. बालविद्यालय—

कक्षा १ से ४ तक के बालक-बालिकायें अपने निवास से पढने आयें। आवश्यकतानुसार वाहन की व्यवस्था हो। इस विद्यालय मे माता-पिता-आचार्य के सामूहिक सस्कार मिलेंगे। राष्ट्र के सभी विद्यालयो का सुन्दर मानक हो।

२. सस्कार विद्यालय (आवासीय विद्यालय = गुरुकुल)—

कक्षा ५ से १० तक के छात्र-छात्रायें अलग-अलग गुरुकुल मे शिक्षा प्राप्त करें। यही हिन्दू-मुसलमान-सिख-ईसाई आदि विद्यार्थी साथ-साथ रहते हुये समभाव के संस्कार पायेंगे। ये विद्यालय नगर से दूर नदी, पर्वत के पास वन मे हों। इससे नगर की आवास-समस्या का समाधान भी होगा। ब्रह्मचर्याश्रम का लाभ मिलेगा। १५-१६ वर्ष तक के विद्यार्थी, आचार्य का सुसस्कार पायेंगे।

३, दीक्षा विद्यालय—

इस विद्यालय में रुचि-योग्ता के आधार पर प्रवेश लेकर इच्छित-सेवा-क्षेत्र मे विद्यार्थी दीक्षा प्राप्त करेंगे। ये विद्यालय कहीं भी हो सकते हैं। यहां से सरकार विभिन्न विभागों के लिये अभ्यर्थियों का चयन करे।

इस प्रकार विद्या-शिक्षा-दीक्षा प्राप्ति के बाद चरित्रवान् राष्ट्रभक्त नागरिक राष्ट्र की सम्पन्नता हेतु श्रम की गरिमा के साथ अज्ञान-अन्याय-अभाव के निराकरण में अपना योगदान दे सकेंगे।

—आर्य समाज खण्डरा की ओर से २-१०-८५ को राष्ट्रपिता महात्मा गांधी और श्री लालबहादुर शास्त्री जी का जन्मोत्सव अपने प्राचीन चल रहे स्कूल में विशेष रूप से मनाया। इस अवसर पर जिला एवं सत्र न्यायाधीश, श्री बी. एल. चेलावत ने बच्चों को नैतिक शिक्षा देने पर बल दिया।

लाला सोहनलाल मेहरा का दुःखद देहावसान

अमृतसर। १५ अक्तूबर को लाला सोहनलाल मेहरा का देहावसान हो गया। लाला सोहनलाल जी प्रसिद्ध व्यापारी और धार्मिक प्रवृत्ति के महानुभाव थे। जब देशके अन्दर इस्लामीकरण की लहर चल रही थी उस समय सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले ने उनको पत्र लिख कर धनसंग्रह के लिए अपील की थी। लाला सोहनलाल जी ने अपने दोनो पुत्रो श्री नारायणदास मेहरा एवं मोहनलाल को आदेश दिया कि अपने व्यापारियों से धन संग्रह करके सार्वदेशिक सभा को भिजवाया जाये।

जब सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले एवं मन्त्री श्री ओम्प्रकाश त्यागी अमृतसर पहुंचे तो लाला सोहनलाल जी ने ५० हजार के चैक सार्वदेशिक सभा के अधिकारियों को दे दिए।

श्री सोहनलाल जी धार्मिक भावना से ओत-प्रोत तथा सामाजिक कार्यकर्ता थे। सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले ने दिवगत आत्मा के प्रति अपनी भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की। —सम्पादक

साहित्य समीक्षा

"मधुर आर्य डायरी १९८६"

प्रकाशक—मधुर-लोक, आर्य समाज मन्दिर, २८०४, गली आर्य समाज, बाजार सीताराम, दिल्ली-११०००६, मूल्य ८), सम्पादक—राजपालसिंह शास्त्री।

मधुर-आर्य डायरी १९८६ आज मेरे सामने प्रस्तुत है। देखने से आकर्षक प्लास्टिक वाली जिल्द है। बड़ा साईज है। मूल्य ८) रुपये है। इसमे डायरी का महत्व, आर्य पर्व सूची, नक्षत्र और उसका देवता, तिथि और उसका देवता है।

इनके अतिरिक्त प्रत्येक पृष्ठ पर वेद-मन्त्रों की सूक्ति तथा अर्थ भी अंकित हैं। विक्रमी संवत्, दिन, ईस्वी सन्, शक सम्वत्, दयानन्दाब्द के साथ-साथ चन्द्र एवं सौर मास की तिथियां मुद्रित हैं। प्रत्येक पृष्ठ में दो तिथियां हैं। कागज बढ़िया है।

आशा करता हूँ प्रत्येक आर्य के घर मे "मधुर आर्य डायरी" होनी चाहिए। अधिक मांग होने पर सम्भवत. और भी सस्ती हो सकती है।

—सच्चिदानन्द शास्त्री

सम्पादकीय

भारत की शिक्षा-पद्धति दोषपूर्ण है (३)

भारत में गत् लोक-सभा के चुनाव में माननीय राजीव गांधी जी ने यह घोषणा की थी कि वह भारत की एकता तथा सुरक्षा के लिये प्रयत्न करेंगे। जनता ने इसका स्वागत किया और अब तक जितने चुनाव हुये हैं उन सबमें श्री राजीव गांधी का समर्थन हुआ। बहिन स्व०.श्रीमती इन्दिरा जी की मृत्यु का भी इस विजय में सहयोग था। विजय श्री राजीव गांधी को मिली और वह उसी उद्देश्य से कार्य कर रहे हैं।

भारत की एकता आज तक बनी हुई है, परन्तु राजनीतिक दृष्टि से भारत में उखाड़ पछाड़ होती रही। भारत की एकता का मूल स्रोत था यहां की संस्कृति और संस्कृत साहित्य इसी से धर्म और सभ्यता निकलीं। संस्कृति और संस्कृत साहित्य ने भारत की जनता को एक रखा। जैन-काल में भारत वेद भूल चुका था, परन्तु माननीय शंकराचार्य ने भी वेद का झण्डा उठाया और समूचे देश में वैदिक धर्म की ज्योति जला दी। भविष्य में देश की एकता बनी रहे इसलिये उन्होने अपना आश्रय और निश्चित रूप से वहां के अधिकारी को वेद शास्त्र का विद्वान होने की घोषणा की। सैकड़ों वर्षों से चारों केन्द्रों पर माननीय पूज्य शंकराचार्य भी विद्वान् होते चले आये हैं। धार्मिक दृष्टि से देश की जनता उनका आदेश मानती हैं।

सन् १८५७ ई० में भारत में अंग्रेजों के विरुद्ध संघर्ष हुआ। परन्तु दुर्भाग्यवश जनता को सफलता नहीं मिली। आर्य समाज के संस्थापक उस समय युवा अवस्था में थे और हम लोगों का दृढ़ मत है कि उन्होंने भी उसमें भाग लिया। संघर्ष की समाप्ति पर पूज्य स्वामी जी महाराज मथुरा के श्री बृजानन्द जी से पढ़ने गये। वहां से दीक्षा लेकर दयानन्द क्षेत्र में उतरे और देश की एकता और सुरक्षा का नारा दिया। उन्होंने भी भारत की एकता के सूत्र वेद को पकड़ा उन्होंने वेद जर्मनी से मगाये और घोषणा की कि 'वेद' ईश्वर का ज्ञान है और मानव जाति के कल्याणार्थ ईश्वर ने सृष्टि के आदि में दिया। इसे लेकर वह आगे बढ़े। अपनी क्रान्ति के लिये उन्होंने आर्य समाज की स्थापना की। आर्यसमाज के कार्य से ही कांग्रेस पार्टी को देश में शक्ति, साधन और सत्याग्रही मिले।

देश की आजादी की लड़ाई जब चल रही थी, तो अधिकांश लोगों का यह विश्वास था कि आजादी के पश्चात् भारत में संस्कृति और संस्कृत साहित्य की पूजा होगी और इन्हें स्कूल में अनिवार्य बनाया जायेगा।

देश की आजादी के पश्चात् भारत में हमारी संस्कृति खोखली बन गई और आज तक स्कूलों से बाहर है, और संस्कृत भाषा को ही सरकार ने ऐच्छिक विषय बना दिया है। विषयों की सूचि से वह बाहर की वस्तु है। भारत में ऐसा समय भी आवेगा जब कि संस्कृत भाषा को विषय सूचि से बाहर कर दिया जायेगा।

भारत सरकार अपने आंसू पूछने या जनता को धोखा देने के लिये गुरुकुलों की आर्थिक सहायता करती है। गुरुकुलों से निकलने वाले ब्रह्मचारी अनाथालयों के अन्दर से निकलने वालों की तरह होते हैं गुरुकुलों से डिग्रियां लेने के बाद वह बी०ए०, एम० ए० करते हैं और स्कूलों में नौकरी तलाश करते हैं। सरकारी दफ्तरों में उन्हें जाने का कोई अधिकार नहीं है। यदि वर्तमान स्थिति ही रही तो भारत बहुत ही निकट भविष्य में बेकार हो जायेगा और इसका संस्कृत साहित्य अलमारियों में देखने की वस्तु बन जायेगा।

सरकार से अनेकों बार संस्कृत को विषय सूचि में लानेका प्रयास किया गया, परन्तु सरकार अपनी उलझन में फंसी है। वह ऐसा करने में असमर्थ हैं। उदाहरण के तौर पर कुछ समय पूर्व पंजाब के सम्बन्ध में भारत के भूतपूर्व शिक्षामन्त्री श्री पन्त जी मिले। उन्होंने कहा कि वह उसे ठीक करा देंगे, परन्तु मसला जहां था वहीं पर है।

संस्कृति के पढ़ाने की बात सरकार के सामने आई परन्तु वर्तमान समय कुछ गाने-नाचने वाली टोलिया अपने नाच-गानों से विदेशों की जनता को खुश कर रहे हैं। संस्कृति मौलिक तत्व कहीं पर हैं। कौन कहां पढ़ाता है? भारत की संस्कृति लोगों के मस्तिष्क की वस्तु बन गई है।

भारत की संस्कृति और संस्कृत साहित्य की उपेक्षा करने वाली सरकार देश की एकता और सुरक्षा चाहती है, यह एक तमाशा है। कब तक चलेगा यह भगवान ही जनता है। इन दोनों वस्तुओं में विदेशी शासनकाल में हमें एक रखा और आज भी एक रख सकताहै; परन्तु खेद इस बात का है कि सरकार में साहस नहीं कि वह इस कार्य को करे। मुसलमानों और ईसाइयों से डरती है इसलिये वह डर रही है, परन्तु उसे ज्ञान होना चाहिये कि वही अब देश को इस्लामिक राष्ट्र बनाने की बात सोच रहे हैं।

देश की राजनीति का ढांचा जो हो सो बने, परन्तु देश की एकता और सुरक्षा बनी रहे। इसको बनाने वाले भारत की संस्कृति और संस्कृत साहित्य सरकार को इन्हें आदर देना ही होगा। इसके अतिरिक्त भारत की ८० प्रतिशत आर्य (हिन्दू) जनता का यह सब कुछ है। इसके समाप्त हो जाने पर वह मिट जायेगी। उनके अधिकार के लिये भी सरकार को इन्हें जीवित रखना होगा। इनके विरुद्ध आचरण देश की सैक्यूलरवाद के विरुद्ध है।

अन्त में सरकार से यही प्रार्थना है कि भारतीय संस्कृति और संस्कृत साहित्य को रक्षा देश की एकता और सुरक्षा की रक्षा है। इसके अतिरिक्त संसार का प्रत्येक विद्वान् संस्कृत साहित्य का ऋणि है। वह इसे पढ़ना चाहता है। भारत में संस्कृत भाषा, संस्कृत साहित्य तथा भारतीय संस्कृति देश की हत्या है। इसे सहन करना राष्ट्रभक्तों के लिये मुश्किल है।

हैदराबाद सत्याग्रह के बारे में सूचना

आर्य पत्रों में जबसे सार्वदेशिक सभा की ओर से आर्यसमाज सत्याग्रह (१९३८-३९) में भाग लेनें वालों को स्वाधीनता सेनानी सम्मान दिए जाने की घोषणा प्रकाशित की है। तब से अनेक भाई बहिनों के पत्र, इस सम्बन्ध में सभा कार्यालय में आ रहे हैं। जिनका अलग-अलग उत्तर देना और उपयुक्त कार्यवाही करना इस सभा के लिए मुश्किल हो रहा है। ऐसे लोगों को ३ नवम्बर के अंक में प्रकाशित सूचना को ध्यान से पढ़ना चाहिए।

स्वाधीनता सेनानी प्रभाग, गृहमन्त्रालय, भारत सरकार में सम्पर्क करने से ज्ञात हुआ है कि जेलों के प्रमाण पत्र यदि आवेदन कर्त्ता सरकारी सूत्रों से लेकर भी आवेदन करते हैं या करेंगे, तब भी सरकार उनके दावे को तब तक स्वीकार नहीं करेगी जब तक कि वह स्वयं सम्बन्धित सरकार से आवश्यक प्रमाण पत्र पाकर सन्तुष्ट न हो लें। इसलिए आवेदन कर्त्ताओं के लिये आवश्यक है वे अपने गिरफ्तार व कारावास होने की तिथि, सजा की अवधि और रिहाई की अवधि और जिन-जिन जेलों में रहें उसका पूरा विवरण सरकारी अधिकारी के पास नई दिल्ली भेजें। विना पूरा विवरण दिए आवेदन करने पर सम्पुष्टि न होने से वह मामला निबटाना मुश्किल है।

स्वाधीनता सेनानी की इस योजना का १९७२ से प्रारम्भ होने पर जिन लोगों ने इसके लिए आवेदन अब तक नहीं किया है, उनको

(शेष पृष्ठ १० पर)

सामयिक चर्चा–

जनसंख्या नियन्त्रित कैसे होगी ?

जिस गति से भारतवर्ष की जनसंख्या में वृद्धि हो रही है उस अनुमान के अनुसार आगामी २००० ई० तक इस देश की जनसंख्या लगभग सौ करोड़ (एक अरब) हो जायेगी। यद्यपि स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् देश की खाद्यान्न समस्या के निवारण के लिए अनेक कारगर उपाय किये गये जिनके द्वारा खाद्यान्न के उत्पादन में कीर्तिमान वृद्धि होती रही है तथापि जनसंख्या वृद्धि की दर भी उसी प्रकार बनी रही है, जिसके कारण प्रगति व लक्ष्य पूरा नहीं हो पा रहा है और जनसंख्या वृद्धि को इस भयावह वृद्धि के प्रति सरकार का चिन्तित होना स्वाभाविक है।

जनसंख्या नियन्त्रण के उपायों हेतु अनेक कार्यक्रम चलाए गये हैं, परन्तु उनकी सफलता तब तक संदिग्ध प्रतीत हो रही है जब तक इस देश के प्रत्येक नागरिक स्वतः राष्ट्रीयता की भावना से विचार कर अपने आचरणों द्वारा कार्यान्वित नहीं करेंगे। आज जनसंख्या को इसी विभीषिका को देखकर नियन्त्रण की अनिवार्यता हेतु अधिनियम बनाने की मांग की जा रही है। परन्तु क्या सरकारी नियमों का पूर्णतया पालन आज इस देश के नागरिक कर रहे हैं ?

एक ओर परिवार नियोजन अथवा परिवार कल्याण कार्यक्रमों को अपनाने से हिन्दुओं की संख्या कम होती जा रही है। दूसरी ओर मुस्लिम बन्धुओं को अभी भी चार विवाहों तक छूट देकर जनसंख्या नियन्त्रण के दिवा स्वप्न को देखा जा रहा है। इस देश के स्वतन्त्रता प्राप्ति के पूर्व ईसाइयों की संख्या १९४७ में लगभग ५० लाख थी जो अब २ करोड़ से अधिक हो गई है। इसी प्रकार १९४७ में ८ करोड़ मुसलमानों हेतु एक पाकिस्तान राष्ट्र का निर्माण कर इस देश का विभाजन कराया गया और अब पुनः भारत में ही उतने मुसलमानों फिर तैयार हो गए। इस प्रकार विदेशी शक्तियां इस देश की राष्ट्रीय अखण्डता को खंडित करने के लिये नागरिकों का निर्माण कर रही हैं।

उच्चतम न्यायालय ने नारी जाति के अधिकार व सम्मान हेतु शाह बानो का जो निर्णय दिया है, आज सारे देश में कट्टरपन्थी मुसलमान धार्मिक हस्तक्षेप के माध्यम से देश के नागरिकों को दिग्भ्रमित कर रहे हैं। क्या ऐसी स्थिति में जनसंख्या नियन्त्रण का अधिनियम बनेगा तो पुनः हलचल न होगी ?

आर्य समाज के प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने आज से लगभग १०२ वर्ष पूर्व ही अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश के चतुर्थ समुल्लास में विवाह योग्य न्यूनतम आयु का निर्धारण स्त्री और पुरुषों हेतु क्रमशः १६ व २५ वर्ष करके संयमी बनने व योग्य संतानोत्पत्ति का सन्देश दिया था तथा आजीवन एक ही विवाह का प्रतिपादन किया था। आज हमारी सरकार ने स्थिति को देखते हुए वयस्कता की आयु में संशोधन करके १८ व २१ वर्ष की आयु का निर्धारण किया है परन्तु सभी नागरिकों हेतु एक ही विवाह संहिता न होने के कारण जनसंख्या नियन्त्रण का कार्यक्रम सफल नहीं हो रहा है।

अतः सारे देश में नागरिकों हेतु जब एक समान नागरिक संहिता का निर्माण होगा तभी जनसंख्या नियन्त्रण खाद्यान्न आदि अनेक प्रकार की समस्यायें दूर हो सकेंगी और राष्ट्रीयता की भावना से ओत-प्रोत होने के पश्चात् ही इस देश की राष्ट्रीय एकता व अखंडता की रक्षा हो सकेगी।

—सुरेशचन्द्र शास्त्री

'भगवान गिरफ्तार'

नारद जी भगवान गिरफ्तार हो गए, अजी वह तो पहले से ही भक्तों की गिरफ्त में रहते आए हैं। अब कौन-सी गोपी, कौन-सी राधा, कौन-सी मीरा और कौन-सा सूरदास ऐसा पैदा हो गया जिसने कस कर अपने कन्हैया की कलाई पकड़ ली हो।

कलाई नहीं पकड़ी नारद जी हथकड़ियां लगा दीं, हवालात में बन्द कर दिया अभी तक जमानत होने की खबर नहीं आई है। उनके लीला धाम की तलाशियां ली जा रही हैं। सखियों और सखाओं में भगदड़ मच गई है। भगवान की सिट्टी-पिट्टी गुम हो गई है, नारद जी।

अरे, मैं अब समझा ! कि आप किस मायावी ईश की बात कह रहे हैं।

हां जी, कन्हैया जी की राधा और कुब्जा में परस्पर ठन गई है। वृन्दावन और बरसाने को लेकर सखि-सखाओं में झगड़ा हो रहा है। भक्त लोगों के सामने अपने भगवान की नई-नई लीलाओं के प्रकरण खुल रहे हैं देखिए आगे क्या गुल खिलता है।

गुल जब खिलेंगे तब खिलेंगे, इस समय तो आपकी बांछें खिल रही हैं।

जी, हमारी बांछें नहीं, इन नए-नए संन्यासियों, दण्ड-कमंडल धारियों, जन्तर-मन्तर और टोने-टोटके वाले गपोड़ियों एवं भारत के योग-भक्ति और ज्ञान के प्रचार के नाम पर विदेशों में अपना ढोंग फैलाने वाले कामुक धनेच्छुक और मौका लग जाए तो देश को बेच तक देने वाले इन कपट मुनियों के कारनामे अवश्य खील-खील हो रहे हैं।

तो सावधान अमरीका में अब कम्युनिस्टों को ही नहीं, भोगी-योगियों को भी खतरा पैदा हो गया है। उनसे कहो कि वे भारत में ही चिमटा बजाएं। अमरीका में अलख जगाने की जुरंत ना करें। आंख के अन्धे और गांठ के पूरे लोगों की देश में कमी नहीं है ? अब तो गिरफ्तारी की कला भारतीय पुलिस को भी अच्छी तरह आ गई है। उनसे कहो कि देश की जेलों को ही पवित्र करें। भारत में भोली जनता अभी काफी तादाद में है। भगवान भी यहां दर्जनों हो सकते हैं। गांधी जी ने जेलों को कभी कृष्ण मन्दिर कहा था। उनसे कहना कि भारत के ये कृष्णमन्दिर आपकी आतुरता से प्रतीक्षा कर रहे हैं। भारत से बाहर जाने वाले योगियों को सुनाओ यह प्रसिद्ध गीत –

जोगी मत जा, मत जा, मत जा, पांव पड़ूं मैं तेरे
अमर चन्दन की चिता बनाई जप जा, तप जा, खप जा
पांव पड़ूं मैं तेरे···

(श्री गोपालप्रसाद जी व्यास
दैनिक हिन्दुस्तान द्वारा ७-११-८५ को प्रकाशित)

हिन्दी का अपमान अपराध समझा जाय
श्री देवीदास-आर्य का वक्तव्य

आर्य समाज गोविन्द नगर की केन्द्रीय आर्य सभा, कानपुर के तत्वावधान में हिन्दी-दिवस पर आयोजित एक विशाल समारोह में केन्द्रीय सरकार से श्री देवीदास आर्य ने यह मांग की कि जिस प्रकार—

राष्ट्र ध्वज, राष्ट्रीय संविधान का विरोध करना अपराध समझा जाता है उसी प्रकार राष्ट्र भाषा हिन्दी का विरोध तथा अपमान करना अपराध करार दिया जाय। सभा की अध्यक्षता आर्य नेता श्री देवीदास ने की थी।

उन्होंने कहा कि यदि रूस, चीन, जापान, इजराइल, जर्मन आदि देश अपनी मातृ-भाषा में महान उन्नति कर सकते हैं और अपना काम चला सकते हैं तो हम भारतीय भारत में अपनी मातृ-भाषा को व्यवहार में लाकर क्यों नहीं उन्नति कर सकते हैं।

सभा का संचालन श्री श्यामप्रकाश शास्त्री ने किया विशेष वक्ता लक्ष्मण कुमार शास्त्री व ओमप्रकाश आर्य आदि थे।

युवकों से आह्वान वेदवाणी का

प्रस्तोता—देव नारायण भारद्वाज

किसी भी परिवार-समाज या राष्ट्र के प्राण युवा जन होते हैं। अपि युवजन राष्ट्र में जीवनीशक्ति एव स्फूर्ति को जाज्वल्यमान रखने की क्षमता युवकों में ही होती है। युवकों के तप्त रक्त में वह शक्ति होती है, जिससे वे किसी लक्ष्य को प्राप्त कर सकते हैं। युवकों को यदि कुमति प्रदान कर कुमार्ग की ओर मोड़ दिया जाता है तो वे विनाश एवं विध्वंस कर बैठते हैं, और यदि उन्हें सुमति प्रदान कर सन्मार्ग को ओर अग्रसर किया जाता है तो वे विकास एव सृजन के कीर्ति स्तम्भ बन जाते हैं। इसलिए तो पुरातन काल में वयोवृद्ध "उत्तिष्ठत जागृत प्राप्यवरान्निबोधत" उठो जागो। और श्रेष्ठ वस्तुओं को प्राप्त करो की प्रेरणा युवकों को प्रदान करते थे।

वेद वाणी ने युवकों को जो उत्प्रेरणा पुरातन वैदिककाल में दी थी—वही आज क वर्तमान युग में भी उपादेय है। युवकों का उद्घोष है:—

> कृतम् मे दक्षिणे हस्ते, जयो मे सव्य आहितः।
> गोजिद भूयासमश्वजिद, धनजयो हिरण्यजित् ॥
>
> अथर्ववेद ७-५०-८ ॥

मेरे दाहिने हाथ में कर्म और बांयें हाथ में विजय है। इस कर्म रूपी जादू की छड़ी हाथ में लेते ही गौ, घोड़े धन धान्य, एवं स्वर्ण सभी कुछ मुझे प्राप्त हो जायेगा यह वेद मन्त्र स्पष्ट रूप से यही सन्देश देता है कि यदि युवकों को धन-धान्य एव स्वर्ण को प्राप्त करना है, तो उसे कर्मनिष्ठ होना पड़ेगा। अपनी व्यक्तिगत सम्पन्नता तथा राष्ट्र की ऐश्वरशीलता दोनों के निमित्त कर्म परायणता परमावश्यक है। व्यक्तिगत सम्पदा तभी सुरक्षित रह सकती है, जब राष्ट्र में कतिपय परिवार धनी-प्रति धनी हो सकते हैं, पर उन्हें शाश्वत सुख एवं शान्ति लब्ध हो सके यह आवश्यक नहीं है। यदि व्यक्ति को स्थाई समृद्धि एवं शान्ति की वांछा है, तो पहले उसे राष्ट्र की समृद्धि के पोषक तत्वों का विशद वर्णन हमें यजुर्वेद में मिलता है।

> ओ३म् आ ब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायताम्।
> आ राष्ट्रे राजन्यः शूर इषव्योऽतिव्याधी महारथो
> जायताम्। दोग्ध्री धेनुर्वोढानड्वानाशुः सप्तिः
> पुरन्धिर्योषा जिष्णू रथेष्ठा सभेयो
> युवास्य यजमानस्य वीरो जायताम्।
> निकामे निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु
> फलवत्यो न ओषधयः पच्यन्तां
> योगक्षेमो नः कल्पताम् ॥ यजु० अ० २ मन्त्र २१ ॥

वैदिक युगीन आर्य स्वयं संकल्प करता हुआ - परमात्मा रूपी आदि शक्ति को स्मरण करते हुए अभिलाषा व्यक्त करता है, हे परमेश्वर प्रभु हमारे राष्ट्र में सर्वत्र वेद विद्या से प्रकाश को प्राप्त सुयोग्य ब्राह्मण उत्पन्न हों। हमारे राष्ट्र में बड़े-बड़े रथ, अतीव शत्रुओं को नष्ट करने का स्वभाव रखने वाले अत्यन्त बलवीर निर्भय राजपुत्र सर्वत्र हों। हमारे राष्ट्र को कामनाओं एवं दुग्ध से पूर्ण करने वाली भूमि एवं धेनु हों। भार ढोने में समर्थ बलवान बैल हों। शीघ्र गमनशील घोड़े हमारे राष्ट्र में प्रचुर हों। प्रभूत उत्तम व्यवहारों को धारण करने वाली नारियां हमारे राष्ट्र में हों। हमारे राष्ट्र में रथ पर स्थिर रहकर शत्रुओं पर विजय पाने वाले तथा सभाओं में--उत्तम सभ्य सभासद का व्यवहार करने वाले युवा पुरुष उत्पन्न हों। हमारे राष्ट्र का शासक विद्वानों का सत्कारकर्ता सुख प्रदाता और शत्रु विनाशक हो। हम लोग जिन योजनाओं की परिकल्पना करें वे सभी निश्चयपूर्वक सफल हों। हमारे राष्ट्र में पर्जन्य रूपी मेघ की वर्षा हो, बहुत उत्तम फलवाली औषधियां परिपक्व हों। हमारे राष्ट्र में योगक्षेम अर्थात् जो वस्तुये भू गर्भ सागर या आकाश में हैं, किन्तु अप्राप्त हैं, उन्हें प्राप्त कराने वाले योग की रक्षा हो। हमारा राष्ट्र अपने निर्वाह के योग्य पदार्थों की प्राप्ति में समर्थ हो।

यहां पर यह स्वच्छ करना समीचीन होगा, कि इस मन्त्र में जिन शब्दों को जीवन्त किया गया है, वे किसी रूढ़ अर्थ में प्रयुक्त नहीं हैं। जैसा कि बहुधा इनके साथ होता है। आज ब्राह्मण, क्षत्रिय आदि शब्दों को जन्म के आधार पर जाति विशेष से सम्बद्ध कर दिया गया है, किन्तु यहां पर ऐसा नहीं है। जो ज्ञान-विज्ञान का अनुसंधान एवं प्रसारण करता है वही ब्राह्मण है, और जो राष्ट्र की रक्षा में बलपूर्वक अनवरत सलग्न रहता है वही क्षत्रिय है। अश्व शक्ति राष्ट्र के परिवहन की प्रतीक है, तथा धेनु उसकी पोषण क्षमता की परिचायक है। बैल या वृषभ भी उस शक्ति का द्योतक है, जिससे राष्ट्र के पदार्थों को वितरण की दृष्टि से एक स्थान से दूसरे स्थान पर यातायात के लिए प्रयुक्त किया जाता है तथा जो कृषि कार्यों का आधार है। नारी भी राष्ट्र का एक अंग है जिसका सुयोग्य एवं समर्थ होना परमावश्यक है, क्योंकि गृह-शक्ति सन्तान के निर्माण एवं उत्थान का भार इसी पर है।

इस मन्त्र में युवाओं के लिए एक विशेष सन्देश है। इसमें कहा है कि युवा शूरवीर एवं शक्तिशाली हों, किन्तु वे सभा में जाने योग्य सभ्य भी हों उनमें उच्छृंखलता का प्राबल्य न हो। यह ऐसा राष्ट्र गान है। जो राष्ट्र को सर्वतोन्मुखी समृद्ध एवं वैभव सम्पन्न बनाने का व्याख्यान करता है।

युवक राष्ट्र की वह निधि है जो निरन्तर गतिशील, उन्नतिशील एवं जागृतिशील विजिगीषा द्वारा राष्ट्र की वसुन्धरा को स्वर्गादपि गरीयसी बना देते हैं क्योंकि उनमें निहित सामर्थ्य का वेदवाणी भी आह्वान करती है:—

> श्रमेण तपसा सृष्टा ब्रह्मणा वित्त ऋतेश्रिता।
> सत्येनावृता श्रिया प्रावृता यशसा परीवृता ॥
>
> अथर्व० १२। ५। १। २ ॥

ज्ञान विज्ञान का अनुसन्धान एवं समस्त लक्ष्यों की उपलब्धि श्रम-प्रयत्न, तप, धर्मानुष्ठान के द्वारा उत्पन्न की जाती है। इन ध्येयों की प्राप्ति कर्मनिष्ठ ब्रह्मचारी द्वारा साधित सत्यज्ञान में ठहरी है। यहां पर ब्रह्मचारी से तात्पर्य युवकों से ही तो है। श्रम एवं तपश्चर्या युवकों के भूषण हैं। युवक जब उच्च गुणों से आवृत हो जाता है तो श्रम तप-सत्य श्री तथा यश उसके अनुवर्ती हो जाते हैं। तभी श्रेष्ठ मानव समुदाय उत्कृष्ट राष्ट्र का द्योतक होता है। प्राचीन काल में इन शक्तियों एवं साधनों पर हमारा नियन्त्रण था, तो हमारा राष्ट्र विश्व गुरु था अग्रणी था। अब इन उद्देश्यों को उपेक्षित कर दिया, तब हम पतनोन्मुख हो गए। अब भी हम इन ध्येय बिन्दुओं का सम्मान करके सर्वोत्कृष्ट पद प्राप्त कर सकते हैं।

(क्रमशः)

आरिफ मोहम्मद खान का भाषण

(गतांक से आगे)

अपने भाषण में आगे चल कर श्री आरिफ कहते हैं—सच बोलने की तीन कसमें खिलाई जाती हैं और उसके बाद इसलाम के बारे में पूछा जाता है, उसके बाद चौथी कसम खिलवाई जाती है: जिसमें कुछ इस तरह के शब्दों का प्रयोग होता है कि अगर मेरा इलजाम झूठा हो तो मेरे ऊपर मुसीबत आये, उसके बाद भी अगर दोनों में से कोई मानने को तैयार नहीं हो, तो फिर इसका मतलब हुआ कि वे दोनों अब साथ-साथ नहीं रह सकते और उसका नतीजा अलहदगी ही रह जाता हैं, ऐसे मामलों में भेंट देने को नहीं कहा गया है, लेकिन महर के लिए क्या हुक्म है ?

हदीस शरीफ के अनुसार नियान के लिये एक मामले में जब पति-पत्नी में अलहदी हो गई, तो पति बोला कि यह औरत, अब मेरे साथ वफादार नहीं रही है और इससे मेरी इस तरह अलहदगी हुई है, तो मैंने जो इसे महर दिया, वह तो मुझे वापस दिलवाओ—इस पर पैगम्बर का जवाब था कि तुम महर की रकम वापस पाने के हकदार नहीं हो, अगर तुम अपनी जगह सच भी हो तो भी तुमने जो महर दिया है, वह उस औरत के साथ कानूनी ढग से विवाह को ससिद्धि के लिए दिया है। एक किस्सा तारीखे इस्लाम का यह भी है कि जिस दिन पैगम्बर मुहम्मद को कुछ थोड़ी-सी नाराजगी अपनी बीबियों पर आई थी, सुरा तुल अहजाब की आयत २८ में इसका जिक्र है कि पैगम्बर ने अपनी बीबियों से कहा—अगर आम औरतों की जिन्दगी गुजारना चाहती हो, दुनिया में ऐशो-आराम की जिन्दगी गुजारना चाहती हो, तो आम औरतों की तरह मैं तुम्हें रुखसत करने के लिए तैयार हूं। तुम्हारे लिये इतना इन्तजाम करके कि तुम ऐशो-आराम की जिन्दगी गुजार सको।

सवाल यह है कि शरीअत को हम कितना माने, मैं नहीं समझता कि शरीअत इसकी इजाजत देता है कि उसके वे हुक्म तो मानते चले जायें, जो हमें अधिकार देते हैं, और उन प्रावधानों से बच कर निकल जायें, जो हमें फरायज और जिम्मेदारियां देते हैं, कर्त्तव्य और अधिकार की बात कुरान शरीफ में साफ तौर पर कही गई है, मौलाना आजाद के तरजुमे (सूरा-२ आयत ८४) के अनुसार जब ऐसा होता है कि तुम्हारे द्वारा जिला वतन किया गया आदमी दुश्मनों के हाथ पड़ जाता है और कैदी होकर तुम्हारे सामने आता है, तो तुम फिदिया देकर छुड़ा लेते हो और कहते हो कि शरीअत की रूह से ऐसा करना जरूरी है। हालांकि अगर शरीअत के हुक्म का तुम्हें इतना ही पास है, तो शरीअत की रूह से यह बात भी हराम थी कि उन्हें उनके घरों और बस्तियों से जिला वतन कर दो।

मैं ज्यादा तफसील में नहीं जाना चाहता, मैं इतना जानता हूं कि हिन्दुस्तान में मुसलमानों के कितने ही समुदाय हैं, जो लॉ आफ सक्सेशन इनहैरिटेंस (उत्तराधिकारी कानून-विरासत)वगैरा के मामले से मुख्तलिफ कानूनों पर अमल करते हैं। उनके यहां मुख्तलिफ कानून जायज हैं, मैं नहीं मानता कि इससे उनके ईमान में फर्क पड़ रहा है, मैं शरीअत को बहुत एहतराम की निगाह से देखता हूं, मैं समझता हूं कि एक बार डी. आर. पी. सी. को तो तब्दील किया जा सकता है और उसे तब्दील करके मुसलमान औरतों को इस हक से महरूम किया जा सकता है कि जिन मुताल्लिका औरतों के पास गुजर-बसर का कोई जरिया नहीं है, वे अदालतों में जा सकें, लेकिन कोई कुरान को तब्दील नहीं कर सकता, कुरान औरतों को हक देता है कि औरतें इज्जत की जिन्दगी बसर करें।

इस मुल्क में हमने बहुत मुश्किल वक्त देखा है, मजहब को सियासी फायदों के लिए इस्तेमाल करने से हमने उसके बहुत बुरे नतीजे भुगते हैं, मौलाना आजाद के अनुसार इसी सियासत के नतीजे में चेहरों पर इज्तराब और दिलों में वीरानी पैदा हो गई थी। उस सियासत के नतीजे में जहां मजहब का इस्तेमाल सियासत के लिए किया गया, तमाम जज्बाती नारे लगाने के बावजूद नारे लगाने वाले, हिन्दुस्तान के मुसलमानों को लावारिस समझ कर, तकदीर के हवाले करके कहीं और चले गये, आज फिर माहौल ने करवट ली है, हालात बेहतरी की तरफ हैं और एक बार फिर वे नारे लगाने वाले लोग अपनी सियासी बाजीगरी और सियासी बाजार को गरम करने के लिए मैदान में आ गये हैं। मेरी यह अपील है कि अब फिर इस मुल्क के माहौल को खराब न किया जाये, मुल्क में हम फिरकापरस्ताना हम आहंगी की तरफ आगे बढ़ रहे हैं। हम अपने उस कड़वे माजी को, नुकसान पहुंचाने वाले, दिलों को तोड़ने वाले, नफरत फैलाने वाले माजी को दोहराये नहीं।

मूलचन्द जी बोल रहे थे, तो मुस्लिम लीग के सदस्यों ने हंगामा किया, डागा जी ने जो कुछ कहा वह गलत जानकारी के आधार पर कहा, अगर मुस्लिमों के बारे में उन्हें अच्छी तरह जानकारी नहीं है, तो इसका दोष किसे है ?" (भाषण समाप्त)

विश्व के प्रत्येक धर्म के अपने कुछ उसूल हैं। इन्हीं उसूलों का अर्से से इन धर्मों को मानने वाले अनुयायी पालन करते चले आ रहे हैं। हालांकि सभी धर्मों का ध्येय और मंजिल एक ही है। लेकिन अगर यह कहा जाए कि विश्व के सभी धर्म अपने आप में पूर्ण हैं, तो यह गलत होगा। विश्व के प्रत्येक धर्म में अगर अच्छाइयां हैं, तो बुराइयां भी हैं। अब हिन्दू धर्म को ही ले लिया जाए, तो अर्से से हमारे यहां बाल-विवाह, सती प्रथा और छुआछूत की ओर अन्य भी कई कुरीतियां चलती आ रही थी। हालांकि अब इन कुरीतियों को हम काफी हद तक खत्म करने में कामयाब रहे हैं। लेकिन इसका श्रेय समय-समय पर हुए उन समाज-सुधारक और हिन्दू धर्म के नेताओं को जाता है, जिन्होंने इन कुरीतियों को दूर करने के लिए अनथक प्रयास किए और यहां तक कि अपनी जान पर भी खेले। अनेकों ऐसे हिन्दू नेताओं के नाम इस सन्दर्भ में लिए जा सकते हैं। राजाराम मोहन राय, स्वामी विवेकानन्द, स्वामी दयानन्द से लेकर महात्मा गांधी तक न जाने कितने ही समाज सुधारकों और महान पुरुषों ने हिन्दू धर्म में व्याप्त सैंकड़ों बरसोंसे चली आ रही कुरीतियों के लिए लड़ाइयां लड़ी हैं। शायद केन्द्रीय राज्यमन्त्री श्री आरिफ मुहम्मद खां भी उसी क्रान्तिकारी मिट्टी के बने हैं। वह एक नौजवान राजनीतिज्ञ हैं। उनके मन में भी अपने धर्म की छुपी कुरीतियों को खत्म करने की एक उमंग है। वह बेबाक हैं और अन्जाम से बेपरवाह होकर अपने धर्म के रूढ़ीवादी और कट्टरपन्थियों को चैलेंज कर रहे हैं। आज वह एक ऐसे विवाद में घिर चुके हैं, जिसने पूरे मुस्लिम समाज की जड़ों को हिला कर रख दिया है। वह साहसी हैं क्योंकि उन्हें तथा उनके परिवार को जान से मार देने की धमकियां मिल रही हैं। लेकिन फिर वह अपने स्टैण्ड पर कायम हैं। हालांकि श्री आरिफ खां का मुकाबला इस समय मुस्लिम समाज के उस पुरुष वर्ग से है, जो अर्से से इस समाज पर हावी रहा है, लेकिन एक बात जो आरिफ जी के पक्ष में जाती है, वह यह है कि लम्बे अर्से से घुटी और दबी मुस्लिम औरतें भी श्री खां द्वारा उनके लिए आवाज उठाने पर आज अपने हितों और अधिकारोंके प्रति सजग और सतर्क हो गई हैं। इस समय न केवल मुस्लिम समाज की औरतें, बल्कि पूरे भारत की औरतें, उनका धर्म चाहे कोई भी रहा हो, श्री खां द्वारा शुरू किए मुस्लिम औरतों के अधिकारों की प्राप्ति के इस जिहाद में उन के साथ हैं। यह तो समय ही बताएगा कि श्री आरिफ खां अपनी इन कोशिशों में किस हद तक सफल होते हैं ? अगर श्री खां अपनी इस लड़ाई में सफल हो जाते हैं, तो फिर पूरे विश्व के मुस्लिम समाज में मुस्लिम औरतें अपने अधिकारों और हितों के लिए उठ खड़ी होंगी। इसलिए श्री आरिफ खां पर इस समय भारत के मुस्लिम समाज की ही नहीं बल्कि पूरे विश्व के मुस्लिम समाज की नजरें हैं।

—प्रतिनिधि

कुमारी लज्जावती और शन्नोदेवी

स्वाधीनता की वीरांगनाएं, कन्या महाविद्यालय की

आजादी की लड़ाई के उस युग में, जब सरकारी स्कूलों-कालेजों का बहिष्कार कर सैकड़ों-हजारों छात्र-छात्राएं अपनी पढ़ाई छोड़कर बाहर आ गए थे, तो देशभक्त परिवारों के बच्चे राष्ट्रीय विद्यालयों और महाविद्यालयों में ही पढ़ने भेजे जाते थे। ऐसे सोद्देश्य स्थापित शिक्षण संस्थानों में लाहौर के नेशनल कालेज, अहमदाबाद की गुजरात विद्यापीठ और जालन्धर के कन्या महाविद्यालय के नाम प्रमुख रूप से लिए जा सकते हैं, स्वतन्त्रता-संग्राम के सेनानी तैयारी करने में जिनकी महत्वपूर्ण भूमिका रही है। यद्यपि जालन्धर कन्या महाविद्यालय की स्थापना नवजागरणकाल में आर्यसमाजी विचार-धारा के प्रसार और लड़कियों को तदनुरूप संस्कारी शिक्षा देने के लिए एक कन्या गुरुकुल की तरह की गई थी, पर स्वतन्त्रता-संग्राम में विद्यालय की छात्राओं में राष्ट्रीय भावनाएं भरने और उन्हें देश की आजादी की लड़ाई के लिए तैयार करने में भी इस संस्थान की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण रही है।

कुमारी लज्जावती इसी महाविद्यालय की प्रधानाचार्य रहीं, जिन्होंने छात्राओं में स्वदेशी भावनाएं भरने, उन्हें देशभक्त बनाने और देश के लिए समय पर सब कुछ बलिदान करने के लिए समय तैयार किया। 'जलियांवाला बाग गोलीकांड' के बाद कुमारी लज्जावती अपने आपको अप्रत्यक्ष सेवाओं तक सीमित न रख विद्यालय की नौकरी छोड़, लाला लाजपतराय के साथ काम करने के लिए लाहौर चली गई थीं। लाला जी के साथ गरम दल की कार्यकर्त्री के रूप में कार्य करते हुए उनकी सहानुभूति क्रान्तिकारियों के साथ भी निरन्तर बनी रही। भगतसिंह, सुखदेव आदि सभी क्रान्तिकारी उनसे समय-समय पर मिलते रहे, उनके यहां आश्रय पाते रहे, उनके द्वारा एकत्रित-फंड से भी लाभान्वित होते रहे। अपनी महिला साथियों की प्राप्ति और प्रशिक्षण के लिए भी वे उन पर निर्भर रहते रहे। जब खतरे का अनुभव होता, कुमारी लज्जावती उनके लिए अन्यत्र सुरक्षित स्थल भी जुटाती। भगतसिंह व साथियों के मुकद्दमे के दौरान उन्होंने न केवल जेल में उनसे मिलने के लिए अपनी छोटी बहन शिवा का उपयोग किया, फंड जुटाने के लिए भी बहुत श्रम किया और उन्हें बचाने की योजनाओं में अपना भरपूर सहयोग प्रदान किया। उनकी रिहाई के लिए वह गांधी जी से भी जाकर मिली थीं। दिल्ली निवासी कालिंदी कालेज की अवकाश प्राप्त प्रिंसीपल, (कुमारी लज्जावती की छोटी बहन) श्रीमती शिवा दुआ बताती हैं कि वह शिव कौर के नाम से भगतसिंह की एक रिश्ते की बहन बनकर उनसे मिलने जेल व अदालत जाया करती थीं, और यह सारी व्यवस्था उनकी बड़ी बहन कुमारी लज्जावती ही करती थीं। भगतसिंह आदि की रिहाई के लिए कुमारी लज्जावती के गांधी जी से मिलने की बात भी शिवा ने ही बताई। कुमारी लज्जावती की अभी हाल ही में मृत्यु हुई है।

लज्जावती के नौकरी छोड़ने के बाद जालन्धर कन्या महाविद्यालय की प्रधानाचार्या का काम शन्नो देवी जी ने सम्भाला था। भगतसिंह की साथिन सुशीला दीदी उनकी ही शिष्या रहीं। लीला व उनकी बहनें भी। दिल्ली में क्रान्तिकारियों के सहायक, उनके आश्रयदाता फरारी जीवन में सुशीला दीदी के संरक्षक, साथी व बाद में पति श्री श्याम मोहन से सुशीला की भेंट एक अवसर पर शन्नो देवी ने ही कराई थी और दिल्ली में उन्हें यह काम सौंपा था। एक तरह शन्नो देवी जी का भी वही काम रहा, कुमारी लज्जावती जिसकी पूर्व परम्परा वहां छोड़ गई थी—छात्राओं में भारतीय संस्कृति के व राष्ट्रीयता के संस्कार भरना और उन्हें देश की आजादी की लड़ाई के लिए तैयार करना। १९१०-१६ तक उन्होंने इसी विद्यालय से शिक्षा पाई थी और १९२० में कुमारी लज्जावती के लाला लाजपतराय के साथ सक्रिय हो जाने पर विद्यालय छोड़ने के बाद वहीं प्रधानाचार्या थीं।

पंजाब के राजनैतिक जीवन से शन्नो देवी को भी शुरू से ही संघर्ष रहा था। भगतसिंह के पिता व उनके पिता के बीच निकट संघर्ष रहने से भगतसिंह बचपन से उनके संघर्ष में थे और अक्सर उनके यहां आते थे। सुशीला और भगवती चरण को निकट लाने व भगतसिंह के साथियों : धनवन्तरि, यशपाल आदि से उनका परिचय करा, सुशीला को उनके काम में सहायक बनाने के पीछे शन्नो देवी का प्रमुख हाथ रहा। घर में मां के न रहने से व सुशीला के कारण उनके पिता की नौकरी पर आंच न आए, इसलिए सुशीला दीदी छुट्टियों में घर नहीं आ पाती थीं, तो शन्नो देवी ने छुट्टियों में सुशीला की भगवतीचरण के घर रहने की व्यवस्था करवा दी थी। दुर्गा भाभी लिखती हैं, 'सुशीला के रूप में मुझे सगी ननद से भी बढ़कर ननद-सहेली मिली और मेरा अकेलापन बंट गया।' इसके बाद दुर्गा भाभी और सुशीला दीदी के साथ रहने, साथ काम करने और दोनों के जगत भाभी व जगत दीदी के रूप में पहचाने जाने के पीछे यही कहानी है। क्रान्तिकारी आन्दोलन का इतिहास इन्हें भाभी और दीदी के रूप में ही अधिक याद रखता है।

शन्नो देवी जब-जब कलकत्ता जाती थीं, उन्हें ठहराने का प्रबन्ध भी सुशीला दीदी वहीं सेठानी लक्ष्मी देवी की कोठी वाले में ही करती थी। भगतसिंह जब वहां थे, उन्हीं दिनों शन्नो देवी भी वहां पहुंची थीं। वहीं उनकी भगवतीचरण और भगतसिंह से भेंट हुई और उन्होंने उनकी आगामी योजनाओं में सलाह-मशविरा किया। वह लिखती हैं, 'भगतसिंह को तब हम 'हरि' नाम से बुलाते थे।' सेठानी लक्ष्मी देवी की भी उन्होंने बड़ी तारीफ की है। उनके संस्मरण से यह भी पता चलता है कि कलकत्ता में अधिवेशन के समय अध्यक्ष श्री मोतीलाल नेहरू की गाड़ी रोक कर तब उसी बस्ती मे रह रहे श्री सत्यदेव विद्यालंकार ने दीदी और अपनी पत्नी सुभद्रा से उनका तिलक करवाया था।...आजादी के बाद शन्नोदेवी पंजाब व हरियाणा की एक प्रमुख सामाजिक, राजनैतिक नेत्री के रूप में जिस तरह उभरी और हरियाणा मे मन्त्री भी बनी, उनके इस रूप से सभी परिचित हैं। क्रान्तिकारियों की सहायता और क्रान्तिकारी युवतियों के निर्माण की उनकी इस भूमिका को शायद बहुत कम लोग जानते होंगे, इसलिए यहां उसी का उल्लेख किया गया है।

—आशारानी व्होरा

हैदराबाद धर्मयुद्ध के सत्याग्रही स्वतन्त्रता सेनानी घोषित

सरकारी आदेश की प्रतिलिपि

No. 8/32/84 – FF (P)
Government of India/Bharat Sarkar
Ministry of Home Affairs/Grih Mantralaya.
New Delhi-110003, the 30th Sept.'85

To

Chief Secretaries of all State
Govts /U T Administrations,
(as per list attached).

Sub:—Grant of pension from Central Revenues to freedom fighters and their families under Swatantrata Sainik Samman Pension Scheme.

Sir,

I am directed to state that certain proposals based on the recommendations of the Non-Official Advisory Committee at the Central level have been under consideration of the Government for some time. The Government have taken the following decisions in respect of the Freedm Fighters pension Scheme, 1972 now renamed as Swatantrata Sainik Samman Pension Scheme' —

(i) Arya Samaj Movement of 1938-39 which took place in the former Hyderabad State has been recognised as part of the freedom struggle for the purpose of Samman pension under the liberalised pension scheme effective from 1-8 80.

(ii) The quantum of monthly pension admissible to freedom fighters and the widows of the deceased freedom fighters has been raised to Rs. 500/-p m with affect from 1st June, 1985. The enhanced rates of pension of Rs. 500/-p m. will also be admissible to the widows of the deceased freedom fighters The unmarried daughters of the widows who have been sanctioned family pension under the scheme will now not be entitled for additional pension of Rs. 50/- Separate general instructions are being issued to all the Accountants General to revise the Pension Payment Orders in pursuance of this decision.

2. The Government have also considered the undermentioned proposals but have not accepted them for the purpose of pension under Swatantrata Sainik Samman Pesnion Scheme:—

(i) Award of Tamrapatras to the legal heirs of martyrs/deceased freedom fighters.

(ii) Grant of pension to such ex INA personnel (from civilian side) who are in receipt of State pension in relaxation of the existing provisions.

(iii) The question of recognition of:—

(a) Cochin Police Strike—1942—Kerala.

(b) Kerivellur Struggle— Kerala.

3. The State Governments are requested to bear in mind the above decisions of the Government while verifying the claims of applicants for Samman pension under Swatantrata Sainik Samman Pension Scheme.

Yours faithfully,
(K. N. SINGH)
Under Secy. To The Govt. Of India

Copy for information to:—

1. All the Branch Officers and Processing Sections of the Freedom Fighters Division.
2. DS (FF)/PS to JS (F)/PS to Dir. (FF).
3. Cabinet Secretariat (Sh. H. R. Goel, Dy. Secy) with reference to their letter No. 27/CM/85(1) dated 11-9-85.

(K. N SINGH)
Under Secy. To The Govt. Of India

हजारों सुन्दरियों से घिरे रजनीश को क्या मिला?

अमरीका के एटार्नी जनरल ओरेगान उर्फ रजनीशपुरम में बढ़ते हुए सैक्स खेलों, ईसा की खुली निंदा, आव्रजन सम्बन्ध में झूठ बोलने ओरेगान म्यूनिसिपैलिटी पर कब्जे के लिए विदेशियों को बुलाकर नकली शादी रचाने व हथियार इकट्ठा करने के कारण दो वर्ष से रजनीश से अभी तक चुप बैठे थे। अब शीला के झगड़े ने उन्हें यह अवसर प्रदान कर दिया। पुलिस ने रजनीशपुरम के २० हजार डालर से बने उस स्वीमिंग पूल में अनेक हथियार बरामद किये हैं जहां दस हजार सन्यासिनें नग्न नहाती थीं। समझा जाता है कि एटार्नी जनरल ने शीला को रजनीश के विरोध में गवाही के लिये तैयार कर लिया है।

बहुत कम को यह बात मालूम है कि रजनीश व शीला वास्तव में रिश्ते में बहन भाई हैं। शीला बड़ौदा के अम्बालाल चाचभाई पटेल की पुत्री है जो गत २५ वर्षों से वहां अपने खेत में एक झोंपड़ी बनाकर रहते हैं। वे गांधी जी के अनुयायी रहे हैं। अम्बालाल पटेल १९१२ में बम्बई में क्लर्क थे। वहीं उनके मित्र कपड़े के दुकानदार बाबू भाई जैन थे। ११ दिसम्बर १९३१ को बाबू भाई के रजनीश मोहन नाम का पुत्र जन्मा। पर वह निरन्तर बहुत बीमार रहता। ज्योतिषियों ने सलाह दी कि पुत्र को किसी को दे दो तो बच जायेगा, तब बाबू भाई ने ४ वर्षीय रजनीश को अम्बालाल पटेल को गोद दे दिया। इसकी लिखा पढ़ी भी हो गई जिसके कानूनी कागजात शीला के कब्जे में हैं।

अम्बालाल पटेल व पत्नी मणिबेन के कोई बच्चा नहीं था। अतः वे रजनीश को सहर्ष गोद ले आये। पर इसके बाद अम्बालाल पटेल के मणिबेन से एक के बाद एक ६ सन्तानें हुईं। इनमें सबसे बड़ी थी रेखा व सबसे छोटी शीला। रजनी उन सबके साथ ही बड़े हुए। चूंकि वे अब बीमार नहीं रहते थे वे बच गये थे व अम्बालाल के सुख के बच्चे हो गये थे, अतः रजनीश के वास्तविक पिता बाबू भाई जैन पुत्र रजनीश को वापस ले गये। पर यह तय हुआ कि रजनीश कुछ दिन अपने वास्तविक पिता बाबू भाई जैन के जहां रहेंगे तो कुछ दिन अम्बालाल पटेल के यहां।

पर जब रजनीश के पिता बाबू भाई जैन की मृत्यु हो तो रजनीश की मां रजनीश को अपने भाई के यहां म० प्र० मे रायसन ले आई। रजनीश ने जबलपुर से बी० ए० व १९५७ मे व सागर से अत्यन्त उच्च अंकों मे दर्शन में एम० ए० किया। साथ ही दैनिक नवभारत में पार्ट टाइम प्रूफरीडर व उपसम्पादक के रूपमें काम किया। १९५९ में वे महाकौशल आर्ट्स कालेज में दर्शन के अध्यापक हो गये। दर्शन शास्त्र के साथ साहित्य, चित्रकला, फोटोग्राफी में भी रजनीश की गति थी।

पर लवर बाय के रूप में उनकी गति सबसे अधिक थी। उनका पहला प्रेम १६ वर्ष की आयु में एक डाक्टर लड़की शशि शर्मा से हुआ था। पर उसकी मृत्यु हो गई। चूंकि वे जैनी थे और विद्वान भी अतः जैन मन्दिरों में प्रवचन देने बुलाये जाने लगे। उनके चुटकलों, उनकी मोहक भाषा से लोग प्रभावित होते। रजनीश ने इस क्षमता को और आगे बढ़ाया। रजनीश ने अब हिप्नोटिज्म भी सीख लिया। १९६२ में कुछ अपने प्रशंसक व्यापारियों की मदद से उन्होंने जागृति केन्द्र कायम किया। इस मध्य उनकी बहुत सी गोपियां हो गई थीं। इसका विरोध हुआ। १९६७ में इसी कारण उन्हें जबलपुर विश्वविद्यालय से प्रोफेसरी छोड़नी पड़ी।

रजनीश ने अब गेरुए वस्त्र धारण कर लिये व धार्मिक गुरु के रूप में सामने आये। अन्य धार्मिक गुरुओं के विपरीत उन्होंने वर्जनीय सैक्स को खुले रूप से सामने रखा। इसके लिए चार्वाक शाक्त धर्म व तन्त्रवाद उन्होंने पढ़ा ही था। इधर बट्रेंड रसेल को पढ़ा जिन्होंने सैक्स को वर्जित कर कुंठित रहने के स्थान पर सहज व मुक्त सैक्स पर बल दिया था। रजनीश ने इन दोनों को मिश्रण किया। अब वे अपने धार्मिक व्याख्यानों में कहने लगे कि महावीर स्वामी भी दिगम्बर रहते थे, ईसा अविवाहित मेरी से जन्मे थे, कृष्ण के हजारों गोपियां थीं व गांधी ने भी ७० की उम्र में सैक्स परीक्षण किये थे। अतः अपने मन को ध्यान में लगाना हो तो सैक्स के प्रति वर्जनायें दूर करो रजनीश के अब धार्मिक गुरु रूप में मोहक प्रवचन लोकप्रिय होते गये। उनके लेख सेठ गोविन्द दास के साथ संयुक्त रूप से देश की प्रमुख पत्र-पत्रिकाओं में छपने लगे।

इसी मध्य वे बम्बई के एक बड़े उद्योगपति के कारखाने में प्रवचन देने गये। यहां उसकी बहू से उनके सम्बन्ध हो गये। केस भी चला व बहू ने पति के स्थान पर उनके साथ रहने का समर्थन किया। उद्योगपति ने किसी तरह कई लाख देकर उनसे पीछा छुड़ाया था। रजनीश आगे बढ़ते गये। गुजरात में कच्छ की लक्ष्मी ठाकरानी करुवा जिसे रजनीश ने बाद में मां योग लक्ष्मी नाम दिया, ने २१ मार्च १९७४ में कोरेगांव में उनके लिये जमीन खरीद डाली जहां रजनीश फाउन्डेशन की नीव पड़ी। उनकी ७ शिष्याएं थीं। बाद में १५०० हो गईं। उनके आश्रम की सर्वेसर्वा लक्ष्मी थी।

इस मध्य अम्बालाल पटेल की लड़कियों ने उनके जीवन में प्रवेश किया। उनमें सबसे छोटी शीला जवान थी, सुन्दर थी, पढ़ी-लिखी थी व बुद्धि भी तेज थी। उसने लक्ष्मी जी अब ५२ की है, का स्थान छीन लिया। शीला का पहला विवाह भारत में हुआ। फिर रजनीश के शिष्य अमरीका के जोन शैल्फर उर्फ स्वामी जयानन्द से हुआ। शीला ने फिर अमरीकन पति को छोड़कर स्विस से शादी की। अब वह शीला सिल्वरमैन थी। पर अन्ततः शारीरिक व मानसिक सभी रूपों में रजनीश ही उसके सब कुछ थे।

शीला की सबसे बड़ी बहन रमा भी रजनीश की अनुयायी हो गई थी। रमा के पति बसन्त जोशी उर्फ स्वामी सत्यवेदान्त ओरेगन रजनीश यूनिवर्सिटी के वाइस चांसलर, रजनीश की जो हार्पर एण्ड रा से प्रकाशित अधिकृत जीवनी के लेखक १४ वर्ष तक रजनीश के हिन्दी व्याख्यानो का अंग्रेजी मे अनुवादक थे। पर एक दिन रमा व उसके पति रजनीश से निराश हो गये व ओरेगन छोड़ आये थे।

इधर शीला व रजनीश मे फूट पड़ गई। कारण था विवेक नाम की लड़की जो काफी समय से रजनी की सबसे प्रिय सहचरी हो गई थी। विवेक अंग्रेज है। उसका वास्तविक नाम है क्रिस्टोना वूल्फ। रजनीश मानते थे कि वह पूर्व जन्म में उनकी प्रथम प्रेमिका शशि शर्मा थी जिसकी मृत्यु हो गई थी।

भारत मे पूना मे रजनीश की पीठ में भयंकर दर्द रहता था, वे न बैठ सकते थे, न चल सकते थे। सभी डाक्टर इलाज कर हार गये थे। इन्हें सभी तरहों की सुगन्धों, धूल व धुएं से भी भारी एलर्जी थी। केवल सूखी व दलदली वायु उनके स्वास्थ्य के अनुकूल रहती थी। अतः उन्होंने लक्ष्मी की सलाह से पहले गुजरात मे कच्छ और फिर हिमाचल मे चैल के पैलेस को लेने की कोशिश की। पर तत्कालीन प्रधानमन्त्री मुरारजी देसाई इसमें निरन्तर बाधक रहे। तब शीला ने उनके लिए अमरीका की सूखी व दलदली ओरेगान का ६४०० एकड़ भूमि जुलाई १९८१ में खरीदी। रजनीश मदलबल विमानों में गुप्त व छिपे रूप से भारत छोड़ ओरेगान आ गये। यहां उनका स्वास्थ्य सुधरने लगा। पर यहां शीला का एक छत्र राज्य था। लक्ष्मी को भी उसने ओरेगान से निकाल दिया था। केवल विवेक अवश्य रजनीश निरन्तर साथ रहती थी।

पर रजनीश के ६०० करोड़ रुपये के साम्राज्य पर अधिकार शीला का ही था। रजनीश शीला को हटाने की योजना बना रहे थे

(शेष पृष्ठ १० पर)

भूल सुधार

२०-१०-८४ के अंक में आर्य प्रतिनिधि सभा बिहार के सदस्य समिति के सदस्यों के नामों में श्री रामचन्द्र आर्य (गढ़वा) के स्थान पर राम प्रसाद छप गया था। अतः इस भूल का खेद है। इसे रामचन्द्र आर्य कर ले।

—सम्पादक

हैदराबाद सत्याग्रह

(पृष्ठ ३ का शेष)

उपरोक्त कार्यालय से निर्धारित फार्म मंगाकर आवेदन करना चाहिए।

जो लोग दिवंगत हैं, उनकी पत्नी भी नियमानुसार स्वाधीनता सेनानी सम्मान योजना के तहत अधिकृत मानी जायेगी। उनके सम्बन्धियों, आर्यसमाजों एवं आर्य प्रतिनिधि सभा को इस विषय में पूरी सहायता करनी चाहिए।

चूंकि तत्कालीन निजाम रियासत वर्तमान तीनमें राज्यों में बटी हुई है। इसलिए यदि आवेदन कर्ता एक से अधिक जेलों में रहा है, और वे जेलें अब वर्तमान राजनीतिक सीमाओं में अलग-२ राज्यों में तब उनको अलग-२ राज्यों से अपने कारावास का विवरण प्राप्त करना होगा। इस दृष्टि से जो लोग केवल वर्तमान एक राज्य की ही जेलों में रहे हैं, उनका कार्य सुलभ है। उदाहरणार्थ, गुरुकुल कांगड़ी के प्रथम जत्थे के छात्र सत्याग्रही वर्तमान आंध्रप्रदेश की जेलों में मुख्यतः रहे हैं।

केन्द्र सरकार द्वारा सामान्यतः छः मास तक कारावास में रहने वाले जो ६ मास से ऊपर होना चाहिए। केन्द्रीय सरकार की पेन्शन योजना के अधिकारी होते हैं। एक-दो या तीन मास कारावास में रहने वालों के लिए राज्यसरकारों के अपने-२ नियम हैं और उनकी पेन्शन की राशि भी भिन्न-२ हैं।

इसके अतिरिक्त यदि किसी ने अन्य प्रकार त्याग या कष्ट उठाये हैं उनको भी सरकार प्रमाण और गुणावगुण के आधार पर विचार कर सकती है।

कार्य कठिन है और बहुत पुराना मामला है, परन्तु निराश होने की आवश्यकता नहीं। प्रयत्न और सहयोग से काम करने पर आर्य समाज के कार्यकर्त्ताओं का यह त्याग निरर्थक नहीं जायेगा।

—ब्रह्मदत्त स्नातक
अवै० प्रेस एवं जनसम्पर्क सलाहकार

सत्यवती स्मारक भवन का उद्घाटन

आर्यसमाज विनय नगर नई दिल्ली राजधानी में अपना एक महत्वपूर्ण स्थान रखती है। प्रति मास जन-सेवा का कार्य अपने क्षेत्र में सराहनीय साधनों से सम्पन्न करती रहती है। आर्य समाज के क्षेत्र में दानवीर श्री रतनचन्द जी सूद सदा समय समय पर दान देते रहते हैं। २-१०-८४ को इसी समाज के तत्वावधान में चल रहे रतन चन्द आर्य पब्लिक स्कूल के सत्यवती स्मारक भवन का उद्घाटन सार्वदेशिक सभा के माननीय प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले ने किया। संचालन रोशन लाल मन्त्री ने किया।

धर्म प्रचार

आर्यसमाज होशंगाबाद द्वारा नर्मदा के तट पर हाउसिंग बोर्ड कालोनी में विशेष धर्म प्रचार का आयोजन किया गया जिसमें अनेक गणमान्य नागरिकों ने भाग लिया। इस समारोह में आडम्बर रहित विवाह का आयोजन सफल रहा—इसमें माया दुबे का विवाह श्री सुशील तीवारा से अति उत्साह पूर्वक सम्पन्न हुआ। आशीर्वाद का कार्य विधायक श्री विजय दुबे द्वारा किया।

रजनीश को क्या मिला ?

(पृष्ठ ६ का शेष)

कि शीला इससे पूर्व ही एक दिन १२ साथियों को ले लापता हो गई। रजनीश के अनुसार वह ७० करोड़ रुपये भी ले गई व उनकी हत्या का षड्यन्त्र रच रही थी। रजनीश ने प्रमाण में शीला के ओरेगान आवास से क्रीक बैंक तक की सुरंग प्रमाण में प्रस्तुत की। शीला ने कैमरों व इन्टरकोम फोन की व्यवस्था कर रखी थी कि किसी भी तरह के फोटो व बात उसके रिकार्ड में रहे। इस आधार पर वह पक्का शासन करती थी।

रजनीश ने एक माह पूर्व ही एक भेंट में कहा था कि औरतें मेरी कमजोरी हैं। ५० वर्ष के जीवन में मैंने २०० वर्ष के बराबर सैक्स जीवन भोगा है। रजनीश का यह भी दावा था कि विश्वामित्र की एक सुन्दरी से साधना टूट गई जबकि मैं हजारों सुन्दरियों से घिरा हूं। पर संयोग से समाधि व वहां से जेल के सीकचों तक की यात्रा ने उनका यह भ्रम तोड़ दिया है। यही शायद उनके जीवन की सबसे बड़ी उपलब्धि है। (पं०) स०।

—कणाद

आर्य समाज हरदोई का शताब्दी समारोह सम्पन्न

लाला रामगोपाल शालवाले को मान पत्र के साथ ११००) की थैली भेंट

हरदोई, आर्यसमाज हरदोई का शताब्दी समारोह बड़ी धूम-धाम से मनाया गया। पांच दिन तक गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर के विद्यार्थियों द्वारा विशेष महायज्ञ सम्पन्न हुआ। ध्वजारोहण का कार्य परिव्राट सन्यासी स्वामी सत्यप्रकाश जी द्वारा सम्पन्न हुआ समारोह से पूर्व स्वामी जी महाराज की कथा का रसास्वादन भी जनता ने किया।

शोभा यात्रा

पं० देवशर्मा शास्त्री के संयोजकत्व में नगर के विशेष मार्गों से विशाल शोभा यात्रा निकाली गई। जिसमें जिले के हजारों नर-नारी विद्यालय के छात्र-छात्राओं ने भाग लिया। स्वामी जी के जीवन पर आकर्षित झांकियां भी प्रभावोत्पादित थीं। उसी दिन बच्चियों द्वारा स्वामी जी के जीवन पर सांस्कृतिक कार्यक्रम भी दिखाये गये।

राष्ट्र-भाषा सम्मेलन

इस सम्मेलन ने उत्तर प्रदेश के भूतपूर्व मन्त्री श्री प्रो० वासुदेव सिंह ने विशेष रूप से भाग लिया। उन्होंने जनता को महात्मा गांधी और जवाहर लाल नेहरू की नीति के आधार पर जिससे भारत का विभाजन हुआ, अब पुन उर्दू को द्वितीय भाषा का स्थान देकर पुन भारत को खण्डित नही किया जा सकता। नगर की जनता ने आपके प्रभावोत्पादक विचारों को सुनकर प्रेरणा ली।

रात्रि में सार्वदेशिक सभा के माननीय प्रधान को अभिनन्दन पत्र भेंट करने के पश्चात ११००) की थैली भी भेंट की गयी।

आपने आर्य जनता को राष्ट्र पर आने वाले संकट से अवगत कराया। ईसाई और मुसलमानों के द्वारा किया जा रहा धर्मान्तरण राष्ट्रीयता के लिए महान खतरा बताया। सिखों की राष्ट्र घातक नीतियों की भी आपने आलोचना की। सिखों के भाई चारे में बढ़ती हुई फूट पर विशेष चिन्ता प्रकट की। सिख गुरुओं का महान बलि-दान इतिहास की एक अभूतपूर्व कडी है जिसे भुलाया नहीं जा सकता।

इसके साथ वाद-विवाद प्रतियोगिता, संस्कृत सम्मेलन व महिला सम्मेलन आयोजन किये गये। हरीसिंह आर्य भजनोपदेशक के भजनों का जनता ने बड़ा आनन्द लिया। विद्वानों में उत्तमचन्द जी शरर प्रो० रतनसिंह जी, महा आर्य भिक्षु जी, आचार्य मित्रजीवन पं० प्रसस्य शास्त्री प्रमुख थे।

आचार्य देव शर्मा शास्त्री का संस्कृत सम्मेलन में धारा प्रवाह संस्कृत में दिया गया भाषण तथा रात्रि में उनका ओजस्वी भाषण जनता ने ध्यान से सुना।

आने वाले अतिथियों का भोजन प्रबन्ध, आवास व्यवस्था पृथक से की गयी थी।

विशेष—आर्यसमाज के नवीन उत्साही अधिकारी श्री स्वयंवर सिंह प्रधान, पं० चन्द्रहास मिश्र, रामेश्वर दयालु मन्त्री, तथा इनके सहयोगियों का इस *शताब्दी समारोह से विशेष योगदान* रहा। एक स्मारिका भी प्रकाशित की गयी जिसका विमोचन सार्वदेशिक सभा के माननीय प्रधान द्वारा सम्पन्न हुआ।

अन्तिम दिन श्री प्रधान स्वयंबर सिंह जी ने आर्य जनता अन्य अतिथियों एवं नगर के सभी ज्ञानी महानुभावों, उपदेशकों का धन्यवाद किया। जिन्होंने इस समारोह के सफल बनानें में पूर्ण सहयोग दिया। अन्त में शान्ति पाठ के साथ शताब्दी समारोह सम्पन्न किया गया।

हरदोई आर्य समाज की शताब्दी समारोह के अवसर पर राष्ट्रभाषा सम्मेलन में उद्बोधन करते हुये लाला रामगोपाल शालवाले सभा प्रधान

सूचना और प्रसारण मन्त्री से अनुरोध

आर्य विद्वत परिषद् के सयोजक स्वामी विद्यानन्द जी सरस्वती ने सूचना एव प्रसारण मन्त्री श्री बी० एन० गाडगिल को पत्र लिख कर मांग की है कि आकाशवाणी और दूरदर्शन प्रचार अच्छा साधन है परन्तु आज इससे अश्लीलता का प्रसार किया जा रहा है। जिससे सन्तति पर बहुत बुरा असर पड़ रहा है। अतः चित्रहार में और सप्ताह में प्रसारित होने वाली फिल्में गन्दे गीतों या अश्लील दृश्यों से ओत-प्रोत न होकर शिक्षा दायक होनी चाहिए। उन्होंने भाषा को तोड़ मरोड़ कर पेश किए जाने पर चिन्ता व्यक्त की तथा अनु-रोध किया कि योग अशोक और बुद्ध जैसे शब्दों को हिन्दी मे बोलते समय योगा, अशोका और बुद्धा न बोलकर उसे सही रूप में बोला जाय। अभिवादन के लिए प्रयोग किए जा रहे नमस्कार शब्द के लिए भी आपत्ति करते हुए सरकार को सुझाव दिया कि नमस्कार शब्द की जगह नमस्ते का ही प्रयोग किया जाना चाहिए क्योंकि नमस्ते शब्द का भाव-मे आपका मान करता हूं ऐसा भाव नमस्कार शब्द में नही है।

अपना सुझाव रखते हुए स्वामी जी ने अनुरोध किया कि जैसे आकाशवाणी जालन्धर से गुरुवाणी के पाठ की तथा गुरुवाणी विचार की व्यवस्था है इसी प्रकार आकाशवाणी और दूरदर्शन के सभी केन्द्रों से प्रतिदिन 'वेद सुधा' के नाम से नियमित रूप से वेदमन्त्रों के अर्थ सहित पाठ की व्यवस्था की जाए। क्योंकि वेद विश्वभर के साहित्य में न केवल सबसे प्राचीन है अपितु जीवन के हर एक क्षण मे सच्चा ज्ञान देकर मनुष्य मात्र का कल्याण करने वाले हैं। अतः इस ओर ध्यान दिया जाए साथ में सप्ताह में एक बार वेद विचार के अन्तर्गत वेद सम्बन्धी वार्ता भी प्रसारित की जाये।

— राजेन्द्र दुर्गा
प्रचार मन्त्री

विशेष समाचार

—आर्य समाज डालटेनगंज (पलामू) बिहार के मन्त्री पं० वैद्य महेन्द्र जी आर्य सूचित करते हैं कि स्वामी वेदानन्द वैदिक यति आर्य समाज का प्रचार बड़ी खूबी से ग्राम जनता से घूम मिल कर, कर रहे हैं जिसका प्रभाव यह रहा कि अनेक बन्धुओं ने यज्ञोपवीत धारण कर जीवनमें सात्विकता अपनाने का व्रत लिया। श्रीयतीजी की अपील पर कन्या गुरुकुल खोलने के लिए दानियों दान दिया।

पंजि० सं० डी० (सी०) १७८ सार्वदेशिक साप्ताहिक (१७-११-१९८५) बिना टिकट भेजने का लाइसेंस न० U ३१
R. N. 626/57 Licensed to post withoutprepayment, License No. 93 Post in D.P.S.O. on 15 11-85

परिवार नियोजन

(पृष्ठ १ का शेष)

लोगो को आर्थिक लालच न देकर बल्कि वैदिक धर्म की उत्तमता समझा कर कराया गया है।

कांग्रेस (इ) का सदैव ही विरोध करने के बाद गत चुनावो मे उसका समर्थन करने के बारे मे उन्होंने कहा कि देश की अखण्डता के हित मे जो उचित समझा गया, वही किया गया।

नवाब छतारी के पौत्र डा० आनन्द सुमन ने वर्तमान शिक्षा प्रणाली के स्थान पर वैदिक शिक्षा प्रणाली लागू करने से राष्ट्र की अनेक समस्याए स्वत हल होती चली जायेगी। डा० सुमन तीनों दिन महोत्सव मे उपस्थित रहे। इस अवसर पर श्री दीपचन्द वियोगी ने मानपत्र भेंट कर उनका अभिनन्दन किया।

समारोह मे उ० प्र० आर्य प्रतिनिधि सभा के अध्यक्ष प० इन्द्र राज, सार्वदेशिक आर्यवीर दल के अध्यक्ष बाल दिवाकर हंस, सन्यासी डा० सत्यप्रकाश सरस्वती, स्वामी अरण्य मुनि व स्वामी कर्मानन्द महाराज आदि कई वक्ताओं ने देश को असामाजिक, धर्म विरोधी व साम्प्रदायिक विष घोलने वाली साजिशो से बचाने तथा राष्ट्रहित एव मानवतावाद के सर्वोत्तम लक्ष्य की प्राप्ति हेतु सभी सनातनी धर्म के धर्मावलम्बियो से एक जुट होने का प्रयत्न किया।

अखिल भारतीय आर्य युवा महासम्मेलन

आर्यसमाज अनारकली, मन्दिर मार्ग दिल्ली के ६१वें वार्षिकोत्सव पर २४ नवम्बर, रविवार को अखिल भारतीय आर्य युवा सम्मेलन होगा जिसमे विभिन्न प्रदेशो से प्रतिनिधि आयेंगे।

अनिलकुमार आर्य
सयोजक

रामनाथ सहगल
मन्त्री

आर्यस॰
शमसाब॰ ... डा॰ नारायण दास गुप्त

अजमेर — श्री दत्तात्रय आर्य रासासिह जी किशनलाल शर्मा

वरगल (हैदराबाद) राजवीर आर्य एम॰ए गोपोरेड्डी बडो राजमौली गोविन्दलू

चम्पारण जिला आर्य सभा रामाज्ञावैरागी बी के शास्त्री हीराराम आर्य

श्री शिवशकर प्रसाद सरक्षक चुने गए

आर्य वीर दल दानापुर सुरेन्द्र कुमार सिन्हा रामकुमार प्रसाद प॰ भारत भूषण

—भारत। नेपाल सीमा पर आर्यसमाज बोमवनी के मन्त्री श्री रामनारायण जी तथा उनके अन्य सहयोगी सर्वश्री रमाकान्त पाण्डे, रामविलास, महेश ठाकुर इत्यादि महानुभावो के भरसक प्रयत्नो से पूरे २४ घटे एक दिन का ६ ६ ८५ को विशाल यज्ञ का आयोजन किया गया। हजारो नर नारियो ने इस यज्ञ मे श्रद्धा से आहुति दी और यज्ञ शेष प्राप्त किया।

दिल्ली के स्थानीय विक्रेता:—

(१) मै० इन्द्रप्रस्थ आयुर्वेदिक स्टोर, ३७७ चादनी चौक, (२) मै० ओम् आयुर्वेदिक एण्ड जनरल स्टोर, सुभाष बाजार, कोटला मुबारकपुर (३) मै० गोपाल कृष्ण भजनामल चड्ढा, मेन बाजार पहाड गज (४) मै० शर्मा आयुर्वेदिक फार्मेसी, गडोदिया रोड, आनन्द पर्वत (५) मै० प्रभात कैमिकल क०, गली बताशा, खारी बावली (६) मै० ईश्वर दास किसन लाल, मेन बाजार मोती नगर (७) श्री वैद्य भीमसेन शास्त्री, ५३७ लाजपतराय मार्किट (८) दि सुपर बाजार, कनाट सर्कस, (९) श्री वैद्य मदन लाल ११-शकर मार्किट, दिल्ली।

शाखा कार्यालय:—
६३, गली राजा केदार नाथ, चावड़ी बाजार, दिल्ली-६
फोन न० २६९८३८

प्रम ... में दिल्ली में मुद्रित तथा ओम्प्रकाश पुरुषार्थी मुद्रक और प्रकाशक के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

ओ३म्

सार्वदेशिक

साप्ताहिक

सृष्टिसम्वत् १९७२९४९०८९]
वर्ष २० अङ्क ४१]

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र
कार्तिक शु० १२ स० २०४२ रविवार २४ नवम्बर १९८५

दयानन्दाब्द १६१ दूरभाष २७४७७१
वार्षिक मूल्य २०) एक प्रति ५० पैसे

आर्य संस्कृति की रक्षा के लिए सबको एक जुट होकर काम करना चाहिए

लोकसभा अध्यक्ष श्री बलराम जी जाखड़ का भाषण:

वेदामृत

आजीवन कर्म करते रहें

कुर्वन्नेवेह कर्माणि,
जिजीविषेच्छत ँ समाः।
एवं त्वयि नान्यथेतोऽस्ति,
न कर्म लिप्यते नरे॥
यजु० ४०।२॥

हिन्दी अर्थ—इस संसार मे मनुष्य कर्म करता हुआ ही सौ वर्ष जीने की इच्छा करे। इस प्रकार से तुम्हारी मुक्ति होगी। इसके अतिरिक्त अन्य प्रकार मे मुक्ति नही होती है। निष्काम भाव से किया हुआ कर्म मनुष्य मे लिप्त नही होता है, अर्थात् निष्काम भाव से कर्म करने वाला व्यक्ति बन्धन मे नही पडता।

दिल्ली १२ नवम्बर। रामलीला मैदान के विशाल पडाल मे महर्षि निर्वाण उत्सव बडे धूम-धाम से मनाया गया।

इस अवसर पर श्री बलराम जाखड और केन्द्रीय मन्त्री श्री सीताराम केसरी तथा कुमुद बहिन विशेष अतिथि थे। ऋषि निर्वाण पर्व की अध्यक्षता श्री लाला रामगोपाल शालवाले ने की। प्रमुख वक्ताओ मे श्री वीरेन्द्र जी पजाब, श्री ओम्प्रकाश त्यागी सभा-मन्त्री, श्री रामचन्द्र विकल एम०पी० प० शिवकुमार शास्त्री, कुलाधिपति श्री सत्यकेतु विद्यालकार तथा कुलपति श्री डा० सत्यकाम वर्मा कागडी गुरुकुल ने अपनी श्रद्धाञ्जलि ऋषि के प्रति अर्पित की।

लोक सभा अध्यक्ष श्री जाखड ने कहा कि भारत की आजादी के लिए स्वराज शब्द का मूलमन्त्र सर्व प्रथम महर्षि ने ही दिया था। महर्षि के क्रान्तिकारी विचारो ने देश की काया ही पलट दी। समाज सुधार के क्षेत्र मे ऋषि की एक अनूठी देन है। आर्य समाज को पहले मे आज अधिक कार्य करने की आवश्यकता है। श्री सीताराम केसरी ने कहा कि राष्ट्र मे व्याप्त भ्रष्टाचार और छूआछूत को दूर करने मे जो योजना ऋषि ने दी थी उससे समाज मे अछूत उद्धार का कार्य महात्मा गाधी ने भी अपनाया। आज छूआछूत के भेद को मिटाने मे आर्य समाज को जन-आन्दोलन के रूप मे सघषरत होना पडेगा।

खतरे मे पडी राष्ट्रीयता को बचाने के लिए आर्य समाज ही अपने कार्य कलापो के द्वारा सघर्षरत होगा तभी समाज मे व्याप्त कुन्ठा दूर होगी। कुमुद बहिन ने कहा कि स्वामी जी के द्वारा नारी जागरण के प्रति किया गया कार्य इतिहास मे अमर रहेगा। स्त्री शिक्षा, विधवा उद्धार बाल विवाह और अन्य नारी जाति के प्रति किये जा रहे असहनीय कार्यों को ऋषि ने नई दिशा दी। श्री ओम्प्रकाश त्यागी ने कहा कि जब तक समाज से छूआछूत के भेद को मिटाकर अन्त-र्जातीय विवाहो को प्रोत्साहन नही मिलेगा तब तक आपस के सम्बन्धो मे कटुता पैदा होती रहेगी। प्रसिद्ध इतिहासकार डा० सत्यकेतु विद्यालकार ने कहा कि मेरी श्रद्धाञ्जलि तो यही है कि ऋषि

शेष पृष्ठ ११ पर)

श्री शोरीलाल खन्ना का निधन

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री रामगोपाल जी शालवाले के छोटे भाई श्री शोरीलाल जी खन्ना का अमृतसर मे लम्बी बीमारी के पश्चात् १७-११-८५ को देहावसान हो गया है। श्री शोरीलाल जी पहले बम्बई मे व्यापार करते थे, कुछ वर्ष पूर्व वह अमृतसर मे बस गए थे। वह अपने पीछे एक पुत्र छोड गए हैं।

परमात्मा से प्रार्थना है कि दिवगत आत्मा को सद्गति प्रदान करे और परिवार को इस महान् वियोग को धैर्य पूर्वक सहन करने की शक्ति दे।

ओम्प्रकाश त्यागी
सभा-मन्त्री

अध्यात्म सुधा

उन्नति का पथ प्रशस्त करो

मनुष्य क्या कर सकता है ? मनुष्य विधाता की रचना का सबसे महत्वपूर्ण चमत्कार तथा सर्व प्रधान जीव माना जाता है। भारतीय संस्कृति में सबसे महान् विद्वान हुआ है उस व्यक्तित्व ने अति विचार पूर्वक अपना मत प्रकट किया है:—

"गुयं ब्रह्म तदिदं ब्रवीमि, न हि मानुषात् श्रेष्ठतरं हि किंचित
—व्यास

अर्थात् यह रहस्य की बात मैं संसार को बताता हूं कि मनुष्य से बढ़कर संसार में अन्य कुछ नहीं है मनुष्य वस्तुतः संसार में सर्वशक्ति सम्पन्न प्राणी है अब तक मनुष्य ने जो कुछ किया है उसमें अद्भुत अन्यन्न शक्तियां हैं उसके लिये कोई पद, कोई वैभव, किसी प्रकार की सम्पदा दुर्लभ नहीं है। अपने पुरुषार्थ से कोई व्यक्ति कितना महान् व विलक्षण हो सकता है। लौकिक जीवन में अलौकिक शक्तियों का उपार्जन करके असम्भव को भी सम्भव, अलभ्य को भी सुलभ बना सकता है। अनेक महापुरुषों के अपने चरित्र से यह प्रकट कर देता है वह सर्व समर्थ है। ईश्वर का एक जीता-जागता उदाहरण है उसकी योग्यता का अनुमान इन बातों से प्रकट होता है।

एक व्यक्ति राम व कृष्ण की भांति ऐश्वर्य प्राप्त कर सकता है नर से विश्व बन्ध होकर, विश्वात्मा बन सकता है। अपने पौरुष-पराक्रम से वह मनुष्य से देवत्व को प्राप्त कर सकता है। तत्वदर्शियों ने उसे अमृत पुत्र कहा है—कितने ही ऐसे महापुरुष हुए हैं जिनका अस्तित्व उनकी मृत्यु के बाद भी नष्ट नहीं हुआ। महर्षि दयानन्द मर कर भी अभी तक कण्ठ-२ से बोलते हैं। हमें यह मानना चाहिये कि मानव में वह ऐश्वर्यशाली और अविनाशी होने के तत्व हैं वह अपनी महिमा के साथ अपनी आयु को भी बढ़ा सकता है।

एक व्यक्ति शरीर से बामन होकर भी अपने व्यक्तित्व या शक्ति के प्रभाव से विराट हो सकता है। योगीराज कृष्ण के विराट रूप का यही रहस्य है। कि मनुष्य का सारा संसार उसमें समाया हुआ है उसका स्वरूप उसके शरीर से कहीं अधिक विशाल है। एक मनुष्य अपने आप में एक संस्था बन सकता है लोक की सद्भावनाओं को अपनी ओर आकर्षित करके अपने को शक्ति का केन्द्र बना सकता है।

भर्तृहरि ने लिखा है कि—

एकेनापि हि शूरेण पादाक्रान्तं महीतलम्।
क्रियते भास्करेणैव स्फाट स्फुरित तेजसा ॥
—नीति शतक्

जिस प्रकार अकेला तेजस्वी सूर्य सारे जगत् को प्रकाशमान कर देता है उसी प्रकार तेजस्वी पुरुष सारे भूमण्डल को वश में कर लेता है।

इस प्रकार अनेक विश्व विजयी लोक नायक हो चुके हैं। केवल शस्त्र बल से नहीं, विद्या-बुद्धि से संसार को आत्मर्जित कर चुके हैं। पं॰ बुद्ध और महात्मा गांधी की सांस्कृतिक विजय से यह सिद्ध है कि एक मनुष्य जन-समुदाय पर विचारों से भी शासन कर सकता है। उसके आत्म बल के आगे विरोधियों का संख्याबल भी नतमस्तक हो जाता है।

एक महामानव अपने साथ-२ सारे देश-समाज और युग का भी उद्धार कर सकता है। चेतना शून्य आर्य जाति को महर्षि दयानन्द और शंकर की भांति नव-जीवन देने की क्षमता रखता है। ज्ञान की आंखों से लाख-२ अज्ञान के अन्धकार में पड़े इन्सानों को मार्ग-दर्शन करा सकता है।

जिधर सूर्य उदय होता है उसी को लोग पूर्व दिशा मानते हैं तेजस्वी पुरुष के विषय में भी यही बात चरितार्थ होती है। जिधर वह झुकता है लोक उसी ओर झुक जाता है जहां वह रहता है वह साधारण सा स्थान भी तीर्थ बन जाता है जहां वह जाता है वह भूमि स्वर्ग से भी बढ़कर मानी जाती है उसकी महिमा से देश और काल की भी महिमा बढ़ जाती है।

महर्षि दयानन्द के बड़े २ कटु आलोचक हुए हैं पर तत्ववेत्ताओं ने कहा है स्वामी दयानन्द द्वारा एक ऐसी शक्ति का जन्म हुआ है जो दयानन्द से भी महान है वह शक्ति है, आर्यसमाज की शक्ति है। एक व्यक्ति किस प्रकार अपने से बड़ी शक्तियों का निर्माण व संगठन कर सकता अयोग्य व्यक्ति भी सुयोग्य पुत्र उत्पन्न कर सकता है।

स्वर्ग की समस्त विभूतियों को इसी शरीर से प्राप्त करके सुख और शान्ति व सम्मान के साथ जीवन व्यतीत करना केवल मनुष्य के वश की बात है वह अपने जीवन काल में ही वैभव सम्पादन कर अपनी कामनाओं को पूर्ण कर सकता है।

श्रेष्ठ पुरुषों के चरित्र से यही शिक्षा मिलती है कि मनुष्य तुच्छ जीव नहीं है उसके भीतर भगवान तेज, सृष्टि का तत्व, सिद्धि का स्रोत सदा ही रहता है प्रत्येक दशा और प्रत्येक दिशा में उन्नति कर सकता है।

लघुता त्याग कर महत्ता प्राप्त करने में ही जीवन की सार्थकता है। उपनिषद् के मत से महत्ता ही सुख है। "यो वै भूमा तत्सुखम् नाल्पे सुखमस्ति" वेद का आदेश है कि—

विश्वो देवस्य मेतुमर्त्यो बुरीत सख्यम्।
विश्वो राय इषुध्यति द्युम्नं वृणीत पुष्यसे ॥ ऋक्

प्रत्येक मनुष्य सबके नेता—प्रकाशस्वरूप, भगवान की मित्रता प्राप्त करें और संसार के प्रत्येक धन को पाने की चेष्टा करे और पुष्टि के लिये पर्याप्त वस्तुएं प्राप्त करें। यहीं महत्ता का यह महा-मन्त्र स्पष्ट रूप से वर्णन करता है।

उन्नति का द्वार सबके लिये नित्य खुला है, भाग्य के भरोसे न बैठकर भगवान की विभूतियां परलोक में नहीं, इसी लोक में सर्व सुलभ हैं। मानव जिस स्थितिमें हो ईश्वरकी सम्पत्तिका उत्तराधिकारी है साधारण से साधारण व्यक्ति को भी आत्योत्कर्ष के लिये निरन्तर प्रयत्न करना चाहिये।

कविवर रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने कहा है कि प्रत्येक बालक यह सन्देश लेकर संसार में आता है कि ईश्वर अभी मनुष्यों से हताश नहीं हुआ है। प्रत्येक बालक से संसार में नई-२ आशाएं रहती हैं क्योंकि वह आदि पुरुष का नवीन संस्करण होता है। यह उसकी आत्महीनता है कि कुल परम्परा और काल जीवन की उन्नति के लिये मुख्य है। बहुतायत ऐसा सोचते हैं कि हमारे पूर्वज बड़े-२ कर सकते थे उसे हम नहीं कर सकते हैं।

आयु और बल भी मुख्य नहीं हैं —

आचार्य शंकर ने थोड़ी में ही विजय दुन्दुभि बजा दी, इस प्रकार ऐसे अनेक महापुरुष हुए हैं जिन्होंने अल्पायु में ही महान कार्य किये हैं यह सोचना थोड़ी आयु में कुछ नहीं किया जा सकता है उसे उन महापुरुषों के जीवन की ओर दृष्टिपात करना चाहिये। थोड़े ही समय में स्वामी दयानन्द ने देश जाति-धर्म की काया ही पलट दी। अतः न समय की बात है और आयु को देखना है।

प्राचीन साहित्य में महर्षि अष्टावक्र का कैसा उदाहरण है १२ वर्ष की आयु में वेद-शास्त्रों के पारगत होकर वृद्धों का अधिकार प्राप्त कर लिया था। राजा जनक की सभा में उन्हें रोकने पर स्वात्याभि-मान के साथ कहा—यदि सभा गृह में वृद्धों का प्रवेश हो सकता है तो मेरा प्रवेश भी उचित है हमें भी तुम वृद्ध और वृद्धों के आचरण वाला समझो, हम विद्या से सम्पन्न हैं अर्थात् ज्ञान वृद्ध हैं। अष्टावक्र को अन्दर आने की आज्ञा मिल गई। यहां उन्होंने पण्डितों को परास्त कर अपनी ज्येष्ठता-श्रेष्ठता का महान परिचय दिया। वयोवृद्ध पण्डितों ने भी उनकी वन्दना की।

तात्पर्य है कि अल्पायु में भी मनुष्य गुण-कर्म से महत्ता पा सकता

(शेष पृष्ठ ९ पर)

सम्पादकीय

आर्यसमाज को आशा के वातावरण में लाओ

आर्यसमाज के ११० वर्षों में उसकी सबसे बड़ी उपलब्धि यह रही है कि बड़ी से बड़ी, छोटी से छोटी, आर्यसमाज में पाई-२ का हिसाब कोषाध्यक्ष के पास रहता है, व्यय मन्त्री व प्रधान द्वारा किया जाता है। बिल-वौचर्स साथ लगे होते हैं। फिर भी अगर कोई बेईमानी या भूल हो जाय, तो उसकी खाल खींच ली जाती है। तात्पर्य यह है कि आर्यसमाज स्वच्छ समाज है, भूलें व असावधानी तो होती ही रहती है, यह एक ऐसी संस्था है जहां व्यक्तियों द्वारा दिये गये दान का दुरुपयोग नहीं होता। इस पवित्र भावना को लेकर दानी महानुभावों ने सदा ही दान दिया है। दान की सात्विक प्रेरणा ने गुरुकुल, कन्या-गुरुकुल डी० ए० वी० कालिज, अनाथालय, विधवाश्रम, गोशालाएं, धर्मशालायें खुलवाईं। दानी की भावना पवित्र थीं, पत्थरों पर नाम खुदे। पर क्या तब चोर नहीं थे।

महर्षि जैसा सात्विक व्यक्ति कहां मिलेगा, उन्होंने अपनी प्राप्त सात्विक राशि प० इन्द्रमणि जी के पास रख दी, उनके मन में पाप आ गया, नियत बिगड़ गई, भक्तों ने स्वामी जी से इस घटना की शिकायत की। महाराज जी, रोने नहीं बैठ गये, बोले, ऐसे नालायक को अदालत के सुपुर्द करो। वही भावना चोर और उच्चकों के लिये आज भी द्वार खुले हैं और मुकदमे भी चल रहे हैं। धन का सदुपयोग और दुरुपयोग तब भी होता था, अब भी होता है। निराशा के बादल मत उमरने दो, लोगों को क्या पता नहीं, कि पंजाब के लुटने के बाद आया, पंजाबी जहां भी बैठ गया, वहीं अपनी कुटिया बनाने के साथ-साथ आर्यसमाज के विशाल भवन, डी० ए० वी० कालिज, आर्य कन्या विद्यालय भी उसने अपनी गाढ़ी कमाई से निकाल कर ऋषि के प्रति श्रद्धा वनत हो निर्माण कार्य कराया हैं। कौन कहता है कि पहले दानी बहुत थे, अब नहीं हैं। सर्वसाधारण शहर से ग्रामीण स्तर पर आज स्कूल, कालिज दान से ही खुले रहे हैं। एक व्यक्ति आया और श्री ला०रामगोपाल जी शालवाले की झोली में रुपये डाल दिये। नाम, राशि, रसीद कुछ नहीं, बड़ी मुश्किल से पूछने पर ३१ हजार रुपये बताये।

अनैतिकता यदि फैला रखा है तो उसके जिम्मेदार भी हमी हैं और अनैतिकता के विरुद्ध यदि संघर्षरत हैं तो वह भी हमी हैं। आर्य समाज जैसा स्वच्छ संगठन कम संस्थाओ का इस देश में रहा है। एक सो वर्ष में यदि आर्यसमाज ने इतनी प्रगति की है ,तो उसका भी एक कारण यही है ऋषि की तुलना एक साधारण व्यक्ति के मुकाबले निरर्थक है फिर भी हम महान हैं कि ऋषि के मिशन को अग्रसारित किये हैं।

मैं ध्यान आकर्षित करना चाहता हुं निराशा की बात वही लोग करते हैं जो स्वयं निराश है, चोर भी वही है जो सहायता के नाम पर हजारों रुपयों का आज तक जिनसे धन लिया है उन्हें न हिसाब दिया है और जिनके लिये धन लिया, उन्हें न खैरात बांटी है, भ्रष्टाचार किसने और कैसे फैलाया है यह भी स्वयंमेव गले हाथ डालकर देखना चाहिये, फिर भी हम चाहते हैं घर की बात घर में करो। जनता में अपने महान् किये कार्यों की चर्चा करो। यह है, महान् आदर्श ?

लोगों ने आज की जनता या सरकार का धन लेकर अपने घरों को भरा है। मैं और की चर्चा नहीं, केवल उदाहरण के लिये सार्वदेशिक सभा की ही चर्चा करना चाहता हूं। सार्वदेशिक सभा पहले क्या थी ?

आज उसके पास विशाल-भवन है, लाखों रुपये का प्रकाशन विभाग जिसमें वैदिक-साहित्य लाखों रुपये का छपा रखा है। विदेशों में आर्य महासम्मेलन का अपना एक महत्वपूर्ण स्थान है। नागालैंड में दयानन्द सेवाश्रम संघ का कार्य, गोशाला की लाखों की भूमि तथा लाखों रुपये की वापसी प्रान्तीय सभाओं का महान् संगठन, सार्वदेशिक-पत्र को मासिक से साप्ताहिक करके हजारों की सख्या में जनता तक हम अपने मिशन की आवाज पहुंचा रहे हैं। लेकिन जहां हम महान् कार्य करने के जिम्मेवार हैं वहीं कुछ स्थायी तत्व इसमें से अपना स्वार्थ साधन भी कर रहे हों, इस असावधानी और भूल का नाम लेकर हम काम करना ही बन्द कर दें, तो यह कहां की बुद्धिमानी है। समय का तकाजा है कि पैदल चलकर भी काम करना है और आवश्यकतानुरूप कार, हवाई जहाजों पर भी चलकर काम करना है, किन्तु भावना में त्याग व तप की गुंजाइश रहे, स्वार्थ से हटकर चलें। आर्यसमाज के त्यागी, तपस्वियों ने धन लिया, पर त्याग पर अंकुश रखा। कुछ मनचले, धन व पद-लोलुप पहले भी थे ऐसों की कमी आज भी नहीं है। त्याग का अभाव तब थोड़े पैसों पर आजीविका मात्र जीवन था, आज सरकारी वेतन चाहिये। उपाधियों के अभाव में सर्वोच्च स्थान की कामना चाहिये।

अगर पहले कुछ ऐसे व्यक्ति थे कि उनके बयान पर अदालत विश्वास कर लेती थी, तो लाला रामगोपाल शालवाले जैसे व्यक्तित्व के धनी मोजूद हैं कि सहारनपुर की अदालत में इलाहबाद के वकील ने उनकी सत्यता और चरित्र की चर्चा अदालत में जजमेंट भी उनके नाम पर ही किया गया।

सारी दुनिया न त्यागी है न भोगी, हर तरह का इन्सान आज भी ढूंढने से मिल जायेगा। यदि व्यक्तित्व वाले व्यक्ति पहले थे तो आज भी उच्च चरित्र के धनी आसानी से मिल जायेंगे। मैं तब की तो नहीं जानता, केवल चरित्र चित्रण ही सुनता रहा हूं कुछ महानुभावों से सम्पर्क भी किया था,मैंने पहले ही कहा है,अच्छी चर्चा करो, इन्सान अज्ञान का पुतला है गलतियां तो करेगा ही, किन्तु बुरे इन्सान का एक दूसरा पहलू भी है। उसे देखोगे तो कुछ श्रद्धा भी पैदा हो जायेगी। स्थिति समय-समय पर बदलती अवश्य रहती है। कुछ नेता ऐसे हैं जो दान या चन्दा लेकर हजम कर जाते हैं पर कुछ ऐसे भी हैं जो दान की राशि को सुरक्षित रखते हैं। अगर तब कुछ त्यागी थे, तो अब भी त्यागी हैं।

आर्य समाज एक स्वच्छ संगठन है जिसमें एक-२ पैसे का हिसाब ऊहा-पोह के साथ रखा जाता है। हम इसीलिये दूसरों के आलोचक हैं हमारी भी प्रत्यालोचना होती है उससे हम अपना सुधार करते हैं। आर्यसमाज की परम्परा यह रही है। उसके शुद्ध-सिद्धान्त, निर्मल-आचरण, कसौटी पर कैसे नियम, जिन पर चलते हैं। यदि अनैतिकता ने घर में जन्म लिया, तो कदापि सहन नहीं किया जाता है।

आज यदि हममें विकार आ रहा है तो विगत इतिहास का दोष नहीं हैं वर्तमान का चित्रण भी दोषी होगा। जिसे देखकर बच्चों ने नक्शा फाड़ दिया परन्तु समझदार मास्टर ने उसे ठीक करने को कहा—बच्चा अज्ञान वश देशों को यथास्थान न लगाकर नक्शा गलत जोड़ा। मास्टर ने पूछा—बेटा, जोड़ना ठीक नहीं है। हवा के झोंके में नक्शा पलट दिया।

नक्शे के पीछे बच्चे की तस्वीर बनी थी। मास्टर ने कहा—बेटा अपनी तस्वीर को जोड़ो, बच्चे ने यथावत तस्वीर जोड़ दी। अब मास्टर जी ने बच्चे से कहा—नक्शा पलट कर देखो, जब देखा तो नक्शा ठीक जुड़ा हुआ था। यदि आप अनैतिकता का नक्शा ठीक करना चाहते हो, तो पहले अपनी विकृत तस्वीर ठीक करो। नक्शा अपने आप ठीक हो जायेगा।

सामयिक चर्चा—

मुस्लिम लीग हिन्दुओं से लड़ने के लिए बनायी गयी थी

नई दिल्ली, २१ अक्तूबर। वयोवृद्ध पठान नेता खान अब्दुल गफ्फार खान का कहना है कि स्वतन्त्रता संग्राम के दौरान वह मुस्लिम लीग में शामिल होना चाहते थे लेकिन उन्होंने महसूस किया कि यह पार्टी अंग्रेजों ने हिन्दुओं से लड़ने के लिए बनाई थी।

सीमान्त गांधी ने पाकिस्तान के उर्दू दैनिक 'जंग' को एक भेंट-वार्ता में बताया कि इसीलिए उन्होंने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस में शामिल होकर देश की आजादी के लिए काम करने का फैसला किया।

गफ्फार खान ने बताया कि पाकिस्तान के निर्माता मुहम्मद अली जिन्ना विभाजन के बाद सामाजिक कार्य करना चाहते थे।

उन्होंने बताया कि पाकिस्तान बनने के बाद जब उन्होंने जिन्ना को सामाजिक कार्य करने की अपनी इच्छा से अवगत कराया तो जिन्ना ने खुश होकर कहा कि वह खुद भी सामाजिक कार्य करना चाहते थे।

९५ वर्षीय श्री गफ्फार खान ने कहा कि जिन्ना ने खुश होकर कहा कि जिन्ना सीमान्त प्रान्त में सामाजिक कार्य शुरु करना चाहते थे और उन्होंने वहां आकर श्री गफ्फार खान से आग्रह किया कि वह मुस्लिम लीग में शामिल हो जायें। लेकिन श्री गफ्फार खान ने यह कहकर जिन्ना का यह आग्रह ठुकरा दिया कि मुस्लिम लीग वाले तो बेईमान लोग हैं।

उन्होंने कहा कि मुस्लिम लीग नहीं चाहती थी कि वह कांग्रेस में शामिल हों।

जब श्री गफ्फार खान कांग्रेस कार्य समिति की बैठक में भाग लेने के लिए शिमला गये तो उन्होंने मलिक फिरोज खान नून से भेंट की और नून ने श्री गफ्फार खान के कांग्रेस में शामिल होने पर आपत्ति व्यक्त की।

श्री गफ्फार खान ने नून को जवाब दिया कि मुस्लिम लीग ने स्वतन्त्रता संग्राम में उनका समर्थन नहीं किया जिसकी वजह से वह कांग्रेस की गोद में चले गये। लेकिन अब भी यदि पंजाब ने उनका समर्थन किया तो वह कांग्रेस पार्टी छोड़ देंगे।

६ विदेशी मिशनरियों को देश निकाला

भोपाल २४ अक्तूबर। मध्य प्रदेश सरकार ने राज्य के आदिवासी जिले सरगुजा में कार्यरत विदेशी मिशनरियों को देश छोड़ देने के लिये कहा है।

इनमें से तीन बेल्जियम मूल के दो अमरीकी एवं एक डच नागरिक है। इनके नाम ल्यूक बल्टेट, लुईकस डी-रेट और जानविनेस्ट (सभी बेल्जियम) श्री तथा श्रीमती मैटर (अमरीकी) एवं जाक सोमर्स (हालैंड) हैं।

मध्य प्रदेश क्रिश्चियन एसोसियेशन की अध्यक्षता श्रीमती इन्दिरा आयंगर ने आज यहां बुलाई गई प्रेस कांफ्रेंस में राज्य सरकार की उक्त कार्यवाही के औचित्य का प्रश्न उठाया और कहा कि इन विदेशी नागरिकों ने अपने जीवन का स्वर्णिम भाग देश के दूरस्थ क्षेत्रों में सेवा करते हुए बिता दिया है तथा सभी वृद्ध हो गये हैं। इसलिए यह कदम अन्यायपूर्ण है।

श्रीमती आयंगर ने कहा कि इन लोगों को कम से कम "मानवता" के आधार पर देश में रहने की अनुमति दी जानी चाहिये। उन्होंने कहा कि यदि हमने इन्हें वापस भेजने का फैसला कर लिया है तो हम मदर टेरेसा को स्वदेश लौटने का नोटिस क्यों नहीं दे सकते।

श्रीमती आयंगर ने कहा कि निष्कासन आदेश "हमारे विरुद्ध स्वर्ण समुदायों का सुनियोजित षड्यन्त्र" प्रतीत होता है।

इकहत्तर वर्षीय श्री डी० रेट ने बताया कि वे १९३७ से भारत में है और उन्हें अब देश छोड़ने के लिये कहना न्यायोचित नहीं है। वे व्यावहारिक तौर पर भारतीय ही हैं। कानून भी यह कहता है कि जो भारत में संविधान लागू होने से पांच वर्ष पूर्व से रह रहे थे वे भारतीय नागरिक हैं।

उन्होंने कहा कि वर्ष १९५० से वे रांची जिले (बिहार) के एक दूरस्थ क्षेत्र में रहते आये हैं और वे कलेक्टर से प्रत्यक्ष भेंट नहीं कर सके। उन्होंने आशंका व्यक्त की कि नागरिकता घोषणा पत्र की उनकी अर्जी न कहीं रद्दी की टोकरी में न डाल दी गई हो। अब उनसे कहा जा रहा है कि वे बेल्जियम के हैं। उन्होंने इच्छा प्रकट की कि उनके परमिट का नवीनीकरण करण कर उन्हें भारत में रहने की अनुमति दी जाये और शाश्वत शान्ति में विलीन होने के लिये उन्हें दो मीटर जमीन दे दी जाये।

सरगुजा के जिला पुलिस अधीक्षक द्वारा जारी निष्कासन आदेश की प्रतिलिपि देखने से पता चलता है कि डी० रेट को इस वर्ष सितम्बर में कहा गया कि उनके भारत में रहने की अवधि जनवरी से आगे बढ़ाई जा सकती।

कनाडा में उग्रवादियों के प्रशिक्षण स्कूल की पुष्टि

वाशिंगटन, ५ नवम्बर। हाल में आठ सिख कट्टरपन्थियों को प्रशिक्षण देने वाले ईगल काम्बेट एण्ड बाडी गार्ड स्कूल के प्रमुख राय माइया ने कहा है कि उसके स्कूल द्वारा दिए गए रक्षात्मक प्रशिक्षण को आक्रामक उद्देश्यों के लिए भी इस्तेमाल किया जा सकता है।

माइया ने कनाडा के टेलीविजन पर यह बात कही। कनाडा की संसद में इस स्कूल को बन्द करने की मांग की गई। लेकिन प्रधानमन्त्री मुलरानी के मन्त्रिमण्डल के एक सदस्य जान क्रासबी ने इस बात से इन्कार किया कि स्कूल कनाडा के किसी कानून के खिलाफ चल रहा है।

इस बीच मालूम हुआ है कि कनाडा स्थित भारतीय अधिकारी उत्तरी अमरीका में भाड़े के सैनिकों का प्रशिक्षण देने के बारे में ओटावा से निकट सम्पर्क बनाए हुए हैं।

(दैनिक हिन्दुस्तान ६-११-८१)

वर्तमान युग में आर्यसमाज ने सेवा व परोपकार भावना उत्पन्न की

हरिद्वार—आर्य समाज भेल द्वारा आयोजित सभा में सुप्रसिद्ध महिला उद्धारक राष्ट्रपति द्वारा सम्मानित आर्य समाजी नेता श्री देवीदास आर्य ने कहा वर्तमान युग में यह श्रेय केवल आर्य समाज को ही है कि उसने भारत में सेवा व परोपकार की भावना उत्पन्न की। विद्यालय, महाविद्यालय, अनाथालय, विधवाश्रम, गौशालाएं नारी निकेतन, गुरुकुल, अस्पताल खोलकर आर्यसमाज देश का सेवा धर्म के प्रति मार्ग प्रदर्शित एवं प्रशस्त किया। श्री आर्य ने महिलाओं की दीन हीन दशा का चित्रण करते हुए कहा कि विदेशी मुगल आक्रमण के पश्चात् भारत में महिलाओं की स्थिति में गिरावट आई थी। अब स्वतन्त्र भारत में भी नारी पर अत्याचार हो रहे हैं। यह बहुत लज्जा जनक विषय है। हिन्दू समाज के उत्थान हेतु नारी सम्मान वर्धन की अत्यन्त आवश्यकता है।

युवकों से आह्वान वेदवाणी का

प्रस्तोता—देव नारायण भारद्वाज

(गतांक से आगे)

वैदिक काल में "जीवेम् शरद शतम्" अर्थात् सौ वर्ष तक सक्षम सामान्य जीवन की कल्पना की गई थी। यद्यपि कतिपय ऋषि-मुनि जन इससे भी लम्बा जीवन पाते थे। इस सौ वर्ष के काल को चार आश्रमों में विभाजित किया है। प्रथम २५ वर्ष ब्रह्मचर्य आश्रम द्वितीय २५ वर्ष गृहस्थ आश्रम, तृतीय २५ वर्ष वानप्रस्थ और अन्तिम २५ वर्ष को सन्यास आश्रम की संज्ञा दी गई है। इन आश्रमों के अर्थ बहुत व्यापक तथा वैज्ञानिक होते थे जबकि आज इनको संकीर्ण अर्थ में लेकर सीमित कर दिया गया है। कोई भी आश्रम मात्र सुख भोग या विलास की वस्तु न होकर 'आश्रम' पूर्ण श्रमेण स्वश्रम पर आश्रित या आत्म निर्भर होता था। ब्रह्मचर्य का केवल अविवाहित रहकर धातुक्षय न करना मात्र अर्थ नहीं है। इसका आशय श्रम साधना पूर्वक आदि भौतिक एवं आध्यात्मिक ज्ञान का अर्जन करना है। गृहस्थ आश्रम तब प्रारम्भ होता है जब तरुण स्नातक अपनी सहधर्मिणी के साथ राष्ट्र कल्याण के कार्य में जुट जाता है। शेष सभी आश्रम इसी एक आश्रम पर आश्रित रहते हैं। वानप्रस्थ वह काल है जब गृहस्थ पर्याप्त दायित्वों से निवृत हो जाता है, और वह वन की ओर प्रस्थान करता है। अर्थात गृह से बाहर जाकर अपने अनुभवों का प्रसारण करता है उसके कुछ दायित्व शेष भी रह जाते हैं इसलिए उसका अपने परिवार से भी किंचित नाता भी जुड़ा रहता है, किन्तु संन्यास काल आते आते वह अपने सारे पारिवारिक कर्त्तव्यों से अवकाश पा लेता है, और यत्र तत्र भ्रमण कर समाज व राष्ट्र में जागरण के मन्त्र फूंकता है। यदि हमने अपनी पुरातन प्रणाली का पालन किया होता तो हम आज की बड़ी कठिनाइयों से मुक्ति पा सकते थे: जैसा कि अभी व्यक्त किया है कि उपरोक्त चार में से तीन आश्रम मात्र गृहस्थ आश्रम पर निर्भर रहते हैं। यही आश्रम युवकों का आश्रम है। इस प्रकार युवक राष्ट्र की रीढ़ है। इसीलिए युवक जब गृहस्थ आश्रम में प्रवेश करता था तो उसे सभी भांति समर्थ बना दिया गया होता था। इस विषय में ऋग्वेद का कथन है—

> युवा सुवासाः परिवीत आगात्स उश्रेयान्भवति जायमानः।
> तं धीरासः कवय उन्नयन्ति स्वाध्यो मनसा देवयन्तः।
>
> मंडल ३ सू० ८/४

तरुण युवावस्था को प्राप्त, सुन्दर वस्त्रों को धारण किए और सब ओर से विद्या में व्याप्त हुए ब्रह्मचर्य से घर को आवे। वही विद्या में प्रसिद्ध हुआ अति प्रशंसित होता है। उसकी कामना करते हुए बुद्धिमान सुन्दर विद्या का अध्ययन कराने वाले, सर्वोत्तम विद्वान योग विज्ञान व अन्तःकरण से उन्नत करते हैं व उत्तम मानते हैं

ऋग्वेद की ऋचा युवकों के लिए सुन्दर उदबोधन देती है। युवक विद्यालय से विद्या ग्रहण करके प्रसिद्धि प्राप्त करे, आचार्यगण विज्ञान एवं अन्तःकरण से युवक को समुन्नत करते हैं, और वह सुन्दर वस्त्र धारण करता है। इन गुणों से सुसंस्कृत होकर वह गृहस्थ धर्म के कर्तव्य पर आरूढ़ होता है। जो अपेक्षा वैदिककाल में ऋषिगण युवक से करते थे वही आज भी करते हैं। आज युवक में सुन्दर वस्त्र धारण करने की रुचि अपार होती है उतनी रुचि उसमें विद्या के ग्रहण करने में हो तो वह यश एवं श्री से विभूषित हो जाता है।

इसी प्रकार अथर्ववेद में युवकों को ऐसे कर्म करने का आदेश दिया गया है, जिससे वह स्वयं तो महान बने ही, अपितु अपने माता पिता को भी गौरव प्रदान करें—

> अर्भको न कुमारको ऽधितिष्ठन्नवं रथम्।
> स पक्षन्महिषं मृगं पित्रे मात्रे विभु क्रतुम्॥
>
> अथर्ववेद का. २६ सू० ९२ मंत्र १२

जैसे कुमार बालक खिलाड़ी नये रथ पर चढ़े, वैसे ही वह माता के लिए व पिता के लिये महान कीर्ति दायक कर्म वाले सखाओं को ग्रहण करें। इस मन्त्र में पर्याप्त रूप से स्पष्ट कर दिया गया है, कि कुमार क्रीडांगन के खेलों में तो मग्न रहे साथ ही वह जीवन में ऐसे कार्य भी निष्पादित करें, जो उसके माता पिता के सुयश में वृद्धि करते हों। इसी भावना को यजुर्वेद भी अपना समर्थन प्रदान करता है:—

> आ नऽइडाभिर्विदथे सुशस्ति विश्वानरः सविता देवऽएतु।
> अपि यथा युवानो मत्सथा नो विश्वं जगदभिपित्वे मनीषा॥
>
> यजु० ३३/३४

हे विद्या प्राप्त अग्रणी मार्गस्रष्टा उपदेष्टा युवजन! जैसे सबके नायक उत्तम गुण वाले सूर्य के तुल्य प्रकाशमान विद्वान वाणियों से बताने योग्य व्यवहार में सुन्दर प्रशंसा युक्त हमारे सब चेतन पुत्र-गौ आदि को अच्छे प्रकार प्राप्त होवे, वैसे सम्मुख जाने में तुम लोग आनन्दित हूजिये, और जो हमारी बुद्धि है उससे भी वृद्धि कीजिये।

इस मन्त्र में युवकों को वेदवाणी का सम्बोधन है। उनसे राष्ट्र के नेतृत्व का आग्रह है सूर्य सदृश प्रकाशमान, मृदुलवाणी के व्यवहार की अपेक्षा है। सन्तान एवं राष्ट्रीय सम्पदा की श्रोत गौ आदि उन्हें प्राप्त हों। आनन्दित होने के साथ साथ सुशिक्षित युवक समाज के सभी घटकों की बुद्धियों का शुद्धिकरण करते रहें। वैदिक युग में युवकों से वेदवाणी की यही अपेक्षा थी, यदि आज भी युवजन पथभ्रष्ट न होकर ज्ञान-विज्ञान एवं विविध विद्याओं को ग्रहण करलें तो वे समाज को निस्सन्देह सुख सम्पन्न करते हुए राष्ट्र की अस्मिता को देदीप्यमान, कर सकते हैं।

ऐसे ही गुणी युवकों से वेदवाणी की आकांक्षा है—

> अर्चत प्रार्चत प्रिय मेधासो अर्चत।
> अर्चन्तु पुत्रका उत पुरं न धृष्ण्वर्चत॥
>
> का० २०/सू० ९२/५

हे प्यारी हितकारिणी बुद्धि वाले पुरुषो! निर्भय गढ़ के समान उस परमेश्वर एवं स्वराष्ट्र को पूजो! अच्छे प्रकार पूजो! पूजो और तुम्हारी गुणी सन्तानें उसको पूजे। यहां पर पुर या गढ़ राष्ट्र का प्रतीक है, जिसे निर्भय रखते हुए उसकी पूजा का आदेश युवकों को दिया गया है। पूजा का अर्थ सम्मान पूर्वक उसकी आवश्यकताओं की पूर्ति करना है। ये जो कतिपय वेद मन्त्र यहां प्रस्तुत किये हैं, वे युवकों को निरन्तर "चरैवेति चरैवेति" कहते हुए आगे बढ़ने का आह्वान करते हैं और अपने प्रिय राष्ट्र को क्षण-क्षण आगे बढ़ाने का सन्देश देते हैं। काश: युवजन वेदवाणी के इस अमर आह्वान पर ध्यान देकर इसे चरितार्थ कर सकते।

(समाप्त)

सत्य का उपासक

श्री भगवान चैतन्य एम० ए० साहित्यालंकार
२८१/एस-२ सुन्दर नगर-४ मन्डी (हि० प्र०)

धर्म के सम्बन्ध में आधुनिक युग में लोगों में बहुत अधिक भ्रान्तियां हैं। आज लोगों ने अलग-२ मजहब खड़े करके आपस में टकराव का वातावरण पैदा कर लिया है। तथा एक-दूसरे के खून के प्यासे तक बन गए हैं। भला इसे धर्म की संज्ञा दी जा सकती है? धर्म तो एक ऐसी सार्वभौमिक व्यवस्था है जिसका आचरण करने से टकराव, दुःख-क्लेश एवं संघर्ष पैदा ही नहीं हो सकता। धर्म पर चलकर तो शान्ति और स्थिरता एवं प्रेमभाव का वातावरण बनना चाहिए। धर्म से तो ऐसी विशालता एवं त्याग की भावना पैदा होती है जिससे समूची मानवता आपस में बिना किसी संघर्ष के शान्ति-पूर्वक जीवन गुजार सके। संसार में आज एक नहीं—सैकड़ों ही मजहब एवं सम्प्रदाय हैं जिन्होंने संसार में शान्ति और सद्भावना का वातावरण न बनाकर संघर्ष को जन्म दे रखा है। समय-२ पर संसार मे आकर प्रत्येक महापुरुष ने एक ऐसे धर्म की स्थापना की व्यवस्था का प्रयास किया जो पूर्ण-रूप से संसार भर के प्राणियों के लिए हो और मानवता सही अर्थों में पनप-कर प्रत्येक प्राणी को सुख-शान्ति प्रदान कर सके मगर अक्सर विद्वान या तो कार्यरूप में ऐसा विशाल दृष्टिकोण अपना ही नही पाए या स्वयं की प्रतिष्ठा के लिए संसार के मजहबो मे लिपा-पोती भर करके चले गए। कुछ स्वयं ही नया सम्प्रदाय स्थापित कर गए। कुछ की आयु यह सोचते-२ ही समाप्त हो गई कि मानव-२ के बीच किस आधार पर इस दीवार को पाटा जा सकता है तथा समूचे संसार को किस आधार पर पूर्णरूप से धार्मिक बनाया जा सकता है और पृथ्वी के एक छोर से लेकर दूसरे छोर तक एकत्व भावना किस प्रकार स्थापित की जा सकती है। कुछ विद्वानों ने ऐसे रास्ते निकालकर प्रयास भी किया मगर सफलता हाथ नही लगी। बीच-२ में कुछ ऐसे भी महापुरुष हुए जिन्होंने धर्म को बेकार की वस्तु समझकर तथा उसे पूर्णरूप से नकार कर मानव-मानव मे समीपता बढ़ानी चाही मगर सफलता उन्हें भी प्राप्त नही हुई।

जहां तक मैं समझता हूँ महर्षि दयानन्द सरस्वती आधुनिक युग मे एक-मात्र ऐसे समाज सुधारक थे जिन्होंने सही निदान को न केवल खोज निकाला बल्कि डंके की चोट पर उसका प्रचार व प्रसार भी कर गए। यह अलग बात है कि पूर्णरूप से अभी तक उन्हें हम समझ नही पा रहे हैं मगर फिर भी इतना तो है ही कि उन्होने ऐसी मूलभूत बातों को स्पष्ट करके हमारे सम्मुख रखा जिन्हें निःसंकोच अपना कर विश्वशान्ति एव विश्व एकता को स्थापित किया जा सकता है। विश्वबन्धुत्व का आधार उन्होंने ही हमारे सम्मुख ईमानदारी से रखा। उन्होंने किसी भी दबाव या प्रतिष्ठा के लालच में आकर समझौतावाद नहीं अपनाया। उन्होंने एक ही सूत्र हमें दिया कि सत्य का पहचानना और अपनाना ही हमारा लक्ष्य होना चाहिए। महर्षि दयानन्द महान सत्यवादी थे। उनका जीवन सत्य से आरम्भ हुआ, आयु भर सत्य के लिए संघर्ष करते रहे। कई प्रकार के छल-कपटों को सहन किया। बड़े-२ प्रलोभनों के आगे भी नहीं झुके बस सत्य पर अडिग रहे। लाखों की संपत्तियो को ठोकर मारकर, बड़े-२ राजाओं की धमकियो व प्रलोभनों को अनदेखा करके यह सत्य का मस्ताना निन्तर समाज में सत्यका ही प्रचार करता रहा। उन्होंने एक महान वाक्य हमारे सम्मुख रखा कि सत्य को अपनाने और असत्य को त्यागने मे सदा तत्पर रहना चाहिए। संप्रदायवादी एव मजहबी लोगों में हमें यह बात देखने को मिलती ही कि वे अपनी असत्य बात को भी सत्य घोषित करने से नही चुकते हैं। महर्षि का कहना ही कि उनका कल्याण कभी हो ही नही सकता एक बार मालूम हो जाए कि यह बात असत्य हो तो भला उसे त्यागने में संकोच कैसा? दयानन्द जी महाराज कहते हैं कि सत्य को ग्रहण करने मे हमें सदा तत्पर रहना चाहिए। अपने आप में एक यही बात बहुत बडा सत्य है कि जो व्यक्ति अपना जीवन बनाना चाहता है उसे सत्य अपनाना ही पड़ेगा क्योंकि केवल सत्य की ही हमेशा विजय होती है असत्य की नही। असत्य से भरा जीवन अपना ही कल्याण कर पाने में असमर्थ होता है वह भला किसी और का जीवन बना सकेगा? महर्षि दयानन्द जी ने अपने समय में स्थान पर आकर सत्य का प्रचार किया। वे कहते थे कि सत्य कभी भी दो नहीं हो सकते हैं। उन्होंने अपनी बात को मनवाने के लिए अपनी बुद्धि एवं स्वाध्याय के बल पर ऐसे-२ तर्क प्रस्तुत किए कि उस समय पाखंडी समाज एक दम बौखला गया। भारत की धार्मिक जनता को पाखंडी लोग उस समय दोनों हाथों से लूट रहे थे। भारतवर्ष के लोग धर्म के नाम पर अनेक भागों में बंटे हुए थे। महर्षि की आत्मा ने गहराई से इसका कारण खोजा और निदान भी प्रस्तुत किया। उन्होंने धर्म के नाम पर चल रहे पाखंडों की समालोचना की और धर्म के सत्य स्वरूप को लोगों के समक्ष रखा। उन्होंने अपनी सूक्ष्म दृष्टि से देखा कि समाज या विश्व की एकता तब तक संभव नहीं हो जब तक हमारे विचार धर्म के सम्बन्ध में एक नहीं होंगे। अतः उन्होंने विभिन्न मतों एवं संप्रदायों की अपनी विशाल विद्वता के आधार पर समालोचना की और उनमें जो-२ बुराईयां थी उन्हें खोज निकाला। सत्यार्थ प्रकाश ग्रन्थ में इस सबका विधिवत् वर्णन है। सत्य के उपासक ने सत्य का ही प्रकाश किया और अपनी विलक्षण पुस्तक का नाम भी सत्यार्थ-प्रकाश ही रखा। महर्षि के मन्तव्यों का पता उनकी सत्यार्थ प्रकाश की भूमिका को पढ़ने से ही मालूम हो जाता है। वे मानव और मानवता के कितने हितैषी थे तथा वे किस प्रकार मानवमात्र की भलाई चाहते थे यह देखते ही बनता है। उन्होंने मानव मात्र की केवल एक ही जाति मानी है। उनकी दृष्टि में जन्म से कोई भी ऊंचा या नीचा नहीं है बल्कि हम सभी उस परमपिता की सन्तान है और मनुष्य अपने कर्मों से ही छोटा या बड़ा बनता है। मनुष्यमात्र में एकता और प्रेम की स्थापना करने के लिए ही उन्होंने एक ईश्वर की पूजा का विधान दिया। उन्होंने कहा कि हम सबका एक ही उपास्य देव परमपिता परमेश्वर है। वह एक ही है और उसी की हम सबको उपासना करनी चाहिए। उन्होंने हमारे समक्ष एकता का कितना बड़ा सूत्र रखा है। उन्होंने यह भी लिखा है कि अलग-२ देवी-देवता और ग्रन्थों को अपने-२ लिए प्रमाणित मान लेना ही मनुष्यों मे वैर-विरोध का सबसे बडा कारण है। अतः उन्होंने जहां एक ईश्वर की उपासना का विधान हमारे समक्ष रखा वहीं दूसरी ओर उन्होंने केवल और केवल एकमात्र वेद (ग्रन्थ) को प्रमाणित मानने के लिए भी समूची मानव जाति को प्रेरणा दी। उन्होंने उद्घोष किया कि वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। जो ईश्वरीय होने से स्वतः प्रमाण है। काश! हम महर्षि दयानन्द जी के इस एकात्मवाद के सिद्धान्त को समझकर सभी मत-मतान्तरों के भेद-भाव मिटाकर उस एक परमपिता की सन्तान मान कर प्रेम भाव एवं सुख-शान्ति के साथ अपना जीवन यापन कर सकते। महर्षि की एक नही अनेक विलक्षणताएं हैं। उन्होंने वेद की मानवता तथा एक ईश्वर की उपासना का मण्डन और अन्य मत-मतान्तरों का खण्डन सत्य की कसौटी पर कसकर ही किया। महर्षि ने बड़े साफ शब्दों में कहा है कि मैंने अपनी ओर से एक भी शब्द नहीं लिखा है बल्कि वेद प्रतिपादित तथ्य ही उन्होंने हमारे समक्ष रखे हैं। उन्होंने कहा कि वेद के विरुद्ध जहां भी, जो कुछ भी है सब अप्रमाणित एवं त्यागने योग्य है क्योंकि वही असत्य है, अपने लिए अनेक अलग-२ ग्रन्थों को मानने वाले मजहबी लोगो के लिए महर्षि ने कहा कि तुम्हारे में ग्रन्थ मनुष्य कृत हैं अतः प्रमाणित नहीं है। इनमें जो-२ वेद विरुद्ध बातें हैं उन्हें छोड़कर जो वेद विहित हैं उन्हें ही आप यदि मानें तो सब में मतभेद समाप्त हो जायेगा और संपूर्ण विश्व एकता के प्रबल सूत्र में बन्ध कर अपनी चतुर्दिक उन्नति कर सकता है।

उनके प्रबल तर्कों का उत्तर उस समय किसी भी संप्रदाय के ठेकेदार के पास नही था। उन्होंने समस्त भारत में हलचल मचा दी थी। सोये हुए प्रबुद्ध लोगों ने उनकी बात को सुना, सोचा, समझा और सराहना की मगर अल्पबुद्धि और धर्म के नाम पर लोगो को लूटने वाले लोगों को उनकी सत्य बातें पसन्द नहीं आईं और जब विद्वता के आधार पर स्वामी जी से सामना नहीं कर सके तो उन्होंने उन्हें समाप्त करने के उपाय सोचे। उन पर कीचड़ और पत्थरों की वर्षा की। उन्हें मारने के लिए जीवित सांप छोड़े गए बड़े-२ गुण्डों और डकैतो को उस त्यागी और तपस्वी का अन्त कर देने के लिए भेजा तथा अनेक प्रकार से उन्हें बदनाम करने और नीचा दिखाने के प्रयास किए गए मगर इस सत्य पथ के महारथी ने लोगों के शब्द-बाणों को स्थिर चित्त से सहा।

(शेष पृष्ठ ७ पर)

नैपाल प्रचार के सम्बन्ध में

सार्वदेशिक पत्र में प्रकाशित पूर्व विज्ञप्तियों द्वारा आपको यह ज्ञात हो चुका है कि नैपाल देश में आर्यसमाज के कार्य को सक्रिय बनाने की दिशा में विशेष पग उठाये गये हैं। सार्वदेशिक सभा ने गत अगस्त मास से श्री प्रेम नारायणप्रसाद उपाध्याय को वहां पर प्रचारक नियुक्त किया है। इसके साथ ही नैपाल की स्थिति की जानकारी रखने वाले व्यक्तियों एवं सीमावर्ती भारतीय क्षेत्र की आर्य समाजों से भी हमने सम्पर्क स्थापित किया है। हमें इस संदर्भ में कुछ सज्जनों के उत्साह वर्द्धक पत्र भी प्राप्त हुये हैं।

हम चाहते हैं कि नैपाल देश में आर्यसमाज के संगठन में सक्रियता एवं स्थायित्व लाने के लिये वहां की आर्य प्रतिनिधि सभा को पुनर्जीवित किया जाये। इस दृष्टि से आगामी मई मास के तृतीय सप्ताह में नैपाल में एक सम्मेलन आयोजित करने का भी विचार है। यह सम्मेलन पूरी तैयारी के उपरान्त किया जाये। तभी इसकी सार्थकता है। इस सम्मेलन में नैपाल के आर्य बन्धुओं के साथ ही उत्तर प्रदेश, बिहार तथा पश्चिमी बंगाल के सीमावर्ती क्षेत्रों के आर्य समाजों व इन प्रान्तों की आर्य प्रतिनिधि सभाओं को भी भाग लेना उचित है। जिन महानुभावों ने नैपाल में प्रचार कार्य किया है तथा जिन्हें वहां की स्थिति का विशेष ज्ञान है, इस सम्मेलन में विशेष रूप से आमन्त्रित किये जायेंगे। अतः आप-सज्जनों से प्रार्थना है कि नैपाल प्रचार के सम्बन्ध में अपने बहुमूल्य सुझाव तथा जानकारी देकर हमारा मार्ग दर्शन करें। भावी सम्मेलन के विषय में अपने सुझाव विशेष रूप से भेजने की कृपा करें।

— डा० आनन्द प्रकाश, उपमन्त्री सभा
एवं संयोजक देशान्तर प्रचार

सत्य का उपासक

(पृष्ठ ६ का शेष)

कीचड़ और पत्थरों को पुष्प वर्षा समझा, गालियां देने वालो को फल और मिठाइयां बांटता रहा क्योंकि वह तो एक चिकित्सक बनकर समाज की कुरीतियों का उपचार करने आया था। इसलिए उसने एक कुशल चिकित्सक के समान रोगी की ताड़का को मुस्कराते हुए सहा। जैसे जब किसी रोगी का फोड़ा कोई चिकित्सक चीरता हो तो रोगी दर्द के कारण रोता, चिल्लाता और डाक्टर को अपशब्द एक भी कह देता है मगर कुशल चिकित्सक उस ओर ध्यान ही नहीं देता है उसका ध्यान तो केवल और केवल मात्र रोगी के फोड़े का उपचार करके उसे सुखी और प्रसन्न बना देने में होता है। ठीक होने पर वही रोगी चिकित्सक का लाख-२ धन्यवाद करता है। आज भी लोग महर्षि का लाख-२ धन्यवाद करते हैं। उनके उपकारो को कभी भी भुलाया नहीं जा सकता है। बल्कि आने वाला समाज और भी अधिक उस योगी का धन्यवादी होगा क्योंकि वे हमे ऐसा सूत्र दे गए हैं जिस पर चले बिना विश्व शान्ति स्थापित हो ही नही सकतीं है। वे सत्य के इतने महान उपासक थे कि उन्होंने कहा—मेरी उंगलियों को आग लगाकर बत्तियों के समान जलाकर असत्य का समर्थन करने को कहा जाए मैं तो भी ऐसा नही करूंगा। यही नहीं उन्होंने कहा कि मुझे किसी तोप के मुंह से बांध दिया जाए और सत्य बोलने पर गोली से उड़ा देने की धमकी दी जाए मैं तब भी सत्य का समर्थन ही करूंगा। इतना बड़ा सत्य का प्रबल समर्थक हमें इतिहास में विरला ही मिलता है। तलवार की धार के समक्ष भी वे वेद विरोधी नहीं बने। सत्य का प्रचार एवं प्रसार करते-२ ही ऐसे महान योगी ने महाप्रयाण किया। जहर का प्याला पीकर भी वह मानवता का हितैषी जहर देने वाले जगन्नाथ को अभयदान देकर अपना सारा धन देकर कहता है कि तुम यहां से शीघ्र भाग जाओ अन्यथा तुम्हें कष्ट भोगना पड़ेगा। महर्षि दयानन्द का सम्पूर्ण जीवन ही विलक्षण था। इतिहास में ऐसा अनुपम व्यक्तित्व ढूंढे से भी नहीं मिल सकता है। सम्पूर्ण मानवता का हितैषी, योगीराज दयानन्द अपने सत्य के प्रचार के कारण आयु भर कष्ट झेलता रहा। अन्त में भी जब मृत्यु की बलिवेदी पर अपनी आहुति दे रहा है तो किसी से कोई शिकायत नहीं [illegible] है।

"प्रभो! तेरी इच्छा पूर्ण हो!"

तस्वीर बनाई तुमने

स्वर्णिम भारत की ऋषिवर, तस्वीर बनाई तुमने!
मिथ्या सन्तोष-सुरा में पौरुष जब डूब गया था।
सुख स्वप्न हुआ था, जीवन जीने से ऊब गया था॥
भूले अतीत थे अपना भूले जय-विजय कहानी।
जीते थे जीने भर को लेकर आंखों में पानी॥
तब क्रियाशीलता सूने उर में उपजाई तुमने!
थे पराधीन अवमानित चुप-चुप पीड़ा थे सहते।
बेबस इतने कि लुटेरों को ही थे रक्षक कहते॥
घर-बार हमारा था पर मालिक इसके परदेसी।
तुमने तब कहा कि शासन अच्छा हर तरह स्वदेशी॥
आजादी की गरिमा की अनुभूति कराई तुमने!
थी छिन्न-भिन्न भीतर से सामाजिक शक्ति हमारी।
जन्मना वर्ण-सत्ता पर तुमने की चोट करारी॥
अभिमान व्यर्थ द्विजता का कर चकनाचूर दिया था।
उपकार दलित जन पर यों तुमने भरपूर किया था॥
सामाजिक न्याय नियम की सम राह दिखाई तुमने!
वैधव्य पीड़िता शतशः दुर्दशाग्रस्त बालायें।
था प्रश्न सामने उनके जीवन किस भांति बितायें॥
सम्मान पूर्ण जीवन की तुमने तब राह निकाली।
पल्लवित हो उठी जिससे उनके जीवन की डाली॥
करुणा-जल-प्लावित कर दीं कलियां मुरझाई तुमने!
महिला पुरुषों से आगे अब वेद-मन्त्र पढ़ने में।
कर दीं निरस्त बाधाएं तुमने उनके बढ़ने में॥
सामर्थ्य सभी घटकों में तुमसे समाज के जागी।
हो गया विश्व वेदों का तब यत्नों से अनुरागी।
वैदिक संस्कृति की उजड़ी बगिया पनपाई तुमने!
सच तो यह दीप्ति तुम्हीं ने दी है जो दीख रही है।
अभिमत को आज तुम्हारे दुनियां कह ठीक रही है॥
गांधी ने तुमको चाहा कवि रवि ने तुम्हें सराहा।
जगती को ज्योतित कर दिया स्वय को स्वाहा॥
कुछ शेष अगर था कर दी विष पी भरपाई तुमने!

—धर्मवीर शास्त्री
बी १/५१ पश्चिमी बिहार
नई दिल्ली-११००६३

आर्य सभ्यता के विषय में भ्रान्ति

—रघुवीर वेदालंकार, रामजस कालेज, दिल्ली

४ अक्टूबर के "नवभारत टाइम्स" के कालम 'प्रतिदिन" के अन्तर्गत श्री शरद जोशी ने 'मेज पर दहेज लिए" शीर्षक से आर्य द्रविड़ सम्बन्धो के विषय मे अपने विचार प्रकट किए हैं। आश्चर्य है कि जोशी जी जैसे विचारक ने भी इस कालम मे न केवल तथ्यो के विपरीत बात कही है अपितु आर्य सभ्यता पर भी निराधार आक्षेप किये हैं। आपका कथ्य इस तथ्य पर आधारित है कि आर्य भारत मे बाहर से आये तथा उन्होंने यहा के मूल निवासियो द्रविडों को हराकर उनकी कन्याओ से दहेज के लोभ मे विवाह सम्बन्ध स्थापित किये। शायद जोशी जी इस बात से अनभिज्ञ हैं कि आर्य भारत मे बाहर से नहीं आए। उक्त धारणा विदेशी इतिहास लेखको ने जानबूझ कर आर्य-द्रविडो का वैमनस्य पैदा करने के लिये प्रचारित की थी। इस विषय में पर्याप्त प्रमाण हैं कि आर्य मूलत इसी देश के निवासी हैं। आजकल इतिहास वेत्ता भी इस तथ्य को स्वीकार करने लगे हैं। इस विषय मे निम्न तथ्य अवधेय हैं।

(१) १९६८ मे सर्वप्रथम डा० फतेहसिंह ने सिन्धुलिपि को सफलतापूर्वक पढ़ा था। उन्होंने उस समय तक लगभग ढाई हजार मुद्राए पढ ली थी जिनके आधार पर राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान जोधपुर से प्रकाशित होने वाली 'स्वाहा' पत्रिका मे डा० फतेहसिंह ने इस विषय मे अपने लेख प्रकाशित किये थे। डा० फतेहसिंह की खोज पर आधारित एक लेख डा० पद्मधर पाठक ने 'हिन्दुस्तान टाइम्स' मे उनके समर्थन में लिखा था। इसके बाद इसी पत्र में कैम्ब्रिज के डा० अल्चिन ने सम्पादक के नाम एक पत्र लिखकर उनको आगाह किया था कि डा० फतेहसिंह की खोज से तो आर्य तथा द्रविड सभ्यता का भेद ही नहीं रह जायेगा।

(२) १४ सितम्बर के 'हिन्दुस्तान टाइम्स" मे रश्मि सक्सेना का एक लेख प्रकाशित हुआ है 'पेन्टिग प्रोव आर्य इण्डियन ओरिजिन' इस लेख मे आपने यह सिद्ध किया है कि १९७१ मे भारत सरकार द्वारा मध्यप्रदेश की ६०० वर्गमील की पहाड गढ़ गुफाओ के चित्रों के आधार पर डा० द्वारिकेश ने निष्कर्ष निकाला है कि आर्य लोग विदेशी न होकर भारतीय ही थे।

(३) यूनेस्को के सरक्षण मे होने वाली अन्तर्राष्ट्रीय गोष्ठी में भारत सरकार का प्रतिनिधित्व करने वाले इतिहास वेत्ताओं के सात सदस्यीय प्रतिनिधि मण्डल ने एकमत से आर्यों के ईरान आदि से भारत मे बस जाने का प्रतिवाद किया था। भारतीय प्रतिनिधि मण्डल का नेतृत्व प्रसिद्ध इतिहासज्ञ प्रो० बी बी लाल ने किया था। गोष्ठी मे ईरान, पाकिस्तान रूस पश्चिमी जर्मनी आदि देशो ने भी भाग लिया था। गोष्ठी के सम्बन्ध मे टिप्पणी करते हुए ३१-१ १९७७ के 'हिन्दुस्तान टाइम्स" ने लिखा था—'सोवियत गणराज्य की राजधानी दुशाम्बे मे होने वाली अन्तर्राष्ट्रीय गोष्ठी में भारतीय इतिहास वेत्ताओ पुरातत्वविदो तथा भाषा शास्त्रियो के अनुसार इस विषय मे कोई ठोस प्रमाण नहीं है कि आर्य लोग भारत के बाहर से आए थे। भारतीय आर्यों से सम्बन्धित पुरातत्व विषयक सामग्री ईरान, अफगानिस्तान तथा मध्य एशिया की पुरातत्व विषयक सामग्री से भिन्न है।" ईरान के स्कूलों में पढाई जाने वाली एक पुस्तक के अनुसार आर्य लोग हिमालय से ईरान मे गए थे चन्द हजार साल पेश अज जमाना माजीद बुजुर्गी अज निजाद आर्या अज कोह हाय कफ माज ।

(४) जोशी जी की मान्यता है कि आर्यो ने द्रविडों से कन्याए एव सुवर्ण ग्रहण किया क्योंकि द्रविडो के पास सोना बहुत था। ऐसा लिखते समय यह तथ्य ध्यान में नहीं रखा गया कि राम की ससुराल मिथिला मे थी तो अर्जुन की द्रुपद प्रदेश। श्रीकृष्ण की पत्नी रुक्मणी असम निवासिनी थी। अर्जुन पाताल अर्थात् अमरीका से उलोपी नामक कन्या को विवाह कर लाये थे। ये सभी स्थान द्रविड प्रदेश से बाहर हैं।

(५) उत्तर भारत में सुवर्ण भी कम न था। सोमनाथ आदि के अनेक मन्दिर इस बात के ज्वलन्त प्रमाण हैं। [illegible] में [illegible] नहीं कि [illegible] को आवश्यक [illegible]

के रूप में वर पक्ष के लिए दहेज देनी ही पड़ेगी। अथवा वर पक्ष उसकी मांग करता था। कन्या के माता पिता विदाई के समय इच्छानुसार जो भी देते थे वही दहेज था। यह स्वाभाविक भी है। क्या आज के जमाने मे कोई भी व्यक्ति अपनी बेटी को एक पाई अथवा वस्त्रादि के बिना ही वर को सौंप देना चाहेगा? द्रविड प्रदेश सौन्दर्य के लिए प्रसिद्ध भी नहीं हैं फिर पता नहीं जोशी जी ने आर्यों को द्रविड कन्याओ की ओर किस कारण से आकृष्ट माना है। संगीत नृत्य तो द्रविड प्रदेश की अपेक्षा बंगाल में अधिक प्रचलित हैं।

(६) जोशी जी के विचार से आर्यों ने द्रविड कन्याओं से विवाह करके उनको पतिसेवा, गौसेवा, सन्तानोत्पत्ति जैसे तुच्छ कार्यों में लगाकर उनकी उन्नति का मार्ग अवरुद्ध कर दिया। विश्व भर की सर्वप्रथम पुस्तक ऋग्वेद है जो कि आर्यों का मान्य धर्मग्रन्थ है। ऋग्वेद मे कन्या की लिखाई-पढ़ाई आदि सभी पुरुषो की तरह विहित है। स्त्री हि ब्रह्मा बभूविथ वेदमन्त्र तो स्त्री को ब्रह्मा का पद भी दे रहा है। वेद के अनुसार स्त्री घर की साम्राज्ञी है, नौकरानी नही। वह कहती है—'अहमुग्रा विवेचिनी' मैं तेजस्विनी हूं। विवेचिका हूं। क्या ये शब्द किसी दलित नारी के हो सकते हैं?

वस्तुत सती प्रथा एव दहेज का यह विभत्स रूप उस काल की देन है जब स्त्री के सभी अधिकार पुरुष वर्ग ने छीनकर उसे पति पर आश्रित दीन-हीन बना दिया। इसमें आर्य-द्रविड सभ्यता को घसीटना किसी भी प्रमाण से पुष्ट नही हो सकता। आर्य द्रविडो के परस्पर विरोध की बात भी विदेशी लेखको की कल्पना प्रसूत है। समस्त प्राचीन भारत वर्ष की संस्कृति एक ही थी तभी तो ठेठ द्रविड प्रदेश केरल मे उत्पन्न शकराचार्य न केवल समस्त भारत के अपितु जगद्गुरु कहलाए। समस्त उत्तर भारत मे उनका प्रचार है।

वस्तुत भारत के प्राचीन इतिहास को गलत रूप मे उपस्थित करने का प्रयास अंग्रेजी राज्य से होता रहा है। अब उसे योजनाबद्ध रूप से साम्यवादी रग दिया जा रहा है। इस विषय पर १५ २ १९७८ को दिल्ली मे सम्पन्न इण्डियन हिस्ट्री एण्ड कल्चर सोसाइटी के अधिवेशन पर टिप्पणी करते हुए इण्डियन एक्सप्रेस ने लिखा था—डा० डी एन झा और उसके दिल्ली विश्वविद्यालय के साथी अपनी मार्क्सवादी विचारधारा को नही छिपा सके। उन्होंने कहा कि हम ऐतिहासिक तथ्यो का मार्क्सवादी ढग से व्याख्यान करने के लिए बद्ध हैं।

आर्य समाज मठगुलनी (नवादा) द्वारा शुद्धि समारोह सम्पन्न

दिनांक ३-११-८९ रविवार को आर्यसमाज मठगुलनी (नवादा) के तत्वावधान में यज्ञ के अवसर पर ५९ वर्षीय ईसाई धर्म प्रचारक श्री जेम्स बैप्टीस्ट के १९ सदस्यीय परिवार ने ईसाई मत को त्याग कर वैदिक धर्म में प्रवेश किया।

यह शुद्धि कार्य आर्य समाज के प्रधान श्री भिखारी पासवान एवं मन्त्री श्री सत्यनारायण आर्य के प्रयास से सत्यदेव प्रसाद आर्य मरुत के पौरोहित्य में शुद्धि संस्कार सम्पन्न हुआ।

आर्य समाज नवादा एवं धमौल के सौजन्य से शुद्ध हुये लोगों को नवीन वस्त्र प्रदान कर स्वागत किया गया निकटवर्ती कई गावों के प्रतिष्ठित व्यक्तियों के जन समूह ने उनका हार्दिक अभिनन्दन करते हुये उनके द्वारा वितरित प्रसाद को ग्रहण कर अपनी शुभ कामना व्यक्त की।

आज से २५ वर्ष पूर्व मठगुलनी ग्राम में एक विदेशी पादरी ने धर्म विरोधी प्रचार आरम्भ किया था इस समय आर्य समाज मठगुलनी के कार्यकर्ताओं ने उसका विरोध किया जिस विरोध के कारण उस विदेशी पादरी को ग्राम मठगुलनी छोड़नी पड़ी ईसाईयों ने इस बात से चिढ़कर आर्यसमाज के लोगों पर अभियोग चलाया जिसके लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने दस हजार रुपये व्यय करके उस अभियोग की पैरवी की और मठगुलनी आर्य समाज को सहयोग दिया वर्तमान समय आर्य समाज मठगुलनी की एक दीवार निर्माण हेतु सार्वदेशिक सभा ने दस हजार की और सहायता दी हैं। आर्य समाज मठगुलनी के समीप के क्षेत्रों में ईसाई मिशनरियाँ अधिक कार्य कर रही है। इस कारण इस आर्यसमाज को अधिक सहयोग देने की जरुरत है। श्री भूपनारायण शास्त्री के सहयोग से विदेशी पादरी को भगाने में सफल हुए थे। —सम्पादक

शुद्धि समाचार

आर्य समाज सदर बाजार झांसी में कुमारी रोमिश सैमुचल आयु २६ वर्ष पुत्री श्री सैमुयलचन्द मेरठ निवासी की शुद्धि कर वैदिक धर्म में प्रवेश किया दिनांक १५-१०-८९ को मंगलवार। शुद्धि उपरान्त उसका विवाह श्री मूलचन्द जी से सम्पन्न हुआ।

रेणू मेडिकल कालिज में ५-६ वर्ष से स्टाफ नर्स के पद पर कार्य कर रही है तथा श्री मूलचन्द जी मेडिकल कालिज में कार्यरत हैं।

शुद्धि पश्चात् नाम कुमारी रेणू रखा गया। इस विवाह संस्कार एवं शुद्धि संस्कार में लगभग १५०-२०० स्त्री पुरुष सम्मिलित हुए। विशेषता यह रही कि कन्या के माता-पिता जी भी मेरठ से आये हुये थे और उन्होंने पूर्ण वैदिक रीति से स्वयं कन्यादान किया। संस्कार आर्य समाज सदर के पुरोहित चन्द्रभान जी अग्रवाल ने कराया। दोनों पक्ष की ओर से आर्यसमाज १२२) दान प्राप्त हुआ। ११) दयानन्द धर्मार्थ औषालय को प्राप्त हुये। इस प्रकार बड़ा सुन्दर आकर्षक कार्य सम्पन्न हुआ।

—शान्तिप्रसाद, प्रधान

उन्नति का पथ

(पृष्ठ १ का शेष)

है काल का निर्णय भी विचित्र है, बुद्ध-मुहम्मद, दयानन्द ने जो कार्य ४० वर्ष के बाद किया, ऐसे अनेक उदाहरण और भी मिलेंगे। अतः आयु और काल भी जीवन की उन्नति में बाधक नहीं है। प्रत्येक अवस्था का प्रत्येक क्षण मनुष्य की उन्नति का क्षण बन सकता है।

बुद्धिमान के लिये कभी भी काल का अकाल नहीं हो सकता है।

भाग्यवाद—

भाग्यं फलाति सर्वत्र न विद्या न च पौरुषम्।

ऐसे मनुष्य, जो हाथ पर हाथ रखे बैठे हैं कि भाग्य ही जो करेगा वही होगा, हमारे मस्तक पर यही लिखा है—

अजगर करे न चाकरी, पंछी करे न काम।
दास मलूका कह गये, सबके दाताराम॥

इस प्रकार के आलसी, पुरुषार्थ, हीन व्यक्ति नकारा होकर अपने जीवन को व्यर्थ ही बर्बाद करते हैं। उन्नतिशील होने के लिये भाग्य पर आश्रित होना नहीं चाहिये।

भाग्यवादी व्यक्ति वास्तव मे अज्ञान का दण्ड भोगते हैं भाग्यावलम्बी व्यक्ति प्रायः सबसे बड़े अभागे होते हैं।

वस्तुतः जिसे हम दुर्भाग्य, विपत्ति, दरिद्रता, दुर्दशा कहते हैं वह मनुष्य की बुद्धि के लिये उतनी ही उपयोगी होती है जितनी वृक्ष के लिये खाद। भगवान कृष्ण ने कहा है जिसका मैं कल्याण चाहता हूं, उसका सर्वस्व छीन लेता हूं—

यस्यानुग्रहमिच्छामि तस्य सर्वंहराम्यहम्।

दूसरे शब्दों मे भगवत्कृपा से ही मनुष्य निर्धन और निस्सहाय होता है। उसी दशा मे वह अपना पौरुष प्रकट कर उन्नतिशील होता है। सिद्ध पुरुषो मे सख्या उन्ही लोगों की मिलेगी। जिन पर भगवान ने इस प्रकार का अनुग्रह किया है।

केवल पलंग पर पड़े और भोजन विलास करते हुए कोई बड़ा आदमी नहीं बना, बलवान, आत्माएं प्रतिकूल दिशा में ही उन्नति करती है। अतः भाग्यहीनता से भयभीत होकर पुरुषार्थहीन नहीं बनना चाहिये।

साधन-सम्पन्नता भी आवश्यक नहीं?

बाह्य साधनों के अभाव में असमर्थता का अनुभव करना कायरता है। जैसे—हमारे पास फाउन्टेन पेन नहीं, हम लेखक कैसे बनें। घड़ी नहीं, अतः समय का ध्यान कैसे रखें! बिस्तरबन्द नहीं, यात्रा कैसे करें। कुर्सी-मेज नहीं, अतः काम कैसे करें। अच्छे विद्यालय नहीं, फिर बुद्धिमान कैसे बनें। दवा नहीं, तो स्वस्थ कैसे हों। लंगोट नहीं, तो कसरत कैसे करें। मनुष्य साधनों का दास नहीं है, महापुरुषों का जीवन प्रबल साधनों के न रहने पर भी अपने उद्देश्य में सफल हो सकता है।

कुलबल, सुअवसर, आवर्यबल, सौभाग्य, साधन, स्थान, मित्र, बलादि एक अंश तक उन्नति में सहायक अवश्य होते हैं। मनुष्य की शक्ति बढ़ती है प्रत्येक व्यक्ति को स्वयं अपनी आकांक्षाओं के अनुरूप अपने जीवन को बनाने का यत्न करना चाहिये। आत्म-निर्माण की थोड़ी बहुत योग्यता सबमें होती है।

विदेशों में आर्यसमाज की गतिविधियां

आर्य समाज की ७५वीं वर्षगांठ

आर्य सभा के निश्चयानुसार इस वर्ष दिसम्बर तक आर्य समाज की स्थापना की ७५वीं वर्षगांठ मनाने को तैयारी गांव-गांव, नगर-नगर हो रही है। जुलाई से ही मोरिशस के विभिन्न प्रांतों में पच्छत्तर वर्ष का महोत्सव मनाना शुरू हो गया है।

कहीं-कहीं पर यजुर्वेद पारायण महायज्ञों का अनुष्ठान किया जा रहा है तो कहीं-कहीं सांस्कृतिक कार्यक्रम अथवा युवावर्ग के दौरान युवकों में धर्म, संस्कृति एवम् भाषा की रक्षा के हेतु नवचेतना जागृत की जा रही है। मोरिशस के दक्षिण प्रांत में रहने वाले आर्य समाजी वधु उत्सव के मनाने में कटिबद्ध हो गये हैं। धूमधाम से उत्सव मनाया जा रहा है। अन्य प्रांतों मे उत्सव के मनाने की तैयारियां शुरू हो गई है। अनेक प्रकार की प्रतियोगिताएं आयोजित की जा रही हैं।

आर्य भवन में चार दिवसीय कार्यक्रम का आयोजन हो रहा है। इस सम्बन्ध में आप हमारा पूरा प्रोग्राम आर्योदय तथा अन्य दैनिक पत्रों में पढ लेंगे।

उत्सव मना लेना सहज होता है। पर उत्सव मनाकर उसके महत्व को सर्व जनता के सामने प्रस्तुत कर देना सरल नहीं होता। इस महोत्सव के दौरान अपने आर्य समाजी भाई-बहनों से यही अपेक्षा करेंगे कि वे पिछले ७५ वर्ष के इतिहास को जनता के सामने लावें।

युवा पीढी को अवगत होना चाहिए कि ७५ वर्ष के अन्तर्गत आर्य समाज स्थापना से इस टापू में क्या कार्य किए गए हैं जिससे हिन्दू समाज यहां पर कायम हो सका है। जिन सज्जनों ने आर्य समाज की छत्रछाया में रहकर काम किया है, वे कौन हैं, या कौन थे ? अगर आज की पीढ़ी के लोगो को यह अवगत न कराया जाय तो देश के इतिहास के प्रति न्याय नहीं होगा।

कितनी ऐसी विभूतियां है या थीं जिन्होंने आर्य समाज की आधारशिला को यहां प्रस्थापित किया है और आज जिन्हें कुछ लोग जानते हैं और कुछ लोग भुलाने का ढोंग रचना चाहते हैं।

इस वर्ष जब यहां पर ७५वीं वर्षगांठ मना रहे हैं तो दक्षिण अफ्रीका के हमारे आर्य समाजी भाई-बहन आर्य समाज की स्थापना की हीरक जयन्ती अर्थात ६० वर्ष का उत्सव मनाने की तैयारी कर रहे हैं जिसमें भाग लेने के लिए हमने पहले से सूचना दे रखी है।

आर्य समाज के पिछले ७५ वर्षों के कुल कार्यों के आलोक में शोध की आवश्यकता है। आजकल अनेक दिशाओं में शोध कार्य करने की परिपाटी चल पड़ी है। क्या यह एक सुनहला अवसर नहीं मौके से लाभ उठाया जाय और शोध कार्य कर दिया जाय। सन २०१० में जब यहां पर आर्य सभा की स्थापना की शताब्दी मनाई जायगी तो ७५वीं वर्षगांठ का एक योगदान अवश्य हो जायगा।

सभी इस देश में स्वेच्छा से सब कुछ करने की पूरी स्वतन्त्रता एवं सुविधा है। कौन जाने कि शताब्दी तक यह सुविधा रहेगी या नहीं। इस हेतु जब तक हाथ में सत्ता है, अधिकार है और स्वतन्त्रता है मौके से लाभ उठाना चाहिए। ऐसा बुद्धिमान व्यक्ति ही करते हैं।

आर्य समाज टुरंटो (कनाडा) में वैदिक प्रचार

पिछले दिनों आर्यसमाज टुरंटो (कनाडा) में पं० सत्यपाल जी को वहां बुलाया गया उन्होंने वहां वैदिक धर्म का प्रचार बड़ो उत्साह से किया जिससे विदेशियों पर अच्छा प्रभाव पड़ा।

—अमर चन्द बेरी

विदेश में आर्य समाज की स्थापना

अभी हाल में मिसिसागा ओन्टारियो प्रान्त में विधिवत रूप से से आर्यसमाज की स्थापना की गई जिससे वहां पर वैदिक धर्म का प्रचार कार्य आरम्भ किया जा सके।

—अमर चन्द बेरी

श्री मोती तोरल जी न रहे

दुःख से लिखना पड़ता है कि न्यू ग्रोव निवासी श्री मोती तोरल जी विद्यावाचस्पति, एम.बी.ई. का स्वर्गवास ७८ वर्ष की आयु में दिनांक ३-९-८५ अस्पताल में हो गया।

बुधवार दिनांक ४-९-८५ को जब रेडियो द्वारा यह शोक समाचार सुनाया गया तो यह समाचार दावानल की तरह सम्पूर्ण मोरिशस में फैल गया। उनकी शव-यात्रा में प्रधानमन्त्री श्री अनिरुद्ध जगन्नाथ और आर्य-समाज का प्रधान श्री मोहनलाल मोहित जी के अलावा देश के राजनीतिक नेता और समाज सेवक उपस्थित थे।

स्वर्गीय मोती तोरल आर्य समाज के एक आजीवन सदस्य और कर्मठ सेवक थे। वे वर्षों तक आर्य सभा के अन्तरंग सदस्य रहे। कुछ सालों से वे हृदय रोग से पीड़ित थे। उनके देहान्त के तीन सप्ताह पहले उनकी बेटी का देहान्त जिसकी शादी आर्य समाज के सेवक श्री नन्दलाल रामसरण के भतीजे से हुई थी, हो गया था, वे भी दिल की मरीज थीं। इस दुःखद घटना से उनकी दशा और खराब हो गई।

—अ० नागाडू

सूचना

मोका के रेव ऐदबाद सरकारी पाठशाला कोचिंग मलीतेर में आर्य समाज के सदस्यों की ओर से हिन्दी की साहित्य एवं धार्मिक परीक्षाओं की पढ़ाई प्रवेशिका से लेकर उत्तमा द्वितीय खण्ड तक तथा विद्या विनोद से लेकर विद्यावाचस्पति तक साथ ही अंग्रेजी की S. C., G. C. E. Advance की पढ़ाई हो रही है। इच्छुक विद्यार्थी प्रत्येक रविवार साढे आठ से एक बजे तक सुभाष दुक्खन और ओमदत्त शिवशंकर से उपर्युक्त पाठशाला में आकर मिल सकते हैं।

वेद, महर्षि दयानन्द व आर्य समाज

—भैरव प्रसाद गुप्ता

वेदोऽखिलो धर्ममूलम् । मनुर्भव । कृण्वन्तो विश्वमार्यम् ।

हमारे शास्त्र ईश्वर, जीव व प्रकृति को अनादि मानते हैं आज का विज्ञान भी ऐसा ही स्वीकार करता है । गणित गणना के अनुसार सृष्टि व वेद को उत्पन्न हुए १,९६,०८,५३,०८५ वर्ष हो गये हैं (गणना समय सम्बत् १९४२ में) । सृष्टि के प्रारम्भ में ईश्वर ने मानव संविधान के रूप में वेद (ज्ञान) को अग्नि, वायु, आदित्य, अंगिरा नामक चार ऋषियों के हृदय आकाश में क्रमशः ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद व अथर्ववेद को प्रतिष्ठित किया जिसके विषय में क्रमशः ज्ञानकाण्ड, कर्मकाण्ड, उपासना काण्ड विज्ञान काड हैं जिसमें क्रमशः १०५८१, १९७५, १८७३, ५९७७ कुल२०४१४ मंत्र हैं । जिनके अन्दर गणित विद्या, खगोल विद्या, भूगोल विद्या, भूस्तर विद्या, ज्योतिषविद्या, संगीत विद्या, पदार्थ विद्या, स्वास्थ्य विद्या, अरोग्यविद्या, वनस्पति विद्या इत्यादि का विवेचन है । महर्षि दयानन्द ने अन्य मजहबी ग्रन्थों का भी अध्ययन किया और इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि "वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है, जिसका पढ़ना पढ़ाना, सुनना सुनाना सभी आर्यों का परम धर्म है ।" आरम्भ मे वेद श्रुति के रूप मे थे अर्थात ऋषियो द्वारा वेद को सुनाया जाता था सुनने वाले इसे कण्ठस्थ करते जाते थे यही क्रम युगों युगो तक चलता रहा । अन्त मे कागज व लिपि के अन्वेषण के साथ इसे लिपिबद्ध कर दिया गया जो आज इस दुनिया में सबसे प्राचीनतम ग्रन्थ के रूप मे हमारे सामने है । आजकल विदेशो मे भी इन पुस्तक का अध्ययन अनुवाद व उस पर शोध जारी है । यह कहा जाता है कि जर्मनी इसे भारत से चुरा कर ले गये थे । दयानन्द जी का विश्वास था कि वेदों की ओर लौटने से ही "वसुधैव कुटुम्बकम्" की भावना से पूरे विश्व को एक सूत्र में बांधा जा सकता है ।

देश में अविद्या, अन्धकार, अज्ञानता, पाखण्ड व सामाजिक कुरीतियों की प्रचण्ड आग मे सुलग रहा था कुछ चाटुकार स्वार्थी लोग इस देश को डंसे जा रहे थे । विदेशियों ने इस देश को कब्जे मे लेकर इसे अपना घर मान बैठे थे । यह पवित्र रामकृष्ण की आर्यभूमि घिनौने पाप व अत्याचार से बोझिल होकर अपवित्र हो गई थी : धर्म की आड़ पर खेले जाने वाले खेल से लोगों से धर्म की आस्था दूर हो रही थी धर्म घृणा का रूप बन रहा था । विधर्मी लोगों ने हमारे राम व कृष्ण पर भी लांछन लगाना चालू कर दिया था । विदेशी संस्कृति अपने घिनौने रूप का परिचय दे रही थी । छोटे छोटे बच्चों पर जुल्म ढाया जा रहा था । विधवाएं बिलख रहीं थी । जात-पात व छुआ-छात, भाषा विवाद, क्षेत्र विवाद ईश्वर मान्यता विवाद देश के विघटन का कारण बनी हुई थीं । स्त्री व शूद्रों को शिक्षा से वंचित किया जा रहा था व उस पर जुल्म ढाये जा रहे थे । दुराचार अपनी पराकाष्ठा को पार कर रहा था ऐसे समय में १२ फरवरी सन १९८४ मे गुजरात की धरती में टंकारा नामक गांव में एक दीप्तिमान सूर्य आलोकित हुआ जिसे प्रारम्भ मे मूलशंकर के नाम से जाना जाता है किन्तु अन्त मे सच्चे शिव की खोज करते हुए उसे महर्षि दयानन्द के रूप में जाना जाता है ।

कुछ स्वार्थी लोगों ने (जिन्हें अपने दुराचार करने का मौका नही मिल पा रहा था या जिन्हें अपने अपनाये हुये गलत पेशे से धन पैदा करने का अवसर नहीं मिल रहे थे,) उन्होंने महर्षि दयानन्द जी को सत्रह बार जहर दिया । सोलह बार वे योगविद्या व प्राणायाम के द्वारा वमन करके अपने प्राणों की रक्षा कर सके किन्तु सत्रहवें बार वह विष उनके अंग अंग में समा गया । विष देने वाले को मृत्यु दण्ड से बचाने के लिए पैसे दे के नैपाल भेज दिया । सन १८८५ में दीपावली के दिन प्राणायाम द्वारा अपने शरीर को त्याग दिया । विश्व का ज्ञानसूर्य अपनी कुछ किरणें छोड़कर अस्त हो गया । पं० गुरुदत्त विद्यार्थी जैसा नास्तिक व्यक्ति भी उनकी मृत्यु को देख कर आस्तिक हो गया ।

महर्षि दयानन्द समाज में व्याप्त कुरीतियो को वेद की मान्यताओं के आधार पर समूल नष्ट करना चाहते थे । वैदिक शिक्षा के आधार पर श्रेष्ठ सुशिक्षित धार्मिक मनुष्यों का निर्माण करना चाहते थे । उपयुक्त उद्देशों की पूर्ति हेतु स्वामी जी ने सन १८८५ में सर्वप्रथम आर्य समाज की स्थापना बम्बई में की गई थी । आर्य समाज तब से निरन्तर सुधार के कार्यों में लगा हुआ है ।

आर्य समाज के विशिष्ट कार्य

(१) मनुष्य मे सस्कारों के विकास हेतु जन्म, के पूर्व से मृत्युपर्यन्त सोलह संस्कारों की व्यवस्था । एक ईश्वर उपासना व उसका सही रूप ।

(२) सोलह सस्कार, आश्रम, वर्ण आश्रम, व्यवस्था पंच यज्ञ, यम, नियम, प्राणायाम प्रत्याहार धारणा ध्यान समाधि द्वारा चरित्र निर्माण ।

(३) आर्य समाज मे साप्ताहिक सतसंग, वार्षिक उत्सव, वेद विषयक प्रतियोगितायें व वेदों का पठन पाठन ।

(४) भारतीय सस्कृति को विश्व के सामने प्रमाण के साथ सर्वोपरि सिद्ध, करना व भारत वासियों के स्वाभिमान को जागृत करना, स्वदेश व स्वसंस्कृति के प्रति श्रद्धा पैदा करना, विदेशी शासन को उखाड़ फेंकने की प्रेरणा देना और स्वराज्य की उपयोगिता बताना ।

(५) मनुष्य मे स्वास्थ्य शिक्षा व चरित्र का विकास ।

(६) शिक्षा के विकास हेतु डी०ए०वी० कालेज व गुरुकुलो की स्थापनाएं व आचरणशील विद्वानों द्वारा शिक्षा ।

(७) शिक्षा को लिंग भेद व जाति भेद से अलग करना, सह शिक्षा निषेध करना नारी शिक्षा को उचित स्थान तथा आर्य कन्या विद्यालयों व गुरुकुलों की स्थापना ।

(८) राजनीति व धर्म में अद्भुत समन्वय रखना व वैदिक शासन व्यवस्था की कल्पना ।

(९) जाति प्रथा निवारण ।

(१०) वर्णाश्रम कर्म से न कि जन्म से ।

(११) छुआछूत निवारण अछूतोद्धार शुद्धि आन्दोलन का प्रादुर्भाव ।

(१२) बाल विवाह निषेध । विधवा विवाह का प्रचलन सती प्रथा का अन्त और दहेज प्रथा का उन्मूलन ।

(१३) दीन दुखियों व अनाथो की सेवा, दयानन्द अनाथालयो की स्थापना ।

(१४) सम्पूर्ण मानव जाति का कल्याण व सामाजिक कानून निर्माण, मद्यपान, धूम्रपान बलिप्रथा, अन्ध विश्वास जैसी कुरीतियों का उन्मूलन ।

(१५) शब्दों का सही अर्थ ऋषि ग्रन्थों का शुद्ध भाष्य धर्म का सही रूप जिस वैदिक सस्कृति से भारत कभी विश्व गुरु था उस सस्कृति का पुनुरुत्थान ।

(१६) जनता की सेवा हेतु अनाथालय, औषधालय वाचनालय, विद्यालयों की स्थापना आर्य वीरांगना दल तथा आर्यवीरदल आर्य कुमार सभाका गठन ।

(१७) राष्ट्रीय व अन्तर राष्ट्रीय स्तर पर हिन्दू पर भारतीय संस्कृति में व्याप्त कुरीतियों के कारण होने वाले प्रहारो का मुंह तोड़ जवाब देना ।

आर्य संस्कृति की रक्षा

(पृष्ठ १ का शेष)

के द्वारा स्थापित आर्य समाज के विगत कार्य कलापों को इतिहास के पन्नों में अंकित कर दूं । यदि अपने जीवन में एक सौ वर्षों का इतिहास लिखकर पूरा कर सका तो यही ऋषि के प्रति सच्ची श्रद्धाञ्जलि होगी । डा० सत्यकाम वर्मा ने कहा कि गुरुकुल की शिक्षा प्रणाली जहां बालक के बनने और बनाने की प्रक्रिया प्रारम्भ होती है तो मैं गुरुकुल में विगत के इतिहास को उज्ज्वल रूप देने का प्रयास करूगा । यदि मैं इसमें सफल हुआ तो यही ऋषि के प्रति श्रद्धाञ्जलि होगी । तथा अन्य वक्ताओं के बाद अध्यक्ष पद से श्री लाला रामगोपाल शालवाले ने देश पर आने वाले संकटों की ओर जनता का ध्यान आकर्षित किया । साथ ही सार्वदेशिक सभा द्वारा किये हुए कार्यों से भी अवगत कराया । अन्त में धन्यवाद के साथ शान्ति पाठ के साथ सभा विसर्जित हुई ।

आवश्यक निवेदन

महोदय,

नमस्ते ! आर्य युवक परिषद्, दिल्ली (रजि०) के संस्थापक आर्य जगत् के सुप्रसिद्ध जनसेवी स्व० श्री पं० देवव्रत जी धर्मेन्दु (प्रधान, परोपकारिणी यज्ञ समिति) की साठ वर्षीय सामाजिक जीवन के संदर्भ में उनके व्यक्तित्व की एक हल्की-सी झलक से जन-सामान्य प्रेरित करने हेतु "कवि की कविता" नामक पुस्तक संग्रह को परोपकारिणी यज्ञ समिति, दिल्ली द्वारा प्रकाशित किया जाना था। भारतवर्ष ने अनेकों कविगणों ने अपनी लोह लेखनी से कविताओं में अपने विचार श्री धर्मेन्दु जी के विषय में भेजें।

सम्बन्धी महत्वपूर्ण संस्मरण व कविताएं प्रकाशनार्थ अपनी श्रद्धांजलि के रूप में समिति के महामन्त्री श्री कमल किशोर आर्य १० ए/१५, शक्तिनगर, दिल्ली-७ के पते पर शीघ्र अति शीघ्र भेजकर कर्तव्य का पालन करें।

आर्य महिला सम्मेलन सम्पन्न

आर्यसमाज नामनेर आगरा छावनी का महिला सम्मेलन श्रीमती चन्द्र प्रभा मेहता की अध्यक्षता में २१ अक्तूबर को सम्पन्न हुआ जिस में बड़ी संख्या में महिलाओं ने भाग लिया। श्रीमती डा० आर० के० वर्मा ने समाज में बिगड़ती हुई दहेज प्रथा पर विचार प्रकट करते हुए कहा कि महिलाओं को इसका विरोध करना चाहिए।

श्रीमती डा० प्रतिभा अस्थाना ने महर्षि दयानन्द को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुये नारी जाति को अपने कर्त्तव्यों के प्रति जागरुक किया श्रीमती शान्ति नागर ने मधुर एवं भावपूर्ण समाज सुधार पर कविता पाठ किया सम्मेलन में अनेक प्रस्ताव पास किये गये सम्मेलन काफी सफल रहा।

—चन्द्र प्रभा मेहता, प्रधान

अन्तर्जातीय विवाह

आर्य समाज बहेड़ी (बरेली) के तत्वाव... में प्रथम बार दिनांक २०-१०-८१ को अन्तर्जातीय विवा... आयोजन अत्यन्त समारोह पूर्वक किया गया।

इस आयोजन में श्री रामपाल निवासी ग्राम मुड़िया (बरेली) तथा श्री कन्हैया लाल निवासी कुंइयाखेड़ा (बरेली) का शुभ-विवाह क्रमशः आयु० वसन्ती (कलकत्ता) एव आयु० मायादेवी, बुधोली (बरेली) को आर्य समाज के पुरोहित श्री इन्द्र वर्मा के पौरोहित्य में सम्पन्न कराया गया।

अन्तर्जातीय विवाहों के इस प्रकार के अभूतपूर्व आयोजन से स्थानीय जनता अत्यधिक प्रभावित हुई है एवं इस कार्यक्रम की स्थानीय जनता ने भूरि-२ प्रशंसा की है।

यह कार्यक्रम आर्यसमाज के मन्त्री श्री रामस्वरूप स्नातक के अथक परिश्रम के पश्चात सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर वर एवं वधुओं को अपना आशीर्वाद प्रदान करते हुए मन्त्री श्री स्नातक ने कहा कि अन्य युवक-युवतियां जो इस प्रकार से अन्तर्जातीय विवाह कराने के लिए इच्छुक हो तत्काल सम्पर्क स्थापित करें ताकि उनके विवाह सम्पन्न कराए जा सकें।

—प्रचार विभाग

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सृष्टिसम्वत् १९७२९४९०८६]
वर्ष २० अङ्क ५०]

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र
मार्गशीष कृ० ४ स० २०४२ रविवार १ दिसम्बर १९८५

दयानन्दाब्द १६१ दूरभाष २७४७७१
वार्षिक मूल्य २०) एक प्रति ५० पैसे

महर्षि ने कहा था—

परमेश्वर सच्चिदानन्द स्वरूप

जो सदा वर्तमान अर्थात् भूत, भविष्यत्, वर्त्तमान कालों में जिसका बाध न हो उस परमेश्वर को सत् कहते हैं। जो चेतन स्वरूप सब जीवों को चिताने और सत्याऽसत्य का जानने हारा है इसलिये उस परमात्मा का नाम चित् है। जो आनन्दस्वरूप जिसमे सब मुक्त जीव आनन्द को प्राप्त होते और जो सब धर्मात्मा जीवो को आनन्द युक्त करता है इससे ईश्वर का नाम आनन्द है। इन तीनों शब्दों के विशेषण होने से परमेश्वर को सच्चिदानन्दस्वरूप कहते हैं।

मानवमात्र की सभी समस्याओं का समाधान

महर्षि दयानन्द ने किया था

सर्वप्रथम आजादी का शंखनाद, धर्म का वास्तविक स्वरूप, नारी जाति का उद्धार, सबको योग्यता के आधार पर काम देने का कार्यक्रम महर्षि दयानन्द ने रखा। आंध्र प्रदेश की राज्यपाल सुश्री कुमुद बेन जोशी ने महर्षि दयानन्द निर्वाण उत्सव रामलीला मैदान नई दिल्ली के अवसर पर श्रद्धाञ्जलि देते हुए कहे :—

महर्षि दयानन्द जी के द्वारा नारी जागरण के प्रति किया गया कार्य इतिहास में अमर रहेगा। स्त्री शिक्षा, विधवा उद्धार बालविवाह और अन्य नारी जाति के प्रति किये जा रहे असहनीय कार्यों को ऋषि ने नई दिशा दी।

महर्षि निर्वाण उत्सव के अवसर पर बोलती हुई सुश्री कुमुदबेन जोशी राज्यपाल आन्ध्र प्रदेश।

वेदामृतम्

परिवार में प्रेम और सद्भाव हो!

सहृदयं सांमनस्यम्,
अविद्वेषं कृणोमि वः।
अन्यो अन्यमभि हर्यत,
वत्सं जातमिवाघ्न्या ॥
अथर्व० ३। ३०। १॥

हिन्दी अर्थ — मैं (परमात्मा) सहृदयता, सांमनस्य और द्वेष-हीनता तुम्हारे लिए उत्पन्न करता हूं। नवजात बछड़े को जैसे गाय प्रेम करती है, उसी प्रकार तुम सब परस्पर प्रेमभाव रखो।

महर्षि निर्वाण उत्सव के अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले केन्द्रीय मन्त्री श्री सीताराम केसरी व लोकसभा अध्यक्ष श्री बलराम जाखड़ मंच पर बैठे हुए दिखाई दे रहे हैं।

धर्म परिवर्तन के विरुद्ध लोकसभा में प्राइवेट बिल

दिल्ली २२ नवम्बर। (यू०एन० आई०) तेलुगू देशम के सदस्य श्री एस० एम० भट्टम ने आज लोक सभा में एक प्राइवेट बिल पेश किया। जिसका उद्देश्य धर्म परिवर्तन पर पाबन्दी लगाना है। इस बिल का शीर्षक है, धर्म की स्वतन्त्रता का बिल। सरकार से मांग की गई है कि जबर-दस्ती धोखा या लालच देकर धर्म परिवर्तन कराने को काबिले दस्तअन्दाजी पुलिस जुल्म करार दिया है जिसकी सजा एक साल तक कैद और तीन हजार रुपये जुर्माना या दोनों हों।

भारतीय जनता पार्टी के सदस्य श्री ए० के० पटेल ने गोहत्या-बन्दी का एक प्राइवेट बिल भी पेश किया।

(प्रताप २३ नवम्बर १९८५)

अध्यात्म सुधा

उत्तिष्ठत-जागृत-प्राप्य-वरान्निबोधत

अवनति के मूल तत्व

आत्म विश्वास का अभाव

यदि स्वावलम्बन से ही प्रत्येक मनुष्य महिमावान हो सकता है तो कौन ऐसा व्यक्ति है जो अपनी उन्नति नही चाहता, फिर उन्नति क्यो नही कर पाते हैं ?

इसका सीधा सा उत्तर है यह अनुभव सिद्ध है कि नियमित-आहार-विहार से मनुष्य स्वस्थ रह सकता है फिर भी लोग अस्वस्थ हो ही जाते हैं। सम्पूर्ण जीवन के सम्बन्ध मे यह सत्य है कि स्वस्थ तो सभी रहना चाहते हैं पर उसके लिएउचित प्रयत्न नही करते। उसी प्रकार आत्मोत्थान की लालसा सबके हृदय मे बनी रहती है पर आलस्य, अज्ञान अथवा निर्मलस्विता के कारण पुरुषार्थ नही करते। प्रथमत मनुष्य की व्यक्तिगत दुर्बलताए ही उसकी उन्नति मे रुकावट बनती है।

कोई मानव जन्म से ही सर्वगुण सम्पन्न-उत्पन्न नही होता है। पालन-पोषण और शिक्षा-दीक्षा के अभाव मे मनुष्य-प्रौढ होकर भी निर्बल और अज्ञानी बना रहता है। मानव योनि मे जन्म लेने मात्र मे कोई मानव समस्त सुलभ विभूतियो से मम्पन्न नही होता। प्रत्येक मानव का जीवनारम्भ वहां से होता है जहा से सृष्टि के बाद से हुआ था इसका अर्थ है कि जन्म से मनुष्य असमर्थ, अयोग्य और असभ्य ही होता है जिन विशेषनाओं के कारण वह शक्तिमान, सुयोग्य और सत्पुरुष बनता है उनका उपार्जन उसे स्वय करना पडता है। राम कृष्णादि महापुरुषो के चरित्र का अध्ययन करने से ज्ञात होता है कि उन्हे आत्म पूर्णता प्राप्ति के लिए साधना करनी पडी थी जन्म से कुछ प्रतिभाशाली व्यक्ति हुए, पर-त कम भी हुए। सभी को समान रूप से अपने गुणो के विकास के लिए शिक्षा और अभ्यास की आवश्यकता होती है। जो विशेष प्रतिभा सम्पन्न विलक्षण होते हैं उन्हे इनकी अधिक आवश्यकता होनी है,अन्यथा अपनी सहज शक्तियो का दुरुपयोग करके अपनी भयकर हानि कर सकते हैं।

प्रत्येक प्राणी मे उन्नति हेतु सबगुण बीज रूप मे रहते हैं उनके विकास से ही मनुष्य के व्यक्तित्व का पूर्ण विकास होता है और तभी जीवन मे सफलता मिलती है। कोई भी कला सहज साध्य नही होनी। फिसलना सहज है चढना कठिन है अवनति अपने आप होने लगती है। वास्तव मे प्रत्येक व्यक्ति अपनी उन्ननि या अवनति के लिए स्वयमेव उत्तरदायी है।

जिन ढूढा तिन पाइया गहरे पानी पैठ।
मैं बपुरा बूडन डरा-रहा किनारे बैठ॥

उन्नति के साधन

आत्म विश्वास— आत्म पूर्णता के लिए प्रथम आवश्यक है कि मनुष्य म आत्म विश्वास बना रहे। आत्म विश्वास सफलता का मूलतत्व है आत्म-विश्वास-आत्मज्ञान और आत्म सयम यह तीन तत्व जीवन को शक्ति सम्पन्न बना देते है। आत्म विश्वास का तात्पर्य है आत्म क्षुद्रता का निराकरण। मनुष्य जब अज्ञानवश अपने तुच्छ व नगण्य मान बैठता है तभी उसका अध-पतन अवश्यम्भावी हो जाता है।

मनुष्य जब अपने आत्म स्वरूप को भूल जाता है और वाह्य विवशताओ के कारण अपने को छोटा मान लेता है-वही मनुष्य जब स्वस्थ सचेत होकर महत्व की अनुभूति कर लेता है तब उसकी सोई शक्तिमा जागती हैं जब तक भारतीय जनता अपने को अग्रेजो से हीन समझती थी और कठपुतली मानती थी तब तक वह निर्जीव पराधीन और नतमस्तक बनी हुई थी। स्वामी दयानन्द के नव जागरण और म० गाधी के प्रभाव से उसी जनता का स्वत्वाभिमान आत्मविश्वास जब जागृत हो गया तो वह चैतन्य होकर स्वतन्त्र और समर्थ हो गई।

मानस विद्धि-मानवम् ॥ योग वासिष्ठ

मनुष्य तो मनोमय है जैसा सोचता है वैसा ही बन जाता है। अपने को मिट्टी का पुतला मानने से उसके जीवन मे जडता आ जाती है। इसके विपरीत अपने दिव्य रूप का ध्यान करने से स्वभाव और चरित्र में दिव्यता आ जाती है।

मनुष्य का यह कर्त्तव्य है कि वह अपने क्षुद्र रूप को महत्व न देकर अपने महान स्वरूप को समझे। अत कोई कारण नही कि कोई भी व्यक्ति अपने को नीच समझे। उसे अपने उस प्राण मे विश्वास करना चाहिए, जिसके लिए अनुभवी महर्षियो ने कहा है कि —

प्राणस्येद वशे सर्वं त्रिदिवे यत्प्रतिष्ठितम्।
मातेव पुत्रान् रक्षस्व श्रीश्च प्रज्ञा च विधेहि न इति ॥प्रश्नोपनिषद

अर्थात्—यह सब प्राण के वश मे है और स्वर्ग मे जो कुछ है वह भी हे प्राण ! तेरे वश मे है। हे प्राण ! माता के समान पुत्रो का पालन कर, हमे श्री एव प्रज्ञा प्रदान कर। प्राण की उपासना करना ही आत्मविश्वास है। उसी अवस्था मे वह अपनी शक्ति लगाकर कह सकता है कि—

कृते मे दक्षिणे हस्ते जयो मे सव्य आहित ॥ अथर्व०

कि मेरे दाहिने हाथ म कर्म और बाए हाथ मे सफलता है तभी विषम-परिस्थितियो पर विजय प्राप्त कर सकता है। किसी भी दशा म अपनी आत्म-वत्ता का परित्याग न करने मे ही व्यक्तित्व की सार्थकता है। साधारण परिस्थिति की अपेक्षा विपयावस्था मे उसकी उतनो ही आवश्यकता होती है जितनी अन्धकार मे प्रकाश की।

ध्रुव-दृढ-संकल्प

मनुष्य-मनोमय या भावमय है वह जैसी इच्छा करता है वैसा ही बन जाता है। पचतन्त्र मे कहा है—

यादृशी भावना यस्य सिद्धिर्भवति तादृशी ॥

योग वाशिष्ठ ने कहा है—आत्मा जैसी-जैसी भावना करती है वह शीघ्र वैसी ही हो जाती है और उसी प्रकार शक्ति से पूर्ण हो जाती है—

"यथैव भावयत्यात्मा सतत भविष्यति स्वयम्।
तथैवापूर्यते शक्त्या, शीघ्रमेव महानपि ॥ योगवाशिष्ठ

यह सर्वथा सत्य है कि पुरुष श्रद्धामय है जैसी उसकी श्रद्धा होती है उसका व्यक्तित्व वैसा ही हो जाता है।

श्रद्धामयोऽयं पुरुषो यो यच्छ्रद्ध स एव स ॥ गीता

भावनाओ का अन्तर्द्वन्द्व उसे असयत और लक्ष्यहीन बना देता है वह इसका निर्णय नही कर पाता कि क्या करे-क्या न करे, परिणामत वह कुछ भी नही कर पाता है। जीवन का एक सिद्धान्त एक साध्य विषय होना चाहिए और उसके प्रति प्रबल इच्छा अनुराग-नमन, तभी सिद्धि मिलती है।

सकल्प सृष्टि के मूल मे है वह जीवन का तत्व है कर्म का कारण है। नैपोलियन परमप्रिय सिद्धान्त रहा था कि —

दृढ निश्चय-ध्रुव सकल्प ही सच्ची बुद्धिमानी है उसकी सफलता का मुख्य कारण यह था—एक बार दृढ सकल्प करके फिर उसमे तन-मन-धन से जुट जाता था। (शेष पृष्ठ १२ पर)

सभा प्रधान श्री शालवाले को मारने की धमकी

सातवे विश्वकाम विज्ञान सम्मेलन के अवसर पर भारत के सूचना एवं प्रसारण मन्त्री श्री गाडगिल ने सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए देश के स्कूलों व कालेजो मे राष्ट्रव्यापी यौन-शिक्षा अभियान का सुझाव रखा था। श्री शालवाले ने इसका विरोध करते हुए कुछ समाचार पत्रों तथा केन्द्रीय नेताओ को अपनी भावना से अवगत कराया।

यौन शिक्षा पर श्री शालवाले की विचारधारा से नाखुश होकर किसी तथाकथित रजनीश ने श्री शालवाले को १८-११-८५ को एक धमकी भरा पत्र अश्लील भाषा मे भेजा है और इस प्रकार की विचारधारा समाचार पत्रो मे देने पर उन्हे मौत के घाट उतारने और कुछ दिनों मे उन पर हमला करने की चेतावनी दी है।

ओमप्रकाश त्यागी
सभा मन्त्री

सम्पादकीय

गुरुकुलों की स्थापना में शिक्षा का आदर्श

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने शिक्षा का आदर्श सत्यार्थ प्रकाश के द्वितीय व तृतीय समुल्लास में भली प्रकार से सोद्देश्य वर्णन किया है। तत्व जिसकी पूर्ति में जीवन अर्पित कर दिया, उस व्यक्तित्व का नाम था स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती। स्वामी जी समझते थे जीवन को उपयोगी बनाने हेतु, गुरु का गर्भ चाहिये, यानि अन्तेवासी।

गुरुकुलों की स्थापना का उद्देश्य ही था जीवन-निर्माण की प्रक्रिया जहां वेदों का पढ़ना-पढ़ाना परम धर्म माना, लेकिन कब! जब सर्वप्रथम बनने और बनाने की प्रक्रिया समझ ली जायेगी।

स्वामी दर्शनानन्द जी ने इसीलिये शिक्षा का मौलिक सिद्धान्त निश्चय किया। गुरु का कुल? जहां माता की भांति बच्चे के निर्माण की विधि ज्ञात हो। माता को ज्ञान है कि बच्चे के बनाने में मुझे क्या-२ करना है। कहीं मेरी थोड़ी सी असावधानी से बनने की प्रक्रिया में गड़बड़ न हो जाय। उसका उठना-बैठना, चलना-फिरना, खाना-पीना, आचार-व्यवहार में जरा भी भूल हुई, कि बच्चे के बनने में विघ्न शुरु हो गया।

इसी प्रकार आचार्य अपने गर्भ अन्त: में रखकर अपने आचार विचार से बच्चों के जीवन निर्माण का विधि का यथावत पालन करता है।

स्वामी दर्शनानन्द ने इस प्रक्रिया को अपनाने के लिये गुरुकुलों की स्थापना की। मैं इस समय जिस गुरुकुल का चर्चा करने जा रहा हूं जिसकी स्थापना का मूल उद्देश्य ही बनने और बनाने की प्रक्रिया क्या थी।

स्वामी दर्शनानन्द स्वतन्त्र राष्ट्र को सुयोग्य, सच्चरित्र और उन्नतिशील नागरिक देना चाहते थे। गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर इसी आदर्श शिक्षा का स्वरूप है। इसका अर्थ केवल राजनीति, लोकशासन, ग्राम-सुधार, भौतिक-विज्ञान सम्बन्धी शिक्षा नहीं। हमारा अभिप्राय उस शिक्षा से है—जिसकी उपयोगिता को लक्ष्य करके स्वामी जी ने कहा था कि जीवन के मौलिक तत्वों की उपेक्षा करके कोई व्यक्ति राष्ट्र चिन्तन में कितना ही जीवन को लगाये उन्नति नहीं कर सकता। उसको चाहे जीवन-दर्शन कहिये या संयम सदाचार की शिक्षा अथवा सरल-जीवन, उच्च-विचार या कर्त्तव्य-कर्म की शिक्षा। विदेशी शासन में वह अनावश्यक मानी जाती थी, हमें मानना होगा कि राजनीति की अपेक्षा जीवन-नीति, लोक-शासन की अपेक्षा, आत्म-सुधार, उद्योग-व्यवसाय की अपेक्षा सत्कर्म, भौतिक-विज्ञान की अपेक्षा नैतिक-ज्ञान की शिक्षा, हमारे व्यक्तिगत और सामूहिक जीवन के विकास के लिये अति आवश्यक व हितकारी है।

गुरुकुल की स्थापना का मूल उद्देश्य यही था कि – गुरु के अन्तेवासी होकर विद्यार्थी मानव जीवन बिताना जाने।

अत: मुख्य शिक्षा वह है जिसके द्वारा मनुष्य को अपने स्वाभाविक गुण-धर्म का ज्ञान हो और जो उसके चरित्र निर्माण में सहायक सिद्ध हो। स्वामी दर्शनानन्द के जीवन का दर्शन भी यही है कि जिन्हें जीवन के वास्तविक स्वरूप की पहचान ही नहीं, उन्हें जीवन-दर्शन का सही बोध करा सके। गुरु के कुल में सर्वसाधारण की आत्मोन्नति का सच्चा रहस्य बनाकर शिक्षा की सार्थकता सिद्ध कर सके।

एक समय था जब गुरुकुल महाविद्यालय की परीक्षाओं की कोई मान्यता या उपयोगिता ही नहीं थी उस समय में स्वामी दर्शनानन्द विद्यार्थियों में नैतिकता की सम्पुष्ट देकर शिक्षा के द्वारा पूर्ण मानव बनाने हेतु गुरुकुल का आदर्श रखा था और उसमें अधिक सफल हुए। स्वामी दर्शनानन्द महान साहित्यकार और दार्शनिक थे वह अपना आदर्श भावी पीढी में वैसा ही भरना चाहते थे जैसा स्वभाव उन्होंने स्वयं प्राप्त किया था।

काशी प्रवास में काशी तिमिर नाशक प्रेस की स्थापना तथा उसी प्रेस के माध्यम से संस्कृत पढ़ने के इच्छुक छात्रों को भोजनादि के साथ सच्छास्त्रों का भी सही दिग्दर्शन कराने की लालसा की थी।

स्वामी दर्शनानन्द दर्शनों का ज्ञान दूसरों को करायें, उससे पूर्व स्वयं भी दार्शनिक बनें तो स्वामी मनीषानन्द नाम के विद्वान् से शिष्य बन कर सभी दर्शनों का गूढ़ अध्ययन किया? इसी प्रक्रिया को आरम्भ करते ही स्वामी दयानन्द की अमर छाप उन पर पड़ चुकी थी। इस प्रकार गुरुकुल ज्वालापुर में भी अपने दयानन्दी छाप को अपने सान्निध्य में विद्यार्थियों एवं विद्वानों पर भी छोड़ा था—उनकी रूपरेखा का सही रूप यदि देखना है तो गुरुकुल ज्वालापुर महाविद्यालय को देखें, उसे देखकर स्वामी दर्शनानन्द चाहे न दीखें पर उनका भव्य-विशाल बीज रूप में डाला तत्व आज विशाल वृक्ष बनकर अपनी छाया में – हजारों बुद्धिवादी युवकों को शिक्षित कर राष्ट्र को अर्पित किया है।

सामयिक चर्चा—

सातवें विश्व काम विज्ञान सम्मेलन में श्री गाडगिल के वक्तव्य पर सभा प्रधानजी की प्रक्रिया

सूचना एव प्रसारण मन्त्री श्री गाडगिल ने सातवें विश्व काम विज्ञान सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए, देश के स्कूलो और कालेजों मे राष्ट्रव्यापी यौनशिक्षा अभियान का जो सुझाव रखा था, उसका तीव्र विरोध करते हुये, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवालों ने गाडगिल साहब को जो पत्र लिखा था वह अविकल रूप से प्रकाशित किया जा रहा है।

माननीय श्री गाडगिल जी सादर नमस्ते।

स्थानीय समाचार पत्रो में सातवें विश्व काम-विज्ञान सम्मेलन के उद्घाटन के अवसर पर स्वस्थ समाज के निर्माण के लिए यौन शिक्षा पर राष्ट्र व्यापी अभियान शुरू करने के लिए आपकी अपील का समाचार पढा। आपके कथनानुसार जनसख्या वृद्धि की गम्भीर समस्या की उचित यौन शिक्षा से ही नियोजित किया जा सकता है। इससे परिवार नियोजन कार्यक्रमो को प्रभावी बनाने मे काफी सहायता मिलेगी। उचित यौन शिक्षा के बगैर बच्चो का सही मानसिक विकास भी नहीं हो सकता।

आपका यह वक्तव्य पढ़कर मुझे हैरानी हुई और साथ ही कुछ चिन्ता भी। क्या मैं जान सकता हूँ कि सरकार स्कूल और कालेज में किस प्रकार की यौन शिक्षा का प्रबन्ध करने का विचार कर रही है। इसकी रूपरेखा क्या होगी ? इस प्रस्तावित यौन शिक्षा का युवक समाज द्वारा दुरुपयोग भी हो सकता है। क्या सरकार ने इस पहलू पर भी विचार किया है ? आप शायद जानते ही होगे कि आज का पढा लिखा युवा वर्ग काम विज्ञान से अनभिज्ञ नही है। व्यावसायिक सिनेमा, सस्ते और अश्लील सड़क-छाप साहित्य और पाश्चात्य सस्कृति के प्रभाव से वह पहले से ही इस विज्ञान में शिक्षित एव दीक्षित हो सका है। इसके प्रयोगात्मक परीक्षण की सुविधाओं की कमी हमारी सहशिक्षा सस्थाओं ने पूरी कर दी है। इन संस्थाओं में फैले हुए यौन-भ्रष्टाचार से तो शायद आप अपरिचित नहीं होंगे। यह मानकर चलना कि ऐसा कोई भ्रष्टाचार हमारी सहशिक्षण संस्थाओ मे नही है, अथवा बहुत कम मात्रा मे है, स्वय को जान-बूझकर अन्धेरे मे रखने के समान होगा। यौन शिक्षा के इस प्रकार के सम्वैधानिक प्रचार एवं प्रकार से आजकल के युवक और युवतियां उसका सदुपयोग करेंगे अथवा दुरुपयोग ? यह निश्चित रूप से कौन कह सकता है। आशका यही है कि इसका दुरुपयोग ही होगा और समाज मे फैले हुए यौन भ्रष्टाचार को और प्रोत्साहन ही मिलेगा। क्या सरकार यह खतरा मोल लेने के लिए तैयार है ?

आप तो जानते ही होगे कि प्राचीन काल मे वर्णाश्रम प्रणाली के अन्तर्गत युवक २५ वर्ष तक ब्रह्मचर्यव्रत का पालन करते हुए अपना सारा समय विद्याध्ययन और चरित्र निर्माण में ही अपने गुरु की छत्रछाया मे व्यतीत करते थे। गुरुकुल के निवास काल मे उनके गुरुओं ने कभी उन्हें यौन-शिक्षा देने की आवश्यकता नही समझी। ब्रह्मचर्य आश्रम से निकलने के बाद गृहस्थाश्रम में क्या उन्होंने एक स्वस्थ समाज का निर्माण नहीं किया ? वास्तव में स्वस्थ समाज का निर्माण तभी हो सकता है जबकि हमारा युवा वर्ग मानसिक और शारीरिक रूप से स्वस्थ होगा। आवश्यकता इस बात की है कि हमारी शिक्षा संस्थाओं मे यौन शिक्षा की जगह चरित्र निर्माण की शिक्षा की ओर सरकार ध्यान दे। अन्यथा हमारे देश के भावी कर्णधार बलहीन, तेजहीन और बुद्धिहीन बनकर केवल निर्वीय विलासी समाज का ही निर्माण करेंगे।

इस सदर्भ मे एक प्रश्न और है—क्या यह प्रस्तावित यौन शिक्षा अल्पसंख्यक समुदाय के स्कूलो मे भी दी जायगी ? मुझे सन्देह है कि वे इस नयी शिक्षा योजना को पसन्द करेंगे। उनकी तरफ से इसका विरोध उसी प्रकार होगा जैसा कि अब तक सरकार के निरोध-अभियान का विरोध कर रहे हैं। उस दशा मे सरकार की क्या प्रतिक्रिया होगी ? क्या सरकार एक नया वितंडावाद खड़ा करना चाहती है ?

एक खतरा और है। यह यौन-शिक्षा हमारे समाज में एक नए रजनीशवाद को जन्म दे सकती है। जिसका दिया नारा है—संभोग से समाधि-तथाकथित रजनीश को इस भोगवाद ने कहां से कहां पहुंचा दिया। यह आज सब लोग जानते हैं। स्वच्छन्द यौनाचार के संभावित खतरो के निराकरण की शिक्षा लेकर आज के युवाओं में कितने रजनीश पैदा होंगे और कितने इन्द्रियलित सद्गृहस्थ यह कौन कह सकता है।

अतः आपसे और आपके द्वारा भारत सरकार से अनुरोध है कि इस मसले पर गम्भीरता पूर्वक विचार करने के बाद ही कोई अन्तिम निर्णय लिया जाय। कही ऐसा न हो कि जिसे हम औषधि मानकर अपने युवा वर्ग को उनके स्वास्थ्य की कामना से ऐसा चाहते हैं, वही उनके लिए विष सिद्ध हो जाय।

शुभकामनाओ सहित,

भवदीय :
रामगोपाल शालवाले
प्रधान
भूतपूर्व-संसद सदस्य

लोक सभा में सुप्रीमकोर्ट के फैसले पर नुक्ताचीनी

नई दिल्ली, २२ नवम्बर (जनसत्ता)। मुस्लिम पर्सनल ला मे संशोधन या 'संशोधन नही के मसले पर केन्द्र सरकार के दो मन्त्री आज लोकसभा में आमने-सामने हो गये।

ऊर्जा राज्यमन्त्री आरिफ मुहम्मद खा उस उदारवादी मुस्लिम जमात में हैं जो शरीयत पर आधारित (मुस्लिम) पर्सनल ला की कुछ धाराओं की बदलते समय के अनुरूप व्याख्या चाहते हैं। दूसरी और पर्यावरण राज्यमन्त्री जियाउर्रहमान अन्सारी का कहना है कि तलाकशुदा पत्नी को आजीवन गुजारा भत्ता कुरान शरीफ के खिलाफ है और इससे औरत का दर्जा घटता है।

शरीयत के अनुसार मुस्लिम शौहर अपनी किसी बेगम को तलाक के बाद केवल 'इद्दत' की मियाद तक ही गुजारा भत्ता देने को बाध्य है। इद्दत की मियाद कुरान-ए-पाक ने तीन मासिक धर्म (या गर्भवती रहने पर बच्चा जनने तक) तय की है।

शाह बानो बनाम अहमद खा के मुकदमे में सुप्रीमकोर्ट ने कुछ महीने पहले कहा कि इद्दत की मियाद कुरान शरीफ ने तीन महीना ही नहीं तय की है। तीन महीने की मियाद सम्बन्धित सूरा का ठीक मतलब नही समझने के कारण मान ली गई।

लोक सभा मे आज मुस्लिम लीग सदस्य जीएम बनातवाला के गैर सरकारी विधेयक पर बहस शुरू हुई। विधेयक में जाब्ता फौजदी कानून की धारा १२५ में सशोधन की बात कही गई है। संशोधन के जरिये इद्दत की मियाद तीन महीनो ही (जैसा शरीयत में कहा गया है) तय करने की व्यवस्था है।

विधेयक पर बहस मे भाग लेते वाले अनेक इकाई और विपक्षी सदस्यों ने मुस्लिम पर्सनल ला में दखलंदाजी का विरोध किया लेकिन साथ ही मुसलमानों से कुरान शरीफ और शरीयत पर आधुनिक नजरिया अपनाने की भी मांग की। वन एव पर्यावरण राज्यमन्त्री जियाउर्रहमान अन्सारी ने जोर देकर कहा कि कुरान-ए-पाक में तलाकशुदा बीबी को आजीवन गुजारा खर्च देने का निर्देश नही है। उन्होंने कहा कि कुरान अथवा शरीयत में किसी और शौहर के लिए बीबी को असहाय छोड़ देने की बात तो नहीं कही गई है लेकिन (तलाकशुदा बीबी को) आजीवन गुजारा खर्च मिलने से समाज के 'नैतिक मूल्यों' को खतरा पैदा हो सकता है।

उन्होंने यहा तक कहा कि आजीवन गुजारा भत्ता 'नैसर्गिक न्याय के सिद्धान्त' के खिलाफ है। याद रहे कि भारतीय कानून सहिता में 'नैसर्गिक न्याय' के सिद्धांत को आधार माना गया है।

विधेयक पर बोलने वाले, तमाम मुस्लिम सासदों का कहना था कि शरीयत की व्याख्या करके सुप्रीमकोर्ट ने अपनी हद से बाहर का काम किया

(शेष पृष्ठ १० पर)

पाखण्डी की वापसी

कहावत है कि शर्म आने जाने की बात है न केवल यह अगर कोई किसी बात पर लज्जित ही न हो तो उसे क्या कह सकते हैं। पाखण्डी भगवान रजनीश कहता है कि अमेरिका सरकार इसके विरुद्ध कुछ सिद्ध न कर सकी। इससे कोई पूछे कि उसे सिद्ध करने की आवश्यकता ही क्या थी जब इसने न्यायालय में जाकर इस बात को स्वीकार कर लिया कि इसके विरुद्ध जो आरोप हैं वे ठीक हैं। इसका कहना है कि इसने अपने अनुयायियों के लिए झूठ बोला। आज तक हमने सुना न था कि अपनी चमड़ी बचाने के लिए कोई धर्मात्मा अपने अनुयायियों की आड ले। आज तक जितने महापुरुष हुए हैं उन्होंने सच के लिए फांसी पर चढना स्वीकार किया है किन्तु झूठ नहीं बोला। रजनीश के विरुद्ध न्यायालय मे आरोप लगाये गये। इसकी ईज्जत, इसकी प्रसिद्धि, इसके दृष्टिकोण तात्पर्य यह कि इन सबकी मांग थी कि इन सब आरोपो को गलत सिद्ध करना किन्तु इसने अपनी जान बचाने के लिए न्यायालय मे झूठ बोला। वे पड़ौसी देश से भाग आये जिसको इसने स्वर्ग समझ कर चार वर्ष पहले अपना घर बनाया था। जिस ढंग से यह वहां से भागकर आया है इससे स्पष्ट प्रतीत होता है कि यह अपनी चमड़ी बचाने को तडप रहा था। इन चार सालों मे इसने वहां जो कुछ उत्पन्न किया और इकट्ठा किया इस सबको वहा ही छोडकर भागने पर विवश हुआ। स्पष्ट है कि अमेरिकन अधिकारियो ने इस शर्त पर इसे माफ कर दिया कि यह ओरेगान से अपना बोरिया बिस्तर गोल करके नौ दो ग्यारह हो जाये और इसने यह मान लिया। जब आज से चार वर्ष पहले पूना की जनता अपने हाथों मे जूतो से पेश आई तो इसने वहा के लोगो और इनके देश को पानी पी पीकर कोसा किन्तु आज यह पाखण्डी भारत को अपना देश कहने की गुस्ताखी करता है। अमेरिका यह गया यह कहकर कि वह तो अमीरो का गुरु है और अपने मत का अमेरिका से उत्तम कहा प्रचार कर सकता है। चार वर्ष यह अमेरिकनों के टुकड़ों पर पलता रहा और आज इसे अमेरिकनो से बुरा कोई दिखाई नहीं दे रहा केवल इसलिए कि इसे वहां कैद होने से बचने के लिए सिर पर पांव रख कर भारत आना पड़ा। आज यह तरह-तरह की बातें कर रहा है। पूना से इसे इसलिये भागना पड़ा क्योंकि इसने अपने आश्रम में वह गन्ध फैला दिया था कि आस-पास के लोग वहां के रहने वाले लोगों की हरकतों को देखकर शर्म से दबे जा रहे थे। प्रत्येक देश, प्रत्येक समाज, प्रत्येक वर्ग की अपनी-अपनी परम्पराएं होती हैं जब निर्लज्जता से कोई इन्हें पद दलित करना प्रारम्भ कर दे तो इससे यह ही व्यवहार होता है जो रजनीश से पहले पूना में और फिर ओरेगान मे हुआ। अब इसने मनाली में अपना आश्रम बनाने की सोची है लेकिन इसे शायद यह पता नहीं कि हिमाचल के लोग तो इसकी अन्धेरगर्दी को दो दिन भी सहन न करेंगे। शायद इनकी भावनाओं को ध्यान मे रख कर इसने घोषणा कर दी है कि अब वह अपना पाखण्ड समाप्त कर रहा है। अब वह अपने आश्रम में सन्यासियों और सन्यासिनियों को न रखेगा। यह केवल अपने दस बारह चेले चेलियों के साथ रहेगा। ऐसा प्रतीत होता है कि यह अपने धर्म का प्रचार करके थक गया है।

अमेरिका से वापिस आने पर इसने अमेरिका को जी भर कर गालियां दी हैं। आश्चर्य तो इस बात का है कि अमेरिका में इसे ये सब बुराइयां इन चार वर्षों में दिखाई न दी थीं। जब इस पर अभियोग चला तो इसे पता चला कि अमेरिकन समाज कितना बुरा है और अब इसे कुछ दिन जेल में रहना पड़ा तो इसे चाद तारे दिखाई देने लगे यह शायद इसी विचार में था कि जेल में भी इसे अपनी रोल्स रायस में सवारी करने का हक होगा और चेलियां इसकी मालिश करेंगी और नहलायेंगी अगर जेल के सुपरिन्टेन्डेन्ट को कानून की मर्यादा होती तो वह इसकी ये सारी सुविधायें भी दे देता किन्तु स्पष्ट है कि इसका धन और इसकी चेलिया भी इसे जेल में वह सुविधायें न दिला सकी जो इसे आश्रम में मिल रही थीं। अमेरिका को इसने नर्क कहा है। यह भी आरोप लगाया है कि वहां प्रजातन्त्र नहीं और कई प्रकार की ऊटपटांग बातें इसने कही हैं। किन्तु ये सब इस नये समय दिखाई दी जब इसे अमेरिका से निकलना पड़ा। ऐसे भी एक अनोखी बात है कि अमेरिका में शरण लेने से पहले इसे अमेरिकन अधिकारियों या अमेरिकन समाज का ज्ञान न था। जो वह मुंह उठाकर उधर चलता बना। सचाई यह है कि इसे अमेरिका से निकालने का सबसे बड़ा हाथ अमेरिकन ईसाई पादरियों का है। वे यह अनुभव कर रहे थे कि यह व्यक्ति हिन्दू होते हुए अधिक से अधिक अमेरिकनों को अपनी ओर अकर्षित कर रहा है। अमेरिकनों को जीवन का जो दर्शन यह पेश कर रहा था इसका बहुत कुछ भारतीय ही था लेकिन यह सब कुछ इन्हें हिन्दुवाना वातावरण मे करना पड़ रहा था। इससे अमेरिकन ईसाई पादरी परेशान हो गये। वे यह समझने लग गये कि रजनीश के आन्दोलन का प्रभाव नवयुवकों पर होगा और वे हिन्दू धर्म की ओर अधिक झुकना प्रारम्भ हो जायेंगे। सचाई यह है कि अमेरिका और योरोप में अधिक से अधिक लोग ईसाइयत से विद्रोही हो रहे हैं। इस घटना में अमेरिकी पादरियो ने सरकार पर दबाव डालकर रजनीश को वहां से भागने पर विवश कर दिया। आज अमेरिका मे इसे जो इतनी बुराइया दिखाई देने लगी हैं वे केवल इसलिए हैं कि इसे वहा से जान बचाकर भागना पड़ा है वरना इसका दर्शन वास्तव मे अमेरिका में सफल हो सकता है और कहीं नहीं हो सकता।

—नरेन्द्र

महर्षि स्वामी दयानन्द की ईश्वर सिद्धि

स्वामी रामेश्वरानन्द जी महाराज गुरुकुल घरौंड, करनाल

सज्जनो ! वैसे तो स्वामी दयानन्द जी ने संसार के सभी विचारकों को अनेक विचार दिये हैं। जो कि लुप्त प्राय हो गये थे। सर्वप्रथम महाराज ने ईश्वर सिद्धि की। कोई जड़, वस्तु निर्माता के बिना निर्मित नहीं होती। जैनों को छोड़कर आस्तिक-नास्तिक जगत की उत्पत्ति मानते हैं। परन्तु बहुधा वैज्ञानिक और नास्तिक जगत की उत्पत्ति तो मानते हैं। किन्तु उसका उत्पादक नहीं मानते, महाराज ने 'द्यावा भूमि जनयन देव एक:' इस मन्त्र से ईश्वर को सृष्टि करता सिद्ध किया है। और संसार के वैज्ञानिकों को आह्वान चेलेन्ज किया है कि यदि ईश्वर को न मानेंगे तब आपको जगत में शैशव यौवन और जाति स्त्री पुरुष और नपुंसक भेद नहीं मिलेगा। रचना तो जीव भी करते हैं। परन्तु उनकी रचना में शिशुता यौवन स्त्री पुरुष और नपुंसक भेद नहीं आता।

क्योंकि मनुष्य चेतन शरीर तो क्या मनुष्य के एक अंग की उंगुली भी नहीं बना सका। मनुष्य जो रचना करता है। वह प्रथम अपनी रचना के एक-एक अंग को आंख से प्रकाश में देखकर हाथों से बनाता है और वह फिर उनको जोड़ता है। किन्तु ईश्वर ने भूमि भानू चन्द्र नक्षत्र आदि जड़ जगत को और प्राणियों के शरीरों को बिना चरम चक्षु बिना प्रकाश बिना औजार और बिना हाथों के एक साथ बनाया है। मनुष्य की रचना में अनेक अंगों वाली वस्तु कोई एक साथ नहीं बनती। ईश्वर अपनी रचना के सदा साथ रहता है। मनुष्य अपनी रचना के सदा साथ नहीं रहता है। मनुष्य अपनी रचना में कहीं पर भी चेतना नहीं ला सका। किन्तु ईश्वर ने जहां जड़-जगत बनाया है। वहां मनुष्य, पशु, पक्षी आदि चेतन सृष्टि बनायी। जो अपने समान जाति को जन्म देकर मरते हैं। और भोजन लेकर शरीर को बढ़ाते हैं। किन्तु मानव की रचना में डीजल ईंजन आदि भोजन लेते हैं। किन्तु अपने शरीर को नहीं बढ़ाते। और न अपने समान जाति को जन्म देते हैं। ईश्वर ने अरबों मनुष्य आदि प्राणियों को एक आकृति के बनाया है। किन्तु किसी प्राणी की अपनी जाति के दूसरे प्राणी के साथ आकृति भाषा और व्यवहार नहीं मिलता। किन्तु मनुष्य की रचना एक आकृति की अनेक वस्तुओं पर नम्बर डाले जाते हैं।

बिना नम्बर के मनुष्य की अनेक रचना पहचानी नहीं जाती। इसलिए ईश्वर को चित्रम देवानाम मन्त्र में विचित्र विलक्षण भी कहा है। और ससार के लोग सूर्य चन्द्र लोकों को चलने वाले तो मानते हैं। परन्तु इनके संचालक नहीं मानते किन्तु स्वामी दयानन्द महाराज ने येन द्यौरुग्रा पृथ्वी च दृढ़ा इस मन्त्र से ईश्वर को सूर्य चन्द्र पृथ्वी आदि का संचालक सिद्ध किया है। क्योंकि कोई जड़,वस्तु चालक के बिना चलती नहीं यदि सूर्यादि लोकों का कोई संचालक न हो तो कैसे चलें और मनुष्य की जड़ वस्तु थोड़े दिन में ही अपनी मरम्मत मांगती है। किन्तु ईश्वर के सूर्य चन्द्रादि अरबों वर्षों से चल रहे हैं। इनकी कभी टूट-फूट नहीं होती और पृथ्वी अथाह समुद्रों को लेकर दौड़ती है। इसका पानी कभी छलकता भी नहीं यदि ईश्वर नहीं है तो ये जल में डूब क्यों नहीं जाती जबकि पृथ्वी से अनेक गुणा जल अधिक है। और इसकी रग-रग में पानी है। तो यह पिघल क्यों नहीं जाती इसलिए इस मन्त्र में महाराज ने सूर्य चन्द्रादि को दृढ़ बनाया है। यह सिद्ध किया है। जबकि रेल मोटर वायुयान आदि के सचालक भी होते हैं। परन्तु वे निश्चित समय पर से आगे पीछे आते-जाते हैं। और रेल मोटर वायुयान भी टकरा जाते हैं। ये सूर्य चन्द्र भूमि और नक्षत्र टकरा क्यो नहीं जाते जबकि इनका कोई संचालक न हो तो। किन्तु दिन-रात निश्चित समय पर ही क्यों आते हैं।

इसलिए महाराज ने ये प्राणतो निमिषतो महित्वैकऽइद्राजा इस मन्त्र से ईश्वर को जगत का एक ही राजा कहा है। यदि दो भी ईश्वर माने जायें तब भी सृष्टि चक्र नियम पूर्वक नहीं चलेगा। क्योंकि दो में कभी न कभी झगड़ा हो ही जाता है। यदि ईश्वर दो माने जाये तो उनमें झगड़ा भी होगा और जब झगड़ा होगा तो एक मत न होने से सूर्यादि निश्चित समय पर उदय अस्त न होंगे क्योंकि एक कहेगा सूर्य उदय हो दूसरा कहेगा न हो। तब सूर्य किसकी मानेगा इसलिए ईश्वर एक है। और सबको नियम में रखता है।

इस मन्त्र में ईश्वर को इसलिए एक राजा कहा है--कि सब चेतन प्राणियों के साथ एक-सा बर्ताव है। पहले सभी शिशु होते हैं। फिर युवा, वृद्ध होकर मर जाते हैं और अपने कर्मानुसार सब जन्म पाते हैं। राजा से रंक तक निर्बल से सबल तक सबके साथ एक-सा बर्ताव है। इसलिए ये: प्राणतो मन्त्र में महित्वा अपनी महिमा से राजा कहा है। चुने हुए और सामन्तशाही राजाओं के राज्य में अन्धेर होता है। साकार शव एवं वस्तु निराधार नहीं रह सकते। इसलिए सूर्य चन्द्र पृथ्वी आदि का ईश्वर को सदाधार पृथ्वीम द्यामुतेमा मन्त्र से ईश्वर का आधार सिद्ध किया है। जो यह कहा जाता है कि भूमि भानू चन्द्रमा एक-दूसरे को आकृष्ट कर रहे हैं। और चुम्बक पत्थर का उदाहरण दिया जाता है। यह उदाहरण विषय है, क्योंकि चुम्बक पत्थर एक पृथ्वी में और दूसरा ऊपर छत में रखने पर जो तीसरी लोहे की वस्तु ठहर जाती है। यह दृष्टान्त सूर्य और चन्द्र और पृथ्वी पर घटता क्योंकि चुम्बक पत्थर ऊपर छत में और एक नीचे भूमि पर रखा जाता है, तब एक लोहे की वस्तु को आकृष्ट करता है। किन्तु यहां तीनों सूर्य चन्द्र और पृथ्वी निराधार है।

उन्नीस बीस के फर्क में रस्सा खींचने वाले एक-दूसरे को खींच ले जाते हैं। किन्तु भूमि और चन्द्रमा दोनों से सूर्य महान है। वह इन दोनों चन्द्रमा और भूमि को अपने ऊपर गिरा क्यों नहीं लेता है। भूमि और चन्द्रमा सूर्य से टूटे हैं। यह कल्पना भी वेद विरुद्ध है। और प्रत्यक्ष विरुद्ध है। क्योंकि वेद कहता है। सूर्या चन्द्रमसौ धाता यथा पूर्वमकल्पयत् अर्थात् उस सर्वाधार परमेश्वर ने सूर्यादि जैसे पहले कल्पों में बनाकर धारण किये थे वैसे अब भी धारण कर रहा है। और सूर्य चन्द्र पृथ्वी एक-दूसरे के आकर्षण से ठहरे हैं। तब ये अरबों- खरबों नक्षत्र किसके सहारे ठहरे हैं। और ये किससे टूटे हैं। तथा किसके आधार पर ठहरे हैं। जो बड़ी वस्तु में से छोटी वस्तु टूटेगी तो वह उस बड़ी वस्तु पर गिरेगी यदि चन्द्रमा और पृथ्वी सूर्य से टूटे तो ये सूर्य पर क्यों नहीं गिरे। और जब भूमि, सूर्य चन्द्रमा को गोल बताया जाता है।

यह कल्पना भी उचित नहीं रहेगी क्योंकि गोल सूर्य में से भूमि और चन्द्रमा टूटे तो तीनों गोल नहीं रहेंगे। जैसे खरबूजे, तरबूजे को काटा जाय तो वह और जिसमें से वह कटेगी वह गोल नहीं रहेगी। ये सूर्य के साथ क्यों रह रहे हैं। सूर्य में से भूमि और चन्द्रमा टूटे तो इसके और खण्ड क्यों न हुए और सूर्य के टुकड़े होने का क्या कारण था और ईश्वर वह है। जो सब जीवों को कर्मफल देता है। वह ईश्वर है। क्योंकि कर्त्ता को कर्मफल देने वाला चेतन कर्मफल दाता होता है। कर्त्ता को कर्मफल स्वयं नहीं मिलता है।

स्वामी दयानन्द की मृत्यु का कारण--विष

—डा० भवानी लाल भारतीय

धर्मयुग के दीपावली विशेषांक में प्रकाशित सावित्री परमार का लेख 'क्या महर्षि दयानन्द की मृत्यु में नन्हीं जान का हाथ था' मुख्य-तया नवलगढ़ के कुंवर संग्रामसिंह तथा जोधपुर स्थित रसिक बिहारी जी के मन्दिर के पुजारी के वक्तव्यों पर ही आधारित है। अधिक अच्छा होता यदि लेखिका अपने प्रतिपाद्य को अधिक प्रामाणिक बनाने के लिये स्वामी दयानन्द के कुछ जीवन-चरितों के प्रासंगिक स्थलों को भी देख लेती। वस्तुतः महर्षि दयानन्द जिस समय जोधपुर आये उस समय महाराजा जसवन्तसिंह का सम्पर्क जिस रखैल से था वह नंनी भगतन एक हिन्दू वेश्या थी जो वैष्णव मत की अनुयायी थी। मुसलमान वेश्या नन्ही जान इससे भिन्न थी।

इस सम्बन्ध में राजस्थान के प्रख्यात इतिहास के लेखक स्व० जगदीश सिंह गहलोत ने समुचित जानकारी प्राप्त कराई है। लेखिका को भी इस बात से बड़ी हैरानी हुई कि नन्ही जान रही मुसलमान, उसके द्वारा इन मन्दिरों का निर्माण कैसे? वस्तुतः हिन्दू वेश्या ने ही स्वामी दयानन्द को विष दिलाने के षड़यन्त्र में प्रमुख भूमिका निभाई थी।

इस तथ्य की साक्षी देते हैं—राजस्थान के इतिहासकार महा-महोपध्याय पं० गौरीशंकर, हीराचन्द ओझा, पं० नंनूराम ब्रह्मभट्ट, मुन्शी देवी प्रसाद मुंसिफ आदि वे प्रामाणिक लेखक जिसकी इस विषय से सम्बन्धित रचनायें दयानन्द स्मृति ग्रन्थ, चांद के मारवाड़ी अंक तथा सरस्वती पत्रिका के १९२९ के नवम्बर मास के अंक में प्रकाशित हुई थीं।

सावित्री जी के लेख में तथ्य विषयक कुछ अन्य भूलें भी हैं। यथा वे लिखती हैं कि तखतसिंह के दो राजकुमार थे। सत्य यह है कि महाराजा जसवन्तसिंह तथा प्रतापसिंह के अतिरिक्त महाराज किशोरसिंह भी तखतसिंह के ही और पुत्र थे जिनके महल जोधपुर से मण्डोर जाने वाली सड़क पर आज भी मौजूद हैं। यह कहना भी उचित नहीं है कि स्वामी दयानन्द ने राजस्थान की रियासतों में पैदल घूम-घूम कर धर्मप्रचार किया था। वस्तुतः स्वामी दयानन्द की राजस्थान में चार बार यात्राएं हुई थीं। इनमें से प्रथम १८६५ ई० की यात्रा में वे अवश्य ही पैदल भ्रमण करते रहे, किन्तु उनके अवशिष्ट भ्रमण रेल तथा अन्य साधनों से ही हुए थे।

स्वामी जी को जोधपुर के जिस बाग में ठहराया गया था वह पं० शिवदान का बाग नहीं, अपितु मियां फैजुल्ला खां का बाग था। इसके बीच की कोठी में ही स्वामी जी ने लगभग चार मास तक निवास किया था। यहां यह ज्ञातव्य है कि जोधपुर राज्य की हकीकत बही में स्वामी जी के जोधपुर आगमन का जो उल्लेख हुआ है उसमें स्पष्ट लिखा है कि जब स्वामी दयानन्द जोधपुर आये तो मियां फैजुल्ला खां के बाग में उनका डेरा किया गया। ४ जून १८८३ के मारवाड़ गजट के अंक में भी इस तथ्य का उल्लेख हुआ है। यह भी स्मरणीय है कि इन्हीं मियां फैजुल्ला खां के वंशज मियां बरकतुल्ला खां के राजस्थान के मुख्य मन्त्रित्व काल में यह कोठी और उसका परिसर स्वामी दयानन्द के निवास की स्मृति के रूप में एक स्मारक बनाने के लिये आर्य समाज को प्रदान किया गया था।

स्वामी जी के जोधपुर के राजमहल में जाने तथा वहां वेश्या नन्हीं की पालकी उठाने वाले महाराजा की भर्त्सना करने वाला प्रसंग यद्यपि पर्याप्त चर्चित है किन्तु स्वामी दयानन्द के प्रामाणिक बंगला जीवन चरित्र लेखक देवेन्द्रनाथ मुखोपाध्याय इससे सहमत नहीं हैं। राजाओं के रनिवासों या विलासगृहों की व्यवस्था इतनी शिथिल नहीं होती कि यकायक बिना सूचना दिये कोई भी व्यक्ति वहां अनायास प्रविष्ट हो जाये। यदि मान भी लिया जाय कि स्वामी जी का राजमहल में आकस्मिक आगमन हुआ था, तब भी उन्हें राजा के आने तक प्रतीक्षा गृह में बैठाया जा सकता था। यह कथन भी पुष्टि की अपेक्षा रखता है कि स्वामी जी के महाराजा के नाम लिखे गये पत्रों को नन्ही ने उन तक पहुंचने नहीं दिया। पं० भगवद्दत्त द्वारा सम्पादित ऋषि दयानन्द के पत्र और विज्ञापन में संकलित पत्र संख्या ५०२ दृष्टव्य है जिसमें स्वामी जी ने गुप्त समाचार शीर्षक से महाराजा को नन्ही का सम्पर्क त्यागने की प्रेरणा की है और लिखा है—"एक वेश्या से जो कि नई कहानी है उससे प्रेम। उसका अधिक संग और अनेक 'विवाहिता' पत्नियों से न्यून प्रेम रखना आप जैसे महाराजों को सर्वथा अयोग्य है।"

जिस रसोइये ने २९ सितम्बर १८८३ की रात्रि को स्वामी जी को दूध में विष [संखिया] दिया वह शाहपुरा निवासो था और उसका नाम जगन्नाथ न होकर धूड़ मिश्र था। यह सत्य है कि लोक में विषदाता रसोइये का नाम जगन्नाथ ही प्रसिद्ध है किन्तु स्वामी दयानन्द के जीवन चरित लेखक पं० देवेन्द्रनाथ मुखोपाध्याय किसी जगन्नाथ नामधारी रसोइये का सकेत नहीं करते। धूड़मिश्र को स्वामी जी की रसोई बनाने के लिये शाहपुरा नरेश नाहरसिंह ने भेजा था और उसी ने नन्ही तथा अन्य षड़यन्त्रकारियों के बहकावे में आकर २९ सितम्बर की रात्रि को स्वामी जी को विष दे दिया। सूरजमल के पश्चात जिस डाक्टर को स्वामी जी की चिकित्सा का कार्य सौंपा वह अलीमुदीन नहीं किन्तु डा० अलीमर्दान खां था जो मूलतः एटा जिले का निवासी था।

नन्ही भगतन द्वारा जोधपुर के उदय मन्दिर मुहल्ले में निर्मित मन्दिर के पुजारी का सावित्री परमार को दिया गया यह बयान तो निश्चय ही गलत है कि आर्यसमाजियों ने स्वामी जो को चिर अमर करने के लिये उन्हें विष देने की कथा गढ़ ली है। स्वामी जी की मृत्यु को स्वाभाविक तथा जिगर एवं तिल्ली आदि से बिगड़ने के कारण होने वाली बताने वाले अन्य लेखकों यथा डा० बी० के० सिंह प्रो० श्रीराम शर्मा तथा श्री ओंकारसिंह के कथनों का प्रतिवाद समय-समय पर इन्ही पंक्तियों के लेखक द्वारा किया जा चुका है। इस प्रकरण की विस्तृत एव तर्क पूर्ण समीक्षा इस लेखक न अपने शोध पूर्ण ग्रन्थ नव जागरण के पुरोधा दयानन्द सरस्वती में एक पृथक् अध्याय लिख कर की है।

सम्पादक के नाम पत्र

माननीय त्यागी जी सादर नमस्ते !

११ अगस्त के सार्वदेशिक से पता चला कि पाठक जी चले गये। एक व्यक्ति के व्यक्तिगत जीवन में तथा एक मूक सामाजिक कार्यकर्त्ता के जीवन में जितने भी गुण वांछनीय होते हैं, उन सब गुणों की एक प्रतिमूर्ति पाठक जी थे। जो कोई उनके सम्पर्क में आता था, वह उनका हो जाता था। वे सच्चे माने में आर्य थे। ऐसी सहृदयता श्रद्धा, कार्यशीलता व लगन की समुच्चयता बिरले व्यक्तियों में ही दृष्टिगोचर हो पाती है।

सार्वदेशिक सभा के पिछले साठ वर्षों का कम्प्यूटर नष्ट हो गया, यह सभा की बड़ी क्षति है। इससे आप लोगों का भार बढ़ जाता है।

जब कभी मैं उनसे मिलता था, वे आर्य समाज की पिछली अर्ध शताब्दी के दिग्गजों व साधारण आर्यों की बड़ी प्रेरणाप्रद आपबीती कथायें सुनाया करते थे, उनसे बड़ी प्रेरणा प्राप्त होती थी। उनकी याद को स्थायी बनाये रखने के लिये मेरे ये सुझाव हैं।

१—सार्वदेशिक में "प्रेरणाप्रद जीवन कथाओं" का एक स्थायी स्तम्भ होना चाहिये। आपको ज्ञात ही है कि मासिक "कल्याण" में प्रेरणात्मक प्रसंगों का वर्णन होता है।

(२) प्रेरणात्मक प्रसंगों व जीवनों को पुस्तकाकार रूप में प्रकाशित करना चाहिये। ऐसे प्रसंगों व जीवनों को पुस्तकाकार रूप में प्रकाशित करना चाहिये। ऐसे प्रसंग संग्रहों को शारीरिक, सामाजिक व आत्मिक इत्यादि विभागों में विभाजित किया जा सकता है।

(३) पाठक जी का जीवन-चरित्र उनके किन्हीं सम्बन्धियों व जानकारों द्वारा 'सार्वदेशिक' में धारावाही रूप में लिखाया जाना उचित है।

पाठक जी श्रद्धाञ्जलि रूप में १००१) रुपये का चैक साथ में भेंट करता हूं।

भवदीय
धर्मजित जिज्ञासु
43-49, SMART STREET
FLUSING, N. 4 11355

ठेके पर धरना : आर्य नेताओं की गिरफ्तारी की निन्दा

रोहतक २१ नवम्बर। आर्य समाज के प्रमुख संन्यासी स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती तथा आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के प्रधान प्रो० शेरसिंह ने आज एक प्रेस वक्तव्य द्वारा खरखोदा दिल्ली रोड स्थित फिरोजपुर बांगर (औचन्दी बार्डर) में शराब के ठेके पर धरना दे रहे सत्याग्रहियों के नेताओं पं० सुखदेव शास्त्री, श्री महेन्द्र शास्त्री सभा उपदेशक महाशय कर्णसिंह आर्य समाज फिरोजपुर चौ० राजेराम प्रधान आर्य समाज कुण्डल श्री सत्यवीर तथा श्री रिसाल सिंह आदि ५-६ प्रमुख कार्य कर्त्ताओं को शराब के विरुद्ध प्रचार करने के आरोप में १५ नवम्बर को पुलिस द्वारा गिरफ्तार करके किसी अज्ञात स्थान पर ले जाने तथा धरने पर आतंक फैलाने की कार्यवाही को निन्दा की है।

उन्होंने आश्चर्य प्रकट किया कि पुलिस ने शराब के ठेकेदार के विरुद्ध कोई कारवाही नहीं कर रही जो कि नियमों के विरुद्ध चोरी-छिपे रात को भी शराब सप्लाई कर रहा है।

दोनों आर्य नेताओं ने आर्यसमाज के कार्यकर्त्ता से अनुरोध किया कि वे शराब के ठेके को बन्द करवाने के लिए भारी संख्या में फिरोजपुर बांगर पहुंचकर धरने में सम्मिलित होवे। दोनों नेताओं ने हरियाणा सरकार से मांग की है कि गिरफतार किए गए कार्यकर्त्ताओं को तुरन्त रिहा करें। तथा जनता की मांग पर शराब के बन्द करें।

आर्य की अभिलाषा

— ब्रह्मप्रकाश शास्त्री, विद्यावाचस्पति
पश्चिमी आजाद नगर, दिल्ली-५१

मरने का नहीं मुझको भय है।
इसमें मेरा कुछ नहीं क्षय है॥
जीर्ण क्षीर्ण वस्त्रों को तज कर।
नूतन वस्त्रों का परिणय है॥
हर्ष विभोर हुआ हूं मैं तो।
क्योंकि नूतन यह अभिनय है।
आया हूं संसार समर में।
द्वन्द्वों से मेरा घर्षण है॥
आर्यों का आदर्श अनूठा।
धर्म विरुद्ध नहीं यह बय है॥
जैसी करनी वैसी भरनी।
इसमें कुछ भी नहीं संशय है॥
ऋषि मुनियों के अमर देश में।
भारत वासी का निश्चय है॥
अय जग के मत वाले लोगों।
सुन लो यह सन्देश अमर है॥
उठो सयाने लोगों जागो।
सोने का अब नहीं समय है॥
गुरुडम की है घोर अन्धेरी।
भगवानों का खूब उदय है॥
वेद विरुद्ध जो मत फैले हैं।
उन पर करनी हमें विजय है॥
ओ३म् पताका ले लो कर में।
जगती भर में जय ही जय है॥

वही मानव कहाता है

—पं० नन्दलाल सिद्धान्त शास्त्री
वेदप्रचारक बहीन जिला फरीदाबाद (हरि०)

सदा जो न्याय की गंगा, धरातल पर बहाता है।
नहीं अन्याय जो सहता, वही मानव कहाता है॥

विचरता है विचारों के, निराले नित्य नन्दन में।
सतत आसीन जो रहता, सजीले सत स्पन्दन में॥
मनन की मञ्जु लहरों में, तरुण तरणी तराता है।
नहीं अन्याय जो सहता, वही मानव कहाता है॥१॥

मनस्वी, धीर, धर्मों के, पदों की धूल बन जाए।
अधर्मी, क्रूर, कर्मी के, पदों का शूल बन जाए॥
वही व्यवहार वाणी की, अमर सरगम लजाता है।
नहीं अन्याय जो सहता, वही मानव कहाता है॥२॥

न धरती के शुभांचल में, दुरित के बीज बोने दे।
न पापी चक्रवर्ती को, कभी सुख नींद सोने दे॥
सृजन का हो सहायक, प्राण की बाजी लगाता है।
नहीं अन्याय जो सहता, वही मानव कहाता है॥३॥

भले ही कीर्ति कानन में, बसन्तों की बहारें हों।
भले ही नीति निपुणों की, कहीं निन्दा फुहारें हो॥
निरत कर्त्तव्य निष्ठा में, न इनका ध्यान लाता है।
नहीं अन्याय जो सहता, वही मानव कहाता है॥४॥

चली हो चपलता रूठो, सुमेरु या कि पाया हों।
युगों के बाद या तत्काल, हो चढ़ काल आया हो॥
विवेकी न्याय के पथ से, न पग पीछे हटाता है।
नहीं अन्याय जो सहता, वही मानव कहाता है॥५॥

विदेशों में आर्यसमाज की गतिविधियां

आर्य समाज की स्थापना की ७५वीं वर्षगांठ का कार्यक्रम सम्पन्न

आर्य सभा मोरिशस ने टापू भर मे आर्य समाज की ७५वीं वर्षगांठ को भव्य रूप से मनाने का जो आयोजन किया है संक्षिप्त में उसके कार्यक्रम निम्न प्रकार हैं :—

जिलेवार

ग्रांपोर में—१९ सितम्बर को प्लेन तार्या आर्य समाज मन्दिर पर संगीत प्रतियोगिता। २२ से २९ सितम्बर तक आर्य समाज त्रुआ बुचिक में अनेक कार्यक्रम आयोजित है। १ ली नवम्बर को बहु-कुण्डीय यज्ञ।

सावान मे—४ से ६ अक्टूबर तक सावान प्रान्तीय सावान द्वारा यज्ञ। सत्संग, नगर कीर्तन आदि।

फलाक मे—११ से १३ अक्टूबर तक बेल मार मे बहु कुण्डीय यज्ञादि।

मोका में—१८ से २० अक्टूबर तक महायज्ञ तथा संगीत प्रतियोगिता आदि।

प्लेन बिल्हेम्स मे—२५ से २७ अक्टूबर तक बृहतयज्ञ तथा प्रदर्शनी आदि आर्यन वैदिक पाठशाला मे।

रिव्येर जु रापार मे—२८ से ३० अक्टूबर तक महायज्ञ आदि कार्यक्रम।

पांप्लेमूस में—२९ से ३१ अक्टूबर तक महायज्ञ आदि।

गयासिह अनाथालय पोर्ट लुई मे—७ नवम्बर की सांस्कृतिक कार्यक्रम।

आर्य भवन, पोर्ट लुई मे—७ नवम्बर से १० तक चार दिवसीय महायज्ञ
संगीत प्रतियोगिता चित्रांकन प्रतियोगिता
मन्त्रोच्चारण प्रतियोगिता महिला सम्मेलन
पुरोहित सम्मेलन युवक सम्मेलन आदि कार्यक्रम होंगे।

अन्य शाखा समाजों से निवेदन है कि इस वर्ष के अन्त तक अपने-अपने समाजों में ७५वी वर्षगांठ को बनाने का आयोजन करें और आर्य सभा को सूचित करने की कृपा करें।

मो. मोहित — प्रधान
मू रामधनी — मन्त्री

फ्रेंच सत्यार्थ प्रकाश प्रकाशित

हमे यह सूचित करते हुए अति हर्ष हो रहा है कि फ्रेंच सत्यार्थ प्रकाश छप कर आर्य सभा में प्राप्त हो चुका है।

हमे अपना श्रद्धालु पाठको से पूरी आशा है कि आपकी सहायता से जल्द से जल्द ऋषि जी की यह अमूल्य कृति हाथो हाथ बिक जायेगी।

मूल्य तीन रुपये। —सम्पादक

श्रद्धांजलि

पं० नारायणदत्त डोमन जी के पूज्य पिता स्वर्गीय हुए

श्री कुंजबिहारी डोमनजी १८९७ ई मे ६ दिसम्बर को एक गरीब परिवार के घर पैदा हुए। बोनाकेयी ग्राम के उत्थान में अपनी कमर तोड़ परिश्रम को देते रहे। वे पांच बच्चों के पिता बने। अपने परिश्रम से दो बेटों को कर्मठ वैश्य बनाया। दोनों खेतिहार हैं और तीसरे बेटे को योग्य ब्राह्मण बनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ जो आर्य सभाके सुयोग्य पण्डित नारायणदत्त डोमनजी हैं।

दो पुत्रियों के विवाह हो चुके हैं। सभी बच्चे आत्मनिर्भर है। अपने इन बच्चों को वे सदा के लिए छोड़कर १२ अगस्त १९८५ ई के लगभग ५ बजे सायंकाल में ८९ वर्षकी उम्र बिताकर परमात्मा के प्यारे होगये। १३ तारीख को एक बड़े जनसमूह की श्रद्धांजलि के भाव आर्य पुरोहित द्वारा उनका अन्त्येष्टि संस्कार सम्पन्न हुआ।

परमात्मा दुःखी परिवार को धैर्य और दिवंगत आत्मा को शान्ति दे।

—एक श्रद्धालु

पुरोहित मण्डल

शुद्ध एवम् विधियुक्त सन्ध्या सीखने के लिए आर्य सभा मोरिशस से सम्बन्ध स्थापित करें।

सितम्बर महीने से प्रति शनिवार को योग्य शिक्षकों द्वारा आर्य भवन, पोर्ट लुई और सग्राम भवन, में पोल मे एक घण्टा सन्ध्या-पाठ देना निश्चय हुआ है।

जो भी भाई-बहन सन्ध्या सीखते की इच्छा रखते हैं, कृपया अपना पूरा नाम और पाठ लेने का स्थान आय सभा कार्यालय मे निम्न पत्ते पर भेजें।

अतः काफी संख्या में विद्यार्थी प्राप्त होने पर सन्ध्या-पाठ आरम्भ करने की सूचना 'आर्योदय' ही मे प्रकाशित करेंगे।

Secretary-Poorohit Mandal
Arya Sabha Mauritius
Maharishi Dayanaod St.
Port Louts

आर्य महिला मण्डल

चुनाव

मोरिशस आर्य महिला मण्डल का पुनर्गठन सन् १९८५-८६ ई. के लिए निम्न अधिकारियों की नियुक्त हुई है —

माननीय प्रधान—श्रीमती यशोदा दशरथ 'आर्य रत्न'
प्रधान—श्रीमती धनवन्ती रामचरण
उपप्रधान—श्रीमती सरस्वती पोनित
मन्त्री—श्रीमती शुभावती बन्धन
उपमन्त्री—श्रीमती सहोद्री गोवरधन
कोषाध्यक्ष—श्रीमती जानकी नागावा
उपकोषाध्यक्ष—कुमारी प्रेमपति रामदूरसिंह
लेखिका—श्रीमती अरुणा हरबंस
पड़तालिका—कुमारी विजयन्ती माला शिवशंकर
—श्रीमती उत्तरा ढाकाल,

—श्रीमती ध० रामचरण
प्रधान

मोका प्रान्तीय आर्य परिषद कार्यकारिणी समिति का गठन हुआ। १९८५ के कर्मचारी गण इस प्रकार हैं —

माननीय प्रधान—श्री यशकरण मोहित
प्रधान—श्री रूपलाल कुंजन
उपप्रधान—श्री विद्यानन्द देवकरण
मन्त्री—श्री रामनारायण छेदी
उपमन्त्री—श्री देवव्रत खालिक
कोषाध्यक्ष—श्री प्रेमलाल चयन
उपकोषाध्यक्ष—श्री इन्द्रजीत सेवक

सहायक

श्री बालचन्द तनाकू, श्री चन्द्रदत्त प्रभु,
श्री हरिदत्त रामचरण, श्री यशकरण मोहित,
श्री रवीन बिहारी, श्री रामचन्द्र गुलमिटर

पड़तालक

श्री विद्यावती जोखु और कृष्ण मोहित।

—र. छेदी
मन्त्री

गुरुकुलीय शिक्षा-पद्धति के प्रबल समर्थक को बधाई

आन्ध्र प्रदेश के मुख्यमन्त्री श्री एन. टी. रामाराव के गुरुकुल शिक्षा-पद्धति के सम्बन्ध मे विचार जानकर हार्दिक प्रसन्नता हुई। उन्होंने एक विचार गोष्ठी मे गुरुकुल पद्धति की सराहना करते हुए कहा कि इसमें युवक को पूर्ण आत्मनिर्भर होना सिखाया जाता है, जबकि ब्रिटिश शिक्षा-पद्धति में पठन-पाठन के अतिरिक्त अन्य कार्यों में उलझने के अवसर नहीं मिलते हैं। उनमें समग्रता तथा एकनिष्ठता होती है। बड़े छात्र प्रायः छोटे छात्रों को पढ़ाते नजर आते हैं।

गुरुकुल शिक्षा-प्रणाली में अध्यापक और छात्र का सम्पर्क निरन्तर बना रहता है। वह पूर्णरूपेण अपनी शिक्षा के प्रति समर्पित होता है और अपनी बौद्धिक, शारीरिक तथा आत्मिक उन्नति के अवसर प्राप्त करता है। आधुनिक शिक्षा पद्धति में अन्त तक कहीं भी नैतिक एवं आध्यात्मिक शिक्षा के लिए कोई स्थान है ही नहीं।

भारत सरकार से निवेदन है कि वह अपनी नई शिक्षा नीति में गुरुकुल शिक्षा-पद्धति का समावेश करे तो उसमें पल्लवित पुष्पित छात्र निश्चय ही देशभक्त, आचारवान तथा संस्कृति के पोषक बन सकेंगे।

लोक सभा में

(पृष्ठ ४ का शेष)

है। सुप्रीमकोर्ट को दरअसल इसका कोई हक नहीं है, इसलिए फैसला बेअसर करने के लिए सरकार जाब्ता फौजदारी कानूनी की धारा १२५ और १२७ में समुचित फेरबदल करे।

ऊर्जा राज्यमन्त्री आरिफ मुहम्मद खां मानसून सत्र के दौरान विधेयक पर बोले थे। उन्होंने विधेयक का विरोध किया था और शरीयत की आधुनिक व्याख्या का पक्ष लिया था।

जियाउर्रहमान अन्सारी विधेयक पर आज बोले। उन्होंने कहा जिन लोगों ने आजीवन गुजारा भत्ते का समर्थन किया है उन्होंने शायद समाज-सुधार की दृष्टि से ही ऐसा किया। लेकिन (इन लोगो को) यह नही भूलना चाहिए कि आजीवन गुजारा भत्ता देने से समाज में दूसरी गम्भीर बुराइयां पैदा हो जाएगी। इसलिए इन लोगों को इससे बाज आना चाहिए। फिर, आजीवन गुजारा भत्ता नैसर्गिक न्याय के सिद्धांत के भी खिलाफ है। जब शौहर-बीबी साथ न रह रहे हों तो शौहर पर बीबी के (गुजर-बसर के बन्दोबस्त की जिम्मेदारी लाद देना 'न्याय' नहीं है। कुरान शरीफ का कहना है कि तलाक की सूरत मे शौहर पर इतनी जिम्मेदारी ही आमद की जानी चाहिए, जितनी वह उठा सके। कुरान-शरीफ मे चार तरह के तलाकों पर अलग-अलग इन्तजाम किया गया है। इसलिए (सुप्रीमकोर्ट को) इसकी परिभाषा करने और इस नाजुक मामले में टांग अड़ाने का कोई हक नही है।

उन्होने कहा कि आजीवन गुजारा भत्ता औरत की इज्जत और गरिमा के भी खिलाफ है। जो औरत शौहर के साथ रहने को राजी नही है वह शौहर से खर्चा लेने को कैसे राजी हो जाएगी? कुरान शरीफ ने तलाक को आखिरी उपाय बताया है। लेकिन इस पर भी कई तरह जे प्रतिबन्ध और नियन्त्रण लगाए हैं। कुरान की यह भी मशा है कि तलाक अगर बहुत ही जरूरी हो जाए तो ऐसी सूरत मे भी यह शौहर और बीबी, दोनों की शान कायम रखते हुए होना चाहिए।

आजकी बहस में एक और दिलचस्प बात सामने आई वह अकाली दल के रवैये की थी। बलवन्तसिंह रामूवालिया ने विधेयक पर बोलते हुए कहा कि मुस्लिम पर्सनल ला में किसी तरह की दखलंदाजी नही होनी चाहिए।

विधेयक में प्रावधान है कि मुस्लिम पर्सनल ला के तहत तलाकशुदा बीबी को दिये गये (अथवा प्रस्तावित) खर्चे की किसी भी अदालत में चुनौती नहीं दी जा सके। यह विधेयक मूल रूप से सुप्रीम कोर्ट के उस फैसले के सम्बन्ध में लगाया गया है जिसमे अदालत ने शाह बानो को शरीयत के अनुसार दिया गया खर्च 'अपर्याप्त' बताया था।

जियाउर्रहमान अन्सारी ने तलाक का उल्लेख करते समय स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मन्त्री मोहसिना किदवई की तरफ देखते हुए "मैं आपसे मुखातिब नही हूँ" कहा।

नेशनल कांफ्रेंस के सैयुद्दीन सोज का विचार था कि मुस्लिम पर्सनल ला कानून और धार्मिक निर्देशो की गहराई से व्याख्या के लिए सरकार एक अन्तरराष्ट्रीय सम्मेलन बुलाए। बहस आज भी अधूरी रही।

(जनसत्ता २३-११-८५)

आर्य समाजों के द्वारा विशेष प्रचार तथा वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज सान्ताक्रुज बम्बई के मन्त्री सूचित करते हैं कि कैप्टन देवरत्न जी आर्य, पं० उमाकान्त जी उपाध्याय कलकत्ता वाले तथा डा० सोमदेव जी शास्त्री के प्रयत्नों से दूरदर्शन पर महर्षि दयानन्द सरस्वती के जीवन सम्बन्धी कार्यक्रम रिकार्ड कराए तथा १३-११-८५ को सायं ७.४० पर बम्बई हैदराबाद एवं बंगलौर केन्द्रों से एक साथ प्रसारित हुए ऋषि भक्तो की ओर से धन्यवाद!

—वेद सस्थान, राजोरी गार्डन, नई दिल्ली—जिसे पूज्य स्वामी विद्यानन्द "विदेह" जी ने स्थापित किया था—आजकल धर्म प्रचार का मुख्य केन्द्र बनता जा रहा है। पिछले दिनों सप्तदिवसीय 'साधना शिविर" १० नवम्बर को प्रातःकाल स्वस्ति योग की पूर्णाहुति के साथ सम्पन्न हो गया। इस शिविर में अनेकों अन्य कार्यों के साथ १५ वीरों ने यजुर्वेद के शिव संकल्प मन्त्रों का गहराई से चिन्तन कर अद्भुत प्रदर्शन किया। इस शिविर में महात्मा दयानन्द, स्वामी दयानन्द, डा० अभयदेव शर्मा, डा० बद्रीप्रसाद पंचोली, माता नरेन्द्रार्या का विशेष योगदान रहा। अगला शिविर मई १९८६ में आयोजित होगा।

—आर्य समाज, निर्माण विहार, नई दिल्ली का पांचवा वार्षिकोत्सव २८-१०-८५ से ३-११-८५ तक श्री जैमिनी शास्त्री जी की देख-रेख में सामवेद महायज्ञ सम्पन्न हुआ। रविवार ३-११-८५ को प्रातः १० बजे चरित्र निर्माण सम्मेलन की अध्यक्षता करते हुए सभा प्रधान श्री रामगोपाल जी शालवाले ने युवकों और युवतियों को चरित्र निर्माण की आवश्यकता पर बल देते हुए आर्य समाज के कार्य में पूर्ण जीवन लगाने की प्रेरणा दी। इस अवसर पर श्री क्षितीश जी, श्री रमेशचन्द्र जी दर्शनाचार्य और श्री सूर्यदेव शर्मा, श्री सत्यपाल वेदार के प्रभावशाली भाषण हुए। श्री विद्याप्रकाश जी सेठ विशेष रूप से आमन्त्रित थे।

—आर्यसमाज जोगबनी (पूर्णिमा) विहार का १४वां वार्षिकोत्सव रविवार ३-११-८५ को अनेक सम्मेलनों तथा यज्ञ की पूर्ण आहुति के साथ सम्पन्न।

—आर्य समाज रेलवे कालोनी समस्तीपुर की ओर से दीपावली पर्व पर महर्षि दयानन्द की पुण्य तिथि के रूप में अपने नगर की गरीब बस्तियों में सेवा कार्य तथा विशेष रूप से भूखे और अपाहिजों को आर्यसमाज की ओर योगदान देकर आर्य जनता को नई दिशा दी।

—आर्य समाज बीसलपुर जिला पीलीभीत के प्रधान श्री पूर्णानन्द जी सूचित करते हैं कि डा० जयदेव वेदालंकार तथा श्री हरिसिंह जी के प्रयत्नों से १-११-८५ से ४-११-८५ तक धर्म प्रचार का आयोजन अति सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ।

—नगर आर्य समाज साहबगंज, गोरखपुर की गतिविधियां दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। स्थानीय जनता आर्य समाज के कार्यक्रमों में उत्साह से सहयोग दे रहे हैं। इस उत्साह के कारण समाज के अधिकारियों ने १७-११-८५ से २०-११-८५ तक पं० रामप्रसाद बिस्मिल स्मारक यज्ञशाला के मैदान में एक विशाल कार्यक्रम अपने ४२ वें वार्षिकोत्सव के रूप में मनाने का कार्यक्रम रखा है। इसमें अन्य महानुभावों के साथ विशेष रूप से श्री जयप्रकाश आर्य (भूतपूर्व इमाम) के भाषणों का प्रबन्ध किया गया।

—आर्य समाज मन्दिर चूना मण्डी पहाड़गंज नई दिल्ली का ४१वां वार्षिकोत्सव २८-११-८५ से ८-१२-८५ तक मनाया जाएगा इसमें वेदकथा यजुर्वेद शतकम यज्ञ महिला सम्मेलन, राष्ट्र रक्षा सम्मेलन और विशाल आर्य युवक सम्मेलन का आयोजन किया है। समाज के प्रधान श्री प्रियतमदास रसवन्त तथा प्रधाना पुष्पा आहूजा श्री सतीश अधिष्ठाता आर्य वीर दल ने दिल्ली की जनता से इस कार्यक्रम में भाग लेने के लिए प्रार्थना की है। अन्तिम दिन ८-१२-८५ को ऋषि लंगर का आयोजन किया जायेगा।

पोपपाल के आगमन पर होने वाला सामूहिक धर्म परिवर्तन रोका जाय

हिन्दी, गोरक्षा आदि विषयों पर ...

प्रस्ताव पारित

हजारी बाग, ११ नवम्बर।

आर्य प्रतिनिधि सभा बिहार के सदस्यों ने जो स्थानीय दयानन्द आर्य वैदिक विद्यालय के प्रागण मे छोटा नागपुर स्तरीय आर्य महा सम्मेलन के अवसर पर उपस्थित हुए। विभिन्न प्रस्तावों को पारित कर भारत सरकार से आगामी पोप के भारत आगमन पर हिन्दू समुदाय को धर्म परिवर्तन कर ईसाई बनाए जाने की साजिश को रोकने का आग्रह किया है। प्रस्ताव मे भारत सरकार से माँग की गई है कि विदेशी पादरियो का मध्य प्रदेश, उड़ीसा छोटानागपुर, आसाम आदि के आदिवासी एव जन-जाति क्षेत्रों मे प्रचार-प्रसार पर अविलम्ब रोक लगाकर देश से निष्कासित किया जाय। ये मिशनरिया इन उपेक्षित जन जातियो की गरीब, अशिक्षा एव पिछड़े पन का फायदा उठाकर अपने घृणित चाल से इनका धर्म परिवर्तन कर देश की एकता एवं अखण्डता को चुनौती देने से बाज नही आती।

एक अन्य प्रस्ताव मे मांग की गई है कि गोवध अविलम्ब रोका जाय ताकि देश के भूखे नगे बच्चो को दूध प्राप्त हो सके।

एक अन्य प्रस्ताव मे राष्ट्रभाषा हिन्दी को सरकारी काम-काजों मे जल्द से जल्द व्यवहारिक रूप से प्रयोग की भी माग की गयी।

पाकिस्तान ने यदि आक्रमण किया तो मानचित्र से उसका निशान मिट जावेगा

ईसाई मिशनरियों के हथकन्डों से भारत सरकार सावधान रहे
—रामगोपाल

हजारी बाग, ११ नवम्बर।

"यदि पाकिस्तान ने फिर भारत पर आक्रमण करने का दुसाहस किया तो यह मेरी भविष्यवाणी है कि पाकिस्तान नाम के किसी देश का अस्तित्व विश्व के मानचित्र मे नही रह जायगा। भारत अभी विश्व की प्रमुख शक्तियो मे से एक है जो किसी भी खतरे से जूझने की क्षमता रखता है।"

श्री रामगोपाल जी वानप्रस्थी ने आगे कहा कि आर्य समाज वास्तव मे न तो मुस्लिम धर्म से और न ईसाई धर्म से घृणा करता है परन्तु यह किसी भी हालत मे प्रलोभनो के आधार पर भोले-भाले अशिक्षित एव गरीब आदिवासियो, जनजातियो एव उपेक्षित वर्गो का धर्म परिवर्तन, चालबाज मिशनरियो के द्वारा किये जाने का विरोधी है। उन्होने यह भी कहा कि विदेशी मिशनरियो की ही घृणित चाल थी कि नागालैंड, मिजोरम आदि स्थानो पर सरकार को हाल ही मे एक विकट खतरे का सामना करना पड़ा था। देश की एकता एव अखण्डता को छिन्न-भिन्न करने पर ये उतारू हो गये। उन्होने भारत सरकार और आर्यवीरो से एक जुट होकर वैदिक संस्कृति एवं परम्परा को सुरक्षित रखने का आह्वान किया।

आर्य समाज के स्थानीय कार्यकलापो की भूरि-भूरि प्रशंसा करते हुए करतल ध्वनि के बीच श्री रामगोपाल वानप्रस्थी जी ने घोषणा की कि अगर स्थानीय आर्यसमाज आवश्यक कदम उठाए तो सार्व. आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली दयानन्द आर्य वैदिक विद्यालय के परिसर पर मे ही दयानन्द आर्य वैदिक विश्वविद्यालय खोलने की दिशा मे पूरा-पूरा सहयोग प्रदान करेगा।

शिविर का विधिवत् उद्घाटन श्री बालदिवाकर हंस, प्रधान सचालक सार्वदेशिक आर्यवीर दल, श्री देवव्रत व्यायामाचार्य उपसचालक, श्री वासुदेव शर्मा उपप्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली, श्री जमुना प्रसाद सचिव, श्री रामानन्द शास्त्री उपप्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा बिहार, श्री रामाज्ञा वैरागी, संचालक बिहार एव श्री भूपनारायण शास्त्री, अधिष्ठाता सार्वदेशिक आर्यवीर दल बिहार प्रमुख थे।

करीब १०० युवको ने इस अवसर पर शारीरिक व्यायाम प्रदर्शन के विभिन्न स्वरूप एव आक्रमण प्रति आक्रमण आदि के प्रदर्शन कर उपस्थित जनसमूह को आकर्षित कर लिया और प्रशिक्षण का उत्तरदायित्व डा० देवव्रत व्यायामाचार्य उपप्रधान संचालक सार्वदेशिक आर्यवीर दल ने सम्हाला था। श्री रामाज्ञा वैरागी ने शिविराध्यक्ष की भूमिका का निर्वाह किया।
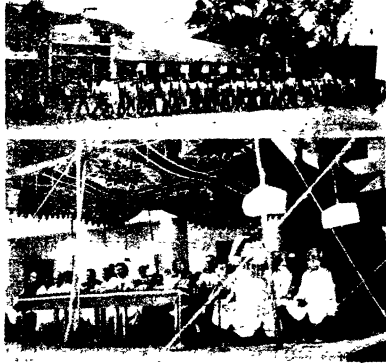
मच पर गणमान्य नागरिको के मध्य सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान मान्य ला० रामगोपाल शालवाले दिखाई दे रहे हैं। श्री भूपनारायण अधिष्ठाता आर्य वीर दल बिहार जन समुदाय को सम्बोधित कर रहे हैं।

ऊपर—हजारी बाग आर्यवीर दल के प्रशिक्षणार्थी आर्यवीर पग-प्रयाण करते हुए वीरो ने सभा प्रधान को गार्ड आफ आनर देकर उनका स्वागत किया।

कलकत्ता हाईकोर्ट खण्ड पीठ का निर्णय

रामकृष्ण के अनुयायी हिन्दू नही है

रामकृष्ण मिशन विवेकानन्द शताब्दी कालेज राहरा के अध्यापकों द्वारा एक याचिका पर निर्णय देते हुए खण्ड पीठ ने यह फैसला दिया।

खण्ड पीठ ने याचिका को रद्द करते हुए कहा कि राहड़ा कालेज एक धार्मिक अल्पसंख्यक समुदाय द्वारा चलाया जाता है। जो संविधान की धारा ३० के अन्तर्गत आता है।

रामकृष्ण मिशन के पदाधिकारियों अपने बयान में कहा था कि परम्परावादी हिन्दू वही है जो केवल वेदों में विश्वास रखे। और किसी अन्य धर्म शास्त्रों में आस्था न रखे। क्योंकि रामकृष्ण के अनुयायी कुरान और बाईबिल में भी विश्वास रखते हैं। इसलिये रामकृष्ण के धर्म को हिन्दू धर्म, जैसा कि उसका वर्तमान रूप है, समान मानना रामकृष्ण मिशन की भावना के विरुद्ध होगा।

रामकृष्ण के अनुयायियों ने यद्यपि हिन्दू धर्म का कानूनी रूप से त्याग नहीं किया किन्तु ये हिन्दू धर्म के सिद्धान्तों का पूर्णत पालन नहीं करते। उनका जातिवाद में विश्वास नहीं करते। वे अपने आपको सुधारवादी हिन्दू भी नही कहते। वे विश्वधर्म को मानते हैं।

पंजि० सं० डी० (सी०) १७८ सार्वदेशिक साप्ताहिक (१-१२-१९८५) बिना टिकट भिजवे का लाइसेंस नं० U ६१
R.N. 626/57 Licensed to post withoutprepayment, License No. 93 Post in D.P.S.O. on 28-11-85.

अध्यात्म सुधा

(पृष्ठ २ का शेष)

आज जो हमे सुयोग प्राप्त है वह कल रहे या नही इसलिए जीवन का सदुपयोग करने में ही बुद्धिमानी है। जब मनुष्य अपने कर्त्तव्य का निश्चय कर ले कि कोई न कोई महत्व पूर्ण काम करूगा, जीवन का यही मूल सकल्प होना चाहिए।

देहं वा पातयेय कार्यं वा साधयेयं किसी प्रयोजन की सिद्धि नही होती ...लए शक्ति चाहिए। किसी वस्तु की कामना करने के ... उसके लिए उपर्युक्त सुयोग्य-सुपात्र बनो, हर प्रकार की योग्यता शक्तिवान को ही प्राप्त होती है जीवन का एक भी अंग शक्तिहीन होने निर्बल हो जाता है। अतः सर्वागीण उन्नति के लिए मनुष्य को सब प्रकार की आवश्यकतानुरूप शक्ति का सचय करना चाहिए। शारीरिक बल मुख्य बल नही है बुद्धिबल की श्रेष्ठता ही सर्वस्वीकृत है।

बुद्धिर्यस्य-बलं तस्य, निर्बुद्धेस्तु कुतोबलम् ॥

अतः मानना पड़ेगा शारीरिक बल ही सब कुछ नहीं है इससे सर्वांगीण विकास नहीं हो सकता। मानवीय शक्तियों का विकास बाहर से नहीं भीतर ही होता है उसकी जन्मभूमि आत्मा है उसी प्रबलता से जीवन प्रबल होता है। बहुत पहले राजर्षि विश्वामित्र ने तपस्वी वशिष्ठ से पराजित होकर कहा था— धिक् बलं क्षत्रिय बल ब्रह्मतेजो बल बलम् ॥

म० गांधी से परास्त होकर अंग्रेजों की आत्मायी यही कहती होगी। यह ...तेज का बल ही मनुष्य का आत्मिक बल है इसकी सहायता से वह जो कर सकता है वह एटम बम से भी सम्भव नही। आत्मिक बल के प्रभाव से ही साधारण व्यक्ति असाधारण व्यक्तित्व वाला हो जाता है।

१०१५०—पुस्तकालयाध्यक्ष
पुस्तकालय गुरुकुल कांगड़ी
विश्वविद्यालय हरिद्वार
जि० सहारनपुर (उ० प्र०)

आर्य वीर दल मासिक शिविर सम्पन्न दिनांक २७-१०-८५ रविवार को आर्य वीर दल महाराष्ट्र का मासिक एक दिवसीय शिविर आर्यसमाज चेम्बूर में श्री गुलजारी लाल जी आर्य की अध्यक्षता में लगाया गया जिसमें आर्य वीरों को सैनिक शिक्षा योगासन व्यायाम आदि की शिक्षा दी गई।

इस शिविर में प्रो० वेंकटराव जी श्री त्रिभुवनसिंह आर्य रामसिंह वर्मा, पं० धर्मधर शास्त्री, श्री ओमप्रकाश जी आदि के सहयोग से सम्पन्न हुआ। —मन्त्री, ओमप्रकाश

—आर्यसमाज अमरोहा मुरादाबाद का ८४ वां वार्षिकोत्सव सम्पन्न हुआ। इस उत्सव में श्री विश्वमित्र मेधावी, कुलपति महाविद्यालय ज्विरायू, प्रो० उत्तमचन्द जी शरर, स्वामी आर्य भिक्षु जी, स्वामी सुकर्मानन्द जी आदि ने भाग लिया। —मन्त्री, आर्यसमाज

— स्वामी सत्यानन्द जी को दिनांक २७-१०-८५ को पक्षाघात हो गया जो अब ठीक हो गये हैं। उनका उपचार चल रहा है। स्वामी सत्यानन्द जी हैदराबाद सत्याग्रह में ७८ व्यक्तियों को साथ लेकर जेल गये स्वामी जी ने जब यह समाचार सुना कि सार्वदेशिक आर्य आर्यप्रतिनिधि सभा के प्रयत्नों से हैदराबाद सत्याग्रह के सत्याग्रहियों को स्वतन्त्रता सेनानी भारत सरकार ने मान लिया है। इस समाचार से स्वामी जी बहुत प्रसन्नता हुए। —देवराज आर्य, उदयपुर निवासी

सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली का मुख पत्र

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के शिष्टमण्डल की केन्द्रीय गृहमन्त्री श्री एस० बी० चह्वाण से भेंट

हैदराबाद आर्य सत्याग्रहियो के सम्बन्ध मे ज्ञापन

दिल्ली ३० नवम्बर। सावदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री रामगापाल शालवाले के नतृत्व मे आज प्रात आर्य समाज के शिष्टम डल ने केन्द्रीय गृहमन्त्री श्री एस० बी० चह्वाण से भट कर उन्हे हैदराब द आर्य सत्याग्रहियो के सम्बन्ध मे एक ज्ञापन पत्र दिया।

शिष्टमण्डल ने गृहमन्त्री क ध्यान आकृष्ट करत हुए बताया कि हैदराबाद आय सत्याग्रहियो के सामने पशन प्राप्त करने मे कुछ विशेष कठिनाइया हैं। १६३८ ३६ मे पश्चिमी पजाब (जो अब पाकिस्तान मे है) के लोगो न भी सत्याग्रह म भाग लिया था। तत्कालीन निजाम स्टेट अब तीन प्रान्तो मे विभाजित हो चुका है। उस समय जो लोग जेलो मे गए थे उन्हे निजाम सरकार ने कोई प्रमाण पत्र नही दिया था। यह आदोलन सावदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के तत्वावधान मे चला था और सभा ने सत्याग्रहियों को प्रमाण पत्र भी दिए थे।

शिष्टमण्डल ने यह भी बताया कि अधिकाश सत्याग्रही अब तक दिवगत हो चुके हैं। जो थोड बहुत लोग इस समय वृद्धावस्था मे जी रह है उनके पास अब ४५ वष के उपरान्त कोई प्रमाण-पत्र शेष नही है।

शिष्टमण्डल ने सरकार से माग की कि जिस प्रकार राष्ट्रीय आदोलन के सेनानियो को काग्रेस क प्रमाण पत्र के आधार पर स्वतन्त्रता सेनानी माना गया था उसी प्रकार केन्द्र सरकार सावदेशिक आय प्रतिनिधि सभा द्वारा उक्त सत्याग्रह के रिकार्ड के आधार पर प्रमाणित लोगो का स्वतन्त्रता सेनानी स्वीकार करे और गृहमन्त्रालय द्वारा स्वीकृत पशन योजना का लाभ प्रदान करे।

गृहमन्त्री श्री चह्वाण ने, तुरन्त सभा से सूची भेजने के लिए कहा और आश्वासन दिया कि वे राज्य सरकारो से बात चोत करके इसका निणय जल्दी करगे। उन्होने यह भी बताया कि निजाम हैदराबाद अब आ प्र कर्नाटक और महाराष्ट्र म विभाजित हो चका है।

शिष्टमण्डल मे प्रो० शेरसिह श्री ओम्प्रकाश त्यागी प० शिवकुमार शास्त्री श्री सोमनाथ एडवोकेट और श्री लक्ष्मीचन्द आदि सम्मिलित थे।

सच्चिदानन्द शास्त्री
उपमन्त्री सभा

(ज्ञापन अविकल रूप मे पृष्ठ २ पर)

वेदामृत

सम्पादक — ओम्प्रकाश पुरुषार्थी

सृष्टिसम्वत् १९७२९४९०९३ दयानन्दाब्द १६९ मार्गशीष कृ० १० स० २०४९ ८ दिसम्बर १९९२ रविवार
वार्षिक मूल्य ३०) एक प्रति ७५ पैसे

डरबन आर्य महासम्मेलन के अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले का संदेश

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता होती है कि आर्य प्रतिनिधि सभा दक्षिण अफ्रीका (डरबन) की ओर से १३ दिसम्बर ८५ से १७ दिसम्बर १९८५ तक विभिन्न सम्मेलनो सहित अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महा-सम्मेलन का आयोजन सार्व-देशिक सभा के तत्वावधान मे सम्पन्न होने जा रहा है।

महर्षि दयानन्द ने जिन उद्देश्यों के लिए १८७५ मे बम्बई मे सर्वप्रथम आर्य समाज की स्थापना की थी, उसका विस्तार आज सारे ससार मे हो चुका है। इस समय भारत तथा भारत से बाहर आर्य समाजो की लगभग ७ हजार सस्थाए कृण्वन्तो-विश्वमार्यम् के उद्देश्य को पूरा करने मे लगी हुई हैं।

भारत से बाहर के देशो मे आर्य प्रतिनिधि सभा दक्षिण अफ्रीका का अपना विशेष स्थान है। मुझे खुशी है कि आर्य प्रतिनिधि सभा दक्षिण अफ्रीका इस अवसर पर अपने यहां हीरक जयन्ती समारोह का आयोजन कर रही है। १८ वी शताब्दी के उत्तरार्द्ध और १९ वी शदी के प्रारम्भ मे भारत मे बाहर गए हुए वैदिक धर्म प्रेमियो ने ससार के अनेकों देशो मे, अनेक अत्याचारो और यातनाओ को सहते हुए भी जिस प्रकार अपने धर्म और सस्कृति को अक्षुण्ण बनाए रखा, वह अपने आप में एक इतिहास है। आर्य प्रतिनिधि सभा दक्षिण अफ्रीका का यह सम्मेलन भी इसी इतिहास का एक स्वर्णिम अध्याय है।

मैं इस अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन मे पधारे हुए देश-देशान्तर के सभी आर्य नर-नारियो को बधाई और धन्यवाद देता हूँ जो दक्षिण अफ्रीका मे प्रवेश की अनुमति मे अनेक कठिनाइयो के बावजूद भी इसमे सम्मिलित हुए हैं। आर्य प्रतिनिधि सभा दक्षिण अफ्रीका तथा वहा के पुरोहित मण्डल का आभारी हूँ जिन्होने अनेक कठिनाइयो के बावजूद इस सम्मेलन को यथा समय करने का साहस किया है।

मैं पुन इस ऐतिहासिक अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन की सफलता की कामना करता हूँ और आशा करता हूँ कि इसका प्रभाव वैदिक सिद्धान्तो व मान्यताओं के प्रचार-प्रसार में ससार का मार्ग दर्शन करेगा।

रामगोपाल शालवाले
प्रधान-सार्वदेशिक सभा, दिल्ली

शुद्धि समाचार

भारतीय युवक श्री अब्दुल्ला ने आर्य समाज के प्रचार तथा सिद्धान्तों से प्रभावित होकर आर्य समाज बल्देवाश्रम खुर्जा के अधिकारियों से प्रार्थना की कि उसे वैदिक धर्म में लिया जाए। तत्काल नगर में इसकी घोषणा की गयी और एक विशाल जन सभा के सम्मुख उसे यज्ञ-वेद की महिमा एक ईश्वर की उपासना तथा आर्य समाज की गतिविधियों का ज्ञान बाबूलाल जी ने कराया। यज्ञ के उपरान्त उसका नाम वेद राम रखा गया और उसको हर प्रकार से सहयोग का आश्वासन दिया गया। —मन्त्री आर्यसमाज

हैदराबाद सत्याग्रह के विषय में गृहमन्त्री को सभा प्रधान का पत्र

माननीय श्री शकर राव जी चव्हाण
गृहमन्त्री भारत सरकार
नई दिल्ली

विषय : हैदराबाद आर्य सत्याग्रह १९३८-३९ के संबंध में ज्ञापन

मान्यवर,

सेवा में सादर नमस्ते।

आपकी सेवा मे विनम्र निवेदन है कि हैदराबाद मे निजामशाही के अत्याचारो से क्षुब्ध होकर आर्य समाज के सर्वोच्च सगठन-सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने निजाम सरकार के विरुद्ध १९३८-३९ में आर्य सत्याग्रह आन्दोलन प्रारम्भ किया था। इस आन्दोलन को स्व० महात्मा गाधी, स्व० सरदार पटेल तथा कांग्रेस के अन्य प्रमुख नेताओ का आशीर्वाद प्राप्त था।

भारत सरकार द्वारा ४७ वर्ष के उपरान्त अपने आदेश सं० ८।३२।८४ एफ एफ। (पी) दिनाक ३०-९-१९८५ द्वारा आर्य सत्याग्रहियो को स्वतन्त्रता सेनानी मान लेने पर यह सभा आभार प्रकट करती है। यद्यपि यह निर्णय पहले ही हो जाना चाहिए था।

हमारे सामने कुछ कठिनाइया हैं, जो निम्न प्रकार है :

१ - इस आंदोलन मे जिन लोगो ने भाग लिया था, उनमे से अधिकाश लोग मर चुके है। थोड़े-बहुत बचे हुए लोग वृद्धावस्था का जीवन यापन कर रहे हैं।

२—सत्याग्रह की समाप्ति पर निजाम सरकार की ओर से कोई प्रमाण पत्र सत्याग्रहियो को नही दिया गया था।

३—सार्वदेशिक सभा ने सभी सत्याग्रहियो को प्रशस्ति पत्र दिये थे, किन्तु इनमे अनेक सत्याग्रही जो अविभाजित पजाब के थे, देश विभाजन के समय उनके सब कागजात आदि नष्ट हो गए हैं।

४—वृद्धावस्था मे इन लोगो को पेंशन लाभ के लिए विशेष कष्ट न हो इसलिए हमारा आपसे विशेष निवेदन यह है कि—

(क) जिस प्रकार सरकार ने स्वतन्त्रता आन्दोलन के हजारो आन्दोलन-कारियो को कांग्रेस के प्रमाण पत्र पर स्वतन्त्रता सेनानी माना है, उसी प्रकार यह सभा हैदराबाद सत्याग्रह १९३८-३९ के रिकार्ड के अनुसार जिन व्यक्तियो को प्रमाणित करे, सरकार द्वारा उन्हें स्वतन्त्रता सेनानी स्वीकार किया जावे।

(ख) सरकार द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा को उक्त अधिकार दिया जावे और इस निर्णय की सूचना सभी राज्य सरकारो को भेजी जावे।

हम आशा करते है कि भारत सरकार हमारी प्रार्थना पर उचित ध्यान देकर अनुगृहित करेगी।

भवदीय
रामगोपाल शालवाले
प्रधान

आर्य सत्याग्रह हैदराबाद (पेंशन का मामला)

दिल्ली २ दिसम्बर ८५।

जिन लोगों ने हैदराबाद आर्य सत्याग्रह १९३८-३९ में सार्वदेशिक सभा द्वारा संचालित निजाम हैदराबाद के विरुद्ध आंदोलन में भाग लिया था और जिन्हें जेल की सजा हुई थी। उन सब सत्याग्रहियों से निवेदन है कि अपना प्रार्थना पत्र अपने नाम, पिता के नाम, स्थान जहा से सत्याग्रह के लिए गए थे और जहां गिरफ्तार हुए, तिथि, जेल का नाम जहां प्रारम्भ में भेजे गए और जहा से छूटे तथा छूटने की तिथि के विवरण सहित अधिकतम २० दिसम्बर, १९८५ तक सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन, रामलीला मैदान, नई दिल्ली ११०००२ के पते पर भिजवा देवें ताकि उनका मामला केन्द्रीय सरकार के सामने पेंशन हेतु स्वीकृत कराया जा सके। इसके उपरान्त यदि कोई व्यक्ति छूट गया तो सार्वदेशिक सभा उनके मामले में किसी भी प्रकार के सहयोग के लिए उत्तरदायी नहीं होगी।

—रामगोपाल शालवाले

सम्पादकीय

स्वामी दयानंद ने बुद्धिवादियों की बुद्धि बदल दी पर....

ससार मे ऐसे विरले ही पुरुष होते हैं जो सदैव अपने ज्ञान से दूसरो को प्रकाशित करने मग्न रहते हैं। अब महर्षि मस्तिष्क बदल रहे थे तब दो ऐसे वीतराग-तपस्वी भी आख खोलकर कानों से सुनकर अन्दर के ज्ञान चक्षुओ से अपना भी विकास कर रहे थे। बुद्धि के विकास मे यदि-माया और मोह की रुकावट पड जाय, तो उसे भी रास्ते से दूरकर अपनी मन्जिल तय करने मे सुविधा हो। ऐसे व्यक्तित्व के धनी थे गुरुकुलो के दो सस्थापक स्व० श्री १०८ स्वामी दर्शनानन्द जी महाराज तथा १०८ श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज इन्होने घरबार का त्याग तो किया ही किन्तु अपनी सस्थाओ से भी त्याग भाव ही रखा।

आज कुर्सी की लडाई मे सस्थाये बरबाद हो रही हैं। आज के कर्णधार क्या उन वीतराग तपस्वी त्यागियो के जीवन से कुछ शिक्षा ग्रहण नही की। आज इस बात पर अभिमान किया जाता है कि हम ही सब कुछ बने रहें न समय दे सकते हैं और न पैसा दे सकते हैं।

कुर्सी की खीचतान मे उपरोक्त सन्यासियो के नामपर बट्टा लगा दिया है। यद्यपि वह शक्ति आज भी हममे विद्यमान है पर सासारिक व्यामोह का जाल सबको अपने वश म करके शक्ति को मन्द कर दिया है। जिस पुरुष की विचारधारा का व्यामोह की सीमा विरोध नही कर सकी गुरुकुल शिक्षा का आदर्श भी मिट्टी मे मिला दिया। जीवन की नाव को मझधार मे लाकर छोड दिया है। पैसे की बरबादी अपने स्वार्थ की अन्धी लडाई पर व्यय किया जा रहा है। सम्मान को अपमान मे बदलने मे सकोच न करके खमठोक कर नेतृत्व का दम भरा जा रहा है।

उन वन्दनीय महात्माओ के अब दर्शन कहा ? यदि वे आज होते तो उन्हें भी निकाल कर बाहर किया जाता। अब उन जैसे महात्माओ के दर्शन कहा मिलेंगे।

दयानन्द की तर्क शैली के चमत्कारो ने उन्हें भी दयानन्द का दीवाना बना दिया। उन्हीके नाम पर आज हम खा-पका रहे हैं पर कुर्सी की लडाई में लज्जा अनुभव नहीं कर रहे हैं। स्वय अपने को ज्वालामुखी के मुह पर खडा किया हुआ है इसकी चिन्ता नही।

महर्षि के सरल स्वभाव मे सकोच का अभाव था विमल मन मे उदारता का प्रभाव था जो कुछ कहना अनहित को सामने लाकर और जो कुछ लिखना लोकमत के मार्ग मे जाकर। उनका पुरुषार्थ सर्वथा परहित के ही निमित्त था। लेकिन आज हमारी दूषित मनोवृत्तियो ने सारे किये कराये पर पानी फेरने पर लगे है। स्वामी जी के बुद्धिवाद का इन्होंने दिवाला निकाल दिया है।

आर्य समाज का फैलाव

एक ओर वह तत्व हैं जो घर बिगाडने मे विश्वास करते हैं पर दूसरी ओर एक वह वर्ग है जो विनाश के बजाय निर्माण कार्य मे लगा है। यदि जो विनाश के बजाय निर्माण कार्य मे लगा है। यदि स्वामी दयानन्द के कार्य को विस्तार की दृष्टि से देखा जाय तो आज हम भारत मे ही नही भारत की सीमा से बाहर भी हमने पैर पसारे हैं। अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलनो ने हमे चैतन्य कर दिया है। और हम सोचने पर विवश हो रहे हैं कि हम घर मे बैठकर ऋषि के निर्माण का कार्य किस सीमा तक कर रहे हैं। धर्म-परिवर्तन का सघर्ष, साहित्य प्रचार की दृष्टि से जन-जन तक स्वच्छ विचारो को पहुँचाना, सामाजिक वातावरण का निर्माण दहेज बाल विवाह, मद्य निषेध जैसे—अपराधो से उन मानव मस्तिष्को को सही दिशाबोध देना। परन्तु आज कुर्सी की वीभत्स कुण्ठा ने हमारे मनो मे समाज के प्रति क्या कर्तव्य बुद्धि से कुछ करना है इससे कोसो दूर चले गये हैं।

सार्वदेशिक सभा का एक सुगठित सगठन हैं जो इस ओर लोगो का रुझान बदल सकती है। सार्वदेशिक सभा के सही-सबल नेतृत्व मे यह दम है कि—

महर्षि दयानन्द के बुद्धिवाद का सबल उद्घोष करें और उच्छृखल उद्दण्ड तबियत वाले जडबुद्धि मानव का दिशा निर्देश करे। काम तो चलेगा ही ऋषि के प्रताप से पर घर के बिगडने से पहले यदि सुधार कर लें।

भूल सुधार

२४ नवम्बर १९८५ के सार्वदेशिक पत्र मे श्री भैरवप्रसाद गुप्ता जी का लेख वेद, महर्षि दयानन्द व आर्य समाज पृष्ठ ११ तथा लाइन ३४ पर साथ ही लाइन ५२ पर स्वामी जी की १२ फरवरी सन १९८४ के स्थान पर सही जन्मतिथि १२ फरवरी सन १८२४ है, और आ० स० स्थापना तिथि सन १८८५ के स्थान पर सन १८७५ पढी जावे।

। सामवेद के मन्त्रो की सख्या १८७३ नही बल्कि १८७५ हैं उस स्थिति मे चारो वेदो की मन्त्र सख्या २०४१६ होनी है।

—सम्पादक

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन डरबन (दक्षिण अफ्रीका) का

कार्यक्रम

१३ से १७ दिसम्बर ८५ तथा २१-२२ दिसम्बर ८५

संयोजकत्व—आर्य प्रतिनिधि सभा दक्षिण अफ्रीका (डरबन)

तत्वावधानत्व—सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली (भारत)

तिथि	समय	कार्यक्रम
१३-१२-८५		यजुर्वेद परायण महायज्ञ—
	१४-३० बजे	झण्डारोहण-श्री मोहनलाल मोहित मोरीशस
	१६-०० ,,	आर्य समाज आन्दोलन की प्रगति-प्रदर्शनी उद्घाटनकर्ता-डा० ब्रह्मदत्त स्नातक (दिल्ली) प्रतिनिधि-परिचय तथा स्वागत
	२०-०० ,,	वैदिक मिशनरी ट्रेनिंग सैन्टर की स्थापना
१४-१२-८५	१४-३० ,,	आर्य प्रति सभा दक्षिण अफीका (१९२५-८५) का हीरक जयन्ती समारोह ६० वर्षीय इतिहास की उपलब्धियां श्री एस. रामभरोसे—प्रधान आ. प्र. सभा,
		(२) आर्य समाज का अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में योगदान-अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त विद्वानोंद्वारा श्रद्धांजलि
	१६-०० ,,	सांस्कृतिक कार्यक्रम तथा विभिन्न-सम्मेलन
१५-१२-८५	८-३० ,,	सम्मेलन-वैदिक धर्म के दर्पण में आदर्श परिवार -अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त विद्वानो के विचार
	१४-३० ,,	अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन— अध्यक्ष—श्री स्वामी सत्यप्रकाश (भारत) उद्घाटनकर्ता-श्री ओम्प्रकाश त्यागी, भू.पू. सांसद मन्त्री—सार्वदेशिक सभा (दिल्ली)
	२०-०० ,,	सास्कृतिक कार्यक्रम
१६-१२-८५	९-०० ,,	वैदिक धर्म के बहुउद्देशीय आदर्श
	१४-०० ,,	सम्मेलन-बढ़ती जनसंख्या का खतरा
१७-१२-८५	१०-०० ,,	सम्मेलन-वैदिक शिक्षा तथा संस्कृत भाषा अध्यक्ष-स्वामी सत्यप्रकाश
१८-१२-८५	९-३० ,,	नागरिक अभिनन्दन मुख्य अतिथि—डरबन के मेयर
२२-१२-८५	९-०० ,,	यजुर्वेद पारायण महायज्ञ सम्मेलन-वेदों में विज्ञान
	१४-०० ,,	सम्मेलन-संसार को वैदिक धर्म का संदेश तथा अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन के समापन पर ससार को संदेश तथा प्रस्ताव

निवेदक .

	पं० नरदेव वेदालंकार	प्रधान पुरोहित मडल आ.प्र. स. द अफीका
आर्य	एस. रामभरोसे	प्रधान आ. प्र सभा द. अफीका
प्रतिनिधि	एस. सत्यदेव	उप प्रधान ,, ,,
सभा	एम. सोमेरा	महामन्त्री ,, ,,
दक्षिण	बी. रामविलास	,, ,, ,,
अफ्रीका	आर. एन. जीवन	कोषाध्यक्ष ,, ,,
डरबन	एस. गंगादयाल	,, ,, ,,
	के. बादन	प्रशासकीय मन्त्री आ प्र. स. द अफीका

निवेदक : (२)

सार्वदेशिक	रामगोपाल शालवाले	प्रधान सार्व. सभा दिल्ली
आर्य प्रतिनिधि सभा	ओमप्रकाश त्यागी	महामन्त्री ,, ,,
दिल्ली (भारत)	सोमनाथ मरवाह	कोषाध्यक्ष ,, ,, तथा सीनियर एडवोकेट सुप्रीम कोर्ट (भारत)

जड़ और चेतन देवों की पूजा

देव और उनकी पूजा विषय पर एक लेख १६-१०-८५ को पूज्यपाद स्वामी दयानन्द जी महाराज के अमरग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश और अलौकिक ग्रन्थ ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका के आधार पर लिखा था, जो सबका माननीय और अनुकरणीय है। अब इसी विषय पर मैं अपने विचार लिख रहा हूँ जो आर्य ग्रन्थो के आधार पर और वेदानुकूल ही है। यदि इनमे कोई त्रुटि हो तो मुझे साप्ताहिक पत्र के माध्यम से सूचित करें, मैं आपका आभारी हूँगा।

जड देव और चेतन देव अपने अपने स्थान पर यथायोग्य पूजा (सेवा), रक्षा और मान के योग्य हैं। इन दोनो प्रकार के देवताओं की पूजा परम आवश्यक है क्योंकि इनकी पूजा के बिना मनुष्य अधूरा है और उसे मोक्ष भी नहीं मिल सकता। जड़ और चेतन देवों की पूजा बहुत ही श्रेष्ठ कर्म है, इसलिए श्रेष्ठ कर्म छोड़ने के योग्य नहीं। ऐसे सभी धर्मशास्त्र वेद, उपनिषदादि ग्रन्थ और ऋषि मुनि बतलाते हैं। चेतन देवो की पूजा तो सबको मान्य और स्वीकार है। इन चेतन देवो की पूजा तो तन, मन, धन से हर एक को करनी चाहिए। यह बहुत धर्म का काम है। कर्त्तव्य पालन में कटोती नहीं होनी चाहिए। इसी में श्रेष्ठता है। जड़ पदार्थों की पूजा में थोड़ा भेदभाव अपने-अपने विचारो के अनुसार हो सकता है। इस भेदभाव को उदाहरण से समझें, सेवा और पूजा एकार्थवाची शब्द है। ससार मे हवन यज्ञ (अग्नि होत्र) ही एक निस्वार्थ कर्त्तव्य कर्म है। इससे बढ़कर इस सृष्टि में श्रेष्ठ और उपकारी कर्म दूसरा नहीं है। इसके बिना मोक्ष भी असंभव है। परन्तु है तो जड़, तो क्या इसे छोड़ देना चाहिए, नही यह यज्ञ पूजा छोड़ने योग्य नहीं। यह भौतिक अग्नि (हवन यज्ञ) घर और आत्मा का रक्षक है और पुष्टि कारक है। यह भौतिक अग्नि (यज्ञ) आरोग्यता और बुद्धि के बढाने वाला है। यह यज्ञ अतिथि रूप अग्नि है, जिसको हम प्रात और सायंकाल प्रकाशित करते हैं। यह जड़ और चेतन देवताओं व सारे ससार के लिए लाभकारी है। जल और वायु को शुद्ध करने वाली प्रथम ओषधि है। जड शरीर के बिना जीव इस इस संसार मे टिक ही नही सकता। जड (पार्थिव) शरीर के सहारे यह जीव (आत्मा) इस ससार मे बसता है और शुभ और निष्काम कर्म करता हुआ मुक्ति (निर्वाण) पद तक को प्राप्त करता है। अन्य इसके लिए कोई मार्ग नहीं। इसलिए यह शरीर जड होते हुए पूजा, सेवा और रक्षा के काबिल हैं क्योंकि यह शरीर जो पंच तत्व का पुतला है और इसके द्वारा ही जीव मोक्ष को पाता है, प्राप्त करता है। इमसे क्या आया कि इस पार्थिव शरीर की पूजा, सेवा व रक्षा बहुत आवश्यक है। यह जड होते हुए भी जीव के मुक्ति का साधन है। सब प्रकार के अन्न भी जड़ हैं, फल, फूल, कन्द, मूल, वृक्ष, वनस्पतियां और औषधियां सभी जड हैं, जो जीव के पालन पोषण का साधन हैं, तो क्या इन्हें जड़ समझकर इनकी पूजा, सेवा व रक्षा न करें। नही प्राणी की रक्षा के लिए इन सभी गेहूँ जौ आदि अन्नों के भण्डार चाहिए। अन्न के बिना प्राणी जीवित नही रह सकते इसलिए यह जीवों के प्राण रक्षा का साधन है। इसी प्रकार पशु धन (चेतन) जो मूक प्राणी कहलाता है। इनमें प्राण तो हैं परन्तु मनुष्य की तरह वाक् शक्ति और बुद्धि नहीं है। इनमें गाय, घोड़ा, भैंस, बैल, बकरी, भेड़, गधे, हाथी, ऊंट और दूसरे सभी प्राणी जो मनुष्य के लिए बहुत उपकारी हैं, सेवा और रक्षा (पालना) के योग्य हैं। इन्हीं मनुष्यों के जीवन की पालना होती है। इसी प्रकार पक्षी भी रक्षा के लायक हैं, जीकी पशु प्रभु बहुत लाभकारी हैं और यह सब रक्षा के योग्य हैं। यह मूक प्राणियों की पूजा है।

महापुरुषों की मूर्ति (चित्र) और घोड़ा व गायादि की तस्वीर जो हमें उनके गुण और लाभ बताने के लिए रखी जाती हैं। उनसे उचित शिक्षा लेनी ही उनकी सच्ची पूजा है। इनको भोग लगाने व फूलमाला पहनाने से कोई लाभ नहीं क्योंकि इनमें प्राणी नहीं। ये निर्जीव है। [illegible] है। मूक और जड़ हैं। ज्ञान शून्य है। इसलिए परमेश्वर के स्थान में इनकी पूजा करना

(शेष पृष्ठ ९ पर)

आधुनिक युग में मानस रोगों की वृद्धि

—डा० हरगोपाल सिंह, मनोविश्लेषक चिकित्सक गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

मन और शरीर मानव व्यक्तित्व के दो प्रमुख पक्ष हैं। दोनों मे रोग और दोष पैदा हो जाना स्वाभाविक है। शारीरिक रोगी की तरह मानसिक रोग भी प्रत्येक देश और काल मे होते रहे हैं। उदाहरणार्थ प्राचीन समय में भी मानसिक रोग होते थे और अब अमेरिका तथा रूस जैसे समृद्धशाली देशो मे भी मानसिक रोग होते हैं किन्तु रोगों की संख्या समय-समय पर घटती बढती रही है।

आधुनिक युग मे मानस रोग सभी देशो मे वृद्धि पर हैं। आज हर दस मे से एक व्यक्ति मानसिक अशान्ति और तनाव से पीडित है। अमरीका मे हर तीन मे से एक मरीज मानसिक रोग का शिकार है। हमारे देश मे इस समय करीब एक करोड़ तीस लाख मानस रोगी हैं। जिनमे से करीब आधो को तो इलाज के लिये तुरन्त अस्पतालों मे भरती हो जाना चाहिए तथा बाकी को घर रहते हुए ही इलाज कराना आवश्यक है। इन आकडो में बहुत से ऐसे रोगी सम्मिलित नहीं है जिनको उनके घर वाले मानसिक रोगी घोषित करने से छुपाये है। क्योंकि परिवार मे कोई मानस रोगी होना सामाजिक अभिशाप समझा जाता है। किन्तु यह धारणा गलत है। शारीरिक रोगो की तरह मानस रोग भी व्यक्तित्व की सम्भावित व्याधियां हैं जिनका शुरू से ही इलाज कराया जाय तो शीघ्र ठीक हो जाती हैं किन्तु जन सामान्य को अभी इसका ज्ञान नही है।

आज जब मानस रोग काफी तेजी से बढ़ रहे हैं तो इनका कारण जानना जरूरी है। मानस रोगो के कारणो को कई दृष्टिकोणो से वर्गीकृत किया गया है। किन्तु मुख्य कारण तीन हैं। पहिला कारण है जन्मजात मनोशारीरिक विकृति, दूसरा, मानसिक विकास मे खराबी। और तीसरा सामाजिक विकास मे खराबी। जन्मजात कारणो से उत्पन्न मानस रोग के रोगी जन्म से मानसिक दोष या कमी लिये पैदा होते हैं। उनमे मनोशारीरिक रचनात्मक कमी होती है। और बचपन से ही उनमे मानसिक विकृति प्रकट होने लगती है। किन्तु मिर्गी रोग ऐसा है जो पैत्रिक कारणों वाला तो होता है पर इसके लक्षण प्रारम्भ से प्रकट नही होते और युवावस्था तक कभी भी प्रकट हो जाते हैं।

मानसिक और सामाजिक विकास की खराबी से उत्पन्न रोग जन्म के बाद वातावरण जन्य कारणो से पैदा होते हैं। व्यक्तित्व का विकास धीरे-धीरे होता है। जैसे शारीरिक विकास के लिये पौष्टिक आहार की आवश्यकता होती है वैसे ही मानसिक विकास के लिये भी बच्चे की मानसिक तृप्ति होना आवश्यक होती है। उसकी प्रवृत्तियो और भावनाओं का सही ढग से पोषण होना स्वस्थ विकास के लिए जरूरी है। कोलमैन महोदय के अनुसार मनोवैज्ञानिक विकास में बाधक कारण तीन हैं। पहिला कारण प्रारम्भिक वंचितता है जिसमे माता-पिता के प्रेम से वचित रहना और खेल खिलौनो से वंचित रहना मुख्य है। दूसरा कारण विकृत पारिवारिक स्थिति है जिसमें भग्न परिवार, बच्चे का अति संरक्षण, उस पर अति नैतिक स्तर लादना, अति अनुशासित रखना, परिवार के अनैतिक आदर्श, भाई बहिनो में द्वेष सम्मिलित हैं। इनके अलावा बचपन मे कोई मानसिक आघात पहुँचाने वाली घटना का हो जाना अथवा किशोरावस्था के आते समय उचित मार्ग दर्शन और तैयारी न होना भी कारण बन जाते हैं।

मनुष्य सामाजिक प्राणी है अत. उस पर सामाजिक दोष और विघटन का प्रभाव पड़ना स्वाभाविक है। पास पड़ोस और विद्यालय का दूषित वातावरण सामाजिक तनाव, युद्ध, वर्ग सघर्ष, जातीय वैमनस्य, आर्थिक अभाव आदि मानस रोगो के सामाजिक विकास सम्बन्धी कारण हैं।

अब तक बताये हुए समस्त कारण सामान्य हैं किन्तु आधुनिक युग में भारत में प्रभावकारी कारण स्वतन्त्रता के बाद सामाजिक और नैतिक मूल्यो का बदलना, इच्छाओं का बेलगाम बढना, आर्थिक कमी महसूस करना और अहं का बढ जाना है। भारतीय संस्कृति के चार बड़े मूल्यो मे से आज अर्थ और काम ही मुख्य रह गये हैं तथा धर्म और मोक्ष का कम मूल्य रह गया है। किसी भी अच्छे बुरे साधन से शीघ्र धन इकट्ठा करने में बडी तेज दौड लग रही है जिसमे कोई भी पीछे नहीं रहना चाहता। पहिले इच्छायें कम थी, परिवार मे एक कमाता था और चार खाते थे। अब चारों कमाते हैं फिर भी कमी और क्लेश महसूस होता है। आधुनिक युग मशीन का युग है। मनुष्य भी मशीनी पुर्जे की तरह रात-दिन व्यस्त है। जल्दी मे है। मनुष्य सुबह बच्चों को सोते छोडकर काम पर चला जाता है और रात को देर से आता है तो फिर बच्चे सोये मिलते हैं। ऐसे जीवन मे सुख, चैन आपसी प्रेम कहां मिल पाता है। हर कोई अपनी स्थिति से असन्तुष्ट है।

आज की सिनेमा फिल्में अत्यधिक भोग विलास का जीवन दिखाकर दर्शक मे कामातुर बेचैनी बराबर बढा रही हैं। दर्शक का मनोरंजन न होकर मनोभंजन होता है और मानसिक सतुलन बिगड़ जाता है। धर्म पालन अर्थात् नैतिक आचरण करने का स्तर बराबर गिर रहा है। साथ ही मोक्ष मार्ग पालन अर्थात् इच्छाओ को सीमित रखने की प्रक्रिया भी रुक गई है, इसी को यदि योग की भाषा मे कहा जाय तो रजस और तमस वृत्तियां बढ़ गई हैं, सत्व वृत्तियां घट गई हैं जिससे समाज और व्यक्ति दोनों का सतुलन बिगड गया है। फलत ईर्ष्या, द्वेष, असंतोष, तनाव चिन्ता, भय जैसे मानसिक लक्षण समाज मे बढ गये हैं जो आगे चलकर किसी भी व्यक्ति में मानस रोग पैदा कर देते हैं।

पोप की पोप लीला

स्वामी दिव्यानन्द कृपाल नगर, संडीला (हरदोई)

वर्तमान पोप भारत में धर्म प्रचार हेतु प्रचार रहे हैं। सामान्यतः यह समाचार आनन्द का विषय होना चाहिए था। पोप एक विश्वव्यापी धर्म के सर्वोच्च अधिकारी हैं और जब-जब किसी ऐसे महापुरुष के सत्संग का सुअवसर मिले, स्वागत योग्य है, किन्तु पोप का आगमन सारे विश्व में विशेषकर भारत में एक चिन्ता का विषय बन गया है। धर्म प्रचार की स्वतन्त्रता स्तुत्य है। लेकिन ईसाई धर्म इसे नहीं स्वीकारता। जहां-जहां ईसाई धर्म के मानने वालों की बहुतायत है वहां पर अन्य धर्म वालो को अपना २ धर्म प्रचार की स्वतन्त्रता नहीं है। यूरोप आदि देशों में ईसाई अन्योत्तर धर्मावलम्बीयों को अपने धर्म प्रचार में कितनी कठिनाई उठानी पड़ती है इसे भुक्तभोगी ही जानता है। ईसाई धर्म धन और प्रलोभन और अज्ञानतावश संसार में फैलाया जा रहा है। गरीब और बेपढ़े लिखे सीधे-साधे लोगों को धन और प्रलोभनों में फंसकर धर्म परिवर्तन कराया जाता है। ईसामसीह ने अपनी शिक्षा-दीक्षा भारत में पायी और ईसाई धर्म की मूल शिक्षाओं में ऐसा कुछ भी न था वर्णन नहीं किया गया है जो पहले से वेदों में न बताया गया हो। फिर भी ईसाई धर्म को नया धर्म कहकर प्रचार किया जाता है। वेद की सीधी सादी शिक्षाओं के प्रचार करने पर ईसामसीह को लोगों ने सूली पर चढ़ा दिया और बाद में उसके नाम पर ठीक उसकी शिक्षाओं के विपरीत प्रचार करने के लिए ईसाई धर्म का ढांचा खड़ा कर लिया। वर्तमान ईसाई धर्म की सारी शिक्षाएं ईसामसीह के बताए हुए रास्ते के उलट हैं :—

(१) ईसामसीह ने कहा मैं कोई नया धर्म प्रचार करने नहीं आया हूँ बल्कि पूर्व प्रचलित धर्म का ही प्रचार कर रहा हूँ। ईसाई धर्म कहता है ईसामसीह ने नया धर्म चला था।

(२) ईसामसीह ने धर्म के नाम पर धन बटोरने वालों को धूर्त और चोर कहा है। आज ईसाई जगत मे रुपया दान और स्वेच्छा से नहीं बल्कि चर्च टैक्स के रूप मे बटोरा जा रहा है।

(३) ईसामसीह ने बाहरी साधनों को छोड अन्तरमुख साधन पर जोर दिया है। आज ईसाई जगत साधना की बात करना भी नहीं चाहते हैं।

(४) ईसामसीह ने धर्म प्रचारकों को सादगी से रहने का और मेहनत कर अपनी जीविका उपार्जन का आदेश दिया लेकिन आज एक विशाल पादरियों की सेना पराए धन पर ऐश्वर्य और वैभव मे पल रही है।

(५) ईसामसीह ने जीवन मे, जीवन की पवित्रता पर जोर दिया है। आज ईसाई जगत के धर्माचार्य अपने अनुयायियों के आचरण को मूक दर्शक बनकर देख रहे हैं। उनके मुंह अनुयायियों के धन से इस तरह भर गए हैं कि वह बोल भी नहीं सकते।

(६) ईसाई धर्म की शुरुआत एक ऐसे व्यक्ति जेल से हुई जो धर्म का ज्ञान न रखता था, धर्म का कट्टर शत्रु था, और बाद में जन प्रवाह में वह सेंट पाल बन बैठा और पहला पोप बना। ऐसे व्यक्ति से कैसे धर्म प्रचार की आशा की जा सकती है।

इस परम्परा में आजके वर्तमान पोप हैं। जिन्हें धर्म का प्रचार करने के लिए अन्धाधुन्ध धन का सहारा लेना पड़ता है। आज एक भी ईसाई पादरी ऐसा नहीं है जो ईसाई धर्म के गुणो के आधार पर ईसाई धर्म का प्रचार कर सकने का दावा करता हो। धन की बैसाखी पर चल गरीब और विवश लोगो को बहला फुसलाकर ईसाई बनाना ही इन पादरियो का कार्यक्रम रह गया है। पोप के आने पर एक लाख व्यक्तियो को ईसाई धर्म में दीक्षित करने की घोषणा धर्म प्रचार नहीं है बल्कि पोप लीला है। जिसमें धर्म का लेशमात्र नहीं है। बल्कि लोभ लालच प्रलोभन देकर धर्म परिवर्तन कर लोगो की आस्थाएं उनके धर्म एवं राष्ट्रीयता से डीगाना है। इसी कारण पोप का आगमन राष्ट्र प्रेमी धर्म रक्षक भारतीयो को चिन्ता का विषय लगता है। पोप भारत में आए, यह स्वागत के योग्य है। लेकिन धन वैभव की कुटिल चालो के सहारे भोली भाली भारतीय जनता को पथभ्रष्ट न करे।

ईश्वर को कभी न याद किया

कभी इधर किया कभी उधर किया, ईश्वर को न कभी याद किया।
इस इधर-उधर के चक्कर में, अपना जीवन बर्बाद किया।।

पहले तूने सोचा होता, अब काहे को रोता होता।
इस मन के भीतर तूने, ईश्वर को देखा होता।।
विषयों में इतना डूबा ईश्वर को तूने भूला दिया। इस···

करले तू प्रभु की भक्ति मिल जायेगी आत्म शक्ति।
तर जाये भव सागर से, मिल जाये तुझको मुक्ति।।
रहा पड़ा तू सोता, मन को न तूने जगा दिया। इस···

नव ज्योति जलेगी जीवन में, तेरे मन के सूने आंगन में।
फूल खिलेंगे मन में, जैसे खिलते हैं सावन में।।
कर ले ध्यान प्रभु का क्यों उसको तूने भूला दिया। इस···

पापों की गठरिया ढोये विषयों में फंसकर रोये।
करले सार्थक जीवन को, क्यूं अनमोल रत्न तू खोये।।
ईश्वर से तो मिलना चाहा, पर काम न तूने ऐसा किया। इस···

—तरुणकुमार शास्त्री (बी ए) आयुर्वेद रत्न
बेसौन (बुलन्दशहर) उ० प्र०

कविता

ईश्वर की भक्ति अनुरक्ति अति सत्य-प्रति,
ब्रह्मचर्य शक्ति जिस व्यक्ति में अपार थी।
दया की जो मूर्ति था आनन्द सुधा वर्षक था,
सरस्वती वाणी का जिसके अलंकार थी।
जिन परमहंस में राजहंस से अधिक,
क्षीर नीर न्याय बुद्धि विविध प्रकार थी।
धन्य है 'रणञ्जय' वह त्यागी तपस्वी ऋषि,
स्वामी दयानन्द वेद विद्या का महारथी।।

(२)

ऋषि दयानन्द के हैं सच्चे अनुयायी तब,
दूर हम करेंगे पाखण्ड के प्रसार को।
दूषित व्यापार और घूस की जो लेन देन,
मिट्टी में मिलायेंगे समस्त भ्रष्टाचार को।
रहने नहीं पायेगी कोई भी कुरीति कहीं,
सुधरेगा समाज से विमल विचार को।
देश फूले फलेगा वसुधा की भलाई होगी,
मिलेगा महत्व 'रणञ्जय' सदाचार को।।

—रणञ्जयसिंह
अमेठी, सुलतानपुर

बुतपरस्ती से बुरी लफ्जपरस्ती

—यदुनाथ थत्ते—

देश में 'शरीयत बचाओ' के नाम पर जो हो रहा है, वह जानकारी के अभाव में हो रहा है। अगर सही जानकारी आम मुसलमान और गैर मुसलमान को दी जाय, तो आज के तनाव समाप्त हो जायेंगे। खुदकुशी करना, करने देना, उसकी उपेक्षा करना, अपराध माना जाता है। आज के मुसलमान नेता खुद तो अपनी जान बचा लेंगे, लेकिन समाज द्वारा खुदकुशी करायेंगे, ऐसा सम्भव है। उन्हें न रोकना अपराध होगा।

पहली बात यह है कि शरीयत में केवल मुस्लिम व्यक्तिगत कानून ही आता है, ऐसी बात नहीं है। शरीयत का ८०-९० फीसदी हिस्सा भारत में कब का मिट चुका है। इसका प्रारम्भ १७७२ से होता है। अंग्रेजी सल्तनत के कायम होने पर पहला काम जो उन्होंने किया, वह था, काजी कोर्ट रद्द करने का। ब्रिटिश न्यायाधीशों को इस्लामी कानून के तहत मामले सुलझाने के लिये सक्षम माना गया। केवल इतना ही नहीं, गैरमुस्लिम वकीलों को पैरवी करने की पूरी छूट दी गई। इसके बाद दूसरा महत्वपूर्ण कदम उठा, सबके लिए समान फौजदारी कानून बनाने का। आज समान फौजदारी कानून सौ से अधिक वर्ष से चल रहा है और उसके खिलाफ मुसलमानों ने कभी आवाज तक नहीं उठाई। जिस कानून के मातहत मुस्लिम औरत को निर्वाह भत्ता देने का निर्णय, सर्वोच्च न्यायालय ने दिया, वह फौजदारी कानून का हिस्सा है। उसमें अगर मजहब के नाम पर दरारें डाली जाएं तो मतलब होगा, हमने 'अबाउट टर्न' किया। यह कभी हो नहीं पाएगा, चाहे कोई कितनी भी मधुरता और उदारता की बात करे।

जिस मुस्लिम व्यक्तिगत कानून की दुहाई दी जा रही है, उसमें भी फेर बदल हुआ है। उसके खिलाफ किसी भी मुसलमान ने कभी उंगली तक नहीं उठाई। गुलाम रखना, उनकी खरीदी और बिक्री करना, इस्लामी व्यक्तिगत कानून के तहत जायज माना जाता था। गुलामों के बाजार भी लगते थे। अंग्रेजों ने गुलाम रखना, खरीद-फरोख्त करना, कानूनन बन्द कर दिया। यह इन्सानियत का तकाजा था। मुस्लिम पर्सनल लॉ की दुहाई देने वालों से पूछना चाहिए कि क्या गुलाम रखने की छूट वे चाहेंगे? मतलब है कि मुसलमान भी उस चीज को बुरा मानते थे, लेकिन किसी की मजाल नहीं थी कि उस रिवाज को गैरकानूनी घोषित करने की मांग करे। लेकिन अंग्रेजों के करने पर सब चुपचाप मान गये। न नारे बुलन्द हुए, न एक लाश गिरी। पाकिस्तान में इस्लामी निजाम की कोई कितनी भी बात करता हो, लेकिन शरीयत की इस बात को जायज माना जाए, ऐसा कहने की किसी की हिम्मत है। तो मुस्लिम व्यक्तिगत कानून भी अछूता नहीं रहा है।

प्रो. असफ ए. ए फैजी दुनिया के एक जाने-माने विद्वान थे। इस्लाम मजहब, इस्लामी तहजीब, इस्लामी तवारीख के वे जानकार माने जाते थे। उन्होंने बताया है कि मुसलमान शरीअत की कितनी ही दुहाई क्यो न दे, शरीयत की चार शाखाएं हैं। अलग तबकों मे और अलग-अलग शरीयत कानून लागू हैं। सुन्नी और शिया, ये दो मुख्य पन्थ इस्लाम के हैं। लेकिन सुन्नी में चार पन्थ हैं। हनफी, मलिकी, शफी और हबली। भारत मे सुन्नी मुसलमानो की तादाद ज्यादा है और हनफी पथ यहां एक जमाने मे अधिक चलता था। १८६२ मे अंग्रेजों ने नया समान फौजदारी कानून लागू कर दिया और हनफी प्रथाओं का उतना हिस्सा कट गया।

आज देश में जो शरीयत लागू है, वह १९३७ मे मौलाना अशरफ अली थानवी तथा अन्य मुसलमानों के आग्रह पर केन्द्रीय विधानसभा मे बहुमत गैर-मुसलमानों का ही था। आज जो कुछ शरीयत इस देश में है, गैरमुसलमानो द्वारा लागू किया कानून है। यह शरीयत कानून यद्यपि १९३७ मे बनाया गया था, पर उसे असली रूप दिया गया, १९४३ मे। इसे भले ही शरीयत कानून कहा गया हो, लेकिन इसमें शादी, तलाक, वसीयत जैसे कुछ हिस्से ही आते हैं और उस पर अमल करने का काम मुल्ला-मौलवियो पर नहीं सौंपा गया है। किसी भी पुस्तक विक्रेता की दुकान से यह पुस्तक खरीदी जा सकती है। कोई भी सज्जन बता दे कि उसमे कौन-सा हिस्सा खुदा ने दिया है। आज जो लम्बे-लम्बे बयान दिये जा रहे हैं, वे इसके बारे में खुलासा करें, तो अच्छा होगा।

फिरकापरस्त मुसलमान नेता अपनी लीडरी के लिए मुसलमानों को बहका रहे हैं। अब भारतीय संविधान के मार्गदर्शक सूत्रों मे ४४वीं धारा का अन्तर्भाव किया जा रहा था, तब जो दलीलें मुसलमान सांसदों ने दी थी, और उनका जवाब डा० अम्बेडकर ने दिया था, वही दलीलें मुसलमान नेता दुहरा रहे हैं। उनके पास एक भी नई दलील नहीं है। अम्बेडकर ने तब कहा था कि हम वर्तमान और भविष्य को हमेशा के लिए भूत के हवाले कर नहीं सकते और लाशों को हम जीवितों पर शासन करने का अधिकार दे नहीं सकते।

संविधान की ४४वी धारा बताती है कि सब पर लागू होने वाला समान नागरिक कानून, शासन को बनाना चाहिए। यह मार्ग दर्शक सूत्र अचानक नहीं आया है। उसके पीछे तर्क है। संविधान की ४४वीं धारा हटाने की मांग मुस्लिम नेता कर रहे हैं। पर यह धारा संविधान में हो न हो, अन्य धारा तो रहेंगी ही। संविधान के प्रारम्भ में ही समान नागरिकता का प्रावधान किया गया है। जाति-धर्म-वंश-भाषा और यौन को लेकर नागरिक, नागरिक में कोई भेद नहीं किया जायगा, ऐसा जिस धारा मे बताया है, वह ४४वीं धारा हटने पर भी, संविधान में रहेगी ही। इसको वास्तविकता बनाना है तो कभी न कभी समान नागरिक कानून बनाना ही होगा। संविधान की ओर एक धारा बताती है कि कानून के समक्ष सबको समान माना जायगा और कानून का समान संरक्षण सबको मिलेगा। ये फिरकापरस्त नेता क्या इन धाराओं को भी हटाना चाहेंगे? तब मतलब होगा कि वे संविधान को ही मिटाना चाहते हैं।

शरीयत कानून में देश-देश की स्थिति के अनुसार फर्क किये गये हैं, जिसकी एक लम्बी फेहरिस्त बन सकती है। अपने पड़ोसी पाकिस्तान और बांग्लादेश को हम लें तो स्थिति स्पष्ट हो जाएगी। पाकिस्तान के सारे शासक इस्लाम की दुहाई देते रहे हैं। इस्लाम मजलूम, मुस्लिम औरत से बेइन्साफी तो कर ही नहीं सकता। सेनापति अय्यूब खान ने पाकिस्तान मे एक अध्यादेश जारी किया जिसके तहत जबानी तलाक पर रोक लगा दी गई है। न्यायालयो की पूर्वानुमति बगैर वहां दूसरी शादी करनी नाजायज है। इस अध्यादेश का किसी ने विरोध नहीं किया, न जिया ने उसे रद्द किया। अय्यूब खाँ ने इस सन्दर्भ में कहा कि 'इस्लाम ने बुतपरस्ती को खत्म किया, लेकिन मुसलमानों ने उसकी जगह पर लफ्जपरस्ती स्थापित कर रखी है। क्या भारत के मुसलमान पाकिस्तानी, बांग्लादेशी मुसलमानो से अधिक गये-बीते और अपनी ही मजलूम औरतो के प्रति ज्यादा बेरहम है?

धर्मस्वतन्त्रता को भी वे गलत समझ रहे हैं। भारतीय संविधान ने धर्म परिपालन की स्वतन्त्रता, व्यक्ति को दी है, न कि धर्मगुरु या धर्म संस्था को। कोई भी तबका भारतीय संविधान को नीचा और अपने को उससे श्रेष्ठ मान नहीं सकता। धर्म और जाति के नाम पर कोई उपराज्य स्थापित करना चाहे तो वह बर्दाश्त नहीं किया जा सकता। इस सन्दर्भ मे एक फिरकापरस्त मुसलमान नेता से जो बहस हुई, उसका उल्लेख करना ठीक होगा। बहस का मैं साक्षी भर था। तुर्किस्तान, मिस्र, पाकिस्तान मे शरीयत मे जो परिवर्तन हुए हैं, उसका उल्लेख करने पर उस नेता ने कहा—'साहब, वहां तो तानाशाही है।' तो उस युवा ने तपाक से कहा—'आप क्या कह रहे हैं, यह भी आपको नहीं सूझ रहा है। आप कह रहे हैं कि मुसलमान समझाने से नहीं, जबरदस्ती मानते हैं। इस देश मे लोकतन्त्र है। इसलिए लोग सब्र से काम ले रहे हैं। समझा रहे हैं। अगर आपकी बात सही है तो मतलब होगा कि अच्छा कदम उठाने के लिये भी मुसलमान, तानाशाह को निमन्त्रित करना चाहता है।'

सेक्यूलर राज्य मे आदमी का विचार, आदमी के रूप में ही, आदमी को करना चाहिए। इन्सानियत का तकाजा है कि और को भी इन्सान माना जाए और उसके साथ किसी तरह की गैरबराबरी न बरती जाए।

महर्षि दयानन्द और उनकी देश भक्ति

प्रो० आर्येन्द्र शर्मा वेदशिरोमणि, गुड़गांव

सुप्रसिद्ध फ्रांसीसी विचारक रोमां रोलां का कथन है कि:—

"आर्य समाज सब मनुष्यों एवं सब देशों के प्रति न्याय और स्त्री पुरुषों की समानता के अधिकार को सिद्धान्ततः स्वीकार करता है। वह जन्मना जाति-पाति का खण्डन करता है। और गुण-कर्म एवं योग्यता के आधार पर वर्ण व्यवस्था को मानता है। सब से बढ़कर अस्पृश्यों की घृणित मौजूदगी को वह बर्दाश्त नहीं कर सकता। स्वामी दयानन्द से बढ़कर उनके अपहृत अधिकारों का उत्साही रक्षक दूसरा नहीं हुआ। वे आर्य समाज में समानता के आधार पर प्रविष्ट किये जाते हैं क्योंकि आर्य कोई जाति नहीं है। आर्य श्रेष्ठ और उत्तमना व्यक्ति को कहते हैं। स्त्रियों की दुर्दशा के निवारण के लिये दयानन्द ने बड़ी उदारता और वीरता के साथ कार्य किया।"

"राष्ट्रीय पुर्नजागरण में दयानन्द ने सबसे प्रबल शक्ति के रूप में कार्य किया। दयानन्द राष्ट्रीय संगठन और पुर्ननिर्माण के सर्वाधिक उत्साही मसीहा थे। मैं समझता हूं कि उन्होंने ही जागृति बनाये रखी।'

इन उद्धरणों से स्पष्ट प्रतीत होता है कि महर्षि दयानन्द कितने महान् देशभक्त थे। वे सर्वदा यही विचारा करते थे कि आर्यों का चक्रवर्ती साम्राज्य वेदों के आधार पर क्या पुनः स्थापित किया जा सकता है। उनके हृदय में पावन देशभक्ति का प्रसार सर्वदा हुआ करता था। उनकी इसी उत्कृट देश भक्ति को देखकर किसी अंग्रेज राजनीतिज्ञ ने लिखा था कि: –

दो ब्रिटिश साम्राज्य के प्रबलतम् शत्रु हैं। सर्वप्रथम महर्षि दयानन्द सरस्वती जिन्होंने सत्यार्थ प्रकाश में लिखा है माता-पिता के समान हितकारी भी विदेशी राज्य हमारे लिये उत्तम नहीं है तथा दूसरे लोकमान्य तिलक जो कहते हैं – स्वराज्य हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है।"

जिन दिनों महारानी विक्टोरिया के सिंहासनारूढ़ होने के निमित्त लार्ड लिटन के दिल्ली दरबार की चर्चा बड़े जोरों पर थी उस अवसर पर महर्षि दयानन्द ने इस दरबार के अवसर पर उपस्थित होने की इच्छा प्रकट की तब भक्त ठा० मुकुन्दसिंह ने महर्षि के निवास और अन्य सुविधाओं की व्यवस्था दिल्ली में कर दी। दिल्ली दरबार के सब शिविरों में एक विज्ञापन छपवाकर बटवा तथा चिपका दिया गया कि सत्यासत्य निर्णय करने का यह अत्यन्त उपयुक्त अवसर है। महर्षि पौष ४ (१९ दिसम्बर १८७६) को एक पत्र वनमालसिंह के नाम दिल्ली से काशी को लिखा गया। उस समय महर्षि के साथ ठा० गोपालसिंह, भूपालसिंह, किशनसिंह, पं० भीमसेन और मुरादाबाद निवासी पं० इन्द्रमणि भी थे।

महर्षि की यह आन्तरिक इच्छा थी कि विदेश के राजा वैदिक धर्म के महत्व और स्वरूप को भलीभांति समझकर उसे स्वीकार कर लें। उनका विचार था कि प्रजा तो राजा की अनुगामिनी होती है राजाओं के सुधार के पश्चात् प्रजा को सुधार के सुधारने की समस्या शीघ्र हल हो सकेगी, परन्तु राजाओं में से केवल महाराजा तुकोजीराव होल्कर से ही उनकी भेंट हो सकी। दिल्ली दरबार में राजाओं से तो परामर्श का अवसर उपस्थित नहीं हुआ, परन्तु उस समय के भारत के उच्चकोटि के जाने-माने सुधारकों का एक सम्मेलन, महर्षि के निवास स्थान पर अवश्य हुआ। इस सम्मेलन पर महर्षि के अतिरिक्त छः विशिष्ट व्यक्तियों मुंशी कन्हैया लाल, अलखधारी, बाबू नवीनचन्द्र राय, बाबू केशवचन्द्र सेन, मुंशी इन्द्रमणि, सर सैयद अहमदखां और बाबू हरिश्चन्द्र चिन्तामणि उपस्थित थे। महर्षि ने प्रस्ताव रखा कि सब सुधारक एक होकर एक ही प्रकार के सुधार का कार्य करें तो भारत का सुधार शीघ्रातिशीघ्र हो सकता है परन्तु दुःख है कि सर्वसम्मत प्रस्ताव की रूपरेखा नहीं बन सकी।

महर्षि दयानन्द गुजराती थे। संस्कृत भाषा के प्रकांड पण्डित थे तथापि उन्होंने इस बात को भलीभांति समझ लिया था कि देश में आर्य भाषा अर्थात् हिन्दी भाषा के प्रचलन से ही एकता हो सकती है इसी लिये उन्होंने अपना सुप्रसिद्ध सत्यार्थ प्रकाश आर्य भाषा में ही लिखा। पहले वे भाषण भी संस्कृत भाषा में दिया करते थे। परन्तु जनरुचि को जानकर हिन्दी भाषा में ही भाषण देना प्रारम्भ किया तथापि संस्कृत का अध्ययन आवश्यक है यह उनकी मान्यता थी। महर्षि दयानन्द संस्कृत का महत्व केवल उसमें विद्यमान आध्यात्म विद्या के ही कारण नहीं मानते थे परन्तु उनके मत में अनेक भौतिक विज्ञानों की दृष्टि से भी संस्कृत का महत्व किसी भाषा से कम नहीं। विशेष रूप से प्राचीन भारत के ज्ञान के किसी भी क्षेत्र का अध्ययन करने के लिये संस्कृत का अध्ययन अत्यावश्यक है। और इसी उद्देश्य से गुरुकुल प्रणाली का संचालन किया और किसी भी दूषित भावना का संचार देश में न हो इस हेतु लिखा कि बालकों के गुरुकुल और कन्या गुरुकुल में कम से कम पांच मील का अन्तर हो और कन्याओं के गुरुकुल में पांच वर्ष का बालक और बालकों के गुरुकुल में पांच वर्ष की बालिका भी न जावे। इसी का प्रचार न होने के कारण आधुनिक कालेजों में कितना अनाचार फैल रहा है यह किसी से छिपा नहीं है।

महर्षि दयानन्द ईश्वर की वाणी वेदों के अनन्य भक्त थे उस समय सायण, उवट, महीधर आदि महानुभावों के भ्रष्ट भाष्य विद्यमान थे महर्षि ने इसी उद्देश्य से वेद भाष्य करना प्रारम्भ किया परन्तु विधि का विधान ऐसा था कि उनका असमय में देहावसान हो गया अन्यथा चारों वेदों का भाष्य वे अवश्य ही पूर्ण करते यही उनकी प्रबलतम अभिलाषा थी।

अनेक व्यक्तियों ने उनसे कहा कि आप देश प्रेम के मतवाले होकर रजवाड़ों में न जावें अन्यथा आपकी मृत्यु का सन्देह है। इस पर उन्होंने कहा कि लोग मेरी उंगलियों की बत्तियां बनाकर भी जलावें तथापि मै धर्म प्रचार से विरक्त नहीं हो सकता हूं। जोधपुर नरेश को वेश्यावृत्ति से पृथक करने में ही उनके प्राणों का अन्त हुआ।

इस प्रकार हम देखते हैं कि महर्षि दयानन्द अटूट देशभक्त थे और भारत देश पुनः मनु की इस इच्छा को व्यक्त कर सके यही उनकी उत्कट अभिलाषा थी।

एतद्देश प्रसूतस्य सकाशादग्र जन्मनः।
स्वं स्वं चरित्रम् शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्व मानवा.॥

आर्यसमाजों की गतिविधियां

शुभ कामना

९२ वर्षीय आर्य वानप्रस्थी श्री प० गणेशदत्त जी सड़क दुर्घटना मे चोट लगने पर अब अपने घर आर्य भवन भिवानी मे रह रहे हैं। प्रभु उन्हे शीघ्र आराम दे।

आर्य वीर दल शिक्षण शिविर सम्पन्न

आर्य समाज भोजपुर खेडी के तत्त्वावधान मे आर्य वीर दल शिविर लगाया गया। इस शिविर मे २३ आर्य वीरो ने भाग लिया प्रशिक्षण कार्य शिक्षक श्री पूर्णप्रकाश जी मित्तल द्वारा दिया गया। समापन कार्य श्री प० शम्भूदत्त शर्मा स्वतन्त्रता सेनानी के कर कमलो से हुआ तथा शिविर सचालन शिविराध्यक्ष आनन्द प्रकाश आर्य ने निम्न सम्पूर्ण व्यवस्था मन्त्री श्री देवराजसिंह आर्य ने की। समापन समारोह मे निकटवर्ती ग्रामो के सम्भ्रान्त सज्जन आमन्त्रित होने पर पधारे आर्य वीरो को प्रमाण पत्र दिये गये तथा प्रति दिन शाखा लगाने का व्रत लिया।

—आनन्द प्रकाश आर्य
शिविराध्यक्ष

—आर्य वीर दल फिरोजपुर फिरका मे १३-१०-८५ से २२-१०-८५ तक विशाल शिविर का आयोजन किया गया। शिविर अध्यक्ष श्री सत्येन्द्र प्रकाश शास्त्री ने शिविर की समाप्ति पर जहा स्थानीय जनता का धन्यवाद किया वहा आर्य समाज फिरोजपुर के वयोवृध नेता श्री भजनलाल आर्य श्री देवेन्द्र कुमार भारद्वाज श्री अनिल कुमार, इन्द्रपाल मलिक तथा मगलदेव का विशेष धन्यवाद किया।

शोक समाचार

श्री तुलसीराम आर्य कान्सटेबल थाना तिजारा के ८२ वर्षीय पिता श्री फत्तूरामजी का निधन ग्राम दूदवा (खेतडी) मे हो गया। श्री फत्तूरामजी बड़े परिश्रमशील मिलनसार और ग्राम सुधार के शौकीन थे। जिन्होने अपनी सन्तान का वेदानुकूल जीवन बनाने का प्रयास किया। इनके देहावसान से ग्राम परिवार की बडी क्षति हुई है।

अत हम ईश से प्रार्थना करते है कि वो सतप्त ग्राम परिवार को शाति एव दिवगत की आत्मा को सद्गति करे।

—विशनदास आर्य, मन्त्री

—आर्य जगत् मे यह समाचार अत्यन्त दुख के साथ जाना जायेगा कि आर्य समाज रेलवे हरथला कालोनी, मुरादाबाद के प्रसार अधिष्ठाता आर्य श्रेष्ठी श्रीयुत रामप्रसाद जी गुप्त का दिनाक ४-११-८५ को आकस्मिक निधन हो गया है। श्री गुप्त वर्षो आर्य समाज रेलवे हरथला कालोनी, मुरादाबाद के प्रधान एव प्रचार अधिष्ठाता रहे। उनके निधन से आर्य समाज मुरादाबाद को बहुत धक्का लगा है। प्रभु दिवगत आत्मा को शान्ति एव सद्गति प्रदान करे।

—यशपाल आर्य बन्धु प्रचार मन्त्री

आर्य उप प्रतिनिधि सभा जिला गोण्डा
आर्य सम्मेलन का आयोजन

आर्य उपप्रतिनिधि सभा जिला गोण्डा द्वारा गोण्डा, बस्ती, बहराइच, जिलो मे हो रहे धर्मान्तरण को रोके जाने की दृष्टि से आर्य सम्मेलन का आयोजन दिनाक १४ से १७-१२-८५ तक स्थान बडगाव गोण्डा निकट रेलवे स्टेशन गोण्डा पर किये जाने का निश्चय किया गया है। इस सम्मेलन मे भाग लेने हेतु देश की गणमान्य विभूतिया श्री स्वामी सेवानन्द जी महामन्त्री हिन्दू शुद्धि समिति हरियाणा, श्री स्वामी वेदमुनिजी परिव्राजक वैदिक सस्थान नजीबाबाद, श्री प० इन्द्रदेव जी इन्द्र (बिहार), श्री प० शान्ती प्रकाश जी शास्त्रार्थ महारथी जयपुर (राजस्थान), श्री ज्ञानप्रकाश आर्य मुरादाबाद, श्री विक्रमादित्य बसन्त, श्री प० इन्द्रदेव शास्त्री इसके अतिरिक्त और भी देश की अन्य कई महत्वपूर्ण विभूतियो के पधारने की आशा है।

—बलराम गोविन्द, मन्त्री

यजुर्वेद पारायण यज्ञ सम्पन्न

गोवर्धन के निकट ग्राम पलसो मे दिनांक २६, २७, २८ अक्तूबर ८५ को यजुर्वेद पारायण यज्ञ का भव्य आयोजन किया गया।

यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य रामनारायण व्याकरणाचार्य वेद पाठी ब्रह्मचारी नरेन्द्र कुमार, भूपालसिंह, रामदेव, केशव देव आदि थे। कार्य पूर्ण रूप से सफल रहा। —मन्त्री, आर्यसमाज

उत्सव सम्पन्न

—सहारनपुर जनपद की लालापार आर्यसमाज (जिसकी स्थापना महर्षि दयानन्द जी ने स्वय की थी) की ओर से आर्य महा-सम्मेलन का विशेष आयोजन किया गया। इस उत्सव का सबसे महत्वपूर्ण कार्य "विशाल शोभा यात्रा' जो आज तक ऐसा इस नगरी मे कभी नही निकला यज्ञ तथा प्रवचन श्री आर्य भिक्षु जी, श्री आचार्य रामप्रसाद जी देवदत्त बाली (पत्रकार) श्री सूरजप्रकाश जी मेहन्दी रत्ता महानुभावो के द्वारा सम्पन्न राष्ट्ररक्षा सम्मेलन की अध्यक्षता डा० अमरनाथ जी ने की श्री इन्द्रराज जो प्रधान उ० प्र० आर्य प्रतिनिधि सभा ने अपने ओजस्वी भाषण मे आर्यसमाज की आवश्यकता और ऋषि दयानन्द जी की जीवनी के देशभक्ति के वृत्तान्त सुनाए इस अवसर पर श्री बी०पी० गौतम ने उत्तर प्रदेश मे उर्दू को दूसरी भाषा न बनने देने का प्रस्ताव तथा अन्य प्रस्ताव में ईसाई मिशनरियो को देश से निकालने का प्रस्ताव प्रस्तुत किया जिसे वहा उपस्थित जन समूह ने हाथ ऊपर उठाकर प्रस्ताव का समर्थन किया।

--वैदिक योगाश्रम (गुरुकुल) शुकताल का २१वा वार्षिक उत्सव दिनांक २४ नवम्बर से २७ नवम्बर १९८५ तक भारी धूम-धाम के साथ मनाया गया। —स्वामी आनन्द वेश

—आर्य समाज मोतीहारी के आगामी वर्ष के लिए सर्वसमिति से श्री सत्यानन्द जी प्रधान, श्री नारायण वानप्रस्थी जी मन्त्री तथा श्री चन्द्रबलीप्रसाद कोषाध्यक्ष निर्वाचित हुए।

जड़ और चेतन

(पृष्ठ ४ का शेष)

अज्ञान है। ऊपर कही गई पूजा, सेवा और रक्षा प्रभु के स्थान को नही ग्रहण कर सकती क्योंकि वह ब्रह्म सबसे बडा है और उसी की यह ससार रचना है। जो परमेश्वर को छोडकर दूसरे की उपासना करता है, वह अल्पज्ञ और अज्ञानी है। इसमें सदेह नहीं। वह ब्रह्म नित्य है और उसका वेद (ज्ञान) भी नित्य है सत्य है और निर्भ्रान्त है, इसमे सशय नही। केवल एक मात्र परम-पिता परमात्मा ही उपासना योग के योग्य है जो जीव आत्मा का सच्चा हितकारी है, मित्र है और मोक्ष सुख का देने वाला है इसलिए ईश्वर ही उपासना के योग्य है। शेष सब जड और चेतन पदार्थ अपने-अपने स्थान पर यथायोग्य पूजा, सेवा, रक्षा और मान के योग्य है। ओ३म् शम्।

—मागे राम आर्य
उमा आटो सेंटर, सावेडी रोड अहमदनगर-४१४००१

॥ ओ३म् ॥

महात्मा रसीलाराम वैदिक वानप्रस्थाश्रम

आनन्दधाम गढ़ी, (ऊधमपुर) चलो

उद्घाटन-ऋषिलंगर-भण्डारा

१. २२ दिसम्बर १९८५ को आश्रम में ८ नए कमरों का उद्घाटन श्री तेजराम गुप्ता ठेकेदार गांधीनगर जम्मू करेंगे।
२. श्री केदारनाथ गुप्ता प्रधान आर्यसमाज गारुलिया (कलकत्ता) महात्मा सूर्यदेव जी वानप्रस्थ से वानप्रस्थ की दीक्षा लेंगे और आश्रम को जीवन दान करेंगे।
३. लाला ढेरामल एडवोकेट ऊधमपुर 'ओ३म्' का झण्डा फहरायेंगे।
४. ऋषिलंगर में हजारों लोग भोजन करेंगे।
५. पं० हरीश चन्द्र जी शास्त्री, हवन यज्ञ करवायेंगें।
६. ऋषिलंगर में चावल, दालें, घी, गुड़, खांड, तेल, नमक, मिर्च, मसाले और धन की राशि भेजकर पुण्य के भागी बनें।

योग साधान शिविर

२३ दिसम्बर से २९ दिसम्बर १९८५ तक योग साधना शिविर होगा जिसमें वेदों और दर्शनों के विद्वान् संन्यासी स्वा० वेदानन्द जी सरस्वती (रोपड़) योग का प्रशिक्षण देंगे। योगासन, प्राणायाम, ध्यान, समाधि, अभ्यास की सरल वैज्ञानिक विधि, शास्त्रीय पद्धतियों का प्रशिक्षण दिया जाएगा। इन्हीं विषयों पर प्रवचन और खुलकर शंका-समाधान होगा।

कार्यक्रम

प्रातः ६ से ८ बजे – ध्यान, अभ्यास, सन्ध्या और यज्ञ।   दोपहर १० से १२ बजे – भजन, उपदेश।
सायम् ४ से ६ बजे – योगासन, प्राणायाम, सन्ध्या।   रात्रि ८-३० से १० बजे – भजन, उपदेश।

सूचना:—(१) शिविर में भाग लेने वाले अपने साथ बिस्तर, आसन, टार्च आदि आवश्यक सामान साथ लाएं।

(२) २२ दिसम्बर १९८५ रविवार प्रातः ७ बजे "गोपाल भवन कच्ची छावनी जम्मू" से बसे रवाना होंगी। आने जाने का किराया १५) और शिविर मे भाग लेने वाले व्यक्ति का ५) प्रति दिन के हिसाब से भोजन का ७ दिन का खर्च ३५) अलग होगा। ७ दिन ठहरने की पाबन्दी नही जितने दिन कोई ठहरना चाहे ठहर सकता है। अपनी-अपनी सीट बुक कराने के लिए "गोपाल भवन कच्ची छावनी जम्मू, फोन न० ४२९५०" से सम्पर्क करें। सीट बुक कराने की आखिरी तारीख १५ दिसम्बर होगी। बाहिर से आने वाले व्यक्ति २१ दिसम्बर शाम तक 'लूथरा एकेडमी कच्ची छावनी जम्मू' में पहुंच जाएं। २२ दिसम्बर शाम ७ बजे आश्रम के सभी ट्रष्टियों और अन्तरंग सभा के सदस्यो की बैठक होगी जिसमें आश्रम सम्बन्धी सभी विषयों पर विचार होगा।

आश्रम का रास्ता:—जम्मू से ऊधमपुर जाएं, ऊधमपुर बस स्टेण्ड से जिब थाती वाली सिटी बस में बैठ जाएं और बाल नगर उतर जाए, बालनगर से नहर के किनारे-किनारे आश्रम पहुंच जाएं।

नोट:—कच्ची छावनी जम्मू से बस चलने का समय ७ बजे, सवारियां पहुंचने का समय ६-३० बजे, आर्य समाज रिहाड़ी कालोनी से बस चलने का समय ७-३० बजे, सवारियां पहुंचने का समय ७ बजे।

बालनगर से आश्रम तक २-३० किलोमीटर पैदल चलना होगा और सामान आश्रम तक ले जाने का खर्च अलग होगा।

(आश्रम की "निर्माण और योजना" पुस्तक मुफ्त मंगाएं)

—: निवेदक :—

विद्याभानु शास्त्री
मन्त्री

गोपाल भिक्षु
प्रधान

महात्मा रसीलाराम वैदिक वानप्रस्थाश्रम आनन्दधाम गढ़ी, (ऊधमपुर)

आर्य प्रतिनिधि सभा साऊथ अफ्रीका द्वारा हीरक जयन्ती के महोत्सव पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के महामन्त्री श्री ओम्प्रकाश जी त्यागी का उद्घाटन भाषण

मानव मात्र के कल्याण के लिए शुभ सन्देश

बहनो और भाइयो !

आज के इस महान उत्सव पर मैं सर्वप्रथम उस प्रभु का धन्यवाद करता हूँ जिसकी अपार कृपा से इस युग मे एक महान व्यक्तित्व वाले महापुरुष का प्रादुर्भाव हुआ, जिसने भारत ही नही अपितु विश्व की मानव जाति की कल्याण की भावना को लेकर कार्य किया। जिसे हम महर्षि दयानन्द सरस्वती के नाम से श्रद्धा पूर्वक सम्मान करते हैं उस महान ऋषि ने मानव के दुख के कारण को समझा उनकी दृष्टि मे दुःख का कारण रूढ़ीवाद-अन्धविश्वास और अज्ञानता थी। अतः उन्होने सर्वप्रथम मनुष्यो को इस अन्धकार से निकाल कर प्रकाश की ओर ले जाने सम्बन्धी वेदो के ज्ञानका प्रचार किया। स्वामी दयानन्द जी का भारत भूमि पर उस समय प्रादुर्भाव हुआ जबपूर्व और पश्चिम के अनेक विद्वान् भारत की सभ्यता तथा संस्कृति पर मनमाने ढंग से कुठाराघात कर रहे थे जो न ही विज्ञान से मेल खाते थे न ही सत्य पर आधारित थे। उधर बुद्धिजीवी विद्वानो मे इतना भी साहस न था कि वह इस अनर्गल बातो का विरोध कर सके। स्वामी दयानन्द जी के आगमन से पूर्व भारतीयो ने केवल वेदो के नाम सुन रखे थे। परन्तु उसमे क्या ज्ञान भरा है इसकी किसी को न तो जानकारी थी न ही किसी को रुचि। अधिकांश लोग वेदो को कर्म-काण्ड की पुस्तक मानते थे और उनके अनुसार यह वेद न तो आध्यात्मिक ज्ञान का भण्डार है और न ही उसमे किसी सत्य ज्ञान तथा विज्ञान की बात है। वेदो को श्रुति मानने के कारण प्राय यह धारणा रही कि यह वंशानुगत चली आ रही है और एक भी मुद्रित प्रतिलिपि भारत मे उपलब्ध नही थी इसका मुद्रण अपवित्र कार्य तथा अपराध माना जाता था हालांकि मुद्रण का कार्य भारत मे आरम्भ हो चुका था।

दूसरी ओर पूर्व विद्वानो ने इसको जर्मनी, फ्रांसीसी तथा इटैलियन भाषा मे वेदो का मुद्रण करा लिया। वेद सायण और महीधर के अनुसार वेद गडरियो के गीत और इसमे जादू टोने तथा पौराणिक गाथाए हैं तथा यह मनुष्यो को भ्रमजाल मे फसाने वाले हैं।

जब एक रूसी विद्वान दार्शनिक ने वेदो का अपनी रूसी भाषा मे अनुवाद का प्रयास किया तो उसने पूर्व के दार्शनिकों द्वारा अनुवाद से असहमति प्रकट की और उसे असत्य माना। परन्तु आज विश्व का प्रत्येक मानव इस बात से चकित हो रहा है कि "यू. एस एस आर" दार्शनिक ने विशेष तौर पर ऋग्वेद का रूसी भाषा मे प्रकाशित किया है जैसा कि २२-१०-८५ को पी टी आई. भारत ने राष्ट्रीय समाचारो मे प्रसारित किया। आज समस्त सामाजिक विचारक, आध्यात्मिक और विद्वानो ने ज्ञान की प्रथम पुस्तक के रूप मे माना है। जिसे परमात्मा ने 'ओ३म्' प्राणीमात्र के कल्याण के लिए ऋषियो के द्वारा दिया। इसी सम्बन्ध मे एक श्री ग्रिफिथ Griffith जो कि वेदो के बड़े दार्शनिक है श्री महीधर के यजुर्वेद के अनुवाद पर टिप्पणी करते हुए लिखा है कि मैं अंग्रेजी भाषा की पवित्रता को ऐसे अनुवाद से अशोभित नही करना चाहता। इन्ही अवसर पर सर्वश्री विलसन, मैकडानल और मैक्समूलर को भी इस ज्ञान की पुस्तक पर सन्देह है क्योंकि उन्हे मात्र एक भ्रम है कि मनुष्य की उन्नति प्रभु यसु के प्रादुर्भाव से हुई और इस्लाम के सम्बन्ध में यह भावना कि मोहम्मदके आगमन पर हुई और उनके अनुसार बाईबल और कुरान ही मनुष्य के उत्थान और प्रगति का कारण है।

"एक महान व्यक्तित्व महर्षि दयानन्द"

महर्षि दयानन्द जी एक विशेष व्यक्तित्व के स्वामी थे। वह वेदो के दार्शनिक थे। मैडम ब्लावत्सेक Maddm ने अपनी श्रद्धांजलि को अद्वितीय को इस प्रकार दी।

यह अक्षरशः सत्य है कि शंकराचार्य के उपरान्त भारत ने ऐसा संस्कृत का महान् विद्वान, निर्भीक, सत्यवक्ता बुराईयो के विरुद्ध लडने वाला महान परिश्रमी, गूढ़ से गूढ़ विषयो को समझने वाला दयानन्द जैसा महान व्यक्तित्व नही देखा वह आज के आधुनिक युग में एक ऐसा विद्वान है जिसने बिना भेद, भाव जाति-पाति, वर्ण के समस्त मानव मात्र वेदो के पठन पाठन का अधिकार दिया।

(शेष आगामी अंक मे)

आर्य प्रतिनिधि सभा दक्षिण अफ्रीका की कार्यकारिणी समिति डरबन प्रदेश के पदाधिकारी

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन के सूत्रधार श्री शिशुपाल राम भरोस प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा दक्षिण अफ्रीका।

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन दक्षिण अफ्रीका के सूत्रधार पंडित नरदेव वेदालकार अध्यक्ष वेद निकेतन तथा वैदिक पुरोहित मडल।

बैठे हुए (बाए से) श्री रवि जीवन (कोषाध्यक्ष), श्री सानन्द सत्यदेव (उपप्रधान), श्री शिशुपाल रामभरोस (प्रधान), पं० नरदेव वेदालकार (अध्यक्ष-वेद निकेतन और वैदिक पुरोहित मण्डल), श्री मनोहर सुमेरा (सयुक्त मन्त्री), खडे बाए से श्री भारत गंगादयाल (सयुक्त कोषाध्यक्ष), श्री बिसराम रामविलास(सयुक्त मन्त्री) श्री सत्यानन्द शिवप्रसाद (सयुक्त मन्त्री)

ओ३म्
सार्वदेशिक
साप्ताहिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

सृष्टिसम्वत् १९७२९४९०८६] वर्ष २० अङ्क ५२]

मार्गशीर्ष शु० ४ स० २०४२ रविवार १५ दिसम्बर १९८५

दयानन्दाब्द १६१ दूरभाष २७४७७१ वार्षिक मूल्य २०) एक प्रति ५० पैसे

विदेशों में आर्यसमाज

डरबन (दक्षिण अफ्रीका) में आर्य महासम्मेलन

सार्वदेशिक सभा के प्रतिनिधियों का आगमन

वेदामृतम्

परिवार में हार्दिक एकता हो !

सञ्ज्ञपन वो मनसः,
अथो सञ्ज्ञपन हृदः।
अथो भगस्य यच्छ्रान्त,
तेन सञ्ज्ञपयामि वः ॥
अथर्व० ६।७४।२॥

हिन्दी अर्थ—तुम्हारे मन की एकता हो (तुम्हारे मन एक हो)। तुम्हारे हृदय एक हो। ऐश्वर्य के देव भग का जो श्रम जनित तेज है, उससे तुम्हे एकता के भाव से युक्त करता हू।

श्री ओम्प्रकाश जी त्यागी

स्वामी सत्यप्रकाश जी महाराज

श्री ब्रह्मदत्त जी स्नातक

डरबन १३ दिसम्बर।

आर्य महासम्मेलन बडे उत्साहपूर्वक वातावरण मे प्रारम्भ हो गया। भारत से आर्य समाज के नेता श्री स्वामी सत्यप्रकाश जी, श्री ओम्प्रकाशजी त्यागी एव श्री प०ब्रह्मदत्त जी स्नातक तथा मोरीशस नैरोबी लन्दन तनजानिया अमरीका आदि देशो से आर्यसमाज के अनेक प्रतिनिधि महासम्मेलन मे भाग लेने के लिये पहुच रहे है।

डरबन आर्य महासम्मेलन के अग्रज नेता श्री शिशुपाल रामभरोस, प०नरदेव वेदालकार तथा श्री सत्यदेव भारद्वाज वेदालकार उपप्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा भी सम्मेलन मे पधार गये है।

सभा प्रधान को उग्रवादियों का धमकी भरा पत्र

पत्र का हिन्दी अनुवाद इस प्रकार है :–

राज करेगा खालसा
खालिस्तान जिन्दाबाद !

रामगोपाल शालवाले आप एक हिन्दू लीडर हैं। हिन्दू हमारे दुश्मन हैं। हम सब हिन्दुओ को खत्म कर दगे। आप १९८१ से हमारे विरोध मे काम कर रहे हैं। सन्त भिण्डरा वाले ने भी आपको चेतावनी दी थी परन्तु आप और आपकी आर्यसमाज हमारे खिलाफ काम कर रही है। पजाब मे आपने राजीव गाधी के लिये काम किया लेकिन हम जीत गये। अब हमारी सरकार पजाब को खालिस्तान बनाने का काम कर रही है। दिल्ली मे दगो के दौरान सब सिखो को नुकसान हुआ और मिश्रा कमीशन मे आप ही हमारे दुश्मन हैं। हमने ये केस भी जीत लिया अब समय आ गया है आपको और आपके नए लीडर राजीव गाधी को जहन्नुम मे पहुचा दिया जायेगा जहा पर इन्दिरा गाधी आपका स्वागत करेगी।

ए०आई०एम०वाई एफ०
राज करेगा खालसा
खालिस्तान जिन्दाबाद

(मूल पत्र पृष्ठ २ पर देख)

सम्पादक—ओम्प्रकाश पुरुषार्थी

प्रबन्ध-सम्पादक—सच्चिदानन्द शास्त्री

अन्तर्राष्ट्रीय वैदिक महासम्मेलन

तारीख-१३ से १७ दिसम्बर तथा २१-२२ दिसम्बर १९८५

विविधरंगी नगर शोभा-यात्रा : ऐतिहासिक प्रदर्शनी लक्ष्य बिन्दु—उत्तराधिकार

THEME–VEDIC HERITAGE

देश-विदेशों के ५०० से अधिक प्रतिनिधि उपस्थित रहेंगे, सहस्रों की संख्या में जनता की उपस्थिति की सम्भावना

दक्षिण अफ्रिका के दरबन नगर के चेट्सवर्थ उप नगर मे स्थित दयानन्द गार्डन्स मे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली और आर्य प्रतिनिधि सभा साउथ अफ्रिका के तत्वावधान मे अन्तर्राष्ट्रीय वैदिक महासम्मेलन की तैयारिया जोर शोर से चालू हो गयी हैं। १० एकड के विशाल मैदान मे स्थित दयानन्द गार्डन्स मे यह महासम्मेलन होने जा रहा है। भारत से बाहर यह चौथा आर्य महासम्मेलन है। इससे पूर्व तीन महासम्मेलन मोरिशस, लन्दन और नैरोबी मे हो चुके हैं।

दरबन के इस महासम्मेलन मे भाग लेने के लिए देश-विदेशो से ५०० से अधिक प्रतिनिधि उपस्थित हो रहे हैं। भारत से आने वाले ६० प्रतिनिधि भारत सरकार की अनुमति की प्रतीक्षा मे हैं। दिल्ली से आने वाले प्रतिनिधि सार्वदेशिक सभा के महामन्त्री श्री ओमप्रकाश जी त्यागी के नेतृत्व मे और बम्बई, गुजरात के ५० प्रतिनिधि श्री सुभाष नवीन चन्द्रपाल के नेतत्व मे सात सहस्र मीलो के प्रवास की तैयारी मे हैं। मोरिशस से आर्य सभा, मोरिशस के प्रधान श्री मोहन लाल जी मोहित के नेतृत्व मे ७५ प्रतिनिधि उड्डयन के लिए उद्यत हैं। सार्वदेशिक सभा के सयोजक श्री ब्रह्मदत्त जी स्नातक ४ सप्ताह पूर्व ही सम्मेलन के आयोजन के लिए पहुच गये हैं। इग्लैण्ड, अमेरिका केनेडा, फीजी आदि देशो के प्रतिनिधि भी सम्मेलन मे सम्मिलित होने के लिए चल पडे हैं।

सम्मेलन के अध्यक्ष अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति के दार्शनिक और वैज्ञानिक विद्वान स्वामी सत्य प्रकाश जी सरस्वती मनोनीत हुए हैं। सम्मेलन का कार्यक्रम ता० १३ से १७ दिसम्बर तक पाच दिनो के लिए दरबन मे रखा गया है।

तथा ता० २१ और २२ दिसम्बर को यह सम्मेलन नेटाल की राजधानी पीटर मोरित्सबर्ग शहर मे होगा। दयानन्द गार्डन्स मे सम्मेलन के लिए दो सहस्र व्यक्तियो को बैठाने के लिए बडा शामियाना लगाया जा रहा है। वहा के विशाल भवन मे विश्व मे फैली आर्य सस्थाओ को विविध प्रवृत्तियो को बनाने वाली ऐतिहासिक प्रदर्शनी का आयोजन हो रहा है। इसका उद्घाटन स्नातक ब्रह्मदत्त जी के शुभ हस्तो से होगा। ता० १३ को महान उद्योग पति और आर्य सिद्धान्तो के विद्वान श्री सत्यदेव जी भारद्वाज वेदालकार के सभापतित्व मे विदेश प्रचार सम्मेलन होगा।

ता० १४ दिसम्बर को आर्य प्रतिनिधि सभा साउथ अफ्रिका का हीरक महोत्सव सभा के सुयोग्य प्रधान श्री शिशुपाल जी रामभरोस के अध्यक्षत्व मे मनाया जायेगा। समारम्भ का उद्घाटन ता० १७ फरवरी १९८५ के बोधोत्सव (महाशिवरात्री) के शुभ दिन स्वाजीलेंड स्थित आर्य विद्वान श्री दर्शन लाल लोरैया के द्वारा हुआ था और तब से इस समारम्भ का कार्यक्रम यहा के विविध ग्रामो और नगरो मे होते रहे हैं।

ता० १५ को अन्तर्राष्ट्रीय वैदिक महासम्मेलन का उद्घाटन आर्यो की शिरोमणि सभा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री ओमप्रकाश जी त्यागी के शुभ कर कमलो से होगा। इस अवसर पर सम्मेलन के अध्यक्ष पद से स्वामी सत्य प्रकाश जी "वेद. मानव जाति का ईश्वर प्रदत्त ज्ञान' विषय पर मगल प्रवचन करेंगे। और विदेशों के प्रतिनिधि अपना शुभ-सन्देश सुनायेंगे।

ता० १६ को वैदिक शिक्षा परिषद और आदर्श वैदिक परिवार सम्मेलन का, दरबन स्थित आर्य भवन मे, आयोजन किया गया है। जिनमे युवको, विद्यार्थियो और महिलाओ की विविध समस्याओ पर विचार-विमर्श होगा जिसका अध्यक्षपद लन्दन आर्य समाज के प्रधान डा० सुरेन्द्रनाथ भारद्वाज सुशोभित करेगे।

सोमवार ता० १७ दिसम्बर को दरबन वेस्टविल यूनीवर्सिटी के प्रागण मे स्वामी सत्यप्रकाश जी के सभापतित्व मे सस्कृत परिषद रखी गयी है। जिसका उदघाटन युनिवर्सिटी के वाइस चासलर और रेक्टर प्रो० प्रेलिग के शुभ-हस्तो से होगा। इस परिषद मे सस्कृत के

(शेष पृष्ठ १२ पर)

सभा-प्रधान को उग्रवादियों के धमकी भरे पत्र की मूल प्रति

ੴ

Raaj Karaga Khalsa
Khalistan Jindabad

Ram Gopal Shalwale you are a hindu leader Hindus our enemy We finish all the Hindus. Since 1981 you are working against us Sant Bindrawale Jee also warn you But you and your arya Samaj working against us In Punjab elections you work for Rajiv Gandhi But we win elections Now our Govt. in Punjab working to make Khalistan. In the Roits of Delhi all Sikhs are suffered in misra Commission you are our only enemy we win also this Case Now your time has come you will go to Hell with your new leader Rajiv Gandhi where Indira Gandhi well come you both

AISYF

Raaj Karaga Khalsa
Khalistan Jindabad

आर्य महासम्मेलन डरबन के अवसर पर

सार्वदेशिक सभा मन्त्री श्री ओम्प्रकाशत्यागी का भाषण

((गतांक से आगे)

उन्होंने स्त्रियों और शूद्रों को वेद पढ़ने का अधिकार दिलाया जबकि इससे पूर्व स्वामी शंकराचार्य तथा रामानुज जैसे धर्माधिकारी उपरोक्त वर्णों को वेद पढ़ने की स्वीकृत प्रदान करने में संकोच करते थे। वेद के मौलिक सर्वहितकारी ज्ञान के आधार पर किसी प्रकार का प्रश्न चिन्ह ही नहीं उठता विशेषतया जब कि अन्य सभी मतो में नारी का कहीं भी धार्मिक स्थल पर पर नाम नहीं परन्तु वेदों में उनका चित्रण भिन्न है। कितनी ही स्त्री ऋषियों जैसा कि "लोपामुद्रा" और इसी प्रकार अन्य ऋषि और सन्त और वह "ऋषियों मन्त्रद्रष्टा" कहलाती है।

स्वामी दयानन्द जी ही एक ऐसे महान विद्वान व्यक्ति थे जिन्होंने जन्म-जातिपाति-रंगभेद इत्यादि के आधार पर होने वाले समाज की कठोर निन्दा की उन्होने वेद की शिक्षा के आधार पर इस कुरीती का मूल से उन्मूलन करने की समाज को प्रेरणा दी—यह महर्षि दयानन्द जी की प्रेरणा का फल है कि भारतीय विधान तथा अन्तर देशीय महान संगठनों (U.N.O.) ने भी इसी विचारधारा को स्वीकार करते हुए किसी विशेष समाज वर्ग अथवा संगठन को कोई विशेष स्थान तथा सुविधा देना अनुचित माना है। इस प्रकार स्वामी दयानन्द ने अनेक महत्वपूर्ण क्षेत्रों में मानव समाज का मार्ग दर्शन किया—उन्होंने इस पूर्ण अनुशासन बद्ध गुरुकुल शिक्षा प्रणाली और छात्रावास पद्धति का दिग्दर्शन भी कराया—मेरा पूर्ण विश्वास है कि आप सभी लोग इस बात से सहमत होंगे कि शिक्षा क्षेत्र में पब्लिक स्कूलों का चलन महर्षि दयानन्द की गुरुकुल प्रणाली के उपरान्त आरम्भ हुआ—वह पिछड़े वर्ग के नर-नारियों के प्रति अत्यन्त सहानुभूति पूर्ण होते उनके अधिकारों का समर्थन करतेथे इसमें कोई संदेह नही कि फ्रासके महान विचारक श्री रोमन रोलाड (Romain Rolland।) ने स्वामीजी को सिंह पुरुष कहते हुए प्रशंसा की है क्योकि उनके विचार में स्वामी जी ने गति हीन समाज मे नई गति लाए—श्री फ्रंनिकFrancis-unoghusband स्वामी दयानन्द जी प्राचीन आर्य ऋषि के रूप में देखते हैं। महर्षि ही सर्वप्रथम एक ऐसे विद्वान प्रबल दार्शनिक थे जिन्होंने वेदों की व्याख्या न केवल सस्कृत भाषा में की अपितु भारतीय लोगों की सुविधा के लिए आर्य भाषा में (हिन्दी में) भी की यह प्रसन्नता का विषय है कि आर्य जगत की सर्वोपरी सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने जहां हिन्दी भाषा में चारो वेदों का भावार्थ सहित प्रकाशन किया है वहां सभा द्वारा अंग्रेजी भाषा में भी चारों वेदो का प्रकाशन हो रहा है वहा विश्व की अन्य भाषाओं मे भी वेदों के प्रकाशन का आयोजन होने जा रहा है। स्वामी दयानन्द जी ने मानव मात्र के उत्थान तथा सामूहिक सगठन के प्रति एक नया दृष्टिकोण अपनाया राज्य कार्य तथा शासन के सम्बन्ध मे उन्होंने अपने देश मे अपने राज्य को जनहितकारी मानते हुए स्वदेशी राज्य की कामना करते हुए लिखा कि विदेशी राज्य चाहे कितना धर्मनिरपेक्ष, भारतीय और विदेशियों को बिना भेदभाव माने, कितना ही दयालु अथवा अपने माता पिता तुल्य लाभकारी क्यों न हो—परन्तु विदेशी राज्य जनता को पूर्ण रूपेण प्रसन्न नहीं कर सकता—स्वामी जी एकता-भाईचारा तथा समाज अधिकार पर विश्वास रखते थे—स्वामी जी द्वारा कृत महान ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में उनके विश्वास तथा इच्छाओ का इस उद्देश्य की सफलता प्राप्ती के दर्शन करते हैं। इन्हीं उद्देश्यों की सफलता के लिए १८७७ में जब ब्रिटिश दरबार का आयोजन वासराय श्री लिटन द्वारा किया गया था तब स्वामी जी महाराज ने सभी मतों के अनुयायियों के मुख्य २ लोगों को आह्वान करते हुए कहा था कि आओ हम सब मिलकर बैठे और एक समान आध्यात्मिक और मूल्यों का आविष्कार करें कि कैसे हम और किस प्रकार से उन बातों पर चलें जिससे हम अलग-अलग न हों।

स्वर्गीय श्री यदुनाथ जी सरकार जो कि इतिहास के जाने माने महापुरुष समझे जाते हैं, आर्य समाज द्वारा अर्जित कार्यों को दर्शाते हुए कहते हैं कि जहां जहां भी आर्य समाज का प्रचार-प्रसार हुआ वहां जन जन में जागृति उत्पन्न हुई। यह प्रजातान्त्रिक समाज है। आर्य समाज की अधिकांश शक्ति, शिक्षा के प्रसार में दुखियों की सेवा में, पिछड़ी [illegible] जानी वाली जाति के उत्थान में लगी, तथा धार्मिक प्रचार में भी किसी से पीछे नहीरही अ—इनका (आर्य समाज) का नवीन भारत के उत्थान में, धार्मिक दृष्टिकोण सामाजिक तथा सांसारिक योगदान अति महत्वपूर्ण रहा है। जिसका परिणाम है कि समस्त हिन्दू इसे आदर और सम्मान की दृष्टि से देखते हुए इसके कार्यक्रम मे पूरा २ भाग लेता है।

स्वामी दयानन्द जी आर्यों को अन्य मनुष्यों कल्याण के निमित्त के शक्तिशाली अति अनुशासित तथा त्याग भावना वाले मनुष्यो की कोटि में अन्यों के मुकाबले श्रेष्ठ देखना चाहते थे। यहां मैं यह बात स्पष्ट कर दूं कि "आर्य" शब्द किसी जाति-रंग इत्यादि का सूचक नही है। वेदों ने आर्य को ईश्वर पुत्र कहा है अर्थात आर्य सही मानों मे ईश्वर पुत्र हो—वैदिक मान्यता अनुसार सभी को पठन पाठन का अधिकार है जिसे हम मनुर्भव करते हैं अर्थात सहीमानो में मनुष्य को मनुष्यों के गुण धारण करने चाहिए। पवित्र वेदों के अनुसार किसी को भी संकुचित भावना वाला नहीं होना चाहिए—इसी लिए स्वामी दयानन्द जी जात-पात और जातिभेद को अनावश्यक मानते थे और मानव को एकता मे पीरोने का प्रयास स्वामी दयानन्दजी ने किया अजमेर (भारत) में १८८३ मे देहान्त हुआ और उसके पीछे छोड़ गए महान कान्तिकारी, जनहितकारी, परोपकारी सस्था जिसे विश्व "आर्यसमाज" के नाम से जानता है श्री त्यागी जी ने आर्य समाज के दस नियमों की अति सुन्दर-प्रभावशाली तथा मनोवैज्ञानिक विधि से व्याख्या करते हुए गीता के उपदेशानुसार आर्य समाज की मान्यता तथा उद्देश्यों का वर्णन किया।

न त्वहं कामये राज्यं न स्वर्ग्यं न पुनर्भवम्।
कामये दुःखतप्तनां प्राणिनामार्तिनाशनम् ॥

उन्होंने बताया आर्य समाज की सदस्यता के लिए (बिना भेदभाव के) न केवल साऊथ अफ्रीका अपितु मनुष्य मात्र के लिए द्वार खुले हैं। ऋग्वेद के दो मन्त्रो :—

"ओ३म् सं गच्छध्व" तथा "ओ३म् समानो मन्त्र"—की भी अति रोचक व्याख्या कर उपस्थित जनसमूह को एक प्रेरणा दीं—महर्षि दयानन्द जी ने ब्रह्मा से लेकर जैमिनी ऋषियो द्वारा प्रतिपादित चारों वेदों के अनुसार आर्यसमाज ने अपने जन्म काल से आज तक मनुष्य मात्र के उत्थान की योजना बद्ध सेवा कर रहा है। श्री ओम्प्रकाश जी त्यागी ने आगे बताते हुए कहा कि उनके विचार मे निम्न आठ सूत्री योजना भावी कार्य के लिए उपयुक्त रहेंगी :—

(१) आर्य समाज मन्दिरों की पवित्रता तथा धार्मिक प्रवचनों तथा सगीत का प्रबन्ध।

(२) यज्ञों का प्रसार।

(३) वैदिक शिक्षा का आयोजन।

(४) सही दिशा में योग का प्रचलन।

(५) शिक्षा का उत्तम कार्यक्रम जिसमे केवल लिखना-पढ़ना और अंकगणित ही हो अपितु दूसरे धर्मों के अध्ययन का भी प्रबन्ध हो और पढ़ने वाले विद्यार्थियों को अच्छा नागरिक और आध्यतमवादी बना सके।

(६) युवको को आकर्षण करने के लिए उनके लिए शिविरो का आयोजन, वाद विवाद प्रतियोगिता का प्रबन्ध भाषण तथा सगीत और कविताएं इत्यादि का सुचारू रूप से प्रदान किया जाए।

(७) प्रत्येक आर्य समाज निम्न कहे जाने वाली जाति के उत्थान के लिए "सेवा आश्रम" की स्थापना करे—तथा वृद्धो, उपेक्षित बच्चों तथा शिक्षा हीन युवकों की वहा शिक्षा का प्रबन्ध हो इसके लिए जनसाधारण से मिलजुलकर अर्थकी व्यवस्था कर लघुउद्योग तथा कुटीरके माध्यमसे भी की जाए।

(८) समाज के अधिकारियो को चाहिए कि वह सप्ताह में एक बार अथवा महीने में एक बार अपने सदस्यों तथा अपनी २ कालोनी-नगर के जनसमूह से भी उनके दुःख सुख में भाग ले तथा उनके लिए जहां तक हो सके समाज की सेवाएं उपलब्ध कराए ताकि एक परिवार की भावना आवे।

यह एक निश्चित साधन हैं जिनके अनुकरण करने से हम अपने उद्देश्य की प्राप्ति कर सकते हैं।

—ओम्प्रकाश त्यागी

सामयिक चर्चा–

धर्म की आड़ में उत्पात क्यों ?

आजकल भारत में एक अजीब सी उथल पुथल मची है। एक तरफ देश तोड़क सिर-फिरे सिख उग्रवादियों ने उत्पात मचा रखा है तो दूसरी तरफ रूढ़िवादी उग्रपन्थी मुस्लिम नेता राजनैतिक लाभ उठाने की फिराक में है। भारत एक धर्मनिरपेक्ष राज्य है। धर्म की सुरक्षा संविधान द्वारा प्रदत्त है और कोई किसी के धर्म में हस्तक्षेप नहीं कर सकता। यह बात सभी अच्छी तरह जानते हैं।

अफसोस की बात तो यह है कि पहले चन्द सिख आतंकवादी धर्म की आड़ में गुरुद्वारों में हथियार जमा करते रहे। बाहर हत्याएं व लूटपाट कर गुरुद्वारों में शरण पाते रहे। कितने ही निर्दोष का खून पूजा स्थलों पर ही बहाया गया।

स्वर्ण मन्दिर अमृतसर में मुख्यग्रंथी साहबसिंह और उनके अंगरक्षक नानक देव जी के जन्म दिवस पर चली गोलियां एक ताजा उदाहरण है। बाबा नानक के जन्म के दिन नानक सिंह की हत्या या साहब सिंह जी का बहता खून कोई मामूली बात नहीं है। यह एक इंसानियत का खून है जो गुरु के दरबार में गुरु के सामने ही खून कर उग्रवादी फरार हो गये। क्या हमारे धर्म की यही सीख है ?

कोई भी धर्म इंसानियत से बढ़कर नहीं हो सकता। "भूखा बैठा तेरा पड़ोसी, तूने रोटी खाई क्या" की सीख हमें धर्म से ही मिली है। किसी भी धर्म में नहीं लिखा है कि अन्याय करना या जुल्म ढाहना उचित है। किसी के जीवन में जहर घोलकर सारी उमर उसे रोते छोड़ देने की आज्ञा कोई भी धर्म नहीं देता। फिर यह धर्म के नाम पर अन्याय व अत्याचार क्यों ? हमारे पूजनीय धर्मों को व्यर्थ के झगड़ों में किस कारण आये दिन घसीटा जाता है।

इन्दोर की शाहबानो बेगम (७५) के पति ने छोड़कर दूसरी शादी रचा ली। शाहबानो औरत का अधिकार मांगते हुए न्यायिक मजिस्ट्रेट की अदालत से होती हुई सर्वोच्च न्यायालय तक पहुंची। सर्वोच्च न्यायालय से उसे २५ मई को न्याय मिला कि उसका पति उसे गुजारा भत्ता दे। इसमें गलत ही क्या है ? औरत और मर्द को समान अधिकार हैं। तलाक शुदा औरत को भी जीवन यापन का पूरा अधिकार है।

सर्वोच्च न्यायालय के इस फैसले को लेकर उग्रपन्थी मुस्लिम नेताओं ने शोर डाल दिया कि न्यायालय ने 'मुस्लिम पर्सनल ला' में हस्तक्षेप किया है। शरीयत में हस्तक्षेप का अधिकार उसे नहीं है। पूरे देश में आज इस मामले ने तहलका मचा रखा है। आखिर क्यों? क्या मुस्लिम औरत को रोटी की जरूरत नहीं पड़ती ?

फैसले के बाद शाहबानो बेगम पर तरह-तरह के ऐसे दबाव डाले गये कि १५ नवम्बर को उसे सर्वोच्च न्यायालय से फैसला वापस लेने की गुहार करनी पड़ी। शाहबानो बेगम देश की सर्वोच्च अदालत से तो इन्साफ पा गई मगर कट्टरपन्थियों के आगे हारकर झुक गई।

शाहबानो के फैसले से जहां भीतर ही भीतर मुस्लिम महिलाओं में हर्ष की लहर दौड़ी थी, सिर गर्व से ऊंचा उठा था, अब वापस लेने गुहार से सभी मायूस हुए हैं। तलाक व गुजारा भत्ता का मामला सिर्फ शाहबानो के साथ नहीं। यह एक व्यक्ति का सवाल नहीं है बल्कि यह पूरे समाज का प्रश्न है। न जाने कितनी ही मुस्लिम महिलाओं को आज घुट-घुटकर जीवन यापन करने पर बेबस होना पड़ा है। क्या यह अन्याय नहीं है ?

सर्वोच्च न्यायालय के भूतपूर्व मुख्य न्यायधीश श्री चन्द्रचूड़ ने ठीक ही कहा है कि शाहबानो कानूनी रूप से अदालत का फैसला वापस नहीं लेसकती। इस फैसले का समाज सुधार में महत्व है और यह फैसला इस दिशा में एक बहुत बड़ी उपलब्धि है। जब मामला किसी समुदाय के हित में जुड़ा होता है। तब वह किसी व्यक्ति विशेष के पर्सनल ला की बात नहीं रह जाती।

फिरकापरस्त मुस्लिम नेता अपनी नेतागीरी के लिए लोगों को गुमराह कर रहे हैं। जुलूस, नारेबाजी का सिलसिला जारी है। सभी राजनीतिक दलों को चाहिए कि खुले दिल व दिमाग से वे इस ओर सोचें और जनमत को शिक्षित करें। यह वक्त वोटों की राजनीति करने का नहीं हैं। इस मुद्दे पर उठी सार्वजनिक बहस मुस्लिम नारी के उत्थान की दिशा में ऐतिहासिक भूमिका निभायेगी। धर्म के नाम पर संकुचित विचारधारा हमें आगे बढ़ने के लिए त्यागनी ही पड़ेगी।

—रमेश बग्गा

दैनिक वीर अर्जुन (१०-११-८५)

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब से त्रिशाखन का आदेश दिनांक १४-७-७५ रद्द

सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले द्वारा तत्सम्बन्धी सूचना रजिस्टर्ड पत्र द्वारा श्री वीरेन्द्र प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा, गुरुदत्त भवन, कृष्णपुरा चौक जालन्धर, प्रो० शेरसिंह प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा, दयानन्द मठ रोहतक और श्री सूर्यदेव प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली १५ हनुमान रोड, नई दिल्ली को ९-१०-८५ को भेज दी गई थी। इसके अतिरिक्त यह सूचना पंजाब, हरियाणा और दिल्ली के विद्या सभा सदस्यों को भी भिजवा दी गई थी।

सूचना पत्र की अविकल प्रतिलिपि निम्न प्रकार है:—

पत्र सं० ११६८ दिनांक ९-१०-८५

सेवा में प्रधान जी
आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब,
हरियाणा और दिल्ली

आप जानते हैं कि आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के त्रिशाखन के परिणाम स्वरूप पंजाब, हरियाणा और दिल्ली की आर्य प्रतिनिधि सभाओं का विधिवत् निर्माण करके तीनों सभाओं के सर्वसम्मत निर्वाचन की प्रक्रिया पूरी की जा चुकी है।

कतिपय विशेष परिस्थितियों को दृष्टि में रखकर १४-७-७५ को मैंने एक आदेश जारी किया था जिसमें १०-७-७५ के आदेश के पैरा ९ और १० को निरस्त कर दिया गया था। पर क्योंकि अब तीनों प्रतिनिधि सभाओं का विधिवत् गठन हो चुका है पर १०-७-७५ के आदेश के अनुसार गुरुकुल कांगड़ी तथा शिक्षण संस्थाओं के संचालन के लिए विद्या सभा का गठन ही शेष है, जिसे शीघ्र सम्पन्न करना आवश्यक है। अतः १४-७-७५ के आदेश को निरस्त कर यह आदेश जारी करता हूं कि १०-७-७५ के आदेश के अनुसार ही गुरुकुल कांगड़ी की विद्या सभा की बैठक की जाय, जिसमें कि जहां इन संस्थाओं के संचालन सम्बन्धी सब निर्णय लिए जायें, वहां साथ ही विद्या सभा के विधान को भी अन्तिम रूप से स्वीकार कर लिया जाय।

भवदीय

ह० रामगोपाल शालवाले
प्रधान सार्वदेशिक सभा, दिल्ली

प्रतिलिपि - डा० सत्यकेतु जी कुलाधिपति गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार,
श्रीमती कमला आर्या, मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब
तथा विद्या सभा के समस्त सदस्यों को सूचनार्थ।

मानस रोग चिकित्सा

डा० हरगोपालसिंह मनो विश्लेषक चिकित्सक
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार

मानस रोग आधुनिक युग में वृद्धि पर हैं। अब देखना है कि इन की चिकित्सा की क्या स्थिति है। यह प्रारम्भ में ही समझ लेना चाहिये कि शारीरिक रोगों की चिकित्सा करने वाले डाक्टरों से भिन्न मानस रोगों की चिकित्सा करने वाले विशिष्ट मनो विश्लेषक चिकित्सक होते हैं जो दवाओं का इस्तेमाल बिलकुल नहीं करते और केवल बातचीतों से ही चिकित्सा करते हैं। पाश्चात्य देशों में से अमरीका में हर एक लाख मरीजो के लिये १२.५ मनश्चिकित्सक उपलब्ध हैं जबकि रूस में ५.५, लन्दन मे १.७ और भारत में १५ मनश्चिकित्सक उपलब्ध हैं।

हमारे देश में केवल ३८ मानसिक अस्पताल हैं जहां २५ हजार रोगियों के लिये व्यवस्था है। बाकी रोगी बिना चिकित्सा के सड़कों पर फिरते हैं। उनका कोई इलाज नही। विदेशो मे प्राईवेट मनो-विश्लेषक चिकित्सक भी काफी होते हैं किन्तु हमारे देश के बड़े शहरों में तो एक दो मिलते हैं बाकी जगह नही मिलते। जिसका नतीजा यह होता है कि बिना चिकित्सा के रोग धीरे-धीरे बढते रहते हैं और जब हद से बाहर हो जाते हैं तो मानसिक अस्पताल ले जाते हैं जहां उनका इलाज करना मुश्किल हो जाता है।

मानव व्यक्तित्व का सबसे महत्वपूर्ण अधिष्ठाता मन है फिर भी उसके स्वास्थ्य का उपाय न करके लोग शारीरिक स्वास्थ्य पर ध्यान देते हैं। और व्यक्तित्व का मुख्य भाग उपेक्षित रह जाता है। इसके लिये जिम्मेदार जन-सामान्य का मन और उसके स्वास्थ्य के बारे में ज्ञान का न होना है। सभी लोग शारीरिक स्वास्थ्य और पौष्टिक आहार की तो बात करते हैं किन्तु मानसिक स्वास्थ्य तथा मनोबल प्राप्ति की बात नहीं करते। शरीर के छोटे प्रारम्भिक विकार जैसे जुकाम, बुखार, दर्द का तो सभी को पता चल जाता है और वे डाक्टर के पास जाकर इलाज करा लेते हैं किन्तु मन के प्रारम्भिक विकारों का सबको पता नही चलता और वे उत्तरोत्तर बढते रहते हैं। और फिर भयंकर मानसिक रोग के रूप मे प्रकट होते हैं। तब अधिकांश रोग चिकित्सा की परिधि से दूर हो जाते हैं। और रोगी तथा घरवालों को घोर निराशा और दुःख का सामना करना पड़ता है।

इस स्थिति से बचने का एकमात्र उपाय है कि जब किसी को प्रारम्भिक मानसिक परेशानी का अनुभव हो तभी मनो विश्लेषक चिकित्सक के पास परामर्श के लिये चले जाना चाहिये। इसमे तनिक भी हिचक नहीं करनी चाहिये, शारीरिक कष्ट की तरह मानसिक परेशानी और कष्ट हो जाना प्रत्येक मानव के लिये स्वाभाविक है। हमारे पास-पड़ौस अथवा साथ काम करने वालों में प्रारम्भिक स्तर के मानसिक रोगियों की बड़ी संख्या रहती है किन्तु वे अपनी परेशानी को पहिचान नहीं पाते और इस प्रकार अपने तथा समाज के लिए व्यवहारिक कठिनाईयां पैदा करते रहते हैं। जो कि उचित समय पर थोड़े से मनोपचार से ठीक हो सकती हैं।

पूर्णतया मानसिक रोग प्राय मनुष्य के अचेतनमन के स्तर से उठते हैं। अचेतन मन की अवस्था, कार्य एवं प्रभावी शक्ति के बारे में व्यक्ति की चेतना को बिल्कुल पता नही होता तथा इसी में पनपी विभिन्न भावना ग्रन्थियां और कुन्ठायें चेतन मन में विकृति और रोग उठाती रहती हैं। अचेतन मन बचपन से ही बनने लगता है और बड़े होने तक इसका भाग काफी विस्तृत बन जाता है जिसमें अच्छी भावनाये कम और अमान्य वासनायें अधिक रहती हैं। मात्रात्मक दृष्टि से पानी पर तैरते बर्फ के टुकड़े के समान करीब १ भाग चेतन मन का और ७ भाग अचेतन मन का होता है। अचेतन मन बहुत बड़ी शक्ति का भण्डार होता है और हमारे जाग्रत जीवन की क्रियाओं पर अदृश्य रूप से प्रभाव डालता रहता है।

मानसिक रोग को ठीक करने के लिये अचेतन मन तक पहुंचना अति आवश्यक होता है। और यही कार्य मनो विश्लेषक चिकित्सक रोगी से बातचीतों के द्वारा स्वतन्त्र साहचर्य करके करता है। बातचीतो से स्वतन्त्र साहचर्य प्राय सप्ताह मे दो बार करीब एक एक घन्टे का किया जाता है जिसके करीब १५-२० बार करने से अचेतन मन की ग्रन्थि खुलने लगती है। इस पद्धति मे मनोचिकित्सक रोगी के स्वप्नों का विश्लेषण भी करता है।

मनोचिकित्सक का कार्य बड़ी कुशलता का होता है क्योंकि मनुष्य को तो अपने अचेतन मन का पता नहीं होता। इसके लिये मनोचिकित्सक का चिर अनुभवी होना आवश्यक है। यही कारण है कि ऐसे मनोचिकित्सक बहुत ही कम मिलते हैं, लेकिन एक बार इस पद्धति से मानसिक रोग ठीक हो जाने पर फिर दोबारा वह रोग नहीं होता। यही इस मनोचिकित्सा पद्धति की विशेषता है जो किसी भी प्रकार की दवा देने वाली चिकित्सा पद्धति से उत्तम है। अतः मानसिक रोग शुरु होते ही मनोचिकित्सा निःसकोच और शीघ्र करा लेनी चाहिये अन्यथा रोग बढ जाने पर मानसिक अस्पतालों में भी रोगी की चिकित्सा असफल रहती है।

विदेशों में आर्यसमाज

—मनुदेव 'अभय' विद्यावाचस्पति

आर्यसमाज एक संस्था नहीं, अपितु सतत् चलने वाली एक बौद्धिक क्रान्ति है। विज्ञान ज्यों-ज्यों अपने नवीन अविष्कारों द्वारा विश्व मानवता के लिए आगे बढ़ता जायेगा, त्यों-त्यों आर्यसमाज द्वारा प्रतिपादित वैदिक सिद्धान्तों का प्रचार बढ़ता चला जावेगा। क्योंकि यदि विज्ञान प्रकृति के रहस्यों को उद्घाटित करता है तो वैदिक धर्म मनुष्यों को प्रकृति पर रहने योग्य श्रेष्ठ मानव बनाता है। यह श्रेष्ठ मानव आध्यात्मिक तथा भौतिक उन्नति से समन्वित महामानव होगा।

आर्य समाज एक शक्तिशाली तथा सुगठित महान् अन्तर्राष्ट्रीय संगठन है, जिसमें अध्यात्म प्रधान मनुष्यों का प्रवेश है। आर्यसमाज न केवल भारत अपितु विश्व के देशों में वैदिक संस्कृति एवं सभ्यता का प्रचार कर पीड़ित मानवता का उद्धार करने वाला है। यह कभी समाप्त न होने वाली एक क्रान्ति है।

सम्प्रति आर्यसमाज को स्थापित हुए ११० वर्ष पूर्ण हो चुके हैं। आर्यसमाज का संगठन तथा उसकी उपलब्धियों पर एक दृष्टि डालना आवश्यक है।

विश्व में आर्य समाज का संगठन—सम्पूर्ण विश्व में इस समय ८ हजार आर्य समाजें हैं। आर्य समाज की विचारधारा से प्रभावित लोगों की संख्या दस करोड़ व समाज के सदस्यों की संख्या ६ लाख है। इस समय आर्यसमाज के महर्षि दयानन्द उपदेशक विद्यालय टंकारा सहित ५ उपदेशक विद्यालय चल रहे हैं, जिनमें दयानन्द ब्रह्म महाविद्यालय हिसार प्रमुख है। हरियाणा में महर्षि दयानन्द विश्व विद्यालय अपना कार्य प्रारम्भ कर रहा है। सम्पूर्ण विश्व में इस समय ५० प्रतिनिधि सभायें तथा २०० जिला सभायें हैं, जिनमें सर्वोच्च सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा है। इसका कार्यालय रामलीला मैदान, नई दिल्ली-२ है।

आर्यसमाज के पास इस समय १२०० वैतनिक तथा २ हजार अवैतनिक उपदेशक हैं। आर्यसमाज की ओर से निकलने वाले मासिक व साप्ताहिक समाचार-पत्रों की संख्या की संख्या १२५ है। आर्यसमाज के पुस्तक प्रकाशकों को संख्या ६० है। आर्य समाज की ओर से चलने वाले गुरुकुलों की संख्या ७० हैं, जिनमें प्राय: १० हजार छात्र छात्राएं शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं। ग्रेजुएट तथा पोस्ट ग्रेजुएट कालेजों की संख्या ५०० है, जिनमें लगभग ५ लाख छात्र-छात्राएं अध्ययन कर रहे हैं। हाई स्कूलों की संख्या १२ सौ तथा प्राइमरी स्कूलों की संख्या १५०० हैं।

आर्य समाज के इस समय १० अनाथालय तथा २५ विधवाश्रम काम कर रहे हैं। वैदिक सिद्धान्तों के प्रचार-प्रसार पर प्रतिवर्ष १॥ करोड़ तथा शिक्षा पर प्रतिवर्ष प्राय: १५ अरब रुपये व्यय करता है। आर्यसमाज के वर्तमान में प्राय: २५ कन्या गुरुकुल व लगभग १०० कन्या महाविद्यालय सक्रिय हैं। अनुमानत: १२५ पुत्रियां पाठशालाओं में कार्य कर रही हैं। स्त्री शिक्षा पर आर्य समाज प्रतिवर्ष ७५ लाख रुपये खर्च करता है। आर्यजनों द्वारा निर्धन छात्रों को दी जाने वाली सहायता राशि १ लाख रुपये मासिक है।

आर्य समाज की संस्थाओं में लगभग इस समय २० हजार कर्मचारी कार्यरत् हैं। वैतनिक पुरोहितों की संख्या २५० है। आर्य समाज लगभग ८८ करोड़ की सम्पत्ति पाकिस्तान में छोड़कर आया है।

इस प्रकार आर्य समाज का भारत की उन्नति में एक बड़ा योगदान है। लगभग चार विश्व विद्यालयों में दयानन्द पीठ की रचना हो चुकी है तथा आर्य समाज से सम्बन्धित विषयों पर प्राय: ४५० व्यक्ति पी०एच०डी० कर चुके हैं।

सम्प्रति विदेशों में प्राय: १-१॥ करोड़ भारतीय प्रवासी रहते हैं। विदेशों में जहां-जहां आर्य समाज की स्थापना हो चुकी है और वहां सगठित तथा सुचारू रूप से कार्य चल रहा है, उन देशों का संक्षेप में वर्णन इस प्रकार है—

केनिया (पूर्वी अफ्रीका)—केनिया की राजधानी नैरोबी में सन् १९०३ में आर्य समाज की स्थापना हुई। यहां आर्य समाज का लाखों रुपयों के मूल्य का शानदार भव्य मन्दिर है। इतना विशाल मन्दिर सम्पूर्ण अफ्रीका में कहीं नहीं है। यहां इसी वर्ष विशाल आर्य महासम्मेलन होने जा रहा है। एक विशाल भवन कन्या पाठशाला का है, जिसमें हजारों छात्राएं शिक्षा प्राप्त करते हैं। यहां अतिथि शाला सुसंचालित पुस्तकालय वाचनालय है। आर्य समाज के तत्वावधान में स्त्री आर्य समाज बहुत सशक्त तथा प्रभावशाली है।

यहां से कुछ ही दूर किसुमु नामक नगर के आर्य समाज हैं। यह आर्य समाज सन् १९१० में स्थापित हुई थी। यहां भी यह सामाजिक एवं साहित्यिक गतिविधियों का केन्द्र बिन्दु बना हुआ है।

युगाण्डा—युगाण्डा के कम्पाला नगर में आर्य समाज की स्थापना १९०८ में की गई थी। इसके अतिरिक्त जिंजा तथा मवेल नगरों में आर्य समाज शिक्षा तथा समाज सेवा का कार्य कर रहा है। उल्लेखनीय है कि युगाण्डा के राष्ट्राध्यक्ष इदी अमीन की दुर्नीति के कारण जब सभी भारतीयों को युगाण्डा छोड़ना पड़ा तब आर्यों को अपनी लाखों की सम्पत्ति छोड़नी पड़ी।

जंजीबार—मोम्बासा से २०० मील दूर जंजीबार में १९०७ में आर्यसमाज स्थापित किया गया था। जिस स्थान पर आर्य समाज मन्दिर बना हुआ है, दुर्भाग्यवश वहीं १००-१२५ वर्ष पूर्व वहां गुलामों का बाजार तथा काले हब्शी दासों का क्रय-विक्रय होता था। उल्लेखनीय है कि जंजीबार के सुल्तान ने स्वयं उदारता पूर्वक आर्यसमाज मन्दिर के निर्माण में आर्थिक सहयोग दिया था। आर्य मन्दिर के साथ यहां विशाल ग्रन्थालय-वाचनालय है। यहां प्रवासी भारतीयों का एकमात्र प्रेरणा केन्द्र यही आर्य समाज है।

टांगानीका—जंजीबार के निकट स्थित जंजीबार की राजधानी दारेस्लाम है। यहां प्राय: १०-१५ हजार भारतीय निवास कर रहे हैं। सन् १९१९ में स्थापित आर्य समाज द्वारा डी०ए०वी० महाविद्यालय तथा एक कन्या विद्यालय चल रहा है। टांगानिक प्रदेश में टांगा, टबोरो और ववांजा नगर में भी आर्य समाजें धार्मिक कार्य उत्साह से काम कर रही हैं।

केनिया में सन् १९२२ में आर्य प्रतिनिधि सभा कार्यरत् है। पूर्वी अफ्रीका में आर्य समाज की प्राय: २॥ करोड़ की सम्पत्ति सुरक्षित है। इस प्रतिनिधि सभा से पूर्वी अफ्रीका की समस्त आर्य समाजें सम्बद्ध हैं।

दक्षिण अफ्रीका—इस भूभाग में नेटाल, ट्रांसवाल, केप और आरेंज फ्री स्टेट ऐसे चार प्रदेश हैं। नेटाल में १८६० में प्रवासी भारतीय आकर बसे। यहां मद्रास बिहार, उत्तर प्रदेश तथा गुजरात के अनेक मूलवासी आकर बसे हुए हैं। सन् १९२५ में महर्षि दयानन्द जन्म शताब्दी महोत्सव बड़े प्रभावशाली ढंग से मनाया गया। दक्षिण अफ्रीका आर्य प्रतिनिधि सभा से प्राय: २५-३० आर्य समाजें सम्बद्ध हैं।

फिजी द्वीप समूह—आस्ट्रेलिया के पूर्व तथा न्यूजीलैण्ड के उत्तर तथा प्रशान्त महासागर में फिजी द्वीप समूह में १८७९ में भारतीय लोग आकर स्थापित हुए थे। आर्य समाज के प्रचार के पूर्व यहां ईसाइयत का बोलबाला था। सन् १९१९ में आर्य समाज प्रतिनिधि सभा स्थापित कर सभी स्थानों की आर्य समाजों को सम्बद्ध कर दिया गया है। [illegible] आर्यसमाज की ओर से अनेक कालेज तथा कन्या विद्यालय चल रहे हैं। इस द्वीप में आर्य समाज की बातों की [illegible]

दक्षिण अमेरिका:—गियाना—इसके चारों भागों में आर्य समाजें स्थित है। आर्य समाज का शिक्षा सम्बन्धी कार्य सर्वत्र प्रशंसित है। गियाना में प्रायः ५ लाख भारतीयों का केन्द्र आर्य समाज है।

ट्रिनीडाड:—सन् १८४५ में आये हजारों भारतीयों ने छंग आवास नामक नगर में आर्य समाज स्थापित की। प्रिंसेज टाउन, सेंट जोसेफ आदि नगरों में आर्य समाज का कार्य प्रभाव ढंग से चल रहा है।

डच गियाना:—यहां आर्य समाज की स्थापना का बड़ा रोचक कारण है। सन् १९२६ में सुरीनाम के कुछ प्रबुद्ध नागरिक ने सत्यार्थ प्रकाश मंगाकर पढ़ा। इससे उनमें बौद्धिक क्रान्ति का सूत्रपात होकर उन्होंने राजधानी पारामारीबो में आर्य समाज की स्थापना की सन् १९३७ में आर्य प्रतिनिधि स्थापना की। जार्ज टाउन आर्य समाज की समस्त गतिविधियों का मुख्य केन्द्र बना हुआ है। इस प्रकार परिक्षेत्र में पचास से भी अधिक आर्य समाजें हैं। ५ स्त्री आर्य समाजें तथा १० आर्य वीर दल हैं। एक डी०ए०वी० कालेज चल रहा है।

ब्रिटेन:—लंदन में आर्य समाज १९७० में वैदिक मिशन के नाम से स्थापित किया था। परन्तु आज ५ वर्ष पूर्व वहां के एक अच्छे सुन्दर गिर्जाघर को खरीदकर उसे आर्य समाज मन्दिर के रूप में परिवर्तित कर उस भवन का नाम 'वन्दे मातरम्' रखा गया है। सन् १९८३ में सार्वदेशिक आर्य महा सम्मेलन हो चुका है। जिन अंग्रेजों ने भारत को १५० वर्ष तक पराधीन बनाकर रखा था, उन्हीं लोगों की जन्म भूमि पर आर्यों ने "वन्दे मातरम्" महर्षि दयानन्द तथा भारत माता की जय के गगन भेदी नारे लगाये। वर्तमान में वहां आर्य समाज कार्य प्रभावशाली ढग से चल रहा है।

थाईलैण्ड:—यहां आठ हजार भारतीय व्यापारी हैं। इनमें सिंधी, पंजाबी तथा गुजराती है। राजधानी बैंकाक में सन् १९२० में आर्यसमाज की स्थापना की गई है। जनता पर आर्य समाज का अच्छा प्रभाव है। आजाद हिन्द फौज का एक कैम्प नेताजी ने यहीं पर स्थापित किया था। यहां ४ लाख की सम्पत्ति आर्यसमाज की है।

बर्मा:—इस क्षेत्र में सन् १९२० में आर्य समाज का प्रवेश हुआ। रंगून में आर्यसमाज का विशाल भवन (मन्दिर) है। महर्षि दयानन्द लिखित सत्यार्थ प्रकाश का बर्मी भाषा में अनुवाद हो चुका है। अखिल बर्मा आर्यन लीग के अधीन १२ आर्यसमाजें हैं। रंगून नगर के अतिरिक्त मिटियाना, मौजिक मांडले, मोनथावा, क्वाव, टाउनजी, चंक, खासियों, नमदो, जियवाड़ी में आर्य समाजे कार्य कर रही हैं। सिंगापुर की आर्यसमाज पूर्वी एशिया की प्रमुख समाज मानी जाती है। तेजुमतान द्वीप में भी दो आर्य समाजें स्थापित हो चुकी हैं।

ईराक:—तीन मुख्य नगर हैं—बगदाद, बसरा और मोसल। इनमें से बगदाद में दो आर्य समाजें हैं। सन् १८५६ में अवध पर अंग्रेजों का अधिकार हो जाने के पश्चात् अनेक राज परिवार और धनाढ्य लोग ईराक में जाकर बस गये, परन्तु उन्होंने अपनी भारतीयता नहीं छोड़ी।

श्रीलंका:—सन् १९२९ में स्वामी शंकरानन्द ने श्रीलंका के कोलम्बो, मुनीश्वरम्, कैण्डी, नवारेलिया, मीता एलिया, त्रिकोमाली, अनुराधापुर, जाफना आदि स्थानों पर वैदिक धर्म का प्रचार किया।

स्व० डा० केशवदेव शास्त्री ने बड़े उत्साह से अमरीका न्यूयार्क, वाशिंगटन और बोस्टन में वैदिक धर्म के सम्बन्ध में अनेक व्याख्यान दिये थे, पर वे स्वामी विवेकानन्द के समान किसी मठ या आर्य समाज की स्थापना नहीं कर सके।

इसी प्रकार म० आनन्द स्वामीजी जापान जाकर वैदिक धर्म का सन्देश सुना चुके हैं।

विदेशों में आर्य समाज की उपयोगिता के सम्बन्ध में दीन बन्धु सी०एफ० एण्डरूज ने म० गांधी को पत्र लिखा था—आर्यसमाज ही एक ऐसी संस्था है, जो प्रवासी भारतीयों को धार्मिक आकांक्षाओं की तृप्ति, सामाजिक त्रुटियों का निवारण और राष्ट्रीय भावनाओं का उद्दीपन कर सकती है। उपनिवेशों में प्रवासी भारतीयों के लिए आर्यसमाज जो कुछ कर रहा है, उसका मेरे हृदय पर गहरा प्रभाव पड़ा है। आर्यसमाज की एक ऐसी संस्था है, जो पुण्य भूमि भारत के प्रति प्रवासियों के हृदय में अनुराग पैदा करती है। और पुरातन आर्य संस्कृति के (जिस पर प्रत्येक भारतीय का जन्मसिद्ध अधिकार है) हित की रक्षा पर विशेष ध्यान देती है। आर्यसमाज में जीवन शक्ति और उत्साह है। भारत की जो संस्थाएं प्रवासी भारतीयों की सेवा कर सकती है, उनमें आर्यसमाज से बढ़कर क्रियाशील और शक्तिशाली अन्य कोई संस्था नहीं हैं।

—मनुदेव 'अभय'
अ—१३ सुदामा नगर इन्दौर

भारतीय इतिहास का पुर्नमूल्यांकन एवं पुनर्लेखन

—डा० आनन्द प्रकाश, उपमन्त्री सभा

भारत के वर्तमान इतिहास के पुनर्लेखन का कार्य आगामी पीढी को ऐतिहासिक वास्तविकताओं का ज्ञान कराने एव आर्य जाति के गौरव को स्थापित करने की दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण है। आधुनिक युग में सर्वप्रथम महर्षि दयानन्द ने सप्रमाण यह सिद्ध किया कि महाभारत काल के पूर्व तक सम्पूर्ण विश्व में आर्यों का चक्रवर्ती साम्राज्य था और समस्त मानव समुदाय की एक ही संस्कृति है, जो वैदिक संस्कृति है। उन्होने यह भी बताया कि इस देश का वास्तविक नाम आर्यावर्त है और आर्य लोग यहा के मूल निवासी थे। आर्यावर्त देश से ही भूगोल मे सर्वत्र ज्ञान विज्ञान का प्रसार हुआ। आर्यसमाज के साहित्यकारों ने भी इस विषय पर प्रचुर साहित्य रचा। परन्तु हमारे अथक प्रयासों के बावजूद यह भ्रामक मान्यतायें शिक्षा क्षेत्र मे बनी हुई हैं। हमें आशा थी कि स्वतन्त्र भारत में आर्यों के स्वाभिमान को जगाने वाले इतिहासका निर्माण होगा और इससे राष्ट्रीयत्व की भावना भी मजबूत होगी,पर ऐसा नहीं हुआ। यदा कदा भारतीय इतिहास एव प्राच्य विद्या की विचारगोष्ठियो मे आर्यसमाज से प्रभावित कोई विद्वान इस प्रकार के लेख पढकर एक सनसनी जरूर पैदा कर देते हैं, पर उसके प्रति सामान्य दृष्टिकोण एक विजातीय अथवा प्रक्षिप्त अ श जैसा ही होता है।

इस प्रसग मे हमे भारतीय इतिहास पुनर्लेखन सस्थान के प्रधान श्री पी० एन० ओक का पत्र सभा प्रधान जी के नाम प्राप्त हुआ है जिसमे उन्होने अपने स्तुत्य कार्यो एव अपने द्वारा रचित साहित्य का परिचय दिया है। आपने यह लिखा है कि "ईसायत के प्रसार के पूर्व सारे विश्व मे वदिक सस्कृति एव सस्कृत भाषा थी। वेद, उपनिषद, चनुर्वर्णाश्रम समाज, वैदिक सगीत, गुरुकुल शिक्षा, वैदिक स्थापत्य, आयुर्वेद, वैदिक काव्य शास्त्र आदि वैदिक सस्कृति थी। योरोप में रामायण भी था। इटली का रोम, रामनगर था।" आप की यह मान्यता है कि इतिहास के अधिकाश लेखक वैदिक धर्म के शत्रु थे, अत उन्होने मनमाने ढग से इतिहास लिखा। ताजमहल, लालकिला, फतेहपुर सीकरी आदि दर्जनो भवनों तथा स्मारकों की स्थापत्यकला का बारीकी से अध्ययन कर आपने यह निष्कर्ष निकाला है कि इनका निर्माण हिन्दू, राजाओ ने कराया था और यह हिन्दुओं के ऐतिहासिक धार्मिक स्थल थे। यह बात जरूर है कि आज बहुत सी कडिया विलुप्त हो चुकी हैं, जिनका केवलमात्र अनुमान ही लगाया जा सकता है। श्री ओक ने यह भी सुझाव दिया है कि इतिहास पुनर्लेखन का कार्य एक विश्वविद्यालय स्थापित करके और ५००० पुस्तकें प्रकाशित कर सम्भव है। यह अत्यन्त कठिन कार्य है। इतिहास पुनर्लेखन सस्थान ने अपने इस चुनौती पूर्ण कार्य के द्वारा एक मानसिकता का निर्माण किया है, जो सर्वथा प्रशसनीय है।

इस सम्बन्ध मे एक विचारणीय बात यह भी है कि अभी तक दक्षिण पूर्व एशिया के देशों में ही आर्य सस्कृति का प्रभाव क्षेत्र माना जाता था, परन्तु अब योरोप के देशो, चीन, रूस व अन्य देशों मे भी ऐसे चिन्ह मिल रहे हैं, जो आर्य सस्कृति के पूर्वकाल में विद्यमान होने का सकेत करते हैं।

यह ध्यान रहे कि उपरोक्त सारी बातें मध्यकाल की हैं, जब वैदिक सस्कृति विकृत हो चुकी थी। आर्यसमाज का आदर्श तो वह विशुद्ध सस्कृति है, जिसका अवशेष पुरातत्व के रूप मे मिल पाना कठिन है। फिर भी खोयी हुई ऐतिहासिक कडियो को मिलाने का कार्य बहुत ही महत्वपूर्ण है। सत्य का आराधक होने के कारण हम चाहते हैं कि ऐतिहासिक खोजबीन के ऐसे प्रयास विश्व स्तर पर चलाये जायें और निष्पक्ष अन्तर्राष्ट्रीय एजेन्सी इसमे सहायक बने। भारत सरकार को ऐतिहासिक तथ्यों को स्वीकार करने में हिचकिचाहट नही होनी चाहिए।

अन्तर्राष्ट्रीय वैदिक सम्मेलन डरबन

अध्यक्षीय भाषण : स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती जी

हम सभी लोग जो आर्यसमाज से सम्बन्ध रखते हैं, उन्हें इस डरबन की महानगरी में संसार के कोने-कोने से आये हुये आर्य जनों से मिलने का जो सुनहरा अवसर मिला है, उसके लिये हमें प्रसन्नता है। आपके राज्य और यहां की जनता के हम आभारी हैं। मैं इस अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन के अधिकारियों से निवेदन करता हूं कि उन सबको आभार प्रेषित कर दें, जिनके सहयोग और पुरुषार्थ से यहां सम्मिलित होने का सौभाग्य मिला है। इस प्रकार के आर्य महासम्मेलनों का आयोजन विगत वर्षों में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के तत्वावधान मे भारत तथा विदेशों में हुये हैं। हममें से बहुतों को मारीशस, नैरोबी, लन्दन आदि के आर्य महासम्मेलनों की सुखद स्मृति होगी। यह समारोह भी उसी शृंखला में एक है।

आपने इस महासम्मेलन में अध्यक्ष या संचालन करने की मुझे जो जिम्मेदारियां दी हैं। उसके लिये मैं आपका तथा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का बहुत आभारी हूं। मेरे सोचने का अपना एक अलग ही ढंग है। मैं अपने बचपन से ही उस आर्यसमाज के वातावरण में रहा हूं, जिसका संस्थापक इस युग का एक महान् चिन्तक और सामाजिक कुरीतियों तथा अन्ध विश्वासों के विरोध में दृढ़ प्रतिज्ञ था। मैंने अपने जीवन में उच्च स्तर तक विज्ञान को पढ़ा और पढ़ाया है। जो विज्ञान के जितना ही निकट जाता है वह उतना ही सत्य को प्राप्त करता है और उस सत्य को दूसरों को भी बांटता है तथा अपने जीवन में स्वीकार करता है। इसे ही हम वैदिक शब्दों में सत्य ऋत और श्रद्धा कहते हैं। इस युग का एक अन्य महान् व्यक्तित्व जो मुझे प्रभावित करता है, वह है महात्मा गांधी। जिसने इस देश दक्षिण अफ्रीका को गणतन्त्र की प्राथमिक प्रशिक्षणशाला बनाया।

इस अन्तर्राष्ट्रीय वेद सम्मेलन के माध्यम से हम जन-मानस में वेद के यथार्थ स्वरूप को रखने का प्रयास करेंगे। स्वामी दयानन्द को यह श्रेय है कि उन्होंने अपने 'ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका' में वेद से सम्बन्धित अनेक प्रश्न किये हैं और उनका समाधान भी मैंने अनेकों बार इस ग्रन्थ को पढ़ा है। मैं दृढ़तापूर्वक कह सकता हूं कि कोई भी व्यक्ति महर्षि के द्वारा किये गये प्रश्नों के अतिरिक्त एक भी नया प्रश्न नहीं कर सकता। यह ऋषि दयानन्द की महान् विद्वता का परिचायक है।

सम्भवतः आप जानते होंगे विगत वर्षों में मैं और मेरे सहयोगी जन मिलकर वेद का अंग्रेजी के सरल शब्दों में अनुवाद कर रहे थे। ऋग्वेद पूरा हो चुका है, जो कि १३ खण्डों में प्रकाशित भी हुआ है। यजुर्वेद पूरा हो चुका है और प्रेस में है। अभी हाल ही में मेरी *लन्दन की यात्रा में एक रसायनज्ञ शम्भू गुप्त जी मिले।* उनसे मिलकर वेद के इन खण्डों तथा अन्य वैदिक साहित्य के लिये एक केन्द्र "The centre for the VedIc Literatvre, the manor House, the Green, Southall Middlesex," की स्थापना किया।

ऋग्वेद की एक अद्वितीय विशेषता है कि पूरे ग्रन्थ में ऐसे एक भी व्यक्ति का इतिहास नहीं है। जो कि आप (जीव) और परमात्मा के बीच में हो। और न ही कोई गुरु या सन्त अथवा पैगम्बर या सिफारिशकर्त्ता अथवा बुद्ध या तीर्थंकर है। उसके पास तक आपकी सीधी पहुंच है तथा प्रेम और स्नेह का सीधा सम्बन्ध है। अत्यल्प (सूक्ष्मजीव) तथा अनन्त (ईश्वर) के बीच सीधा अति निकट का सम्बन्ध बताया है। यह केवल ऋग्वेद की ही बात नहीं है बल्कि वेद एक है। सम्पूर्ण वेद एक दर्शन, एक संस्कृति तथा एक मानवता का सन्देश देते हैं। कोई भी वेद ऊंचा या नीचा नहीं है। वेद त्रयी भी कहे जाते हैं—ऋक्० यजुः, साम और एक चौथा वेद भी है अथर्ववेद।

इतिहास में एक दुःखद समय था जब हम ऋक्, यजु, साम तथा अथर्व० के नाम पर बंटे हुये थे। यथा—द्विवेद, त्रिवेद और चतुर्वेद आदि विभेद वर्तमान हिन्दूवाद की नीव हैं। वह व्यक्ति जिसने कोई भी वेद न देखें हैं और न पढ़े हैं फिर भी भारतीय हिन्दुओं में द्विवेदी, त्रिवेदी या चतुर्वेदी कहा जाता है।

महर्षि दयानन्द ने १८७४ ई० में अमर ग्रन्थ "सत्यार्थप्रकाश" की रचना की जिसमें वेद के सम्बन्ध में अपनी सम्मतियां लिखीं। भारतीय समाज में उनसे पूर्व नारियों तथा शूद्रों को वेद मन्त्रों के पढ़ने, सुनने का अधिकार नहीं था। सच तो यह है जिसके पास 'अ' से लेकर 'म' तक उच्चारण करने के लिये कण्ठ है तथा इन शब्दों को पृथक्-पृथक् सुनने की श्रोत्र इन्द्रिय है। उसे वेद पढ़ने-सुनने का अधिकार है। स्वामी दयानन्द और आर्यसमाज ने सभी के लिये वेद सुनने और पढ़ने का मार्ग प्रशस्त किया।

मेरे तथा स्वामी दयानन्द और आर्य समाज के विचार वेद के सम्बन्ध में वही हैं, जो आर्षकाल (ब्रह्मा से लेकर जैमिनि ऋषि पर्यन्त) में ऋषियों का रहा है। सभी ब्राह्मण ग्रन्थ, आरण्यक, वेदांग, उपनिषदें आदि वेदों पर आश्रित हैं। वेद अपौरुषेय हैं। वेद और नैतिक मूल्यों से परे स्वामी दयानन्द के किसी के साथ समझौता नहीं करते। आज का तथाकथित हिन्दू आपको वेदों से दूर ले जाता है। तुलसी की रामायण, गीता, हनुमान चालीसा अथवा अन्य साहित्य को धर्मशास्त्र बताता है।

हमारे उपनिषदों में याज्ञवल्क्य, पिप्पलाद आदि ब्राह्मण ग्रन्थों में याज्ञवल्क्य, शाण्डिल्य आदि, कुरान में मुहम्मद, बाइबिल में ईसा, गीता में अर्जुन, धृतराष्ट्र और कृष्ण का वर्णन मिलेगा। किन्तु वेद में किसी का भी इतिहास नहीं मिलेगा।

गीता तब लिखी या कही गयी जब संस्कृत पूर्ण विकसित थी इसी प्रकार कुरान के समय अरबी भाषा विकसित थी। अन्य मनुष्यकृत ग्रन्थों की भी रचना उनकी भाषा के विकसित होने पर हुई है। किन्तु वेद की भाषा के बनने का इतिहास नहीं है बिगड़ने या अपभ्रंश होने का इतिहास तो है। वेद की भाषा सभी भाषाओं का आदि श्रोत है।

मैं निश्चय पूर्वक कह सकता हूं केवल ऋग्वेद है जिसका कि यास्क के 'निरुक्त' से अर्थ किया जा सकता है। अन्य कोई भी वेदांग आदि ग्रन्थ नहीं। इसे सभी विद्वानों ने स्वीकार किया है। 'गो' शब्द है इसके सूर्य, पृथिवी आदि अर्थ हैं। वेद के शब्द आख्यात हैं। उनके कई अर्थ होते हैं। ऐसा किसी शास्त्र के शब्दों के साथ नहीं है उनके निश्चित अर्थ हैं। यथा योगशास्त्र में यम, नियम आदि। पाणिनि के अष्टाध्यायी में कर्त्ता, कर्म आदि शब्दों के एक निश्चित अर्थ हैं। संसार में ऐसा कोई साहित्य नहीं है जो वेद की समानता कर सके।

सृष्टि में जितने प्राणी मनुष्य के अतिरिक्त हैं यथा शेर, घोड़े, गायें, पक्षियां आदि सबके पास अलग-२ कण्ठ हैं उनकी ध्वनियां भाषा के सक्षिप्तीकरण से बनती हैं। कुछ ऐसे हैं जो हमसे किसी क्षेत्र में अधिक हैं कोई देखने में, सुनने में अपना स्पर्श आदि में। किन्तु एक मात्र मनुष्य ही है जिसे ईश्वर ने ऐसा कण्ठ दिया है कि वह 'अ' से लेकर 'म' तक उच्चारण कर सके तथा कानों से सुनकर

(शेष पृष्ठ ११ पर)

भारत महिमा

हमारा प्यारा भारतवर्ष सभी विधि था सुख से परिपूर्ण,
सभी रहते थे यहा सानन्द नही था कोई कही अपूर्ण।
विश्व को देता था यह ज्ञान वस्त्र और भोजन सदा सहर्ष,
सभी जन गाते थे सर्वत्र धन्य है जग मे भारतवर्ष ॥१॥

हुई यहा सबसे पहिले सृष्टि मिला वेदो का पावन ज्ञान,
यहीं पर सबसे पहिले बना मनुज जीवन का भव्य विधान।
किया करते थे जग के पुरुष वन्य पशुओ का जब आहार,
उस समय भी होता था यहा धर्मशास्त्रो पर भव्य विचार ॥२॥

योग तक जब सीमित था विश्व नग्न फिरते थे नर स्वच्छन्द,
सभी अपने तक थे सम्बद्ध नही था सामाजिक प्रतिबन्ध।
उस समय भी होता था यहा प्रकृति के ऊपर अनुसधान,
ब्रह्म क्या तत्व, तत्व क्या जीव इसी पर चलते थे व्याख्यान ॥३॥

सभी विधि थे गौरव सम्पन्न हमारे पूर्वज देव समान,
रहे होगे जग के कुछ लोग जगली पुरुषो की सन्तान।
न छोडो अपना पावन पन्थ नकल मे नही बन्धुवर ? सार,
कहा मिल सकता जग मे कही हमारा सा पवित्र व्यवहार ॥४॥

बनायेगा गौरव सम्पन्न हमे अपना ही शिष्टाचार,
हुआ है किसका जग मे कहो विरोधी तत्वो से उद्धार।
मिटाकर वैदेशिक षडयन्त्र शीघ्र अपनाओ अपना मन्त्र,
रहेगा तभी सदा सानन्द जगत् मे भारतवर्ष स्वतन्त्र ॥५॥

—रामकिशोर शर्मा
प्राचार्य, श्री राधाकृष्ण सस्कृत महाविद्यालय
खुरजा, (उ० प्र०)

शरीयत न्यायालय से देश को खतरा भारत सरकार सतर्क हो—

सविितादेवी आर्य

जालना (महाराष्ट्र)—"इस समय देश मे 'मुस्लिम पर्सनल ला" की बहुत चर्चा है। इस सम्प्रदाय के तथाकथित लोगो ने "मुस्लिम शरीयत न्यायालय' पृथक रूप मे भारत मे स्थापित किये जाने की घोषणा की है हमारा देश प्रजासत्तात्मक (गणराज्य) देश है। हमारे सविधान ने देश मे पूर्ण रूप से निष्पक्ष न्यायपालिका दे रखी है। ऐसी स्थिति मे "शरीयत" के नाम से पृथक न्यायालय और स्थापित करने की प्रवृत्ति राष्ट्र के लिए घातक है। भारत सरकार को समय रहते सतर्क होकर इन राष्ट्रद्रोही कृत्यो को समूल नष्ट कर देना देश हित के लिए उचित होगा—इस प्रकार के विचार भूतपूर्व हैदराबाद आर्य प्रतिनिधि सभा की आर्योपदेशिका श्रीमती सविितादेवी आर्य ने प्रधान मन्त्री श्री राजीव गाधी व गृहमन्त्री श्री शकरराव चह्वाण को लिखे अलग अलग पत्रो मे व्यक्त किये हैं।

पत्र मे आगे कहा गया है कि इस प्रकार की प्रवृत्ति से पृथकतावाद की बू स्पष्टतया नजर आती है। इसके दूरगामी परिणामो को देखते हुए, इन्हें अभी से नष्ट करना अनिवार्य है। एक विशेष सम्प्रदाय के लोगो ने हाल ही में बम्बई मे जुलूस निकाल कर भारत के सर्वोच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश की प्रतिमा भी जलाने का दुस्साहस किया है। यह सविधान का सरासर अपमान है। अत केन्द्रीय सरकार इन पनपती हुई घातक अराष्ट्रीय गतिविधियो के निर्मूलनार्थ प्रभावी कार्यवाही करे। देशकी अखण्डता व एकात्मता को नष्ट करने वाली प्रत्येक प्रवृत्ति की जितनी भी भर्त्सना की जाए, थोडी है।

इन घातक प्रवृत्तियो को नष्ट करने के लिए जनता को भी भारत सरकार के हाथो को मजबूत करना चाहिए। यह मत भी श्रीमती आर्य ने एक वक्तव्य में व्यक्त किया है।

—ब्रह्मदेव आर्य

विदेश में आर्य समाज

महर्षि दयानन्द की तपस्या का फल विदेशों मे भी रग ला रहा है। सभा कार्यालय में हर सप्ताह विदेशो मे आर्य समाज की गतिविधियो के बारे में उत्साह वर्धक समाचार प्राप्त होते रहते हैं जिन्हें समय २ पर आर्य जनता की जानकारी के लिये प्रकाशित किए जाते हैं। इस सप्ताह "आर्य समाज बैंकाक" (थाईलैंड) के मन्त्री श्री सग्रामसिंह जी सूचित करते हैं कि २७ अक्तूबर रविवार को आर्य समाज के विशाल भवन मे थाईलैण्ड मे भारतीय राजदूत की अध्यक्षता मे एक विशेष उत्सव का आयोजन किया गया। कार्यक्रम यज्ञ से प्रारम्भ हुआ जिसमे सभी स्थानीय समस्याओं के अधिकारी भी उपस्थित थे। अनेक कार्यक्रमो के पश्चात हिन्दी साहित्य सम्मेलन की परीक्षाओ में उत्तीर्ण छात्र-छात्राओ को पारितोषक तथा प्रमाण पत्र दिए गए। सब से अधिक अक पाने वाली कुमारी प्रमिला पाण्डेय को समाज की ओर से एक विशेष पुरुस्कार दिया गया। इस शुभ अवसर पर राजदूत ने हिन्दी के प्रचार के लिए अपने और अपने दूतावास की ओर से पूरा २ सहयोग देने का आश्वासन दिया तथा तीन पुस्तकें स्थानीय आर्य-समाज के प्रधान जी को और २० पुस्तकें आर्य समाज द्वारा सचालित डा० राजेन्द्र प्रसाद पुस्तकालय को भेंट की। इस कार्य को सफल बनाने में सर्वश्री राम पलट पाण्डेय, सहदेवसिंह जी, प्रो० कृष्ण मोहन गुप्त, डा० तुगनाथ दुबे, श्री रवेन्द्रनाथ पाण्डेय, श्रीमती श्यामलता शुक्ल का काफी योगदान रहा।

वैदिक साहित्य प्रदर्शनी एवं बिक्री

विराट नगर मे एक नेपाली बाबा के तत्वावधान मे २७ दिनो का विशाल गायत्री महायज्ञ चल रहा है उसमे भी आर्य समाज विराट नगर की ओर से बैनर लगाकर वैदिक साहित्य की प्रदर्शनी एव बिक्री के लिए पण्डाल लगाया है।

—प्रकाशचन्द्र चतुर्वेदी
आर्य समाज विराट नगर नेपाल

—आगामी २२ जनवरी १९८६ को विराट नगर वीरेन्द्र सभागार में अमर शहीद शुकराज शास्त्री बलिदान दिवस बडे धूम-धाम से मनाने का निश्चय किया है।

—मन्त्री

आर्य सम्मेलन

१४-१२-८५ से १७-१२-८५ तक बडगांव गोण्डा मे आर्य सम्मेलन आयोजित होने जा रहा है श्री बलराम गोविन्द मन्त्री जिला सभा सूचित करते हैं कि इस सम्मेलन में अनेको कार्यक्रम रखे गए हैं और इसमे आर्य जगत के विद्वान भाग ले रहे हैं।

मुस्लिम असहा पसन्द जलूस हिंसा में परिवर्तित अभी तो आरम्भ है

पुणे २२ नवम्बर—मुस्लिम परसनल ला के नामपर शोर मचाने वालो मे अगले रोज अहमद नगर के करीब तलाक मुक्ति मोर्चा के स्वय सेवको पर इतना भारी पथराव किया कि शाहबानो केस मे सुप्रीमकोर्ट के निर्णय के पक्ष मे जलूस निकालने वाले लगभग चालीस समाज सुधारको को सारे प्रदेश में आन्दोलन जारी रखने का कार्यक्रम स्थगित तथा खत्म करना पडा। पतियो की एकतरफा कार्यवाही से तलाक पानेवाली औरतो और इनके बच्चों ने जब कलैक्टर को मैमोरैन्डम दिया तो इसके बाद कठमुल्लो के लगभग दस हजार अनुयायियों ने जबरदस्त पथराव शुरू कर दिया। मुस्लिम सत्य शोधक मण्डल के नेता श्री सैयद भाई ने बताया है कि मैमोरैन्डम मे यह माग की गई हैं कि जबानी मे तलाक देने का रिवाज खत्म किया जाए। और सुप्रीम-कोर्ट के निर्णय को अमली जामा पहनाया जाए। स्वर्गीय हमीद दलवाई से कायम असला पसन्द तहरीक के स्वयसेवक कोहलापुर से लौट आए हैं वहां से वह पाच नवम्बर को रवाना हुए थे। क्योंकि पुलिस ने शहर अहमद नगर में जलूस के प्रवेश पर प्रतिबन्ध लगा दिया था अत कार्य कर्ता इस शहर के बाहर से निकल गए। यह जलूस प्रदेश के दस शहरों से गुजरा परन्तु अहमदाबाद मे विरोधी हिंसात्मक प्रदर्शन के बाद श्रीरामपुर और नासिक जाने का कार्यक्रम छोडना पडा। श्री सैयद भाई ने बताया कि अब जनवरी ८६ मे फिर जलूस शुरू होगा जो नागपुर पहुंच कर विधान सभा को मांगपत्र प्रस्तुत करेगा। (नई दिल्ली प्रताप शनिवार २३-११-८५)

स्वामी सत्यप्रकाश का अध्यक्षीय भाषण

(पृष्ठ ६ का शेष)

पृथक्-२ बोध भी कर सके। आप गम्भीरता से विचार करें तो पायेंगे कि मनुष्य की तथा अन्य प्राणियों की वाणी परमात्मा की ही देन है, किन्तु परमात्मा ने मनुष्य को जहां अद्भुत वाणी दी वहीं चेतना भी अन्य भी प्राणियों से भिन्न दिया।

आदि मानवी सृष्टि मे परमात्मा ने देव वाणी आदि मानवों को दी। उस भाषा को वे धीरे-२ बाद के मानवों को देते गये। मनुष्य समाज में ही माता-पिता, गुरु का स्थान। अन्य प्राणियों में गुरु होता ही नहीं, पिता मात्र जनक होता है तथा माता नर्स की तरह जन्म देकर कार्य करती है। उनकी भाषा, शिक्षा आदि स्वभावतः है। जो मानव-समूह सृष्टि के आदि में आया उसके पास गवेशणात्मक कष्ठ तथा ज्ञान पूर्ण रूप से था। उसने धीरे-२ दूसरों को दिया। इसलिए गुरु का विशिष्ट स्थान है।

आप समझ गये होंगे जो मैं कहना चाहता हूं। इसी प्रकार सृष्टि के आदि मे ईश्वर ने कुछ मनुष्यों को 'वेद' का ज्ञान दिया। मनुष्य की भाषा वेद मे प्रारम्भ होती है। यही वेद का 'स्वतः प्रमाणत्व है और यही वेद का 'अपौरुषेयत्व' है। जिसे हम निम्न शब्दों में कह सकते हैं--

१--वेद मन्त्र और मनुष्य की वाणी दोनों ईश्वर की देन हैं। इसलिये मनुष्य के वाणी अतिरिक्त अन्य प्राणियों की वाणी में अर्थ नहीं हो सकता (अर्थात् वेद केवल मनुष्यमात्र के लिये हैं)।

२ वेद और सृष्टि अपौरुषेय हैं। अतः वेद का अर्थ प्रकृति नियमों के विपरीत नहीं हो सकता। अर्थात् वेद और विज्ञान परस्पर पूरक या सहयोगी हैं।

३--वेद सृष्टि के आदि ग्रन्थ होने के कारण वेदों में इतिहास नहीं है। वेद मे नहीं था पर्वतों का वर्णन अथवा भूमि का वर्णन सामान्य अर्थ मे है (न कि वर्तमान गगा, एवरेस्ट, भारत आदि) वेद में हमारी भूमि सम्पूर्ण पृथिवी है।

(माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्या)।

कालान्तर में एक ऐसा समय आया जबकि वेद का विरोध होने लगा। महर्षि दयानन्द को इस बात का श्रेय है कि उन्होंने वेदों के स्वाध्याय के लिये प्रेरित किया तथा यथार्थ स्वरूप को प्रतिपादित किया। मैं अति प्रसन्न हूं, हममें से जो वेद से प्रेम करने हैं। और डरबन के इस महासम्मेलन में भाग ले रहे हैं। हमारा आज का वातावरण प्राकृतिक सम्पदाओं के विनाश, प्रदूषणों हत्याओं अनेक नशीले पदार्थों के सेवन आदि का है। आशा है ऐसे समय में वेद मार्ग का पालन ही आपको शान्ति, सौहार्द और अहिंसा का वातावरण दे सकेगा। इस महासम्मेलन के माध्यम से हम अगली शताब्दी के लिये कुछ कल्याणकारी योजनायें भी बनायेंगे।

विगत १०० वर्षों में आर्यसमाज ने हिन्दी भाषियों के बीच में ही विशेष कार्य किया है। मैं अभी पिछले दिनो हालेंड आया था। वहां बहुत आवश्यकता है 'डच' भाषा में आर्य साहित्य की अन्य देशों में भी दक्षिण अफ्रीका आदि में बन्टू, जुलू और अफ्रीकान भाषाओं मे हमारे साहित्य का कितना अभाव है। इस प्रकार के महासम्मेलन मे हम विचार करें एक ऐसे केन्द्र के स्थापना बने। जहां देश विदेश की विभिन्न भाषाओं में साहित्य तथा विभिन्न देशों के लिये उन देशों की भाषाओं के युवा विद्वान तथा कार्यकर्त्ता तैयार किये जासके।

हमने विगत समयो में महान् ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश का विश्व की अनेक भाषाओं में अनुवाद कराया है। सत्यार्थ प्रकाश के कर्त्ता ऋषि दयानन्द भारतीय समाज के युग में कुछ नये आयामों की आवश्यकता है। जिसके लिए हमे एक जुट होकर प्रयास करने की आवश्यकता है।

हमने १९८३ मे अन्तर्राष्ट्रीय दयानन्द निर्वाण शताब्दी अजमेर में मनायी थी। नाम (केवल अन्तर्राष्ट्रीय था किन्तु थे सभी भारतीय या प्रवासीय भारतीय। उस शताब्दी मे कोई भी श्वेत, काला, पीला मे से विदेशी नहीं था। युरोपीय ईसाई भारत छोड गये किन्तु आज भी ईसायत है। आप जहां रहे हैं वहा के लोगों को भी अपने निकट लायें। युगाण्डा से भारतीयों के हटाये जाने का मुझे दुःख नहीं है हां दुःख है तो इस बात का कि वहा से आर्यसमाज समाप्त हो गया। मुझे प्रसन्नता होगी जब जिप्रो, या अरब का व्यक्ति अथवा चीन, अमेरिका आदि का वासी वैदिक मिशनरी होगा।

मेरी हृदय से शुभकामनायें आप सबको, जो इस अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में भाग ले रहे हैं। आप सत्य, प्रेम, शान्ति और अहिंसा के पुजारी बनें।

आचार्य पृथ्वीसिंह आजाद का देहावसान

दिल्ली १० दिसम्बर।

आर्य समाज के सुप्रसिद्ध नेता एव पंजाब सरकार के भू०पू० मन्त्री आचार्य पृथ्वीसिंह आजाद का आज प्रात उनके निवास स्थान खरड (चण्डीगढ के पास) मे देहावसान हो गया। इस सूचना से समूचे आर्य जगत् मे शोक की लहर दौड गई।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले ने उनके निधन पर गहरा शोक व्यक्त करते हुए कहा कि आचार्य पृथ्वीसिंह आजाद के निधन मे आर्य समाज और पंजाब ने एक परखा हुआ नेता खो दिया है। उनके रिक्त स्थान की पूर्ति होना कठिन है। श्री शालवाले ने कहा महात्मा गांधी, प० मदनमोहन मालवीय, और स्वामी श्रद्धानन्द जी के आदेश पर श्री आजाद ने हरिजनों के धर्म परिवर्तन को रोकने के लिए जो कार्य किए थे, वे हमेशा पिछडी जातियो और आर्य समाज के कार्यकर्त्ताओ को याद रहेंगे।

आचार्य पृथ्वीसिंह जी आजाद आर्य समाज के सक्रिय कार्यकर्त्ता होते हुए भी आजादी की लडाई में एक बहादुर योद्धा थे। अंग्रेज सरकार के खिलाफ कार्य करते हुए उन्होंने कई जेल यात्राएं करके देश की आजादी का झण्डा ऊंचा किया। उनके राष्ट्रपति जैलसिंह तथा स्व० प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध थे। आचार्य पृथ्वीसिंह जी आजाद वर्षों तक पंजाब आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान तथा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के उपप्रधान के पद पर रहे है। वर्षों तक वह गुरुकुल कांगडी के कुलाधिपति भी रहे हैं। उन्होने अनेक ग्रन्थ भी लिखे है और वे आजकल सत्यार्थ प्रकाश का पंजाबी अनुवाद मे करने लगे हुए थे।

इस अवसर पर सार्वदेशिक सभा के कार्यालय मे शोक सभा मे दिवंगत आत्मा के प्रति सद्गति की प्रार्थना करते हुए उनके परिवार के प्रति हार्दिक संवेदना व्यक्त की गई और कार्यालय बन्द कर दिया गया।

—प्रचार विभाग सार्वदेशिक सभा, दिल्ली

पंजि० नं० डी० (सी०) १७८ सार्वदेशिक साप्ताहिक (१५ १२-१९८५) बिना टिकट भेजने का लाइसेंस नं० U ६३
R. N. 626/57 Licensed to post withoutprepayment, License No. 93 Post in D.P.S.O. on 13-12-85

अन्तर्राष्ट्रीय वैदिक महासम्मेलन

(पृष्ठ २ का शेष)

बार विद्वान विश्व की भाषा, दर्शन और साहित्य में संस्कृत के महत्व पर विवेचनात्मक निबन्ध पढ़ेंगे।

ता० १७ को शाम दरबन नगर पालिका के महापौर की अध्यक्षता में दरबन के सीटी होल में सम्मेलन के प्रतिनिधियों का स्वागत समारोह होगा। भारतीय जनता और संस्थाओं में प्रथम बार ऐसा स्वागत समारोह रखने का गौरव आर्य प्रतिनिधि सभा को मिला है। इस समय नगर-पालिका की तरफ से प्रतिनिधियों को प्रीतिभोज भी दिया जावेगा। ता० १८ को साउथ अफ्रिका हिन्दू महा सभा की तरफ से प्रतिनिधियों का स्वागत रखा गया है।

ता० २१ को नेटाल की राजधानी पीटर मेरित्सबर्ग में नगर के मेयर के द्वारा प्रतिनिधियों का स्वागत होगा। इस नगर में महासम्मेलन की सातवीं और आठवीं परिषद रखी गयी है। अन्तिम दिन यजुर्वेद पारायण महायज्ञ की पूर्णाहुति इसी नगर में रखी जावेगी। यह महायज्ञ वर्ष के प्रारम्भ में शिवरात्री के बोध दिन के समय प्रारम्भ किया गया था और सबके विविध नगरों में यजुर्वेद का मन्त्र पाठ करते हुए आहुति दी गयी हैं। महायज्ञ ब्रह्मा पद पर पं० नरदेव वेदालंकार विराजमान होंगे।

विविध देशों से आने वाले आर्य विद्वानों का लाभ लेकर साउथ अफ्रिका के अन्य तीन प्रान्तों में ट्रांसवाल, इस्टर्न केप तथा वैस्टर्न केप में प्रथम बार वैदिक परिषद आयोजित करने के चक्र चालू हो गये हैं। इस तरह इस वैदिक महासम्मेलन के द्वारा सम्पूर्ण देश में वैदिक सिद्धान्तों का प्रचार करने का सुअवसर प्राप्त हो रहा है।

इस महान आयोजन का प्रबन्ध करने के लिए आर्य प्रतिनिधि सभा के द्वारा १३ विविध उपसमितियों की रचना की गयी है। ये सब अपने-अपने कार्य क्षेत्र में बड़े उत्साह और उमग से अपना उत्तरदायित्व उ... इन उपसमि... और उनके प्रधान के नाम नीचे ... रहे हैं।

उप समिति	अध्यक्ष
कार्यक्रम समिति	श्री आनन्द सत्यदेव
प्रचार समिति	पं० नरदेव वेदालंकार
स्वागत सत्कार समिति	श्री आर बुधई
प्रदर्शनी समिति	श्री शारदानन्द सत्यदेव
पासपोर्ट और प्रवास समिति	श्री पी० आर० मोगल
भोजन प्रबन्ध समिति	श्री रवि एन० जीवन
प्रकाशन समिति	श्री मनोहर सुमेरा
पण्डाल प्रबन्ध समिति	श्री श्रवण शिवगुलाम
सांस्कृतिक कार्यक्रम समिति	श्री विश्राम राम विलास
स्वयं सेवक समिति	श्री एस० शिवप्रसाद
नगर शोभा-यात्रा समिति	श्री एस० राम भरोस
अर्थ समिति	श्री एस० गंगादयाल
कार्यालय प्रबन्ध समिति	श्री खुशीराम बदल

आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री शिशुपाल राम भरोस और वेद निकेतन के प्रधान श्री पं० नरदेव वेदालकार के मार्गदर्शन में महा सम्मेलन का कार्य सुचारु रूप से अग्रसर हो रहा है। साउथ अफ्रिका की विशेष राजनीति की पृष्ठ भूमि में अनेक प्रकार के अवरोधों में से मार्ग प्रशस्त करने में सफलता मिल रही है। यद्यपि राजनीतिक दबाव में अनेक देशों के प्रतिनिधि पूरी संख्या में यहां उपस्थित नहीं हो पायेंगे। परन्तु इस देश में हिन्दुओं का यह प्रथम विश्व महासम्मेलन हो रहा है इस बात का सभी हिन्दू गौरव ले रहे हैं।

सार्वदेशिक प्रेस, दरियागंज नई दिल्ली में मुद्रित तथा ओम्प्रकाश पुरुषार्थी मुद्रक और प्रकाशक के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा,